

GL H 491 433

SR1



123705  
LBSNAA

राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी

Academy of Administration

मसूरी

MUSSOORIE

पुस्तकालय

LIBRARY

— 123705

अवधि मख्या

Accession No. —

~~No. 67~~

वर्ग मख्या

Class No.

GLH

H-1  
491.433

पुस्तक मख्या

Book No.

SR1

श्रीधर





# श्रीधर-भाषा-कोष

## ( परिमार्जित और परिकर्षित संस्करण )

जिसमें

हिंदी तथा व्रजभाषा के प्राचीन तथा प्रचलित शब्दों के विभिन्न अर्थ,  
उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत, अँगरेज़ी तथा अन्य भाषाओं के हिंदी में व्यवहृत  
शब्दों के अर्थ, संस्कृत और हिंदी के प्राचीन तथा अर्वाचीन कुछ  
मुख्य-मुख्य कवियों, लेखकों और ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय,  
प्राचीन स्थानों के अर्वाचीन नाम, व्याकरण  
की आवश्यक बातें आदि दी हैं ।

संग्रहकर्ता

पंडित श्रीधर त्रिपाठी

संपादक

श्रीछन्नूलाल द्विवेदी  
श्रीमातादीन शुक्ल

—•—•—•—

मुद्रक और प्रकाशक

श्रीकेसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट

नवलकिशोर-प्रेस

लखनऊ

पाँचवाँ संस्करण ]

१९३१

{ मूल्य ३/ }  
{ कपड़े की जिल्द ३॥ }



*Printed and Published*

by

**Kesari Das Seth**

*at the*

Newul Kishore Press,

LUCKNOW.



## दो शब्द

पं० श्रीधरत्रिपाठी-संगृहीत श्रीधर भाषा-कोष का यह नवीन, परिवर्द्धित एवं परिमार्जित संस्करण है। लगभग ढाई वर्ष हुए जब इसके संपादन का कार्य आरंभ हुआ था, किंतु अन्य आवश्यक कार्यों के आते रहने से बीच-बीच में इसकी छपाई का क्रम भंग भी होता रहा। इस कारण संभव है, इसमें कहीं-कहीं विष्टृंखला आ गई हो, कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। एक तो कोष-निर्माण का कार्य ही बड़े उत्तरदायित्व का है, वह एक-दो आदमियों के बूते का नहीं है। दूसरे, किसी प्राचीन संस्करण में परिवर्द्धन अथवा परिमार्जन करना तो स्वतंत्र कोष-निर्माण से भी कहीं अधिक उत्तरदायित्व का कार्य है; क्योंकि ऐसे समय मूल कोषकार की विचारसारिणी और शब्दार्थ आदि का खयाल रखना संपादक के लिये आवश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में संपादक पर फूँक-फूँककर पाँव धरने की-सी जिम्मेदारी आ पड़ती है। इधर अप-टु-डेट कोष-निर्माण की भावना भी यह तकाजा करती है कि हिंदी में व्यवहृत अन्य भाषाओं के शब्दों की उपादेयता की भी अवहेलना न की जाय और समष्टि रूप से कृति उपयोगी बन जाय। इन सारी परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए हमने जैसा-कुछ परिवर्द्धन, परिमार्जन अथवा परिवर्तन एवं संशोधन किया है, उसे ठीक ही समझकर किया है। हाँ, इतना तो अवश्य ही है कि पूर्व संस्करण की अपेक्षा इसमें साधारण जटिलता बहुत कुछ दूर कर दी गई है।

इस संस्करण के आकार-प्रकार छपाई-सफाई आदि में जैसा कुछ सुधार किया गया है, वह तो प्रत्यक्ष ही है। एक विशेष बात यह है कि पहले की अपेक्षा इस संस्करण में शब्दों की संख्या लगभग दुगुनी कर दी

गई है। व्रजभाषा तथा अन्य भाषाओं के जो शब्द हिंदी में प्रचलित हो चुके हैं, उनका भी समावेश इसमें कर दिया गया है। चूँकि यह कोष पाठशालाओं में बहुत प्रचलित है और पाठशालों का संबंध अधिकतर ग्राम्य जनता से ही है, इसलिये ग्राम्य शब्दों का बहिष्कार करना हमें उचित नहीं जान पड़ा। सुबोध, सरल और ठेठ तथा बोलचाल की भाषा में ये शब्द कुछ सहायक ही होंगे। अस्तु, इस प्रकार साधारण पढ़ी-लिखी और साहित्यिक जनता दोनों की भाषा-प्रगति का सामंजस्य इसमें मिलेगा। अब कोष के अंतरंग पर भी कुछ प्रकाश डालना उचित जान पड़ता है।

संस्कृत में तो प्रायः पंचमवर्ण का प्रयोग होता है, पर हिंदी-भाषा में इसके लिये कोई खास नियम नहीं है। कोई पंचम वर्ण का प्रयोग करते हैं, कोई अनुस्वार का, और कोई दोनों का। पर हमने इस कोष में अनुस्वार का ही प्रयोग किया है और ऐसे शब्द अपने वर्ण के अंत में आए हैं; पर हाँ, जो नित्य अनुस्वार से लिखे जाते हैं और जो अर्द्धचंद्र से लिखे जाते हैं, ऐसे शब्द उस वर्ण के आरंभ ही में दिए गए हैं, जिससे शब्द खोजने में पाठक को दिक्कत न पड़े।

जो शब्द संज्ञावाचक हैं, उनके लिंग-भेद ही में पाठकों को प्रायः दिक्कत पड़ती है। अतः संज्ञावाचक शब्दों के आगे संज्ञा ( सं० ) न लिखकर उनका लिंग भेद ( पु० स्त्री० आदि ) दिया है।

गुणवाचक संज्ञा और कर्मणिप्रयोगवाले शब्दों में प्रायः संज्ञावाचक शब्द गुण और विशेषता के श्रोतक होते हैं और ऐसी अवस्था में वे अधिकतर और प्रायः विशेषण का ही कार्य करते हैं, अतः ऐसे शब्दों

को हमने विशेषण ( वि० ) ही से संकेतित किया है ।

जो शब्द उभयलिंगों में प्रयुक्त होते हैं उनके आगे पुलिङ्ग और स्त्रीलिंग दोनों के सांकेतिक चिह्न दिये गये हैं ।

इस संस्करण में हमने यथास्थान मुहाविरे और बोलचाल के प्रयोग भी यथासाध्य दिये हैं । लेकिन छपाई का क्रम ठीक न रहने से सांकेतिक चिह्नों में मुहाविरा और बोलचाल के संकेतों में एक ही ढग का अनुसरण नहीं हुआ है; पूर्वाद्ध में बोलचाल ( बोल० ) और उत्तराद्ध में मुहाविरा ( मुहा० ) छपा है। यद्यपि दोनों एक ही हैं, तो भी पाठकगण इस बात को ध्यान में रखेंगे तो उलभन से बचे रहेंगे ।

यों तो शब्दों के अर्थ और प्रयोग अनेक प्रकार से होते हैं, पर हमने इस संस्करण में अधिकतर प्रचलित प्रयोगों और अर्थों पर ही ध्यान दिया है । अप्रचलित प्रयोगों को भी देने से कोष का आकार बढ़ जाता, साथ ही इसे सस्ता और उपयोगी बनाने के उद्देश्य में भी बाधा पड़ती ।

कोष के अंत में तीन परिशिष्टों में हमने प्राचीन

भौगोलिक स्थानों के वर्तमान नाम, संस्कृत के कुछ नए-पुराने लेखकों तथा कवियों का और हिंदी के भी कुछ पुराने और नए लेखकों तथा कवियों का परिचय दिया है । कोष से भी कोई उलभन न सुलभने पर, इन ग्रंथकारों की रचनाओं का संकेत पा जाने से, इनके ग्रंथों की ओर भी पाठकों का ध्यान जायगा और तब कदाचित् उन्हें अन्य-अन्य बातें भी मालूम होने का मौका मिलेगा । इसमें प्रायः सभी प्राचीन और अर्वाचीन पर मुख्य-मुख्य साहित्य-सेवियों का संक्षिप्त परिचय आ गया है ।

जहाँ कहीं वैदिक-पौराणिक अथवा ऐतिहासिक स्थान या व्यक्ति का नाम आया है वहाँ संक्षिप्त विवरण दिया गया है; पर आकार-वृद्धि के भय से उनके आगे भारतीयचरितांबुधि ( भा० च० ) का संकेत कर दिया गया है । यह पुस्तक भी नवलकिशोर-प्रेस से प्रकाशित हुई है और इसमें विस्तारपूर्वक ऐसे सभी स्थानों और व्यक्तियों का पूर्ण विवरण मिलेगा ।

वसंतपंचमो }  
१९८७ }

सपादक

## कृतज्ञता-प्रदर्शन

इस नवीन संस्करण के संपादन में निम्न-लिखित ग्रंथों और कोषों से भी सहायता ली गई है, अतः हम उनके संग्रहकर्ताओं, संपादकों तथा प्रकाशकों के कृतज्ञ हैं—

- १ हिंदी-शब्दसागर
- २ शब्द-कल्पद्रुम
- ३ शब्दार्थ-पारिजात
- ४ चतुर्वेदी-कोष
- ५ मंगल-कोष

- ६ भारतीय चरितांबुधि
- ७ मिश्रबंधु-विनोद
- ८ हिंदी-नवरत्न
- ९ अमरकोष
- १० भक्तमाल

इनके अतिरिक्त हम उन सहयोगियों और मित्रों के भी कृतज्ञ हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपने अनुभूत विचारों से हमें इस कार्य में सहायता दी है।

---



# प्रथम संस्करण की भूमिका

ॐ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तेये नमः

परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम् । बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥

आजकल शिक्षा-विभाग अर्थात् सरिता-तालीम में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से प्रायः संगृहीत होती हैं । अधिकतर तो अँगरेज़ी-भाषा की पुस्तकों का अनुवाद होता है । उनमें ऐसे अपूर्व शब्द आ जाते हैं, जिनको सर्वसाधारण पाठक नहीं समझ सकते । और अद्यावधि भाषा में भी कोई ऐसा उत्तम कोष निर्मित नहीं हुआ है, जिसकी सहायता से शब्दों के धात्वर्थ, लक्षण, अर्थों का प्रमाण और वाक्यादि शब्द-संबंधी बातों का बोध भला भोंति हो । भाषा के दो-एक कोष हैं, पर उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ ही हैं । आजकल जो पुस्तकें शिक्षा-विभाग में प्रचलित हैं, उनमें बहुत-से शब्द ऐसे प्रयुक्त किये गये हैं, जो इन कोषों में नहीं मिलते । ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोरसाह मंद हो जाता है । इस दशा को देख खेद होता है । अतएव भाषा का एक अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा ।

मैं चौत्तिस वर्षों से अवध-शिक्षा-विभाग में काम करता हूँ । इतने समय में संस्कृत और भाषा-कोष और समाचारपत्रों में जो-जो विलक्षण और अपूर्व शब्द दृष्टिगोचर हुए, उनका संग्रह करता रहा । इनके अतिरिक्त सर्वगुण-गणालंकृत महाशय बाबू मधुसूदन मुकुरजी हेडमास्टर, हाईस्कूल मुलतापुर—जिनकी सातहत्ती में मैं चौदह वर्ष आनन्दपूर्वक रहा—से वंगदेशीय कोषों का उत्तमोत्तम आशय ग्रहण किया । अब मातृभाषा के संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साहवर्द्धन के हेतु इस संग्रह को मुद्रित कराया ।

इस स्थल पर इस बात को भी सूचित करना अनुचित न होगा कि भाषा का प्रचार कब से और किस प्रकार हुआ । इतिहासों से विदित हुआ है कि संवत् ७७० में अवंतिकापुरी अर्थात् उज्जैन-नगर में राजा भोज के पिता राजा मान काव्य-विद्या में अति निपुण थे ।

उन्होंने पुष्प-नामक बंदीजन को संस्कृत-काव्य और अलंकारादि पढ़ाये । उसने उनका भाषा-टीका में अनुवाद किया । उसी समय से भाषा-काव्य की नींव पड़ी । तब से बराबर भाषा की उत्पत्ति होती गई । सूरदास तुलसीदास, केशवदास, विहारीलाल आदि कवियों ने भाषा के उत्तमोत्तम ग्रंथ निर्मित किये । उनके शब्दों का ज्ञानदाता केवल कोष ही हो सकता है । विद्या बहुत प्रकार की हैं और उनके विषय भिन्न-भिन्न हैं—यथा व्याकरण-विद्या से वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छंदरचना, उनकी विवेचना, योजना और शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होता है; वाक्य-और छंद का भावार्थ और तर्क-वितर्क का ज्ञान व्याकरण-शास्त्र से होना है और साहित्य अर्थात् काव्य-विद्या शब्दों की सजावट, जालिष्य और विचित्रता के काम में आती है । परंतु सर्वोपरि कार्य अभिधान से निकलता है । अभिधान में एक-एक शब्द के अनेकार्थ दिखलाये जाते हैं । शब्द एक ही है, पर स्थानान्तर से उसका भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाता है । इन बातों के विचार का भार कोष-संग्रहकर्ता पर रहना है; क्योंकि वह शब्दों को श्रेष्ठतम रीतियों से चुन-चुनकर एकत्रित करता है । वह शब्दों को इस ढंग से क्रमबद्ध करना है कि जिन शब्दों या उसके अर्थों को जो लोग देखना चाहें, वह तुरंत निकल आवे । शब्दों की योनि अर्थात् धातु, धात्वर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय, ठीक-ठीक लक्षण या पहचान और उपसर्गादि के संयोग से जो अर्थों में भेद हो जाता है, सभी कुछ वह प्रकट कर देना है । इसका वर्णन आगे विस्तार-सहित होगा ।

लेखक का संक्षिप्त परिचय

मेरे पितामह पंडित रामप्रसादजी, जो पौराणिक और अपने समय में वैद्यशिरोमणि थे, काव्यकुञ्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्लनटोखा के निवासी थे और मेरे पिता श्रीपंडित लालमणिजी पुराण, उयोतिष, वैद्यक के

ज्ञाता थे। उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष-पर्यंत की और समयानुसार मुझे सात वर्ष की अवस्था से १६ वर्ष-पर्यंत संस्कृत का अध्ययन कराकर फ़ारसी और गणित विद्या पढ़ने का उपदेश किया। उन्हीं के आशीर्वाद से मैं कुछ सीख पाया हूँ, जिसका फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पित किया जाता है।

### कृतज्ञता-प्रदर्शन

इस अभिधान के बनाने में निम्न-लिखित कियों और समाचार-पत्रों से सहायता ली गई है—

- १ फ़ज़न साहब का हिंदुस्तानी-अँगरेज़ी-कोष।
- २ फ़ार्ब साहब का हिंदुस्तानी-अँगरेज़ी-कोष।
- ३ वेट साहब का हिंदी-अँगरेज़ी-कोष।

४ पंडित तारानाथ वाचस्पति का शब्दस्तोम-महानिधि।

५ बाबन-शिवराम आप्टे-कृत संस्कृत-अँगरेज़ी-कोष।

६ बाबू राधालाल साहब का शब्द-कोष।

प्रतिष्ठित बंगवासी समाचारपत्र, कलकत्ता और राजा रामपालसिंह कालाकाँकर का हिंदोस्तान-नामक समाचार पत्र आदि।

इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कार्यों से नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उत्पन्न होते थे; पर श्रीकश्यपवंशोज्ञ लखीमपूरनिवासी पंडित बेचेलाला-त्मज मनीषिमाननीय पंडित बदरीनारायण मिश्र, हेड-मास्टर नार्मलस्कूल, लखनऊ की पूर्ण सहायता और प्रेरणा से कटिबद्ध होकर इसको मुद्रित कराया।

इस कोष में निम्न-लिखित संकेत आप हैं—

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
सं०	संस्कृत	वि०	विशेषण
प्रा०	प्राकृत वा हिंदी	सर्वना०	सर्वनाम
अ०	अरबी	क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रा०	फ़ारसी	क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
अं०	अँगरेज़ी	क्रि० वि०	क्रियाविशेषण
भा० च०	भारतीय चरितार्थवृद्धि	उपस०	उपसर्ग
पु०	पुलिंग	बाल० या मुहा०	बालबाल या मुहावरा
स्त्री०	स्त्रीलिंग	अव्य०	अव्यय

### उक्त संकेतों का व्याख्या

पु०—जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो, उसे पुलिंग कहते हैं, जैसे पुरुष, लड़का, घोड़ा।

स्त्री०—जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे स्त्री, लड़की, घोड़ी।

भाषा में नपुंसक शब्द पुलिंग ही माने गये हैं, जैसे

सागर, जल, रत्न, कुल इत्यादि; पर ये संस्कृत में नपुंसकलिंग हैं।

वचन—संख्या को कहते हैं। वे दो हैं—एकवचन और बहुवचन। जिस रूप से एक का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—लड़का, घोड़ा इत्यादि।

जिस नाम से एक से अधिक का बोध हो, उसे बहुवचन जानो। जैसे—लड़के, घोड़े इत्यादि।

विशेषण—वह है, जो पदार्थ की विशेषता गुण या धर्म को बतावे, जैसे काला घोड़ा, धनां पुरुष, प्रतापी मनुष्य। यहाँ काला, धनी, प्रतापी विशेषण हैं। भाषा में गुणवाचक शब्द बहुधा संज्ञा और कर्तादि के विशेषण होते हैं, जैसे खट्टा नौबू, ऊँचा भील, प्रतापी मनुष्य, सुखी जन, खजाना की मोहनलाल इत्यादि।

सर्वनाम—उसे कहते हैं जो सब नामों के बदले में आवे। सर्वनाम का प्रयोजन वहाँ पड़ता है, जहाँ नाम को एक बार कहकर फिर न कहना हो; तब उसकी जगह सर्वनाम आता है। इससे वाक्य बुरा नहीं लगता और न वह संज्ञा बार-बार कहनी पड़ती है। जैसे—देवदत्त आया और उसने पोथी पढ़ी। यहाँ (उसने) सर्वनाम है, सर्वनामों में लिंग के कारण कुछ विकार नहीं होता।

१. सत्त्वरजस्तमोगुणानामुपचयोपचयसत्त्वमिह क्रमेण पुंस्त्वं क्त्वं नपुंसकत्वं च विवक्षितं तेनाचेतनं खट्वाजवनिकार्दा न दोष इति।



जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं, उनके अनुसार सर्वनामों का लिंग समझा जाता है, जैसे देवदत्त ने कहा, मैं पढ़ता हूँ। यहाँ देवदत्त पुल्लिंग है। उसके बदले में, मैं आया हूँ, तो मैं पुल्लिंग हुआ। लड़की कहती है, मैं जाती हूँ। यहाँ लड़की स्त्रीलिंग है, अतएव मैं भी स्त्रीलिंग हुआ।

सर्वनामों के कई भेद हैं। जैसे—पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और आदरसूचक। मैं, तू, वह—पुरुषवाचक सर्वनाम हैं; यह, वह निश्चयवाचक; कोई, कुछ अनिश्चयवाचक; जो, जौन, सो, तीन संबंधवाचक; क्या, कौन प्रश्नवाचक; आप आदरसूचक।

संबंध उसे कहते हैं, जिससे स्वत्व और रिश्ता जाना जाता है। वह दो में रहता है—एक कृतसंबंधी, दूसरा संबंधी। जैसे—राजा का घोड़ा; यहाँ राजा कृतसंबंधी है, घोड़ा संबंधी।

### क्रिया

क्रिया उसे कहते हैं, जिससे कृति, स्थिति, देह और मन के व्यापार का बोध हो। क्रियापद में लिंग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, प्रयोग अवश्य होते हैं और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होता है। इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं।

क्रिया की योनि या मूल को, जो प्रत्ययादि कार्यरहित शुद्धरूप है, धातु कहते हैं। क्रिया दो प्रकार की है—सकर्मक और असकर्मक। सकर्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्म में पाया जाता है। यथा—पंडित पोथी पढ़ता है। पंडित कर्ता, पोथी कर्म, पढ़ता है क्रिया। असकर्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्मा हो में रहता है। यथा—बालक रोता है। यहाँ बालक के व्यापार का फल बालक ही में रहा।

\* असकर्मक धातु जानने के लिये संस्कृत में कोई सांकेतिक चिह्न नहीं दिया जाता है, वह अनायास ज्ञात होती है।

इ, औ आदि वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं। जिस धातु के परे इ वर्ण दृष्ट हो, उस धातु के उपांत में न

\* लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिलयभयजीवितमरणम्।

शयनक्रीडाकचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः॥

अक्षर का आगम होगा, पश्चात् वही नकार, वर्ग के अनुसार, संधि के नियम से ड, ज, य, म में बदल जाता है, यथा अक् + इ + त = अकित, अच् + इ + त = अक्षित, उत्कट् + इ + त = उत्कटिठत, कप् + इ + त = कपित।

स्वाभाविक धातु-संवर्जित नकार का भी यही नियम है, यथा अन्ज = अञ्जन एवं जिस धातु के पश्चात् औ होगा, उसके उत्तर त ( तव्य ) आदि प्रत्यय के परे इकार का आगम नहीं होगा, यथा गम औ = गत, गम औ = गन्तव्य। तृतीय बात यह है कि धातु के नाना प्रकार के अर्थ होने से भी व्यवहारानुसार एक, दो, तीन पर्यंत धात्वर्थ लिखे गये हैं।

### प्रत्यय

अन, अ, ति, अ

संस्कृत में अनट, अल, क्रि, घञ्, इन प्रत्ययों के योग से क्रियावाचक शब्द निपपन्न होता है। कहीं-कहीं संज्ञा शब्द भी होता है। अनट, अल प्रत्यय के ट, ल, काम में नहीं आते। इस कारण अनट, अल के स्थान में अन, अ को लिखते हैं। अन, अ, ( अनट, अल ) के प्रायः सब धातु के उत्तर, भाववाच्य में, अन, अ, प्रत्यय होता है। अन, अ के योग से धातु का अर्थ वर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, ऋ के स्थान में ए, आ, अर् हो जाता है एवं धातु के अंत में स्थित इ, ई के स्थान में अय्, उ ऊ के स्थान में अय्, ऋ ऋ के स्थान में अर् हो जाता है—यथा क्षिप + अन = चेपन। विक्षिप + अ = विक्षेप। चि + अन = चयन। संचि + अन = संचयन इत्यादि।

### ति ( क्रि )

प्रायः सब धातुओं के अंत में भाववाच्य में ति प्रत्यय होता है। ति कभी-कभी धातु में युक्त हो जाता है—यथा शक् + ति = शक्ति। कभी-कभी ति प्रत्यय के परे धातु के अंतिम, एवं न, का लोप हो जाता है, यथा गम् + ति = गति। आहन् + ति = आहति। कभी-कभी ति के परे धातु के अंत में स्थित म को न होकर प्रथम स्वर दीर्घ हो जाता है, जैसे भ्रम + ति = भ्राति इत्यादि।

### अ ( घञ् )

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ प्रत्यय के योग से धातु के उपांत अ को आ हो जाता है और इ के स्थान में ए, उ को औ और ऋ को अर् हो जाता है, यथा स्वद + अ = स्वाद एवं अ प्रत्यय के योग से धातु के अंत में

इ, ई के स्थान में आय्, उ उ के स्थान में आव्, अ, अ के स्थान में आर् हो जाता है—यथा अघि इ + अ=अधाय इत्यादि। निम्न-लिखित प्रत्ययों के योग से विशेष्य शब्द कदाचित् संज्ञा शब्द निष्पन्न होते हैं—अक, तृ, इन, इण्, अन, उक, र, अ, आन, स्यमान, क्तिप्, न, तव्य, अनीय, य, स, इ, प (संस्कृत क्रम से) अक, तृण्, णिन, इण्, अन, उक, र, (ण, यण, श, उ, ) आन, स्यमान।

क्तिप्, न, तव्य, अनीय, य, क्यप्, द्यण्, सन्, भि, यङ् आदि प्रत्ययों का प्रयोग अर्थात् इस्तेमात्र—

(अक=णक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अक प्रत्यय होता है अर्थात् धातु के साथ अक प्रत्यय के योग से कर्तृबोधक शब्द निष्पन्न होता है। अक प्रत्यय के योग से धातु के हकारादि अंतस्वर के स्थान में आय् इत्यादि हो जाता है, एवं उपांत का अ दीर्घ आ हो जाता है और हकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है, एवं आकारांत अकारांत धातु के पीछे, अक प्रत्यय के पूर्व में, य का आगम हो जाता है, यथा नी + अक=नायक, पठ् + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कृ + अक=कारक, दा + अक=दायक।

(तृ=तृण)

धातु के उत्तर तृ प्रत्यय होने से कर्तृवाच्य होता है। तृ प्रत्यय के योग से धातु के अंत्य और उपांतिस हकारादि के स्थान में एकारादि होता है—यथा जि + तृ=जेता, नी + तृ=नेता, स्तु + तृ=स्तोता, कृ + तृ=कर्ता, हृ + तृ=हर्ता, आ + हृ + तृ=आहर्ता, छिद् + तृ=छेत्ता, भिद् + तृ=भेत्ता।

(इन्=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् प्रत्यय होता है। इन् प्रत्यय के योग में धातु के हकारादि अंतस्वर के स्थान में आय् प्रभृति हो जाता है, एवं उपांत के अ को आ हो जाता है और हकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है, एवं अकारांत धातु के उत्तर इन् प्रत्यय के परे षकार का आगम होता है, यथा शी + इन्=शायी, वद + इन्=वादी, भिद् + इन्=भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी।

(इण्)

चर, सह, वृध्, निर, आ, कृ और कई एक धातुओं के उत्तर में, कर्तृवाच्य में, इण् प्रत्यय होता है। इण् प्रत्यय के योग से धातु के अंत और उपांत एकारादि एकारादि हो जाते हैं, यथा चर् + इण्=चरिण्, वृध् + इण्=वर्द्धिण्, अलं, कृ + इण्=अलंकरिण् इत्यादि।

(अन)

ई (नि) युक्त पद प्रभृति कई एक धातुओं के परे कर्तृवाच्य में अन होता है, यथा नद् + इ + अन=नंदन, नश् + अन=नाशन, हन् + अन=घातन, मर्द् + अन=मर्दन, तृ + अन=तारण, भू + अन=भावन, मुह + अन=मोहन, पू + अन=पावन, भिज् उक्तरूप सब उपपद पूर्व में व्यवहृत किये जाते हैं—यथा विपन्नान, पतितपावन, गोपीमोहन इत्यादि।

(उ, उक)

कई एक धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में उक होता है, जैसे कम् + उक=कामुक इत्यादि।

(र)

दीप्, नम्, वम्, जिस प्रभृति कई एक धातुओं के परे कर्तृवाच्य में र होता है—यथा नम् + र=नन्न, हिस् + र=हिन्न।

अ (ण्, यण्, श, उ)

विशेष्य †विशेष्य किंवा अव्यय शब्द के पूर्ववर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ प्रत्यय होता है। अ प्रत्यय कई एक धातुओं में संयुक्त हो जाता है। और, अ प्रत्यय के परे कई एक धातुओं का अंत्य हकारादि एकारादि से परिवर्तित हो जाता है, अर्थात् बदल जाता है, और अ प्रत्यय के कई एक धातुओं का अंत्य वर्ण और तत्पूर्ववर्ती स्वर का लोप हो जाता है या धातु का अन्त्य अकार लुप्त हो जाता है—यथा मनस्, रम् + अ=मनोरम, कुम्भ, कृ + अ=कुम्भकार, पङ्क, जन् + अ=पङ्कज, सुख, दा + अ=सुखद।

(आन)

कई एक धातुओं के परे वर्तमान काल में कर्तृवाच्य में आन प्रत्यय होता है। जिस धातु के परे अकार आता

है, तदुत्तर आन के स्थान में मान हो जाता है। अन्य प्रकार के धातु के परे केवल आन प्रत्यय होता है; कर्म और भाववाच्य धातु के उत्तर यकार का आगम आता है और आन के स्थान में मान हो जाता है—यथा धाव + आन=धावमान, शी + आन=शयान कृ + आन=कुर्वाण, क्रिय + आन=क्रियमाण।

( स्थमान )

कर्तृ एवं कर्मवाच्य भविष्यत्काल में धातु के उत्तर स्थमान प्रत्यय होता है; किसी धातु के परे स्थमान प्रत्यय के पीछे हकार का आगम होता है—यथा दा + स्थमान=दास्थमान, जन + स्थमान=जनिष्यमाण।

( क्तिप् )

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्तिप् होता है। क्तिप् का कुछ नहीं रहता है, इस कारण शून्यमात्र प्रदर्शित होता है। क्तिप् प्रत्यय के परे वच् धातु प्रभृति का अकार दीर्घ हो जाता है और च् के स्थान में क् हो जाता है, एवं क्तिप् प्रत्यय के परे ज् और श् के स्थान में क् हो जाता है—यथा वच् + ० वाक्, आखु + भुञ्=आखुभुक्, दश् + ०=दक्।

( त=कृ )

गम् प्रभृति कई एक धातुओं एवं अकर्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है, और इससे भिन्न धातु के उत्तर कर्मवाच्य और प्रयोग-विशिष्ट उभयवाच्य में त प्रत्यय होता है—यथा अकर्मक गम् + त=गत, भी + त भीत, सकर्मक कृ + त=कृत परिच्छिद् + त=परिच्छिन्न, भिद् + त=भिन्न।

जिस धातु का औ अनुबन्ध नहीं है, उससे परे त प्रत्यय के पूर्व हकार का आगम होता है, एवं कृ, भू इत्यादि धातुओं के उत्तर, त प्रत्यय के पूर्व, हकार का आगम नहीं होता। यथा हकार का आगम—लिख् + त=लिखित।

अनागम भू + त=भूत, कृ + त=कृत। त प्रत्यय के योग में मकारांत और नकारांत धातु के म् और न् का लोप हो जाता है। कभी-कभी म को न हो जाता है तब प्रथम स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा लोप का उदाहरण—गम् + त=गत, हन् + त=हत। म को न और दीर्घ होने का उदाहरण—अम् + त आंत। त प्रत्यय के योग में धातु

का अंय हकार ग से परिवर्तित हो जाता है यर्थात् बदल जाता है—एवं त प्रत्यय का तकार ध से बदल जाता है और यह ग के साथ मिल जाता है। किसी-किसी धातु के ह और त प्रत्यय दोनों मिल कर एक ढकार से बदल जाते हैं और धातु का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है—यथा मुह् + त=भुग्ध, मुह् + त=मूढ।

त प्रत्यय के योग में मद धातु छोड़कर दकारांत धातु के द के स्थान में न और त प्रत्यय के त को भी न हो जाता है—यथा छिद् + त=छिन्न। डी प्रभृति धातु के परे त प्रत्यय के त के स्थान में न हो जाता है—यथा डी + त=डोन, उड् + त=उड्डीन।

शुप्, पच् धातुओं के उत्तर त प्रत्यय के तकार को क या व हो जाता है—यथा शुप् + त=शुक्, पच् + त=पक्। त प्रत्यय के योग में ऋकारांत धातु के ऋ को ह् हो जाता है एवं त प्रत्यय के त को न हो जाता है—यथा आ-कृ + त=आकीर्ण, उत् - तृ + त=उत्तीर्ण।

योग्यार्थ और कर्मवाच्य

( तव्य )

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ युक्त किया जाता है। प्रायः योग्यार्थ और कर्मवाच्य में तव्य होता है। तव्य के योग में धातु के अंय किंवा उपांत स्थित हकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है, एवं जिस धातु का ( औ ) अनुबन्ध नहीं है, ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, शिव, श्रि, डी, शी, पू, रु, तु, स्तु, क्षि, क्षण धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में हकार का आगम हो जाता है। तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ और ऋकारांत धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में हकार का आगम नहीं होता है, यथा चि + तव्य=चेतव्य, बुध + तव्य=बोद्धव्य, दा + तव्य=दातव्य।

कर्मवाच्य और योग्यार्थ

( अनीय )

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है। अनीय प्रत्यय के योग में धातु के अंय ह ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अव्, अर् हो जाता है, एवं उपांत के हकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है—यथा चि + अनीय=चयनीय, भिद् + अनीय=भेदनीय। भज्, यज्, जप्, आ, नम् धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ ( य=यय् )

किंवा ( य=व्यप् ) प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है, उसके पश्चात् प्रायः कर्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है। य प्रत्यय के योग में तव्य प्रत्ययांत धातु के अनुसार स्वर का परिवर्तन होता है, अर्थात् बदल जाता है, एवं धातु का अंत्य आ एकार से परिवर्तित होता है—यथा चि + य=चैय, भिद् + य=भेय, दा + य=द्वेय, धा + य=धेय, ज्ञा + य=ज्ञेय, वि-ज्ञा + य=विज्ञेय।

( य=व्यप् )

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शस् एवं ऋकारांत धातु के उत्तर एवं और कई एक धातुओं के उत्तर प्रायः कर्मवाच्य में नित्य ( य, व्यप् ) प्रत्यय होता है। कृ, वृप्, मृज्, गुद्, दुद्, शंस्, संप्रभृति वा अपि अभिपूर्वक ग्रह धातु के उत्तर विकल्प से ( य, व्यप् ) होता है। य प्रत्यय के योग में धातु के स्वर का परिवर्तन नहीं होता, अर्थात् वह नहीं बदलता—यथा भृ + य=भृय, गुह् + य=गुह्य। परंतु वृ, आ, भृ, स्तु, कृ धातुओं के उत्तर ( य, व्यप् ) प्रत्यय के पूर्व त का आगम हो जाता है—यथा भृ + य=भृत्य, आ + द + य=आदृत्य।

इकारांत या उकारांत एवं हलंत अथवा ऋकारांत धातु के उत्तर कर्मवाच्य में ( य, व्यप् ) हो जाता है। य प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अंत्य स्वर आद्य आदि के रूप में बदल जाते हैं, एवं उपांत का इकारादि स्वर एकारादि में परिवर्तित हो जाता है। जन्, बध् धातु को छोड़ अन्य धातु के उपांत्य अ को आ हो जाता है, यथा ध्रु + य=आव्य, दुह् + य=दोह्य, क्रम् + य=क्राम्य।

( इ, जि )

धातु के परे प्रेरणार्थ में और स्वार्थ में इ प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय के होने में शब्द निष्पन्न नहीं होता है। धातु के उत्तर इ प्रत्यय किया जाय, उसके परे और कोई एक प्रत्यय करते हैं। इ प्रत्यय के परे धातु के अंत्य इकारादि के स्थान में आद्य इत्यादि एवं उपांत्य के इकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है; परंतु कभी-कभी इ प्रत्यय का लोप भी हो जाता है, या कभी इ प्रत्यय का परिवर्तन अय से हो जाता है—यथा कृ + इ + त=कारित, कृ + इ + तृ=कारयिता, चुर् + इ + त=चोरित।

( स, सन् )

धातु से परे इच्छार्थ में स प्रत्यय होता है। इस स

प्रत्यय के करने में और एक प्रत्यय का योग होता है। य प्रत्यय के परे एक स्वर के सहित धातु के आद्य अक्षर की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व हो जाता है, एवं द्विरुक्ति के क को च हो जाता है और ग को ज और भ को ब एवं ध को द होता है—यथा कृ + स + आ=चिकीर्षा, पा + स + आ=पिपासा, गुप् + स + आ=जुगुप्सा।

स प्रत्यय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दित्, हप् हो जाता है—यथा लभ् + स + आ=लिप्सा, दा + स + आ=दित्सा, वि + आप् + स + आ=वीप्सा।

( य, यङ् )

धातु के उत्तर पुनः-पुनः अर्थात् वारंवार अर्थ में य प्रत्यय होता है। य प्रत्यय के परे एक प्रत्यय और होता है। य प्रत्यय के परे एक स्वर सहित धातु के आद्यवर्ण की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व हो जाता है, एवं द्विरुक्ति के क को च हो जाता है, ग को ज और ध को द एवं भ को ब हो जाता है—यथा दाप् + य + अन=देदोप्यमान। इस य प्रत्यय का किसी-किसी स्थान में लोप भी हो जाता है, किंतु य प्रत्यय का कार्य समुदाय होता है, पीछे अन्य प्रत्यय का योग हो जाता है, यथा क्रम् + अन=चंक्रमण।

### तद्धित प्रकरण

तद्धित उसे कहते हैं, जो शब्दार्थ में विशेषता प्रकट करे, जिससे संज्ञा के अंत में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं। जो प्रत्यय भाषा में व्यवहृत हैं, उन्हें नीचे लिखते हैं। तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती हैं।

१ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती है, नामवाचक के पहले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होने से—जैसे, शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, गौतम से गौतम, मनु से मानव, वशिष्ठ से वाशिष्ठ, महानंद से महानंदी, रामानंद से रामानंदी।

२ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार के कर्ता को बतावे। संज्ञा में वाला, हारा, ह्या, इन प्रत्ययों के लगाने से यह बनती है, जैसे बुद्धिहारा, दूधवाला, आदित्या इत्यादि।

३ भाववाचक संज्ञा, और संज्ञाओं में इन प्रत्ययों के

लगाने से बनती है—ता, त्व, आह्, ह्, पन, पा, वट, हट, स हस्यादि। उदाहरण—चतुराह्, बोधाह्, लङ्काह्, लंबाह्, पशुत्व, उत्तमता, मित्रता, बालकपन, बुढ़ापा, बनावट, चिकनाहट।

४ ऊनवाचक संज्ञा अक, ह्या, आ, वा लगाने से और आ को ह् आदेश करने से बनती है, जैसे मानव से मानवक, वृक्ष से वृक्षक, घोड़ी से घोड़िया, बच्चा से बचुआ, मर्द से मर्दक, पलंग से पलंगदी।

५ गुणवाचक संज्ञा नीचे लिखे प्रत्ययों के लगाने से बनती है—आ, इक, इन्, ह्य-या-ह्-हला, एला, ऐला, लु, लृ, ल, वंत, वान्। जैसे—प्यास से प्यासा, भूख से भूखा, शरीर से शारीरिक, स्वभाव से स्वाभाविक, आनंद से आनंदित, समुद्र से समुद्रिय, भाँक से भाँकिया, उन से उनी, साज से सजोला, घर से घरेला, बन से बनेला, दया से दयालु, भगड़ा से भगड़ाळ, कृपा से कृपालु, कुल से कुलवंत, आशा से आशावान्।

### कृदंत

क्रिया से परे जो प्रत्यय होते हैं, जिनसे कर्तृत्व या व्यापार का बोध होता है, उन्हें कृन् कहते हैं। उनके आने से जो शब्द बनते हैं, उन्हें कृदंत अथवा क्रिया-वाचक संज्ञा कहते हैं; क्योंकि वे प्रायः क्रिया के सदृश अर्थ को प्रकट करते हैं।

भाषा में पाँच प्रकार की संज्ञाएँ क्रिया से बनती हैं, अर्थात् कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक। उनके बनाने की रीति नीचे लिखी है।

१ जिससे कर्तापन का बोध हो, वह कर्तृवाचक है। उसके बनाने की रीति यह है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए करके इसके आगे हारा, वाला लगा देते हैं—यथा करनेवाला, मारनेहारा इत्यादि। स्त्रीलिंग में अंत्य आ को ई से बदल देते हैं—यथा करनेवाली, मारनेहारी, दान देनेवाली।

धातु के न चिह्न का लोप करके अक, ह्या, वैया प्रत्यय करने से भी कर्तृवाचक संज्ञा हो जाती है; यथा—पालना से पालक, जड़ना से जड़िया, जीतना से जित-वैया। यदि धातु का स्वर दीर्घ हो, तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व कर देते हैं—यथा खाना से खवैया, गाना से गवैया आदि।

२ जिस संज्ञा से कर्मत्व जाना जाता है, उसे कर्म-वाचक संज्ञा कहते हैं। वह कर्मक क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि धातु के न चिह्न को पुंलिंग में आ से और स्त्रीलिंग में ई से बदल देते हैं। उसके पूर्व स्वर का लोप करके आ और ई को मिला देने से कर्मवाचक संज्ञा हो जाती है, अथवा उस रूप के आगे हुआ लगा देते हैं। यथा—देखना से देखा, मारना से मारा, अथवा मारा हुआ, देखा हुआ; स्त्रीलिंग में मारी हुई, देखी हुई आदि।

३ भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं, जिसके कहने से पदार्थ का भ्रम या स्वभाव समझा जाय, अथवा जिससे किसी व्यापार का बोध हो। व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती है। यथा—कहीं धातु के ना का लोप कर देने से, कहीं ना को आच् आदेश करने से, कहीं-कहीं धातु के ना के आ का लोप करने से, कहीं आ का लोप करके आ, ई लगाने से और कहीं ना का लोप करके आवट, आहट, अथवा वट, हट लगाने से। जैसे—बोलना से बोल, चढ़ना से चढ़ाव, देना लेना से देन-लेन, मारना-पीटना से मार-पीट, बोलना से बोआह्, ठगना से ठगाह्, सिखना से सिखावट, लिखना से लिखावट।

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है। उसका नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई कर देने से, कहीं-कहीं ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई-कोई धातु ही करणवाचक का काम देती है। यथा—कतरना से कतरनी, खोदना से खोदनी, धरना से धरा, फेरना से फेरा। 'बेलना' यह धातु ही करण का काम देती है।

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है, जो संज्ञा का विशेषण होकर निरंतर क्रिया को बतावे। यह धातु के न चिह्न को ता अथवा ती करने से बनती है, अथवा उसके आगे हुआ लगाने से। यथा—देखना, देखता हुआ इत्यादि।

### अव्यय

अव्यय अर्थात् अ=नहीं, व्यस्य=नाश, क्षय अथवा मूल। अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिंग, वचन, कारक के

१ सदृश त्रिपु लिङ्गपु सर्वासु च विभक्तिपु।

वचनपु च सर्वपु यत्र व्यंति तदव्ययम् ॥ १ ॥

कारण विकार नहीं होता है, जो सदा एक-सा रहता है।  
अव्यय चार प्रकार के हैं—क्रियाविशेषण, उभयान्वयी,  
शब्दयोगी, विस्मयादिबोधक। देशभाषा में क्रिया-  
विशेषण नारंवार आते हैं। वे पाँच सर्वनामों से बने हैं।  
उनका विस्तृत विवरण आगे दिया जाता है। यह, वह,  
कौन, जोन, तौन—इन पाँच सर्वनामों से स्थलवाचक,  
कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक ये क्रिया  
विशेषण-अव्यय बनते हैं।

यह	वह	कौन	जोन	तौन	
१ अब	० कब	जब	तब	कालवाचक	
	कद	जद	तद		
२ यहाँ	वहाँ	कहाँ	जहाँ	तहाँ	स्थलवाचक
३ हृथर	उथर	रुथर	जिथर	तिथर	
४ यों	वों	क्यों	र्यों	उ्यों	गुणवाचक या
५ ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	प्रकारार्थक
६ हत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७ हत्तना	उत्तना	कित्तना	जित्तना	तित्तना	

समुच्चयबोधक या उभयान्वयी अव्यय वे हैं जो दो  
शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद  
के भिन्न-भिन्न क्रिया-सहित, अव्यय का संयोग अथवा  
विभाग करते हैं। इन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय  
कहते हैं। जैसे—राम और कृष्ण आये।

संयोजक अव्यय	विभाजक अव्यय
औ	या
और	अथवा
एवं	कया
अथ	भो
कि	पुनर्
तो	पुनः
फिर	चाहे
	जो

शब्दयोगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न  
आवें, तो क्रियाविशेषण होते हैं। नाम या सर्वनाम के  
साथ का उदाहरण—जिस लिये, उस विना, किस लिये  
इत्यादि; गोपीसहित कृष्ण आये, गोपाल-समेत कृष्ण  
आये। क्रियाविशेषण, जैसे—बाहर गया, पीछे गया।

#### शब्दयोगी अव्यय

आगे, पीछे, भीतर, ऊपर, बाहर, बराबर, बदल,

बदले, समीप, बीच, पास, तले, ऊपर, विना, साथ,  
सहित, समेत, समूह, लिये, प्रभृति।

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय—जिन  
अव्ययों से कहनेवाले के दुःख, हर्ष, धिक्कार, धन्यता,  
इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है, वे विस्मया-  
दिबोधक हैं।

दुःख और धिक्कारबोधक—वापरे, हाय हाय, अरे,  
रे, हा, धिक्, दूर दूर, चुप छुा, त्राहि। हर्ष और धन्य-  
ताबोधक—जय-जय, शाबाश, वा बाह, धन्य-धन्य।  
सम्बुद्धिकरण बोधक—अय, आ, अरे, अवे।

नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहलाते  
हैं ( उप=ऊपर + सृज्=सर्ग, सृज्=बनाना )। उपसर्ग  
प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त होकर क्रिया के भिन्न-  
भिन्न अर्थ का प्रकाश करते हैं। वे एक से लेकर चार तक  
क्रिया के पूर्व में आते हैं। यथा—विहार, व्यवहार, सुव्य-  
वहार, समभिव्यवहार। उपसर्ग द्योतक हैं, वाचक नहीं।  
संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाशित करते हैं; असंयुक्त  
रहने से निरर्थक रहते हैं। उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल  
जाता है। यथा—हार, आहार, प्रहार, संहार इत्यादि।

#### संधि-प्रकरण

- १ अक्षरों के मेल को संधि कहते हैं।
- २ उनमें आगम और आदेशादि होते हैं।
- ३ पद के बीच में ऊपर से जो अक्षर आता है, वह  
आगम कहा जाता है।
- ४ किसी वर्ण के स्थान में जो दूसरा वर्ण बनाया  
जाता है, उसे आदेश कहते हैं।

#### स्वर-संधि

- ५ जब इ, ई, उ, ऊ, अ, आ, लृ, लृ से कोई अस-  
वर्ण \* स्वर पर होता है, तब उक्त वर्णों के स्थान  
में क्रम से य् व् र् ल् का आदेश किया जाता है।  
उदाहरण—यथा यदि+अपि=यथापि, देवी+आगता=  
देव्यागता। यहाँ इ ई को य् आदेश हुआ और मधु+  
अत्र=मध्वत्र, वधू+आगमन=वध्वागमन—यहाँ उ ऊ

\* उपसर्गेष्वध्वात्थं बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

\* विजातीय, गैर जाति का।

- को व्, तथा पितृ+अर्थ=पित्रर्थ, यहाँ अ को र् और लृ+हृत्=लित्, यहाँ लृ को ल् आदेश हुआ है।
- ६ जब ए ऐ, ओ औ के पीछे कोई स्वर आता है, तब चारों वर्णों को क्रम से अय् आय् अय् आव् आदेश हो जाता है। यथा—जे अति=जयति। शे आते=शयाते। विनै अक=विनायक। भो अन=भवन। पी अक=पावक इत्यादि।
- ७ परंतु पद के अंत में ए, ओ से परे ह्रस्व अकार आने पर अकार का लोप हो जाता है। यथा—ते अत्र=तेऽत्र। पटो अत्र=पटोऽत्र इत्यादि।
- ८ जिस संज्ञा अर्थात् नाम के अंत में विभक्ति हो, उस (विभक्ति-सहित) को पद कहते हैं।
- ९ अ इ उ अ लृ ये ह्रस्व, आ ई ऊ अ ए ऐ ओ औ दीर्घ, और अ ३ इ ३ उ ३ अ ३ लृ ३ ए ३ ऐ ३ ओ ३ औ ३, ये प्लुत कहाते हैं। परमात्रिक को ह्रस्व, द्विमात्रिक को दीर्घ और त्रिमात्रिक को प्लुत कहते हैं। मात्रा का अर्थ परिमाण है।
- १० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम हो जाता है। यथा—गो ईद्रः=गो अ ईद्रः, यहाँ अकार का आगम हुआ=गव ईद्रः, यहाँ ओ का अय् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिल गया और नियम १२ के अनुसार गवेंद्रः सिद्ध हुआ। गो अग्रम्=गवाग्रम्। गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ।
- ११ अ आ से परे इ ई हो, तो दोनों मिलकर ए, अ आ से उ ऊ परे हो तो ओ, अ आ से ए ऐ परे हो तो ऐ तथा अ आ से परे ओ औ हो, तो औ बन जाता है। यथा—उप + ईद्र=उपेंद्र। महा + उदय=महोदय। एक + एक=एकैक। महा + ऐश्वर्य=महैश्वर्य। जल + ओघ=जलोघ। महा + औदार्य=महौदार्य।
- १२ अ आ अ ३, ये तीनों आपस में सवर्ण कहे जाते हैं। इसी प्रकार इ ई इ ३ इत्यादि स्वर सवर्ण कहाते हैं।
- १३ जब अ इ उ अ वर्णों से कोई इच्छा का सवर्ण स्वर परे हो, तो दोनों मिलकर एक दीर्घ आदेश बन जाता है। यथा—शश अंक=शशांक। देव आजल्य=देवाजल्य। क्षिति ईश=क्षितीश। विधु उदय=विधूयय। स्वयंभू उदय=स्वयंभूदय। पितृ अण्य=पितृण्य।

- १४ जब पद के अंत में ई या ऊ हो और इनके परे सवर्ण स्वर को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो, तो ये ह्रस्व हो जाते हैं। यथा—चक्री अत्र=चक्रिअत्र। दूसरा रूप नियम ५ से चक्रयत्र होता है।
- १५ जब आ से परे अ हो, तो आ को अ भी होता है। यथा—ग्रहा अपि=ग्रहाअपि। दूसरा रूप नियम १६ से ग्रहापि होता है।
- १६ अ आ से परे अ हो, तो दोनों के मिलने से अर् और कभी आर् भी हो जाता है। यथा—देव अपि=देवपि। महा अपि=महपि। शीत अत=शीतार्त इत्यादि।
- १७ अकार से परे लृ हो, तो दोनों को अल् हो जाता है। यथा—तव लृकारः=तवल्कारः।

### प्रकृतिभाव

प्रकृतिभाव का अर्थ है संधि न होना, उ्यों का त्यों रहना

- १८ अम् वा अमी शब्द से परे स्वर हो, तो संधि नहीं होगी। यथा—अम् आसाते। अमी अश्वाः। यहाँ नियम ५ से ऊ को व् और ई को य् आदेश नहीं हुआ।
- १९ किसी द्विवचन शब्द के अंत में ई, ऊ, ए स्वर हों और इनके आगे कोई स्वर आवे, तो संधि नहीं होगी। यथा—अग्नी अत्र। पटू अत्र। माले आनय। इत्यादि। यहाँ अग्नी पटू माले द्विवचनांत हैं। इन शब्दों के स्वरों को य् व् अय्, नियम ५ और ६ से, आदेश नहीं हुए; परंतु मणीय आदि शब्दों में नियम १३ के अनुसार संधि हो गई। यथा—मणी हव=मणीव। दग्गती हव दग्गतीव इत्यादि।
- २० आकार ओकार की निपात संज्ञा है, इनमें और एक स्वर में संधि नहीं होती है। यथा—आ एवं मन्यसे। नो अत्र स्थानव्यम्। उ उत्तिष्ठ। इन उक्त शब्दों में निपात और एक स्वर होने से संधि नहीं हुई।
- २१ जब किसी संबोधनांत (दूर से बुलाने) शब्द में स्वर हो तो वह प्लुत हो जाता है और प्लुत की अगले स्वर से संधि नहीं होती। यथा—देवदत्त ३ एहि,

यज्ञदत्त ३ आगच्छ । यहाँ अ प मिलकर ऐ और  
अ आ मिलकर आ नहीं हुआ ।

### व्यंजनसंधि

- २० स और तवर्ग को शकार तथा चवर्ग के परे क्रम से  
शकार और चवर्ग बन जाता है । यथा—कस् चरति=  
कश्चरति । कस् शूरः=कश्शूरः । तन् चित्रम्=  
तच्चित्रम् । राजन् जयः=राजजय । इत्यादि ।
- २१ यदि पद के अंत में त अथवा द के परे श हो, तो  
त द के स्थान में च, और श के स्थान में छ आदेश  
हो जाता है । यथा—जगत् शरणम्=जगच्छरणम् ।  
तत् शास्त्रम्=तच्छास्त्रम् । तत् शरीरम्=तच्छरीरम् ।
- २४ श से परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता । यथा—  
विश्व नः=विश्वनः । प्रश्नः=प्रश्नः ।
- २५ स और तवर्ग के परे प और टवर्ग हो, तो क्रम से प  
और टवर्ग हो जाता है । यथा—तत् टीका=तट्टीका ।  
कम् टीकते=कट्टीकते । कस् पठः=कटपठः । उत  
डीनम्=उट्टीनम् । पेप्ता=पेट्टा । शिप् तः=शिष्टः ।
- २६ यदि तवर्ग से परे प हो, तो टवर्ग न होगा । यथा—  
सन् पठः । यहाँ नियम २५ से न को गु नहीं बना ।
- २७ पद के अंत में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय,  
चतुर्थ वर्ण और य व ल से परे य म ङ ण न हों  
तो पूर्वोक्त वर्णों में से जो जिस वर्ग का हो, उसको  
उसी का पंचम वर्ण हो जाता है । यथा—वाक् मयम्=  
वाङ्मयम् । चिन् मयम्=चिन्मयम् । एतत् मुरारिः=  
एतन्मुरारिः । यहाँ क् और त् को उसी का पंचम ङ्  
और न् बन गया ।
- २८ तवर्ग से परे लकार हो, तो त को ल हो जाता है,  
परंतु नकार का लें अनुनासिक बन जाता है । यथा—  
तत् लीला=तल्लीला । महान् लाभः=महल्लान्भः ।
- २९ वर्ग के प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्ग का पंचम  
अक्षर परे हो, तो इनका भी अपने वर्ग का पंचम  
वर्ण प्रायः बन जाता है । यथा—स्वक् मांसम्=स्व-  
ज्जांसम् । दूसरा रूप नियम ३० से स्वमांसम्  
हुआ । तन् मित्रम्=तन्मित्रम् ।  
च ट त क प को ज ङ द ग ब आदेश हो जाते हैं,  
यदि स्वर या ह य व र या वर्ग का तृतीय चतुर्थ  
वर्ण परे हो तो । यथा—वाक् ह्रस्वरः=वागीश्वरः ।

धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दा-  
नम् । जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महदधनुः ।  
अच् अंतः=अजंतः । पट् अत्र=पडत्र । ककुप् ऐद्री=  
ककुबद्री इत्यादि ।

- ३१ किसी वर्ग के दूसरे, तीसरे, चौथे अक्षर को उन-उनका  
प्रथम अक्षर भी हो जाता है, यदि वर्ग के प्रथम  
द्वितीय वर्ण वा श प स परे हों । यथा—उद्  
थानम्=उत्थानम् । त्वग् तत्र=त्वक्त्र इत्यादि ।
- ३२ यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्ण  
से परे इ हो, तो ह का उसी का चतुर्थ अक्षर हो  
जायगा । पीछे नियम ३० के अनुसार कार्य होगा ।  
यथा—वाक् हासः=वाग्हासः । त्वच् हीनः=त्व-  
ज्मीनः । पट् हसति=पडहसति । तत् हविः=  
तद्वविः । ककुप् हासः=ककुट्हासः ।
- ३३ ह्रस्व स्वर से परे छ हो, तो उसके पूर्व च का आगम  
होता है अर्थात् च अधिक हो जाता है । परंतु दीर्घ-  
स्वर से परे च होता है और कभी नहीं भी होता  
है । यथा—परि छदः=परिच्छदः । वृत् छाया=  
वृत्छाया । लक्ष्मी छाया । लक्ष्मीछाया ।
- ३४ अनुस्वार से परे किसी वर्ग का कोई अक्षर हो, तो  
अनुस्वार को उसी वर्ग का पंचम वर्ण बन जाता है ।  
यथा—अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंठ=कण्ठ । अंत=  
अन्त । अंध=अन्ध । अंब=अम्ब ।
- भाषा के ज्ञाता अनुस्वार को अनुस्वार ही लिखते  
हैं और संस्कृतज्ञ अनुस्वार के बदले वर्ग का पंचम-  
वर्ण काम में लाते हैं; परंतु लिखना दोनों रीति  
से प्रचलित है ।
- ३५ ह्रस्व स्वर से परे ङ् ण् न् हों और इनके परे स्वर  
हो, तो इनकी द्वित्व हो जाता है । यथा—प्रत्यङ्  
आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा । सुगण् इह=सुगण्णिह ।  
धावन् अश्वः=धावक्श्वः ।

### विसर्गसंधि

- ३६ जब किसी वर्ग में त, थ, स, परे हों तो विसर्ग ( : )  
को स आदेश होता है । यथा—उन्नतः तरुः=उन्नत-  
स्तरुः । नद्याः तीरम्=नद्यास्तीरम् । रामः तंबदति=  
रामस्तंबदति । यज्ञदत्तः सनोति=यज्ञदत्तस्सनोति ।
- ३७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हों, तो विसर्ग को प



- आदेश हो जाता है । यथा—धनुः टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः । भग्नः ठङ्कुरः=भग्नष्टङ्कुरः । कः षष्टः=कषष्टः ।
- ३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श हों तो विसर्ग ( ) को श आदेश होता है । यथा—पूर्णः चंद्रः=पूर्णचंद्रः । रवेः छविः=रवेश्छविः । नरः शङ्कते=नरशङ्कते ।
- ३९ यदि पद के मध्य में न् वा म् हो, तो उसको अनुस्वार हो जाता है, अगर वर्गों का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण और श ष स ह परे हों । यथा यशान् सि=यशांसि । किम् करोपि=किंकरोपि ।
- ४० यदि पद के अंत में म् हो, उससे परे व्यंजन हो, तो म् को अनुस्वार हो जाता है । यथा—हरिम् वंदे=हरिं वंदे । चंद्रम् पश्यति=चंद्रं पश्यति ।
- ४१ यदि अकार के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्व अकार हो, तो पूर्व अकारसहित विसर्ग को ओ आदेश हो जाता है । उस ओ में पूर्व वर्ण को मिला देते हैं । ओ से परे अकार का लोप करके ऽ ऐसा रूप लिख देते हैं, यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः अयम्=नरोऽयम् ।
- ४२ यदि अः के परे वर्ग का तृतीय चतुर्थ अथवा ह, य, व, र, ल, न, म हों, तो अः को ओ बन जाता है यथा—चौरः हरति=चौरो हरति । नरः याति=नरो-याति । पठितः भवति=पठितो भवति । इत्यादि ।
- ४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई स्वर अथवा ह, य, व, र, ल, न, म या किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण हो, तो विसर्ग को र् हो जाता है, यथा—कविः अयम्=कविरयम् । शत्रुः हतः=शत्रुहृतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् । इत्यादि ।
- ४४ यदि सः और एपः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर या व्यंजन वर्ण हो, तो सः और एपः के विसर्गों का लोप हो जाता है और लोप होने पर संधि नहीं होती है, यथा—सः आगतः=स आगतः । सः इच्छति=स इच्छति । सः करोति=स करोति । सः हसति=स हसति । एपः आयाति=एप आयाति । एपः शते=एप शते । इत्यादि ।
- ४५ यदि श्लोक या ऋचा का पाद ३ ( चौथाई ) पूर्ण करना हो, तो संधि हो जायगी । यथा—सः एष दाशरथी रामः=सैष दाशरथी रामः ।

- सः एष राजा युधिष्ठिरः=सैष राजायुधिष्ठिरः । सः एष कर्णो महात्यागी=सैष कर्णो महात्यागी । सः एष भीमो महाबलः=सैष भीमो महाबलः । यहाँ विसर्ग का लोप होने पर भी संधि हो गई ।
- ४६ अ से परे विसर्ग का लोप हो जाता है, जब कि अ को छोड़ कोई अन्य स्वर परे हो । यथा—देवः आगच्छति=देव आगच्छति । तथा आ से आगे विसर्ग का भी लोप हो जाता है, यदि कोई स्वर या वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अथवा ह य व र ल परे हों । यथा मनुष्याः निवसन्ति=मनुष्या निवसन्ति । वाताः वांति=वाता वांति इत्यादि ।
- ४७ यदि अ इ उ में विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग को हल र आदेश होकर उसका लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है यथा—पुनः रमते=पुनर् रमते=पुनारमते । शुक्रिः रूप्यात्मना भाति=शुक्रिरूप्यात्मना भाति=शुक्रीरूप्यात्मना भाति । इत्यादि ।
- ४८ यदि स्वर या वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह भोः पद के परे हों, तो भोः के विसर्ग का लोप हो जाता है । लोप होने पर संधि नहीं होती है । यथा—भोः नदाधर=भो गदाधर । भोः अग्घ-रीप=भो अंघरीप । इत्यादि ।
- ४९ कभी स्वर के परे भोः शब्द के विसर्ग को य् भी बन जाता है, यथा—भोः ईशान=भोयीशान । भोः उमापते=भोयुमापते ।

### गुणविविधान

- ५० ऋ अर प, इनके परे न को ण आदेश होता है । यथा—नृ नाम्=नृणाम् । मानृ नाम्=मानृणाम् । सर्वेन=सर्वेण । पूप् ने=पूप्णे इत्यादि । यदि स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग अथवा य, व, ह और अनुस्वार मध्य में व्यवधान करनेवाले अर्थात् रोकनेवाले हों तो भी न को ण बन जायगा । यथा मूर्खेन=मूर्खेण । दर्पेन=दर्पेण । मृगेन=मृगेण । पूर्वोक्त वर्णों को छोड़ और वर्णों का व्यवधान होने से न को ण कभी न होगा । यथा—अर्चना, दहेन, अर्थेन इत्यादि में न को ण नहीं हुआ ।

५१ पद के अंत में नू हो तो यह कभी न होगा। यथा—  
हरीन्, गुरुन्, इनरान् इत्यादि।

### पदविधान

५२ अ आ भिन्न स्वर और क, र ल के परे प्रत्यय का जो सकार आता है, उसके स्थान में मूर्द्धन्य पकार हो जाता है। यथा—मुनिस्=मुनिपु। साधुस्=साधुपु। भ्रातृस्=भ्रातृपु। सर्वेसाम्=सर्वेषाम्। इत्यादि। अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्द्धन्य प हो जाता है, यथा—धनूंसि=धनूपि। हवींसि=हवीपि। धनुःस्=धनुःपु। आशीः सु=आशीःपु इत्यादि।

५३ संहितैकपदं नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।  
नित्या समासे वाक्ये तु, सा विवक्षामपेक्षते ॥

अर्थ—सधि एक पद में और धातु उपसर्ग समास में सर्व्व होती है और जब पद मिलकर वाक्य बने, तब वक्रा के अधीन है।

### पद

विभक्तिहीन शब्दों का नाम कहते हैं, वही नाम विभक्ति-युक्त होने से पद कहलाता है।

पदों के मेल को समास कहते हैं।

समास ६ प्रकार के हैं—

१ अव्ययीभाव २ तत्पुरुष ३ द्वंद्व ४ बहुव्रीहि ५ कर्मधारय ६ द्विगु।

१ अव्ययीभाव उसे कहते हैं, जिसमें समीप, आदर, उल्लंघना, अभाव के अर्थ पाए जायें। समास कई एक पदों के मेल से होता है, उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है। यथा—निर्दोष। यथाशक्ति। उपक्ल। निर्विप। आसमुद्र। प्रतिगृह। सज्ज।

२ तत्पुरुष उसे कहते हैं, जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि से सप्तमी पर्यंत कोई विभक्ति युक्त हो और परे के

पद में प्रथमा विभक्ति हो। यथा—घर-गया। लोभ-जित। धनलोभी। सर्पभय। राजपुत्र। पुरुषोत्तम। ये शब्द द्वितीयादि से सप्तमी तक विभक्ति युक्त हैं।

३ द्वंद्वसमास उसे कहते हैं, जिसमें परस्पर पद विशेष्य विशेषण न हों; पर प्रथमा विभक्तियुक्त अनेक पद हों। इस समास के मध्य में, संस्कृत में च अक्षर और भाषा में च के स्थान में 'और' आता है; पर समास बनने से उसका लोप हो जाता है। यथा—राम-लक्ष्मण। मातापिता। इनके मध्य में 'और' का लोप है।

४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं, जिसमें कई पदों से समास बनाया जाय, पर पदों का अर्थ ठीक-ठीक न पाया जाय, विशेष वस्तु या व्यक्ति का अर्थ समझा जाय। बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य पद आते हैं; भाषा में यद् का वाचक 'जिस' शब्द का रूप अवश्य आता है। यथा—दीर्घबाहू। इस स्थल में बड़ी दो भुजा न समझी जायगी, बल्कि बड़ी हैं भुजाएँ जिस पुरुष की, वह पुरुष समझा जायगा अर्थात् दो भुजावाला पुरुष। चंद्रशेखर। त्रिशूलपाणि। चक्रपाणि। जलज। वंशधर। निर्मलजला; ये समासांत पद अपना अर्थ त्याग विशेष अर्थ बताते हैं, इससे दूसरे के विशेषण होते हैं।

५ कर्मधारय समास उसे कहते हैं, जो विशेष्य और विशेषण के योग से बने। मुख्य संज्ञा तो विशेष्य, और उसके गुण धर्म को जो बतावे, वह विशेषण है। यथा—उज्जततरु, नीलकमल, श्वेतवस्त्र, सुंदर-पुरुष। पूर्व पद विशेषण और परे का पद विशेष्य हो तब कर्मधारय-समास बनता है।

६ द्विगु समास उसे कहते हैं, जिसमें पूर्वपद संख्या-वाचक और परे का पद समाहार अर्थात् अनेक वस्तुओं का बोधक हो, यथा—त्रिभुवन, पञ्चपात्र, त्रिनेत्र, चतुर्गुण, पद्भ्यस्तु।

ॐ सच्चिदानन्दमूर्तेये नमः ।

## श्रीधर-भाषा-कोष

अ

अह

अ देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ उलटा हो जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक । जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है, तो अ के स्थान में अन् हो जाता है और न् को शब्द के आदि स्वर में मिला देते हैं, जैसे अन्+अंत=अनंत, अन्+एक=अनेक इत्यादि । सादर्य, अभाव, अभेद, अल्पता, अप्राशस्त्य और विरोध, ये छः अर्थ 'अ' के होते हैं ।

अ ( अन्=वचाना ) ( पु० ) रक्षक, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरु, वायु, कृपा, समर्थ, अधिपति, मालिक ।

अंश ( अंश=बँटना ) ( पु० ) भाग, बाँट, बाँटा, टुकड़ा, हिस्सा, दर्जा, भू-मंडल का तीन सौ साठवाँ भाग, पितृधन का भाग ।

अंशक ( अंश+क ) ( पु० ) बाँटनेवाला, हिस्सेदार, साझी ।

अंशल ( सं० पु० ) चाणक्य मुनि ।

अंशसुता ( स्त्री० ) यमुना नदी ।

अंशांश ( पु० ) ( अंश+अंश ) अंश का अंश, भाग का भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

अंशी ( अंश+ई ) ( पु० ) बँटाऊ, बँटानेवाला, बँटवैया, साझी, हिस्सेदार ।

अंशु ( अंश+उ ) ( पु० ) सूर्य की किरण, तेज, उजाला, प्रकाश, प्रभा, तागा, सूक्ष्म भाग, पतला वस्त्र ।

अंशुक ( अंशु+क ) ( पु० ) वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रेशम, किरण-समूह ।

अंशुजाल ( अंशु=किरण, जाल=समूह ) ( पु० ) किरण समूह, शुभाँष ।

अंशुधर ( अंशु=किरण, धर=धरनेवाला ) ( पु० ) किरण-धारी, सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, दीप, दिया, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी ।

अंशुमान् ( पु० ) सूर्य, चंद्रमा, एक सूर्यवंशी राजा का नाम, असमंजस का पुत्र, सगर राजा का पोता । सगर के साठ हजार पुत्र महर्षि कपिल के शाप से भस्म हो गए थे ; इन्होंने महर्षि को प्रसन्न करके उनका उद्धार किया था ।

अंशुमालिन् } ( अंशु=किरण, माल=पांति ) ( पु० )  
अंशुमाली } सूर्य, आक्रान्त, अग्नि ।

अंसकूट ( पु० ) कुबड़, साँड़ के कंधे पर की मीर ।

अंसुआ ( पु० ) आँसू, अश्रु, आँखों का जल, इसका पथ में प्रयोग होता है ।

अंसुवाना ( कि० अ० ) आँसू आना, आँसू से भर जाना, आँसू डबडबा आना ।

अंसनि ( सं० अंश, अंस=बँटना ) ( पु० ) किरण, भाग, कंधे ।

अंसल ( सं० अंसल=बँटानेवाला ) ( वि० ) साझी, हिस्सेदार, बलवान्, मोटे कंधेवाला, दृढ़काय ।

अंह ( पु० ) पाप, कुकर्म, विघ्न, बाधा ।

अंहति ( अंह=जाना+ति ) ( स्त्री० ) त्याग, दान, परित्याग, रोग ।

अंहस् ( अंह+यस् ) ( पु० ) पाप, स्वधर्म-त्याग, गुनाह, दुःख, घबराहट, बाधा, विघ्न, क्लमप, अध ।

अंहि ( पु० ) चरण, पांव, हाऊवर ।

अंहडी ( स्त्री० ) लता-विशेष, इसके फल छोटे और गोल पेटे के होते हैं, इसके फलों की तरकारी बनती है, और बीज दवा के काम में आते हैं, बाकला ।

अउ ( अ+य ) श्री, और, तथा ।

अउठा ( पु० ) एक नापने की दो हाथ लंबी लकड़ी, जो जुलाहे रक्खा करते हैं ।

अउर ( अ+य ) और ।

अऊत ( पु० ) जिसके संतान न हो, संतानहान, अपुत्री, मृत्यु, कारा ।

अऊलना ( क्रि० प्र० ) गरम होना, जलना, गरमी पड़ना, क्रोध करना ।

अएरना ( क्रि० प्र० ) स्वीकार करना, अंगीकार करना ।

अफ ( पु० ) पाप, पातक, दुःख ।

अफच ( सं० वि० ) जिसके बाल न हों, बिना बालवाला, बालरहित, ( पु० ) केतु ग्रह ।

अफचट्ट ( अ=नहीं, कच=बंधना ) ( वि० ) गंगा, मेहरा, लंपट, हरैला, व्यभिचारी; दिगंबर-जैन-संप्रदाय के साधु, जिनको निर्ग्रंथ भी कहते हैं ।

अफड़ ( अकड़ना ) ( स्त्री० ) ऐंठ, टेढ़ापन, बाँका-पन, शेखी, बल, घमंड, मरोड़ ।

अकड़ना ( सं० अकड़न, अ=उलटा, कच=मिमांसा ) ( क्रि० प्र० ) ऐंठना, टेढ़ा होना, दुखना, दर्द करना, कड़ा होना ।

अकड़बाज़ ( बोल० ) अकड़ैत, छेला, बाँका, छेलचिक्क-निया, अभिमानी, घमंडी, अहंकारी ।

अकड़मकड़ ( बोल० ) ऐंठकर चलना, घमंड, अभिमान, शेखी ।

अकड़वाई ( सं० स्त्री० ) ऐंठन, नसों का दर्द के साथ जकड़ जाना ।

अकड़ा ( पु० ) चीपायों को होनेवाला रोग-विशेष, जो चीपाए बहुत दिनों तक तराई में रहकर सहसा किसी उपजाऊ धरती की घास चरते हैं, उन्हीं को यह रोग होता है ।

अकड़ाघ ( पु० ) खिचाव, ऐंठन, अंगों का तनाव, वायु के कारण अंगों का सिकुड़ना ।

अकड़ैत ( अकड़ना ) ( वि० ) बाँका, छेला, घमंडी, अभिमानी, शेखीबाज़ ।

अकंटक ( अ=नहीं+कंट=फाँटा ) ( वि० ) शत्रुहीन, निरुपाधि, चैन से, बेज़तरे, बेज़रख़शे ।

अकत ( सं० वि० ) संपूर्ण, पूरा, समूचा, सारा ।

अकथ ( सं० अकथ, अ=नहीं, कथ=कहना ) ( वि० ) जो कहने में न आवे, जिसका वर्णन न हो सके, अनुपम, निंदित ।

अकथनीय ( अ+कथ+प्रतीय ) ( वि० ) जो कहने योग्य न हो, बयान से बाहर, अवर्णनीय ।

अकृद् ( पु० ) वादा, प्रतिज्ञा ।

अकृद्वंदी ( सं० स्त्री० ) इकरारनामा, प्रतिज्ञा-पत्र ।

अकधक ( पु० ) आशंका, डर, भय, सोच-विचार ।

अकनना ( क्रि० प्र० ) आहट लेना, चुपचाप सुनना, ध्यान देकर सुनना ।

अकनि ( सं० अकर्ण्य, अ=चाहों और से, कर्ण=पैठना ) ( क्रि० वि० ) सुनकर । जैसे “तुरंग नचावहिं कुँवर वर अकनि मृदंग निशान” — रामायण ।

अकबक ( पु० ) अंडबंड, प्रलाप, अनापशनाप ।

अकबकाना ( क्रि० प्र० ) चकित होना, घबड़ाना ।

अकवाल ( पु० ) प्रताप, इकवाल ।

अकंपन ( अ=नहीं, कंप=हँपना ) ( वि० ) दृढ़, कठोर, मजबूत, ( पु० ) राक्षस-विशेष, रावण का सेनापति, इसका वध हनुमान् ने किया था ।

अकर ( सं० वि० ) न करने योग्य, दुष्कर, असाध्य, विकट, कठिन, बिना हाथवाला, जिसका महसूल न लगना हो, कर-मुक्त ।

अकरकरा ( पु० ) औपध-विशेष, एक प्रकार का पौदा, आफ्रिका के उत्तर अल्जीरिया में बहुतायत से होता है, इसकी जड़ कामोद्दीपक और पौष्टिक होती है, इसे मुँह में रखने से थूक आता है और दाँतों का दर्द दूर होता है ।

अकरखना ( क्रि० प्र० ) खींचना, तानना, चढ़ना ।

अकरण ( पु० ) कर्म का अभाव, इंद्रियों से रहित, कर्म का फल-रहित होना, परमात्मा, ईश्वर ।

अकरणीय ( वि० ) न करने योग्य ।

अकरन ( सं० अ + ऋण, कृ = कना ) अयोग्य, विना हथियार, बेसबब ।

अकरा ( सं० अनर्थ, अन् = नहीं, अर्थ = मोल होना ) ( वि० ) मँहंगा, बहुत मोल का, बढ़िया, बहुमूल्य, कीमती, खरा, श्रेष्ठ, अमूल्य, आवले का वृक्ष । ( स्त्री० ) बिना हाथ की स्त्री ।

अकरास ( पु० ) देह टूटना, अँगड़ाई, आलस्य, सुस्ती, अथमनस्कता ।

अकरुण ( वि० ) निर्दयी, निटुर, दया-रहित ।

अकर्ण ( सं० वि० ) कान-रहित, बूचा, साँप, सर्प, बहरा, बधिर ।

अकर्म ( अ = नहीं वा बुरा, कर्म = काम ) ( पु० ) बुरा काम, पाप, अधर्म, अपराध, बुराई, कुकर्म, कारबद ।

अकर्मक ( अ = नहीं, कर्म = कर्षकारक ) ( वि० ) ऐसी क्रिया, जिसमें कर्म न हो—जैसे आना, रहना आदि, क्लेश लाजिमी ।

अकल ( अ + कल ) ( वि० ) सिक्ख-संप्रदाय के परमात्मा का नाम, कला-रहित, अखंड, संपूर्ण, निराकार, अंगहीन, परमात्मा ।

अकलक ( वि० ) दंभ-रहित, अदांभिक ।

अकलका ( स्त्री० ) चाँदनी, चंद्रमा का प्रकाश, अदांभिक स्त्री, पालंड-रहित ।

अकल्पित ( सं० वि० ) अचित्रित, स्वाभाविक, प्राकृतिक, कल्पना से परे, अचानक, अनायास, सत्य ।

अकल्य ( वि० ) रोगी, व्याधित, व्याधियुक्त ।

अकल्याण ( सं० वि० ) अमंगल, बुरा, अशुभ, अहित ।

अकव ( वि० ) अवर्णनीय, जिसका वर्णन न किया जाय, न अच्छा न बुरा ।

अकवि ( वि० ) निर्बुद्धि, मूर्ख ।

अकस ( अकस = उलटा ) ( पु० ) परछाई, वैर, विरोध, अदावत, लाग, शत्रुता, भीतरी द्वेष ।

अकसर ( वि० ) अकेला, तनहा, बहुधा ।

अकसीर ( पु० ) एक प्रकार का रस जो धातु को सोना-चाँदी बना दे, रसायन, कीमिया, ( वि० ) अव्यर्थ, अत्यंत लाभदायक ।

अकस्मान् ( अ = नहीं, कस्मान् = किसे वा किम काण ) ( कि० वि० ) अचानक, अनचित्ते, अकारण, एकाएक, संयोग से, दैवान्, इतिफाकन्, सहसा, हठान् ।

अकह ( वि० ) न कहने योग्य, अवर्णनीय ।

अकहुआ ( वि० ) अकथनीय, जो कहा न जा सके ।

अका ( वि० ) मूर्ख, निर्बोध, पागल, जड़ ।

अकाउंट ( पु० ) हिसाब, हिसाब-किताब, लेखा ।

अकाउंट-बुक ( पु० ) हिसाब की किताब, बही-खाता ।

अकाज ( सं० अकार्य, अ = नहीं, कार्य = काम ) ( पु० ) बिगाड़, हानि, घटी, घाटा, अनर्थ, नुकसान, विघ्न, हिंसा, व्यर्थ ।

अकाजी ( वि० ) बाधक, बाधा देनेवाला ।

अकाट्य ( वि० ) दृढ़, मजबूत, अटल, न काटने योग्य, जो काटा न जा सके ।

अकांड ( अ + कांड ) ( वि० ) कुसमय, बेवक, अचानक, बेफ़सल, विना डाली या शाखा के, हठात् ।

अकांड तांडव ( पु० ) विनोदावाद, व्यर्थ की बकवाद, व्यर्थ की उछल-कुद ।

अकादर ( वि० ) शूरवीर, साहसी, जो कायर न हो ।

अकापट्य ( पु० ) निश्छलता, ईमानदारी, बेमक ।

अकाम ( सं० अकर्म वा अकार्य ) वृथा, निष्फल, बेक्रायदे, इच्छा-रहित, कामहीन, बेमुहब्बत, बे-उलूक, लीलाशक्ति, प्रेम-रहित ।

अकामी ( वि० ) कामनाहीन, निःस्वार्थ, निःस्पृह, इच्छा-रहित ।

अकाय ( वि० ) निराकार, जो शरीर न धारण करे, शरीर-रहित, राहु ग्रह, कामदेव ।

अकार ( पु० ) “अ” अक्षर, निशान, चिह्न, सूत्र, शकल, बनावट, काम का अभाव, क्रिया-रहित ।

अकारज ( पु० ) बुरा काम, नुकसान, हानि ।

अकारण ( वि० ) व्यर्थ, हेतु-रहित ।

अकाल ( अ = नहीं वा बुरा, काल = समय ) ( पु० ) मँहंगी, काल, कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, क्रहन्, ( वि० ) विना समय का, बेक़तु, बेक़सल ।

अकाल-कुसुम ( पु० ) अनयसर की धान, विना समय या ऋतु में खिला हुआ फूल ।

अकाल-पुरुष ( पु० ) सिक्खों के ईश्वर का नाम ।

अकाल मृत्यु ( स्त्री० ) अपमृत्यु, समय के पहले मृत्यु, असमय की मृत्यु, अल्पावस्था में मृत्यु ।

अकाल-वृष्टि ( स्त्री० ) कुसमय की वर्षा, असमय की वर्षा ।

अकालिक ( वि० ) बेमौक़े, विना समय का ।

**अकाली** ( पु० ) नानक-पंथवाले एक दल के साधु, जो चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधते हैं, सिक्खों का एक संप्रदाय-विशेष ।

**अकाव** ( पु० ) आक, मदार, अकौआ ।

**अकाश-दीया** ( पु० ) आकाश-दीया, कान्तिक के महीने-भर जो दीया या लालटेन बांस में बाँधकर आकाश में जलाया जाता है ।

**अकामवाणी** ( श्री० ) आकाशवाणी, अदृश्यवाणी, देववाणी, जो देवता लोग आकाश से बोलते हैं ।

**अकिंचन** ( वि० ) निर्धन, तिहीदम्न, मुकलिस, कर्महीन, कर्म-शून्य, कंगाल ।

**अकिल** ( श्री० ) बुद्धि, ज्ञान, अज्ञल ।

**अकिलचहार** ( पु० ) अपयश, वैजयंती का दाना या पौदा ।

**अकीरनि** ( अ + कानि, कृत=पाना ) ( श्री० ) अयश, बदनामी, कलंक ।

**अकुंठा** ( सं० अ + कृठ=गठित ) ( वि० ) नाशहीन, तीक्ष्ण, तेज, पैना ।

**अकुताना** ( क्रि० अ० ) घबड़ाना, ऊबना, उतावली करना ।

**अकुल** ( वि० ) कुलट्ट, नीच, अशिव शिव, बेहसब नसब, परिवार-हीन ।

**अकुलाना** ( सं० अकुल ) ( क्रि० अ० ) घबड़ाना, दुखी होना, व्याकुल होना, थकना, ऊबना, मुत्ततरिब होना, परेशान होना ।

**अकुलीन** ( अ=नहीं, कृतान=यच्छे नराने का ) ( वि० ) नीच, कुजात, कुलहीन, कमीना ।

**अकृत** ( वि० ) अगणित, अपरिमित, जो कृता न जा सके ।

**अकुपार** ( पु० ) सागर, समुद्र, कछुआ, पत्थर, चट्टान, वह कछुआ जो पृथ्वी का आधार माना जाता है ।

**अकुहल** ( वि० ) बहुत, अत्यधिक, असंख्य ।

**अकृत** ( वि० ) स्वयंभू, जिसे किसी ने बनाया न हो, प्राकृतिक, बेकाम, मंद, बिगाड़ा हुआ, ( पु० ) कारण, स्वभाव, मोक्ष ।

**अकृतज्ञ** ( वि० ) कृतघ्न, अभय, नीच, किए हुए उपकार को न माननेवाला ।

**अकृत्रिम** ( वि० ) स्वाभाविक, आंतरिक, हार्दिक, प्राकृतिक, जिसमें आडंबर न हो, आडंबर-रहित ।

**अकृपा** ( श्री० ) क्रोध, कोप, कृपा का अभाव, अप्रसन्नता, अन्यायमनस्कता ।

**अकेला** ( सं० एक ) ( वि० ) केवल, निराला, तनहा, अकेल, अकेले ।

**अकेहरा** ( वि० ) एक परत का, एकहरा ।

**अकोढ़ई** ( श्री० ) वह भूमि जो पानी कम सोंगती हो ।

**अकोर** ( पु० ) घूस, भेंद, गोद, छाती ।

**अकोसना** ( क्रि० सं० ) कोसना, गालियाँ देना ।

**अकौआ** ( पु० ) अक, घंटी, कौआ, मदार, आक ।

**अक्के-दक्के** ( क्रि० वि० ) अकेले-दुकेले ।

**अकखड़** ( वि० ) मूर्ख, उद्धत, बिगड़ैल, निडर, असभ्य ।

**अकखर** ( पु० ) आखर, अक्षर, वर्ण ।

**अकखो-मकखो** ( पु० ) दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह पर फेरना ।

**अक्र** ( पु० ) व्यास, युक्र, संयुक्र, भीगा, रँगा हुआ, भरा हुआ ।

**अकतूर** ( पु० ) अँगरेज़ी-वर्ष का दसवाँ महीना ।

**अक्रम** ( वि० ) क्रम-रहित, बेतरतीब, उलटा-सीधा ।

**अक्र** ( अ=हँ, कृ=कठोर ) ( वि० ) कोमल-स्वभाव, नम्र, नर्मदिल, ( पु० ) श्रीकृष्ण का चचा और मित्र ।

**अकलमंद** ( पु० ) चतुर, बुद्धिमान्, समझदार ।

**अक्लिष्ट** ( वि० ) दुःख-रहित, कष्ट-हीन, सरल, सीधा, सुगम ।

**अक्ष** ( अक्ष=हैलना ) ( पु० ) पहिया, धुरी वा कील, पासा, जुआ, गाड़ी, रथ, आँख, रुद्राक्ष, बहेड़ा, सर्प, गरुड़, रावण का एक पुत्र, आर्या ।

**अक्षकुट** ( पु० ) आँख की पुतली ।

**अक्षकीड़ा** ( वि० ) पासे का खेल, चौसर, चाँपड़ ।

**अक्षत** ( अ=नहीं, कृत=टूटा हुआ, कृत=नाश करना, तोड़ना ) ( पु० ) बिना टूटा चावल जो पूजा के काम में आता है, बिना टूटा हुआ धान का लावा, जी ।

**अक्षतयोनि** ( वि० ) वह स्त्री जिसका पति से संयोग न हुआ हो ।

**अक्षपाद** ( पु० ) गौतम ऋषि का दूसरा नाम है

**अक्षम** ( वि० ) क्षमता-रहित, लाचार, असमर्थ ।

**अक्षय** ( अ=नहीं, कृत=नाश, क्षि=नाश होना ) ( वि० ) अमर, चिरंजीव, स्थिर, लाजवाले, अविनाशी, अक्षर शब्द का मूल रूप ।

**अक्षर** ( अ=नहीं, कृत=नाश होना ) ( पु० ) अकारादि वर्ण, आखर, हर्क, ब्रह्म, ( वि० ) जिसका नाश न हो, अविनाशी, मोक्ष, धर्म, गगन, तपस्या, जल ।

अक्षांश (अक्ष=पृथ्वी की काल, अंश=भाग) (पु०) पृथ्वी के उत्तर वा दक्षिण केंद्र तक नब्बे नब्बे अंश पर रेखा, अनु लंबलद, लैटीच्यूड।

अक्षि (अक्ष=रेखना) (स्त्री०) आँख, चरम, नेत्र, नयन।

अक्षुण्ण (वि०) संपूर्ण, अक्षुत, विना दूटा हुआ, निर्बाध।

अक्षोभ (अ+लुप्=डरना) (वि०) निर्भय, बेवौर।

अक्षौहिणी (अक्ष=रथ, ऊँहणी=भीड़, ऊह=तक करना) (स्त्री०) सेना जिसमें १०६३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २७८७० हाथी हों।

अक्षस (पु०) छाया, परछाई, चित्र, प्रतिबिंब।

अक्षड़ (वि०) गँवार, अनसीखा, अनगढ़, जंगली।

अखड़ा (पु०) ताल के बीच का गड्ढा, जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं, चँदवा।

अखड़त (पु०) बलवान्, पहलवान।

अखंड (अ=नहीं, खंड=टुकड़ा) (वि०) पूरा, सारा, सब, संपूर्ण, तमाम।

अखंडित (अ=नहीं, खंडित=टूटा हुआ) (वि०) पूरा, विना दूटा हुआ, सारा, तमाम।

अखनी (वि०) मांस का रस, शोरबा अखनी, बकरे आदि पशुओं का अंग-विशेष।

अखबार (पु०) समाचारपत्र, संवादपत्र, खबर का कागज़।

अख्य (वि०) अविनाशी, नित्य, स्थिर।

अखरना (क्रि० सं०) बुरा लगना, अनुचित मालूम होना।

अखराट (पु०) वृक्ष और फल-विशेष।

अखा (पु०) एक प्रकार की चलनी, कुल, पूरा।

अखाड़ा } (पु०) मझों के कुश्ती लड़ने की जगह,  
अखाड़ा } सभा, साधुओं की सांप्रदायिक मंडली,  
अखाड़ा } जमायत, दल।

अखाद्य (वि०) न खाने योग्य, अभक्ष्य।

अखानी (स्त्री०) एक प्रकार की टेढ़ी बनी हुई लकड़ी, जो राखी दाँवते समय डंडलों के बीच में की जाती है, पचरवा।

अखिल (अ=नहीं, खिल=नाश, खिल=रुण, कण=तेना) (वि०) पूरा, सारा, सब, संपूर्ण, कुल।

अखीर (पु०) अंत, छोर, समाप्ति।

अखूट (वि०) अखंड, जो घटे न बढ़े, बहुत, अधिक।

अखेट (पु०) शिकार, आखेट, अहेर, मृगया।

अखैवृत्त } (सं०) अक्षयवृत्त, अक्षय=प्रमर, वृत्त=पेड़  
अखैवृत्त } (पु०) ऐसा पेड़ जिसका कभी नाश न हो, दूरस्थ लाजवाल्, प्रयाग के किले में एक पेड़ है, जो 'अक्षयवट' नाम से यात्रियों को दिखाया जाता है।

अखोह (पु०) ऊबड़-खाबड़ भूमि, ऊँची-नीची ज़मीन।

अखुतावर (पु०) वह घोड़ा, जिसको जन्म से ही अंडकोश की कौड़ी न हो, यह घोड़ा ऐसी समझा जाता है।

अखुतियार (पु०) अधिकार, प्रभुत्व, स्वत्व।

अख्याति (स्त्री०) बदनामी, अयश, अपकीर्ति।

अख्यायिका (स्त्री०) आख्यायिका, कथा, कहानी, किस्सा।

अग (अ=नहीं, गम्=चलना वा जाना) (पु०) गतिहीन, पहाड़, वृक्ष, अचर, स्थावर, सूर्य, पर्वत, टेढ़ा चलनेवाला।

अगड़धत्ता (वि०) श्रेष्ठ, बढ़ा-चढ़ा, ऊँचा, लंबा-तड़ंगा।

अगड़-अगड़ (वि०) विना काम का काम, बेमिर-पेर का, अंडबंड।

अगणित (अ=नहीं, गण=गिनना) (वि०) अनगिनत, अपार, असंख्य, बेशुमार, बहुत।

अगत (वि०) आगे बढ़ो, हाथी को आगे बढ़ाने के लिये महावत 'अगत' 'अगत' कहते हैं।

अगति (स्त्री०) अकाल मृत्यु, दुर्गति, दुर्दशा, नरक, आश्रय-हीनता।

अगत्या (क्रि० वि०) भविष्य में, आगे चलकर, अंत में, पीछे से, अकस्मात्।

अगद् (अ+गद्=बोलना) (वि०) गूँगा, नीरांग, ओपधि वा दूबा।

अगम (सं०) अगम्य, अ=नहीं, गम्य=जाने योग्य, गम=जाना) (वि०) न जानने योग्य, विकट, औघट, अपहुँच, दुर्गम, गहरा, अथाह, जहाँ पहुँच न हो।

अगमानी (स्त्री०) अगवानी, स्वागत, अगुआ, नेता, सरदार।

अगम्य (वि०) दुर्बोध, अज्ञेय, पहुँच के बाहर, गहन, विकट, कठिन, अपार।

अगर (सं०) अगरु, अ=नहीं, गरु=मारी) (पु०) एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी, उर्दू का एक संयोजक शब्द जो 'यदि' के अर्थ में आता है।

अगरचे (अद्य०) यद्यपि, गोकि।

अगरवाला (अग्रोहा एक जगह का नाम है जो दिल्ली के पश्चिम की ओर है) (पु०) बनियों की एक जाति जो अग्रोहे से निकले हैं।

अगल-अगल (क्रि० वि०) इधर-उधर, आसपास, दोनों ओर।

अगलहिया (स्त्री०) एक प्रकार की खिचिया।

अगला (अग्र, अग्र=आगे) (वि०) आगे का, पहले का, पहला, मुखिया, प्रधान।

अगलोन ( वि० ) गिनती में पहला, अव्वल ।

अगवा { ( सं० ) अग्रम वा अग्रगामी, अग्र=आगे, गम्=जाना } ( वि० ) आगे चलनेवाला, मार्ग बनलानेवाला ( पु० ) दूत, नेता ।

अगवाड़ा ( पु० ) घर के आगे का मैदान, घर के आगे की भूमि, सामने का ।

अगवार ( पु० ) गांव का चमार, अन्न का वह हिस्सा जो हरवाह आदि के लिये निकाल दिया जाता है, ओसाने में जो हलका अन्न भूमे के साथ चला जाता है ।

अगवाही ( श्री० ) अग्निदाह ।

अगस्ति ( अग=पहाड़, अम्=फंकेना ) ( पु० ) एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुण का पुत्र था, जिसने विंध्या-चल पहाड़ को गिरा दिया था । कहते हैं कि यह ऋषि घड़े से जन्मा था, और जब इसने समुद्र पर कोंप किया तो एक चुल्लू में सारे समुद्र को पी लिया था, एक वृक्ष का नाम, एक तारे का नाम ।

अगरुत्य ( अग=पहाड़, विंध्याचल, रुग्=शब्द कराना ) ( पु० ) अगस्ति ऋषि ।

अगहन ( सं० ) अग्रहायण, अग्र=पड़ले, हायन=ब्रह्म, हा=श्रीधर अर्थात् पुरानी वेदिक रीति में वस का पहला महाना ) ( पु० ) मंगसर, मृगशिर, हिंदू-वर्ष का आठवाँ महीना ।

अगहर ( कि० वि० ) प्रथम, आगे, पहले ।

अगहाट ( पु० ) जो भूमि बहुत दिन से किसी के अधिकार में हो और वह उसे अलग न कर सके ।

अगहुड़ ( वि० ) अगला, अव्वल, अगुवा ।

अगाऊ ( सं० ) अग्र=आगे ) ( कि० वि० ) अगाड़ी, आगे, पहले, सामने ।

अगाऊ जाना ( बोल० ) सामने जाना, किसी के मिलने को जाना ।

अगाड़ी ( सं० ) अग्र=आगे ) ( कि० वि० ) आगे, सामने, और बढ़के, ( स्त्री० ) रस्ती जिससे घोड़े के अगले पैर बाँधते हैं, अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा ।

अगाड़ी-पिछाड़ी लगाना ( बोल० ) रोकना, बंद करना ( घोड़े को ), घोड़े के अगले-पिछले पैर बाँधना ।

अगाड़ी मारना ( बोल० ) मोहरा मारना, बैरी की अगली सेना को हराना ।

अगाध ( अ=नहीं, गाध=थाढ़, जगह, गाध=ठहराना ) ( वि० ) अथाह, बहुत ही गहरा, बेपार्याँ, छेद, गड्ढा ।

अगासी ( पु० ) पगड़ी, वरांदा ।

अगिया ( पु० ) एक पक्षी वा कीड़े का नाम, यज्ञकुश, नीली चाय, अगिया घास ।

अगिया पैताल ( पु० ) विक्रमादित्य के दो बैनालों में से एक का नाम ।

अगीत-पछीत ( कि० वि० ) आगे-पीछे ।

अगुण ( अ=नहीं, गुण=हुनर, विद्या, वा रज, तम, सत ये तीन गुण ) ( वि० ) निर्गुणी, बेहुनर, निर्गुण ब्रह्म ।

अगेंद्र ( अग=पहाड़+इंद्र=राजा ) ( पु० ) सुमेरु, हिमालय ।

अगोचर ( अ=नहीं, गोचर=इंद्रियों के सामने, गो=इंद्र, चर=चलना ) जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब, इंद्रियों से जो परे हो ।

अगोरना ( कि० सं० ) पहरा देना, रखवाली करना, रोकना, छेकना ।

अगोरा ( पु० ) देखनेवाला, रखवाला ।

अगोरिया ( पु० ) खेत में रखवाली करनेवाला ।

अगौनी ( सं० ) अग्रगमन, अग्र=अगे, गमन=जाना ) ( स्त्री० ) मिलाप के लिये आगे जाना, पेशवाई करना ।

अगौनी करना ( बोल० ) दूरहों के मिलने के लिये सामने जाना, बरात के सामने जाना, मिलनी करना ।

अग्नि ( अग्नि=जाना, जो ऊपर जाती है ) ( स्त्री० ) आग, आगी, अनल, दक्षिण-पूर्व कोन का दिक्पाल ।

अग्निकुमार ( पु० ) कात्तिकेय, बुधा बढ़ानेवाली औषध ।

अग्निकोण ( अग्नि=आग, कोन=वृंत्त वा गोशा ) ( स्त्री० ) पूर्व-दक्षिण के बीच का आग्नेय कोन, जिसका स्वामी आग है ।

अग्निक्रिया ( स्त्री० ) मुर्दा जलाना, शव जलाना ।

अग्निक्तीड़ा ( अग्नि+क्तीड़ा=खलना ) ( स्त्री० ) आतशबाज़ी ।

अग्निचूर्ण ( अग्नि + चूर्ण=पीसना ) ( पु० ) बारूद ।

अग्निबाण ( अग्नि+बाण=तीर ) ( पु० ) आग का तीर ।

प्राचीन समय में धनुष चलानेवाले ऐसे बाण फेकते थे, जो आग की तरह जलता और जलाता हुआ जाता था ।

अग्निस्स्कार ( अग्नि + स्स्कार=पवित्रता ) ( पु० ) मुर्दे को आग देना, जलाना, दाग देना ।

अग्निहोत्री ( अग्नि + होत्रा=होम करनेवाला ) ( पु० ) अग्नि-पूजक, होम करनेवाला, सदा आग रखने-



वाला, आतशपरस्त, सुबह-शाम आग में वेदीकृ रीति से हवन करनेवाला कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में उपमन्यु-गोत्रीय एक वृद्ध ।

अग्र ( अग्नि=जाना ) ( वि० ) आगे, पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला, नोक, शिरा, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

अग्रगण्य ( अग्र=आगे, गण्य=गिना जाय, गण=गिनना ) ( पु० ) जो सबसे पहला और बहुत अच्छा गिना जाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

अग्रगामी ( अग्र=आगे, गामी=चलनेवाला, गम्=जाना ) ( पु० ) सबसे आगे चलनेवाला, अग्रुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

अग्रज ( अग्र=आगे, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) बड़ा भाई, नायक, नेता, ब्राह्मण ।

अग्रदूत ( अग्र=आगे, दू=चलना, दूत=चलनेवाला ) ( पु० ) नक़ीब, जो सवारी के आगे तारीफ़ करता चलता है ।

अग्रशोची ( पु० ) दूरदेश, दूरदर्शी, आगे से सोचनेवाला ।

अग्रसर ( अग्र=आगे, सृ=जाना ) ( वि० ) आगे चलनेवाला, अग्रगामी, ( पु० ) सरदार, मुखिया ।

अग्रह ( पु० ) वानप्रस्थ, वह पुरुष जो गार्हस्थ्य-आश्रम को न धारण करे ।

अग्रहार ( पु० ) वह संपत्ति, भूमि या गाँव जो ब्राह्मण या देवता को दान दिया जाता है ।

अग्राशन ( पु० ) भोजन करने के पहले जो भाग देवता के निमित्त निकालकर गौ या संन्यासी को देते हैं ।

अग्राह्य ( पु० ) त्याग्य, तुच्छ, न लेने योग्य, शिव-निर्माल्य ।

अग्रिम ( वि० ) अगाड़ी, पेशगी ।

अप्र ( अप्र=पाप करना ) ( पु० ) पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, दोष, चूक, दुःख ।

अप्रखानि ( अप्र=पाप, खानि=उत्पत्तिस्थान, खन्=लोदना ) ( वि० ) पाप की खान, पापी, गुनहवार ।

अप्रटित ( अ + पठित, पठ=होना वा चेष्टा करना ) ( वि० ) अयोग्य, अनहोनी, नाशुदनी, शैरमुमकिन ।

अप्रमर्षण ( अप्र=पाप, मर्षण मूष=झटाना ) ( भा० पु० ) पापनाशक मंत्र जो संध्योपासन में पढ़ा जाता है ।

अप्रार्ई ( अग्राना ) ( स्त्री० ) पेटभराव, नृसि, आसृद्गी ।

अग्राना ( कि० अ० ) पेट भर जाना, छुकना, अफरना, भरपूर होना, तृप्त होना, आसूदा होना ।

अग्रसुर ( अप्र=पाप, असुर=राक्षस ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम जिसको कंस ने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजा था ।

अग्रोर ( अ=नहीं, घोर=डरावना अर्थात् शांत वा जिससे अधिक कोई डरावना न हो ) ( पु० ) शिव, ( वि० ) डरावना, भयानक ।

अग्रोरी ( सं० अघोर ) ( वि० ) अघोरपंथी, जो सब चीज़ यहाँ तक कि मैला और मुर्दा भी खाते हैं ।

अंक ( अंक=चिह्न काना, गिनना ) ( पु० ) अँक, चिह्न, संख्या, संकेत, नंबर, गोद, नाटक का एक अंश, शरीर, सार, पाप, दाग, टीका ।

अंकगणित ( पु० ) संख्याओं का हिसाब, गणित विद्या का एक भाग ।

अँकना ( सं० अंक=चिह्न करना ) ( कि० सं० ) छापना, मोहर देना, लिखना, मोल करना, जाँचना ।

अंकपरिवर्तन ( पु० ) करवट बदलना ।

अंकमुहा ( कि० सं० ) गले लगाना, भेंटना ।

अंकरा ( पु० ) कंकड़ के बारीक टुकड़े, एक प्रकार का कुधान्य, इसका दाना मूँग के दाने के समान काला और छोटा होता है ।

अंकवार } ( स्त्री० ) गोद, गोदी, बगल, काँख,  
अंकघार } छाती, कुक्ष ।

अंकवार भरना ( बोल० ) गले लगाना, गोद में लेना, मिलना ।

अंकविद्या ( अंक=संख्या, विद्या ) ( स्त्री० ) गणित-विद्या, हिसाब ।

अँकाना ( सं० अंक=चिह्न काना ) ( कि० सं० ) मोल ठहराना, जचाना, परखाना ।

अंकित ( अंक=चिह्न करना ) ( वि० ) चिह्न किया हुआ, अँका हुआ, मोल ठहराया हुआ, जाँचा हुआ, लिखा हुआ ।

अँकुर ( अंक=चिह्न करना वा जाना ) ( पु० ) अँखुआ, अँकुर, कोपल, गाछी, फुनगी ।

अँकुश ( अंक=चिह्न काना ) ( पु० ) लोहे का काँटा जिससे हाथी को चलाते हैं, अँकुश, अँकड़ी ।

अँकोर ( पु० ) घूस, रिशवत, गोद, छाती, भेंट, स्नेह में काम करनेवालों का कलेवा ।

**अंश्रिया** ( अंश्रि ) ( स्त्री० ) ब० व० आँखें, लोहे का क्रलम या टप्पा, जिसे हथौड़ी से ठोककर वर्तन पर नकाशी करते हैं ।

**अंग** ( अंग=चिह्न करना ) ( पु० ) शरीर, देह, शरीर का एक भाग, अवयव, अङ्गों, देश-विशेष वा भागलपुर ।

**अंगजन्मा** ( पु० ) संतान, काम, मद, केश, पसीना, रोग ।

**अंगजनित** ( अंग=शरीर + जनित=उत्पन्न, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) देह से पैदा हुआ ।

**अंगद-खंगद** ( वि० ) बचा-खुचा, चुट-पुट ।

**अंगड़ाई** ( सं० अंग ) ( स्त्री० ) देह मरोड़ना, जम्हाई ।

**अंगर** { ( अंगि=ज्ञान ) ( पु० ) आँगन, अँगनाई, चौक, अँगन } चौगान, आँगन, सहन ।

**अंगद** ( अंग=शरीर, दे=शुद्ध करना, वा, दा=देना ) ( पु० ) बहूँटा, भुजबंद, बाजूबंद, बालि वानर का बेटा ।

**अंगना** ( अंग=शरीर, अर्थात् सुंदर शरीरवाली ) ( स्त्री० ) सुंदर स्त्री, सुंदरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई ।

**अँगना** ( पु० ) } ( सं० अंगन ) आँगन, चौक ।

**अँगनाई** ( स्त्री० ) } ( अंग=शरीर, न्याम=धरना ) ( पु० ) मंत्र पढ़कर अंग स्पर्श करना ।

**अंगपत्त** ( पु० ) सहायक, मददगार ।

**अंगमंग=ट्टा-टाटा**, अपूर्ण ।

**अंगमंगी** ( पु० ) स्त्रियों का कटाक्ष, मोहित करने का चष्ट ।

**अंगभूत** ( पु० ) पुत्र, लड़का, शरीर से पैदा, भीतर, अंतर्गत ।

**अंगमर्दन** ( पु० ) अंगों की मालिश ।

**अंगरक्षा** ( सं० अंगरक्षा, अंग=शरीर, रक्षा=रक्षाना ) ( पु० ) चपकन, पहनने का एक कपड़ा ।

**अंगराग** ( पु० ) उबटन ।

**अंगरी** ( स्त्री० ) कवच, बखतर ।

**अंगरेज़** ( पु० ) ईंगलैंड का रहनेवाला ।

**अंगरेज़ी** ( वि० ) विलायती, अंगरेज़ों की ।

**अंगव** ( अंग+अव=रत्ता करना ) ( पु० ) मेवा ।

**अंगवनिहारा** ( वि० ) सहनेवाला, बरदाश्त करनेवाला ।

**अंगविक्षेप** ( पु० ) नाच नाचने, गाने, बजाते, बोलते समय अंगों का हिलाना, चमकना, मटकना ।

**अंगविद्या** ( स्त्री० ) सामुद्रिक विद्या, हाथ-पैर की रेखाओं को देख जीवन की घटनाओं को बतानेवाली

विद्या, शरीर की रेखाओं को देख शुभाशुभ बताने-वाली विद्या ।

**अंगा** ( सं० अंग=शरीर ) ( पु० ) अंगरत्ना, कुरता, कुरती ।

**अंगाकड़ी** ( स्त्री० ) लिट्टी, बाटी, अंगारे पर सेकी हुई मोटी रोटी ।

**अंगांगीभात्र** ( भा० पु० ) शारीरिक संबंध, बाहर्मा मदद, अन्योन्याश्रय ।

**अंगार** ( अंग=चिह्न करना ) ( पु० ) अंगारा, जलता हुआ कोयला ।

**अंगारा** ( सं० अंगार ) ( पु० ) जलता हुआ कोयला, अंगार ।

**अंगारी** ( स्त्री० ) बरोसी, अँगोठी, आग रखने का वर्तन ।

**अंगारों पर लोटना** ( बोल० ) डाह से जलना, दुख पाना, कलपना, प्रलय अथवा प्रलय-सदृश स्थिति का सामना करना ।

**अंगिया** ( सं० अंगिका, अंग=शरीर ) ( स्त्री० ) चोली, कंचुली, कंचुकी, स्त्रियों का छोटा कपड़ा ।

**अंगिरा** ( अंगिरस, अंगि=ज्ञान ) ( पु० ) एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मुँह से पैदा हुआ था ।

**अंगी** ( अंग+ई ) ( क० पु० ) शरीरवाला, किसी संप्रदाय का मुखिया, भाग बँटानेवाला ।

**अंगीकार** ( अंग=स्वीकार, क=करना ) ( पु० ) मानना, स्वीकार, अंगेजना, कबूल, मंजूर ।

**अंगीकार करना** ( बोल० ) मानना, स्वीकार करना, अंगेजना, मंजूर करना ।

**अंगीठी** { ( स्त्री० ) आग रखने का वर्तन, आग की अंगोठी } बरोसी, काँगड़ी ।

**अंगुल** ( अंग=चिह्न करना ) ( पु० ) आठ औं का नाप, एक गिरह का तीसरा हिस्सा, तर्जनी उँगली की एक पोर ।  
**अंगुलिप्राण** ( अंगुलि+प्राण रत्ता ) हाथ का मोझा, दस्ताना ।

**अंगुली** { ( सं० अंगुली, अंग=चिह्न करना, गिनना )  
**अंगुरी** { ( स्त्री० ) हाथ का वा पंख का अंग, हाथ-पैर  
**अंगुलि** } की उँगली ।

**अंगुली काटना** ( बोल० ) अचंभे में होना, अचंभा करना ।

**अंगूठा** ( सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, रत्ता=उड़ाना ) ( पु० ) मोटी पैंगुली ।

अंगूठी ( सं० अंगुलीय ) ( स्त्री० ) मुँदरी, छल्ला,  
उँगली में पहनने का गहना ।

अंगूर ( पु० ) फल-विशेष, दाख, द्राक्ष, मेवा ।

अंगूरी ( वि० ) अंगूर के रंग का, अंगूर से बना  
हुआ ।

अंगेजना ( कि० सं० ) अंगीकार करना, स्वीकार करना,  
बरदाश्त करना ।

अंगेज ( स्त्री० ) डोल, आकार, आकृति ।

अंगोछा ( सं० अंग=शरीर, उछ=बाँधना वा अंग  
पोंछना ) ( पु० ) गमछा, शरीर पोंछने का कपड़ा ।

अंगोरा ( पु० ) मसा, मच्छर, भुनगा ।

अंग्रि ( अग्रि=ज्ञान ) ( पु० ) पाँव, पैर, वृत्त  
की जड़ ।

अच ( पु० ) स्वर ( अच=गुप्त करना ) छिपाकर करना,  
स्वर-वर्ण, संज्ञा-विशेष ।

अचक ( वि० ) बहुत, पूरा, भरपूर, ( अच्य० ) अचानक,  
अकस्मात्, ( पु० ) घबराहट ।

अचकन ( पु० ) पाँच कलियों का लंबा अंग ।

अचका ( कि० वि० ) अचानक, एकाएक ।

अचकरी ( स्त्री० ) अनुचित काम, धीमाधीमी, अत्याचार,  
लंपटता ।

अचक्का ( पु० ) अपरिचित, अनजान ।

अचंचल ( अ=नहीं+चंचल=चपल ) ( पु० ) स्थिर,  
क्रायम, धीर, गंभीर, विना घबड़ाया हुआ, शांत ।

अचंड ( वि० ) सरल स्वभाववाला, सुशील, धीर, शांत ।

अचंभा { ( सं० आश्चर्य ) ( पु० ) आश्चर्य, विस्मय,  
अचरज } ताज्जुब, अचरज ।

अचर ( अ=नहीं, चर=चलना ) ( वि० ) न चलने-  
वाला, अचल, अटल, स्थावर ।

अचरा ( पु० ) अंचल, साड़ी का वह छोर जो छाती  
पर रहता है ।

अचल ( अ=नहीं, चल=चलना ) ( वि० ) न  
चलनेवाला, ठहरा हुआ, स्थावर, अटल, ( पु० )  
पहाड़, पर्वत, जैमियों का पहला तीर्थकर ।

अचला ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, भूमि, जमीन ( वि० )  
न चलनेवाला, स्थिर ।

अचवन ( पु० ) भोजन के बाद हाथ मुँह धोकर  
कुत्सा करना, आचमन ।

अचवाना { ( सं० आचमन, आ, चमू=खाना ) ( कि०  
अचाना } सं० ) खाने के पीछे मुँह साफ करना,  
आचमन करना ।

अचानक { ( सं० अकस्मात् )  
अचानचक } ( कि० वि० ) एकाएकी, संयोग से,  
अनुचित, विना कारण, दैवयोग से, द्रुतगतम् ।

अचार ( सं० आचार, आ, चर=चलना ) ( पु० ) चलन,  
चालचलन, रीतिभाँति, व्यवहार, धर्मव्यवहार,  
तरीका, आम, निंबू आदि के फलों में मसाले  
मिला कर तैयार किया हुआ एक विशेष प्रकार  
का स्वादिष्ट खाद्य-पदार्थ ।

अचारज ( पु० ) आचार्य ।

अचाही ( वि० ) निष्काम, निस्पृह, किसी बात की  
इच्छा न रखनेवाला ।

अचिकित्स्य ( वि० ) असाध्य, जिसका इलाज न  
हो सके ।

अचित ( अ=नहीं, चिति=सोचना ) ( वि० ) अचेत,  
बेसुध, निश्चित, चिंता-हीन... "अचित गही चल  
भीतर भीने ( कवि अकबर बादशाह ) ।

अचितनीय ( वि० ) अज्ञेय, ज्ञान के परे, जो ध्यान  
में न आवे, अविचारणीय ।

अचित्य ( वि० ) कल्पनातीत, जिसका चिंतन न  
हो सके, आकस्मिक ।

अचिर ( अ=नहीं+चि=देर ) ( कि० वि० ) तुरंत,  
जल्दी, शीघ्र ।

अचीता ( सं० अ=नहीं, चित=सोचना ) ( वि० ) विना  
चाहा, विना सोचा हुआ, आकस्मिक ( सं० अ=नहीं,  
चित्र, वेष्टवृद्धा वा तसवीर ) विना तसवीर या वेष्ट-  
बूटों के ।

अचूक ( वि० ) अवश्य, निश्चय, जो न चूके, ठीक,  
जिसमें भूल न हो, ठीक निशाने पर ।

अचेत ( सं० अचेतम्, अ=नहीं, चित=सोचना ) ( वि० )  
बेसुध, सुप्त, मूर्च्छित, बेहोश, मूर्ख, नासमझ ।

अचेत होना ( बोल० ) बेसुध होना, सुप्त हो जाना,  
मूर्च्छा खाना, मूर्च्छित होना ।

अचैन ( सं० अ=नहीं, चैन=सुख ) ( वि० ) बेकल,  
व्याकुल, दुखी, बे-आराम ।

अञ्जोना ( पु० ) कटोरा, पीने का बर्तन, आचमन करने का पात्र ।

अञ्जुना } ( सं० अञ्जु=होना )  
 अञ्जुना } ( कि० अ० ) जीना रहना, होना, रहना ।  
 जैसे “तुमहि अञ्जत अम हाल हमारी;”  
 “मुय तजि भइउ” शोक अधिकारी ।”  
 ( तुलसीकृत रामायण )  
 “अञ्जत पति भभूति किन लाई;”  
 “कहो कहाँ की रीति चलाई ।”  
 ( प्रेमसागर )

अञ्जुर ( सं० अञ्जुर ) ( पु० ) आखर, वर्ण, हर्फ, अक्षर, अकार आदि वर्ण, नाश-रहित ।

अञ्जुरा ( स्त्री० ) अस्तरा, स्वर्ग की वेश्या, देवांगना ।  
 अञ्जु ( सं० अञ्जु, अ=नहीं, छा=काटना ) ( वि० ) भला, उत्तम, सुन्दर, स्वच्छ, साफ़, मनोहर, चंगा ।

अञ्जु करना ( बोल० ) चंगा करना, भला चंगा करना, बीमारी से चंगा करना ।

अञ्जु लगना ( बोल० ) मोहना, फबना, खुलना, पसंद आना, भाना ।

अञ्जु होना ( बोल० ) चंगा होना, भला-चंगा होना, बीमारी से आराम पाना ।

अञ्जुअ ( वि० ) अखंडित, संपूर्ण, छिद्रहीन ।

अञ्जु-से-अञ्जु ( बोल० ) सबसे अच्छा, उत्तम, बहुत ही अच्छा, श्रेष्ठ ।

अञ्जुत ( पु० ) विष्णु, स्थिर, अविनाशी, अमर, सदा रहनेवाला ।

अञ्जुतानंद ( पु० ) ईश्वर, आनंद ।

अञ्जुत ( पु० ) असहाय, छत्रहीन, राज्यहीन, राजच्युत विना छत्र का ।

अञ्जुताना पछुताना ( बोल० ) ( कि० अ० ) पछुताना, पस्नावा करना, पश्चात्ताप करना, अफसोस करना ।

अञ्जुरौटी ( स्त्री० ) वर्णमाला ।

अञ्जुयानी ( स्त्री० ) मसाला-विशेष, अजवाइन, सोंठ सेवा आदि धी में पकाकर प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है ।

अञ्जुता ( सं० अ=नहीं हिं० लूना ) ( वि० ) अलूत, नहीं लुआ हुआ, जो चीज़ जूटी न हो, पवित्र, देवता अथवा ऋषिमुनि के लिये शुद्ध भोग आदि ।

अञ्जेह ( वि० ) लगातार, अखंडित, बहुत अधिक ।  
 अञ्जोम ( वि० ) क्षोभ हीन, शांत, स्थिर, गंभीर अचपलता ।

अज } ( सं० अज, इदम्, यह )  
 आज } ( कि० वि० ) आज का दिन, वर्तमान दिन ।  
 अज ( अ=नहीं, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना, वा अ=विष्णु, ज=पैदा हुआ ) ( पु० ) कामदेव, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, राजा दशरथ के बाप का नाम ।

अज ( अज=चलना ) ( पु० ) बकरा, मेपराशि ।

अजगर ( अज=बकरा, गर=निगलनेवाला, गु=निगलना ) ( पु० ) बड़ा साँप, अज्ञदहा, बकरी निगलनेवाला साँप, निकम्मा, निरुद्यमी, आलसी, मस्त ।

अजगु ( अजगु=शिव, अजोऽनन्मा गौर्यस्य अत्रो अजगुः शिवः, तस्य धनुः अजगवं आजगवं वा ) ( पु० ) शिव का धनुष, पिनाक ।

अजगुत ( पु० ) विना देखी सुनी बात, आश्चर्य, अद्भुत, अचंभे की बात ।

अजगैव ( पु० ) अदृष्ट स्थान, अलक्षित स्थान ।

अजदहा ( पु० ) बड़ा मोटा साँप, अजगर ।

अजनबी ( पु० ) विदेशी, नया, विना ज्ञान-पहचान का ।

अजपा ( वि० ) जिसका उच्चारण न किया जाय, ( पु० ) गड़रिया, बकरी पालनेवाला ।

अजच ( वि० ) विचित्र, अनृठा, अनोखा, विलक्षण ।

अजमोद ( पु० ) ओषधि-विशेष, अजमोदा ।

अजय ( अ=नहीं, जि=जीतना ) ( वि० ) अजेय, जिसकी जीत नहीं हुई हो, जो जीता नहीं जाय, अजित, ( स्त्री० ) हार ।

अजया ( स्त्री० ) भँग, विजया ।

अजर ( अ=नहीं, ज=जुड़ावा; जृ=बूढ़ा होना ) ( वि० ) जो बूढ़ा न हो, सदा जवान बना रहे ।

अजवाइन ( स्त्री० ) अजवायन, मसाला-विशेष ।

अजस ( पु० ) अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ।

अजसी ( वि० ) बदनाम, अपयशी ।

अजस्र ( कि० वि० ) निरंतर, सदा, नित्य ।

अज्ञहृद् ( कि० वि० ) जिसकी हृद न हो, अपरिमित, हृद से ज़्यादा ।

अजहू } (अज=आज, हू=मी, तक) (कि० वि०)  
 अजहू } अब भी, आज भी, अब तक, आज तक।  
 अजौ }

अजा (अज्=बलना) (स्त्री०) बकरी, माया, जन्म-रहित, शक्ति, दुर्गा।

अजाचक (वि०) संपन्न, अयाची, अजाची, (पु०) जिसको माँगने की आवश्यकता न हो।

अजातशत्रु (त्रि०) शत्रु-रहित, (पु०) राजा युधिष्ठिर, शिव, बिंबसार का पुत्र।

अजानि (वि०) त्याज्य, जाति-च्युत, पतित।

अजान { (सं० अज्ञान) (त्रि०) मूर्ख, नासमझ,  
 अनज्ञान } अबूझ, अपरिचित, (पु०) अज्ञानता।

अजामिल (पु०) एक पापी ब्राह्मण का नाम, जो कलौज में रहता था जिसके पुत्र का नाम नारायण था, मरते समय उसका नाम लेने से तर गया।

अजायब (पु०) विचित्र पदार्थ।

अजायबस्ताना (पु०) वह स्थान जहाँ पर अद्भुत पदार्थ रक्खे जाते हैं, अजायबघर।

अजिआरा (पु०) आजी या दादा के पिता का घर।

अजित (अ=नहीं, जित=जीता) (वि०) जो जीता नहीं जाय, अपेक्ष, बली, सबको जीतनेवाला (पु०) शिव, विष्णु, बुद्ध।

अजिन (अज्=जाना वा चमकना) (पु०) मृगछाला, हरिण या बाघ की खाल, जिस पर प्रत्यक्ष और संन्यासी लोग बैठा करते हैं।

अजिर (अज्=जना) (पु०) चयूतरा, सहन, हवा, शरीर, इंद्रियों का विषय, मंडक, आंगन, चौक, अँगना, अँगनाई।

अज्जीज़ (वि०) प्यारा, प्रिय, (पु०) संबंधी, मित्र।

अजीर्ण (अ=नहीं, अर्ण=पुराना, जू=पुराना होना, पचना) (वि०) अजीरन, अपच, नहीं पचना, हज़म न होना, जो पुराना न हो।

अजीत (सं० अजित) (वि०) सबको जीतनेवाला, बला, जो जीता नहीं जाय।

अजीत्र (वि०) अनोखा, अनूठा, विचित्र।

अयोध्या (सं० अयोध्या, अ=नहीं, युद्ध=झड़ना अर्थान् जहाँ कोई लड़ने को नहीं आसक्त) (स्त्री०) अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी।

अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) (वि०) अज्ञान, अनजान, नासमझ, अबूझ, मूर्ख, बेवकूफ।

अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना हुआ, ज्ञा=जानना) (वि०) अनजाना, न जाना हुआ, असमझ, मूर्ख जो ज्ञात न हो।

अज्ञातवास (पु०) गुप्तवास, छिपकर रहना।

अज्ञात-यौवना (स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद, जिसको अपनी जवानी के आगमन का ज्ञान न हो।

अज्ञान (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) (वि०) मूर्ख, अज्ञान, अनजान, असमझ, अबूझ, (स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफी।

अज्ञानता (अज्ञान) (स्त्री०) मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफी, नाकहमी।

अज्ञानी (अज्ञान) (वि०) मूर्ख, अनजान, अबूझ, अनसमझ, बेवकूफ, नादान।

अज्ञेय (वि०) न समझने योग्य, ज्ञानातीत, बुद्धि के परे।

अंचल (अञ्च=जाना या माँगना) (पु०) अंचल, आँचल, कपड़े का किनारा।

अंजन (अंज्=अंजना, सुरमा लगाना) (पु०) सुरमा, काजल, आँख में लगाने का द्रव्य, धान्य-विशेष।

अंजना (अंज्=शोभना) (स्त्री०) हनुमान् की मा, विलनी, रोग-विशेष।

अंजनी (स्त्री०) हनुमान् की माता, चंदन लगाए हुई स्त्री, माया, कुटकी, बिलनी।

अंजर-पंजर (पु०) ठठरी, हड्डी पसली, शरीर का जोड़।

अंजलि (अंज्=मिलाना) (स्त्री०) दोनों हाथों का मिलना, हाथ का संपुट, दोनों हाथों को इस तरह से मिलाना कि बीच में जगह खाली रहे जिसमें पानी आदि लिया जाय, एक तरह की नाप, इतनी चीज़ कि दोनों हाथों में अट सके, अंजुरी।

अंजसा (कि० वि०) (अज्=जाना, सा=वाधारण) शीघ्रता से, जल्दी से।

अंजही (स्त्री०) अनाज की मंडी, (वि०) अनाजवाली।

अंजीर (पु०) फल और वृक्ष-विशेष।

अंजुमन (स्त्री०) सभा, मंडली जैसे अंजुमन हस्तामिया।

अँजोर (पु०) प्रकाश, चाँदनी, उजेल।

अँजोरा (वि०) उजेल, प्रकाशमान।

अंभा ( अन्=नहीं+अप्याय=पढ़ना ) ( पु० ) छुट्टी, नातील  
अनध्याय, नाशा ।

अटक ( अटकना ) ( स्त्री० ) रोक, रुकावट, आड़, सिंधु  
नदी का नाम, एक नगर का नाम ।

अटकना ( कि० सं० ) रोकना, बंद करना ( कि० प्र० )  
रुकना, बंद होना, ठहरना, रहना, लगा रहना,  
भगड़ना, बकवाद करना ।

अटकल ( अटकलना ) ( स्त्री० ) अनुमान, अंदाज़,  
कूत, अटकल ।

अटकलपश्च ( बोल० ) वैश्रंदाज़, बेहिसाब, उटक-  
नाटक, बे-टौर-टिकाने, योंही ।

अटकलना ( कि० सं० ) अंदाज़ करना, अनुमान  
करना, सोचना, विचारना, कूतना ।

अटका ( पु० ) श्राजगन्नाथजी का भात बनाने का  
मिष्टी का बरतन, श्राजगन्नाथजी की भोग लगाया  
हुआ भात, यह सुखाकर यात्रियों की प्रसाद के तौर  
मिलता है ।

अटकाना ( कि० सं० ) रोकना, ठहराना, छेंकना, बंद  
करना, बाधा डालना ।

अटकाव ( अटकाना ) ( पु० ) रोक, रुकाव, प्रतिबंध,  
बाधा, विघ्न ।

अटखेल } ( सं० अटखेला अट=बढ़त, खेल=खेल )  
अटखेल } ( वि० ) चंचल, खिलवाड़, खिलाड़ी, शोख,  
चपल ।

अटखेली } ( सं० अटखेला ) ( स्त्री० ) चंचलता,  
अटखेली } खिलाड़ीपन, दिठाई, चंचलाई, शोखी,  
चपलता, मस्तानी चाल, कल्लोल ।

अटट ( वि० ) टढ़, मोटा, मजबूत, पोट ।

अटन ( अट=फिरना ) ( भ० पु० ) फिरना, चलना,  
भ्रमण, यात्रा, घूमना, सफ़र, सैयाही, अटारी ।

अटना ( सं० अट=फिरना, जाना ) ( कि० प्र० )  
समाना, भर जाना, फिरना, चलना, पढ़ना ।

अटपट ( पु० ) } ( वि० ) टेढ़ा, टेढ़ी, बाँका,  
अटपटी ( स्त्री० ) } बाकी, टर्ग, टर्ग, एड़ो, टेढ़ी,  
अटपटांगी ( स्त्री० ) } बेठिकाने, बेढंगी, कठिन, व्यंग्य-  
युक्त, पेचीदा ।

अटवधर ( पु० ) कुटुंब, खानदान, परिवार, दूध,  
आडंबर ।

अटम ( पु० ) ढेर, राशि ।

अटल ( अ=नहीं, टल=घबाना ) ( वि० ) अचल, जो  
टले नहीं, ठहरा हुआ, दृढ़, पायदार, गुसाइयों के  
एक अखाड़े का नाम ।

अटवि } ( अट=जाना, फिरना ) ( स्त्री० ) वन, जंगल ।  
अटवी }

अटा } ( सं० अट, अट=ऊँचा होना ) बढ़ जाना या  
अटारी } निरादर काना ( स्त्री० ) अटारी, ऊपर की  
कोठरी या छत ।

अटाटूट ( वि० ) नितान्त, बिजकुल ।

अटाल ( पु० ) धरहरा या धीरहरा, बुर्ज ऊँचा-पूरा ।

अटाला ( पु० ) ढेर, असबाब, सामान, खटला, सामग्री ।

अटिया ( स्त्री० ) पर्णकुटी, झोपड़ी, छोटा मकान ।

अट्ट ( सं० अ=नहीं, हि० टटना ) ( वि० ) जो  
टूटे नहीं, समूचा, पूरा, कुल, लगातार, अखंड,  
दृढ़, अमुक्त ।

अट्टेक ( वि० ) उद्वेग-शून्य, आश्रय-रहित, निराधार,  
जिसकी कोई आड़ न हो ।

अट्टेरन ( पु० स्त्री० ) चरखी, आँटी, घोड़े की  
एक चाल, फेंटी ।

अट्टहास ( अट्ट=बहुत, हास=हँसी ) ( पु० ) बहुत  
हँसना, खिलखिलाकर हँसना, क़हक़हा मारना,  
ठठाकर हँसना ।

अट्टालिका ( अट्ट=ऊँचा होना, बढ़ना या निरादर  
काना ) ( स्त्री० ) अटारी, अटा, ऊपर की कोठरी,  
बालाग़ाना, राजगृह ।

अठकोसल ( पु० ) पंचायत, सलाह, गोष्ठी ।

अठतालीस } ( सं० अष्टवत्तिशत्, अष्ट=आठ, चत्वार-  
अठतालीस } तिशत्=चालीस ) ( वि० ) चालीस और  
आठ ।

अठतीस } ( सं० अष्ट=आठ, त्रिंशत्=तीस ) ( वि० )  
अठतीस } तीस और आठ ।

अठलाना ( कि० प्र० ) अठिलाना, हतराना, मदोन्मत्त  
होना, नज़रा करना ।

अठवारा ( सं० अष्टवार, ( अष्ट=आठ, वार=दिन )  
( पु० ) आठवाँ दिन, हफ़्ता, सप्ताह ।

अठवाँस ( पु० ) अठपहली वस्तु, ( वि० ) अठपहल ।

अठवाँसा ( वि० ) आठ महीने में उत्पन्न होनेवाला गर्भ ।

अठसठ } ( सं० अष्टषष्टिः अष्ट=आठ, षष्टि=साठ )  
अइसठ } ( वि० ) साठ और आठ ।

अठहत्तर ( सं० अष्टसप्ततिः अष्ट=आठ, सप्तति=सत्तर )  
( वि० ) सत्तर और आठ ।

अठाईस } ( सं० अष्टविंशतिः अष्ट=आठ, विंशति=बीस )  
अठाईस } ( वि० ) बीस और आठ ।

अठान ( पु० ) अयोग्य कार्य, वैर, शत्रुता ।

अठानवे } ( सं० अष्टनवति, अष्ट=आठ, नवति=नव्वे )  
अठानवे } ( वि० ) नव्वे और आठ ।

अठारह ( सं० अष्टदशः, अष्ट=आठ, दश=दश )  
( वि० ) दश और आठ ।

अठावन } ( सं० अष्टपञ्चाशत्, अष्ट=आठ, पञ्चाशत्=  
अठावन } पचास ) ( वि० ) पचास और आठ ।

अठासी } ( सं० अष्टाशतिः, अष्ट=आठ, अशति=  
अठासी } अस्सी ) ( वि० ) अस्सी और आठ ।

अठेल ( वि० ) ठेला न जाने योग्य, बलवान्, दृढ़  
गढ़ा हुआ-सा ।

अठोठ ( पु० ) आडंबर, पाखंड ।

अठोतरसौ ( सं० अष्टोत्तरशत, अष्ट=आठ, उत्तर=प्रागे,  
शत=सौ ) ( वि० ) एक सौ आठ ।

अठोतरी ( स्त्री० ) एक सौ आठ दाने की जप करने  
की माला ।

अड़ ( स्त्री० ) झगड़ा, विरोध, हठ, जिद ।

अड़करना } ( कि० प्र० ) रुकना, थमना, जिद करना ।  
अड़ना }

अड़गोड़ा ( पु० ) एक लकड़ी जो नटखट जानवरों  
के गले में बाँधी जाती है, ठेकुर, डँगना ।

अड़ंग ( पु० ) मंडी, बाज़ार, हाट, दिसावर को  
चीज़ का उतार, हठ, जिद ।

अड़चन ( स्त्री० ) रुकावट, बाधा, आपत्ति ।

अड़ड़पोपो ( पु० ) पाखंडी, जो लोगों का हाथ  
देखकर ठगते हैं, गप्पी, धूर्त ।

अड़तल ( पु० ) आड़, आश्रय, शरण, बहाना ।

अड़बंगा ( वि० ) बाँका, तिरछा, बराबर नहीं, ऊँचा-  
नीचा, नाहमवार, अड़बंग ।

अड़बड़ग ( पु० ) बावलापन ।

अड़बल ( वि० ) अड़ जानेवाला, रुकनेवाला ।

अड़ानी ( स्त्री० ) कुश्ती का एक पेंच, बड़ा पंखा, छाता  
रोकनेवाला ।

अड़ियल ( वि० ) अड़ कर चलनेवाला, सुस्त,  
हठी, रुक जानेवाला ।

अड़िया ( स्त्री० ) साधुओं का तकिया, फेंटी, साधुओं  
की कुबड़ी ।

अड़ी ( स्त्री० ) आग्रह, हठ, रोक बाज़ो ।

अड़सा ( पु० ) एक ओपधि का नाम, रूसा, बासा ।

अड़याना ( कि० सं० ) रक्षा करना, आश्रय देना ।

अड़ैच ( स्त्री० ) शत्रुता, द्वेष ।

अड़ोल ( सं० अ=वर्ती, डल=हिलना, झूलना, डोलना )  
( वि० ) जो हिल न सके, अचल, अटल, दृढ़,  
बेहरकत, अडिग ।

अड़ोस-पड़ोस ( पु० ) ( बोल० ) पड़ोस, पास बसना,  
प्रतिवास, आसपास ।

अड़ु ( पु० ) सेना रहने की जगह, ठहरने की जगह,  
छावनी, छतरी, गुंडों के बैठने-उठने का स्थान ।

अड़तिया ( पु० ) दलाल, आदत का व्यापार  
करनेवाला ।

अड़वना ( कि० सं० ) काम में लगाना, आज्ञा देना ।

अड़ई ( सं० अर्द्धद्वयः अर्द्ध=आधा, द्वि=दो ) ( वि० ) दो  
और आधा ।

अड़िया ( स्त्री० ) गारा डोने के लिये काठ या लोहे  
का वर्तन ।

अड़कना ( कि० प्र० ) सहारा लेना, ठोकर लगाना,  
टेकना ।

अड़ुकि ( कि० वि० ) उठकर, सहारा लेकर ।

अणुद ( पु० ) आनंद, प्रसन्नता ।

अणि } ( अणु=शब्द करना ) ( स्त्री० ) धार, नोक,  
अणो } बाढ़, तोखी धार, तेज़ धार, मेढ़, किनारा ।

अणिमा ( अणु=छोटा ) ( स्त्री० ) आठ सिद्धियों में से  
एक सिद्धि, जिससे बहुत ही छोटा रूप बनाकर  
सब जगह जा सके, छोटा बन जाने की शक्ति, बहुत  
ही सूक्ष्मता, बहुत बारीकी ।

अणु ( अणु=शब्द करना, जीना ) ( पु० ) कन का आठवाँ  
हिस्सा, कनिका, परमाणु, ( वि० ) बहुत ही छोटा,  
महीन, सूक्ष्म, बारीक, ख़ुर्द, ज़र्रा ।

अणुमात्र ( वि० ) छोटा-सा, ज़रा-सा ।

अणुवाद ( पु० ) वैशेषिक दर्शन, वल्लभाचार्य  
का मत ।

अणुवादी ( पु० ) नैयायिक ।

अणुवीक्षण ( पु० ) सूक्ष्मदर्शक यंत्र, छिद्रान्वेषण ।

अंटा ( सं० अंड=प्रडा ) ( पु० ) बड़ी गोली, खेलने की गोली ।

अंटा-गुडगुड ( वि० ) नगे में चर, अचेत, बेसुध ।

अंटाघर ( पु० ) गोली खेलने का घर ।

अंटाचिन्त ( कि० वि० ) चलाग गिरा हुआ, चिन्त पड़ा हुआ, बेचबुर पड़ा हुआ ।

अंटाचंधु ( पु० ) नुआ खेलने का काँड़ी ।

अटिया ( स्त्री० ) प्ला, घाम का छोटा गट्टर ।

अटियाना ( कि० सं० ) हथेली में छिपा लेना, उँगलियों में लपेटकर डोरी की पिंडी बनाना ।

अंटी ( स्त्री० ) गाँठ, धोती का वह भाग जो कमर में लपेटा हो, उँगलियों के मध्य का स्थान, औरतों का एक प्रकार का खेल ।

अंटी ( स्त्री० ) चिचड़ी, किलनी, छोटे काँड़े जो जानवरों के अंग में लपटे रहते हैं ।

अंठी ( स्त्री० ) गुठली, बीज, बीयाँ, गाँठ, गिल्टी ।

अंड ( धृ०=जाना, अर्थात् जिसमें से बच्चा निकलता है ) ( पु० ) अंडा, वीर्य, विश्व, संसार, कामदेव ।

अंडकटाह ( सं० अंड + कटाह ) ( पु० ) ब्रह्मांड, सार, जगत् ।

अंडज ( अंड=प्रडा, ज=पैदा हुआ, जन=पैदा होना ) ( पु० ) अंड से पैदा होनेवाले जीव जैसे पक्षिरू, सर्प, मछली, गौह, गिरगिट, बिम्बपरा आदि ।

अंडस ( स्त्री० ) अमुविधा, संकट ।

अंडा ( सं० अंड ) ( पु० ) पक्षिरू आदि के पैदा होने की जगह, गोलाकार ।

अंडी ( स्त्री० ) रेशमी वस्त्र-विशेष, रेंडो, परंड ।

अंडुआ ( पु० ) बिना बधिया किया हुआ मनुष्य, अंडू ।

अंडेल ( वि० ) जिसके पेट में अंडा हो ।

अतः ( कि० वि० ) इससे, इसलिये, लिहाजा ।

अतएव ( कि० वि० ) इसीलिये, पस ।

अतथ्य ( वि० ) झूठ, अथयार्थ, असमान निस्सार ।

अतर ( पु० ) हथ ।

अतसी ( धृ०=जाना ) ( स्त्री० ) तोसी, सन, अलसी ।

अतस्वज्ञ ( अ=नहीं + तस्व=मूल + ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) मूल का न जाननेवाला, शलतकहमी, बे समझ ।

अतस्वज्ञता ( स्त्री० ) नासमझी, शलतकहमी ।

अतन { ( अ=नहीं + तन=शरीर ( वि० ) शरीर-रहित  
अतनु { ( पु० ) कामदेव ।

अतंद्रित ( वि० ) आलस्यरहित, तंद्रा-रहित ।

अतल ( अ=नहीं + तल=थाह ) ( वि० ) अथाह ( पु० ) नीचे के सात लोकों में से दूसरा लोक ।

अताई ( पु० ) गवैया, बजंत्री, बमानेवाला ( वि० ) प्रवीण, कुशल, धूर्त ।

अति ( धृ०=जाना ) ( वि० ) बहुत, अधिक, बहुत हो बहुत, बड़ा, बीता हुआ, हो चुका, ( पु० ) उल्लाँघना, पार ।

अतिकाय ( अति=बड़ी, काय=देह ) ( पु० ) बड़ा शरीर, रावण का पुत्र जिसे लक्ष्मण ने मारा था । ( वि० ) बड़ी देहवाला, दानव-रूपी, भयानक ।

अतिकाल ( पु० ) कुपमय, देर, विलंब ।

अतिकृच्छ्र ( पु० ) बहुत कष्ट ।

अतिक्रम ( अति=पार+क्रम=चलना ) ( पु० ) पार जाना, उल्लंघन, नियम-भंग, अपराध, जुर्म ।

अतिक्रान्त ( अति + क्रान्त, क्रम=चलना ) ( पु० ) पार गया हुआ, बहुत बढ़ गया, बीता हुआ ।

अतिथि ( पु० ) जो एक जगह नहीं ठहरता, फिरता रहता है, पाहुना, मेहमान, अभ्यागत, योगी, संन्यासी ।

अतिथि-भक्त ( आतथ + भक्त भज्=पेवा करना ) ( पु० )

अतिथि-पूजक, मेहमानपरस्त्न, मेजबान ।

अतिथि-भक्ति ( स्त्री० ) अतिथि-सेवा, मेजबानी ।

अतिपंथ ( पु० ) राजमार्ग, सड़क ।

अतिपर ( पु० ) भारी शत्रु, उदासीन, असंबंध ।

अतिपात ( पु० ) विघ्न, उपद्रव, अन्याय ।

अतिप्रसंग ( पु० ) पुनरुक्ति, बहुत विस्तार, व्यभिचार ।

अतिघल ( वि० ) प्रबल, अत्यंत बली ।

अतियोग ( पु० ) अधिक मिलाव ।

अतिरथी ( पु० ) रथ पर चढ़कर युद्ध करनेवाला, वह योद्धा जो बहनों के साथ अकेला लड़ता है ।

अतिरिक्त ( अति + रिक्त ) ( कि० वि० ) छूटा हुआ, सिवा, अलावा, अधिक, न्यारा, भिन्न ।

अतिरेक ( आत + रेक, रिच्=बुदा होना ) ( पु० ) अधिकता, कसरत ।



अतिरोग ( पु० ) राजयक्ष्मा, क्षयी ।

अतिशय ( अति=बहुत, शी=साना ) ( वि० ) बहुत ही बहुत, अत्यंत, अधिक, निहायत ।

अतिशयोक्ति ( स्त्री० ) असंभव प्रशंसा, कविता में एक प्रकार का अलंकार ।

अतिसंधान ( पु० ) विश्वासघात, धोखा ।

अतिसार ( अति=बहुत, सृ=ज्ञाना ) ( पु० ) पेट चलना, संग्रहणी-रोग, पेटौखा रोग, पेट की बीमारी ।

अतीत } ( सं० अतिषि ) ( पु० ) योगी, संन्यासी । ( वि० )  
अतीथ } बीता हुआ, गत, भूत, अलग, मृत, निर्लेप  
अतुराना ( कि० अ० ) घबड़ाना, हड़बड़ाना ।

अतुल } ( अ=नहीं, तुल=तोलना ) ( वि० ) जिसका  
अतुलित } तोल न हो, अपार, जो तोला न जाय,  
अतील } अप्रमाण, अनूप, उत्तम, जिसको  
बराबरी न हो सके ।

अतृथ ( वि० ) अपूर्व, विचित्र ।

अतृप्त ( वि० ) असंतोषी, भूखा ।

अतृष्ण ( वि० ) निर्लोभ, निस्पृह, कांक्षाहीन ।

अतेज ( वि० ) धुंधला, तेजहीन, क्षीय ।

अत्ता ( स्त्री० ) मा, बड़ी बहन, सास, मौसी । ( पु० ) ईश्वर

अत्तार ( पु० ) गंधी, यूनानी दवा बेचनेवाला ।

अत्यंत ( अति=उल्लंघन, अंत=पार ) ( वि० ) बहुत ही बहुत, अतिशय, अधिक, अति की सीमा ।

अत्यंत वासी ( वि० ) नैष्ठिक ब्रह्मचारी, एकांतवासी ।

अत्यय ( अति=पार + अय=ज्ञाना, इ=ज्ञाना ) ( पु० )  
समाप्ति, नाश, अपराध, गुनाह, कष्ट, दंड,  
राज्याज्ञा का उल्लंघन ।

अत्याचार ( अति=विरुद्ध + आचार=चलन ) ( पु० )  
अन्याय, जुल्म, दुराचार, पाखंड ।

अत्युक्ति ( अति=बहुत, उक्ति=बहना, वच्=बोलना )  
( स्त्री० ) बहुत बढ़ाकर कहना, झूठी सराहना करना,  
एक अलंकार का नाम ।

अत्युत्कंठा ( स्त्री० ) अधिक चिंता, प्रबल आकांक्षा ।

अत्र ( इदम्=यह ) ( कि० वि० ) यहाँ, इस जगह, इसठौर ।

अत्रप ( वि० ) बेशर्म, लज्जाहीन, निर्लज्ज ।

अत्रभवान् ( पु० ) पूज्य, श्रेष्ठ, माननीय ।

अत्रि ( अद्=खाना वा बचाना ) ( पु० ) सात ऋषियों में  
का एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा ।

अथ ( अव्य० ) फिर, उपरांत, इसके पीछे, शुरू,  
आरंभ, इस तरह से ।

अथऊ ( पु० ) जैनियों का भोजन, जो सूर्यास्त के पहले  
करते हैं, अंथऊ ।

अथक ( वि० ) जो न थके, अक्लान्त ।

अथच्च ( अव्य० ) और, और भी ।

अथरा ( पु० ) एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन, जिसमें  
रंगरेज कपड़ा रेंगते हैं ।

अथरी ( स्त्री० ) छोटा अथरा, जिसमें दही जमाया जाता है ।

अथर्व ( पु० ) चौथा वेद ।

अथल ( पु० ) भूमि-विशेष, जो लगान पर जोतने-बोने  
को दी जाती है ।

अथवना ( कि० अ० ) गुप्त होना, नष्ट होना, डूबना ।

अथवा ( अथ=फिर, वा, या ) ( अव्य० ) या, वा, किवा,  
प्रकारान्तर ।

अथाई ( सं० अ=नहीं, रथा=रहना ) ( स्त्री० ) वह जगह  
जहाँ लोग बातचीत और हँसी-ठट्टा करने के लिये  
इकट्ठे होते हैं, बैठक, सभा, जमाव ।

“हाट-बाट सब गली अथाई”-तुलसीकृत रामायण ।

अथान ( पु० ) अचार ।

अथाह ( सं० अ=नहीं, रथान=जगह, वा अग्राध )  
( वि० ) गहरा, गंभीर, बहुत ही गहरा, बेधाह ।

अथोर ( वि० ) अधिक, पूरा थोड़ा नहीं ।

अदग्ध ( वि० ) विना जला हुआ ।

अदंज्य ( वि० ) दंडमुक्त, दंड न पाने योग्य ।

अदत्त ( वि० ) असमर्पित, अदान ।

अदत्ता ( वि० ) कुँआरी, न दी हुई, ( स्त्री० ) अविवाहिता ।

अदद ( पु० ) गिनती ।

अद } ( सं० अर्द्ध ) ( वि० ) आधा ।  
अध }

अदन ( अद्=खाना ) ( पु० ) भोजन, खाना, स्थान-विशेष ।

अदना ( वि० ) तुच्छ, सामान्य, छोटा ।

अदनीय ( अद् + अनीय ) ( वि० ) भोजन योग्य,  
खुदनी ।

अदथ ( पु० ) क्रायदा, शिष्टाचार ।

अदथदाकर ( कि० वि० ) अवश्य, हठ करके ।

अदभ्र ( वि० ) बहुत, पूर्ण, यथेष्ट ।

अधमरा } ( सं० अर्द्धमरण, अर्द्ध=आधा, मृ=मरना )  
 अधमरा } ( वि० ) ( बोल० ) बहुत ही सुस्त, बहुत  
 अधमूआ } ही अशक्त, आधा मरा हुआ, नीम  
 अधमूआ } मुर्दा ।

अदल ( पु० ) न्याय, ( वि० ) बिना पत्ते का, सेना-हीन ।  
 अदल-बदल ( बोल० ) ( पु० ) हेराफेरी, पलटा, परि-  
 वर्तन, हेरफेर ।

अदला-बदला करना ( बोल० ) बदलना, पलटना,  
 एक चीज के पलटे में दूसरी चीज लेना ।

अदवायन ( स्त्री० ) खाट की रस्सी, ओरचन ।

अदहन ( सं० आदहन आ=अधिक, दहन=जलाना ) ( पु० )  
 दाल चावल अथवा और चीज पकाने के लिये बहुत  
 ही गर्म पानी, खोला हुआ पानी ।

अदा ( वि० ) चुकना, सफाई, ( स्त्री० ) ढंग, नम्रता ।

अदाता ( पु० ) सम, कृपण ।

अदाया ( स्त्री० ) निर्दयता ।

अदार ( अ=नहीं, दारा=स्त्री ) ( पु० ) कल्याणभार्य,  
 रंडुवा, बिधुर ।

अदावत ( स्त्री० ) घैर, शत्रुता, विरोध ।

अदिति ( अ=नहीं, दा=देना, जो दुःख न दे वा,  
 दो=काटना ) ( स्त्री० ) देवताओं की मा, दूध की  
 बेटो, कश्यप मुनि की स्त्री ।

अदितिनंदन ( पु० ) सूर्य ।

अदिन ( अ=नहीं, वा बुरा, दिन=समय ) ( पु० ) बुरा दिन,  
 बुरी दशा, छोटे दिन, छोटे ग्रह, कुदिन ।

अदिष्ट ( पु० ) विपत्ति, भाग्य ।

अदीठ ( वि० ) गुप्त, अनदेखा ।

अदीह ( वि० ) सूक्ष्म, छोटा, दृष्टि से परे ।

अदूर ( कि० वि० ) दूर नहीं, पास, निकट ।

अदूरदर्शी ( वि० ) अल्पदृष्टि, कोताह-नज़र,  
 नासमझ ।

अदृश्य } ( अ + नहीं, दृश=देखना ) ( वि० ) अलख,  
 अदृष्ट } जो देखने में न आवे, अगोचर, गुप्त, अदेख ।

अदृष्ट-पूर्व ( वि० ) विलक्षण, अद्भुत, बिना सोचा हुआ ।

अदृष्ट फल ( पु० ) सुख-दुख, पूर्व कर्मों का फल ।

अदेय ( अ=नहीं, दय=देने योग्य, दा=देना ) ( वि० )  
 न देने योग्य ।

अधा ( पु० ) आधा ।

अद्धी ( सं० अर्द्ध=आधा ) ( स्त्री० ) आधी दमड़ी, एक  
 प्रकार का महीन सूती वस्त्र, तनजेब ।

अद्भुत ( अत्=अचंभा, भू=होना वा, भा=चमकना )  
 ( वि० ) अनोखा, अपूर्व, अजोब ।

अद्य ( कि० वि० ) आज, अब, अभी ।

अद्यापि ( अद्य + अपि ) ( कि० वि० ) आज तक, अब  
 तक ।

अद्यावधि ( अद्य + अवाधि ) ( कि० वि० ) अभी तक,  
 इस समय तक ।

अद्रक ( सं० आर्द्रक, आर्द्र=गीला ) ( पु० ) आदी, अदरक,  
 कच्ची सोंठ ।

अद्रि ( अद्र=खाना ) ( पु० ) पहाड़, पर्वत, वृक्ष, पेड़,  
 सात ।

अद्वितीय ( अ=नहीं, द्वितीय=दूसरा ) ( वि० ) केवल,  
 निकेवल, एक ही, अनूप, अतुल्य, जालानी ।

अद्वैत ( अ=नहीं, द्वैत=दूसरा ) ( वि० ) जिसके समान  
 दूसरा नहीं है, भेद-रहित, बेमिसल, ( पु० ) ब्रह्म, ईश्वर ।

अधः ( अव्य० ) नीचे, तले ।

अधःपतन ( पु० ) दुर्दशा, नाश, अवनति, अधःपात ।

अधकछार ( पु० ) पहाड़ी भूमि जो हरीभरी और  
 उपजाऊ होती है ।

अधकपाली ( सं० अर्द्धकपाल, अर्द्ध=आधा, कपाल=शिर )  
 ( स्त्री० ) आधासीसी, आधे सिर की पीड़ा ।

अधखिला ( वि० ) आधा खिला हुआ ।

अधगो ( पु० ) गुदा आदि नीचे की इंद्रियाँ ।

अधन ( वि० ) दीन, गरीब, कंगाल, भिक्षुक ।

अधपई ( स्त्री० ) आधपाव, दस तोला, दो छठक ।

अधवर ( वि० ) आधी दूर, बीच में, मध्य, दर्मियान,  
 आधा रास्ता ।

अधबुध ( वि० ) जिसकी शिक्षा पूर्ण न हुई हो,  
 अर्द्धशिक्षित ।

अधम ( अव=बचाना ) ( वि० ) नीच, कमीना, दुष्ट,  
 पापी, निरुद्ध ।

अधमर्ण ( अधम + ऋण ) ( पु० ) ऋणी, खादक,  
 ऋजुदार ।

अधर ( अ=नहीं, धृ=रखना ) ( पु० ) होठ, नीचे का होठ,  
 बीच, शून्य, स्वर्ग और धरती के बीच की जगह,  
 ( वि० ) नीच, कमीना, छोटा, लघु ।

अधरामृत ( अधर=होठ, अमृत=अमरी ) ( पु० ) होठों की अमरी, अधर-रस ।

अधर्म ( अ=नहीं, धर्म=पुण्य ) ( पु० ) पाप, अन्याय, अपराध, अधेर, बुरा कर्म, दोष, गुनाह जो धर्म अथवा सत्कार्य न कहा जा सके ।

अधर्मी ( अ=नहीं, धर्म=धर्म करनेवाला ) ( पु० ) पापी, दुराचारी, अन्यायी, दुष्ट, दोगों, अपराधी, बदकार ।

अधवाड़ ( अ० अर्द्ध=आधा ) ( पु० ) कपड़े का आधा धान, आधे घर के लोग ।

अधार ( सं० अधार ) ( पु० ) आसरा, आड़, आश्रय-खाना, आहार, भोजन ।

अधार्मिक ( अ=नहीं, धर्मिक=धर्मी ) ( पु० ) अन्यायी, पापी, दुष्ट, बुरा, धर्महीन ।

अधि (अ०) पर, ऊपर, ऊँचा, मुख्य, प्रधान, बहुत, अधिक, सामने, वश में, यह उरमर्ग अप का उलटा है ।

अधिक ( अधि=ऊपर ) ( वि० ) बहुत, विशेष, ज़ियादत ।

अधिकता ( अधिक ) ( स्त्री० ) अधिकाई, बहुतायत, बढ़ता ।

अधिकमास ( पु० ) मलमास, अधिक महीना, लौद ।

अधिकरण ( अधि=ऊपर, कृ=करना ) ( पु० ) आधार, आसरा, व्याकरण में सातवाँ कारक, जर्क ।

अधिकाई सं० अधिक्य, अधिक=बहुत ( स्त्री० ) बहुतायत, बढ़ती, विपुलता ।

अधिकाधिक ( वि० ) अधिक-से-अधिक ।

अधिकाना ( कि० अ० ) बढ़ना, बढ़ती होना, वृद्धि होना, "क्षणभर में आपत्ति भयंकर अधिक अधिक अधिकता है ।" ( में० श० गुप्त )

अधिकार ( अधि=ऊपर, कृ=करना ) ( पु० ) हक, बर्पाती, योग्यता, स्वामोपन, राज, अक्षितार, ओहदा, काम, प्रधानता, आधिपत्य ।

अधिकारी ( अधिकार + ई ) ( पु० ) अधिकार रखनेवाला, स्वामी, मालिक, धनी, वारिस, हकदार, पुजारी, पंडा ।

अधिकृत ( पु० ) अधिकार पाया हुआ, अधिकार किया हुआ, मकबूजा, हस्तगत, प्राप्त ।

अधिक्रम ( पु० ) चढ़ाई, चढ़ाव ।

अधिगत ( वि० ) प्राप्त, जाना-बूझा, पठित ।

अधित्यका ( अधि + त्यक्, त्यज्=जोड़ना ) ( स्त्री० ) टीका, तराई, दामन, कोह, कुदरी ।

अधिदेव ( पु० ) इष्टदेव, कुलदेव ।

अधिप } ( अधि=ऊपर, पा=पालना ) ( पु० )  
अधिपति } प्रधान, मुखिया, राजा, मालिक, स्वामी, प्रभु ।

अधिमास ( अधि=अधिक, मास=महीना ) ( पु० ) मल-मास, लौद का महीना ।

अधियाना ( कि० सं० ) आधा करना, बराबर भाग करना ।

अधियारी ( पु० ) आधे का अधिकारी, हिस्सेदार ।

अधिरथ ( पु० ) रथ हाँकनेवाला, रथवान, एक सारथी का नाम जिसने कर्ण को पाला था ।

अधिराज ( अधि=ऊपर वा प्रधान, राजन्=राजा ) ( पु० ) महाराज, राजाधिराज, सत्कर्तवी राजा, सम्राट् ।

अधिरूढ़ ( अधि=ऊपर, रूढ़ रुह्=जमना ) ( पु० ) आरूढ़, सवार ।

अधिवास ( अधि + वास वस्=रहना ) ( पु० ) रहने की जगह, सत्कृत, वासस्थान ।

अधिवेशन ( अधि=ऊपर, वेशन विश=धुपना, जाना ) ( पु० ) बैठक, दरबार, इजलास जलसा ।

अधिष्ठाता ( अधि=ऊपर, स्था=ठहरना ) ( पु० ) स्वामी, मालिक, रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर, अगुवा, संस्थापक ।

अधिष्ठान ( अधि + स्थान ) ( पु० ) स्थान, क्रयाम, मुकाम ।

अधीत ( अधि + इत इ=जाना ) ( पु० ) पढ़ा हुआ, पठित ।

अधीति ( अधि + इति इ=जाना ) ( स्त्री० ) पढ़ना, अध्ययन, पढ़ाई ।

अधीन ( अधि=पर अथवा वश इन=स्वामी ) ( वि० ) वश में, आज्ञाकारी, दयैल, ताबेदार, आश्रित, दास, सेवक ।

अधीनता ( अधीन ) ( स्त्री० ) ताबेदारी, चाकरी, दबाव, आश्रितता, दीनता, अविवशता ।

अधीर ( अ=नहीं, धीर=धीरजवाला ) ( वि० ) चंचल, उतावला, घबराया हुआ, असंतोषी, अपल, अस्थिर, हड़बड़िया, चटपटा, जल्दबाज़, बेसम ।

अधीरता ( अधीर ) ( स्त्री० ) घबराहट, चंचलाहट, उतावली, बेसबरी, हड़बड़ी, चटपटी ।

## अधीश

अधीश } (अधि=ऊपर वा अधिक, ईश वा ईश्वर=  
अधीश्वर } स्वामी) (पु०) राजाधिराज, राजाओं का  
राजा, महाराज, शाहशाह ।

अधुना (कि० वि०) अब, इस वक्त, इस समय, अभी ।  
अधूरा (अधूरा) (वि०) अधवना, अनवना, पूरा  
नहीं, नामुकम्मिल, अपूर्ण ।

अधूराजाना (ब० ल०) कच्चा जाना, कच्चे वच्चे का गिरना ।  
अधेन्द्र (अर्द्ध=आधा) (वि०) अधवृद्धा, जिसकी आधी  
उमर खान गई हो, यह शब्द स्त्री के लिये बहुत  
बार बोला जाता है अवस्था का एक भाग ।

अध्वन (स० अध्वपन) (पु०) पड़ना, रुवाईगी ।  
अध्वेता (स० अर्द्ध=आधा) (पु०) आधा पैसा,  
पैसे का आधा ।

अध्वेता (स० अर्द्ध=आधा) (स्त्री०) आधा रुपया,  
अठ्ठा, आठ आना ।

अधो (पु०) नरक, नीचे, तले ।  
अधोगति (स्त्री०) गिराव, पतन, अवनति, दुर्दशा ।  
अधोगामी (वि०) बुढ़ी दशा को प्राप्त होनेवाला नीचे  
जानेवाला ।

अधोतर (पु०) एक प्रकार का देशा मोटा वस्त्र ।  
अधोदेश (पु०) नीचे का स्थान ।  
अधोमुख (वि०) नीचा मुख किए हुए, शिर झुकाए  
हुए, उदास, आँधा, मुह के बल ।

अधोलोक (पु०) पानाल ।  
अधोनायु (पु०) पाद, अपाननायु ।  
अधोर्द्धा (स० अर्द्ध=आधा) (स्त्री०) आधी खाल,  
मोटा और गाढ़ा चमड़ा जिसके जुते के तले, डोल,  
डोलघी और घोड़े के साज आदि बनते हैं ।

अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अर्द्ध=फैलाना) (पु०) स्वामी,  
मालिक, प्रधान, मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।  
अध्ययन (अधि + इ=पढ़ना) (पु०) पढ़ना, पवित्र  
पोधियों का पाठ करना, ब्राह्मणों के पट्कर्म में से  
एक कर्म ।

अध्यवसाय (अधि + अव + से=नाश होता) (पु०)  
उद्यम, उपाय, रोजगार ।

अध्यशन (पु०) अजीर्ण, अपच, अधिक भोजन कर लेना ।

अध्यात्म (पु०) आत्मा-विषयक, आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार ।

अध्यात्मविद्या (स्त्री०) ब्रह्मविद्या ।

अध्यापक (अधि + इ=पढ़ना) (पु०) पाठक, गुरु,  
उपाध्याय, आचार्य, शिक्षक, वेद-शास्त्र पढ़ानेवाला ।

अध्यापन (अधि + इ=ज्ञाना) (पु०) पढ़ाना,  
सबक देना ।

अध्याय (अधि + इ=पढ़ना) (पु०) पाठ, पर्व, सर्ग,  
प्रकरण, बाब, परिच्छेद ।

अध्यास (अधि + आस=बैठना) (पु०) भाव,  
खयाल, संबंध, ताल्लुक, सत्य-असत्य वस्तु की  
जो अभेद-प्रतीति है उसी का नाम अध्यास है ।

अध्यासीन (अधि + आसीन आस=बैठना) (पु०)  
बैठा हुआ ।

अध्याहार (पु०) तर्क-वितर्क, वादविवाद, वाक्यपूर्ति  
करना ।

अध्येता (पु०) विद्यार्थी, छात्र ।

अध्वज (वि०) क्षत्रभंगुर, चलायमान, चल, अनिश्चल ।

अध्वज (पु०) राह, मार्ग, पथ, रास्ता ।

अध्वग (पु०) यात्री, पथिक, बटोही ।

अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना अर्थात् जो सच्चा रास्ता  
बतलाता है) (पु०) यज्ञ, होम, बलिदान ।

अध्वर (अध्वन्=मार्ग) (स्त्री०) राह ।

अन्न (निषेधवाचक अन्वय) संस्कृत में जिस शब्द का  
पहला अक्षर स्वर हो उसके पहले अ नहीं आता  
बल्कि ऐसी जगह पर अ को अन्न हो जाता है  
जैसे अन्नंत, पर हिंदी में व्यंजन के पहले भी  
अन आता है जैसे अनदेखा । नहीं, न, ना,  
रहित, बिन ।

अन्नकय्नांठ्यड वह नौकर जिन्हें सकार नौकरी देने को  
जिम्मेदार नहीं ।

अन्नंश (वि०) पैतृक संपत्ति पाने के अयोग्य ।

अनग्रहिवात (पु०) वैधव्य, विधवापन, रंडापा ।

अनग्रहस (पु०) व्यर्थ, बुराई ।

अनग्रतु (पु०) असमय, कुसमय ।

अनक (पु०) मृदंग, नगारा, बड़ा ढोल, भेरी ।

अनकरीच (कि० वि०) प्रायः, लगभग ।

अनकहा (वि०) अकथित ।

अनख (अनखाना) (स्त्री०) रिस, कोप, क्रोध,  
गुस्सा, डाह, ईर्ष्या ।

अनख (अनख) (पु०) नखहीन, जिसके नख न हो ।

अनखाना ( कि० अ० ) कोप करना, खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा होना, चिढ़ना, खुनसान, ख़फ़ा होना ।

अनगढ़ ( अ० ) ( अ०=नहीं, गढ़ना=बनाना ) ( वि० ) अनगढ़ा, ( पु० ) अनबना, अदृश्य, अनसोखा, नहीं अनगढ़ी, ( स्त्री० ) गढ़ा हुआ, अनाड़ी ।

अनगढ़ी बात ( बोल० ) बेठिकाने की बात, बेमेल बात, बेसिर-पैर की बात, बेढंगी बात ।

अनगणित ( सं० अगणित, अ=नहीं, गण=गिनना ) अनगणित ( वि० ) अपार, बेगुमार, असंख्य, बहुत, अनगणित ( स्त्री० ) बेहिसाब । अनगणित ( अ० )

अनगिना ( सं० अगणित ) ( वि० ) नहीं गिना हुआ, बेगिना, अगणित, अपार, बेगुमार, बेहिसाब ।

अनगिना महीना ( बोल० ) स्त्री के गर्भ का आठवाँ महीना, जब स्त्री पेट से हो, उस समय का आठवाँ महीना ।

अनघ ( अ=नहीं, अघ=पाप ) ( वि० ) निष्पापी, निर्दोष, सीधा-सादा, शुद्ध, बेगुनाह, पाप-रहित ।

अनंग ( अन्=नहीं, अंग=देह ) ( पु० ) कामदेव, एक बार महादेव ने अपनी तीसरी आँख की आग से कामदेव को जला दिया था, उसी दिन से इसका नाम अनंग हुआ, यमराज और श्रद्धा का पुत्र ।

अनचाहत ( अन्=नहीं, चाहना ) ( वि० ) नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित, अप्रेमी, न चाहनेवाला ।

अनचित ( सं० अ=नहीं, चित्=सोचना ) ( वि० ) अचानक, एकाएक, अचिता ।

अनर्चन्हा ( वि० ) अज्ञान, अपरिचित, अनजान ।

अनजाना ( सं० अज्ञान ) ( वि० ) नहीं जाना हुआ, निर्बुद्धि ।

अनजाने ( सं० अज्ञान ) ( कि० वि० ) बिना जाने, बे-जाने-बुझे, अज्ञान में, अज्ञान ।

अनजामा ( वि० ) उत्पादकशक्तिशून्य, बाँझ, मरु ।

अनजीवत ( सं० अजीवित ) ( पु० ) मृतक, मुर्दा ।

अनट ( स्त्री० ) गिरह, गाँठ, विपरीत, विरुद्ध ।

अनड्वान् ( सं० अनड्वद् ) ( पु० ) बैल, साँड़, वृषभ ।

अनत ( सं० अन्यत्र ) ( कि० वि० ) और जगह, अन्यत्र, और कहीं ।

अनदेखा ( वि० ) गुप्त, अदृश्य ।

अनधन ( पु० ) ऐश्वर्य, संपत्ति, धनधान्य ।

अनधिकार ( पु० ) अधिकार का अभाव ।

अनधिकारी ( वि० ) अयोग्य, अधिकारहीन ।

अनध्याय ( पु० ) जिस दिन पठन-पाठन न हो, छुट्टी का दिन ।

अनंत ( अन्=नहीं, अंत=पार ) ( वि० ) अपार, जिसका अंत नहीं, असीम, बेहद, ( पु० ) शेषजी, शेषनाग जिनके एक फन पर हिंदू लोग पृथ्वी को ठहरी बताते हैं, चौदह गाँठ का एक भाग जिसकी भाँटों सूरी १४ अर्थात् अनंतचौदस के दिन पूजा करके हिंदू लोग अपने दाहने हाथ पर बाँधते हैं, विष्णु, धरणी, नक्षत्र, जीव, ब्रह्म, लाइनिहा ।

अनंतर ( कि० वि० ) लगातार, बाद, उपरांत, पीछे, समीप, पास ।

अनंतवीर्य ( वि० ) अपार शक्तिवाला ।

अनंता ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, पार्वती, पीपर, दूध, जवासा ।

अनन्नास ( पु० ) फल-विशेष ।

अनन्य ( अन्=नहीं, अन्य=दूसरा ) ( वि० ) एक ही, जिसकी दूसरे का भरोसा नहीं, एकनिष्ठ, एकभाव, अभिन्न ।

अनन्यगति ( वि० ) जिसकी दूसरी गति न हो, जिसकी और कुछ सहारा न हो ।

अनन्यचित्त ( वि० ) एकचित्त, एकाग्रचित्त ।

अनन्यता ( स्त्री० ) एक ही में लीन ।

अनपच ( पु० ) अजीर्ण, अपच ।

अनपढ़ ( वि० ) मूर्ख, अशिक्षित ।

अनपत्य ( अन्=नहीं+अपत्य=पुत्र ) ( पु० ) पुत्रहीन, निरसंतान ।

अनपावनी ( सं० अप्रापणीय ) ( वि० ) जिसकी कोई न पावे, दुर्लभ, अप्राप्त ।

अनपेक्ष ( वि० ) स्वाधीन, निर्पेक्ष, स्वतंत्र ।

अनघनाय ( अन्=नहीं, बनाय=मेल ) ( पु० ) अनरस, दिगाड़, फूट, नाचाकी, मेंढाँटी, नाहसिकाकी ।

अनवृक्ष ( वि० ) नादान, अज्ञानी, नासमझ ।

अनवेधा ( सं० अवेद, अ=नहीं, वेध=बोधना ) ( पु० ) अनवेदा, अवेधा, न वेदा हुआ, नहीं बोधा हुआ, अनबिधा ।

अनखोल ( अन्=नहीं+खोल=खोलना ) ( वि० ) चुपचाप, अवाक्, अखोल, अनखोला, चुपका, गुगा ।

अनभल (अन=नहीं, मल=अच्छा) (पु०) बुरा, दुःख, अहित, खोटा।

अनभिज्ञ (अन+अभि+ज्ञा=ज्ञान) (वि०) नादान, नावाकिक।

अनभिप्रेत (वि०) अनभिमत, अनिष्ट।

अनभिद्यक्त (वि०) अस्पष्ट, अप्रकाश, अव्यक्त।

अनभ्यस्त (वि०) अपठित, जो न पढ़ा गया हो।

अनभ्यास (वि०) अभ्यास न करनेवाला, साधनाहीन।

अनमना (सं०) अन्यमनस, अन्य=दूसरा, मनस्=मन वा उन्मनस, उन्=ऊपर, मनस्=मन) (वि०) घबराया हुआ, उदास, चिन्ता में, चिन्तित, क्रिस्त्रमंद, मुन-क्रकिर।

अनमिल (वि०) असंयुक्त, बेमेल।

अनमोल (अन=नहीं, माल=कीमती वा सं० अप्रमल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) (वि०) अमोल, बढ़िया, उत्तम, जिसका मोल न हो सके।

अनघ्न (वि०) उद्धत, उद्दंड, अविनयी।

अनघ्न (अन=नहीं, रस=स्वाद) (पु०) अनखनाव, मित्रों के आपस में, पेंटापेंटी, फूट, नाचाकी, बिगाड़, विरोध।

अनरीति (अन=नहीं, रीति=चाल) (स्त्री०) कुचाल, कुदग, बुरी रीति।

अनर्गल (वि०) अंडबंड, बेरोक, व्यर्थ।

अनर्घ्य (वि०) अपूज्य, अमोल, अमूल्य।

अनर्थ (अन=नहीं, अर्थ=मतलब, लाभ) (वि०) वृथा, बेकार्यदा, अनुचित, निरर्थक, अकार्य, निष्फल, बेमतलब, (पु०) हानि, नुकसान।

अनर्थकारी (अनर्थ+कारी) (पु०) हानिकारक, मुजिर, उपद्रवी।

अनर्थ (वि०) अयोग्य, अपात्र, अनुपयुक्त।

अनल (अन=नहीं, ल=पूरा होना, अर्थात् जिसमें चाहे जितना डालो पर पूर्ण न हो वा अन=जाना, जिससे सब जाते हैं) (पु०) आग, आगी, अग्नि, भिलावाँ, चित्रक, तीन की संख्या, एक राक्षस का नाम।

अनलपक्ष (पु०) एक प्रकार का पक्षी, जो आकाश में रहता है और आकाश ही में अंडा देता है; अंडा पृथ्वी पर गिरने के पहले फट जाता है और बच्चा निकलकर उड़ने लगता है।

अनलस (वि०) परिश्रमी, उद्योगी, आलस्यहीन।

अनलेख (वि०) अदृश्य, अगोचर।

अनल्प (वि०) अधिक, बहुत, अल्प नहीं।

अनवकाश (पु०) अवकाश का अभाव।

अनवट (पु०) छल्ला, बिछिया।

अनवद्य (अन=नहीं, अद्य=दोष) (वि०) निर्दोष, बेचूक, बेगुनाह, बेपत्ता।

अनवधान (अन=नहीं+अव=निश्चय+धा=धरना) (पु०) आसक्तिरहित, बेतवज्जह, बेमुहब्बत, बेफ्वाहिश, मनोयोग का अभाव।

अनवस्था (स्त्री०) अधीरता, व्याकुलता।

अनवस्थित (अन+पव+स्था=ठहरना) (वि०) अचेत, बेखबर, असावधान, शाकिल।

अनवसर (पु०) असमय, बेमौक़े, अनवकाश।

अनवासना (क्रि० सं०) नए बर्तन को पहले काम में लाना।

अनशन (पु०) निराहार, उपवास।

अनश्वर (वि०) जो नष्ट न हो, अटल।

अनसखरी (स्त्री०) घृत में पका हुआ भोजन, पकी रसोई।

अनसिख } (सं०) अशिक्षित अन=नहीं, शिक्षित=सीखा

अनसीखा } (वि०) अनपढ़ा मूख, अज्ञान, गैर-तालीमयाफ़ता।

अनसुना (अन=नहीं, सुना) (वि०) न सुना, न ध्यान दिया हुआ, अनाकानी।

अनसुनी करना } (बोल०) किसी की बात पर सुनी अनसुनी करना } कुछ ध्यान न देना, न सुनने का बहाना करना।

अनहित (सं०) अहित, अन=नहीं, हित=मला) (पु०) बेरी, द्वेषी, बुरा करनेवाला, बुरा।

अनहोना (अन=नहीं, होना) (वि०) न होनेवाला, असंभव, गैरमुमकिन।

अनहोरी (स्त्री०) छोटी-छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में निकल आती हैं।

अनाकानी (स्त्री०) सुनी अनसुनी करना 'कीन्हों अनाकनी पै मुल मोरी...' (देवकवि)।

अनागत (वि०) होनहार, भविष्य, भावी।

अनाचार (अन=नहीं, आचार=चालचलन) (पु०) बुरा चालचलन, कुचाल, कुरीति, बुरा व्यवहार, बद-चलनी, बदचलन।

अनाज } ( सं० अन्न ) ( पु० ) अन्न, नाज, गहला ।  
नाज }

अनाड़ी ( सं० अनार्य, अन्=नहीं, आर्य=सभ्य ) ( वि० )  
गँधार, मूर्ख, भोंदू, फूहड़, बेडौल, बेढंगा, सिख-  
नौत, कच्चा ।

अनातप ( पु० ) छाया, घाम का अभाव ।

अनातपत्र ( पु० ) छत्रहीन ।

अनाथ ( अ=नहीं, नाथ=स्वामी ) ( वि० ) विना मालिक,  
विना मा-बाप का, मुरहा, यतीम, विना पति की  
लुगई, दुखी, दीन ।

अनाथालय ( अनाथ+आलय ) ( पु० ) मुहताज्जवाना,  
यतीमखाना ।

अनाथिनी ( स्त्री० ) विधवा, पतिहीना, दुःखिनी ।

अनादर ( अन्=नहीं, आदर=मान, आनन्द=काइता ) ( पु० )  
अपमान, हलकापन, बेहइज्जती, निरादर, निरस्कार ।

अनादि ( अन्=नहीं, आदि=पहले ) ( वि० ) जिसका  
आदि नहीं, अविनाशी, सदा रहनेवाला ।

अनाना ( कि० सं० ) मैंगाना ।

अनादृत ( वि० ) अपमानित, जिसका आदर न हुआ हो ।

अनापशनाप ( पु० ) ऊटपटाँग, निरर्थक प्रलाप, अटशट ।

अनाम ( वि० ) अनाड़ी, असभ्य, अविश्वासी ।

अनामय ( अन्=नहीं, आमय=रोग, अम्=रोगार होना  
( वि० ) नीरोग, भलाचंगा, विना रोग, ( पु०  
आरोग्य, नीरोगपन, नीरोगता, सेहत ।

अनामा ( स्त्री० ) अनामिका, कनिष्ठा और मध्यमा के  
बीचवाली उँगली ।

अनायास ( अन्=नहीं, आयाम=मिहनत, आ=पव तरह  
में, यम्=मिहनत करना ) ( कि० वि० ) बिना मिहनत,  
सहज, सुगम, ( पु० ) सुगमता, आसानी, चैन, सुख ।

अनार ( पु० ) दाड़िम, वृक्ष और फल-विशेष ।

अनार्य ( पु० ) श्लेच्छ, जो आर्य न हो ।

अनाविल ( वि० ) साफ, स्वच्छ, निर्मल ।

अनावृत ( वि० ) खुला, विना ढका हुआ ।

अनावृष्टि ( स्त्री० ) सूखा, वर्षा का न होना ।

अनहार ( अन्=नहीं, आहार=खाना ) ( पु० ) उपास,  
लंघन, भूखा रहना, फाकाकशी ।

अनाहृत ( वि० ) विना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित ।

अनिक्ते ( वि० ) गृहरहित, संन्यासी, परित्राजक ।

अनित्य ( अ=नहीं, नित्य=सदा ) ( वि० ) जो सदा  
न रहे, नाशवान्, नाश होनेवाला, भूटा ।

अनित्यता ( स्त्री० ) अस्थिरता, क्राना, नापायदारी ।

अनिन्दित ( वि० ) निर्दोष, अकलंकित ।

अनिद्य ( वि० ) अप्रशंसनीय, अच्छा, निर्दोष ।

अनिमित्तक ( वि० ) व्यर्थ, अकारण ।

अनिमिष ( पु० ) मत्स्य, देवता, ( वि० ) स्थिर दृष्टि,  
( कि० वि० ) एकटक, लगातार ।

अनिमिषाचार्य ( पु० ) बृहस्पति ।

अनियत ( अ=नहीं, नियत=निश्चित, नि + यम ) ( वि० )  
अनिश्चित, संदिग्ध, ह्तिष्काक्रिया ।

अनियम ( पु० ) अव्यवस्था ।

अनिरुद्ध ( अ=नहीं, निरुद्ध=रोका हुआ नि, रुधू=रोकना  
अर्थात् जो किमी से न रोका जाय ) ( पु० ) प्रयुक्त  
का बेटा, श्रीकृष्ण का पोता और ऊपा का पति, कहते  
हैं कि अनिरुद्ध शत्रुघ्न का अवतार था, ( वि० )  
जो रोका नहीं जाय, बेरोक ।

अनिर्दिष्ट ( वि० ) अनिश्चित, अनिर्धारित, अनियत ।

अनिर्देश्य ( वि० ) जिसके विषय में निश्चित रूप से  
कुछ कहा न जा सके ।

अनिर्वचनीय } ( अ + निः + वचनीय=कहने योग्य )  
अनिर्वाच्य } ( वि० ) जो कहने योग्य न हो, अकथ,  
अवर्णनीय, वर्णनरहित ।

अनिशम् ( कि० वि० ) प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

अनिल ( अन्=जीना ) ( पु० ) पवन, हवा, वायु, बाव,  
बयार, बत्तास, संख्या ४६ ।

अनिलान्मज ( पु० ) हनुमान, पवनकुमार ।

अनिलाशी ( पु० ) वायु पीकर रहनेवाला, साँप ।

अनिवार्य ( वि० ) अवश्यभावी, अटल ।

अनिष्ट ( अन्+इष्ट, इप्=चाहना ) ( वि० ) अप्रिय, अनि-  
च्छित, इरावा, बेचाहा, ( पु० ) अशुभ, अमंगल ।

अनी ( सं० अणी ) ( स्त्री० ) नोक, तोखी धार ।

अनीक ( अन्=जीना अर्थात् जिससे रचा होती है ) ( पु० )  
सेना, कौज, कटक, योद्धा, संग्राम ।

अनीति ( अ=नहीं + नीति=अच्छा चलन ) ( स्त्री० )  
अन्याय, कुचाल, बुरा चलन ।

अनीप ( अनी=सेना, पा=रचा करना ) ( पु० ) सेनापति,  
सरदार ।

अनीश (वि०) ईश्वररहित, विना स्वामी का, असमर्थ,  
(पु०) माया, जीव ।

अनीश्वरतादी (पु०) नास्तिक, मीमांसक, जो ईश्वर  
को न माने ।

अनीह (अन=नहीं+ईहा=सुख, ईच्छा, चेष्टा) (वि०) जिसको  
कुछ चाह न हो, चेष्टारहित, निर्गुण, बेरूप, आज्ञामी,  
हीला, बोदा, (पु०) अयोध्या के एक राजा का नाम ।

अनीहा (अन + ईहा) (स्त्री०) उदासीनता,  
बेपरवाही ।

अनु (उप०) पीछे, साथ, अनुसार, बराबर, पास, अनु-  
करण, नकल, हरणक, कम, थोड़ा ।

अनुकथन (अन=पीछे + कथ=कहना) (पु०) कहे के  
पीछे कहना, बाराबर कहना, ताईद करना, बातचीत,  
यातालाप ।

अनुकंपा (अन=कंप=कॉपना (स्त्री०) दया,  
कृपा, मेहरबानी ।

अनुकरण (अन+नकल, क=करना) (पु०) नकल,  
अनुरूप ।

अनुकर्षण (पु०) आकर्षण, विंचाव ।

अनुकूल (अन=साथ, कूल=पेरना) (वि०) सहाय  
करनेवाला, मददगार, कृपालु, दयालु, मेहरबान,  
अनुसार, सुवाकिक ।

अनुक्त (वि०) अध्यक्त, अकथित ।

अनुक्रम (अन=पीछे, क्रम=चलना) (पु०) क्रमानुसार,  
तर्तबवार, क्रमशः, प्रबंध, सूचीपत्र, फेहरिस्त,  
सिलसिला ।

अनुकाश (पु०) कृपा, दया, स्नेह ।

अनुक्षण (क्रि० वि०) प्रतिक्षण, लगातार, निरंतर ।

अनुखाल (पु०) नाला, खाई, खाड़ी ।

अनुग (अन=पीछे + गम्=जाना) (पु०) अनुगामी,  
अनुचर, सेवक, तावेदार ।

अनुगति (अन=पीछे, गति=चल) (स्त्री०) अनु-  
मति, सम्मति, मर्जी, आज्ञा ।

अनुगामी (अन=पीछे, गामी=चलनेवाला, गम्=चलना)  
(पु०) पीछे चलनेवाला, साथी, नौकर,  
पेगोकार ।

अनुग्रह (अन=पाछ, ग्रह=लेना) (पु०) कृपा, मेहर-  
बानी, प्रसन्नता, दया ।

अनुगृहीत (अन=पीछे + गृहीत, ग्रह=लेना) (वि०)  
दया किया गया, निवाजा गया, एहसानमंद ।

अनुग्राहक (वि०) उपकारी, सहायक, दयालु ।

अनुचर (अन=पीछे, चर=चलनेवाला, चर्=चलना)  
(पु०) नौकर, दास, सेवक, चाकर, पीछे चलने-  
वाला, साथी ।

अनुचरी (अनुचर) (स्त्री०) दासी, जौड़ी, बाँदी ।

अनुचित (अन=नहीं, उचित=ठाक) (वि०) अयोग्य,  
ठीक नहीं, नामुनासिब ।

अनुज (अन=पीछे, ज=पैदा हो, जन्=पैदा होता) (पु०)  
छोटा भाई ।

अनुजा (अनुज) (स्त्री०) छोटी बहन ।

अनुजीवी (अन=पीछे, जीविन्=जीनेवाला, जीव=  
जाना) (पु०) नौकर, दास, सेवक, चाकर,  
पराधीन ।

अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जानना) (स्त्री०) आज्ञा,  
अनुमति, हुक्म, चिताना, ताकीद ।

अनुतप्त (अन=पीछे + तप्त=तपा हुआ) (वि०) दुःख से  
भरा हुआ, रंजीदा, गर्म ।

अनुताप (अन + तप=तपना) (पु०) पश्चात्ताप,  
अफसोस, जलन, तपन ।

अनुदात्त (वि०) नीचा, छोटा, तुच्छ ।

अनुदिन (अन=हर एक दिन) (क्रि० वि०) हर एक  
दिन, दिन-दिन, सदा, प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

अनुद्यमी (वि०) आज्ञामी, सुस्त ।

अनुनय (अन + नी=ले जाना) (पु०) विनय, शिक्षा,  
अदब, नसीहत, प्रार्थना, विनती ।

अनुनाद (पु०) गुंजार, प्रतिध्वनि ।

अनुनासिक (अन=पीछे, नासिका=नाक) (वि०) सानु-  
नासिक, (पु०) जो अक्षर मुँह और नाक से बोले  
जायँ, जैसे—ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार ।

अनुपकारी (अन + उप + कारी, क=करना) (वि०)  
पु०) उपकाररहित, बेफैज़, अहित करनेवाला ।

अनुपम (अन=नहीं, उपमा=बराबरी) (वि०) अनुप,  
उत्तम, अपूर्व, जिसकी बराबरी न हो सके, बेमि-  
साल, बेजज़ीर ।

अनुपयुक्त (वि०) अयोग्य, नामुनासिब, बेठीक,  
अनुचित ।



अनुपल (अनु=क्रम, थोड़ा, पल=निमेष) (पु०) पल का साठवाँ हिस्सा, सेकंड ।

अनुपलब्ध (वि०) अप्राप्त ।

अनुपस्थित (वि०) गैरहाज़िर, अविद्यमान ।

अनुपात (अनु=पीछे, बराबर, पत्=गिरना) (पु०) त्रैाशिक, बराबर, संबंध ।

अनुपातक (पु०) महापाप, प्रकृत्या के समान पाप ।

अनुपान (अनु+ता=पीना) (पु०) आपधि का सहकारी, सहयोगी, जरिया, बदका, आपधि के साथ सेवन करनेवाली वस्तु ।

अनुप्राशन (पु०) खाना, (कि०) भक्षण करना, देना, होना ।

अनुप्रास (पु०) वर्णमैत्री, समानवर्ण-विन्यास ।

अनुबंध (अनु+बन्ध=बाँधना) (पु०) बाँधना, मिलाना, मेल-मिलाप, धातु का गणसूचक पूर्व पर अक्षर ।

अनुभव (अनु=पीछे, भू=होना) (पु०) ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, विचार, सोचना, समझना, बूझना, तज्जर्वा ।

अनुभवी (वि०) जानकार, अनुभव रखनेवाला ।

अनुभाव (पु०) प्रभाव, महिमा, बड़ाई ।

अनुभूत (वि०) परोक्षित, निश्चित ।

अनुमत (अनु+मत, मत्=सोचना) (वि०) सलाह दिया गया ।

अनुमति (स्त्री०) सलाह, सम्मति ।

अनुमरण (पु०) सती होना, पति के साथ विधवा का जलना ।

अनुमान (अनु=पीछे, मा=मापना) (पु०) अंदाज़ा, अटकल, विचार, कयास, तज़्मीना ।

अनुमानी (पु०) विचार करनेवाला, अंदाज़ करनेवाला ।

अनुमित (अनु+मित, मा=मापना) (पु०) अटकला गया, कयास किया गया ।

अनुमेय (अनु+मेय, मा=मापना) (पु०) अंदाज़ के लायक ।

अनुमोदन (अनु+प्रद=हर्षित होना) (पु०) प्रशंसा, समर्थन, ताईद करना ।

अनुमोदित (अनु+प्रद) (पु०) आह्लादित, आनंदित, खुश ।

अनुयायी (अनु=पीछे, यायी=जानेवाला, या=जाना) (वि०) पीछे जानेवाला, (पु०) दास, नौकर, अनुचर, पैरोकार ।

अनुयोग (अनु+युज्=मिलना) (पु०) तिरस्कार, निरादर, बेकदरी, प्रश्न, पूछताछ, घुड़की ।

अनुयोजन (पु०) पूछताछ, अपील ।

अनुयोक्ता } (अनु+युज्=मिलना, मिलाना) पूछताछ  
अनुयोजक } करनेवाला, अपीलांत अर्थात् अपील दायर करनेवाला ।

अनुयोज्य निदायोग्य, काबिल हिकारत, (पु०) रिस्पॉडेंट अर्थात् वह मिस पर अपील की जाय ।

अनुरक्त (अनु=गाथ, रज्ज्=रँगना) (वि०) प्रेमी, अनुकूल, शायक, आशिक, भासक, प्रीति ।

अनुराग (अनु=साथ, रज्ज्=रँगना) (पु०) प्यार, स्नेह, प्रीति, छोह, मोह, मुहब्बत ।

अनुरागी (वि०) प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती ।

अनुराधा (अनु=पीछे, राधा=विशाला नक्षत्र, राधू=पूरा करना) (स्त्री०) सप्तहवाँ नक्षत्र ।

अनुरुद्ध } (अनु+रुध्=रोकना) (वि०) रोक  
अनुरोधित } गया, क़ैद किया गया ।

अनुरूप (अनु=बराबर, रूप=डोँल) (वि०) बराबर, तुल्य, समान, उपयुक्त, अनुकूल, एकसा, सदृश, अनुसार, अनुहार ।

अनुरोध } (अनु+रुध्) (पु०) अपेक्षा, निश्चय,  
अनुरोधन } रोकना, आज्ञा-पालन, आशय, सम्मति, तामील, लिहाज़ ।

अनुरोधक } (पु०) रोकनेवाला, आज्ञापालक,  
अनुरोधी } कर्मावरदार ।

अनुलेप } (अनु+लिप्=लगाना) (पु०) उबटन  
अनुलेपन } लगाना, तेल लगाना, सुगंधादिक लेप ।

अनुलोम (अनु=पीछे, लोम=बाल) (वि०) बालसहित, यथाक्रम, विलोम ।

अनुवर्जन } (अनु+वृज्=वर्जना, बर्तना) (पु०) पीछे  
अनुवर्तन } चलना, अनुगमन, पैरवा करना ।

अनुवाद (अनु+वद्=कहना) (पु०) बारबार कहना, उल्था, तर्जुमा ।

अनुवृत्ति (अनु+वृत्ति=वर्तना) (स्त्री०) मार्ग, सेवा, जरिया, तामील ।

अनुवन्दना ( अनु+विद=विचारना ) ( स्त्री० ) सहा-  
नुभूति, हृदयदर्शी ।

अनुशासक ( अनु+शास्=मिलाना ) ( पु० ) डाकिस ।

अनुशासन ( अनु+शास्=मिलाना ) ( पु० )  
आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, संन्यास ।

अनुशीलन ( अनु+शील=अभ्यास करना ) ( पु० )  
आलोचन, अभ्यास करना, मेधन ।

अनुशोचन ( अनु+शुच=रंज करना ) ( पु० ) परचा-  
त्ताप करना, अफसोस करना ।

अनुपङ्ग ( पु० ) संग, कण्ठा, दया, मिलन ।

अनुपुपु ( पु० ) एक प्रकार का छंद जिसमें चार पाद  
होते हैं और एक पाद में आठ अक्षर ।

अनुष्ठान ( अनु+स्था=ठहरना ) ( पु० ) आरंभ,  
आराधना, अमल ।

अनुसंधान ( अनु=पीछे, सम्=अन्वेषण, धा=धन )  
( पु० ) खोज, पता, खोजना, तलाश, अन्वेषण,  
साजिश, तहकीकात, पृथक्ता, क्रूर, प्रबंध,  
इन्तिजाम ।

अनुसरना } सं० अनु+परण, अनु=पीछे, गृ=ज्ञाना ।

अनुहरना } ( क्रि० अ० ) पीछे चलना, साथ चलना ।

अनुसार ( अनु=पीछे, गृ=ज्ञाना ) ( वि० ) बराबर,  
सुताधिक, समान ।

अनुस्यूत ( वि० ) ओतप्रोत, परस्पर, बाह्य, अलतमलत ।

अनुस्वार ( अनु=पीछे, वरा=वरा, स्तु=शब्द वरना ) ( पु० )  
स्वर के सिर पर की बिंदी — ।

अनुहार ( वि० ) सदृश, समान, अनुकरण ।

अनुठा ( वि० ) अनोखा, नया, अपूर्व, सुंदर ।

अनुठा ( स्त्री० ) काली, बिना व्याही स्त्री ।

अनुप } ( सं० अनुपम ) ( वि० ) जिसकी बराबरी न हो,

अनुप } उत्तम, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, बेमिसल, दलदल ।

अनृत ( अनु=नहीं, ऋत=पॉन, ऋ=ज्ञाना ) ( वि० )  
भूठा ।

अनेक ( अनु=नहीं, एक ) ( वि० ) बहुत, ढेर, अधिक,  
कई एक, एक नहीं ।

अनैक्य ( पु० ) एकता का अभाव, कूट ।

अनैस ( पु० ) दुराई, अहित ।

अनैस ( क्रि० वि० ) कुदृष्टि से, टेढ़े ।

अनोखा ( वि० ) अनुठा, अद्भुत ।

अनोना ( वि० ) नमकहीन, बिना नोन का, अन्नोना ।

अनौचित्य ( पु० ) अनुचित का भाव ।

अंत ( अनु=ज्ञाना ) ( पु० ) सीमा, अखिर, सिरा,  
खूंट, सीव, समाप्ति, पूरा होना, नाश होना, मौत,  
( वि० ) पिछला, शेष, निदान ।

अंतक ( पु० ) यम, अंत करनेवाला, काल ।

अंतःकरण ( अन्तर्=भीतर, कर्ण=इंद्रिय ) ( पु० ) मन,  
चित्त, हृदय, जी ।

अंतकाल ( अंत=पिछला, काल=समय ) ( पु० ) मरने  
का समय, मौत का समय, मौत का घड़ी ।

अंतक्रिया ( स्त्री० ) मृतक-क्रिया, अंत्येष्टि-कर्म ।

अंतज ( पु० ) शूद्र, अंत्यज, नीच जाति ।

अंतड़ी ( सं० अंत, अति=बोधना ) ( स्त्री० ) आंत,  
अंतरी, नाड़ी ।

अंतःपुर ( पु० ) स्त्रियों के रहने का घर, जनानखाना,  
हरम ।

अंतर ( अनु=सीमा, रा=देना ) ( पु० ) भीतर, बीच, बीच  
की जगह, दूरी, मन, मद, क्रूर, ( वि० और  
क्रि० वि० ) भीतर, बीच में ।

अंतर-कथा ( अंतर=बीच का, कथा=बात ) ( स्त्री० ) बात  
में बात ।

अंतरंग ( पु० ) भीतरी बात जाननेवाला, ईश्वर, भीतरी ।

अंतरंग मित्र ( पु० ) दिली दोस्त ।

अंतरंग सभा ( अंतर+ग+सभा ) ( स्त्री० ) सभा के  
अंतरसभा, छोटी सभा ।

अंतरा ( सं० अन्तर ) ( पु० ) भजन अथवा गीत आदि  
का चरण, पद, ( वि० ) बीच का, पास ।

अंतरात्मा ( स्त्री० ) आत्मा, प्राण, जोष ।

अंतराना ( क्रि० सं० ) दूर करना, भीतर करना ।

अंतरापत्य ( स्त्री० ) गर्भवती ।

अंतराय ( पु० ) बाधा, विघ्न ।

अंतराल ( पु० ) मंदछ, मध्य, बीच, फाँक, घेरा ।

अंतरिया ( सं० अंतर ) ( पु० ) तिजारी, जो ज्वर एक दिन  
बाच देकर तापरे दिन फिर आवे, अंतरा, ताप ।

अंतरिक्ष ( वि० ) भीतरी, अंदरूनी ।

अंतरिक्ष } ( अन्तर=स्वर्ग और पृथ्वी के बीच, ईक्ष=देखना )  
अंतरीक्ष } वा अन्तर्=भीतर, ऋच=आरा अर्थात् जिसमें तारे  
हैं ( पु० ) आकाश, शून्य, अक्षर ।

अंतरित ( अंतर + इत=गया हुआ ) ( वि० ) मध्य का, बीच का, दमियानी ।

अंतरित कृषक ( अंतरित + कृषक, कृष्=जोतना ) ( पु० ) शिकमी कारतकार, वह किसान जो मौरसी कारतकार से जमीन लेकर जोतता है ।

अंतरियाँ जलना ( बोल० ) बहुत भूख लगना, भूखों मरना ।

अंतरियों में आग लगना ( बोल० ) बहुत भूखा होना, बहुत भूख लगना, बहुत भूखों मरना ।

अंतरी का बल खोलना ( बोल० ) भूख में पेट भरके खाना ।

अंतरी ( सं० अत्र, अति=बाँधना ) ( स्त्री० ) आँत, आँतड़ो ।

अंतरोप ( अंतर=भीतर, आप=पानी ) ( पु० ) धरती का वह ढुकड़ा जो समुद्र में दूर तक चला गया हो, जैसे कन्याकुमारी ।

अंतर्जामी { ( अंतर=मन, यम्=ठहरना, फैलना ) ( वि० )  
अंतर्जामी { मन की बात जाननेवाला, घटघटनिवासी,  
( पु० ) परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा ।

अंतर्धान होना { ( सं० अंतर्धान, अंतर=भीतर, धा=  
अंतर्धान होना { खना, पकड़ना ) ( कि० अ० ) अलख  
होना, छिप जाना, न देख पड़ना, बिना जाना, गुप्त  
होना, गायब होना ।

अंतःपट ( अंतर=बीच में, पट=कपड़ा ) ( पु० ) परदा, ओट, आड़, कनात, टट्टी ।

अंतर्दृष्टि ( स्त्री० ) दिली हाल ।

अंतर्वेद ( पु० ) गंगा-यमुना के मध्य का देश, ब्रह्मवर्त ।

अंतर्हित ( अंतर=भीतर, धा=खना ) ( वि० ) अंतर्धान, छिपा, अलख, अदृश्य ।

अंतश्चय्या ( स्त्री० ) मृत्युश्चय्या, शमशान, मरघट, मृत्यु ।

अंत समय ( पु० ) मरणसमय, मृत्युकाल ।

अंतिक ( पु० ) समीप, मित्र, बूढ़ा, ( स्त्री० ) जेजी बहन ।

अंतिम ( वि० ) पिछला, आखिरी ।

अंतिवासी ( पु० ) शिष्य, चेला, गुरु के पास रहनेवाला विद्यार्थी ।

अंत्यज ( पु० ) शूद्र, अस्पृश्य जाति, बौम, चमार, धोबी आदि ।

अंत्रावलि ( अंत्र=आँत, अति=बाँधना, अवलि=पाँत ) ( स्त्री० ) बहुत-सी आँतड़ियाँ, आँतड़ियों की पाँत । जैसे, 'धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गलैऽत्रावलि मेलहीं'—रामायण लं० ।

अंध ( अंध=अंधा होना ) ( वि० ) अंधा, सूर, बिना आँख का, ( पु० ) अंधेरा, अंधरा ।

अंधकरिपु ( पु० ) महादेव, शिव ।

अंधकार ( अंध=अंधा, कार=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० ) अंधेरा, अंधियारा ।

अंधकूप ( अंध=अंधा, कूप=कुआँ ) ( पु० ) अंधा कुआँ, ऐसा कुआँ जिसमें घासपात जम जाता है और पानी नहीं होता ।

अंधड़ ( सं० अंध ) ( पु० ) आँधी, तूफान ।

अंधपरम्पराग्रस्त ( पु० ) पुराने रीतियों में फँसा हुआ, कदीम रस्मों में मुक्तिखा ।

अंधसुत ( अंध=अंधा, सुत=बेटा ) ( पु० ) अंधे का बेटा, अंधे राजा धृतराष्ट्र का बेटा दुर्योधन ।

अंधला { ( सं० अंध ) ( वि० ) बिना आँख का, सूर,  
अंधा { आँख-फूटा, नेत्रहीन ।

अंधाधुंध ( बोल० ) अंधे, बेहिसाब, बेठिकाना, बहुत-ही-बहुत, अंधों की तरह, आँखमूँदे ।

अंधाधुंध लुटाना ( बोल० ) उड़ाना, बेहिसाब खर्च करना, बेठिकाने खर्च करना, बेकामदे खर्च करना, आँख मूँदे खर्च करना ।

अंधियारा ( सं० अंधकार ) ( पु० ) अंधेरा, अंधकार ।

अंधेर ( सं० अंधकार ) ( पु० ) अंधेरा, अन्याय, बड़ेड़ा, उपद्रव, अंधाधुंध, उत्पात, अनीति, बलवा, दंगा ।

अंधेर करना ( बोल० ) अन्याय करना, अनीति करना, उपद्रव करना, अंधाधुंध करना ।

अंधेरा ( सं० अंधकार ) ( पु० ) अंधियारा, अंधकार ।

अंधेरी कोठरी ( बोल० ) ऐसी कोठरी जिसमें अंधेरा हो, पेट, गर्भस्थान, कोख, धरन ।

अंधोती ( स्त्री० ) घोड़े या बैल की आँख पर बाँधने की पट्टी ।

अंध ( पु० ) बहेलिया, शिकारी, ब्याध ।

अक्ष ( अक्ष=खाना वा अन्=जीना ) ( पु० ) नाज, अनाज, खाना ।

- अभ्रकूट (अभ्र=खाना, कूट=ढेर) (पु०) दीवाली के दूसरे दिन का पर्व, जिसमें हिंदू लोग बहुत-सा खाना और तरकारियाँ बनाकर अपने देवताओं को भोग चढ़ाते हैं, इस दिन गोवर्धन की पूजा होती है।
- अभ्रछेत्र (पु०) अभ्रसत्र, वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन दिया जाना है।
- अभ्र-जल } (बोल०) दानापानी।  
अभ्रपानी } संयोग, (पु०) खाना-पानी।
- अभ्रदाता (अभ्र=प्रनाज, दाता=देनेवाला, दा=देना) (बोल०) पालनेवाला, बचानेवाला, मालिक, दया-वंत, उपकार, दाता।
- अभ्रपूर्णा (अभ्र=प्रनाज, पूर्णा=भरनेवाली) (स्त्री०) दुर्गा का नाम, योगमाया, देवी।
- अभ्रप्राशन (अभ्र=प्रनाज वा खाना, प्राशन=खिलाता, प्र=गुरु, यश=खाना) (पु०) जब बालक छः महीने का होता है तब पहली बार अनाज अथवा खीर आदि खिलाना, संस्कार-विशेष।
- अभ्रा (स्त्री०) धाय, धात्री, दूध पिलानेवाली।
- अन्य (अन्=जाना) (वि०) और, दूसरा, गौर।
- अन्यतर (वि०) कोई एक।
- अन्यतः (क्रि० वि०) स्थानांतर।
- अन्यत्र (वि०) और कहीं।
- अन्यथा (अन्य=अन्य, था=प्रकार अर्थ में प्रत्यय) (क्रि० वि०) और प्रकार से, और तरह से, नहीं तो (वि०) उल्टा।
- अन्यमनस्क (वि०) उदास, चिंतित।
- अन्यान्य (वि०) और-और, भिन्न-भिन्न।
- अन्याय (अ=नहीं, न्याय=इसाफ, धर्म) (पु०) बेईसाफी, अधर्म, उपद्रव, जुलूम।
- अन्यायी (अन्याय) (वि०) अन्याय करनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा, जालिम।
- अन्योन्य (अन्य+अन्य) (वि०) आपस में, एक दूसरे को, परस्पर, बाह्य।
- अन्योन्याश्रित (वि०) एक दूसरे के साथ संबंध रखने-वाला, जाज़िम, मलजूम।
- अन्यथ (अन्=प्राप्ति, इप्पु=जाना) (पु०) वंश, कुल पदच्छेद, रत्नोक्त के पदों का संबंध मिलाना, तर-कीचनहथी।
- अभ्वित (वि०) युक्त, शामिल, पूरा।
- अन्वीक्षण (पु०) गौर से देखना, अनुसंधान।
- अन्वेपण (अन्तु=गोखे, इप्पु=जाना) (पु०) खोजना, पता लगाना, हेरना, ढूँढ़ना, तलाश करना।
- अन्हवाना (अन्हाना) (क्रि० सं०) नहलाना, अंग धोना, स्नान कराना।
- अन्हान (सं० स्नान वा अवगाहन) (पु०) स्नान, अन्हाना।
- अन्हाना (सं० अवगाहन वा स्नान) (क्रि० अ०) अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ़ करना।
- अप (उप०) से, उल्टा, हानि, नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, अधम, नीच, विकृत, त्याग, वियोग, हर्ष, यज्ञकर्म, बुरी तरह से, अलग, भिन्न (पु०) जल, पानी।
- अपकर्म (पु०) नीच काम, पाप, कुकर्म।
- अपकर्ष (अप+कृप्=खींचना) (पु०) खींचना, न्यूनता, निरादर।
- अपकाजी (वि०) मतलबी, स्वार्थी।
- अपकार (अप=उल्टा वा बुरा वा हानि, कृ=करना) (पु०) बिगाड़, क्षति, बुराई, अहित, हानि।
- अपकारी (वि०) हानि करनेवाला, नुकसान करनेवाला।
- अपकीर्ति (अप=बुरा, कीर्ति=यश) (स्त्री०) बुराई, बदनामी, अपयश, कुयश।
- अपकृष्ट (वि०) पतित, अधम, नीच।
- अपक्रम (पु०) उलट-पलट, कमभंग।
- अपक्व (वि०) कच्चा, खाम
- अपगति (स्त्री०) दुर्दशा, बुरी हालत।
- अपगा (अप=नीचे, गम्पु=जाना) (स्त्री०) नीचे जानेवाली, नदी, दरिया।
- अपघात (पु०) विश्वासघात, धोखा।
- अपच (पु०) बदहजमी, अजोर्षी।
- अपचय (अप+चि=चुनना) (पु०) गिरना, हानि, नुकसान।
- अपछुटा (सं० पु०) अपसरा।
- अपजय (स्त्री०) हार, पराजय।
- अपजस (पु०) बदनामी।
- अपटन (पु०) उबटन।
- अपटु (वि०) अचतुर, अकुशल।
- अपठित (वि०) अशिक्षित, बिना पढ़ा हुआ।
- अपढ़ (वि०) अशिक्षित, मूर्ख।

अपडर ( पु० ) मिथ्या डर, अपना से डर, भय, शंका, डर  
“अपडर डरेडें न सोच समले” —रामा० अयो० कां० ।

अपत ( वि० ) पापी, अप्रतिष्ठित, बेइज्जत गिरा हुआ,  
विना पत्तों के, “अब अलि रह्यो गुलाब में अपत  
कंठोली डार” । —( बिहारी सतसई )

अपति ( सं० आपति ) ( स्त्री० ) अपमान, मुसीबत,  
बेइज्जती, पतिरहित, उपपति, विधवा ।

अपत्य ( अ=नहीं, पत्=गिरना ) ( पु० ) जिसके द्वारा  
पितर न गिरने पावें, पुत्र, संतान, औलाद ।

अपथ ( पु० ) कुपथ, विकट मार्ग, कुमार्ग ।

अपथ्य ( वि० ) अहितकर ।

अपद् ( पु० ) साँप, जोंक, विना पैरवाला ।

अपरेवता ( पु० ) दुष्ट देवता, राक्षस, दैत्य ।

अपध्वंस ( पु० ) निरादर, नाश, क्षय, अपमान ।

अपना ( सं० सर्वना० ) निज का, आपका ।

अपनाना ( कि० सं० ) अपना करना ।

अपनायत ( स्त्री० ) नाता, संबंध, भाईचारा, घराना ।

अपनी गाना ( बोल० ) अपनी तारीफ करना, अपने  
तर्हे सराहना ।

अपनीत परानीत, नी=ले जाना ) ( वि० ) हटाया  
गया, दूर किया गया ।

अपभ्रंश ( अप=भे, भ्रंश=गिरना ) ( पु० ) रँवारी बोल-  
चाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द, व्याकरण-  
विरुद्ध शब्द, बिगड़ा हुआ शब्द, भाषा-विशेष ।

अपमान ( अप=उलटा, मान=आदर ) ( पु० ) अनान्दर,  
निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज्जती ।

अपमृत्यु ( स्त्री० ) अकाल-मृत्यु, कुसमय-मृत्यु ।

अपयश ( अप=उलटा, यश=नामवरी ) ( पु० ) बुराई, बद-  
नामी, अपकीर्ति, बुरा नाम ।

अपर ( अ=नहीं, प=मानना वा अ=नहीं, पर=दूसरा )  
( वि० ) और, दूसरा, एक और, दूसरा कोई ।

अपरंच ( अच्य० ) और भी, फिर भी ।

अपरना ( स्त्री० ) पार्वती, भवानी ।

अपरमित ( अ+पर+मित, मा=मापना, मापना ) ( वि० )  
बेपरिमाण, बेहद, अनगिनत असीम ।

अपरंपार ( अ=नहीं, पर=दूसरा, पार=अन्त ) ( वि० )  
अपार, अनंत, बेहद, जिसका पार नहीं ।

अपर लोक ( पु० ) स्वर्ग, परलोक दूसरा लोक ।

अपरस ( वि० ) न कूने योग्य, ( पु० ) चर्मरोग-विशेष ।

अपरा ( स्त्री० ) पदार्थ-विद्या, दूसरी ।

अपराजय ( पु० ) पराजित न होना, न होती हार ।

अपराजिता ( स्त्री० ) दुर्गा, कौवाठोड़ी, कोयल ।

अपराध ( अप=बुरा तरह से, राध=दूरा करना ) ( पु० )  
पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह, कुसूर ।

अपराधी ( अपराध ) ( वि० ) पापी, दोषी, अधर्मी,  
गुनाहगार, मुजरिम ।

अपराह्न ( अपर=पिछला, अह्न=दिन ) ( पु० ) तीसरा  
पहर, सेपहर ।

अपरिग्रह ( पु० ) त्याग, विराग ।

अपरिचय ( पु० ) अनजान, जानपहचान न होना ।

अपरिचित ( वि० ) बेजान-पहचान का, अनजान, अनजानी ।

अपरिच्छद् ( वि० ) नंगा, दृष्टि, वस्त्रहीन ।

अपरिद्विष ( वि० ) खुला, मिला हुआ ।

अपरिणत ( वि० ) ज्यों का त्यों, कच्चा ।

अपरिमित ( वि० ) अगणित, प्रचुर, असीम ।

अपरिष्कार ( पु० ) अशुद्धता, अस्वच्छता, मैलापन ।

अपरूप ( वि० ) कुरूप, भद्दा ।

अपरोक्ष ( वि० ) सामने, समक्ष ।

अपर्याप्त ( वि० ) थोड़ा, अल्प ।

अपलक्षण ( पु० ) दोष, बुरे लक्षण ।

अपलाप ( पु० ) असत्य, अपवाद, मिथ्या बकवाद ।

अपलोक ( पु० ) अपयश, बदनामी ।

अपवर्ग ( अ=मित्र, अलग, वर्ग=पद, दर्जा अर्थात् सब  
दर्जों से अलग और बढ़कर है ) ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष,  
परमपद, परमगति, छुटकारा, निस्तार, उद्धार,  
नजात ।

अपवाद ( अप=बुरा, वद=कहना ) ( पु० ) गाली, निंदा,  
दोष, बुराई, बदनामी ।

अपवाहन ( अप+वह=ले जाना, फुसलाना, लोगों का बढ़का  
ले जाना ) ( पु० ) एक राज्य से दूसरे राज्य में ले  
जाकर बसाना ।

अपवित्र ( अ=नहीं, पवित्र=शुद्ध ) ( वि० ) अशुद्ध, मैला,  
अपावन, नापक ।

अपवश्य ( पु० ) कज्जलपत्ती ।

अपशकुन ( अर=बुरा, शकुन=सगुन ) ( पु० ) बुरा सगुन,  
बुरा जतलानेवाला, अशुभ जतलानेवाला चिह्न ।

अपशब्द (अप=वृत्ता, शब्द) (पु०) अशुद्ध शब्द,  
बुरा शब्द, भेदा और कटु शब्द, ऐसा शब्द जिसका  
कुछ अर्थ नहीं, मुहम्मिख, पाद, गोज्ञ ।

आसना (कि० अ०) खिसकना, चंपत होना ।

अपसर (वि०) अपने मन का ।

अपसद्य (वि०) दाहना, उलटा, विरुद्ध ।

अपसोस (पु०) सोच, चिंता ।

अपस्मार (पु०) मृगी, मूर्च्छा ।

अपहरण (अप=प्रलग्न, ह=ले जाना) (पु०) कुर्की,  
चोरी, लूटपाट, (कि०) अपहरण करना, छीन लेना ।

अपहरित (वि०) छीन लिया गया, हर लिया  
गया ।

अपहारी (पु०) हरनेवाला ।

अपहास (पु०) उपहास, टट्टा ।

अपहृत (वि०) कुर्क तहसील, हरण किया हुआ ।

अपाकरण (पु०) अलग करना, चुकता करना ।

अपांग (पु०) आँख का कोन, कटाक्ष ।

अपाटव (पु०) मूर्खता, बीमारी, मध ।

अपादान (अप=से, आदान=लेना) (पु०) जुदा करना,  
विभाग, व्याकरण में पाँचवाँ कारक ।

अपान (अप=नचि+अप=मीना) (पु०) शरीर के पाँच  
पवनों में से एक जो गुदा से निकलती है, अधोवायु,  
गोज्ञ, कहार, वरुण (वि०) अपना, पानरहित ।

अपाय (अप=पूरी तरह से, इण्=ना) (पु०) बिगाड़,  
नाश, हानि, जुदा होना ।

अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) (वि०) अनंत, अपरम्पार,  
असीम, बेहद ।

अपाधन (अ=नहीं, पाधन=पवित्र) (वि०) अशुद्ध, अप-  
वित्र, मैला ।

अपाहिज (वि०) लूटा, लूँगा, मुस्त, भोंकू ।

अपि (उप०) भी, तिस पर भी, इसके सिवा, हम पर  
भी, बल्कि, यहाँ तक, तो भी, तब भी, जो भी,  
यद्यपि, निश्चय, केवल, और भी, पास, मिला  
हुआ, संस्कृत में प्ररन का सूचक चिह्न ।

अपिधान (पु०) आवरण, आच्छादन ।

अपील (स्त्री०) अनुयोजन, मुराफा, दुबारा नाजिश, बड़े  
हाकिम से फरयाद ।

अपीलॉट (पु०) अनुयोजक, अपील करनेवाला ।

अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा) (वि०) पूरा नहीं, अधूरा,  
नातमा ।

अपूत (सं० अपूत, अ=नहीं, पुत=रेटा) (वि०) विना  
लड़केवाला, निर्वंश, कुपूत ।

अपूत (अ=नहीं, पु=पवित्र करना) (पु०) अपवित्र,  
नापाक ।

अपूर्व (अ=नहीं, पूर्व=पहले, अर्थात् जो पहले नहीं देखा गया)  
(वि०) जिसको पहले कभी न देखा हो, उत्तम,  
अनूप, अनोखा, नया, अजीब ।

अपृष्ट (अ=नहीं, प्रच्छ=पूछना) (वि०) बेपूछे ।

अपेक्षा (अप+ईच्छ=देखना) (स्त्री०) आशा, भरोसा,  
इच्छा, स्वाहिश, जरूरत, संबंध, निश्चय से ।

अपेक्ष (वि०) अदृष्ट, विना देखा हुआ ।

अपेय (अ+पेय, पा=पीना) (वि०) नहीं पीने योग्य ।

अपेल (अ=नहीं, पेलना=टालना) (वि०) अचल, अटल,  
अमिट ।

अप्रकाशित (वि०) प्रकाशहीन, अंधेरा, तारीक ।

अप्रगल्भ (वि०) आलसी, निरुत्साही ।

अप्रचारित (वि०) चलन बाहर, गैर मुरोवज ।

अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रातप्ता=वडाई) (स्त्री०) अपयश,  
अपमान, बुराई, बदनामी ।

अप्रतिहत (वि०) बेरोक, नाशरहित, सावधान ।

अप्रधान (अ=नहीं, प्रधान=मुख्य) (वि०) जो मुख्य  
न हो, अमुख्य, अधीन ।

अप्रमाणिकोन्नति (अ + प्रमाणिक + उन्नति) (स्त्री०)  
शर्ती तरकी ।

अप्रमाणीय (वि०) अविश्वसनीय, बेश्तबार ।

अप्रमेय (अ=नहीं, प्रमेय=मापने योग्य, प्र=बहुत, मा=  
मापन) (वि०) अपार, अनंत ।

अप्रसन्न (अ=नहीं, प्रसन्न=खुश, हर्षित) (वि०) दुःखी,  
मलीन, उदास, नाराज, नाखुश ।

अप्रस्तुत (वि०) अनुपस्थित, अप्रधान ।

अप्राकृत (वि०) असाधारण, अस्वाभाविक ।

अप्रिय (अ=नहीं, प्रिय=प्यारा) (वि०) दुःखदायी,  
नापसंद, नागैवार, (पुं०) शत्रु, दुश्मन ।

अप्रीतिकर (पु०) निरुत, बेमुहब्बत, बेखुल्ल, बेउंस ।

अप्रौढ़ ( वि० ) छोटी अवस्था का, कमज़ोर ।

अप्सरा ( अप्=पानी, सु=चलना, अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुई, वा जियको नहाने की बहुत रुचि हो ) ( स्त्री० ) स्वर्ग की स्त्री, इंद्र की सभा में नाचनेवाली, उर्वशी, रंभा आदि ।

अफरा ( पु० ) पेट फूलना, फूलना ।

अफराई ( स्त्री० ) अघाना, परितृप्ति ।

अफरीदी ( पु० ) पठानों की एक जाति-विशेष ।

अफल ( अ=नहीं, फल=लाभ ) ( वि० ) बृथा, निष्फल, बेक्रायदा ।

अफला ( स्त्री० ) धीकुआँर ।

अफनाह ( स्त्री० ) गप्प, उड़ती खबर ।

अफुसोस ( पु० ) अहः ओह, अचंभा, पश्चात्ताप ।

अफ्रीडेविट् ( स्त्री० ) शपथ, हलकनामा ।

अथ ( सं० अथ ) ( कि० वि० ) इस घड़ी, इस समय, अभी, इसके पीछे ।

अथ का ( बोल० ) इस बार का ।

अथ की ( बोल० ) इस बार, इस बरस ।

अथ तक } ( बोल० ) इस घड़ी तक, इस समय तक ।  
अथ तलक }  
अथ तोड़ी }

अथ तब होना ( बोल० ) मौन का समय पास आना, मरने पर होना ।

अबंधित ( अ=नहीं, बंधु=बंधना ) ( वि० ) बंधन-रहित, अयुक्त, स्वच्छंद, मुक्त ।

अंधल ( अ=नहीं, ल=तोर ) ( वि० ) निबल, निर्बल, दुबला, कमज़ोर ।

अचलख ( वि० ) दुरंगा, कबरा ।

अचला ( अचल ) ( वि० ) निबली, दुबली, कमज़ोर, ( स्त्री० ) लुगाई, स्त्री, नारी ।

अयाक् ( अ=नहीं, वाक्=बोला ) ( वि० ) अबोल, चुप, गूँगा, मौन ।

अयार ( स्त्री० ) देर, विलंब ।

अबुध ( अ=नहीं, बुध=पंडित ) ( वि० ) अबूक, मूर्ख, बेसमझ, अज्ञानी, बेवकूफ, जाहिल ।

अबूझ ( सं० अबुध ) ( वि० ) मूर्ख, बेसमझ, नासमझ, अज्ञानी ।

अवेर ( सं० अबेला, अ=नहीं, बेला=समय ) ( स्त्री० ) देरी, देर, ढोल, विलंब, कुबेला ।

अबोध ( पु० ) मूर्ख ।

अबोल ( अ=नहीं, बोल=बोलना ) ( वि० ) चुपचाप, अवाक्, खामोश ।

अब्ज ( अप्=पानी, ज=पैदा होना ) ( पु० ) कमल, पद्म, चाँद, चौदह रत्न जो समुद्र से निकले ।

अब्द ( अप्=पाना, दा=देना ) ( पु० ) बादल, मेघ, बरस, साल, कपूर, नागरमोथा ।

अब्धि ( अप्=पानी, धा=खलना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सात की गिनती, ताल, सरोवर ।

अभक्त ( वि० ) अविभाजित संपूर्ण, अन्दाहीन, भक्तिशून्य ।

अभंग ( वि० ) अखंड, पूरा, नाशरहित ।

अभंग पद ( पु० ) एक प्रकार का श्लोपालंकार जिसमें अक्षरों को इधर-उधर नहीं करना पड़ता और शब्दों से अन्यान्य अर्थ निकल आते हैं, महाराष्ट्र संत नामदेव के छंद-विशेष ।

अभय ( अ=नहीं, भय=डर ) ( वि० ) निडर, निर्भय, निधक्क ।

अभयदान ( पु० ) शरण देना, जानबखशी ।

अभरन ( पु० ) आभरण, गहना, अलंकार ।

अभरम ( वि० ) निःशंक, निडर ।

अभल ( वि० ) बुरा, खराब ।

अभाग ( सं० अभग्य ) ( पु० ) बुरा भाग, दुर्दशा, खोटी दशा, बदकिस्मती ।

अभागा ( सं० अभग्य ) ( वि० ) मंदभागी, भाग्यहीन, कमबलत, अभागी ।

अभाग्य ( अ=नहीं, भाग्य=भाग ) ( पु० ) अभाग, बुरा भाग, बुरी दशा, दुर्दशा, कुदशा, ( वि० ) अभागा, मंदभागी, कमबलत ।

अभाव ( अ=नहीं, भाव=होना, भू=होना ) ( पु० ) नहीं होना, नाश, अदमसौजूदगी, अनुपस्थिति ।

अभास ( पु० ) छाया, प्रतिबिम्ब ।

अभि ( उप० ) पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, चारों ओर से, बहुत, सामने, ऊपर, अधिक, पहले ।

अभिक ( वि० ) कामी, विपयी, लंपट ।

अमिख्या ( स्त्री० ) शोभा, सुंदरता, खूबसूरती कीर्ति, यश ।

अभिगमन ( पु० ) निकट जाना, पास जाना ।

अभिग्रह ( पु० ) लड़ाई, आक्रमण, चढ़ाई, चोरी, अभियोग ।

अभिघात ( पु० ) प्रहार, आघात, मार ।

अभिचार ( पु० ) मारण, मोहन-मंत्र आदि उपपातक ।

अभिचारी ( वि० ) अभिचारक, मारण आदि कर्म करनेवाला ।

अभिजन ( पु० ) परिवार, कुल, वंश ।

अभिजात ( वि० ) उत्तम कुल में उत्पन्न, बुद्धिमान्, सुंदर ।

अभिजित् ( पु० ) नाम नक्षत्र जो उत्तराषाढ़ के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है, योद्धा, जीतनेवाला ।

अभिज्ञ ( वि० ) जानकार, ज्ञाता, पंडित ।

अभिज्ञान ( पु० ) चिह्न, स्मरणार्थक चिह्न ।

अभिधा ( स्त्री० ) शब्द को वह शक्ति जिससे वह अपने यथार्थ अर्थ को निकाले ।

अभिधान ( पु० ) कोष, शब्द-संग्रह, लुगता ।

अभिधेय ( पु० ) नाम, अर्थ ।

अभिनंदन ( पु० ) उत्तेजना, नम्र निवेदन ।

अभिनंदन पत्र ( पु० ) सम्मान और आदरसूचक पत्र जो महान् पुरुषों के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकाशना दिया जाता है ।

अभिनय ( पु० ) नाटक का खेल ।

अभिप्राय ( अभि=नाह, प्र=बहुत, इण्=जाना वा अभि=नाह, प्रीप्=पूरा करना ) ( पु० ) मनलक्ष, प्रयोजन, अर्थविचार, इरादा, मनोरथ, आशय, इच्छा, चाह, सम्मति ।

अभिप्रेत ( वि० ) वांछित, मुराद, मकसूद, इच्छित ।

अभिभव ( पु० ) हार, पराजय ।

अभिभावक ( वि० ) संरक्षक, सहायक ।

अभिमत ( अभि=बहुत, मन्=मानना वा जानना ) ( पु० ) चाहा हुआ, माना हुआ, पसंद किया हुआ, सम्मत, वांछित, ( पु० ) राय, विचार ।

अभिर्मंत्रित ( वि० ) मंत्र से पवित्र किया हुआ ।

अभिर्मन्यु ( पु० ) अर्जुन का पुत्र, सुभद्रा का बेटा, सात महारथियों ने मिलकर कुरुक्षेत्र में इस वीर का वध किया था ।

अभिर्मर्षण ( अभि + मृप्=छूना ) ( पु० ) संभोग, सुहृत्, परस्त्री-गमन, छुना ।

अभिमान ( अभि=ऊपर, अधिक, मन्=जानना ) ( पु० ) घमंड, अहंकार, मद, दाप, दर्प, गरूर, शेखी, अकड़ ।

अभिमानि ( अभिमान ) ( वि० ) घमंडी, अकड़बाज़, शेखीबाज़, अहंकारी ।

अभिमुख ( अभि=सामने, मुख=मुँह ) ( शब्दयो० अर्थ० ) सामने, सबरू, पेश ।

अभियुक्त } ( अभि=सामने, युज्=जोड़ना ) ( पु० )  
अभियोग्य } प्रतिवादी, मुद्दआअखलेह ।

अभियोग ( पु० ) नालिश, मुकदमा ।

अभियोगी } अभियोगी, ( पु० ) वादी, मुद्दई ।  
अभियोजक }

अभिराम ( अभि=सामने, रम्=तेलना ) ( वि० ) सुंदर, प्यारा, मनोहर ।

अभिरुचि ( स्त्री० ) प्रकृति, तुष्टि, रसज्ञान, ।

अभिरूप ( वि० ) मनोहर, सुंदर, ( पु० ) विष्णु, शिव, चंद्रमा, कामदेव ।

अभिलाप } ( अभि=बहुत, लप्=चाहना ) ( स्त्री० ) इच्छा,  
अभिलापा } चाहना, कामना, चाह ।

अभिलाषी } ( वि० ) चाहनेवाला, लोभो, इवा-  
अभिलाषुक } हिशमंद, आर्जुमंद, इच्छुक ।

अभिवादन ( अभि+वद=कहना ) ( पु० ) स्तुति, नमस्कार, बंदगी ।

अभिव्यक्त ( वि० ) प्रकाशित, प्रकटित ।

अभिशाप ( पु० ) शाप, बददुआ ।

अभिपंग ( पु० ) दुःख, शोक, निद्रा, पराजय, शपथ, कोसना ।

अभिपन ( पु० ) यज्ञस्नान, यक्ष, रोमरस-पान ।

अभिपिक्त ( अभि=सामने, सिच्=सोचना ) ( वि० ) तिलक किया गया, अभिमंत्रित जलादि से स्नान किया हुआ, राज्यपद पर निर्वाचित ।

अभिपेक ( अभि=ऊपर, सिच्=सोचना ) ( पु० ) राज-तिलक देने के समय का स्नान, मंत्र देते समय सिर पर पानी डालना, शान्ति-स्नान ।

अभिसर ( पु० ) अनुचर, संगी, साथी ।

अभिसार ( पु० ) सहारा, बल, युद्ध, नायक या नायिका का सांकेतिक स्थान में मिलने के लिये



अभिसारिका ( स्त्री० ) नायिका का भेद-विशेष । वह नायिका जो सांकेतिक स्थान में नायक से सहवास करने के लिये स्वयं जाय या उसको बुलावे । इसके दो भेद होते हैं—कृष्णाभिसारिका और शुक्लाभिसारिका । पहली अँधरी रात में काले कपड़े पहनकर जाती है और दूसरी चाँदनी रात में सफ़ेद कपड़े पहनकर ।

अभिसंधान ( पु० ) मिलाप, कपट ।

अभिसंधि ( स्त्री० ) खूब मेल, धोखा ।

अभिसम्पात ( पु० ) संग्राम, युद्ध, नाश ।

अभिहित ( वि० ) प्रकाशित, व्यक्त, कथित ।

अभी ( अव + ही ) ( क्रि० वि० ) इसी घड़ी, इसी दम, इसा समय, तुरंत ।

अभीप्सित ( वि० ) बांछित, चाहा हुआ ।

अभीर ( पु० ) अहोर, भ्राला, छंद-विशेष ।

अभीरु ( अ=नहीं, भीरु=डरनेवाला ) ( वि० ) निर्भय, निर्दोष, ( पु० ) महादेव, भैरव, शतावरि ।

अभीष्ट ( अभि=बहुत, ष्ट=चाहा हुआ, इष्ट=चाहना ) ( वि० ) चाहा हुआ, बहुत चाहा हुआ, मनमाना, प्यारा, चहीता, पसंद ।

अभुआना ( क्रि० अ० ) हाथ-पैर और सिर जोर से हिलाना जिससे यह मालूम हो कि कोई देव-देवी आई हैं ।

अभुक्त ( वि० ) अभ्यवहत, बिना खाया हुआ ।

अभूतपूर्व ( वि० ) जैसा पहले कभी नहीं हुआ, अद्भुत, अजोब ।

अभ्यंग ( पु० ) तेल-मर्दन, तेल लगाना ।

अभ्यंतर ( वि० ) भीतरी, अंदरूनी ।

अभेद ( अ=नहीं, भेद=छिपी बात ) ( वि० ) जिसका भेद न जाना जाय, जाना हुआ, जो न टूट सके, जिसमें कुछ घुल न सके, ( पु० ) मेल ।

अभ्यर्थना ( अभि=सामने, र्थना=माँगना ) ( स्त्री० ) निवेदन, दुरदवास्त ।

अभ्यस्त ( वि० ) आदो, खूगर, निपुण, मँजा हुआ ।

अभ्यागत ( अभि=पामने, पात, आगत=आया हुआ, आ, गम्=आना ) ( पु० ) पाहुन, अतिथि, मेहमान ( वि० ) आया हुआ ।

अभ्यास ( अभि=बारबार, अस=फेंकना, और अभि उपसर्ग

के साथ आने से इसका अर्थ दुहराना होता है ) ( पु० ) साधन, चिंतन, बारबार करना, रटत, मरक ।

अभ्यासक } ( पु० ) अभ्यास करनेवाला ।

अभ्युत्थान ( पु० ) उन्नति, बढ़ती ।

अभ्युदय ( अभि + उदय, उन् + इ=जाना ) ( पु० ) वृद्धि, ऐश्वर्य, हरमत, उन्नति ।

अभ्र ( अभ्र=जाना ) ( पु० ) बादल, मेघ, आकाश, अभ्र, सोना ।

अमंगल ( अ=नहीं, मंगल=कुशल, वर्याण ) ( वि० )

अशुभ, बुरा, अकल्याण, अशुभ ।

अमचूर् ( सं० आम्रचूर्ण, अम्र=आम, चूर्ण=चूर ) ( पु० ) सुखाये आम के टुकड़े या फाँक का चूरा ।

अमृत ( वि० ) मतरहित, धर्महीन, लामज़हब, ( पु० ) रोग, मृत्यु, काल ।

अमन ( पु० ) चैन, आराम, शांति ।

अमनिया ( वि० ) अकृत, शुद्ध, पवित्र, सीधा ।

अमर ( अ=नहीं, मृ=मरना ) ( वि० ) जो कभी मरे नहीं, अविनाशी, सदा जीता रहनेवाला, ( पु० ) देवता, अमरकोप का बनानेवाला ।

अमरपख ( पु० ) पितृपक्ष ।

अमरपति ( अमर=देवता, पति=स्वामी ) ( पु० ) इंद्र, देवताओं का राजा ।

अमरपद ( पु० ) मोक्ष, मुक्ति ।

अमरपुर } ( अमर=देवता, पुर, लोक=नगर ) ( पु० )

अमरलोक } स्वर्ग, बहिरत ।

अमरा ( स्त्री० ) दूध, गिलोय, सेहूँद, गुर्च, नीली कोयल, चमड़े की फिल्ला जो गर्भस्थ शिशु के बदन में लिपटी रहती है ।

अमराई ( सं० आम्रराजि आम्र=आम, राजि=कतार ) ( स्त्री० ) आम का बारा ।

अमरावती ( अमर=देवता, वत्=वाली ) जिसमें देवता रहते हैं, ( स्त्री० ) स्वर्ग, इंद्र की राजधानी, देवलोक, देवताओं की नगरी ।

अमरू ( पु० ) रेशमी वस्त्र विशेष ।

अमरूत ( सं० अमृत ) ( पु० ) एक फल का नाम, अमरूद ।

अमरेश ( अमर=देवता, ईश=राजा ) ( पु० ) देवताओं का राजा, इंद्र ।

अमर्याद } ( अ=नर्ही, मर्यादा=मान, इज्जत ) ( स्त्री० )  
अमर्यादा } अनादर, अप्रतिष्ठा, अवज्ञा, हलकाई,  
हलकापन ।

अमर्ष ( अ=नर्ही, मर्ष=तमा ( पु० ) क्रोध, अस-  
हिष्णुता, गुस्सा ।

अमर्षण ( वि० ) क्रोधी, कुपित ।

अमल ( अ=नर्ही, मल=मल ( वि० ) निर्मल, शुद्ध,  
साफ, पवित्र, स्वच्छ, ( पु० ) मादक वस्तु, जल, देव,  
व्यसन, आचरण, असर ।

अमलताम ( पु० ) एक ओषधि का नाम ।

अमलदारी ( स्त्री० ) अधिकार ।

अमलपट्टा ( पु० ) अधिकार-पत्र ।

अमला ( पु० ) कर्मचारी, आँवला, ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।

अमली ( वि० ) कर्मण्य, नशेवाज, व्यावहारिक, ( स्त्री० )  
हमली ।

अमात्य ( पु० ) मंत्री, वजीर, आरात्री ।

अमान ( अ=नर्ही, मान=वर्ष ( वि० ) मानरहित, निर-  
हंकार, बेगार ।

अमानत ( स्त्री० ) थाती, धरोहर ।

अमाना ( सं० मान, भा=भाषना ( क्रि० अ० ) समाना,  
भर जाना ।

अमानुष ( वि० ) पैशाचिक, पाशविक, मनुष्य-शक्ति के  
बाहर ।

अमाय ( वि० ) कपटरहित, बेमक ।

अमाया ( स्त्री० ) सचाई, दिवानतदारो ।

अमावस्य } ( अमा=रात्रि वसु=रहना, अर्थात् जिस  
अमावस्या } दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशि में रहते ह,  
अमावास्या } अमा सह वनतोऽस्याश्वन्दोर्का अमावस्य,

अमावारया ( स्त्री० ) अंधेरे पक्ष की पंद्रहवीं तिथि,  
मावस ।

अमित ( अ=नर्ही, मित=पपा हुआ, मा=मापना ( वि० )  
अप्रमाण, अपार, बेहद, बेठिकाने, जो नापने में  
न आवे ।

अमिय } ( सं० अमृत ) ( पु० ) अमृत, सुधा, पीयूष,  
अमी } आबेहयात ।

अमियमरि ( स्त्री० ) संजीवनी बूटी "अमिय-मूरि जिमि  
जुगवति रहेऊँ ।" — ( रामाय० अयो० का० ) ।

अमीत ( वि० ) शत्रु, बैरी, दुश्मन ।

अमीन ( पु० ) अदायगी कर्मचारी, जिसके जिम्मे बट-

वारा करना, ज़मीन नापना, डिगरी का अमल  
दरामत कराना आदि काम रहते हैं ।

अमीर ( पु० ) धनी, अक्रान्तिस्थान के राजा की उपाधि ।

अमुक ( अदसु=यह ) ( वि० ) वह, यह कोई, अमका-  
दमका, फलाना, फलौ ।

अमूलक ( अ=नर्ही, मूल=मूल ( वि० ) बेजड़, बेबुनियाद,  
निर्मूल ।

अमृत ( अ=नर्ही, मृ=मरना ) ( पु० ) अमी, सुधा, पीयूष,  
देवताओं का खाना अथवा रस जिसकी पीने से  
अमर हो जाते हैं, आबेहयात ।

अमृतफल ( पु० ) नाशपाती, परवर ।

अमृतफला ( स्त्री० ) अंगूर, मुनका, आँवला ।

अमृतबान ( पु० ) मिट्टी का बर्तन, इस पर लाह का  
रोगन किया रहता है, इसमें घी, अचार आदि रक्खा  
जाता है ।

अमृतत्रिदु ( पु० ) अथर्ववेदीय उपनिषद् ।

अमृतलता ( स्त्री० ) गुर्च, गिलोय ।

अमृतसंभवा ( स्त्री० ) गुर्च ।

अमृतसार ( पु० ) मक्खन, घी ।

अमृता ( स्त्री० ) दूध, गुर्च, तुलसी, आँवला, हड़,  
पीपल, मदिरा ।

अमृतांशु ( पु० ) चंद्रमा ।

अमृती ( स्त्री० ) मिठाई-विशेष, अमिरतो ।

अमृत्य ( वि० ) अक्षेप्य ।

अमेठना ( क्रि० सं० ) ऐंठना, उमेठना ।

अमेधा ( वि० ) मूर्ख, अबोध ।

अमेध्य ( वि० ) अपावित्र, अशुद्ध, दुष्ट ।

अमोघ ( अ=नर्ही, मोघ=वृथा, मुह=अचेत होना ) ( वि० )  
सफल, सच्चा, फलदाता, जो खाली न जाय, बेखता ।

अमोघवीर्य ( पु० ) अखंड तेज, अव्यर्थ प्रताप ।

अमोर ( स्त्री० ) अंबिया, आम के टिकोरे ।

अमोरी ( स्त्री० ) छोटी अंबिया ।

अमोल ( सं० अमूल्य, अ=नर्ही, मूल्य=मोल ) ( वि० )  
अनमोल, उत्तम, बहुत ही बढ़िया, अनोखा,  
अपूर्व ।

अमोला ( पु० ) आम का नया उत्पन्न पौदा ।

अमौआ ( पु० ) रँग कपड़ा, यह कई प्रकार के रंग  
का होता है ।

अंब } ( सं० अम्ब, अम्ब=खाना, जाना ) ( पु० ) आम  
 आंब } का पेड़, आम का फल ।  
 आम }

अंबक ( अम्ब=जाना ) ( पु० ) आँख, लोचन, नेत्र, नयन, ताँबा, पिता ।

अंबत ( पु० ) खटाई, खट्टा ।

अंबर ( अम्बे=शब्द करना ) ( पु० ) आकाश, आस्मान, कपड़ा, वस्त्र, नृपअंबर=राजाओं के कपड़े, सुगंधित वीज, अभ्रकधातु ।

अंबरीष ( पु० ) अयोध्या का एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा । यह बड़ा पराक्रमी था, १० लाख राजाओं के साथ अकेले लड़ा था और समस्त पृथ्वी पर अपना आधिपत्य जमाया था । अनेक यज्ञ किए थे ।

अंबा ( अम्बि=जाना, जो प्यार के साथ आने लड़के के पास जाय ) ( स्त्री० ) मा, माता, जननी, दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जगज्जननी । ( अंबा और अंबिका के इतिहास के लिये भा० ४० देखिए ) ।

अंबारी हौदा, चँदवा ।

अंबु ( अम्बि=शब्द करना ) ( पु० ) पानी ।

अंबुकण ( पु० ) ओस, शबनम ।

अंबुज ( अंबु=पानी, जन्म=पैदा हुआ, जन्म=पैदा होना ) ( पु० ) कमल, पद्म, चाँद, वज्र ।

अंबुद ( अंबु=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० ) बादल, बहल, मेघ, घन, घटा, अम्ब ।

अंबुधि ( अंबु=पानी, धा=रखना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।

अंबुनाथ ( अंबु=पानी, नाथ=मालिक ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।

अंबुनिधि ( अंबु=पानी, निधि=जगह या खजाना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।

अंबुनाह ( अंबु=पानी, वह=ले जाना ) ( पु० ) बादल, मेघ, अम्ब ।

अंभस् ( अम्बि=शब्द करना ) ( पु० ) पानी, जल, नीर, तोय, वारि ।

अंभोज ( अंभस्=पानी, जन्म=पैदा होना ) ( पु० ) जलज, कमल, पद्म ।

अंभोद ( अंभस्=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० ) बादल, मेघ ।

अंभोधर ( अंभस्=पानी, धा=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) बादल समुद्र ।

अंभोधि ( अंभस्=पानी, धा=रखना ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।

अंभोनिधि ( अंभस्=पानी, निधि=जगह या भांडार ) ( पु० ) समुद्र ।

अम्मा ( सं० अम्मा ) ( स्त्री० ) मा, माता, महतारी ।

अम्ल ( अम्ब=जाना ) ( वि० ) खट्टा ।

अम्लि ( सं० अम्ल=खट्टा ) ( स्त्री० ) इमली, अमली, चिंचा ।

अम्होरी ( स्त्री० ) अम्होरी, छोटी-छोटी कुंसियाँ जो बदन में गरमी के दिनों में निकल आती हैं ।

अय ( सं० अयस्=ज्ञान ) ( पु० ) लोहा, शोग, प्रेम से पुकारने के लिये संबोधन, यह ।

अयल ( पु० ) अयतन, असत्कार, निरुद्योग ।

अयथार्थ ( वि० ) अन्याय, अपेक्ष, मिथ्या झूठ, असत्य ।

अयन ( अयस्=ज्ञान ) ( पु० ) मार्ग, रास्ता, चाल, आधा बरस, विपुल-रेखा के उत्तर या दक्षिण की ओर सूर्य का रास्ता, घर, स्थान ।

अयःपिंड ( पु० ) लोहे का गोला ।

अयश ( अय=नहीं, यश=नामवरी ) ( पु० ) अपयश, बुराई, बदनामी, अपकीर्ति ।

अयशी ( सं० अयशस्वी ) ( वि० ) बदनाम ।

अयस् ( पु० ) लोहा ।

अयस्कांत ( पु० ) चुंबक-पत्थर ।

अयाचक ( वि० ) न माँगनेवाला, अभिक्षुक ।

अयाचित ( वि० ) बिना माँगा हुआ ।

अयाचितव्रत ( वि० ) बिना माँगे प्राप्त हुए पदार्थों से जीविका निर्वाह करनेवाला ।

अयान ( वि० ) मूर्खता, अज्ञानपन, अज्ञान, लड़कपन ।

अयाना ( सं० अहान ) ( वि० ) मूर्ख, अज्ञान, नासमझ, भोला ।

अयाल ( पु० ) शेर या घोड़े की गर्दन के बाल ।

अयुक्त ( अय=नहीं, युक्त=ठीक ) ( वि० ) अनुचित, अयोग्य, अनरीत, अन्याय ।

अयुत ( अय=नहीं, युत=मिलन, गिनना ) ( वि० ) दश हजार ।

अयुध ( पु० ) अस्त्र-शस्त्र, हथियार ।

अयोग्य ( पु० ) वर्णसंकरि ।

अयोग्य ( अ=नहीं, योग्य=उचित ) ( वि० ) अयोग, अनुचित, नासुनामित्र ।

अयोध्या ( पु० ) निहाई, हथौड़ा, निहाली ।

अयोध्या ( अ=नहीं, युधु=लड़ना स्त्री० ) अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी जो सरयु-नदी के तीर पर है ।

अयोनि ( वि० ) जो उत्पन्न न हुआ हो, नित्य, अजन्मा ।

अरई ( स्त्री० ) बड़ा अरवी, कंदा, एक तरकारी का नाम, मुहुर्या, बेल हाँकने की छड़ी, पैना ।

अरकना-बरकना ( क्रि० अ० ) धर-उधर करना ।

अरक्षित ( वि० ) जिसकी रक्षा न की गई हो ।

अरगजा ( पु० ) सुगंधित चीज़ ।

अरगनी ( स्त्री० ) बाँस, लकड़ी या रस्सी जो किसी घर में कपड़े आदि टाँगने के लिये लटकाई जाय ।

अरगा ( सं० अलग, अ=नहीं लाग=मिलता ) ( वि० ) अलग, अलगा, जुदा, न्यारा, भिन्न ।

अरगाई } ( वि० ) अलग, चुप ।  
अलगाई }

अरगाना ( सं० अलग ) ( क्रि० स० ) अलग करना, जुदा करना ।

अरघ ( पु० ) अर्घ्य, पोद्दशीपचार में से पूजन का एक उपचार ।

अरघा ( पु० ) अर्घ्य देने का पात्र ।

अरचन ( पु० ) पूजन ।

अरज़ ( स्त्री० ) विनय, प्रार्थना, विनता, चौड़ाई ।

अरज़ी ( स्त्री० ) प्रार्थनापत्र ।

अरझना ( क्रि० अ० ) उलझना, फँसना, बझना ।

अरणा ( सं० आरणा=जगती ) ( पु० ) जंगली भैंस ।

अरणि ( ऋ=जाना ) ( स्त्री० ) एक तरह की लकड़ी जिसकी घिसकर होम करने के लिये आग निकालते हैं, आग मथने की लकड़ी ।

अरंड ( पु० ) रेंड़ी, अंडीवृक्ष ।

अरण्य ( ऋ=जाना ) ( पु० ) वन, जंगल ।

अरण्यरोदन ( पु० ) निष्फल रोना, ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे ।

अरदास ( स्त्री० ) भेंट-सहित निवेदन, शुभ कर्म में देव-ताओं के लिये कुछ भेंट, नानक-पंथियों की प्रार्थना ।

अरपन ( पु० ) चढ़ाव, अर्पण, भेंट ।

अरघ ( पु० ) सौ करोड़, घोड़ा, इंद्र, एक देश का नाम ।

अरमान ( पु० ) चाह, इच्छा, अभिलाषा ।

अरना ( पु० ) बिना उबाले हुए धान से निकाला हुआ चावल ।

अरविंद ( अरा=पहिये का एक भाग उड़ी के समान दल, विंद=पाना या होना ) ( पु० ) कमल, कँवल, पद्म ।

अरस-परस ( पु० ) आँलमिचौनी का खेल, बोलचाल में सूच्य स्नान का सूचक शब्द ।

अरसा ( पु० ) देर, विलंब ।

अरसाँहा ( वि० ) आलस्य से पूर्ण ।

अरहट ( पु० ) रहट, रेंटा, पानी चढ़ाने की कल ।

अरहन ( पु० ) साग आदि पकाते समय जो बेसन या आटा मिलाया जाता है ।

अरहर ( सं० आदकं, अ=वाँ आर से, होकु=जाना ) ( पु० ) तूर, एक प्रकार का नाज जिसकी दाल बनती है ।

अरहू ( सं० अ० ) ( स्त्री० ) तिउरी, थोरी, भूकुटी ।

अराजक ( वि० ) राजाहीन, विद्रोही, उतपाती ।

अराजकता ( स्त्री० ) उत्पात, अंधेर, अशांति अन्वयस्था ।

अराति ( अ=नहीं, रा=देता, जो उन नहीं देता ) ( पु० ) वैरी, शत्रु, दुश्मन, ई की संख्या ।

अराधना ( सं० आराधन ) ( क्रि० स० ) पूजना, सेवा करना, मंत्र जपना ।

अरारा ( पु० ) दरदरा, दानेदार ।

अरि ( ऋ=जाना ) ( पु० ) वैरी, शत्रु, दुश्मन, अराति ।

अरिष्ट ( रिप्=हिंसा करना ) ( वि० ) अशुभ, ( पु० ) विघ्न, कौआ, वृषभासुर दैत्य, नींबूवृक्ष, सूतिकागृह, तक्र, दुग्ध, मरणचिह्न, उपद्रव, एक ऋषि का नाम ।

अरिदम ( वि० ) शत्रुओं का दमन करनेवाला, बली, योद्धा ।

अरियाणा ( क्रि० स० ) तिरस्कार करना ।

अरीठा ( पु० ) रीठा ।

अरु ( अव्य० ) समुच्चय, और, फिर ।

अरुचि ( स्त्री० ) नफरत, घृणा, अनिच्छा ।

अरुण ( ऋ=जाना ) ( पु० ) सूर्य, सूर्य का सारथी, सूर्य का रथ, सिंदूर, कुंकुम, अर्क, वृष, अव्यक्त राग, संध्या का राग, ( वि० ) लाल ।

अरुणचूड़ } ( पु० ) सुर्गा, कुक्कुट ।  
अरुणशिखा }

अरुणाई ( सं० अरुणता, अरुण=लाल ) ( स्त्री० ) लज्जाई,  
लालिमा, सुर्गी, लाली ।

अरुणोदय ( अरुण=सूर्य, उदय=निकलना ) ( पु० ) भोर,  
तड़का, बिहान, प्रातःकाल ।

अरुणोपल ( अरुण=लाल, उपल=पत्थर ) ( पु० ) लाल  
चुकी, पथराग, लाल पत्थर ।

अरुंतुद ( अरु=मर्मस्थल, तुद=काटना ) ( वि० ) क्लेश  
कारक, मर्मच्छेदक ।

अरुंधती ( स्त्री० ) एक तारा, वशिष्ठमुनि की स्त्री,  
( विशेष के लिये भा० च० देखिए )

अरूप ( अ=नहीं, रूप=डोल ) ( वि० ) निराकार, कुरूप,  
भोंडा, कुडौल ।

अरेच ( पु० ) पाप, दोष, अपराध ।

अरोग ( अ=नहीं, रोग=बीमारी ) ( वि० ) भलाचंगा,  
नीरोग, अच्छा ।

अरोचक ( वि० ) अरुचि-रोग, न रुचनेवाला ।

अरोड़ा ( पु० ) खत्रियों की जाति, विशेष जो पंजाब में  
विशेष संख्या में पाई जाती है ।

अर्क ( अर्च=पूजना या अर्क=गर्म होना ) ( पु० ) सूर्य,  
अकवन, आक, मदार, इंद्र, ताम्र, स्फटिक, ज्येष्ठ  
भ्राता, रविवार ।

अर्कट ( स्त्री० ) सतर्कता, सावधानता ।

अर्गल ( पु० ) बिलाई, जंजीर, बेलहन, आगल, किवाड़  
बंद करने की लकड़ी, एक ऐतिहासिक स्थान ।

अर्थ ( अर्ह=पूजना या अर्थ=मोल होना ) ( पु० ) आठ  
बीजों मिलाकर ईश्वर अथवा सूर्य-चंद्र आदि देवता  
के लिये अर्पण करना, पूजा में सूर्य-चंद्र आदि  
देवताओं को पानी देना, मोल, क्रोमन, दाम ।

अर्थी ( सं० अर्थ ) ( पु० ) अर्थ देने का बर्तन जो नाव  
के आकार का प्रायः ताँबे का बनता है ।

अर्चक ( अर्च=पूजना ) ( पु० ) पूजनेवाला, पुजारी,  
सेवक ।

अर्चना ( सं० अर्चन ) ( क्रि० सं० ) पूजना, पूजा करना,  
( स्त्री० ) पूजा ।

अर्चा ( अर्च=पूजना ) ( स्त्री० ) पूजा, सेवा, आरा-  
धना ।

अर्चिः ( स्त्री० ) अग्निशिखा, चमक, ज्योति, आँच ।

अर्चित ( अर्च=पूजना ) ( वि० ) पूजा किया हुआ,  
सेवा किया हुआ ।

अर्चिराजमार्ग ( पु० ) वह मार्ग जिससे मुक्त जीव भग-  
वान् के पास जाते हैं ।

अर्जन ( अर्ज=इकट्ठा करना ) ( पु० ) इकट्ठा, कमाई,  
संग्रह, संचय ।

अर्जुन ( अर्ज=इकट्ठा करना या जीतना ) ( पु० ) पांडु का  
तीसरा बेटा, युधिष्ठिर का भाई जो इंद्र के अंश से  
पैदा हुआ ( विशेष के लिये भा० च० देखिए ), एक  
पेड़ का नाम, श्वेत, दिशा ।

अर्णव ( अर्णव=पानी, ऋ=गना ) ( पु० ) समुद्र,  
सागर ।

अर्थ ( अर्थ=माँगना या ऋ=ज्ञान ) ( पु० ) अभिप्राय,  
मतलब, तात्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार, इरादा,  
मनोरथ, लिये, वारते, निमित्त, धन, मुनाफा ।

अर्थकारी ( अर्थ + कृ=करना ) ( पु० ) कार्यसाधक,  
( वि० ) उपयोगी, मुक्रीद ।

अर्थशास्त्र ( पु० ) राजनीति, हिकमतभ्रमली, पालिसी ।

अर्थात् ( अर्थ ) ( समुच्च० अर्थ्य० ) अर्थ से, जानो,  
याने ।

अर्थालंकार ( पु० ) अलंकार-विशेष जिसमें अर्थ का  
चमत्कार प्रदर्शित किया जाय ।

अर्थी ( अर्थ ) ( वि० ) धनी, धनवान्, माँगनेवाला,  
याचक, गर्जमंद, मतलबी, फरयादी, ( पु० ) मुर्द की  
खाट, रथी ।

अर्दाना ( पु० ) मोटा आटा, दलिया ।

अर्दित ( अर्द=पीड़ित होना ) ( वि० ) दुःखित,  
कष्टित, मुसीबतज्जदा, पीड़ित, याचित ।

अर्द्ध ( ऋध=बढ़ाना ) ( वि० ) आधा, समविभाग ।

अर्द्धचंद्र ( अर्ध=आधा, चंद्र=चाँद ) ( पु० ) आधाचाँद,  
चंद्रबिंदु, नखचन, गलहरत, मयूरपुच्छस्थ ।

अर्द्धनिमेष ( पु० ) आधा पल, आधा क्षण ।

अर्द्धमागधी ( स्त्री० ) मथुरा तथा पटने के बीच में  
बोली जानेवाली एक प्राचीन भाषा ।

अर्द्धरात्र ( अर्ध=प्राधी, रात्रि=रात ) ( स्त्री० ) प्राधी-  
रात ।

अर्द्धवन्ध ( वि० ) नीमबहशी, आधा जंगली ।

**अर्द्धांग** ( अर्द्ध=आधा, अंग=शरीर ) ( पु० ) आधा अंग, पक्षाघात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें आधा अंग रह जाता है, लकवा ।

**अर्द्धांगी** ( अर्द्धांग ) ( स्त्री० ) लुगाई, स्त्री, नारी, पत्नी, ( वि० ) पक्षाघाती ।

**अर्पण** ( ऋ=ज्ञाना ) ( पु० ) देवता की भेंट देना, भेंट, दान, समर्पण, नज़र ।

**अर्पण करना** { ( सं० अर्पण ) ( कि० स० ) भेंट चढ़ाना, अर्पना { ईश्वर को या देवता को भेंट देना, सिपुर्द करना, चारज देना ।

**अर्घ** ( सं० अर्घुद, अर्घ=ज्ञाना ) ( पु० ) सौ करोड़, कहीं-कहीं अर्घुद का अर्थ दश करोड़ भी लिखा है ।

**अर्घ-स्वर्ग** ( बोत्त० ) अपार, बेशुमार, अनगिनत, असंख्य “अर्घ-स्वर्ग लो ज्ञेय है, उदय-अस्त लो राज” गो० तुलसीदास ।

**अर्घ-द्वर्ग** ( पु० ) धन, संपत्ति ।

**अर्घुद** ( पु० ) रोग-विशेष, आक्-पर्वत, दश करोड़ संख्या ।

**अर्भ** { ( ऋ=ज्ञाना ) ( पु० ) लड़का, बालक, पुत्र, अर्भक { गर्भ का शिशु, ( वि० ) छोटा, मूल्य, रूप, कुशल्य, स्वरूप, सदृश ।

**अर्गमा** ( पु० ) आदित्य, सूर्य, अर्कवृक्ष, नित्य, पितर, विशेष ।

**अर्गटा** ( पु० ) बड़ा भारी शब्द, मकान आदि के गिर पड़ने का शब्द, अथवा बाण या गोले का शब्द ।

**अर्गना** ( कि० अ० ) एक बेर आ पड़ना ।

**अर्वाचीन** ( वि० ) नया, जदीद, अज्ञान, विरुद्ध ।

**अर्श** ( पु० ) बवासीर ।

**अर्शपर्श** ( पु० ) छुआछुत ।

**अर्ह** ( पु० ) श्रेष्ठ, उत्तम पात्र, योग्य, उपयुक्त ।

**अर्हंत** ( अर्ह=पूजना ) ( पु० ) बौद्धमती, जिन, जैनियों के एक तीर्थंकर का नाम ।

**अल** ( पु० ) वृथा, भूषण, पर्याप्ति, बिन्धू का डंक ।

**अलक** ( अल्=सँवारना ) ( पु० ) घूँघरवाले बाल, जलक, लट्टी, लट, घूँघरे बाल, अँगूठिये बाल, लच्छे-दार बाख ।

**अलकतरा** ( पु० ) कोलतार, पत्थर के कोयले से निकाला हुआ एक गाढ़ा काला द्रव पदार्थ ।

**अलका** ( स्त्री० ) कुबेरपुरी, दश वर्ष की कन्या ।

**अलकावलि** ( अलक=घूँघरवाले बाल, अवलि=पाँत ) ( स्त्री० ) वेणी, केशपुंज, बालों की लटें ।

**अलक्षि** ( सं० अलक्ष्मी ) ( वि० ) धनहीन, दरिद्री, कंगाल, मुफ़्तिस ।

**अलक्ष्य** ( अ=नहीं, लक्ष्=देखना ) ( वि० ) अलख, अगोचर, जो देखने में नहीं आवे ।

**अलख** ( सं० अलक्ष्य ) ( वि० ) अनदेखा, अगोचर, जो देखने में न आवे ।

**अलखित** ( सं० अ=नहीं, लक्षित=देखा गया ) ( वि० ) नहीं देखा, नहीं जाना गया, बेपता, अबूझा ।

**अलग** ( सं० अलग्न, अ=नहीं, लग्न=लगा हुआ, अलग्ना लग्न=मिलना ) ( वि० ) जुदा, अरगा, न्यारा, भिन्न, अलहदा ।

**अलगाना** ( सं० अलग्न ) ( कि० स० ) जुदा करना, अलग करना, न्यारा करना, भिन्न करना ।

**अलंकार** ( अलम्=शोभा, कार=करना, क=करना ) ( पु० ) गहना, भूषण, शोभा, आभरण, साहित्य-शास्त्र का एक भाग, कविता का गुण-दोष बतानेवाला ग्रंथ, शब्दभूषण, सनश्चत ।

**अलंकृत** ( अलम्=शोभा, क=करना ) ( वि० ) शोभायमान, शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सुधारा हुआ, बनाया हुआ, मुजैयन ।

**अलंग** ( स्त्री० ) ओर, तरु, छोर, पार, इस अलंग, इस ओर, इस पार ।

**अलंगारज** ( वि० ) लापरवाह ।

**अलंगोजा** ( पु० ) एक तरह की बाँसुरी ।

**अलतनी** ( स्त्री० ) हाथी की बागडोर ।

**अलता** ( सं० अलक्त, अ=नहीं, रक्त=लाल अर्थात् जिससे अधिक और कोई लाल न हो यहाँ र को ल हो गया है ) ( पु० ) खाल के रंग में खूब गहरी रँगो हुई रुई जिससे स्त्रियाँ हाथ-पैर रचाती हैं, महीरी, महावर ।

**अलघत्ता** ( अघ्य० ) निस्संदेह ।

**अलबेला** ( वि० ) छैला, बाँका, छैलछुबीला, छैल-चिकनिया ।

**अलभ्य** ( अ=नहीं, लभ्=मिलना ) ( वि० ) जो मिल न सके, दुर्लभ, अप्राप्य, नायाब ।

अलम् (अलम् प्रम्) ( अ० प्र० ) भूषण, योग्य, निषेध,  
निवारण, अवधारण, पूरा, सब, काफ़ी, बेकायदा,  
बस, फ़क़त ।

अलर्क ( पु० ) पगला कुत्ता, श्वेत अर्क, सफ़ेद मदार,  
एक पुराने ज़माने का राजा, इसने अपनी दोनों  
आँखें एक अंधे ब्राह्मण को दे दी थीं ।

अललटप्पू ( वि० ) अंडबंड, अटकलपच्चू, अप्रासंगिक ।  
अललबछेड़ा ( पु० ) नादान आदमी, घोड़े का बच्चा  
जो जवानी पर हो ।

अलवान ( पु० ) ओढ़ने के लिये ऊनी चादर ।  
अलसाना ( कि० अ० ) ओंधाना, झपकी लेना ।  
अलसी ( स्त्री० ) तीसो, अरसी ।

अलसेट ( पु० ) भुलावा, चकमा, टालमटोल, बाधा ।  
अलान ( सं० आलान ) ( पु० ) हाथी के बाँधने का  
रस्सा, जंजीर आदि ।

अलाप ( सं० आलाप ) ( पु० ) राग, तान, स्वर, वात-  
चीत, बोलचाल ।

अलापना } ( सं० आलाप ) ( कि० अ० ) स्वर मि-  
अलापना } लाना, राग छेड़ना, गाना, तान छेड़ना ।  
अलापी ( अ=बहुत, लप्=कहना ) ( वि० ) कहनेवाला,  
बकनेवाला, गुल मचानेवाला ।

अलाव ( पु० ) धूनी, कौड़ा, जिसके चारों ओर बैठकर  
लोग जाड़े में आग तापते हैं ।

अलि } अल=समर्थ होना, अर्थात् डंक मारने में आर  
अली } गुँतने में जो समर्थ होता है ) ( पु० ) भौर,  
भौरा, बिच्छू, कोयल, काग, शराब, मदिरा ।

अलिनी ( स्त्री० ) अमरी, भौरी ।

अलीक ( अल=रोकना ) ( वि० ) झूठा, मिथ्या, असार,  
असत्य, झूठ ।

अलीन ( अ=नहीं, ली=मिलना या गलना ) ( वि० )  
अयोग्य, हराम, नाजायज़ ।

अलील ( वि० ) बीमार, रोगी ।

अलीहा ( सं० अलीक ) ( वि० ) झूठ, मिथ्या, दरीग ।  
अलेख ( वि० ) लिखने के अयोग्य, दुर्बोध ।

अलैक पलवा ( सं० अलीक प्रलाप ) ( पु० ) बेहूदा  
बकना, वाहियात बकना, बेठौर-ठीक कहना ।

अलैया बलैया ( सं० अलि, काग, अलि=बलि देना ) ( स्त्री० )  
निष्ठावर, खेल ।

अलोना ( सं० अलवण, अ=नहीं, लवण=नमक ) ( वि० )  
विना नोन या लोन का, बेसवाद, फीका ।

अलोप ( वि० ) बिगाड़, प्रकट जो लुप्त न हो ।

अलोभ ( अ=नहीं, लुप्=वाहना ) ( वि० ) निर्लोभ,  
संतोष, बेतमन्ना ।

अलोल ( वि० ) गालमझ, बेअज़ल, स्थिर, बेहरकत ।

अलौकिक ( अ=नहीं, लौकिक=संसार का ) ( वि० )  
अनोखा, अद्भुत, जो इस लोक का न हो,  
परलोक का ।

अल्प ( अल=प्रमथ होना या रोकना ) ( वि० ) थोड़ा,  
कुछ, छोटा, कलील ।

अल्पप्राण ( पु० ) य, र, ल, व ये अक्षर अल्पप्राण  
कहे जाते हैं ।

अल्पबुद्धि ( अल=थोड़ा, बुद्धि=प्रमथ ) ( वि० ) कम-  
समझ, मंदबुद्धि, मूर्ख ।

अल्पायु ( वि० ) जल्दी मरनेवाला ।

अल्लमगल्लम ( पु० ) अगड़बगड़, प्रलाप ।

अल्लहड़ ( वि० ) अनाड़ी, अनसोखा, जवान, अचतुर,  
अलहड़ ।

अल्लाना ( कि० अ० ) खूब जोर से चिल्लाना ।

अव ( उप० ) से, नीचे, दूर, बीच में, बुरा, नहीं,  
अनादर, जुदा, फैलाव, निश्चय, आसरा, शुद्ध, हार ।

अवकाश ( अव=बीच में, काश्=चमकना ) ( पु० )  
अवसर, सुबीता, सावकाश, फुरसत, बीच का  
समय ।

अवकुंचन ( पु० ) टेढ़ा करना, मोड़ना, वक्रीकरण ।

अवकुंठित ( वि० ) भीरु, असाहसी ।

अवकेशी ( वि० ) बंध्या, बाँझ ।

अवक्रंदन ( पु० ) चिल्ला-चिल्लाकर रोना ।

अवक्रुष्ट ( वि० ) गाली दिया हुआ, भिंदित ।

अवगत ( वि० ) परिचित, ज्ञात, विदित ।

अवगति ( स्त्री० ) ज्ञान, बोध, विज्ञता ।

अवगाढ़ ( वि० ) छिपा, प्रविष्ट, निमज्जित ।

अवगात ( पु० ) अपघात, अपमृत्यु ।

अवगाहना ( सं० अवगाहन, अव + गाह=मथना )  
( कि० सं० ) मथना, थाह पाना, नहाना ।

अवगीत ( पु० ) निंदा ।

अवगुण ( अव=बुरा, गुण ) ( पु० ) दोष, खोट, औगुन ।

अवग्रहण ( पु० ) आलिङ्गन ।

अवग्रह ( अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना ) ( पु० ) रुकावट, रोक, समाप्त के पदों का विभाग, हाथियों का कुँड़, आँकुश, अनावृष्टि, ग्रहण, अपहरण, शाप ।

अवग्रह ( वि० ) कुघाट, ऊँचा-नीचा, अड़बड़ ।

अवग्रह ( पु० ) औचक, अचानक, संकट ।

अवग्रह ( वि० ) अचानक, एकवारगी ।

अवग्रह ( स्त्री० ) मंदचेष्टा, अनादोषता ।

अवग्रह ( अव=वृत्ति, शा=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) अनादर, अपमान, घृणा, नकरत ।

अवग्रह ( अवग्र० ) अवग्रह, आँटाकर, खोलाकर, छिद्र, नटवृत्ति से जावन काटनेवाला ।

अवग्रह ( अवग्र० ) बहकाकर, धोखा देकर ।

अवग्रह ( वि० ) विना विचारे दया करनेवाला, औदर "आशुतोष तुम औदर दानी"—तुलसीदास ।  
अवग्रह ( अव=निश्चय, तमि=शोभना ) ( पु० ) गहना, भूषण, कान का गहना, भुमका, कर्णफूल, मुकुट, माला ।

अवग्रह ( पु० ) अवतार, भाषांतर, अनुवाद, भूमिका, वक्तव्य, विषय की सूचना, उद्घरण ।

अवग्रह ( सं० अवतरण, अव=नीचे, तृ=पार होना ) ( कि० अव० ) अवतार लेना, उतरना, विष्णु का अवतार लेना ।

अवग्रह ( अव=नीचे, तृ=पार होना ) ( पु० ) जन्म, प्राकृत्य, उत्पत्ति, विष्णु का जन्म लेना, विष्णु के चौबीस अवतार हैं उनमें से दश अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे—१ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वाराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६ परशुराम, ७ रामचंद्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कल्कि ।

अवग्रह ( वि० ) शुभ्र, गौर, श्वेत, स्वच्छ ।

अवग्रह ( अव=नीचे, दा=दाटना ) ( पु० ) वध, कल्ल, मार डालना, पराक्रम, उल्लंघन ।

अवग्रह ( सं० उदनि=उत्तर-दिशा, उत्=ऊपर, अव=जाना ) ( पु० ) गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

अवग्रह ( अव=नीचे, वध=कड़ने योग्य, वद=कड़ना ) ( पु० ) पाप, दोष, अपराध, ( वि० ) नीच, पापी, निंदा करने योग्य, न कहने योग्य ।

अवग्रह ( सं० अवधि, अव=दूर, धा=रखना ) ( स्त्री० )

वचन, सीमा, सीव, समय, मुद्दत, ( सं० अवध्या ) ( पु० ) अवध-देश, ( सं० अवध, अव=नहीं, वध=मारने योग्य, वध=मारना ) ( वि० ) जो मारने योग्य न हो ।

अवग्रह ( अव + धा=रखा ) ( पु० ) कृपा, दया, तव-उज्ज्वल, सावधानी, चौकसी, ध्यान ।

अवग्रह ( कि०वि० ) निश्चय किया गया, सोचा गया अवधि ( पु० ) सीमा, से, तक, लों ।

अवग्रह ( अवग्र० ) विचार कर, सोचकर, अपमानित कर ।

अवग्रह ( कि० ) अनादर, अपमानित, शकलत की गई, ज्ञाया की गई ।

अवग्रह ( पु० ) कंपित, परिवर्जित, उदासीन, योगी, संन्यासी ।

अवग्रह ( वि० ) जिसको प्राणदंड न दिया जा सके ।

अवग्रह ( अव=नीचे, नम=भुक्तना ) ( स्त्री० ) घटती, तनहुँतुली, उतार, पतन, गिरना ।

अवग्रह ( अव=वचाना ) ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी, अवनी / जमीन, भूमि ।

अवग्रह ( अवनि=धरती, कुमार=बेटा ) ( स्त्री० ) सीता, जानकी, जनक राजा यज्ञ के लिये धरती जोतते थे, उस समय धरती के भीतर से एक घड़ा निकला, उसमें से सीताजी निकली ( इसका पूरा वर्णन रामचरित्र में देखें ) ।

अवग्रह ( अवनि=पृथ्वी, प=रक्षा करना ) ( पु० ) राजा, बादशाह, पृथ्वी की रक्षा करनेवाला ।

अवग्रह ( स्त्री० ) रानी, मलका ।

अवग्रह ( अव=नहीं, ना=ले जाना ) ( वि० ) वेदंगा, बदचलन, बदसलीका, कुमार्गी ।

अवग्रह ( अवनि=धरती, ईश वा ईश्वर=राजा ) अवग्रह ( पु० ) राजा, महाराजा, राजाधिराज ।

अवग्रह ( पु० ) मार्जन ।

अवग्रह ( अव=वचाना ) ( स्त्री० ) मालवा देश ।

अवग्रह ( अव=वचाना ) ( स्त्री० ) मालवादेश की राजधानी उज्जैन, सात पवित्र पुरियों में से एक पुरी था, अवध्या, मथुरा, माया, गया, काशी, कांची, अवधिकापुरी ।

अवग्रह ( वि० ) अपूज्य, अवदनीय ।



अवंध्य ( वि० ) सफल, फलवान् ।

अवभास ( पु० ) प्रकाशन, माया, प्रपंच ।

अवभृथ ( पु० ) यज्ञ-यत आदि की समाप्ति का स्नान, यज्ञशेष ओषधि आदि से लिप्त होकर कुटुंब परिजन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं ।

अवम ( पु० ) तिथि का क्षय, तीन तिथियाँ जिस दिन हों ।

अवमत ( वि० ) तिरस्कृत, अपमानित, अयश ।

अवमर्षण ( पु० ) लोप, परिक्षय

अवमान ( पु० ) अपमान, दुर्नाम ।

अवमूर्ख ( पु० ) अधःशिर, अधःमस्तक ।

अवयय ( अव=बुदा-बुदा, यु=मिलना ) ( पु० ) अंग, शरीर का कोई भाग ।

अवराधक ( अव=निश्चय ही, राध=पूरा करना ) ( पु० ) सेवक, संत, आराधना करनेवाला, आबिद, दास ।

अवराधना ( सं० अवराधन ) ( स्त्री० ) सेवा, श्रद्धामत ।

अवरेख ( स्त्री० ) लेख, लकीर, गिनती, शुमार ।

अवरोध ( अव+रुध=रोकना ) ( पु० ) रोक, रुकाव, अटकाव, रनिवास ।

अवर्ण ( पु० ) अ अक्षर, अकार, निंदा, परिवाद ।

अवत ( सं० आवर्त ) ( पु० ) पानी का चकर, भँवर, गिराव, बारबार आना, पुनरावृत्ति ।

अवर्तमान ( वि० ) अभाव, अनुपस्थिति, मृत्यु ।

अवलंब } ( अव+लवि=ठहरना ) ( पु० ) सहारा,  
अवलंबन } आसरा, आधार, आड़, आश्रय ।

अवली ( सं० आवलि ) ( स्त्री० ) पाँत, पैर, लकीर ।

अवलेह ( अव+लिह=चाटना ) ( पु० ) चाटना, चटनी, चाटनेवाली कोई ओषधि ।

अवलोकन ( अव+लोक=देखना ) ( पु० ) दृष्टि, दीठ, नज़र, देखना, दर्शन, मुलाहिजा करना ।

अवलोकना ( सं० अवलोकन ) ( कि० सं० ) देखना ।

अवश ( अ=तहाँ, वश=चहना ) ( वि० ) बेवश, बेइच्छित-यार, बेक्राब ।

अवशिष्ट ( अव+शिष्ट=बाकी रहना ) ( वि० ) बाकी, अधिक, शेष ।

अवशेष ( वि० ) बाकी ।

अवश्य ( अव=निश्चय ही, श्यै=जाना ) ( कि० वि० ) निश्चय, ही चाहिए, जरूर ।

अवश्यक ( अवश्य ) ( वि० ) जरूरी, आवश्यक ।

अवश्यकता ( अवश्य ) ( स्त्री० ) जरूरत, प्रयोजन, निश्चय, आवश्यकता ।

अवर्षण ( पु० ) अनावृष्टि, वृष्टि का अभाव ।

अवसन्न ( अव+सन्न, सद=बैठना ) ( पु० ) थका हुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, शमगीन, हारा हुआ ।

अवसर ( अव=निश्चय, सृ=जाना ) ( पु० ) औसर, अवकाश, समय, मौका, विराम, ठहराव ।

अवसान ( अव+सो=नाश करना ) ( पु० ) श्रुंत, समाप्ति, मोत, हद, सीमा ।

अवसेरी ( स्त्री० ) देर, प्रत्याशा, इंतज़ारी ।

अवस्था ( अव+स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) दशा, उमर, आयुर्दा, हाज़त, स्थिति ।

अवस्थित ( पु० ) ठहरा हुआ, मुक़ीम ।

अवहित ( अव+हित, धा=रखना ) ( वि० ) मनोयोगी, सावधान, सुतवज्जेह, प्रख्यात, मशहूर ।

अवहित्था ( स्त्री० ) छद्मवेप, चालाकी से अपने को छिपाना ।

अवही ( पु० ) एक प्रकार का बबूल ।

अवहेला ( स्त्री० ) अनादर, निरादर ।

अवाई ( आना ) ( स्त्री० ) आने की खबर, आना, मैल-खोरा या ज़ीनपोश भाबर समेत, जुताई ।

अवाक् ( वि० ) स्तब्ध, वाक्यरहित, मौन ।

अवाङ्मुख ( वि० ) अधोमुख, लज्जित ।

अवाच्य ( वि० ) गुपचुप, मौनी ।

अवाची ( स्त्री० ) दक्षिण दिशा ।

अवाधी ( वि० ) दुःखरहित, सुखरूप ।

अवाध्य ( वि० ) अतर्क्य, विना विद्या ।

अवाँ ( पु० ) आँवा, पजावा जिसमें कुम्हार मिट्टे के बर्तन पकाते हैं ।

अवाँर ( स्त्री० ) बिलंब, देर ।

अविकल ( वि० ) वैसा ही, ज्यों का त्यों, जैसे का तैसा ।

अविकल्प ( वि० ) असंशय, निरुद्धदेह ।

अविकार ( वि० ) अविकल, अज, अविनाशी, ईश्वर ।

अविकारी ( अ=नहीं, विकार=दोष ) ( पु० ) विकार-रहित, वेषेव ।

अविगत ( अ+वि+गत, गम्=जाना ) ( पु० ) व्यापक, सब जगह मौजूद ।

अविचल ( अ=नहीं, विचल=चलना ) ( वि० ) अचल, अटल, जो चले नहीं, दृढ़, मजबूत ।

अवितथ ( पु० ) सत्य, यथार्थ ।

अवितन ( वि० ) विस्ताररहित, संकुचित ।

अविद्या ( अ=नहीं, विद्या=ज्ञान ) ( स्त्री० ) अज्ञान, मूर्ख-पन, माया ।

अविनय ( अ+वि+नर्ता=ने जाना ) ( पु० ) दिठाई, शोश्री, बेअदबी ।

अविनाशी ( अ=नहीं, विनाशी=नाश होनेवाला, नश=नाश होना ) ( वि० ) जिसका कभी नाश न हो, सदा रहनेवाला, परमेश्वर ।

अविरत ( वि० ) निरंतर, विरामशून्य ।

अविरल ( अ=नहीं, विरल=महान, विलु=ढकना, ज्ञिपाना ) ( वि० ) गहरा, गाढ़ा, मोटा, निरंतर, सदा ।

अविरोध ( अ+वि=रोध, धू=शंकना ) ( पु० ) मेल, हितकाम, सम्मति ।

अविवादी ( वि० ) शांत, झगड़ाने करनेवाला, मेली ।

अविचंचक ( अ=नहीं, विचंचक=विचार ) ( पु० ) अज्ञान, अविचार, मूर्खपन, बेतमीजी ।

अविचेकी ( अविचेक ) ( पु० ) अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारनेवाला, बेतमीज, मोह में फँसा हुआ, सांसारिक ।

“जिमि अविचेकी पुरुष शरीरहि”—

गो० तुलसीदास ।

अविशेष ( पु० ) सामान्य, तुल्य, सदृश ।

अविश्वास ( पु० ) विश्वासशून्यता, अप्रतीति ।

अवेर ( स्त्री० ) देर, विलंब ।

अव्यक्त ( अ=नहीं, व्यक्त=प्रकट ) ( पु० ) अलख, अदृश्य, छिपा हुआ, जो प्रकट न हो, ( पु० ) विष्णु, परमेश्वर ।

अव्यग्र ( वि० ) घबड़ाहटरहित ।

अव्यय ( अ=नहीं, व्यय=नाश या खर्च ) ( पु० ) व्याकरण में ऐसा शब्द जो किसी तरह से बदलता नहीं ऐसा ही बना रहता है जैसे—अर, अधवा,

फिर, पुनि, आदि । जिसका नाश न हो, विष्णु, परमेश्वर ( वि० ) अविनाशी, कृपण, कंजूस ।

अव्यर्थ ( वि० ) अचूक, शर्तिया, सार्थक ।

अव्यवस्थित ( अ=नहीं, व्यवस्थित=अचल ) ( वि० ) चंचल, उतावला, अचेत, बेहोश, अनुचित, तितर-बितर, छिन्न-भिन्न, असंगठित ।

अव्याहत ( अ=नहीं, व्याहत=निगूँश, वि + आ + हन्=मागना ) ( पु० ) जो रोकाने जाय, आशावान्, बेरोक ।

अशकुन ( अ=नहीं या वृग, सकुन=सगुन ) ( पु० ) बुरे सगुन, अपसगुन, बुरे चिन्ह ।

अशक्त ( अ=नहीं, शक्त=उपमर्थ ) ( पु० ) निबल, कमज़ोर, दुबला, असमर्थ ।

अशक्य ( अ=नहीं, शक्=पकना ) ( वि० ) असंभव, गौर-मुमकिन, जो नहीं हो सकता ।

अशंक ( वि० ) निर्भय, बेवोला ।

अशन ( अश=जाना ) ( पु० ) खाना, भोजन ।

अशनि ( अश=जाहना, मारना ) ( पु० ) वज्र, बिजली, इंद्र का शस्त्र ।

अशम ( पु० ) अशांति ।

अशंचल ( वि० ) अर्थहीन, पाथेय-हीन ।

अशम्य ( वि० ) विरामयोग्य ।

अशरण ( वि० ) निराश्रय, निरालंब ।

अशरफ़ी ( स्त्री० ) मोहर, सुवर्ण-मुद्रा ।

अशराफ़ ( वि० ) भले आदमी ।

अशरीर ( पु० ) काम, मदन, शरीररहित ।

अशांत ( वि० ) अधीर, असंतुष्ट ।

अशालीन ( वि० ) ढोठ, धृष्ट, कुशासित ।

अशावरी या असावरी ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

अशास्त्र्य ( वि० ) शास्त्रविरुद्ध, विधिहीन ।

अशिक्षित ( अ=नहीं, शिक्षित=शिक्षा हुआ, शिक्ष=शिक्षना, मिलाना ) ( वि० ) अनसोखा, मूर्ख, अपढ़ ।

अशित ( अश=खाना ) ( वि० ) खाया हुआ, भुक्त ।

अशिर ( पु० ) होरा, अग्नि, राक्षस, सूर्य ।

अशिरस्क ( वि० ) कबंध, मस्तक-हीन, धड़ ।

अशिव ( अ=नहीं, शिव=शुभ ) ( वि० ) अशुभ, अमंगल, बुरा ।

अशुद्ध ( अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र ) ( वि० ) अपवित्र, जो ठीक न हो, शकृत ।

अशुद्धता ( स्त्री० ) भूल, गलती, गलतरहमी, नापाकी, अपवित्रता ।

अशुभ ( अ=नहीं, शुभ=अच्छा ) ( वि० ) बुरा, अमंगल, ( पु० ) बुराई, आपदा, दुःख ।

अशुभचिंतकता ( स्त्री० ) बुरा सोचना, बद्-अदेशी ।

अशोक ( अ=नहीं, शोक=शोच ) ( पु० ) सुख, चैन, आराम, एक वृक्ष का नाम, ( वि० ) प्रसन्न, चैन से, सुख, बेक्रिंक, विख्यात मौर्य-सम्राट् ( अधिक के लिये मा० च० देखिए ) ।

अशोभन ( वि० ) दुर्दर्शन, अश्रो, मंद, कुटस्थ ।

अशौच ( पु० ) अशुद्धि ।

अशौर्य ( पु० ) भीरुता ।

अश्म } ( पु० ) पत्थर, पर्वत, मेघ ।  
अश्मन् }

अश्मरी ( स्त्री० ) पथरी-रोग, मूत्रकृच्छ्र-रोग ।

अश्रय ( पु० ) राक्षस, निशाचर ।

अश्राद्ध ( वि० ) प्रेतकर्म-रहित ।

अश्राव्य ( वि० ) सुनने के अयोग्य ।

अश्रि ( स्त्री० ) तीक्ष्ण, धार, पैना, तीखा ।

अश्रु ( पु० ) आँसू ।

अश्रुत ( वि० ) जो सुना हुआ न हो ।

अश्रेयस् ( वि० ) निर्गुण, अधम ।

अश्लील ( वि० ) नीच, अधम, ग्राम्य भाषा, फूहड़, घृणा अथवा लज्जासूचक बात ।

अश्लेष ( पु० ) अप्राप्ति, अप्रणय ।

अश्लेषा ( स्त्री० ) नवाँ नक्षत्र ।

अश्व ( अश्व=जैलना या खानः ) ( पु० ) घोड़ा, नुरंग ।

अश्वगंधा ( स्त्री० ) अश्वगंध ।

अश्वतर ( पु० ) खचर वह जानवर जो गर्दभी और घोड़े से पैदा होता है ।

अश्वत्थ ( पु० ) पीपल ।

अश्वत्थामा ( पु० ) द्रोणाचार्य का पुत्र ( विशेष मा० च० में देखिए ) ।

अश्वपति ( अश्व=घोड़ा, पति=मालिक ) ( पु० ) घोड़े का मालिक, सवार, घुड़चढ़ा ।

अश्वमेध ( अश्व=घोड़ा, मेध=यज्ञ ) ( पु० ) घोड़े का यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

अश्ववार ( अश्व=घोड़ा, वृ=पसंद करना वा ढकना ) ( पु० ) सवार, असवार, घुड़चढ़ा ।

अश्वशाला ( अश्व=घोड़ा, शाला=जाह ) ( स्त्री० ) घुड़-शाल, घोड़ों का तबेला ।

अश्वशिल्पक ( पु० ) चाबुक-सवार ।

अश्वसेन ( पु० ) तक्षक का पुत्र, सनत्कुमार ( विशेष मा० च० में देखें ) ।

अश्वसेवक ( पु० ) साईंस ।

अश्विनी ( अश्व=घोड़ा अर्थात् जिसका आकार घोड़े के शिर जैसा है ) ( स्त्री० ) एक नक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र, दक्षप्रजापति की कन्या और चंद्रमा की स्त्री ।

अश्विनीकुमार ( अश्विनी=घोड़ी, कुमार=बेटा अर्थात् मृत्यु की स्त्री एक बार घोड़ी का रूप बन गई थी, तब मृत्यु घोड़ा बने थे उस समय के पैदा हुए दो लड़के का नाम अश्विनीकुमार है ) ( पु० ) देवताओं के वैद्य ।

अषाढ ( अषाढा, एक नक्षत्र का नाम जो इसी महीने की पूर्णमासी को होता है और इस महीने में पूर्ण चंद्र इस नक्षत्र के पास रहता है ) बरस का चौथा महीना ।

अष्टधाती ( सं० अष्टधातु ) ( वि० ) आठ धातुओं का बना हुआ ।

अष्टधातु ( अष्ट=आठ, धातु=धातु ) ( स्त्री० ) आठ धातुएँ जैसे—१ सोना, २ रूपा, ३ ताँबा, ४ पीतल, ५ राँगा, ६ काँसा, ७ सीसा, ८ लोहा ।

अष्टमी ( अष्ट=आठवाँ, अष्ट=आठ ) ( स्त्री० ) पक्ष की आठवीं तिथि ।

अष्टसिद्धि ( अष्ट=आठ ) सिद्धि=पान का मनोरथ ( स्त्री० ) आठ प्रकार की सिद्धि—१ अग्निमा, बहुत छोटा बन जाने की शक्ति, २ महिमा, बहुत बड़ा बन जाने की शक्ति, ३ लघिमा, हलका बन जाने की शक्ति, ४ प्राप्ति, चाहे जितनी दूर पर जो चीज़ हो उसको ले आने की शक्ति, ५ प्राकाम्य, चाहे जैसे मनोरथ को पूरा करना, ६ ईशित्व, ऐश्वर्य रखना, ७ वशित्व सबको वश करने की शक्ति, ८ कामावसायिता, सांसारिक सारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बात की इच्छा न रखना ।

अग्निमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा ।

ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता ॥

**अष्टांगप्रणाम** ( अष्टांग=आठ अंग, प्रणाम=नमस्कार )  
( पु० ) आठ अंगों से दंडवत करना अर्थात् १ हाथ,  
२ पैर, ३ जाँघ, ४ हृदय, ५ आँख, ६ सिर, ७  
वचन, ८ मन से प्रणाम करना ।

**अष्टि** ( स्त्री० ) गूढली, बीज ।

**अस** ( वि० ) पेमा, पेयी, ( वि० ) इस तरह से,  
इस प्रकार से ।

**असकत** ( स्त्री० ) आलस, आलसी, शिथिल, अशक्त ।

**असंख्य** ( अ=नहीं, संख्या=गिनती ) ( वि० ) अनगिनत  
अगणित, वेशुमार, बेहिसाब ।

**असंग्रह** ( अ=नहीं, संग्रह=संग्रह लेना ) ( पु० )  
संचयहीन, इकट्ठा न होना ।

**असत्** ( वि० ) अधर्मी, असाधु, अन्यायी ।

**असती** ( स्त्री० ) कुलटा, दुराचारिणी स्त्री ।

**असत्य** ( अ=नहीं, सत्य=सचि ) ( वि० ) झूठा, मिथ्या,  
( पु० ) झूट, दुरोग ।

**असत्यवादी** ( अ=नहीं, सत्य=सचि, वद=कहना )  
( वि० ) झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दुरोगी ।

**असत्यसंध** ( वि० ) कपटपरायण, दगाबाज, झूठा ।

**असफल** ( अ=नहीं, स + फल=फलित फल ) ( वि० )  
फलरहित, असिद्ध, फल न देनेवाला, बेकाम,  
बेमुराद, बेमकसद ।

**असभ्य** ( अ=नहीं, सभ्य=सभा के योग्य ) ( वि० )  
गैवार, अनाड़ी, जो सभा के योग्य न हो, बदना-  
म, हज़ीब ।

**असमंजस** ( अ=नहीं, समंजस=ठीक, सम्=साथ, अंजसा  
=।चाई से, अंज=शुद्ध करना ) ( वि० ) सदेह, द्विविधा,  
अनिश्चय, शक, श्रुबहा, पशोपेश, ( पु० ) राजा  
सगर के पुत्र का नाम ।

**असमर्थ** ( अ=नहीं, समर्थ=बलवान् ) ( वि० ) दुबला,  
निर्बल ।

**असमर्थता** ( स्त्री० ) लाचारी, बेताकती, निर्बलता ।

**असमय** ( अ=नहीं, समय=काल ) ( वि० ) कुसमय,  
बेअनु, बेवक़्त ।

**असमशर** ( असम=विषम, शर=हीर ) ( पु० ) कामदेव ।

**असमसाहस** ( पु० ) दुःसाहस, सामर्थ्य से बाहर  
उत्साह ।

**असमक्ष** ( वि० ) परोक्ष, अगोचर ।

**असमाधि** ( स्त्री० ) अचिंता, अविवेचन ।

**असंभव** ( अ=नहीं, संभव=होने योग्य ) ( वि० ) अन-  
होना, न होनेवाला, न हो सकनेवाला, ग़ैर-  
मुमकिन ।

**असयाना** ( वि० ) भोला, सीधा, सादा ।

**असर** ( पु० ) प्रभाव, दबाव ।

**असल** ( वि० ) खरा, सच्चा, शुद्ध ।

**असली** ( वि० ) खरा, सच्चा ।

**असवार** } ( सं० अश्ववार ) ( पु० ) घुड़चढ़ा ।  
**सवार** }

**असहिष्णु** ( वि० ) असहनशील ।

**असहा** ( अ=नहीं, सहा=।हने योग्य, सह=सहना ) ( वि० )  
जो सहा न जाय, कठोर, कड़ा, कड़ुवा, वर-  
दास्त के बाहर ।

**असाधु** ( अ=नहीं, साधु=सीधा ) ( वि० ) अधर्मी, पापी,  
दुष्ट, बुरा ।

**असाध्य** ( अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होने योग्य ) ( वि० )  
कठिन, असंभव, जिसका इलाज न हो सके,  
लादवा ।

**असार** ( अ=नहीं, सार=गूदा, तत्त्व ) ( वि० ) छूँछा,  
पोला, सूखा, बूथा, बेफ़ायदह, निष्फल, जिसमें  
कुछ सार न हो, सारहीन ।

**असावधान** ( अ=नहीं, सावधान=बौकस, होशियार )  
( वि० ) अचेत, बेसुध, बेसुरत, बेखबर, ग़ाफ़िल ।

**असावधानी** ( स्त्री० ) बेचौकसी, बेखबरी,  
शरलत ।

**असि** ( अम्=फेंकना वा चमकना ) ( स्त्री० ) तलवार,  
खाँड़ा, खड्ग, शमशेर ।

**असित** ( अ=नहीं, सित=धँला ) ( वि० ) काला,  
कृष्णपत ।

**असिद्ध** ( अ=नहीं, सिद्ध=पूरा ) ( वि० ) अधूरा, अन-  
बना, विनापका, झूठ, झूठा ।

**असिद्धता** ( स्त्री० ) नाकामयाबी, झूठाई ।

**असीम** ( वि० ) अपार, बहुत, सीमारहित, अनंत ।

**असीस** } ( सं० आशिम् ) ( स्त्री० ) आशीर्वाद, दुआ ।  
**आसीस** }

**असु** ( अम्=फेंकना ) ( पु० ) प्राण, स्वास, रुह, जान ।

असुर ( अम्=फेंकना, जो देवताओं को फेंके हैं ) ( पु० )

दिति के बेटे, राक्षस, दैत्य, दानव ।

असुरसेन ( पु० ) गयातीर्थ ।

असुस्थ ( वि० ) रोगी, अस्वस्थ ।

असूक्ष्म ( वि० ) अटश्य, भूल ।

असूर्यपश्या ( स्त्री० ) पर्देनशीन, पर्दे में रहनेवाली ।

वालमीकीय रामायण में इसका प्रयोग आया है ।

असूयक ( अस् + य + अक, असू=निरादर करना ) ( वि० )

निंदक, चुगुलखोर, बुराई करनेवाला ।

असूया ( स्त्री० ) गुण में दोष लगाना, ऐबजोई करना, निंदा करना ।

असेसर ( पु० ) प्रजा के वे पुरुष जो क्रांजदारी मामलों के फैसले में राय देने को चुने जाते हैं ।

असुक ( स्त्री० ) रुधिर, लोह ।

असों ( पु० ) यह साल, वर्तमान वर्ष, आसों ।

असोच ( वि० ) अचेत, अविचारित ।

असोज ( पु० ) कुँआर का महीना ।

असखलित ( अ=नहीं, स्तल=गिरना : ( वि० ) अच्युत, अपतित ।

अस्त ( अम्=फेंकना ) ( पु० ) सूर्य का छिपना या डूबना, गुरुब होना ।

अस्तर ( पु० ) दोहरे वस्त्रों में नीचे का वस्त्र ।

अस्तरकारी ( स्त्री० ) चूने से सफेद कराई, लिपाई, पुनाई ।

अस्तव्यस्त ( अस्=फेंकना ) ( वि० ) तितर-बितर, जुदा-जुदा, उलटा-पुलटा, तीन-तेरह, इधर-उधर, जहाँ-तहाँ, छिन्न-भिन्न, उथल पुथल ।

अस्त होना ( कि० अ० ) ( बोल० ) सूर्य का डूबना, सूर्य का छिपना, अस्तित्व का मिट जाना, हस्ती का गुरुब होना ।

अस्ताचल ( अस्त=गिरने डूबना, अचल=पहाड़ ) ( पु० ) पश्चिम की ओर एक पहाड़ जहाँ हिंदू लोगों के मन से सूर्य डूबता है ।

अस्ति ( स्त्री० ) विद्यमान, मौजूद, ( सरू० ) होना, है ।

अस्तुत { सं० स्तुति ( स्त्री० ) सराह, तारीफ़, प्रशंसा, भजन ।

अस्त्र ( अम्=फेंकना ) ( पु० ) ऐसा हथियार जिसको फेंक के मारें जैसे बाण, तोप का गोला आदि, तलवार आदि सब हथियारों को भी कभी-कभी अस्त्र कहते हैं ।

अस्थि ( अम्=फेंकना ) ( पु० ) हाड, हड्डी ।

अस्थिर ( वि० ) चंचल-प्रकृति, चल, चलायमान ।

अस्वर ( पु० ) बेस्वर, हलंत व्यंजन ।

अस्सी ( सं० अशीति ) ( वि० ) चार बीसी ।

अहमिति ( स्त्री० ) अहंकार, अभिमान, गरूर, खुरी, में हूँ-ऐसा भाव होना ।

अहंकार ( अहम्=मैं, कार=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० ) घमंड, अभिमान, अकड़मकड़, गर्व, मद, एठ, मरोड़, शेखी, गरूर ।

अहंकारी ( अहंकार ) ( वि० ) घमंडी, अकड़बाज़, अकड़ैत, शेखीबाज़, अभिमानो, गरूरी ।

अहद ( पु० ) वदा, प्रतिज्ञा ।

अहन् ( पु० ) दिन, रोज़, अहर ।

अहमक ( वि० ) मूर्ख, नादान ।

अहम्मति ( वि० ) मनमौज़ी, गर्वी ।

अहर ( पु० ) डौवा, पोखरा, अहरा, पानी का गड्ढा ।

अहरह ( पु० ) प्रतिदिन ।

अहर्निश ( कि० वि० ) रातदिन, शबरोज़ ।

अहर्मुख ( पु० ) प्रातःकाल, भोर ।

अहल्या ( अहल्य, अ=नहीं, हल्य=वेक्ष्य ) ( स्त्री० ) गोतम ऋषि की स्त्री, जीती हुई भूमि ।

अहार ( सं० आहार ) ( पु० ) खाना, भोजन ।

अहाहाहा { ( अहह, अहम्=मैं, हा=आह्वान ) ( अव्य० ) सं० अहह } ( बो० ) अचंभा, दुःख और खुरी आदि को जतलानेवाला शब्द, आहा, आह, हाय ।

अहर्हि ( सं० अस्ति=है, अम्=होना ) ( कि० अ० ) हैं, विद्यमान हैं, मौजूद हैं ।

अहिंसा ( अ=नहीं, हिंसा=मारना ) ( स्त्री० ) दया, किसी को न मारना, किसी को न सताना ।

अहि ( अ=चारों ओर से, हन्=मारना ) ( पु० ) साँप, सर्प, नाग ।

अहिगति ( अहि=साँप, गति=चलना, जाना ) ( स्त्री० ) साँप की चाल, टेढ़ी चाल, कजरप्रतारी ।

अहिलार ( सं० अहिहार ) ( पु० ) साँप का विष ।

अहित ( अ=नहीं, हित=यारा, भला ) ( पु० ) वैरी, शत्रु, वैर, विरोध, अनभला, बुराई ।

अहितकारी ( अ=नहीं, हित=भलाई, कारी=कृ=करना ) ( वि० ) अप्रिय करनेवाला, बुराई करनेवाला ।

अहिनी ( स्त्री० ) साँपिन, सर्पिणी ।

अहिपति (अहि=साँप, पति=मालिक) (पु०) साँपों का राजा, शेषजी, वासुकि ।

अहिर्निन (पु०) अस्त्रीम ।

अहिलव (अभिलव, अभि=सामने, सव=डराना) (पु०) वाद, सँपोला, साँप का बच्चा ।

अहिवात (सं० अस्तिपति, अस्ति=है, पति=भर्ता, खाविद) (पु०) सृहाग, पति के जीने का चिह्न ।

अहीन (अहि=साँप, इन=मालिक) (पु०) साँपों का राजा, शेषजी, शेषनाग ।

अहीर (सं० अभिर आ=चारों ओर से, भी=डा, रा=देना अथवा था, ईर=पेजना) (पु०) गाल्ला, ये लोग अपने को आभीर क्षत्रिय भी कहते हैं ।

अहीरणी (अहीर) (स्त्री०) गालिनी ।  
अहीरी

अहीश (अहि=साँप, ईश=मालिक) (पु०) साँपों का राजा, शेषजी ।

अहे (वि० बो०) संबोधन का सूचक, शोच, दुःख, अहो } दया, अचंभा, बड़ा, सराह आदि अर्थों में बोले जाते हैं ।

अहेर (सं० आखेट) (पु०) शिकार, मृगया, आखेट ।

अहेरिया } (सं० आखेटकी) (पु०) शिकारी, बहे-  
अहेरी } लिया, आखेटकी “चित्रकूट जनु अचल अहेरी”—रामा.बालकां. ।

अहो (सं० अह) (वि० बो०) आश्चर्य, तन्मज्जुब, कष्ट, हर्ष, दुःख आदि का सूचक शब्द ।

अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि=रात) (कि० वि०) रात-दिन, दिनरात ।

— ० —

## आ

आ (वि० बो०) हाय, आह, दुःख अथवा दया का जतानेवाला शब्द ।

आ (उपप०) से (जैसे आर्कामरम्=मालकरन से) तक, तलक, लग, तोड़ी (जैसे आगोपात=बाल तक, अथवा आमरणम्=मरने तक) चारों ओर से, कुछ, कुछेक, सा (जैसे आपात=कृद्वेक पीला, अथवा पीला-सा), पहले, वाक्य के उलटे अर्थ में ।

आ (पु०) शिव, महादेव, ब्रह्मा ।

आईदा (कि० वि०) आगे, भविष्य-काल में ।

आई (स्त्री०) आयु, वय, (कि० वि०) आनकर, आकर ।

आईन (पु०) कानून, विधि, व्यवस्था नियम, विधान ।

आईना (पु०) दर्पण, मुँह देखने का शीशा ।

आँक (सं० अंक) (पु०) अंक, संख्या, रक्रम, चिह्न, निशान, कपड़े के धान पर का चिह्न जिससे उसका मोल जाना जाता है, निश्चय, सदार, अकीवा ।

आँकड़ी (स्त्री०) काँटा, जंजीर ।

आँकना (सं० अंक=विद करना) (कि० सं०) जाँचना, परखना, मोल करना, मोल ठहराना, कृतना चिह्न करना ।

आँकरी (स्त्री०) अंकुश, बाण का कण ।

आँकुप (कि० अ०) अंकुरित हुए, पैदा हुए, अंकुष ।

आँकुश (सं० अंकुश) (पु०) अंकुश, आँकड़ी, ज़ाहे का काँटा जिससे हाथी को चलाते हैं ।

आँकुश मारना (बोल०) वश करना ।

आँख (सं० अक्षि) (स्त्री०) नेत्र, नयन, चक्षु, चपु, लोचन, दृक्, दृष्टि, अंशक ।

आँख आना (बोल०) आँख में जलन होना, आँख में लाजो, पीड़ा और सूजन होना ।

आँख उठना (बोल०) आँख आना ।

आँख उठाना (बोल०) ताकना, देखना, सामने नज़र आना, महावरे में इसका अर्थ है—अहंकार जताना ।

आँख उलट जाना (बोल०) आँख पथराना, पुतली का ऊपर चढ़ जाना (यह मरने के समय होता है) ।

आँख ऊँची न होना (बोल०) लज्जा से दृष्टि नीची रहना, शर्माना ।

आँख का अंधा गाँठ का पूरा (बोल०) मूर्ख धनवान्, अनाड़ी मालदार ।

आँख का काजल चुराना (बोल०) बड़ी सफ़ाई से चोरी करना, गहरी चोरी करना ।

आँख का काँटा होना (बोल०) कंठ होना, बाधक या शत्रु होना, दिल में सदा खटकते रहना ।

आँख का जल निकालना (बोल०) आँखों को कष्ट देना ।

आँख का जाना (बोल०) आँख फूटना ।

आँख का पानी ढल जाना (बोल०) लाजशर्म छोड़ देना ।

आँख की बड़ी भाँके आगे (बोल०) किसी की बुराई उसके मित्र या संबंधी से करना ।

आँख खटकना (बोल०) आँख दुखना, आँख में दर्द होना ।

आँख चढ़ाना (बोल०) क्रोध करना, गुस्सा करना, मस्त होना, मतवाला होना, नशे में होना ।

आँख चौर-चौर के देखना (बोल०) खूब ध्यान लगाकर देखना, आँख फाड़-फाड़ कर देखना अथवा क्रोध से देखना ।

आँख चुराना (बोल०) ध्यान न देना, शर्म से आँख फेर लेना, किसी से आँख बचाना, सामने न जाना ।

आँख छिपाना (बोल०) किसी बुरे काम के करने से लजाना ।

आँख ठंढी करना (बोल०) मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना, प्रसन्न होना, जुड़ाना ।

आँख डबड़वाना (बोल०) आँखों में आँसू भर जाना ।

आँख दिखाना } (बोल०) धमकाना, धुक्कना,

आँख दिखलाना } धुक्की देने का भाव प्रकट करना ।

आँख पथराना (बोल०) चक्काचौंध होना, चौंधियाना ।

आँख फड़कना (बोल०) आँख फटकना, आँख फे पपोटों का हिलना (जब कि पुरुष की दाहनी और स्त्री की बाँई आँख फड़कती है, तो हिंदू लोग उसको अच्छा सगुन मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ अच्छा होनेवाला है। पर जब पुरुष की बाँई और स्त्री की दाहनी आँख फड़कती है, तब सोचते हैं कि कुछ बुरा होनेवाला है) ।

आँख फिरना (बोल०) पुतली फिर जाना; “मस्तेदम आँख को देखा है कि फिर जाती हैं।” व्यवहार में परिवर्तन होजाना, पहले जैसा न रहना ।

आँख फूटना (बोल०) अंधा होना ।

आँख फूटी पीर गई (बोल०) यह महावरा उस समय बोला जाता है जब कि दो आदमी किसी एक चीज़ के लिये झगड़ते हों और उस चीज़ के खो जाने पर उनका झगड़ा बंद हो जाय ।

आँख फेरना } (बोल०) मित्रों से मिताई तोड़ना, मित्रों

आँख मोड़ना } से वैर करना, किसी से संबंध त्यागना ।

आँख बांद कर लेना } (बोल०) दूसरे से मुँह मोड़ना,

आँख मूँदना } दूसरे की खबर न लेना, मरना, मृत्यु होजाना, “मूँदि गई आँखें तस लाखें ब्यहि काम की।”

आँख बचाना (बोल०) आँख चुराना, आँख सामने न कर सकना, शर्माना ।

आँख भरके देखना (बोल०) किसी अनोखी चीज़ को खूब देखना कि संतोष होजाय देखकर संतुष्ट हो जाना ।

आँख भर लाना (बोल०) आँखों में आँसू भर लाना, आँख डबड़वाना, रोनी सूरन बनाना ।

आँख मारना (बोल०) आँख मटकाना, सैन करना, इशारा करना, आनाकानी करना ।

आँख मिच जाना (बोल०) मरना, मर जाना ।

आँखमिचौवल } (आँख मिचौलना, मूँदना) (बोल०)

आँखमिचौली } एक खेल का नाम । ‘राधेजी मानो

आँखमुँदौरी } बुरो के भलो अंखमें दूनो संग तिहारे

अंखमें दूनो } न खेलि हैं’— कान्हर ।

आँख मिलाना (बोल०) मिताई करना, दोस्ती करना ।

आँख रखना (बोल०) प्यार करना, प्यार की बातें करना, आशा करना, देखना, ताकना, किसी स्त्री को बुरो दृष्टि से देखना, ज्योति का होना ।

आँख लगना } (बोल०) किसी के प्यार में फँसना, प्यार

आँख लगाना } करना, दोस्ती करना, स्नेह में पड़ना, नौद आना ।

आँख लड़ना (बोल०) अपने प्यारे से अचानक मिल जाना, अपने प्यारे के देखने से उसके प्रेम के वश होना, प्रथम दर्शन में मेमासक्त होना ।

आँख लड़ाना (बोल०) आँख मारना, सैन करना, इशारा करना, छिपी बात को इशारों से जतलाना, खबर होना, दिखाई करना ।

आँख लाल करना (बोल०) क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा करना ।

आँख सेंकना (बोल०) किसी के रूप को अथवा सुंदरता को देखना ।

आँख से गिरना (बोल०) हलका होना, तुच्छ हो जाना, बेक्रूर होना ।

आँखें नीली-पीली करना (बोल०) बहुत गुस्से से मुँह का रंग बदलना, गुस्सा लगना ।

आँखों पर बैठना (बोल०) प्यारा होना, जँचा बैठना, प्रतिष्ठित होना, आँखों में जगह पाना ।

आँखों में आना (बोल०) नशे में होना, मदिरा के नशे में मस्त होना ।

आँखों में घर करना (बोल०) प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

आँखों में चरबी छाना (बोल०) धन के मद से घमंड करके अपने पुराने मित्रों को न पहचानना, जान-बूझ के अंधा होना ।

आँखों में फिरना } (बोल०) सदा याद रहना, मन में

आँखों में बसना } सदा किसी का ध्यान बँधा रहना ।

आँखों में रात काटना } ( बोल० सब रात जागते  
आँखों में रात ले जाना } बिगाना ।

आँग ( सं० अंग ) ( पु० ) शरीर, देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

आँगन } ( सं० अंगन ) ( पु० ) चौक, अँगनाई,  
आँगना } सहन ।

आँगिरस ( पु० ) बृहस्पति ।

आँच ( ग्री० ) गरमी, आग का लूका, भभुका ।

आँचर } ( सं० अचर ) ( पु० ) अँचला, कपड़े का  
आँचल } किनारा, सी का वक्षःस्थल ।

आँजना ( सं० अजना ) ( कि० सं० ) अंजन डालना,  
मुरमा लगाना, काजल लगाना ।

आँट ( सं० आनट्ट, आ=चारों ओर से, नट्ट=शोधना ) ( ग्री० )  
गाँट, वैर, विरोध, डाह लाग ।

आँट-साँट ( ग्री० ) साझा, हिस्सेदारी ।

आँटी ( ग्री० ) गुठली ।

आँत ( सं० अत ) ( ग्री० ) अँतड़ी ।

आँत कुलकुलाना ( बोल० ) बड़ी भूख लगना ।

आँत का बल खुलना ( बोल० ) भोजन से तृप्त होना ।

आँत सूखना ( बोल० ) भूख से विकल होना ।

आँधी ( सं० अधकार ) ( ग्री० ) झकड़, तूफान, तेज हवा ।

आँव ( सं० आम, अम=सीमार होना ) ( ग्री० ) पेट में  
एक तरह का रोग, आमामशय, शूल ।

आँवरा ( पु० ) आँवला, धात्रीफल ।

आँवा ( पु० ) कुम्हार की भटो ।

आँस ( पु० ) सून, रेशा ।

आँसू ( सं० अश्रु, अश्रु=कलना ) ( पु० ) आँसू का पानी ।

आँसू भर लाना ( बोल० ) आँसू उबड़बनाना, रोनी  
सूरत बनाना ।

आक ( सं० अक ) ( पु० ) एक पेड़ का नाम, अकवन,  
मदार ।

आकंपन ( पु० ) धरधराहट, कोपना ।

आकर ( आ=चारों ओर से, कृ=बसलाना अर्थात् जहाँ धातु  
बिखरी रहती है ) ( ग्री० ) खान, स्थान, डेर, स्थान ।

आकणित ( वि० ) सुना गया, श्रुत ।

आकर्ण्य ( कि०वि० ) सुनकर ।

आकर्ष ( आ+कृप्=खींचना ) ( पु० ) खींचना, िंचना,  
बटोरना ।

आकर्षक ( आ+कृप्=खींचना ) ( पु० ) खूबक पत्थर,  
खींचनेवाली चीज़, ( पु० ) खींचनेवाला ।

आकर्षण ( आ+कृप्=खींचना ) ( पु० ) खिचाव,  
खींचने की शक्ति ।

आकर्षित ( आ+कृप्=खींचना ) ( वि० )  
खींचा गया ।

आकलन ( कि० सं० ) बटोरना, संपादन, आँच ।

आकला ( वि० ) उतावला, उच्छ्वस्व ।

आकलित ( वि० ) बढ, पकड़ा हुआ, कृत ।

आकली ( ग्री० ) व्याकुलता, बेचैनी ।

आकवाक ( पु० ) अकवक, अंडबंड बात ।

आकांक्षक ( आ+कृप्=खींचना, काल+अक, काल=चाहनेवाला )  
( वि० ) इच्छुक, वांछक, अभिलाषक, आकांक्षी ।

आकांक्षा ( आ+चारों ओर से, काल=चाहना ) ( ग्री० )  
चाह, चाहना, इच्छा, वांछा, अभिलाष, इवाहिश ।

आकार ( आ, कृ=करना ) ( पु० ) रूप, डील, स्वरूप,  
सूरत, मूरत, चिह्न, निशान, आ अक्षर ।

आकाल ( पु० ) अकाल, दुर्भिक्ष ।

आकाश ( आ+चारों ओर से, वाश=चमकना ) ( पु० )  
आस्मान, गगन, शून्य ।

आकाशगंगा ( ग्री० ) स्वर्गगंगा, नक्षत्र, पथ-विशेष ।

आकाशवाणी ( आक.श=आस्मान, वाणी=शब्द ) ( ग्री० )  
आकाश से जो बात सुनी जाय, वाणी जो आकाश  
से होनी है ।

आकाशवृत्ति ( आकाश=आस्मान, वृत्ति=जीविका ) ( ग्री० )  
जो आजोविका नियत न हो, अस्थिर जोविका,  
बेकयामरोज़ी ।

आकिंचन ( पु० ) दरिद्रता, प्रयास, यंत्र ।

आकीर्ण ( आ+चारों ओर से, कृ=बिखरना वा फैलना )  
( वि० ) परिपूर्ण, व्याप्त, भरा हुआ ।

आकुंचन ( आ+चारों ओर से, कुंच=सिमटना ) ( पु० )  
संकोचन, सिकुड़ना ।

आकुंचित ( वि० ) तिरछा, टेढ़ा, बाँका ।

आकुटित ( वि० ) लजित, अवाक् ।

आकुल ( आ+चारों ओर से, कुल्=दुखी होना ) ( वि० )  
घबराया हुआ, व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

आकुलित ( आ+कृप्=खींचना ) ( वि० ) दुःखित,  
क्रोशित, रंजोदा ।



आकृत (प०) अभिप्राय, मतलब ।  
 आकृति (स्त्री०) उत्साह, सदाचार ।  
 आकृति (आ, कृ=करना) (स्त्री०) रूप, स्वरूप, मूरत, मूर्त, ढाँचा ।  
 आक्रंद (प०) रोदन, भयंकर युद्ध ।  
 आक्रंदन (प०) रोना, चिल्लाना ।  
 आक्रमक (आ=सब ओर से, कम्+अक, कम्=जाना) (वि०) धरनेवाला, हमला करनेवाला ।  
 आक्रमण (आ=से, कम्+अन, कम्=जाना या हमला करना) (प०) व्यापन, धरना, हमला करना, मुहाम्मद कराना ।  
 आक्रम्य (आ=से, कम्+य) (क्रि० वि०) धरकर, हमला करके ।  
 आकृष्ट (आ=चारों ओर से, कृप्+त, कृप्=खींचना) (वि०) खींचा हुआ, आकर्षित ।  
 आक्रांत (आ=से, कम्+त) (वि०) धरा हुआ, धरा गया, हमला किया गया, आंत, थका हुआ ।  
 आक्रीड़ (आ=चारों ओर से, क्रीड=खेलना) (प०) राजा का उपवन, बादशाही बाग ।  
 आक्रीड़न (प०) मृगया, शिकार, आखेट ।  
 आक्रोश (आ=चारों ओर से, क्रुश=रोना) (प०) क्रोध, रोना, गुस्सा, गिरियावजारी ।  
 आक्रांत (वि०) खिन्न, आंत, थका हुआ ।  
 आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना) (प०) बुरी बात, निंदा, दुर्वचन, फेंकना, एक अर्थालंकार का नाम, व्यंग्य, ताना, नुक्ताचीनी ।  
 आखर (सं० अखर) (प०) अक्षर, वर्ण, हर्फ ।  
 “आखर जनु जुग जीव जतन के”—गो० तुलसीदास ।  
 आखंडल (प०) इंद्र, देवराज ।  
 आखत (प०) अक्षत, नेग विशेष जो नेगियों को दिया जाता है ।  
 आखता (वि०) बधिया किया हुआ, पुंस्वहीन ।  
 आखा (प०) चलनी, बोरा, गठिया ।  
 आखात (प०) झील, देवनिर्मित जलाशय ।  
 आखिर (वि०) अंतिम, पिछला ।  
 आखिरकार (वि०) अंत में ।

आखु (प०) मूषक, मूस, मूसा, चूहा, चोर ।  
 आखुभुक् (आखु=मूस, भुज्=भक्षण करना) (प०) बिलार, मार्जार, गुर्बा ।  
 आखेट (आ=धे, खिट्=डालना, सताना) (स्त्री०) शिकार, अहेर, मृगया ।  
 आख्य } (आ=सब प्रकार से, ख्या=कहना, प्रसिद्ध  
 आख्या } होना) (प०) नाम, संज्ञा, इस्म ।  
 आख्यात (आ=से, ख्य+त) (वि०) उक्त, मज़कूर, कहा हुआ ।  
 आख्यान (आ=धे, ख्या=प्रसिद्ध होना) (प०) बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास ।  
 आख्यायिका (स्त्री०) कहानी, कथा, रवायत, किसान, इतिहास, उपन्यास ।  
 आग (सं० अग्नि) (स्त्री०) आगी, अग्नि, अनल ।  
 आग उठाना (बोल०) बखेड़ा मचाना, क्रोधित करना, गुस्सा बढ़ाना, खिन्नलाना ।  
 आग करना (बोल०) बहुत ही बहुत गर्म करना, क्रोध अथवा डाह बढ़ाना ।  
 आग देना (बोल०) मुर्दा जलाना ।  
 आग पड़ना (बोल०) गुस्सा होना, खिसियाना, क्रोध करना, झड़कना ।  
 आग बरसना (बोल०) यह महावारा उस समय बोलता जाता है जब बहुत गर्मी पड़ती है, अथवा लड़ाई में तोप के गोले चलते हैं ।  
 आग बुझाना (बोल०) ठंडा करना,  
 आग में पानी डालना झगड़ा बंद करना, बखेड़ा मिटाना ।  
 आग-भखना } (बोल०) निकम्मी बातें करना, वृथा  
 आग फाँकना } बकवाद करना, डोंग मारना, शोषी करना, अपनी बड़ाई करना, घमंड करना ।  
 आग में लोटना (बोल०) सोच से दुःखी होना ।  
 आग लगना (बोल०) जलना, क्रोधित होना, खिसियाना, गुस्सा होना, बहुत भूख लगना ।  
 आग लगा के तमाशा देखना (बोल०) दूसरों को लड़ाकर स्वयं प्रसन्न होना ।  
 आग लगा के पानी ले दौड़ना (बोल०) जिस झगड़े को खुद छेड़ा हो उसके मिटाने का बहाना करना, छल करना, छलना, ठगना ।

आग लगाना ( बोल० ) जलाना, फूँकना, गुरसे में करना, क्रोधित करना, ताव पर चढ़ाना, लड़ना जैसे—“आग लगाय जमालो दूर खड़ी” ।

आग सुलगाना ( बोल० ) आग लगाना, बखेड़ा मचाना, छुपे-छुपे दंगा-बखेड़ा उठाना ।

आग होना ( बोल० ) गुस्सा होना, क्रोधित होना, खिसियाना ।

आगत ( आ=वाराँ और मे, गन्=जाना ) ( वि० ) आया हुआ, पहुँचा, उपस्थित, आयात ।

आगतंता { अत्रि आनेवाला, अजनबी, परदेशी,  
आगतुक { अतिथि, अपरिचित, मेहमान ।

आगम ( आ, गम्=जाना, और आ उपसर्ग के साथ आने में अर्थ हुआ आना ) ( पू० ) शास्त्र, तंत्रशास्त्र जिसमें मंत्रों का वर्णन है, और उसको महादेव ने बनाया है, संस्कृत में आगम का यह लक्षण लिखा है—  
“आगतं शिववचनेभ्यो, यत् च गिरिजाश्रुती ।  
मतं वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते ॥”

अर्थ—महादेव ने कहा, पार्वती ने मुना, विष्णु ने माना, इसलिये इसको आगम कहने हैं और यहाँ आ का अर्थ आया ( महादेव से ) ग का अर्थ गया ( पार्वती के पास ) और म का अर्थ माना ( विष्णु ने ) है, आना, भविष्यत, आनेवाला, आमदनी, वृद्ध प्रकांड विद्वान्-यथा, प्रतीप इत्याग-मवृद्धसेवी ( यथर्वेरा ) न्याय के ४ प्रकार के प्रमाणों में से अंतिम प्रमाण ।

आगमन ( आ, गम्=जाना ) ( पू० ) आना, आवाई ।

आगम बाँधना ( बोल० ) अगली बात को ठीक करना या अगली बात का विचार करना, आगे से जताना, आगम कहना, पेशबंदी करना ।

आगार ( पू० ) चतुर, जानकार, सयान, समूह, भंडार, कोष ।

आगलांत ( वि० ) गले तक, कंठ-पर्यंत ।

आगा ( सं० अग्र ) ( पू० ) अगवाड़ा, सामना ।

आगा-पीछा करना ( बोल० ) दुविधा में पड़ना, संदेह रखना, हिचकना, ठिठकना, फिक्कना ।

आगा ( पू० ) काबुली ।

आगामी ( आ+गम्+ई, गम्=जाना ) ( वि० ) आनेवाला, भावी, जो आगे आनेवाला हो ।

आगार ( आ, गम्=जानना ) ( पू० ) घर, स्थान, जगह, मकान, भंडार, कोष ।

आगाही ( स्त्री० ) जानकारी, चेतावनी ।

आगिल ( वि० ) अगला, आगेवाला, होनहार “आगिल बात समुक्ति डर मोहीं”—रामा०अयो०का० ।

आगुदफ ( आ=तक, गुल्फ=टलना ) ( वि० ) ठखने तक, टिहुना तक ।

आग ( कि० वि० ) आगे, सामने, अगाध ।

आगे ( सं० अग्र ) ( कि० वि० ) पहले, सामने, सम्मुख, इसके पीछे, बढ़के, तब, फिर, पश्चात्, अनंतर, गोदी में ।

आगे-आगे ( बोल० ) थोड़े दिनों बाद, भविष्य में चलकर ।

आगे करना ( बोल० ) अगुआ बनाना ।

आगे का कदम पीछे पड़ना ( बोल० ) घटती होना, फिसलना ।

आगे का कपड़ा खींचना ( बोल० ) घूँघट काड़ना ।

आगे दौड़ पीछे दौड़ ( बोल० ) आगे बढ़ते जाना, पीछे का भूलते जाना ।

आगे रखना ( बोल० ) अर्पण करना ।

आगे से ( बोल० ) आइँदा से ।

आग्नीध्र ( पू० ) यज्ञमंडप ।

आगे धर लेना ( बोल० ) आगे बढ़ना, आगे जाना, किसी को पीछे छोड़ना ।

आग्नेय ( पू० ) सोना, स्वर्ण, रक्त, कृत्तिका-नक्षत्र, अग्निपुत्र, कांतिक, ज्वालामुखी पहाड़, दीपन-ओषधि, ब्राह्मण, अग्निकोण, अग्निपुराण, एक दिशा ।

आग्रह ( आ=वाराँ और मे ग्रह=ग्रहण करना या लेना ) ( पू० ) पकड़ना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, धरना, हठ करना, कोशिश, ज़िद्द पकड़ना, मेहरबानी, मुरब्बीपन ।

आघात ( अ=से, हत्=मारना ) ( पू० ) चोट, खड़का, मारना, भिड़ना, मारने की जगह ।

आघातित ( आ=यब प्रकार से, यात्+इत, हत्=मारना ) ( वि० ) मारा हुआ, चोट खाया हुआ ।

आघार ( पू० ) धूप धूत, हरि, मंत्र-विशेष से किसी देव-विशेष को घृत देना ।

आघूर्णन ( आ=रे, घूर्ण=घूमना वा ताकना ) ( पू० ) देखना, घूरना, ताकना ।

आघूर्णित ( आ+घूर्ण+इत ) ( वि० ) देखा गया, घूरा गया, घूमता हुआ, घुमाया हुआ ।

आघोषण ( पू० ) मुनादी करना, घोषणा करना ।

आघ्राण ( आ=से, घ्रा=सूँघना ) ( पु० ) सूँघना, गंध लेना ।  
 आघ्रात ( आ+घ्रा+त ) ( वि० ) सूँघा हुआ, गंध-  
 लिया हुआ ।  
 आघ्रेय ( वि० ) सूँघने योग्य ।  
 आचका ( अच्य० ) अकस्मात्, अचानक ।  
 आचमन ( आ, चम्=लाना ) ( पु० ) खाने के पीछे  
 पानी से हाथ-मुँह साफ करना, संध्या करने के  
 समय चुरलू से तीन बार मुँह में पानी लेना ।  
 आचरज ( पु० ) अचंभा, आश्चर्य ।  
 आचरण ( आ, चर्=चलना ) ( पु० ) चालचलन,  
 व्यवहार, रीति-भौति, चलन ।  
 आचरित ( आ+चर्+इत ) ( वि० ) व्यवहृत, कृताचरण ।  
 आचर्य ( वि० ) कर्तव्य, आचरणीय ।  
 आचार ( आ, चर्=चलना ) ( पु० ) आचरण,  
 व्यवहार, रीति, चलन, पवित्रता, सफाई, शुद्धता ।  
 आचारी ( आचार ) ( वि० ) आचार रखनेवाला,  
 शास्त्र के अनुसार चलनेवाला ।  
 आचार्य ( आ, चर्=चलना ) ( पु० ) गुरु, पढ़ानेवाला,  
 शिक्षक, उपदेश करनेवाला, वेदशास्त्र पढ़ानेवाला,  
 एक प्रकार की परीक्षा और उपाधि ।  
 आचोट ( स्त्री० ) घाव, आघात, बिना जोती भूमि ।  
 आच्छुन्न ( वि० ) आच्छादित, रक्षित, छिपाव, ढका हुआ ।  
 आच्छा ( वि० ) अच्छा, उत्तम, अंगीकार ।  
 आच्छादक ( आ + छद् + अक ) ( पु० ) ढाँकनेवाला,  
 छिपानेवाला, मूँदनेवाला ।  
 आच्छादन ( आ=पे, छद्=ढकना ) ( पु० ) ढकने  
 का कपड़ा, चहर, ढकना ।  
 आच्छादित ( वि० ) आच्छिन्न, मूँदा हुआ, ढका हुआ,  
 आवृत ।  
 आच्छाद्य ( वि० ) ढकने योग्य ।  
 आच्छिन्न ( वि० ) छेदा हुआ, कटा हुआ, ( कि० स० )  
 छेदना, काटना ।  
 आछुत ( कि० वि० ) होते हुए, रहते हुए, उपस्थिति में,  
 अछुत, "मोहि अछुत यह होहि उछाहू ।"  
 आछुना ( कि० प्र० ) होना, रहना ।  
 आछी ( वि० ) बढ़िया, खली, उत्तम, अच्छी ।  
 आछे } ( सं० अछ, अच्छा ) ( वि० ) अच्छा ।

आत ( सं० अथ ) ( कि० वि० ) आज का दिन, वर्तमान दिन  
 आजकल ( बोध० ) इन दिनों, कुछ दिनों से ।  
 आजकल करना } ( बोध० ) टालना, हाँ-हाँ करना,  
 आजकल बताना } टरकाना ।  
 आजन ( पु० ) मुरमा, काजल, अंजन, आजन ।  
 आजन्म ( कि० वि० ) जीवन-भर, आजीवन ।  
 आजमाइश ( स्त्री० ) जाँच, परीक्षा, परख ।  
 आजमाना ( कि० स० ) परखना, जाँचना ।  
 आजमूदा ( वि० ) परीक्षित ।  
 आजला ( वि० ) अंजलि, पसर ।  
 आज्ञा ( सं० अर्थक ) ( पु० ) दादा, पितामह ।  
 आज्ञाद् ( वि० ) स्वतंत्र, स्वाधीन, मुक्त, निर्भय ।  
 आज्ञा ( वि० ) अचानक आना, आकाएक आना ।  
 आजानु ( वि० ) जानुपर्यंत, घुटने तक ।  
 आजानुबाहु ( वि० ) जिसकी बांहें घुटने तक लंबा  
 हों, आजानुबाहु होना एक शुभ लक्षण है ।  
 आजि ( पु० ) लड़ाई, समर-भूमि, गमन, आक्षेप ।  
 आजि ( स्त्री० ) दादी ।  
 आजीव ( आ + जीव=जीना ) ( पु० ) रोजगार, जीविका, पेशा ।  
 आजीविका ( आ=पे, जीव=जीना ) ( स्त्री० ) जीविका,  
 निर्वाह, जीने का उपाय, रोजी, रिजक ।  
 आजु ( कि० वि० ) आज ।  
 आजू ( स्त्री० ) बिना वेतन के काम करनेवाला, बेगार ।  
 आज्ञप्त ( वि० ) अनुमति प्राप्त ।  
 आज्ञप्ति ( स्त्री० ) आज्ञा, आदेश, निर्देश ।  
 आज्ञा ( आ=पे, ज्ञा=जानना ) ( स्त्री० ) हुक्म, आदेश,  
 आयु ।  
 आज्ञाकारी ( आज्ञा=हुक्म, वारी=पूरा करनेवाला, क=  
 करना ) ( वि० ) आज्ञा माननेवाला, हुक्म मानने  
 वाला, ( पु० ) सेवक, अधीन, ताबेदार, वशवद ।  
 आज्ञानुवर्ती ( आज्ञा=हुक्म, अनु=पीछे, वृत्=मानना )  
 ( वि० ) आज्ञाकारी, अधीन, वशीभूत ।  
 आज्ञापक ( आ=पब प्रकार से, ज्ञापक=हुक्म करनेवाला )  
 ( पु० ) आदेश करनेवाला, हुक्म करेवाला,  
 हाकिम ।  
 आज्ञापन ( आ=पे, ज्ञापन=जताना ) ( पु० ) विज्ञापन,  
 चिन्ताना, इत्तलाफ देना, हुक्म देना, बतावनी देना ।

आज्ञापत्र ( आज्ञा=हुक्म, पत्र=कागज ) ( पु० ) हुक्म-  
नामा, लिखी हुई आज्ञा क्रमान् ।  
आज्य ( अञ्ज + य, अञ्ज=लेप करना ) ( पु० )  
धन, घी, रोगानजर्द ।  
आंजनय ( पु० ) हनुमान, अंजनि-पुत्र ।  
आंटा ( स्त्री० ) पिप्पल, चूर्ण, चून् ।  
आंटा-दाल का भाव मालूम होना ( पहा० )  
दुनियावी बातों में परिचित होना, अनुभव होना,  
समझ में आ जाना ।  
आंटीप ( आ=चारों ओर से, तुप=ढकना, मारना ) ( पु० )  
घमंड, अभिमान, दर्प, अहंकार ।  
आठ ( स० अष्ट ) ( वि० अष्ट, एक गिनती का नाम ।  
आठ आठ आंस् रौना बाल बहुत रौना, फूट-  
फूटकर रौना ।  
आठ पहर ( स्त्री० ) रातदिन, हर घड़ी, आठ याम,  
सदा, नियमप्रति ।  
आड़ ( स्त्री० ) ओट, परदा, रोक ।  
आड़बंद ( पु० ) लेंगोटी ।  
आड़बग ( आ=चारों ओर से, डब + अरन्, डब=फेंकना )  
( पु० ) हर्ष, घमंड, गरूर, पाखंड, छत्र, मेघ,  
नकारा, तुरही का शब्द, खटला, उद्योग, बनावट,  
बनाव, आयोजन, मेघ का गरजना, संरंभ, लिबाम,  
मेघ ।  
आड़ा ( वि० ) निरुद्धा, टंडा, बाँका ।  
आड़ी ( वि० ) रक्त, मुहाक़िज, स्वर-विशेष ।  
आड़े आना ( बेल ) बचाना, बीच में पड़ना,  
बाधक होना ।  
आड़क ( पु० ) परिमाण-विशेष, चार सेर ।  
आड़की ( स्त्री० ) अरहर ।  
आड़ल ( स्त्री० ) अड़ा, माल का चालान, चालान करने  
का स्थान ।  
आड़लिया ( पु० ) व्यापारी, महाजन, दलाल ।  
आँण ( पु० ) सीमा, कोन, अस्ति, भान ।  
अ तंक ( आ=से, तकि=दब से जीना ) ( पु० ) डर, भय,  
छोफ, दुख, पीडा, रोग, संताप ।  
आतल ( वि० ) विस्तृत, आरोपित ।  
आतलायी ( वि० ) अग्नि जगाना, विष देना, शस्त्रपात  
करना, दूसरे का धन, स्त्री, भूमि अत्याय से ले लेना,  
इन ६ कर्म करनेवाले को आतलायी कहते हैं ।

आतप ( आ=चारों ओर से, तप्=तपाना ) ( पु० )  
धूप, घाम, सूर्य की गर्मी ।  
आतपत्र ( आतप=धूप, त्रै=बचाना ) ( पु० ) छतरी  
छाता, छत्र ।  
आतपन ( पु० ) शिव का नाम ।  
आतपोदक ( पु० ) मरीचिका, मृगतृष्णा ।  
आतर ( आ=से तृ=जाना, या तैरना ) ( पु० ) अंतर,  
बीच, बर्क, उतराई ।  
आतर्पण ( पु० ) प्रोक्षण, तृप्ति, मंगलालेपन ।  
आतशक ( स्त्री० ) रोग-विशेष, गर्मी, उपदंश ।  
आतशवाज़ी ( स्त्री० ) अग्नि-क्रीड़ा ।  
आता ( पु० ) सीताफल, शरीका ।  
आताईपन ( पु० ) धूर्तता, शठता, खलता ।  
आताथी ( वि० ) धूर्त, शठ, ( पु० ) चील्ह ।  
आतिथेय ( पु० ) अतिथि के निमित्त भोजनादि देने-  
वाला, अतिथि-सेवक, मेहमानिवाज़, मेज़बान ।  
आतिथ्य ( पु० ) अतिथि-सेवा, सम्मान, मेहमान-  
दारी, मेहमानिवाज़ी ।  
आतिथ्य ( पु० ) अधिकाई, अधिकता, बाहुल्य ।  
आतीपाती ( स्त्री० ) बच्चों का एक खेल-इसमें एक पक्ष-  
वाले दूसरे पक्ष में किसी वृक्ष को पत्ती माँगते हैं  
और वह उसे लाते हैं ।  
आतुर ( आ, तुर=तल्दी करना ) गु=धबराया हुआ,  
व्याकुल, बेचैन, दुःखी, रोगी, ( कि० वि० ) शीघ्र,  
फटपट, जल्दी ।  
आतू ( स्त्री० ) पंडिताइन, गुरुवाइन ।  
आतोद्य ( पु० ) वीणा, वाद्य, मुरज, वंशी का शब्द ।  
आत्त ( वि० ) प्राप्त, गृहीत, पकड़ लिया गया ।  
आत्तगर्व ( वि० ) भग्नदर्प, अहंकार-चूर्ण ।  
आत्म ( वि० ) अपना, निज, ( पु० ) जीव ।  
आत्मकलह ( पु० ) घर का झगड़ा ।  
आत्मकल्याण ( पु० ) अपनी भलाई, अपना हितसाधन ।  
आत्मकार्य ( पु० ) गुप्त कार्य, अपना काम ।  
आत्मगौरव ( पु० ) अपना बड़प्पन ।  
आत्मघात ( आत्मन्=अपने को, घात=नाश, मारना )  
( पु० ) आत्महत्या, अपने तर्ह मर जाना, खुदकुशी ।  
आत्मज ( आत्मन्=अपनी आत्मा से, जन्=पेदा होना )  
( पु० ) पुत्र, बेटा, संतान, कामदेव ।

आत्मजा ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, बेटा, बुद्धि ।  
 आत्मज्ञान ( पु० ) ब्रह्म-विषयक ज्ञान, अपना अनुभव ।  
 आत्मज्ञानी ( वि० ) ब्रह्मज्ञानी ।  
 आत्मत्याग ( पु० ) परोपकार में अपना त्याग ।  
 आत्मद्रोही ( वि० ) अपनी ही बुराई करनेवाला ।  
 आत्मयोनि ( पु० ) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव ।  
 आत्मसात् ( पु० ) स्वहस्तगत, अपने में लीन कर लेना ।  
 आत्महत्या ( आत्मन्=अपने को हन्=मारना ) ( स्त्री० )  
 आत्मघात, अपने तर्ह मर जाना ।  
 आत्मा ( आ, अत्=जाना ) ( स्त्री० ) जोव, प्राण, आप, मन, बुद्धि, ( पु० ) स्वभाव, यत्न, देह, पुत्र, अर्क, हुताशन, वायु ।  
 आत्मिक ( वि० ) प्यारा, अपना, मन का ।  
 आत्मोप ( वि० ) स्वीय, अंतरंग, स्वजन, आत्मजन ।  
 आत्मोत्कर्ष ( पु० ) अपनी प्रभुता, अपनी बढ़ाई ।  
 आत्मोत्सर्ग ( पु० ) आत्मत्याग ।  
 आत्मोद्धार ( पु० ) अपना उद्धार, मोक्ष ।  
 आत्मोद्भवा ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, आत्मजा ।  
 आत्मोन्नति ( स्त्री० ) अपनी बढ़ती, अपनी उन्नति ।  
 आत्यंतिक ( वि० ) अधिक, प्रचुर, अतिशय, विस्तार ।  
 आत्रेय ( वि० ) अत्रिमुनि का पुत्र, दुर्वापा, चंद्रमा, धातु-विशेष ।  
 आत्रेयी ( स्त्री० ) एक ऋषि-पत्नी, यह वेदांत में बड़ी निपुण थीं, एक नदी का नाम, रजस्वला स्त्री ।  
 आथर्वण ( पु० ) अथर्ववेदज्ञ ब्राह्मण, अथर्वऋषि का पुत्र, अथर्वगोत्रोपज्ञ पुरुष ।  
 आदत् ( स्त्री० ) देव, स्वभाव, बान, प्रकृति, अभ्यास ।  
 आदमित्य ( पु० ) सभ्यता, मनुष्यत्व ।  
 आदमी ( पु० ) आदम की औलाद, नर, मनुष्य, मानव, नौकर, पति ।  
 आदर ( आ+द=आदर करना ) ( पु० ) मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, ख्याति ।  
 आदरणीय ( आदर+णीय ) ( वि० ) सम्मान-योग्य, ख्याति के लायक ।  
 आदरभाव ( पु० ) सम्मान, प्रतिष्ठा, सत्कार ।  
 आदर्श ( पु० ) दर्पण, आहना, मूल-पुस्तक, टीका, चिह्न, नमूना ।  
 आदा ( पु० ) मूल-विशेष, अदरक, आदी ।

आदा ( आर्द्र या आर्द्रक ) ( पु० ) आर्द्रक, कच्ची और गीली सोंठ ।  
 आदान ( आ+दान, दा=देना ) ( पु० ) ग्रहण, लेना, स्वीकार, मंजूर ।  
 आदानप्रदान ( पु० ) देन-लेन ।  
 आदि ( आ=पहले, दा=देना, लिया जाना ) ( वि० ) पहला, प्रथम, आरंभ, मूल, और, इत्यादि, वगैरह ।  
 आदिश्रंत ( सं० आद्यंत, आदि=पहले, अंत=पीछे ) ( वि० ) पहले से पीछे तक, आरंभ से समाप्ति तक, अश्वत्थ से आखिर तक ।  
 आदिकवि ( आदि=पहला, कवि=कविता बनायेवाला ) ( पु० ) पहला कवि, ब्रह्मा, वात्सीकि ।  
 आदिकारण ( पु० ) मूल-कारण, प्रथम कारण, निदान ।  
 आदित्य ( अदिति=देवताओं का मा अर्थात् अदिति का बेटा ) ( पु० ) सूर्य, रवि, भानु, देवता, वामन, वसु, इंद्र, मदार का पेड़ ।  
 आदित्यवार ( आदित्य=सूर्य, वार=दिन ) ( पु० ) एतवार, रविवार ।  
 आदिपुरुष ( आदि=पहला, पुरुष ) ( पु० ) पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर ।  
 आदिम ( वि० ) पहला, सर्व प्रथम उत्पन्न ।  
 आदिष्ट ( आ+दिश+त, दिश=देना ) ( वि० ) आज्ञा, अनुमत, हुक्म दिया गया, आज्ञा पाया हुआ, महकूम, आदेशित ।  
 आदी ( स्त्री० ) अदरक ( वि० ) अभ्यस्त ।  
 आदृत ( आ+दृ+त ) ( वि० ) मान किया गया, इज्जत किया गया, स्वीकृत ।  
 आदेश ( आ+दिश=देना ) ( पु० ) आज्ञा, हुक्म, योगियों का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलना ।  
 आदेशी } आ+दिश+इत् ( आ+दिश+न् ) ( पु० )  
 आदेशी } आज्ञादायक, हाकिम ।  
 आदौ ( संस्कृ० ) प्रथम, आगे, आदि में, “आदौ रामतपो-वनादिगमनम् ।” गो०तु०दा० ।  
 आद्य ( वि० ) प्रथम, अगला, पहला, भोजनीय द्रव्य ।  
 आद्यांत ( कि० वि० ) आदि से अंत तक, आधीपान ।

आद्योपांत ( आद्य+उपांत ) ( वि० ) अवल से आ-  
गिर तक ।

आर्द्रा ( स्त्री० ) आर्द्रा, छटे नक्षत्र का नाम ।

आधा ( सं० अर्द्ध ) ( वि० ) अर्द्ध, दो बराबर हिस्सों में  
से एक, निष्क, नीम ।

आधान ( आ+धा=धान ) ( पु० ) गर्भधारण, गर्भ,  
गाम, हमल ।

आधा ( आ+धा=धान ) ( पु० ) आसरा, पालने-  
वाला, आहार, खाना, पात्र, अधिकरण ।

आधासीसी ( सं० अर्द्ध=आधा, शीर्ष=शिर ) ( स्त्री० )  
अधकपाली, आधे मिर में पीड़ा ।

आधि ( स्त्री० ) मन की पीड़ा, उदासी व्यसन, आधार ।

आधिक्य ( स्त्री० ) बहुतायत, अधिकई,  
आधिक्यता ( कसरत )

आधिदैविक ( वि० ) देवाधीन, बुद्धि-संबंधी ।

आधिपत्य ( पु० ) प्रधानता, अधिकार, स्वामित्व,  
वश, अतिथार ।

आधिर्भौतिक ( वि० ) जो भूतों या तत्त्वों के संबंध से  
उत्पन्न हो, व्याघ्र-सर्पादि जीवों-कृत ।

आधिदैविक ( वि० ) द्वितीय विवाह के लिये प्रथम  
श्री को दिया हुआ धन ।

आधीन ( सं० आधीन ) ( वि० ) आज्ञाकारी, वश,  
ताबेदार, अधीन ।

आधुनिक ( वि० ) सांप्रतिक, नवीन, नया, टटका,  
वर्तमान ।

आधूत ( वि० ) ईष्यकंपित, व्याकुल, कंपित, पागल ।

आधेय ( आ+धा=धान ) धरने योग्य, जो वस्तु धरी  
जाय, आधार पर रहनेवाला वस्तु ।

आधोरण ( पु० ) महावन, पीलवान ।

आध्यात ( वि० ) शक्ति, दम्भ, संयत, ( पु० ) युद्ध ।

आध्यात ( पु० ) वायु से पेट फूलना, अफरा ।

आध्यात्मिक ( वि० ) आत्मा संबंधी, मन-संबंधी ।

आध्यान ( पु० ) ध्यान, चिन्ता, स्मरण, दुर्भावना ।

आध्वनी ( पु० ) पथिक, पांथ, पाथेय, मार्गव्यय ।

आन ( सं० ) कान, मर्षादा, लाज, संकोच, यश, और,  
दूसरा, आज्ञा, प्रतिज्ञा, सौगंध ।

आनक ( अ+नी=लाना जो खुशी को लाता है ) ( पु० )  
नगारा, नक़ारा, दुःखुभी, गरजना हुआ बादल ।

आनङ्ग ( पु० ) नगाड़ा, कल्पमात्र, वेश रचना ( वि० )  
बद्ध, मिलित, जोड़ा हुआ ।

आनन ( आ=मे, अन्=जीना ) ( पु० ) मुँह, मुख, वदन,  
चेहरा ।

आनन-फानन ( कि० वि० ) क्रौरन्, अतिशीघ्र, तुरंत ।

आनन्द ( आ=चारों ओर से, नन्=प्रसन्न होना ) ( पु० )  
हर्ष, सुख-चैन, खुशी ।

आनन्दकानन ( पु० ) आनन्द देनेवाला वन, वारा-  
णसी, काशी ।

आनन्ददारी ( आनन्द+दारी, द=देना ) ( पु० )  
आनन्ददाना, खुशी देनेवाला ।

आनन्दपट ( पु० ) नवविवाहिता का वस्त्र ।

आनन्दपूर्वक ( अन्न्द=पूर्व, पूर्वक=गहित ) ( वि० )  
हर्ष-सहित, खुशी के साथ ।

आनन्दप्रभव ( पु० ) रेत, वीर्य, शुक्र ।

आनन्दभैरव ( पु० ) रस-विशेष जो ज्वर में दिया  
जाता है ।

आनन्दित ( आ+नन्द+इत् ) ( वि० ) प्रसन्न, हर्षित,  
खुश, बरशाम ।

आनन्दी ( आ+नन्द+इन् ) ( वि० ) आनन्दयुक्त,  
प्रसन्न ।

आनना ( सं० आनयन, आ+नी=लाना ) ( कि० सं० )  
लाना ।

आनयन ( स्त्री० ) सजावट, ठसक, बनावट ।

आनयन ( पु० ) ले आना, लाना ( कि० वि० ) नेत्रपर्यंत ।

आनरेवल् ( वि० ) प्रतिष्ठित, इज्जतदार, माननीय ।

आनर्त ( पु० ) द्वारकापुरी, नृत्यशाला, नाचघर, जल,  
युद्ध, आनर्त-देश का रहनेवाला ।

आनर्तित ( वि० ) नाचना हुआ, कपित, कांपता हुआ ।

आनवी ( कि० सं० ) ले आओ, लाइयो, ले आइए,  
यह प्रांत-विशेष के बोलचाल का शब्द है ।

आनहु ( कि० सं० ) लाओ, ले आओ, उपस्थित करो ।

आना ( सं० आगमन ) ( कि० अ० ) पहुंचना, आना,  
( पु० ) रूपण का मोलहवाँ भाग, चार पैसा ।

आनाकानी ( स्त्री० ) टालमटोल, हिचकिचाहट ।

आनाजाना ( कि० अ० ) आवागमन, यातायात ।

आनाङ्गी ( वि० ) अनभिज्ञ, अनाङ्गी, अकर्मण्य, निर्बोधि  
नाङ्गी-पर्यंत ।

आनिहो ( कि० स० ) लाऊंगा ।

आनिहो ( आनना, लाना ) ( कि० प्र० ) लाऊंगा, ले आऊंगा ।

आनीन ( वि० ) ले आना ।

आनुकूल्य ( पु० ) अनुकूलता, सहायता ।

आनुपूर्व ( स्त्री० ) क्रमागत, क्रमिक, पयोय ।

आनुमानिक ( वि० ) अंदाज़न ।

आनुश्राविक ( वि० ) जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों ।

आनुसंगिक ( वि० ) प्रसंगाधीन, साथ-साथ होनेवाला, प्रासंगिक ।

आनुशंख्य ( पु० ) दया, स्नेह, अनिष्टरता ।

आनेता ( आ+नी+तृ, नी=लाना ) ( पु० ) लानेवाला ।

आंतरिक ( वि० ) मानसिक, अंतःकरण-संबंधी, मनोगत ।

आँदू ( पु० ) हाथो बाँधने की जंजीर ।

आंदोलन ( आंदोल+अन, दोल्=केंद्रीना ) ( पु० ) चलन, खिसकाना, हिलाना, हरकत देना, ध्यान, भूलना, भूला, अनुसंधान ।

आप ( सर्वना० ) अपने आप, स्व, अपना, खुद, बड़े आदमी को 'तुम' की जगह 'आप' कहते हैं, आदर सूचक शब्द ।

आप ( आप=कैलाना ) ( पु० ) पानी ।

आपकाजी ( आप=अपना, कार्य=काम ) ( वि० ) स्वार्थी, आपमनजबी ।

आपक ( वि० ) थोड़ा पका हुआ, चतुर्दिक् से पका हुआ ।

आपगा ( स्त्री० ) नदी ।

आपण ( आ+पण=वाणिज्य ) ( पु० ) दूकान, हाट, हाट-बाज़ार ।

आपणिक ( आ+पण+इक ) ( पु० ) वणिक, बनिया, दूकानदार ।

आपत्काल ( पु० ) कुसमय, विपत्ति, दुर्दिन ।

आपडजनक ( वि० ) विपदजनक, अनिष्टकारी ।

आपत्ति } ( आ, पट्=जाना ) ( स्त्री० ) विपत्ति, वि-  
आपद् } पत, अभाग, बला, बुरे दिन, दुख ।  
आपद्दा }

आपन ( सर्व० ) आपुनि, अपना, निज ।

आपनिक ( पु० ) पक्षा, नीलमणि, मरकत, इंद्र ।

आपन्न ( आ, पट्=जाना ) ( वि० ) अभागा, विपत में कैसा हुआ, दुःखी, पाया हुआ. शरण में आया हुआ, शरणागत ।

आपमित्यक ( पु० ) बदले में मिला हुआ द्रव्य ।

आपरूप ( वि० ) आप, ईश्वर, साक्षात् भद्रा, अपने अथवा स्वरूप जैसा, बेढंगा, बेडौल ।

आपस ( आप ) ( सर्वना० ) एक दूसरे को, परस्पर, भाई बंदी ।

आपसा ( स्त्री० ) आप-समान, आप-जैसा ।

आपा ( स्त्री० ) बड़ी बहन, आप ही, अपनी सत्ता, सुधबुध अहंभाव । "वानो ऐसो बोलिए मन का आपा खोय" —कबीरदास

आपा खोना ( पु० ) अर्थकार त्यागना ।

आपा डालना ( पु० ) घमंड छोड़ना ।

आपा तजना ( पु० ) अपने को मिटाना ।

आपा बिसरना ( पु० ) सुध-बुध भूलना ।

आपा मिटना ( पु० ) घमंड दूर होना ।

आपा सँभालना ( पु० ) चेतना ।

आपे में आना ( पु० ) होश में आना ।

आपे में न रहना ( पु० ) बेकाबू होना ।

आपे से बाहर होना ( पु० ) वश में न रहना, क्रुद्ध होना ।

आपाक ( अ=चारों ओर से, पाठ=पठ=पकाना ) ( पु० ) आँवा, पञ्जावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने की जगह, कुम्हार का आवाँ ।

आपानतः ( अथ० ) इस समय, अधुना, संप्रति ।

आपाद्-पर्यंत ( अथ० ) पैर से सिर तक ।

आपाधारी ( स्त्री० ) अपनी तुमझों अपना राग, अपने ही काम का ध्यान, अपनी-अपनी धुन, लागडाट, खींचतानी ।

आपान ( आ+पान, पा=पीना ) ( पु० ) मद्यपान-स्थान, शराब की दूकान, मद्यप, मतवालों का मुँड ।

आपामर साधारण ( पु० ) सर्वसाधारण ।

आपिंजर ( पु० ) सोना, सुवर्ण, हेम, कांचन ।

आपीड़ ( पु० ) सिर पर पहनने का भूषण, पगड़ी, बेनी, सिरपेंच, मूकुट, कलंगी ।

आपीन ( पु० ) गाय का धन, स्थूल, कठिन, कड़ा, मोटा, बड़ा ।

आपु ( सर्व० ) अपना ।

आपुस ( सर्व० ) परस्पर, आपस में ।

आपूर्ति ( स्त्री० ) सम्पत्क पूरण ।

आपृच्छा ( स्त्री० ) जिज्ञासा, प्रश्न, आभाषण ।

आपोशान ( पु० ) कर्म-विशेष, भोजन के पूर्व का आचमन

आम ( वि० ) विश्वस्त, सच्चा, सत्य, अत्रांत, किसी भी कारण से कभी भूट न बोलनेवाला, ऋषि, देव ।  
आमकाम ( वि० ) जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो गई हों, पूर्णकाम ।

आमकारी ( पु० ) विश्वासो, विश्वसनीय व्यक्ति ।

आमगर्व ( वि० ) दाम्भिक, पाखंडी, गर्वी ।

आमग्राही ( वि० ) लोभी, स्वार्थी ।

आमवर्ग ( पु० ) स्वप्न, आत्मीय, बंधु-बंधव ।

आमसाग ( पु० ) आमरक्षण, स्वशरीर गोपन ।

आमोक्ति ( स्त्री० ) विश्वस्त पुरुष का कथन, सिद्धांत वाक्य, आमवचन ।

आप्यायित ( वि० ) तुप्त, संतुष्ट, आनंदित, बढ़ा हुआ, तर, आर्द्र, दूसरे रूप में बदला हुआ ।

आप्रच्छन्न ( पु० ) आने या जाने के समय मित्रों में परस्पर कुशलप्रश्न-जनित आनंद ।

आप्लव ( पु० ) स्नान, नहान, जलमय, अवगाहन ।

आप्लुत ( पि० ) कृतस्नान, भीगा ।

आफ्रत ( स्त्री० ) आपत्ति, बला, कष्ट ।

आफ्रिस ( पु० ) कार्यशाला, कचहरी, दफ्तर ।

आफू ( सं० ) अन्नहीन, पेन=भाग, स्फायी=फूलना ( पु० ) अफीम, अमल ।

आच ( स्त्री० ) चमक, कान्ति, महिमा, उत्कर्ष, गुण, छवि, प्रतिष्ठा, पानी ।

आच आच करना ( मुहा० ) पानी माँगना "आच आचकर मर गण मिरहाने रखे पानी ।"

आचकारी ( स्त्री० ) कलारी, भट्ठी, मद्यालय, सरकारी महकमा, जिसका संबंध मादक वस्तुओं से हो ।

आचखोरा ( पु० ) कटोरा, प्याला, गिलास ।

आचजोश ( पु० ) गरम पानी में उबाला हुआ मुनका ।

आचताच ( स्त्री० ) प्रभा, छवि, कान्ति, शोभा ।

आचदस्त ( पु० ) सींचना, पानी छुना ।

आचदाना ( पु० ) जीविका, दानापानी, अन्नजल ।

आचदाना उठना ( मुहा० ) जीविका न रहना ।

आचदार ( वि० ) चमकीला, भड़कीला, छुतिमान् ।

आच्यस ( पु० ) एक प्रकार का पेड़, इसको लकड़ी बहुत ही काली होती है ।

आचपाशी ( स्त्री० ) सिंचाई ।

आचरू ( स्त्री० ) मान, प्रतिष्ठा इज्जत, मर्यादा ।

आचरू में बट्टा लगना ( मुहा० ) बदनामी होना ।

आचहवा ( स्त्री० ) जलवायु ।

आचादी ( स्त्री० ) बस्ती, जनस्थान ।

आच ( पु० ) पहाड़-विशेष ।

आचिदक ( वि० ) वार्षिक, सालाना ।

आभ ( स्त्री० ) आशा, शोभा, छुति, रौनक ।

आभरण ( आ=चारों ओर से भू=धारण करना या पानना )

( पु० ) गहना, भूषण, अलंकार, जेवर, आभरण

१२—हैं १ नूपुर २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुँदरी

५ कंकन ६ बाजूबंद ७ हार ८ कंठश्री ९ बेसर

१० चिरिआ ११ टीका १२ शीशफूल ।

आभा ( आ=चारों ओर से, भा=चमकना, रेशनी ) ( स्त्री० ) चमक, शोभा, भड़क ।

आभार ( पु० ) बोक, गृहस्थी का भार, उपकार, निहोरा, कृतज्ञता ।

आभारी ( वि० ) उपकृत, उपकार माननेवाला ।

आभाष ( आ=चारों ओर से भाष=गहना ) ( पु० ) भूमिका, मुखबंध, तमहीद, पेशबंदी, प्राक्थन ।

आभाषण ( आभ+प्र+थन ) ( पु० ) कथन, कहना, बोलना, वार्तालाप ।

आभास ( आ=से, भास=चमकना ) ( पु० ) प्रकाश, रोशन होना, अभिप्राय, समा जाना, छलक, छाया, पता ।

आभास्वर ( पु० ) गण-देवता, चौसठ संख्या ।

आभिचारक ( पु० ) हिंसाकर्म का प्रयोग करनेवाला ।

आभिजात्य ( पु० ) कुलीनता, कुल-संबंधी, सादश्य, पांडित्य ।

आभिधानिक ( वि० ) कोश में कथित ।

आभिमुख्य ( पु० ) आमना-सामना, अभिमुख करना, सामना ।

आभिज्ञ ( आभि+ज्ञ=जानना ) ( पु० ) ज्ञाता, जानुका, आगाह, वाकिफ ।

आभीर ( पु० ) अहीर, गोप, ग्वाल ।

आभूषण ( आ=चारों ओर से भूष=शोभना ) ( पु० ) गहना, आभरण, अलंकार ।

आभ्यन्तर ( वि० ) भीतरी, अंदरूनी ।

आम ( सं० आम्र ) ( पु० ) एक फल का नाम ।

आम ( अम=बीमार होना ) ( पु० ) एक प्रकार का रोग, पेट का रोग, अपच, अजीर्ण, कच्चा ।



आम के आम गुठली के दाम (पु०) दुहरा लाभ उठाना ।

बारी में बारह आम सट्टी में अठारह आम (पु०) जहाँ कोई वस्तु मँहँगी मिलनी चाहिए, वहाँ उसका सस्ता मिलना ।

आमगंध चिता के धुएँ, मछली, कच्चे मांस आदि की गंध ।

आमचूरा (पु०) आम का सूखा चूर्ण, आम की खटाई ।

आमड़ा (पु०) एक खट्टा फल-विशेष ।

आमद (ख०) आमदनी, आय ।

आमनाय (पु०) आमनाय, अभ्यास, परंपरा ।

आमना-सामना (पु०) भेंट, मुलाकात, मुठभेड़ ।

आमने-सामने (क्रि० वि०) मुकाबिले पर ।

आमंत्रण (पु०) न्योता, संबोधन, बुलौवा, पुकार, निमंत्रण ।

आमंत्रित (वि०) निमंत्रित ।

आमय (आमरोग या जाना अथवा अम्=बीमार होना) (पु०) रोग, बीमारो, पोड़ा ।

आमयावी (वि०) रोगो, पोदित ।

आमरक्त (पु०) लाल मल निकलने की पीड़ा, अति-सार, उदर-रोग ।

आमरण (क्रि० वि०) मरण-पर्यंत ।

आमर्श (पु०) परामर्श, सलाह, विचार ।

आमर्ष (अ=नहीं मृप्=सहना) (पु०) आमर्ष, क्रोध, गुस्सा, कोप, डाह ।

आमला } (सं० आमलक, आ=चारों ओर से, मल=  
आँवला } धारण करना, पकड़ना) (पु०) एक पेड़  
और उसके फल का नाम, आँवरा ।

आमवात (पु०) पित्त से उत्पन्न चर्म-रोग ।

आमशूल (पु०) वायुगोला, वायुशूल, अजोर्ण होने के कारण उदर की पीड़ा-विशेष ।

आमात्य (पु०) प्रधान मंत्री, वज़ीर ।

आमान्न (पु०) सीधा, कोरा अन्न, कच्चा अन्न ।

आमाशय (आम=आँव आशय=जगह) (पु०) पेट में एक थैलो-सी होती है । जो खाना खाते हैं पहले उसमें पहुँचता है, ओकरी, पचौनी, अतिसार, आमरोग ।

आमाहल्दी (खी०) हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा ।

आमिष (अम्=खाना) (पु०) मांस, । “आनहु आमिष मनुज प्रिय, खाहुँ होय जिय चैन ।” रामा० खाने को चीज़, भोजन, संभोग, घूस, रिश्वत, लोभ-रूप, संचय ।

आमिषाशी (आमिष+अश=भोजन करना, खाना) (पु०) मांसभक्षी, मांसाहारी ।

आमूल (पु०) कारण, जड़ तक, मूल-पर्यंत ।

आमृष्ट (वि०) मर्दित, अपमानित, उच्छेदित ।

आमोद (आ, मुद्=प्रसन्न होना) (पु०) सुगंध, सुवास, आनंद, हर्ष, खुशबू, खुशी ।

आमोद-प्रमोद (पु०) आनंद-मंगल, हँसो-खुशी ।

आमोदित (आमोद+इत) (वि०पु०) हर्षित, खुश, प्रसन्न ।

आमोदी (आमोद+ई) (वि०) हर्षयुक्त, खुश होनेवाला, प्रसन्न रहनेवाला ।

आम्राय (पु०) प्राचीन परिपाटी, वेद, उपदेश, अभ्यास ।

आंधर (खी०) बनावटो मूँगा, कहलवा ।

आम्र (अम्=जाना, खाना) (पु०) आम, आम का फल या पेड़ ।

आम्राई (सं० आम्राजि, आम्र=अम, राजि=पाँत) (खी०) आम का बाग, अमराई ।

आम्रेडन (पु०) एक ही बात को बार-बार कहना, पुनरुक्ति ।

आय (आ+इ=फैलना) (पु०) लाभ, धनागम, आम-दनी, क्रायदा, उपाजन ।

आयत (आ, यम्=रोकना, पर आ के साथ आने से इसका अर्थ फैलना हो जाता है) (वि०) लंबा-चौड़ा, फैला हुआ (पु०) ऐसा स्वेत जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ बराबर हों, और सब कोने भी समकोण हों; इंजील या कुरान का वाक्य ।

आयतन (आ, यम्=जतना करना अथवा रखना) (वि० पु०) घर, जगह, स्थान, यज्ञ-स्थान, देवस्थान ।

आयति (खी०) उत्तरकाल, भविष्यकाल ।

आयत्ति (खी०) अधीनता, परवशता ।

आयंदा (वि०) आगामी, भावी, आगंतुक ।

आयसु (सं० आदेश) (खी०) आज्ञा, हुक्म ।

आयात (आ, यात, या=जाना) (वि०) आगत, आया हुआ, पहुँचा हुआ, उपस्थित ।

आयाम (पु०) लंबाई, विस्तार, नियमन ।

आयास (आ, यम्=मिहनत करना) (खी०) मिहनत, परिश्रम, यत्न, क्लेश, प्रयास ।

आयु (इण=जाना) ( स्त्री० ) उमर, आयुर्दा, जीवन-काल, वय, जीवनमसय ।

आयु खुटाना ( मुहा० ) आयु कम होना ।

आयु क्षीण होना ( मुहा० ) आयु घटना, आयु कम होना ।

आयु मिराना ( मुहा० ) आयु का अंत होना ।

आयुध ( आ=वे, युध=लड़ना ) ( पुं० ) शस्त्र, हथियार ।

आयुधगार ( पुं० ) अस्त्रगृह, शस्त्रागार ।

आयुधिक ( वि० ) अस्त्रधारी, अस्त्रजीवी ।

आयुध्रीय ( वि० ) अस्त्रधारी, शस्त्रजीवी, शस्त्र-संबंधी ।

आयुर्दाय ( पुं० ) फलित ज्योतिष, ग्रहों के स्थानानुसार आयु का निर्णय ।

आयुर्वल ( पुं० ) उम्र, आयुष्य, वय ।

आयुर्वेद ( पुं० ) चिकित्साशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अष्टा-  
दश विद्यान्तर्गत धन्वन्तरि-प्रणीत विद्या-विशेष,  
अथर्ववेद का उपांग ।

आयुर्वेदी ( वि० ) वैद्य, चिकित्सक ।

आयुष्कर ( वि० ) आयु बढ़ानेवाला, आयुवर्द्धक ।

आयुष्काम ( वि० ) दीर्घजीवी, आयुप्रार्थी ।

आयुष्टम ( पुं० ) यज्ञ-विशेष, आयुवृद्धिकर यज्ञ ।

आयुष्मान् ( वि० ) दीर्घायु, चिरजीवी, ज्योतिष के  
सत्ताईस योगों में से एक योग ।

आयुष्य ( वि० ) आयु का हितकारक, आयुवर्द्धक,  
( पुं० ) आयु, उम्र ।

आयुगव ( पुं० ) बड़ई, शूद्र के औरस से वैश्या के गर्भ  
से उत्पन्न जाति-विशेष ।

आयोजन ( पुं० ) तैयारी, उद्योग, नियुक्ति ।

आयोधन ( पुं० ) युद्ध, रण, संग्राम ।

आर ( पुं० ) कांटा, पैना, डंक, आंकुश, मंगल, शनि-  
श्चर, लोहार, चमार, ताँबा, रीति ।

आरण्य ( अरण्य=जंगल ) ( वि० ) जंगली, वन का,  
बनैला ।

आरचा ( स्त्री० ) प्रतिमा, मूर्ति, अर्चा, पूजा ।

आरज ( सं० भाषा ) ( वि० ) बड़ा श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज,  
( पुं० ) समुर ।

आरजा ( पुं० ) बीमारी, रोग ।

आरत ( सं० आर्त आ, ऋ=जाना ) ( वि० ) दुःखी,  
घबराया हुआ, पीड़ित, व्याकुल ।

आरता ( पुं० ) दूल्हे को आरती, विवाह को एक रीति-  
विशेष ।

आरति ( सं० आर्ति, आ, ऋ=जाना ) ( स्त्री० ) दुःख,  
पीड़ा, रोग, कष्ट, दीपदान, देवताओं का दिया ।

आरती ( स्त्री० ) ( सं० आराति, आ=तहीं राति=रात,  
अर्थात् जो दिन में भी दिखाई जाती है ) पूजा में देवता  
के सामने दीपक दिखाना, दीपदर्शन, रीति ।

आरन ( पुं० ) वन, कानन ।

आरपार ( पुं० ) इस किनारे से उस किनारे तक ।

आरब्ध ( वि० ) उपकृत, आरंभित, शुरू किया गया ।

आरभटी ( स्त्री० ) क्रोधादि उग्र भावों को चेष्टा, एक  
नाटकीय वृत्ति-विशेष ।

आरंभ ( आरंभि=शुरू करना ) ( पुं० ) शुरू, आरंभ,  
उपक्रम ।

आरपी ( वि० ) आर्प, ऋषि-संबंधी ।

आरसी ( स्त्री० ) शीशा, दर्पण, आइना, स्त्रियों के  
हाथ के अँगूठे में पहनने का एक गहना, जिसमें  
शीशा जड़ा रहता है ।

आरा ( स्त्री० ) ककच, करान, छदनी, सूजा, लकड़ी  
चोरने का औजार ।

आराकश ( पुं० ) लकड़ी चोरनेवाला ।

आराजी ( स्त्री० ) खेत, जमीन ।

आरात् ( अश्य० ) पास, समीप ।

आराति ( आ=चारों ओर से, रा=देना दस्त को ) ( पुं० )  
बैरी, शत्रु, दुश्मन ।

आराधन ( आ, राध=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( पुं० )

आराधना करनेवाला, सेवक, भक्त, आबिद ।

आराधन ( पुं० ) { ( आ, राध=पूरा करना ) पूजा,

आराधना ( स्त्री० ) { सेवा, इबादत, उपासना ।

आराधित ( वि० ) पूजित, उपासित ।

आराध्य ( वि० ) पूजनीय, उपास्य ।

आराम ( आ=वारों ओर स रम्=खुशी करना ) ( पुं० )

बाग, बारीचा, फुलवाड़ी, उपवन, सुख, चैन,  
विश्राम, चंगापन ।

आरि ( स्त्री० ) हठ, टेक, ज़िद ।

आरिया ( स्त्री० ) एक प्रकार की ककड़ी, जो बीमासे में  
उत्पन्न होती है ।

आरी ( स्त्री० ) लकड़ी चोरने का एक औज़ार, चमड़ा सीने का तैकुआ ।

आरुंधना ( कि० स० ) बंद करना, दम रोकना, गला दबाना, साँस रोकना ।

आरुढ़ ( आ, रुढ़=चढ़ना ) ( वि० ) चढ़ा हुआ, सवार, स्थित ।

आरोगना ( कि० स० ) खाना, भोजन करना ।

आरोग्यता ( आरोग=निरोग ) ( पु० ) नीरोगता, आराम, तंदुरुस्ती, सकुशल ।

आरोप } ( प्रा० रुह=उगना, चढ़ना ) ( पु० )  
आरोपन } जमाना, स्थापित करना, क्रायम करना, रोपना, लगाना, मढ़ना ।

आरोपित ( आ, रुह=उगना, चढ़ना ) ( वि० ) साँपा हुआ, रक्खा हुआ, रोपा हुआ, बोया हुआ, बदला हुआ, मढ़ा हुआ, लगाया हुआ ।

आरोहण ( पु० ) चढ़ाव, सीढ़ी, चढ़ना, अंकुर निकलना, सवार होना ।

आरोही ( वि० ) सवार, उन्नतिशाली ।

आर्जव ( पु० ) नम्रता, सरलता, सुगमता ।

आर्त्त ( वि० ) दुःखित, पीड़ित, व्यथित ।

आर्त्तनाद ( पु० ) चीरकार, कातर स्वर ।

आर्त्तव ( पु० ) खो का रज, मासिकधर्म, ( वि० ) मौसमी, सामयिक ।

आर्त्तस्वर ( पु० ) आर्त्तनाद, दुःखसूचक शब्द ।

आर्थिक ( वि० ) अर्थ-संबंधी, धन-संबंधी ।

आर्द्र ( अर्द्र=जाना ) ( वि० ) गीला, भीगा, ओढ़ा, तर, सीला ।

आर्द्रालुब्धक ( पु० ) केतु ।

आर्द्रावीर ( पु० ) वाममार्गी ।

आर्द्राशनि ( स्त्री० ) बिजली, एक अस्त्र ।

आर्य ( ऋ=ज्ञाना ) ( वि० ) बड़ा, श्रेष्ठ, कुलीन, अच्छे घराने का, पूज्य, पूजनीय, महाराज, ( पु० ) हिंदू ।

आर्यपुत्र ( पु० ) स्वामी, पति, भर्ता, गुरुपुत्र ।

आर्यसमाज ( पु० ) एक धार्मिक संप्रदाय ।

आर्या ( स्त्री० ) पार्वती, सास, दादी, आजी, काव्य में एक प्रकार का छंद ।

आर्यावर्त्त ( आर्य=हिंदू या उत्तम कृष्ण के मनुष्य, आर्य=ढंका हुआ, वृत्=होना ) ( पु० ) हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती, जो पूर्व-समुद्र से पश्चिम-

समुद्र तक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है । मनु ने इसी को आर्यावर्त्त लिखा है । जैसे

“आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।

हिमनद्विन्ध्ययोर्मध्ये आर्यावर्त्त प्रचक्षते ॥ १ ॥

आर्यावर्त्तः पुरयभूमिर्मध्ये विन्ध्यहिमालयोः ।”

आर्य ( वि० ) ऋषि-प्रणीत, ऋषि-संबंधी, वैदिक, ऋषि-सेवित ।

आर्य-प्रयोग ( पु० ) व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्द का प्रयोग ।

आर्य-विवाह ( पु० ) आठ प्रकार के विवाहों में से एक; इस विवाह में वर-पक्ष से कन्या का पिता एक जोड़ी या दो जोड़ी गऊ लेकर कन्या दे देता है ।

आल ( पु० ) पीतवर्ण, हरिद्रावर्ण, हरताल, वृक्ष-विशेष ।

आलकस ( पु० ) आलस्य, सुस्ती ।

आलन ( पु० ) पाक-विशेष, अल्लूना, जवण-रहित, घास-पात जिसे गोबर में मिलाकर उपरी पायते हैं ।

आलना ( पु० ) घोंसला, खोता ।

आलबाल ( पु० ) कियारी, धाखा, थाँवला, गमला, जलाधार ।

आलम ( पु० ) संसार, जन-समूह; इस नाम का हिंदी का एक अच्छा कवि ।

आलमारी ( स्त्री० ) अलमारी ।

आलंब ( आ=से, लांब=ठहरना ) ( पु० ) आसरा, सहारा, अवलंब, आश्रय, उपजीव्य ।

आलंबन ( पु० ) साधन, कारण, अवलंबन, अंगार आदि रसों का विभाग-विशेष ।

आलय ( आ=चारों ओर से, ला=लेना, मिलना ) ( पु० ) घर, स्थान, जगह, मकान, आगार ।

आलवाल ( आ=चारों ओर से, ला=लेना ) ( पु० ) धाखा, घेरा, पेड़ की जड़ के आसपास का घेरा ।

आलस्य ( अलस, अ=नहीं लस=शोमना, खेलना ) ( पु० ) आलस, सुस्ती, आसक्त, ठीक-ठाक ।

आलसी ( वि० ) सुस्त, काहिल ।

आला ( सं० आलय ) ( पु० ) दोपक रखने के लिये भीत या खंभे में छोटा-सा खोद, दीए का ताक, ताक, ताजा, सर्वोत्तम ।

आलान (आ=मे, ला वा ली=लेना) (पु०) हाथी के बाँधने का खूँटा अथवा रस्सा, बेड़ी, जंजीर आदि।  
 आलाप (आ, लप्=बोलना) (पु०) बातचीत, बोल-चाल, कथन, बोलना, स्वर का मिलान, तान।  
 आलापना (कि० स०) गाना, तान छेड़ना, तान लड़ाना।  
 आलापनीय (आलाप् + अर्नाय) (वि०) भाषण योग्य, कहने लायक।  
 आलापिनी (स्त्री०) वंशी, बाँसुरी।  
 आलापी (वि०) गानेवाला, तान छेड़नेवाला।  
 आलानु (स्त्री०) लौकां, लौआ, कढ़ू।  
 आलाय-बलाय (पु०) अगुभ, आपद-विपद, रोग-दोख, अलाय-बलाय।  
 आलारासी (वि०) लापरवा, बेक्रि।  
 आलि (स्त्री०) सखी, सहेली, साथिनो, गुह्या, बाँध, सेतु, पुल, रेखा, पंक्ति, भ्रमरी, बिच्छू।  
 आलिखित (वि०) अंकित, चित्रित, लिखित, खचित।  
 आलिंगन (आ=चारों ओर में, लिगि=छाती से लगाना, मिलना) (पु०) प्यार से मिलना, गले लगाना, प्यार से छाती से छाती लगाकर मिलना।  
 आलिंजर (पु०) मटका, नाँद।  
 आलिम (वि०) विद्वान्।  
 आली (सं० आलि, अल=शोभना) (स्त्री०) सखी, सहेली, सहचारिणी, पंक्ति, लकीर।  
 आलीढ़ (आ, लिढ़=स्वाद लेना) (पु०) चारा, (वि०) मुरक, स्वाद जिया हुआ, चाटा हुआ।  
 आलीनक (वि०) ऐसा कोमल, जो आग देखते ही पिघल जाय।  
 आलीशान (वि०) भव्य, विशाल, ऊँचा, शानदार।  
 आलीह (पु०) वाण छोड़ने के समय का आसन-विशेष, बायाँ पैर पीछे की ओर और दाहना पैर सामने रखकर बैठना, भस्मित, भुक्त।  
 आलुलायित (वि०) बंधन-रहित, जो बंधा हुआ न हो।  
 आलू (पु०) कंद-विशेष।  
 आलूचा (पु०) एक फलदार पहाड़ी वृक्ष, जर्दालू।  
 आलूबुखारा (पु०) एक प्रकार का फल, यह रोगी को स्वाद बढ़ाने के लिये दिया जाता है।  
 आलेख्य (आ, लिखू=लिखना) (पु०) लिखा हुआ, तस्वीर, चित्र

आलेप (पु०) मलहम, लेप।  
 आलोक (आ, लोक=देखना) (पु०) दर्शन, दृष्टि, देखना, चमक, ज्योति, बड़ाई, यश, बलानना, विरद, भरोसा, रोशनदान, प्रकाश, तेज  
 आलापन (उ० / पु० / वि०)  
 आलोचना (आ, लोच्=देखना) (स्त्री०) विचारना, विवेचना, गण-दोष विचारना।  
 आलोच्य, धातु, (अच्०) विचारकर, (वि०) आलोचनीय, विचारणीय।  
 आलोड़न (आ, लुड़=मथना या घोटना) (पु०) मथना, तलाश करना, अन्वेषण, हिलोरना।  
 आलोल (वि०) चंचल, अति चंचल।  
 आल्हा (पु०) ३१ मात्रा का एक छंद, एक कवि का नाम, एक पुस्तक का नाम, महोबे के एक वीर पुरुष; यह पृथ्वीराज का समसामयिक था।  
 आल्हा गाना (बो०) अपना हाल सुनाना, किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।  
 आव (कि० अ०) आता है, आवे, (पु०) आयु, उम्र।  
 आवइ (कि०) आवनि, आवे, आतो है।  
 आवक (पु०) बीमा, भोंकी सहना, उत्तरदायित्व।  
 आवदार (वि०) स्वच्छ, चमकीला, रौनकदार, कांतियुक्त तेजपूर्ण, आवदार।  
 आवना (कि०) पहुँचना आना।  
 आवनी (स्त्री०) आना, आगमन।  
 आवनेहारा (वि०) अवैया, आवेवाला।  
 आवनो (कि० अ०) आना “अति खान मृणाल के तारहुँ तैं तेहि ऊपर पाँव दै आवनोहैं”—बोधकवि।  
 आवभक्ति } (हि० अना, सं० भक्ति=सेवा) (स्त्री०)  
 आवभगत } आदर-मान, सत्कार, सेवा-सुश्रूषा।  
 आवभगति }  
 आवभाव (स्त्री०) आदर, मान।  
 आवरण (आ=मे, वृ=ढकना) (पु०) ढाल, ढकना, ढकने की कोई चीज़, परदा, आच्छादन।  
 आवर्जन (आ, वृज=ढेकना) मना करना, रोकना।  
 आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत्=होना, घूमना) (पु०) भँवर, चक्र, फेर, घुमाव, बारबार आना। “भय भ्रम भँवर अवर्त अपारा”—गो० तु० दा०।  
 आवर्दा } (सं० आयुर्दाय, इण्=जाना) (स्त्री०) उमर, आव } अवस्था, ज़िन्दगी।

आवलि ( आ=वारों और से, बल=घेरना, ढकना ) ( स्त्री० )  
पाँत, पंक्ति, श्रेणो, अवली ।

आवश्यक ( अवश्य ) ( वि० ) जरूरी, करणीय, प्रयोजनीय ।

आवश्यकता ( स्त्री० ) जरूरत, प्रयोजन, दरकार, ज़ामी ।

आवस्थ ( पु० ) घर, मकान, भवन, गृह, गेह ।

आवह ( पु० ) सात वायुओं में से एक वायु, भू-वायु ।

आवहमान ( वि० ) क्रमशः, क्रमागत, पूर्वापर ।

आवाँ ( पु० ) गर्म लाल लोहा पीटने के लिये दूसरे  
लुहार का बुल्लावा, कुम्हार का आवाँ ।

आवाई ( पु० ) चर्चा, समाचार ।

आवागमन } ( पु० ) जन्म-मरण, आना-जाना,  
आवागमन } आमदरफ्त ।

आवाज़ ( पु० ) शब्द, ध्वनि ।

आवाज़ा ( पु० ) धरंग, ताना ।

आवाजाही ( स्त्री० ) आना-जाना ।

आवारगी ( स्त्री० ) लुचापन, गुंडापन, निरुद्देश्य  
जीवन-यापन ।

आवारा ( वि० ) बदमाश, लुच्चा, अनियंत्रित ।

आवास ( पु० ) घर, मकान ।

आवाहन ( आ, वह=प्रे जाना, पास लाना ) ( पु० )  
बुल्लाना, पूजा अथवा होम के समय देवता को मंत्रों  
से बुल्लाना ।

आविर्भाव ( पु० ) प्रकट होना, ज़ाहिर होना, उत्पत्ति,  
प्रकाश ।

आविर्भूत ( आविर्=प्रकट, भू=होना ) ( वि० ) प्रकट,  
ज़ाहिर, प्रत्यक्ष, उत्पन्न ।

आविष्कार } ( पु० ) प्रकट होना, ( वि० ) निकाला  
आविष्कृत } हुआ, प्रकटित, प्रकाशित, खोज करना,  
ढूँढ़ निकालना ।

आविष्ट ( आ, विश=प्रवेश करना ) ( वि० ) बैठा हुआ,  
घुसा हुआ, आवेशयुक्त, लोन, किसी धुन में लग जाना ।

आवृत ( आ, वृत्=रोना, ढकना ) ( वि० ) आच्छादित,  
वैष्टित, ढका हुआ, घिरा हुआ ।

आवृत्ति ( आ, वृत्=घाँटना-पाँटना ) ( पु० ) अभ्यास,  
बार-बार कहना, उधरना, लौट-पाँट ।

आवेग ( पु० ) जोश, उमंग ।

आवेदक ( वि० ) निवेदन करनेवाला, निवेदक, प्रार्थी,  
याचक ।

आवेदन ( आ, विद्=ज्ञान या समझ ) ( पु० ) निवेदन,  
गुज़ारिश ।

आवेद्य ( वि० ) निवेदन करने योग्य ।

आवेद्य-संग्रह ( पु० ) वाजिबुल् फ़र्ज़, वह पत्र जिसमें  
जमींदार अपने स्वत्व अर्थात् हक़ूक़ सरकार में  
दाखिल करते हैं ।

आवेश ( आ, विश=धुमना ) ( पु० ) प्रवेश, घुसना, घमंड,  
क्रोध, जोश, दौरा, वेग, संचार, भौंका, आतुरता,  
भूतादिवाधा, मृगीरोग, ( वि० ) पकड़ा हुआ, प्रस्त ।

आवेशन ( पु० ) प्रवेश, शिल्पशाला ।

आंश ( स्त्री० ) सूत, रेशा ।

आंशिक ( पु० ) तेजस्वी, प्रतापी, हिस्सेदार ।

आशक्त } ( आ=पे, सज्ज=भिलना ) ( वि० ) लगा  
आसक्त } हुआ, मोहित, लोन, आशिक, मुग्ध ।

आशंकनीय ( वि० ) शंका के योग्य, विचारणीय,  
भय-स्थान ।

आशंका ( आ=से, शक्ति=संदेह करना ) ( स्त्री० ) डर,  
भय, संदेह ।

आशंकित ( वि० ) शंकित, भयभीत, विचलित ।

आशंसा ( आ, शम्=सराहना, पर आ उपसर्ग के साथ आने  
से इसका अर्थ चाहना होता है ) ( स्त्री० ) इच्छा, चाह,  
चाहना, अभिलाषा, अनुमान, संशय ।

आशंसित ( वि० ) इच्छित, वांछित, अभिलषित ।

आशय ( आ, शि=सोना ) ( पु० ) मतलब, अभिप्राय,  
तात्पर्य, स्थान, जगह, शरण ।

आशा ( आ=चरों और, अम्=मिलना ) ( स्त्री० ) आस,  
भरोसा, आसरा, उम्मेद, दिशा, ओर, तरफ़ ।

आशा टूटना ( मुदा० ) आशा भंग होना ।

आशातीत ( अशा+अतीत ) ( वि० ) आशा से अधिक,  
उम्मेद से ज़्यादा, वासना से परे ।

आशा तोड़ना ( मुदा० ) निराश करना ।

आशा देना ( मुदा० ) उम्मेद बँधाना ।

आशा बाँधना, ( मुदा० ) आशा करना ।

आशाभंग ( पु० ) निराश, आशा टूटना ।

आशिक ( वि० ) प्रेमी, आसक्त, मोहित ।

आशिष् ( आ, शास्=भिलान, पर आ उपसर्ग के साथ आने  
से इसका अर्थ चाहना होता है ) ( पु० ) आशीर्वाद,  
आसीस, वर, दुआ ।

आशीर्वचन } ( आशिम्=प्रसाम्, वचन या बात कहना )  
आशीर्वाद } ( पु० ) असीस, आशीष, दुआ, मंगल-  
कामना ।

आशीविष ( पु० ) अहि, भुजंग, साँप ।

आशु ( अशु=कैलना ) ( कि० वि० ) शीघ्र, जल्द, तुरंत,  
ऊटपट, वर्षाकाल में उत्पन्न होनेवाला धान ।

आशुकवि ( पु० ) शीघ्र कविता बनानेवाला ।

आशुग ( वि० ) शीघ्रगामी, शीघ्र चलनेवाला ।

आशुतोष ( आशु=तुरंत, तोष=प्रसन्न होनेवाला, तृप्=प्रसन्न  
होना ) ( पु० ) महादेव, शिव, शीघ्र प्रसन्न  
होनेवाला ।

आश्चर्य ( आ, चर=चलना ) ( पु० ) अचंभा, अचरज,  
विस्मय, ( वि० ) अनोखा, अद्भुत, अलौकिक,  
विचित्र ।

आश्रम ( आ, श्रम्=तप करना ) ( पु० ) ऋषियों के  
रहने की जगह, मठ, धर्म के अनुसार अवस्था के चार  
भेद १ ब्रह्मचर्य, २ गृहस्थ, ३ वानप्रस्थ, ४ संन्यास. कलि-  
युग में केवल गृहस्थ और संन्यास ये दो ही आश्रम हैं,  
जैसे "गृहस्थी भित्तुर्कश्चैव, आश्रमी द्वौ कश्चौ युगे ।"

आश्रमी ( वि० ) आश्रमवासी, आश्रम-विषयक ।

आश्रय ( आ=चारों ओर से, श्रि=शेवा करना ) ( पु० )  
आसरा, शरण, अवलंब, घर, जगह, पास,  
समीपता ।

आश्रयण ( पु० ) आश्रय, शरण, अवस्थान ।

आश्रयणीय ( वि० ) आश्रय के योग्य, सहारा योग्य,  
अवलंब योग्य ।

आश्रयभूत ( आश्रय+भूत ) ( वि० ) आसरेगीर ।

आश्रय-स्थान ( आश्रय+स्थान, स्था=ठहरना ) ( पु० )  
सहारे की जगह, उम्मेदगह, शरण ।

आश्रित ( आ, श्रि=शेवा करना ) ( वि० ) शरणा-  
गत, अधीन, ताबेदार ।

आश्रित स्वत्वाधिकारी ( पु० ) हकदार, मानहत ।

आश्लिष्ट ( वि० ) सटा हुआ, चिपटा हुआ, लिपटा  
हुआ ।

आश्लेष ( आ, श्लिप्=मिश्रित ) ( पु० ) आक्षिप्त,  
जुड़ना, मिलना, लगाव, लिपटाव ।

आश्वस्त ( वि० ) आशा पाया हुआ, सहारा-प्राप्त,  
भरोसा पाया हुआ ।

आश्वासन } ( आ, श्वासन, श्वस्=प्रमथाना ) ( पु० )  
आश्वास } प्रबोध करना, भरोसा देना, शिक्षा करना,  
सांत्वना, ढाँढस ।

आश्वास्य ( अव्य० ) समझकार ।

आश्वासित ( वि० ) ढाँढस पाया हुआ ।

आश्विन ( अश्विनी एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में  
पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है, और पूर्णिमा के  
दिन अश्विनी नक्षत्र होता है ) ( पु० ) कुँआर,  
आसोज, हिंदू-वर्ष के एक महीने का नाम, महीना ।

आपर ( सं० अत्तर ) ( पु० ) हर्क, चिह्न, आखर ।

आपाढ़ ( आषाढ़ एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा  
चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णिमा के दिन  
आषाढ़ नक्षत्र होता है ) ( पु० ) हिंदू-वर्ष के एक  
महीने का नाम, असाढ़ ।

आपाढ़ी ( पु० ) आपाढ़-मास की पूर्णिमा ।

आस } ( सं० आशा ) ( स्त्री० ) आसा, भरोसा, आसरा,  
आसा } दिशा, द्वारपालों के लिबे एक प्रकार का चिह्न ।  
आसकत ( स्त्री० ) आसक्त, सुस्ती ।

आसक्त ( वि० ) अनुरक्त, मोहित, लिस, मग्न, लीन ।

आसक्ति ( स्त्री० ) लगन, चाह, प्रेम, अनुरक्ति ।

आसंग ( पु० ) संग, मोहवत, संसर्ग, अनुराग ।

आसत्तीम ( स्त्री० ) बाँही, कुरते आदि का वह भाग  
जो बाँह को ढाँपता है ।

आसत्तीन का साँप ( बो० ) मिलकर धोखा देनेवाला ।

आसत्ति ( स्त्री० ) मिलन, संग, प्राप्ति, समीपता ।

आसन ( आम्=बैठना ) ( पु० ) शाय या ऊन की  
बनी हुई चीज़, जिस पर हिंदू लोग संध्या-पूजन  
करने के समय बैठते हैं, बैठना, योगियों के बैठने का  
ढंग, जैसे पद्मासनादि, योग का एक अंग, जाँच के भीतर  
की ओर, सेना का बैरियों के सामने अड़े रहना, काम  
शास्त्रांतर्गत भिन्न-भिन्न रूपों से वासना-नृत्ति के प्रयोग ।

आसन उखड़ना ( मुहा० ) जगह से हिल जाना ।

आसन डिंगाना ( मुहा० ) जगह से विचलित करना ।

आसन डोलना ( मुहा० ) चित्त बुझ होना ।

आसन तले आना ( मुहा० ) वशीभूत होना, अधीन  
होना, ताबे होना ।

आसनपाटी ( मुहा० ) खाट, खटोखा ।

आसन मारना ( मुहा० ) जमकर बैठना ।

आसन से आसन जोड़ना ( मुहा० ) दूसरे आदमी  
के बहुत पास बैठना ।

आसन होना ( पु० ) रतिप्रसंग के लिये उद्यत होना ।

आसनी ( स्त्री० ) छोटा बिछौना, छोटा आसन ।

आसन्न ( आ, सद्=बैठना ) ( कि० वि० ) पास, नगीच, समीप, निकट ।

आसन्नकाल ( पु० ) मृत्यु-समय, मरने का वक्त ।

आसन्नभूत ( पु० ) भूतकाल जो वर्तमान से मिला हुआ हो ।

आसपास ( कि० वि० ) चारों ओर, इधर-उधर, अगल-बगल ।

आसमान ( पु० ) आकाश, गगन, स्वर्ग ।

आसमान के तारे तोड़ना ( मुहा० ) कठिन कार्य करना ।

आसमान ताकना ( मुहा० ) घमंड से सिर ऊपर उठाना ।

आसमान पर उड़ना ( मुहा० ) इतराना, घमंड करना ।

आसमान पर चढ़ना ( मुहा० ) बहुत प्रशंसा करना ।

आसमान फट पड़ना ( मुहा० ) अचानक विपत्ति आ पड़ना ।

आसमान में छेद हो जाना ( मुहा० ) अत्यंत वर्षा होना ।

आसमान व ज़मीन के कुलावे मिलाना ( मुहा० ) असंभव कार्य करने की चेष्टा करना ।

आसमान सिर पर उठाना ( मुहा० ) ऊधम मचाना, उपद्रव मचाना ।

आसमानी ( वि० ) आकाशीय, आसमान के रंग का, फीका नीला रंग, आकाश-विषयक ।

आसरा ( पु० ) सहारा, भरोसा, आशा, आश्रय ।

आसव ( आ, सू=पैदा होना, मदिरा बनाना ) ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, दारु, शराब, मद, प्राण ।

आसा ( स्त्री० ) देखो, आशा ।

आसादन ( पु० ) प्राप्ति, मिलन ।

आसादित ( पु० ) मिलित, प्राप्त, भक्षित ।

आसान ( वि० ) सीधा, सुगम, सहज, सरल ।

आसानी ( स्त्री० ) सरलता, सुभीता ।

आसाम ( पु० ) भारतवर्ष में उत्तर-पूर्व बंगाल का एक भाग, इसका प्राचीन नाम कामरूप है ।

आसामी ( वि० ) आसाम-देश का रहनेवाला, आसाम-देश-संबंधी, ( पु० ) देखो, आसामी ।

आसावरी ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

आसावसन ( पु० ) नंगा, लुब्धाहीन, बेतमन्न ।

आसिख ( सं० आशिष् ) ( स्त्री० ) असीस, आशीर्वाद, दुआ ।

आसिख ( वि० ) अवरुद्ध, बंदी ।

आसिधार ( पु० ) युवा-युवती का अविकृत मन से एक स्थान में निवास-व्रत ।

आसिन ( सं० आश्विन ) ( पु० ) कुबौर का महीना, आश्विन, आसोज ।

आसीन ( आसू=बैठना ) ( वि० ) बैठा हुआ, स्थित, स्थापित ।

आसीस ( पु० ) तकिया, उसीस ।

आसुर ( पु० ) असुर-संबंधी, विवाह-विशेष ।

आसुरी ( स्त्री० ) राक्षसी, असुर-संबंधी ।

आसुरी चिकित्सा ( स्त्री० ) अस्त्र-चिकित्सा, चीर-फाड़, जरीही ।

आसृद्गी ( स्त्री० ) नृत्ति, तुष्टि ।

आसृदा ( वि० ) नृत्त, संतुष्ट, भरापूरा ।

आसेचनक ( वि० ) जिसको देखने की जी चाहता रहे, प्रियदर्शन ।

आसोज ( पु० ) आश्विन-मास, कुबौर ।

आसीं ( कि० वि० ) इस वर्ष, इस साल ।

आस्कृत ( स्त्री० ) आक्षेप, शिथिलता, ढीलापन ।

आस्कृती ( वि० ) आलसी, शिथिल ।

आस्कृदित ( वि० ) घोड़ों की गति-विशेष, घोड़ों की पंचम गति, तिरस्कृत, अनारत ।

आस्तर ( पु० ) हाथी की झूल, उत्तम, आसन, शय्या ।

आस्तिक ( अस्त=होना ) ( पु० ) जो खोग ईश्वर और परलोक को मानते हैं, ईश्वरवादी, परमेश्वर में विश्वास रखनेवाला, विश्वासी ।

आस्तीक ( पु० ) एक मुनि का नाम । विशेष के लिये भा० च० देखिए ।

आस्तीन ( स्त्री० ) अंगा, कुरते या कोट की बाँह ।

आस्तीन में सर्प पालना ( मुहा० ) शत्रु को पास रखकर पोषण करना ।

आस्था ( स्त्री० ) श्रद्धा, भक्ति, आदर, सभा, बैठक ।

आस्थान ( पु० ) बैठक, बैठने की जगह, सभा, समाज ।

आस्पद ( पु० ) पद, स्थान, उपाधि, ओहदा, जीना, मंत्रि, वंश, पात्र ।

आस्फालन ( पु० ) घमंड, दर्प, अहंकार ।

आस्फालित ( वि० ) गर्वित, कंपित ।

आस्फोटन ( पु० ) प्रकाश, विकास, ताक ठोकना ।

आस्माकीन ( वि० ) हमारे पक्ष का, हमारी तरफ का ।  
 आस्य ( अय=रुक्ता, जिसमें खाना फेंका जाता है ) ( पु० )  
 मुँह, मुख ।  
 आस्वाद ( आ, स्वाद=स्वाद लेना ) ( पु० ) रस, स्वाद,  
 चाट, आस्वादन ।  
 आस्वादक ( आ, स्वाद+अक ) ( पु० ) स्वादग्राहक,  
 स्वाद लेनेवाला, ज्ञायका लेनेवाला ।  
 आस्वादु ( वि० ) स्वादिष्ट, स्वादयुक्त, मुरस ।  
 आह ( अय० ) रत्नानि, शोक, कष्ट, पीड़ा, दुःख, दर्द  
 आदि सूचक अव्यय, ( स्त्री० ) कराहना, दुःख  
 की साँस लेना, ( पु० ) वक्र, साहस ।  
 आहट ( पु० ) खटका, शब्द, आवाज, पैरों का शब्द,  
 टोह, पता, निशान ।  
 आहत ( वि० ) घायल, ज़ख्मी, जीर्ण, पुराना,  
 कंपित ।  
 आहर ( पु० ) समय, दिन, युद्ध, संग्राम, एक  
 छोटा तालाब या नाला ।  
 आहर-जाहर ( बोत्त० ) आना-जाना ।  
 आहरण ( पु० ) लेना, छीनना, हरना ।  
 आहर्तव्य ( वि० ) ग्रहणीय, ले आने लायक ।  
 आहर्ता ( वि० ) छोड़नेवाला, हरनेवाला ।  
 आहव ( पु० ) यज्ञ, लड़ाई, समर, संग्राम, युद्ध ।  
 आहवनीय ( स्त्री० ) कर्मकांड का अग्नि-विशेष ।  
 आहा ( य० ) विस्मय और हर्ष-सूचक अव्यय ।  
 आहार ( आ, ह=लेना, आ उपरग के साथ आने से  
 इसका अर्थ जाना होता है ) ( पु० ) खाना, भोजन,  
 भक्षण ।  
 आहारक ( पु० ) संग्राहक ।  
 आहार-निहार ( पु० ) खानपान, रहन-सहन, शारीरिक  
 परिचर्या ।  
 आहार-व्यवहार ( पु० ) भोजन और सामारिक व्यवहार

विशेषतः लेन-देन । जैसे आहारे व्यवहारे लज्जा न  
 करे—आहार-व्यवहार में लज्जा न करे ।  
 आहारी ( वि० ) भक्षक, भोजन करनेवाला ।  
 आहार्य ( वि० ) भोजनीय, बनावटो, कल्पित,  
 नायक-नायिका के आपस में एक दूसरे का वेश  
 धरना, गृहीत ।  
 आहि ( सं० अस्ति, रुधु=होना ) ( कि० अ० ) है ।  
 आहित ( वि० ) अर्पित, स्थापित, गिरवी, बंधकी,  
 धरोहर ।  
 आहिताग्नि ( पु० ) अग्निहोत्री ।  
 आहिस्ता ( कि० वि० ) धीरे-धीरे ।  
 आहुक ( पु० ) यादव-वंश का एक राजा, श्रीकृष्ण  
 के मातामह, अभिजित का पुत्र, काश्या का पति ।  
 आहुत ( पु० ) अतिथि-सत्कार, भूतयज्ञ, नृयज्ञ,  
 बलि-वैश्यदेव ।  
 आहुति ( आ, हु=होम करना ) ( स्त्री० ) मंत्र से  
 देवताओं के लिये होम की सामग्री को आग में  
 होमना, होमने की सामग्री ।  
 आहुत ( वि० ) बुलाया हुआ, निमंत्रित, न्योता  
 हुआ ।  
 आहुत ( वि० ) लिया हुआ, छीना हुआ, हरा हुआ ।  
 आहु ( कि० अ० ) है ।  
 आहो ( अय० ) प्रश्न, विकल्प, संदेह ।  
 आह्निक ( अहन्=दिन ) ( पु० ) दैनिक काम—स्नान,  
 संध्या, तर्पण आदि, हर एक दिन का, दिन-  
 संबंधी, रोज़मर्रा ।  
 आह्लाद ( आ, ह्लाद=रसल होना ) ( पु० ) आनंद, हर्ष,  
 हल्लास, मुशी, प्रसन्नता ।  
 आह्लादजनक ( वि० ) हर्ष-वर्द्धक, आनंददायक ।  
 आह्लादित ( वि० ) हर्षित, प्रसन्न ।  
 आह्लाद्य ( पु० ) नाम, संज्ञा ।  
 आह्लान ( आ, ह्ले=बुलाना ) आवाहन, बुलाना ।

इ

इ ( पु० ) कामदेव का नाम, विस्मय, गजानन, निन्दा,  
 संबोधन, वेद, ( वि० बो० ) आह, आश्चर्य, दया,  
 संताप, व्याकुलता, सोच ।

इक ( सं० एक ) ( वि० ) एक ।

इकअंग एक ओर का शरीर, आधा अंग, अर्द्धांग, एक  
 ओर, एक तरफ़ ।



इकआँक ( कि० वि० ) निश्चय, स्थिर ।

इकईस ( वि० ) संख्या-विशेष, बीस और एक, २१ ।

इकलुतराज ( सं० एकलुत्र राज्य ) ( पु० ) चक्रवर्ती राज्य, सारे संसार का राज्य, साम्राज्य ।

इकजोर ( कि० वि० ) एकत्रित, एकत्र, एक साथ जोड़ा हुआ ।

इकटक ( इक=एक, टकना या तकना, देखना ) ( कि० वि० ) एकताक, टकटको ।

इकट्टा } ( सं० एकत्र या एक स्थान में ) ( वि०  
इकटौर } संग्रह, संघय, एक जगह ।  
इकटौरा }

इकतर ( वि० ) एकत्र, एकत्रित । जैसे—दे कोरहू मैं पेरी, करो है इकतर घाना ।—गिरधर ।

इकतरा ( पु० ) एक दिन का नागा करके आनेवाला ज्वर ।

इकताई ( स्त्री० ) एकता, अभेद ।

इकतारा ( पु० ) एक प्रकार का सितारानुमा बाजा ।

इकपेचा ( पु० ) पगड़ी-विशेष ।

इकदाम ( पु० ) इनाम, पुरस्कार ।

इकरार ( पु० ) प्रतिज्ञा, ठहराव, निश्चय ।

इकलाई ( स्त्री० ) एक पाट का चादर ।

इकलौता ( सं० एक ) ( वि० ) एक ही, केवल, दुलारा लड़का, पितामाता का एक ही पुत्र ।

इकसार ( सं० एकसार, एक, सृजना ) ( वि० ) बराबर, सारीखा, सरीखा, समान, सदृश ।

इकसंग ( सं० एक संग ) ( वि० ) एक साथ ।

इकौज ( स्त्री० ) एक बार प्रसव के पश्चात् जो स्त्री बंध्या हो जाय, काकबंध्या ।

इकौसी ( वि० ) एकांतवास ।

इक्का ( सं० एक ) ( वि० ) अकेला, अनृत्ता, अनृप, उत्तम, ( पु० ) एक घोड़े की हलकी गाड़ी; इक्का, बगधी और पालकी-गाड़ी आदि सवारियों से बहुत ही हलके दर्जे की सवारी है, पटने में इस सवारी का बहुत चलन है, ताश के खेल का एक पत्ता ।

इक्का-दुक्का ( वि० ) अकेला-दुकेला, एक या दो, सहाय-रहित, अकेला, कभी-कभी ।

इक्कानन ( वि० ) इक्कानन, एक और पचास, ५१ ।

इक्कासी ( वि० ) इक्कासी, एक और अस्सी, ८१ ।

इक्की ( स्त्री० ) ताश का एक बूटोवाला पत्ता, एक बैल की गाड़ी ।

इल्लु ( इल्लु=वाहना ) ( स्त्री० ) ऊख, ईख, केतारी, गन्ना ।

इल्लुकांड ( पु० ) ईख का पौदा, कास, मूँज, तृण-विशेष ।

इल्लुप्रमेह ( पु० ) मूत्र-संबंधी रोग-विशेष ।

इल्लुमती ( स्त्री० ) कुरुक्षेत्र के पास बहनेवाली एक नदी ।

इल्लुरस ( इल्लु=ऊख, रस ) ( पु० ) ऊख का रस, राब ।

इल्लुसा ( पु० ) गुड़, खाँड़ ।

इल्लुवाकुवशी ( इल्लुवाकु=सूर्यवशिषों का पहला राजा, वंशी=घराने के ) ( वि० ) इल्लुवाकु राजा के घराने के, सूर्य-वंशी, अयोध्या के राजा ( विशेष के लिये भा० च० देखें ) ।

इल्लुवालिका ( स्त्री० ) नरकट, नरकुल, सरपत, काँसा, मूँज ।

इल्लुराज ( पु० ) व्यय, खर्च ।

इल्लुलास ( पु० ) मित्रता, सौहार्द ।

इंग ( पु० ) चिह्न, इशारा, हिलना-डुलना, चलना-फिरना ।

इंगन ( पु० ) इशारा, चलना, चिह्न, इशारे से किसी बात को बतलाना, संकेत ।

इंगला ( स्त्री० ) शरीर के वाम-भाग की एक नाड़ी, इन्डानाड़ी । यह भीतर की वायु को बाहर निकालती है और बाहर की वायु को भीतर ले जाती है ।

इंगलिश ( वि० ) अंगरेज़ी, इंगलैंड-देश-संबंधी ।

इंगलिस्तान ( पु० ) अंगरेज़ों के देश का नाम ।

इंगलैंडोय ( वि० ) इंगलैंड-देश-संबंधी ।

इंगित ( पु० ) संकेत, अभिप्रायानुसार चेष्टा, इशारा, भाव ।

इंगुदी ( स्त्री० ) हिंगोट का पेड़ । इस वृक्ष के फल में बहुत तेज़ होता है, वनवासी लोग इसका व्यवहार करते हैं, इससे बड़े-बड़े फोड़ शीघ्र अच्छे होते हैं, महर्षियों को यह बड़ा प्रिय है । ज्योतिष्मती, माल-कैंगनी ।

इंगुर ( पु० ) सिंदूर का एक भेद, स्त्रियों का सीमाङ्क-चिह्न, ईंगुर ।

इंगुरीटी ( स्त्री० ) इंगुर रखने की ढिबिया, सिंधीरा ।  
 इंगुवा ( पु० ) गोंदा, हिंगोट का पेड़ और फल ।  
 ईचना ( कि० थ० ) खिचना, किसी और आकर्षित होना ।  
 ईचकना ( कि० थ० ) खोस निकालना, क्रोध से दौँत पीसना ।  
 ईच ( स्त्री० ) तस्म, एक फुट का वारहवाँ हिस्सा, नान आड़े जत्र की लंबाई ।  
 ईच्छुन } ( म० ईक्षण, ईक्ष=देखना ) ( पु० ) आँख, नेत्र,  
 ईछुन } दृष्टि, देखना ।  
 ईच्छा ( ईप्=चाहना ) ( स्त्री० ) चाह, वांछा, आकांक्षा, चाहना, अभिलाष, कामना, इच्छादिश, ।  
 ईच्छाचारी ( पु० ) स्वतंत्र, मनमौजी ।  
 ईच्छाभेदी ( वि० ) एक औपध, विरंचनवटी ।  
 ईच्छित ( वि० ) वांछित, अभिप्रेत, चाहा हुआ ।  
 ईच्छु ( पु० ) ईक्ष, चाहनेवाला । इसका प्रयोग, यौगिक शब्द बनाने में हा होता है, जैसे शुभेच्छु, हितेच्छु ।  
 ईच्छुक ( ईप्+कृ ) ( पु० ) चाहनेवाला, आकांक्षी, अभिलाषी, इच्छादिशमंद ।  
 ईजमाल ( पु० ) कुल, सब, संयुक्त, सम्मिलित, साम्रा ।  
 ईजरा ( स्त्री० ) वह भूमि जो बहुत दिनों तक जोतने के कारण कम उपजाऊ हो गई हो और परतों छोड़ दी गई हो ।  
 ईजराय ( पु० ) जारी करना, प्रचार करना, काम में लाना । यह अदालती शब्द है ।  
 ईजराय डिगरी=डिगरी का अमल-दरामद होना, उसके रूप में चल करना ।  
 ईजलास ( पु० ) न्यायालय, कचहरी, अदालत, कोर्ट ।  
 ईजहार ( पु० ) गवाही, बयान, साक्षी, प्रकाशन ।  
 ईजाज़त ( स्त्री० ) मंजूरी, स्वीकृति, आज्ञा, हुक्म, परवानगी ।  
 ईजाफा ( पु० ) वृद्धि, बढ़ोतरी, बढ़ती, वचन ।  
 ईजाफा लगान ( पु० ) लगान की बढ़ती, लगान का अधिक होना ।  
 ईजार ( स्त्री० ) पात्रामा, सुधना ।  
 ईजारबंद ( पु० ) नारा, कमरबंद, सूत या रेशम का बना हुआ लहंगे या पाजामे का आलौदार बंधन ।  
 ईजारदार ( वि० ) ठेकेदार, अधिकारी ।  
 ईजारा ( पु० ) ठेका, इक़तयार, सख ।

इज्जत ( स्त्री० ) आदर, मान, प्रतिष्ठा, सम्मान ।  
 इज्जत खोना ( मुहा० ) अपनी हैसी कराना, इज्जत गँवाना ।  
 इज्जत उतारना ( मुहा० ) बेइज्जत करना, मर्यादा नष्ट करना ।  
 इज्य ( वि० ) गुरु, पूज्य, बृहस्पति ।  
 इज्या ( स्त्री० ) यज्ञ, पूजा, अर्चा ।  
 इडा ( इल्=जाना ) ( स्त्री० ) गौ, पृथ्वी, वाणो, नाडी, स्वर्ण, वाम-नासिका, बुध की स्त्री, पुरुरवा की माता ।  
 इत ( सं० यत्र=यहाँ ) ( कि० वि० ) यहाँ, उधर, इस ओर ।  
 इतमीनान ( पु० ) निश्चय, विश्वास, भरोसा ।  
 इतर ( थ०प० ) अन्य, भिन्न, नीच ।  
 इतराना ( कि० थ० ) घमंड करना, मचलना, मदांघ होना, इठलाना, ठसक दिखाना ।  
 इति ( इत्=जाना ) ( कि० वि० ) इस प्रकार, ऐसे, यहाँ तक, पूरा, अंत, संपूर्ण, समाप्त । यह शब्द अध्याय पुस्तक और चिट्ठी-पत्री के अंत में लिखा जाता है, और इसका अर्थ यह है कि यह अध्याय अथवा बात पूरी हो गई । इत्तम ।  
 इतिकथा ( स्त्री० ) अर्थशून्य वाक्य ।  
 इतिकर्त्तव्यता ( स्त्री० ) परिपाटी, काम करने की विधि ।  
 इतिवृत्त ( पु० ) कहानी, पुरानी कथा, इतिहास ।  
 इतिहास ( इति=परांपरा का बात, इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना वा आस्=रहना ) ( पु० ) पुरानी कथा, जैसे महाभारत आदि वृत्तांत, तवारीख़, प्राचीन घटनाओं का वर्णन, उपाख्यान ।  
 इतक ( वि० ) इतना, इतना ही, इधर ।  
 इत्तफ़ाक़ ( पु० ) मिलाप, संयोग, अवसर, मेल, इत्तिफ़ाक़ ।  
 इत्तफ़ाक़न ( कि० वि० ) संयोगवश, हठात्, अकस्मात्, अचानक ।  
 इत्तला ( स्त्री० ) सूचना ।  
 इत्ता ( वि० ) इतना ।  
 इत्तिहाम ( पु० ) दोष, तोहमत ।  
 इत्थं ( इदं=यह ) ( कि० वि० ) इस प्रकार, इस तरह, ऐसे, यों ।  
 “इत्थं विचिंतयति कोषगते द्विरेके”—सु०र०भा० ।  
 इत्यादि ( इति=ऐसा, अदि=और भी ) ( कि० वि० ) इससे लेके और सब, वगैरह, आदि, प्रभृति ।  
 इअ ( पु० ) अतर, इतर ।

इदानीं ( कि० वि० ) इस समय, अभी, इसी वक्त ।  
 इन ( इण्=जाना ) ( पु० ) सूर्य, समर्थ, राजा, पति,  
 ईश, हस्त-नक्षत्र, १२ गिनती ।  
 इनकमूटैक्स ( पु० ) आय पर कर, आमदनी पर महसूल ।  
 इनकार ( पु० ) अस्वीकार, नामंजुरी ।  
 इनाम ( पु० ) पुरस्कार ।  
 इनारा ( पु० ) पक्का कुआँ ।  
 इनेगिने ( वि० ) चुने हुए, कुछ ।  
 इंदारा ( सं० ) अंध कुआँ, अंध=अंधा होना, नहीं दीखना  
 या अम=जामा वा शब्द करना ) ( पु० ) कुआँ, पक्का  
 बंधा हुआ कुआँ ।  
 इंदिरा ( इदि+ऐश्वर्य रसना ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।  
 इंदीवर ( इंदी=लक्ष्मी, वर=वाड़ा हुआ ) ( पु० ) नीलकमल,  
 नीलोत्पल ।  
 इंदु ( इंदु=भिगेना, जो अपनी किणों से धरती को ठंडा  
 करता है ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा, कपूर ।  
 इंदुर ( पु० ) मूस, चूहा, उँदुर ।  
 इंद्र ( इदि+ऐश्वर्य रसना ) ( पु० ) देवताओं का राजा,  
 स्वर्ग का राजा, शक्त, परमेश्वर, राजा, सबसे बड़ा  
 अथवा श्रेष्ठ, ऐश्वर्य ।  
 इंद्रजाल ( इंद्र=ऐश्वर्य अर्थात् नतुराई, जल आँखों को  
 ढकना, जल=ढकना ) ( पु० ) मंत्र अथवा औषध से  
 कुछ का कुछ देख पड़ना, बाज़ीगरी, छल, कपट,  
 फरफंद, धोखा ।  
 इंद्रजित् ( इंद्र=देवताओं का राजा, जित्=माँतेवाला,  
 जि=जंतवा ) ( पु० ) रावण का बेटा, मेघनाद ।  
 इंद्रदमन ( पु० ) योग-विशेष, वर्षाऋतु में प्रयाग में गंगाजी  
 एक निश्चित स्थान या पीपल या वटवृक्ष तक पहुँच  
 जाते हैं, तब यह योग होता है, यह एक धार्मिक  
 त्योहार माना जाता है । ऐसे योग में गंगा-स्नान  
 और दानधर्म श्रेयस्कर समझा गया है ।  
 इंद्रधनुष ( इंद्र=देवताओं का राजा, धनुष=धनुष, कमान )  
 ( पु० ) धनुष, पनसूखा, बरसात के दिनों में मेघ के  
 कणों पर सूर्य की किरणें पड़ने से जो आकाश में  
 धनुष के आकार का सतरंगा वृत्त दिखाई देता है,  
 कोस, कुज़ा ।  
 इंद्रप्रस्थ ( इंद्र=देवताओं का राजा, प्रस्थ=पहाड़ पर रहने  
 योग्य जगह, अर्थात् इंद्र का स्थान, जो सुमेरु पहाड़  
 पर है, उसके बराबर ) ( पु० ) दिहो ।

इंद्रयव ( पु० ) ओषधि-विशेष, कीरेया का बीज, यह  
 जब के समान लंबा होता है ।  
 इंद्रवधू ( इंद्र=देवताओं का राजा, वधू=खी ) ( स्त्री० )  
 इन्द्राणी, लाल कीड़ा, बीरबहूटी ।  
 इंद्राणी ( इंद्र ) ( स्त्री० ) इंद्र की स्त्री, शची, एक  
 प्रकार की ओषधि ।  
 इंद्रानुज ( पु० ) नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु ।  
 इंद्रायण ( स्त्री० ) ओषधि-विशेष ।  
 इंद्रायुध ( पु० ) वज्र, इंद्रधनुष ।  
 इंद्रावरज ( पु० ) विष्णु, नारायण ।  
 इंद्रासन ( इंद्र=देवताओं का राजा, आसन=सिंहासन )  
 ( पु० ) इंद्र का सिंहासन, राजा इंद्र का सङ्गत ।  
 इंद्रिय } ( इंद्र परमेश्वर, अर्थात् जिनके द्वारा परमेश्वर  
 इंद्र } का ज्ञान होता है, या परमेश्वर की बनाई  
 हुई ) ( स्त्री० ) जिनसे रूप, रस अथवा करना, चलना  
 आदि का ज्ञान होता है, अर्थात् १ हाथ, २ पाँव, ३  
 वाक्, ४ स्निग्ध, ५ गुदा, ये पाँच कर्मेंद्रियाँ कहलाती  
 हैं और १ आँख, २ नाक, ३ कान, ४ जीभ और ५  
 शरीर पर का चमड़ा, ये पाँच ज्ञानेंद्रियाँ कहलाती  
 हैं; मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये चार अंत-  
 रेंद्रियाँ हैं ।  
 इंद्रियगोचर ( वि० ) इंद्रिय-विषयक, ज्ञान-गम्य ।  
 इंद्रियग्राह्य ( वि० ) ज्ञान-गम्य, शब्द, स्पर्श, रूप,  
 रस, गंध ।  
 इंद्रियदोष ( पु० ) कामुकता, लंपटता ।  
 इंद्रियनिग्रह ( पु० ) इंद्रियों का दमन ।  
 इंधन } ( इंधू=जलाना ) ( पु० ) जलावन, लकड़ी ।  
 इंधन }  
 इंसु ( वि० ) इच्छुक, लोभो ।  
 इफराद् ( स्त्री० ) अधिकता ।  
 इयारत ( स्त्री० ) लेख ।  
 इभ ( पु० ) हाथी, गज, हस्ती, कुंजर ।  
 इभ्य ( वि० ) धनी, अमीर, धनवान् ।  
 इमदाद् ( स्त्री० ) मदद, सहायता ।  
 इमन ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।  
 इमती } ( स० अवृत ) एक प्रकार की मिठाई ।  
 इमती }  
 इमली ( स्त्री० ) एक वृक्ष और फल-विशेष ।

## इषामदस्ता

इषामदस्ता ( पु० ) लोहे या पीतल का ग्लवट्टा ।  
 इषामवाड़ा ( पु० ) शियाओं के ताज़िए रखने और  
 गाढ़ने की जगह ।  
 इषारत ( स्त्री० ) पक्का मकान, विशाल भवन ।  
 इषमि ( कि० वि० ) ऐसे, इस प्रकार से, इस तरह से ।  
 इम्नहान ( पु० ) परीक्षा ।  
 इरा ( स्त्री० ) वृहस्पति की मा, कश्यप की स्त्री, भूमि,  
 पृथ्वी, वाणी, जल, अन्न ।  
 इराक़ी ( वि० ) ईराक़-देश का, ( पु० ) घोड़ों की एक  
 जाति ।  
 इरादा ( पु० ) संकल्प, विचार, मंशा ।  
 इरावती ( स्त्री० ) तेरावत नाम महागज की मा,  
 कश्यप की कन्या, ब्रह्मदेश की एक नदी, पथरचटा ।  
 इरावान ( पु० ) पर्यंत-विशेष, एक सर्प का नाम,  
 नागकन्या उलोपी से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र ।  
 ईर्दगिर्द ( कि० वि० ) आसपास, चारों ओर, चारों  
 तरफ़ ।  
 ईर्शाद ( पु० ) हुक्म, आज्ञा ।  
 इलज़ाम ( पु० ) कलंक, अपराध, दोष, अभियोग,  
 आरोप ।  
 इलबिला ( स्त्री० ) कुबेर की माता ।  
 इलहाम ( स्त्री० ) देववाणी ।  
 इला ( स्त्री० ) वाणी, सरस्वती, पृथ्वी, पार्वती, बुद्धिमती  
 स्त्री, गौ, बुध की स्त्री, पुरुषा की मा ।

ई ( पु० ) कामदेव, ( स्त्री० ) लक्ष्मी, ( अर्थ० ) आह ।  
 यह 'इ' का दीर्घरूप है, इसका उच्चारण तालु से  
 होता है ।  
 ईक्षक ( ईक्ष+यक ) ( पु० ) दिव्या, देखनेवाला, नाज़िर ।  
 ईक्षण ( ईक्ष+ण ) ( पु० ) आँख, नेत्र, देखना, दर्शन,  
 दृष्टि ।  
 ईक्षित ( ईक्ष+त ) ( वि० ) दर्शित, देखा हुआ ।  
 ईख ( सं० ईखु ) ( स्त्री० ) ऊख, गन्ना ।  
 ईगुर ( पु० ) एक प्रकार का सिंहर ।  
 ईन्चना ( कि० सं० ) खींचना, ढेंचना ।  
 ईठ ( सं० इष्ट ) ( वि० ) वांछित, इष्ट, चाहा हुआ,  
 ( पु० ) मित्र, साथी, दोस्त ।

इलाक़ा ( पु० ) राज्य, रियासत, संसर्ग, ज़मींदारी ।  
 इलाज ( पु० ) चिकित्सा, दवा, औषध, युक्ति,  
 तद्विध ।  
 इलायची ( सं० एला, इल=जाना, फेंकना ) ( स्त्री० )  
 एलाची, एला, एक भाँति का गर्म मसाला ।  
 इलाही ( पु० ) परमेश्वर, ईश्वर, खुदा ।  
 इलेक्ट्रिक ( वि० ) बिजली का, बिजली-संबंधी ।  
 इल्म ( पु० ) विद्या, जानकारी, ज्ञान ।  
 इल्लत ( अ० ) ( स्त्री० ) बीमारी, रोग, बाधा ।  
 इन् ( इन्=फेंकना ) ( कि० वि० ) बराबर, जैसे, सदृश,  
 समान, तरह, उपमावाचक शब्द ।  
 इस्तअ़ारा ( सं० लक्षणा ) माँगना, ऊपर से लेना ।  
 इस्तक़ता ( सं० प्रतिज्ञा-पत्र ) किसी बात का निर्णय  
 चाहना ।  
 इषु ( पु० ) बाण, शर ।  
 इषुधि ( इषु=बाण, धा=खना ) ( पु० ) तूण, तरकश,  
 बाणाधार ।  
 इष्ट ( इषु=चाहना ) ( वि० ) चाहा हुआ, पूजने योग्य,  
 माना हुआ, प्यारा, ( पु० ) अपना देवता, अपना  
 प्यारा आदमी, चाही हुई चीज़ ।  
 इष्टदेव ( इष्ट=चाहा हुआ, देव=देवता ) ( पु० ) माना हुआ  
 देवता, अपना देवता, पूज्य देवता, पूजनीय ।  
 इष्टि ( सं० इष्ट=यहाँ ) ( कि० वि० ) यहाँ, इसमें, इस  
 जगह, इस तरह, इस लोक में ।

ईड़ा ( ईड़=स्तुति कना ) ( स्त्री० ) स्तुति करना,  
 बड़ाई करना, तारीफ़ करना, स्तुति, प्रशंसा ।  
 ईंट ( सं० इष्टका, इषु=चाहना ) ( स्त्री० ) ईंटा, मिट्टी की  
 बनाई हुई चीज़ जिससे मकान बनाए जाते हैं ।  
 ईदुआ ( पु० ) सिर पर बोझा रखने के लिये टेकन जो  
 कपड़े या सन का बनाया जाता है, उदकन,  
 टेकन ।  
 ईति ( ई=जना ) ( स्त्री० ) उपद्रव, आपदा ।

“अतिवृष्टिर्नावृष्टिः शलभा मूषिकाः सगाः ;  
 अत्यासन्नश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः ।”

अर्थ—१ बहुत पानी बरसना, २ पानी कान बरसना,  
 ३ टिड्हु आना, ४ चूहों के बहुत होने से अथवा,

५ पलेहश्रों की बहुतायत से खेती का बिगाड़, ६ अपने देश के राजा पर दूसरे देश के राजा का चढ़ आना, इन छः भाँति की विरक्तियों को ईति कहते हैं। “ईति भीति सब प्रजा दुखारी”—गो० तु० दा०।  
 ईद् ( पु० ) मुसलमानों का एक खुशो का त्योहार।  
 ईदश ( ईदम्=यह, दश=देखना ) ( वि० ) ऐसा, इस भाँति का, इस प्रकार का।  
 ईदसा ( आप=चाहना ) ( स्त्री० ) पाने की इच्छा, चाह, वांछा।  
 ईप्सित ( ईप्स+इत ) ( वि० ) चाहा हुआ, अपेक्षित, वांछित।  
 ईमान ( पु० ) विश्वास, नियत।  
 ईर्ष्या } ( ईर्ष्य=डाढ़ करना ) ( स्त्री० ) डाह, द्वेष, द्वेष, } किसी की बढ़ती देखकर जलना, हसद।  
 ईर्ष्या }  
 ईर्षी ( ईर्ष्य+ई ) ( वि० ) द्वेषी, द्वेषी, हासिद, डाह करनेवाला।  
 ईश ( ईश=ऐश्वर्य रखना ) ( पु० ) ईश्वर, परमेश्वर, शिव, महादेव, राजा, स्व. मो, प्रभु, धनी, मालिक।  
 ईशसखा ( पु० ) कुवेर, धनवान्, धनी।  
 ईशान ( ईश=महादेव ) ( पु० ) शिव, महादेव, पूर्व-उत्तर

के बीच का कोण, जिसके दिक्पाल महादेव हैं; ग्यारह की संख्या।  
 ईशिता ( स्त्री० ) } ( ईश=ऐश्वर्य रखना ) बढ़पन, बड़ाई,  
 ईशित्व ( पु० ) } आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि।  
 ईश्वर ( ईश=ऐश्वर्य रखना ) ( पु० ) परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, प्रभु, महादेव, मालिक, धनी, समर्थ।  
 ईश्वरता ( ईश्वर ) ( स्त्री० ) प्रभुता, सामर्थ्य, क्षमता।  
 ईश्वरकृत ( वि० ) ईश्वर-रचित, ईश्वर-निर्मित।  
 ईश्वरोक्त ( ईश्वर+उक्त ) ( वि० ) ईश्वर-कथित, ईश्वर का कहा हुआ, ( पु० ) वेद, कलाम-ए-इलाही।  
 ईषण ( पु० ) देखना, दृष्टि, नेत्र।  
 ईषणा ( स्त्री० ) लाजसा, चाह, इच्छा।  
 ईषत् ( क्रि० वि० ) थोड़ा, किंचित्।  
 ईषत्हास ( पु० ) मुसकान, मुसकिराहट।  
 ईषन् ( क्रि० ) देखना।  
 ईस ( सं ईश ) ( पु० ) परमेश्वर, महादेव, राजा, स्वामी।  
 ईसचगोल ( पु० ) श्रौध-विशेष।  
 ईसवी ( स्त्री० ) अंगरेज़ी-वर्ष, ईसा-संवत्।  
 ईसा ( पु० ) ईसाई-धर्म का प्रचारक।  
 ईहा ( ईह=यत्न करना ) ( स्त्री० ) यत्न, चेष्टा, उपाय, इच्छा।

उ ( उ=शब्द करना ) ( पु० ) महादेव, डाखना, नियोग, कोपवचन, ( अर्थ० ) संबोधन का सूचक है, तर्क-अर्थ में बोला जाता है।  
 उअना ( क्रि० अ० ) उदय होना, उगना।  
 उअहि ( क्रि० अ० ) निकलते हैं, उगते हैं।  
 उअण ( वि० ) अण से मूक, उद्धार।  
 उकटना ( सं० उन्=ऊपर, कट=तोड़ना ) ( क्रि० स० ) गड़ी हुई चीज़ को खोदना, उखाड़ना, भेद लेना, छिपी बात को खोल देना।  
 उकड़ ( पु० ) तलब के बल बैठना, घुटने मोड़कर बैठना।  
 उकताना ( सं० उन्=ऊपर, कट=दूब से जीना, सोच करना ) ( क्रि० अ० ) घबराना, उदास होना, थकना।  
 उकलना ( क्रि० अ० ) उभड़ना, ऊपर उठना।  
 उकलाई ( स्त्री० ) वमन, क़ै, उलटो।

उकलाना ( क्रि० अ० ) उलटो करना, क़ै करना।  
 उकवथ ( पु० ) चर्मरोग-विशेष; यह पैर के घुटने के नीचे होता है।  
 उकालना ( क्रि० स० ) उबालना।  
 उकल ( वि० ) कहा हुआ।  
 उक्लि ( स्त्री० ) अनोखी बात, कथन, वचन।  
 उखड़ना ( क्रि० अ० ) उजड़ना, उठ जाना, अलग होना, चुकना, टूटना, टोकर खाना, हिम्मत हारना।  
 उखड़ाना } ( सं० उन्=ऊपर, खड़=नोड़ना ) ( क्रि० स० )  
 उखाड़ना } जड़ से तोड़ डालना, उजाड़ना, नाश करना, नीचे से ऊपर खींचना।  
 उखम ( पु० ) ताप, गरमी, उमस।  
 उखर ( पु० ) उख की बुझाई हो जाने पर हल पूजने की रीति।  
 उखरना ( क्रि० अ० ) टोकर खाना, चुकना।

उखल ( पु० ) } ( म० उदूखल या उलूखल, उत्=ऊपर, उखली ( स्त्री० ) } ख=ग्रन्थ, ला=लेना ) उखली, ओखली, जिसमें चावल आदि कूटते हैं ।

उखा ( स्त्री० ) डेगची, बटखोई ।

उखारी ( पु० ) हंस का खेत ।

उगना ( सं० उत्=ऊपर, गम्=माना ) ( कि० अ० ) पैदा होना, बढ़ना, निकलना, जन्म लेना ।

उगने ही जल जाना ( बोल० ) यह मुहावरा उसजगह बोला जाता है, जब किसी की आशा शुरू में ही टूट जाय ।

उगलना ( म० उत्=ऊपर, गू=निगलना ) ( कि० सं० ) मुँह में कोई चीज लेकर फिर निकाल देना, वमन करना, उल्टी करना, क़ै करना ।

उगाल ( पु० ) सीधी, थूक, पीक ।

उगालवान पीकवान ।

उगाहना ( सं० उत्, ग्रह=लेना ) ( कि० सं० ) इकट्ठा करना, बटोरना, जमा करना, तहसील-वसूल करना ।

उग्र ( उत्=इकट्ठा होना या वज्र=शठोर होना ) ( वि० ) कठोर, डरावना, भयंकर, क्रुद्ध, कड़ा, ( पु० ) महा-देव, क्षत्रिय के औरस और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न एक वर्णसंस्कारी जाति-विशेष, विष ।

उग्रता ( स्त्री० ) कठोरता, तेज़ी, सख्ती ।

उग्रस्वभाष ( उग्र+स्वभाव ) ( वि० ) कठोर-चित्त, तेज़ मित्राज, कठोरता, प्रचंडता ।

उग्रसेन ( उग्र=डरावनी, सेना=फौज ) ( पु० ) मथुरा का राजा, आहुक राजा का बेटा, देवक का भाई और पवनसेना का पति, कंस का पिता ।

उघटना ( कि० अ० ) पड़सान जताना ।

उघटापेंची ( स्त्री० ) उलहना देना ।

उघड़ना } ( कि० अ० ) प्रकट होना, खुलना, नंगा होना ।

उघरे ( वि० ) प्रकट, खुले "उघरे अंत न होहि निबाहु" -- गो० तु० दा०

उघाड़ना } ( कि० सं० ) खोलना, प्रकट करना, नंगा

उधारना } करना ।

उच्चकना ( कि० अ० ) कूद उठना, कूदना, उछलना ।

उच्चका ( वि० ) ठग, उठाईगीर, गाँठकटा, जेबकतरा, चोर, छली, पालंड़ी, बड़भासा, लुच्चा ।

उच्चटना ( सं० उत्, चट=तोड़ना ) ( कि० अ० ) अलग-

अलग होना, उखड़ना, बिखरना, पिछलना, उदास होना, मन न लगना, नींद का टूटना, अन्य मनस्क हो जाना ।

उच्चरना } ( सं० उच्चारण, उत्=ऊपर, चर्=चलना, पर उच्चरना } उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बोलना होता है ) ( कि० सं० ) बोलना, कहना, शब्दों का उच्चारण करना ।

उच्चलना } ( कि० ) अलग होना, अलग करना ।

उचाट ( स्त्री० ) उदासीनता, विरक्ति ।

उच्चाटना ( सं० उच्चाटन, उत्=ऊपर, चट=तोड़ना ) ( कि० सं० ) जुदा-जुदा करना, अलग-अलग करना, उदास होना, जी न लगाना ।

उचाट होना ( बोल० ) उदास होना, जी न लगना, उचाटी लगना, कै हो जाना ।

उचाड़ना ( कि० सं० ) नोचना, उखाड़ना ।

उचापत ( पु० ) लेखा, उधार सौदा लेना, उचंत खाता ।

उचित ( उत्=इकट्ठा होना या वच्=बोलना ) ( वि० ) योग्य, ठीक, चाहिए, मुनासिब, वाजिब ।

उचेलना ( कि० सं० ) उधेरना, उचालना, अलगकरना ।

उचोट ( पु० ) ठेस, ठोकर, चोट ।

उच्छ ( उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना ) ( वि० ) ऊँचा, लंबा, उन्नत, प्रांगु, उदग्र, तुंग, उच्छ्रित, श्रेष्ठ, उत्तम, महान् ।

उच्छतर ( पु० ) नारियल का वृक्ष, ( वि० ) ऊँचा वृक्ष ।

उच्छमानी ( वि० ) कड़वी बात कहनेवाला ।

उच्छशिखा की शिखा ( स्त्री० ) आलादर्ज की तालीम ।

उच्छस्वर ( पु० ) ऊँचा शब्द, बुलंद आवाज़ ।

उच्छाटन ( पु० ) नोचना, उखाड़ना, तांत्रिक प्रयोग द्वारा मन में उच्छाटन उत्पन्न करना तंत्र-विद्या का एक प्रयोग ।

उच्छार ( उत्=ऊपर, चर्=चलना ) ( पु० ) उच्चारण, कथन, वर्णन, मज, विष्टा ।

उच्छारण ( उत्=ऊपर, चर्=चलना, उत् उपसर्ग के साथ आने से बोलना अर्थ होता है ) ( पु० ) बोलना, तल्लफ़ूज़ ।

उच्छारित ( उत्+चर्+इत ) ( वि० ) उच्चारित, कथित, कहा हुआ ।

उच्चैःश्रवा ( पु० ) हंस का घोड़ा, समुद्रमथन के समय यह हंस को मिला है ।

उच्छ्र (वि०) लुप्त, दबा हुआ।

उच्छ्रना (क्रि० अ०) उच्छ्राना, नीचे-ऊपर उठना।

उच्छ्रव (पु०) उत्सव, जलसा।

उच्छ्रास (पु०) रवास, साँझ, ऊर्ध्व-रवास।

उच्छ्राह (पु०) उत्साह, उमंग।

उच्छ्रिस्त (उत्=ऊपर, छिद्=काटना) (वि०) कटा हुआ, उखड़ा हुआ, निर्मूल, नष्टभ्रष्ट।

उच्छ्रिस्तता (स्त्री०) नाश, खराबी, बरबादी।

उच्छ्रिष्ट (उत्=, शिष्ट=बाकी रहना) (वि०) जूटा, खाने के पीछे बचा हुआ खाना, भुक्तावशिष्ट।

उच्छ्रू (स्त्री०) गले में पानी या कफ रुक जाने से आनेवाली खाँसी।

उच्छ्रुखल (वि०) उहँड, स्वेच्छाचारी, अंडबंड, शृंखला-विहीन, अनियंत्रित।

उच्छ्रेद् (उत्+छिद्=काटना) (पु०) विनाश, खराबी, काटना, कतरना।

उच्छ्रेदी (उच्छ्रेद्+ई) (पु०) नाशक, काटनेवाला।

उच्छ्रंग (सं० उत्संग, उत्=ऊपर, ङञ=मिलना) (स्त्री०) गोदी, गोद।

उच्छ्रना } (सं० उत्=ऊपर, चल्=चलना) (क्रि० अ०)  
उच्छ्रलना } कूटना, कूद उठना, ऊपर उठना, कुदकना।

उच्छ्राह (सं० उत्साह, उत्, सह=सहना) (पु०) आनंद, हर्ष, खुशी, उमंग, उत्साह।

उच्छ्रीर (पु०) खुला स्थान, अवकाश, छिद्र।

उजड़ना (क्रि० अ०) नष्ट होना, तितर-बितर होना।

उजड़ु (वि०) गँवार, मूर्ख, निर्बोध।

उजड़क (वि०) अनाड़ी, मूर्ख, उहँड, तातारियों की एक जाति।

उजरत (पु०) मज़दूरी, भाड़ा।

उज्यार (पु०) चाँदनी, प्रकाश, उजियाली।

उजल (पु०) स्वच्छ, साफ़, निर्मल, चमक, झक।

उजागर (वि०) नामवर, नामी, प्रतापी, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी।

उजाड़ना (सं० उत्थापन, उत्=ऊपर पट्ट जाना, अथवा, उत्=ऊपर, जट्ट=कट्टा होना) (क्रि० सं०) नाश करना, चौपट करना, बरबाद करना।

उजान (पु०) उलटी ओर, धारा के विपरीत।

उजारी (स्त्री०) नए अन्न में से देवता के निमित्त अन्न निकालना।

उजाला } (सं० उज्ज्वल, उत्=ऊपर, जल्=चमकना)  
उजियारा } (पु०) प्रकाश, तेज, चमक।

उजल } उत्, जल्=चमकना (वि०) साफ़, स्वच्छ  
उज्ज्वल } निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तिमान्।

उज्ज्वलन (पु०) उद्दीपन, प्रकाश करना, चमकना, चमक आना।

उझकना (क्रि० सं०) ताकना, झाँकना, चंचल होना, उचकना। “मोहिं भरोसो रीकि है उझकि झाँकि हकबार—कविवर विहारी

उझड़ } (वि०) गँवार, अन्नगड़, अखड़, मूर्ख।  
उझड़ }

उझलना (सं० उज्झलन, उज्झ=झोड़ना) (क्रि० सं०) एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना, भगड़ना, भगड़ा मोल लेना।

उंझलित (वि०) झोड़ा हुआ, डाला हुआ।

उट (पु०) तृण, तिनका, पत्ता।

उटंग (वि०) ओछा कपड़ा, वह वस्त्र जो पहनने में छोटा हो गया हो।

उटज (उट+जन्=पैदा होना या बनना) (पु०) पर्यशाळा, पत्तों का घर, मुनिगृह, कोपड़ा, पर्यकुटी।

उट्कन (पु०) इशारा, संकेत, प्रस्ताव, चिह्न।

उटंगना (क्रि० अ०) टेक लगाना, पड़ रहना, खेतना।

उठना (सं० उत्थान, उद्=ऊपर, स्थ=ठहरना) (क्रि० अ०) खड़ा होना, उगना, बूर होना, मौकूफ होना, अबा-लिश होना, खर्च होना, बरखास्त करना।

उठबैठ (बोल०) बेचैनी, उठना-बैठना, कसरत।

उठलू (वि०) एक ठिकाने न रहनेवाला, आवारा, घुमकड़, अस्थिर।

उठाईगीर (वि०) चौष्टा, ठग, उचका, हथमार।

उठा देना (बोल०) बूर करना, उभारना, भड़काना।

उठान (पु०) वृद्धिक्रम, उदय, आरंभ, व्यय, उत्थान।

उठाना (सं० उत्थापन, उद्=ऊपर, था=ठहरना) (क्रि० सं०) खड़ा करना, ऊँचा करना, उगाना, बूर करना, खर्च करना, सहना, उभारना, भड़काना।

उठौआ (वि०) जिसका निश्चित स्थान न हो।

उठौनी (स्त्री०) उधार का लेन-देन, अगौहा, उठाने की मज़दूरी, उठाने का काम।

उड़गण (पु०) तारे, नक्षत्र, समूह।

उङ्क (वि०) उड़नेवाला।

- उड चलना ( कि० अ० ) अकड़ना, इतराना, अपने पैरों खड़ा होने का संकेत ।
- उडती ( पु० ) अनिश्चित, अस्थिर, जनश्रुति, उड़ती खबर, बाज़ार खबर ।
- उड़ना ( सं० उड्=ऊपर, डी=उड़ना ) ( कि० अ० ) पक्षेरु का आकाश में चलना ।
- उड़ाऊ ( उड़ाना ) ( वि० ) लुटाऊ, बहुत खर्च करने-वाला, वृथा खर्च करनेवाला ।
- उड़ाकू ( वि० ) ले भागनेवाला ।
- उड़ाना ( सं० उड्=ऊपर, डी=उड़ना ) ( कि० स० ) पक्षेरु को उड़ने के लिये छोड़ना, लुटाना, गँवाना, फेंकना, नसाना, वृथा खर्च करना, चुनाना, ले लेना, किसी चीज़ को हवा में छोड़ना ।
- उड़ाना-पुड़ाना ( बोल० ) लुटाना, गँवाना, नष्ट करना, वृथा खर्च करना, खर्चा करना ।
- उडासना ( कि० स० ) विस्तर समेटना, बिछौना उठाना ।
- उडिकना ( कि० अ० ) राह देखना, प्रतीक्षा करना ।
- मारवाड़ी भाषा में राह देखनेवाले अथवा प्रतीक्षा करनेवाले को 'उड़ीक' कहते हैं ।
- उड़िस ( पु० ) खटमल, उड़स ।
- उड़ीन ( पु० ) उड़ना, परबाज़ होना ।
- उड़ीयमान ( उड्=ऊपर, डी=उड़ना ) ( वि० ) उड़ने-वाला, आकाशगामी, नभचर ।
- उडु ( उड्=मिलना, वा उड्=ऊपर डी=उड़ना ) ( पु० ) तारा, नक्षत्र ।
- उडुगण ( उड्=तारा, गण=समूह ) ( पु० ) तारों का समूह ।
- उडुप ( उड्=नक्षत्र, जल, पा=पीना या पादना ) ( पु० ) चंद्र, चाँद, डोंगा, प्लव, कोल ।
- उडुपथ ( पु० ) आकाश ।
- उडेलना ( कि० स० ) उमेलना, किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से ढालना ।
- उड़ाना ( सं० ऊर्ण, ढकना ) ( कि० स० ) ढकना, कपड़ा पहनाना ।
- उड़ारना ( कि० स० ) दूसरे की लुगाई को भगाना, दूसरे की स्त्री को बहकाना ।
- उड़ैया ( सं० ऊर्ण, ढकना ) ( पु० ) ओढ़नेवाला, पहननेवाला ।
- उतंग ( सं० उत्तंग, उड्=ऊपर तुंग, जेना ) ( वि० ) बहुत ऊँचा ।
- उतरन ( स्त्री० ) पहना हुआ पुराना कपड़ा ।
- उतरन होना ( सं० उत्तीर्ण, उड्=ऊपर, तृ=पार होना ) ( कि० अ० ) उच्छ्रय होना, ऋण से छूटना, कर्ज से रिहा होना, उद्धार होना ।
- उतरना ( सं० उत्तरण, उड्=ऊपर तृ=पार होना ) ( कि० अ० ) नीचे आना, टहरना, ठिकना, डेरा करना, वास लेना, विश्राम करना, किनारे पहुँचना, पार होना, लाँघना, घटना, कम होना, मंदा होना, उदास हो जाना, फीका पड़ना, ( जैसे "उसका रंग उतर गया " ) उच्छ्रय होना, कर्ज से छूटना, नशा कम हो जाना, किसी पद अर्थात् श्रोहदे से मौकूफ हो जाना ।
- उतराई ( स्त्री० ) ऊपर से नीचे उतरने की स्थिति, नदी पार होने का कर "मोहिं उतराई देके रीति ना बिगारियो—गो० तु० दा०
- उतराना ( कि० अ० ) पानी पर तैरना, उफान खाना ।
- उतराव ( पु० ) उतार, ढाँल ।
- उतला ( पु० ) उतावला, ध्यप्र ।
- उतान ( वि० ) पीठ के बल, चित्त, सीधा ।
- उतावल ( वि० ) अलदबाज़, शीघ्रता से; 'भय बस परत उतावल पाऊ'—गो० तु० दा०
- उतारू ( वि० ) तत्पर, तैयार, सज्जद ।
- उत्कट ( वि० ) मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भया-नक, ( पु० ) क्रोध, गर्व, कठोर, उग्र, दुःसह ।
- उत्कंठा ( उड्=ऊपर, कंठ=मोचना, या चाह से याद करना ) ( स्त्री० ) लालच, चाह, चाइना, इच्छा, अभिलाषा, प्रबल वासना ।
- उत्कंठित ( पु० ) उत्सुक, अभिलाषी, ख्वाहिशमंद ।
- उत्कंठिता ( स्त्री० ) वह नायिका जो निश्चित स्थान पर ठीक समय नायक के न आने से उत्कंठित हो; इसे 'उत्का' भी कहते हैं, उद्विग्न ।
- उत्कर्ष ( उड्=ऊपर, कृपू=सूचना ) ( पु० ) बड़ाई, सराहना, प्रशंसा, उत्तमता, श्रेष्ठता ।
- उत्कल ( पु० ) उड़ीसा का पुराना नाम ।
- उत्कलिका ( स्त्री० ) फूल की कली, तरंग, लहर, लंबे-चौड़े समासवाला गद्य ।
- उत्कीर्ण ( वि० ) खोदा हुआ, लिखा हुआ, बिदा हुआ ।
- उत्कृष्ट ( उड्=ऊपर, कृपू=सूचना ) ( वि० ) उत्तम, सबसे अच्छा या बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान ।



उत्क्रांति ( स्त्री० ) मरण, मृत्यु, श्रद्धा और पूर्णता को और प्रवृत्ति ।

उत्खात ( उन्=ऊपर, खन्=खोदना ) ( वि० ) उन्मूलित, उखड़े हुए ।

उत्तंस ( पु० ) शिरोभूषण

उत्तप्त ( वि० ) क्रोधित, पीड़ित, दुःखित ।

उत्तम ( उन्=ऊपर, तम=बहुत ही बहुत ) ( वि० ) श्रेष्ठ, अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया ।

उत्तमर्ण ( पु० ) ऋणदाता, महाजन, कर्ज देनेवाला ।

उत्तमांग ( उत्तम=नवसे अच्छा या मुख्य, अंग=शरीर का एक भाग ) ( पु० ) शिर, माथा, मस्तक ।

उत्तमा नायिका ( स्त्री० ) पति के प्रतिकूल रहने पर भी अनुकूल रहनेवाली नायिका ।

उत्तर ( उन्=ऊपर, तृ=पार होना ) ( पु० ) जवाब, उत्तर, दिशा, प्रतिनाक्य, दिक्, सिम्त, ( वि० ) पिछला, पीछे ।

उत्तरकाल ( पु० ) भविष्य ।

उत्तरक्रिया ( स्त्री० ) अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्ध, वर्षा आदि ।

उत्तराधिकारी ( उत्तर=प्राप्त, अधिभारी=वारिस अथवा मालिक ) ( पु० ) वारिस, जानशीन ।

उत्तरायण ( उत्तर=उत्तर दिशा, अयन=चाल ) ( पु० ) आधा वर्ष जब कि सूर्य विषुवत्-रेखा के उत्तर का ओर रहता है, माघ से आषाढ़ तक के छः महीने ।

उत्तरार्द्ध ( उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा ) ( पु० ) पिछला आधा ।

उत्तरापदा ( स्त्री० ) इक्कीसवाँ नक्षत्र ।

उत्तरीय ( पु० ) दुपट्टा, चद्दर, ओढ़नी, ऊपर का, ऊपर-वाला, उत्तर दिशा का ।

उत्तरोत्तर ( क्रि० वि० ) लगातार, क्रमशः, एक के बाद एक ।

उत्तान ( वि० ) सीधा, चित्त, पीठ के बल पड़ा हुआ ।

उत्तानपात्र ( पु० ) तवा, तावा ।

उत्तानपाद् ( पु० ) ध्रुव के पिता, स्वायंभुव मनु के पुत्र ।

उत्ताप ( पु० ) गरमी, ताप, तेज, शोक ।

उत्तीर्ण ( उन्=ऊपर, पार जाना ) ( वि० ) उल्लंघन, पारंगत, पार पहुँचा हुआ, कामयाब, पास ।

उत्त ग ( वि० ) ऊँचा, बहुत ऊँचा ।

उत्तू ( पु० ) परत, तह, चुनन, घड़ी, औज़ार-विशेष, इससे कपड़े पर बेजबूटे काढ़े जाते हैं ।

उत्तू करना ( बोल० ) तह जमाना, चुनना ।

उत्तेजक ( पु० ) उत्साहित करनेवाला, भड़कानेवाला, प्रेरणा करने वाला ।

उत्तेजना ( उन्=ऊपर, तिज्=तीक्ष्ण करना ) ( स्त्री० ) प्रेरणा करना, व्यग्रता करना, तीक्ष्ण करना, धमकाना, भड़काना, तेज करना ।

उत्तेजित ( पु० ) प्रेरित, धमकाया गया, भड़काया गया, उत्साहित ।

उत्तोलन ( उन्=ऊपर, तुल्=तेलना ) ( पु० ) तोलना, ऊपर को उठाना, तानना ।

उत्थान ( उन्=ऊपर, स्था=ठहरना ) ( पु० ) उठाना, उठाव, उद्योग, आरंभ, बढ़ती ।

उत्थान-एकादशी ( सं० उत्थान=उठना, एकादशी ग्यारहवाँ तिथि ) ( स्त्री० ) कात्तिक-सुदी ११, जिस दिन विष्णुभगवान् नींद से उठते हैं ।

उत्थापन ( उन्=ऊपर, स्था=ठहरना ) ( पु० ) उठाना, उठाकर रखना ।

उत्पतन ( उन्=ऊपर, पत्=गिरना ) ( पु० ) ऊपर से गिरना ।

उत्पत्ति ( उन्=ऊपर, पद्=जाना ) ( स्त्री० ) जनम लेना, पैदा होना, पैदावार, उगना, उद्गम, उद्भव ।

उत्पथ ( पु० ) कुमार्ग, बुरा आचरण, बुरा रास्ता ।

उत्पन्न ( उन्=ऊपर, पद्=जाना ) ( वि० ) पैदा हुआ, जन्मा हुआ, लाभ पाया हुआ ।

उत्पल ( उन्=ऊपर, पल=जाना ) ( पु० ) कमल, कँवल, नीला कमल ।

उत्पाटन ( उन्=पट=लपेटना या उलाहना ) ( पु० ) उखाड़ना ।

उत्पात ( उन्=ऊपर, पत्=गिरना ) ( पु० ) उपद्रव, बखेड़ा, बिगाड़, हानि, अधर ।

उत्पादक ( पु० ) जनक, उत्पन्न करनेवाला ।

उत्पादन ( पु० ) जनना, पैदा करना ।

उत्प्रेक्षा ( उन्=ऊपर, प्र=बढ़ाना, ईच्छ=देखना, भावना करना ) ( स्त्री० ) बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक अलंकार का नाम, ठोल, देर ।

उत्प्लुत ( उत्+प्लु=कूद जाना ) ( पु० ) तर-ऊपर हो जाना, लौट-पौट जाना ।

उत्फुल ( वि० ) विकसित, खिल्ला हुआ, फूला हुआ ।

उत्सर्ग ( स्त्री० ) गोदी, बीच का हिस्सा, ऊपर का भाग ।

उत्सर्ग ( पु० ) विसर्जन, दान, त्याग ।

उत्सर्गपत्र ( पु० ) दान-पत्र, त्याग-पत्र ।

उत्सव ( उन्=ऊपर, गू=देना होना ) ( पु० ) आनन्द का काम, जैसे व्याह, नाच, राग, रंग आदि, पर्व, त्योहार, बड़ा दिन ।

उत्सादन ( पु० ) विनाश, क्षिप्तभिन्न करना ।

उत्सारक ( पु० ) चोबदार, द्वारपाल, दरबान ।

उत्सारण ( पु० ) दूसरे स्थान में भेजना, दूर करना ।

उत्साह ( उन्=ऊपर, सह=पहना ) ( पु० ) आनन्द, उछाह, खुशी, यत्न, उद्योग, उमंग ।

उत्सुक ( उन्+सू=देना होना ) ( वि० ) चाहनेवाला, उत्कंठित ।

उत्सूर ( पु० ) संध्याकाल, शाम ।

उत्सृष्ट ( वि० ) त्यागा हुआ, उच्छिष्ट ।

उत्सृष्ट ( स्त्री० ) उत्पत्ति, बढ़ती, उँचाई, सृजन ।

उत्थलना ( क्त० स० ) उलटना, झोंधाना, तले ऊपर करना ।

उत्थल-पुथल ( क्त० स० ) उलट-पुलट, उलटा-पुलटा, ऊपर नीचे, तले-ऊपर, गटपट, गड़बड़, इधर का उधर उधर का इधर, विप्रव, उपद्रव, क्रांति ।

उत्थला ( वि० ) छिड़ला, कम गहरा ।

उच् } ( उन्=उठ करना ) ( अ० ) ऊपर, ऊँचा, ऊपर  
उत् } की ओर, ऊँचा किया हुआ, प्रकट; बढ़ाई, बल आदि अर्थों में भी आता है; जगह, बल और पद अर्थात् दर्जे की अधिकारी में भी बोला जाता है, अधः का उलटा है ।

उद् }  
उद्क } ( उद्=भिगोना ) ( पु० ) पानी, जल ।

उद्कफिया ( स्त्री० ) निलांजलि, प्रेत का तर्पण ।

उद्म ( उद्=ऊपर, अम्र=गिरा या नीक ) ( वि० ) ऊँचा, तोखा, डरावना ।

उद्धि ( उद्=सानी, धा=राना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, जलनिधि ।

उद्धिसुत ( पु० ) चंद्रमा, अमृत, शम्भ आदि ।

उद्धिसुता ( स्त्री० ) लक्ष्मी, सोप आदि ।

उद्धंत ( वि० ) जिसके दाँत न निकले हों, बिना दाँत का ।

उद्माद् ( पु० ) मतवाला, पागलपन, उन्माद ।

उद्मादी ( वि० ) उन्मत्त, पागल ।

उद्य ( उद्=ऊपर, इ=ज्ञाना ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जहाँ से, हिन्दू मानते हैं, सूर्य निकलता है, उगना, निकलना, ज्योति, प्रकाश, बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि, उत्पत्ति ।

उद्य होना ( क्त० अ० ) सूर्य का निकलना, वृद्धि होना, उत्पत्ति होना, भाग जागना, फूलना-फूलना ।

उद्यान ( पु० ) कर्मडल, कुँ के पास का गड्ढा ।

उद्द ( उद्=ऊपर, ऋ=ज्ञाना या उद्, द=फाड़ना ) ( पु० ) पेट, जठर ।

उद्दज्वाला ( स्त्री० ) जठराग्नि, भूख ।

उद्दरावर्त ( पु० ) नाभी, ढोंढी ।

उद्दरिणी ( स्त्री० ) गाभिन, गर्भवती, गर्भिणी ।

उद्दरी ( वि० ) तोंडोला, तोंडइल ।

उद्दघना ( क्त० प्र० ) प्रकट होना, निकलना, उगना ।

उद्दसन ( क्त० अ० ) क्रमभंग होना, तितर-बितर होना, उजड़ना ।

उद्दरंभरि ( पु० ) पेटार्थी, पेटू ।

उद्दक्षि ( पु० ) अग्नि, अग्नि की चिनगारा ।

उद्दात्त ( उन्=ऊपर, आ=, दा=देना ) ( पु० ) ऊँचा स्वर, ऊँचे स्वर से बोलना, दान, एक प्रकार का अलंकार, उदार, दयालु, दाता, श्रेष्ठ ।

उदार ( उद्=ऊपर, आ=से, दा=देना ) ( वि० ) दातार, दाता, दानी, देनेवाला, बड़ा, सीधा, सरल, गंभीर ।

उदारता ( उदार ) ( स्त्री० ) दातरी, सद्भावत, दानशीलता ।

उदारना ( क्त० स० ) चीरना, फाड़ना ।

उदाराशय ( वि० ) महान् आत्मा, ऊँचे विचारवाला ।

उदास ( उद्=ऊपर, आस=बैठना ) ( पु० ) वैराग्य, एकांत में बैठना, ( वि० ) मज्जिन, अनमना, चिंता करता हुआ, दुःखित, दुःखी, संतापा, बेपरवा ।

उदासी ( उदास ) ( वि० ) वैरागी, एकांत में रहने-वाला, मित्र और वैरी को बराबर देखनेवाला, मज्जिन, ( स्त्री० ) सोच, मज्जिनता, चिंता, क्रिऊ, दुःख, संताप, एकांतवासी-नामक साधुओं का संप्रदाय-विशेष ।

उदासीन ( उद्=ऊपर, आसु=बैठना ) ( पु० ) संन्यासी,  
वैरागी, योगी, अतिथि, वनवासी, तपसी, जिसने  
संसार छोड़ दिया और जिसके मित्र और बैरी  
बराबर हों, त्यागी, वानप्रस्थ, निरसंग, निर्वेक्ष ।

उदाहर ( स्त्री० ) धुंधला रंग, भूरा ।

उदाहरण ( उद्=ऊपर, आ=प्र, ह=तेना ) ( पु० ) दृष्टान्त,  
मिसाल ।

उद्धित ( उद्=ऊपर, ह=जाना ) ( वि० ) कहा हुआ,  
निकला हुआ, प्रकाशित, प्रकट, बढ़ा हुआ, प्रसन्न ।

उद्दीची ( स्त्री० ) उत्तर-दिशा ।

उद्दीरण ( उद्, ईर् प्रेरणा क० ) ( पु० ) कथन, कहना ।

उद्दीरित ( वि० ) कथित, कहा गया ।

उद्दीर्घर ( पु० ) ज्योड़ी, गूलर, हिजड़ा, नपुंसक, अस्त्री-  
रत्न की तोल-विशेष ।

उद्दुल्ल ( पु० ) गूल ।

उद्दोत ( वि० ) स्वच्छ, शुभ्र, प्रकाशित, ( पु० ) प्रकाश,  
दीप्त ।

उद्गम ( पु० ) उदय, आविर्भाव, निकाल ।

उद्गमन ( पु० ) ऊपर जाना ।

उद्गाता ( पु० ) सामवेद गानेवाला ब्राह्मण ।

उद्गार ( उद्=ऊपर, गू=निगलना ) ( पु० ) वमन, डकार,  
सुख, दुःख, विस्मय ।

उद्घाट ( पु० ) चौकी जहाँ रियासत की ओर से माल  
की जाँच की जाती है ।

उद्घाटन ( पु० ) प्राकट्य, प्रकाशन ।

उद्घात ( पु० ) ठोकर, धक्का, आघात, प्रारंभ, उपक्रम ।

उद्दंड ( वि० ) निडर, उजड्ड, अकलङ्क ।

उद्दाम ( वि० ) स्वतंत्र, निरंकुश, बेकहा ।

उद्दालक ( उद्=ऊपर, दल्=दो टुकड़े करना ) ( पु० ) एक  
ऋषि का नाम जो छः महीने में एक बार खाता था ।

उद्दिष्ट ( वि० ) लक्षित, दिखाया गया, ( पु० ) लक्ष  
चंदन ।

उद्दीपक ( वि० ) उत्तेजित करनेवाला, उभाड़नेवाला ।

उद्दीपन ( पु० ) उभाड़ना, बढ़ाना, प्रकाशन, तापन,  
रसों का विभाव-विशेष ।

उद्देश्य } ( उद्=ऊपर, दिश=देना ) ( पु० ) चाह, अनु-  
उद्देश्य } संधान, खोज, पता, प्रयोजन, मतलब,  
जिसके विषय में कुछ कहा जाय ।

उद्दोत } ( पु० ) प्रकाश, ( वि० ) चमकीला ।  
उद्दोत }

उद्धत ( वि० ) कुचाबो, घृष्ट, अकलङ्क, अभिमानी ।

उद्धतपन ( पु० ) उजड्डपन ।

उद्धरण ( उद्=ऊपर, ह=तेना ) ( पु० ) उद्धार करना,  
मुक्ति देना, प्राय, किसी लेख या पुस्तक के किसी अंश  
की दूसरे में ज्यों-की-त्यों नकल कर देना, आहूति ।

उद्धार ( उद्=ऊपर, ह=लेना ) ( पु० ) बचाव, छुटकारा,  
मुक्ति, निस्तारा ।

उद्धत ( वि० ) ऊँचा किया गया, उठाया गया ।

उद्भव ( उद्=प्रकट, भू=होना ) ( पु० ) पैदा होना,  
जन्म, उत्पत्ति ।

उद्भावना ( स्त्री० ) कल्पना, प्रकाश, उत्पत्ति ।

उद्भासित ( वि० ) उत्तेजित, प्रकट, विदित, प्रतीत ।

उद्भिज्ज ( पु० ) वनस्पति ।

उद्भूत ( वि० ) उत्पन्न, निकला हुआ ।

उद्भ्रांत ( वि० ) भटका हुआ, भूला हुआ ।

उद्यत ( उद्=ऊपर, यद्=रोकना ) ( वि० ) तैयार, लगा  
हुआ, प्रवृत्त ।

उद्यम ( उद्=ऊपर, यद्=रोकना, पर उद् उपसर्ग के साथ  
आने से यल काना होता है ) ( पु० ) यत्न, उपाय,  
परिश्रम, मिहनत, कोशिश, उद्योग, पेशा ।

उद्यान ( उद्=ऊपर, या=जाना ) ( पु० ) बाग, बगीचा,  
उपवन ।

उद्यानपाल ( उद्यान=कुलवार्ता, पाल=पालना ) ( पु० )  
माखी, बागवान ।

उद्यापन ( पु० ) किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने-  
वाला कृत्य ।

उद्युक्त ( वि० ) परिश्रमी, उद्यमी, यत्नवान्, तत्पर, तैयार ।

उद्याग ( उद्=ऊपर, युज्=भिलना ) ( पु० ) उपाय,  
उद्यम, यत्न, परिश्रम, चेष्टा ।

उद्योत ( उद्=ऊपर, युद्=वमकना ) ( पु० ) चमक,  
उजाळा, प्रकाश, आभा, कलक, कीर्ति, यश ।

उद् ( पु० ) ऊर्ध्विकाव ।

उद्ग ( पु० ) उत्थान, वृद्धि, बढ़ती, प्रारंभ, अभिकता ।

उद्वाह ( पु० ) विवाह, व्याह ।

उद्भिन्न ( उद्=ऊपर, बिज्=रना, कौपना ) ( वि० )  
व्याकुल, उदास, सोच में, व्यग्र, व्यस्त ।

- उद्देश ( उद्=ऊपर, विज्=उरना, कौपना ) ( पु० )  
घबराहट, व्याकुलता, चिंता, सोच, डर, आवेश ।
- उधरा ( वि० ) मुक्त, मुला हुआ ।
- उधार ( पु० ) कर्ज, देन, मँगना ।
- उधारना ( सं० उधारण, उद्=ऊपर, ह=होना ) ( कि० स० ) मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना ।
- उधेड़ना ( कि० स० ) खोजना, सुलझाना, सिझाई खोजना ।
- उधेड़बुन ( उधेड़ना+बुनना ) ( बोल० ) मिहनत, झंझट, काम, धंधा, सोच-विचार, ऊहापोह ।
- उनहार ( वि० ) सश, समान ।
- उनीचा ( वि० ) ऊँचना हुआ, नीच से मतवाला ।
- उन्नत ( उद्=ऊपर, नम्=भुकना ) ( वि० ) ऊँचा, लंबा, बढ़ित, श्रेष्ठ, उच्च ।
- उन्नतावनत ( वि० ) ऊँच-नीच, ऊबड़-खाबड़ ।
- उन्नति ( उद्=ऊपर, नम्=भुकना ) ( स्त्री० ) उँचाई, बढ़ती, वृद्धि, उदय, तरक्की ।
- उन्नमित ( उद्=ऊपर, नम्+इत ) ( वि० ) ऊपर उठाया हुआ, उत्तेजित ।
- उन्नयन ( वि० ) ऊपर ले जाना, उन्नति ।
- उन्निद्र ( वि० ) निद्रा-रहित, विकसित, खिला हुआ ।
- उन्मत्त { ( उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना ) ( पु० ) मत-  
उन्मद् } वाला, पागल, सिढ़ी, बौरहा, नरोबाज़, प्रमादी ।
- उन्मना ( वि० ) घबराया हुआ, व्याकुल, चिंतित ।
- उन्माद् ( उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना ) ( पु० )  
सिढ़ीपन, बौरहापन, पागलपन, अचेतना, वित्त-  
विभ्रम, उन्मत्तता ।
- उन्मान ( पु० ) गुलादि की तोल, तराजू की तोल, नाप ।
- उन्मीलन ( उन्. मील=मीचन ) ( पु० ) खिलना, फूलना, विकसना, खुलना ।
- उन्मुख ( वि० ) चाँभमुख, सम्मुख, सामने, उत्सुक, उत्कण्ठित ।
- उन्मूलन ( उन्=ऊपर, मूल=जमाना, रोपना, उन् उपसर्ग से उखाड़ना अर्थ हो गया ) ( पु० ) उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना ।
- उन्मेष ( पु० ) शॉल उखाड़ना, नेत्र खोजना, खिलना, पलक, बुद्धि ।
- उन्मोचन ( पु० ) मुक्त करना, छोड़ना ।
- उन्हारा ( पु० ) रूप, डीखडील ।
- उप ( उपस० ) समीप, पास, बराबर, छोटा, कम, न्यून, अधिक, आरंभ, पूजा, शुरू, नाश, यह उपसर्ग दुर् का डलटा है ।
- उपकंड ( वि० ) पास, नज़दीक, समीप, निकट, ( पु० ) घोड़ों की एक चाल ।
- उपकथा ( भा० ) कहानी, कल्पित कथा ।
- उपकरण ( पु० ) सामग्री, साधक वस्तु, सामान, राजचिह्न, चँवर, छत्र आदि ।
- उपकार ( उप=पास, क=करना ) ( पु० ) कृपा, भलाई, सहायता, नेकी, हित ।
- उपकारिका ( वि० ) उपकार करनेवाली, ( स्त्री० ) राजभवन, खेमा, तंबू ।
- उपकारी ( उपकार ) ( वि० ) उपकार करनेवाला, भला चाहनेवाला, सहायक, कृपालु ।
- उपकारिणी ( वि० ) उपकार करनेवाली ।
- उपकार्य ( वि० ) उपकार करने के योग्य ।
- उपकुर्वाण ( पु० ) वह ब्रह्मचारी जो विद्याध्ययन पूरा करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे ।
- उपकूप ( पु० ) तट, किनारा, कुएँ के पास का पानी का गढ़ा, जिसमें पशु पानी पीते हैं ।
- उपकूल ( पु० ) तीर, किनारा, तट ।
- उपकृत ( वि० ) कृतज्ञ, जिसके साथ उपकार किया गया हो ।
- उपक्रम ( उप=आरंभ, कम्=माना अर्थात् शुरू होना ) ( पु० ) प्रारंभ, आरंभ, शुरू, तितिम्मा, ज़मोमा, सूचना, भूमिका, उपधा ।
- उपक्रोश ( पु० ) भर्त्सना, निंदा ।
- उपखान ( स० उपख्यान, ख्या=कहना ) ( पु० ) उपा-  
ख्यान, कथा, कहानी, इतिहास ।
- उपगमन ( उप=समीप, गम्=जाना ) ( पु० ) यात्रा, ग्रासि, स्वीकार, पास जाना, उदय ।
- उपगुरु ( पु० ) छोटा पाठक, छोटा मास्टर, मानीटर ।
- उपगृहण ( पु० ) आखिगन, भेंट, भ्रँकवार ।
- उपग्रह ( पु० ) छोटे ग्रह, जैदी, बँधुआ ।
- उपघात ( पु० ) रोग, पीड़ा, आघात ।
- उपशय ( पु० ) संशय, बढ़ती, उन्नति ।
- उपचरित ( वि० ) आराधित, पूजित, सेवित ।

उपचर्या ( स्त्री० ) चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतिकार।  
उपचार ( उप=पास, चर=चलना ) ( पु० ) सेवा, मंत्र का जपना, वैद्य का काम, इलाज, चिकित्सा, उपाय, यत्न, वृत्त, विशवत् । “भरत हमहि उपचार न धोरा”  
—गो०तु०दा०

उपचित ( वि० ) वर्द्धित, संचित, समृद्ध।  
उपज ( सं० उप=पास, जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) बिना सोचे जो कुछ बात उसी दम कही जाय या कुछ गाया जाय, गान, तान, अंतरा, सूक्त, स्फूर्ति, पैदावार, उत्पत्ति।

उपजना ( सं० उप=पास, जन्=पैदा होना या उत्पन्न होना ) ( कि० प्र० ) उगना, बढ़ना, पैदा होना, अंकुर निकलना।

उपजाऊ ( उपजना ) ( वि० ) उर्वरा।  
उपजाप ( उप=पास, जप्=जपना ) ( पु० ) मन्त्र, क्रमेण, कपट।

उपजिह्वा ( स्त्री० ) छोटी जीभ।  
उपजीवी ( उप+जीव=जीना ) ( वि० ) आश्रयी, आसरे-गीर, अवलंबी।

उपज्ञा ( स्त्री० ) प्रथम आज्ञा।  
उपटन ( पु० ) उचटन, अभ्यंग, ( पु० ) निशान, सार।  
उपटना ( पु० ) दाग पड़ना, साँट पड़ना, निशान पड़ना, गोहिया उखड़ना।

उपट्टना ( सं० उत्पाटन, उट्=ऊपर, पट्=जाना ) ( कि० प्र० ) उखड़ना, निशान पड़ना।

उपदौकन ( पु० ) पारितोषिक, भेंट, उपहार।  
उपतंत्र ( पु० ) यामल आदि तंत्रशास्त्र, सूत्रम सूत्र।  
उपतप्त ( वि० ) दुःखित, खिन्न।  
उपत्यका ( स्त्री० ) तराई, पहाड़ों के पास की ज़मीन, घाटी।

उपदल ( पु० ) फूल की पत्ती, पान, पत्ता, मुकुल।  
उपदंश ( उप+दंश=काटना ) ( पु० ) गर्मी का रोग, साँप का काटना, सुज्ञाक, चाट।

उपदर्शक ( पु० ) मन्त्री, द्वारपाल।  
उपदा ( उप, दा=देना ) ( स्त्री० ) भेंट।

उपदिशा ( स्त्री० ) कोष, दो दिशाओं के बीच की दिशा।  
उपदिष्ट ( वि० ) उपदेश-प्राप्त।

उपदेवता ( पु० ) छोटा अथवा दूसरा देवता, भूत, प्रेत।

उपदेश ( उप=पास, दिश=देना ) ( पु० ) शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, मंत्र देना।

उपदेशक } ( उपदेश ) ( पु० ) उपदेश देनेवाला,  
उपदेशी } शिक्षक, गुरु, आचार्य।  
उपदेशा }

उपद्रव ( उप=पास, द्रु=जाना ) ( पु० ) बख्खा, उत्पात, उपाधि, बिगाड़, अन्याय, अप्पेहर, विप्लव, विद्रोह।

उपद्वीप ( उप=छोटा, द्वीप=धरती का टुकड़ा ) ( पु० ) टापू, छोटा द्वीप।

उपधर्म ( पु० ) पाप, पाखंड, नास्तिकता।  
उपधान ( उप=पास या ऊपर, धा=रखना ) ( पु० ) तकिया।

उपधायक ( वि० ) जन्मदाता, स्थापनकर्ता।  
उपधि ( पु० ) छल, कपट।

उपनयन ( पु० ) यज्ञोपवीत, उपनीत, जनेऊ।  
उपनाम ( पु० ) उपाधि, पदवी, अल्ल।

उपनिधि ( पु० ) धरोहर, धाती।  
उपनिवेश ( पु० ) कालोनी, अन्य स्थान से आकर बसने वालों की बस्ती।

उपनिषद् ( उप=पास, नि=अच्छी तरह से, सद्=पाना ) ( पु० ) वेद का उत्तम भाग, वेद का अंग, वेदांत-शास्त्र, वेद-रहस्य, तत्त्व-ज्ञान।

उपनीत ( पु० ) जनेऊ भया हुआ, ( वि० ) उपस्थित, समीपागत।

उपनेता ( पु० ) गुरु, आचार्य, ज्ञानेवाला।  
उपनेत्र ( उप=पास, नेत्र=आँख ) ( पु० ) चरमा, आँखों का सहायक काँच।

उपन्ना ( पु० ) ओढ़ने का दुपट्टा, उपरना।  
उपन्यस्त ( वि० ) धरोहर, रक्खा हुआ, अमानत।

उपन्यास ( उप=ऊपर, न्यास=रखना ) ( पु० ) स्थाग, हाथ, कथन करना, रखना, स्थापन, कहानी, कथानक।

उपपति ( पु० ) गुप्त वति, बार, जगुवा।  
उपपत्ति ( उप=पास, पट्=जाना ) ( स्त्री० ) युक्ति, योग्यता, सबूत, शोधन, समाधान, प्रमाण।

उपपत्ती ( स्त्री० ) वेरवा, परखी, रसैक।  
उपपन्न ( वि० ) मुनासिब, प्राप्त, जन्म, उपयुक्त।

उपपातक ( उप=छोटा, पातक=पप ) ( पु० ) छोटा पाप, पाप जैसे गोहत्या, बड़की की बेचना, परखी-गमन आदि।

उपपादन ( पु० ) सिद्ध करना, उद्धारना, संपादन।

उपपुराण ( पु० ) अध्याय पुराण, छोटे पुराण। इनकी संख्या १८ है।

उपभुक्त ( वि० ) भोग किया हुआ, भक्षित, जूठा।

उपभोग ( पु० ) विज्ञास, विषयों का सुखास्वादन।

उपमा ( उप=बराबर, मा=मापना ) ( स्त्री० ) बराबरी, समानता, सादृश्य, तुल्यता, दृष्टांत, मिसाल, एक अलंकार का नाम।

उपमाता ( स्त्री० ) धाया, धात्री, दूध पिखानेवाली।

उपमान ( उप=बराबर, मान=माप ) ( पु० ) उपमा देने-वाली वस्तु, जिस वस्तु से उपमा दी जाय, अवयव, सादृश्य, प्रतिमूर्ति।

उपमेय ( उप=बराबर, मेय=किया जाय ) ( वि० ) वर्णनीय, उपमा-योग्य।

उपयम ( पु० ) बिवाह, संयम।

उपयुक्त ( उप=बराबर, युज्=मिलना ) ( वि० ) योग्य, ठीक, उचित।

उपयोग ( पु० ) इस्तेमाल, युक्त करना, व्यवहार, प्रयोजन, आवश्यकता।

उपयोगी ( उप=बराबर, युज्=मिलना ) ( वि० ) अनुकूल, सहायक, योग्य, ठीक, इस्तेमाल के लायक।

उपरक्त ( वि० ) पीछाप्रस्त, विषयासक्त।

उपरत ( वि० ) भरा हुआ, उदासीनता, विरत, शांत।

उपरति ( स्त्री० ) उदासीनता, मृदु, त्याग, विरति।

उपरना ( पु० ) दुपट्टा, एकपट्टा, ओढ़नी, अचछा।

उपराम ( उप=पास, रज्=रंगना ) ( पु० ) ग्रहण, गहन, व्यसन, वासना।

उपरान्त ( उप=ऊपर, अंत=सिरा ) ( कि० वि० ) पीछे, फिर, इसके पीछे।

उपराम ( उप + रम ) ( स्त्री० ) शांति, स्थिरता, सुख, आराम, त्याग, निवृत्ति।

उपरीउपरा ( पु० ) स्पर्द्धा, चढ़ाउतरी।

उपरोक्त ( उपर + उक्त, वच्=कहना ) ( वि० ) ऊपर कहा हुआ, मज़कुराबाज़ा, पहले कहा हुआ; शुद्ध शब्द उपयुक्त है।

उपरोध ( पु० ) आड़, रोक, भटकाव, रुकना।

उपरोहित ( सं० पुगेहित ) ( पु० ) कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित।

उपल ( उप=पास, ला=देना या लेना, उप उपसर्ग के साथ आने से अर्थ फैलाना हुआ, अर्थात् जिससे पड़ा फैल

जाता है ) ( पु० ) पत्थर, पाषाण, ओला, रत्न, मेघ, चीनी, बालू।

उपलक्ष ( पु० ) संकेत, उद्देश्य, चिह्न, उपलक्ष्य।

उपलब्धि ( उप=ऊपर, लभ्=लभ ) ( स्त्री० ) प्राप्ति, हासिल, मिलना, ज्ञान, बुद्धि, अनुभव।

उपलसित ( उपल=पत्थर, सित=सफेद ) ( पु० ) संगमरमर।

उपला ( पु० ) कंठा, गोहरा, गोंडूठा।

उपली ( स्त्री० ) कंडी, गोंडूठी, उपरी, चिपकी।

उपल्ला ( पु० ) ऊपर का भाग, ऊपर की तह।

उपवन ( उप=बराबर, वन=जंगल ) ( पु० ) बाग, बगीचा, कुलवाड़ी, बाड़ी, बाटिका, कुंज, उद्यान।

उपवसथ ( पु० ) यज्ञारंभ का प्रथम दिन, गाँव, बस्ती।

उपवास ( उप, वस्=रहना, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ उपास करना होता है ) ( पु० ) व्रत, लंघन, उपास, अनाहार, भूखों रहना, फाफा।

उपविष ( पु० ) हलका विष, कृत्रिम विष, अश्लीम, धतूरा आदि।

उपविष्ट ( वि० ) बैठा हुआ।

उपवीत ( उप=पास, अजू=जाना ) ( पु० ) जनेऊ, यज्ञसूत्र।

उपवेद ( उप=बराबर, वेद ) ( पु० ) १ आयुष २ गंधर्व ३ धनुष ४ स्थापत्य इन्हीं चार विद्याओं को उपवेद कहते हैं, जो वेद से निकली हैं। इनमें से आयुष प्रज्ञा, इंद्र और भस्वंतरि आदि से फैली है। उसमें रोगों की पहचान और औषध आदि का वर्णन है। दूसरी गंधर्वविद्या को भरत ने निकाला और फैलाया और तीसरी धनुर्विद्या को विश्वामित्र ने राजपूतों को शस्त्रों के काममें लाने के लिये निकाला और चौथी स्थापत्यविद्या को ६४ कलाओं के काम में लाने के लिये विश्वकर्मा ने निकाला।

उपवेष्टन ( उप=ऊपर, विष्=छपेटना ) ( पु० ) छपेटना, बसना, जाना।

उपशम ( उप+शम्=रोकना, या दबाना ) ( पु० ) शांति, शमन, समाई, इंद्रियनिग्रह।

उपश्रुत ( वि० ) स्वीकृत, अंगीकृत।

उपसंहार ( पु० ) शेष, निरुद्ध, सीमांता, संक्षेप।

उपस ( पु० ) दुर्गंध।

उपसना (वि०) सदन, पचना ।

उपसर्ग (उप=पास, सृज=सैदा होना) (पु०) ग्रन्थ जो क्रिया के साथ लगाए जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप, सम, अनु, अव आदि; उपद्रव, पीड़ा, प्रेत, ग्रह, उत्पात, अमंगल, उत्पत्ति ।

उपसर्जन (पु०) उपद्रव, बाधना, त्याग ।

उपसर्पण (पु०) अनुवृत्ति, उपासना ।

उपसगर (पु०) खाड़ी ।

उपस्त्रा (स्त्री०) रस्ते, उपपत्ती ।

उपस्थ (पु०) स्त्री और पुरुष का चिह्न, भग, लिंग, (वि०) पास बैठा हुआ ।

उपस्थनिग्रह (पु०) काम-दमन, काम को बश में रखना ।

उपस्थल (पु०) कूहा, चूत, नितंब, पेड़ ।

उपस्थाता (पु०) नौकर, सेवक, चाकर ।

उपस्थान (उप=पास, स्था=उहरना) (पु०) उपस्थिति, मौजूदगी, सेवा, नज़दीकी, हाज़िरी, स्तुति पूजा, सभा, समाज ।

उपस्थित (उप=पास, स्था=उहरना) (वि०) तैयार, हाज़िर, सामने, पास रहता हुआ, पास आया हुआ ।

उपस्थिति-पत्र (पु०) नक़्शा हाज़िरी, उपस्थान, निकट होना, मौजूदगी ।

उपहत (वि०) पीड़ित, नष्ट किया हुआ, ध्वस्त ।

उपहसित (वि०) उपहास किया हुआ ।

उपहार (उप=पास, ह=लेना) (पु०) भेंट, पूजा, नज़राना ।

उपहास (उप=दोष कहना, हास=हँसी, हस=हँसना) (पु०) उट्टा, हँसी, निंदा के साथ हँसी करना, बोली-ठोली बोलना, परिहास ।

उपहासक (उप+हास+अक) (पु०) हँसनेवाला, मसखरा ।

उपहास्य (उप+हास+य) (वि०) हँसने-योग्य, निंदा-योग्य, निन्दनीय ।

उपहित (वि०) समर्पित, गृहीत, उपवीत, स्थापित ।

उपहत (वि०) खाया हुआ, दिया हुआ ।

उपाकर्म (पु०) संस्कारपूर्वक वेदाध्ययन ।

उपाख्यान (उप, आ, ख्या=प्रकट करना) (पु०) पुरानी

कहानी, इतिहास, बात, कहानी, कथा, किसी कथा की अंतर-कथा ।

उपाङ्गना (सं० उत्पाटन, उद्=ऊपर, पट=जाना) (क्रि० सं०) उखाड़ना ।

उपात (वि०) प्राप्त, गृहीत ।

उपादान (पु०) ज्ञान, परिचय, बोध, स्वीकार, ग्रहण, प्रवृत्तिजनक ज्ञान ।

उपादेय (वि०) अच्छा, स्वीकार करने योग्य, उपयोगी ।

उपाध (सं० उप, आ, धा=रखना) (स्त्री०) बखेड़ा, बिगाड़, उपद्रव, अन्याय, उत्पात ।

उपाधान (उप+आधान) (पु०) तकिया, बालीन, उपधान ।

उपाधि (उप=पास, आ=से, धा=रखना) (स्त्री०) धर्म की चिंता, विशेषण, नाम, पदवी, छल, उपनाम, अवल ।

उपाधिकारक (उपाधि+कारक, कृ=करना) (वि०) भगवान्, मुफ़सिद, क्रसादी ।

उपाध्याय (उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना) (पु०) अध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुदरिस, गुरु ।

उपांत (वि०) पास, निकट, समीप ।

उपानह (उप, आ, नह=बाँधना) (पु०) जूता, पगरखी, पनही, पापोश ।

उपाना (सं० उपन) (क्रि० सं०) पैदा करना, इकट्ठा करना, कमाना ।

उपाय (उप=पास, अय=जाना अथवा, उप, आ, इगु=जाना) (पु०) यत्न, तद्बीर, उद्यम, उद्योग, मिहनत, साधन, इलाज ।

उपायन (पु०) भेंट, नज़र, उपहार, पास जाना ।

उपायी (वि०) साधक, यत्नी, तद्बीरी, नटखट ।

उपारी (क्रि० सं०) उखाड़ी, उखाड़ना, गड़ी हुई चीज़ को बाहर लौटाना ।

उपार्जन (उप=पास, अर्ज=इकट्ठा करना) (पु०) इकट्ठा करना, संग्रह, संचय, कमाई ।

उपार्जनीय (उपार्जन+अनीय) (वि०) संग्रह योग्य, जोड़ने लायक ।

उपार्जित (वि०) संचित, जोड़ा हुआ ।

उपालंभ (उप+आ, लभ=कठोर बचन क०) (पु०) शिकायत, गिद्धा, उखड़ना, वार्ता, बातें ।

उपालंभन (पु०) खानत, मजामत, किड़की ।

उपास (सं० उपवास) (पु०) व्रत, जपन, अनाहार, उपवास, भूखे रहना ।

उपासक (उप=पास, आसू=बैठना) (वि०) उपासना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त।  
 उपासन (पु०) सेवा, आराधना, धनुर्विद्या।  
 उपासना (उप=पास, आसू=बैठना) (स्त्री०) सेवा, पूजा, टहल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना।  
 उपासनीय (उप+आसू+अनीय) (वि०) सेवा योग्य, आराध्य, सेव्य, मित्रदत्त के जायक।  
 उपास्य (उप=पास, आसू=बैठना) (वि०) उपासना करने योग्य, पूजने योग्य, आराधना करने योग्य।  
 उपेक्षा (उप=पास+ईक्ष्=देखना, उप के लगने से छोड़ना अर्थ हो गया) (स्त्री०) त्याग, छीन, शरुद्धत, तिरस्कार, अनादर।  
 उपेक्षित (उप + ईक्षित) (वि०) छोड़ा गया, त्यक्त, निन्दित, निरस्कृत।  
 उपेत (उप+इ+त, इ=जाना) (वि०) शामिल, युक्त।  
 उपेद्र (उप=छोटा, ईद्र=देवताओं का राजा) (पु०) वामन, इन्द्र का छोटा भाई।  
 उपोद्घात (पु०) ग्रंथ के आरंभ का वक्तव्य, भूमिका।  
 उपनना (सं० उद्=ऊपर, ण=जाना) (कि० अ०) बहुत आँच लगने से दूध अथवा और किसी चीज़ का हॉई अथवा बटखोई से बाहर निकल आना, उबलना।  
 उबकना (कि० अ०) वमन होना, कैं होना, उखटी होना, रक् करना।  
 उबटन } (सं० उद्गर्तनः उद्, वृत्=होना) (पु०)  
 उबटना } शरीर का मैल उतारने के लिये आटा, सरसों, बेसन आदि की बनी हुई चीज़, मंजन, अभ्यंग।  
 उबरण (पु०) आड़, बचाव।  
 उबरा (वि०) फाकत, बचा हुआ।  
 उबलना (सं० उन्=ऊपर, बल=जाना) (कि० अ०) उबलना, खींचना, झोटना, मिलना, खलबलाना, उलीजना।  
 उबलना (कि० अ०) सड़ना, गलना, पचना, विगड़ना।  
 उबहना (स्त्री०) कुँ से पानी निकालने की रस्सी, उबहनी।  
 उबाना (कि० सं०) रोपना, लगाना, बोना, तंग करना, (वि०) भंगे पैर।

उबारना (उद्धरण) (कि० सं०) बचाना, छुड़ाना, रखना।  
 उबारा (कि० सं०) उद्धार किया, बचा लिया।  
 उबासी (स्त्री०) जँग्हाई।  
 उभक (पु०) भालू, रीछ।  
 उभय } (वि०) दो, दोनों, आपस में।  
 उभो }  
 उभरना (सं० उद्=ऊपर, भृ=भरना) (कि० अ०) उभरना, बढ़ना, बहुत भरना, निकलना, निकल आना, उठना, उठ आना।  
 उभराई (पु०) फुलाव, इतराई।  
 उभाड़ना (कि० सं०) उत्तेजित करना, उकसाना, बहकाना।  
 उभाना (कि० अ०) ऊपर उठाना, उठाना, खड़ा करना  
 उभार (पु०) फुलाव, उठाव।  
 उभारना (कि० सं०) फुलाना, उकसाना, खड़ा करना, भड़काना।  
 उभंग (स्त्री०) बहुत झुंसी, आनंद-मग्नता, चाह, इच्छा, अभिखाप, धुन, तरंग, खहर, जोश।  
 उभंगी (वि०) उलपवामिखापी।  
 उभँटना } (कि० अ०) झलकना, बहुत भरने से फूट  
 उभड़ना } निकलना, फलकना, बहना, जल-थल होना।  
 उभड़-उभड़कर रोना (बोल०) फूट-फूटकर रोना।  
 उभर (स्त्री०) आयु, वय, अवस्था।  
 उभरी (स्त्री०) पौदा विशेष, जिसे जलाकर सजी खार बनाया जाता है।  
 उभस (स्त्री०) गरमी जो हवा के न चलने पर लगती है।  
 उमा (उ=शिव, मा=मानना, अथवा "श्रीः शिवस्य मा=लक्ष्मीः" शिव की लक्ष्मी, या उ=हे, मा=मत "हे वत्स मा कुद" जैसे कुमारसंभव-नाट्य में लिखा है—"उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा, पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम" अर्थात् जब पार्वती तप करने को जाती थी, तब उनकी मा ने कहा कि हे बेटी! तप मत कर) (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवरानी, गिरिजा, भवानी, कलावी।  
 उमापति (उमा=पार्वती, पति=मर्ती) (पु०) महादेव, शिव।



उमासुत ( उमा=पार्वती, सुत=पेटा ) ( पु० ) कासिकेय,  
देवताओं के सेनापति, गणेश ।  
उमेठन ( स्त्री० ) ऐंठन, पेंच, मरोड़ ।  
उमेश ( उमा=पार्वती, ईश=पति ) ( पु० ) महादेव,  
शिव ।  
उम्दा ( वि० ) अच्छा, बढ़िया, उत्तम ।  
उम्मी ( स्त्री० ) जी-नेहूँ की हरे दानेवाली बालें ।  
उम्मेद ( स्त्री० ) भरोसा, आशा, उम्मीद ।  
उम्मेदवार ( पुं० ) नौकरी की आशा करनेवाला ।  
उम्मेदवारी ( स्त्री० ) नौकरी को आशा में किसी दफ्तर  
में बिना वेतन के काम करना ।  
उम्र ( स्त्री० ) देखो उमर ।  
उर ( सं० उरस्, ऋ=जाना ) ( पु० ) छातो, हिरदा, हृदय,  
वचःस्थल ।  
उरग ( उरस्=छाती, गम्=चलना, जो छाती से चले ) ( पु० )  
साँप, नाग, सर्प, भुजंग ।  
उरगना ( कि० अ० ) सहना, सहन करना ।  
उरग्र ( स्त्री० ) भेड़ी ।  
उरगाद् ( उरग=साँप, अद्=छाना ) ( पु० ) गरुड़, विष्णु  
का वाहन ।  
उरगारि ( उरग=साँप, अरि=वैरी ) ( पु० ) गरुड़, विष्णु  
का वाहन ।  
उरज ( पु० ) स्तन, कुच, पयोधर ।  
उरझना ( कि० अ० ) जगना, खपटना, अटकना, आ-  
सक होना ।  
उरझाना ( कि० स० ) फँसना, अटकना ।  
उरा ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि ।  
उरिन ( वि० ) श्रेण से मुक्त ।  
उरिण ( सं० ) अरुण, अन्=नहीं, ऋण=कर्ज ) ( वि० )  
बिना कर्ज, श्रेण से छूटना, उत्तरना, उद्धार ।  
उरु ( ऊर्ण=ठकना ) ( वि० ) चौड़ा, विशाल, बड़ा,  
बहुत, अधिक, जाँच ।  
उरुवरा ( उरु=वरा, वीर, ऋ=जाना ) ( स्त्री० ) उप-  
जाऊ धरती ।  
उर्वशी ( उरु=बहुत, अश=वश करना, जो अपने रूप से  
बहुतों को वश कर लेती है ) ( स्त्री० ) एक अप्सरा का  
नाम, स्वर्ग की वेश्या, इसकी उत्पत्ति नारायण की  
जंघा से मानी जाती है । रवेतद्वीप में नारायण की

तपस्वा भंग करने के हेतु इंद्रद्वारा भेजी गई अप्स-  
राओं की सुंदरता की मान-मर्दन करने के लिये  
उर्वशी की नारायण ने उत्पन्न किया था इसकी  
सुंदरता देखकर वे कजित होकर चली गई ।  
उर्वीजा ( उर्वी=धरती, जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) सीता,  
जानकी; कहते हैं, जब राजा जनक यश के लिये  
धरती जोत रहे थे तब 'जमीन' में से सीताजी  
निकली थीं ।  
उर्वी ( स्त्री० ) धरती, जमीन, पृथ्वी ।  
उलंग ( वि० ) नग्न, दिगंबर ।  
उलचना ( कि० ) छानना ।  
उलझना ( कि० अ० ) फँसना, खिपटना, भगड़ना ।  
उलटना ( कि० स० ) फेरना, दुहराना, मोड़ना, तले-  
ऊपर करना, नीचे-ऊपर करना, झींझना ।  
उलट-पुलट ( बोल० ) उधल-पुधल, ऊपर-नीचे, तले  
ऊपर, गटपट, गड़बड़, इधर का उधर उधर का  
इधर ।  
उलहना ( सं० ) उपालंभ, उप आ, लप्=पाना ) ( पु० )  
शिकायत, पुकार, निंदा, दोष ।  
उलहना देना ( बोल० ) शिकायत करना, पुकारना ।  
उलीचना ( कि० स० ) उबेचना, जल सींचना, पानी  
लेना, आवश्यकता से अधिक व्यय करना ।  
उलूक ( वल्=वेरना ) ( पु० ) उरलू, घुग्घू ।  
उलूखल ( पु० ) ओखली, ओखरी ।  
उलूपी ( स्त्री० ) नागकन्या, अर्जुन की पत्नी ।  
उलेटा ( पु० ) पराँठा, परामटे, परतदार मोटी पुरी ।  
उल्का ( उल्=बलाना ) ( स्त्री० ) लूका, आग या तारा  
जो आकाश से गिरता है ।  
उल्लंघन ( उल्=ऊपर, लवि=पार होना ) ( पु० ) उल्टा  
करना, रीति तोड़ना, झींझना ।  
उलथा ( पु० ) तर्जुमा, अनुवाद ।  
उल्लास ( उल्=ऊपर, लस्=खेड़ना, खुशी करना ) ( पु० )  
हर्ष, आनंद, हुलास, झुशी, प्रसन्नता, अध्याय,  
परिच्छेद ।  
उल्लू ( सं० उलूक ) ( पु० ) घुग्घू, पेसा, उलूक, एक  
जानवर का नाम, गँवार, मूख, उजड़ ।  
उल्लेख ( उल्, लिम्=लिखना ) ( पु० ) बर्णन, बखाना,  
एक अर्थकार का नाम ।

उल्लोच ( पु० ) चाँदनी ।

उल्लोल ( पु० ) हिखोर, बड़ी भारी खहर, महातरंग ।

उल्लवण ( पु० ) वशिष्ठ का एक पुत्र, जाखी, जरायु ।

उल्लाना ( वण+उल्लान, वण=रहना ) ( पु० ) शुक्राचार्य, वैश्यगुरु ।

उपा ( उप=बमकना ) ( पु० ) भोर, तड़का, पोह, प्रभात, ( स्त्री० ) बायासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री ।

उपू ( उप=मारना ) ( पु० ) ऊँट ।

उष्ण ( उप=जलाना ) ( पु० ) गर्म ।

उष्णता ( उष्ण=गर्म ) ( स्त्री० ) गरमी ।

उष्णीष ( पु० ) पगड़ी, सिरबंद ।

उष्मा ( उप=जलाना, वा गम होना ) ( स्त्री० ) गरमी, धूप, ताप, उमस ।

उसता ( पु० ) नाई, हउजाम, नायित ।

उसरना ( सं० अपसरण, आप=पीछे, सु=वाना ) ( कि० प्र० ) टखना, पीठ देना, हटना ।

उसारा ( पु० ) ओसारा, खोदी, बरामदा ।

उसास ( सं० उदास, उद=ऊँचा, उवास=साँस ) ( पु० )

साँस, ऊँची साँस, ठंडी साँस ।

उसीसा ( सं० उ=श्रीर्षक, उर=ऊपर, श्रीर्ष=सिर ) ( पु० )

सिरहाना, तकिया ।

उसूल ( पु० ) सिद्धांत, नियम ।

उस्तर ( वि० ) सेतमेंत, बेदाम ।

उस्तरा ( पु० ) छुरा, उस्तुरा ।

उस्ताद ( पु० ) गुरु, शिक्षक, अध्यापक ।

उस्त्र ( पु० ) साँड़, बैल, किरण ।

उस्त्रधन्वा ( पु० ) इंद्र ।

उस्त्रा ( स्त्री० ) गाय, धेनु ।

उहदा ( पु० ) पद, स्थान ।

उहदेदार ( पु० ) अक्रसर, पदाधिकारी ।

उहार ( पु० ) परदा, पट ।

उहूल ( स्त्री० ) मोम, उमंग, तरंग, जलहर ।

## ऊ

ऊ ( अव=वाना ) ( पु० ) महादेव, ब्रह्मा, ( प्रश्नवाच्य ) बंधन, मोच-प्रधान, चाँद, ( अव० बो० ) हे ।

ऊख ( सं० इक्षु ) ( स्त्री० ) ईख, केतारी, गन्ना ।

ऊखल ( पु० ) ओखली ।

ऊगरा ( वि० ) सिरु उबाला हुआ ।

ऊँघना ( कि० प्र० ) निद्रालु होना, झपकी लेना, आँख खगना ।

ऊजड़ ( वि० ) बीरान, उजड़ा हुआ ।

ऊजर ( वि० ) साफ़, निर्मल, प्रकाश, उजला ।

ऊँच } ( सं० उच्च ) ( वि० ) ऊँचा, ऊपर ।

ऊँचा } ऊँचा निवास नीच करदूती ( बोल० ) उच्च स्थान में रहकर नीच काम करनेवाले ।

ऊँचा बोल बोलना ( बोल० ) घमंड से बोलना, अभिमान से बोलना ।

ऊँचा सुनना ( बोल० ) कम सुनना ।

ऊँचाकानी ( बोल० ) बहरापन ।

ऊँची दुकान का फाँक पकवान ( बोल० ) जो डींग मारते हैं, वे उधले होते हैं ।

ऊँचे बोल का बोल नीचा ( बोल० ) जो कोई किसी को घमंड का बोल बोलता है, वह अंत में आप हलका और नीचा होता है ।

ऊटना ( कि० प्र० ) उमंग में आना, उत्साहित होना ।

ऊटपटांग ( वि० ) बेसिर-पैर का, अटपटा ।

ऊढ़ ( वि० ) विवाहित ।

ऊढ़ा ( वि० ) विवाहिता स्त्री, नायिका-भेद में एक प्रकार की नायिका ।

ऊँट ( सं० उष्ट्र, उप=पारना ) ( पु० ) एक जानवर का नाम ।

ऊँटकटारा ( पु० ) एक तरह के कँटीले पेड़ का नाम जिसको ऊँट चरते हैं, भरभाँड़, ऊँटकटाई ।

ऊत ( वि० ) मूर्ख, निःसंतान ।

ऊद } ( सं० उद्र, उद=भिगीना ) ( पु० ) ऊदयिलात्र } एक पानी के जानवर का नाम

ऊदघल्ली ( स्त्री० ) धूपबत्ती ।

ऊदा ( सं० अवदात, अव, दे=शुद्ध करना ) ( वि० ) भूरा, धुँधला ।

ऊधम ( पु० ) उपद्रव, उरगत, दंगा, फसाद ।

ऊधो ( सं० उद्धव ) ( पु० ) श्रीकृष्ण के मित्र और चचा ।

ऊन ( सं० ऊर्ण, ऊणु=दकना ) ( स्त्री० ) भेड़ी-बकरी के पीठ के बाल, पशम ।

ऊन } ( ऊन=रुम होना ) ( वि० ) कम, कमती, थोड़ा, न्यून, ऊना } हीन "सुनुकपीस अनि मानेसि ऊना" गो० तु० दा०

ऊपर ( सं० उपरि ) ( कि० वि० ) ऊँचा, ऊर्ध्व, अधिक ।

ऊपर से ( बोल० ) ऊपर के ऊपर ।

ऊपरी ( ऊपर ) ( वि० ) विदेशी, परदेशी, ऊपर का, बाहरी, दिखाऊ ।

ऊवर ( पु० ) विकट मार्ग, औघट ।

ऊरु ( पु० ) जंघा, जाँघ ।

ऊर्ज ( पु० ) बल, शक्ति, कार्तिक-मास, काव्यालंकार-विशेष ।

ऊर्जस्वल ( वि० ) बलवान्, शक्तिमान् ।

ऊर्जस्वी ( वि० ) प्रतापी, शक्तिशाली ।

ऊर्ण ( पु० ) ऊन ।

ऊर्णनाभ ( पु० ) रेशम का कीड़ा, लूना, मकड़ी ।

ऊर्णा ( स्त्री० ) ऊन, चित्ररथ गंधर्व की स्त्री ।

ऊर्ध्वपुंड्र ( सं० ऊर्ध्वपुंड्र, ऊर्ध्व=लंबा, पुंड्र=तिलक, पुंड्रि=मलना ) ( पु० ) लंबा तिलक जैसा वैष्णव लोग लगाते हैं, वैष्णवी तिलक ।

ऊर्ध्वसाँस ( सं० ऊर्ध्वश्वास, ऊर्ध्व=ऊपर, श्वास=साँस )

( पु० ) उसास, ऊपर का दम, साँस, दम, श्वास का रोग-विशेष ।

ऊर्ध्व ( उर्ध्व=ऊपर, दा=छोड़ना ) ( वि० ) ऊपर, ऊँचा, लंबा ।

ऊर्ध्वबाहु ( ऊर्ध्व=ऊँचा, बाहु=भुजा ) ( वि० ) ऊँचा हाथ रखनेवाला, तपसी, तपस्वी जो अपना हाथ ऊँचा रखता है ।

ऊर्मि ( ऋ=ज ना ) ( स्त्री० ) लहर, तरंग, पीड़ा, शिबन ।

ऊषर ( उप=नीमा होना ) ( वि० ) खारी धरती, बजर धरती, ऐसी धरती जिसमें बोने से कुछ नहीं उपजता ।

ऊषा ( उप=वमकना ) ( स्त्री० ) बाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री, ( पु० ) भोर, तड़का, पौ, प्रभात ।

ऊषाकाल ( उप=भोर, काल=प्रमथ ) ( पु० ) प्रातःकाल, बिहान, भोर, प्रभात ।

ऊहापोह ( ऊह=नर्क करना ) ( स्त्री० ) तर्क-वितर्क, दलील ।



## ऋ

ऋ ( स्त्री० ) अदिनि, देवताओं की मा, निदा, ( पु० ) सूर्य, गणेश, विष्णु ।

ऋक् ( ऋच=पराहना ) ( पु० ) ऋग्वेद, पहला वेद ।

ऋक्थ ( पु० ) धन, संपत्ति, सोना, हिस्सा, पितृधन ।

ऋक्ष ( ऋच=पराहना ) ( पु० ) रीछ, भालू, नक्षत्र ।

ऋग्वेद ( ऋच+वेद ) ( पु० ) पहला वेद ।

ऋचा ( ऋच=पराहना ) ( स्त्री० ) वेद का मंत्र, वेद का कांड, कांडिका ।

ऋक्षेश ( सं० ऋक्षेश, ऋक्ष=रीछ, ईश=राजा ) ( पु० ) जामवंत, रीछों का राजा ।

ऋजीप ( पु० ) सोमजता की सीठी, लोहे का तसला ।

ऋजु ( ऋज=नाना, इकट्ठा करना अथवा, अर्ज=इकट्ठा करना ) ( वि० ) सीधा, सरल, सूधा, सोफा ।

ऋण ( ऋ=जाना ) ( पु० ) उधार, कर्जा, बीजगणित में घटाव का चिह्न—, मनकी, गुरुऋण, मातृऋण, पितृऋण, ये तीन ऋण कहे गए ।

ऋणपत्र ( पु० ) तमस्तुक ।

ऋणमुक्तपत्र ( पु० ) फारिसप्तती ।

ऋणिया } ( ऋण=कर्तृ ) ( वि० ) कर्जदार, देनदार,  
ऋणी } जिसके सिर कर्ज हो, एहसानमंद, धन्य-  
ऋनियाँ } वाद करनेवाला, शुकगुजार ।  
ऋनी

ऋत ( ऋत=जाना, दान=देना ) ( पु० ) सत्य, मोक्ष, जल, पूजन, इतर. दीप्त, और शिखोंछ, कटे खेत से वाली बोनना ।

ऋतु ( ऋ=जाना ) ( स्त्री० ) मौसम, वसंत आदि छः ऋतु १ वसंत ( चैत्र और वैशाख ) २ ग्रीष्म ( ज्येष्ठ और आषाढ़ ) ३ वर्षा ( सावन और भादों ) ४ शरद ( कुंआर और कार्तिक ) ५ हिम ( अग्रहन और पूस ) ६ शिशिर ( माघ और फागुन ) । एक ऋतु दो महीने रहती है, स्त्रीधर्म, स्त्री के कपड़ों से होने का समय ।

ऋतुकाल ( पु० ) रजोदर्शन के बाद के १५ दिन ।

ऋतुगमन ( पु० ) ऋतुप्रमथ में स्त्री के पास जाना ।

ऋतुचर्या ( स्त्री० ) ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार का नियम ।

ऋतुदान ( पु० ) गर्भाधान ।

ऋतुमती ( ऋतु=स्त्रीधर्म, मती=वाली ) ( स्त्री० ) कपड़ों से, रजस्वला, हैज से ।

ऋतुराज ( ऋतु=मौसम, राजन्=राजा ) ( पु० ) वसंतऋतु, मौसमबहार ।

**ऋतुस्नान** ( ऋतु=श्रीधर्म, स्नान=नहाना ) ( पु० )  
स्त्रियों का कपड़े से होने के पोछे चौथे दिन का स्नान ।

**ऋत्विज्** ( ऋतु=समय, यन्=यज्ञ करना ) ( पु० ) यज्ञ करनेवाला, पुरोहित, याजक ।

**ऋद्ध** ( वि० ) धनाढ्य, संपन्न ।

**ऋद्धि** ( ऋध्=वढ़ना ) ( स्त्री० ) संपदा, संपत्ति, धन, दौलत, बढ़ती, एक श्रीगंध का नाम, पार्वती, गिरिजा, रुद्राणी ।

**ऋभुक्ष** ( पु० ) वज्र, स्वर्ग, इंद्र ।

**ऋपभ** ( पु० ) बैल, वृषभ ।

**ऋपभदेव** ( पु० ) विष्णु के चौबीस औतारों में से एक औतार ।

**ऋपभध्वज** ( पु० ) शिव ।

**ऋषभी** ( स्त्री० ) पुरुष के समान रंगरूपवाली स्त्री ।

**ऋषि** ( ऋषू=जाना ) ( पु० ) मुनि, तपस्वी, यती, ऋषि सात प्रकार के हैं—१ श्रुतिषि जिसने पवित्र कथा सुनी हो, २ कांडर्षि जो वेद का कोई मुख्य कांड सिखलाता है, ३ परमर्षि जिसमें मुनि भेज आदि हैं, ४ महर्षि जिसमें व्यास आदि हैं, ५ राजर्षि जैसे विश्वामित्र, ६ ब्रह्मर्षि जैसे वसिष्ठ आदि और ७ देवर्षि जैसे नारद आदि ।

**ऋषीश** ( ऋषिमुनि, ईश=स्वामी, राजा ) ( पु० ) ऋषियों में मुख्य अथवा प्रधान ।

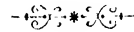
**ऋष्यकेतु** ( पु० ) कामदेव का पुत्र, अनिरुद्ध ।

**ऋष्यप्रोक्ता** ( स्त्री० ) सतावर ।

**ऋष्यमूक** ( ऋष्य=हरिण, ऋषू=जाना, मूक=गूँगा ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जो किष्किंधापुरी के पास है ।

## ऋ

**ऋ** ( स्त्री० ) देवताओं की मा, दानवों की मा, ( पु० ) शिव, भैरव, राक्षस, ( अन्व० ) भय और निंदा को जतलानेवाला अव्यय ।



## ए

**ए** ( इगू=जाना ) ( पु० ) विष्णु, ( अन्व० ) हे, संबो- धन का सूचक ।

**एक** ( इगू=जाना ) ( वि० ) गिनती का पहला अंक, मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल, सिर्फ ।

**एकआध** ( बोल० ) कुछ, थोड़ा, एक या आधा ।

**एक की दश सुनाना** ( बोल० ) यह बोलचाल वहाँ बोला जाता है जब कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गाली दे तो वह उसके बदले में बहुत-सी बुरी बातें कह और बहुतेरी गालियाँ दे ।

**एकचक्र** ( वि० ) चक्रवर्ती, ( पु० ) सूर्य, सूर्य का रथ ।

**एकचित्त** ( एक, चित्त=मन ) ( वि० ) एकमन, जिसका ध्यान किसी एक ही चीज़ पर हो ।

**एकलुत्र** ( वि० ) अकंटक ।

**एकजन्मा** ( वि० ) शूद्र, राजा ।

**एकजाई** ( स्त्री० ) पहलौठी, एक बार प्रसव करनेवाली ।

**एकतरा** ( पु० ) अंतरिया उवर

**एकत्र** ( एक+त्र जगह अर्थ में प्रत्यय ) ( कि० वि० ) इकट्ठा, इकठौर, एक जगह ।

**एकत्रित** ( वि० ) इकट्ठा किया हुआ ।

**एकदा** ( एक+दा समय अर्थ में प्रत्यय ) ( कि० वि० ) एक बार, एक समय ।

**एकधा** ( एक+धा, प्रकर अर्थ में प्रत्यय ) ( कि० वि० ) एक भाँति, एक प्रकार ।

**एक न एक** ( बोल० ) एक या दूसरा, कोई न कोई ।

**एकवाल** ( पु० ) प्रताप, तेज, स्वीकार ।

**एकरस्ती** ( बोल० ) बहुत थोड़ा ।

**एकरस** ( पु० ) जो एक-सा रहे, जन्म मरणरहित ।

**एकरार** ( पु० ) प्रतिज्ञा, स्वीकृति ।

**एकरूप** ( एक, रूप=डौल ) ( पु० ) बराबर, एक-सा, सरीखा, सरस ।

**एकला** ( सं० एकल, एक, ला=लेना ) ( वि० ) अकेला,

**एकेला** केवल, निराखा, सिर्फ, तनहा ।

**एकलौता** ( सं० एकल ) ( वि० ) एक ही ( बेटा ) ।

एकसर ( एक, सृ=जाना ) ( कि० वि० ) अकेला, एक पक्ष का इकहरा ।

एकसार ( वि० ) समान ।

एक-से दिन न रहना ( बोल० ) सदा कोई न धनवान् रहता है न गरीब, दशा का फेरफार होना ।

एकहायन ( वि० ) एक वर्ष का ।

एकहारा ( वि० ) दुर्बल शरीर, कृश, क्षीण, इकहरा ।

एका ( सं० एक=एकपन ) ( पु० ) मेल, मिलाप, किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साजिश ( स्त्री० ) दुर्गा, भगवती ।

एकाएकी ( सं० एक ) ( कि० वि० ) अचानक, एक बार में, दक्ताश्चतन् ।

एकाकार ( वि० ) एकमय, एकाचार, पशु-समान आचार ।

एकाक्ष ( एक, अक्षि=प्राँख ) ( पु० ) काना, एक आँख-वाला, एकचरम, कोर, कागा, कौआ ।

एकाग्र ( एक, अग्र=आगे ) ( वि० ) एकचित्त, एक मन, एक दिल, किसी काम में लगा हुआ ।

एकादशी ( एक+दशन्=दश ) ( स्त्री० ) ग्यारहवीं तिथि, हिंदी-महीने के पाल का ग्यारहवाँ दिन ।

एकाधिपति ( एक, अधिपति=राजाधिराज ) ( पु० ) चक्रवर्ती राजा ।

एकांत ( एक, अंत=इद ) ( वि० ) एक ओर, एक तरफ, अलग, निराला, किनारे, जुदा, आप-ही-आप, भिन्न, निर्जन, शून्य ।

एकाह ( वि० ) एक दिन में समाप्त होनेवाला ।

एकीकरण ( पु० ) एक करना ।

एकैक ( वि० ) प्रत्येक ।

एकौभा ( वि० ) अकेला ।

एकौतना ( कि० अ० ) गरभाना, धान-मेहूँ में गाभ का निकलना ।

एकौंट ( पु० ) लेखा, हिसाब ।

एग्रीकल्चरल कानफ्रेंस ( स्त्री० ) कृषि-विषयक सभा, खेतों के बारे में कमेटी ।

एंजिनियर ( पु० ) यंत्रज्ञ, इमारत बनानेवाला, इंजीनियर ।

एज्युकेशन ( पु० ) शिक्षा, तत्त्वज्ञीम ।

एड ( स्त्री० ) एबी, एबी की मार, घोड़े के चलाने के लिये एबी की ठोकर ।

एड मारना ( बोल० ) ठोकर मारना, एबी की ठोकर मारकर घोड़े को चलाना ।

एड्डी ( स्त्री० ) पैर का पिछला भाग ।

एड्डी चोटी का एसीना एक करना ( बोल० ) अत्यधिक परिश्रम करना, जान लड़ा देना ।

एड्रेस ( पु० ) अभिवादनपत्र, सिपासनामा, पता, सिरनामा, लिफाफा, बयान करना, अर्ज करना ।

एड्डा ( वि० ) शक्तिशाली, बलवान् ।

एड्डा-टेड्डा ( वि० ) तिरछा, बाँका ।

एण ( पु० ) कस्तूरी-मृग, काला मृग ।

एणमद् ( पु० ) कस्तूरी ।

एतत् ( सर्वना० ) यह, ( वि० ) इस ।

एतद्दर्थ ( अ० ) इस वास्ते ।

एतवार ( सं० आदित्यवार ) ( पु० ) इतवार, रविवार, आदित्यवार, यकीन, विश्वास ।

एतादृश ( वि० ) इसी तरह से, ऐसा ही ।

एतावत् ( वि० ) इतना, इतनी, यहाँ तक ।

एनस ( पु० ) अपराध, पाप ।

एमन ( पु० ) राग-विशेष ।

एरंड ( ईर=जाना ) ( पु० ) अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम ।

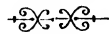
एलक ( पु० ) मैदा चालने की चक्की ।

एला ( इल=जाना, भेजना ) ( स्त्री० ) इलायची, एलाची ।

एत्रम् ( इगू=जाना ) ( अ० ) इस प्रकार, इस भाँति, इस तरह ।

एहतिहात ( पु० ) परहेज, सावधानी, चौकसी ।

एहसान ( पु० ) कृतज्ञता ।



ऐ

ऐ ( पु० ) शिव, बुझाना, संबोधन करना ।

ऐकट ( पु० ) नियम, क़ायदा ।

ऐक्य { ( पु० व स्त्री० ) मेल, इत्तिफ़ाक़, एकमत ।  
ऐक्यता

ऐचना ( कि० सं० ) खींचना, तानना । [ जाय ।

ऐचाताना ( वि० ) देखने में जिसकी आँख की पुतली फिर

पैठ ( पैठना ) ( स्त्री० ) बल, बट, मरोड़, अकड़, गाँठ, गर्व, अहंकार, शेखी ।

पेंठना ( कि० स० ) बटना, तानना, खींचना, जकड़ना,  
( कि० अ० ) अकड़ना, मरोड़ खाना, बल खाना, हल-  
राना, फूलना, पेंठ कर चलना, अकड़कर चलना ।

पेंठा ( पु० ) रस्सी बटने का यंत्र ।

पेंड़ा ( वि० ) देड़ा ।

पेंडुरी ( स्त्री० ) गेंडुरी, हड्डुरी, बीड़ा ।

पेन ( वि० ) ठोक, उपयुक्त, ( पु० ) घर, मकान अयन ।  
“बिहँसे करुणा पेन चिते जानकी लखन तन”

पेनक ( स्त्री० ) चरमा । [—गो० तु० दा०

पेना ( पु० ) आहना, शोशा, दर्पण ।

पेंद्रजालिक ( पु० ) मायावी, बाजीगर ।

पेपन ( पु० ) चावल-दरदी पीसकर बनाया हुआ मांग-  
लिक द्रव्य-विशेष ।

पेय ( पु० ) दोष, दुर्गुण, कलंक ।

पेयी ( वि० ) दुर्गुणी, दोषी ।

पेया ( स्त्री० ) बूढ़ी स्त्री, दादी, सास, अग्र्या; इसी से  
‘बगड़कर आया’ बना है ।

पेयार ( पु० ) धूर्त, चालाक, छली, जासूस ।

पेयारी ( स्त्री० ) तिलिस्मा विद्या, जासूसा ।

पेरगौरा ( वि० ) बेगाना, इधर-उधर का, तुच्छ ।

पेरावण } ( इरावत् समुद्र, इरा=पानी, इर=जाना अर्थान्  
पेरावत } जो मद्र से पैदा हुआ ) ( पु० ) इन्द्र का  
हाथी, नारंगी, बड़हर, नाग-विशेष, बिजली ।

पेरावती ( इरा=गनी ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम,  
रावी नदी का नाम, एक नदी जो ब्रह्मदेश में है,  
एक पौदा, विष्णु, पेरावत की हथिनी ।

पेरैय ( पु० ) बुद्धिबर्द्धक मदिरा जो कम नशा करती है,  
अंगूर आदि से बनती है ।

पेश ( पु० ) भोग-विलास, आराम, चैन ।

पेशू ( पु० ) चौपायों का एक रोग-विशेष ।

पेश्वर्य ( ईश्वर ) ( पु० ) प्रताप, बड़ाई, संपदा,  
संपत्ति, विभव, हशमत जाह व मनाज ।

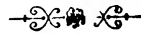
पेसा ( इम+पा, स=इंश ) ( वि० ) इस प्रकार का,  
इसके बराबर ।

पेसा-नैसा } ( बोल० ) कुछ यों ही, न भला न बुरा,  
पेसा-वैसा } न वाह-वाह न छी-छी ।

पेसीतैसी ( बोल० ) अपमानसूचक, देहाती महावरा ।

पेहिक ( वि० ) इस लोक से संबंध रखनेवाला,  
सांसारिक, दुनियाबी ।

पेहें ( व्रजभाषा ) ( कि० अ० ) आवेंगे ।



## ओ

ओ ( पु० ) प्रह्ला, विष्णु, शिव, ( अ० अ० ) आह,  
आहा, संबोधन का सूचक ।

ओआ ( पु० ) हाथी फँसाने का गड्ढा ।

ओक ( पु० ) मकान, घर, नक्षत्र, समूह ।

ओकना ( कि० अ० ) उलटी करना, कै करना ।

ओकाई ( स्त्री० ) उलटी, वमन, कै ।

ओखली ( सं० उलूखल ) ( स्त्री० ) उलखली ।

ओघ ( उच्=इकट्टा करना ) ( पु० ) समूह, इकट्ठा,  
जल का वेग ।

ओं ( पु० ) प्रणव, ओंकार जो अ+उ+म् से बना है,  
अ=विष्णु का वाचक, उ=महेश्वर का वाचक, म्=  
ब्रह्मा का वाचक है ।

ओंकार ( ओम् तीनों देवताओं का मंत्र, अच्=वचना,  
कार, क=करना ) ( पु० ) बीजमंत्र, ब्रह्मा, विष्णु,  
शिव, इन तीनों देवताओं का नाम ।

ओखना ( कि० स० ) उनखन को खींचना या तानना ।

ओछा ( वि० ) हलका, नीच ।

ओछाई ( स्त्री० ) खोटाई, नीचता, हलकापन ।

ओज } ( पु० ) बल, दीप्ति, तेज, प्रकाश, विपम,  
ओजरा } प्रथम, नृताय, पाँचवाँ, सातवाँ आदि ।

ओझ ( पु० ) पेट की थैली, आंत ।

ओझइत ( पु० ) ओझा, भाड़-फूँक करनेवाला ।

ओझर ( पु० ) पेट, पचोनी ।

ओझल ( स्त्री० ) ओट, आद, परदा, टट्टी, छिपाव, एकांत ।

ओझल करना ( बोल० ) छिपाना, ओट करना, परदा  
करना, आड़ करना ।

ओझल होना ( बोल० ) छिपना ।

ओझा ( पु० ) भूत-प्रेत भाड़नेवाला, टोन्हा, मांत्रिक,  
गुजराती, सरयूपारी और मैथिल ब्राह्मणों की  
एक जाति ।

ओट ( सं० वट्ट=घेरना ) ( स्त्री० ) बचाव, छाँव, आड़,  
परदा, ओझल, टट्टी, छिपाव, बराव, पञ्च ।

ओट करना ( बोल० ) छिपाना, ओझल करना, आड़  
करना, परदा करना ।

ओटना ( कि० स० ) कपास से बनीला निकालना,  
आड़ करना, रेतना ।

श्रोतनी ( स्त्री० ) कपास श्रोतने की चरखी ।  
 श्रोत में चोट करना ( बोल० ) धूर्तता से निशाना  
 मारना, किसी को आगे करके अपना उद्देश्य सिद्ध  
 करना जैसे अर्जुन ने शिखंडी को श्रोत में मोम-  
 पितामह पर बाण चलाया था ।  
 श्रोत होना ( बोल० ) छिपना ।  
 श्रोटा ( स्त्री० ) आड़, परदे को दीवाल या टट्टी, लुकाव ।  
 श्रोठ ( पु० ) देखो श्रोठ ।  
 श्रोठंगना ( क्रि० अ० ) सहारा लेना, आराम करना,  
 टेक लगाना, लेट रहना ।  
 श्रोड़न ( स्त्री० ) ढाख, फरो ।  
 श्रोड़ा ( पु० ) टोकरा, खाँचा, दौरा ।  
 श्रोड़ना ( सं० ऊणु=ढकना ) ( क्रि० म० ) पहनना, पह-  
 रना, ( पु० ) चहर, पट्ट, लोई आदि श्रोड़ने की चीज़ ।  
 श्रोड़नी ( सं० ऊणु=ढकना ) ( स्त्री० ) स्त्रियों के श्रोड़ने  
 का कपड़ा, चहर, दुपट्टा ।  
 श्रोठ { ( सं० श्रोष्ठ ) ( पु० ) होंठ, अधर, जब ।  
 श्रोठ {  
 श्रोड़ा { ( वि० ) गहरा, गंभीर, झमीक ।  
 श्रोड़ा {  
 श्रोत ( वि० ) आलस्य, आराम, सुना हुआ, ( पु० )  
 ताने का सूत ।  
 श्रोतप्रोत ( वि० ) उलझा हुआ, गुथाहुआ, एक से एक  
 मिला हुआ, भरा हुआ, जबाजब, ( पु० ) ताना-बाना ।  
 श्रोता ( वि० ) उतना ।  
 श्रोतु ( स्त्री० ) बिहली ।  
 श्रोथल-पोथल ( वि० ) उलटा, चित्त, उथल-पुथल ।  
 श्रोद् ( पु० ) सीख, तर, नम, भीगा ।  
 श्रोदन ( उद्=भिगोना ) ( पु० ) भात, रेंधे हुए चावल ।  
 श्रोदर ( पु० ) उदर से खिगड़ा हुआ शब्द है, पेट ।  
 श्रोदरना ( क्रि० अ० ) गिरना, फटना, बहना, दरकना ।  
 श्रोदा ( सं० श्रोद्र ) ( वि० ) भीगा, गीला ।  
 श्रोतचन ( स्त्री० ) उनचन, चारपाई के पैताने की रस्सी ।  
 श्रोधा { ( वि० ) उलटा, तले-ऊपर, मुँह के बल ।  
 श्रोधा {  
 श्रोप ( स्त्री० ) चमक, झलक, दमक, चमचमाइट, सुंद-  
 रता, घोट, चिकनाहट, शोभा, आभा, कांति, दीप्ति ।  
 श्रोपची ( पु० ) कवचधारी वीर, अक्षधारी योद्धा ।

श्रोप देना ( बोल० ) सार करना, चिकना करना, श्रोपना,  
 घोटना, माँजना, एक-सा मलना ।  
 श्रोम् ( श्रव्=बचना, अधवा अ विष्णु, उ शिव, म् ब्रह्मा )  
 ( पु० ) तीनों देवताओं का मंत्र ॐकार का बीजमंत्र प्रणव ।  
 श्रोर ( स्त्री० ) तरफ़, अलग, पार, रास्ता, हद्द, सीमा ।  
 श्रोरमा ( स्त्री० ) एक प्रकार की सिलाई ।  
 श्रोरहना ( पु० ) शिकायत, उलहना ।  
 श्रोराना ( क्रि० अ० ) समाप्त होना ।  
 श्रोरी ( स्त्री० ) पक्षपाती, ओलती ।  
 श्रोरीयंटल ( वि० ) पूर्वी, पूर्व-देश-संबंधी, प्राच्य ।  
 श्रोल ( पु० ) झून, झिमीकंद, मनौती ।  
 श्रोला ( सं० श्रोल=भोगा, अ० उद्=भिगोना ) ( पु० ) पानी के  
 बने हुए पत्थर-जैसे टुकड़े जो कभी-कभी बरसते हैं,  
 चीनी की बनी हुई मिठाई जिसकी गमियों में ठंडाई  
 के लिये पानी में घोलकर पीते हैं, बिनौला, हंड्रोपल ।  
 श्रोला हो जाना ( बोल० ) खूब ठंडा हो जाना । जो सिर  
 मुड़ाया तो ओले पड़े ( मुहा० )—यह मुहावरा उस  
 समय बोला जाता है जब कोई आदमी किसी काम  
 को शुरू करे और शुरू करते ही बाधा पड़ने लगे ।  
 श्रोपधालय { ( पु० ) दवाखाना, हास्पिटल, शक्राखाना ।  
 श्रोपधालय {  
 श्रोपधि { ( श्रोप=गर्मा, उप=गर्म करना, धा=खनना )  
 श्रोपधि { ( स्त्री० ) श्रोपद, दवा-दारू, रोग दूर करने  
 श्रोपध { की चीज़, वनस्पति, तृण, घास, पौदा ।  
 श्रोष्ट ( उप=गर्म करना ) ( पु० ) होंठ, श्रोठ, श्रोठ, जब ।  
 श्रोस ( स्त्री० ) शीत, रात को जो छोटी-छोटी कुहार  
 पड़ती है, शबनम् ।  
 श्रोसरा ( सं० श्रवसर ) ( पु० ) बारी, पारी, दाँव ।  
 श्रोसाई ( स्त्री० ) अन्न को भूसे से अलगाने की क्रिया ।  
 श्रोसारा ( पु० ) बरामदा, दाखान ।  
 श्रोसीसा ( पु० ) तकिया, उसीस, सिरहाना ।  
 श्रोहर ( स्त्री० ) श्रोट, ओझल ।  
 श्रोहरना ( क्रि० अ० ) घटना, कम होना ।  
 श्रोहरी ( स्त्री० ) शिथिलता, थकावट ।  
 श्रोहा ( पु० ) गाय का धन ।  
 श्रोहार ( पु० ) रथ या पालकी के ऊपर का परदा ।  
 श्रोहो ( अर्थ० ) वाहवाह, आहा, आरब्ध, हर्ष और  
 विस्मयसूचक शब्द ।

औ

औ ( पु० ) अनंत, ( अथ० ) ओह, आहा ।  
 औक्रान्त ( पु० ) हैसियत ।  
 औखा ( पु० ) गाय का चमड़ा ।  
 औगत ( स्त्री० ) दुर्दशा, दुर्गति ।  
 और्गी ( स्त्री० ) चाबुक, कोड़ा, बनैठी ।  
 औगुण ( सं० अवगुण ) ( पु० ) दोष, कलंक, खोट, चूक, बुराई ।  
 औघट ( सं० अवघट, अव=बुरा या कठिन, घट=रास्ता, घट=जाना ) ( वि० ) ऊबट, खराब रास्ता, अगम्य रास्ता ।  
 औघड़ ( पु० ) अघोरी, मीमो, अट्ट; “आशुतोष तुम औघड़ दानी”—गो० तु० दा०  
 औंगो ( पु० ) चुप, गूँगापन, मौन ।  
 औघना ( कि० अ० ) ऋषी आना, ऊँघना ।  
 औग्राई ( स्त्री० ) निद्रा, ऋषी ।  
 औचक ( कि० वि० ) अकस्मात्, अचानक, सहसा, हठात् ।  
 औचित्य ( पु० ) उपयुक्तता ।  
 औछ ( पु० ) दारुहरदी की जड़ ।  
 औज़ार ( पु० ) बड़ई-लुहार आदि के हथियार ।  
 औभड़ ( पु० ) रेल, धका, खोंच ।  
 औजना ( कि० अ० ) ऊबना, घबड़ाना, अकुलाना ।  
 औंठ ( स्त्री० ) किनारा, छोर ।  
 औंड़ ( पु० ) बेलदार, मिट्टी खोदनेवाला ।  
 औंड़ा ( वि० ) अथाह, गहरा ।  
 औतार ( सं० अवतार ) ( पु० ) जन्म, प्रकट, ( अथतार-रा० देखो ) ।

औदात ( सं० अवदात ) ( वि० ) धवल, सफ़ेद, श्वेत, शुक्ल, उज्ज्वल ।  
 औद्धत्य ( पु० ) धृष्टता, ठिठाई, दूसरे के यश को न सह सकने का भाव ।  
 औंधा ( वि० ) मुँह के बल, पट, उलटा ।  
 औनेपौने ( बोल० ) कमती-बढ़ती ।  
 औघट ( सं० अवघट, अव=बुरा या कठिन, घट=रास्ता ) ( वि० ) ऊबट, औघट, बुरा रास्ता, दुर्गम ।  
 और ( अथ० ) फिर, पुनि, भी, ( वि० ) अधिक, दूसरा, आगे ।  
 और एक ( बोल० ) दूसरा कोई, और कोई, और भी ।  
 औरस ( उरस=हृदय ) ( पु० ) व्याही हुई स्त्री से पैदा हुई संतान ।  
 और ही ( बोल० ) बिलकुल दूसरा, अनूठा, जुदा बिलकुल, फ़र्क ।  
 और्ध्वदैहिक क्रिया ( स्त्री० ) दशगात्र, सर्पिंडी, तेरही ।  
 और्व ( सं० ) बड़वानल, दावानल ।  
 औसर ( सं० अवसर ) ( पु० ) समय, मौका, अवकाश, कुरसत ।  
 औसान ( पु० ) चेतना, चेत, हौसला, सुरत, साहस, हिम्मत, होशियारी, अंत, अवसान ।  
 औसेर ( स्त्री० ) चिंता, खटका ।  
 औहत ( स्त्री० ) अपमृत्यु, कुगति ।  
 औहाती ( स्त्री० ) सुहागिन, सधवा, अहिवाती ।

क

क ( पु० ) यक्षा, पवन, हवा, सूर्य, आत्मा, यम, आग, विष्णु, शिर, पानी, सुख, शुभ, सुंदर, दंभ, मयूर, कामदेव, दक्ष, गरुड ।  
 कई ( वि० ) अनेक, बहुत-से, कितने ही ।  
 ककना ( पु० ) कंगन, हाथ का एक आभूषण ।  
 ककराली ( स्त्री० ) कौंस में निकलनेवाला फोड़ा ।  
 ककरेजा ( पु० ) बैंगनी रंग ।  
 ककही ( स्त्री० ) लाख रंग का कपास-विशेष, कंघी, चौबगला ।  
 ककुत्स्थ ( पु० ) इषबाकु-नाम के राजा का पुत्र ।

ककुब् ( पु० ) राजचिह्न, बैल के कंधे का कुन्बड़, पर्वत-विशेष ।  
 ककुभ ( पु० ) बीणा के ऊपर का मुड़ा हुआ टेढ़ा भाग, राग-विशेष, दिशा ।  
 ककोरना ( कि० सं० ) उखाड़ना, खरोचना, खोदना ।  
 ककड़ ( पु० ) खत्रियों की एक जाति, सुरती, तंबाकू ।  
 कका ( पु० ) काका, चाचा, केकय-देश, नगाड़ा ।  
 कक ( पु० ) कौंस, बाल, कौड़, कलरी ।  
 कखौरी ( स्त्री० ) बगल का फोड़ा ।  
 कगद्ही ( स्त्री० ) कागज़ बाँधने का बस्ता ।



कगर ( पु० ) कारनिस, कँगनी, छोर, शेष, किनारा, पार्श्व, निवास ।

कगार ( पु० ) करारा, टीला ।

कंक ( कंक=जाना ) ( पु० ) कौआ, केकड़ा, कपट, ब्राह्मण, वनवास के समय राजा विराट के यहाँ छद्मवेशी युधिष्ठिर का नाम, देश-विशेष, भलेच्छजाति, बूती-मार, बगला, यमराज ।

कंकपत्र ( पु० ) उड़नेवाला बाण ।

कंकर ( सं० कर्कर, क=हानि पहुँचाना ) ( पु० ) छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े, काँकर, रोड़े ।

कंकरीला ( कंकर ) ( वि० ) पथरेल, पथरीला, किरकिरा, बलुवा ।

कंकाल ( पु० ) ठठरी, अस्थिपंजर ।

कंकालिन ( स्त्री० ) डाकिनी, डायन, लड़ाका औरत ।

कंगन ( सं० कंकण ) ( पु० ) स्त्रियों के पहुँचे में पहनने का गहना, कड़ा ।

कंगनी ( स्त्री० ) एक प्रकार का अनाज, चूड़ी, कंगन, कंगना, ककनी ।

कंगरोड़ ( पु० ) रीढ़, पक्षी-विशेष ।

कंगार ( स्कंधाधार ) ( पु० ) कहार, बोझा ढोनेवाला ।

कंगाल ( वि० ) दरिद्री, दीन, दुःखी, शरीब ।

कंगालता ( स्त्री० ) दरिद्रता, शरीबी, दीनता कंगाली ।

कंगाल बाँका ( बोल० ) शरीब और घमंडी ।

कंगूड़ी ( स्त्री० ) कान का निचला भाग ।

कंगूरा ( पु० ) शिखर, ऊँचे मकान का ऊपर का हिस्सा ।

कंघी ( सं० कंठती, ककि=जाना ) ( स्त्री० ) बाल भाड़ने की चीज़, कंघा, केशमार्जनी ।

कंघी करना ( बोल० ) बाल सँवारना ।

कच ( पु० ) केश, लोम, बाल, मेव, फोड़े की सूखी पपड़ी, भुँड, अँगुरखे का पल्ला, कुरती का एक दाँव, बृहस्पति का पुत्र ।

कचक ( स्त्री० ) कुचलने से जो चोट लगे वह चोट, किरकिर, कसकस ।

कचकच ( स्त्री० ) झगड़ा, या विवाद-संबंधी शोरगुल, व्यर्थ कोलाहल करना ।

कचकचाना ( कि० अ० ) दाँत पीसना ।

कचकड़ ( पु० ) कछुए की खोपड़ी ।

कचकना ( कि० अ० ) कुचलना, मुरकना, टेस लगना ।

कचका ( पु० ) कछुए का छिलका ।

कचकेला ( पु० ) कचा केला ।

कचनार ( सं० कौंचनार, या कौंचनाल, कांचन=चमक, ऋ=जाना, अथवा कौंचन सोने-सी चमक, अलू=पाना ) ( स्त्री० ) एक वृक्ष का नाम ।

कचपच ( पु० ) सघन, गुरुमगुग्धा, मचामच, शोरगुल ।

कचपन ( पु० ) कचापन ।

कचबच ( पु० ) लड़के-बाले, जिसके अधिकसंतान हों ।

कचघना ( कि० सं० ) स्वतंत्रतापूर्वक खाना ।

कचरकूट ( पु० ) मारपीट, मीजमाँज ।

कचरना ( कि० सं० ) दबाना, रौंदना, कुचलना, चबाना ।

कचरपचर ( पु० ) गिचपिच ।

कचरा ( पु० ) कूड़ा, करकट, कचा खरबूजा ।

कचियाना ( कि० अ० ) डरना, हिचकिचाना ।

कचूमर ( पु० ) एक तरह का अचार, चूर्य ।

कचूमर निकालना ( बोल० ) टुकड़े-टुकड़े कर डालना, भुरकुश कर डालना ।

कच्छ ( सं० कच्छप ) ( पु० ) कछुआ, लाँग, कछार, देश विशेष जो गुजरात के पास है ।

कच्छप ( कच्छ=किनारा, पा=पीना ) ( पु० ) कछुआ, कमठ, कूर्म, मदिरा खींचने का एक यंत्र, एक नाग, विश्वामित्र का एक पुत्र ।

कच्छु ( पु० ) दो पतवार की चपटी बड़ी नाव ।

कछुनी ( स्त्री० ) जाँघिया, ऊँची बँधी हुई धोती ।

कछुलंपट ( सं० कच=काछ, लंप=भूटा ) ( वि० ) व्यभिचारी, लुब्धा, बदमस्त, रंडीबाज़ ।

कछुवाहा ( पु० ) राजपूतों की एक जाति जो अपने को रामचंद्र के पुत्र कुश के वंश में बतलाते हैं, जयपुर के राजा इस वंश के हैं ।

कछार ( पु० ) नदी या तालाब का किनारा जिसमें हरियाली हो ।

कछारना ( कि० सं० ) धोना, छुँटना, पछारना ।

कटु

कटु (स० क्विप्) (पु०) कुष्ठ, थोड़ा ।  
 कटौटी (सं० कट्टाटिका, कट्ट=काष्ठा, वट्ट=घेरना) (स्त्री०) लँगोटी, कोपीन, छोटी धोती ।  
 कज (पु०) कमल, पेड़, दोप, कंज ।  
 कजक (पु०) अंकुश ।  
 कजरा (सं० कजल) (पु०) काजल, अंजन, काली आँखोंवाला घेड़ ।  
 कजरी (स्त्री०) बरसाती गीत-विशेष ।  
 कजरौटा (पु०) काजल रखने का पात्र ।  
 कजा (स्त्री०) माढ़, काँजो ।  
 कज़ा (स्त्री०) मृत्यु, मौत ।  
 कज़ाक (पु०) लुटेरा, डाकू ।  
 कज्जल (कट्ट=बुरा या धोड़ा, जल=पानी) (पु०) काजल, सुरमा, अंजन ।  
 कंचन (सं० कंचन, कचि=वगलना) (पु०) सोना, सुवर्ण, जाति-विशेष ।  
 कंचना (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, लॉबी ।  
 कंचु } (सं० कंचुक, कचि=बंधना) (स्त्री०)  
 कंचुकी } चोली, कांचुली, अंगिया, कुरती ।  
 कंज (कं=पानी आदि सिर, जन्=पेदा होना) (पु०) कैंवल, कमल, दह्या, बाल, केश, अमृत ।  
 कंजड़ (पु०) जाति-विशेष जो डोरी बेचती है ।  
 कंजा (वि०) जिसकी आँखें भूरी हों ।  
 कंजूस (पु०) सूँ, कृपण, लोभी ।  
 कट (पु०) काठ की भाँप, कमर, टट्टा, छल ।  
 कटक (कट्ट=घेरना) (पु०) सेना, कौज, पर्वत का मध्य भाग, नितंब, मेखला, सेना के रहने का स्थान, पहिया, समूह ।  
 कटना (सं० कट=छाटना) (कि० अ०) कट जाना, बीतना, चला जाना, समाप्त होना ।  
 कटनी (कटनी) (मा०) कटाई, अनाज काटने का समय ।  
 कटफल (पु०) कायफल ।  
 कटरा (पु०) चौक, शहर का बीच, हाट ।  
 कटहरा (पु०) कटघरा, काठ का बड़ा पिंजरा ।  
 कटहल (सं० कटफल) (पु०) कटहर, एक प्रकार का फल ।  
 कटा (कटना) (पु०) बध, कल, हत्या ।

कटा करना (बोल०) कल करना, मारना ।  
 कटाल (कट्ट=जाना, अलि=आँख अथवा कट=गाल, अस=फेलना) (पु०) टट्टी आँख से देखना, तिरछी चितवन ।  
 कटार (सं० कट्टा, कट्ट=जाना) (पु०) खंजर, कटारी ।  
 कटाह (पु०) कड़ाही, कड़ाह ।  
 कटि (कटि=घेना) (स्त्री०) कमर ।  
 कटिवद्ध (वि०) कमर बाँधे हुए, तैयार, मुस्तैद ।  
 कटिवंध (कटि=कमर, बध=बंधना) (पु०) कमर-बंद, पृथ्वी के ठंडे-गर्म आदि भाग ।  
 कटिया (स्त्री०) सन का बना हुआ वस्त्र-विशेष, गाय-बैल का कटा हुआ चारा स्त्रियों का एक आभूषण ।  
 कटु (कट्ट=घेरना, जाना) (वि०) तीव्र, कटुवा, तीखा, तीता, उरावना, प्रचंड ।  
 कटुआ (पु०) मुसलमान, नहरों के बंधे, काले रंग का एक कीड़ा ।  
 कटुक (वि०) कटुआ, तीखा, कड़ा  
 कटेहर (पु०) खोपा, हल की वह लकड़ी जिसमें फाल धँसाया जाता है ।  
 कटोल (कट्ट=छापना) (पु०) चंडाल, बद, बुरा ।  
 कट्टर (वि०) काटनेवाला, पक्का जड़ ।  
 कठ (पु०) एक मुनि, वेद की एक शाखा ।  
 कठंदर (सं० काष्ठंदर काष्ठ=काष्ठ, उदर=पेट) (पु०) एक रोग का नाम, पेट का कड़ापन ।  
 कठवना (स्त्री०) कठौता, काठ का बर्तन ।  
 कठहँसी (स्त्री०) अकारण हँसो, सूखी हँसी ।  
 कठारा (पु०) नदी या तालाब का किनारा ।  
 कठारी (पु०) काठ का बना कर्मडल ।  
 कठिन (कट्ट=दुःख से जीना) (वि०) कठोर, कड़ा, निदुर, मुश्किल, सख्त ।  
 कठिनता (कठिन) (स्त्री०) कठोरता, निदुरता, मुश्किलता, कठिनाई ।  
 कठोर (कट्ट=दुःख से जीना) (वि०) कड़ा, कठिन, निदुर, सख्त ।  
 कठौती (सं० काष्ठ) (स्त्री०) कठौवा, कठड़ा, काठ का बर्तन ।  
 कड़ (पु०) कमर, बर्त, पुष्प का बीज ।  
 कड़क (कड़कना) (स्त्री०) धड़का, चटाखा, गर्ज, कड़-कड़ाहट, कड़ाका, तड़क ।

कड़खा ( पु० ) लड़ाई में पुराने समय के शूरवीरों की बड़ाई करके लड़नेवालों को साहस देना, लड़ाई का गीत जिसमें लड़नेवालों की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका यश गाया जाता है, व्यंग्य-वाण्य ।

कड़खैत ( पु० ) भाट, लड़ाई में बढ़ावा देनेवाला, एक जाति के भाट अथवा चारण जो लड़ाई में कड़खा गाकर लड़नेवालों की हिम्मत बढ़ाते हैं ।

कड़ा { ( सं० कठोर ) ( वि० ) कठोर, दृढ़, सख्त, ( स्त्री० ) धर्मी, धरण्य ।

कड़ा ( सं० कटक, कट्ट=पेरना ) ( पु० ) एक तरह का हाथ का गहना, दरवाजे का अथवा कड़ाह-कड़ाही के पकड़ने की चीज़, हथ्या, बेंट ।

कड़ाका ( पु० ) किसी चीज़ के टूटने का धड़काका या शब्द, उपास, उपवास, काका ।

कड़ाड़ा ( पु० ) नदी का ऊँचा किनारा, कगार ।

कड़ाह ( सं० कटाह ) ( पु० ) लोहे का बड़ा बर्तन, जिसमें दूध आदि औटाया जाता है ।

कड़िहार ( पु० ) माँझी, कर्णधार, मल्लाह ।

कड़ी ( स्त्री० ) गीत का एक टुकड़ा, छोटी धरन, जंजीर को लड़ी, छोटा छल्ला ।

कड़ूआ { ( सं० कट्ट ) ( वि० ) तीता, तेज़, कट्टवा गुस्सेल ।

कड़ोड़ { ( सं० कोटि ) ( वि० ) सौ लाख करोड़पति = करोड़ जिसके पास करोड़ रुपय हों, बड़ा सेठ ।

कटुना ( कि० अ० ) बढ़ जाना, निकालना, दीड़ में आगे निकल जाना ।

कट्टी ( स्त्री० ) भोजन-विशेष ।

कटूआ ( पु० ) श्रृण, ( वि० ) जातिच्युत ।

कण ( कण=ज्ञान ) ( पु० ) अनाज का दाना, कना, कनिका, परमाणु, लव ।

कणः ( पु० ) सुनार, एक ऋषि का नाम, वैशेषिक दर्शन के रचयिता ( विशेष के लिये भा० च० देखें ) ।

कणिश ( पु० ) गेहूँ आदि अन्न की बाज ।

कंटक ( कंट=ज्ञान ) ( पु० ) काँटा, बैरो, शत्रु, नाच, कृपण ।

कंटकमय ( वि० ) काँटे से भरा, विघ्नवालाओं से भरा हुआ ।

कंठ ( कण्=शब्द करना ) ( पु० ) गल्ला, गरदन, घोंटी, आवाज़ स्वर, ( वि० ) मुखस्थ, कंठस्थ, ज़बानी याद । कंठमाला ( स्त्री० ) गले में पहनने की माला, रोग-विशेष ।

कंठस्थ ( कंठ=गला, स्था=ठहरना ) ( वि० ) मुखस्थ, मुखाग्र, ज़बानी ।

कंठा ( पु० ) सोने की बड़ी गुरियों की माला ।

कंठाग्र ( कंठ=गला, अग्र=आगे ) ( वि० ) मुखाग्र, कंठस्थ, ज़बानी ।

कंठ्य ( कंठ ) ( वि० ) जो अक्षर कंठ से बोले जायँ, कंठ का ।

कंडन ( कड़=काँड़ना, कूटना ) ( पु० ) छरना, काँड़ना ।

कंडनी { ( स्त्री० ) उखली, ओखली, काँड़ी ।

कंडू ( कड़ि=भेदना ) ( स्त्री० ) खुजली, खाज ।

कण ( पु० ) एक मुनि का नाम, शकुंतला के पादक ( विशेष के लिये भा० च० देखें ) ।

कत ( सं० कुत्र ) ( कि० वि० ) कहाँ, किधर, ( कथ् ) क्यों, क्योंकर, कैसे, कितना ।

कतक ( पु० ) रीठा, निर्मली ।

कतनई ( स्त्री० ) सूत कातने की मजूरी ।

कतम ( वि० ) कौन, कौन सा ।

कतरना ( सं० कर्तन, कृत्=काटना ) ( कि० स० ) कैंची से काटना, छाँटना, काट-छाँट करना, तराशना ।

कतरनी ( सं० कर्तनी, कृत्=काटना ) ( स्त्री० ) कैंची ।

कतरव्योत ( पु० ) काट-छाँट, हेर-फेर ।

कतरा ( वि० ) टुकड़ा, पृथक् किया हुआ ।

कतराना ( कि० अ० ) बचकर निकल जाना ।

कतरी ( स्त्री० ) कोरहू का एक विशेष भाग, जमी हुई मिठाई का टुकड़ा, एक औज़ार ।

कतवार ( पु० ) कड़ा-करकट, घास-फूस ।

कतल ( पु० ) बध, हत्या ।

कतिधा ( ध्व० ) कितने प्रकार से ।

कतिपय ( वि० ) चंद, थोड़े, कम ।

कतीरा ( पु० ) एक प्रकार का गोंद ।

कतुवा ( पु० ) तकुवा, सूवा ।

कतेक ( सं० कति किम् ) ( वि० ) कितना, दो-एक ।

कत्तल ( पु० ) कटा हुआ टुकड़ा, पत्थर की गढ़ाई में निकले पत्थर के छोटे टुकड़े ।

कत्ता ( पु० ) बाँकी छोटी नलवार, औज़ार-विशेष ।

“कत्ता का कराकन चकत्ता की कटक काटि”  
—महाकवि भूषण

कत्ती ( स्त्री० ) कटारी, छुरी ।

कत्थ ( पु० ) लोहे की रसाही, रंगरेज ।

कत्थक ( कथ्=सराहना ) ( पु० ) गानेवालों की एक जाति, पेंवारिया, यश यवाननेवाला ।

कत्था ( सं० सदिर, छद=रढ़ होना ) ( पु० ) कत्था जो पान के साथ खाया जाता है ।

कथक ( कथ्=कहना ) ( पु० ) कथा बॉचनेवाला, पौराणिक, कहनेवाला, नाचनेवालों का एक समुदाय ।

कथकड़ ( पु० ) बहुत कथा कहनेवाला ।

कथन ( कथ्=कहना ) ( पु० ) कहना, वर्णन, कथा-वाचो, वक्त्रव्य ।

कथनीय ( कथ्+थनीय, कथ्=कहना ) ( वि० ) कहने योग्य ।

कथा ( कथ्=कहना ) ( स्त्री० ) बात, कहानी, वृत्तान्त, इतिहास ।

कथानक ( पु० ) कहानी, बड़ी कथा का संक्षेप या सारांश, कथा के अंतर्गत कथा ।

कथित ( कथ्=कहना ) ( वि० ) कहा हुआ ।

कथोपकथन ( पु० ) कहे हुए का कहना, पुनरा कहना, आलाप, बातचीत ।

कद् ( सं० कदा, किम्, क्या ) ( कि० वि० ) कब, किस समय ।

कद् ( पु० ) डीलडोल, ऊँचाई ।

कदन ( कद्=मारना ) ( पु० ) मारनेवाला, मारना, पाप, खड़ाई, युद्ध, समर ।

कदम् } ( सं० कद्=मारना या काटना ) ( पु० ) एक वृक्ष  
कदम्भ } का नाम, समूह, पाद, चरण, डग “मेरे विपति  
कदम्बन को कीन धीं नवावतो” —अज्ञात

कदर ( पु० ) टाँकी, सफ़ेद कत्था, गोखरु, आरा ।

कदराई ( स्त्री० ) भोरुता, कादरता, कायरता ।

कदर्थ ( वि० ) बुरा, निरर्थक, कुत्सित ।

कदर्थ्य ( वि० ) मक्खोच्चस, कंजूस, मंद, क्षुद्र ।

कदली ( क=हवा, दल्=फटना, जो हवा में फटना हो )  
( स्त्री० ) केले का वृक्ष ।

कदलाफल ( पु० ) केले का फल ।

कदाकार ( वि० ) बदसूरन ।

कदाख्य ( वि० ) बदनाम ।

कदाचन ( कि० वि० ) किसी समय, कभी ।

कदाचार ( पु० ) बुरा व्यवहार, दुराचार ।

कदाचित् } ( कदा=कब, चित् अथवा अपि=भी ) ( कि०  
कदापि } ( वि० ) कभी, कभी-कभी, शायद ।

कदीम ( वि० ) पुराना, प्राचीन ।

कद्र ( कद्=मारना अथवा वध्=नाहना ) ( स्त्री० ) करवपसुनि  
की स्त्री और नागों की माता ( विशेष के लिये मा०  
व० देती ) ।

कन ( पु० ) अनाज का दाना, प्रसाद, कंद, चावनों की  
धूल, हीर, सत, भांग, जूठन ।

कनअंगुली ( स्त्री० ) कानों उँगली, छोटी उँगली ।

कनई ( स्त्री० ) अंकुर, कोपल, नई शाख ।

कनक ( कन्=चाहना या चमकाना ) ( पु० ) सोना,  
कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, धनूरा, पलाश, नागकेशर ।

“कनक कनक तै सौगुना मादकता अधिकाय”

—विहारी

कनककली ( पु० ) लोंग, कान में पहनने का आभूषण ।

कनककशिपु ( कनक=सोना, कशिपु=कपड़ा ) ( पु० )  
हिरण्यकश्यप, एक दैत्य का नाम, प्रह्लाद का पिता ।

कनकक्षार ( पु० ) सुहागा, सुहाग ।

कनकटा ( पु० ) धूचा, कटे कानोंवाला या कान  
काटनेवाला ।

कनकना ( पु० ) चिड़चिड़ा, थोड़ी-सी बात में चिड़नेवाला ।

कनकरस ( पु० ) हरताल ।

कनकलोचन ( कनक=सोना, लोचन=प्रसन्न ) ( पु० )  
हिरण्यवाक्ष, एक दैत्य का नाम ।

कनकाचल ( कनक=सोना, अचल=बहाड़ ) ( पु० ) सुमेरु-  
पर्वत, सुमेरु-गिरि ।

कनकी ( स्त्री० ) चावल के छोटे टुकड़े ।

कनकूत ( पु० ) उाज का अनुमान, धँदाई का ढंग ।

कनकैआ ( पु० ) पतंग जो उड़ाई जाती है, गुड़ी ।

कनखजुरा ( पु० ) कनसजाई, एक जानवर का नाम,  
गोजर, कीट-विशेष ।

कनखयाना ( कि० सं० ) तिरछी नज़र से देखना, शॉख  
का इशारा करना ।

कनखी ( स्त्री० ) दूसरों का निगाह बचाकर देखने का  
पद्धति, इशारा, कटाक्ष ।

कनगुरिया ( स्त्री० ) छोटी उँगली ।

कनछेदन ( पु० ) कर्णवेध, कान छिदना, आर्थों का एक संस्कार-विशेष ।

कनटोप ( पु० ) कान ढकने की टोपी या टोप ।

कनपटी ( सं० कर्णपटिका, कर्ण=कान, पटिका=पट्टा ) ( स्त्री० ) परपड़ों, कान के पास की जगह ।

कनफटा ( पु० ) एक प्रकार के साधु जिनके कान फटे होते हैं, गोरखनाथ के अनुयायी ।

कनफुँकवा ( पु० ) दाक्षिण, दीक्षा देनेवाला, कान फुँकनेवाला ।

कनरसिया ( पु० ) गीतज्ञ, वातघीत सुनने को इच्छा रखनेवाला, संगीतप्रिय, नादप्रिय ।

कनल ( पु० ) सिलावाँ ।

कनवाई ( स्त्री० ) छुटाँक, सेर का सोझहवाँ हिस्सा ।

कनहार ( पु० ) केवट, मल्लाह ।

कनारी ( स्त्री० ) टहनी, कल्ला, पौधे की अति पतली डाली, वह वस्तु जिससे गर्भ में बच्चा बँधा रहता है, कनहरी ।

कनागत ( सं० कन्यागत, कन्याराशि में यागत आना, जिसमें सूर्य कन्याराशि के आने है ) ( कनान-प्रागत=कनागत ) ( पु० ) आन्ध्रपञ्च, पितृपक्ष, आश्विन का पहला पान्न ।

कनात ( स्त्री० ) तन्व, मोटे कपड़े का वह दीवार जो किसी स्थान में आदि करने को लगाई जाती है ।

कनार ( पु० ) घोड़े का जुकाम ।

कनिक ( स्त्री० ) गेहूँ या उसका पिसान ।

कनिका ( स्त्री० ) अति छोटा टुकड़ा ।

कनिगर ( पु० ) अपनी कीर्तिरक्षा का ध्यान रखनेवाला, अभिमानी ।

कनियाँ ( स्त्री० ) गोद, कोर, उछंग ।

कनिष्ठ ( कन्=बढ़ना ) ( वि० ) छोटा, लहुरा, अनुज, ( पु० ) छोटा भाई, यवन् शब्द को बहुत अर्थ में कनिष्ठ होता है ।

कनिष्ठा } ( कनिष्ठ ) ( स्त्री० ) छोटी उँगली,  
कनिष्ठिका } छिगुनी, एक प्रकार की नायिका ।

कनीनिका ( स्त्री० ) आँख की पुतली का तारा ।

कने ( अथ० ) पास, समीप, साथ ।

कनेठी ( कान फेंटना ) ( स्त्री० ) कान फेंटना, कान खींचना ।

कनेती ( स्त्री० ) दवाओं की बोलों में रुपए का संकेत ।

कनेर ( सं० कर्त्तार ) ( पु० ) कनेज, एक प्रकार का फूल ।

कनौजिया ( सं० कान्यकुब्ज ) ( पु० ) कन्नौज-देश का

रहनेवाला, ब्राह्मणों की एक जाति जो कन्नौज से निकले हैं, कान्यकुब्ज-ब्राह्मण ।

कंटेकटर ( पु० ) कारखानेदार, टेकाधिकारी ।

कंत ( सं० कंत, कम्=वाहना ) ( पु० ) पति, स्वामी, भर्ता, प्यारा, प्रियतम, शौहर ।

कंधा ( कम्=वाहना ) ( स्त्री० ) गुदकी, कथरी, कमरी ।

कंद ( कदि=भिगेना, अथवा कं=पानी, दा=देना ) ( पु० ) मूल, जड़, गंटीली जड़, जैसे प्याज और खहसुन आदि ।

कंदरा ( कं=पानी, द=ढाड़ना, जो जल से फटती है ) ( स्त्री० ) खोह, गुफा, गुहा ।

कंदर्प ( कंद=व्याकुल होना, वा कम्=बुरा, दर्प=धमंड अर्थात् जिसके होने से बुरा पमंड होता है ) ( पु० ) कामदेव, काम, मदन ।

कंदु ( पु० ) कड़ाहा, ( वि० ) रसोद्धार ।

कंदुक ( कंदु=मारना ) ( पु० ) गेंद । “कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ”—गो० तु० दा०

कंध } ( कं=शिर, धा, वा=धु=रखना ( पु० ) कौंधा,  
कंधर } गला, कंध, घोधा, गर्दन, मेघ । “दशकंधर के वचन सुनि कुंभकरण बिलखान”

-- गो० तु० दा०

कंधि ( कं=जल, धि=धरना ) ( पु० ) समुद्र, मेघ, ( स्त्री० ) ग्रीवा, गला ।

कंधिली ( स्त्री० ) जीन, खोमीर, गद्दी जिसे बैलों की पीठ पर रख भ्रम लाते हैं ।

कन्यका ( कन्=बढ़ना ) ( स्त्री० ) छोटी लड़की, दश वर्ष तक की लड़की ।

कन्या ( कन्=बढ़ना ) ( स्त्री० ) लड़की, बेटी, कुमारी, बारह राशियों में छठी राशि, जीर्ण वख, घोड़ों के आर ।  
कन्यादान ( कया=बेटी, दान=देना ) ( पु० ) लड़की को ब्याह देना ।

कन्हैया ( सं० कण्य ) ( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम, अति प्रिय ।

कपट ( कं=शिर, पट्ट=ढकना ) ( पु० ) छल, धोखा, खोटाई, फरेब, ठगी, दगा ।

कपटी ( कपट ) ( वि० ) छली, धोखा देनेवाला, फरेबी, ठग, दगाबाज, पाखंडी ।

कपड़कोट ( पु० ) डेरा, तंबू, खीमा ।

कपड़ा ( सं० कर्षट कृ=बिखरना, फैलाना ) ( पु० ) जूगा, जसा, वस्त्र ।

कपड़ों से होना (बोल०) रजस्वला होना, स्त्री-धर्म होना, हैज होना ।

कपर्द (क=जल, पर्द=पर्य कर देना) (पु०) हरजटा, महादेव की जटा जिसमें गंगाजी ने वास किया है ।

कपर्दिका (स्त्री०) बराटिका, कौड़ी ।

कपर्दिन् } (क+पर्द+इन्) (पु०) महादेव ।  
कपर्दिन् }

कपाट (क=हवा, पट=जाना, या बाहर निकलना अर्थात् विवाह बंद करने से हवा भीतर नहीं जाती) (पु०) किराड़, किराड़ी, द्वार ।

कपार (पु०) कपाल, खोपड़ी, भाल, ललाट ।

कपाल (क=शिर, पाल=वचाना) (पु०) खोपरी, कपार, शिर, ललाट, भाग, क्रिस्मत ।

कपालक्रिया करना (बोल०) कपाल फोड़ना, हिंदुओं में एक रीति है कि जब मुर्दा जल चुकता है तब दाहक्रिया करनेवाला उसकी खोपड़ी को फोड़ता है और उसमें घी डालता है । मुहावरें में किसी को मर्यामाश कर देने को कपालक्रिया कहते हैं । अंतिम कार्य का सूचक है ।

कपाली (पु०) महादेव, भैरव, खपरे में भीख माँगने वाला भिक्षुक, एक वर्षसंकर जाति-विशेष, द्वार के ऊपर लगा हुआ काष्ठ ।

कपास (सं० कप+स, क=करना) (पु०) रुई, रुई का पेड़ ।

कपासी (बि०) हलका पीला रंग, कपास के फूल-जैसा रंग ।

कपि (कप्=कैपाना) (पु०) बंदर, वानर, मर्कट, गज, हाथी, कंजा ।

कपिकुंजर (कपि=बंदर, कुंज=हाथी) (पु०) बंदरों का राजा, बंदरों का प्रधान, हनुमान् ।

कपिध्वज (कपि=बंदर, ध्वज=झंडा, अर्थात् जिसके भेटे में बंदर का निशान है) (पु०) अर्जुन ।

कपिपति (कपि=बंदर, पति=राजा) (पु०) वानरों का राजा, सुग्रीव ।

कपिपोत (सं० कपि+पूत) (पु०) वानर का बच्चा ।

कपिल (क=संग्रहना) (पु०) एक मुनिका नाम जिसने सांख्य-शास्त्र बनाया है ।

कपिलता (स्त्री०) मटमैलापन, भूरापन, लालाई, पीलापन, सफेदी ।

कपिला (पु०=संग्रहना) (स्त्री०) पीली गाय, कपिला गाय, जोक, चींटी, श्रोत्रविशेष ।

कपीश } (कापि=बंदर, ईश अथवा ईश्वर=राजा) (पु०)  
कपीश्वर } सुग्रीव, हनुमान्, वानरों का राजा ।

कपुत्र } (सं० कपुत्र, क=उरा, पुत्र=बेटा) (पु०) बुरा  
कपुत्र } लड़का, कुबुद्धि लड़का ।

कपूर (सं० कर्पूर, कपु=पामर्श रखना अथवा कर्पूर-सुगंधित होना) (पु०) एक सुगंधित चीज, काफूर ।

कपूरतिलक (पु०) हाथों का नाम जो ब्रह्मावर्त अर्थात् बिंदुर में था ।

कपूरी (बि०) कपूर का बना हुआ, हलका पीला रंग ।

कपोत (व=हवा, पोत=जहाज जिसके लिये हवा जहाज के तुल्य है, या कवु=रंग-रंग का होना) (पु०) कबूतर, परेवा ।

कपोतपालिका (स्त्री०) कबूतरों का दरवा, छतरी ।

कपोतवर्णी (स्त्री०) छोटी इलायची ।

कपोतवंका (स्त्री०) ब्राह्मी बूटी ।

कपोतवृत्ति (बि०) आकाशवृत्ति, रोज कमाना रोज खाना ।

कपोतव्रत (पु०) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहना ।

कपोतसार (स्त्री०) सुरमा ।

कपोती (स्त्री०) कबूतरी ।

कपोल (क=कौपान, या क=पानी, पोल=बढ़ना) (पु०) गाल, हलसार ।

कपोलकल्पना (स्त्री०) गप्प, बनावटी बात, मनगढ़ंत ।

कफ (क=पानी, फल=बढ़ना, जो पानी से बढ़ा है) (पु०) खखार, थूक, बलराम, कमीज के आम्नीन का अग्र-भाग ।

कफून (पु०) मुरदा जपेटने का कपड़ा ।

कफूनी (स्त्री०) मेखला, साधुओं के पहनने का बिना सिला हुआ कपड़ा, मुर्दा जपेटने का कपड़ा ।

कय (सं० कदा) (क्रि० वि०) कदा, किस समय ।

कय-कय (बोल०) किस-किस समय ।

कयड़ी (स्त्री०) लड़कों के एक खेल का नाम जिसमें सब लड़के दो कुंड बनाते हैं और खेलते हैं ।

कय तक } (क्रि० वि०) किस समय तक, कहाँ तक  
कय तक } कितनी देर तक ।  
कय लों }

कबंध ( क=शेर, बंध=झाटन या धारना ) ( पु० ) विना सिर का धड़, एक राक्षस का नाम, पीपा, कंडाक, बादल, मेघ, पेट, जल, राहु, एक गंधर्व का नाम, मुनि-विशेष ।

कचर ( स्त्री० ) क्रम, जिसमें मुसलमानों के मुरदे गाढ़े जाते हैं ।

कचरस्तान ( पु० ) मुसलमान और अंगरेजों के मुरदे गाढ़ने की जगह, क्रमस्थान ।

कचरा ( सं० कर्बुर, कचू=रंगना, वा कर्व=जाना ) ( वि० ) वितकचरा, रंग-रंग का, रंगबिरंग, चिकड़ा ।

कचाड़िया ( पु० ) टूटो-फूटी चीजों का व्यापारो ।

कचाध ( पु० ) सीकों पर भुना हुआ मांस ।

कचावी ( वि० ) मांसभरी, कचाब बेचने, या खानेवाला ।

कचारू ( पुं० ) गुन, हुनर, धंधा, काम । “नहि जानौ कछु और कचारू”—गो० तु० दा०

कचाला ( पु० ) एक दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जाय-दाद एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में चली जाय ।

कचित ( पु० ) हिंदी-काव्य के एक प्रकार के छंद का नाम ।

कचीर ( पु० ) एक वैष्णव भक्त-कवि, एक प्रकार का अरलील गीत या पद जो होखी में गाया जाता है ।

कचाला ( स्त्री० ) जोरू, पत्नी, स्त्री ।

कचूतरी ( स्त्री० ) कचूर की स्त्री, नाचनेवाली, सुंदर स्त्री ।

कचूलना ( क्रि० स० ) मान लेना, स्वीकार कर लेना, मंजूर करना ।

कचूलियत ( स्त्री० ) स्वीकार-पत्र जो असामी की ओर से लिखा गया हो ।

कमअसल ( वि० ) दोगला, वर्णमंकर ।

कमठ ( क=जल, अठ=जाना, या कम्=चाहना ) ( पु० ) कछुआ, कछुप, कर्म, साधुओं का नूँबे का पात्र ।

कमठा ( पु० ) एक प्रकार का धनुष ।

कमंडल ( सं० कमंडलु, क=पानी, मंड=शोभा, ला=लेना ) ( पु० ) दंडो और संयासी लोगों के पानी रखने का काठ का अथवा मिट्टी का बर्तन, लप्पर, कासा, प्याला ।

कमनीय ( कम्=चाहना ) ( वि० ) सुंदर, सुधरा, सुधर, सुहावना, मनोहर, मनभावना, दिखचस्प, दिखगीर ।

कमनैती ( स्त्री० ) धनुविद्या, तीरंदाजी, तीर चखाने की विद्या ।

कमर ( स्त्री० ) कटि ।

कमर करना ( मुहा० ) कबूतर का कलाबाजी करना, घोड़ों का इस प्रकार कमर उड़ाखना कि सवार का आसन उलझ जाय ।

कमर कसना ( मुहा० ) तैयार होना, उद्यत होना, कटिबद्ध होना, किसी काम के करने को हड़ प्रतिज्ञा करना ।

कमरख ( सं० कर्मरंग, कर्म=काम ) ( भोजन आदि ) ( रंग=प्यर ) ( पु० ) एक प्रकार का फल ।

कमर खोलना ( मुहा० ) पेटी खोलना, दम लेना, विश्राम करना, सुस्ताना, किसी काम के करने का विचार छोड़ देना, हिम्मत हारना ।

कमर टूटना ( मुहा० ) निराश होना ।

कमर तोड़ना ( मुहा० ) हताश करना, निराश करना, नाउम्माद हो जाना ढील खाल देना ।

कमर बाँधना ( मुहा० ) कमर में पटका या कुपट्टा बाँधना, पेटी खगाना ।

कमर बैठ जाना ( मुहा० ) निरुत्साह हो जाना ।

कमर सीधो करना ( मुहा० ) विश्राम करना, छोड़गना, थकावट मिटाना ।

कमरा ( पु० ) कोठरा, बैठक की जगह, कंबल, कमला ।

कमरिया ( पु० ) कमर, कमली, रोग-विशेष, हाथी-विशेष, चरखा में खगी हुई लकड़ी-विशेष ।

कमल ( कं=पानी की, अल=शोभा देना, अथवा कम्=चाहना, शोभना ) ( पु० ) कमल, पद्म, जलज ।

कमला ( कमल अर्थान् जिसके हाथ में कमल है ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, विष्णु की श्रीरत्न ।

कमलापति ( कमला=लक्ष्मी, पति=भर्ता ) ( पु० ) विष्णु, भगवान्, नारायण ।

कमलिनी ( कमल ) ( स्त्री० ) कुमोदिनी, कमलों का समूह, कोकबेड़ी ।

कमवाना ( क्रि० स० ) निरुद्ध सेवा कराना, उपार्जन कराना, पैदा कराना ।

कमसिन ( वि० ) झोटी अवस्थावाला, नादान ।

कमाई ( कमाना ) ( स्त्री० ) प्राप्ति, लाभ, उपार्जन, काम ।

कमाऊ ( कमाता ) ( वि० ) कमानेवाला, मिहनती, उद्यमी, परिश्रमी ।

कमान ( स्त्री० ) धनुष, प्राचीन शस्त्र, कमठा ।

कमाना ( काम, सं० कर्म, कृ=करना ) ( क्रि० सं० ) कमाई करना, पाना, प्राप्ति करना, पैदा करना, उपार्जन करना, काम करना, साकू करना ( चमड़ा या पाखाना ), ( कर्म ) कम करना, घटाना ।

कमाल ( पु० ) अनेखा कर्तव्य, शायशी, पुरापन, निपुणता ।

कमासुत ( वि० ) कमानेवाला, उद्यमी ।

कमीना ( वि० ) ओछा, क्षुद्र, नीच, तुच्छ ।

कमीशन ( पु० ) नियुक्ता, किसी मुख्य बात के हेतु चुने हुए मनुष्य जो अन्य देश में भेजे जाते हैं, मुक्तिधारनामा, मेहनताना ।

कमेरा ( काम ) ( पु० ) काम करनेवाला, मजदूर, सहायक, मददगार ।

कमेहरा ( पु० ) कच्ची मिट्टी का बना हुआ साँचा ।

कमोदनी } ( सं० कमोदिनी, कृ=वर्ती, मुद=द्वेषित करना )  
कुमोदिनी } ( स्त्री० ) कमलिनी जो रात को खिलती है और दिन में बंद हो जाता है ।

कमोरी ( स्त्री० ) मटकी, गमरी ।

कंप } ( कंप=हँपना ) ( पु० ) थरथराहट, कंपकंपी,  
कंपन } जर्जी ।

कंपना ( सं० कंपन, कंप=कँपना ) ( क्रि० प्र० ) थर-थराना, कँपना ।

कंपनायु ( पु० ) रोग-विशेष ।

कंपित ( कंप=कँपना ) ( वि० ) काँपता हुआ, थरथराता हुआ, कंपायमान ।

कंथल ( कंथु=माना या कम्प=बढ़ना ) ( पु० ) कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दुशाला ।

कंथु ( कंथु=बाढ़ना ) ( पु० ) शंख, हस्ती, शंभुक, बोंघा, सूती, चूड़ी, ( वि० ) चित्रवर्ण अर्थात् चितकबरा ।

कंथुप्रीता ( कंथु=शंख, प्रीता=गर्दन ) ( वि० ) जिसकी गर्दन शंख-जैसी हो ।

क्रयामत ( पु० ) अंतिम दिन, प्रलयकाल ।

क्रयास ( पु० ) अनुमान, खयाल, विचार, ध्यान ।

कर ( कृ=करना ) ( पु० ) हाथ, हाथी को सूँढ़, ( कृ=विखरना, फैलाना ) किरन, महसूल, माल्जारा, जड़, हस्त नक्षत्र ।

करक ( स्त्री० ) रङ्गरङ्गर उठनेवाली पोड़ा, कड़क, करवा, मौलसिरी, ठठरी, नारियल का खोपड़ा ।

करकच ( पु० ) समुद्री लोन, निमक ।

करकचि ( पु० ) किचकिचाहट, हल्लागुल्ला ।

करकट ( पु० ) कतवार, कूड़ा ।

करगहना ( सं० क+गृह्ण, कृ=हाथ, ग्रह=तेना, पकड़ना ) ( क्रि० सं० ) व्याह करना, व्याह में तुलहिन का हाथ पकड़ना ।

करग्रर्णण ( कृ=हाथ, गर्णण=मलना, घृप्=घिमान, गलना ) ( पु० ) हाथ मलना, हाथ मीजना ।

करछा ( स्त्री० ) बड़ी कलछी, पक्षी-विशेष ।

करज ( कृ+जन्=पैदा होना ) ( पु० ) नख, नाखून ।

करटक ( पु० ) शगल का नाम, सियार, कलेला ।

करण ( कृ=करना ) ( पु० ) साधन, काम सिद्ध करने का उपाय, हथियार, औज़ार, व्याकरण में तीसरा कारक, इंद्रिय, काम, काया, शरीर, कारण, छत्र, करण, कायस्थ, ज्योतिष में एक तरह के समय के विभागों को करण कहते हैं; वे ११ हैं, उनमें से ७ चल हैं, ४ स्थिर हैं और दो करण मिलकर एक चंद्रदिन के बराबर होते हैं ।

करणी ( सं० करणाय, करने योग्य, कृ=करना ) ( स्त्री० ) काम, धंधा ; गणितविद्या में ऐसी राशि को कहते हैं, जिसका ठीक मूल न मिले ।

करंड ( कृ+अपड् ) ( पु० ) कारकपक्षी, कौआ, डिब्बा, डिबिया, पात्र, मधुसूक्त, शहद का छत्ता, पानपात्र, पुष्पपात्र ।

करतब ( सं० कर्तव्य, कृ=करना ) ( पु० ) काम, करने योग्य काम, चाल, गुण, हुनर, परख, तज्रुबा, कौशल ।

करतबी ( वि० ) पुरुषार्थी, गुणी, कामात दिखाने-वाला, बाज़ीगर ।

करतल ( कृ=हाथ, तल=नीचा ) ( पु० ) हथेली, हाथ का तल ।



करतली ( स्त्री० ) हथेली, हथेली का शब्द, गार्दावान के बैठने की जगह ।

करताल ( कर=हाथ, ताल=एक बाजे का नाम ) ( पु० ) एक बाजे का नाम, कठताल, भौंक, मजीरा ।

करताली ( कर=हाथ, तह=पट्टना, बजाना ) ( स्त्री० ) हाथ बजाना, हाथ बजाने का शब्द, ताली ।

करतू ( स्त्री० ) खेत सोंचने की दौरी की रस्सियों के सिरे पर लगी हुई लकड़ी जो हाथ में रहती है ।

करतूति ( म० कर्तव्यः ) ( स्त्री० ) काम, धंधा, करतब, क्रिया ।

करद ( वि० ) कर देनेवाला, मालगुजार, असामी, छुरा, चाकू ।

करदपत्र ( पु० ) विराजनामा, पट्टा ।

करना ( सं० करण, कृ=करना ) ( कि० सं० ) बनाना, रचना, सुधारना, ( पु० ) एक खट्ट फल का नाम ।

करनाटकी ( पु० ) करनाटक-देश-निवासी, आदूर, पेंद्रजालिक ।

करनाल ( पु० ) भोंपा, धूतू, डोल-विशेष, एक प्रकार का तोप, नगर-विशेष ।

करनिकर ( वि० ) करसमूह, हस्तसमूह किरणें ।

करपाल ( कर=हाथ, पाल=रचाना ) ( पु० ) तलवार, खड्ग, मोजा, दस्ताना ।

करपोड़न ( पु० ) विवाह, पाणिग्रहण ।

करपुट ( पु० ) हाथ जोड़ना, दोनों हाथ मिलाना ।

करवी ( स्त्री० ) जुआर अथवा बाजरे का पुवाल ।

करभ ( पु० ) ऊँट, हाथी का बच्चा, हथेली के पीछे का भाग, एक सुगंधित वस्तु ।

करभारि ( पु० ) सिंह, व्याघ्र ।

करभूषण ( पु० ) कंकण, त्रिजायट ।

करभ ( सं० कर्म, कृ=करना ) ( पु० ) काम, धंधा, भाग, भाग्य, क्रिस्मत ।

करभकला ( पु० ) नाँठगोभी, बँधी गोभी ।

करभट ( वि० ) कर्मकांडी, कर्मयुक्त उद्योगी ।

करवट ( स्त्री० ) पसवाड़ा, पौंजर, तरफ़ ।

करवीर ( कर=जड़, वीर=प्रकट होना, वा कर=हाथ वीर=पराक्रम करना ) ( पु० ) कंडीर का फूल अथवा पेड़, कनेज, तलवार, रमशान ।

करशाला ( स्त्री० ) चुंगीघर, महसूलघर ।

करश्मा ( पु० ) चमत्कार, अद्भुत व्यापार, करामात ।

करांत } ( सं० करपत्र, कर=हाथ, पत्र=गिरना, जो हाथ करोत } से लकड़ी पर गिरता है ) ( पु० ) आरा, अर्रा, ककच, लकड़ी चीरने का एक औज़ार ।

करार } ( पु० ) नदी का ऊँचा किनारा, ( सं० करर ) करारा } ( वि० ) कठिन, कड़ा, सख्त, भयंकर, काला कौआ ।

कराल ( कृ=हिंसा करना, मारना ) ( वि० ) भयानक, भयंकर, डरावना, बड़ा लंघा ।

करालाकृति ( कराल+आकृति ) ( स्त्री० ) भयंकर स्वरूप, खौफनाक सूरत ।

कराहना ( कि० थ० ) किसी पीड़ा अथवा दुःख के कारण आह भरना, कहना ।

करि ( पु० ) हाथी ।

करिखई ( स्त्री० ) कालिमा, श्यामता, कालापन ।

करिखा ( पु० ) कालिख, कलौष ।

करिण ( कर=हँड् प्रथार्त् मूँडवाला ) ( पुं० ) हाथी, गज, मतंग ।

करिन्दुन ( पु० ) गणेश ।

करिहांव ( स्त्री० ) कमर, कटि ।

करी ( पु० ) हाथी, कड़ी ।

करींद्र ( पु० ) इंद्र का हाथी, हाथियों का राजा ।

करीना ( पु० ) टाँकी, पत्थर काटने का औज़ार, केराना, मसाला ।

करीर ( कृ=कलना, वा मारना ) ( पु० ) बाँस का अंकुर, करील, एक प्रकार का कंटीला वृक्ष जो मरुस्थल में उगता है और उसको ऊँट खाते हैं ।

करुणा ( कृ=करना, वा कृ=कलना ) ( स्त्री० ) दया, कृपा, अनुग्रह, वृक्ष का नाम, नवरस में एक रस ।

करुणानिधान ( करुणा=दया, निधान=संज्ञाना ) ( वि० ) करुणा के ज्ञाना, कृपालु, दयालु ।

करुणामय ( करुणा=दया, मय=रूप ) ( वि० ) दया के रूप, दयामय, दया करनेवाला, दयालु, कृपालु ।

करुणायतन ( करुणा+यतन ) ( पु० ) दया के स्थान ।

करुणार्द्र ( कदृषा=दैन, आर्द्र=गोला ) ( पु० ) करुणानिधान, करुणामय, दयालु ।

करुवा ( सं० करक, कृ=करना ) ( पु० ) कर्मंडलु, करवा, कठारी, मिट्टी का कोरा बर्तन । करवाचौथ=एक पर्व अथवा त्योहार जो कासिक के महीने में होता है ।

करेणु ( पु० ) हाथी, हस्ती ।

करेला ( सं० करेल, कट्=घेरना ) ( पु० ) एक तरकारी का नाम जो कुछ कच्ची होती है ।

करैत ( पु० ) काला फन्दार सर्प ।

करोदना ( कि० सं० ) खुरचना, खसोटना ।

करोनो ( स्त्री० ) दूध की सुर्धन ।

करोत ( पु० ) लकड़ी चीरने का औजार-विशेष, भारा ।

करौदा ( सं० कर्मदक, कर=हथ, मृत्=मलना ) ( पु० ) एक फल का नाम ।

करोली ( स्त्री० ) नगर-विशेष, एक प्रकार की छुरी ।

कर्क ( कृ=करना, अथवा कृ=कलना ) ( पु० ) केंकड़ा, चौथी राशि ।

कर्कट ( कृ=करना ) ( पु० ) केंकड़ा, गिगटा, चौथी राशि ।

कर्कटी ( पु० ) ककड़ी, सोंप, चड़ा, तरौई, सेमल का फल ।

कर्करा ( सं० कर्कर, कृ=करना ) ( पु० ) खोटा सिक्का, एक पयेरू का नाम, ( वि० ) कठोर, कड़ा ।

कर्कश ( कर्क=कठिनता, वा कृ=कलना, कृश=मारना ) ( वि० ) कठोर, कठिन, कड़ा, मिर्दय, लड़ाका, ( पु० ) उज्ज, सौँड़ ।

कर्कशा ( स्त्री० ) खड़ाका, झगड़ा करनेवाली, कलहो ।

कर्कधु ( स्त्री० ) बद्रीवृक्ष, बेर का पेड़ ।

कर्ण ( कृ=करना, अर्थात् शब्द का ज्ञान करना ) ( पु० ) कान, ( कर्ण=भेदना, वा कृ=कलना ) पतवार, त्रिभुज खेत में भुज और कोटि को छोड़ तीसरी भुजा का नाम, चौकोने खेत में उस खकीर का नाम जो सामने के कोनों से खींची जाती है, प्रायः काट, कुंती का बेटा जो सूर्य के ग्रंथ से पैदा हुआ ( विशेष के लिये भा० च० देखिए ) ।

कर्णकटु ( वि० ) सुमने में अप्रिय, बुरा, कर्कश ।

कर्णकुहर ( पु० ) कान का गोलापन, गोखक ।

कर्णधार ( कर्ण=पतवार, धृ=रत्न ) ( पु० ) माँझी, चक्रनदार, जहाज चलानेवाला, नाविक, केबट, मल्लाह ।

कर्णपरंपरा ( स्त्री० ) मुनोमुनाई व्यवस्था, एक दूसरे से सुनने का क्रम ।

कर्णपिशाच ( पु० ) एक तांत्रिक सिद्धि जिसके द्वारा दूसरे के मन की बात बताई जाती है ।

कर्णफूल ( कर्ण=कान, फूल अर्थात् कान का फूल ) ( पु० ) काम में पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

कर्णमूल ( पु० ) कान के समीप की सूजन, रोग-विशेष ।

कर्णवेध } ( कर्ण=कान, वेध=छेदना ) ( पु० ) कान  
कर्णवेधन } बिंधाना, कान छिदाना ।

कर्णमंडक ( मंड=शोभ देना ) ( पु० ) कर्णफूल, बिरिया, मधुर शब्द ।

कर्णाट ( पु० ) कर्णाटक-देश ।

कर्णिका ( कर्ण + इक, कर्ण छेदना ) ( स्त्री० ) हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ में बीच की उँगली, मध्यमा, कलम, लेखनी, कुट्टिनी, कर्णभूषण, कर्णफूल ।

कर्णोजय ( पु० ) जुगलखोर ।

कर्त्तन ( कृत्=काटना ) ( पु० ) कतरन, काटना, छाँटना ।

कर्त्तरिका } ( कृत्=काटना ) ( स्त्री० ) कतरनी, कैंची ।  
कर्त्तरी }

कर्त्तव्य ( कृ=करना ) ( वि० ) करने योग्य, जो कुछ करना चाहिए, अवश्य, उचित, योग्य, वाजिब ।

कर्त्तव्यविमूढ़ ( वि० ) जो अपना कर्त्तव्य स्थिर न कर सके, अस्थिर ।

कर्त्ता ( कृ=करना ) ( पु० ) करनेवाला, बनानेवाला, सृष्टि पैदा करनेवाला, ईश्वर, व्याकरण में पहला कारक, ग्रंथ बनानेवाला, पति, मास्तिक, स्वामी, अधिकारी ।

कर्त्तार ( सं० कर्ता ) ( पु० ) करनेवाला, पैदा करने-वाला, ईश्वर, सिरजनहार, सृष्टिकर्ता ।

कर्द } ( कर्द=बुरा शब्द काना ) ( पु० ) कीचड़,  
कर्दम } काँदो, चहल्ला ।

कर्धनी ( सं० कटिधारणीय, कटि=कमर, धारणीय=पहनने योग्य, धृ=धारण करना वा कटिवेधन, कटि=कमर, बंधन=बाँधना ) ( स्त्री० ) कँधनी, कमर में पहनने का गहना ।

कर्पूर ( कृपू=समर्थ होना ) ( पु० ) कपूर, बाहुभूषण ।

कर्बूर ( कर्त्=ताना ) ( पु० ) स्वर्ण, इरताल, राक्षस, जल, पाप, कचूर ।

कर्म ( कृ=करना ) ( पु० ) काम, धंधा, धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ, होम, दान आदि, पहले जन्म में दिया हुआ, कर्मकारक, व्याकरण में दूसरा कारक, भाग, क्रिस्मत् ।

कर्मकांड ( कर्म=कार, कांड=समूह ) ( पु० ) कर्मों का समूह, जप होम यज्ञ आदि, वेद का एक भाग ।

कर्मकार ( कर्म=काम, कार=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० )  
काम करनेवाला, लुहार ।

कर्मटी ( पु० ) भिक्षारी, भिक्षुक, चिथड़े-गुदड़े पहनने-  
वाला साधु ।

कर्मनाशा ( कर्म=प्रज्ञे काम, अथवा पुण्य, नाश=नष्ट  
करना ) ( स्त्री० ) एक नदी जो बनारस और बिहार  
के बीच में है ।

कर्म-निपुणार्ह ( स्त्री० ) कर्मकुशलता काम की चतु-  
राई, कारीगरी ।

कर्मपथ ( स्त्री० ) कर्ममार्ग वेद की रीति, तरीक़े शरई ।

कर्मभोग ( कर्म=पहले जन्म में किए हुए काम का फल,  
भोग=भोगना ) ( पु० ) भले-बुरे का फल, प्रारब्ध के  
फल का भोग ।

कर्मयुग ( पु० ) कलियुग, चौथा युग, वह युग जिसमें  
कर्म का महत्व हो ।

कर्मरेख ( स्त्री० ) भाग्यलिपि, प्रारब्ध का लेख, कर्म  
की रेखा ।

कर्मरंग ( पु० ) कर्मरस, फल-विशेष ।

कर्मवाच्य ( स्त्री० ) कर्म की प्रधानता बतानेवाली क्रिया-  
विशेष ।

कर्मवाद ( पु० ) कर्मयोग ।

कर्मविपाक ( पु० ) कर्म का फल, एक ग्रन्थ-विशेष जो  
कर्मफल बताता है ।

कर्मशील ( पु० ) उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी, स्वभाव  
ही से कर्म करनेवाला, पुरुषार्थी ।

कर्मशूर ( पु० ) उद्योगी, साहसी, जो स्वभावतः कर्म-  
प्रवृत्त हो ।

कर्मसंन्यास ( पु० ) निष्कर्म, कर्म-त्याग, कर्मरहित,  
कर्म के फल का त्याग ।

कर्मसंन्यासी ( पु० ) यती, कर्म-त्यागी ।

कर्मसमाधि ( पु० ) कामों से विरक्ति, किसी काम को  
न करना ।

कर्मसाक्षी ( पु० ) अच्छे-बुरे कर्मों को देखनेवाला,  
देवता जो सब कामों को देखते हैं और उनके साक्षी  
रहते हैं; ये १ हैं—सूर्य, चंद्र, यम, काल, पृथ्वी,  
जल, अग्नि, वायु और आकाश ।

कर्मांत ( पु० ) जुतो हुई पृथ्वी, कार्य की समाप्ति,  
कारजाना ।

कर्मी ( वि० ) फल की इच्छा से कर्म करनेवाला ।

कर्मेन्द्रिय ( कर्म=काम, इन्द्रिय=संज्ञा ) ( स्त्री० ) काम करने की  
इन्द्रियाँ जैसे हाथ पाँव आदि ( इन्द्रिय शब्द को देना ) ।

कर्ता ( पु० ) जुलाहों का सूत फैलाने का काम, ( वि० )  
मुशकिल, कठिन, कठोर ।

कर्ष ( कृपू=खींचना ) ( पु० ) वैर, विरोध, रोग, ईर्ष्या,  
जैसे “बातहि बात कर्ष बढ़ि आई” ( रामायण ) ।  
सोखइ मारो की तोख, खिचाँव, विरोध ।

कर्षक ( कृपू=खींचना, हल जोतना ) ( पु० ) किसान,  
जोता, जोतनेवाला ।

कर्षण ( कृपू=खींचना, हल जोतना ) ( पु० ) खींच-तान,  
जोतना, खेती करना, खरोचकर खकीर करना ।

कल ( सं० कल्य, कल=गिनना ) ( पु० ) अगला  
या पिछला दिन, ( स्त्री० ) चैन, आराम, सुख,  
राहत, ( कल=शब्द करना ) ( पु० ) मीठा शब्द,  
( कल=प्रसन्न होना ) वीर्य, बीज, मीठा, सुंदर, ( वि० )  
( सं० कला, कल=शब्द करना ) ( स्त्री० ) अंत्र, यंत्र,  
बंदूक की कल, चाप, दाँव, पेंच ।

कलई ( स्त्री० ) सफ़ेदी, चूना, रौंगा, मुखरमा ।

कलकंठ ( कल=मीठा या सुंदर, कंठ=गला ) ( स्त्री० )  
कोयल, कोकिला, ( वि० ) सुंदर या मीठे कंठवाली ।

कलकल ( कल=शब्द करना ) ( पु० ) कोलाहल, कलकल-  
पेसा शब्द, कलकल, झकझक, बकबक ।

कल का आदमी ( बोल० ) बहुत दुबला आदमी, पुतला ।

कल का घोड़ा ( बोल० ) बहुत अच्छा सिखाया हुआ  
और अधीन घोड़ा ।

कलंक ( क=मुख, वा आराम, लकि=बिगाड़ना, अथवा कल=  
जाना ) ( पु० ) दाग, दोष, चिह्न, लज्जनत, लांछन ।

कलजिन ( वि० ) दुर्जन, पापी, हिंसक, द्वेषी ।

कलजिभा ( सं० कालजिह्वा, काल=काली, जिह्वा=जंभ )  
( वि० ) बुरा चेतनेवाला, दुर्जन, बुरा चाहनेवाला ।

कलंज ( पु० ) हिरन, पक्षी-विक्षेप, पक्षी का मांस, १०  
पल की तोल, तंबाकू, एक प्रकार का बीजवाला फल ।  
कलत्र ( कल=वीर्य, वा बचाना वा गढ़=खींचना, यहाँ ग  
को क और ड को ल हो जाता है ) ( स्त्री० ) पत्नी,  
भार्या, लुगई, स्त्री ।

कलदार ( वि० ) कल खगा हुआ, मशीन से बना हुआ,  
कलवाला, पेंचवाला, रुपया ।

कलधूत ( पु० ) चाँदी ।

कलधूत ( कल=तैल, धूत=वां गया ) ( वि० ) मलरहित,  
सोना, चाँदी, मधुर शब्द ।

कलन ( कल=गिनना ) ( पु० ) गिनना, चिह्न ।

कलंदर ( पु० ) मशरी, वर्षाशंकर जाति-विशेष ।

कलप ( पु० ) बालों के रँगने का रंग, द्विजाब, माँद, लेई ।

कलपना ( सं० कल्पन्, कृप्=दुबला होना ) ( कि० अ० )  
कुढ़ना, पछताना, बिखरना, दुःखी होना, दुःख पाना ।

कलपाना ( कलपना ) ( कि० स० ) कुढ़ाना, सताना,  
दुःख देना ।

कलफ ( पु० ) देखो, कलप ।

कलघल ( पु० ) दाँव-पेंच, छल-कपट, शोर-गुल ।

कलभ ( कल्=शब्द करना ) ( पु० ) हाथी का बच्चा ।

कलम ( पु० ) लेखनी, साठी धान, पेद की डाखी जो  
अन्यत्र लगाई जाती है ।

कलमख ( पु० ) दोष, पाप, दाग, कलमप ।

कलमलाना ( कि० अ० ) चुलचुलाना, छटपटाना, कुल-  
बुलाना, हिलना, तिलभना ।

कलमा ( पु० ) मुसलमानों का सबसे अधिक माननीय  
मुख-मंत्र, वाक्य, बात ।

कलमी ( स्त्री० ) लिखा हुआ, दो वृक्षों के संयोग से  
उत्पन्न फल, एक प्रकार का शोरा ।

कलमुँह्वाँ ( वि० ) दोषी, लाजित, काले मुँहवाला,  
( स्त्री० ) कलमुँही ।

कलरव ( पु० ) कोयल-कबूतर का शब्द, जनसमूह का  
शब्द, मधुर और अस्फुट शब्द ।

कलल ( पु० ) जरायु, क्लिष्टी, गर्भ की आच्छादन करने-  
वाला पतला चमड़ा ।

कलवरिया ( स्त्री० ) शराब बिकने का स्थान, कलवार  
की दुकान, कलारी ।

कलवार ( पु० ) कलाल, कलार, सुंड़ी, मदिरा खींचने-  
वाला और बेचनेवाला ।

कलश ( कल=शब्द, श=ज्ञान ) ( पु० ) घड़ा, गगरा,  
पानी रखने का बर्तन, मंदिरों के ऊपर का शिखर ।

कलशिरा } ( सं० काल=काला, शीर्ष=शिर ) ( वि० ) काले  
कलसिरा } सिरवाला, काले सिर का, ( पु० ) मनुष्य,  
आत्मी ।

कलस ( क=पानी, लस्=शोभना ) ( पु० ) घड़ा, कलश,  
मंदिर का शिखर ।

कलहंतरीता ( स्त्री० ) वह स्त्री जो पति का अनादर कर  
परचाप्ताप करे, नायिका-विशेष ।

कलहंस ( कल=सुंदर, हंस ) ( पु० ) राजहंस, श्रेष्ठ  
राजा, परमात्मा, बिलुभा ।

कलह ( कल=भीटा शब्द, हन्=मारना ) ( पु० ) लड़ाई,  
झगड़ा, विरोध, ( वि० ) कलहकार=झगड़ालू,  
लड़ाई करनेवाला, कलहकारिणी=झगड़ालू स्त्री,  
लड़ाई करनेवाली ।

कला ( कल=गिनना, जाना ) ( स्त्री० ) बहुत छोटा भाग,  
अंश का साठवाँ हिस्सा, चंद्रमंडल का सोलहवाँ  
भाग, समय का हिस्सा, साठ सेकंड, छल, कपट,  
बहाना, फरेब, गुण, हुनर, गाना बजाना आदि  
६४ कला ।

कला चौंसठ हैं—

१-गीत गाना—स्वरों, रागों और रागिनियों का जानना  
और उनका अभ्यास करना ।

२-वाद्य—बाजा बजाना ।

३-नृत्य—नाचना ।

४-नाट्य—नकल काना, नाटक लेलना ।

५-आलेख्य—लिखना और चित्रकारी याने मुमव्वरी करना ।

६-विशेषकछेद्य—खोर और तिलक के सौंवे बनाना ।

७-तंडुल कुसुमबलि विकार क्रिया—विना टूटे चावल  
और फूलों के चौक देवमंदिरों में पूरना ।

८-पुष्पास्तरण—फूलों की सेज रचना अथवा विज्ञान ।

९-दशनवसनगराग—दाँतों, कपड़ों और अंगों को रँगना  
वा दाँतों के लिये मंजन-मिस्सी आदि, बस्त्रों के लिये  
रंग और रँगने की सामग्री तथा अंगों में लगाने के लिये  
चंदन, केसर, मेहदी, महावर आदि बनाना और उनके  
बनाने की विधि का ज्ञान प्राप्त करना ।

१०-मणिभूमिकाकर्म—श्रुत के अनुकूल घर सजाना ।

११-शयनरचन—बिछावन वा पलंग बिछाना ।

१२-उदकवाद्य—पानी में बाजा बजाना, जलतरंग बजाना ।

१३-उदकघात—पानी के खेल, छीटा देना या पानी हाथों से  
दबाकर पिचकारा चलाना और गुलाबपाश से काम लेना ।

१४-स्त्रियोग—अवस्थापरिवर्तन करना, नपुंसक करना,  
जवान को बुढ़ा और बुढ़े को जवान करना ।

१५-मास्यग्रयनविकल्प—देवपूजन के लिये या पहनने के  
लिये माला गूँथना ।

१६-केश-सोखरापीड-योजन—सिर पर फूलों से अनेक प्रकार की रचना करना वा बालों में फूल लगाकर गूँघना ।

१७-नेपथ्यप्रयोग—देशकालानुसार वस्त्र, आभूषण आदि पहनना ।

१८-कण्ठपत्रभंग—शान्तों के लिये हाथ्यादौ और शंखादि के कण्ठफूल आदि आभूषण बनाना ।

१९-गंधयुक्ति—अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थ बनाना और लगाना ।

२०-भूषणयोजना—गहने पहनना ।

२१-हृद्भजाङ्ग—बाजीगरों की तरह शोबिंदे अर्थात् लीला दिखलाना ।

२२-कीचुमारयोग—कुरूप को सुंदर करना, घृह और शरीर में मलने के लिये उबटन आदि बनाना, जिसके मलने से कुरूप भी सुंदर हो जाय ।

२३-हस्तलाघव—हाथ को फुर्ती और हलकेपन से काम में लाना ।

२४-चित्रशाकापूपभक्ष्य-विकार-क्रिया—अनेक प्रकार की तरकारियाँ और भोजन के व्यंजन बनाना ।

२५-पानकरसरागासव-योजन—पान के लिये अनेक प्रकार के शर्बत, अर्क और शराब आदि बनाना ।

२६-सूचीकर्म—सीना और बुनना ।

२७-सूत्रकर्म—रफू करना और कसौदा काटना तथा तागे से तरह-तरह के बेलबूटे बनाना ।

२८-प्रहेलिका—पहेली या बुझावल कहना और बूझना ।

२९-प्रतिमाज्ञा—वैतबाजी या श्लोक के अंतिम अक्षर से दूसरा श्लोक कहना ।

३०-दुर्वाचकयोग—कठिन शब्दों या पदों का तात्पर्य निकालना ।

३१-पुस्तकवाचन—उपयुक्त रीति से पुस्तक पढ़ना ।

३२-नाटकाख्यायिकादर्शन—छोटे-बड़े नाटक देखना और दिखलाना ।

३३-काव्यसमन्वय-पूर्ति—दी हुई समस्या की छंद में पूर्ति करना ।

३४-पट्टिकावेष्टायाविकल्प—नेवाड़, बाघ या बेंत से चारपाई आदि बुनना ।

३५-तर्ककर्म—दलीलें करना ।

३६-तक्षय—बढ़ई, संगतराश आदि का काम करना ।

३७-वास्तुविद्या—घर बंगराह बनाना, सामान रखना, इंजिनियरी ।

३८-रूपरत्नपरीक्षा—सोना, चाँदी और रत्नों का परखना ।

३९-धातुवाद्—कच्ची धातुओं को साफ करना अथवा भिली धातुओं को अलग करना ।

४०-मयिरागज्ञान—रत्नों के रंगों का ज्ञान ।

४१-भाकर-ज्ञान—खानों की विद्या ।

४२-वृक्षायुर्वेदयोग—वृक्षों को तरतीबवार जमाना और उनका पालन-पोषण करना ।

४३-मेघ-कुक्कुटलावक-युद्धविधि—मेदे-पुरी-बटेर आदि के लड़ाने की विधि ।

४४-शुकसारिका-प्रज्ञापन—सुधा और मैना को पढ़ाना ।

४५-उत्सादन—उबटन बनाना और लगाना तथा देह दाबना ।

४६-केशमार्जन-कौशल—बालों का मलना और तेल लगाना ।

४७-अक्षरमुष्टिकाकथन—उंगलियों के संकेत से शब्दों के प्रकट करने की विद्या ।

४८-श्लेक्षितविकल्प—शब्दों का गूढ़ अर्थ समझना—जैसे अग्नि से ३ का संख्या और वेद से ४ की संख्या आदि ।

४९-देशभाषाविज्ञान—देश-देश की भाषा जानना ।

५०-पुष्पशकटिका—बालकों के लिये फूलों की गाड़ी बनाना ।

५१-निमित्तज्ञान—शुभाशुभ देशपरिज्ञान-फल गुप्त बात को वर्तमान दशा देखकर बतलाना ।

५२-यंत्रमातृका—लड़ाई के लिये यंत्रों की घटना जानना ।

५३-धारणमातृका—स्मरण-शक्ति का बढ़ाना जिससे सुनते ही याद हो जाय ।

५४-समपाठ्य—बिना पढ़े हुए को दूसरे का पढ़ना सुनकर उनके समान ही पढ़ते जाना ।

५५-मानसीकाव्यक्रिया—दूसरे का अभिप्राय समझकर उसके अनुसार उसी ण्य काव्य बनाना अथवा मन का काव्य शीघ्र कहते जाना ।

५६-अभिधानकोष—छंदोज्ञान-कोष बनाना, छंदों का ज्ञान ।

५७-क्रिया-विकल्प—क्रिया के प्रभाव को पलटना ।

५८-छलितकथयोग—बचन करने या मोहने के हेतु वेष बदलना अर्थात् प्रेयारी ।

५९-वस्त्रगोपन—फटे कपड़ों को ऐसा पहनना कि मालूम न पड़े, इच्छित प्रकार से पहनना ।

६०-धूलविशेष—जुआ खेलना ।

६१-आकर्षकोद्वा—पॉसे का खेल ।

६२-बाह्यकीड़ा-कर्म—लड़का खिलाना ।

६३-वैतयिकी वैजयिकी विद्या—विनय और विजय के उपाय ।

६४-वैतालिकी व्यायामिकी विद्या—भूत-प्रेत तथा दौब-पेंच आदि ।

कलाई ( स्त्री० ) पहुँचा ।

कलाकंद ( पु० ) बर्फी ।

कलाधर ( कला+धृ=धरना ) ( पु० ) चंद्रमा, महताब, शिव ।

कलाना ( कि० स० ) भूना ।

कलाप ( कल+माग, आपू=पाना ) ( पु० ) समूह, संग्रह, संस्कृत-भाषा का व्याकरण, मोर की पूँछ, मुद्रा, पूजा, बाण, तरकस, करधनी, व्यापार, भ्राम-विशेष, वेदशास्त्रा, अर्द्धचंद्राकार अस्त्र, रागिनी-विशेष ।

कलापक ( कलाप+प्रक ) ( पु० ) मोर, मयूर, ताऊल, हाथी के गले का रस्सा, मुट्ठी ।

कलापी ( कला+पी की पूँछ ) ( पु० ) मोर, मयूर, कोकिल, बरगद ।

कलाघञ् ( पु० ) सोने-चाँदी का पतला तार जो रेशम के साथ बटा जाता है ।

कलायाज्ञ ( पु० ) नट ।

कलाम ( पु० ) प्रतिज्ञा, संकल्प, वचन, उक्ति ।

कलार { ( पु० ) कलवार, मदिरा खींचने और कलाल } बचनेवाला ।

कलारिन ( स्त्री० ) कलार की स्त्री ।

कलावंत ( पु० ) गानेवाला, गवैया, कथक, नट ।

कलि ( कल्=गिनना ) ( पु० ) चौथा युग, कलियुग, ( युगशब्द देखो ) लड़ाई, भगड़ा, सूरमा, शिव का नाम, छंद में गण-भेद ।

कलिका { ( कल्=जाना, वा गिनना ) ( स्त्री० ) कोंपल, कली } बिना खिला हुआ फूल, वीणा का अग्रभाग ।

कलिग ( कलि=भगड़ा, गम्=जाना ) ( पु० ) कटक से मद्रास तक का देश, पक्षी-विशेष, तरबूज, राग-विशेष ।

कलिगड़ा ( पु० ) राग-विशेष, यह रात में गाया जाता है, कालिगड़ा, ( वि० ) कलिगदेश-निवासी ।

कलित ( वि० ) मनोहर, सुंदर, रुचिर ।

कलिद ( पु० ) सूर्य, बहेड़ा, पर्वत-विशेष जहाँ से यमुना निकली है ।

कलिल ( वि० ) दुर्गम, दलदल, कीचड़, पंक, घना ।

कलीदा ( पु० ) तरबूज, हिमवाना, हिंदोना ।

कलीन ( पु० ) अल्प, न्यून, कम ।

कलुष ( क=पुलक वा आश्मा, लुप्=नाश करना ) ( पु० ) पाप, गैदखा, नाराज़, दोष, ऐब, मैख ।

कलुटा ( वि० ) कुरूप, काला ।

कलेऊ } ( सं० कल्याहार, कल्य=कल, आहार=खाना )  
कलेना } ( पु० ) कल का बचा खाना, ठंडा खाना, बासी खाना, भोर का खाना, नाश्ता, जलखावा ।

कलेजा ( पु० ) कलेजा, जिगर, साहस, हिम्मत ।

कलेजा उलटना ( बोल० ) बहुत झै करने से थक जाना ।

कलेजा काँपना ( बोल० ) डरना, सहमना, धरधराना ।

कलेजा जलना ( बोल० ) दुःख पाना, कुड़ना, पछताना, सोच करना ।

कलेजा ठंडा करना ( बोल० ) चाह पूरी करना, आराम पाना, चैन करना, मनोरथ-सिद्धि ।

कलेजा फटना ( बोल० ) दुःख अथवा डह से बेकल होना ।

कलेजे पर साँप लोटना ( बोल० ) डह से जखन ।

कलेजे में डाल रखना ( बोल० ) बहुत प्यार करना, बहुत ही चाहना, सुरक्षित रखना ।

कलेजे से लगा रखना } ( बोल० ) प्यार करना,  
कलेजे से लगा लेना } गले लगाना, बहुत ही अधिक प्यार करना ।

कलेवर ( कल्=वीर्य, वर=भेष्ट, वा कल्=जाना ) ( पु० ) देह, शरीर ।

कलेश } ( सं० कलेश, विलेश=दुःख पाना ) ( पु० )  
कलेस } दुःख, कष्ट, पीड़ा, भगड़ा, दंगा ।

कलोल ( सं० कलोल, कल्=शब्द करना ) ( स्त्री० ) खिल-कूद, क्रीड़ा, चंचलाहट, आनंद, बड़ी लहर ।

कलौंजी ( स्त्री० ) मगरैखा, एक तरह का बीज जो दवाई में काम आता है, एक प्रकार का गर्म मसाला ।

कलक ( पु० ) चूर्ण, गुदा, पोठी, मज, कान की कीट, अवलेह, पाप, बहेड़ा ।

कल्की ( पु० ) विष्णु का दसवाँ अवतार, कलि में होने-वाला अवतार, पापी, अपराधी, बुरा, निकट ।

कदप ( कप्=प्रमथ होना या नाश होना ) ( पु० ) वेद के छः अंगों में एक अंग, ब्रह्मा का एक दिनरात जो मनुष्यों के हजार चौयुगी अथवा ४३२००००००० का होता है, प्रलय, विकल्प, संदेह, अभिप्राय, मतलब, कामना, मनोरथ, योग्यता, औचित्य, एक प्रकार का नृत्य ।

कल्पतरु } (कल्प=मनोः, वा कामना, तरु वा हुम  
कल्पद्रुम } वा इक्षु का अर्थ पेड़) (पु०) मनोकामना  
कल्पवृक्ष } देनेवाला वृक्ष जो इन्द्र के बाग में है।

कल्पना (कृप्=विचारना) (स्त्री०) विचार, बनावट,  
मानना, युगत, आखसाज़ी, नक़्क़, अनुमान।

कल्पवास (पु०) माघ के महीने-भर गंगा-किनारे  
संयम से रहना।

कल्पसूत्र (पु०) ग्रंथ-विशेष जिसमें यज्ञादि कर्मों का  
विधान है।

कल्पांत (कल्प=ब्रह्मा का दिनरात, अंत=पूरा होना) (पु०)  
प्रलय, युगांत, कल्प का अंत।

कल्पित (कृप्=विचारना) (वि०) बनाया हुआ, माना  
हुआ, कृत्रिम, झूठा, असत्य, गढ़त।

कल्मष (कर्म=अच्छा काम वा पुण्य, सो=नाश करना, यहाँ  
र को ल, और स को ष हो गया) (पु०) पाप,  
नरक, मल।

कल्माष (वि०) चितकबरा, रंग-विरंगा।

कल्माषपाल (पु०) कलवार।

कल्याण (कल्य=नीरोग, अणु=जीना, वा कल्य=प्रमात,  
अणु=शब्द करना) (पु०) कुशल, मंगल, शुभ,  
एक रागिनी का नाम।

कल्ल (पु०) बधिर, बहरा।

कल्लर (वि०) ऊसर, खारो।

कल्ला (पु०) जबाबा, जबबा, गल्ला, अंकुर, पुष्टकलाई।

कल्लाद्राज़ (वि०) बड़-बड़कर बात बनानेवाला।

कल्लाना (कि० अ०) पीड़ा होना, चोट लगने के पश्चात्  
पीड़ा होना, जखन।

कल्लोल (पु०) तरंग, उमंग, पानी की ज़हर, किछोख।

कल्लहरना (कि० अ०) भुगना, तखा जाना, जखन  
अथवा पीड़ा से कराहना।

कवक (पु०) घास, कवज, कवर।

कवच (क=हवा, वच्=उपाना, वा कु=शब्द करना) (पु०)  
किछम, बफ़तर, बर्म, काज़, छिछका।

कवन (वि०) कौम, किस, कवा।

कवर (पु०) कौर, लुकमा, आच्छादन।

कवरी (स्त्री०) चोटी, जूबा, गुच्छा, कषी।

कवल (क=पान, वल्=टकना) (पु०) घास, कवर,  
कवा, कौर, लुकमा।

कवलित (वि०) खाया हुआ, भुका, भक्षित, प्रक्षित।

कवायद् (स्त्री०) व्यवस्था, नियम, व्याकरण, विधान।

कवि (कु=शब्द करना) (पु०) काव्य बनानेवाला,  
जैसे—वाल्मीकि, काबिदास, ब्रह्मा, शुक्राचार्य,

सूर्य, पंडित, उल्लू, शायर, बुद्धिमान्, भाट, चारण।

कवित्त (सं० कवित्, कवि) (पु०) कविता, काव्य,  
शायर, छंदःशास्त्र में एक प्रकार का छंद।

कविता (कवि०) (स्त्री०) कवि की बनाई हुई रचना,  
काव्य, पद्य, रत्नोक, छंद आदि शायरी।

कविताई (कविता) (स्त्री०) पद्य-रचना, तसनीफ़।

कविराज (पु०) बंगाली वैद्यों की उपाधि, श्रेष्ठ कवि।

कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वामी) (पु०) बड़ा कवि,  
वाल्मीकि।

कव्य (कु=शब्द करना) (पु०) पितरों के लिये दिया  
हुआ अन्न आदि पदार्थ।

कव्यवाह (पु०) अग्नि-विशेष जिससे पितृयज्ञ में  
आहुति दी जाती है।

कशमकश (स्त्री०) धकधका, खींचातानी, भीड़भाड़,  
सोच-विचार।

कशा (स्त्री०) कोड़ा, चाबुक, रस्सी।

कश्मत (पु०) मोह, अज्ञानता, बेहोशी।

कश्मीराज (पु०) केसर।

कश्य (पु०) मदिरा, बोड़े का तंग।

कश्यप (कश्य=सोमलता, सोमबर्छा, पा=पीना) (पु०)

एक मुनि का नाम, मरीचि-ऋषि का बेटा और

देवता, राक्षस और मनुष्यों का पुरखा, प्रजापति,

करयप-शब्द यथार्थ में परयक था एवं आदि अंत

अक्षरों के विपर्यय अर्थात् बदलने से करयप बना,

इसका अर्थ हुआ सर्वज्ञ, अज्ञाननाशक, विशेष

ज्ञानवान्, आरामज्ञानी, परब्रह्म, सृष्टिकर्ता, कलुषा,

मल्लुखी-विशेष, मृग-विशेष।

कष (पु०) कसीटी, सान, सोने की परल करनेवाला  
परवर।

कषा (पु०) रस्सी, चाबुक।

कष्ट (कृप्=मानना, हानि पहुँचाना) (पु०) दुःख, क्लेश,

पीड़ा, तकलीफ़, संकट।

कस (वि०) कैसा, (पु०) परल, ताब, जोर, बल,  
कैसा, ताकत, गदन।

कसक ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, टसक, टीस, कीना ।

कसकसा ( वि० ) किरकिरापन, कँकरीलापन ।

कसकुट ( पु० ) मिश्रित, धातु-विशेष ।

कसना ( सं० कृपु=सीटना व कृपु=जोचना ) ( कि० सं० )  
खींचना, तानना, जकड़ना, सोने की कसौटी पर  
घिसके परखना, जाँचना, परखना, तलना, घी में  
भूनना ।

कसनी ( स्त्री० ) चोलो, अँगिया, गिझाक, बैठन, कसौटी ।

कसवा ( पु० ) बड़ा गाँव ।

कसयिन ( स्त्री० ) रंडी, वेश्या, पतुरिया, व्यभिचारिणी  
स्त्री, छिनाल, कसवी ।

कसमसाना ( कि० अ० ) हिलना, अंग मरोड़ना,  
कलमखाना, सोच विचार करना, डॉर्बाडोल होना,  
अस्थिर होना ।

कसर ( स्त्री० ) त्रुटि, कमी, अल्पता ।

कसरत ( स्त्री० ) व्यायाम, परिश्रम, अभ्यास ।

कसरथानी ( पु० ) बनियों की जाति-विशेष ।

कसहन ( पु० ) दूटे-फूटे काँसे के बत्तनों के टुकड़े ।

कसाई ( पु० ) बूचड़, बधिक ।

कसाना ( कि० अ० ) कसँखा हो जाना ।

कसार ( पु० ) एक तरह की मिठाई जो चावल और  
शक्कर से बनाई जाती है ।

कसाला ( पु० ) कष्ट, दुःख, तकलीफ़ ।

कसियाना ( कि० अ० ) कसँखा हो जाना ।

कसी ( स्त्री० ) पृथ्वी नापने की रस्सी, फाल, लांगूल ।

कसीदा ( पु० ) कपड़े पर सुईकारी ।

कसून ( पु० ) कंजो आँख का घोड़ा, सुलेमानी घोड़ा ।

कसूर ( पु० ) खता, बुराई, ऐब, अपराध, दोष ।

कसेरा ( सं० कस्य=कार, कांस्य=काँसा, कार=करनेवाला,  
क=करना ) ( पु० ) ठेरा, भरतिया ।

कसैया ( पु० ) जाँचनेवाला, कसनेवाला, परीक्षा करने-  
वाला, पारखी ।

कसैला ( वि० ) कसाव, कपाय-रसवाले पदार्थ ।

कसैली ( स्त्री० ) सुपारी, कसैली वस्तु ।

कसोरा ( पु० ) कटोरा, मिट्टी का प्याला ।

कसौटी ( सं० कृपु=कसना, जाँचना ) ( स्त्री० ) एक पत्थर  
जिस पर सोना-चाँदी सने हैं, धातु परखने का  
पत्थर, कसनी ।

कस्तूरी ( कर्पू=जाना, अर्थात् जिससे सुगंध निकलती है )  
( स्त्री० ) सुगंधित चीज़ जो मृग-नाभि में मिलती

है, मृगमद, मुश्क ।

कहगिल ( स्त्री० ) भुमा मिला हुआ गारा ।

कह देना ( बोल० ) बता देना, आज्ञा देना ।

कहना ( सं० कथन, कथु=कहना ) ( कि० सं० ) बोलना,  
जताना, आज्ञा करना ।

कहनावत } ( सं० कथावत्, कथा=बात, वत्=रावर,  
कहावत } तुल्य ) ( स्त्री० ) बात, दृष्टांत, मिसाल,  
मसल ।

कहनी ( स्त्री० ) प्रचलित उक्ति, कथा-कहानी ।

कहनूत ( स्त्री० ) कहनावत, बात ।

कहर ( पु० ) राजब, आक्रम, विपत्ति, आपत्ति ।

कहरना } ( कि० अ० ) कराहना, किसो दुःख अर्थात्  
कहराना } पीड़ा के कारण आह मारना ।

कहाँ ( सं० क ) ( कि० वि० ) किस जगह, कौन स्थान ।

कहाँ-कहाँ ( बोल० ) कितना, हद से बाहर, बहुत  
ही अधिक, अप्रासंगिक ।

कहाँ तक ( कि० वि० ) कितनी दूर तक, कितनी देर  
तक, कितना ।

कहाँ से ( कि० वि० ) किस जगह से, किस तरफ से,  
किधर से ।

कहानी ( सं० कथन, कथु=कहना ) ( स्त्री० ) बात, कथा,  
कहसा, गल्प ।

कहार ( सं० कर्मकार, कर्म=काम, कार=करनेवाला ) ( पु० )  
महरा, भोई, पालकी डोनेवाला, शूद्र-वर्ण की एक  
जाति ।

कहावत ( स्त्री० ) दृष्टांत, उक्ति, प्रचलित, लोकोक्ति ।

कहासुना ( पु० ) भूख-वृक्ष, अनुचित कथन, अनर्गल प्रजाप ।

कहासुनी ( स्त्री० ) झगड़ा, वाद-विवाद, अनुचित  
वार्तालाप ।

कहीं ( सं० कपि, क=कहाँ, अपि=भी ) ( कि० वि० )  
किसी जगह, जहाँ कहीं, कहुँ ।

कहीं-कहीं ( बोल० ) इस जगह या उस जगह,  
यहाँ अथवा वहाँ, किसी न किसी जगह ।

कहुँ ( कि० वि० ) कहीं, किसी जगह ।

काँदियाँ ( वि० ) होशियार, धूर्त, चालाक, फरेबी ।

काँकर ( पु० ) कंकड़, रोड़ा, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े ।

काँख ( सं० कठ ) ( स्त्री० ) बाज़, कक्ष, पारख, कसरी ।



काँखना ( कि० अ० ) कहरना, कूथना, आह भरना,  
ज़ोर से वायु को रोकना ।

काँच ( पु० ) शीशा, दर्पण, रोग-विशेष ।

काँचरी ( स्त्री० ) काँचड़ी, साँप के ऊपर का पतला चर्म ।

काँचुली ( सं० कंचुक, कवि=बाँधना ) ( स्त्री० ) अँगिया,  
चोली, कंचुकी ।

काँजी ( सं० कांजिक ) ( पु० ) खट्टा माँड़, तुरानी पीछ,  
सिरका, खटाई ।

काँटा ( सं० कंटक ) ( पु० ) शूल, शाल, कंटक, सोना  
अथवा दवाई आदि तोखने की छोटी तराजू, पर-  
यानी, मछली पकड़ने की बंसी, मछली की हड्डी ।

काँटा-सा निकल जाना ( बोल० ) दुःख अथवा हानि से  
छुट जाना, किसी चिंता का एकदम दूर हो जाना ।

काँटे घोटना ( बोल० ) दुःख पैदा करना, बुराई करना,  
किसी को दुःख देना । “जो तोंकों काँटा घुवै...”

—कबीरदास

काँटों पर घसीटना ( बोल० ) बहुत सराहना, किसी की  
योग्यता से अधिक बड़ाई करना ( जब कोई किसी  
आदमी की बहुत सराहना करता है तब वह आदमी  
नम्रता से ऐसा कहता है ), अनुचित काम कराना ।

काँटा ( सं० कंठ ) ( पु० ) पास, नगोच, निकट, गला, कंठा ।

काँड़ी ( स्त्री० ) उखलो, जट्टा, जहाज़ के लंगर की डौंडी ।

काँदा ( पु० ) प्याज़, कीचड़, पंक ।

काँदू ( सं० कान्दविक ) ( पु० ) भड़भूँजा, चीनी का हँडा,  
बनियों की एक जाति ।

काँधा ( सं० कन्ध ) ( पु० ) कंधा, काँध, कंध ।

काँधा देना ( बोल० ) सहायता देना, मुर्दे को ले जाना ।

काँपना ( सं० कंपन, कंप=काँपना ) ( कि० अ० ) हिलना,  
धरथराना, डुलना, काँपना, धड़धड़ाना ।

काँवर ( स्त्री० ) बहँसी, एक रोग जिसमें आँखें पीली  
पड़ जाती हैं ।

काँवरिया ( पु० ) बँहगी ले जानेवाला ।

काँस ( सं० काश, काश=चमकना ) ( पु० ) एक प्रकार की घास ।

काँसा ( सं० काँस्य ) ( पु० ) एक प्रकार की धातु, कपकपट ।

काई ( स्त्री० ) कीट, शैवाल, जलमैल, जल में उगनेवाली  
एक प्रकार की घास ।

काऊ ( कि० वि० ) कोई, कभी, किसी ।

काक ( कै=शब्द करना ) ( पु० ) कौवा, काग, बायस ।

काकतालीय ( वि० ) अकस्मात्, हैवात्, इत्तफाक्रिया ।

काकदंत ( पु० ) आश्चर्यजनक, अद्भुत बात, असंभव ।

काकपत्त ( काक=कौवा, पत्त=पंख, अर्थात् कौवे का पंख-  
जैसा ) ( पु० ) पट्टा, जूल्फ़ी । “काकपच्छ सिर सोहत  
नीके” —तुलसी

काकपद ( पु० ) भूलसूचक चिह्न, कौए के पैर-जैसा  
चिह्न, हीरे का एक दोष ।

काकबंध्या ( स्त्री० ) जिस स्त्री के एक ही बार पुत्र उत्पन्न  
हुआ हो ।

काकरी ( स्त्री० ) ककड़ी, ककरी ।

काकली ( स्त्री० ) मधुर ध्वनि, संध लगाने की सँबरी,  
साठी धान, गुंजा, कोयल को-सी आवाज़ ।

काका } ( पु० ) चचा, बाप का छोटा भाई, पितृव्य,  
कका } मकोय, पुंघची, ब्या-ब्या ।

काकिणी ( स्त्री० ) छदाम, कच्ची दो दमड़ी ।

काकी ( स्त्री० ) चची, चचा की स्त्री, किसकी ।

काकातूआ ( पु० ) सूगे की ज्ञात का पक्षी ।

काकु ( पु० ) व्यंग्य, ताना, व्यंगोक्ति जिससे अनेक अर्थ  
हो सकें ।

काग } ( सं० काक ) ( पु० ) कौवा ।  
कागा }

कागर ( पु० ) किनारा, कोर, आँठ, सर्प की कंचली ।

कागावासी ( स्त्री० ) भाँग, जो सबेरे छानी जाय ।

काँछा ( सं० कांक्षना ) ( स्त्री० ) चाह, इच्छा, चाहना,  
अभिलाष, स्वाहिश, लँगोट या कछुनी सरीखा कोई  
कपड़ा पहनना ।

काँग्रस ( पु० ) मल, मिलाप ।

काच ( कच=चमकना ) ( पु० ) शोशा, आईना, एक  
तरह की आँखों की बीमारी, कच्चा ।

काचा ( वि० ) कच्चा, अधूरा, अज्ञानी, दरपोक, भीरु ।

काची ( स्त्री० ) दूध रखने की हाँडी ।

काचो ( वि० ) मिथ्या, असार, निस्सार ।

काछु ( सं० कच्छ, कच्छ=बाँधना ) ( स्त्री० ) धोती का  
पल्ला जो पीछे खींचकर बाँधा जाता है, लाँग, जाँघ  
के ऊपर का भाग ।

काछुन ( स्त्री० ) काछी की स्त्री ।

काछुनी ( स्त्री० ) लँगोटा, कोपीन, जाँघिया ।

काछी ( पु० ) कुंजड़ा, माछी, तरकारी बगैरह पैदा  
करनेवाला, मुराई ।

काछे (वि०) समीप, पास, नज़दीक, निकट, ज़ेगोटा  
खगाए हुए ।

काज } (सं० कार्य) (पु०) काम, धंधा, कार्य ।  
काजा }

काजल (सं० कज्जल) (पु०) सुरमा, अंजन, काजिमा,  
कलंक ।

काज़ी (पु०) न्याय करनेवाला ।

काखन (काचि=चमकना) (पु०) सोना, सुवर्ण, स्वर्ण ।

काट (काटना) (पु०) चोरा, ज़न्नम, घाव, मैल,  
छाँटन, तलछट, कड़वाहट, तेज़ी, धार, तर्क, कमाख ।

काट करना (बोल०) घायल करना, जखमी करना,  
काटना, कमाख करना ।

काटकूट (बोल०) छाँटछूँट, कतरन, छाँटन, छाजन,  
टुकड़ा ।

काटकूट करना (सं०) कतरना, तराशना, काट  
ढाखना, काट लेना, ले लेना, मुजरा लेना ।

काट खाना (बोल०) दाँत मारना, दाँत काटना, भँभो-  
दना, पकड़ना, काटना, ढसना, मुँह ढाखना ।

काट डालना (बोल०) काट काटना, साफ़ करना, उतार  
ढाखना, छाँट ढाखना, टुकड़े करना ।

काटना (सं० कर्तन, कृ=कटना) (क्रि० सं०) छेदना,  
तोड़ना, कतरना, चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, काट  
खाना, खाना खा जाना, खा खेना, छोनी, कटनी  
करना, घासे से चीरना, घारा चलाना, बिताना,  
(समय) चखना, जाना, तय करना (रास्ता) ।

काठ (सं० काष्ठ) (पु०) लकड़ी ।

काठकथाड़ (बोल०) लकड़ी की चीज़ें, घर-गिरिस्ती ।

काठ का उल्लू (बोल०) मूर्ख, बेवकूफ़, घासब,  
बिलहाना, भुच, मियाँमिट्टू, मसझरा, गावदी ।

काठ की भंवो (बोल०) मूर्ख, बिलहाना, भुच की,  
बेवकूफ़ लुगाई ।

काठ चखाना (बोल०) दुःख से निर्वाह करना, दुःख से  
जाना, कठिनाता से गुज़र करना ।

काठ मार जाना (बोल०) भारस्व में जाना ।

काठ में पाँव देना (बोल०) ज़ेद होना, ज़ेरी होना ।

काठ होना (बोल०) कड़ा होना, सूख जाना, पथराना,  
पथर हो जाना ।

काठकीड़ा (सं० कठकीट) (पु०) खरगज, उकीस, ।

खाटकीड़ा, घुन, एक कीड़ा जो लकड़ी को काटता  
और खाता है ।

काठड़ा } (सं० काष्ठ) (पु०) लकड़ी का बर्तन ।  
कठड़ा }

काठपुतली } (सं० काष्ठपुतली) (स्त्री०) लकड़ी की  
कठपुतली } बनाई हुई मूर्ति, एक प्रकार का नाच,  
(बोल०) दूसरे के वशीभूत होना, दूसरे के इसारों  
पर चलना ।

काठी (सं० काय, वा काष्ठ) (स्त्री०) ज़ीन, शरीर का ढाँचा,  
डील-डील ।

काढ़ना (क्रि० प्र०) निकाखना, खींचना, बाहर खाना,  
उधेदना, बाहर निकाखना, कपड़े पर सुई से फून  
बनाना, कसीदा निकालना ।

काढ़ा (पु०) जोश दिया हुआ दवाई का पानी, काथ,  
कसैला-रस ।

काणा (सं० काण, कण=प्राँच ढकना) (वि०) एक  
आँखवाला, एकाक्ष, (फल) जिसका गूदा सब  
गया हो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न हो, मूर्ख,  
बेवकूफ़, (पु०) काग, कौवा ।

कांड (कण=शब्द करना, वा जाना, वा कई विभाग करना)  
(पु०) सर्ग, खंड, प्रकरण, अध्याय, भाग, बाब,  
विभाग, समूह, डंडल, समय, बाण, सेन, घोड़ा, तन्ना ।

कांडकार (पु०) तीर बनानेवाला ।

कातना (सं० कर्तन, कृ=तोड़ना) (क्रि० सं०) सूत  
काटना, चरखे पर रहें से सूत बनाना ।

कातर (का=थोड़ा, तृ=मार होना, यहाँ कु=को का हो गया है)  
(वि०) कायर, डरपोक, ब्याकुल, घबराया हुआ ।

कातिक (सं० कार्तिक) (पु०) सातवाँ हिंदू महीना,  
कार्तिक ।

कातिल (वि०) जह्माद, घातक, प्राण लेनेवाला ।

काती (स्त्री०) कैंचो, सुनारों की कतरनी, छोटी तलवार,  
सूत कातनेवाला ।

कात्यायनी (स्त्री०) कषाय वक्ष धारण करनेवाली  
अथवा विधवा, वाजवल्क्य की पत्नी ।

कादर (सं० कातर) (वि०) कायर, डरपोक ।

कादा (पु०) जहाज़ों की शहतीरों के गाढ़ने की लक-  
ड़ियों की पटरी ।

कान (सं० कर्ण, कृ=करना, शब्द को) (पु०) सुनने  
की इंद्रिय, अवयव, सुनने को राह, सदान ।

कान उमेठना } ( बोल० ) कान खींचना, ताड़ना  
कान ऐंठना } करना, सज़ा देना, आतंक जमाते हुए  
सतर्क करना ।

कान करना ( बोल० ) शरमाना, लजाना ।

कान काटना ( बोल० ) बढ़ निकलना, बढ़ चलना,  
थकाना, हराना, पीछे देना, चालाकी दिखाना ।

कान खड़े होना ( बोल० ) सतर्क होना, डरना, भड़क जाना ।

कान खोल देना ( बोल० ) जताना, चिताना, सावधान  
करना, सचेत करना ।

कान छोड़ना ( बोल० ) बेशर्म होना, निर्लज्ज होना,  
ढीठ होना, गुस्ताख़ होना ।

कान झुकाना ( बोल० ) सुनने को चाहना, सुना चाहना ।

कान दबाकर चले जाना ( बोल० ) भाग जाना, पलायन  
करना, रम जाना ।

कान देना ( बोल० ) सुनना, ध्यान देना ।

कान दे सुनना ( बोल० ) ध्यान देकर सुनना ।

कान धरना ( बोल० ) सुनना, ध्यान देना ।

कानन ( कन्=चमकना, शोभा, वा क=पानी, अन्=जीन,  
अर्थात् जो पानी से फ़ज्जता-फूलता है ) ( पु० ) जंगल,  
वन, विपिन, ( क=ब्रह्मा, अन्=मूँह ) ब्रह्मा का मुँह ।

कान न करना } ( बोल० ) ठिठाई करना, गुस्ताख़ी  
कान न मानना } करना, अदब न मानना ।

कान न हिलाना ( बोल० ) चुप रहना ।

कान एकड़ना ( बोल० ) अपने तर्ह छोटा मान लेना,  
अपनी छोटाई अथवा निचाई को मान लेना, भूल  
मानना, चेतावनी देना ।

कान पर जूँ रँगना ( बोल० ) बहुत असावधान होना,  
बहुत ढीला होना, उत्साहहीन होना, उदासीन होना ।

कान पर रखना ( बोल० ) याद रखना ।

कान पर हाथ धरना ( बोल० ) मुकरना, नहीं करना,  
न मानना, ऊँहूँ करना, बराब करना ।

कान फूँकना ( बोल० ) चुगली खाना, भेद कहना,  
भगड़ा उठाना, मंत्र देना, सिखाना, शिक्षा देना ।

कान फूटना ( बोल० ) बहिरा होना ।

कान फोड़ना ( बोल० ) शोर मचाना, गुल्ल करना, गुहार  
करना, हल्ला करना, हाँ-हूँ करना ।

कान भरना ( बोल० ) विरोध डालना, चुगली खाकर  
भगड़ा खड़ा करना, बखेड़ा डालना, तोड़-फोड़  
करना, बहकाना ।

कान मलना ( बोल० ) ताड़ना देना, सज़ा देना,  
डाटना, कान ऐंठना, कान उमेठना ।

कान में उँगली दे रहना ( बोल० ) कान बंद करना,  
बहरा बनना, सुनी अन्सुनी करना ।

कान में कहना } ( बोल० ) कानाफूसी करना,  
कान में डालना } कानाकानी करना, कानाबाती  
करना, कह देना, संकेतरूप में कोई बात कह देना,  
भेद बतलाना ।

कान में तेल डालके सो रहना ( बोल० ) असावधान  
होना, अचेत होना, ज़ापरवाह होना, शाफ़िश  
होना, बेख़बर होना ।

कान में तेल डालना ( बोल० ) नहीं सुनने का बहाना  
करना, कान में बात मारना ।

कान में बात मारना ( बोल० ) नहीं सुनने का बहाना  
करना, सुनी अगसुनी करना ।

कान लगना ( बोल० ) भरोसेवाला होना, विश्वासी होना ।

कान हिलाना ( बोल० ) राज़ी होना, प्रसन्न होना,  
हाँ-हूँ करना ।

कान होना ( बोल० ) समझना, बूझना, पहुँचना,  
होश होना, चेत आना ।

कानाकानी करना ( बोल० ) कानाबाती करना,  
कानाफूसी करना, खसफस करना ।

कानाफूसी ( बोल० ) कानाबाती, कानाकानी, फुस-  
फुसाहट, खुसर-फुसर ।

कानाबाती करना ( बोल० ) कान में बात कहना,  
कानाफूसी करना, कानाकानी करना, खुस-फुस  
करना, सलाह करना ।

कानि ( स्त्री० ) लाज, संकोच, मर्यादा, मान, परदा, अदब ।

कानी ( सं० काथी ) ( वि० ) एक आँखवाली, ( स्त्री० )  
बैर, द्वेष, डाह ।

कानी कौड़ी ( सं० काथी=कानी, कौड़ा=रुपई ) ( स्त्री० )  
ऐसी कौड़ी जिसमें छेद हो, फूटी कौड़ी ।

कानी काँड़ी को न पूछना ( बोल० ) कुछ भी मूल्य  
न लगाना ।

कानी कौड़ी न होना ( बोल० ) निर्धन होना ।

कानीन ( वि० ) अविवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र, कर्ण,  
व्यास, अविवाहिता-गर्भज ।

कानोकान कहना ( बोल० ) कानाबाती करना, काना-  
फूसी करना, चुपके से कोई बात कहना ।

कानोकान खबर न होना (बोल०) अत्यंत गुप्त रूप से कोई काम होना, पट्यंत्र करना।

कांत (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) (पु०) स्वामी, भर्ता, पति, कंत, (वि०) सुंदर, मनोहर, प्यारा, प्रिय, चाहा हुआ।

कांता (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) (स्त्री०) पत्नी, लुगाई, स्त्री, भार्या, घरवाली, प्यारी, प्रिया, सुंदरी, कांति, सुंदरता।

कांतार (पु०) सघन वन, कठिन मार्ग, कुपथ।

कांताशक्ति (वि०) स्त्रियों का बल, प्रबल बल।

कांति (कम्=चाहना) (स्त्री०) शोभा, सुंदरताई, चमक, दमक, खूबसूरती, दीप्ति, प्रकाश, चाह, इच्छा।

कांमैस (पु०) सभा, समाज, मजलिस, जलसा।

कान्यकुब्ज (कन्या=लकड़ी, कुब्जा=कुवरी) (पु०) कश्मीर-देश, ब्राह्मणों की एक जाति, कनोजिया, कान्यकुब्ज देश के निवासी।

कान्ह } (सं० कृष्ण) (पु०) श्रीकृष्ण का नाम।  
कान्हूर }

कान्हड़ा (पु०) एक रागिनी का नाम।

कापाल (पु०) अन्न-विशेष, संधि-विशेष।

कापालिक (पु०) बंगाल की एक संकर जाति-विशेष, शैवमत के साधू, अघोरी, वाममार्गी, कुष्ठ-विशेष।

कापुरुष (क=चुरा, पुरुष=मनुष्य) (पु०) छोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, (वि०) डरपोक, कायर।

काफिया (पु०) तुक, अंतिम अनुप्रास।

काफिर (वि०) विधर्मी, निर्दोष, कठोर, नास्तिक।

काफिला (पु०) पैदल यात्रियों अथवा व्यापारियों

काफ्री (वि०) पर्याप्त, अलम्। [का वृ० द।

काकूर (पु०) कपूर।

काकूर होना (मुहा०) चंचल होना, गायब होना, उड़ जाना।

काय (स्त्री०) बड़ी रकाबी।

कायर (वि०) चितकबरा, कई रंगों का, एक प्रकार की जंगली मैना, रेत मिछी हुई जमीन।

कायला (पु०) बाजट्ट, बड़ा पेंच जिसमें दिबरी कसी जाती है।

काया (पु०) मुसलमानों का तीर्थ, यह अरब के मक्का-शहर में है; चकर।

कायिज (वि०) अधिकारी, कब्जा करनेवाला स्वाम्य-पदार्थ।

कायिल (वि०) लायक, योग्य, विद्वान्, पंडित।

कायिलियत (स्त्री०) क्षियाकृत, योग्यता, पांडित्य।

काबी (स्त्री०) कुरती का एक पेंच।

काबुक (पु०) कबूतरों का दरवा।

काबू (पु०) वश, जोर, अधिकार, बल, कस।

काम (कम्=चाहना) (पु०) चाह, मकसद, इच्छा, कामना, मनोरथ, चाही हुई चीज, चाहा हुआ विषय, कामदेव, प्यार का देवता, सुख, शहवत, (पु०) काज, कार्य, धंधा।

काम अटकना (बोल०) हर्ज होना, काम रुकना।

काम आना (बोल०) काम में आना, बरता जाना, मारा जाना, लड़ाई में मारा जाना, हित में लगना।

काम चलाना (बोल०) काम निकालना, काम जारी रखना।

काम निकालना (बोल०) काम चलाना, किसी को चाह पूरी करना।

काम पूरा करना (बोल०) काम सिद्ध करना, काम पार करना, निबटना, निपटाना, भुगताना, मार डालना, जान से मार डालना, खपाना।

काम पूरा होना (बोल०) काम सिद्ध होना, काम पार होना, निबटना, निपटना, काम हो चुकना, मारना, मारा जाना, मर जाना, खपना।

काम में लाना (बोल०) बरतना, इस्तश्माल करना।

कामकला (स्त्री०) रति, मैथुन, कामदेव की स्त्री, तंत्रों की एक विधा।

कामकाज (सं० कर्म+कार्य) (बोल०) काम, धंधा, कारबार, शादी-विवाह।

कामकाजी (वि०) काम करनेवाला, उद्योगी।

कामकूट (पु०) लंपट, चेरयागामी।

कामकेलि (काम=कामदेव, वा स्त्रीसंग, केलि=खेल, किल्ल=लेलना) (स्त्री०) रंगरस, दुलार, प्यार, स्त्री-संग, रति, मैथुन, सुरति, स्त्री-पुरुष का मिश्रण, केलि करना।

कामग (वि०) लंपट, चेरयागामी, स्वेच्छाचारी।

कामचर (पु०) अपनी इच्छा के अनुसार सब जगह जानेवाला।

कामचलाऊ (वि०) जिससे किसी प्रकार काम निकल सके, अस्थायी।

कामचोर (वि०) आलसी, काम से जी चुरानेवाला।

कामज्वर (पु०) स्त्री और पुरुष को अखंड ब्रह्मचर्य पालने से जो ताप उत्पन्न होता है।

कामद् (काम=इच्छा, कामना, दा=देना) (वि०) मनो-वांछित फल का देनेवाला, चाहे हुए का देनेवाला, मनोरथ पूर्ण करनेवाला।

कामद गाय ( सं० कामदगो, कामद=बाहे हुए को देने-वाली, गो=गाय ) ( स्त्री० ) कामधेनु ।

कामदानी ( स्त्री० ) बेलबूटा जो बादले के तार अथवा सलमे-सितारे से बनाया जाय ।

कामदार ( पु० ) अमला, कारिदा, प्रबंधक, जिसमें कारचोबी वगैरह का काम किया गया हो ।

कामदूती ( स्त्री० ) परवल की बेल ।

कामदेव ( काम=इच्छा वा प्यार, देव=देवता ) ( पु० ) प्यार का देवता, मदन ।

कामधेनु ( काम=नोरथ, धेनु=गाय ) ( स्त्री० ) इंद्र की गाय जिससे जो कुछ माँगे, सो देती है, गाय जो बहुत दूध देती हो; मुहावरे में इच्छा पूर्ण करनेवाली वस्तु ।

कामना ( कम्=चाहना ) ( स्त्री० ) चाहना, चाह, इच्छा, अभिलाष, वासना, इवादिश ।

कामयाय ( वि० ) सफल, कृतकार्य ।

कामरि } ( सं० कंल ) ( स्त्री० ) लोई, कंबल, कमरी ।  
कामरी }

कामरूप ( काम=इच्छा, रूप=आकार ) ( वि० ) चाहे जैसा रूप बना लेनेवाला, सुंदर, सुहावना, मनोहर, ( पु० ) एक देश का नाम जो आसाम का एक भाग है ।

कामरूपी ( काम+रूप ) ( वि० ) सुंदर, सुहावना, स्वेच्छा-चारी, बहुरूपिया, अनेक वेश धारण करनेवाला ।

कामल ( पु० ) वसंतमाल, पित्तविकार से उत्पन्न रोग-विशेष, इसमें सारा शरीर और नेत्र पीले पड़ जाते हैं ।

कामवल्लभ ( पु० ) आनंद ।

कामवल्लभा ( स्त्री० ) चाँदनी, चंद्रिका, रति ।

कामवाण ( पु० ) कामदेव के वाण ।

कामा ( स्त्री० ) कामिनी स्त्री, दो वाक्यों के बीच में आने वाला विराम-विशेष—जैसे, ।

कामातुर } ( काम=प्यार, इरु, आतुर वा आर्त घबराया हुआ ) ( वि० ) कामी, मतवाला, काम से पीड़ित ।  
कामार्त्त }

कामातुज ( पु० ) क्रोध, गुस्सा, तामस ।

कामायुध ( पु० ) आनंद ।

कामारि ( काम=कामदेव, अरि=वैरी ) ( पु० ) महादेव, शिव, काम को नाश करनेवाली धातु ।

कामिनी ( कामी, कम्=चाहना ) ( स्त्री० ) परम सुंदरी, रमणीय स्त्री, प्यारी, प्रिया, दाह इस्त्री, मदिरा, कामवती स्त्री, रागिनी-विशेष ।

कामिल ( वि० ) कुल, समूचा, पूरा, योग्य, पक्का ।

कामी ( काम ) ( पु० ) कामातुर, काम के वश, शहबत-परस्त, चक्रवा, कबूतर, गौर, सारस, चंद्रमा, विष्णु का एक नाम, ( स्त्री० ) कौंसे का ढाला हुआ छड़ जिससे मुठिया बनता है, कमानी, तीखी ।

कामुक ( वि० ) कामी, ऐशाश, मस्त ।

कामोद ( पु० ) राग-विशेष, करुणा और हास्य में इसका उपयोग रात के पहले आधे पहर में होता है ।

कामोद्दीपन ( पु० ) सहवास की इच्छा का उत्तेजन ।

काम्य ( वि० ) कमनीय, सुंदर, एक वन का नाम ।

काय ( पु० ) } ( चि=कट्टा करना ) शरीर, देह,  
काया ( स्त्री० ) } तन ।

कायजा ( पु० ) घोड़े की लगाम की डोर जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं ।

कायदा ( पु० ) चाल, दस्तूर, नियम, ढंग, विधि ।

कायफल ( सं० कटुकल ) ( पु० ) एक फल का नाम ।

कायम ( वि० ) ठहरा हुआ, स्थिर, स्थापित ।

कायर ( सं० कातर ) ( वि० ) डरपोक, कादर, भीरु ।

कायल ( वि० ) कबूल करनेवाला, लज्जित ।

कायली ( स्त्री० ) लज्जा, ग्लानि ।

कायस्थ ( काय=शरीर, स्था=ठहरना, अर्थात् जो ब्रह्मा के शरीर से पैदा हुए ) ( पु० ) कायथ, एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा लिखने-पढ़ने का है, ( काय=शरीर में, स्था=ठहरना ) ब्रह्म, परमात्मा, चीख, गीदड़ ।

कायिक ( काय ) ( वि० ) शरीर का, शारीरिक, काया का, देह का, दैहिक, शारीरिक ।

कारक ( कृ=करना ) ( पु० ) करनेवाला, ( व्याकरण में ) क्रिया से संबंध करनेवाला—जैसे कर्ता कर्म आदि ।

कारकदीपक ( पु० ) काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई क्रियाओं का एक ही कर्ता वर्णन किया जाय ।

कारकन ( पु० ) कारिदा, प्रबंधकर्ता ।

कार-करदा ( वि० ) तजरुबेकार ।

कारखाना ( पु० ) कार्यालय, फ़ैक्टरी ।

कारगर ( वि० ) असर डालनेवाला, उपयोगी, प्रभाव-जनक ।

कारगुजार ( वि० ) काम को अच्छी तरह करनेवाला ।

कारज ( सं० कार्य ) ( पु० ) काम, काज ।

कारदून ( पु० ) ध्वज-चित्र ।

कारण ( कृ=करना ) ( पु० ) सबब, हेतु, निमित्त, जिये ।  
कारणकरण ( पु० ) महत्तत्वादि का कर्ता, पंचतत्त्व से  
सृष्टि रचनेवाला ।

कारपरदाज्ञ ( वि० ) कारिदा, प्रतिनिधि, कारकुन ।  
कारसाज़ी ( स्त्री० ) गुप्त कार्यवाही, चाखबाज़ी, काम  
पूरा करने की छिपी युक्ति ।

कारागार ( कारा=बंदीघर, कृ=पारना, आगार=स्थान )  
( पु० ) कैदखाना, जेलखाना, बंदीखाना, बंदीगृह ।

कारी ( कृ=करना ) ( पु० ) करनेवाला, कर्ता ।

कारुणिक ( कृणा=दया ) ( क० पु० ) दयालु, कृपालु,  
कृणानिधान, दयावान् ।

कार्तिक ( कृतिका एक नक्षत्र का नाम, इस महीने की  
पूर्णमासी के दिन कृतिका नक्षत्र होता है और इस महीने  
में चंद्रमा इस नक्षत्र के पास रहता है ) ( पु० ) कार्तिक ।

कार्पण्य } ( स्त्री० ) कृपणता, कंजूसी, बचीखी ।  
कार्पण्यता }

कार्मुक ( कृ=करना ) ( पु० ) धनुष, हथुधि ।

कार्य ( कृ=करना ) ( पु० ) काम, काज, कारज, प्रयो-  
जन, कारण, हेतु ।

कार्यकलाप } ( स्त्री० ) काररवाई, कारगुजारी ।  
कार्यप्रवृत्ति }  
कार्यवाही }

कार्यदत्त ( वि० ) कारगुजार, कार्यकुशल ।

कार्यदत्तता ( स्त्री० ) कारगुजारी ।

कार्यनिष्ठ ( कार्य=काम, निष्ठ=लगा, स्था=ठहरना )  
( वि० ) काम में लगा हुआ, काम में मशगूल ।

कार्याधिकारी ( पु० ) कारिदा, कारकुन ।

काल ( क=कृतिसत, युग, भल=पाना ) ( वि० ) काला,  
कृष्णवर्ण, अस्तित्व, ( कल्=गिनना, बिताना, वा ग्रेखा  
करना, चलाना ) ( पु० ) यमराज, मौत, मृत्यु, समय,  
अनु, मैहगी, अकाल, सर्प, कल का दिन ।

काल काटना } ( बोल० ) समय बिताना दिन काटना,  
काल गुंथाना }  
काल बिताना }

कालकूट ( काल=मौत, कूट=ढेर, कूट=ठकना, अर्थात् मौत  
का ढेर अथवा काल=यमराज, कूट=जलाना, जो यम को  
भी जला सके ) ( पु० ) बिष, जहर, हलाहल, साँप  
का बिष ।

कालक्षेप ( काल=समय, विपु=केंकना ) ( पु० ) समय  
बिताना, दिन काटना, वक्र, काटना ।

कालचक्र ( पु० ) गर्दिश के दिन, बुरे दिन, समय का  
हेर-फेर, समय-चक्र ।

कालज्ञान ( पु० ) समय की जानकारी, स्थिति और  
अवस्था की पहचान ।

कालधर्म ( पु० ) मृत्यु, विनाश, अवसान ।

कालनिशा ( स्त्री० ) दीवाली की रात ।

कालनिमि ( काल=मान, नेमि=पहिए का घेरा ) ( पु० )  
एक राक्षस का नाम ।

कालपुरुष ( पु० ) ईश्वर का विराट् रूप ।

कालप्रमेह ( पु० ) प्रमेह-विशेष, इसमें काला पेशाब  
आता है ।

कालयापन ( पु० ) दिन काटना ।

कालर ( पु० ) गले में बाँधने का पट्टा ।

कालरात्रि ( काल=मौत अथवा अंधेरा, रात्रि=रात ) ( स्त्री० )  
मौत की रात, प्रलय की रात, कल्पांत रात्रि, दुर्गा  
का एक नाम, दीवाली, दीपमाझिका को रात्रि ।

कालसिर ( पु० ) जहाज़ के मस्तूल का सिरा ।

कालसूत्र ( पु० ) अट्टाईस मुख्य नरकों में से एक नरक ।

काला ( सं०कल ) ( वि० ) काला रंग, कृष्णवर्ण, कछोट्टा,  
कलछौँहा, ( पु० ) साँप, समय, श्रीकृष्ण का नाम ।

काला चोर ( बोल० ) बे-जाना-बुझा मनुष्य, बेजान-  
पहचान का आदमी, चाहे जैसा आदमी ।

कालापानी ( पु० ) देश-निकाले का दंड ।

काला बाल ( पु० ) पराम ।

काला मुँह करना ( बोल० ) फटकारना, निकाल देना,  
हाँकना, खदेड़ना, बेहज्जत करना, अपमातित होना ।

कालिका } ( काल=काला ) ( स्त्री० ) कालीदेवी, काली-  
काली } माई, दुर्गादेवी, शक्ति ।

कालिदास ( काली=दुर्गा, दास=सेवक ) ( पु० ) एक कवि का  
नाम जिसके बनाए रघुवंश, कुमारसंभव, नलोदय  
और शकुंतला नाटक आदि बहुत-से काव्य  
प्रसिद्ध हैं ।

कालिंदी ( कलिंद एक पहाड़ का नाम, जहाँ से यमुना-नदी  
निकली अथवा कलिंद सूर्य, अर्थात् सूर्य का बेटी )  
( स्त्री० ) यमुना-नदी, सूर्य की बेटी जो श्रीकृष्ण की  
ब्याही थी ।

कालिंदीभेदन ( कालिंदी=यमुना, भेदन=तोड़ना, मोड़ना )  
( पु० ) श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेवजी, जिन्होंने  
अपने हल से यमुना को मोड़ लिया था ।

कालिभन } ( स्त्री० ) कारिल, स्याही, कालापन ।  
कालिमा }

कालिया } ( सं० कालिय, काल=काला ) ( पु० ) एक  
काली } साँप का नाम जिसके एक सौ दस फन थे,  
जिसको श्रीकृष्ण ने कालीदह से बाहर निकाला था ।

कालीदह ( सं० कालियदह, कालिय=साँप, दह=गहरा  
पानी ) ( पु० ) यमुना-नदी में एक भँवर जिसमें  
काली नाग रहता था ।

कालेकोस ( बोल० ) बहुत दूर ।

काल्पनिक ( पु० ) मनगढ़ंत, कर्त्तवी, ( वि० ) कल्पना  
किया हुआ ।

कावर ( स्त्री० ) कामर, बहूंगी, डोली ।

कावरी ( पु० ) रस्सी का वह फंदा जिसमें कोई चीज  
बाँधी जाती है ।

कावा देना ( बोल० ) घोड़े को चकर देना, घोड़े को  
गोलाकार घुमाना ।

कावेरी ( क=पानी, वेर=शरीर ) ( स्त्री० ) एक नदी का  
नाम जो दक्षिण-भारत में है ।

काव्य ( कवि, अर्थात् कवि का ) ( पु० ) कविता, रचना,  
छंद, पद्य, कवि का बनाया हुआ ग्रंथ ।

काश ( काश=चमकना ) ( स्त्री० ) एक प्रकार की घास,  
खौंसी, खौंसी ।

काशि ( पु० ) सूर्य ।

काशी ( काश=चमकना ) ( स्त्री० ) बनारस, जो बरुणा  
और असी नदी के मध्य में बसी है, विश्वनाथपुरी ।

काशीनाथ } ( काशी=बनारस, राजा अथवा नाथ=स्वामी )  
काशीराज } ( पु० ) महादेव, शिव, काशी का राजा ।

काशीफल ( पु० ) कुम्हड़ा, कटू ।

काशत ( स्त्री० ) खेती, कृषि ।

काशतकार ( पु० ) किसान, खेतिहर ।

काश्मीर ( काश्मीर अर्थात् जो काश्मीर में पैदा हो ) ( पु० )  
केसर, एक देश का नाम ।

काष्ठ ( काश=चमकना ) ( पु० ) काष्ठ, लकड़ी, ईंधन,  
जड़ी-बूटी ।

काष्ठा ( स्त्री० ) सीमा, अंत, अवधि, उत्कर्ष, दिशा,  
चंद्रमा की कला, पुष्यदश का मैदान ।

कासार ( पु० ) छोटा तालाब, पैंजीरी ।

काहिल ( वि० ) सुस्त, आलसी ।

काहू ( सर्वना० ) किसी को, कोई, कौन, कुछ, एक  
प्रकार का बीज जिससे तेल निकलता है ।

काहे ( क्रि० वि० ) किस लिये, क्यों ।

कि ( अव्य० ) पूर्वोक्त वर्णन, काक-बयानिया ।

किकियाना ( क्रि० अव्य० ) चिह्नाना, चिचिचाना, कंड से  
निकलनेवाली तेज़ आवाज़ ।

किंकर ( किम्=कुछ, कर=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० )  
दास, नौकर, चाकर, सेवक, ताबेदार ।

किंकिणी ( किम्=कुछ, किण=शब्द ) ( स्त्री० ) कंदोरा,  
कंधनी, कटिबंधन, सुवर्णटिका, कर्धनी ।

किचकिचाना ( क्रि० अव्य० ) दाँत पीसना, बटावटी  
साहस से कोई काम करना ।

किचपिच ( पु० ) काँदो, कीचड़, पंक ।

किंचित् ( किम्=क्या, कुछ ) ( वि० ) थोड़ा, कुछ, कुछेक,  
थोड़ा, कम ।

किङ्किड़ ( पु० ) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द,  
किट-किट ।

किङ्किड़ाना ( क्रि० अव्य० ) क्रोध से दाँत पीसना ।

कित ( सं० कुत्र, कहाँ ) ( क्रि० वि० ) कहाँ, किधर,  
कितना ।

कितना ( वि० ) किस अंदाज़ का, परिमाणवाचक ।

कितना ही ( बोल० ) चाहे जितना ।

कितब ( पु० ) जुआड़ी, गोरखन, धूर्त, वंचक ।

किदारा ( सं० केदार ) ( पु० ) एक रागिनी का नाम  
जो आधीरात के समय गाई जाती है ।

किधर ( क्रि० वि० ) किस तरफ़, कहाँ ।

किधौं ( अव्य० ) या, अथवा ।

किनवैया ( वि० ) गाहक, झरीदनेवाला ।

किनहा ( वि० ) जिसमें कीड़े पड़ गए हों ।

किनारी ( स्त्री० ) गोटा, कोर, छोर ।

किनु ( किम्=क्या, तु=फिर ) ( अव्य० ) पर, परंतु, लेकिन ।

किन्नर ( किम्=कुछ, अथवा नुरा, नर=मनुष्य ) ( पु० )  
गंधर्व, देवताओं का गवैया, कुबेर के सेवक जिनके  
घोड़े का मुँह और आदमी का थड़ है ।

किम् ( सर्वना० ) क्या, कौन, कैसा ।

किंपुरुष ( किम्=कुछ, पुरुष=मनुष्य ) ( पु० ) किन्नर,  
गंधर्व, देवताओं का गवैया ।

किंवदंती ( किम्=कुछ, वद=कहना ) ( स्त्री० ) लोगों का  
कहना, राय, अफवाह ।

किंवा ( किम्=वया वा ग्रथवा ) ( ग्रन्थ० ) ग्रथवा ।  
 किंशुक ( किम्=कुल, शुक्=जाना ) ( पु० ) पलास, टेसू,  
 छिउल, डाक ।  
 कियारी } ( सं० केदार, व=प नी, वृ=कटना ) ( स्त्री० )  
 पयारी } फूलों का तल्लता, मंद ।  
 किरका ( स्त्री० ) कंकड़, किरकिरी, छोटा टुकड़ा ।  
 किरकिटी ( स्त्री० ) आँख की कणिका ।  
 किरच ( स्त्री० ) खड्ग-विशेष, नोकदार टुकड़ा ।  
 किरण ( कृ=फैलना प्रकाश का ) ( स्त्री० ) सूर्य का तेज,  
 चाँद का प्रकाश, रश्मि, शुष्मा ।  
 किरपान ( पु० ) कृपाण, तलवार ।  
 किरात ( कृ=मारना, ईसा करना ) ( पु० ) भील, निपाद,  
 जंगली मनुष्यों की एक जाति ।  
 किराना ( सं० कृण, ग्री=लेन-देन करना ) ( पु० )  
 चीज जिसे पंखारी घेचते हैं, मसाला ।  
 किरिया ( सं० किया, कृ=करना ) ( स्त्री० ) सोह, सौगंद,  
 शपथ, कसम ।  
 किरौट ( कृ=बिखेरना प्रकाश का ) ( पु० ) मुकुट, सिर  
 का गहना, ताज ।  
 किरौना ( पु० ) कीड़ा ।  
 किर्च ( स्त्री० ) काँस, खपाच, तलवार ।  
 किल ( कि० वि० ) निश्चय ही, दृढ़, स्थिर, सुनते हैं ।  
 किलक ( स्त्री० ) चटक, चमक, प्रभा, दीप्ति, हर्षोल्लास ।  
 किलकिलाना ( सं० किलकिला, किल्=तेलना ) ( कि०  
 ग्र० ) चिड़चिड़ाना, चिड़चिड़ा होना, गरजना,  
 गुर्गना, उल्लास प्रकट करना ।  
 किला ( पु० ) कोट, गढ़, दुर्ग ।  
 किलायंदी ( स्त्री० ) व्यूह-रचना ।  
 किल्कारी ( सं० किलकिला ) ( स्त्री० ) बहुत जोर से  
 पुकारना, वानर का शब्द, हर्षोल्लास ।  
 किल्ली ( स्त्री० ) अर्गल, बेंड़ा ।  
 किलियष ( पु० ) अपराध, पाप, रोग, अनिष्ट ।  
 किशोर ( किम्=कुल, शरवार, अर्थात् इस अवस्था में कुछ-  
 कुछ वीरता देली जाती है ) ( पु० ) दश बरस से  
 पंद्रह बरस तक की उमर का लड़का, जवानी की  
 प्रारंभिक अवस्था, सह्यावस्था का अगम ।  
 किंकिधा ( किम्=मारना ) ( स्त्री० ) एक पुरी का नाम  
 जिसका राजा बालि वानर था, फिर उसको मारकर

श्रीरामचंद्र ने उस पुरी का राज्य सुग्रीव को दिया ।  
 किसनई ( सं० कृषि=खेती ) ( स्त्री० ) किसान का काम,  
 खेती, किसानी ।  
 किसलय ( किम्=कुल, पल=जाना ) ( पु० ) नए पत्ते,  
 नई डाढ़ी, नवपल्लव ।  
 किसान ( सं० कृषाण वा कृषिमान् ) ( पु० ) खेती करने-  
 वाला, जोतहार ।  
 किसारी ( स्त्री० ) एक प्रकार का नाज जिसकी दाढ़  
 बनती है, चटरी ।  
 किस्तघंड़ी ( स्त्री० ) थोड़ा-थोड़ा करके, किस्तवार,  
 टुकड़े-टुकड़े करके ।  
 किस्ती या किस्ती ( स्त्री० ) पनसुइया, नौका, छोटी-  
 सी सुंदर नाव ।  
 किस्म ( स्त्री० ) किसिम, तरह, प्रकार ।  
 किस्सा ( पु० ) कहानी, आख्यायिका ।  
 किहुनी ( स्त्री० ) ठिठुनी, कुहनी ।  
 कीक ( स्त्री० ) चिल्लाहट, चोत्कार, चीख ।  
 कीकड़ ( पु० ) खबूज, कटीछा पेड़ ।  
 कीकस ( पु० ) हाड़, अस्थि, हड्डी ।  
 कीका ( पु० ) घोड़ा ।  
 कीचक ( पु० ) एक दैत्य, वेणुरंध, अंकुररहित बाँस  
 जो वायु लगने से बोजते हैं, बाँस-छिद्र ।  
 कीच } ( सं० कचर ) ( पु० ) काँदो, पंक, मैला ।  
 कीचड़ }  
 कीट ( कीट=रंग-रंग का होना ) ( पु० ) कीड़ा, पतंग,  
 छखेरी ।  
 कीड़ा ( सं० कीट ) ( पु० ) कीट, पिलुषा ।  
 कीटक } ( वि० ) कैसा, किस प्रकार का ।  
 कीटल }  
 कीनखाव ( पु० ) वस्त्र-विशेष जो कलावत् से काढ़ा  
 जाता है ।  
 कीना ( पु० ) दुश्मनी, बैर, शत्रुता, डाह, ईर्ष्या ( करना ),  
 ( कि० सं० ) किया ।  
 कीनिया ( पु० ) कपटो, बैर रखनेवाला ।  
 कीमत ( स्त्री० ) मूल्य ।  
 कीमिया ( स्त्री० ) रसायन ।  
 कीर ( की=ऐसा शब्द, ईर=भेजना ) ( पु० ) तोता, सुग्गा,  
 सूआ ।



कीरति } ( कृत्=सराहना ) ( स्त्री० ) यश, नामवरी,  
कीर्ति } सराहना, सुयश ।

कीर्त्तन ( कृत्=सराहना ) ( पु० ) गुण-वर्णन, यश  
बखानना, सराहना, गाना, कहना ।

कील ( कील्=बाँधना ) ( स्त्री० ) कीला, खूँटी, काँटा,  
मेल, खूँटा ।

कीलक ( कील्+अक ) ( पु० ) खूँटा, बंधक, गडझों  
के बाँधने का खंभा, अन्य मंत्र का प्रभाव दूर करने-  
वाला मंत्र ।

कीलकाँटा ( बोल० ) औजार, साज-सामान, कलकाँटा ।

कीलना ( सं० कीलन, कील् बाँधना ) ( क्रि० सं० ) मंत्र  
फूँकना, बंध करना, साँप को मंत्र से वश कर लेना ।

कीलित ( वि० ) मंत्र-द्वारा स्तंभित ।

कीश ( कि=हनुमान्, क=हवा अर्थात् हवा का बेटा, और  
ईश=मालिक अर्थात् जिनका मालिक हनुमान् है ) ( पु० )  
बंदर, वानर ।

कीस ( पु० ) गर्भ की थैली ।

कु ( उपस० ) बुरा, अधम, नीच, निंदित, कम, थोड़ा  
झूठा ( जैसे कुर्क, झूठा तर्क ) ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी,  
जमीन ।

कुँआर ( सं० कुमार ) ( पु० ) बेटा, लड़का, राजा का  
बेटा, राजकुमार, राजपुत्र, एक प्रकार की राजघराने  
की उपाधि ।

कुँआरी ( सं० कुमारी ) ( स्त्री० ) बेटी, लड़की, राजा  
की बेटी, राजकन्या, राजपुत्री, राजघराने की स्त्रियों  
की उपाधि ।

कुँआरा ( सं० कुमार ) ( पु० ) अनव्याहा लड़का,  
( वि० ) अनव्याहा ।

कुँआरी ( सं० कुमारी ) ( स्त्री० ) अनव्याही लड़की,  
( वि० ) अनव्याही ।

कुकड़ना ( क्रि० प्र० ) सिकुड़ना, संकुचित होना ।

कुकड़ी ( स्त्री० ) कच्चे सूत की लच्छो, अंटी, मदार  
का फल ।

कुकर्म्म ( कु=बुरा, कर्म=कर्म ) ( पु० ) बुरा काम,  
अन्याय, पाप, दुष्कर्म ।

कुक्कुट ( कु=शब्द करना, वा कुक्=लेना ) ( पु० ) मुर्गा,  
कुक्कड़ ।

कुक्कुर ( कुक्=लेना वा कुर=शब्द करना ) ( पु० ) कुत्ता,  
श्वान ।

कुकुरखाँसी ( स्त्री० ) सूखी खाँसी, जिसमें कफ बाहर  
न निकले, सूख गया हो ।

कुकुरदंता ( वि० ) जिसके आगे के दाँत बड़े और  
बाहर निकले हुए हों ।

कुकुरमाछी ( स्त्री० ) एक प्रकार की मछली जो कुत्ता,  
गाय, बैल आदि जानवरों के शरीर में चपकी  
रहती है ।

कुकुरमुत्ता ( पु० ) कुकुरीधा ।

कुकुरी ( स्त्री० ) कुतिया, कुकड़ी ।

कुत्ती ( कुप्=निकालना ) ( स्त्री० ) पेट, कोल ।

कुखेत ( पु० ) बुरा स्थान, हारा हुआ युद्धस्थल ।

कुख्याति ( स्त्री० ) निंदा, बदनामी, अपयश ।

कुंकुम ( कुक्=लेना अथवा लिया जाना ) ( पु० ) केसर,  
सुगंधित द्रव्य विशेष, रोरी ।

कुंकुमा ( सं० कुंकुम ) ( पु० ) गुलाल रखने का बरतन ।

कुगड़ा ( वि० ) बलवान्, संड-मुसंड, पहलवान ।

कुच ( कुच्=बाँधना वा मिलाना ) ( पु० ) छाती, चूँची,  
थन, स्तन, पिस्ता ।

कुचकुइमल ( पु० ) कुचकली, चूँची की घुंघी ।

कुचंदन ( कु=कम अर्थात् बिना सुगंध, चंदन ) ( पु० )  
लालचंदन, रक्तचंदन ।

कुचर ( वि० ) निंदक, दोष ढूँढ़नेवाला ।

कुचलना ( क्रि० सं० ) चूर करना, मसलना ।

कुचला ( पु० ) एक जहरीला औषध का नाम, कोचिला ।

कुचाल ( कु=चाल, चाल=चालि ) ( स्त्री० ) कुरीति,  
बुरा चलन, कुटेव, बुरा चालचलन ।

कुचाह ( स्त्री० ) बुरी खबर, बदखबर, न चाहना, कपट,  
स्नेह ।

कुचैला ( वि० ) मैला, मैले कपड़े पहने हुए ।

कुछ ( सं० किंचित्=थोड़ा ) ( वि० ) थोड़ा, कम, कुछ,  
एक आध, जो कुछ, थोड़ा-बहुत ।

कुछ और गाना ( बोल० ) झूठी बात बनाना, और  
ही बात कहना ।

कुछ का कुछ होना } ( बोल० ) बिलकुल बदल जाना,  
कुछ से कुछ होना } सब-का-सब बदल जाना ।

कुछ कुछ ( बोल० ) थोड़ा-सा कुछेक, थोड़ाएक, थोड़ा  
बहुत, कुछ ।

कुछ खाकर मरना ( बोल० ) बिप खाकर मरना ।

कुछ खा लेना ( बोल० ) बिप खा लेना ।

कुछ-न-कुछ (बोल०) थोड़ा-बहुत, थोड़ा-सा ।  
कुछ नहीं (बोल०) कोई और चीज नहीं, कुछ और नहीं, निकम्मा, काम का नहीं ।

कुछ हो (बोल०) चाहे सो हो, जो कुछ हो ।

कुछ हो जाना (बोल०) किसी योग्य हो जाना ।

कुछेक (बोल०) थोड़ा-बहुत, कुछ-कुछ, कुछ ।

कुज (कु=पुत्री, जन=पैदा होना) (पु०) पृथ्वीपुत्र, मंगल, भीम, सेशंवा ।

कुजलीघन { (सं० कुंजरवन, कुंजर=हाथी, वन=जंगल)  
कजलीघन { (पु०) हाथियों का वन, जिस जंगल में हाथी बहुत हों ।

कुजाति (कु=पुत्री, जानि=जत) (वि०) नीच जाति का, कमीना, नीच, अधम ।

कुंचकी (स्त्री०) अँगिया, चोली, काचली, झूला ।

कुंचिका (स्त्री०) ताली, कुंजी ।

कुंचित (कुं=देड़ा होना) (वि०) टेढ़ा, तिमटा हुआ, घुँघरदार ।

कुंज (कु=धरती, जन=पैदा होना) (पु०) वह जगह जहाँ सघन पेड़ और वेलि आदि हों, गुंजन, हाथी की टुहरी ।

कुंजड़ा (पु०) फल-तरकारी बेचनेवाली जाति-विशेष ।

कुंजर (कुंज=हाथी का टुहरी वा कुंज=सघन वृक्षों की जगह, रा=लेना, अर्थात् जो कुंज में रहता है) (पु०) हाथी, हस्ती, मतंग ।

कुंजी (स्त्री०) चाबी, ताली ।

कुट (पु०) गढ़, कोट, घर, भवन, पेड़, पहाड़, पत्थर तोड़ने का घन, शूद्र, स्थला ।

कुटका (सं० कटका, कट=कटका) (स्त्री०) एक दवाई का नाम, एक प्रकार का कीड़ा, एक जानवर का नाम ।

कुटज (कु=राइज, जन=पैदा होना) (पु०) एक दवाई व कुरैया का नाम, इन्द्रियव, अगस्त्य-मुनि, दीणाचार्य ।

कुटना (कि० घ०) कुटना, खंड करना, टुकड़े करना, तोड़ना, चूर्ण करना, (पु०) कुर्म के लिये बहकाने-वाला, परस्त्री को परपुरुष से मिलानेवाला पुरुष, भगवा करनेवाला व्यक्ति ।

कुटनी (सं० कुटनी, कुट=काटना, निंदा करना) (स्त्री०) स्त्री, पराई स्त्री को पराए पुरुष से मिलानेवाली, दूहाला ।

कुटिया (स्त्री०) घास-फूस का बना घर, पर्यटन ।

कुटिल (कुट=टेढ़ा होना) (वि०) टेढ़ा, कपटो, खोटा, कड़ा, क्रूर, मगरा ।

कुटिहा (वि०) व्यंग्य से हँसी उड़ानेवाला, कूट कहने-वाला ।

कुटी } (कुट=टेढ़ा होना) (स्त्री०) ओपड़ी, मढ़ी ।  
कुटीर }

कुटीचर (पु०) छली, चुगलखोर, कुटिल ।

कुटुम (सं० कुटुब, कुटुब=कुल का पालन करना) (पु०) कुनवा, परिवार, घराना, कुल, खानदान ।

कुटुंबी (कुटुंब) (पु०) घरवाला, घरवारी, गृहस्थ, खानदानी ।

कुटेव (सं० कु=पुत्री, दि० टेव=स्वभाव) (स्त्री०) कुचाछ, बुरा चलन ।

कुठला (पु०) चने की भट्टी, नाज रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र ।

कुठाउ (स्त्री०) कुठाँय, कुठाँव, बुरी अगह ।

कुठाट (पु०) बुरा समाज, बुरा प्रबंध ।

कुठार (कुठ=चूक, कुट=काटना और ऋ=ज्ञाना, अर्थात् जो वृक्षों पर काटने के लिये चलाया जाता है) (पु०) कुल्हाड़ी, बसूला, टाँगो ।

कुठाहर (सं० कुस्थान, कु=पुत्री, स्थान=जगह) (स्त्री०) बुरी जगह, असमय, बेठिकाने, भ्रमस्थान, नाजुक स्थान ।

कुडकुना (कि० अ०) कुडकुड़ाना, कुटकुटाना, कबक-ड़ाना, क्रोध से बोलना ।

कुडव (पु०) प्रस्थ का चौथा भाग, चारपल, सेर का पाँचवाँ भाग ।

कुदना (सं० कुपु=कोष करना) (कि० अ०) कलपना, दुःख करना, सोच करना, गुस्सा करना क्रोध करना, जलना, दूसरे की बदती देखकर मन में, दुःख करना ।

कुदव (पु०) कठिन, बेहव ।

कुंडक (कुंड + अक) (वि०) मूर्ख, मंद, जाहिल, रूठनेवाला ।

कुंठित (कुंठ=भेथरा होना, वा सुस्त होना) (वि०) मंद, निकम्मा, झालसी, खजित, खफा हुआ ।

कुंड (कुंडि=जलाना, वा बचाना) (पु०) जल के रहने की जगह, होज़, चरमा, होम की आग रखने का गड्ढा, होम का कुंड ।

कुंडल (कुडि=बचाना, वा जलाना) (पु०) कान में पहनने का गहन, कर्णभूषण, धरा, मंडल ।

कुंडलिया (सं० कुंडलिका) (पु०) एक छंद का नाम, १४४ मात्रा का छंद ।

कुंडली (कुंडल=वेरा) (स्त्री०) धरा साँव, जन्मपत्री, कचनार, केवाँच, जलेबी, फेंटो, खँजड़ी ।

कुंडो (सं० कुड=बचाना) (स्त्री०) दरवाजे की सिकली या जंजीर ।

कुतका (पु०) सोंटा, उंडा, ठेंगा ।

कुतना (कि० अ०) अंदाज़ा करना, आँकना ।

कुतरना (सं० कर्त्तन, कृत्=काटना) (कि० सं०) दाँतों से काटना ।

कुतर्क (कु=बुद्धि, वा झूठी, तर्क=दलील) (स्त्री०) बुरे-बुरे तर्क, झूठे तर्क, झुजत, बकवाद, वितंडावाद ।

कुतवार (पु०) कृतनेवाला, अंदाज़ा करनेवाला ।

कुतार (पु०) असुविधा, अंडस ।

कुतुबखाना (पु०) पुस्तकालय ।

कुतुबनुमा (पु०) दिशा का ज्ञान करानेवाला एक यंत्र-विशेष ।

कुतुबफ़रोश (पु०) पुस्तक-विक्रेता ।

कुतूहल (कृत्=बुद्धि, हल=लिखन, अर्थात् कुछ खेल करना) (पु०) खेल, कौतुक, परिहास, उत्सुकता, अवंभा ।

कुत्ता (सं० कुकुर) (पु०) एक जानवर का नाम, श्वान ।

कुत्सा (कृत्=निंदा करना) (स्त्री०) निंदा, बुराई, अवज्ञा, अपमान ।

कुत्सित (कृत्=निंदा करना) (वि०) निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, कमोना ।

कुथ (पु०) हाथी की झूल, पालकी, रथ आदि का परदा, कंधा, कथरी ।

कुथरी (स्त्री०) गूदड़ी, कथरी ।

कुदकना (कि० अ०) कूदना, उछलना ।

कुदरत (स्त्री०) शक्ति, सामर्थ्य, माया, प्रकृति ।

कुदरती (वि०) स्वाभाविक, दैवी, प्राकृतिक ।

कुदाँव (पु०) कुघात, बिरासघात, धोखा, भयंकर स्थान ।

कुदार } (सं० कुदाल, कु=धरती, उद=दल, टुकड़ा  
कुदाल } करना) (स्त्री०) मिट्टी खोदने का औज़ार,  
कुदाली, बेख, बेखचा ।

कुदष्टि (कु=धुरी, पाप की, दृष्टि=दीठ) (स्त्री०) बुरी दीठ, पापदृष्टि, पाप से देखना, बदनज़र, बुरी निगाह ।

कुधर } (कु=धरती, धृ=रहना) (पु०) पहाड़, पर्वत,  
कुध्र } शैल ।

कुधातु (कु=धुरी अथवा सबसे नीच, धातु=धात) (स्त्री०) खोहा, खोह ।

कुनकुना (वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना ।

कुनघा (सं० कुट्टन) (पु०) घराना, कुंघ, कुल, खानदान ।

कुनबी (पु०) कृषि-कर्म करनेवाली जाति-विशेष, कुरमी, मुराई ।

कुनारो (कु=बुरा, नारी=स्त्री) (स्त्री०) दुष्ट नारी, खराब औरत बदज़ात औरत ।

कुनीति (कु=बुरा, नीति=चाल) (स्त्री०) कुचाल, बुरी चाल, कुरीति ।

कुंत (कु=बुद्धि, अंत=आखिर) (पु०) बरछी, भाजा, कूर भाव, जूँ, कुंती के पिता का नाम ।

कुंतल (पु०) केश, बाज, एक देश का नाम ।

कुंती (कृत्=चाहना) (स्त्री०) शूरसेन की बड़ी बेटो, श्रीकृष्ण की फूफो, पाँडु की स्त्री और युधिष्ठिर, अर्जुन भीमसेन आदि की मा। विशेष के लिये भा० च० देखें ।

कुंद (कु=धरती, दी=काटना, वा दं=शुद्ध करना, वा क=पानी, उंद=निगोना अर्थात् जो पानी से सींचा जाता है) (पु०) मोगरा, एक तरह का सफ़ेद फूल ।

कुंदन (पु०) अच्छा सोना, साफ़ सोना, उत्तम सोना ।

कुपथ (कु=बुरा, पथ=रास्ता) (पु०) कुमार्ग, बुरा राह, बुरा रास्ता, कुपथ, बुराई, बुरा चलन ।

कुपथ्य (पु०) अस्वास्थ्यकर आहार-विहार ।

कुपात्र (कु=बुरा, पात्र=दान देने योग्य ब्राह्मण वा ब्राह्मण) (वि०) अयोग्य, नाजायक ।

कुपित (कृत्=कोपना) (वि०) क्रोधित, कोपित ।

कुपुत्र (पु०) कपूत, नाजायक लड़का ।

कुपुरुष (कु=बुरा, पुरुष=मनुष्य) (वि०) बदभावसी, निषिद्ध मनुष्य ।

कुप्पा (सं० कुद, कु=धुरी तरह से, तन्=फैलाना) (पु०) धी अथवा तेज़ रखने का चमड़े का बड़ा बरतन ।

कुप्पा होना (बोल०) बहुत मोटा होना, फूल जाना ।

कुप्पा (स्त्री०) छोटा कुप्पा ।

कुफल ( कु=स्त्राग, फल=नतीजा ) ( वि० ) खराब नतीजा,  
बुरा फल, बेमौसम के फल ।

कुय } ( सं संध्य, कुञ्ज ) ( पु० ) कूबड़, पीठ का  
कूय } झुकाव ।

कुब्जा ( सं० कुञ्ज, कु=बुरी तरह से अथवा थोड़ा, वञ्ज=पीछा  
होना ) ( स्त्री० ) कुबड़ी, कुबड़ा, टेढ़ी पीठ का,  
जिसकी पीठ झुकी हुई हो, कंस की एक दासी का  
नाम जिसको श्रीकृष्ण ने सीधा किया था ।

कुबड़ी ( स्त्री० ) टेढ़ी या झुकी मूठ की छड़ी,  
कूबड़वाली स्त्री ।

कुमार्या ( कु=बुरी, भार्या=पत्नी ) ( स्त्री० ) बुरी लुगाईं  
कलह-प्रिय, लड़ाका औरत, कुलटा ।

कुपक ( स्त्री० ) मदद, पक्षपात, सहायता ।

कुमकुम ( पु० ) केसर, कुंमकुमा ।

कुमंडल ( पु० ) बुरे लोगों का समूह, एश्वोमंडल ।

कुमति ( कु=बुरी, मति=बुद्धि ) ( स्त्री० ) बुरी समझ,  
कुमत्, दुर्मति, ( वि० ) मूर्ख, दुबुद्धि, कुबुद्धि ।

कुमाच ( पु० ) एक प्रकार की रांटी, रेशमी वस्त्र-विशेष ।

कुमार ( कुमार=खेलना, बा कु=बुरा अथवा थोड़ा, मार=  
कामंदस्व ) ( पु० ) कुंअर, कुमार, बाळक, बिन  
व्याहा, कुंभारा, कात्तिकेय, सनक, सनंदन, सनत  
भादि देवता, ये सदा बाळक हो रहते हैं, युवराज ।

कुमारिका ( स्त्री० ) अविवाहिता, कुमारी, भारत के  
एक उपद्वीप का नाम ।

कुमार्ग ( कु=बुरा, मार्ग=रास्ता ) ( पु० ) कुपथ, बुरी राह,  
कुषाल ।

कुमार्गगामी ( कुमार्ग=बुरा मार्ग, गम्+ई, गम्=जाना )  
( वि० ) बुरी राह चलनेवाला, बदराह चलनेवाला,  
बुराचारी, व्यभिचारी, आचार-अष्ट ।

कुमुद ( कु=धरती, मुद=पतल होना या करना ) ( पु० )  
कुमोदिनी, कोई, धोखा कमल जो रात को खिलता  
है और दिन को मुँद जाता है, एक वानर का नाम ।

कुमुदबंधु ( पु० ) चंद्र, चाँद ।

कुमुदिनी ( कुमुद ) ( स्त्री० ) कमलिनी, कमलों का समूह,  
यह जगह जहाँ कमल पैदा हो ।

कुंभ ( कु=वृषी, उंभ=भरना, या कु=पाणी, उंभ=भरना, बा  
कुंभ=ढरना ) ( पु० ) घड़ा, कलश, कलसा, हाथी का

सिर, ज्योतिष में ग्यारहवीं राशि—कुंभ का मेला=  
मेला जो हरिद्वार में बारहवें बरस होता है, कुंभी=  
मेला जो छठे बरस होता है ।

कुंभकर्ण ( कुंभ=हाथी का सिर या घड़ा, कर्ण=कान,  
जिनके कान हाथी के सिर के बराबर हों ) ( पु० )  
रावण का भाई ।

कुंभकार ( कुंभ=घड़ा, कार=करनेवाला ) ( पु० ) कुम्हार,  
कुलाल ।

कुंभज ( कुंभ=घड़ा, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) अगस्त्य  
ऋषि का नाम, यह घड़े से पैदा हुए थे ।

कुंभशाला ( स्त्री० ) घड़ा रखने की जगह, घनौची ।

कुंभसंभव ( भू=होना ) ( पु० ) अगस्त्य ऋषि, वशिष्ठ  
ऋषि, त्रोगाचार्य, ये मित्रावरुण के पुत्र हैं ।

कुंभिका } ( कुंभ=ढकना ) ( स्त्री० ) एक वृक्ष का नाम ।  
कुंभी }

कुंभीपाक ( कुंभी=तेल का कढ़ा, पाक=पचाना ) ( पु० )

एक नरक का नाम, जहाँ पापी गर्म तेल के कढ़ाहों  
में डाले जाते हैं, औषध-विशेष ।

कुंभीर ( कुंभिन्=हाथी, ईर=पीड़ा देना ) ( पु० ) मगर-  
मच्छ, घड़ियाल, ग्राह ।

कुम्भैत ( पु० ) स्याही लिए हुए लाल रंग का घोड़ा,  
लाखी ।

कुम्भलाना ( कि० अ० ) मुरझाना, सूखना, कांतिहीन  
होना ।

कुम्हार ( सं० कुंभकार ) ( पु० ) मिट्टी के बरतन बनाने-  
वाला, कुलाल ।

कुयोग ( कु=बुरा, योग=मेल ) ( पु० ) कुसंगत, बुरी संगत,  
बुरा संयोग ।

कुयोगी ( पु० ) विषय-भोगी, विषय का भोग करनेवाला ।

कुर् ( पु० ) शब्द, आवाज़ शब्दकर्ता, राजा, जमींदार,  
किसान ।

कुरंग ( कु=वृषी, रंज=सुशो करना ) ( पु० ) हिरन,  
रुग ।

कुरंगनयनी ( स्त्री० ) मृगनयनी, मृगलोचनी ।

कुरंगनाभि ( पु० ) कस्तूरी, मृगनाभि ।

कुरना ( कि० अ० ) वेर लगना ।

कुरमा ( पु० ) कुटुंब, परिवार ।

कुरर ( पु० ) क्रौंच, पक्षी-विशेष ।

कुररी ( स्त्री० ) चीरह, भेड़ो ; “विलपति अति कुररी की नाई” — गो० तु० दा०

कुरसीनामा ( पु० ) वंशावली ।

कुराई ( स्त्री० ) बुरा मार्ग, विलंब, ढेर खगाना ।

कुरान ( पु० ) मुसलमानों की धर्मपुस्तक ।

कुराह ( स्त्री० ) कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

कुराहर ( पु० ) गुलगपाड़ा, शोरगुल, कोलाहल ।

कुराही ( वि० ) बद्धचक्षु, कुमार्गी ।

कुरिंद ( पु० ) दरिद्र ।

कुरिया ( स्त्री० ) फूस की झोपड़ी, मँड़हया, कुटी ।

कुरियाल ( स्त्री० ) चिड़ियों का मोज में बैठकर पंख खुलवाना या फड़फड़ाना ।

कुरिल ( पु० ) जूता बनानेवाला, मोची, चमड़े का कार-बार करनेवाला ।

कुरी ( पु० ) मय खोग, सब जाति, जाति, कुल, भरहर की फलियाँ ।

कुरीर ( कुर=ईर, कुर=रोलना ) ( पु० ) जिम्मा, मारकत ।

कुरोति ( कुर=पुरी, रीति=चाल ) ( पु० ) कुशाळ, कुटेव, बुरी चाल ।

कुरु ( कुर=रना ) ( पु० ) दिव्यी के एक पुराने राजा का नाम, कौरव-पांडव इन्हों के वंशज हैं ( विशेष के लिये भा० च० देखें ) ।

कुरुआ ( पु० ) अन्न नापने का एक मान जो दस छटाँक के बराबर होता है ।

कुरुई ( स्त्री० ) बॉल या मूँज की बुनी हुई छोटी डलिया ।

कुरुक्षेत्र ( कुर=एक राजा का नाम, क्षेत्र=जगह, या कुर=पाप, कुर=बुरी तरह वे, कुर=रोना, क्षेत्र=जगह अर्थात् पाप को दूर करनेवाला जगह ) ( पु० ) दिव्यी के पास एक जगह है, जहाँ कौरवों और पांडवों में खड़ाई हुई थी ( भा० च० ) ।

कुरुख ( वि० ) नाराज़, मुँह बनाए हुए, कुपित ।

कुरुल ( पु० ) बाख की लट जो माथे पर बिलरी हो ।

कुरुप ( कुर=बुरा, रूप=स्वरूप ) ( वि० ) भोंका, कुदीख, भद्देस, बुरी सूरत का ।

कुरेदनी ( स्त्री० ) सुरबनी, जिससे खरोंचा जाय ।

कुरेमा ( स्त्री० ) वर्ष में दो बार ग्यानेवाली गाय ।

कुरैत ( पु० ) हिस्सेदार, साझी ।

कुरोना } ( कि० स० ) ढेर खगाना, गड़ खगाना, कूबा  
कुरोना } खगाना ।

कुरौनी ( स्त्री० ) ढेर, राशि ।

कुर्र ( वि० ) ज़न्त ( कि० स० ) ज़न्त करना ।

कुर्रअमीन ( पु० ) वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत की आज्ञानुसार जायदाद की कुर्र करता है ।

कुर्रनामा ( पु० ) जन्ती का परवाना ।

कुर्रमी ( स्त्री० ) जहाज़ का रस्सा ।

कुर्रासक ( पु० ) अँगिया, खोली ।

कुर्रानी ( स्त्री० ) किसी देवता को प्रसन्न करने के लिये जो बलिदान देना, न्योछावर करने का काम ।

कुर्रमी ( पु० ) एक जाति का नाम जो खेती का धंधा करती है, कुरमी, कुनबी ।

मु ( पु० ) सुपारी ।

कुर्याल ( स्त्री० ) पखेरू के चैन से सुरक्षित बैठने की वह दशा जब वह चोंच से अपने पंखों को सँवारता है, ( इसी से ) चैन, सुख, आराम, बचाव ।

कुर्याल में गुलेला लगना ( बोल० ) निराश होना, प्रथवा चैन के समय दुःख में गिरना ।

कुर्री ( स्त्री० ) चबनी, नरम हड्डी ।

कुल ( कुल=इकट्ठा होना, वा बाँधना ) ( पु० ) वंश, घराना, कुनबा, जाति, वर्ण ।

कुलघाती ( कुल=वंश, हनु=नाश करना, ह का घ हो जाता है ) ( पु० ) कुलनाशक ।

कुलतारण ( कुल=वंश, तारण=पार करनेवाला ) ( पु० ) कुल को बचानेवाला, लड़का, सपूत लड़का, गुणवान् लड़का जिससे कुल की शोभा होती है ।

कुलद्रोही ( कुल=वंश, द्रोही=विरोधी ) ( वि० ) कुल का नाश करनेवाला, बुरे कामों द्वारा अपने कुल की निंदा करानेवाला ।

कुलधर्म ( कुल=वंश, धर्म=मत ) ( पु० ) अपने वंश का धर्म, कुलव्यवहार, कुल की चाल ।

कुलन ( स्त्री० ) दर्द, टीस ।

कुलपति ( पु० ) घर का माझिक, मुखिया, सरदार, वह अधि जो दस हजार मुनि और ब्रह्मचारियों को अन्न-दान और शिक्षा दे, मईन ।

कुलपालक ( कुल=वंश, पाल=पालना ) ( पु० ) कुटुंबपोषक, ज्ञानदानपरवर ।

कुलपूज्य ( कुल=वंश, पूज्य=पूजने योग्य ) ( वि० ) सब घराने का पूजनीय, कुलदेवता, अपने घराने का पुरोहित ।

कुलबुलाना ( कि० थ० ) खुजलाना, कलमलाना ।

कुलधारन ( वि० ) कुल को दुबानेवाला, कुलकुठार, अयाग्य, नालायक, कुपून ।

कुलवंतो ( कुल=घराना, वंती=वाली ) ( स्त्री० ) अच्छे घराने की स्त्री, पतिव्रता, सती, मृशोज्ञा ।

कुलवान् ( कुल=घराना, वान्=वाला ) ( वि० ) अच्छे घराने का, कुलान, श्रेष्ठ ।

कुलदाया ( कु=बुरा, लवण=चिद ) ( पु० ) बुरा चजन, कुस्वभाव, कुचाल ।

कुलौंच ( स्त्री० ) कूद-फाँद, उछाख, लपक, छल्लाँग ।  
कुलौंच मारना ( बोल० ) छल्लाँग मारना, फाँदना ।

कुलद्व } ( स्त्री० ) दोपी, ऊँची दोपी, कुल्ला ।  
कुलाह }

कुलाचार ( कुल=घराना, आचार=चलन, या धर्म ) ( पु० ) कुलधर्म, कुलव्यवहार, खानदानी रस्म ।

कुलाल ( कुल=कड़ा काना ) ( पु० ) कुम्हार, मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुम्हार ।

कुलिश ( कु=बुरी तरह से, लिश=थोड़ा करना, या कुलित्=पड़ा, शी=नाश करना, वा कुल=हाथ, शी=पाना ) ( पु० ) बघ्न, हँस्र का शस्त्र ।

कुलीन ( कुल ) ( वि० ) कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीर ।

कुलहाडी ( सं० कुठारी ) ( स्त्री० ) बसूबा, कुलहारी ।

कुलिहया ( थ० ) कुलहरी, मिट्टी का एक छोटा गोल बरतन ।

कुलिहया में गुड़ फोड़ना ( बोल० ) किसी काम को छिपे-छिपे करना, गुप्त रीति से कोई काम करना ।

कुयलय ( कु=धरती, वलय=कंकण ) ( पु० ) कमल, कीर्ति, सफ़ेद या नीला कमल, नीलोफर ।

कुवलयपीड ( कुवलय=कोकिली, आपाड=मर्दनवाला ) ( पु० ) कंस के हाथी का नाम, जिसमें १०००० हाथियों का बल था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।

कुविहंग ( कु=बुरा, विहस=आकाश, गम्=जाना ) ( पु० ) बाज, जुर्रा, शाहीन ।

कुघेर ( कुघ=फैलाना अपने धन को, या कु=पृथ्वी, वृ=ढकना, अपने धन से, या कु=बुरा, बेर=शरीर ) ( पु० ) धन का देवता, यक्षों का राजा, उत्तर, दिशा का दिक्पाल ।

कुश ( कु=पृथ्वी, शी=सेना, या कु=पाप, शी=नाश करना, या कुश=मिलना ) ( पु० ) एक प्रकार की घाल, दर्भ, डाभ, कुसा, रामचंद्र का बैठा ।

कुशल ( कुश=मिलना, या कु=पृथ्वी, शलु=जाना ) ( पु० ) कल्याण, मंगल, चैनचान, ( वि० ) चतुर ।

कुशलक्षेम ( कुशल + क्षेम ) ( पु० ) कुशल-मंगल, चैनचान ।

कुशलात } ( सं० कुशल ) ( स्त्री० ) कुशल-क्षेम, चैन-  
कुसरात } चान, अमन-अमान ।

कुशाग्रबुद्धि ( कुश+अग्र+बुद्धि ) ( स्त्री० ) तेजअज्ञज्ञ, पैनीबुद्धि, तीव्रबुद्धि ।

कुशल ( स्त्री० ) डेहरी, कुठला ।

कुशेशय ( पु० ) कमल, सारसपक्षी ।

कुष्ठ ( कुपू=निकालना ) ( पु० ) कोढ़, एक प्रकार का रोग जो अठारह प्रकार का है, उनमें से सात तरह का तो बड़ा कठोर और दुःखदायी होता है, और ११ तरह का हलका और थोड़ा दुःख देता है ।

कुष्ठनाशिनी ( कुष्ठ=कोढ़, नाशिनी=नाश करनेवाली ) ( स्त्री० ) एक बेलि का नाम, सोमराज-बेलि ।

कुष्ठी ( कुष्ठ ) ( वि० ) कोढ़ ।

कुष्मांड } ( कु=थोड़ी, उष्मा=गरमी, भंड=बीज, अर्थात् जिस  
कूष्मांड } के बीच में थोड़ी गरमी है ) ( पु० ) कुम्हरे का फल ।

कुसंग ( कु=बुरा, संग=साथ ) ( पु० ) बुरी संगति, बुरों का साथ, बदसोहबत ।

कुसुम ( कुसु=मिलना, वा कु=पृथ्वी, रिम=मिलना ) ( पु० ) फूल, लाल फूल जिससे कपड़े लाल रंगे जाते हैं ।

कुसुमशर ( कुसुम=फूल, शर=वाण ) ( पु० ) कामदेव ।

कुसुमित ( कुसुम ) ( वि० ) खिल्ला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्लित ।

कुसुंभ ( कुपू=मिलना, या कु=पृथ्वी, शुभ्=चमकना ) ( पु० ) कुसुम, लाल फूल जिससे कपड़े लाल रंगे जाते हैं, स्वर्ण, सोना ।

कुसुंभा ( सं० कुसुंभ ) ( पु० ) कुसुम का रंग, ज़ायी हुई भंग ।

कुस्वप्न ( कु=सुरा, स्वप्न=सपना ) ( पु० ) सुरा सपना ।

कुहक ( कुह+प्रक, कुह=प्राश्चर्य ) ( वि० ) कुटिल,  
फरेबी, छली, मायावी, इंद्रजालो, बाजीगर ।

कुहड़ } ( सं० कूमांड ) ( पु० ) कोहड़े का फल ।  
कुम्हड़ }

कुहराम ( पु० ) विज्ञाप, रोना, कल्पना ।

कुहाव ( स्त्री० ) रुठना, रुठ जाना ।

कुहासा ( सं० कुहेलिक, कु=धृती, हेडू=घेरना ) ( पु० )

कुहरा, कोहर, धूँध ।

कुहुक } ( कुह्=प्रचमा करना ) ( स्त्री० ) कोयल की  
कुहू } बोली ।

कूकना ( सं० कू=शब्द करना ) ( क्रि० प्र० ) चिल्लाना,  
बोलना, कुहूकुहू करना, घड़ी में चाबी भरना ।

कूकर ( सं० कुक्कुर ) ( पु० ) कुत्ता ।

कूजना ( सं० कूजन, कूज=शब्द करना ) ( क्रि० प्र० )  
शब्द करना, बोलना, चिड़ियों का चहचहाना ।

कूची ( सं० कूच, कू=शब्द करना ) ( स्त्री० ) झाड़ने की  
चीज़, बढनी ।

कूट ( कूट=जलना, वा ढकना ) ( पु० ) पहाड़ की चोटी,  
ढेर, छल, कपट, झूठ, गला हुआ कागज़ जो दकती  
बनाने के काम में आता है, ( स्त्री० ) नक़ल, भबैती,  
बंदरबाज़ी, पहेली ।

कूटना ( सं० कूटन, कूट=काटना ) ( क्रि० प्र० ) टुकड़े  
करना, चूर्य बनाना, कुचलना, तोड़ना, पीटना,  
मारना, लठियाना ।

कूड़ा ( पु० ) झाड़न, बुहारन, कर्कट, घास-पात, अगव-  
बगव, घास-फूस, कचड़ा ।

कूडि ( स्त्री० ) जोहे की टोपी ।

कूड़ ( वि० ) मूर्ख, मूढ़, भोंदू, गँवार ।

कूँडी ( स्त्री० ) भाँग आदि पीसने का बरतन, जोहे की  
टोपी ।

कूदना } ( सं० कूदन, कूद=लेखना ) ( क्रि० प्र० )  
कूदकना } उछलना, फाँदना, प्रसन्न होना, खुश  
होना ।

कूँतना } ( क्रि० प्र० ) मोल लगाना, मोल जाँचना, मोल  
कूँतना } की घटकल लगाना ।

कूप ( कू=शब्द करना, जिममें मेटक शब्द करते हैं, या

कु=बोझा, आप=पानी ) ( पु० ) कुर्वा, कुर्मा,  
हंदा ।

कूर ( सं० कुर ) ( वि० ) निठुर, निर्वधी, कठोर, मूर्ख,  
भोंदू, गँवार, कूड़ ।

कूरम ( कु=सुरा या बोझा, उभि=वेग ) ( पु० ) कछुआ,  
कच्छप, कमठ ।

कूल ( कूल=घेरना, ढकना, या रोकना ) ( पु० ) तीर, तट  
किनारा ।

कूलद्रुम ( पु० ) तटस्थ वृक्ष, नदी के किनारे के वृक्ष ।

कूला ( पु० ) पुट्टा, चूतड़, नितंब ।

कूली } ( पु० ) मज़दूर, बोझा ढोनेवाला, पोदिया,  
कुली } मोदिया ।

कूलहना ( क्रि० प्र० ) काँसना, कहारना ।

कूच्छ ( भा० पु० ) कठिनता, सख्ती ।

कृत ( कू=करना ) ( वि० ) किया हुआ, बनाया हुआ,  
रचित, ( पु० ) सतयुग, फल ।

कृतकार्य ( कृत=किया, कार्य=काम ) ( वि० ) फलीभूत,  
कामयाब, काम पूरा हुआ, सफल-मनोरथ ।

कृतकार्यता ( स्त्री० ) कामयाबी, काम की पूर्णता ।

कृतकृत्य ( कृत=किया, कृत्य=करने योग्य, कू=करना )  
( वि० ) योग्य काम को जिसने किया हो, कृतार्थ,  
कृतकार्य, धन्य, सफल-मनोरथ ।

कृतघ्न } ( कृत=किया हुआ, ह्न=मारना ) ( वि० )  
कृतघ्नी } जो उपकार को न माने, गुण को न  
माननेवाला, नमकहराम, नाशकरा, एहसान-  
करामोश ।

कृतघ्नता ( स्त्री० ) इहसान करामोशी, उपकारहन ।

कृतज्ञ ( कृत=किया हुआ, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) जो  
उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार मानने-  
वाला, नमकहलाख ।

कृतयिद्य ( कृत=किया हुआ, विद्=जानना ) ( वि० )  
मशकूर, धन्यवादित, शाकश, अधीतविद्या, निपुण,  
पंडित, विद्वान् ।

कृतवीर्य ( पु० ) वीरता, नृप-विशेष ( विशेष के लिये  
भा० व० देखें ) ।

कृतांत ( कृत=किया, अंत अर्थात् नाश करनेवाला ) ( पु० )  
यम, काज, मौत ।

कृतार्थ ( कृ=किया, अर्थ=प्रयोजन ) ( वि० ) जिसने अपना प्रयोजन पूरा किया हो, जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो, कामयाब, संतुष्ट ।

कृति ( कृ=करना ) ( स्त्री० ) कार्य, काम, हिंसा, आचरण, उपकार, कारण ।

कृतिन } ( वि० ) पंडित, योग्य, ज्ञायक, पुण्य-  
कृती } वान्, निपुण, साधु, कृतार्थ ।

कृत्ति ( स्त्री० ) धर्म, धर्मदा, भोजपत्र, कृत्तिका-नक्षत्र, धर्म के रस्ती ।

कृत्तिकर ( कृत्ति=काम, कृ=करना ) ( पु० ) सेवक, किकर उपकारी ।

कृत्तिका ( कृ=काटना ) ( स्त्री० ) तीसरे नक्षत्र का नाम ।

कृत्य ( कृ=करना ) ( पु० ) करने योग्य काम, कर्त्तव्य कर्म, ( वि० ) करने योग्य, कर्त्तव्य ।

कृत्यधिद्व ( वि० ) चतुर, निपुण, काम को जाननेवाला ।

कृत्या ( स्त्री० ) दुष्टा स्त्री, एक तांत्रिक क्रिया ।

कृत्रिम ( कृ=करना ) ( वि० ) कृपा हुआ, बनाया हुआ, बनावटी, कल्पित, जो असली न हो, मसनवी ।

कृत्रिम पुत्र ( कृत्रिम=किया हुआ, पुत्र=बेटा ) ( पु० ) गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में जो बारह प्रकार के पुत्र गिनाए हैं, उनमें से एक प्रकार का बेटा ।

कृत्स् ( वि० ) मध्यगत, आवृत, ढका हुआ, जलांतरित, ढूँढा हुआ, ( पु० ) संपूर्ण, जल, गंदूप अर्थात् कुत्ता ।

कृत्स्न ( पु० ) संपूर्ण, सब, जल, कुक्षि, पुट्टा, कृष्णा, समग्र ।

कृत्त ( पु० ) व्याकरण की एक प्रक्रिया ।

कृपण ( कृप=दुःख होना ) ( पु० ) कंजूस, सूँ, चुष्ट, बग़ीचा ।

कृपणता ( स्त्री० ) कंजूसी, बग़ीची ।

कृपा ( कृप=कृपा करना ) ( स्त्री० ) दया, अनुग्रह, मिहिरबानी ।

कृपाण ( कृप=दुःख होना, वा कृप=दया, दुःख=जाना ) ( स्त्री० ) तखबार, खज़, खौंदा, शमशेर ।

कृपानिधान ( कृप=दया, निधान=जगह ) ( पु० ) कृपा के घर, दवाखु, कृपालु, कृपा करनेवाला, जावमिहिरबानी ।

कृमि } ( कृप=बाना ) ( पु० ) कीड़ा, पत्तियाँ, मकोड़ा,  
किमि } परबाना ।

कृमिरोग ( पु० ) रोग-विशेष, जिसमें आमाशय और पाकाशय में काँड़े पैदा हो जाते हैं ।

कृश ( कृश=पतला होना ) ( वि० ) दुबला, पतला, दुर्बल, क्षोण, लागर, नक़ीह ।

कृशाक्षी ( कृश=मंद, अक्षि=आँख ) ( वि० ) मंददृष्टि, कोताह नज़र ।

कृशांगी ( स्त्री० ) दुबली-पतली स्त्री ।

कृशानु ( कृश=पतला करना ) ( पु० ) आग, अग्नि, आगी, अनल ।

कृषक } कृष=इल जोतना ) ( पु० ) किसान, हल  
कृषाण } जोतनेवाला ।

कृषि ( कृष=इल जोतना ) ( स्त्री० ) खेती, धरती ।

कृषिकर्म ( पु० ) खेती-बारी, कार्तकारी ।

कृषिकारक ( कृषि+कारक ) ( पु० ) किसान, कार्त-कार ।

कृष्ण ( कृष्=रंग होना, वा काला रंग होना ) ( वि० ) काळा, अँधेरा, ( पु० ) विष्णु का आठवाँ अवतार, वासुदेव, देवकानंदन । “कृषिभूवाचकः शब्दः णश्च निवृत्ति-वाचकः । तयोरेक्यं परब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते” वायस, कौवा, कलियुग, कोकिल ।

कृष्णपक्ष ( कृष्ण=अँधेरा, या काला, पक्ष=पक्ष ) ( पु० ) अँधेरा पक्ष, बदि, काले हों पर जिसके ।

कृष्णमय ( कृष्ण=श्रीकृष्ण, मय=रूप वा मिला हुआ ) ( वि० ) कृष्ण के ध्यान में लगा हुआ, श्रीकृष्ण-रूप ।

कृष्णसार ( पु० ) काळा सृग ।

कृष्णाजिन ( पु० ) काळा सृग ।

कृष्णाफल ( पु० ) काळी मिर्च ।

कृष्णाभिसारिका ( स्त्री० ) अँधेरी रात में किसी निर्दिष्ट स्थान पर अपने प्रेमी के पास जानेवाली नायिका ।

कृष्णार्पण ( पु० ) निष्काम कर्म, फलाकांक्षा से रहित कर्म ।

कृत्सर ( पु० ) खिचवी ।

कृत्स्न ( कृप=कल्पना करना ) ( पु० ) नियमित, बाकायदा ।

केकड़ा ( सं० ककट ) ( पु० ) गेंगटा, एक जलजंतु का नाम ।



कैकयी } (कैकय एक राजा का नाम) (स्त्री०) कैकय  
कैकयी } राजा की बेटी, राजा दशरथ की स्त्री, और  
कैकयी } भरत की मा (विशेष क लिये भा० च० देखें) ।

कैकर (वि०) टेढ़ा; डरा हुआ ।

कैका (स्त्री०) मोर की बोली, कूक, मधुर ध्वनि ।

कैकी (कैका=मोर की बोली) (पु०) मोर, मयूर ।

कैचुवा (मं० किचुलुक, किम=कुक, चुलुप=हिलाना, या काटना) (पु०) जमीन का कीड़ा, एक प्रकार का कीड़ा ।

कैड़ा (पु०) कॉपल, नूतन पत्र, कल्ला ।

केत (पु०) घर, भवन, ध्वजा, सलाह, अन्न ।

केतकी (सं० केतक, किन्=हना) (स्त्री०) एक फूल का नाम ।

केतन (पु०) गृह, ध्वजा, निमंत्रण, आलस, कीड़ा, कोड़ा, काम, चिह्न ।

केता (सं० कति) (क्रि० वि०) कितना, कित्ता ।

केतिक (सं० कति) (वि०) थोड़े, दो-चार, अल्प, कितना, कितना ही ।

केतु (चायू=ज्ञान, वा किन्=ज्ञानना) (पु०) नवौं ग्रह, भंडा, ध्वजा, पताका, पुच्छल तारा, धूमकेतु ।

केदार (पु०) खेत, क्यारी, पर्वत-विशेष, शिव ।

केंद्र (पु०) जहाँ से पृथ्वी का नाप होता है, और वे दो हैं, उत्तर-केंद्र, दक्षिण-केंद्र, वृत्त का बीच, मर्कज ।

केमद्रुम (पु०) जन्मकाळ का ग्रह, दरिद्र-योग ।

केयूर (पु०) अंगद, बहूँटा, बिजायठ ।

केरल (पु०) मालव-देश, ग्रंथ, (स्त्री०) नवोन विद्या, देशविद्या, देश का इंसम ।

केला (सं० करला) (पु०) एक पेड़ का अथवा उसके फल का नाम ।

केलि (केल=हलना, वा किल=लेलना) (स्त्री०) खेल, कीड़ा, विहार ।

केवट (सं० केवर्त) (पु०) धोवर, मछवा, मखड़ाह, नाव चढ़ानेवाला ।

केवड़ा } (सं० केतक) (पु०) एक फूल का नाम ।  
केवड़ा }

केवल (केव=पेवा करना) (वि०) एक ही, निराखा, अकेला, मुख्य, ज्ञास ।

केवाड़ } (सं० कपाट) (पु०) किवाड़ी, दरवाजा ।  
किवाड़ }

केवान (पु०) कैवल, कमल ।

केश (कृश=दुःख दना, वा रोकना, या क=सिर, ईश=मास्ति, वा क=सिर, शी=सोना) (पु०) बाज, रोम, लोम, कच ।

केशर (क=रनी में, अथवा मिर पर, शृ=कूटना, या विहसना, वा फलना) (पु०) कुंकुम, जाकरान, एक सुगंधित चीज़, सिंह की गरदन के ऊपर के बाल ।

केशरी (केशर) (पु०) सिंह, मृगराज, शेर, हनुमान् के बाप का नाम ।

केशव (क=पानी में, श=मोना, या केश, बाल, वत=वाला) (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु ।

केशाकेशी (पु०) परस्पर बाज पकड़ के खड़ना, झोंटा-खिचोझ ।

केशिनी (स्त्री०) सुंदर बालोंवाली स्त्री, रावण की मा, अप्सरा, जटामाँसी ।

केशी (केश) (पु०) एक राक्षस का नाम जिसको कंस ने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजा था, उसको श्रीकृष्ण ने मारा, घोड़ा, सिंह, (वि०) अच्छे बालोंवाला, जिसके अच्छे और बहुत बाल हों, केवाँच ।

केसर (क=पानी, सृ=जाना) (स्त्री०) केशर, कुंकुम, नागकेशर, जाकरान ।

केसरिया (सं० केसर) (वि०) केसर में रंगा हुआ, पीला ।

केसरी (पु०) घोड़ा, सिंह ।

केहरी (सं० केशरी) (पु०) सिंह, मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम ।

केहा (पु०) मोर, मयूर ।

केहि (वि०) किस, कौन ।

कैचली (मं० कंचुक, कचि=गंधना, या चमकना) (स्त्री०) साँप की खाज, साँप का खोज ।

कैटम (काट=काड़ा, म=चमकना, जो भीड़ के बराबर चमकना हो) (पु०) एक राक्षस का नाम ।

कैतव (पु०) कपट, दूत, जुआ, जहसुनियाँ, धनूर का फूल ।

कैथी ( सं० कायस्थ ) ( स्त्री० ) हिंदी-अक्षर जो कायस्थ लोग लिखते हैं, कायथो हिंदी-अक्षर जो सूबे बिहार के पटना, गया आदि जिलों में लिखे जाते हैं ।  
 कैदी ( पु० ) बंदी, बंशुआ ।  
 कैफ़ियत ( स्त्री० ) समाचार, वर्णन, जवाब, ब्याख्या ।  
 कैरव ( के=पानी में, व=राज्य करना ) ( पु० ) कुमुदिनी, कैवलनी, कुमोदनी, सकेव कमल ।  
 कैरी ( स्त्री० ) विना पका हुआ छोटा आम ।  
 कैल ( स्त्री० ) कनखा, पेड़ की नई लंबी शाखा, टहनो ।  
 कैलास ( कै=लेल, वा आनंद, आसू=रहना या बैठना, अर्थात् जहाँ आनंद से रहने हैं ) ( पु० ) एक पहाड़ हिमालय की श्रेणी में है, जो महादेव और कुबेर के रहने की जगह है ।  
 कैवर्त { ( के=पानी में, वृत्=रहना ) ( पु० ) केवट, कैवर्त } धोवर, मछुवा, मछाह, नाव चलानेवाला ।  
 कैवल्य ( केवल एक ही ) ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, परम-गति, निर्वाण, उपनिषद्-विशेष ।  
 कैशिक ( वि० ) बड़े-बड़े बालोंवाला, केशवाला, ( पु० ) कृत्य में सुकुमारता का दृश्य दिखानेवाला भाव ।  
 कैसा ( किस+ता, सं० कीदृश ) ( कि० वि० ) किस प्रकार का, किस तरह का ।  
 कैसा ही ( बोल० ) चाहे जैसा, कितना ही, किसी भी तरह का ।  
 को ( सं० कः, कौन ) ( सर्वना० ) कौन, कर्म और सम्प्रदान-कारक का चिह्न ।  
 कोड़ी ( पु० ) तरकारी बेचनेवाली एक जाति ।  
 कोई { ( सं० कोप, कः=मान, अपि=भी ) ( सर्वना० ) कोऊ { अनिरचयवाचक ।  
 कोई दम में ( बोल० ) तुरंत, अभी, थोड़ी देर में, बहुत जल्द ।  
 कोई-न-कोई ( बोल० ) यह अथवा वह, कोई एक ।  
 कोईसा ( बोल० ) कोई आदमी, कोई चीज़ ।  
 कोण्डी { ( पु० ) एक जाति जिसका धंधा खेतो करने कोण्डी } का है ।  
 कोक ( कूह=बेता ) ( पु० ) चकवा, चक्रवाक ; कोकी=चकवी ।

कोका ( पु० ) दूधभाई, भायभाई, कटिया, कमल ।  
 कोकिल ( कुहू=प्रेना ) ( स्त्री० ) कोयल ।  
 कोख ( सं० कुवि ) ( स्त्री० ) गर्भ, पेट ।  
 कोखबंध ( सं० कुवि=बंधा ) ( वि० ) बाँझ, बंध्या, जिस स्त्री के लड़का-बाळा न हो ।  
 कोट ( सं० कोट्ट, कुट्ट=काटना ) ( पु० ) गढ़, क़िला, दुर्ग ।  
 कोटवी ( स्त्री० ) नंगी स्त्री ।  
 कोटर ( काट=टढ़ापन, कुट्ट=टढ़ा होना, और रा=लेना ) ( स्त्री० ) पेड़ में खोखली जगह, खोंडकल, खोंडरा ।  
 कोटि ( कुट्ट=टढ़ा होना, वा हिरसा करना ) ( स्त्री० ) त्रिभुज की एक भुजा, धनुष का अग्रला भाग, ( वि० ) करोड़, सौ लाख, श्रेणी, समूह ।  
 कोट्याधीश ( वि० ) करोड़पती ।  
 कोठरी ( सं० कोष्ठ, कृप्=निहालना ) ( स्त्री० ) छोटा घर, कमरा ।  
 कोठा ( सं० कोष्ठ ) ( पु० ) घर, पटा हुआ घर, पक्का घर, ऊपर का मकान ।  
 कोठार ( पु० ) भांडार ।  
 कोठी ( सं० कोष्ठ ) ( स्त्री० ) छोटा, पक्का घर, भांडार, अंबार, गोदाम, चीज़-वस्तु रखने का जगह, गोळा, अनाज रखने की जगह, हुंडोवाज की दुकान, महा-जनी घर, बड़ा मकान, बंगला, कारखाना, कोख, गर्भ ; कोठीवाज=हुंडोवाज, बड़ा सेठ, बड़ा सौदागर, बड़ा व्यापारी, साहूकार, महाजन ।  
 कोड़ना ( कि० सं० ) खोदना, खखोरना, खोखला करना, गद्दा करना, खुरचना ।  
 कोड़ा ( पु० ) चाबुक ।  
 कोड़ा करना ( बोल० ) कोड़ा मारना, चाबुक लगाना, वश में करना, कोड़ा मारकर धोड़े को तेज़ करना ।  
 कोड़ा मारना ( बोल० ) चाबुक लगाना ।  
 कोड़ी ( स्त्री० ) बीसी, बीस, २० ।  
 कोढ़ ( सं० कुष्ठ ) ( पु० ) एक प्रकार का रोग, महारोग, कुष्ठ-रोग ।  
 कोढ़ में खाज निकलना ( बोल० ) एक दुख में दूसरे दुःख का आना, दुःख पर दुःख पड़ना ।  
 कोड़ी ( सं० कुष्ठ ) ( वि० ) जिसके कोढ़ हो, कुष्ठी, महारोगी ।

कोण ( कुण=बुलाना ) ( पु० ) कोना, दो लकीरों का मुकाब ।

कोतल ( पु० ) खाली घोड़ा, राजा की सवारी का घोड़ा, सजाया हुआ घोड़ा ।

कोतली ( स्त्री० ) ईला, बटुआ ।

कोतवाल ( पु० ) नगर में पुलिस का बड़ा अधिकार ।

कोधमीर ( पु० ) कच्ची धनियाँ, धनियाँ की हरी पत्ती ।

कोदो } ( सं० कोदव, कु=धरती, दु=जाना ) ( स्त्री० )  
कोदों } एक तरह का धान ।

कोदंड ( के=बँस, कु=शब्द करना, दंड=डंडा ) ( पु० ) धनुष, कमान ।

कोना ( सं० कोण ) ( पु० ) खूँट, कोन, दो लकीरों का मुकाब ।

कोनाकुथरा ( बाल० ) कोई कोना, किधर ही, किसी जगह, कहीं, किनारा, छोर ।

कोप ( कुप्=क्रोध करना ) ( पु० ) क्रोध, गुस्सा, रोष, खिसियाहट ।

कोपना ( सं० कुप्=कोप करना ) ( क्रि० प्र० ) क्रोध करना, गुस्सा होना ।

कोपर ( पु० ) कटोरा, कटोरी, पियाळा ।

कोपल ( पु० ) कल्ला, मुलायम पत्ती ।

कोपि ( कः+अपि ) ( सर्वना० ) कोई भी ।

कोपित ( कांप्+इत ) ( वि० ) क्रुद्ध, कोपयुक्त ।

कोपी ( कोन ) ( वि० ) क्रोधी, तामसी ।

कोपीन ( सं० कोपीन ) ( स्त्री० ) लँगोटी ।

कोवी } ( स्त्री० ) एक तरह का नाम ।  
गोवी }

कोमल ( कम्=चाहना, वा कु=शब्द करना ) ( वि० ) नर्म, नम्र, मृदु, मुलायम, मृदुल, मनोहर, ( पु० ) पानी, जल ।

कोमलता ( कोमल ) ( स्त्री० ) नरमाई, मृदुलता, कोमलताई ।

कोयर ( पु० ) सागपान, पशुओं का चारा ।

कोयण } ( सं० कोन ) ( पु० ) आँख का सनेह देखा,  
कोयें } आँख का कोना ।

कोयल ( सं० कोकिला ) ( स्त्री० ) एक पक्षी का नाम, कोकिला, पिक, एक फूल का नाम ।

कोयला ( पु० ) कोइला ।

कोर ( स्त्री० ) किनारा, छोर, कगर ।

कोरा ( वि० ) नया, टटका, बिना बरता हुआ, जो काम में नहीं आया हो ( यह शब्द हिंदी के बरतन, कपड़ा और कापड़ के लिये बहुधा बोला जाता है ) ।

कोरे रहना ( बोल० ) निराश होना, यों ही रह जाना, कुछ नहीं मिलना ।

कोर्ट आक्र इन्कादरी ( पु० ) पूछ-ताँच की सभा, तह-कीकत का दरबार ।

कोल ( पु० ) खाकी, खाल, सकड़ी गली, जंगली मनुष्यों की जाति, पर्वतनिवासी, खेच्छ-भेद, कोर, गोद, शूकर, शनिश्चर-ग्रह ।

कोलाहल ( कोल् टेर, हल्=धरना ) ( पु० ) कलकल, कल्ला-हल, बहुत मनुष्यों का शब्द, रौला, कलमल, धूम-धाम, गुलगपाड़ा ।

कोलिया ( स्त्री० ) गली, तंग रास्ता ।

कोल्हाड़ ( पु० ) ऊख का रस निकालने और गुड़ बनाने का स्थान ।

कोल्हू ( पु० ) तेल निकालने की कल, घाली ।

कोल्हुआ ( पु० ) कुरती का एक पेंच ।

कोविद ( क=ब्रह्म, अथवा वेद, विद्=ज्ञानना ) ( पु० ) पंडित, बुद्धिमान् ।

कोश ( पु० ) डिब्बा, गोलक, मयपात्र, श्वाभ, आवरण, खोल, थैलो, रेशम का कोषा ।

कोशना } ( सं० कोशन, कुश=रोना ) ( क्रि० प्र० )  
कासना } सरापना ।

कोशला } ( कोश वा कोष=भंडार, ल=लेना ) ( स्त्री० )  
कोपला } अयोध्यापुरी, ( पु० ) अवध ।

कोष ( कृप्=निकालना ) ( पु० ) भंडार, खजाना, डिक्-शनरी, अनैकार्थ, अभिधान, ऐसी पुस्तक जिनमें शब्दों के अर्थ मिलें, अंठकोष, मियान, नियाम, खाप तलवार का घर ।

कोपलाधीश } ( कोपला वा कोशला=अयोध्या, अधीश=  
कोशलाधीश } राजा ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र, अयोध्या के राजा ।

कोषाध्यक्ष ( कोष=खजाना, अध्यक्ष=मार्गिक ) ( पु० ) खजानाची, भंडारी ।

कोष्ठ ( कृप्=निकालना ) ( पु० ) कोठा, खप्ता, कोठरी, जगह ।

कोस ( सं० कोश, कुरा=बुलाना ) ( पु० ) आठ इजाज

हाथ का रस्सा, दो मील, कोई-कोई चार हजार हाथ का भी कोस मानते हैं।

कोसना (कि० स०) शाप देना, गाली देना।

कोह (सं० कोप) (पु०) क्रोध, गुस्सा।

कोह्वर } (पु०) व्याह का घर, कौतुक-घर, देवना-  
कुह्वर } घर, जिस घर में विवाह में कुह-देव की स्थापना होती है।

कोहा (पु०) नाई, कपाल की शस्त्र का मिहीं का बर्तन।

कोहाना (सं० वाप) (कि० अ०) रुठना, कोप करना, क्रोध करना, रिसियाना।

कोही (पं० कापी) (वि०) कोपी।

कोड़ा (सं० कपर्द) (पु०) बड़ा कौड़ी, नारंगी।

कोड़ियाला (पु०) एक प्रकार का साँप, कृष्ण धनी।

कौड़ी (सं० कपर्दिका, क=पाता, वा साँप, पग=पूर्णा, द=देना) (सं०) छोटा शंख जो व्यवहार में लेन-देन में चलता है, धन, दौलत, कमाई।

फूटाकाड़ा } (बोल०) कुछ नहीं, कौड़ी नहीं।  
फूना कौड़ी }

कानुक (कनुक) (पु०) कनुकल, हँसी-खुशी, आनंद, हर्ष, खेद, मन चढ़ाना।

कौतुकशाला (स्त्री०) नमाश-घर।

कौतुकी (कानुक) (वि०) खेद-खिलाफी, हँसमुख, कौतुक करनेवाला।

कौन (सं० कः) प्रश्नवाचक सर्वनाम।

कौनसा (बोल०) कैसा, किस तरह का।

कौंधना (कि० अ०) चमकना, प्रकाश होना, बिजली का चमकना।

कौंधनी (स्त्री०) करधनी।

कौंधा (कंधना) (सं०) बिजली।

कौला (पु०) शंकरा, एक फल का नाम।

कौंसिल (स्त्री०) सभा, दरबार।

कौमार (हमार=गालक) (पु०) बालकपन, लड़कपन, युवावस्था, जवानी।

कौमुदी (कुमुद=गोंद, अथवा कुमुद=कौमुदी अर्थात् जिप में कमादनी मिलती है, कु=पूर्वी, मुद=प्रसन्न करना) (सं०) चार्दनी, चंद्रिका, व्याकरण का एक ग्रंथ।

कौमादकी (स्त्री०) विष्णु की गदा।

कार (सं० कवच) (पु०) आस, लुक्मा, नवाखा।

कौरना (कि० स०) सेकना, थोड़ा झुनना।

कौरव (कुरु=एक राजा का नाम) (पु०) कुरुवंश, छत्र-राष्ट्र और पांडु दोनों के बेटे-पोते को कुरुवंश कह सकते हैं, पर विशेष करके छत्रराष्ट्र के बेटों को कौरव और पांडु के बेटों को पांडव कहते हैं।

कौल (पु०) वादा, प्रण, प्रतिज्ञा, ज्ञान।

कौलिक \* (कुल) (वि०) कुल का, अपने कुल के धर्म में चढ़नेवाला, शास्त्र, वाममार्गी।

कौवा (सं० काक) (पु०) काग, कागा, वायस।

कौशल्य (कोशल) (स्त्री०) कोशल देश के राजा की बेटो, राजा दशरथ की पत्नी, श्रीरामचंद्र की मा।

कौशिक (कुंशक=विश्वामित्र का बाप, गांधि) (पु०) विश्वामित्रमुनिका नाम, उल्लू गीध, इंद्र, नेवला।

कौशिकी (कुशिक) (स्त्री०) एक नदी का नाम जो विश्वामित्र की बहन कौशिकी के नाम से प्रसिद्ध है।

कौस्तुभ (कुस्तुभ=विष्णु, वा कृष्ण, कु=पूर्वा, स्तु वा स्तुभ=संग्रहना, वा स्तुभ=भोक्ता) (पु०) विष्णु की मणि जो समुद्र में से निकली थी, मुद्रा-विशेष।

क्या (सं० किम्) प्रश्नवाचक अव्यय।

क्यों (सं० किम्) (कि० वि०) किमलिये, काहे को।

क्योंकर (कि० वि०) किस प्रकार से, कैसे।

क्योंकि (कि० वि०) किस लिये, कि।

क्यों नहीं (बोल०) किस लिये नहीं, निश्चय हो।

कनु (क=कृष्ण) (पु०) यज्ञ, याग, संकसर, इच्छा, जीव, आत्मा, विष्णु।

क्रम (कम्=जना) (पु०) रीति, परिपाटी, राह, सिख-सिखा।

क्रमशः (कि० वि०) क्रम से, सिखसिलेवार, तरतीब से।

क्रमुकी (स्त्री०) सुपारी, डली, पूंगीफल।

क्रय (कां=भोल लेना) (पु०) मोल लेना, खरीदना।

क्रयणीय (क+अणीय) (वि०) खरीदने लायक।

क्रयविक्रय (क+विक्रय के=मोल लेना) (पु०) लेन देन, बणिज, व्यापार, खरीद-फरोहत।

\* अन्तराशक्ता बहिःशेवाः समास्ये तु वेण्यवाः।

नानारूपधराः काला विचरन्ति महीतले ॥

कथिक } ( क्री+इक ) ( पु० ) क्रेता, खरीददार ।  
कयी }

कय्य ( पु० ) वस्तु, जिनस, बाज़ारी वस्तु जो दूकान में  
धरी है ।

कड्य ( पु० ) मांस, गोरत ।

कव्याद् ( पु० ) राक्षस, मांस-भक्षक, चिता की  
अग्नि ।

कान्ति ( सं० कान्ति ) ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, दीप्ति,  
( कम्=जाना ) ( स्त्री० ) जाना, चढ़ना, खगोल में  
सूर्य का रास्ता, खगोल के गोले में टेढ़ी गंज रेखा ।

कान्तिमंडल ( कान्ति+मंडल ) ( पु० ) खगोल में उस  
वृत्त का नाम जो सूर्य का मार्ग बतलाता है ।

कामक } ( पु० ) क्रेता, खरीददार ।  
कायक }

क्रियमाण ( वि० ) करने योग्य ।

क्रिया ( कृ=कना ) ( स्त्री० ) काम, काज, व्यवहार,  
क्रिया-कर्म, धर्म संबंधो काम, व्याकरण में ऐसा  
शब्द जो धातु से बना हो और उसमें कोई समय  
पाया जाय ।

क्रियादत्त ( वि० ) काम में निपुण ।

क्रिया विशेषण ( पु० ) वह शब्द जो क्रिया के किसी  
काज या भाव विशेष का बोधक हो ।

क्रियाशून्य ( वि० ) कर्महीन, कर्मरहित ।

क्रीट ( पु० ) मुकुट, सिर पर पहनने का आभूषण ।

क्रीडन } ( क्रीड=खेलना ) ( स्त्री० ) खेल, हँसी-खुशी,  
क्रीडा } मन बहलाना, कौतुक ।

क्रीडक } ( पु० ) खिलाड़ी ।  
क्रीडित }

क्रीडारथ ( पु० ) फूलों का रथ

क्रीडाशैल ( पु० ) नक्षत्रों पहाड़ ।

क्रीत ( वि० ) खरीदा हुआ ।

क्रीतक ( पु० ) मोख जिया हुआ पुत्र ।

क्रुद्ध ( क्रु=क्रोध करना ) ( वि० ) क्रोध किए हुए,  
क्रोधित ।

क्रूर ( कृ=कटना ) ( वि० ) निरुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा ।

क्रूरता ( स्त्री० ) निरुरई, कठोरता ।

क्रोडपत्र ( क्रड=जोड़ना, चपकाना, जमा करना ) ( पु० )  
कंबोजित, जमीमा, पीछे से जगाया गया ।

क्रोध ( क्रु=क्रोध करना ) ( पु० ) कोप, रिप, गुस्सा ।

क्रोधना ( स्त्री० ) कोपवनी, कोप करनेवाली ।

क्रोधनान् } ( क्रोध=केप, वान=वाग ) ( वि० )  
क्रोधवन्त } क्रोधी, कोप करनेवाला ।

क्रोधावेश ( क्रोध=केप, आवेश=पुनना, आ, विश=पुनना )  
( वि० ) क्रोधयुक्त, क्रोध के वश ।

क्रोधी ( क्रोध ) ( वि० ) कोप करनेवाला, गुस्सा करने-  
वाला, रिसवा ।

क्रोश ( क्रुश=चलाना ) ( पु० ) कोप, कोई ८००० हाथ  
और कोई ४००० हाथ का कोस मानते हैं ।

क्रोष्टा ( क्रुश=चलना, चिल्लाना ) ( पु० ) श्रमाल, सियार,  
गधा ।

क्रौंच ( कुंच=जाना ) ( पु० ) बगुला, एक द्वीप का नाम ।

क्रांत ( कम्=पचना ) ( वि० ) थका, मँढ़ा, थकित,  
थका हुआ ।

क्रान्ति ( कम्=पचना ) ( स्त्री० ) थकावट, क्लेश,  
परिश्रम ।

क्रिज्ञ ( क्रिड=संगाना, गेता ) ( वि० ) चार्ज, ओढ़ा,  
सज्ज, तर, दुस्ती ।

क्रिष्ट ( क्रिष्ट=दुःख पाना ) ( वि० ) कड़ा, सकल,  
कठिन ।

क्रौंच ( क्रांच=पुंसक होना ) ( वि० ) नपुंसक, नामर्द,  
खोजा, हिजड़ा, बरपोक, कायर ।

क्रैद ( क्रिड=बालना ) ( पु० ) पीव, मवाद, पपीना ।

क्रैश ( क्रिश्=दुःख पाना ) ( पु० ) दुख, बट, पीड़ा ।

क्रैशुक ( पु० ) क्रैशयुक्त, क्रैशदाता, दुःखदाता ।

क्रैशन ( पु० ) पीड़ा, दुःख ।

क्रैशित ( वि० ) दुःखी, पीड़ित, कष्टित ।

क्रचित् ( क=कड़ा ) ( क्रि० वि० ) कहीं, कहीं-कहीं ।

कणन ( कण=बेलना ) ( पु० ) छुंवरु, बीखा का  
शब्द, आवाज़ ।

काथ ( पु० ) नियास, गोंद, काड़ा ।

काथित ( कथ=पचाना ) ( वि० ) पचाया हुआ ।

काई ( सं० पय ) ( स्त्री० ) क्षय रोग, राजरोग, दम की  
बीमारी ।

काय ( कण=नाश करना ) ( पु० ) पक्ष, दम, दश पक्ष  
का समय, चार मिनट का समय ।

काणिक ( वि० ) बोधी देर का ।

क्षत ( वृणु=नाश करना ) ( पु० ) घाव, चोट, चीरा,  
ज़ख्म, घण ( वि० ) नष्ट, घातित, विदीर्ण, भग्न ।  
क्षता ( स्त्री० ) विवाह होने के पूर्व परपुरुष से भोगो  
हुई कन्या ।

क्षत्ता ( पु० ) शूद्र, दासी-पुत्र ।

क्षति ( वृणु=नाश करना ) ( स्त्री० ) हानि, घटी, नुक-  
सान, बिगाड़, अपकार ।

क्षंतदय ( वि० ) क्षमा के योग्य, माफ़ करने लायक ।

क्षत्र ( पु० ) शरीर, जिस्म, राष्ट्र, बख, धन, जख ।

क्षत्रिय } ( वृणु=नाश, धे=रवाना ) ( पु० ) राजपूत,  
क्षत्री } क्षपरा वर्ण, राजन्य ।

क्षत्राकुलद्रोही ( पु० ) क्षत्री कुल का वैरी, परशु-  
राम ।

क्षपणक ( वि० ) निर्लज्ज, लज्जारहित ।

क्षपा ( स्त्री० ) रात, हथड़ी ।

क्षपाकर ( पु० ) चंद्रमा, कपूर ।

क्षपांत ( पु० ) भोर, सवेरा, प्रभात ।

क्षमता ( वृणु=सहना ) ( स्त्री० ) सहनशीलता, सहना,  
योग्यता, सामर्थ्य ।

क्षमना } ( सं० वृणु=सहना ) ( कि० सं० ) माफ़  
क्षमा करना } करना, सहना, छोड़ना ।

क्षमा ( वृणु=सहना ) ( स्त्री० ) माफ़ो, माफ़ करना,  
संतोष, माफ़, शांति, रहम, गम, बरदाश्त ।

क्षमिन् } ( वि० ) शान्त, क्षमा-शील, गमप्रवार ।  
क्षमा }

क्षय ( क्षि=नाश करना ) ( पु० ) नाश, हानि,  
नुकसान, घटी, क्षयरोग, क्षयी ।

क्षरण ( वृणु=वृणु, वृणु=वहना, टपकना ) ( पु० )  
च्युत होना, गिरना ।

क्षान्त ( वृणु=सहना ) ( वि० ) सहनेवाला, धीरजवान्,  
क्षमावान्, संतोषी ।

क्षान्ति ( वृणु=सहना ) ( स्त्री० ) क्षमा, धीरज, संतोष ।

क्षाम ( वि० ) क्षीण, दुर्बल, झूरा ।

क्षार ( वृणु=गिरना, नाश होना ) ( स्त्री० ) खार, राख,  
भस्म ।

क्षालक ( वृणु+अक ) ( पु० ) धोनेवाला ।

क्षालन ( वृणु+अक ) ( पु० ) धोना, पोंछना,  
साफ़ करना, खोलाखना ।

क्षालित ( वृणु+अक ) ( वि० ) धोया हुआ, धोत ।

क्षिति ( क्षि=हना, बचना ) ( स्त्री० ) खरती, पृथ्वी,  
ज़मीन, धरणी ।

क्षितिधर ( क्षिति=वरती, धर=रखनेवाला, धृ=रखना )  
( पु० ) पहाड़, पर्वत ।

क्षितिप } ( क्षिति=खरती, पा=बचाना ) ( पु० )  
क्षितिपति } राजा ।

क्षितिपाल ( क्षिति=पृथ्वी, पाल=बचाना ) ( पु० ) राजा,  
महाराज ।

क्षिपक ( क्षिप्+अक ) ( वि० ) योड़ा, बहादुर ।

क्षिप्र ( क्षिप्+अक ) ( वि० ) जल्द, तुरंत, शीघ्र ।

क्षीण ( क्षि=नाश करना ) ( वि० ) दुर्बला, निर्बल,  
दुर्बल, गरीब ।

क्षीर ( वृणु=खाना ) ( पु० ) दूध, पानी ।

क्षीरघृत ( पु० ) मक्खन ।

क्षीरधि ( पु० ) सागर, समुद्र ।

क्षीरनीर ( पु० ) आलिंगन, गले लगाना, सिखन ।

क्षुण ( वृणु+अक, वृणु=वहना ) ( वि० ) पंसा हुआ,  
चूर्णीकृत ।

क्षुद्र ( वृणु=वृणु, वृणु=होना ) ( वि० ) छोटा, नीच, अल्प,  
सूक्ष्म ।

क्षुद्रवैदिक ( स्त्री० ) चूँचरु, आभूषण-विशेष ।

क्षुद्र धान्य ( पु० ) कोरी, कंगनी ।

क्षुद्र प्रकृति ( वि० ) नीच प्रकृति ।

क्षुद्र बुद्धि ( वि० ) नीच बुद्धि ।

क्षुद्रा ( स्त्री० ) वेरया, नटो, मधुमक्षिका, भटकटैया ।

क्षुद्राशय ( वि० ) कमोना, नीच प्रकृति ।

क्षुधा ( वृणु=भूना होना ) ( स्त्री० ) भूख, खाने की  
चाह ।

क्षुधानुर ( वि० ) भूख से व्याकुल, भूखा ।

क्षुधार्त्त ( क्षुधा=भूख, आर्त्त=बचगाया हुआ ) ( वि० )  
भूखा, बहुत ही भूखा ।

क्षुधावन्त ( क्षुधा=भूख, वन्त=वाला ) ( वि० ) भूखा ।

क्षुधित ( क्षुधा=भूख ) ( वि० ) भूखा ।

क्षुध्य ( वि० ) क्षोभित, डरा हुआ, भयभीत ।

क्षुभित } ( क्षुभ=फँपना ) ( वि० ) डरा हुआ,  
क्षुध्य } घबराया हुआ, व्याकुल ।

क्षुर ( वृणु=काटना ) ( पु० ) डस्तरा, छुरा, छुर ।

क्षुरभांड ( क्षुर=क्षुरा, भांड=पिटारा ) ( १ )  
किम्बत, नाइयों की किम्बत ।

क्षेत्र ( क्षि=वसना, रहना ) ( पु० ) खेत, पवित्र धरती,  
पुण्यभूमि, देह, शरीर, स्त्री, पत्नी, भार्या ।

क्षेत्रज ( क्षेत्र=खा, उदर, जन=पैदा करना ) ( पु० ) अपनी  
स्त्री में दूसरे से पुत्र जनमाना, जारपुत्र, पांडव ।

क्षेत्रज्ञ ( पु० ) साक्षी, परमात्मा, जीवात्मा, खेतिहर,  
किसान ।

क्षेत्रपाल ( पु० ) भैरव-विशेष, द्वारपाल, खेत का  
रक्षक, स्वयंभू ।

क्षेत्रफल ( पु० ) रकबा ।

क्षेत्री ( पु० ) खेत का मालिक, विवाहित पति, मालिक ।

क्षेपक ( क्षिप्=फेंकना ) ( वि० ) फेंका हुआ, फेंकनेवाला ।

क्षेपण ( क्षिप्=फेंकना ) ( पु० ) फेंकना, प्रेरण,  
गिराना, काटना ।

क्षेपणी ( क्षिप्+यन+ई ) ( स्त्री० ) गुरुनी, दिक्-  
वासी, नाव का डोई ।

क्षेम ( क्षि=रहना ) ( पु० ) कुशल, कल्याण,  
बचाव, चैनदान ।

क्षेमकरी ( स्त्री० ) सकंदमूढ़ की स्त्री, देवी का नाम,  
कल्याण करनेवाली ।

क्षोणि { ( क्षु=वृद्ध करना ) ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती,  
क्षोणि { जमीन ।

क्षोद ( पु० ) चूर्ण, जल, पानी, बुकनी ।

क्षोभक ( क्षुप्+शक ) ( वि० ) भयकर्ता, डरवानेवाला ।

क्षोभ ( क्षुभ=भँपना, डरना ) ( पु० ) डर, मोह, छोह,  
घबराहट, हड़बड़ाहट, हिलाव-डुल्लाव ।

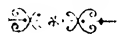
क्षोभित ( वि० ) डरा हुआ, खोका खाया हुआ ।

क्षौद्र ( पु० ) क्षुद्रता, धूल, शहत, वर्णसंकर जाति-  
विशेष ।

क्षौम ( पु० ) घर का उपरी कमरा, वस्त्र, अलसी ।

क्षौर ( क्षुर=उत्तरा ) ( स्त्री० ) हजामत, मुंडन, नाई  
का काम ।

क्ष्मा ( क्षम्=गहना ) ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, जमीन ।



## ख

ख ( पु० ) आकाश, आरमान, स्वर्ग, शून्य, इन्द्रिय,  
गृह, खेत, इसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।

खई ( स्त्री० ) मैल, जंग, तकरार, लड़ाई ।

खंखारना ( कि० थ० ) थूकना, कफ फेंकना ।

खखोरना ( कि० स० ) कोढ़ना, खुरचना ।

खग ( ख=आकाश, गम्=जाना ) ( पु० ) पक्षी, पक्षेरु,  
ग्रह, हवा, तीर, मन, देवता, सूर्य, चंद्र, तारा ।

खगपति ( खग=पक्षेरु, पति=राजा ) ( पु० ) गरुड़,  
सूर्य, चंद्रमा ।

खगांतक ( खग=पक्षेरु, अंतक=नाश करनेवाला ) ( पु० )  
बाज पक्षी ।

खगेंद्र ( खग=पक्षेरु, इंद्र=राजा ) ( पु० ) गरुड़ ।

खगेश ( खग=पक्षेरु, ईश=राजा ) ( पु० ) गरुड़ ।

खगोल ( ख=आकाश, गोल=गोला ) ( पु० ) आकाश-  
मंडल ।

खगोलविद्या ( खगोल + विद्या ) ( स्त्री० ) तारा नक्षत्र  
आदि की छात्र जानने की विद्या ।

खग्ग ( सं० खड्ग ) ( पु० ) तलवार, खड्ग ।

खगना ( कि० थ० ) घटना, कम होना ।

खंगर ( पु० ) लोहे का मैल ।

खंगार { ( स्त्री० ) थूक, कफ, श्लेष्मा, जुकाम ।  
खखार {

खंगालना ( सं० प्रवालन ) ( कि० स० ) धोना, साफ  
करना ।

खंगैल ( वि० ) बड़े-बड़े दाँतवाला ।

खचना ( म० खच्=बोधना, दढ़ करना ) ( कि० स० )  
जड़ना, मिलाटना, साटना ।

खचर ( पु० ) पक्षी, नक्षत्र, वायु, नीर, राक्षस ।

खचरा ( वि० ) दुष्ट, दोगला ।

खचित ( खच्=बोधना, दढ़ करना ) ( वि० ) जड़ित  
जड़ा हुआ ।

खचिया ( स्त्री० ) मौआ, टोकरी ।

खचर ( पु० ) घोड़े और गधे की ज्ञान का जानवर ।

खजरा ( वि० ) मिला हुआ, बड़ेरी ।

खजला ( पु० ) खाजा ।

खज्ञानची ( पु० ) बोधाध्यक्ष ।

खजुरा ( पु० ) खियों की छोटी बाँचने का बटा  
हुआ डोरा ।

खजुराही (सी०) यह स्थान जहाँ खजूर के पेड़ बहुत हैं।

खजुली (सी०) मृजली, खाज।

खजूर (सं० खजूर) (पु०) छुहारा, छुहारे या खजूर का वृक्ष।

खंज (वि०) लँगड़ा, लुन्ना, पंगु।

खंजन (खंज=खण्ड के चलना) (पु०) एक पत्थर का नाम।

खँजरी (सी०) वाद्य-विशेष, खँजरी डकुली।

खट (सी०) चारपाई, खाट, खटखटाहट।

खटकना (कि० अ०) लगाना, चुभना, गड़ना, खुभना, साखना, बाजना, आहत होना।

खटका (पु०) } (खटकना) संदेह, डर, शंका,  
खटक (सी०) } धोखा, दुविधा, मोन-मोख, पैर  
की आहत, खड़का।

खटकीरा (पु०) खटमख, उडुस।

खटखट (सी०) ऋगड़ा, ऋंभट, टंटा, बखेड़ा।

खटखटाना (कि० स०) ठकठकाना, ठोकना, खट-  
खट करना, थपथपाना।

खटखुपर (सं० खट=खाट, छपर) (पु०) छपरखाट,  
सेज, मसहरी-समेन पजंग।

खटना } (कि० अ०) टिकना, रहना ठहरना।  
खटाना }

खटपट (सी०) ऋगड़ा, खड़ाई, तकरार, ऋंभट, वि-  
गाड़, रगड़ा, ऋगड़ा, अनरस, खँचातानी, खटराग,  
खटापटी।

खटपटिया (वि०) ऋगड़ानू।

खटमल (सं० खटामल, खट=वाट, मल=पहलवान) (पु०)  
माकड़, खटकीड़ा, उडुस।

खटमीठा (पु०) खट्टा और मीठा मिखा हुआ स्वाद,  
(वि०) खट्टा और मीठा, जनभावना, सुस्वाद,  
मजेदार।

खटराग (सं० खटराग, खट=खः, राग=काम कोष आदि)  
(पु०) फूट, अनवन, अनमेख, ऋगड़ा, रगड़ा,  
ऋंभट, जंजाळ।

खटवाट (पु०) खाट की पाटो।

खटाई (सी०) तुरी, अम्लता, खट्टा।

खटाका (पु०) धवाका।

खटाखट (कि० वि०) खीम, खटपट।

खटाना (कि० अ०) निबाह होना, निभाना, खट्टा होना।

खटापटी (सी०) खड़ाई, ऋगड़ा, तकरार, ऋंभट,  
बिगाड़, खटपट।

खटाव (पु०) खूँटा जिनमें नाव बाँधी जाती है।

खटास (सी०) खटपन, खटाई, तुरी।

खटिक (पु०) फलफूल मेवा आदि बेचनेवाली हिंदू-  
जाति-विशेष।

खटिया (सं० खट्टा) (सी०) खाट, चारपाई, रथी।

खटीक (सं० खटिक, खट=ढकना) (पु०) ग्रहेरो जिसका  
काम जानवरों के मारने और बेचने का है।

खटोला (सं० खट्टा) (पु०) छोटी खाट, पाखना,  
भूखना।

खट्टा (वि०) तुरी, चूक, अम्ल, जैसे इम्ली आदि।

खट्टा (खट्ट=वाहना, वा खट्ट=ढकना) (सी०) खाट, पजंग,  
चारपाई।

खड़क (पु०) गोशाखा, गोखाना, (सी०) आहत।

खड़कना (कि० अ०) खड़खड़ाना, ऋंभनाना, बाजना।

खड़क जाना (बोल०) सावधान हो जाना, खबर पाना,  
संदेश पाना।

खड़खड़ाना (कि० अ०) ठकठकाना, ऋंभनाना,  
बाजना, दाँत पीसना, खरोटा मारना, घुरघुराना।

खड़खड़िया (सी०) पीनस, डोली, पाखको।

खड़ख (वि०) सूखा, सूखा हुआ।

खड़खड़ (सी०) खटपट।

खड़खड़ाना (कि० अ०) घबड़ाना, हड़बड़ाहट, सितर-  
बितर होना।

खड़खीड़ा (वि०) ऊँचा-नीचा।

खड़खीहड़ (वि०) ऊँभड़-खाँभड़।

खड़मंडल (पु०) गड़बड़, तिर-बितर।

खड़सान (पु०) खरसान, शान धराने का परधर।

खड़ा (वि०) सीधा, उठा, ऊँचा।

खड़ाऊँ (सी०) पाहुका।

खड़ा करना (बोल०) उठाना, ठहराना, ऊँचा करना।

खड़ा होना (बोल०) उठना, सीधा होना।

खड़िया (सं० खटिका, खट्ट=वाहना, वा खड़िका, खट्ट=  
ढकड़े-ढकड़े करना) (सी०) खड़ी, खड़को, पाक।

खड़ी (खट्ट=ढकड़े-ढकड़े करना) (सी०) खड़िया, खड़ी  
मिट्टी, खड़की, पाक।



खुवा (पु०) बाझा, कड़ा।  
 खड़े-खड़े (बोल०) अभी, तुरंत, ऊटपट, इसी दम।  
 खझ (खड़=काड़ना, चीरना) (खी०) तलवार, तरवार।  
 खड्डा (पु०) गड़ा, गड़हा।  
 खंड (खड़=तोड़ना) (पु०) टुकड़ा, भाग, हिस्सा,  
 खन, मकान का कोई हिस्सा, जमीन का कोई  
 टुकड़ा, देश, पुस्तक का एक भाग, खौंड़।  
 खंडन (खड़+प्रक०) (पु०) तोड़नेवाला।  
 खंड-खंड (पु०) टुकड़ा-टुकड़ा।  
 खंडन (खड़=तोड़ना) (पु०) तोड़ना, टुकड़े करना,  
 छिन्न-भिन्न करना, किसी की बात को रद्द करना,  
 झुठलाना, बात में हराना, मात करना, तरदीव  
 करना।  
 खंडन करना (सं० खंडन) (क्रि० स०) तोड़ना,  
 टुकड़े-टुकड़े करना मात करना, झुठलाना।  
 खंडना (खी०) आपत्ति, आक्रुत।  
 खंडर (पु०) वीरान, उजाड़।  
 खंडसर (पु०) शकर का कारखाना।  
 खंडित (खड़=टुकड़े-टुकड़े करना) (वि०) टूटा हुआ,  
 टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, कटा हुआ, छिन्न-भिन्न,  
 तितर-बितर, बिखरा हुआ, मात किया हुआ,  
 शिक्स्त।  
 खंडिता (खी०) वह नायिका जो अपने नायक को  
 दूषरी नायिका से संयोग करते देख दुखी न हो।  
 खतम (वि०) पूर्ण, इति, समाप्त।  
 खतरा (पु०) खौफ, डर, भय, शंका।  
 खता (खी०) अपराध, क्रमूर, धोखा।  
 खतान (खी०) जमाखर्च, लेखाबही।  
 खत्ता (सं० खात, खन्=खोदना) (पु०) कोठा, नाज  
 रखने का खड्डा, गड़हा।  
 खत्री (सं० खत्री) (पु०) पंजाब में रहनेवाली ब्या-  
 पारी जाति-विशेष।  
 खदबदाना (क्रि० प्र०) सनसनाना, सीजना, छन-  
 छनाना।  
 खदान (खी०) खान।  
 खदिर (पु०) कथा, खैर।  
 खदुका (पु०) कर्ज लेकर ब्यापार करनेवाला, आखी।  
 खदेड़ना (क्रि० स०) पीछा करना, रगेदना।

खद्योत (ख=पाकाश, घट्=चमकना) (पु०) जुगनू,  
 अगिया, चमकनेवाला कीड़ा।  
 खन (सं० खंड) (पु०) घर का हिस्सा, कोठड़ी,  
 कमरा, महला।  
 खनक (खन् + अक, खन्=खोदना) (पु०) मूषक,  
 मूश, चूहा, खोदनेवाला, सेंध लगानेवाला, सोने  
 आदि की खान।  
 खनकना (क्रि० प्र०) ठनठनाना, शब्द करना, बाजना।  
 खनन (खन् + अन खन्=खोदना) (पु०) खोदना।  
 खनवाना (क्रि० स०) गोदवाना, खोदवाना।  
 खनहन (वि०) कमज़ोर, दुबला, पतला, हलका।  
 खनि (खन्=खोदना) (खी०) खानि, धाकर।  
 खनित्र (खन्=खोदना) (पु०) कुदाख, कुदाखी,  
 खोदने का औज़ार।  
 खनिज (वि०) खान का, खान से निकला हुआ।  
 खनित्री (खन्=खोदना) (खी०) कुदाखी, कसी,  
 फावड़ा, पडुहा, खंतो।  
 खपची (खी०) कमाची, बाँस की तीखी।  
 खपड़ी (खी०) भड़भूँजों की हँदिया, जिसमें दाना  
 आदि भूँजते हैं।  
 खपड़ेल (खी०) खपड़े से ढाया हुआ घर।  
 खपत (खपना) (खी०) बिक्री, बिकाश, खर्च, उठान।  
 खपना (क्रि० प्र०) सोख जाना, सूखना, मरना,  
 बिकना, खर्च होना, उठना।  
 खपरा (पु०) नरिया, पटरी, चौका जिनसे मकान  
 ढाया जाता है।  
 खपरल (खपरा) (खी०) खपरे का घर।  
 खपाच (खी०) फॉस, किर्च, बॉस का टुकड़ा।  
 खपाना (क्रि० प्र०) नाश करना, पूरा करना, मार  
 डालना, समाप्त करना, व्यय करना।  
 खपर (सं० खपर, कृप=सामर्थ्य रखना) (पु०) खोपरी,  
 योगी लोगों का मिट्टी का बरतन, योगियों का पात्र।  
 खफगी (खी०) क्रोध, कोप, अप्रसन्नता।  
 खफा (वि०) रुष्ट, अप्रसन्न, क्रुद्ध।  
 खयर (खी०) समाचार, हाख।  
 खयरगीरी (खी०) देखभाज, चौकसी।  
 खयरदार (वि०) सावधान, सजग, सैतन्य।  
 खबसा (पु०) चढावा, कीचड़।

खञ्ज ( पु० ) सक्क, पागलपन ।  
खञ्जा ( वि० ) बाँझ हाथ से काम करनेवाला ।  
खभरुआ ( वि० ) व्यवहारियों का लड़का, छिनाल का पुत्र ।

खमास ( पु० ) उमस ।  
खमार ( पु० ) दर, भय, खोम, घबराहट ।  
खमास ( पु० ) गुड़गुड़हट, घेठ का जलन ।  
खम ( सं० स्तंभ ) ( पु० ) ताल, भुआ, खंभ ।  
खम टोकना ( प्रे० ) ताल टोकना, कुश्ती करने के समय अपने हाथों से बाहु को टोकना ।

खमशि ( ख=याक्रान्त, शि=सं ) ( पु० ) सूर्य ।  
खमीर ( पु० ) आटे का सड़ाना ।  
खमीरा ( वि० ) खमीर से बना हुआ ।  
खमीलन ( पु० ) सुस्तता, थकावट ।  
खंवा { सं० स्तंभ } ( पु० ) धंभा, धूनी, खंभा, लाठ,  
खंभ { मीनार ।  
खम्माच ( स्त्री० ) रागिनो विशेष जो रात के तूफाने पहर में गाई जाती है ।

खयानत ( स्त्री० ) बेईमानी, चोरी, धरोहर वापस न देना ।

खयाल ( पु० ) ध्यान, स्मरण, याद ।  
खर ( मउ=मोड़ना ) ( पु० ) तीखा, कठोर ।  
खर ( ख=शय्य, रा=नेला ) ( पु० ) कौआ, गधरा, खघर, एक राक्षस का नाम, तीक्ष्ण, चतुर, वृण, ( सं० खड=काटे करना ) ( पु० ) तिनका, वृण, पास ।

खरची ( स्त्री० ) व्यवहार करने का पुरस्कार ।

खरजा ( पु० ) पक्की सड़क, पटाव ।

खरतर { ( वि० ) अतितीक्ष्ण, बहुत तेज, कड़ा  
खरतल { मित्राज ।

खरधार { ( वि० ) तेज धार, बड़ी धार ।  
खरधारा {

खरभर, ( स्त्री० ) {  
खरवर, ( स्त्री० ) { हलचल, खड़बड़, खलबली,  
खलवल, ( स्त्री० ) { हलचल, खड़बड़ ।  
खमार, ( पु० ) {

खरल ( सं० खल, खल=गिरना ) ( स्त्री० ) क्षीपध पीसने के लिये पथर का बरतन ।

खरबा ( पु० ) बियों के पहलने का जूता, जूती ।

खरहा ( पु० ) खरगोश, शशा ।

खरा ( वि० ) सधा, सीधा, सरल, उत्तम, श्रेष्ठ, चोखा, प्रमाणिक ।

खराई ( स्त्री० ) समय पर जलपान न मिलने से स्वास्थ्य के गड़बड़ी होना, सचाई, सत्यता ।

खराद ( पु० ) आजार-विशेष जिस पर चढ़ाकर लकड़ी के वर्तन चिकने बनाए जाते हैं ।

खरापन ( पु० ) सचाई, सत्यता ।

खराव ( वि० ) बुरा, नाच, हीन, तुच्छ, निरुष्ट ।

खराश ( स्त्री० ) छिलन, हलका घाव ।

खरिहान ( पु० ) खलिहान, वह स्थान जहाँ खेत से अन्न काटकर रक्खा जाता है ।

खरी ( स्त्री० ) गधी, खली, भली, चोखी, खड़ी ।

खरीता ( पु० ) थैली, खोता ।

खरीफ ( स्त्री० ) आषाढ़ से अगहन भर में काटी जानेवाली फसल ।

खरे ( पु० ) रूप में एक आने की दजाजी, अच्छे, भले ।

खजुर ( पु० ) खजूर, छुहारा, जुकाम, श्लेष्मा ।

खज्व ( खज=जाना ) ( पु० ) सौ अरब, ( वि० ) बामन, नाटा, छोटा, नाच ।

खज्वट ( पु० ) पर्वत पर बसा हुआ नगर ।

खज्वित ( वि० ) अक्षरोक्त, संक्षिप्त, सुदृढतर ।

खरी ( पु० ) चिट्ठा, ममविद्या, खसरा, खरखरा ।

खरीट ( पु० ) वृद्ध, अनुभवी ।

खरीटा ( पु० ) गाढ़ निद्रा ।

खल ( ख=शय्य, ल=लेना, वा खल=चलना, वा गिरना )

( वि० ) दुष्ट, नीच, कठोर, निर्दयी, क्रूर, बेरहम,

( सं० खलि, खल=जाना वा गिरना ) ( स्त्री० )

खरी, तिल की मोटी, ( वि० ) दुष्ट, अधम, नाच,

निंदक, क्रूर, ( पु० ) कलक, खला ।

खलफ ( पु० ) संपार, जगत ।

खलकन ( स्त्री० ) भोड़, समूह, सृष्टि ।

खलना ( स्त्री० ) नीचता, दुष्टता ।

खलन ( खल + अन ) ( पु० ) खाली करना, रीता करना ।

खलना ( कि० अ० ) बुरा लगना, असरना ।

खलवलाना ( कि० अ० ) डबलना, खलना ।

खलबली ( स्त्री० ) भय, डर, घबराहट, हलचल ।

खलल ( पु० ) रुकावट, बाधा, टोक ।

खला ( स्त्री० ) वेश्या, रंडी, दुष्टा स्त्री ।

खलारा ( वि० ) नीचा, गहरा ।

खलासी ( पु० ) जहाज़ पर का कुली ।

खलित ( खल् + इत ) ( वि० ) पतित, गिरा, खाली हुआ ।

खलियान ( सं० खल्या, खल्=जान, वा गिरना ) ( पु० )  
उस जगह का नाम जहाँ भूमे में से अनाज निकाल-  
कर ढेर लगाते हैं, खलिहान ।

खलीता ( स्त्री० ) जेब, चिट्ठी, थैला ।

खलीफ़ा ( पु० ) बड़ा दरजी, अध्यक्ष ।

खलु ( अव्य० ) निश्चय, हेतु, यक़ीन, विश्वास,  
निपेध, प्रश्न, अवश्य, विनती ।

खल्व्वाट ( वि० ) गंजा, चूंदुला, जिसके सिर में बाल  
न हों ।

खया ( पु० ) कंधा, खंभा ।

खवाई ( स्त्री० ) खिलाना-पिलाना ।

खवास ( पु० ) अमीरों का वह नौकर जो पान लगाता  
है, तंबाकू भरता है और कपड़े पहनाता है ।

खसकंत ( स्त्री० ) भाग जाना, चंपत होना ।

खसकाना ( क्रि० म० ) दूर करना, सरकाना, हटाना,  
पीछे खींचना, ले भागना, बढ़ाना ।

खसखस ( सं० खम=खम ) ( पु० ) पोस्त का दाना,  
द्रुमश्रावश ।

खसखसा ( पु० ) गला सूखना, भुरभुरा ।

खसना ( क्रि० अ० ) गिरना, गिर पड़ना, घँसना ।

खसरा ( पु० ) बही, खेत के हिसाब की किताब खसरा,  
खुजली ।

खसिया ( वि० ) बधिया, नपुंसक बकरा ।

खसियाना ( क्रि० म० ) बधियाना, ग्रंथकोश निकालना ।

खसी ( पु० ) बकरा ।

खस्सी ( पु० ) बकरा

खोंग ( पु० ) काँटा, नोक ।

खोंगड़ ( वि० ) कैलीला, नोकीला, शस्त्रधारी ।

खोंगना ( क्रि० अ० ) लँगड़ाना, घटना, कम होना ।

खोंच ( पु० ) संधि, जोड़ ।

खोंचना ( क्रि० अ० ) घसीट लिखना, खींचना ।

खाँचा ( पु० ) टोकरा, मौवा, बड़ा पिंजड़ा ।

खाँड़ ( सं० खंड ) ( स्त्री० ) शकर ।

खाँड़व ( पु० ) इन्द्रप्रस्थनगर के निकट का वन ।

खाड़ा ( सं० खड्ग ) ( पु० ) एक तरह की तलवार,  
तेगा ।

खाँड़े की धार पर चलना ( बोल० ) न्यय पर  
चलना, न्याय करना ।

खाँसी ( सं० काश, कण्=शब्द करना ) ( स्त्री० ) खोखी,  
काल रोग ।

खाई ( सं० खात, खन खोदना ) ( स्त्री० ) खंदक, नाला,  
गड़हा, गड़ के बाहर का नाला ।

खाऊ ( खाना ) ( वि० ) पेट, पेटार्थी, बहुत खानेवाला ।

खाका ( स्त्री० ) धूल, राख, गर्द ।

खाका ( पु० ) ढाँचा, ढील ।

खाकी ( वि० ) भूरा ( पु० ) मुसलमान फकीरों का एक  
संप्रदाय-विशेष ।

खाग ( सं० खड्ग ) ( पु० ) गैंड़े का सींग ।

खाज ( सं० खर्ज, खर्ज=रुस देना ) ( स्त्री० ) खुजली ।

खाजा ( सं० खाद्य=खाने योग्य ) ( पु० ) एक तरह की  
मिठाई ।

खा जाना ( बोल० ) खा लेना, डकारना, घट करना,  
हज़म करना, मार खाना, निगलना, उड़ाना ।

खाट ( सं० खट्टा ) ( स्त्री० ) चारपाई, खटिया ।

खात ( खन्=खोदना ) ( पु० ) खाई, खेय, परिखा,  
दुर्गवेष्टन, खंदक, तालाब, गोबर ।

खातमा ( पु० ) अंत, मृत्यु ।

खाता ( पु० ) लेखाबही, रोज के हिसाब की बही,  
खसरा, हिसाब ।

खानिर ( स्त्री० ) सम्मान, आदर ।

खानिरजमा ( स्त्री० ) विश्वास, संतोष, ढाढ़स ।

खानिरदारी ( स्त्री० ) आदर, सम्मान ।

खानी ( पु० ) बड़ई, मिस्तरी ।

खादक ( खाद+थक ) ( पु० ) ऋषि, कर्जदार, खवैया ।

खादन ( खाद+थन् ) ( पु० ) भक्षण, भोजन, खुराक ।

खाद्य ( खाद=खाना ) ( वि० ) खाने योग्य, ( पु० )  
खाना, खाने की चीज़ ।

खान } ( सं० खानि वा खनि, खन्=खोदना ) ( स्त्री० )  
खानी } खानि, आकर, मादन, ढेर, घर ।

खानखर ( पु० ) खोह, सुरंग, खोह ।

खानखाना ( पु० ) मुगल सरदारों की उपाधि ।

खानखाह ( कि० वि० ) अवश्य, जरूर ।

खानगी ( वि० ) घरेलू ( स्त्री० ) पतुरिया, कसबी, वैश्या ।

खानसामा ( पु० ) अंग्रेजों या मुसलमानों का बबर्ची या भंडारी ।

खाना ( सं० खादन, खाद्=खाना ) ( कि० स० ) भोजन करना, खा जाना, उड़ाना, चोरी करना, मार खाना, चाट जाना, निगलना, डकार जाना, हज़म कर जाना, चट करना, हाथ मारना, ( पु० ) खाने की चीज़, भोजन, आहार ।

खाना-पीना ( बोल० ) भोजन, खुराक, खाना ।

खानापुरी ( स्त्री० ) नक़्श भरना ।

खानाशुमारी ( स्त्री० ) मकान गिनने का काम ।

खानिक ( खन्=खोदना ) ( वि० ) जो खानि में पैदा हो, ( स्त्री० ) खानि ।

खाप ( स्त्री० ) ग्यान, कोप ।

खापट ( स्त्री० ) काली और लसदार कड़ी मिट्टी ।

खावड़ ( वि० ) ऊभड़, नोचा-ऊँचा, अंडवंड ।

खाम ( वि० ) कच्चा, अनुभवशून्य ।

खामखाह ( कि० वि० ) अवश्य, जरूर ।

खामना ( कि० स० ) चिट्ठी का मुँह बंद करना, गीली मिट्टी आदि से किसी चीज़ का मुँह बंद करना ।

खामी ( स्त्री० ) अपूर्ण, कच्चाई, अधूरापन ।

खापोश ( वि० ) मौन, चुप ।

खार ( सं० क्षार ) ( पु० ) लोना, एक सफ़ेद खारी चीज़ जिससे बहुत बार धोयी कपड़े साफ़ करते हैं, रेह, क़्लार ।

खारक ( पु० ) छोहारा ।

खारा ( सं० क्षार ) ( वि० ) लोना, नमकीन, अरुचिकर ।

खारिज ( वि० ) निकाला हुआ, जिस मुक़द्दमें की सुनवाई न हो ।

खारी ( स्त्री० ) कड़वा नमक ।

खारुवा ( पु० ) खारुआ, लाल मोटा कपड़ा ।

खाल ( सं० खल्ला ) ( स्त्री० ) चमड़ा, धौकनी, खाड़ी, कोख ।

खाल खेचना ( बोल० ) मनुष्य की देह से चमड़ा

उतारना, बहुत दुख देकर मार डालना, चमड़ा

लेना, चमड़ा उधेड़ना, खल्लियाना ।

खालसा ( वि० ) सरकारी, जिस पर एक ही का अधि-कार हो ।

खाला ( वि० ) नीचा ।

खाला ( स्त्री० ) मौसी ।

खालिस ( वि० ) शुद्ध, बेमेल ।

खाले ( कि० वि० ) नीचे ।

खालिद ( पु० ) पति, खसम, भर्ता ।

खालस ( वि० ) प्रधान, निजी ।

खालसक़लम ( पु० ) बड़े आदमियों के निजी काम के लेखक या सहायक ।

खालसगी ( वि० ) निजी ।

खालस बाज़ार ( पु० ) राजा के महल के पास या सामने-वाला बाज़ार जहाँ से राजा सौदा लेता है ।

खालसा ( पु० ) राजा का खाना, मोयनदार पूरी, राजा की निजी सवारी, ( वि० ) भला, चंगा, सुंदर, सुदौल, निरोग ।

खालसियत ( स्त्री० ) आदत, स्वभाव, गुण ।

खालिहा ( स्त्री० ) चाह, इच्छा ।

खिजमत ( स्त्री० ) सेवा, टहल ।

खिजलाना } ( सं० खिद=दुःख देना ) ( कि० स० )

खिजाना } सताना, चिढ़ाना, छेड़ना, दुख देना, तकलीफ़ देना, क्रोधित करना ।

खिज़ाय ( पु० ) सफ़ेद बालों को ग़ने की ओषधि ।

खिचना ( कि० अ० ) तानना, ऐंठना ।

खिड़की ( स्त्री० ) झरोखा, दरीची ।

खिद ( खिद=दुःख देना वा दुःख पाना ) ( वि० ) दुखो, दुखित, थका हुआ, थकित, सताया हुआ ।

खियाना ( कि० अ० ) धिस जाना ।

खियाल ( पु० ) याद, हुरादा, विचार ।

खिर ( स्त्री० ) बाने का सूत रखने की ढरकी, नार ।

खिरकी ( स्त्री० ) खिड़की, अंगला, झरोखा ।

खिरनी ( सं० क्षीरिणी, क्षीर=दूध ) ( स्त्री० ) एक फल और उसके पेड़ का नाम ।

खिराज ( पु० ) माझगुजारी, कर ।

खिलअत ( स्त्री० ) राजा-महाराजाओं का दिया हुआ सम्मान-सूचक वस्त्रादि ।

खिल ( पु० ) अर्गल, धसी, आगल ।

खिलखिलाना ( सं० किलकिला ) ( कि० अ० ) बहुत जोर से हँसना ।

खिलना ( कि० अ० ) फूलना, हर्षित होना, प्रसन्न होना, हँसना ।

खिलाड़ू } ( खेल ) ( वि० ) चंचल, चपल ।  
खिलाड़ी }

खिलाफ़ ( वि० ) विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल ।

खिलैया ( वि० ) खिलाड़ी ।

खिलौना ( खेल ) ( पु० ) खेलने की चीज़ ।

खिल्ली ( स्त्री० ) दिखगी, हँसी, ठटोली, पान का बीड़ा, धान का लावा ।

खिल्लू ( वि० ) खिलाड़ ।

खिसलना ( कि० अ० ) फिसलना, खिसकना, सरक जाना ।

खिसियाना ( सं० किश=दुख पाना ) ( कि० अ० ) चिड़-चिड़ाना, क्रोध करना, खीसना ।

खिसियाहट ( स्त्री० ) खीस, क्रोध, कोप, रिस ।

खीज ( स्त्री० ) झुँझाहट, क्रोध, खीस ।

खीजना ( सं० खिद=दुख देना वा दुख पाना ) ( कि० अ० ) क्रोधित होना, क्रोध करना, दुःखित होना, दुखी होना ।

खीझना ( कि० अ० ) क्रोध करना, खीजना, कुपित होना ।

खींचतान ( स्त्री० ) चढ़ा-उतरी ।

खींचना ( कि० स० ) ऐंचना, घसीटना ।

खीन ( वि० ) दुर्बल, क्षीण ।

खीर ( सं० खीर ) ( पु० ) दूध और चावल से बनी हुई एक खाने की चीज़, जाउर, पायस ।

खीरा ( स्त्री० ) एक प्रकार की ककड़ी, फल-विशेष ।

खील ( स्त्री० ) भूना हुआ चावल, लावा, काँटा, कील ।

खीला ( पु० ) काँटा, कील ।

खीली ( स्त्री० ) पान का बीड़ा ।

खीस ( स्त्री० ) खराब हुई, दाँत निकलना ।

खीसना ( कि० स० ) नाश करना, उजाड़ना, बिगाड़ना, खिसियाना ।

खीसा ( फा० स्त्री० ) ( पु० ) जेब, खलीता ।

खीह ( स्त्री० ) रेह, सजी, मिट्टी ।

खुआर ( वि० ) खराब, अप्रतिष्ठित, आपद्प्रस्त ।

खुआरो ( स्त्री० ) नाश, खराबी ।

खुख ( वि० ) दीन, कंगाल, भिक्षुक, दरिद्र ।

खुचर या खुचुर ( स्त्री० ) व्यर्थ दोष निकालना ।

खुजलाना ( सं० खर्ज=दुख देना ) ( कि० अ० ) कलकलाना, चुलचुलाना, सहलाना, खरोटना, खरोंचना ।

खुजलाहट } ( सं० खर्ज, खर्च=दुख देना ) ( स्त्री० )  
खजलाहट } खुजलाना, खुजली, सुरसुरी, गुदगुदी ।

खुजली ( सं० खर्ज, खर्च=दुख देना ) ( स्त्री० ) खाज, पामा, खारिश ।

खुज्भा ( पु० ) मैल, तख़छट, फलादि का रेशेदार हिस्सा ।

खुभराहा ( वि० ) अर्धपिशाच, कृपण, कंजूस ।

खुटकना ( कि० स० ) संदेह करना, संशय होना, कुतरना ।

खुटका ( पु० ) संदेह, शंका, व्यग्रचित्तता ।

खुटचाल ( स्त्री० ) नीचता, बुरी चाल, उपद्रव ।

खुटाई ( स्त्री० ) अधमता, दुष्टता, खोटापन ।

खुटाना ( कि० अ० ) कम होना, घट जाना, बराबर करना, विशेष होना ।

खुटानी ( स्त्री० ) चीख हुई, कम हुई, नाश हुई, पूरी हुई ।

खुट्टी ( स्त्री० ) मूलघन, रोकड़, पूँजी ।

खुडला ( पु० ) पक्षियों के रहने का स्थान, मुर्गियों का दुर्वा, बेहड़ ।

खुड़ी ( स्त्री० ) पाखाने में पैर रखने का पायदान ।

खुडला ( पु० ) कोटर, खोखर, वृक्ष का छिद्र ।

खुथ ( पु० ) पेड़ के जड़ के ऊपर का भाग ।

खुद ( अव्य० ) स्वयं, आप ।

खुदकाश्त ( स्त्री० ) वह ज़मीन जिसे मालिक जोते-बोए मगर सीर न हो ।

खुदकुशी ( स्त्री० ) आत्महत्या, आत्मघात ।

खुदग़रज़ ( वि० ) मतलबी, स्वार्थी ।

खुदमुखतार ( वि० ) स्वतंत्र, स्वछंद ।

खुदरा ( पु० ) फुटकर वस्तु, छोटी-छोटी मामूली चीज़ें ।

खुदवाई ( स्त्री० ) खोदवाने का काम, खोदवाने की मजुरी ।

खुदवाना ( सं० खन=खोदना वा नु=चूर-चूर करना ) ( कि० स० ) खोदवाना ।

खुदा ( पु० ) ईश्वर ।

खुदाई ( स्त्री० ) ईश्वरत्व, सृष्टि ।

खुदावंद ( पु० ) हुजू, जनाब, श्रीमान्, सम्मानसूचक शब्द ।

खुदी ( पु० ) अहंकार, घमंड, अभिमान, ( स्त्री० ) खुदी, कण, कणिका ।

खुनस ( स्त्री० ) रोष, वैर, क्रोध, कोप, लाग, रिस ।

खुनमाना ( कि० प्र० ) क्रोधित होना, खिसियाना, क्रोध करना, रिसाना ।

खुफिया ( वि० ) छिपा हुआ, गुप्त ।

खुफिया पुलिम ( स्त्री० ) जामूस, भेंदिशा, गुप्त पुलीस ।

खुचना } ( कि० प्र० ) चुभना, बिथना, पैटना, असर  
खुभना } करना, मन में जंच जाना ।

खुमारी ( स्त्री० ) मद, नशा, नशे के उतार की दशा ।

खुर ( मुर=काटना ) ( पु० ) मुस, घोड़े गाय आदि के पैर की नख ।

खुरखुरा ( वि० ) खरखर, असमन्तल ।

खुरचन ( स्त्री० ) मिठाई-विशेष, खखोरी ।

खुरंड ( पु० ) पपड़ी, खूंटो ।

खुरदाँय ( पु० ) दैवरी, कटो फसल को बैलों से कुचलवाना ।

खुरपा ( सं० मुर=काटना ) ( पु० ) घास खोदने का औजार ।

खुरमा ( फा० खर्मह ) ( पु० ) एक तरह की मिठाई ।

खुरहर ( स्त्री० ) खुर का निशान, खुर से बना हुआ मार्ग ।

खुराक ( पु० ) भोजन, खाना ।

खुराकी ( स्त्री० ) नक़द पैसे जो भोजन के लिये दिए जाते हैं ।

खुराफ़ान ( स्त्री० ) गालीगलीज, उपद्रव, भगड़ा, टंटा ।

खुरिया ( स्त्री० ) कटोरी, प्याली, घोंटू ।

खुरेना ( कि० सं० ) खदेरना, भगाना, रसेदना ।

खुर्दवीन ( स्त्री० ) सूक्ष्मदर्शक यंत्र ।

खुर्दाफ़रोश ( पु० ) बिसाती ।

खुर्गट ( वि० ) चालाक, अनुभवो, बुद्धा ।

खुलना ( कि० प्र० ) खुल जाना, प्रकट होना, नहीं

ढकना, बिखरना ( जैसे बादल ), साक़ हो जाना, स्वच्छ हो जाना ( जैसे आकाश ), टूटना, छूट जाना ( जैसे ध्यान ) ।

खुलासा ( पु० ) सारांश, संक्षेप ।

खुशकिस्मत ( वि० ) भाग्यवान् ।

खुशकिस्मती ( स्त्री० ) सौभाग्य ।

खुशख़त ( वि० ) सुंदर अक्षर लिखनेवाला ।

खुशनवीस ( वि० ) बढ़िया अक्षर लिखनेवाला ।

खुशनुमा ( वि० ) मनोहर, सुंदर ।

खुशबू ( स्त्री० ) सुगंधि ।

खुशहाल ( वि० ) सुर्वा, संपन्न ।

खुशामद ( स्त्री० ) चापलूसी, चाटुता ।

खुशामदी टट्टू ( पु० ) खुशामद से जीवननिर्वाह करनेवाला ।

खुश्क ( वि० ) सूखा ।

खुश्की ( वि० ) पेंदल रास्ता ।

खुमुरकुमुर ( पु० ) कानाफूसी ।

खँखार ( वि० ) क्रूर, निर्दयी, भयंकर, खून पीनेवाला ।

खूँट ( पु० ) कोना, कोन, कान का मैल ।

खूँदना ( सं० लुट=चूना करना ) ( कि० सं० ) पैरों से धरती को खोदना, टाप मारना ।

खुद ( पु० ) मैल, तलछट ।

खूनखराबी ( पु० ) मारकाट ।

खूनी ( वि० ) हत्यारा, धातक ।

खूबी ( स्त्री० ) गुण, अच्छाई, विशेषता ।

खूसट ( पु० ) उल्लू, बुद्ध, ( वि० ) अरसिक, मनहूस ।

खेचर ( खे=आकाश में, चर=चलनेवाला, चर=चलना )

( पु० ) ग्रह, वायु, तारागण, पक्षी, प्रेत, विद्याधर

देवता, ( वि० ) आकाश में चलनेवाला बादल,

विमान, सूर्य, चंद्र ।

खेट ( मिट्ट=भताना ) ( पु० ) ग्रह, पक्षी, अधम, भयं,

खेत, शिकार, घास, घोड़ा, सोंटा, चमड़ा, ढाल ।

खेटक ( खिट=डराना, मताना ) ( पु० ) शिकार, अहेर,

ढाल, भय, कुत्सित, घाम, नीच, अधम ।

खेड़ा ( सं० खेट, खेट=लाना ) ( पु० ) पुरवा, गाँव-

टोला ।

खेड़ी ( स्त्री० ) अच्छा लोहा, क्रीलाद, हस्पात,

कातिसार ।

खेत (सं० क्षेत्र) (पु०) जगह जहाँ अनाज तरकारी आदि बोते हैं, पवित्र धरती, धरती, ज़मीन, लड़ाई का मैदान ।

खेत छोड़ना (बोल०) लड़ाई से भाग जाना ।

खेत रहना (बोल०) लड़ाई में रह जाना, मारा जाना ।

खेतिहर (पु०) किसान, खेती करनेवाला ।

खेती (खेन) (खी०) किसानई, काश्तकारी, ज़िराअत, फ़सल ।

खेतीवारी (बोल०) खेती का धंधा, काश्तकारी, ज़िराअत ।

खेद (खिद=दुःख पाना) (पु०) दुःख, शोच, शोक, पछतावा, कष्ट, तकलीफ़, पीड़ा, व्यथा ।

खेदना (कि०स०) हाँकना, भगाना, सताना, शिकार का पीछा करना ।

खेदा (पु०) हाथी फँसाने की जगह, शिकार ।

खेदाई (खी०) खेदने की मजुरी, खेदने का काम ।

खेदिन (खिद=दुःख पाना) दुःखित, दुखी, पीड़ित ।

खेना (कि०स०) नाव चलाना, समय बिताना ।

खेप (सं० क्षेत्र, लिप्=फँकना, भेजना) (खी०) सफ़र, समुद्र की यात्रा, जहाज़ का बोझा, भार ।

खेप हारना (बोल०) नुक़सान उठाना, हानि होना ।

खेपा (वि०) पाग़ल, उन्मत्त, बकवादी ।

खेम (पु०) मंगल, आनंद, सुरक्षा ।

खेमटा (पु०) बारह मात्राओं का एक ताल ।

खेमा (पु०) डेरा, तंबू, कनात ।

खेरा (पु०) परती, ऊजड़ गाँव ।

खेल (सं० खेला, खेल=हिलना, चलना) (पु०) क्रीड़ा, विहार ।

खेवटिया } (सं० क्षेत्र) (पु०) नाव चलानेवाला,  
माँझी, मल्लाह, डाँडो, खेवरू, कागाज़ जिसमें प्रत्येक पट्टीदार के हिस्से की तादाद और उसकी माज़गुज़ारी लिखी रहती है ।

खेचना (सं० क्षेत्र) (कि०स०) डाँड मारना, नाव चलाना ।

खेचा (सं० क्षेत्र) (पु०) उतराई, नाव की उतराई का भाड़ा, नदी पार होना, खेवाई ।

खेस (पु०) एक कपड़े का नाम ।

खेह (खी०) मट्टी, धूँ, झाक, राख ।

खैचना (कि०स०) तानना, कसना, ऎँचना, तसवीर में रंग भरना, तसवीर उतारना, तसवीर बनाना ।

खैचाखैची (बोल०) खैचातानी, लड़ाई, मारामारी ।

खैर (सं० खैरि) (पु०) एक वृक्ष का नाम, खदिर-पेड़ का गूदा, कथा ।

खैरखाह (वि०) शुभचिंतक ।

खैरसार (पु०) कथा ।

खैरा (पु०) मछली-विशेष, रंग-विशेष ।

खैरात (पु०) दान, पुण्य ।

खैरियत (खी०) राज़ीख़ुशी, आनंद-मंगल ।

खैला (पु०) बछड़ा, नया बैल ।

खोआ (पु०) खोया, मावा-विशेष ।

खोआना (कि०स०) ठगा जाना, हार जाना, भूल जाना ।

खोऊ (वि०) खर्वीला, अपव्ययी ।

खौखना (कि०स०) खौंसना, खँखारना ।

खौखल (वि०) शून्य, खाली, पोल ।

खौखला (सं०कोटर) (वि०) खाली, छूड़ा, थोथा, पोल ।

खौखा (पु०) वह हुंडी जिसके रुपए दिए जा चुके हों ।

खौंगी (खी०) पान के बीड़े का चौघड़ा ।

खौंच (खी०) चौर, खोप ।

खौचना (कि०स०) चुभोना, चुसेदना ।

खौंचा (पु०) खौंच, चौर, पेट का दर्द, चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस ।

खोज (पु०) पता, निशान, ठिकाना, चिह्न ।

खोजा (पु०) ज़नखे, बादशाही ज़नानखाने के नौकर-विशेष ।

खोट (खी०) चूक, भल, दोष, अवगुण ।

खोटा (वि०) झूठा, नमकहराम, खराब, दुराचारी ।

खौंडला (वि०) दाँतरहित, पोपला ।

खौंता (पु०) घोंसला, पथेरू का घर ।

खोदना (सं० खन=खोदना वा नुद=चूर-चूर करना) (कि०स०) खनना, गोड़ना, कुरेदना ।

खोना (सं० क्षेत्र) (कि०स०) गँधाना, उड़ाना, नाश करना, हारना ।

खोनचा (पु०) फेरीवाले का थाल, जिसमें रखकर वह खाने-पीने का माज़ बेचते हैं ।

खोपरा (सं० खर्पर) (पु०) नारियल की गरी ।

खोपरी ( सं० खोपरी ) ( स्त्री० ) कपाल की हड्डी, शिर की हड्डी, खोपड़ी ।  
 खोपा ( पु० ) छप्पर का कोना, मकान का वह कोना जो रास्ते का ओर हो, मल, मेल, खुद, हल का वह हिस्सा जिसमें फाल लगा रहता है, छाजन का कोना, बँधी हुई वेणी ।  
 खोया ( पु० ) गच या पलस्तर पीटने की थापी ।  
 खोभार ( पु० ) कृषा-कर्म फेंकने की जगह ।  
 खोम ( पु० ) समूह ।  
 खोरि } ( सं० खोट=टूटने वाला ) ( स्त्री० ) खुटाई,  
 खोरी } दोष, कसर, सँकरी गली ।  
 खोग्या ( स्त्री० ) विवाह के अवसर पर स्त्रियों का स्वाँग बनाना और गाझियाँ गाना, छोटा कटोरा ।  
 खोल ( स्त्री० ) ( वि० ) खोखला, मियान, गिलाफ़ ।  
 खोसना ( क्रि० स० ) ठोसना, दूँसना, भरना ।

खोह ( स्त्री० ) गुफा, कंदरा ।  
 खौड़ ( स्त्री० ) तिलक, त्रिपुंड्र ।  
 खौरना ( क्रि० स० ) चंदन जगाना, तिलक जगाना, आग को उलट-पलट कर बुझाना ।  
 खौरहा ( वि० ) जिसके बाल या रोपेँ झड़ गए हों ।  
 खौलना ( क्रि० अ० ) उबालना, उबलना, बहुत गर्म होना ।  
 ख्यात ( स्था=प्रसिद्ध होना ) ( वि० ) नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, विदित, मशहूर, उजागर ।  
 ख्याति ( स्था=प्रसिद्ध होना ) ( स्त्री० ) यश, नाम, कीर्ति, सराह, नामवरी ।  
 ख्याल ( खल ) ( पु० ) तमाशा, कौतुक, नक़्क़, स्वाँग, खेल ।  
 खीष्ट ( पु० ) ईसा ।  
 ख्यादिश ( स्त्री० ) कामना, चाह, इच्छा ।



ग ( गै=गाना ) ( पु० ) गंधर्व, गणेशजी, यात्री, गीत ।  
 गगनभेड़ ( पु० ) गिद्ध, गीध ।  
 गगरा ( पु० ) कलसा, लोहा पीतल आदि का घड़ा ।  
 गगरी } ( सं० गगरी, गर्ग ऐमा शब्द, स=लेना )  
 गगरी } ( स्त्री० ) मटकी, कलशरी, छोटा घड़ा, ठिलिया ।  
 गगनविहारी ( वि० ) चंद्र, सूर्य, नक्षत्र, पक्षी ।  
 गगनस्पर्शी ( वि० ) बहुत ऊँचा, आकाश छू लेने-वाला ।  
 गंग ( सं० गंगा ) ( स्त्री० ) गंगा नदी ।  
 गंगा ( गम्=जाना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, भागी-रथी, जाह्नवी, सुरसरी ।  
 गंगाजमुनी ( सं० गंगा+जमुनी ) ( स्त्री० ) कान का गहना, बाजी, घोड़े अथवा बैलों की धोली और काली मूँह, धोला और काला मिखा हुआ रंग ।  
 ( वि० ) दो वर्ष की धातुओं का सम्मिलन ।  
 गंगाजल ( गंगा=नदी का नाम, जल=पानी ) ( पु० ) गंगा का पानी ।  
 गंगाद्वार ( गंगा=नदी का नाम, द्वार=दरवाजा ) ( पु० )

गंगोत्तरी, हरिद्वार, वह जगह जहाँ से गंगा निकली है ।  
 गंगाधर ( गंगा=नदी का नाम, धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) शिव, महादेव, जिन्होंने पहले गंगा को अपनी जटा में रख लिया था ।  
 गंगापुत्र ( पु० ) भीष्म, ब्राह्मण की एक जाति जो गंगाघाट पर दान लेते हैं, घाटिया ।  
 गंगापूजा ( स्त्री० ) विवाह आदि शुभ कार्यों के बाद जो गंगा का पूजन होता है ।  
 गंगाप्राप्ति ( पु० ) मरण, मृत्यु, गंगास्नान ।  
 गंगासागर ( गंगा, सागर=समुद्र ) ( पु० ) वह जगह जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है ।  
 गंगीभूत ( वि० ) पवित्र, पावन ।  
 गंगोदक ( पु० ) गंगाजल ।  
 गच्छ ( पु० ) पक्षी झूत, मोटा ।  
 गच्छकारी ( स्त्री० ) चूने-सुरखी का काम ।  
 गच्छना ( क्रि० स० ) दूँस-दूँस के भरना, कस-कस के दूँसना ।  
 गच्छपच्च ( बोल० ) भीड़भाड़, बना, गहरा, कशमकश ।



गज ( गज=मस्त होना, शब्द काना ) ( पु० ) हाथी ।  
 गजमीना ( वि० ) रँगना, छोटा-मोटा ।  
 गज ( पु० ) दो हाथ का नाप, ३३ इंच वा ३६ इंच का नाप ।  
 गजकुंभ ( पु० ) हाथी का सिर ।  
 गजगामिनी ( गज=हाथी, गम्=जाना ) ( स्त्री० ) जिस स्त्री को चाल हाथी की-सी हो ।  
 गजगाह ( गज=हाथी, गाह=गहना ) ( पु० ) हाथी व घोड़ों का गहना, झूल ।  
 गजगौनी ( स्त्री० ) हाथी के समान मंद-मंद चलनेवाली ।  
 गजचर्म ( पु० ) रोग-विशेष ; इसमें चमड़ा हाथी के चमड़े के समान मोटा हो जाता है ।  
 गजदंती ( वि० ) हाथीदंती का ।  
 गजदान ( पु० ) हाथी का मदजल, हाथी के मस्तक से निकला जल ।  
 गजधर ( पु० ) मकान बनानेवाला मिस्त्री, राज ।  
 गजनी ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिट्टी ।  
 गजपति ( गज=हाथी, पति=मालिक ) ( पु० ) राजा, हाथी का मालिक अथवा हाथी पर चढ़नेवाला, बड़ा हाथी, कलिंग-देश के राजाओं की पदवी ।  
 गजपाटल ( पु० ) काजल, सुरमा ।  
 गजपाल ( गज=हाथी, पाल=पालनेवाला, पालू=पालना ) ( पु० ) महावत, हाथीवान ।  
 गजपुट ( पु० ) औषध पकाने का एक प्रकार का गढ़ा विशेष जो सवा हाथ लंबा, उतना ही चौड़ा और गहरा भी होता है ।  
 गजमोती ( सं० जगमुक्ता ) ( पु० ) हाथी के सिर का मोती, गजमणि ।  
 गजयूथ ( गज=हाथी, यूथ=टोला, झुंड ) ( पु० ) हाथियों का टोला, हाथियों का झुंड ।  
 गजरा ( सं० गर्जर ) ( पु० ) गजरा का पत्ता, हाथ में पहनने का गहना, फूलों की मोटी माला ।  
 गजराज ( गज=हाथी, राजन्=राजा ) ( पु० ) बड़ा हाथी, गजेंद्र ।  
 गजल ( स्त्री० ) शृंगार-रस की कविता-विशेष जो फारसी और उर्दू में की जाती है ।  
 गजवदन ( गज=हाथी, वदन=पूंछ ) ( पु० ) गणेशजी ।  
 गजबुसा ( पु० ) केला, केले का पेड़, कदली ।

गजा ( पु० ) खुर्मा, खजूर, मिष्ठान-विशेष ।  
 गजाधर ( पु० ) नारायण, विष्णु ।  
 गजानन ( गज=हाथी, आनन=पूंछ ) ( पु० ) गणेशजी ।  
 गजाना ( स्त्री० ) सड़ाना, पचाना ।  
 गजारि ( गज=हाथी, अरि=वैरी ) सिंह, शेर ।  
 गजी ( पु० ) गाढ़ा, मोटा देशी वस्त्र ।  
 गजेंद्र ( गज=हाथी, इन्द्र=राजा ) ( पु० ) हाथियों का राजा, गजराज, इन्द्र का हाथी ।  
 गज्जर ( पु० ) दलदल ।  
 गभा ( पु० ) विजय में पाया हुआ धन, संपत्ति ।  
 गभिन ( वि० ) घना, गाढ़ा, मोटा, सघन ।  
 गंज ( स्त्री० ) चाईचूई, बादखोरा ।  
 गंजा ( गंज ) ( वि० ) जिसके शिर में गंज हो, चँदला ।  
 गंजना ( क्रि० स० ) नाश करना ।  
 गंज ( गज=मस्त होना या शब्द करना ) ( पु० ) ढेर, झुलाना, भंडार, हाट, बाज़ार ।  
 गंजना ( स्त्री० ) यातना, पोड़ा, तकलीफ, जॉकंदनी ।  
 गंजित ( गंज+इत ) ( वि० ) लाञ्छित, कूषित ।  
 गटई ( स्त्री० ) गला, गरदन ।  
 गटकना ( क्रि० स० ) निगलना, खाना ।  
 गटपट ( क्रि० वि० ) उछलपुछल, गड़बड़, ( स्त्री० ) प्रसंग, सहवास, संयोग, मिलावट ।  
 गटागट ( क्रि० वि० ) धड़ाधड़, लगातार ।  
 गटापारचा ( पु० ) एक प्रकार का गोद ।  
 गटी ( स्त्री० ) समूह, राशि, यथ, गाँठ, झुंड ।  
 गट्ट ( पु० ) गले से निकला हुआ निगलने का शब्द ।  
 गट्टा ( पु० ) कलाई, मिठाई-विशेष ।  
 गट्टर ( पु० ) गट्टा, बड़ी गठरी ।  
 गट्टा ( पु० ) बोफा, गट्टर, गठकी, बस्ता, लहसुन या प्याज़ आदि को गाँठ अथवा जब, जरीब का बीसवॉ हिस्सा, गट्टा ।  
 गटक ( गट+अक, गट=निर्माण करना, बनाना ) ( पु० ) बनानेवाला, मुसन्निक ।  
 गटकटा ( वि० ) गिरहकट, चाई, बेईमान ।  
 गठन ( गट+अन ) ( पु० ) निर्माण करना, तल-नीक करना, बनावट, रचना ।  
 गठड़ी } ( सं० ग्रंथि ) ( स्त्री० ) गाँठ, मोट, मोठी ।  
 गठरी }

गठवाना (क्रि० सं०) जोड़ा मिलाना, संयोग कराना, गठाना, टँकवाना ।

गठिन (गठ+इत्) (वि०) निमित्त, बनी हुई ।

गठिया (सं० ग्रंथि) (स्त्री०) गठबो, गाँठ, एक प्रकार का वात रोग, कुलाव ।

गठ्ठीला (गाठ) (वि०) गाँठदार, गाँठवाला, हरमुष्टा, मंडमुसंड ।

गठ्ठना (वि०) कपड़ों की गाँठ, खूँटा ।

गड़ (प०) आड़, रोक, आँट, चारदीवारी, खाई, गढ़ ।

गड़काना (क्रि० सं०) गड़गड़ाना ।

गड़गड़ाना (क्रि० अ०) गर्जना, गुड़गुड़ाना ।

गड़गड़ो (स्त्री०) नगाड़ा, डुमरी ।

गड़गूदड़ (प०) चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा ।

गड़न (प०) दलदल, धमान, गढ़न ।

गड़ना (क्रि० अ०) धँसना, धँस जाना, चूभना, आसक होना ।

गड़प (प०) जल में किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।

गड़पना (क्रि० म०) किसी वस्तु का पचा जाना, निकलना ।

गड़प्पा (प०) घोड़े की जगह, बड़ा गहरा गढ़ा ।

गड़वड़ (क्रि० वि०) गटपट, उछट-पुलट ।

गड़वड़िया (वि०) गड़वड़ करनेवाला, उपद्रवी ।

गड़री (स्त्री०) गेदुर ।

गड़रिया (गादर=मेरा) (प०) भेड़-बकरी को चरानेवाला, रखवाला, चरवाहा, मेपपाल ।

गड़हा } (सं० गतं) (प०) गड़ेला, खड्डा ।

गड़ारी (स्त्री०) धेरा, गंडा, गोल लकीर, आड़ी धारी ।

गड़ारीदार (वि०) धेरदार, धारीदार ।

गड़ो (क्रि० अ०) डूबी, डूब गई, धँसी ।

गड़आ (प०) टोटीदार लोटा, हथहर ।

गड़ोना (क्रि० सं०) चुभाना, छेदना, धँसना, गड़ाना ।

गड़ो (स्त्री०) काराज के दश दस्ते, पुला ।

गढ़ (प०) कोट, दुर्ग, गढ़ा ।

गढ़ना (क्रि० सं०) ठोकना, बनाना, सुधारना ।

गढ़त (वि०) बनापटी, कल्पित ।

गड़वार (सं० गढ़) (वि०) मोटा, गाढ़ा, स्थूल ।

गढ़ाई (स्त्री०) गढ़ने की मजुरी, गढ़ने की बनाई ।

गण (गण=गिनना) (प०) समूह, थोक, झुंड, शिव के दूत, सेना जिसमें २६ रथ ८१ घोड़े और १३२ पैदल हों, गण आठ हैं जिनका काम वर्षारूप छंद में पड़ता है—१ भगण, २ रजगण, ३ लगण, ४ यगण, ५ रगण, ६ तगण, ७ मगण, ८ नगण ; इनके जानने के वास्ते—

दीहा—आदि मध्य अवसान में, भजन होहि गुरु जान ;  
यरन होहि लक्ष्म कर्महि सो, मन गुरु लक्ष्म पव जान ।

गणक (गण=गिनना) (प०) गिननेवाला, गणितज्ञ, ज्योतिषी, नजूमि ।

गणता (स्त्री०) समूहत्व, जमाअत, धूर्त-मंडली ।

गणना (गण=गिनना) (स्त्री०) गिनती, संख्या ।

गणनाथ (गण=शिव के दूत, नाथ=स्वामी) (प०) गणेशजी ।

गणनायक (गण, नायक=मालिक) (प०) गणेशजी ।  
गणपति (गण, पति=मालिक) (प०) गणेशजी, गजानन ।

गणराऊ (सं० गणराज) (प०) गणेशजी ।

गणाधिप (गण+अधिप=मालिक) (प०) गणेशजी, गणराज ।

गणिका (गण=ममूड, अर्थात् जिसके बहुत से पति हों) (स्त्री०) वैश्य, पतुरिया, कंचनी ।

गणित (गण=गिनना) (प०) हिसाब, अंकविद्या ।

गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञा=जानना) (प०) हिसाब जाननेवाला ।

गणेश (गण=महादेव के दूत, ईश=स्वामी) (प०) गजानन, गणपति, महादेव का बेटा (विशेष के लिये भा० च० देखें) ।

गाँठजोरा (सं० ग्रंथिजोड़, ग्रंथि=गाँठ, जुड़=बाँधना) (प०) गाँठ बाँधना ।

गाँठजोड़ा बाँधना (बोल०) व्याह में दुलहा-दुलहिन के आँचल से गाँठ बाँधना ।

गाँठकटा } (सं० ग्रंथि=गाँठ, कट्=काटना) (प०)  
गाँठकटा } जेबकतरा ।

गंडा (सं० गंडक) (प०) धेरा, चार कौड़ी, चार, गँठोला तागा जो बालकों के गले में बाँधा जाता है, तावीज़ ।

गंडासा (प०) फरसा, तबल ।

गंडेरी ( सं० ग्रंथि ) ( स्त्री० ) ऊख का टुकड़ा ।

गंड ( गडि, घुँह का एक भाग होता ) ( पु० ) गाछ, हाथी का गाछ, कपोल, कनपुटी, फोड़ा, चिह्न, गाँठ ।

गंडकी ( गडि=बोचना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम ।

गंडमाला ( स्त्री० ) कंठमाला, गले का रोग विशेष ।

गंडमूर्ख ( वि० ) भारी बेवकूफ, बड़ा मूर्ख ।

गंडशैल ( पु० ) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़ ।

गंडा ( पु० ) संख्या-विशेष, तंत्र-मंत्र किया हुआ सूत, हँसली ।

गरय ( गण=गिनना ) ( वि० ) गिनने योग्य ।

गत ( गम्=जाना ) ( वि० ) गया हुआ, पाया हुआ, प्राप्त, जाना हुआ ।

गत { ( गम्=जाना ) ( स्त्री० ) चाल चलन, दशा, हाल, गति } रीति, राह, रास्ता, ज्ञान, उपाय, क्रिया कर्म, मोक्ष, मुक्ति ।

गतका ( पु० ) लकड़ी खेलने का डंडा ।

गतप्रत्यागता ( स्त्री० ) वह स्त्री जो पति की आज्ञा बिना घर से बाहर चली गई हो और स्वेच्छानुसार कुछ समय तक बाहर रहकर फिर पति के घर चली आई हो ।

गतागत ( गत+आगत ) ( पु० ) जाना-आना, आमदरफ्त ।

गताज्ञ ( गत=गई, अति=अति ) ( वि० ) वह मनुष्य जिसकी आज्ञा की शोशनी जाती रही हो, अंधा ।

गतांक ( वि० ) बीता, गया, संपूर्ण के चिह्न से रहित ।

गतानुगतिक ( गत=गया, अनुगतिक=पीछे चलने वाला ) ( वि० ) एक के पीछे चलनेवाला, अनुयायी, अनुगामी, जिसकी उमर खतम हो गई हो ।

गतायुः ( गत=गई, आयु=उमर ) ( वि० ) वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी हो गई हो ।

गतिपरिपाटी ( स्त्री० ) क्रांती क्रवायद ।

गत्ता ( पु० ) कुट, दफ़ती ।

गथ ( पु० ) पूँजी, माल, धन, कुंड ।

गथवा ( कि० स० ) गृधना, मिलाव ।

गद् ( पु० ) रोग, बीमारी, मर्ज ।

गद्का ( भं० गदा ) ( पु० ) पटा, दंड-विशेष ।

गद्कारी ( वि० ) रोग उत्पन्न करनेवाला पदार्थ ।

गद्गद् ( गद्=स्पष्ट, और गद्=बोलना वा गद्गद् पूरा बोल नहीं निकलना ) ( पु० ) मारे खुशी के पूरा बोल नहीं निकलना, ( वि० ) आनंदित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, बागबाग, खुश ।

गद्गदा ( वि० ) मोटा, स्थूल, तींद्रला ।

गद्ग ( पु० ) विद्रोह, बलवा, उपद्रव, हलचल ।

गद्गाना ( कि० स० ) अधपका होना, आँखें उठने पर होना, आँखों में कीचड़ आना, पुत्रावस्था का विकास होना ।

गदला ( वि० ) मैला, मटमैला, गंदा ।

गदहपच्चीसी ( स्त्री० ) १६ से २५ तक की अवस्था, कच्ची बुद्धि ।

गदहपन ( स्त्री० ) मूर्खता ।

गदहा { ( सं० गर्दभ, गर्द=शब्द करना ) ( पु० ) एक गधा } जानवर का नाम, खर ।

गदहा ( गद=रोग, हन्=नाश करना ) ( पु० ) वैद्य, हकीम, डाक्टर ।

गदा ( गद्=शब्द करना ) ( स्त्री० ) सोंटा, लाठी, घोब ।

गदाई ( वि० ) नीच, चुद्र, तुच्छ ।

गदाधर ( गदा=सोंटा, धर=सबनेवाला, धृ=सना ) ( पु० ) विष्णु का नाम ।

गदित ( गद्=रत, गद्=हना ) ( वि० ) कहा हुआ ।

गदी ( गद+ई ) ( पु० ) विष्णु, रोगी, मरीज ।

गदेल ( पु० ) शिशु, गोद का बच्चा ।

गदेल ( पु० ) मोटा बिछौना, बिछौना जिसमें रुई बहुत भरी हुई हो ।

गद् ( पु० ) अपच के कारण पेट का भारीपन, अजीर्ण ।

गद्दी { ( स्त्री० ) बिछौना, आसन, राजा का सिंहासन, गार्दी } तख्त ।

गद्य ( गद्=बोलना ) ( पु० ) छंदरहित वाक्य, बिना छंद का वाक्य, वास्तिक, नख ।

गनती ( स्त्री० ) गिनती ।

गनना ( सं० गणना, गण=गिनना ) ( कि० स० )

गिनना, शुमार करना, गिनती करना ।

गनी ( वि० ) धनवान, धनी ।

गनीमत ( स्त्री० ) मुद्रत का माल, बड़ी बात, धन्यवाद देने योग्य ।

गंता ( गन् + ता, गम्=जाना ) ( पु० ) गमनकर्ता, जानेवाला ।

गंतु ( पु० ) पथिक, मुसाफिर ।

गंदा ( वि० ) मैला, अशुद्ध ।

गंध ( गंध=गुणना ) ( स्त्री० ) बास, महक, सुगंध, सौरभ ।

गंधक ( गंध ) ( पु० ) एक पीले रंग की धातु ।

गंधमादन ( गंध=महक, मादन=मन करनेवाला, मद=मस्ती करना ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम, वंदरों के एक सरदार का नाम, गंधक ।

गंधराज ( गंध=महक, राज=शोभना ) ( पु० ) चंदन, सुगंधित फूल ।

गंधर्व ( गंध=सुगंध, अर्ध=जाना ) ( पु० ) स्वर्ग का गवैया, घोड़ा, कस्तूरी, मृग ।

गंधर्वविवाह ( पु० ) उत्सवहीन विवाह, जो वर और बधू गुपचुप कर लेते हैं ।

गंधर्ववेद ( पु० ) संगीत-शास्त्र ।

गंधर्वह } ( गंध=सुगंध, वह=ले जाना ) ( पु० ) हवा,  
गंधर्वाह } पवन, वायु, कस्तूरिया हरिण, नाक,  
नासिका ।

गंधसार ( गंध=सुगंध, सार=सकल ) ( पु० ) चंदन, श्रीखंड ।

गंधार ( गंध=सुगंध, आ=जाना ) ( पु० ) एक राग का नाम, कंधार देश ।

गंधारी ( गन्ध=गंधारी, गंधार=कंधार देश ) ( स्त्री० ) कंधार-देश के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की मा ।

गंधी ( पु० ) अत्तार, अंतर बेचनेवाला, घास, कीड़ा ।

गप ( स्त्री० ) हथर-उधर की झूठ-सच बात, बक-बक, झूठ-झूठ ।

गप-मारना ( बोल० ) झूठी-सच्ची बातें करना ।

गपशप ( बोल० ) झूठी-सच्ची बात, गप, दिल-बहलाव की बात ।

गपोड़ेयाज़ी ( स्त्री० ) निरर्थक बकवाद ।

गप्पी ( वि० ) गप हाँकनेवाला ।

गप्पा ( पु० ) बड़ा घास, बड़ा कौर, फायदा, लाभ ।

गफलत ( स्त्री० ) असावधानी ।

गथन ( पु० ) खयानत, दूसरे की धरोहर को हड़प जाना ।

गथरू ( वि० ) जवान, युवा, पट्टा, भोला, सीधा, ( पु० ) पति, स्वामी, भर्ता ।

गथरून ( पु० ) चारखाने का एक मोटा वस्त्र जो लुधियाने में बनता है ।

गभस्ति ( पुं० ) किरन, सूर्य, बाँह, ( स्त्री० ) अग्नि की स्त्री ।

गभीर } ( गम्=जाना ) ( वि० ) गहरा, अथाह,  
गंभीर } अवगाह, धोर, धोमा, सोचो, भारो, गरुहा,  
निगूढ़, अमीक, हलोम ।

गभुआर ( वि० ) गर्भशिशु, नादान, बालकों के जन्म के बाल ।

गम ( पु० ) रंज, दुख ।

गमक ( पु० ) तबले या मृदंग की गंभीर ध्वनि, सूचक ।

गमकीला ( वि० ) गमकदार, महकनेवाला ।

गमखोग ( वि० ) सहनशील ।

गमन ( गम्=जाना ) ( पु० ) चलना, जाना, चलन, यात्रा, संभोग, मैथुन ।

गमनागमन ( गमन + आगमन ) ( पु० ) आनाजाना, आमदरफ्त ।

गमाना ( कि० स० ) खोना, गँवाना ।

गमी ( पु० ) जानेवाला ।

गामी ( पु० ) गम करनेवाला, रंज करनेवाला, मृत्यु, शोक ।

गंभीरवेदी ( पु० ) मत्त हाथी, वह हाथी जो महावत के बस में न हो ।

गग्य ( गम्=जाना ) ( वि० ) जाने योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।

गग्यंद ( सं० गजेंद्र ) ( पु० ) बड़ा हाथी, गजेंद्र ।

गयल ( स्त्री० ) गली, कूचा, रास्ता, मार्ग ।

गया ( गै=पाना वा गय एक राजा का नाम ) ( स्त्री० ) सुबे बिहार में एक नगर है जो हिंदुओं का बड़ा तीर्थस्थान है ।

गयाली } ( सं० गयालय, गया नगर का नाम, आलय=  
गयाताल } घर ) ( पु० ) गया के ब्राह्मण जो यात्रियों को पिंड श्राद्ध आदि कराते हैं ।

गर ( गृ=निगलना वा निकल देना ) ( पु० ) विष, जहर, रोग, गला ।

गरजना ( सं० गर्जन ) ( कि० श्र० ) गूँजना, घड़-

घड़ाना, बादलों अथवा सिंह का शब्द करना ।  
 गरज्ज ( स्त्री० ) मतलब, अभिप्राय, प्रयोजन ।  
 गरजू ( वि० ) गरजी, मतलबी ।  
 गरद् ( स्त्री० ) धूल, गरदा, रज ।  
 गरदन्या ( स्त्री० ) किसी के गले में हाथ देकर बाहर निकालना ।  
 गरघ ( पु० ) अभिमान, घमंड ।  
 गरवीला ( वि० ) घमंडी ।  
 गरल ( गृ=निकालना वा निकाल देना ) ( पु० ) विष, जहर, माहुर, हलाहल ।  
 गरवा ( सं० गौरव ) ( वि० ) भारी, गंभीर, धीर, मुत-हम्मिल, बुर्दबार, बड़ा, प्रतिष्ठित ।  
 गरिमा ( गुरु=बड़ा ) ( स्त्री० ) गुरुता, बड़ाई, गरुआई, बोझ, अहंकार ।  
 गरिष्ठ }  
 गरीय } ( वि० ) भारी, गरुआ ।  
 गरीयान् }  
 गरियाना ( कि० अ० ) गाली देना ।  
 गरी ( स्त्री० ) नारियल का गूदा, खोपरा ।  
 गरीबनेवाज ( वि० ) दयालु ।  
 गरीबामऊ ( वि० ) गरीबों के अनुकूल ।  
 गरुआई }  
 गरुआई } ( सं० गुरुता ) ( स्त्री० ) भार, बोझ ।  
 गरुड ( गरुत्=पंख, डी=उड़ना ) ( पु० ) पक्षियों का राजा, विष्णु का वाहन, एक तरह के पथेरू का नाम ( विशेष के लिये भा० च० देखो ) ।  
 गरुडध्वज ( गरुड=पथेरू का राजा, ध्वजा=पताका, अर्थात् जिसकी ध्वजा में गरुड का चिह्न है ) ( पु० ) विष्णु भगवान् ।  
 गरुत् ( गृ=शब्द काना वा निकालना ) ( पु० ) पंख, पाल, पर ।  
 गरूर ( पु० ) घमंड, अभिमान ।  
 गरोह ( पु० ) समूह, झुंड ।  
 गर्ग ( गृ=बोलना वा जानना वा जतलाना ) ( पु० ) एक मुनि का नाम जो ब्रह्मा का बेटा और वसुदेवजी का कुलगुरु था ।  
 गर्ज } ( गर्ज=गर्जना ) ( पु० ) बादलों का शब्द,  
 गर्जन } सिंह का शब्द, गाजना ।

गर्त ( गृ=निकालना वा निगलना ) ( पु० ) गढ़ा, गड़हा, खड्डा ।  
 गर्दखोर ( वि० ) जो गरदा, मट्टी, धूल आदि पड़ने से खराब न हो ।  
 गर्दभ ( गर्द=शब्द काना ) ( पु० ) गधा ।  
 गर्दिश ( स्त्री० ) चक्र, फेर, घुमाव ।  
 गर्व } ( गर्व वा गर्व=घमंड करना ) ( पु० ) घमंड,  
 गर्व } अहंकार, दर्प, अभिमान, गरूर ।  
 गर्भ ( गृ=शब्द काना ) ( पु० ) गाभ, पेट, कोख, हमल, संधि, कटहर, कंटक ।  
 गर्भगृह ( पु० ) आँगन, घर का मध्य भाग ।  
 गर्भदास ( पु० ) दासी-पुत्र, जन्म से दास ।  
 गर्भवती } ( गर्भ ) ( स्त्री० ) पेट से, गाभिन, दो-  
 गर्भिणी } जीवा, दो जीव से ।  
 गर्भश्राव } ( गर्भ=गाभ, श्राव=गिरना ) ( पु० ) गर्भ  
 गर्भश्राव } का गिरना, गाभ गिरना, गर्भपात ।  
 गर्भाधान ( पु० ) गर्भ धारण करने के लिये ऋतुमती होने के बाद जो संस्कार किया जाता है ।  
 गर्भाशय ( पु० ) उदर के भीतर का भाग जिसमें बच्चा रहता है ।  
 गर्व ( पु० ) घमंड, गरूर ।  
 गर्वित ( गर्व=घमंड करना ) ( वि० ) घमंडा, अहंकारी, अभिमानी, मगरूर ।  
 गर्धिता ( स्त्री० ) वह नायिका जिसको अपने रूप या प्रेम का गर्व हो ।  
 गर्हक ( गर्ह=अक, गर्ह=निंदा करना ) ( पु० ) निंदक, चुगुल ।  
 गर्हण ( गर्ह+अण ) ( पु० ) निंदा, मज़मत ।  
 गर्हित ( गर्ह+इत ) ( वि० ) निंदित, मज़मूम ।  
 गल ( गल=खाना, वा गृ=निकालना ) ( पु० ) गल्ला, गरदन ।  
 गलका ( पु० ) फोड़ा-विशेष ।  
 गलगंड ( पु० ) गंडमाल ।  
 गलगुच्छा ( पु० ) गाछों तक रक्खी हुई मोंछ, गलगुच्छा ।  
 गलत ( वि० ) अशुद्ध, झूठ ।  
 गलतनी ( स्त्री० ) पगहा ।  
 गलतंस ( स्त्री० ) निरसंतान व्यक्ति या उसकी संपत्ति ।

गलना ( पु० ) रेशमी और सूती वस्त्र-विशेष जो धारीदार और चमकीला होता है ।

गलदेना ( बोल० ) फाँसी देना ।

गलना ( सं० गलन, गल्=गिरना ) ( कि० अ० ) पिघलना, नर्म होना, सड़ना, विगड़ना ।

गलवहियाँ ( सं० गलवाह, गल=गला, बाहु=भुजा ) ( री० ) गलवाह, गले में हाथ डालना ।

गलवहियाँ डालना ( बोल० ) किसी के गले में हाथ डालना ।

गलही ( री० ) नाव के आगे का भाग ।

गला ( सं० गल = पु० ) कंठ, गरदन, ग्रीवा, नरेंटी, स्वर, आवाज़, ( वि० ) सड़ा हुआ, पिघला हुआ ।  
गला घोंटना ( बोल० ) नरेंटी दबाना, गला दबाना, दम बंद करना ।

गला पड़ना } ( बोल० ) आवाज़ बैठना, भारी शब्द  
गला धैठना } होना, गला घनघनाना, गला खर्वराना ।  
गला फाँसना ( बोल० ) फाँसी देना, गलदेना, गला दवाना, दम बंद करना ।

गला दवाना ( बोल० ) गला घोंटना, नरेंटी दबाना, फाँसी देना ।

गलाना ( गलना ) ( कि० ग० ) पिघलाना, सड़ाना ।

गलित ( गल=गिरना ) ( वि० ) गला हुआ, पड़ा हुआ, सड़ा हुआ, गिरा हुआ, जो गिर पड़ा हो ।

गलियारा ( पु० ) छोटी गली ।

गली ( री० ) छोटा रास्ता, तंग रास्ता ।

गली-गली ( बोल० ) एक गली से दूसरी गली तक, हर गली ।

गलीचा ( पु० ) कालोन, रौंदार बिल्लीना ।

गलीज़ ( वि० ) मैला-कुथैला ।

गले का हार होना ( बोल० ) किसी से बड़ी लगन के साथ प्यार करना, मन हर लेना, सदा मन में बसना ।

गले पड़ना ( बोल० ) प्रशमद करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना चाहता उससे प्रीति किया चाहना ।

गलेपड़ी यजाए रिज्द ( बोल० ) जो काम आ पड़े उसको करना ही चाहिए, बेमन का किसी काम को करना ।

गलेफ ( पु० ) तकिया की खोल, झिहाफ़ ।

गले लगना ( बोल० ) मिलना, छाती से लगना ।

गल्प ( री० ) क्रिस्ता-कहानी, कल्पित कथा ।

गल्ला ( पु० ) अन्न का ढेर, अनाज, उपज, पैदावार ।

गंघ ( पु० ) मौक़ा, घाल, दौंव, अनार ।

गँवाना ( सं० गम=जाना ) ( कि० सं० ) खोना, उड़ाना, फेंकना, खर्च करना ।

गँवार ( सं० ग्राम्य ) ( वि० ) गाँव में रहनेवाला, अनपढ़, मूर्ख ।

गँची } ( ग्राम्य ) ( वि० ) गाँव का, गँवेला, दिहाती,  
गँवाई } ( पु० ) गाँव, दिहात ।

गगण } गम्=जाना ( पु० ) आकाश, आस्मान ।  
गगन }

गघन ( सं० गघन ) ( पु० ) जाना, चखना, कूच ।

गघना ( पु० ) विवाहिता स्त्री का पहली बार पति के घर जाना ।

गवय ( गो=गाय ) ( पु० ) गाय के जैसा जानवर, वन की गाय, एक घानर का नाम ।

गवर्नमेंट ( री० ) शासक-मंडल, शासन-पद्धति, राजकीय नियम जो पार्लियामेंट और लेजिसलेटिव कौंसिल या सभा में बनते हैं उन्हीं नियमों के अनुसार राजकाज किए जाते हैं ।

गवहि ( सं० गघन ) ( पु० ) मौक़े से जाना, गीं से जाना ।

गवाश् ( गो=गाय वा किरण, अलि=आँख वा छेद ) ( पु० ) भरोखा, मोखा, भँभरी, जाली, गाय की आँख, एक जानवर का नाम ।

गवारा ( वि० ) सल, पसंद, अनुकूल ।

गवासा ( सं० गवास, गो=गाय, अश=खाना ) ( पु० ) गाय को खानेवाला, कसाई ।

गवाह ( पु० ) साक्षी, साखी ।

गवेषण ( री० ) ढूँढ़ना, खान-बीन, पता, अनुसंधान ।

गवैया ( सं० गायक ) ( पु० ) गानेवाला ।

गव्य ( गो=गाय ) ( पु० ) दूध आदि, ( वि० ) गाय का ।

गश ( पु० ) मुच्छा, बेहोश ।

गश्त ( पु० ) भ्रमण, दौरा, फिरना ।

गसीला ( वि० ) गठा हुआ, जकड़ा हुआ ।

गस्तान ( स्त्री० ) कुलटा, व्यभिचारिणी ।

गहक ( स्त्री० ) उन्मत्तता, अमत्त ।

गहगहाना ( सं० गह्=गड़ा होना ) ( कि० अ० )  
आनंदित होना, हिलोरना, लहकना ।

गहण ( सं० ग्रहण ) ( पु० ) ग्रहण, लेना ।

गहन ( गह्=घना होना वा गाह्=मथना ) ( पु० ) वन,  
कुंज, झाड़ी, ( वि० ) गहरा, सघन, विकट ।

गहनना ( सं० ग्रहण, ग्रह्=वेष्टा ) ( कि० स० ) परुषना,  
लेना, ग्रहण करना, ( पु० ) जेवर, भूषण, गिरो,  
गिरवी, बंधक, ( स्त्री० ) सन, पलास ।

गहनी धरना } ( बाल० ) गिरो रखना, गिरवी रखना,  
गहने धरना } बंधक रखना ।

गहरा ( स० गर्भार ) ( वि० ) गंभीर, अथाह ।

गहरू ( स्त्री० ) देरी, देर, विलंब ।

गहलौत ( पु० ) क्षत्रियों की जाति-विशेष ।

गह्वर ( सं० गड्ढा, गाह्=मथना वा पठना ) ( स्त्री० )  
गुफा, गुहा, कंदरा, ( वि० ) सघन, कुंज ।

गहवा ( गह्वा=पकड़ना ) ( पु० ) संडसी, चिमटा ।

गाई ( सं० गाँ ) ( स्त्री० ) गाय, गैया ।

गाऊग्रप्प ( वि० ) जमामार, दूसरे का माल हड़प  
जानेवाला, अधिक व्यय करनेवाला ।

गागर } ( सं० गर्भरी ) ( स्त्री० ) गगरी, मटकी,  
गागरी } कलशी ।

गाँग ( पु० ) भोग्य, कांतिकेय, वर्षाती जल, धनूरा,  
सुवर्ण, सागर, ( वि० ) गंगा से संबंध रखनेवाला ।

गाऊ ( सं० गच्छ, गम्=जाना ) ( पु० ) पेड़, वृक्ष ।

गाऊँ ( स्त्री० ) बधिया, खजूर का मुलायम कौपल,  
बोझा देनेवाले जानवरों के पीठ पर का बोझा  
दोने का बोरा ।

गाज ( पु० ) फेन, भाग, बिजुली, गरजन ।

गाजना ( सं० गर्जन ) ( कि० अ० ) गरजना, बादलों  
का अथवा सिंह का शब्द करना, प्रसन्न होना,  
हर्षित होना ।

गाजर ( सं० गर्जर ) ( स्त्री० ) एक तरह का कंद  
अथवा मूला जिसकी तरकारी होती है और ऐसे भी  
खाते हैं ।

गाजाबाजा ( गाजना-बाजना ) ( बोल० ) कई एक बाजों  
का शब्द, आनंद ।

गाज़ी ( पु० ) विधियों से युद्ध करनेवाला मुसलमान,  
वीर पुरुष, बहादुर, शूर, वीर ।

गाँजा ( सं० गजिका, गह्=मस्त होना ) ( पु० ) एक  
नशे की वीज़ ।

गाटा ( पु० ) छोटा खेत, पयाल दाने के लिये बैलों  
की नधाई ।

गाड़ ( पु० ) गड़ढा, खत्ता, भगाड़, मेड़ ।

गाड़ना ( सं० गर्तन, गृन्तिकातना या निगलना ) ( कि०  
स० ) तोपना, मिटो देना, समाप्त देना, जमाना,  
खड़ा करना, पक्का करना, दढ़ करना, लगाना ।

गाड़र ( स्त्री० ) मेड़ी, मेड़, मेप, सरसों ।

गाड़रू ( गाड़ अर्थात् जितका देवता गरुड़ है ) ( पु० )  
साँप के विष उतारने का मंत्र, विष भाड़ने का मंत्र,  
साँप का विष उतारनेवाला ।

गाड़ा ( सं० गर्त्री ) ( पु० ) छरुड़ा, लहड़ू, शकट,  
( गर्त ) खाई, गड़हा, घात, दौंव ।

गाड़ी ( सं० गर्वा, गर्न्ताना ) ( स्त्री० ) मैंझोली,  
शकटी, रथ, बहल ।

गाड़ीवान ( गर्वीवाह ) ( पु० ) गाड़ीवाला, कोचवान,  
सारथि ।

गाढ़ ( पु० ) घना, गाढ़ा, दढ़, अतिशय, विकट,  
दुर्गम, झंझट, कष्ट ।

गाढ़ा ( सं० गाट, गाह्=मथना ) ( वि० ) मोटा, पोढ़ा,  
मजबूत, दढ़, पक्का, चतुर, होशियार ।

गाढ़ालिंगन ( पु० ) अक्रवार, भेंट, आखिगन ।

गाढ़ ( कि० वि० ) मजबूती से, दढ़ता से, अच्छी  
तरह ।

गाणपत्य ( पु० ) गणेश का उपासक ।

गाणिका ( पु० ) वेश्याओं का समूह ।

गाँठ ( सं० ग्रंथि ) ( स्त्री० ) गिरह, जोड़, बंध, गिरदी,  
कुमड़ी, कुंधी, गठड़ी, मोटड़ी ।

गाँठ उखड़ना ( बोल० ) जोड़ का सरक जाना, जोड़  
का उतरना, जोड़ का मुल्ल जाना, गाँठ या हड्डी या  
नस का बिचलना ।

गाँठ का मोना ( बोल० ) अपना हानि करना, अपना  
नुकसान आप करना ।

गाँठ का पूरा : बोल० ) धनवान्, दौलतमंद, धनवंत,  
धनी, माझदार ।

गाँठ खोलना ( बाँव० ) बहुत खर्च करना, खैली खोलना, पक्षपात का छोड़ना ।

गाँठ गठीला ( बोल० ) गाँठदार ( जैसे लकड़ी ), ठोस, गाढ़ा ।

गाँठना ( सं० ग्रंथन, ग्रंथ=तोड़ना ) ( कि० स० ) बाँधना, अकड़ना, मिलाना, जोड़ना, जुटाना, लगाना, साटना, बश में करना, बश में लाना, अपना करना, लुभाना, मोह लेना ।

गाँठ पड़ना ( बोल० ) किसी के मन में किसी के साथ दुश्मनी या वैर अथवा विरोध का जमना ।

गाँठुर ( पु० ) काँस, एक तरह की घास ।

गाँड़ा ( पु० ) गन्ना, ईख, ऊख ।

गाँडीय ( गाँडि=गाँठ, अर्थात् निषमं गाँठ हो ) ( पु० ) अर्जुन का धनुष, कोई धनुष, चाहे जैसा धनुष ।

गाँडीवी ( पु० ) अर्जुन ।

गात ( सं० गात्र ) ( पु० ) शरीर, देह, अंग, तन, कपड़ा, वसन, वस्त्र ।

गाता ( पु० ) पृठा, पिठोता, गत्ता, जिल्द, गानेवाला, गवैया ।

गाती ( स्त्री० ) चढ़र ओढ़ने का एक तरीका, पट्टू ।

गानु ( पु० ) पृथ्वी, पथिक ।

गात्र ( गा=ज्ञान ) ( पु० ) शरीर, देह, तन, अंग ।

गाथक ( गै=गाना ) ( पु० ) गानेवाला, गवैया, गायक, कथक ।

गाथना { ( सं० ग्रंथन, ग्रंथ=तोड़ना ) ( कि० स० ) गाँधना { गूँधना, बनाना ।

गाथा ( गै=गाना ) ( स्त्री० ) गीत, गाना, कथा, श्लोक, पद्य, छंद ।

गाव् ( स्त्री० ) तलछट, मैल, भ्रम ।

गादना ( कि० ग० ) दड़ करना, टासना, दबाना ।

गादुर ( वि० ) बरपोक, कायर, भीरु, पु० राशि, डेर ।

गाद्दा ( पु० ) मटर आदि का होरहा, कच्चा अन्न ।

गाद्री ( स्त्री० ) गद्दी, सिंहासन, तख्त, पकवान विशेष ।

गादुर ( पु० ) समगादू ।

गाध ( पु० ) अभिजापा, स्पृष्टा, स्थान, नदी का बहाव, फूल ।

गाधि ( गाध्=ठहरना वा चाहना ) ( पु० ) विश्वामित्र-ऋषि का बाप ।

गाधितनय ( गाधि+तनय=बेटा ) ( पु० ) विश्वामित्र ऋषि ।

गाधिसुवन ( सं० गाधिसुनु, गाधि+सुनु=बेटा, सू=पैदा होना ) ( पु० ) विश्वामित्र ऋषि ।

गान ( गै=गाना ) ( पु० ) गीत, नगमा, गाना ।

गाना ( सं० गान ) ( कि० स० ) अज्ञापना, राग उच्चारना, कहना ।

गांधर्व ( गंधर्व ) ( वि० ) गंधर्व का, ( पु० ) गाना, गीत, एक तरह का व्याह जो केवल दुलहा और दुलहिन की मर्जी से हो जाता है ।

गांधार ( गंध=सुगंध, ऋ=ज्ञान ) ( पु० ) एक राग का नाम, कंधार-देश ।

गांधारी ( स्त्री० ) गांधार राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की स्त्री ।

गाफिल ( वि० ) बेखबर, लापरवाह, असावधान ।

गाम ( गर्भ ) ( पु० ) गर्भ, पेट ।

गामा ( गर्भ ) ( पु० ) केल के पेड़ का नया पत्ता, नया कल्ला, नई कॉपल ।

गामिन ( सं० गर्भिणी ) ( स्त्री० ) गर्भवती ( जैसे गाय भैंस आदि ) ।

गाम ( पु० ) गाँव, ग्राम ।

गामी { ( गम्=ज्ञान ) ( पु० ) जानेवाला, चलने-गामुक { वाला, गामिनी, चलनेवाली ।

गाय ( सं० गौ ) ( स्त्री० ) गैया, गाय, धेनु ।

गायक ( गै=गाना ) ( पु० ) गानेवाला, गवैया ।

गायगोठ { ( सं० गो+गाष्ठ गो=गाय, स्था=ठहरना ) गायगोठ { ( स्त्री० ) गोशाला ।

गायत्री ( गायन=गानेवाले को, त्रे=त्रयाना ) ( स्त्री० ) एक प्रकार का मंत्र, देवमाता, सूर्य की दंडना, एक छंद का नाम जिसके हर एक पाद में छः अक्षर होते हैं, ( पु० ) खैर का पेड़ ।

गायन ( गै=गाना ) ( पु० ) गान, गीत ।

गाय्य ( वि० ) जापता, गुप्त, गुप्त ।

गारत ( वि० ) बरबाद, नष्ट, तबाह ।

गार { ( सं० गालि, गल्=गिरना ) ( स्त्री० ) बुरी बात, गारी { बुरा बचन, गाखी ।

गारा ( पु० ) गिजावा, चहल्ला, सानी हुई मिट्टी ।

गारि ( पु० ) तावा, तवा ।



गारुडी ( सं० गारुडिक, गरुड ) ( पु० ) विष उतार-  
नेवाला, विष भाड़नेवाला, मरकतमणि, पत्ता,  
पुराण-विशेष, वस्त्र-विशेष, सेना की व्यूह-रचना ।  
गार्हपत्याग्नि ( स्त्री० ) अग्नि विशेष, अग्निहोत्रवालों  
के लिये इस अग्नि का जीवित रखना आवश्यक है ।  
गाल ( सं० गल, गल=खाना ) ( पु० ) कपोल, आँखों के नीचे  
का भाग, चोचला, कपट, झुल ।

गाल करना } ( बोल० ) चोचला करना, बकवाद  
गाल बजाना } करना, बढ़-बढ़ के बातें करना ।  
गाल फुलाना ( मुहा० ) अभिमान प्रकट करना ।  
गाल मारना ( मुहा० ) डाँग हाँकना, मुँह में कौर  
डाखना ।

गाल में जाना ( मुहा० ) मुँह में पड़ना ।  
गालव ( पु० ) एक ऋषि का नाम ।  
गाला ( पु० ) धुनी हुई रुई का गोला, रुई की फली  
जो कपास के फटने पर निकलती है ।

गाली ( सं० गालि, गल=गिरना ) ( स्त्री० ) गार, गारो,  
बुरी बात, बुरा वचन ।

गालीगलौज ( बोल० ) आपस में गाली देना, झगड़ा,  
लड़ाई, तकरार, गाली-मुत्ता ।

गाली देना ( बोल० ) गाली बकना, बुरा-भला कहना,  
झिड़कना, बुरा कहना, धुंधकारना ।

गालु ( पु० ) टेंड, गाल ।

गावध्रप्पू ( वि० ) स्वार्थी, चापलूस ।

गावदी ( पु० ) भोला, मूर्ख, बेवक्फू, अज्ञानी ।

गावदुम ( पु० ) चढ़ाव, उतार, ढालू ।

गावाघ्री ( सं० गोघृत ) ( पु० ) गाय का घी ।

गाह ( सं० ग्राह ) ( पु० ) मगर, ग्राह ।

गाहक ( सं० ग्राहक, ग्रह=सेना ) ( पु० ) मोल लेनेवाला,  
सौदा खरीदनेवाला, खरीदार, लेनेवाला, चाहनेवाला ।

गाहना ( सं० गाह=मथना ) ( क्रि० तत्० ) ढूँढ़ना, खोजना,  
तलाश करना, कुचलना, मखना, दखना ।

गाहा ( सं० गाथा ) ( स्त्री० ) कथा, कहानी, लेना ।

गाही ( स्त्री० ) पाँच की संख्या, पाँच संख्या परिमित,  
गंडा ।

गिचपिच ( पु० ) भीड़भाड़, कचपच ।

गिटकारी ( स्त्री० ) गिट्टी, गिड़गिड़ी ।

गिटकौरी ( स्त्री० ) पथरी, पथर के टुकड़े, कंकड़ी ।

गिटपिट ( स्त्री० ) निरर्थक शब्द ।

गिट्टी ( स्त्री० ) फिरकी, पथर के छोटे-छोटे टुकड़े ।

गिड़गिड़ाना ( क्रि० अ० ) विधियाना, धिनती करना,  
चिरौरी करना ।

गिणती } ( सं० गणित, गणन=गिनना ) ( स्त्री० )  
गिनती } संख्या, गिनना, हिसाब ।

गिणना } ( सं० गणना ) ( क्रि० तत्० ) गिनती करना,  
गिनना } हिसाब करना, गुमार करना ।

गिज़ ( सं० गृध्र ) ( पु० ) गीध, एक पखेरू का नाम,  
शकुनी ।

गिन्नी ( स्त्री० ) गिनी, चक्का, निष्क, सोने का सिक्का-विशेष ।  
गिर ( पु० ) पहाड़ ।

गिरगिट ( पु० ) एक कीड़ा, छिपकली, टिकटिकी ।

गिरते-पड़ने ( बोल० ) बड़ी कठिनाई से ।

गिरदा ( पु० ) चकर, धेरा, ढाल, ढोल या खँजकी  
का मेडरा, तकिया, काठ की थाली ।

गिरदावर ( वि० ) घूम-घूमकर जाँच करनेवाला ।

गिरना ( क्रि० अ० ) पड़ना, गिर पड़ना ।

गिरफ्तार ( वि० ) कैद किया हुआ ।

गिरवी ( वि० ) बंधक, गिरों, रेहन ।

गिरह ( स्त्री० ) ग्रंथि, गज का सोलहवाँ हिस्सा, कुरती  
का पेच ।

गिरा ( गृ=निगलना वा निकालना ) ( स्त्री० ) वाणी,  
वचन, सरस्वती, शारदा, कविताई ।

गिरानी ( स्त्री० ) मँहगी ।

गिरि ( गृ=निगलना वा निकालना ) ( पु० ) पहाड़,  
पर्वत, संन्यासी, ( वि० ) पूज्य, पूजनीय, प्रतिष्ठित,  
मान्य ।

गिरिकंटक ( पु० ) वज्र, अशनि ।

गिरिका ( स्त्री० ) मुसरी, चुहिया ।

गिरिज ( पु० ) भिलाजीत, मेरु, अभ्रक, जोहा ।

गिरिजा ( गिरि=पहाड़, जन्=पेदा होना ) ( स्त्री० )  
पार्वती, गौरी, उमा, हिमालय की बेटी ।

गिरिधर } ( गिरि=पहाड़, धर वा धारी=उठानेवाला,  
गिरिधारी } धृ=खना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, ( वि० )  
पहाड़ को उठानेवाला ।

गिरिदा ( सं० गिरीद्र ) ( पु० ) बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़,  
हिमालय-पहाड़ ।

- मिरिराज ( गिरि=पहाड़, राज=राजा ) ( पु० ) पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, श्रीकृष्ण का नाम ।
- मिरिचर ( गिरि=पहाड़, चर=चरा ) ( पु० ) बड़ा पहाड़ ।
- मिरिमुता ( गिरि=पहाड़, मुता=रेटी ) ( स्त्री० ) पार्वती, गौरी, गिरजा, उमा ।
- मिरिंद्र ( गिरि=पहाड़, इंद्र=राजा ) ( पु० ) हिमालय, सुमेरु, गिरीश ।
- मिरीश ( गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी ) ( पु० ) महादेव, शिव, हिमालय ।
- मिरी ( वि० ) रेहन, गिरवी, बंधकी ।
- मिलई ( कि० श्र० ) निगल जाय, खोल जाय ।
- मिलट ( स्त्री० ) उपधातु-विशेष ।
- मिलटी ( स्त्री० ) गाँठ, ग्रंथि ।
- मिलन ( मूल=निगलना या खाना ) ( पु० ) निगलना, खाना, भक्षण, छः बोतल का पैमाना, ५ सेर के लगभग एक अँगरेजी नाप ।
- मिलना ( कि० स० ) निगलना, खोलना ।
- मिलहरा ( पु० ) बिलहरा, वस्त्र विशेष, पान की बगली ।
- मिलहरी ( स्त्री० ) एक जानवर का नाम, स्त्री, चीमुर ।
- मिलाफ ( पु० ) छिहाफ, खोल, रजाई ।
- मिलास ( पु० ) पानी पीने का यन्त्र ।
- मिलित ( मिल+स्त ) ( वि० ) खादित, भक्षित, खाई हुई ।
- मिलेफ ( पु० ) गिलाफ, खोल, ग्यान ।
- मिलौरी ( स्त्री० ) पान की बीड़ी ।
- मीजना ( कि० स० ) मलना, मसलना ।
- गीत ( गे=गाना ) ( पु० ) गान, भजन ।
- गीता ( गे=गाना ) ( स्त्री० ) एक पुस्तक का नाम जिसमें श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद है और उसको भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पांडव-गीता आदि और भी गीता हैं पर इन सबमें भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है ।
- मीदड़ ( पु० ) सियार, शृगाल ।
- मीध ( सं० मूध ) ( पु० ) मिद्ध, मूध ।
- मीला ( वि० ) छोटा, भीगा, सीला, तर ।
- गु ( पु० ) बिछा, रखा ।
- गुइयाँ ( स्त्री० ) खी, संगी, साथी, सहेली ।
- गुजरात ( सं० गुर्जर ) ( पु० ) एक देश का नाम, हिंदुस्तान का एक सूबा ।
- गुजराती ( वि० ) गुजरात का ।
- गुंज ( गुंज=गुनरना ) ( पु० ) पुष्पस्तवक, गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा ।
- गुंज } ( गुंज=राब्द करना ) ( स्त्री० ) लाल चुंघची,  
गुंजा } एक बेली का नाम ।
- गुंजन ( पु० ) गूँजना ।
- गुंजना ( कि० श्र० ) गुनगुनाना, भुनभुनाना ।
- गुंजाइश ( पु० ) समाई, सावकाश, स्थान ।
- गुंजान ( वि० ) गहरा, सघन, घना, पासपास ।
- गुटिका ( गु=शब्द करना ) ( स्त्री० ) दवाई की गोली, चाहे जैसी गोली ।
- गुड़ ( गुड़=वर्ण करना ) ( पु० ) मीठा, ऊख के रस की बनी हुई मीठी चीज ।
- गुड़गुड़ी ( स्त्री० ) छोटा हुक्का ।
- गुड़केश ( गुड़ा+श ) ( पु० ) ( गुड़का=निद्रा, ईश=जातनेवाला, निद्रा जातनेवाला ) बेदार, महाराज अर्जुन का नाम ।
- गुड़िया ( स्त्री० ) लड़कियों का खिलौना ।
- गुड़वा } ( सं० गुड़ा+ ) ( पु० ) केरी पाक, गुड़ के रस  
गुड़वा } में पकाया हुआ कच्चा आम ।
- गुड़ी ( स्त्री० ) पतंग, तिलंगो, कनकौवा ।
- गुंडई ( स्त्री० ) बदमाशी ।
- गुंडा ( वि० ) बदमाश, शोहदा ।
- गुण ( सं० गुण=गुलाना या गुनना ) ( पु० ) स्वभाव, विशेषण, हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, रस्सी, डोरी, सख रज नम ये तीन गुण, कृपा, मेहरबानी, भला, भलाई, गुना हुआ, बार ।
- गुणक ( गुण=गुना करना ) ( पु० ) वह श्रंक जिससे गुणा किया जाता है, मज़रूबक्रोह ।
- गुण करना ( बोल० ) भला करना, भलाई करना ।
- गुण का पलटा देना ( बोल० ) भलाई का बदला देना, भलाई के पलटे भलाई करना ।
- गुणग्राहक ( सं० गुणग्राहक ) ( वि० ) गुण जानने-वाला, गुणग्राही, क़दरदान ।
- गुणग्राहक } ( गुण=विद्या, हुनर, ग्राही=लेनेवाला, ग्राह=  
गुणग्राही } लेना ) ( वि० ) गुण को जाननेवाला, गुणग्राहक ।

गुणज्ञ ( गुण, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) गुण को जान-  
नेवाला ।

गुणन { ( गुण=गुणना ) ( पु० ) गुना करना, सम-  
गुणना } कना, अभ्यास करना ।

गुणमानना ( बोल० ) भला मानना, अहसान मानना ।

गुणवान् { ( गुण=हुनर, वत्=वाला ) ( वि० ) गुणी  
गुणवंत } चतुर, प्रवीण, पंडित ।

गुणित ( गुण=गुणना ) ( वि० ) गुणा हुआ ।

गुणी ( गुण ) ( वि० ) गुणवान्, विद्यावान्, निपुण,  
प्रवीण, हुनरमंद ।

गुण्य ( गुण=गुणना ) ( पु० ) जो अंक गुणा जाय,  
मज़रूब ।

गुत्थमगुत्था ( पु० ) जबाई, मुठभेड़, उलझन ।

गुथना ( क्रि० अ० ) पिरोना, गूँथना, टाँका लगाना ।

गुद्गुदा ( वि० ) मौसदार, मुलायम ।

गुद्गुदी-वाज़ार ( पु० ) जहाँ फटे-पुराने वस्त्र और  
चौज़ें बिकती हैं ।

गुदाम ( पु० ) भंडार, गोला ।

गुदी ( स्त्री० ) नाव बनाने या मरम्मत करने का स्थान ।

गुहा ( पु० ) सार भाग, गिरी ।

गुन ( सं० गुण ) ( पु० ) गुण शब्द को देखो ।

गुनगुना ( वि० ) थोड़ा गर्म ।

गुनगुनाना ( क्रि० अ० ) गुनगुन-शब्द करना, नाक से  
बोझना ।

गुनहगार ( वि० ) अपराधी, दोषी ।

गुपचुप ( क्रि० वि० ) चुपचाप, ( स्त्री० ) मिठाई-विशेष ।

गुप्त { ( गुप्त=छिपाना वा बचाना ) ( वि० ) छिपा  
गोपित } हुआ, ढका हुआ, लुका हुआ, बचा हुआ,  
रक्षित ।

गुप्तखर ( पु० ) जासूस, भेदिया ।

गुप्ति ( स्त्री० ) रक्षण, पोशीदगी ।

गुप्ती ( सं० गुप्त ) ( स्त्री० ) छिपी हुई तखवार, छाठी के  
भीतर छोटी तखवार ।

गुफा ( सं० गुहा ) ( स्त्री० ) खोह, कंदरा, गुहा, पहाड़  
के बीच की जगह ।

गुम ( वि० ) छिपा हुआ, गुप्त ।

गुमची ( स्त्री० ) गुंजा, घुँघची ।

गुमड़ी ( स्त्री० ) छोटी कुंसी ।

गुमराह ( वि० ) भूला-भटका ।

गुमसा ( वि० ) सड़ा, गला ।

गुमान ( पु० ) अभिमान, अहंकार ।

गुमाश्ता ( पु० ) मुनीम ।

गुम्मा ( पु० ) बड़ी मोटी ईंट ।

गुंफ ( गुफ=गुहना, पिरोना ) ( पु० ) गूँथना, ग्रंथन,  
बाहुभूषण-विशेष ।

गुंफित ( वि० ) ग्रंथित, गुही हुई ।

गुर ( पु० ) मूल-मंत्र, गुड़ ।

गुरगा ( पु० ) चेन्ना शिप्य, जासूस ।

गुरगावी ( पु० ) मुंडा जूता ।

गुरदा ( पु० ) कलेजे के पास का एक अंग ।

गुरिया ( स्त्री० ) मांला के दाने, मनिया ।

गुरु ( गृ=निकालना, अज्ञान को या गृ=उपदेश करना )  
( पु० ) ( धर्म का ) मंत्र-देनेवाला, मंत्र-उपदेशक, धर्म

सिखानेवाला, आचार्य, उपदेशक, बाप, अथवा  
अपना और कोई बड़ा पुरुष, शिक्षक, पढ़ानेवाला,  
बृहस्पति, देवताओं का गुरु, द्विमात्रिक अक्षर,  
दोधस्वर, अनुस्वार और विसर्गवाला स्वर, संयोगी,  
अक्षरों के पहले का स्वर, ( वि० ) भारी, बड़ा,  
पूज्य, पूजनीय ।

गुरुआई ( स्त्री० ) गुरुवाई, धूर्तता, शठता ।

गुरुजन ( गुरु=बड़े, जन=मनुष्य ) ( पु० ) बड़े लोग,  
बुजुर्ग लोग ।

गुरुतम ( वि० ) अत्यंत गरुआ, बहुत ही भारी ।

गुरुतर ( वि० ) अति गरुआ, बहुत भारी ।

गुरुतला ( पु० ) वह व्यक्ति जो विमाता से संभोग करे ।

गुरुत्व ( गुरु ) ( पु० ) बोझ, भार, बड़ाई, गंभीरता,  
हियम, बुद्धिबारी ।

गुरुमुख होना ( बोल० ) गुरु से मंत्र लेना, किसी का  
चेन्ना होना ।

गुरुवार ( गुरु=बृहस्पति, वार=दिन ) ( पु० ) बृहस्प-  
तिवार, जुमेरात ।

गुर्विली { ( गुरु=भारी, अर्थात् त्रिपके गर्भ हो ) ( स्त्री० )  
गुर्वी } गर्भवती, गर्भिणी, हामिला ।

गुल ( पु० ) पुष्प, फूल, गुलाब का फूल, अंगारा, चिराग  
की बत्ती का जला हुआ आगे का भाग, हल्ला,  
शोर, हुल्लाह ।

गुल करना ( गृह० ) बुझा देना ।  
 गुल खिलना ( गृह० ) नई बात पैदा होना ।  
 गुलगपाड़ा ( पु० ) हुल्लड़, हल्ला, शोर ।  
 गुलगुल ( वि० ) नरम, कोमल ।  
 गुलचनना ( कि० म० ) धीरे से प्रेमपूर्वक गाछ पर मारना ।  
 गुलजुरी ( पु० ) भोग-विलास में समय बिताना, स्वतंत्रतापूर्वक अनुचित रीति ।  
 गुलज़ार ( वि० ) हरा-भरा, चहल-पहल, ( पु० ) उपवन, बाग ।  
 गुलझड़ी ( धी० ) उलझन, झंझट, आवंड़ ।  
 गुलदस्ता ( पु० ) फूलों का गुच्छा, घोड़े की जाति-विशेष ।  
 गुलबदन ( पु० ) धारीदार बहुमूल्य रेशमी वस्त्र ।  
 गुलशन ( पु० ) बाग ।  
 गुलशब्धो ( पु० ) लक्षकों का खेल-विशेष जो अँधेरे में खेला जाता है और जिसमें चपतबाज़ी होती है, पुष्प-वृक्ष-विशेष ।  
 गुलाई ( सं० गोलता ) ( स्त्री० ) गोलाई, गोलापन, सुहीत ।  
 गुलावजामन ( पु० ) एक तरह की मिठाई, एक तरह का फल ।  
 गुल्ल ( स्त्री० ) एक तरह का धनुष ।  
 गुल्ल ( पु० ) पैर की गॉँठ, टखना ।  
 गुल्म ( गृह=रखा करना, लपेटना ) ( पु० ) बायु-गोळा, प्लीहा, फाड़, जल्ला, ६ गज म रथ म अश्व ४५ पदाति सेना की संख्या, विष्णु, आवरण ।  
 गुसार्ई } ( सं० गोरवामी ) ( पु० ) मालिक, स्वामी,  
 गुसार्ई } संन्यासी ।  
 गुह ( गृह=ढकना ) ( पु० ) निपाद, शृंगधरपुर का राजा और श्रीरामचंद्र का मित्र, कात्तिकेय ।  
 गुहना ( सं० गुंजन, गुंफ=गूँथना ) ( कि० स० ) गूँथना, पिरोना ।  
 गुहा ( गृह=ढकना ) ( स्त्री० ) गुफा, खोह, कंदरा ।  
 गुहार ( स्त्री० ) पुकार, शोर, हा-हू, सहाय ।  
 गुहा ( गृह=ढकना, छिपाना ) ( वि० ) छिपाने योग्य, गुप्त, ( पु० ) शरीर के ढके हुए अंग ।

गुह्यक ( गृह=छिपाना ) ( पु० ) कुबेर के दूत, एक प्रकार के देवता ।  
 गूँगा ( वि० ) सुहृद्घा, अनबोझता, मूक, मौन ।  
 गूजर ( सं० गुर्जर=गुजरात ) ( पु० ) एक जाति जिसका धंधा दूध बचने का है और जो गुजरात से फैली है, स्वाक्षा, गोप, अहीर, ( स्त्री० ) गूजरी=अहीरी, गोपी, गूजर की स्त्री ।  
 गूजगी ( स्त्री० ) लुगाहणों के हाथ में पहनने का एक गहना ।  
 गूँजना ( सं० गुंजन, गुंजि=शब्द करना ) ( कि० अ० ) भिनभिनाना, पीछी आवाज़ आना, प्रतिध्वनि होना, गूँज रहना, गर्जना, घुराना ।  
 गूँझा ( पु० ) एक तरह की मिठाई ।  
 गुह ( गृह=छिपाना ) ( वि० ) सूक्ष्म, कठिन, छिपा, गुप्त ।  
 गुदा ( सं० गोर्द ) ( पु० ) सार, भेजा ।  
 गूँथना ( सं० गुंथन, गुंफ=गूँथना ) ( कि० स० ) पिरोना, लड़ियाना, गुहना ।  
 गुमड़ा ( पु० ) सूजन, गिल्लटी, फोड़ा ।  
 गुलर ( पु० ) अंजीर, डूबर, एक फल का नाम ।  
 गुह ( पु० ) मैला, बिछा, गुह ।  
 गुह में देला फेंकना ( गृह० ) बुरे आदमी से छेड़छाड़ करना ।  
 गृध्नु ( वि० ) लोभी, छाजची ।  
 गृध्र ( गृध्र=चाहना ) ( पु० ) ग्रीध, गिद्ध ।  
 गृध्रराज ( गृध्र=ग्रीध, राज=राजा ) ( पु० ) जटायु पक्षी जिसका वर्णन रामायण में है ।  
 गृह ( गृह या गृह=लेना ) ( पु० ) घर, बासा, गेह, मकान, बास करने की जगह, रहने की जगह, डेरा, स्त्री, घरवाली, वंश, परिवार ।  
 गृहस्थ ( गृह=पर, स्था=ठहरना ) ( पु० ) घरवाला, घर-बारी, दूसरा आश्रम, किसान ।  
 गृहस्थाश्रम ( गृहस्थ + आश्रम ) ( पु० ) गृहस्थ का धर्म अथवा काम, दूसरा आश्रम ( आश्रम शब्द को देखो ) ।  
 गृहागत ( गृह + आगत, आ + गप् + त ) ( पु० ) आगतुक, अतिथि, मेहमान, पाहुन, प्राचुण ।  
 गृहिणी ( गृह=घर ) ( स्त्री० ) घरवाली, लुगाई, जोरू, भार्या, स्त्री, पत्नी ।  
 गृही ( गृह ) ( पु० ) घरवाला, गृहस्थ ।

गृहीत (गृह=लेना) (वि०) छिया हुआ, पकड़ा हुआ, स्वीकार किया हुआ, ग्रहण किया हुआ।

गृह्यसूत्र (पु०) स्मृति-शास्त्र।

गोगला (वि०) मूर्ख, भोंदू।

गोगली (वि०) फूहर, भद्दी, बदसूरत।

गोंडा (स० गंड) (पु०) एक जानवर का नाम जिसके पुटों के चाम की ढाल उत्तम बनती है।

गोंडूआ (पु०) तकिया, करवा, टोंटीदार लोटा।

गोंदरा (वि०) भोंदू, अज्ञान।

गोंदा (पु०) विना पंख का पक्षी का बच्चा।

गोंद (स० गंडु, गम् या गा=ज्ञाना) (स्त्री०) लड़कों के खेलने की कपड़े या चमड़े की गोल खोज, कंदुक।

गोंदतड़ी खेलना (बोल०) डंडे से गोंद को मार के खेलना।

गोंदा (स० गेंडक, गम् या गा=ज्ञाना) (पु०) एक फूल का नाम, गेंद।

गोय (गा=गाना) (वि०) गाने योग्य।

गेरुआ (गेरू) (वि०) गेरू से अथवा गेरू जैसा रंगा हुआ।

गेरू (स० गेरिक, गिरि=पहाड़) (स्त्री०) पहाड़ की ढाल मिट्टी।

गेह (ग=गणेशजी, ईह=चाहना अर्थत् घर की नींव डालने के। दन ही सं घर में गणेशजी को स्थापित करते हैं) (पु०) घर, मकान।

गेहुँअन (पु०) मटमैले रंग का जहरीला साँप।

गेहुँआ } (गेहूँ) (पु०) गेहूँ का रंग, एक प्रकार की घास,  
गेहुँवा } (वि०) गेहूँ वरणा, साँवला, गेहूँ के रंग जैसा।

गेहूँ (स० गोधूम, गुप्=टकम) (पु०) गेहूँ, एक प्रकार का अनाज, गंदुम।

गैन (पु०) गैल, मार्ग, पथ।

गैना (पु०) नाटा बैल, आढ़।

गैंती (स्त्री०) कुदाख।

गैथी (वि०) अजनबी, गूढ़, अज्ञान।

गैया (स० गाँ, गम्=ज्ञाना) (स्त्री०) गहया, गाय।

गैर (वि०) दूसरा, पराया, अन्य।

गैरत (स्त्री०) शरम, हया, छजा।

गैरा (पु०) पूजा, मुद्रा, आँटी।

गैल (पु०) रास्ता, मार्ग, पैदा, बाट।

गैहरी (स्त्री०) अर्गला, बेंदा, रोकने का डंडा।

गो (गम्=ज्ञाना) (स्त्री०) गाय, गैया, धेनु, स्वर्ग, किरण, पृथ्वी, धरती, पानी, वायु, बोली, इंद्रिय, (पु०) स्वर्ग, किरण, वज्र, (प्रव्य०) यद्यपि।

गोई (स० गुप्त) (वि०) छिपा हुआ, गुप्त, (क्रि० स०) छिपाया।

गोईठा (पु०) कंडा, गोहरा, उपखा।

गोईडा (पु०) गाँव के आस-पास की जमीन।

गोकर्ण (पु०) पुरुष विशेष, मृग।

गोकुल (गो=गाय, कुल=मूढ़ या घर) (पु०) वज्र, मथुरा के पास एक गाँव जहाँ नंदजी रहते थे और जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बालपन बिताया था, श्रीकृष्ण का जन्मस्थान, गायों का समूह, गायों के रहने की जगह।

गोखुरू (स० गोखुर, गो=गाय, खुर=घुर) (पु०) एक पीढ़े का नाम, एक प्रकार का गहना।

गोचर (गा=इंद्रिय, चर=चलना जिसमें इंद्रियाँ जाती हैं) (पु०) इंद्रियों के विषय जैसे रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श, (वि०) जो इंद्रियों से जाना जाय।

गोंछु (स्त्री०) गलमोछा।

गोट (स० गुटिका) (स्त्री०) चौपड़ या शतरंज की गोटी, संज्ञाक, कोर।

गोटा (पु०) सोना या चाँदी के बुने हुए तार, किनारी, तागतोड़।

गोटी (स० गुटिका) (स्त्री०) शीतला का दाग, चेचक का दाग।

गोंठना (क्रि० स०) किसी वस्तु के किनारे को मोड़ना।

गोड़ (पु०) पाँच, पैर, पिंडली, टाँग।

गोड़ना (क्रि० स०) खोदना, खुरचना।

गोण (स० गोष्ठा, गुण=वदाना) (स्त्री०) धैला, बोरा, अनाज ढालने का यैला।

गोन (स० गोत्र) (पु०) वंश, जात, कुल।

गोतम (पु०) एक ऋषि का नाम, जिसने न्यायशास्त्र बनाया है।

गोतमनारी (स्त्री०) गोतम की स्त्री, अहल्या।

गोताखोर (पु०) दुबकी खगानेवाला, गोतामार।

गोतिया } (गोत) (वि०) जाति, भाई, संबंधी,  
गोती } कुटुंबी।

गोत्र ( गं=पुत्री, त्र=तृतीया ) ( पु० ) गोत, कुल, वंश, जाति, पहाड़ ।

गोत्रज ( गोत्र=गोन, जन=पैदा हुना ) ( पु० ) गोतिया, गोनी, एक गोत का, संबंधी ।

गोतीन ( गो=हृदय, प्रतीत=परे ) ( वि० ) जो हृदियों से नहीं देखा जाय, अगोचर ।

गोदू } ( सं० कोड ) ( स्त्री० ) अँकवार ।  
गोदूी }

गोदू पम्पारना ( बोल० ) मर्गना, जाँचना ।

गोदू लेना ( बोल० ) ले पालना, बेटा का लेना, पोस-पूत करना ।

गोदूान ( गो=केश, गं, दान=देना ) ( पु० ) मुँडन, केशानरूप, संस्कार भेद, अथास्य गोदानविधेरनन्तरमितरवुः, गी पुण्य करना. गाय का दान करना ।

गोदूावरी ( गो=स्वर्ग, दा=देना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम जो दक्षिण में है ।

गोधन ( गो+धन ) ( पु० ) गोरूप धन ।

गोध्रा ( स्त्री० ) जल-जंतु विशेष, चमड़े की पट्टी जो धनु-धारी कछाई पर बाँधते हैं ।

गोधूम ( पु० ) गेहूँ ।

गोधूलि ( गो=गाय, धूलि=रज, अर्थात् जिस समय जंगल से शहर में आन में गायों के पैर से रज उड़ती है ) ( स्त्री० ) संध्या, सायंकाल सूर्य के अस्त होने का समय ।

गोन ( स्त्री० ) नाव खींचने की रस्सी, घास-विशेष ।

गोना } ( सं० गोपन ) ( क्रि० सं० ) छिपाना ।  
गोयना }

गोनिया ( पु० ) अपनी पीठ या बैलों पर बोरा लादकर होनेवाला, नाव का गोन खींचनेवाला ।

गोप ( गो=गाय, पा=पालना ) ( पु० ) ग्वाला, अहीर, घोसी, गले में पहनने का एक गहना ।

गोपन ( गप्=छिपना, धत्ता=ना ) ( पु० ) छिपाव, लुकाव, दुराव, बचाव ।

गोपनीय ( गुप्=छिपना ) ( वि० ) छिपने योग्य, गुप्त ।

गोपाल } ( गो=गाय, पाल=पालना ) ( पु० ) गोप,  
गोपालक } ग्वाला, अहीर, गायों को पालनेवाला ।

गोपी ( गोप + स्त्री० ) ग्वालिन, अहीरी ।

गोपीनाथ ( गोपी=गालिन, नाथ=स्वामी ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, गोपियों के पति ।

गोपुर ( पु० ) क़िले का फाटक, नगर-द्वार ।

गोमा ( गुप्+मा ) ( पु० ) रश्क, विष्णु, गंगा, मुहाक़िज़ ।

गोप्य ( गुप्+य, गुप्=छिपाना ) ( वि० ) गुप्त, छिपाने योग्य ।

गोक ( पु० ) दासी-पुत्र, गोपियों का समूह, गुप्त ।

गोफा ( पु० ) गाभा, कोपल ।

गोवरगणेश ( वि० ) मोटा, स्थूल, मूर्ख ।

गोभी ( स्त्री० ) एक तरकारी और पौदे का नाम ।

गोमती ( गो=गाय वा पानी, मती=मार्ग ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम ।

गोमय ( गो=गाय ) ( पु० ) गोबर ।

गोमायु ( गो=वृषी वृणी, मा=फेंकना या शब्द करना ) ( पु० ) मियार, गीदड़, शुगल ।

गोमुखी ( गो=गाय, मुख=मुँह, जिसका मुँह गाय का-सा है ) ( स्त्री० ) बनान की बनी हुई थैली जिसमें हिंदू लोग माला डालकर जप करते हैं, हिमालय पहाड़ में एक गुफा जहाँ से गंगा निकली है, गंगोत्तरी ।

गोमेश ( गो=गाय, मेश=यज्ञ ) ( पु० ) गाय की बलि, गोवध यज्ञ ।

गोरखा ( पु० ) नेपाल के गोरखा देश के निवासी ।

गोरम ( गो+रम ) ( पु० ) दूध दही मट्ठा आदि ।

गोरा ( सं० गौर ) ( वि० ) उजला, श्वेत, गौर ।

गोरी ( स्त्री० ) रूपवती स्त्री, सुंदर स्त्री ।

गोरू ( सं० गौ ) ( पु० ) बैल, बड़ड़ा, गौ, मवेशी, चौपाया ।

गोलक ( गुड+प्रक ) ( पु० ) विधवा से जार पुत्र, कंदुक, गोखोह, गुड़, कलश, घड़ा जिसमें महसूल के रुपए-पैसे डाले जाते हैं, नेत्रस्थान ।

गोलंदाज़ ( पु० ) तोप चलावेवाला ।

गोलंदर ( पु० ) गुंबज, फुलवाड़ी के बीच का गोल चबूतरा ।

गोलमाल ( पु० ) अव्यवस्था, गड़बड़ ।

गोला ( सं० गोल, गुड=वचाना ) ( पु० ) घेरा, मंडल, वृत्त, तोप का गोड़ा, लोहे का गोल-गोल पिंडा, नारियल का गूदा, अनाज रखने का कोठा, खप्ता, अनाज की मंडी ।

गोलाकार (गोल+आकार) (पु०) गोलरूप ।

गोली (सं० गोल) (स्त्री०) छोटा गोला ।

गोलीमारना (बोल०) गोली चलायाना, बंदूक चलाना, बंदूक छोड़ना, मारना ।

गोलोक (पु०) वैकुण्ठ ।

गोवध (पु०) गोहत्या ।

गोवर्द्धन (गो=गाय, वर्द्धन=बढ़ानेवाला) (पु०) वृंदावन में एक पहाड़ है जिसको जब इंद्र ने कोप करके मूसलाधार मेघ बरसाया था तब श्रीकृष्ण ने सब व्रजवासियों को बचाने के लिये अपनी छगुनी उँगुली पर उठाया था ।

गोविंद (गो=वेद की भाषा, विद्=पाना अर्थात् जो वेद से जाने जाते हैं अथवा गा=गाय, विद्=पाना अथवा गो=स्वर्ग, विद्=पाना अर्थात् जिसकी भक्ति करने से स्वर्ग पाते हैं) (पु०) श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु भगवान्, वेदलभ्य ।

गोशवारा (पु०) आष-व्यय का लेखा, कुंडल, कलेंगी ।

गोशाला (गो=गाय, शाल=जगह) (स्त्री०) गाय बाँधने की जगह, खडक, गाय का घर, गाय का बाड़ा ।

गोष्ठ (गो=गाय, स्था=ठहरना) (पु०) गोशाला, गाय का बाड़ा ।

गोष्ठी (गो=बोली, स्था=ठहरना अर्थात् जहाँ बहुत बातचात होती है) (स्त्री०) सभा ।

गोसैयाँ } (सं० गोस्वामी) (पु०) ईश्वर, परमेश्वर ।  
गुसैयाँ }

गोस्वामी (गो=स्वर्ग वा इंद्रिय वा गाय, स्वामी=मालिक) (पु०) ईश्वर, गुरु, महंत, गुसाईं ।

गोह (सं० गोधा, गृह=ठकना) (पु०) बिसखपरा, टिक-टिकी ।

गोहन (पु०) संगी, साथी, संग, साथ ।

गोहराना (कि० सं०) बुझाना, गुहराना, पुकारना ।

गोहरौर (पु०) पथे हुए कंठे का ढेर ।

गोहार (पु०) दुखलड़, रोजा ।

गोहूँ (सं० गोधूम) (पु०) गोहूँ ।

गौं (पु०) अबसर, सुभीता, अवकाश, दाँव, घात ।

गौख (पु०) जंगला, झरोखा ।

गौखा (पु०) झरोखा, जंगला ।

गौखी (स्त्री०) जूता, पनही ।

गौगा (पु०) अक्रवाह, गुल्लगपाड़ा ।

गौड़ (पु०) मध्य बंगाला, एक पुराने शहर का नाम जो पहले बंगाले की राजधानी था, ब्राह्मणों की एक जाति, कायरथों की जाति-विशेष ।

गौड़ी (गुड़) (स्त्री०) गुड़ की बनी हुई मदिरा, रागिनी-विशेष ।

गौण (वि०) अमुख्य, जो ठीक नहीं ।

गौन (सं० गमन) (पु०) जाना, गवन, गमन, कृष, बढ़ाई ।

गौना (सं० गमन) (पु०) व्याह के कुछ महीने अथवा बरस के पीछे तुलहिन को अपने घर लाना, रखसती ।

गौर (गु अथवा गुरू=ज्ञान अर्थात् जिसमें मन जाता है) (वि०) गोरा, श्वेत, उजला ।

गौर (पु०) सोच, विचार, ध्यान, चिंतन ।

गौरध (गुरु=बड़ा) बढ़ाई, गुरुता, मान ।

गौरा (स्त्री०) हस्ती, पार्वती, दुर्गा ।

गौरांग (वि०) पीतवर्ण, श्वेतवर्ण, श्रीकृष्ण, चैतन्य ।

गौरिया (स्त्री०) चिद्विया, मिट्टी का ढुङ्गा ।

गौरी (गौर) (स्त्री०) पार्वती, गिरिजा, आठ बरस तक की कन्या, एक रागिणी का नाम, गोरे रंग की, तुलसी, गोरोचन ।

गौरीश (गौरी=पार्वती, ईश=पति) (पु०) महादेव, शिव ।

ग्यारह (सं० एकदश) (वि०) इगारह, एकदश, ११ ।

ग्रंथ (ग्रंथ=जोड़ना, इकट्ठा करना) (पु०) पुस्तक, शास्त्र, गुरु नानक को बनाई हुई सिक्खों की धर्मपुस्तक ।

ग्रंथकर्त्ता } (ग्रंथ=शास्त्र, कर्ता वा कार=बनानेवाला, कृ=ग्रंथकार) (पु०) शास्त्र बनानेवाला, पुस्तक बनानेवाला ।

ग्रंथि (ग्रंथ=जोड़ना, बाँधना) (स्त्री०) गाँठ, संधि, जोड़ ।

ग्रंथित (ग्रंथ=बाँधना) (वि०) गूँथा हुआ, बाँधा हुआ, विरोधा हुआ, मुंसखिक ।

ग्रंथिवंधन (पु०) गँठबंधन ।

ग्रसना (कि० सं०) सनाना, बुरी तरह पकड़ना ।

ग्रस्त (ग्रस=सनाना) (वि०) खाया हुआ, खिया हुआ, पकड़ा हुआ ।

ग्रह ( ग्रह=लेना ) ( पु० ) सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, वृह-  
स्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु ये नवग्रह,  
नौग्रह, ग्रहदशा=शनैश्चरी, बुरे दिन, ग्रहपीड़ा ।

ग्रहण ( ग्रह=लेना ) ( पु० ) लेना, पकड़ना, गहन, सूर्य  
और चाँद को राहु के ग्रसने का समय, सूर्य और  
चाँद के बीच में धरती के आने से जब धरती की  
छाया चाँद में पड़ती है तब चंद्रग्रहण होता है  
और जब धरती और सूर्य के बीच में चाँद आ जाता  
है तब उसको सूर्यग्रहण कहते हैं ।

ग्रहदशा ( स्त्री० ) अभाग्य ।

ग्रांडील ( वि० ) ऊँचे ऊँचे का ।

ग्राम ( ग्रम=खाना, ग्रामान् जहाँ माने-पीने के लिये कुछ मिले )  
( पु० ) गाँव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, समूह, बहुतायत ।

ग्रामणी ( पु० ) गाँव का मालिक, मुखिया, प्रधान,  
नापिन, ( स्त्री० ) वेश्या ।

ग्रामयाचक ( पु० ) पुरोहित ।

ग्रामसिंह ( पु० ) कुत्ता ।

ग्रामीण ( वि० ) गँवार, देहानी ।

ग्राम्य ( ग्राम=गाँव ) ( वि० ) गाँव का वासी, गँवार,  
असभ्य, मूर्ख, ग्राम्य भाषा, गँवार बोलचाल, गाँव  
की बोली ।

ग्रास ( ग्रस=खाना ) ( पु० ) कवल, कौर, कवर, लुकमा,  
ग्रहण लगना ।

ग्राह ( ग्रह=लेना ) ( पु० ) हाँगर, मगरमच्छ, घड़ियाल,  
कुम्हरी ।

ग्राहक ( ग्रह=लेना ) ( पु० ) लेनेवाला, मोल लेने-  
वाला, ग्राहक, खरीदार, चाहनेवाला, बाज पक्षी ।

ग्राही ( पु० ) लेनेवाला, खरीदार, मलरोधक, कैथ ।

ग्राह्य ( ग्रह=लेना ) ( वि० ) लेने योग्य, ग्रहण करने  
योग्य, मनोनीत ।

ग्रीवा ( गृ=निगलना ) ( स्त्री० ) गरदन, गला, कंठ ।

ग्रीष्म ( ग्रप्=खाना वा पकड़ना ) ( स्त्री० ) गर्मी की ऋतु  
( ऋतु-शब्द को देखो ) ।

ग्लानि ( ग्ल=मलिन होना या हर्ष का नाश करना ) ( स्त्री० )  
घिन, नफरत, घृणा, थकावट, माँदगी ।

ग्लो ( पु० ) प्रकाश, कपूर, चंद्रमा, हर्ष, आनंद ।

ग्वाल { ( सं० गापाल ) ( पु० ) अहीर, गोप ।  
ग्वाला }

ग्वालिन ( ग्वाल ) ( स्त्री० ) गोपी, अहीरी ।

ग्वेंड { ( कि० वि० ) पास, समीप, निकट ।  
ग्वेंडू }

ग्वेंडा ( पु० ) नगर का आसपास ।

ग्वेंयाँ ( स्त्री० ) सखी, सहचरी ।



घ ( पु० ) घंटा, घघर-शब्द, मेघ, घाम ।

घन्नाघञ्च ( पु० ) ठसाठस, नरम चीज में चुभने का  
शब्द ।

घट ( घट=बनाना ) ( पु० ) घड़ा, देह, कूट, कपट, कुंभ-  
राशि, मन, जी, अंतःकरण ।

घटक ( घट+अक ) ( पु० ) मध्यस्थ, दलाल, बिचवैया,  
फ़लोपसि, कार्यकर्ता, योजक, मित्रानेवाला ।

घटनी ( घटना ) ( स्त्री० ) कमती, घटी, टोटा ।

घटना ( कि० प्र० ) कम होना, कमती, न्यून होना,  
( स्त्री० ) योजना, हादसा, वाकिया, संयोग ।

घटाटोप ( घटा=समूह, आटाप=ढकना ) ( पु० ) पाखंडी  
अथवा शर के ढकने का कपड़ा, बहुत बादल ।

घटाना ( कि० प्र० ) कम करना, थोड़ा कर देना ।

घटाव { ( घट=इकट्ठा होना ) ( स्त्री० ) बादलों का समूह,  
घटानि } बादलों का उमड़ना, बादल, समूह, आँधबर ।

घटाव ( पु० ) कमती, न्यूनता, उतार, घटाने का  
चिह्न, ऋण ।

घटिया ( वि० ) थोड़े मोल का, सस्ता ।

घटिहा ( वि० ) धूर्त, लंपट, अविचारो, धोखेबाज़ ।

घटी ( स्त्री० ) घाटा, हानि, मुकसान ।

घटी { ( घट=बनाना ) ( स्त्री० ) घड़ी, साठ पल,  
घटिका } मुहूर्त, छोटा घड़ा ।

घट्ट ( घट्ट=बनाना ) ( पु० ) घाट, रस्ता ।

घड़घड़ाना ( कि० प्र० ) गर्जना, कड़कड़ाना ।

घड़ना ( कि० प्र० ) गड़ना, बनाना, गड़ना बनाना वा  
और कोई धातु को गड़ना ।



घड़ा ( सं० घट ) ( पु० ) मिट्टी का बरतन, गगरा, कलश, कुंभ ।

घड़ियाल ( सं० घटिका या घटी ) ( स्त्री० ) घंटा, मगर-मच्छ, कुंभीर ।

घड़ी ( सं० घटी ) ( स्त्री० ) साठ पल का समय, चौबीस मिनट, समय जानने की कल ।

घड़ी में तोला घड़ी में माशा ( बोल० ) यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन बड़ी-घड़ी में बदलता हो ।

घंटा ( हन्=मागना ) ( पु० ) घड़ी, घड़ियाल ।

घंटाली ( घंटा ) ( स्त्री० ) छोटी घंटो जो बैलों के गले में डालते हैं, घंटो ।

घतिया ( वि० ) हत्यारा, घातक, धोखेबाज़ ।

घन ( हन्=मारना ) ( पु० ) बादल, घंटा, बादलों का समूह, हथोड़ा, निहाई, हिसाब में एक ही अंक को उसी से तीन बार गुणने को घन कहते हैं जैसे ३ का घन २७; रेखागणित में ऐसी चीज़ जिसमें लंबाई, चौड़ाई और मुट्ठाई ये तीनों पाई जायें ; ( वि० ) ठोस, दृढ़, निविड़, गहरा, घना ।

घनघोर ( घन=बादल, घोर=डरावना ) ( पु० ) गहरा बादल, घटा, घनगर्ज, डरावना शब्द ।

घनचक्र ( वि० ) मूर्ख, बेवकूफ, आवारा, ( पु० ) आतशबाज़ी, चरखी, भ्रंशट ।

घनता ( स्त्री० ) ठोसपन ।

घननाद ( घन=बादल, नाद=शब्द ) ( पु० ) रावण का बेटा, मेघनाद, इंद्रजित् ।

घनमूल ( घन+मूल ) ( पु० ) घन का मूल, जिस संख्या का घन किया गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।

घनरस ( पु० ) सघन, गोंद, अवलेह, द्रव, गुर्च, कपूर, जल, सिंदूरस ।

घनश्याम ( घन=बादल, श्याम=काला ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, काली घटा, ( वि० ) बादल-जैसा काला ।

घनसार ( पु० ) कपूर, पारा, जल ।

घना ( सं० घन ) ( वि० ) गहरा, सघन, बहुत, ढेर ।

घनेरा } ( सं० घन ) ( वि० ) बहुत, घनेरी, अधिक,  
घनेरी } गुंजाण, बहुत घनी ।

घपचिआना ( कि० अ० ) घबराना, चकर में आना ।

घपला ( पु० ) गोलमाक, गड़बड़ ।

घपुआ ( वि० ) मूर्ख, भकुआ ।

घप्पू ( वि० ) मूर्ख, जड़ ।

घबराना ( कि० अ० ) व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

घबराहट ( घबराना ) ( स्त्री० ) हड़बड़ी, भ्रंशट, धक्का, व्याकुलता, बेकली, उलझाव, हलचल ।

घवरि ( पु० ) गुच्छा ।

घमंड ( पु० ) अहंकार, गर्व, अभिमान, दर्प, गरूर ।

घमंडी ( वि० ) अभिमानी, गर्वाला ।

घमसान ( सं० धोमशान ) ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, संग्राम, लड़ी लड़ाई ।

घमोई ( स्त्री० ) नरसल, नरकट, बेत, सरकंडा, नल ।

घर ( सं० गृह ) ( पु० ) मकान, रहने की जगह, वास, वासा, डेरा, झाना, खन ।

घर करना ( पृ० ) बसना, रहना ।

आँख में घर करना ( पृ० ) प्रिय होना, प्रेम-पात्र होना ।

घर का ( पृ० ) अपना, निज का ।

घर का उजाला ( पृ० ) कुल की कीर्ति बढ़ानेवाला, बहुत प्यारा ।

घर का नाम डुवोना ( पृ० ) कुल को कलंकित करना ।

घर का भेदिया ( पृ० ) घर का सब हाल जानने-वाला ।

घर की खेती ( पृ० ) अपनी ही वस्तु ।

घर घालना ( बोल० ) उजाड़ना, नाश करना, घर नाश करना ।

घर चलाना ( बोल० ) घर का खर्च चलाना, घर का काम चलाना ।

घर जाना ( बोल० ) घर का नाश होना, उजाड़ना, बिगड़ना ।

घर डुवोना ( बोल० ) किसी का घर बिगाड़ना, किसी के घराने का नाश करना ।

घर डूबना ( बोल० ) नाश होना, घर का नाश होना, उजाड़ना ।

घर घेंट जाना } ( बोल० ) सर्वस्व नाश होना, सब  
घर घेंटना } नाश हो जाना, घर डूबना, घर जाना ।

घर होना ( बोल० ) स्त्री और पुरुष को आपस में प्रीति होना या मन मिलना ।

घरणी } ( सं० गृहिणी ) ( स्त्री० ) घरवाली, लुगाई,  
घरनी } भाथी, पत्नी, स्त्री ।

घरनई (सं० घटनाका, घट=घड़ा, नाँका=नाव) (स्त्री०)

घड़ा से बनाई हुई नाव, चौघड़ा, बेड़ा।

घरवस्ती (स्त्री०) सुरेतिन।

घरवार (पु०) घराना, कुनबा, कुटुंब।

घरवारी (वि०) गृहस्थ, कुटुंबी।

घराना (पु०) कुटुंब, मंडल, वृंद, वंश-मर्यादा।

घरियाना (क्रि० सं०) घड़ी लगाना, वस्त्रों की तह लगाना।

घरी (स्त्री०) तह, घड़, चुनत, घड़ी।

घरू (वि०) घर का, गृह-संबंधी।

घरैला (घर) (वि०) घर का, पाकतू।

घरौंदा (पु०) छोटा घर, बालकों का खेल।

घर्म (घृ=सँचिना) (पु०) गरमी, घाम, धूप।

घर्षक (घृ+न+क) (पु०) घिसनेवाला, घिसेया।

घर्षण (घृ+ण) (पु०) घिसना, रगड़ना।

घर्षित (घृ+ण+इत) (पु०) घिसा हुआ।

घलुआ (पु०) घाला।

घसना { (सं० घर्षण) (क्रि० सं०) रगड़ना,  
घिसना } मलना।

घसियारा (सं० घामहारक) (पु०) घास काटनेवाला।

घसीटना (सं० धृ+गडना) (क्रि० सं०) खींचना,  
खींच ले जाना।

घाऊघप (वि०) चुप्पा, चालबाज़, दूसरे का माल  
हड़पकर न डकारनेवाला।

घाघ (वि०) बूढ़ा, जिसने बहुत देखा-सुना हो, खुराँट।

घाघरा (सं० घर्ष, घृ=मीनना) (स्त्री०) सरयू-नदी  
का नाम, (पु०) लहंगा।

घाट (सं० घट्ट) (पु०) नदी या तालाब आदि में  
नहाने की अथवा उतरने की जगह।

घाट (पु०) ढोख, रूप, स्वर, धोखा, छल, कपट,  
बुराई, घटी, कमी, (वि०) कम।

घाटा (पु०) पहाड़ का चढ़ाव, पहाड़ में रास्ता, घटी,  
कमी, नुकसान।

घाटिया (घाट) (पु०) घाट पर रहनेवाला ब्राह्मण,  
गंगापुत्र।

घाटी (सं० घट्ट) (स्त्री०) पहाड़ में गली, पहाड़ में  
तंग रास्ता, दूरो।

घाड़ (पु०) गला, घाँटी।

घाँटी (स्त्री०) टेंडुआ, नरेंटी।

घात (हृ=मारना) (पु०) मारना, चोट, प्रहार,  
हत्या, दाँव, मौक़ा, (स्त्री०) दाँव, विचार, इरादा,  
दाँव की जगह, पेच।

घातक { (हृ=मारना) (पु०) मारनेवाला, हत्यारा।  
घातुक }

घात करना (बाल०) घात लगाना, घात में रहना,  
छिपके बैठना, धोखा देना।

घात ताकना (बोल०) गों ताकना, अवसर देखना,  
दाँव पाना, मौक़ा ढूँढ़ना।

घाती (हृ=मारना) (पु०) मारनेवाला, (स्त्री०)  
घातिनी=नाश करनेवाली, मारनेवाली।

घान (पु०) जितनी वस्तु एक बार कोल्हू या कड़ाही में  
ढाळी जाय उस सबको एक घान कहते हैं, इकबारगी।

घानी (स्त्री०) कोल्हू, तिल से तेल निकालने की कल,  
ऊख से रस निकालने की कल।

घाम (सं० घर्म) (स्त्री०) धूप, गरमी।

घामड़ (वि०) भोला, सीधा, उल्लू, बोदा।

घायल (घाव=बोट, सं० ला=लेना) (वि०) जिसके घाव  
लगा हो, ज़ख्मी।

घार (स्त्री०) पानी के धार से कटकर बना हुआ गढ़ा।

घालक (पु०) नाश करनेवाला।—“हम कुलघालक  
सत्य तुम कुलपाक्षक दशशीम” गो०तु०दा०

घालना (क्रि० सं०) (पु०) उजाड़ना, नाश करना,  
ढाळना, घुसेड़ना।

घालमेल (पु०) हेजमेल, घनिष्टता, मिलावट।

घाला (क्रि० सं०) नाश किया।

घाव (पु०) चोट, घण, ज़ख्म।

घास (घाम=खाना) (पु०) तृण, फूस, चारा, गोरू-  
गाय आदि का खाना।

धिष्णी (स्त्री०) हिचकी।

धिघ्रियाना (क्रि० प्र०) डर से या झुशी से बोल न  
निकलना, खड़बड़ाना, खल्लासो करना, गिड़-  
गिड़ाना, बहुत गरीबी से प्रार्थना करना, बिनती  
करना, अवरुद्ध कंठ से बोलना।

धिष्णी बँध जाना (बोल०) मारे खाज के, क्लेश के या  
डर के मुँह से बोल न निकलना, कंठ अवरुद्ध हो जाने  
के कारण शब्द न निकलना।

घिण } ( सं० घृणा ) ( स्त्री० ) नक्ररत, रज्जानि, अवज्ञा,  
घिन } विज्ञा ।

घिनाना ( कि० अ० ) घृणा करना, अरुचि होना, वि-  
रक्ति हो जाना ।

घिया ( स्त्री० ) घियातुरह, एक तरकारी का नाम ।

घिरना ( कि० अ० ) घिर जाना, बंद हो जाना, घेर  
में आ जाना, बादलों का उमड़ना ।

घिरनी ( सं० घूर्ण=धूमना ) ( स्त्री० ) चरखी, छोटो  
पहिया, बल-विद्या में एक कल का नाम, रस्ती  
बटनेकी कल, लोटन कबूतर, एक तरह का कबूतर ।

घिरनी खाना ( बोल० ) लोटन खाना, गोलाकार  
जाना, गोलाकार धूमना, चकर खाना ।

घिसपिस ( स्त्री० ) मंज-जोख, ढीलढाख, ढाँवाँडोल  
होना ।

घी ( सं० घृत ) ( पु० ) घृत, घी ।

घी में पाँचों उँगलियाँ होना ( मुहा० ) हर प्रकार से  
लाभ होना ।

घुटना ( पु० ) टिहुँना, गोड़, जानू ।

घुटनों चलना ( बोल० ) टिहुनों के बल चलना ( जैसे  
बालक ), खिसकना, घिसटना ।

घुड़ ( घोड़ा ) ( पु० ) घोड़ा ।

घुड़की ( स्त्री० ) धमकी, डाँट-डपट ।

घुड़चढ़ा ( पु० ) घोड़े पर चढ़नेवाला, सवार ।

घुड़दौड़ ( स्त्री० ) घोड़ों की दौड़, वह जगह जहाँ  
शर्त बंद के घोड़े दौड़ाए जाते हैं ।

घुड़वहल ( पु० ) चार पहियों का रथ जिसमें घोड़े  
जुतते हैं ।

घुड़मुँहा ( वि० ) जिसका मुँह घोड़े का-सा हो ।

घुड़साल ( पु० ) तवेला, अस्तबल ।

घुण ( घुण=धूमना ) ( पु० ) एक कीड़ा जो लकड़ी  
और अनाज को खाकर खोखला कर डालता है,  
घुन ।

घुणा ( सं० घुण ) ( वि० ) घुन का खाया हुआ, थोथा,  
पोखा, घुना हुआ ।

घुणात्तरन्याय ( घुण+अतर+न्याय ) ( पु० ) घुन के  
खाने से लकड़ी में जो कभी अक्षर का-सा रूप बन  
जाता है; तात्पर्य यह कि कोई वस्तु अकस्मात्  
संयोग से प्राप्त हो जाय, तो ऐसे स्थल पर

इसका प्रयोग किया जाता है ।

घुप ( वि० ) अँधेरा, आच्छादित ।

घुमकड़ ( वि० ) बहुत घूमनेवाला ।

घुमटा ( पु० ) सिर में चकर आना ।

घुमड़ ( स्त्री० ) बादलों का घेरधार ।

घुमड़ना ( कि० अ० ) बादलों का घिरना अथवा  
आकाश में इधर-उधर दौड़ना ।

घुमाना ( धूमना ) ( कि० स० ) चकर से फिराना,  
फिराना, बहकाना ।

घुरकना } ( सं० घुर=डरना ) ( कि० स० ) धमकाना,  
घुरकाना } भिड़की देना, डराना ।

घुरकी ( घुरकना ) ( स्त्री० ) धमकी, भिड़की, घुड़की ।

घुरनाना ( कि० स० ) खरोंटे मारना, नाक खरखराना ।

घुसना ( कि० अ० ) पेटना, भीतर जाना ।

घूंगर } ( पु० ) लहराए हुए बाज, मुड़े हुए बाज,  
घूँघर } अँगूठिए बाज ।

घूँघची } ( सं० घुंघा ) ( स्त्री० ) लाज चिरमिटो,  
घुंघची } रत्ती ।

घूँघट ( पु० ) आँचल की आद, बुरका, ओढ़नी के  
आँचल से मुँह ढँकना ।

घूँघट करना ( बोल० ) ओढ़नी से मुँह ढँकना, बुरका  
ढालना, मुँह छिपाना, लाज करना ।

घूँघट काढ़ना ( बोल० ) ओढ़नी से मुँह ढँकना, लाज  
करना ।

घूँघरू } ( सं० घुंघरा ) ( पु० ) छोटी पंथी, धुदूधटिका,  
घुंघरू } पाँव में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

घूँघू ( पु० ) डल्लू, एक जानवर का नाम ।

घूटना ( कि० अ० ) सॉल रोकना ।

घूमघुमाला ( बोल० ) घेरदार ।

घूमना ( सं० घूर्ण=धूमना ) ( कि० अ० ) फिरना, सैर-  
करना, चकर खाना, शिर घूमना, ( बोल० ) सिर में  
कुछ दर्द होना, सिर फिरना, सिर चकराना ।

घूरना ( कि० स० ) ताकना, नाक लगाना, कोप की  
आँख से देखना, क्रोध से देखना ।

घूरा ( पु० ) कतवारखाना, कूबा-कर्कट ।

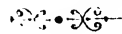
घूर्णन ( घूर्ण=धूमना ) ( पु० ) भ्रमण, घूमना ।

घूर्णित ( वि० ) भ्रमित ।

घूस ( स्त्री० ) बड़ा मूला, बड़ा घूहा ।

घुँसा ( घृ ) मुका, मुकी, धप्पा, मुका ।  
 घूस ( घ्रा० ) बड़ा मूसा, रिशबत, अकीर, मुँहभरी,  
 मुँहतोपी ।  
 घृणा ( घृ=घोचना ) ( स्त्री० ) घिन, ग्लानि, नफरत,  
 अवज्ञा, धिक्कार, संकोच दया ।  
 घृणित ( घृण + इत ) ( वि० ) निन्दित, अनादृत, गंदा,  
 मकरूह ।  
 घृत ( घृ=सींचना ) ( पु० ) घा, घिठ, सर्पिष् ।  
 घृष्ट ( घृष्=घिसना ) ( वि० ) घर्षित, घिसा हुआ ।  
 घृष्टि ( घृष्+ति ) ( पु० ) घिसना, मारना, शूकर,  
 ( स्त्री० ) विष्णुकांता, शूकरी, मुन्नरिया ।  
 घेगा } गल्लगंडरोग, गले का रोग ।  
 घेघा }  
 घेंटा ( पु० ) मुन्नर का बच्चा ।  
 घेतल ( पु० ) जूता-विशेष जिसे दक्षिणी पहनते हैं ।  
 घेर ( घेरना ) ( पु० ) घेरा, मंडल ।  
 घेग ( घेरना ) ( पु० ) मंडल, गोलाकार, नाकेबंदी,  
 छेकना, लिजेबंदी, बंद, अहाता ।  
 घेरा डालना ( बोल० ) चारों ओर से छेकना, घेर लेना,  
 रोक लेना, नाकेबंदी करना, अहाता करना ।  
 घेरे में पड़ना ( बोल० ) घिर जाना, घेरे में आ जाना,  
 बंद हो जाना ।  
 घेघर ( पु० ) एक तरह की मिठाई ।  
 घोखना ( सं० घुष्=शब्द करना ) ( क्रि० स० ) दुहराना,  
 पाठ सुनाना, बराबर करना, चिंतना, जोर से  
 बोलना, रटना, कंठाग्र करना ।  
 घोँघा ( पु० ) एक जलजंतु का नाम, शंभुक, ( वि० ) मूर्ख ।  
 घोँटना } ( क्रि० स० ) साक करना, चिकना करना,  
 घोँटना } ओपना, रगड़ना, मजना, ( पु० ) लोड़ा,  
 पथर, जिससे चीजें घोटो जाती हैं ।

घोटन ( पु० ) घोटना, हल करना ।  
 घोटा ( घोटना ) ( पु० ) घोटने की लकड़ी ।  
 घोटाला ( पु० ) गड़बड़, गोजमाज ।  
 घोड़ा ( सं० घोटक, घुट=रोकना या फिरना ) ( पु० ) एक  
 जानवर का नाम, अरब, तुरंग, बाजि, घोटक,  
 बंक्र की टोंटी ।  
 घोड़े को सरपट हाँकना ( बोल० ) घोड़े को बहुत  
 तेजी से दौड़ाना ।  
 घोर ( घृ=डरावना होना ) ( वि० ) डरावना, भयानक,  
 गहरा, ( पु० ) शिव, महादेव, डरावना, काम, दोख  
 का शब्द ।  
 घोर निद्रा ( घोर=गहरी, निद्रा=नींद ) ( स्त्री० ) गहरी  
 नींद, मृत्यु ।  
 घोल ( घृ=रोकना ) ( पु० ) मट्टा, बालू, मही ।  
 घोलघुमाव ( पु० ) टाऊमटोज, बहाना, छल ।  
 घोप ( घृष्=उच्च स्वर से बोलना ) ( पु० ) अहीरों का  
 ग्राम, आभीरपल्लो, शब्द, अहीर, गोपाज ।  
 घोपक ( पु० ) विलापकर्ता, शब्दकर्ता, बुलानेवाला,  
 रटनेवाला, घोप करनेवाला ।  
 घोपण ( पु० ) याद करना, रटना, प्रचार करना ।  
 घोपणपत्र ( पु० ) पत्तान, इशितहार, घोषणा-पत्र ।  
 घोमला ( पु० ) खोता, पत्थेरुओं का बासा, पत्थेरुओं  
 का घर, चुचकल ।  
 घोसी ( सं० घोम ) ( पु० ) मुसलमान-गवाजा ।  
 घ्राण ( घ्रा=सूँघना ) ( पु० ) सुगंध, गंध, बू, बास,  
 सूँघना, नाक, नासिका ।  
 घ्राणेंद्रिय ( घ्राण+इंद्रिय ) ( स्त्री० ) सूँघने की इंद्रिय,  
 नाक, नासिका ।  
 घ्रायक ( पु० ) गंधग्राहक, सूँघनेवाला ।



ऊ ( पु० ) विषयस्पृहा, विषयवासना, विषय, भैरव, शिव ।

अ ( पु० ) शिव, चाँद, चोर, कलुषा, दुष्ट, निर्बीज,  
 ( अग्न्य० ) और, फिर, पुनि, पुनः ।

अइ ( अ=य० ) हाथी हाँकने का एक इशारा ।  
 अइत ( पु० ) चैत्र-मास ।

चउक ( पु० ) चौका, बेदी, ( स्त्री० ) चौकी, सिपाहियों का नाका, चौक ।

चउर ( पु० ) मोरछल, चँवर ।

चउरा ( पु० ) ग्राम-देवतादि का चबूतरा, चौका, चावल का चबौना, चबाई ।

चक ( सं० चक ) ( पु० ) जागीर, इजारा, जीती-बोई हुई धरती, चकवा पक्षी ।

चकर्ई ( सं० चकवाक ) ( स्त्री० ) चकबी, ( सं० चक ) एक खिलौने का नाम ।

चकचका ( वि० ) गहरा, उज्ज्वल, निर्मल, स्वच्छ, प्रकाशमय, दीप्तिमान ।

चकचकी ( स्त्री० ) करताल-नामक बाजा ।

चकचौंध ( पु० ) हकाबका, दृष्टि में प्रकाश अथवा अधकार के कारण अंतर आ जाना ।

चकड़वा ( पु० ) चकलखल ।

चकती ( स्त्री० ) पैबंद, फाँक, गेंदे की खाल ।

चकत्ता ( स्त्री० ) गोल दाग, छिद्र, दाँत से काटने का दाग औरंगजेब अथवा मुसलमानों के लिये संकेत-विशेष; यथा—“कत्ता की कराकन चकत्ता को कटक काटि...” तथा “छोटी भई संपत्ति चकत्ता के घराने की”—महाकवि भूपण ।

चकनाचूर ( पु० ) टुकड़े-टुकड़े, टूक-टूक, छोटे-छोटे टुकड़ों में, चूर-चूर, करतल ।

चकनाचूर करना ( बोल० ) चूर-चूर करना, टुकड़े-टुकड़े करना, टूक-टूक करना ।

चकनाचूर होना ( बोल० ) टूक-टूक होना, चूर-चूर होना, टुकड़े-टुकड़े होना ।

चकमा ( पु० ) एक भौंति का ऊनी कपड़ा, मोजा, धोखा, विश्वासघात, सज्ज बाधा दिखाना ।

चकरवा ( पु० ) धूमधाम, चकराग, असमंजस, विकट परिस्थिति ।

चकरवा मचाना ( बोल० ) धूमधाम करना ।

चकरा ( पु० ) दाख का बड़ा, पानी का अँवर ।

चकराना ( कि० प्र० ) अचंचल में आना, बचड़ाना, चकर खाना ।

चकरानी ( चारर ) ( स्त्री० ) टहलुई, दासी ।

चकरी ( स्त्री० ) खिलौना-विशेष, चक्री का पाट, चक्री ।

चकला ( सं० चक ) ( पु० ) पपुरिचा का घर, बेरयाकच,

एक भौंति का कपड़ा जो रेशम और रुई से बनाया जाता है, ( वि० ) चौड़ा ।

चकला ( सं० चकल ) ( पु० ) देश का एक भाग जिसमें बहुत-से परगने होते हैं, मंडल, प्रदेश, चौकी, चौकी या पत्थर जिस पर रोटी बेची जाती है ।

चकलाना ( कि० सं० ) चौड़ा करना, फैलाना ।

चकलेदार ( पु० ) चकले का हाकिम ।

चकवा ( सं० चकवाक ) ( पु० ) एक पक्षेरू का नाम, ( सं० चक ) अँवर ।

चका ( पु० ) कुम्हार का चाक, पहिया, चक्र, चकला ।

चकान्चक ( स्त्री० ) पूर्ण, पूर्णता, भरपूर, पूरेपूर, मौज में, मृत ।

चकान्चौंध } ( स्त्री० ) तिलमिली, अंधियारी, विस्मृत  
चकान्चौंधी } होना, कर्तव्य-ज्ञान-शून्य होना, ज़्यादा रोशनी के कारण आँखों का तिलमिलाना ।

चकावी ( स्त्री० ) मैसिया दाद ।

चकित ( चक=अचंचल करना या भ्रान्ति करना ) ( वि० ) अचंचल, अचंचल में, विस्मृत, व्याकुल, घबराया हुआ, डरा हुआ ।

चकेरा ( वि० ) बड़ी आँखवाला ।

चकोर ( चक=तुर होना, प्रयत्न होना ) ( पु० ) एक पक्षेरू का नाम जो चंद्रमा को देखकर बड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊँचा उड़ता है ।

चकौत्रा ( पु० ) एक फल का नाम, एक प्रकार का नींबू ।

चकौंदा } ( सं० चकमर्दक, चक्र=गोल-गोल दाद, मर्दक=  
चकौंड़ } नाश करनेवाला ) ( पु० ) एक पौधा जो दाद की दवा में काम आता है ।

चक्रर ( सं० चक्र ) ( पु० ) अँवर, बगूला, बवंडर, एक गोल शक जिसकी विशेष करके सिल खोग रखते हैं, गोल चाख, कावा, विपत्ति, जंजाल, घबराहट, और, तरफ, दिशा ।

चक्रर काटना ( बोल० ) किसी सिद्धि के लिये बहुत आना-जाना, प्रतीक्षा में रहना ।

चक्रर खाना ( बोल० ) फिरना, घूमना, धोखे में आना, ठगा जाना ।

चक्रर देना ( बोल० ) फिराना, घुमाना, ठगना, झूठना धोखा देना ।

चक्रर मारना ( बोल० ) गीलाकार घूमना-फिरना ।

चक्रा ( सं० चक्र=गोल ) ( पु० ) दहो, जमा हुआ दूध, गार्हा का पहिया, घेरा, ( वि० ) गोल, गाढ़ा, जमा हुआ ( जैसे दही ) ।

चक्री ( सं० चक्र=गोल ) ( स्त्री० ) पाट, जाँता, चाकी खुरिया, चपनी, घुटने की ढकनी, गाज, बिजली खदकों के एक श्रित्तौने का नाम ।

चक्रकू ( पु० ) छुरी, चाकू ।

चक्र ( कृ=करना ) ( पु० ) पहिया, कुम्हार का चाक, विष्णु का अस्त्र, सुदर्शन, घेरा, वृत्त, व्यूह-रचना, सेना को चक्र के आकार पर सजाना, हाथ में एक चिह्न जो भाग्य का लक्षण है, भीड़, सेना, भूमंडल, देश, मुल्क, राज्य, चक्रवा पक्षी, वज्रीर ।

चक्रपाणि ( चक्र=सुदर्शनचक्र, पाणि=हाथ ) ( पु० ) विष्णु, जिनका अस्त्र सुदर्शनचक्र है ।

चक्रवर्ती ( चक्र=भाग्य पृथा, वर्ती=होनेवाला, वृत्=होना ) ( पु० ) सार्वभौम, गव पृथ्वी का राजा, बंगाल के ब्राह्मणों की एक पदवी ।

चक्रवाक ( चक्र=चक्र शब्द बरके, वाक=हा जाय, वच्=कहना ) ( पु० ) चक्रवा, एक पक्षी ।

चक्रा ( स्त्री० ) समूह, गिरोह, टोली ।

चक्राकार ( वि० ) घेरा, गोलाकार ।

चक्रांग ( पु० ) हंस ।

चक्रित ( सं० चक्रि ) ( वि० ) अचंचित, विस्मित, अचंच में ।

चक्रुः ( चक्रुः=देखना ) ( पु० ) आँख ।

चक्र ( सं० चक्र ) ( स्त्री० ) आँख, नेत्र, नयन, चपु ( जोचन ) ।

चक्रना ( सं० चक्रण, चप्=खाना ) ( क्रि० सं० )

चायना ( स्वाद लेना, रस लेना, थोड़ा-थोड़ा खाना ।

चक्राचक्रा ( स्त्री० ) बिगाड़, विरोध, चक्रचक्र ।

चक्राना ( पु० ) चिल्लाना, चसका देना ।

चक्राड ( सं० ) हांशिपार, चतुर, चालाक ।

चंग ( वि० ) दृढ़, पटु, रोगहीन, स्वस्थ, ( पु० ) गुड़ी, पतंग, दुरभिलाषा से मत्त होना ।

चंगा ( वि० ) स्वस्थ, नीरोग, भला ।

चंगूर ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम, सरस, बढ़िया ।

चंगेर, चंगेरी ( पु० ) फूल को डखिया ।

चंगेरा ( पु० ) खोआ, दौरी, टोकरा ।

चचा ( पु० ) पिता का भाई, काका, ताऊ ।

चचांग ( स्त्री० ) लकीर, रेखा ।

चचुलाई ( स्त्री० ) चचींदा, तरकारी-विशेष ।

चचेरा ( चचा ) ( वि० ) चचा का, जैसे चचेरा भाई=चचा का बेटा, भाई; चचेरी बहन=चचे की बेटी, बहन ।

चचोगना ( क्रि० सं० ) चूसना, लोहू चूसना, निचोड़ना ।

चंचरीक ( चर=जाना ) ( पु० ) भौंरा भ्रमर ।

चंचल ( चंच=चाल, ला=लेना या चंच अथवा चल=चलना ) ( वि० ) उतावला, चपल, अस्थिर, खिछाड़ी ।

चंचला ( स्त्री० ) चटपटी, लक्ष्मी, विद्युत् ।

चंचलाई ( सं० चंचलता ) ( स्त्री० ) उतावली, चपलता, अस्थिरता ।

चंचा पुरुष ( पु० ) पशु-पक्षियों को डराने के लिये लृण का बना हुआ मनुष्य जो खेतों में गाड़ा जाता है ।

चंचु ( चंचू=जाना ) ( स्त्री० ) चोंच, मिनकार, ठोंठ ।

चट ( सं० भट्टित ) ( क्रि० वि० ) भटपट, तुरंत, उसी दम, ( स्त्री० ) रगड़, घिसाव, तोड़ने का शब्द, तड़ाका, धड़ाका ।

चट ( चट ) ( स्त्री० ) घाट, स्वाद, खाना ।

चट करना ( बोल० ) खा जाना, उड़ा देना ।

चट दे तोड़ना } ( बोल० ) चटकाना, तड़काना,  
चट से तोड़ना } तोड़ना ।

चट होना ( बोल० ) पूरा होना, खाया जाना ।

चटक ( स्त्री० ) कड़क, कड़ाका, फुरती, जल्दी, चमक, भड़क, शोभा, पिपरामूख ।

चटक ( चट=तोड़ना ) ( पु० ) चिड़ा, गौरैया ।

चटकना } ( क्रि० अ० ) तड़कना ( जैसे कोयले अथवा  
चटखना } जलती हुई एकड़ा का ), फटना, टूटना, चिरना ।

चटकनी ( स्त्री० ) किवाड़ बंद करने की कुंडी, चटखनी ।

चटकमटक ( स्त्री० ) सजधज, चमक, शृंगार ।

चटकवाही ( स्त्री० ) शीघ्रता, समय के पहले सावधानी ।

चटकाना ( क्रि० सं० ) तोड़ना, चिड़ाना ।

चटकारना ( क्रि० अ० ) पशुओं को डसेजित करने का शब्द-विशेष ।

चटकीला ( वि० ) चमकीला, भड़कीला ।

चटपट ( सं० भट्टि=जल्दी, पट्ट=जाना ) ( कि० वि० )  
भटपट, तुरंत ।

चटपटाना ( चटपट ) ( कि० प्र० ) घबराना, व्याकुल  
होना, फड़फड़ाना, तड़फड़ाना ।

चटपटी ( चटपट ) ( स्त्री० ) उतावली, जल्दी, हड़बड़ी,  
घबराहट ।

चटशाल ( सं० चट्टशाला या छात्रशाला, चट्ट वा छात्र=  
लड़का, शाला=जगह ) ( स्त्री० ) पाठशाला, पढ़ने  
की जगह, मदरसा ।

चटाई ( स्त्री० ) बोरिया, पाटी ।

चटाका ( पु० ) धक्का, कड़ाका ।

चटान } ( स्त्री० ) शिक्षा, पठन, पाठान ।  
चटान }

चटिया ( सं० छात्र ) ( पु० ) विद्यार्थी, शिष्य, छात्र,  
चेला, शगिर्द ।

चट्ट ( पु० ) सुंदर, मनोहर, प्रिय, सीखना, गर्जना,  
शिक्षाना, चिन्हावना, पेड़, तोंद ।

चट्टल ( पु० ) मनोहर, सुंदर, प्रिय, रूपवान्, पूर्ण,  
प्रसन्न, कंठित, पथिक, ( स्त्री० ) ज्योति, विष्णु,  
विजली ।

चटोरा ( चाटना ) ( वि० ) पेड़, जीमचूला, खाऊ ।

चट्टा ( सं० चट्ट या छात्र ) ( पु० ) विद्यार्थी, पाठशाला  
का लड़का, स्कूल का लड़का ।

चड़ ( चड़=कोप करना ) ( पु० ) क्रोध, कोप, ( वि० )  
क्रोधी, गुस्सेवर ।

चड़चड़ाना ( कि० प्र० ) तड़कना, फटना ।

चड़ती ( चड़ना ) ( स्त्री० ) बढ़ती, लाभ ।

चड़ना ( कि० प्र० ) ऊपर जाना, आगे बढ़ना, धावा  
मारना, चढ़ाई करना, सवार होना ।

चड़ंदार ( पु० ) चढ़नेवाला, चढ़नेहारा, कर्णधार ।

चढ़ाई ( चड़ना ) ( स्त्री० ) धावा, चढ़ाव, हल्ला, हमला,  
चढ़ने का भाड़ा ।

चढ़ा-उतरी ( स्त्री० ) महींगी-सस्ती, घटना-बढ़ना, स्पन्दी ।

चढ़ाचढ़ी ( स्त्री० ) खींचतान, गरमागरमी, स्पन्दी ।

चढ़ाना ( कि० प्र० ) सवार करना, भेंट करना, बलिदान  
करना, तार चढ़ाना, डोरी लगाना, डोल कसना,  
ऊँचा करना, खड़ा करना, कपड़े पर रंग चढ़ाना ।

चढ़ाव ( चड़ना ) ( पु० ) उँचाव, उँचाई, उठाव,

पहाड़ में ऊपर रास्ता, चढ़ाई, धावा, बढ़ती, समुद्र  
की बाढ़ ।

चढ़ावा ( पु० ) कपड़ा-गहना आदि जो वर की ओर से  
कन्या को दिया जाता है, पुजापा, उत्साह ।

चढ़ैता ( पु० ) चाबुकसवार, दूसरों के घोड़े फेरने-  
वाला ।

चणक ( चण=देना ) ( पु० ) घना, बूट ।

चंड ( चंडि=क्रोध करना ) ( नि० ) डरावना, भयानक,  
क्रुद्ध, तेज, उग्र, तोखा, तीव्र, तीक्ष्ण, गर्म, ( पु० )  
एक दैत्य का नाम ।

चंडाल } ( चंडि=क्रोध करना ) ( पु० ) नीच, कुजाति,  
चंडाल } नीच जाति का मनुष्य जिसका बाप शूद्र  
और मा ब्राह्मणी हो, वर्णसंकर, श्वपच, निंदुर,  
निर्दयी, पापी, दुराचारी ।

चंडावल ( पु० ) सेना का पिछला भाग, पीछे रहनेवाला  
सिपाही, वीर सिपाही, संतरी ।

चंडांशु ( चंड+अंशु ) ( पु० ) सूर्य, आक्रताव ।

चंडिका } ( चंडि=क्रोध करना ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी,  
चंडी } काली, क्रोध करनेवाली स्त्री ।

चंडिल ( चंड+इल ) ( पु० ) शिव, रुद्र, क्रोधी, नापित,  
नाई ।

चंडु ( चंड+उ ) ( पु० ) मूषक, मर्कट, छोटा बंदर ।

चंडू ( पु० ) मादक पदार्थ-विशेष, अफीम का किमास  
जो नली द्वारा पिया जाता है ।

चंडोल ( पु० ) डोखा, एक प्रकार की पाखंडी, पक्षी-  
विशेष चंडूल-पक्षी ।

चतुर ( चतु=माँगना ) ( नि० ) निपुण, प्रवीण, स्याना,  
सयाना, बुद्धिमान्, छली, कपटी, धूर्त, चालाक,  
नटखट ।

चतुर् ( चतु=माँगना ) ( वि० ) चार ।

चतुरम्ब ( नि० ) चौखूँटा, चौकोन ।

चतुरगिनी ( चतुर=चार, अङ्गिनी=अंगवाली ) ( स्त्री० )  
सेना जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पैदल,  
चारों हों ।

चतुरा ( स्त्री० ) दक्षा, सयानी, प्रवीणा ।

चतुराई ( सं० चतुरता ) ( स्त्री० ) निपुणता, प्रवीणता,  
सयानपन, बुद्धिमान्ता, धूर्तता, कपट, नटखटी,  
चालाकी ।

चतुरानन (चतुर=चार, आनन=मँह) (पु०)  
 चतुर्थ (चतुर=चार) (वि०) चौथा।  
 चतुर्दशी (चतुर=चार, दश=दस) (स्त्री०) चौदस,  
 चौदहवीं तिथि।  
 चतुर्भुज (चतुर=चार, भुज=भुजा) (पु०) विष्णु,  
 चारभुजा, चौखंडा खेत, चौकोर, (वि०) चार  
 हाथवाला।  
 चतुर्मुख } (चतुर=चार, मुख या वक्त्र=मँह) (पु०)  
 चतुर्वक्त्र } ब्रह्मा।  
 चतुर्वर्ग (चतुर=चार, वर्ग=मण्ड) (पु०) धर्म, अर्थ,  
 काम, और मोक्ष।  
 चतुल (पु०) विश्वस्त, विश्वासी, निष्कपट, मनोहर,  
 सुंदर।  
 चतुष्क (स्त्री०) मशकहरी अर्थात् मशहरी, नदी-विशेष,  
 भीख।  
 चतुष्पद (चतुर=चार, पद=पाँव) (पु०) पशु, घोषाया,  
 मवेशी।  
 चतुष्पदी (चतुर=चार, पद=चरण) (स्त्री०) चार पद-  
 वाला छंद-विशेष।  
 चतुष्पष्टि (चतुर=चार, पष्टि=साठ) (वि०) चौसठ।  
 चना (सं० चणक) (पु०) बूट, छोखा, चणा।  
 चंद (सं० चंद्र) (पु०) चाँद।  
 चंदन (चंदि=प्रसन्न होना) (पु०) एक सुगंधित  
 लकड़ी, मलयगिरि का सुगंधित काठ, रोधसार,  
 ओखंड।  
 चंद्र (चंदि=प्रसन्न होना या चमकना) (पु०) चाँद, चंद्रमा,  
 चंद्र, सोम, कपूर।  
 चंद्रकला (चंद्र=चाँद, कला=अंश) (स्त्री०) चाँद का  
 सोखहवाँ अंश, १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा,  
 ४ पुष्टि, ५ तुष्टि, ६ रति, ७ धृति, ८ शशिनी,  
 ९ चंद्रिका, १० कांति, ११ ज्योत्स्ना, १२ श्री,  
 १३ प्रीति, १४ अंगदा, १५ पूषणा, १६ पूर्णा।  
 चंद्रगुप्त (पु०) राजा का नाम, महानंद राजा का पुत्र  
 जो मुरासामो नाहन से उत्पन्न हुआ; चाणक्य ब्राह्मण  
 ने महानंद को पुत्रों-सहित नाश करके चंद्रगुप्त को  
 राजगद्दी दिखाई।  
 चंद्रमणि (चंद्र=चाँद, मणि=रत्न) (पु०) चंद्रकांतमणि,  
 एक रत्न का नाम।

चंद्रमंडल (चंद्र=चाँद, मंडल=वेरा) (पु०) चाँद का  
 वेरा, चंद्रबोक।  
 चंद्रमा (चंद्र=कपूर, मा=मापना या मापन करना, अर्थात्  
 जो अपने प्रकाश से सब चीजों को कपूर के समान साफ  
 कर दिखाता है) (पु०) चाँद, एक ऋषि का नाम।  
 चंद्रमुखी } (चंद्र=चाँद, मुख=मँह) (स्त्री०) जिस की  
 चंद्रमुखी } का मुँह चाँद का-सा हो, चंद्रवदनी,  
 सुमुखी, सुंदरी।  
 चंद्रमौलि (चंद्र=चाँद, मौलि=सिर या शिला) (पु०)  
 शिव, महादेव।  
 चंद्रलौह (पु०) चाँदी, राँगा, फूस।  
 चंद्रवंशी (चंद्र=चाँद, वंश=पराना) (पु०) क्षत्रियों  
 की एक जाति जो अपने को चंद्रमा से उत्पन्न बत-  
 लाते हैं, पुरुवा से उत्पन्न वंश।  
 चंद्रवदनी } (चंद्र=चाँद, वदन=मँह) (स्त्री०) चंद्रमुखी,  
 चंद्रवदनी } सुंदरी।  
 चंद्रशाला (चंद्र+शाला) (स्त्री०) अट्टाजिका, अटारी,  
 गृह-शिवर।  
 चंद्रशेखर (चंद्र=चाँद, शेखर=सिर का गहना) (पु०)  
 शिव, महादेव।  
 चंद्रहार (चंद्र=चाँद, हार=माला) (पु०) गले में  
 पहनने की माला।  
 चंद्रहास (चंद्र=चाँद, हास=चमक, हस=हँसना अर्थात्  
 जिसकी चमक चाँद की-सी हो) (स्त्री०) तखवार,  
 खड्ग, चमेली, कुमुदिनी।  
 चंद्रापीड (पु०) शिव, महादेव, एक राजा का मंत्री।  
 चंद्रायन (चंद्र+आयन) (पु०) गृहशिवर, ज्ञत,  
 (स्त्री०) चाँदनी, छपा।  
 चंद्रिका (चंद्र) (स्त्री०) चाँदनी, चाँद का उजाला,  
 चाँद की ज्योति, कौमुदी, ज्योति, प्रकाश।  
 चंद्रिकापायिन् (चंद्रिका+पायिन्) (पु०) चौकीर,  
 पर्वत।  
 चंद्रिल (पु०) शिव।  
 चपकन (स्त्री०) एक तरह का अँगरखा।  
 चपकना (क्रि० प्र०) चिपटना, मिथाना, जुड़ना।  
 चपट (चप=लगना) (पु०) चपेट, धक्का।  
 चपटा (वि०) चौरस, सब ओर से बराबर।  
 चपङ्गहृद् (वि०) आक्रुत का मारा, गुल्मगुल्मा।



चपड़ा (पु०) साक़ किया हुआ छास, पत्तर ।

चपड़ाऊ (वि०) निर्लज्ज, शीठ ।

चपड़ी (स्त्री०) कंड़ी, गोबरी, पटिया ।

चपत (स्त्री०) थपेड़, धौल, तमाचा ।

चपना (कि० प्र०) शरमाना, लजित होना, दबना, दब जाना ।

चपनी (स्त्री०) ढकनी, ठपनी, घुटने की ढकनी ।

चपरासी (पु०) चपरास रखनेवाला, नौकर ।

चपरि (स्त्री०) तुरंत, शीघ्र, दबककर, घुसकर ।

चपल (चप=जाना) (वि०) चंचल, उतावला, (पु०) पारा, मछली ।

चपला (चपल) (स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली, चंचला, बेश्या, कुछटा, पोपल, मदिरा, एक प्रकार की नाव ।

चपाती (स्त्री०) रोटी, फुलका ।

चपाना (कि० प्र०) दबाना, दाबना, लजाना ।

चपेट { (चप=जाना) (स्त्री०) धप्पा, थप्पड़,  
चपेटका { धौल, हथेली ।

चपौटी (स्त्री०) एक प्रकार की पगड़ी ।

चपौरा (पु०) बिना उठाई हुई पड़ी का जूता ।

चप्पल (पु०) चपौरा, बिना पड़ी का जूता, मराठी स्त्रीपर ।

चप्पा (पु०) चार अंगुल का नाप ।

चप्पी (स्त्री०) देह दबाना, शरीर दबाना ।

चप्पू (पु०) कलवारी, डोंड़, दबानेवाला ।

चफाल (पु०) दखदख के बीच की भूमि ।

चघाना (सं० चर्वण) (कि० प्र०) चाबना, दाँत से कुचलना, होंठ काटना ।

च तूरा (पु०) चोतरा, अथाई, चौपाड़, बेंठक, चौकी, थाना ।

चबेनी (स्त्री०) जलपान का सामान ।

चबो (पु०) जख में गोता देने अथवा मारने का कार्य ।

चभक (पु०) डंक, काँटा, पानी में गिरने का शब्द ।

चमक (चमकना) (स्त्री०) झलक, भड़क, चटक, दमक, शोभा ।

चमकतमक { (बोल०) शोभा, भड़क, झलक ।  
चमकदमक {

चमकाना (कि० प्र०) चिढ़ाना, मटकाना, झलकाना, प्रकाश देना ।

चमगादड़ } (पु०) (स्त्री०) एक पक्षी जो रात  
चमगीदड़ } को देखता है, दिन को नहीं देखता;  
चमगुदड़ी } चमगादड़, चमचड़ल ।

चमचमाहट (स्त्री०) चमकाहट, चमक, भड़क, झलक ।

चमड़ा (सं० चर्म) (पु०) चाम, खाक ।

चमड़ा उधेड़ना } (बोल०) खाल खींचना, चमड़ा  
चमड़ा छुड़ाना } खींचना ।  
चमड़ा निकालना }

चमत्कार (चमत्=सम्भवा, कार=करना) (पु०) अचम्भा, विस्मय, प्रकाश, गुण विशेष, आश्चर्य ।

चमर } (चम=खाना) (पु०) चमरी गाय, सुरागाय,  
चामर } चँवर, सुरा गाय की पूँछ ।

चमस (पु०) चमचा, चम्मच ।

चमाऊ (स्त्री०) खड़ाऊ, चमर ।

चमार (सं० चर्मकार) (पु०) मोची, जूता बनानेवाला ।

चमू (चम=खाना) (स्त्री०) सेना, कटक, दख, फौज जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ घोड़े और १६४२ पैदल हों ।

चमेटा (सं० चपेट) (पु०) थप्पड़, धप्पा, चपेटा, साधुओं का चमीठा ।

चमोटा (पु०) } (सं० चर्म) चमड़े की पट्टी जिस  
चमोटी (स्त्री०) } पर उस्तरा तेज करते हैं ।

चंपक (चपि=जाना) (पु०) चंपा, जिसके फूल पीले रंग के और सुगंधित होते हैं; उसके पास और नहीं जाते । यथा—

“तेहि बन बसत भरत बिनु रागा ;

चंचरीक जिमि चंपक बागा ।”

—गो० तु० दा०

चंपत (कि० वि०) छिपा, अंतर्धान, अदृश्य ।

चंपत होना (बोल०) छिप जाना, भाग जाना, चला जाना, झलख होना ।

चंपा (सं० चंपक) (पु०) एक पेड़ का नाम, जिसके फूल पीले और सुगंधित होते हैं ।

चंपाकली (चंपा + कली) (स्त्री०) एक प्रकार की माला, जिसका हर एक दाना चंपे की कड़ी-सा होता है ।

चंपू (स्त्री०) गद्य-पद्य-मय काव्य ।

चंघू (पु०) एक तरह का पानी का बरतन ।

चँबेली ( स्त्री० ) एक प्रकार का सफेद रंग का फूल ।  
 चय ( चि=इष्टा करना ) ( पु० ) ढेर, समूह, राशि ।  
 चयन ( पु० ) संग्रह, बटोरना, चेम, चैन, कुशल ।  
 चर ( चर=चलना, खाना ) ( पु० ) दूत, धावन, खाना, भक्षण, ( वि० ) चलने योग्य, चलनेवाला, जंगम ।  
 चरई ( स्त्री० ) पशुओं के चारा पानी के लिये ईंट-पत्थर का बना हुआ गड्ढा ।  
 चरक ( चर=जाना या खाना ) ( पु० ) वैद्यकशास्त्र का बनानेवाला, वैद्यकशास्त्र का नाम, मुखविर ।  
 चरकटा ( पु० ) जानवरों का चारा काटनेवाला मनुष्य, छोटा आदमी, तुच्छ विचार का मनुष्य ।  
 चरखा ( पु० ) सूत कातने की कल, रहँटा, घिरना ।  
 चरखी ( स्त्री० ) घिरनी, रहँटा, गराई, पतंग की डोर लपेटने की लकड़ी की बनी लट्ठाई ।  
 चरचना ( सं० चर्चा ) ( कि० म० ) शरीर में चंदन छगाना, चंदन से शरीर को लेपना, ( कि० अ० ) चर्चा करना, भाँपना ।  
 चरचर ( पु० ) चक्कचक्क, शब्द ।  
 चरचरा ( वि० ) बक्री, बड़बड़िया ।  
 चरचराणा ( कि० अ० ) कुड़कुड़ाना, कुपित होना, बड़बड़ाना ।  
 चरचा ( स्त्री० ) झिंक, चर्चा, कीर्ति, कथाति ।  
 चरण ( चर=चलना ) ( पु० ) पाँव, पैर, श्लोक का एक पद, मिसरा, चतुर्थीप, दल, क्रम, गोत्र, आचार-विचार ।  
 चरणपीठ ( सं० चरणपृष्ठ, चरण=पाँव, पृष्ठ=पीठ ) ( स्त्री० ) खड़ाऊँ, चरणपादुका । यथा —  
 “चरणपीठ करुणानिधान के”  
 — गो० तु० दा०  
 चरणाभूत ( चरण=पाँव, अभूत=ब्रह्मा ) ( पु० ) देवता की मूर्ति अथवा साधुजन के पैरों का धोवन, पानी जिससे देवता की मूर्त वा साधुजन के पैर धोए हों, चरणोदक ।  
 चरणायुध ( चरण+आयुध, युध=लड़ना ) ( पु० ) मुर्गा, कुक्कुट ।  
 चरणारविन्द ( चरण=पाँव, अरविन्द=कमल ) ( पु० ) चरण-कमल, कमल, जैसे पाँव, मुबारक कदम ।  
 चरणि ( पु० ) मनुष्य ।

चरणोदक ( चरण=पाँव, उदक=पानी ) ( पु० ) चरणाभूत, पैरों का धोवन ।  
 चरती ( वि० ) व्रत के दिन उपवास न करनेवाला, अन्नती ।  
 चरना ( सं० चरण, चर=खाना ) ( कि० स० ) चुँगना, घास खाना ।  
 चरपरा ( वि० ) तीता, कड़वा, तेज़, कुर्तीखा, चिरपिरा ।  
 चरपरिया ( वि० ) सुंदर, सुधर, मनचला ।  
 चरफर ( पु० ) प्रवीणता, निपुणता ।  
 चरवाना ( कि० स० ) ढोल पर चमड़ा मढ़वाना ।  
 चरम ( वि० ) ढ़ले, परे, पीछे के, अंतिम ।  
 चरवाई ( चरना ) ( स्त्री० ) चराई, चराने का दाम ।  
 चरवाहा ( चरना ) ( पु० ) भेड़ बकरी चरानेवाला, गड़रिया, रखवाला ।  
 चरस ( पु० ) नशे को एक चीज़, चमड़े की मोट, चमड़े का बड़ा डोल ।  
 चरसा ( पु० ) अधोबी, खाल, पुर ।  
 चरसी ( पु० ) पुरवट हाकनेवाला, चरस पीनेवाला ।  
 चराई ( चरना ) ( स्त्री० ) चराने की मज़दूरी, चरवाई ।  
 चरागाह ( पु० ) चरने का स्थान, लहलहाता हुआ मैदान ।  
 चराचर ( चर=चलनेवाला, अचर=न चलनेवाला ) ( पु० ) जीव, जंतु, वृक्ष पत्थर आदि सब पदार्थ, जो सृष्टि में हैं, स्थावर-जंगम, संसार, सृष्टि ।  
 चरान ( पु० ) चरागाह, तराई, समुद्र के किनारे की वह जगह जहाँ निमक निकलता है ।  
 चराना ( चरना ) ( कि० स० ) चुगाना, घास खिलाना, खिलाना ।  
 चरि ( पु० ) पशु ।  
 चरित { ( चर=जाना ) ( पु० ) कथा-वाचो, वृत्तान्त,  
 चरित्र { हाल, शील स्वभाव, चालचलन, व्यवहार, आचार, खोला, काम, जीवनी ।  
 चरित्रवान् ( वि० ) सदाचारी, नेकचलन ।  
 चरित्रवंधक ( पु० ) भाट, कवि, पिगलज ।  
 चरी ( स्त्री० ) पशुओं के चरने की बिना खगान की जमीन पशुओं के खाने योग्य बरनी ।  
 चरु ( स्त्री० ) खीर, हव्याज, जाउरि, यज्ञ, मेघ, बादल ।  
 चरुवा ( सं० चरु, चर=खाना ) ( पु० ) भाँडा, हाँडा ।  
 चरैला ( पु० ) चूल्हा-विशेष, जाळ ।

चरोखर ( स्त्री० ) पशुओं के चरने का स्थान ।  
 चरोतर ( पु० ) जीवन-भर के लिये दी हुई जमीन ।  
 चर्चरी ( स्त्री० ) उत्सव, गान-विशेष, केशरचना, शाक, महाकाल ।  
 चर्चरीक ( पु० ) महाकाल, केशविन्यास, बाल सवर्ण-रना, शाक, साग ।  
 चर्चा ( चर्च=पड़ना, बोलना ) ( स्त्री० ) प्रस्ताव, जिज्ञा, बतकहाव, तर्क, पूजा, शरीर में चंदन लगाना ।  
 चर्चित ( चर्चा ) ( वि० ) चरचा हुआ, चंदन लगाया हुआ ।  
 चर्म ( चर्=जाना ) ( पु० ) चमड़ा, अजिन, खाल, ढाङ्ग ।  
 चर्मकार ( चर्म=चमड़ा, कार=करनेवाला ) ( पु० ) चमार, मोची ।  
 चर्मज ( चर्म+जन्=पैदा होना ) ( पु० ) रुधिर, केश, बाल, चमड़े से बनी हुई ।  
 चर्वण ( चर्वे=खाना ) ( पु० ) चाबना, दाँत से पीसना ।  
 चर्वित चर्वण ( पु० ) पुनरुक्ति, दुहराया हुआ ।  
 चलचलाव ( पु० ) मौत, यात्रा, चलाचली ।  
 चलचित्त ( चल=चला हुआ, चित्त=मन ) ( वि० ) चंचल, चपल, अस्थिर ।  
 चलत ( वि० ) चलनशील, चलनहार ।  
 चलती ( स्त्री० ) प्रभाव, मयीदा, प्रतिष्ठा ।  
 चलन ( चल=चलना ) ( पु० ) चलना, जाना, चाल, गति, रीति, व्यवहार, चालचलन, रिवाज, प्रचार, चाल, चर्चा ( वि० ) प्रचलित ।  
 चलनसार ( वि० ) टिकाऊ, ठहरनेवाला ।  
 चलना ( सं० चलन ) ( क्रि० अ० ) जाना, गमन करना, आगे बढ़ना, हिलना, सरकना, फिरना, प्रचलित होना, रिवाज होना, प्रचार होना, फैलना ( जैसे सिका ), छुटना ( जैसे बंदूक ), बहना ( जैसे हवा ), व्यवहार होना ।  
 चल निकलना ( बोल० ) निकल चलना, हृद से बाहर निकलना, खराब अथवा ब्यसनी होना, व्यवहार-कुशल होने लगना ।  
 चल देना ( बोल० ) बृच करना, भाग जाना, चला जाना ।  
 चलनी ( सं० चालनी, चल=चलना ) ( स्त्री० ) पीतल या लोहे अथवा चमड़े की बनी हुई एक चीज़ जिसमें बहुत छेद होते हैं और जिसमें आटा छानते हैं ।

चलपूँजी ( स्त्री० ) जायदाद मन्कूला, जो चीज़ एक जगह से दूसरी जगह चल सके ।  
 चलौक ( वि० ) चतुर, धूर्त, होशियार ।  
 चलित ( चल=चलना ) ( वि० ) चला हुआ, प्रचलित, व्यवहृत, हिलता हुआ ।  
 चले चलना ( बोल० ) आगे बढ़ना, बढ़े जाना ।  
 चलौना ( पु० ) चरखा चलाने का डंडा, कलछा ।  
 चवाई ( सं० चर्वणावादी ) ( पु० ) निंदक, लावालुतरा, चुगुलख़ोर, झूठफुर बनाकर कहनेवाला ।  
 चवाव ( सं० चर्वणावाद ) ( पु० ) निंदा, चुगली, झुठई, कलंक, लिम् ।  
 चश्म ( स्त्री० ) आँख, नेत्र, नयन ।  
 चश्मदीद ( वि० ) आँखों देखा ।  
 चष ( पु० ) नेत्र, आँख ।  
 चपक ( चप्+प्रक ) ( पु० ) जलपात्र, आबज़ोरा, पानपात्र, मदिरापात्र, मयजाम, शहद, मदिरा ।  
 चपणि ( पु० ) भोजन, मारण, ( स्त्री० ) मूर्छा, मदांधता ।  
 चपाल ( पु० ) यज्ञ के खंभे का कड़ा, थूपकटक, होम-कुंड, कुशा ।  
 चसकना ( क्रि० अ० ) टपकना, दर्द होना, टोसना ।  
 चसका ( पु० ) प्यार, ज़ाज़सा, चाट, स्वाद, चाह, टेव ।  
 चसना ( क्रि० अ० ) मरना, कमकना, मसकना ।  
 चह ( चइ=झलना, प्रतारण ) ( पु० ) अहंकार, पाखंड, परिकटकन, ( वि० ) अहंकारी, दंभी, छुली ।  
 चहकना ( क्रि० अ० ) चहचहाना, चिड़ियों का बोलना, ( बोल० ) अनधिकार बातचीत करना ।  
 चहका ( पु० ) लूक, जलन, बनेंटी ।  
 चहकैट ( वि० ) चौदंत साँड़, बलवान्, बलिष्ठ ।  
 चहचहा ( वि० ) गहरा रेंगा हुआ ।  
 चहचहाना ( क्रि० अ० ) पक्षियों का बोलना ।  
 चहटी ( स्त्री० ) चुटकी काटना ।  
 चहय्या ( पु० ) हौदा, कुंड, पानी का गड्ढा, हीज़ ।  
 चहलना ( क्रि० सं० ) घूँचना, काड़ना, आंत होना ।  
 चहलपहल ( स्त्री० ) आनंद, हँसी-मृगी, चुहल, रासरंग ।  
 चहला } ( पु० ) कीचड़, काँदा, पाँका, पंज़,  
 चिहला } दलदल ।

चहारदियारी ( स्त्री० ) चारों ओर की दीवार, परिखा ।

चहुँ { ( सं० चतुर ) चार, चारों, या चहुँ ओर, चारों  
चहुँ { ( वि० ) तरफ, सब तरफ ।

चहुँक ( वि० ) चौक, चिहुँक ।

चहुँचक { ( सं० चतुश्चक्र, चतुर=चार, चक्र=देश )  
चहुँचक { ( कि० वि० ) चारों ओर, सब ओर, चारों  
खूंट में, चहुँ दिशि ।

चहुँदिस ( सं० चतुर्दिश, चतुर=चार, दिश=ओर )  
( कि० वि० ) सब ओर, चारों ओर, चहुँ ओर, चहुँ चक्र ।

चहुँधा ( पु० ) चारों ओर, चहुँधा ।

चहुँवान ( पु० ) चौहान, क्षत्रियों की एक जाति ।

चहुँटवा ( कि० ग० ) निचोड़ना, भगाना ।

चाँई ( वि० ) ठग, गिरहकट, उचका, चोर ।

चाँईचुँई ( स्त्री० ) गंजरोग ।

चा ( स्त्री० ) एक पीधे की पत्ती जिसको पीने से शरीर  
में कुर्ती रहती है ।

चाक ( सं० चक्र ) ( पु० ) कुम्हार की चक्की, पाट अथवा  
पहिया जिस पर बरतन बनाए जाते हैं, पहिया,  
पाट, चक्की ।

चाकना ( कि० स० ) निशान लगाना, सीमा बाँचना ।

चाकर ( पु० ) नौकर, सेवक ।

चाकरनी ( स्त्री० ) लौकी, मजदूरनी, नौकरानी ।

चाकरी ( स्त्री० ) सेवा, टहल, नौकरी ।

चाका ( पु० ) चाक, गाड़ी आदि का पहिया ।

चाकी ( सं० चक्र ) ( ग० ) चक्की, जाँता, बिजली ।

चाकू ( पु० ) छुरी ।

चाग्य ( पु० ) आँख, नेत्र, नोलकंठ-पक्षी ।

चाखना ( कि० स० ) स्वाद लेना, चाखना, जाँचना ।

चाँगला ( पु० ) घोड़े का रंग विशेष ।

चाचा ( पु० ) चचा, काका ।

चाँचर ( स्त्री० ) परती जमीन, ( पु० ) गीत-विशेष, टट्टी,  
परदा, जो किवाड़ों की अगह लगाया जाय ।

चाँचु ( पु० ) चाँच, चंचु ।

चाट ( चाटना ) ( स्त्री० ) चसका, स्वाद, रस, छाछसा,  
डाकंठा, रुचि, स्वभाव ।

चाटकी ( वि० ) ऐतृजातिक ।

चाटना ( कि० स० ) स्वाद लेना, छपछप खाना, चबचब-  
करना खाना ।

चाटपट्ट ( पु० ) भाँड़, मशखरा, खुशामदी ।

चाटी ( स्त्री० ) मटकी, मथानी ।

चाट्ट ( स्त्री० ) प्रिय वार्ता, ठकुरसोहाती, चापलूसी, लहो-  
पत्ती, खुशामद ।

चाटुलक्ष्मी ( पु० ) खुशामदी बातें, चिकनी-चुपकी  
बातें ।

चाड़ ( स्त्री० ) चाह, चोट, डेकुल्लो, उदंगन, आव-  
श्यकता ।

चाणक्य ( पु० ) चाणक्य मुनि के गोत्र का, विश्वगुप्त ।

चाणूर ( पु० ) कंस का प्रधान मन्त्र, बड़ पहलवान ।

चाँटा ( पु० ) थप्पड़, चपत ।

चाँटी ( स्त्री० ) चींटी ।

चाँड़ ( स्त्री० ) खंभा, टेकन, टेक, मुचंड, जबर्दस्त ।

चाँडाल ( पु० ) श्वपच डोम, नीच ।

चातक ( चतुर्मासगना, अर्थात् वादलों से पानी माँगना )  
( पु० ) पपीहा ।

चातर ( पु० ) पट्यंत्र, दुर्जनो का जमाव, मछली मारने  
का बड़ा जाल ।

चातुर ( चतुर ) ( वि० ) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, धूर्त,  
चार ।

चातुरी ( चातुर ) ( स्त्री० ) चतुराई, निपुणता, धूर्तता ।

चातुर्वर्ण्य ( पु० ) १ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वैश्य, ४ शूद्र,  
'चातुर्वर्ण्य मयासृष्टमिति गीता', चारों वर्णों का  
धर्म ।

चातुक ( सं० चातक ) ( पु० ) पपीहा ।

चादर ( स्त्री० ) एकलार्द, पिछौरी ।

चाँद ( पु० ) चंद्रमा ।

चाँद्रायण ( चंद्र=चाँद, अयन=चाल, वा चाँद्र=चंद्रलोक,  
अय=गाना 'जिस अयन में' ) ( पु० ) एक व्रत, जिसमें  
अंधेरे पाख में जब चाँद की कला घटती है, हर एक  
दिन खाने में एक मास घटाते हैं और चाँदनीवाले  
पाख में ज्यों-ज्यों चंद्रमा की कला बढ़ती है, हर  
एक दिन एक-एक मास बढ़ाते हैं, रोज़ा कमरो ।

चाँदनी ( स्त्री० ) चंद्रमा का प्रकाश, ठजेली रात,  
बिछाने की चादर, स्वच्छता ।

चाँद ने खेत किया ( मुहा० ) चंद्र उदय हुआ ।

चाँद मारना ( कि० स० ) निशाना मारना, चाँदमारो,  
करना ।

चाँदरात ( स्त्री० ) पूर्णिमा की रात ।  
 चाँपना ( कि० सं० ) दाबना, जोड़ना ।  
 चाप ( चप=बाँस अर्थात् बाँस का बना हुआ, चप्=जाना )  
 ( पु० ) धनुष्, कौदंड, धनुहाँ, दबाव, वृक्ष-विशेष ।  
 चापखंड ( चाप+खंड ) धनुष् के टुकड़े ।  
 चापल ( पु० ) चपलाहट ।  
 चापलूस ( वि० ) झुशामदी ।  
 चापी ( स्त्री० ) दवाई ।  
 चाफंद ( स्त्री० ) मछली पकड़ने का जाल ।  
 चावना ( सं० चर्वण ) ( कि० सं० ) चबाना, दाँत से  
 कुचलना, चिकलना ।  
 चावी ( स्त्री० ) कुंजी, ताबी ।  
 चावुकसवार ( पु० ) घोड़े की चाल सगृह्यनेवाला ।  
 चाम ( सं० चर्म ) ( पु० ) चमड़ा, खाल ।  
 चामर ( पु० ) चँवर  
 चामर पाटना ( कि० सं० ) दाँतों से होठ काटना, दाँत  
 कटकटना ।  
 चामीकर ( पु० ) सोना, धनूरा ।  
 चाभुंडा ( चम्=खाना, वा चम्=सेना, ला=लेना अर्थात् खा  
 जाना ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चंड-  
 मुंड राक्षसों की मारनेवाली देवी ।  
 चायक ( पु० ) प्रेमी, चाहनेवाला ।  
 चार ( चर=चलना ) ( पु० ) दूत, जलूस, कारागार,  
 नौकर, रीति, प्यार, ( सं० चतुर ) ( वि० ) दो का  
 दुगना, ४ ।  
 चार आँखें ( स्त्री० ) चौनज़र, मिलना, भेंट हो जाना ।  
 चारचभ्रु ( पु० ) राजा ।  
 चारजामा ( पु० ) ज़ीन, काठी ।  
 चार टुक ( बोल० ) टुक-टुक, टुकड़े टुकड़े ।  
 चारण ( चर=ले जाना, अर्थात् जो यश को फैलाता है )  
 ( पु० ) भाट यश यखानेवाला ।  
 चारपाई ( स्त्री० ) साट, खटिया ।  
 चारा ( सं० चर=खाना ) ( पु० ) पशुओं का खाना, घास ।  
 चाराजोई ( स्त्री० ) दोहाई देना ।  
 चारी ( वि० ) चलनेवाला ।  
 चारु ( चर=चलना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, सुहावना,  
 मनभावन ।  
 चारुफला ( स्त्री० ) अंगूर ।

चारुहासिनी ( वि० ) सुंदर मुसकानवाली ।  
 चाल ( सं० चल=चलाना ) ( स्त्री० ) चलना, चलन,  
 गति, गमन, रीति-रस्म, रीति-भाँति, ढंग, राह,  
 चालचलन, छल, कपट, धोखेबाज़ी ।  
 चाल चलना ( बोल० ) निबाहना, व्यवहार करना,  
 धोखा देना ।  
 चालढाल ( बोल० ) चालचलन, रीति-भाँति ।  
 चालना ( सं० चालन, चल=चलना ) ( कि० सं० ) छानना  
 ( जैसे घाटा ), झारना, फटकना, देखना ।  
 चालनी ( चल=चलना ) ( स्त्री० ) चलनी ।  
 चाल पकड़ना ( बोल० ) फैलना, चलना, प्रचलित होना ।  
 चालवाज़ ( वि० ) धूर्त, कपटी, छली ।  
 चाला ( पु० ) मुहूर्त, प्रस्थान ।  
 चालाक ( वि० ) चतुर, धूर्त, शठ ।  
 चालान ( पु० ) बीजक, अपराधी का न्यायालय में  
 सिपाही द्वारा जाना ।  
 चालिया ( वि० ) शठ, धूर्त, छली ।  
 चाली ( वि० ) चालवाज़, धोखेबाज़ ।  
 चालीस ( सं० चत्वारिंशत् ) ( वि० ) दो बीसी, ४० ।  
 चाव } ( सं० इच्छा ) ( पु० ) बड़ी चाह, उत्कंठा, रुचि,  
 चाय } अभिलाष, चोप, शोक, चार अंगुल, एक तरह  
 का बाँस ।  
 चावचोचला ( बोल० ) प्यार, दुलार, अनुराग, प्रेम,  
 स्नेह, किछोला ।  
 चावड़ी ( स्त्री० ) चट्टी, पढ़ाव, यात्रियों के ठहरने का  
 स्थान ।  
 चावल } ( पु० ) एक प्रकार का अनाज, तंदुल, चाडर ।  
 चाँवल }  
 चाप ( पु० ) नीलकंठ-पक्षी, आँख, नेत्र ।  
 चापु ( सं० चाप, चप्=मत्तण करना ) ( पु० ) नीलकंठ,  
 कटनाश ।  
 चासा ( पु० ) किसान, जोतहा, हल चलातेवाला ।  
 चाह ( सं० इच्छा ) ( स्त्री० ) चाहना, अभिलाष, इच्छा,  
 प्यार, प्रेम, प्राप्ति, पसंद ।  
 चाहना ( कि० सं० ) इच्छा करना, माँगना, याचना,  
 प्यार करना, प्रेम करना, मानना, पसंद करना, मन  
 में माना, आवश्यकता होना, प्रयोजन पड़ना ।  
 चिअँ ( पु० ) हमखी का बीज ।

चिक ( पु० ) परदा, यवनिका, कमर में दर्द ।  
 चिकना ( सं० चिकण ) ( वि० ) थोटा हुआ, साक,  
 सुंदर, चपड़ा हुआ, स्निग्ध, तेज-सा, तेलमय,  
 चिकण, निर्लज्ज, येशरम, लंपट, चंचल ।  
 चिकनाई ( सं० चिकणता ) ( स्त्री० ) ओप, घोट, सँवार,  
 सफाई, चिकनाहट, चर्बी, चंचलता, चंचलाई ।  
 चिकना घड़ा घनना ( बोल० ) किसी की कुछ शिक्षा  
 न मानना, निर्लज्ज होना ।  
 चिकना चाँदा ( सं० चिकणचंद ) ( बोल० ) सुंदर,  
 मनोहर, सुहावना ।  
 चिकनिया ( पु० ) शौक्लिन, लंपट, छेला ।  
 चिकवा ( पु० ) मांस बेचनेवाली जाति ।  
 चिकारा ( पु० ) चोप, डरावना शब्द, सारंगी-विशेष ।  
 चिकित्सक ( चि०=इलाज करना, चंगा करना ) ( पु० )  
 वैद्य, हकीम, डाक्टर ।  
 चिकित्सा ( चि०=इलाज करना, चंगा करना ) ( स्त्री० )  
 औपच्य करना, इलाज, वैद्यक, रोग-प्रतीकार ।  
 चिकित्सालय ( चि०=मा + आलय ) ( पु० ) शिक्षा-  
 स्थाना, हॉस्पिटल ।  
 चिकित्साशास्त्र ( पु० ) इम डाक्टरी, तिबाबत ।  
 चिकोर्पा ( क०=करना ) ( स्त्री० ) करने की इच्छा,  
 आकांक्षा ।  
 चिकीर्षु ( वि० ) आकांक्षी ।  
 चिकुर ( चि०=कटा करना, या चि०=पेसा शब्द, क०=शब्द  
 करना ) ( पु० ) बाल, केश, घूँघर ।  
 चिकुला ( पु० ) बघा, बाछक ।  
 चिकोरना ( कि० स० ) चोंच से बिलेरना, चिलोरना ।  
 चिक ( वि० ) चिपटी नाकवाला, ( पु० ) बकरी, छुछूँ-  
 दर ।  
 चिकट ( वि० ) तेज़ी, मैज, कोट ।  
 चिकण ( वि० ) चिकना, स्निग्ध, ( पु० ) सुपारी, हब ।  
 चिकरना ( कि० स० ) चीखना, चिल्लाना ।  
 चिखुरन ( स्त्री० ) खेत निराने पर निकली हुई घास ।  
 चिगनी ( स्त्री० ) मुरगी का बच्चा ।  
 चिघाड़ ( सं० चित्कार, चि०=पेसा शब्द, क०=करना )  
 ( स्त्री० ) हाथी का शब्द ।  
 चिघाड़ मारना ( बोल० ) दर्द अथवा कष्टातिरेक से  
 तपना अथवा चिल्लाना ।

चिट ( स्त्री० ) टुकड़ा, लीर, धज्जी ।  
 चिटका ( पु० ) कुद हुआ, रेंदा ।  
 चिटकारा ( पु० ) अंक, दाग, छींटा ।  
 चिटुकी ( स्त्री० ) चुटकी, चिकोटी ।  
 चिट्टा ( वि० ) गोरा, रवेत, सफ़ेद, ( पु० ) रुपया, मुद्रा,  
 बड़ावा, भभकी ।  
 चिट्टी ( स्त्री० ) पाती, पत्ती, पत्रिका, खत, कागज़, पत्र ।  
 चिट्टीपत्री } ( पु० ) खिस्ना-पट्टी, चिट्टी का आना-  
 चिट्टीपाती } जाना, खत-किताबत ।  
 चिट्टीरसा ( पु० ) डाकिया ।  
 चिट्टिचिट्टा ( वि० ) खुनसाहा, झनझना, कर्कश, रिसाहा,  
 ( पु० ) एक पेड़ का नाम ।  
 चिट्टना ( कि० अ० ) खुनसाना, झुँझलाना, कुदना,  
 खिसियाना, झट क्रोध करना, चिट्टना ।  
 चिट्टिया } ( सं० चटक ) ( स्त्री० ) गौरिया, पखेरू,  
 चिट्टी } पत्नी ।  
 चिट्टीमार ( पु० ) चिट्टिया पकड़ने और मारनेवाला,  
 बहेलिया, व्याधा ।  
 चिट्टना ( कि० अ० ) अप्रसन्न होना, कुदना, बुरा मानना ।  
 चित ( सं० चित् ) ( पु० ) मन, बुद्धि, हृदय, अंतःकरण,  
 हिया, हिय, जो, सुध, स्मरण, स्मृति, याद  
 ( सं० चित्=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) चितवन, दृष्टि,  
 दोठ, नज़र, अवलोकन, समझ-बूझ, बोध, ज्ञान,  
 विचार, ( वि० ) पट, सीधा, अंटाक्षित, चित्तंग ।  
 चितकयरा ( सं० चितकयूर ) ( वि० ) रंग-विरंगा,  
 चितला, कबरा, रंग-रंग का ।  
 चित करना ( बोल० ) उलटाना, चित गिराना ( जैसे  
 कर्ता में ), जीतना, मात करना, हराना, परास्त  
 करना ।  
 चितलाय ( बोल० ) मनभावना, जो मन को अच्छा लगे ।  
 चितचेता ( बोल० ) मनमाना, मनचाहा ।  
 चितचोर ( बोल० ) मन हरनेवाला ।  
 चित देना ( बोल० ) ध्यान देना, मन लगाना ।  
 चितरना ( सं० चित्र ) ( कि० स० ) चीतना, रंग देना,  
 रँगना, चित्र करना ।  
 चित लगना ( बोल० ) मनोरंजन, मनभावना ।  
 चितला ( सं० चित्र, चित्र=रंग, ला=लेना ) ( वि० )  
 चितकबरा ।

चित्त लाना ( बोल० ) सचेत होना, तत्पर होना, मन लगाना, ध्यान देना ।

चित्तघन ( स्त्री० ) दृष्टि, नज़र, अवलोकन, फॉक, कटाक्ष ।

चित्तवना } ( कि० स० ) देखना ।  
चित्तना }

चिता ( चि=रकटा करना ) ( स्त्री० ) वह जगह जहाँ मुरदा जलाया जाता है, चिताखा, मसान, मरघट ।

चिताना } ( सं० चेतन, चित्=याद करना, सोचना )  
चित्तवना } ( कि० स० ) जताना, जतलाना, बताना,  
चौकस करना, झबरदार करना, सूचित करना, याद दिखाना, सचेत करना ।

चिति ( स्त्री० ) समूह, ढेर, राशि, जमात ।

चितेरा ( सं० चित्रकार ) ( पु० ) लकड़ी अथवा दीवार पर बेलबूटे खींचनेवाला, चित्र खींचनेवाला ।

चितौनी ( स्त्री० ) सूचना विज्ञापन, जताना ।

चित्कार ( पु० ) रेंकना, विलाप, चिल्लाहट, चीख मारना, चूहा, नेवला, छुईंदर ।

चित्त ( चित्=ज्ञानना या याद करना ) ( पु० ) मन, अंतःकरण, बुद्धि, हृदय, जी, चित्त, ज्ञान ।

चित्त उचटना ( पु० ) मन न लगना ।

चित्तताप } ( पु० ) मन का खेद, दिखी रंज ।  
चित्तोत्ताप }

चित्त पर चढ़ना ( मुहा० ) किसी समय न भूलना, दिख में लग जाना ।

चित्तविलोप ( पु० ) उद्विग्नता, व्याकुलता ।

चित्तविभ्रम ( पु० ) उन्माद, भ्रंति ।

चित्तवृत्ति ( स्त्री० ) चित्त की स्थिति ।

चित्त से उतरना ( मुहा० ) अनादृत होना, भूलना ।

चित्तल ( पु० ) एक प्रकार का हिरन ।

चित्ती ( स्त्री० ) धट्टा, बुंदकी ।

चित्या ( स्त्री० ) चिता, समाधिस्थान ।

चित्र ( चित्र=रङ्ग प्रकार के रंगों से रंगना, वा चित्=मन, त्रै=बचाना ) ( पु० ) तसवीर, बेल-बूटे, छवि, रूप, स्मृत, लेख, छिपि, यम, ( वि० ) अद्भुत, अनोखा, रंग-रंग का रंगा रंग, भाँति-भाँति का ।

चित्रकंठ ( चित्र=रंग-रंग का, कंठ=गला ) ( पु० ) कबूतर, कपोल ।

चित्रकर } ( चित्र=तसवीर, कृ=करना ) ( पु० ) चितेरा,  
चित्रकार } मुसग्विर ।

चित्रकारी ( चित्रकार ) ( स्त्री० ) चितेरे का काम, बेलबूटे बनाना, तसवीर बनाना, चित्र खिखना ।

चित्रकाव्य ( पु० ) वह काव्य जिसके अक्षर लिखने से चित्र बन जाय ।

चित्रकूट ( चित्र=प्रनोवां या भाँति-भाँति का, कूट=चोटी ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जो बुंदेलखंड में है, जहाँ श्रीरामचंद्र अपने वनवास के समय पहले-पहल रहे थे ।

चित्रगुप्त ( चित्र=लेख, गुप्त=बचाना वा चित्र लिखना छिपी हुई बात का ) ( पु० ) यम का नाम, यमराज का लेखक, जो मनुष्यों के पाप-पुण्य को लिखता है, कायस्थों का पुरखा ।

चित्रपट ( पु० ) चित्राधार, मूर्ति ।

चित्ररेखा } ( चित्र=तसवीर, लिख=लिखना ) ( स्त्री० )  
चित्रलेखा } ऊपा की सहेली, वायापुर के प्रधान कुम्मांड की वेदी ।

चित्रलिखित ( चित्र=तसवीर, लिखित=लिखा हुआ ) ( वि० ) आश्चर्यान्वित, स्तंभित, मूर्तिवन्, तसवीर में लिखा या बना हुआ ।

जैसे—“चित्र लिखित कपि देखि दराती”

—गो० तु० दा०

चित्रलोचना ( स्त्री० ) मैना, सारिका ।

चित्रविचित्र ( चित्र=रंग, विचित्र=रंग-रंग का ) ( वि० ) रंग-रंग का, नाना वर्ण का, अनेक रंग का ।

चित्रविद्यासार ( पु० ) उसूल नज़शाकशी, चित्र खींचने का मूल ।

चित्रा ( चित्र=रंगना ) ( स्त्री० ) चौदहवाँ नक्षत्र, श्रीकृष्ण की सखी ।

चित्राक्षी } ( चित्र=रंग रंग की आँख, या नेत्र, या लोचन=  
चित्रनेत्रा } आँख ) ( स्त्री० ) मैना पक्षी ।

चित्रांग ( चित्र=रंग-रंग का, अंग=शरीर ) ( पु० ) चितकबरा साँप, ईगुर, हरताल, चीता, एक पीढ़े का नाम, एक प्रकार का रंग, ( वि० ) चितकबरा, चित्रित, चित्र-विचित्र ।

चित्रावसु ( स्त्री० ) नक्षत्रयुक्त रात ।

चित्रिणी ( चित्र=रंगना ) ( स्त्री० ) दूसरे प्रकार की स्त्री,

चार प्रकार की स्त्रियों में एक प्रकार की स्त्री  
( १ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ हस्तिनी, ४ शंखिनी, ये  
चार प्रकार की गियाँ होती हैं ) ।  
चित्रित ( चित्र=रँगना ) ( वि० ) रँगा रंग, रँगा हुआ,  
चित्र किया हुआ, नाना वर्ण का, तमबीर खिचा  
हुआ, अद्भुत, अनोखा ।  
चित्रोक्ति ( स्त्री० ) अलंकृत भाषा में कहना, व्योम,  
आकाश ।  
चित्रड़ा ( पु० ) फटा कपड़ा, लत्ता, गुदड़ा ।  
चित्राङ्गना ( कि० स० ) लज्जित करना, नीचा दिखाना,  
अरमान करना ।  
चित्रोङ्गना ( कि० अ० ) फाड़ना, फाड़ मारना ।  
चिद् ( पु० ) जीवधारी, चैतन्य, सजीव ।  
चिदाकाश ( चित्=चैतन्य, अकाश यर्थात् आकाश के  
समान निर्बिकर अथवा स्वका आधार ) ( पु० ) ब्रह्म,  
शुद्धस्वरूप ।  
चिदात्मा ( पु० ) परमात्मा, ज्ञानमय आत्मा, ज्ञान-  
स्वरूप ।  
चिदानन्द ( चित्=ज्ञान वा चैतन्य, अनन्द=दर्श ) ( पु० )  
चैतन्य, ज्ञानानन्द, परमानन्द, ब्रह्म, परमेश्वर,  
परमात्मा ।  
चिद्रूप ( चित्+रूप ) ( पु० ) चैतन्यस्वरूप, तेजरूप ।  
चिनक ( पु० ) चुनचुनाहट, जलन-सहित दुर्द, मूत्रनली  
की जलन और पीड़ा ।  
चिनग ( पु० ) मूत्रकृच्छ्ररोग, जलन ।  
चिनगना ( कि० अ० ) टीसना, चिल्लाना ।  
चिनगारी ( स्त्री० ) चिनगी, लूका ।  
चिनचिनाना ( कि० अ० ) चिखाना, चीखना, आह  
मारना ।  
चिनिया ( वि० ) सक्रेद, छोटा ।  
चितन ( चिति=याद करना, सोचना ) ( पु० ) याद,  
स्मरण, सोचना, ध्यान, चिन्ता, विचार ।  
चिन्ता ( चिति=याद करना, सोचना ) ( स्त्री० ) सोच-  
विचार, भावना, ध्यान, याद, स्मरण, स्मृति, क्रिक्क,  
लटका, दुविधा, संदेह, सोच, डर, भय, त्रास ।  
चिन्ता की मुद्रा ( स्त्री० ) शोच की दशा, क्रिक्क की  
हालत ।  
चिन्तामणि ( चिन्ता=सोची हुई 'बस्तु देनेवाली', मणि=रत्न )

( स्त्री० ) एक प्रकार का मणि, पारस, भँवरीवाला  
घोड़ा ।  
चिन्तावेष्ट ( पु० ) गोछीगृह, मंत्रणागृह ।  
चिन्तित ( चिति=सोचना ) ( वि० ) चिन्ता करता हुआ,  
सोची, भावित, क्रिक्कमंद, उदास, व्याकुल ।  
चिन्थाड़ मारना ( बोल० ) चिन्कारना, चिन्वाड़ना, हाथी  
का शब्द करना ।  
चिन्दी ( स्त्री० ) कागज या कपड़े का टुकड़ा ।  
चिह्न ( चिह्न=चिह्न करना ) ( पु० ) संकेत, निशान,  
पहचान, लक्षण, अंक, दाग ।  
चिह्नानी ( स्त्री० ) निशानी, सहिदानी, पहचान का  
चिह्न ।  
चिन्हार ( वि० ) जान-पहचान, परिचित ।  
चिन्हारी ( स्त्री० ) परिचय, पहचान, निशानी ।  
चिह्नित ( वि० ) अंकित, संकेतित, दागी ।  
चिपकना ( कि० अ० ) लिपटना, चिमटना, सटना ।  
चिपचिपा ( वि० ) लसलस, चिपचिपा ।  
चिपटा ( वि० ) ब्रेठा हुआ, पचका हुआ ।  
चिपड़ी ( स्त्री० ) कंडी, उपरी, गोहरी, चिपरी ।  
चिप्पी ( स्त्री० ) पेवंद, टिकरी, धेकरी ।  
चिचुक } ( चिचू=ढकना, या बोलना ) ( स्त्री० ) डुङ्गी,  
चिचुक } ठोड़ी ।  
चिमटना ( कि० अ० ) लिपटना, चिपकना, प्रगाढ़ आ-  
लिंगन करना ।  
चिमटा ( पु० ) चुमटा, मोंचना, स्पूठा ।  
चिमड़ी ( वि० ) कड़ी अथवा कड़ा, सूखी हुई ।  
चिर } ( चि=इच्छा करना ) ( वि० ) बहुत काज,  
चिरम् } बहुकालीन, बहुत दिन का, बहुत दिन तक ।  
चिरई ( स्त्री० ) चिड़िया, पक्षी, पंछी ।  
चिरकना ( कि० अ० ) थोड़ा-थोड़ा हगना ।  
चिरकारी ( वि० ) आलसी, दीर्घसूत्री ।  
चिरकाल ( पु० ) बहुत देर, विलंब, अतिकाल ।  
चिरकुट ( पु० ) चिथड़ा, गुदड़, फटा-पुराना बख ।  
चिरंजी ( सं० चिरंजीवी ) ( वि० ) बहुत समय तक  
जीनेवाला, दीर्घायु ।  
चिरंजीवी } ( चिर=बहुत समय तक, जीवी=जीनेवाला,  
चिरंजीवी } जीव=जीना ) ( वि० ) चिरंजी, बिष्णु, काक,  
जीवकवृक्ष, शाकम्बी-वृक्ष, मार्कण्डेयमुनि, अश्व-



स्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृप और परशुराम, ये चिरजीवी हैं ।

चिरंटी ( स्त्री० ) युवती, पिता के घर रहनेवाली जवान स्त्री ।  
चिरना ( पु० ) चीरने का औज़ार, ( कि० अ० ) फटना, लोथ में फटना ।

चिरवाधित ( वि० ) एहसानमंद ।

चिरंतन ( वि० ) पुराना, प्राचीन, पुरातन ।

चिरस्थायी ( पु० ) दवामी, हमेशगी, चिरकाल तक रहनेवाली ।

चिराग ( पु० ) दीपक, दिया, प्रदीप ।

चिराग गुल पगड़ी सायब ( पहा० ) मौक़ा मिलते ही धन का अपहरण ।

चिराग तले अंधेरा ( पहा० ) ऐसे स्थान पर घुआई का होना जहाँ उसके रोकने का पूरा प्रबंध हो ।

चिरात् ( अव्य० ) अतः से, बहुत काल से ।

चिरु ( पु० ) रंध और बाँह का जोड़, मोटा ।

चिरैया ( स्त्री० ) चिड़िया, वर्ष का पुष्प-नक्षत्र ।

चिरौंजी ( स्त्री० ) एक प्रकार का मेवा ।

चिरौरी ( स्त्री० ) खुशामद, प्रार्थना, विनती ।

चिलकना ( सं० चल्=चमकना ) ( कि० अ० ) चमकना, झलकना ।

चिलगोज़ा ( पु० ) मेवा-विशेष ।

चिलचिल ( स्त्री० ) श्रबरक, अभ्रक ।

चिलचिलाना ( कि० अ० ) शोर मचाना ।

चिलड़ाहा ( वि० ) जुआँ से भरा हुआ, जुगंजा, चिल्लर-भरा ।

चिलबिला ( वि० ) नटखट, चपल, शैतान ।

चिलम ( स्त्री० ) मिट्टी की बनी हुई चाँज़ जिसमें तंबाकू डालकर पीते हैं ।

चिलमची ( स्त्री० ) हाथ धोने का बरतन, छोटी पतली चिलम ।

चिलमन ( स्त्री० ) चिक, परंदा ।

चिलमवरदार ( पु० ) हुक़्का पिलानेवाला नौकर, चिलम चढ़ानेवाला ।

चिल्लड़ ( पु० ) खोलर, जूँई, ढोल ।

चिल्ला ( पु० ) चाबोस दिन का घन या जाड़ा, धनुष की ढोरी, उया, पगड़ी का छोर जो कन्नाबत्त का होता है, वृक्ष-विशेष ।

चिल्लाना ( सं० चित्कार ) ( कि० अ० ) पुकारना, ज़ोर से बोलना, चीखना ।

चिल्ली ( स्त्री० ) बथुआ का साग, वज्र, लोभ, अड़े का बना भोजन-विशेष ।

चिलहवाड़ा ( पु० ) पेड़ों पर चढ़कर खेला जानेवाला लड़कों का एक खेल ।

चिलहाना ( कि० अ० ) तंग होना, विरक्त होना ।

चिह्नकना ( कि० अ० ) सनसनाना, खहकना, पक्षियों का बोलना ।

चिहुर ( पु० ) बाल, केश, चिकुर ।

चिहुँकना ( कि० अ० ) चौंकना ।

चिहुँटना ( कि० स० ) चुटकी काटना, लिपटना ।

चींचपड़ ( स्त्री० ) किसी घड़े या सबल के सामने प्रती-कार या विरोध में किया जानेवाला कार्य ।

चीखर ( पु० ) कीच, गारा ।

चीखुर ( स्त्री० ) गिलहरी ।

चींटी } ( सं० चिट्ठी ) ( स्त्री० ) कीड़ी, चेंबटी ।  
चींवटी }

चीतना ( सं० चित्र ) ( कि० स० ) चित्र करना, रँगना, चित्रकारी करना, चित्र उतारना, रंग देना, ( सं० चित्रन ) चाहना, सोचना ।

चीतल ( सं० चित्रन, चित्र=रंग, ल=लेना ) ( पु० ) तेंदुवा, चीता, ( वि० ) चितकबरा ।

चीता ( सं० चित्रक, चित्र=रंग ) ( पु० ) तेंदुवा, चीतल, एक पौधे का नाम, ( सं० चेतना ) चाह, समझ, बुद्धि, विचार, ( चीतना ) रँगना, रंग देना ।

चीत्कार ( पु० ) चिल्लाहट, पुकार, चिघाड़ ।

चीथना ( कि० स० ) चिथेड़ना, बकौटना, फाड़ना ।

चीन ( वि० देश का नाम ) ( पु० ) एक देश का नाम, एक प्रकार की घास, एक प्रकार का कपड़ा, भंडा, सूत, सीसा, रेशमी वस्त्र ।

चीनी ( सं० चीनीय ) चीनदेश की, अर्थात् जो कदाचित् चीन-देश से इस देश में पहले-ही-पहले आई हो, ( स्त्री० ) बहुत अच्छी और साफ़ शकर, ( वि० ) चीन-देश का, चीन-देश-संबंधी ।

चीन्हना ( सं० चिह्न=चिह्न करना ) ( कि० स० ) पहचानना, जानना ।

चीपड़ ( पु० ) आँख का कीचड़ ।

चाय (चि=इच्छा काना) (पु०) प्राप्ति, ग्रहण, धारण,  
(वि०) लेनेवाला, पहरनेवाला, (स्त्री०) किल्ली,  
झींगुर।

चीर (चि=इच्छा करना) (पु०) कपड़ा, वस्त्र, साड़ी,  
खोच, वृक्ष की छाल, गौ का थन, पक्षी-विशेष।

चीरना (कि० स०) फाड़ना, विदारना।

चीर निकलना (बोल०) सेना के बीच में होकर निकल  
जाना, सेना की कतार को छिन्न-भिन्न कर ढालना।

चीरा (सं० चीर) (पु०) पगड़ी, काट, फाड़, घाव,  
गाँव की सीमा का पथर।

चीरा उतारना (कि० स०) किसी पुरुष का किसी स्त्री  
के साथ प्रथम समागम।

चीराबंद (पु०) चीरा बाँधनेवाला, (वि०) कुमारी।

चीरि (पु०) झींगुर, पत्तक, घोड़ों के आँख पर बाँधने  
की श्रृंखलारी।

चीर्य (वि०) प्राचीन, प्रतीक, पुराना, फटा हुआ।

चीर्यपर्ण (पु०) नींबूवृक्ष, प्राचीन पत्र, पुराना पत्ता,  
खजूर का वृक्ष।

चील (सं० चिल, चिर=ढोला होना) (स्त्री०) एक  
पक्षरु का नाम।

चीलभण्डा मारना (बोल०) छीनना, छीन लेना,  
भण्ड लेना।

चीलर } (स्त्री०) जूँ, गूँ, डील।  
चीलहड़ }

चीवर (पु०) प्राचीन वस्त्र, जर्ण वस्त्र, फटा वस्त्र,  
चिथड़ा, प्राचीन, पुराना, कपोन, ब्रीढ़ संन्यासियों  
के पहनने का वस्त्र।

चुआन (सं० चु=जाना, भ्रमना) (स्त्री०) कोट के आस-  
पास की गहरी खाई जिसमें पानी भरा रहता है,  
कुँड, अज्ञाशय, नहर, गुहा, सोता।

चुआना (कि० स०) टपकाना, निकालना।

चुकता (वि०) सफाई, बेशक।

चुकना (कि० अ०) समाप्त होना, सतप्त होना, अस-  
फल होना, व्यर्थ होना।

चुकाना (चुकना) (कि० स०) निपटाना, पूरा करना,  
मोज ठहराना।

चुकिया (स्त्री०) कुहिय्या।

चुकौता (पु०) निपटारा, चुकता।

चुकड़ (पु०) पुरवा, कुहिय्या।

चुकार (पु०) गरजन, गर्जना।

चुकी (स्त्री०) धोखा, छद्म, कपट।

चुक (पु०) खट्टा का वृक्ष, चूक, सिरका, (वि०) खट्टा,  
अम्ल, अमलबेत।

चुखाना (कि० अ०) गाय लगाना, दूध दुहने के पहले  
बछड़े को दूध पिलाना।

चुगना (कि० स०) चोंच से खाना, चरना, खाना,  
चुनना, बीनना, ढूँगना।

चुग लेना (बोल०) छोटना, बराय लेना, चुन लेना,  
पसंद करना।

चुगुलखोरी (स्त्री०) चुगली खाना, निंदा करना, पीठ  
पंछे झूठी शिकायत।

चुंगी (स्त्री०) महमूल का इनना अनाज जितना कि  
हाथ में समावे जो कि अनाज के व्योपारियों से  
सदा उगाहा जाता है।

चुचक (पु०) स्तनाप्रभाग, कुवाप्रभाग, चूँची की घुंघी।

चुचकारना (कि० अ०) पुचकारना, प्यार करना।

चुचाना (कि० स०) टपकना, चूना।

चुचि (पु०) स्तन, कुच, चूँची।

चुचुकना (कि० अ०) दुर्बल होकर सूख जाना।

चुन (स्त्री०) चोंच, ठोर।

चुटकना (कि० स०) चुटकी से तोड़ना, चाबुक से  
मारना।

चुटकी देना (महा०) चुटकी बजाना।

चुटकी लेना (महा०) हँसी उड़ाना।

चुटकी वजाते (महा०) शीघ्र, बहुत जल्द।

चुटकी बैठना (महा०) अभ्यास होना।

चुटकी वजानेवाला (महा०) सुशामदी।

चुटकुला (पु०) चुहुल, परिहास, हँसी, टडोली, हँसो  
की बात, आनंद, रस।

चुटफुट (वि०) फुटकर वस्तु।

चुटला (पु०) चुटिया, जुड़ा, चोटो, (वि०) चुटीला।

चुटाना (कि० स०) चुटैल होना, घाव लगना।

चुटिया (पु०) चोरों का भेद जाननेवाला, (स्त्री०) शिखा।

चुड़ीहारा (पु०) चूड़ी बनाने और बेचनेवाला।

चुड़ैल (स्त्री०) डायन, प्रेतनी, डाकिनी, फूहड़ स्त्री,  
मैली-कुचैली स्त्री।

चुनत ( चुनना ) ( स्त्री० ) चुनन, परत, उत्तू, घड़ी, पुट, तह ।

चुनना ( कि० स० ) चुगना, इकट्ठा करना, बीनना, छाँटना, बराय लेना, पसंद करना, बटोरना, इति-खाव करना, अपनी-अपनी जगह पर रखना, सजाना, ठीक-ठाक करना, तह जमाना, कपड़ों की धड़ी बनाना ।

चुनरी ( स्त्री० ) एक तरह का रँगा हुआ कपड़ा जिसमें कई तरह के रंग होते हैं ।

चुना हुआ ( वि० ) सुतखिब ।

चुनौती ( स्त्री० ) सौगंद, क्रसम, जलकार ।

चुंदी ( स्त्री० ) कुटनी, दूती ।

चुंधना ( वि० ) तिरभिरा, चकचूँधा ।

चुन्नी ( स्त्री० ) छाज ।

चुप ( वि० ) मौन, अनबोल, अवाक्, ( वि० बो० ) चुप रहो, मत बोखो ।

चुपचाप ( बोल० ) चुप, अनबोल ।

चुपड़ना ( कि० स० ) चिकना करना, चिकनाना, घी अथवा तेल लगाना, तेल मलना ।

चुप्पा ( वि० ) कम बोखनेवाला ।

चुभकी ( स्त्री० ) डुबकी, गोता ।

चुभना ( कि० अ० ) छिदना, घुसना, पैठना, पार होना, धसना, गड़ना ।

चुमाना ( कि० स० ) दूसरे से चुम्मा खिचाना ।

चुंबक } ( चुंबि=चूमना ) ( पु० ) चुंबक पत्थर जो  
चुंबकी } लोहे की खींचता है, चूमनेवाला, थोड़ा थोड़ा पदके जोड़नेवाला ।

चुंबन ( चुंबि=चूमना ) ( पु० ) चूमना, चूमा, बोसा, चूमा लेना ।

चुंबित ( वि० ) चूमा हुआ, बोसा लिया गया ।

चुर ( पु० ) माँद, बाघ आदि के रहने का स्थान, बैठक, कागज, सूखे पत्ते आदि के मुड़ने वा टुटने का शब्द ।

चुरकना ( कि० अ० ) बोलना, चहचहाना, चटकना, चूर होना ।

चुरकी ( स्त्री० ) चोटिया, शिखा, चोटी ।

चुरकुट ( कि० वि० ) चकनाचुर, चूरचूर ।

चुरना ( कि० अ० ) सीकना, पकना ।

चुरमुरा ( वि० ) करारा ।

चुरस ( स्त्री० ) सिकुड़न, सिलवट ।

चुराना ( सं० चोरण, चुर=चुराना ) ( कि० स० ) चोरी करना ।

चुरिला ( पु० ) काँच का मोटा टुकड़ा जिसमें खड़े तल्ली या पट्टी रगड़कर चमकाते हैं ।

चुरी ( सं० चूड़ा ) ( स्त्री० ) चूड़ी ।

चुरुगना ( कि० अ० ) बकना, बड़बड़ाना ।

चुर्त ( स्त्री० ) तंद्रा, आलस, ऊँघ ।

चुल ( स्त्री० ) खुजलाहट, खज, खुजली ।

चुलचुला ( वि० ) चंचल, रंगीला, चतुर, नटखट, चपल, चुलहाई, ( वि० ) कामातुर, लंपट, व्यभिचारी ।

चुलाना ( कि० स० ) चुबाना, टपकाना ।

चुलुक ( पु० ) चुल्लू, दलदल, कीचड़ ।

चुल्ल ( चुल्ल=चालना, चलना ) ( पु० ) प्रकाश, उजाळा, जिसके नेत्र में कीचड़ भरा है, चल्हा, ( स्त्री० ) चिंता, उद्धारना ।

चुल्लि ( स्त्री० ) चूल्ही, चूल्हा ।

चुल्लू ( सं० चुलुक, चुल्ल=इकट्ठा करना वा होना ) ( पु० ) लप भर, मुट्ठी भर, बुका, दोनों हाथों को इस तरह मिलाकर कि उसके बीच में पानी रह सके ।

चुल्लू भर पानी में डूब मरना ( बोल० ) बहुत ही बहुत खजाना ।

चुल्लू में उल्लू होना ( बोल० ) चुल्लू भर नशे में मस्त होना ।

चुल्लुओं रोना ( मुहा० ) बहुत रोना, बहुत आँसू गिराना ।

चुल्लुओं लह पीना ( मुहा० ) बहुत सताना ।

चुल्लू में समुद्र न समाना ( मुहा० ) छोटे पात्र में बहुत वस्तु न आना, कुपात्र या क्षुद्र मनुष्य से कोई बड़ा या अच्छा काम न हो सकना ।

चुसकी ( स्त्री० ) पानी का घूँट, मुँह भर पानी, मद्य पीने का पात्र, प्याला ।

चुस्त ( वि० ) कसा हुआ, तत्पर, फुरतीला ।

चुहड़ा ( पु० ) भंगी, चांडाल ।

चुहल ( स्त्री० ) हँसी, विनोद, हर्ष, हुलास, ठट्ठा ।

चुहुल करना ( बोल० ) आनंद करना, हँसी-खशी करना, विनोद करना ।

सुहला ( वि० ) ममसरा, ठोड़िया !

सूक ( वृत्ता ) ( स्त्री० ) भूल, खोट, दोष, भ्रम, अपराध ।

सूक ( सं० सूक, सूक=सूत होना ) ( वि० ) खटा ।

सूकना ( कि० अ० ) भूलना, भूल करना, बिसरना, अशुद्ध करना ।

सूका ( वि० ) भूला, भटका ।

सूची { ( सं० सूचक, सूच=सूच पाना या सूचना ) ( स्त्री० ) स्तन, धन, कुच, छाती ।

सूडा ( स्त्री० ) चोटी, चुटिया, शिखा, भुट्टया, मयूर के सिर की चोटी, प्रधान कुश्रों, कैंकहा, चिठरा, बाँह का अलंकार ।

सूडाकरण ( सूडा=चोटी, करण=करना ) ( पु० ) मुंडन ।

सूडामणि ( सूडा=चोटी, मणि=मूल ) ( स्त्री० ) स्त्रियों के चोटी में पहनने का गहना, चोटी की मनी ।

सूड़ी { ( सं० सूडा, सूत=इतना होना ) ( स्त्री० ) स्त्रियों चूरी { के हाथ में पहनने की काच आदि की बनी हुई चूड़ियाँ ।

सूत { ( पु० ) आश्रय, क्षरण, खाव, वहन, टपना, चूनेक { ( स्त्री० ) योनि, भग ।

सूतड़ ( पु० ) सूतर, नितंब, पुट्टा ।

सूतिया ( वि० ) मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ ।

सूतियाचक्र ( वि० ) पक्का बेवकूफ ।

सूतियापंथी ( स्त्री० ) मूर्खता, नासमझी ।

सूत ( सं० सूत ) ( पु० ) आटा, चूना, पिसान ।

सूना ( सं० सूयन, सूय=ज्ञाना ) ( कि० अ० ) टपकना, रसना, झरना, ( सं० सूय ) ( पु० ) चूत, एक चीज जिससे मकान बनाए जाते हैं ।

सूनादानी ( स्त्री० ) चुनौती ।

सूना लगाना ( बोल० ) बदनाम करना, खूब धोखा देना ।

सूनी ( स्त्री० ) कराई, भूमी, अन्न की खुहो ।

सूभ ( पु० ) दर्द, टीस, व्यथा ।

सूमना ( सं० सुम्बन ) ( कि० अ० ) चूमा लेना, बोसा लेना ।

सूमा ( सं० सुम्बन ) ( पु० ) चुम्बा, बोसा, मिट्टो ।

सूमाचाटी ( बोल० ) दुखार, प्यार, रंग, रस,

चूर ( सं० चूर्ण ) ( पु० ) बुकनो, भुरभुरा, चूर्ण, रेतन, ( वि० ) चूर किया हुआ, निमग्न, तन्मय ।

चूर-चूर ( बोल० ) टूक टूक, खंड-खंड ।

चूर रहना ( बोल० ) मस्त रहना, डूबा रहना, निमग्न रहना ।

चूर करना ( बोल० ) टुकड़े-टुकड़े करना ।

चूर होना ( बोल० ) टुकड़े-टुकड़े होना, किसी के प्यार में फँसना, अत्यंत प्यार या स्नेह करना, धकना ।

नशे में चूर होना ( बोल० ) मस्त होना, मतवाला होना ।

चूरण { ( सं० चूर्ण ) ( पु० ) पाचक, औषध जिससे चूर्ण { खाना पचता है ।

चूरमूर ( पु० ) जव, गेहूँ आदि के पीधों की चूड़ियाँ ।

चूरा ( सं० चूर्ण ) ( पु० ) रेतन, चूर ।

चूर्ण ( चूर्ण=पीसना, बुकनी करना ) ( पु० ) बुकनी, रेतन, चूर, चूरा, धूलि, चूरन, एक पाचक औषध ।

चूर्णन ( पु० ) पीसना ।

चूर्णक ( चूर्ण+प्रक ) ( पु० ) पीसनेवाला ।

चूर्णित ( चूर्ण+इत ) ( वि० ) पीसा हुआ ।

चूर्नी ( सं० चूर्ण ) ( कि० अ० ) टुकड़े-टुकड़े करना ।

चूर्मी ( सं० चूर्ण=चूरना ) ( पु० ) एक प्रकार का सीठा खाना ।

चूल ( पु० ) लकड़ी का जोड़ वा कील जिस पर किंवाड़ फिरता है, रीछ का बाज, चोटी, शिखा ।

चूलिका ( स्त्री० ) हाथी की कनपटी, हाथी के कान का मैल, खंभे का ऊपरी भाग, किसी घटना या विषय की परोक्ष से सूचना ।

चूल्हा ( सं० चूली ) ( पु० ) आग रखने की जगह ।

चूपक ( चूप+प्रक, चूप=चूसना ) ( पु० ) चूसनेवाला ।

चूपण ( पु० ) चूसना ।

चूपित ( वि० ) चूसा हुआ ।

चूसना ( सं० चूप=चूपना ) ( कि० अ० ) पी लेना, सोखना, चघोड़ना ।

चूहड़ ( पु० ) भंगी, मेहतर, चांडाल ।

चूहा ( पु० ) मूसा, मूषिक ।

चेअर ( पु० ) बैठने की कुर्सी ।

चेउरी ( पु० ) कुम्हार का वह डोरा जिससे वह चाक से बरतन अलग करता है ।

चेचक ( स्त्री० ) शीतला नाम की बीमारी ।

चेचकरू ( वि० ) वह जिसके मुँह पर चेचक के दाग हों ।

चेजा ( पु० ) छोटा सूराम्र ।

चेंचर ( वि० ) बकवादी, बक्की ।

चेट ( पु० ) नौकर, दास, गुलाम, कुटना, पति, भाँड़, भेंदुआ ।

चेटक ( पु० ) नौकर, दूत, चटक-मटर, चाट, चसका, मज्जा, क्रुरती, जाकू या इंद्रजाख-विद्या, नजरबंदी का तमाशा ।

चेटका ( स्त्री० ) मरघट, रमशान, चिता ।

चेटकी ( पु० ) जादूगर, इंद्रजाखी, कौतुकी ।

चेटिका ( स्त्री० ) दासी, सेविका ।

चेडक ( पु० ) शिष्य, चेला, दास, श्रुत्य ।

चेत ( सं० चेतस्, चित्=सोचना ) ( पु० ) सुध, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानी, चौकशी ।

चेतन ( चित्=सोचना ) ( पु० ) जीव, आत्मा, प्राण, ज्ञान, बुद्धि, विचार, विवेक, समझ, ( वि० ) चेतन्य, जीता हुआ, सचेत, प्राणी ।

चेतना ( चित्=सोचना ) ( स्त्री० ) बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

चेतना ( सं० चेतन ) ( कि० २० ) याद करना, स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, चेत में आना, होश में आना ।

चेता ( सं० चित्त ) ( पु० ) चित्, चेत, मन, उपदेशक, ज्ञानदाता ।

चेतावनी ( स्त्री० ) सावधान होने की सूचना ।

चेतौनी ( स्त्री० ) वह बात जो किसी को होशियार करने की कही जाय ।

चेप ( पु० ) छस, चिपचिपाहट ।

चेपना ( कि० स० ) साटना, छगाना, चिपटना ।

चेप ( वि० ) संग्रहणीय ।

चेरा ( सं० चेड वा चेट, चिट्=भेजना ) ( पु० ) नौकर, दास, चाकर ।

चेरी ( स्त्री० ) दासी ।

चेल ( पु० ) वख, कपड़ा ।

चेलहाई ( स्त्री० ) शिष्य-मंडली ।

चेला ( सं० चेड वा चेट, चिट्=भेजना ) ( पु० ) शिष्य, विद्यार्थी, दास ।

चेवली ( स्त्री० ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

चेष्टक ( चेष्ट+प्रक ) ( पु० ) बलकारी, उद्योगी, तद्विरी ।

चेष्टा ( चेष्ट=परिश्रम वा यत्न करना ) ( स्त्री० ) बल, उद्यम, परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का व्यापार ।

चेहरा ( पु० ) बदन, शक्ल, मुखड़ा, मुँह पर लगाने का मिट्टी या कागज़ का बना देव या दानवों का मुखड़ा ।

चेंटा ( पु० ) काजा चोंटा ।

चैत ( सं० चैत ) ( पु० ) एक महीने का नाम ।

चैतन्य ( चेतन ) ( पु० ) जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्म, बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, ( वि० ) सचेत, चेत में, चौकस, सज्जन, चेतन, सुचेत ।

चैती ( स्त्री० ) चैत्र में काटी जानेवाली ऋतु, राम-विशेष ।

चैत्र ( चित्रा एक नक्षत्र का नाम ) ( पु० ) चैत, हिंदुओं के बरस का बारहवाँ महीना जिसमें पूरा चाँद चित्रा-नक्षत्र के पास रहता है और उस महीने की पूर्णमासी के दिन चित्रा-नक्षत्र होता है ।

चैत्ररथ ( पु० ) कुवेर का बाग ।

चैन ( पु० ) सुख, आराम, आनंद, हर्ष ।

चैला ( पु० ) चीरी लकड़ी, जलावन ।

चोआ } ( पु० ) सुगंधित चोज़, अर्गजा ।  
चोआ }

चोआड़ ( पु० ) पहाड़ी डाँकू ।

चोकर ( पु० ) आटे की भूमी, सीटी ।

चोखा ( वि० ) साक, सचा, खरा, अच्छा, तीखा, तीक्ष्ण ।

चोगा ( पु० ) चारा, चिड़ियों का खाना, कामदार जामा ।

चोंगा ( पु० ) बाँस या कागज़ की पोखी नली, जो एक नरक बंद और दूसरी ओर खुली रहती है ।

चोंगी ( स्त्री० ) भाथी की वह नली जिससे हवा बाहर निकलती है ।

चोचला ( पु० ) खिलवाड़, मान, नज़रा, मीठी बातें, प्यारी बातें, भोखी बातें, हाव-भाव ।

चोज ( पु० ) दूमरों को हैंसानेवाली युक्ति, सुभाषित,  
व्यंग्य-पूर्ण उपहास ।

चोंच ( पु० ) चंचु, टोर ।

चोट ( पु० ) मार, पीट, चपेट, मुक्का, धूँसा, धक्का,  
आघात, पछाड़ ।

चोट खाना ( बोल० ) पिटना, मार खाना, नुकसान  
उठाना ।

चोट पर चोट ( बोल० ) दुख पर दुख, एक विपत् पर  
दूसरी विपत् का आना ।

चोटा ( पु० ) गुब्ब का मैल ।

चोट्टा ( सं० चोर ) ( पु० ) चोर ।

चोंटला ( पु० ) चुटीला, चँबरा, बाल गूँथने की डोरी ।

चोटी ( सं० चूड़ा, चुलू=कट्टा होना ) ( स्त्री० ) शिखा,  
सिर के पिछले बाल, शिखर, पहाड़ का श्रृंग ।

चोटी आसमान पर घिसना ( बोल० ) बहुत घमंडी  
होना, बहुत अभिमान करना ।

चोटीकट ( बोल० ) दाम, शिष्य ।

चोटी कटवाना ( बोल० ) दास होना, शिष्य होना ।

चोटी किसी की हाथ में आना ( बोल० ) किसी पर  
अधिकार रखना, किसी को वश में करना, दबाना,  
नवाना ।

चोटीपोटी ( स्त्री० ) बनावटी बान, लल्लो-पत्तो ।

चोड़ ( पु० ) स्त्रियों की कुरती, अँगिया ।

चोंड़ा ( पुं० ) जुड़ा, बाल का जुड़ा ।

चोपना ( कि० श्र० ) मुग्ध होना, मोहित होना, आसक्त  
होना ।

चोपकारी ( स्त्री० ) जरदोजी का काम ।

चोभा ( पु० ) पीटली जिससे आंगव सँकते हैं ।

चोर ( पु०=चोरी करना ) ( पु० ) चोट्टा, चोरी करनेवाला,  
ठग, लुटेरा, तस्कर ।

चोरकट ( पु० ) चौड़े, उचक्का, चोर ।

चोरखाना } ( बोल० ) छिपा हुआ मकान, एकांत घर,  
चोरघर } गुप्तघर, तहखाना ।

चोरगली ( स्त्री० ) पतली और तंग गली ।

चोरचकार ( बोल० ) चोर ।

चोरमहल ( पु० ) वह मकान जिसमें राजे-महाराजे  
और रईस अपनी प्रेमिका को रखते हैं ।

चोररस्ता ( बोल० ) छिपी राह, गुप्त राह, पगडंडी, लोक ।

चोर लगना ( बोल० ) बिगाड़ होना, हानि होना, नुक़-  
सान उठाना ।

चोरी ( सं० चौर्य, चोर, पु०=चोरी करना ) ( स्त्री० ) चुराने  
का काम, डकैती, ठगी ।

चोलना ( पु० ) साधु के पहनने का ढीला-ढाला लंबा  
कुरता ।

चोली ( चुलू=कट्टा होना ) ( स्त्री० ) अँगिया, काँचुकी ।

चोया ( पु० ) अगंजा, सुगंधित द्रव्य ।

चोप ( पु० ) रोग-विशेष ।

चोपण ( पु० ) चूसना ।

चोसा ( पु० ) लकड़ी रेतने की रेतो-विशेष ।

चौ ( सं० चतुः=चार ) ( वि० ) चार, चौपहल, ( पु० )  
हल का फाल ।

चौअन्नी ( चौ=चार, आना ) ( स्त्री० ) चारआनी, सूकी,  
चार आना ।

चौआ ( पु० ) चौपाया, गाय, बैल, भैंस, आदि पशु,  
चार श्रृंगुल की माप ।

चौआना ( कि० श्र० ) चकमकाना, चकित होना,  
विस्मित होना, घबराना ।

चौक ( पु० ) बाज़ार, हाट, गुदड़ी, आटे की वेदी, पेठ,  
नगर का चौराहा, चौहटा, आँगन, अँगना ।

चौकड़ा ( पु० ) दो मोती का बाज़ा ।

चौकड़ी ( स्त्री० ) कूद, फाँद, फलंग, उछल ।

चौकड़ी भरना ( बोल० ) कूदना, फाँदना,  
उछलना ।

चौकड़ी भूलना ( बोल० ) मोह जाना, मोह में आना,  
भूला-सा रह जाना, होश ठीक न रहना ।

चौकड़ी मार बैठना ( बोल० ) उकड़ बैठना, सिमट  
बैठना, सुकड़ बैठना, चार जानू बैठना ।

चौकड़ा ( वि० ) सावधान, सचेत, चौकस, कर्तूना ।

चौकस ( वि० ) सावधान, सचेत, चाबाक, कर्तूना ।

चौका ( पु० ) रसोई, वह जगह जहाँ हिंदू खाना पकाते  
और खाते हैं, चौकोनी चोज़, चौकोनी जगह, आगे  
के चार दौत ।

चाको ( स्त्री० ) कुर्पा, पीड़ा, चौकोनी काठ की बनी हुई  
चोज़, रखवाली, चौकसी, पहरा, आना जहाँ चौक-  
दार और पहरेदार रहते हैं, एक गहना जिसको  
गले में पहनते हैं ।

चौकीदार ( वि० ) चौकी देनेवाला, पहरा देनेवाला,  
पहरा।

चौकीदारी ( स्त्री० ) चौकीदार का काम, चौकीदार की  
मजदूरी, चौकीदारी, टिकस।

चौकी देना ( बोल० ) रखवाली देना, पहरा देना।

चौकी मारना ( बोल० ) चोरी से महसूली वस्तु खाना  
या भोजना, घाट मारना, महसूल चुराना।

चौके ( पु० ) चकले, पवित्र लीपा हुआ स्थान।

चौकोना } ( सं० चतुष्कोण ) ( वि० ) चौखूँटा, चार  
चौकोर } कोना।

चौखट } ( सं० चतुष्कष्ट ) ( स्त्री० ) दरवाजे का ढाँचा।  
चौकट }

चौखना ( वि० ) चार खंडवाला, चार मंजिला।

चौखा ( पु० ) वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमा  
मिले।

चौखूँटा ( सं० चतुष्कोण ) ( वि० ) चौकोर, चौकोना।

चौगड़ा ( पु० ) खरगोश, खरहा।

चौगान ( पु० ) मैदान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगानी ( स्त्री० ) सटक, हुके की नली।

चौगुणा } ( सं० चतुर्गुण ) ( वि० ) चार गुना, चार बार  
चौगुना } किया हुआ।

चौगड़ा ( पु० ) चार खानेवाला बर्तन, गुजरातो  
लाची।

चौड़ा ( वि० ) फैला हुआ, विशाल।

चौड़ाचकला ( बोल० ) चिपटा, फैलाऊ, विस्तृत,  
फैला हुआ, चौड़ा।

चौतनी ( स्त्री० ) चौगोशिया टोपी।

चौतरका ( पु० ) रावटो, तंबू।

चौतरा ( पु० ) चबूतरा।

चौतही ( स्त्री० ) चार तह का मोटा बिछौना।

चौतारा ( पु० ) चार तार का बाजा।

चौताल ( स्त्री० ) एक रागिणी का नाम, मृदंग का  
एक ताल।

चौथ ( सं० चतुर्थी ) ( स्त्री० ) चौथी तिथि, ( सं  
चतुर्थी ) चौथा हिस्सा, कर अथवा खिराज जो  
मराठे उगाहा करते थे।

चौथपन ( स्त्री० ) बुढ़ापा, बुढ़ई।

चौथा ( सं० चतुर्थ ) ( वि० ) चतुर्थ।

चाथिया ( स्त्री० ) चौथे दिन खानेवाला उवर, चतुर्थीश  
का अधिकारी।

चौथी ( वि० ) विवाह की एक रीति, चौथा भाग।

चौथेपन } ( चौथा=चारहवाँ ) ( पु० ) बुढ़ापा, मनुष्य  
चौथापन } के उमर का चौथा अथवा सबसे पिछला  
हिस्सा।

चौइंता ( वि० ) चार दाँतवाला, उभड़ती जवानी-  
वाला, उड़ड़, अलहड़।

चौइंती ( स्त्री० ) बीरता, शूरता, अलहड़पन।

चौदस ( सं० चतुर्दशी, चतुर्=चार, दश=दस ) ( स्त्री० )  
चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी।

चौदह ( सं० चतुर्दश ) ( वि० ) दस और चार, १४।

चौदानिया ( पु० ) } ( चौ=चार, दाना ) चार मोती  
चौदानी ( स्त्री० ) } का बाजा।

चौधर ( वि० ) बली, मोटा ताजा।

चौधरी ( पु० ) पंच, प्रधान, जमींदार की पदवी।

चौपट ( वि० ) उजाड़, बरबाद, नष्ट, बराबर किया  
हुआ, चपटा।

चौपट करना ( बोल० ) उजाड़ना, नष्ट करना, बरबाद  
करना, ढहा देना, विनाश करना, बराबर करना।

चौपड़ ( सं० चतुष्पट्टी या चतुष्पादिका, चतुर्=चार,  
पुट=तह या पद पैर ) ( स्त्री० ) पार्सों का खेल,  
कपड़ा जिस पर यह खेल खेला जाता है।

चौपतिया ( स्त्री० ) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी,  
कापी, कसोदे की चार पत्तियोंवाली बूटी, उटगन,  
ताश का खेल-विशेष, गेहूँ को फसल को हानि  
पहुँचानेवाली घास।

चौपाई ( सं० चतुष्पदी ) ( स्त्री० ) चार पद का छंद।

चौपाड़ ( सं० चतुष्पाटिका ) ( पु० ) बैठकघर, ( सं०  
चतुष्पाद ) चौपाया।

चौपाया ( सं० चतुष्पाद ) ( पु० ) चारपाया, पशु,  
जानवर।

चौपाला ( सं० चतुष्पाद ) ( पु० ) पालकी, डोली।

चौपुरा ( पु० ) चार घाटोंवाला कुआँ।

चौवच्चा ( पु० ) कुंड, झील, पोखरा।

चौबारा ( सं० चतुष्पाटिक ) ( पु० ) ऊपर का कोठा,  
इसारा।

चौबीस ( सं० चतुर्विंशति ) ( वि० ) बीस और चार।

चौवे ( सं० चतुर्वेदी ) ( पु० ) ब्राह्मण जो चारों वेद जानता हो, अब एक जानि के ब्राह्मणों को चौवे कहने हैं चाहे वे वेद पढ़े हों वा न पढ़े हों ।

चौबोला ( पु० ) एकमात्रिक छुंद ।

चौमासा ( सं० चतुर्मास, चतुर्=चार, मास=महीना ) ( पु० ) बरसात, वर्षाऋतु, आपाद से ऊँआर तक के चार महीने ।

चौमुखा ( सं० चतुर्मुख ) ( पु० ) चौमुहों दीया ।

चौमुखी ( सं० चतुर्मुख ) ( स्त्री० ) देवी, चार मुँहवाली दुर्गा, रुद्राक्ष का दाना ।

चौमुहानी ( स्त्री० ) चौरस्ता, चौराहा ।

चौरंग ( पु० ) चित्त, उमान ।

चौरस ( चौर=चार, रस=बराबर ) ( वि० ) चारों ओर से बराबर, समान, सब ओर से बराबर ।

चौरहा ( पु० ) चौरस्ता ।

चौरा ( पु० ) चबूतरा, सतों की चिता, वीरों की चिता, ग्रामदेवता का स्थान ।

चौरानय ( सं० चतुर्नयति, चतुर्=चार, नयति=नम्बे ) ( वि० ) नम्बे और चार ।

चौरासी ( सं० चतुरशीति, चतुर्=चार, अशीति=प्रस्मा ) ( वि० ) अस्सी और चार ।

चौरी ( स्त्री० ) वेदी, छोटा चबूतरा, छोटा चँवर ।

चौवन } ( सं० चतुष्प=चारात् ) ( वि० ) पचास और चार ।  
चव्वन }

चौवा ( पु० ) पशु, चौपाया, चार उँगलियों का विस्तार या मार ।

चौवई ( सं० चतुर्वायु, चतुर्=चार, वायु=हवा, अर्थात् चारों दिशा से हवा का रुटना ) ( स्त्री० ) आँधी, श्रंधक, झकड़ ।

चौस ( पु० ) चूर्ण, पिसान, वह खेत जो चार बार का जोता हो ।

चौसठ ( सं० चतुषाष्ट ) ( वि० ) साठ और चार ।

चौसर ( पु० ) चौपड़, एक प्रकार का खेल ।

चौहटा } ( सं० चतुर्हट, चार=चार, हट=हाट ) ( पु० )  
चौहट्टा } चौराहा, चौक, चौराहा बाजार ।

चौहत्तर ( सं० चतुःसप्तति ) ( वि० ) सत्तर और चार ।

चौहारा ( पु० ) चार पातवाला, चार सहवाला, चौगुना ।

चौहान ( पु० ) राजपूतों की एक जाति ।

## छु

छु ( स्त्री० कटना ) ( वि० ) काटनेवाला, निर्मल, चंचल, छेदक, नाशक ।

छुः ( सं० पट् ) ( वि० ) तीन का दुगुना ६ ।

छुई ( सं० छप ) ( स्त्री० ) एक रोष का नाम ।

छुई ( सं० छदिः, छद्=टुकना ) ( स्त्री० ) नाव का छप्पर ।

छुकड़ा ( सं० शङ्क ) ( पु० ) गाड़ी, रहडू, अरावा ।

छुकड़ाना ( कि० सं० ) घबराना, चकराना ।

छुकना ( कि० अ० ) अघाना, तृप्त होना, संतुष्ट होना, व्याकुल होना, अन्तर्मे में होना, मस्त होना ।

छुकड़ ( पु० ) पैदु, थप्पड़, धोख ।

छुकाई ( स्त्री० ) खवाई, तृप्ति ।

छुकाछुक ( वि० ) परिपूर्ण, तृप्त ।

छुकाना ( कि० म० ) अघाना, तृप्त करना, ठीक करना, सीधा करना, परेशान करना ।

छुका ( सं० पट्क, पट्=छः ) ( पु० ) छः का समूह, एक तरह का पिंजरा ।

छुकापंजा करना ( बोल० ) ठगना, छलना, धोखा देना, जुआ खेलना ।

छुके लूट जाना ( बोल० ) घबराना, हक्का-बक्का रह जाना ।

छुग } ( स्त्री० कटना ) ( पु० ) बकरा, ङाग, भेड़ा,  
छुगल } ( स्त्री० ) भैंसी, बकरी ।

छुगुनी ( स्त्री० ) कनिष्ठा, छोटी उँगली, चूसनी, छः-गुना ।

छुछिया ( म० ) छाछ पीने या नापने का छोटा बर्तन ।

छुजना ( कि० म० ) ठीक जँचना, सजना, शोभा देना ।

छुटना ( पु० ) चलनी । ( कि० अ० ) पृथक् होना, घटना, न्यून होना ।

छुटाँक ( सं० षट्क, पट्=छः, टंक=एक प्रकार का तोख ) ( स्त्री० ) सेर का सोखहवाँ भाग, कनवा ।



छुटा ( छो=काटना ) ( स्त्री० ) चमक, भड़क, शोभा,  
दमक, चमचमाहट, उजाला, ( वि० ) चालाक,  
धूर्त, चलता-पुरजा, होशियार ।

छुटाफल ( पु० ) नारियल का वृक्ष, तालवृक्ष ।

छुटाभा ( स्त्री० ) बिजली ।

छुट्टी } ( सं० पक्षी ) ( स्त्री० ) पक्ष को छुटी तिथि ।  
छुट }

छुट्टी } ( सं० पक्षी ) ( स्त्री० ) छुटो, लड़का पैदा होने  
छुटी } के पछे छुटे दिन की रीति ।

छुड़ ( स्त्री० ) बर्छे की लकड़ी, जोहे का लीकचा, तिनका,  
आँख का श्वेत दाग ।

छुड़ना ( कि० घ० ) धान के छिकले निकालना, छौटना,  
चावल छौटना, छुरना, त्यागना, छोड़ना,  
तजना ।

छुड़ा ( पु० ) पैर का गहना, मोती की लड़ी, ( वि० )  
अवेला ।

छुड़ाना ( कि० घ० ) भूमि अलग करना, चावल साफ  
करना ।

छुड़िया ( पु० ) दरबान, पहरेदार, आसाबरदार,  
कंचुकी, राजा का परिचारक, कोलिया, सकेल  
गली ।

छुड़िला } ( पु० ) पुष्प-विशेष, काई, कोंहार की मिठी,  
छुरीला } ( वि० ) अकेला, एकाकी ।

छुड़ी ( स्त्री० ) बेंत, हाथ में रखने की लकड़ी, फूलों का  
गुच्छ ।

छुँड़ींती ( स्त्री० ) छुटी, अदृश्य, छूट ।

छुण ( सं० क्षण ) ( स्त्री० ) पल, दम, क्षण, क्षिण ।

छुत } ( सं० क्षत्र, छद्=ढकना ) ( स्त्री० ) घर के ऊपर  
छात } का पटाव, गच्च, ( पु० ) फोड़ा, घाव ।

छुतनार ( वि० ) फैला हुआ, विस्तृत, छायादार ।

छुतरी ( स्त्री० ) छाता, महारमाओं का स्मारक-मंडप,  
जहाज के ऊपर का भाग, कुकुरमुत्ता ।

छुत्ता ( सं० क्षत्र, छद्=ढकना ) ( पु० ) मधुमक्खियों का  
छाता ।

छुतियाना ( कि० सं० ) छाती के पास ले जाना, बंदूक  
तानना ।

छुत्तीस ( सं० पञ्चविंशत्, पद्=अः, विंशत्=तीस ) ( वि० )  
तीस और छः ।

छुत्तीसा ( पु० ) हज्जाम, नाऊ, ( वि० ) चालाक,  
होशियार ।

छुत्तीसी ( स्त्री० ) छिनाख, परपुरुषरता स्त्री ।

छुत्र ( छद्=ढकना ) ( पु० ) राजाओं के सिर पर रखने  
का छाता, छतरी ।

छुत्रक ( छत्र ) ( पु० ) भुईंफोर, कुकुरमुत्ता, धरती का  
फल ।

छुत्रछाँह ( स्त्री० ) रक्षा, शरण ।

छुत्रधारी ( छत्र=छाता, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना )  
( पु० ) राजा, महाराज, छुत्रपति ।

छुत्रपति ( छत्र=छाता, पति=पालिक ) ( पु० ) राजा,  
महाराज, छुत्रधारी ।

छुत्रभंग ( छत्र=छाता, भंग=टूटना ) ( पु० ) पति का  
मरना, रंदाबा, विधवापन, राजा का मरण ।

छुत्री ( सं० क्षत्र ) ( स्त्री० ) छोटा छाता, चँदवा, बैठने  
की जगह ।

छुत्री ( सं० क्षत्री ) ( पु० ) राजपूत, क्षत्रिय, नाई, ( स्त्री० )  
छोटा छत्ता, मृत मनुष्यों का एक प्रकार का स्मारक ।

छुत्यर ( पु० ) गृह, कुंज, कोठरी, खोहर ।

छुद् ( छद्=ढापना ) ( पु० ) पंख, आच्छादन, पत्ताढाँक,  
समाखवृक्ष ।

छुदन ( पु० ) पत्ता, आच्छादन, छाव, छत, मियान,  
गिलाफ़ ।

छुदाम ( स्त्री० ) पैसे का चौथा भाग, दो दमड़ी, ६ दाम ।  
छुदतापस ( पु० ) कपटी मुनि ।

छुदन ( पु० ) कपट, छुप्पर, पत्ता, अपवृंश या हुज्जत,  
उज्जर, दखील ।

छुदवेश ( पु० ) गुप्तरूप ।

छुद्री ( वि० ) बहुरूपिया, छुद्री, कपटी ।

छुनक ( स्त्री० ) झनकार, झनझनाहट ।

छुनकना ( कि० घ० ) झनकना, गरम धातु पर पानी  
पड़ने से जैसा शब्द होता है, उसकी क्रिया ।

छुनकमनक ( स्त्री० ) आभूषणों की ध्वनि ।

छुनकाना ( कि० सं० ) भड़काना, चौंकाना ।

छुनछुवि ( स्त्री० ) बिजली ।

छुनदा ( स्त्री० ) रात, मिशा, रात्रि ।

छुनना ( कि० घ० ) नशा पीना, साफ़ होना, बनना ।

छुनाक ( पु० ) गरम चीज़ पर पानी के गिरने का शब्द ।

छंद ( छंद=हृदय और चाहना ) ( पु० ) श्लोक, काव्य, पद्य, मात्राओं का मिश्रण, वेद, वेद का छंद जैसे गायत्री आदि, इच्छा, अभिलाषा ।

छंदपातन ( छंद+पातन, पत्=गिरना ) ( पु० ) कपट, कुटिलता, मकड़, बहाना, कपटी तपस्वी ।

छंदानुवर्ती ( वि० ) आज्ञापालक, आज्ञाधीन ।

छंदी ( वि० ) धूर्त, चालाक, कपटी, छली ।

छंदोग ( पु० ) कवि, सामवेद का गानकर्ता, वेदपाठो ।

छन्ना ( पु० ) एकान्त, गुप्त, छिपा हुआ, रुका, नष्ट, उन्मत्त ।

छन्ना ( पु० ) पानी छानने का कपड़ा, कोई चीज़ छानने का कपड़ा ।

छन्नु ( वि० ) छाननेवाला ।

छपई ( स्त्री० ) छप्पय, छः पद का छंद ।

छपद् ( पु० ) भौरा, भ्रमर ।

छपन ( वि० ) गुप्त, लापता, शायब ।

छपना ( कि० प्र० ) छपा होना, मुद्रित होना ।

छपरखट ( स्त्री० ) ममहरीदार पलंग ।

छपरा ( पु० ) टोकरा, छप्पर, नगर-विशेष ।

छपरिया ( स्त्री० ) झोपड़ी, मढ़ी ।

छपा ( स्त्री० ) रात्रि, हफ्ती ।

छपाई ( स्त्री० ) छापने की मज़दूरी, छापने का काम ।

छपाकर ( पु० ) शशि, चंद्र, कर्पूर, कपूर ।

छप्पन ( सं० ) षट्पचाशत्, षट्=छः, पंचाशत्=पचास ) ( वि० ) पचास और छः ।

छप्पय ( सं० ) षट्पदा, षट्=छः, षट्=चरण ) छः पद का छंद ।

छप्पर ( पु० ) फूस की छावनी ।

छपड़ा ( पु० ) टोकरा, खौंचा ।

छयि ( स्त्री० ) छाटना, अंधेरे को ) ( स्त्री० ) शोभा, सुंदरता, चमक, प्रकाश ।

छयीला ( वि० ) सुंदर, सुहावना ।

छयीस ( षट्त्रिंशति, षट्=छः, विंशति=बीस ) ( वि० ) बीस और छः ।

छमक ( स्त्री० ) चाल-ढाल, ठसक ।

छमना ( कि० प्र० ) मारू करना ।

छमिच्छा ( स्त्री० ) समस्या, हशारा, चिह्न, संकेत ।

छमुख ( पु० ) छमुखवाला, कात्तिकेय ।

छय ( पु० ) हास, नाश, चय, विनाश ।

छयासठ } ( सं० ) षट्+षष्टि, षट्=छः, षष्टि=साठ )  
छियासठ } ( वि० ) साठ और छः ।

छर ( पु० ) कपट, छल, जटामाँसी ।

छरकना ( कि० प्र० ) छलकना, बिखरना ।

छरछंद ( पु० ) छलछंद, धोखेबाज़ी, बनावट, ढोंग, कपट ।

छरना ( कि० प्र० ) भरना, टपकना, छलकना, चूना ।

छरहरा ( वि० ) चुस्त, होशियार, पतले शरीर का, कुतूहल ।

छरा ( पु० ) रस्सी, लड़, लड़ी ।

छरे ( वि० ) छटे, चुने, सुबुक ।

छर्द ( छर्द=वमन करना, क्रय करना ) ( पु० ) वमन, क्रय या क्रै ।

छर्दन ( छर्द + अन ) ( पु० ) छॉट, वमन, क्रय, अलंबुष ।

छर्दि ( स्त्री० ) छॉट, क्रय ।

छर्दी ( पु० ) छोटी-छोटी गोखी ।

छल ( स्त्री० ) छाटना ) ( पु० ) कपट, धोखा, फरेब, बहाना, मिथ, जाल, ठगी ।

छलकना ( सं० ) उच्चलन, उत्=ऊपर, चल=चलना ) ( कि० प्र० ) उमड़ना, ढलकना, बह चलना, फूट निकलना, बोरना ।

छलछिद्र ( छर+छिद्र ) ( पु० ) छलबख, कपट, धोखा ।

छलवल ( बोल० ) कपट, धोखा, छलछिद्र ।

छलचिनय ( स्त्री० ) कपट से बढ़ाई, फरेब के साथ तारीफ़ ।

छलॉंग ( स्त्री० ) फलॉंग, फाँद, कूद-फाँद ।

छलॉंगें मारना ( बोल० ) कूदना, उछलना, झपटना, कुर्छाँच मारना ।

छलिया } ( सं० ) छल ) ( वि० ) कपटी, दगाबाज़,  
छली } धोखा देनेवाला ।

छल्ला ( पु० ) मुँदरी, अँगूठी ।

छयना ( पु० ) छौना, शिशु, बच्चा, सुभर का बच्चा, सिंह का बच्चा ।

छवाई ( स्त्री० ) पटाई या उसकी मिहनत, घर छाने की मज़दूरी ।

छहरना ( कि० प्र० ) तितर-बितर होना, बिखरना ।

छौं ( सं० ) छाया ) ( स्त्री० ) छाया, भाड़, प्रसिद्धि, परछाई ।

छाक ( पु० ) कलेवा, जलखावा ।

छाग } ( छो=छाटना ) ( पु० ) बकरा, खसी ।  
छागल }

छाँगुर ( पु० ) छः उँगलियोंवाला व्यक्ति, छंगा ।

छाड्डु } ( खो० ) मट्टा, मट्टे के ऊपर जो पर्त-सी पड़  
छाड्डी } जाती है ।

छाज ( पु० ) सूप, दगरा ।

छाजना ( सं० आदन, अद्=ढकना ) ( क्रि० स० ) छाना,  
फबना, सोहना, छजना, खुजना, योग्य होना ।

छा जाना ( बोल० ) ढक जाना, छाया होना, पट जाना,  
घिर जाना ।

छाँट करना ( बोल० ) वमन करना, क्रय करना ।

छाँटना ( क्रि० स० ) वमन करना, उलटी करना, क्रय  
करना, अनाज से भूसा अलग करना, फटकना,  
काटना, कतरना, काट-कूट करना, सँवारना, साक  
करना, चुग लेना, पसंद करना ।

छाँट लेना ( बोल० ) चुन लेना, बराय लेना, पसंद  
करना ।

छाँड़ना ( क्रि० स० ) छोड़ना, त्यागना, तजना ।

छात ( पु० ) पतला, दुर्बल, छत ।

छाता ( सं० छत्र ) ( पु० ) छतरी, मधुमक्खियों का छाता,  
विशाल वृक्षस्थल ।

छाती ( स्त्री० ) हिरदा, उर, वक्षःस्थल, चूँची, कुच ।

छाती का पत्थर } ( बोल० ) दुःखदायी, कंटक ।  
छाती का जम }

छाती खोलकर मिलना ( बोल० ) सच्चे मन से मिलना,  
सरलता से मिलना, निष्कपट होकर मिलना ।

छाती ठोकना ( बोल० ) साहस देना, हिम्मत बाँधना,  
भरोसा देना ।

छाती ठंडी होना ( बोल० ) प्रसन्न होना, बहुत  
आनंदित होना, आंतरिक प्रसन्नता होना ।

छाती निकालकर चलना ( बोल० ) अकड़ कर  
चलना, पेंठ कर चलना, अहंकार सूचित करना ।

छाती पर पत्थर रखना ( बोल० ) संतोष करना, सबर  
करना, धीरज धरना, सह लेना ।

छाती पर मूँग दलना ( बोल० ) किसी के सामने  
ऐसा काम करना कि जिससे वह दुःख पावे, किसी  
को कुदना, खिझाना, सताना ।

छाती पीटना ( बोल० ) रोना, बिलाप करना, शोक  
करना, बिलखना ।

छाती फटना ( बोल० ) दुःख अथवा क्रिक से घबराना,  
राम खाना ।

छाती भर ( बोल० ) छाती जितना ऊँचा, छाती तक ।

छाती भर आना ( बोल० ) रोना, आँसू ढालना, मोह  
आना ।

छाती लगाना } ( बोल० ) प्यार करना, दुखारना,  
छाती से लगाना } अपनाना ।

छात्र ( अद्=ढकना, गुरु के दोषों को ) ( पु० ) विशार्थी,  
शिष्य, चेला ।

छात्रवृत्ति ( स्त्री० ) वृत्तीक्रा, पारितोषिक, स्कॉलरशिप ।

छादन ( अद्=ढकना ) ( पु० ) ढकने का कपड़ा, ढकना,  
पत्ता ।

छान ( सं० आदन ) ( स्त्री० ) छप्पर, ठठरी ।

छानन ( स्त्री० ) ( पु० ) चोकर, भूमी, तुप, बूर ।

छानना ( क्रि० स० ) निखारना, गारना, भारना, चाँदना,  
फटकना, खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना ।

छानचिना ( बोल० ) खोज, ढूँढ़, परीक्षा, विचार,  
छानवीन } विवेचना ।

छानवे } ( सं० पश्यति ) ( वि० ) नन्वे और छः ।  
छियानवे }

छान मारना ( बोल० ) खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना ।

छाना ( सं० आदन, अद्=ढकना ) ( क्रि० स० ) छाया  
करना, पाटना, ढकना ।

छाप ( छापना ) ( स्त्री० ) छप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु,  
अंक, चिह्न, मोहर, उँगली में पहनने का गहना ।

छापना ( क्रि० स० ) छाप करना, मुद्रित करना ।

छापा ( छापना ) ( पु० ) छप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु,  
अंक, चिह्न, शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि का चिह्न,  
जिसको धेनुव्र लोग अपने शरीर पर लगाते हैं ।

छापाखाना ( पु० ) छपने का घर, छापने की जगह,  
यंत्रालय, मतबन्ध, प्रिंटिंगप्रेस ।

छाम ( वि० ) निर्बल, दुर्बल ।

छाया ( छो=छाटना, अर्थात् उजाले को रोकना ) ( स्त्री० )

छाँह, छाँव, छाँ, परछाईं, प्रतिबिम्ब, आँधरा, भूत,  
प्रेत, शनैश्चर को माता, सूर्य की खो ।

छायाग्राही ( पु० ) आकर्षण करनेवाला ।

छायापथ ( पु० ) आकाश, पोला, अवकाश, आसमान, देवमार्ग, आकाश-मार्ग ।

छायापुरुष ( पु० ) आकाश में दिखाई देनेवाला पुरुष का मूर्ति ।

छायामृत ( छाया+मृत ) ( पु० ) चंद्रमा ।

छार ( सं० छार ) ( स्त्री० ) राख, भस्म, धूलि, लवण, क्षार ।

छारु ( पु० ) निनावार, रोग-विशेष जिसमें मुँह एक जाता है ।

छाल ( सं० खन, या छाना, छद=टकना ) ( स्त्री० ) छिलका, बकला, पोस्त ।

छालटी ( स्त्री० ) छाल, पटसन या सन का बना वस्त्र-विशेष ।

छाला ( पु० ) कुतसी, फफोला, फुलका ।

छालिया ( स्त्री० ) एक प्रकार की सुपारी, छायादान का पात्र ।

छाली ( स्त्री० ) कटे हुए सुपारी के कड़े ।

छा लेना ( कि० अ० ) टुक लेना, अंधेरा करना ।

छाँव { सं० छाया ) या छाया, छाह, प्रतिबिम्ब, छाँह { परछाईं ।

छावना ( कि० अ० ) पाटना, छपर बनाना ।

छावना ( छाना ) ( स्त्री० ) पलटन के रहने का जगह, सिपाहियों के रहने के घर, छाँने का काम, शिविर ।

छाया ( पु० ) बच्चा, १० से २० वर्ष का उम्र का हाथी, युवा हाथी, ( वि० ) आच्छादित ।

छिउल ( वि० ) डाक, पलाश ।

छिकनी ( स्त्री० ) नकछिकनी-नामक घास ।

छिकनी ( स्त्री० ) छड़ी, कमचा, बाँस की छड़ी, बाँस या बेंत का टुकड़ा ।

छिगुली ( स्त्री० ) छाँटी उँगला, कनउँगली ।

छिन्नड़ा ( पु० ) फोड़े का पपड़ा, घाव का नया चमड़ा, मज्जा की धँसी ।

छिन्नड़ेल ( वि० ) टुबला, चिमड़ा ।

छिन्नड़ा ( पु० ) खलड़ी, चमड़ा ।

छिन्नला ( वि० ) उथला, हलका, अगंभार ।

छिन्नोड़ा ( पु० ) हलका, ओछा, चिलबिल्ला ।

छिछोरपन ( पु० ) ओछापन, नीचता ।

छिटकना ( कि० अ० ) बिखरना, फैलना, छितरना, बिथरना ।

छिटकना चांदनी का ( बोल ) चांदनी का फैलना ।

छिटका ( पु० ) आड़, परदा, पालकी का अगला हिस्सा ।

छिटकाना ( कि० अ० ) बिखरना, फैलाना, छितराना, बिथराना ।

छिटकी ( स्त्री० ) फैली हुई, खिला हुई ।

छिटकना ( कि० अ० ) छोटना, तर करना, सींचना ।

छिटकाव ( छिटकना ) ( पु० ) पानी का छिटकना, सिंचाई, सींचना ।

छिटुना ( कि० अ० ) आरंभ होना, चल पड़ना, खटक जाना ।

छितनिक ( स्त्री० ) डलिया, दौरा, चंगरी, ढाका ।

छितरना ( कि० अ० ) बिखरना, फैलना, पसरना, छिटकना, बिथरना ।

छिति ( चिति ) ( स्त्री० ) धरती, जमान, पृथ्वी, भूमि, धरणी, क्षिति ।

छिदना ( सं० छेदन, छिद=काटना ) ( कि० अ० ) बिधना, पार होना, धँसना, चुभना, रोकना ।

छिद्रा ( वि० ) छेददार, जर्जर ।

छिद्र ( छिद=मदना, या छिद=छेदना ) ( पु० ) छेद, सूराज, रंध, विवर, बिल, दोप, दूषण, छुटि, कमजोरी ।

छिद्रदर्शी ( वि० ) दोष ढूँढ़नेवाला ।

छिद्रानुसंधान ( पु० ) दोष ढूँढ़ना ।

छिद्रान्वेषण ( पु० ) खुचबू निकालना ।

छिद्रित ( छिद+इत ) ( वि० ) वेधित, छेद किया गया ।

छिन ( सं० क्षण ) ( स्त्री० ) पल, क्षण, निमेष ।

छिन भर में ( बोल० ) एक पल में, पल-भर में ।

छिनरा ( पु० ) लंपट, परसोगामी, चारत्रहीन ।

छिनाल ( स्त्री० ) वेदया, व्यभिचारिणी ।

छिनाला ( छिनाला ) ( पु० ) छिनालपन, व्यभिचार ।

छिना ( छिद=काटना ) ( वि० ) टूटा हुआ, खंडित, भाग किया हुआ, टुकड़े किया हुआ ।

छिनभिन्न ( छिन+भिन्न ) ( वि० ) अलग-अलग, तितर-बितर, कटा हुआ, टूटा हुआ ।

छिन्ना ( स्त्री० ) गुरची, वेरया ।

छिप ( पु० ) बसना, मछली पकड़ने का यंत्र, बंसी ।

छिपकली { टिकटिकी, सरीसृप-योनि का एक प्राणी,  
छिपकी } एक प्रकार का कीड़ा ।

छिपना { ( कि० अ० ) लुप्त होना, अलम्ब होना, दबकना,  
छुपना } अदृश्य होना ।

छिपारुस्तम (पु०) गुप्त गुंडा, अप्रसिद्ध किंतु कुशल, गुणी।

छिप्र (क्रि० वि०) शीघ्र, जल्दी।

छिमा (सं० लमा) (स्त्री०) क्षमा, माफ़ी।

छियालीस (सं० षट्चत्वारिंशत्, षट्=षडः, चत्वारिंशत्=चालीस) (वि०) चालीस और छः।

छियासी (सं० षटशीति, षट्=षडः, अशीति=अस्सी) (वि०) अस्सी और छः।

छिहा (वि०) जिंही, हठी।

छिलका (सं० छनी, छद्=दकना) (पु०) छाल, बरला, चूचा, पोस्त।

छिवड़ी (स्त्री०) छोटी डोली, टोकरी, टोकनी।

छिहन्तर (सं० षष्ठमति, षट्=षडः, समति=सत्तर) (वि०) सत्तर और छः।

छिहरना (क्रि० सं०) फेंकना, बिखरना, लहरना।

छिहाना (क्रि० सं०) डेर लगाना, गांजना।

छिहानी (पु०) शमशान, मरघट।

छी (अव्य०) तुच्छ और चिन्त करने का शब्द।

छीका (सं० शिष्य, शि=शेदना) (पु०) भूला, बहँगी को डोरी, जाल को तरह चनी हुई चीज जिसमें कोई चीज रखकर लटका देने हैं।

छीक (सं० छिका, छिक् ऐसा शब्द, क=करना) (स्त्री०) शब्द जो नाक से होता है।

छीछड़ा (पु०) घृणित मांस, अभिचय मांस।

छीछालेदर (स्त्री०) दुर्देश, दुर्गति।

छीजना (क्रि० घ०) घटना, कम होना, सूखना, झुराना, 'देवादेवी कीजें योग, छीजे काया बाड़े रोग' कहावत, जो कोई किसी की देवादेवी तप अथवा व्रत आदि करता है उसका शरीर दुबला हो जाता और बीमारी बढ़ती है।

छीट (सं० चित्र रंग-रंग का) (स्त्री०) एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा।

छीटना (क्रि० सं०) छिड़कना, मीचना।

छीटा (पु०) छाँटा, टपका, बिछु, दाग, मीठी चुटकी, मधुर व्यंजन।

छीन (सं० चीण) (वि०) मंद, पनला, दुबला, कुश, घटा हुआ, लागर।

छीनना (क्रि० सं०) ले लेना, खींच लेना, जबरदस्ती ले लेना, कपट लेना।

छीनाछीना करना (बोल०) कपट लेना, कपटा कपटी करना, छीनाकपटी करना।

छीपना (क्रि० सं०) छीट बनाना, कपड़ा छापना।

छीपी (पु०) कपड़ा छापनेवाली जाति-विशेष।

छीवर (स्त्री०) मोटी छोट।

छीमी (स्त्री०) फली, छिलका।

छीर (सं० क्षी) (पु०) दुग्ध, दूध।

छीलना (क्रि० सं०) काटना, छिलका उतारना।

छुआछूत (पु०) अधम-स्पर्श, अस्पृश्यता।

छुछली (स्त्री०) छिछली, विनोद, कलोल।

छुछुहड़ (स्त्री०) झांजी हाँड़ी, झांजी बर्तन।

छुछुंदर (सं० छुछुंदरा, छुछ ऐसा शब्द, द=फाड़ना) (पु०) चूहे की आकृति का एक जीव।

छुछुंदर छोड़ना (बोल०) चुगली खाना, कलंक लगाना, बुराई करना, निंदा करना, भड़काना, बहकाना, ऐसी बात कहना जिससे कलह उत्पन्न हो जाय।

छुट (सं० छट्=जुट-जुटा करना) (क्रि० वि०) सिवाय, (वि०) छोटा, थोड़ा।

छुटकारा (छटना) (पु०) छड़ाव, उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई।

छुट्टी (स्त्री०) छुटकारा, ख़ुलसत, अवकाश, फुर्सत, समय।

छुटखेला (वि०) लूचा, बदमाश।

छुटखेली (स्त्री०) छिनाल, व्यभिचारिणी।

छुड़ (छेदना) (पु०) आच्छादन, आवरण, नीच, स्वल्प, मिथ्यावादी, तुच्छ, पेच, फेर, किरण, भूषण।

छुड़ानी (छड़ाना) (स्त्री०) छड़ाने का मोल, हजाना।

छुतिहर (पु०) नीच मनुष्य, कुपात्र।

छुतिहा (वि०) पतित, अप्रसूय।

छुद्र (वि०) नीच, अधम, थोड़ा।

छुद्रघंटिका (स्त्री०) करधनी, मेखला।

छुद्रा (स्त्री०) कुलटा, वेश्या, पतुरिया।

छुधा (स्त्री०) भूख, खाने की इच्छा।

छुप (पु०) स्पर्श, झाड़ी, वायु, (वि०) चंचल

छुभित (वि०) भयभीत, मानसिक व्यथा से पीड़ित, दुःखित।

छुर (पु०) छुरा (स्त्री०) छुरी, छुरा, चूना, नीय।

छुरा (पु०) उस्तरा, बड़ा छुरी।

छुरिका } (छुर=फाटना) (स्त्री०) चक्क, चाकू।  
छुरी }

छुरित (पुं०) विजली की चमक।

छुहारा (पुं०) खमुर, एक फल का नाम।

छुहावट (स्त्री०) छूना, स्पर्श, लगावट।

छुथानी (स्त्री०) फोड़ा, फनसी, घाव, हरीरा।

छुई (स्त्री०) खड़िया, दुधिया मिट्टी।

छुड़ा (वि०) झाली, खोखला, शून्य, वृथा, निष्फल,  
(पुं०) टोना, टोटका, जादू।

छुड़ी (वि०) सींच, शून्य, कुम्हिन। “बोली अमुभ  
भरी मुभ छुड़ी”-- गो०त०दा०।

छुट (छटना) (स्त्री०) छोड़ना, चटा, छड़ाव।

छुन (छुना) (स्त्री०) छूना, अपवित्रता, किसी से छू  
जाना।

छुद (छुदप्रकाश करना) (पुं०) प्रकाश, दीप्ति, वमन,  
विलाप, (वि०) प्रकाशक, प्रकाशवान।

छुक (पुं०) पालन पशु-पक्षी, तिलामिजा, कटाव, छेद,  
विभाग।

छुकना (क्रि० स०) शोकना, अटकना, धरना।

छुकोक्ति (स्त्री०) दो अर्थ रखनेवाला लोकोक्ति।

छुड़ (छड़ना) (स्त्री०) खिजावट, सताना।

छुड़छुड़ { (बोल०) टोरुटाक, ताना, खिजावट,  
छुड़झानी } देहीवान।

छुड़ा (पुं०) रस्सी, साट, व्यंग्य।

छुद (छिद=काटना) (पुं०) काटा हुआ, छिद्र, मँड,  
विवर, टुकड़ा, णेच।

छुद (सं० छिद) (पुं०) गड्ढा, खड्ड, मँड।

छुदना (सं० छेदन, छिद=काटना) (क्रि० स०) बेचना,  
पार करना, भँसाना, चुभोना, नाथना।

छुनी (स्त्री०) रुगानी, टाँकी, छेवनी।

छुमंड (पुं०) मुरझा, माता पिता रहित बालक, यतीम,  
येगारिभ, अनाथ।

छुरना (क्रि० स०) अपचरोग होना, दस्त होना।

छुरी (सं० छुरी, छो=काटना) (स्त्री०) बकरी।

छुव (पुं०) छोटा घाव, पाछ।

छुवना (क्रि० स०) दागना, अंकित करना।

छुवनी (स्त्री०) टाँकी, रुगानी।

छुवर (पुं०) खना, छिजका।

छुवा (सं० छेदन, छिद=काटना) (पुं०) चिह्न, लकीर।

छेह (पुं०) नृत्य का भेद-विशेष, निरुत्तल, नाश (स्त्री०)  
राम्ब, मिट्टी, छाया।

छेहर (स्त्री०) छाया, साया।

छेना (क्रि० प्र०) छीजना, कम होना, नष्ट होना।

छेल } (पुं०) बाँका, अकबैत, चिकनियाँ, गुंडा।  
छेला }

छेलचिकनियाँ (बोल०) बाँका, छेला, गुंडा।

छो (पुं०) प्रेम, दया, क्षोभ, कोप।

छोआ (पुं०) चोटा, गसी।

छोई (स्त्री०) गन्ने के ऊपर का छिन्नका।

छोकरा (पुं०) लड़का, बालक अन्हड़।

छोकरी (स्त्री०) लड़की, कन्या।

छोछो (स्त्री०) मोदी।

छोटा (सं० छुट) (वि०) लघु, लहुरा, कनिष्ठ।

छोटिका (छट+इका) (स्त्री०) उच्छाल, स्पर्श, छूना,  
अंगुष्ठ, अँगूठा, कोपीन, लँगोटा, कछौटा, कछाँट।

छोनिप (पुं०) राजा, भूपति।

छोर (पुं०) अंत, किनारा।

छोरग (छर+अन, छर=छेदना) (पुं०) त्याग, पैना  
करना, कर्तन, काटना।

छोरंग (पुं०) नीवू, खटा, चुना, सफेदी, सफेदा,  
करीदा।

छोलदारी (स्त्री०) गेमा, छोटा तंबू।

छोला (पुं०) घास, चना, ईख को काटकर छीलने  
वाला व्यक्ति।

छोह (सं० छोभ) (पुं०) प्यार, स्नेह, मोह, प्रीति।

छोहना (क्रि० प्र०) क्षोभित होना, विकल होना।

छोहाना (क्रि० स०) प्यार करना, दुलार करना।

छोही (स्त्री०) प्रेमी, प्यारा, स्नेही, अनुरागी।

छोकना (क्रि० प्र०) पशु का चौकड़ी भरके भागना,  
कूरना, भपटना।

छोंकना (क्रि० स०) बघारना।

छोंना (पुं०) जानवर का बच्चा, मृग और सिंह का बच्चा,  
सुअर का बच्चा।

छोंर (पुं०) क्षीर, बाल कटवाना, हजामत बनवाना।

छोंरा (पुं०) उवार-वाअरे का डंठल, कोयर।

छौलिया (वि०) हर्षित, प्रसन्न, रसिक।

ज (जन्म=पैदा होना, या जि=जातना) (पु०) शिव,  
विष्णु, जम, माता-पिता, उत्पत्ति, मरमा, अंजन,  
शेष, राक्षस, जीव, शरीर आदि।

जई (स्त्री०) अन्न-विशेष, अँखुआ।

जईफ (पु०) बूढ़, बूढ़ा।

जक (पु०) गाढ़े धन का रक्षक, कंजूस, शंका, भय।

जकड़ना (क्रि० स०) कसना, कसके बाँधना, खींचना,  
बाँधना, तानना, पेंटना।

जकड़वन्द (पु०) अकड़वाय, कुस्ती का पेच।

जकुट (पु०) कुत्ता, बैंगन का फूल, मलयाचल।

जन् (पु०) यक्ष, देवयोनि-विशेष।

जक्षमा (पु०) यक्ष्मा, क्षय-रोग।

जखनी (स्त्री०) यक्षिणी।

जखम (पु०) घाव, चोट।

जखीरा (पु०) ढेर, समूह, बीछड़, पेड़ों की खान, जिस  
बाग में छोटे-छोटे पेड़ बिक्री के लिये रक्खे जाते हैं।

जग (सं० जगत्) (पु०) संसार, जगत्, दुनिया, जंगम।

जग (सं० यज्ञ) (पु०) यज्ञ, बलि, उत्सव, पर्व।

जगजगाहट (स्त्री०) चमक, चमकाहट, प्रकाश,  
उजलाई, दीप्ति।

जगजागी (स्त्री०) संसार में विदित हुई, दुनिया में  
जाहिर हुई।

जगत् (गम्=जाता) (पु०) संसार, जग, दुनिया, कुँ  
की छत।

जगती (गम्=जाता) (स्त्री०) पृथ्वी, धरती, लोग।

जगद्वा (जगत्=संसार, अम्मा=मा) (स्त्री०) जगन्माता,  
महामाया, देवी, दुर्गा।

जगदाधार (जगत्=संसार, आधार=आसरा) (पु०)  
अनंत, शेषजी, संसार का आसरा, हवा, वायु, ईश्वर।

जगदीश (जगत्=संसार, ईश=स्वामी) (पु०) परमेश्वर,  
संसार का कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु।

जगना (सं० जागरण, जागृ=जागना) (क्रि० अ०) नींद  
से उठाना, सचेत होना, जागना।

जगन्नाथ (जगत्=संसार, नाथ=स्वामी) (पु०) विष्णु,  
जगदीश, जगत्पति, जगन्नाथ का मंदिर उड़ीसा में  
जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत से यात्री जाया करते हैं।

जगमगा (वि०) चमकीला, चमकदार, झलझल।

जगमाता (सं० जगन्माता, जगत्=संसार, माता=मा)  
(स्त्री०) संसार की मा, जगद्वा, देवी, दुर्गा,  
सरस्वती।

जगवल्लभा (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया।

जगह } (स्त्री०) ठौर, स्थान, ठिकाना।  
जागह }

जगह छोड़ना (बोल०) कागज में कुछ जगह बिना  
लिखी रखना, हाशिया अथवा मार्जिन छोड़ना,  
स्थान-अपे होना।

जगह सिर मरचनना (बोल०) मीठे पर खर्च करना,  
यथोचित खर्चना, जहाँ चाहिए वहाँ खर्च करना।

जगह सिर होना (बोल०) किसी काम पर होना,  
ठीक होना, यथोचित होना, जैसा चाहिए वैसा  
होना।

जगाज्योति (सं० जगन्ज्योतिः) (स्त्री०) चमक, भड़क,  
जगजगाहट, बहुत अथवा बड़ी ज्योति।

जग्ध (अट्=भोजन करना) (वि०) भुक्त, खाया गया।

जग्धि (अट्+नि) (पु०) भोजन।

जग्धन (जन+घन) (पु०) स्त्रियों की कटि का अग्रभाग,  
अंग्रा, करिहाँव, कटिदेश, ऊरस्थल।

जग्न्य (जग+हृय) (वि०) अधम, नीच, पापी,  
पिछला।

जग्न्यज (पु०) कनिष्ठ, शूद्र, अधम।

जंगम (गम्=जाता) (वि०) चलनेवाला, जिसमें चलने  
की शक्ति हो, (पु०) योगी जिनके सिर पर जटा  
होती है जो छोटी घंटी को बजाया करते और  
महादेव के भजन गाया करते हैं।

जंगल (गल्=गिरना) (पु०) वन, झाड़ी।

जंगली (स० जंगल) (वि०) बनेला, वनवासी।

जंगी (वि०) जंग का, युद्ध का।

जंग्रा (हन्=देढ़ा जाना, या जन=पैदा होना) (स्त्री०)  
जाँघ, जानू, जानू।

जञ्चना (क्रि० स०) अटकना होना, नज़र में खटाना।

जञ्चावट (जञ्चना) (स्त्री०) जाँघ, परख।

जञ्चा (स्त्री०) प्रसूता स्त्री, जञ्चा।

जजाल ( सं० जनजाल, जन=मनुष्य, जाल=फँदा ) ( पू० )  
उलझेड़ा, उलझाव, कलेश, झंझट, घबराहट, व्या-  
कुलता, कठिनता ।

जटल ( स्त्री० ) जटिल, कठिन, राप ।

जटला ( पू० ) समूह, बैठका ।

जटा ( जट=झकड़ा करना ) ( स्त्री० ) बालों का जड़ा,  
बिचरे बाल, मिले हुए बाल, जड़, वृक्ष की जड़ ।

जटाजूट ( जटा+जट=जड़ा ) ( पू० ) जटा का जड़ा, जटा  
का बंध ।

जटाधारी ( जट+धारी=सम्बन्धवाला, धु=समान ) ( पू० )  
शिव, जटा रखनेवाला ।

जटामांसी ( जटा, मय=सम्बन्ध ) ( स्त्री० ) एक श्रीपथ  
का नाम ।

जटायु ( जटा धोर या=जाना, या जट=वृद्ध, यायु=उमर  
नियंता ) ( पू० ) एक गीध का नाम जिसका वर्णन  
रामायण में है ।

जटित ( जट=मिलाना, जो=ना ) ( वि० ) जड़ाऊ, जड़ा  
हुआ ।

जटिल ( जटा ) ( वि० ) जटावाला, जटाधारी ( पू० )  
सिंह, वृषाचारी, शिव, उलझा हुआ, ऐंसीदा ।

जटुल ( पू० ) निज, मया, लहसुन ।

जटर ( जट=पैदा होना ) ( पू० ) पेट, उदर, गर्भ, कोमल,  
( वि० ) कठोर, दृढ़, बड़ा ।

जटरानि } ( जटर=पेट, अनि या पतन=पाग ) ( स्त्री० )  
जटरानल } पेट की आग जिससे पाना पचना है, भूख,  
पेट का रोग ।

जड़ ( जट=ढकना ) ( वि० ) मूर्ख, सुस्त, ठंटा, अजानी,  
निर्बोध, गावदी, भकुआ ।

जड़ ( सं० जटा, जट=झकड़ा करना ) ( स्त्री० ) मूल,  
कारण, नींव, टहाराव ।

जड़ना ( सं० जटन, जट=मिलाना ) ( क्रि० म० ) मारना,  
झटकारना, जोड़ना, लगाना, साटना, नग बैठाना,  
खोदकर बनाना ।

जड़पेड़ ( स्त्री० ) मूल समेत पेड़, सब का सब ।

जड़पेड़ से उग्याड़ना ( स्त्री० ) उखाड़ डालना, जड़  
से खोद डालना, मूल समेत उखाड़ डालना ।

जड़घट ( स्त्री० ) टूट, टूटा, बरगद की जड़ ।

जड़मति ( जड़+मति ) ( वि० ) निर्बुद्धि, बेवकूफ ।

जड़हन ( पू० ) अगहनी धान ।

जड़ाई ( जड़ाना ) ( स्त्री० ) जड़ाने का मोल, जड़ने  
का काम ।

जड़ाऊ ( वि० ) जड़ित, जड़ा हुआ ।

जड़ावर ( स्त्री० ) जाड़े की सामग्री, जाड़े के कपड़े ।

जड़ित ( सं० जटित ) ( वि० ) जड़ा हुआ ।

जड़िनी ( स्त्री० ) दुष्टा, मूर्ख स्त्री ।

जड़िया ( पू० ) जड़नेवाला, मुनार की एक  
जाति ।

जड़ी ( सं० जटा ) ( स्त्री० ) श्रीपथ, मूल, जड़ी हुई ।

जड़ीवृत्ति ( स्त्री० ) दवाई, रूखड़ी, बेलि ।

जड़ीभूत ( वि० ) चकित, स्तंभित ।

जत ( स्त्री० ) चाल, रीति, आकृति ( सर्व० ) जितने,  
जेते ।

जतन ( सं० यत्न ) ( पू० ) उपाय, उद्योग, परिश्रम,  
मिहनत, इजाजत ।

जतनी ( वि० ) उद्योगी, परिश्रमी, चतुर, चालाक ।

जताना ( सं० यत्न=यत्न करना ) ( क्रि० सं० ) चिन्ताना,  
बुझाना, बताना, बतलाना, चेतना, सुध करना,  
प्रकट करना ।

जती ( सं० यति ) ( पू० ) जितेन्द्रिय, संन्यासी, भिखारी,  
योगी ।

जतुक ( पू० ) लाख, हींग ।

जतु ( स्त्री० ) लाह, पीपल का गोंद ।

जन्था ( सं० यन्त्र ) ( पू० ) मेंडली, दल, समूह, समाज,  
टोली, झुंड ।

जन्था बाँधना ( स्त्री० ) झुंड बनाना, गोल बाँधना,  
दलबंदी करना ।

जन्तु ( पू० ) गले की हड्डी ।

जन्था या यन्त्र ( क्रि० वि० ) जैसे, जिस प्रकार से ।

जह्यद् ( पू० ) दुर्बचन, अकथनीय बात ।

जन ( जन=पैदा होना ) ( पू० ) मनुष्य, लोग, आदमी,  
मनुष्य जाति, व्यक्ति, दुष्ट या नीच मनुष्य, एक  
लोक का नाम ।

जनक ( जन=पैदा करना ) ( पू० ) बाप, पिता,  
मिथिला के राजा और सीता के बाप का नाम ।

जनकतनया } ( जनक=पू० राजा का नाम, तनया या  
जनकसुता } सुता=बेटी ) ( स्त्री० ) सीता, जानकी ।



जनकपुर ( जनक=एक राजा का नाम, पुर=शहर )  
( पु० ) तिरहुत में एक शहर है जो राजा जनक की राजधानी था ।

जनकौरा ( सं० जनक ( पु० ) जनक के संबंधी या वंश के ।

जनखा ( वि० ) हिजड़ा, नामर्द, जनाना ।

जनंगम ( पु० ) नीच जाति, चांडाल ।

जनता ( स्त्री० ) जन-समूह, मनुष्य-समूह ।

जनना ( सं० जनन, जन्=पैदा होना ) ( क्रि० अ० ) जन्म होना, पैदा होना ।

जननी ( जन्=पैदा होना स्त्री० ) मा, सया, माता, महतारी ।

जननीय ( जन् + अन्याय वि० ) उत्पन्न करने योग्य, पैदा करने योग्य ।

जनपद ( जन + पद ( पु० ) देश, ग्राम, लोक, जाति, कौम, जनस्थान ।

जनप्रवाद ( पु० ) किवर्दती, अफवाह, बदगोई, मज्-मत, शहरत, खबर, कलह ।

जनमेजय ( जन=संसार, एज=चमकना, या जन=दुष्ट लोग, एज=कैपाना ) ( पु० ) राजा परीक्षित का बेटा ।

जनयिता ( जन + इ + तु, जन्=पैदा करना ) ( पु० ) पिता, जनक, बाप, जन्मदाता ।

जनयित्री ( जनयितु + ई ) ( स्त्री० ) माता, जननी, मा, महतारी ।

जनख ( पु० ) लोकापवाद, जनप्रवाद, स्याति ।

जनलोक ( जन=मनुष्य, लोक=जगह ) ( पु० ) सात लोकों में से एक लोक जहाँ धर्मात्मा मनुष्य मरने के पछे रहते हैं ।

जनवासा ( सं० जन्यवाम, जन्य=दुलई के मित आदि, वास=जगह ) बरानियों के ठहरने की जगह ।

जनाश्रय ( जन=मनुष्य, आश्रय=अवलम्ब ) ( पु० ) विश्रामस्थान, टिकामर, अधिकार, मंत्री ।

जनश्रुति ( जन=मनुष्य, श्रुति=सुना हुई ) ( स्त्री० ) खबर, समाचार, किवर्दती, संदेशा, अफवाह, लोक-चर्चा ।

जनानिग ( पु० ) मनुष्य की शक्ति से बाहर की ।

जनाना ( जनना ) ( क्रि० स० ) पैदा करना, जन्माना, ( जानना ) चिनाना, जताना, चेनाना, बुझाना ।  
( वि० ) नपुंसक, निर्बाज ।

जनान्तिक ( पु० ) अप्रकाश, छिपा संवाद, नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा ।

जनाव ( पु० ) अन्नभवाद्, उच्चपद, उच्चस्थान ।

जनार्दन ( जन=दुष्ट लोग, अर्द=पाड़ा देना, भारना या जन=मनुष्यों से, अर्द=जांचा जाना अथवा जिससे मनुष्य जांचने हैं ) ( पु० ) विष्णु, भगवान्, नारायण ।

जनि } ( कि वि० ) मत, नहीं ।  
जिन }

जनि ( जन् + ई + या० ) जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।

जनिका ( स्त्री० ) पहेली, छेकोकि, दो अर्थवाले शब्द ।

जनित ( जन्=पैदा होना ) ( वि० ) पैदा हुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा ।

जनियाँ ( स्त्री० ) प्यारी, प्राणप्यारी ।

जनु ( पु० ) उत्पत्ति, पैदाइश । ( स्त्री० ) अनु, उत्पत्ति, जनन ।

जनेऊ ( सं० यज्ञोपवीत ) ( पु० ) सूत का तार जिसको तीन वर्ण के लोग गले में पहनते हैं, उपवीत, यज्ञोपवीत, जनेऊ-जैसा चिह्न जो हीरे आदि रत्नों में होता है ।

जनेत ( सं० जन्म ) ( पु० ) बराती ( स्त्री० ) बरात ।

जंजाल ( पु० ) भगड़ा, बलेड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह ।

जंता ( सं० यंत्र ) ( पु० ) तार खींचने का औज़ार ।

जंतु ( जन्=पैदा होना ) ( पु० ) जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, पशु, देहधारी, देही ।

जंत्र ( सं० यंत्र ) ( पु० ) कल, बाजा, गंडा, तावीज जंतर, टोटका, मशीन ।

जंद् ( पु० ) पारमियों का धर्म-ग्रंथ-विशेष ।

जंदा ( पु० ) खेतों का एक यंत्र ।

जन्म ( जन्=पैदा होना ) ( पु० ) उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।

जन्मद ( जन्म + द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० ) जन्म-दाता, बाप, पिता ।

जन्मदिन ( जन्म + दिन ) ( पु० ) पैदा होने का दिन, बरसगाँठ, बरसवाँ दिन, सालगिरह ।

जन्मपत्री ( जन्म + पत्री ) ( स्त्री० ) लगनकुंडला, जन्म-पत्र, ज्ञायचा ।

जन्मभूमि (जन्म + भूमि) (धा०) अपना देश,  
उत्पत्तिस्थान, वनन ।

जन्मांतर (जन्म=पंचादश, अन्तर=अंतर) (धा०) दूसरा  
जन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।

जन्मांश (जन्म + अंश) (वि०) जन्म का अंश,  
सूत्रांश ।

जन्माष्टमी (जन्म + अष्टमी) (धा०) श्रीकृष्ण का  
जन्म दिन, भादों वर्य ।

जन्मोत्सव (जन्म + उत्सव) (धा०) जन्मदिन का  
उत्सव, जन्माष्टमी के दिन का उत्सव ।

जन्य (जन्=पदा करना) (धा०) संग्राम, निन्दितवाद,  
तलाव, कौलान, हट्ट, उत्पाय, सेवक, भृत्य, मित्र,  
ज्ञाति, बाप, दूल्हे के मित्र और साथी आदि ।

जन्यु (धा०) छाया, अग्नि, प्राणी ।

जप (जप्=जपना) (धा०) परमेश्वर का नाम लेना,  
माला फेरना, मंत्रपाठ ।

जपकारी (धा०) जप करनेवाला ।

जपत (सं० जपित, जप=जपना) (वि०) जपना  
हुआ, माला फेरना हुआ ।

जपमाला (जप + माला) (धा०) मुमिनरी, जप करने  
की माला, माला ।

जम (वि०) जप्त किया हुआ (धा०) दूसरे की वस्तु  
को अपना लेना, राज्य द्वारा छिनी हुई वस्तु ।

जय } (धा०) यदा, यद=जो (क्रि० वि०) जिम  
जद } समय, जिस काल में ।

जय जय (बोल०) जय कभी ।

जयड़ा (धा०) जभा, चौहड़, जभड़ा ।

जयतक }  
जयतलक } (क्रि० वि०) जबतक, जबतक, जिस  
जयतांड़ी } समय तक ।

जयतय (बोल०) कभी-कभी ।

जय-न-तय (बोल०) कभी न कभी, सदा ।

जयर (वि०) दृढ़, मजबूत, बली, शक्तिमान् ।

जयरदस्त (वि०) मजबूत, बली ।

जवाई (धा०) उवादी, सखी, अन्वय ।

जभाई (धा०) जम्हाई ।

जभीरी (धा०) एक प्रकार का बड़ा नीबू ।

जम (सं० यम) (धा०) यमराज, काल, मौत, योग का  
एक अंग ।

जमकना (क्रि० अ०) ठहरना, निभना ।

जमघट (धा०) भीड़, जमाव, ठट्ठा, पर्व-विशेष ।

जमज (वि०) जुड़वाँ, यमज ।

जमड़ा (धा०) एक प्रकार की कटारी, जमधर ।

जमदीया (सं० यम-दीपक) (धा०) जो दिया कातिक  
बदी १३ को जम के नाम से जलाते हैं ।

जमदूत (सं० यमदूत) (धा०) मौत के दूत ।

जमधर (सं० यमधार, यम=मौत, धर=तीखी नोक)  
(धा०) कटार ।

जमन (धा०) मुसलमान, यवन ।

जमना (सं० जन्=पदा होना) (क्रि० अ०) उगना,  
उपजना, पनपना, बढ़ना, दृढ़ होना, गाढ़ा हो जाना,  
ठोस हो जाना (जस पाला अथवा धी), इकट्ठा  
होना, ठीक बैठना, लगना, सटना ।

जमनका (धा०) परदा, काई ।

जमहाई (सं० जमा, जंम=जम्हाना) (धा०) आलस  
में आकर मुँह खोलना, आलस्य, सुस्ती ।

जमहाना (सं० जंम=जमहाना) (क्रि० अ०) मुँह  
खोलना, जम्हाई लेना ।

जमाई (सं०) (धा०) जामाता, दामाद, बेटी का  
जैवाई पति ।

जमात (धा०) साधुओं का समूह, अखाड़ा ।

जमादार (धा०) पहरदार, चौकीदार ।

जमानत (धा०) ज़िम्मेदारी ।

जमाना (क्रि० सं०) प्रहार करना, उत्पन्न करना, स्व-  
स्थान करना ।

जमाना (धा०) मौका, काल, समय, संसार ।

जमाना कहता है (धा०) दुनिया कहती है ।

जमाना देखना (धा०) बहुत अनुभव प्राप्त करना ।

जमाना हुआ (धा०) अधिक समय बीत गया ।

जमाने की खूबी है (धा०) काल का प्रताप या  
समय की बलिहारी है ।

जमार्यदी (धा०) असामियों का नाम और उनसे  
मिलनेवाली रकम लिखने का काराज ।

जमामार (वि०) धनमार ।

जमालगोटा (धा०) एक दवा का नाम, दतुनिया ।

जमुना }  
जमन } ( सं० यमुना ) ( ) एक नदी का नाम ।  
जमना }

५

जंबू }  
जंबू } ( जम्बूवाना ) ( पु० ) जामन ।

जंबुक }  
जंबूक } ( जम्बूवाना ) ( पु० ) गीदड़, सियार, शृगाल ।

जंबूद्वीप } ( जंबू या जंबू=जामन, द्वीप=खंड ) ( पु० )  
जंबूद्वीप } सात द्वीपों में पहला द्वीप, जिसमें नौ  
खंड हैं उसका यह भरतखंड अथवा हिंदुस्थान एक  
खंड है, ( द्वीप शब्द को देखो ) ।

जय ( जि=जीतना ) ( स्त्री० ) जीत, विजय ।

जयजयकार ( पु० ) बोलबाला, क्रतह ।

जयंत ( जि=जीतना ) ( पु० ) इंद्र का बेटा ।

जयपत्र ( पु० ) जीतने का पत्र, अश्वमेधयज्ञ, दस्तूरुल्ल-  
अमल, प्रोमाम ।

जयपताका ( जय + पताका ) ( स्त्री० ) जीत का झंडा,  
क्रतह का निशान ।

जयमाल ( जय=जीत, माल=माला ) ( स्त्री० ) जीत की  
माला, स्वयंवर में लड़की जिसको पसंद करके उसके  
गले में जो माला डालती है वह भी जयमाल  
कहलाती है ।

जयी ( जय ) ( वि० ) जीतनेवाला, विजयी, जय-  
वान् ।

जर ( सं० ज्वर ) ( स्त्री० ) तप, ताप, ज्वर ( पु० )  
जड़, मूल ।

जरजर ( वि० ) पुराना, बूढ़ा, फटापुराना ।

जरठ ( जू=बूढ़ा होना ) ( वि० ) बूढ़ा, वृद्ध, पुराना,  
कठोर, कठिन, दूर ।

जरण ( पु० ) जोरा, जलन, बुढ़ापा, कूट, काला जीरा,  
( वि० ) पुराना, वृद्ध, बूढ़ा ।

जरत }  
जरी } ( वि० ) बूढ़ा, वृद्ध ।

जरती ( स्त्री० ) बुढ़िया, वृद्धा ।

जरदांजी ( स्त्री० ) कारचोबो, सुनहला, कलावत्  
का काम ।

जरनी ( जलना ) ( स्त्री० ) जलन, चिता, क्रिकर ।

जरा ( जू=बूढ़ा होना ) ( स्त्री० ) बुढ़ापा, बूढ़ावस्था, एक  
राक्षसी का नाम ।

जर्रा ( वि० ) अल्प, कम, न्यून ।

जर्रातुर ( वि० ) जीर्ण, दुर्बल, बूढ़ा ।

जर्रायु ( पु० ) गर्भाशय, गर्भस्थान ।

जर्रायुज ( जरायु + ज ) ( पु० ) पिंडज, मनुष्यादि ।

जरासंध ( जरा=एक राक्षसी का नाम, संध=जोड़ हुआ )  
( पु० ) मगध देश का प्रसिद्ध राजा जो कंस का

ससुर, श्रीकृष्ण का वैरी था । कहते हैं कि जब वह  
जन्मा था तब उसके शरीर की दो फाँकें थीं जिन-  
की जरा-नामक राक्षसी ने जोड़ा । उसे यह वर था  
कि जबतक इसके जोड़ न फटेंगे यह किसी से न  
मरेगा, पर इसी तरह से भीम ने उसको चीर डाला ।

जरिया ( पु० ) संबंध, द्वारा, लगाव ।

जरीय ( स्त्री० ) खेत नापने की डोरी जो ६० गज  
अथवा २० गट्टे की होती है ।

जरुथ ( पु० ) मांस, कटुभाषी ।

जर्जर ( जू=पुराना होना ) ( वि० ) पुराना, जीर्ण, निर्बल,  
( पु० ) इंद्र का झंडा, शैवाल, सियार, इंद्रधनुष ।

जर्दा ( वि० ) पीतवर्ण ( स्त्री० ) खाने की तंबाकू ।

जर्दाह ( पु० ) चीरफाड़ करनेवाला ।

जल ( जल्=टुकना ) ( पु० ) पानी ।

जल उठना ( बोल० ) भड़क उठना, जल जाना ।

जलक ( पु० ) बराटिका, कीड़ी, शुक्रिका, सूसी, शंख, घोंघा ।

जलकरक ( पु० ) शंख, घोंघा, बराटिका, नारियल का  
दूध-युक्त फल, सियार, काई ।

जलकाक ( पु० ) शीताम्रोर, बतख, पनडुब्बी ।

जलक्रीड़ा ( जल+क्रीड़ा ) ( स्त्री० ) पानी में खेल  
करना, विहार करना ।

जलकुक्कुट ( जल=पानी, कुक्कुट=मुर्गा ) ( पु० ) जल-  
मुर्गा, मुर्गाबो ।

जलकूपी ( स्त्री० ) तबाग, हीज़ ।

जलभुलम ( पु० ) जलभर, कलुआ, बर्त, हिम, पाला ।

जलचर ( जल=पानी, चर=चलनेवाला, चर=चलना )  
( पु० ) जल के जीव, मकर, मछली, ग्राह आदि ।

जलचरकेतु ( जलचर=मकर, केतु=झंडा, अर्थात् जिसके  
झंडे पर मकर का चिह्न है ) ( पु० ) कामदेव, मदन,  
मकरध्वज ।

जलकुत्र ( पु० ) प्याऊ, पनशाज, पथिकों को जल पिलाने का स्थान ।

जलज ( जल=पानी, ज=पैदा होनेवाला, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) कंवज, कमल, पंकज, मछली, शंख, चंद्रमा, मोती ।

जलजला ( वि० ) क्रोधी, झूँझतिया ।

जलजलाना ( क्रि० अ० ) रिसाना, क्रोध करना ।

जलजात ( जल=पानी, जात=पैदा हुआ, जन्, पैदा होना ) ( पु० ) कंवज, कमल, पानी में पैदा होनेवाले पदार्थ ।

जलत्र ( जल+त्र, त्र=रथा करना ) ( पु० ) छत्र, छाता, नौका, नाव ।

जलथल ( सं० जलस्थल ) ( पु० ) आधी धरती पानी से ढकी हुई और आधी सूखी, दलदल ।

जलद् ( जल=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० ) बादल, मेघ, घन, घटा, बारिद, मोथा, घास, कलश, घड़ा, ( वि० ) पानी देनेवाला ।

जलधर ( जल=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) बादल, समुद्र, एक प्रकार की घास, ( वि० ) पानी को रखनेवाला ।

जलधारा ( जल=पानी, धारा=धार ) ( स्त्री० ) झरना, प्रवाह, सोता, स्नान, पानी का गिरना ।

जलधि ( जल=पानी, धा=धरना ) ( पु० ) समंदर, समुद्र ।

ज नधिजा ( स्त्री० ) कमला, लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ।

जलन ( सं० जलान ) ( स्त्री० ) जलना, तपन, तप, रिस, क्रोध, कुढ़न ।

जलना ( सं० जलन, जलन्=जलना ) ( क्रि० अ० ) बलना, दहना, मुलंगना, भड़कना, आंच लगना, क्रोध आना, कुपित होना, कुढ़ना ।

जलनिधि ( जल=पानी, निधि=सत्ताना ) ( पु० ) समंदर, सागर ।

जलनिर्गम ( पु० ) मोरी, पानी का निकास ।

जलनीली ( सं० ) काई, सिंघार ।

जलंदर { ( सं० जलंदर, जल=पानी, उदर=पेट )  
जलंधर { ( पु० ) पेट में पानी का इकट्ठा होना, एक

प्रकार का पेट का रोग, दैत्य-विशेष, जलाशय, कृपादि ।

जलपक ( पु० ) गप्पी, वाचाल ।

जलपति ( जल=पानी, पति=राजा ) ( पु० ) वरुण देवता, समंदर, समुद्र ।

जलपान ( जल=पानी, पान=पीना ) ( पु० ) कलेवा, कलेउ, जल खाना ।

जलप्राय ( पु० ) जलमय, जलस्थ ।

जलवाण ( जल=पानी, बाण=तौर ) ( पु० ) पानी के तौर ।

जलविंदु ( पु० ) पानी का बूँद ।

जल वृभना ( बोल० ) राख हो जाना ।

जलयान ( जल=पानी, यान=सवारी ) ( पु० ) नाव, नौका, जहाज़ ।

जलराशि ( जल=पानी, राशि=ढेर ) ( पु० ) समुद्र ।

जलरुह ( जल=पानी, रुह=उगना ) ( पु० ) कमल ।

जलविहंग ( पु० ) जलपक्षी ।

जलशायिन् ( जल+शायिन्, शी=पोना ) ( पु० ) विष्णु, जलचर ।

जलाकर ( जल+याकर ) ( पु० ) सीत, झरना ।

जलांचल ( जल+धंचल ) ( पु० ) झरना, नाज़ा, सोता ।

जलांजलि ( पु० ) तर्पण ।

जलातन ( वि० ) क्रोधी, बदमिज़ाज ।

जलाद् ( पु० ) कसाई, जहाद ।

जलापा ( पु० ) ईर्ष्या, द्वेष की दाह, जलना ।

जलाल ( पु० ) तेज, प्रताप, यश, आतंक ।

जलावन ( पु० ) ईर्षन, लकड़ा ।

जलावर्त ( पु० ) जल का घुमाव, भेंवर ।

जलाशय ( जल=पानी, आशय=संग्रह ) ( पु० ) तालाब, झील, सरोवर, समुद्र ।

जलील ( वि० ) अपमानित, क्षुब्धित तुच्छ ।

जलूस ( पु० ) बरान, किसी अवसर-विशेष पर बहुत से लोगों का सजधज से नगर में घूमना ।

जलेचर ( पु० ) हंस आदि जलचर पक्षी ।

जलेतन ( वि० ) डाही, अत्यंत क्रोधी ।

जलेधन ( पु० ) जल की आग, बहवानल ।

जले पर नोन लगाना ( बोल० ) दुखिया मनुष्य को फिर स्ताना ।

जलेबी (बी०) एक प्रकार की मिठाई ।

जलौका ( जल=पानी, ओरु=वाप ) ( स्त्री० ) जौक,  
जलिका, जलुका ।

जल्प ( जल्प=वृथा बकना ) वृथा बकवाद, झूठा झगड़ा,  
वाद ।

जल्पक ( जल्प+प्रक ) ( वि० ) वावदूक, वाचाल,  
झूठलगा, गप्पी, बकवादी ।

जल्पना ( सं० जल्पन, जल्प=बकना ) ( कि० प्र० )  
बकना, बोलना, वृथा बकवाद करना, झूठा झगड़ा  
करना, डींग हँकना, शेखी मारना ।

जल्पित ( जल्प=वृथा बकना ) ( वि० ) बका हुआ,  
बकवाद किया हुआ ।

जल्लाद ( पु० ) कसाई, घातक, कठोर हृदय ।

जय ( सं० यव ) ( पु० ) एक अनाज का नाम, वेग, तेज, जी ।

जवनिका ( जु=जाना, जिवमें ) ( स्त्री० ) परदा, कनात,  
काई ।

जवस ( पु० ) घास ।

जवान ( सं० युवन्, य=मिलना ) ( वि० ) तरुण, सोलह  
बरस से ऊपर की उमर का ।

जवाब ( पु० ) उत्तर ।

जवाब तलब करना ( मुहा० ) कारण पूछना, जवाब  
माँगना ।

जवाब देना ( मुहा० ) नौकरी से छुड़ा देना ।

जवाबदेही ( स्त्री० ) उत्तरदायित्व ।

जवार ( पु० ) समंदर की बाढ़, ज्वार, एक प्रकार का  
अनाज ।

जवारभाटा ( पु० ) समुद्र का उतार-चढ़ाव ।

जवास्ता ( सं० यवास्त, यु=मिलना ) ( पु० ) एक प्रकार  
की घास जिसकी गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई  
जाती है, जो बरसात का पानी गिरने से सूख  
जाती है ।

जस ( सं० यश ) ( पु० ) कीर्ति, नामवरी ।

जस ( कि० वि० ) जैसे, जिस प्रकार से ।

जसोदा } ( सं० यतोदा ) ( स्त्री० ) नंदजी की स्त्री,  
जसुमात } श्रीकृष्ण का दूधरी मा ।

जस्त } ( पु० ) एक प्रकार की धातु ।  
जस्ता }

जहक ( ज+हक, हार=झोड़ना ) ( पु० ) समय, बाजक,

कैजुल, ( वि० ) त्यागी, छोड़नेवाला ।

जहन्नुम ( पु० ) नरक, दोज़ख, बुरा स्थान ।

जहमत ( स्त्री० ) आपत्ति, दुःख, श्रम ।

जहर उगलना ( मुहा० ) द्वेष-पूर्ण बात कहना ।

जहर करना ( मु० ) कड़वी कर देना ।

जहर का घूँट ( मुहा० ) बहुत कड़वा ।

जहर का घूँट पीना ( मुहा० ) अनुचित बात को  
सहना, शत्रु को प्रहण करना ।

जहर का बुभाया ( मुहा० ) अधिक अन्धकारक ।

जहर की शौंठ ( मुहा० ) विष की थैली, जिसमें जहर  
भरा हो, दुष्ट ।

जहर में बुभाना ( मुहा० ) धारवाले हथियार को  
विपाक करना ।

जहरवाद ( पु० ) खून के विकार से उत्पन्न फोड़ा-  
विशेष ।

जहूँ, ( सं० यव ) ( कि० वि० ) जिस जगह ।  
जहाँ

जहाँ कहीं ( बोल० ) चाहे जहाँ, किसी जगह ।

जहाँ का तहाँ ( बोल० ) जहाँ था वहीं, उसी जगह,  
यथास्थान ।

जहाँ जहाँ ( बोल० ) जिस-जिस जगह ।

जहाँ-तहाँ ( बोल० ) हर एक जगह, सब ठौर ।

जहाँ तहाँ फिरना ( बोल० ) भटकना, इधर-उधर  
फिरना, मारा-मारा फिरना ।

जहान ( पु० ) दुनिया, संसार ।

जहू ( पु० ) चंद्रवंशियों में एक राजर्षि का नाम जो  
गंगा को, उतरते समय, पी गया था ( पुराणों के  
अनुसार ) ।

जहुननया ( जहु+नया=बेटा ) ( स्त्री० ) गंगा; कहते हैं  
कि जब राजा जहु तप करते हुए गंगा की धारा  
से ब्याकुल हुए तो गंगा को पी गये। फिर देवताओं  
के कहने से पीछे पेट से निकाल दिया इसलिये  
गंगा को जहु का बेटा कहते हैं ।

जई ( सं० जाता, जय=जयाना ) ( स्त्री० ) बेंटी,  
खड्की, जनी, ( वि० ) पैदा हुई, ( सं० जाती )  
चमेखी ।

जाकड़ ( पु० ) बंधक, शरोहर, कोई चीज़ शर्त  
पर लेना ।

जाकर ( ग० ) निष्का ( कि० ) जाय कर ।

जाग्यन ( गी० ) जमघट, कुँ की नीव में दिया जानेवाला चक्र ।

जाय ( पु० ) होम, यज्ञ ।

जागती ज्योति ( वि० ) पराक्रमी, प्रतापी ।

जागना ( मं० जागरण, जागृ=जागना ) ( कि० श्र० ) नींद से उठना, सचेत होना ।

जागर { ( जागृ=जागना ) ( पु० ) रतन्नागा, जगती,  
जागरण { रान की जागर परमेश्वर का ध्यान करना ।

जागरित {  
जागरिता { ( पु० ) जगैया, निद्रोत्थित, सचेत,  
जागरी { वेदार ।  
जागरूक {  
जाग्रत् {

जागीर ( पु० ) दान में मिली जमीन, मुआफ़ी जमीन ।

जांगल ( पु० ) गौरैया पक्षी, गरगोटा ।

जांगलिक ( पु० ) काखयेलिया, विप उतारनेवाला, विपवैद्य ।

जाँघ ( सं० गङ्गा ) ( स्त्री० ) रान, ग्रंथा ।

जाँघिया ( जाँघ ) ( पु० ) कलुनी ।

जाँघिल ( पु० ) पक्षा-विशेष, पिछले पैर से लचक खानेवाला बैल ।

जाँचना ( कि० सं० ) परखना, अटकलना, कसना ।

जाचक ( मं० याचक ) ( पु० ) माँगनेवाला, भित्तारी, याचना करनेवाला ।

जाचना ( सं० याचन ) ( कि० सं० ) माँगना, चाहना ।

जाजम ( स्त्री० ) शतरंजी, दूरी, निहोना ।

जाट ( पु० ) हिंदुओं को एक जाति ।

जाठ ( पु० ) लड़ा, कोलू की भुरी ।

जाड़ा ( मं० जड़, जल्दकना ) ( पु० ) सड़ों, ठंड, शीतकाल ।

जाड़ी ( स्त्री० ) दारों की कतार ।

जाज्य ( पु० ) मूर्खता, मूढ़ता, शीतलता ।

जात ( जन्=पैदा होना ) ( गी० ) जन्मा हुआ, पैदा हुआ, उत्पन्न ।

जात ( सं० जाति ) ( स्त्री० ) जाति, वंश, कुल, वर्ण, गोत्र, प्रकार, भेद, गण, वर्ग ।

जातक ( जन्=पैदा होना ) ( पु० ) वेदा, बृहज्जातक आदि ज्योतिष के ग्रंथ, जातकर्म ।

जातकर्म ( जा=जन्म, कर्म=काम ) ( पु० ) जन्म के समय की एक रीति ।

जातना ( स्त्री० ) यातना, पीड़ा, व्यथा, दंड ।

जातपाँत ( सं० जातिपंक्ति ) ( स्त्री० ) वंशावली, वंश, उत्पत्ति, पीढ़ी ।

जातरूप ( पु० ) सोना, चाँदी ।

जातापत्या ( स्त्री० ) प्रसूता स्त्री ।

जाता रहना ( बोध० ) खोया जाना, चला जाना, अदृश्य होना, अज्ञोप हो जाना, मर जाना, चंपत होना ।

जाति ( जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) जात, वर्ण, गोत्र, वंश, उत्पत्ति ।

जातिन्युत ( वि० ) जाति से अलग ।

जातिधर्म ( पु० ) कुल धर्म, वर्ण धर्म ।

जातिधैर ( पु० ) श्वाभाविक दुश्मनी, सहज धैर, परंपरागत धैर ।

जाती ( जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) चमेली, जावित्री ।

जातीफल ( पु० ) जायफल ।

जातुधान ( जातु=कर्म, धान=पाप, अर्थात् जो समयपाकर मनुष्यों के पाप आ जाता है ) ( पु० ) राक्षस, असुर ।

जात्य ( वि० ) सुंदर, कुलीन, अच्छे कुल में उत्पन्न व्यक्ति ।

जात्रा ( सं० यात्रा ) ( स्त्री० ) तीर्थ को जाना, देशाटन, सफ़र, कूच ।

जात्री ( सं० यात्री ) ( पु० ) यात्रा करनेवाला, तीर्थ को जानेवाला, मुसाफ़िर ।

जात्य त्रिभुज ( पु० ) समकोण त्रिभुज ।

जान ( गी० ) रह, जीव, आत्मा, अति प्रिय, ( पु० ) ओम्हा, ज्ञानी, मायावी, सर्वज्ञ ।

जानकी ( जनक=राजा का नाम ) ( स्त्री० ) जनक राजा की बेटी, सीता, विदेही, श्रीरामचंद्र की पत्नी ।

जाननहार ( पु० ) जाननेवाला, समझनेवाला ।

जानना ( सं० ज्ञान, ज्ञा=जानना ) ( कि० सं० ) समझना, बुझना, पहचानना, [ जानबूझके, ( बोध० ) मन से, जी से, समझ-बूझकर ]

जानपद ( पु० ) जनस्थान, देश, परगना, जनपद ।

जानपना ( पु० ) जान-पहचान, अभिज्ञता, चतुराई ।

जाना ( सं० जान, या=जाना ) ( कि० श्र० ) गमन करना,

चलना, बीतना, पहुँचना, जारी रहना, चला जाना ।  
 जानि ( स्त्री० ) जोड़, पत्नी, भार्या, ( वि० ) जानने-वाला, ( कि० वि० ) जानकर, समझकर ।  
 जानु ( जन्=पैदा होना ) ( पु० ) घुटना, टखना, टेंडुना, ऊरु, जानू ।  
 जाने देना ( बोल० ) छोड़ देना, क्षमा करना, कुछ खयाल न करना ।  
 जाप ( जप=जपना ) ( पु० ) जप, रटना, माछा फेरना, मंत्र जपना ।  
 जापक ( जप=जपना ) ( पु० ) जप करनेवाला, जपनेवाला ।  
 जाफत ( स्त्री० ) भोज, दावत ।  
 जाफरान ( पु० ) केसर ।  
 जा-बजा ( कि० वि० ) इधर-उधर, ठीर-ठीर ।  
 जायता ( पु० ) नियम, कानून, व्यवस्था ।  
 जाम ( सं० याम ) ( स्त्री० ) पहर, दिन-रात का आठवाँ भाग, तीन घंटा, मदिरा का प्याला ।  
 जामन ( सं० नड, जम्=माना ) ( पु० ) एक पेड़ और उसके फल का नाम, जोरन, जोड़न ।  
 जामा ( पु० ) धरदार अंगा, अँगारखा ।  
 जामाता ( जाया=पत्नी, मा=प्रादर करना ) ( पु० ) अमाई, बेटी का पति, दामाद ।  
 जामिन ( पु० ) जमानत करनेवाला, प्रतिभू ।  
 जामिनी ( सं० यामिनी ) ( स्त्री० ) रात, रात्रि, यवनों की भाषा ।  
 जांबवंत ( सं० जांबवान्, जांब=जामन, वन्=वाला ) ( पु० ) रीछों का राजा, भीरामचंद्र का मित्र, श्रीकृष्ण का ससुर ।  
 जांबूनद ( पु० ) सुवर्ण ।  
 जाय ( कि० वि० ) वृथा ।  
 जायका ( पु० ) स्वाद, खज्जत ।  
 जायज़ ( वि० ) उचित, यथार्थ ।  
 जायद ( वि० ) अधिक, ज्यादा, अतिरिक्त ।  
 जायदाद ( स्त्री० ) संपत्ति, भूमि ।  
 जायफल ( सं० ज्ञातिफल ) ( पु० ) एक तरह का गर्म मसाला ।

जाया ( जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) भार्या, पत्नी, व्याहीहुई स्त्री ।  
 जायानुजीवी ( जाया+भ्रतुजीवी ) ( पु० ) नट, वेश्यापति, भटुआ, बकपक्षी ।  
 जायापती ( पु० ) दंपति, स्त्री-पुरुष ।  
 जार ( जू=दबला होना, अर्थात् छा के सच्चे पति का प्यार धटानेवाला ) ( पु० ) यार, दूसरा पति, उपपति ।  
 जारकर्म ( पु० ) व्यभिचार ।  
 जारज ( जार=गार, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) जार से पैदा हुआ लड़का, हरामी बेटा ।  
 जारना ( सं० चलन ) ( कि० सं० ) जलाना, सुखगाना, भड़काना, आँच लगाना ।  
 जारा ( पु० ) सोनार आदि की भट्टी की भाग रक्खा जानेवाला भाग ।  
 जारिणी ( स्त्री० ) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी ।  
 जारी ( वि० ) बहता हुआ, प्रवाहित, प्रचलित, क्रमागत ।  
 जारोव ( स्त्री० ) झाड़ू ।  
 जारोवकश ( पु० ) झाड़ू देनेवाला ।  
 जाल ( जल्=ढकना, घेरना ) ( स्त्री० ) फंदा, पाश, जाखी-दार खिचकी, झरोखा, माया, इंद्रजाल, जादू, समूह, अहंकार, धोखा ।  
 जालक ( जाल+थक ) ( पु० ) फरेबी, मक्कार, मछली का जाल, जालीलेट कपड़ा, शिलाजीत, जोंक, रौंड़ रंडा, फिलजम, बहतर, ब्याच, बहेलिया, मल्लाह ।  
 जालगोशिका ( स्त्री० ) मथेनी, मथनी ।  
 जालंधरीविद्या ( स्त्री० ) इंद्रजाल ।  
 जालसाज़ ( पु० ) धोखेबाज़, फरेबी, झूठी कार्रवाई करनेवाला ।  
 जाला ( सं० जाल, जल=ढकना ) ( पु० ) मकड़ी का जाला, मोतियाबिंद, आँख की बीमारी, मटका, पानी रखने का बर्तन ।  
 जालिक ( पु० ) जाल बुननेवाला, मछुआ, धीवर, मकड़ी, मदारी, बाजीगर ।  
 जालिका ( पु० ) जोंक, जखीका ।  
 जालिम ( वि० ) अत्याचारी, अन्यायी, निर्दयी ।  
 जालिया ( पु० ) धीवर, मच्छीमार, ( वि० ) दशाबाज़, फरेबी, जालसाज़ ।  
 जाली ( सं० जाल ) ( स्त्री० ) एक तरह का कपड़ा, झंझरी, जाखीदार खिचकी, झरोखा ।

जालीलेट ( पु० वस्त्र-विशेष जिसमें छोटे-छोटे छेद बने रहते हैं ।

जालम ( वि० ) जाल, धूर्त, पामर, अधम, क्रूर, वंठ ।

जालमक ( पु० ) गुरु, मित्र या वरुण के साथ द्वेष करनेवाला व्यक्ति ।

जावक ( सं० जावक, यु०=मिलना ) ( पु० ) महावर, अलत ।

जायित्री } ( सं० जातीपत्र ) ( स्त्री० ) एक प्रकार का गम  
जायपत्री } मसाखा, जायफल के ऊपर का छिलका ।

जासु ( सं० जस्य ) ( स्त्री० ) जिसका, जिससे ।

जामूस ( पु० ) गुप्तचर, भदिथा ।

जाह ( पु० ) कंठ, फँसाव, आपत्ति ।

जाहि ( स्त्री० ) जिसकी ।

जाहिर ( वि० ) प्रकट, विदित, प्रकाशित ।

जाहिल ( वि० ) मूर्ख, अनाड़ी, निर्बोध ।

जाह्यी ( जह्य=एक राक्षस का नाम ) ( स्त्री० ) गंगा, भागीरथी ।

जिक ( पु० ) प्रसंग, चर्चा ।

जिगमिषा ( गम=जाना ) ( स्त्री० ) गमनेच्छा, जाने का इरादा ।

जिगर ( पु० ) कलेजा, हृदय, हिम्मत, मन, सार, पुत्र ।

जिगरी ( वि० ) भीतरी, हार्दिक, दिली, दिल-संबंधी ।

जिगीषा ( जिगमिषा ) ( स्त्री० ) जीतने की इच्छा, जय की इच्छा, हिंसका ।

जिगमसा ( गम=मानना ) ( स्त्री० ) भोजनेच्छा, खाने का इरादा ।

जिगमसु ( गम=मानना ) ( पु० ) भुभुलु, भोजन करने की इच्छा करनेवाला ।

जिगमसा ( गम=मानना ) ( स्त्री० ) मारने की इच्छा करना ।

जिगमसु ( गम=मानना ) ( पु० ) मारने की इच्छा करनेवाला ।

जिन्न ( स्त्री० ) तंगी, मजबूरी, अड़ ।

जिज्ञासा ( जिगमिषा ) ( स्त्री० ) जानने की इच्छा, पूछना, प्रश्न ।

जिज्ञासु ( पु० ) पूछनेवाला, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला ।

जिठाई ( स्त्री० ) बड़ाई, जेठापन ।

जिटानी ( स्त्री० ) पति के बड़े भाई की स्त्री ।

जिन् ( वि० ) जेता, जीतनेवाला ।

जित ( सं० यत् ) ( कि० वि० ) जहाँ, जिधर, ( वि० ) पराजित, जीता गया, हारा हुआ ।

जिता ( पु० ) हूँ, जोताई-बोआई के समय की किसानों की परस्पर की सहायता ।

जितेंद्रिय ( जित=जीत ला या बश कर ला, इंद्रिय=इंद्रियों, जितने ) ( वि० ) इंद्रियजित्, जिसने इंद्रियों को बश में कर लिया हो, ऋषि, मुनि, यति, संन्यासी ।

जित्वर ( वि० ) विजयी, जीतनेवाला ।

जिद् ( स्त्री० ) हठ, दुराग्रह ।

जिन ( जि=जातना ) ( पु० ) बुद्ध, जैनियों का देवता, जैनमत में २४ जिन वतलाते हैं, मुसलमानों का भूत, विष्णु, सूर्य, बुद्ध ।

जिनाकार ( वि० ) व्यभिचारी ।

जिनाविलज्ज ( पु० ) पराई स्त्री से बलात्कार करना ।

जिस ( स्त्री० ) ज्ञात, क्रोम, रसद, सामान, सामग्री, वस्तु ।

जिमाता ( सं० जेपन, जिम=मानना ) ( कि० सं० ) लिखाना ।

जिम्मा ( पु० ) जवाबदेही, उत्तरदायित्व ।

जिमि ( कि० वि० ) जैसे, जिस प्रकार ।

जिय { ( सं० जीव ) ( पु० ) जीव, प्राण, आत्मा,  
जियरा } रुह ।

जियान ( पु० ) नुकसान, टोटा, हानि ।

जियाना ( सं० जीवन ) ( कि० सं० ) जिज्ञाना, प्राण देना, पाखाना-पोसना ।

जिरह ( पु० ) बहस ।

जिलासाज़ ( पु० ) हथियारों पर ओष या पानी चढ़ाने-वाला ।

जिजनभूरी ( स्त्री० ) संजीवनी-बूटी ।

जिहाद ( पु० ) मुसलमानों की धार्मिक लड़ाई ।

जिह्म ( वि० ) कुटिल, क्रूर, ( पु० ) अधर्म ।

जिह्मग ( वि० ) टेढ़ा चलनेवाले, वक्रगामी, कपटी, बाण, तीर, ( पु० ) साँप ।

जिहल ( क० पु० ) चटोरा, आस्वादक, जिभोर, जिभुका ।

जिह्वा ( लिङ्=स्वाद लेना ) ( स्त्री० ) रसज्ञान इंद्रिय, जीभ, रसना ।

जिह्वाग्र ( पु० ) कंठस्थ, मुख्याग्र, बरज़बानी ।



जी (अव्य०) हाँ साहब, आप ।

जी (सं० जीव) (पु०) जीव, प्राण, आत्मा, जिय, मन, चित्त ।

जी आ जाना (बोल०) किसी चीज़ पर अचानक मन लग जाना, किसी से प्रसन्न होना ।

जी उठाना (बोल०) उदासीनता, मन खींच लेना, किसी से मित्रता छोड़ देना ।

जी करना } (बोल०) चाहना, किसी चीज़ की चाह  
जी होना } मन में पैदा होना ।

जी खोल के कुछ करना (बोल०) किसी काम की चाह से अथवा प्रसन्नता से करना ।

जी घट जाना (बोल०) किसी चीज़ से मन हट जाना, धिनाना, अवज्ञा करना, उदास होना ।

जी चलना (बोल०) चाहना, इच्छा करना ।

जी चलाना (बोल०) इच्छा करना ।

जी चाहना (बोल०) किसी चीज़ की इच्छा करना, खलचाना, मन में किसी की चाह पैदा होना ।

जी चुराना } (बोल०) किसी काम को सुस्ती से  
जी छिपाना } करना, असावधानी करना, अन्यमनस्क रहना ।

जी जलना (बोल०) मन में दुःख पाना, कुढ़ना ।

जी जलाना (बोल०) आप दुःख सहकर दूसरे का उपकार करना, सताना, खिन्नाना, दिख दुखाना, कलपाना ।

जी डग जाना (बोल०) अचेत होना, भूच्छा आना, जी बिखरना, ग़श आना, बेहोश होना ।

जी दान (बोल०) बचाना, मरने से बचाना, जीवदान ।

जी दान करना (बोल०) किसी के प्राण बचाना, बड़े दोष को क्षमा करना, जान बूझ देना ।

जी धड़कना (बोल०) डर से अथवा सोच से दिल धुकड़-धुकड़ करना, दिल काँपना, मशकित होना ।

जी निकलना (बोल०) सरना, बेकल होना, बहुत डरना ।

जी पकड़ा जाना (बोल०) सोच में होना, उदास होना ।

जी पर आना (बोल०) मुश्किल में पड़ना, बलेश में होना ।

जी पर खेलना (बोल०) अपने को जोखिम में डालना, जी देने पर उद्यत होना ।

जी पसीजना } (बोल०) दया आना, मोह आना ।  
जी पिघलना }

जी पाना (बोल०) किसी के स्वभाव को जानना ।

जी पानी करना (बोल०) सताना, दुःख देना, खिन्नाना, पीड़ा देना ।

जी फट जाना (बोल०) दिल टूट जाना, निराश होना, प्रेम टूटना ।

जी फिर जाना (बोल०) किसी चीज़ से उदासीन हो जाना, संतुष्ट होना, तृप्त होना, किसी चीज़ से अघा जाना ।

जी बढ़ाना (बोल०) मन में किसी चीज़ की चाह पैदा होना, जी में उत्साह होना, हीसला होना ।

जी बहलाना (बोल०) मन बहलाना ।

जी बिखरना (बोल०) अचेत होना, भूच्छित होना, मूर्च्छा आना ।

जी बुरा करना (बोल०) जो मिचलाना, समन करना या किया चाहना, रद्द किया चाहना ।

जी भर आना (बोल०) मन में दया का उपजना, दया, हर्ष अथवा सोच से मुँह से बोल न निकलना ।

जी भर जाना (बोल०) संतोष होना, मन तृप्त हो जाना, आसूदा होना, अघा जाना ।

जी मारना (बोल०) किसी की इच्छा को तोड़ना, निराश करना, अप्रसन्न करना ।

जी मिलाना (बोल०) किसी से मित्रता करना, सुहृदत्व बढ़ाना ।

जी में आना (बोल०) कोई बात सूझना, याद पड़ना, मन में कोई संकल्प उत्पन्न होना ।

जी में घर करना (बोल०) मन आना, किसी को बहुत चाहना ।

जी में जल जाना (बोल०) डार से दुःख पाना ।

जी में जी आना (बोल०) सुख पाना, चैन होना, प्रसन्न होना, स्वाभाविक स्थिति में आना ।

जी रस्दना (बोल०) फटपट प्रसन्न हो जाना, प्रसन्न करना, दिख मृशुश करना ।

जी लगाना (बोल०) किसी से प्यार करना, किसी की चाह होना, किसी का खयाल रहना ।

जी लगाना (बोल०) किसी में मन लगाना, किसी की चाह मन में पैदा होना ।

जी लेना ( बोल० ) किसी के मन की धाह लेना, मार डालना ।

जी से उतर जाना ( बोल० ) नहीं चाहना, दिल से गिरना ।

जी से मारना ( बोल० ) मार डालना, जान से मार डालना ।

जी हट जाना ( बोल० ) मन हट जाना, जी घट जाना ।

जी हारना ( बोल० ) हिम्मत हारना, घबराना, साहस छूटना, निराश होना ।

जीत ( सं० जित, जि=जीतना ) ( रस० ) विजय, जय, फ़तह ।

जीतना ( सं० जि=जीतना ) ( क्रि० सं० ) जय करना, पराजय करना, हराना ।

जीतव ( सं० जीवन् या जीवन्त्य ) ( पु० ) जीना, जीवन, जिंदगी ।

जीता ( जीना ) ( वि० ) जीना हुआ, चलता, चैनन्य, अधिक, ऊपर ।

जीते-जी ( बोल० ) अब तक जीता है ।

जीन ( पु० ) चारजामा, काठी, क़ावा, सोटा सूती वस्त्र ।

जीनपोश ( पु० ) जीन ढाँकने का वस्त्र ।

जीन सवारी ( रस० ) जीन कसकर घोंट की सवारी की क्रिया ।

जीना ( सं० जीवन् ) ( क्रि० थ० ) जीता रहना ।

जीभ ( सं० जिह्वा ) ( रस० ) जिह्वा, रसना, ज़बान ।

जीभ चाटना ( बोल० ) बड़ी ख़ाख़सा करना, जो खल-खाना, बहुत चाहना ।

जीभ निकालना ( बोल० ) बहुत ही ज्यादा थक जाना या प्यासा होना, हाँफना ।

जीभ पकड़ना ( बोल० ) चुप होना या करना, किसी की बात काटना, छोटे-छोटे दोष निकालना ।

जीभ बड़ाना ( बोल० ) बातें बनाना, बकबक करना, निंदा करना ।

जीभारा ( वि० ) शूटोरा, लोभी, लुट्ठ, बकवादी ।

जीभी ( जीभ ) ( स्त्री० ) जीभ साक करने की चीज़ ।

जीमना } ( सं० जेम्न, जिम्=माना ) ( क्रि० सं० )  
जेवना } खाना, भोजन करना ।

जीमार ( वि० ) घातक, नृशंस, मारनेवाला ।

जीमूत ( पु० ) मेघ, पर्वत, मोथा, दंडकारण्य, शेप, धूम, इन्द्रिय ।

जीरा ( सं० जीर्, ज्या=पुगना होना ) ( पु० ) एक मसाले का नाम ।

जीर्ण ( जृ=वृद्ध होना, पुगना होना ) ( पु० ) बूढ़ा आदमी, ( वि० ) पुराना, मुरझाया हुआ, पचा हुआ ।

जीर्णोद्धार ( जीर्ण + उद्धार ) मरम्मत, लेसपीत ।

जील ( स्त्री० ) गाने में ऊँचा स्वर, तीखा राग, तान पूरा या सारंगी आदि का तार ।

जीव ( जीव=जीना ) ( पु० ) प्राण, जी, आत्मा, जीव-धारी, जंतु, जावर, जीविका ।

जीवक ( जीव + अक ) ( पु० ) सेवक, किंकर, कृपण, सूदखोर, सैपेरा ।

जीवदान ( पु० ) अभयदान, प्राणदान ।

जीवन ( पु० ) जीना, जीतव, जीविका, वृत्ति, पानी, घेठा, पुत्र ।

जीवन-चरित ( पु० ) जीवन-वृत्तान्त, हाल, सबानहउश्री ।

जीवनधन ( पु० ) जीवन का सर्वस्व, प्राणधार ।

जीवनाभास ( पु० ) जीवन का भय, न जीने का डर ।

जीवनमृत ( पु० ) जीने-जी मरा, जीता हुआ भी मृतक के समान ।

जीवनयोनि ( पु० ) रज-विशेष, शरीर में प्राण-संचार करनेवाला एक प्रकार का रज ।

जीविका ( स्त्री० ) जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निबाह, रोज़ी ।

जीवित } ( वि० ) जीता हुआ, जीता, ( पु० ) जीना,  
जीवी } जीवन, वर्तमान ।

जीह { ( सं० जिह्वा ) ( स्त्री० ) जीभ, रसना । "अब  
जीहा { कछु कहब जीह करि दूज" — गी० तु० दा० ।

जुआचोर ( पु० ) ठग, धोखेबाज़ ।

जुआचारा ( स्त्री० ) ठगी, धोखेबाज़ी ।

जुआठ ( पु० ) बैल के कंधे के ऊपर की खकड़ी का ढाँचा जिसे हल या पुरवट में उससे जोतते समय लगाते हैं ।

जुआरि ( स्त्री० ) अन्न-विशेष, जोन्हीरी ।

जुआरी } ( सं० जूनारी ) ( पु० ) जूषा खेळने  
जुवारी } वाला ।

- जुकाम (प०) बीमारो-विशेष जो सर्दी से होती है और जिसमें नाक से पानी जाता है ।
- जुग (सं० युग) (प०) सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि--ये चार युग कहलाते हैं, समय, जोड़ा, दल, गुट्ट ।
- जुगजुग (बोल०) सदा, नित, सर्वदा, हमेशा ।
- जुगत (सं० युक्त) (स्त्री०) चतुराई, निपुणता, बनावट, हिकमत ।
- जुगनी (स्त्री०) चमकनेवाला कीड़ा ।
- जुगल (सं० युगल) (वि०) दा, जोड़ा ।
- जुगयना (क्रि० स०) देखना, यत्न करना, खबर लेना, रखना, रक्षा करना ।
- जुगानजुग (सं० युगानयुग, युग + अनु + युग) (बोल०) कई युग, कई बरस, बहुत बरस तक ।
- जुगालना } (क्रि० प्र०) उगलना, पगुराना,  
जुगाली करना } रोमंथ करना ।
- जुगाली (स्त्री०) पागुर, उगाल, रोमंथ ।
- जुगुप्सा (गुप्तनिंदा करता) (स्त्री०) निंदा, बुराई, असूया ।
- जुगुप्सित (वि०) निन्दित, बदनाम ।
- जुग (स्त्री०) उत्साह, उमंग, साहस ।
- जुगित (वि०) जाति-बहिष्कृत ।
- जुजु (प०) भयंकर, भयंकर कल्पित मूर्ति, जूजू, भयो-त्पादक संकेत ।
- जुझाऊ (सं० युद्धोप=लड़ाई का) (वि०) लड़ाई का जुझाऊ बाजा, लड़ाई का मारु बाजा ।
- जुझार (सं० योद्धा) (वि०) लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला, बहादुर ।
- जुझायना (क्रि० स०) लड़ा-भड़ाकर मरवा डालना ।
- जुटना (सं० युक्त, युज्=मिलना) (क्रि० प्र०) भिड़ना, मिलना, लड़ने को सामने होना ।
- जुटाना (क्रि० म०) संग्रह करना, एकत्र करना ।
- जुटैया (प०) जुट जानेवाला, भिड़नेवाला, मिलने-वाला लड़नेवाला ।
- जुठारना (क्रि० स०) जूठा करना ।
- जुड़ना (सं० जुड़=जुड़ना) (क्रि० प्र०) मिलना, सटना ।
- जुड़हा (प०) युग्म, जोड़ा ।
- जुड़ाना } (क्रि० स०) छाती ठंडी करना, ठंडा  
जुड़ाना } होना, मिछाना, जोड़ना ।
- जुतियाना (क्रि० स०) जूतों से मारना, अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना ।
- जुत्थ (प०) कुंड, दल, समूह; "जुत्थ-जुत्थ जोगिनो जमाति जुरि आई है ।"—महाकवि भूपण
- जुदाई (स्त्री०) वियोग, विछोह ।
- जुद्ध (प०) संग्राम, युद्ध, लड़ाई ।
- जुन (प०) अवसर, मौका, समय ।
- जुन्हरी (स्त्री०) उवार, एक प्रकार का अनाज ।
- जुन्हई (स्त्री०) चाँदनी, चंद्रमा ।
- जुन्हैया (स्त्री०) चाँदनी, चंद्रमा ।
- जुमना (प०) घेत में खाद डालने की क्रिया-विशेष ।
- जुमला (प०) पूरा वाक्य, (वि०) सब, संपूर्ण ।
- जुम्रा (स्त्री०) भार्या, पत्नी ।
- जुर्म (प०) दोष, अपराध ।
- जुल (प०) नड़ावा, उत्तेजना, चिट्ठा, धोखा, भाँसा ।
- जुलना (क्रि० म०) मिलना, भेंट करना ।
- जुल्स (प०) धूमधाम से सवारी निकलना ।
- जुल्फ (स्त्री०) सिर के लंबे-लंबे बाल जो पीठ पर लटकते हैं ।
- जुवार (प०) एक प्रकार का अनाज ।
- जुहार (प०) सखाम, रामराम, पातागन, दंडवत्, नमस्कार ।
- जुहारना (क्रि० स०) किसी का गहमान लेना ।
- जूआ (सं० घृत) (स्त्री०) पाँसा खेलना, दौंव खगाना ।
- जूआ } (सं० युग) (प०) एक लकड़ी की चोड़  
जूआ } जिसे बैलों के गले में बांधते हैं, जूआट ।
- जू (स्त्री०) जूवाँ जो सिर के बालों में मैल से पैदा होते हैं ।
- जूझना (सं० युज्=जुड़ना) (क्रि० प्र०) लड़ना, लड़ाई करना, लड़ाई में मरना ।
- जूझ मरना (वाक्य०) लड़ाई में लड़कर मरना ।
- जूट (जुट=बाँधना) (प०) केशों का बंध, जटा का जूड़ा, समूह, पटसन ।
- जूड़ा (सं० जूट) (प०) बँध हुआ बाल, (जड़) टंड, टंड से उत्पन्न होनेवाला बच्चों का पसली-रोग ।
- जूड़ी (सं० लज्ज=जाड़ा) (स्त्री०) ज्वर, शीतज्वर, कंप-ज्वर, जाड़ा, जरजा ।

जूता } (पु०) पनही, पगरखी, जोड़ा, चर्मपादुका ।  
जूती }

जूतीपेंजार (स्त्री०) मार-पीट, झगड़ा, टंटा ।

जूथ (पु०) दल, समूह, झुंड ।

जूना (पु०) घास का बना रस्सा, गेंदुरी (वि०) पुराना ।

जूपी (वि०) जुआरी ।

जूमना (क्रि० अ०) जुटना, एकत्र होना ।

जूरना (क्रि० स०) मिलाना, जोड़ना ।

जूरी (स्त्री०) समूह, झुंड, पंच जो मुकदमा फ़ैसला करने में जजों को राय देते हैं ।

जूस (पु०) रसा, झोल, चुरी हुई दाख का पानी, रोगी का पथ्य ।

जूहा (सं० युध) (पु०) समूह, झुंड ।

जूही (सं० युथी, यु=मिलना) (स्त्री०) एक फूल का नाम ।

जेठ (स्त्री०) ढेर, ढेरी, समूह, परत ।

जेठ (सं० ज्येष्ठ) (पु०) पति का बड़ा भाई, एक महीने का नाम ।

जेठा (सं० ज्येष्ठ) (वि०) बड़ा, पहलौठा, (पु०) कुसुम का बहुत अच्छा और गाढ़ा रंग ।

जेठानी } (जेठ) (स्त्री०) जेठ की स्त्री ।  
जिठानी }

जेठीमधु (सं० यथीमधु, यथी=तीत, मधु=शहद) (स्त्री०) मुलहठी, एक दवा ।

जेठीत (जेठ) (पु०) जेठ का बेटा ।

जेता (जि=जीता) (पु०) विजयी, जीतनेवाला ।

जेय (या०) खलीता, पाकेट ।

जेयकतरा (पु०) उचका, जब कतरनेवाला ।

जेयस्त्रन्त्र (पु०) निज का स्वर्ग ।

जेमन (जिम्=खाना) (पु०) भोजन, खाना, भोज्य पदार्थ, खाने की वस्तु ।

जेर (पु०) जरायु, खेड़ी, गर्भ-बंधन ।

जेरवार (वि०) क्षतिग्रस्त, आपद्ग्रस्त ।

जेल (पु०) बंदीगृह, कारागार ।

जेवड़ी } (स्त्री०) रस्सी, डोरी ।  
जेवरी }

जेहन (पु०) बुद्धि, धारणाशक्ति, याददास्त ।

जेहर (पु०) स्त्रियों के पैर में पहनने का एक गहना, पायजेब ।

जै (सं० जय) (स्त्री०) जीत, विजय, जय, फ़तह ।

जैजैकार (सं० जयकार) (पु०) आनंद, उत्सव, हर्ष, जीत विजय, जय, बोलबाला, विजयोन्नास ।

जैजैकार करना (बोल०) जय का शब्द करना ।

जैन (जिन=प्रह्वण, बुध) (पु०) जिन-धर्म को मानने-वाला, बौद्धमती ।

जैनी (पु०) जैनमत को माननेवाला, श्रावक, सरावक ।

जैसा (सं० यादश, यत्=जो, दश=देखना) (क्रि० वि०) जिस तरह, जिस प्रकार ।

जैसा का तैसा (बोल०) ठीक, जैसा चाहिए, ज्यों का त्यों, यथावत् ।

जैसा चाहिए (बोल०) यथोचित, ठीक ।

जैहें (व्रजभाषा) (क्रि० अ०) जायेंगे, जादेंगे ।

जों (क्रि० वि०) जैसे, जिस तरह, जब ।

जोंक (सं० जलौका) (स्त्री०) जल का कीड़ा, जलौका ।

जों का तों (बोल०) जैसा का तैसा, जैसा था वैसा ही, ठीक वैसा ही, ज्यों का त्यों ।

जों तों } (बोल०) किसी तरह से ।  
जों तों करके }

जोंहीं (क्रि० वि०) अभी, तुरंत ।

जोखना (क्रि० स०) तौखाना, नापना ।

जोखिम } (स्त्री०) बीमा, डर, चिंता, शंका, कठिन  
जोखों } काम ।

जोखिम उठाना (बोल०) अपने तर्ह संकट में डालना, कठिन काम करने का साहस करना ।

जोग (पु०) योग, चित्त की वृत्तियों को बाहरी बातों से हटाना, ज्ञान प्राप्त करने का साधन, मेख, मिखाप, अच्छा समूह, ग्रहों का मेख, तप, संयोग ।

जोगड़ा (पु०) पाखंडी ।

जोगवना (क्रि० स०) सुरक्षित रखना, बटोरना, प्रादर करना ।

जोजन (पु०) चार कोस ।

जोट } (सं० जोड़, जुड़=मिलाना) (पु०) जोड़ी, साथ,  
जोटा } सम, बराबरी के, (वि०) बराबर ।

जोड़ (जुड़=बँधना, मिलाना) (पु०) मेख, मिखाप, इकट्ठा, मीज़ान, टोटल, गाँठ, संधि ।

जोड़-जाड़ ( बोल० ) बचत, बचाव, थोड़ा-थोड़ा करके इकट्ठा करना ।

जोड़-तोड़ ( बोल० ) बन-वट, बंधान, हिकमत, जुगत, गठ ।

जोड़ देना ( बोल० ) गिनना, हिसाब करना, मीजान, देना, ठीक करना, जोड़ना ।

जोड़ना } ( सं० जुड़=मिलाना ) ( कि० स० ) मिलाना  
जोरना } इकट्ठा करना, गौंठना, थेगल्लो लगाना,  
पैरंद लगाना, गिनना, हिसाब करना, मीजान देना,  
जोड़ देना, बनाना, लगाना, चिपटाना, सौंटना,  
पोछे लगा देना ।

जोड़ा ( सं० जुड़=जोड़ना ) ( पु० ) दो मनुष्य अथवा दो चीज़, युग्म, जूता, कपड़े का जोड़ा ।

जोत ( पु० ) बैल-घोड़ आदि नाधने के चमड़े के तस्मे, तराजू के पल्लवों की रस्सों, जोतने-बोने को मिखी हुई ज़मीन ( खी० ) प्रकाश, किरण उद्योति ।

जोतना ( सं० योजन, जुन=मिलाना ) ( कि० स० ) जुए में लगाना, हल जोतना, चासना ।

जोत } ( सं० ज्योति ) ( खी० ) चमक, उजाळा,  
जोति } प्रकाश, किरण, तेज, दीप्ति, रोशनी, दीपक का प्रकाश, दृष्टि, दौठ ।

जोतिस्वरूप ( सं० ज्योतिस्वरूप ) ( वि० ) आपसे प्रकाशित, दोसिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर का गुण या विशेषण ।

जोतिष ( सं० ज्योतिष ) ( पु० ) ग्रह, नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र ।

जोतिषी } ( सं० ज्योतिषिक ) ( पु० ) जोतिष-  
जोतिषी } विद्या जाननेवाला, जोषी, गणक, दैवज्ञ, नजुमी ।

जोती ( खी० ) तराजू के पल्लवों की रस्सी ।

जोत्स्ना ( सं० ज्योत्स्ना ) ( खी० ) चाँदनी, चंद्रिका ।

जोत्स्नी ( खी० ) रात, रैन ।

जोधन ( पु० ) लड़ाई, संग्राम, योद्धा, जुए के ऊपर और नीचे की लकड़ियों के बाँधने की रस्सों ।

जोधा ( सं० योद्धा ) ( पु० ) लड़ाका, वीर, बहादुर, भट, जुम्कार ।

जोता } ( कि० स० ) देखना, चितवना, ताकना,  
जोवना } जोहना ।

जोनि ( खी० ) योनि, भग, उत्पत्तिस्थान, खान, कारण, हेतु, शरीर, जाति ।

जोवन ( सं० यौवन ) ( पु० ) जवानी, तरुणाई, स्तन, पयोधर, छाती ।

जोय } ( सं० जाया ) ( खी० ) परनी, भार्या, स्त्री,  
जोरू } लुगाई ।

ज़ोर ( पु० ) ताक़त, शक्ति ।

ज़ोरशोर ( पु० ) प्रबलता, अत्यधिक ।

जोराजोरी ( खी० ) बलपूर्वक ।

जोरावर ( वि० ) बलवान् ।

जोरी } ( सं० युज=मिलना ) ( खी० ) जोड़ा, युग्म,  
जोड़ी } युग्म, दो ।

जोला ( पु० ) कपट, छल, मूर्खता, धोखा ।

जोवत ( कि० प्र० ) चाहते, देखते ।

जोवना ( कि० प्र० ) देखना, खोजना, ढूँढ़ना ।

जोषित् } ( जुपु=प्रमत्त करना, तृप्त करना ) ( खी० )  
जोषिता } नारी, लुगाई ।

जोषी } ( सं० ज्योतिष ) ( पु० ) ज्योतिषी, ब्राह्मणों  
जोशी } की एक जाति ।

जोहना ( कि० स० ) राह देखना, बाट निहारना, अपेक्षा करना, देखना, खोजना, ढूँढ़ना ।

जोही ( वि० ) खोजी, ढूँढ़ैया, मुतलाशी ।

जौ ( सं० यव ) ( पु० ) जव, एक प्रकार का चनाज ।

जौ लों } ( कि० वि० ) जब तक ।  
जौ लग }

जौकना ( कि० प्र० ) बड़बड़ाना, गाली देना, ज़ोर से बोलना ।

जौनुक ( पु० ) दहेज, दायज ।

जौन ( सं० यद् या यः=जो ) ( सर्वना० ) जो, जिस ।

जौनार } ( सं० जेमन ) ( खी० ) भोजन, भोज,  
जेवनार } खाना, उरखव, अपने भाई-बंधु अथवा मित्रों को खिलाना ।

जौरा ( पु० ) अन्न जो नाऊ, बारी आदि को उनके काम के बदले दिया जाता है, ज्यौरा ।

जौहर ( पु० ) तख्त, रत्न, सारांश, खूबी, शाखों का भेद, रामपूतों का जुहार-वन ।

जौहरी ( पु० ) रत्न की बेचने और परखनेवाला ।

ज्ञात ( क्त=जानना ) ( वि० ) जाना हुआ, समझा हुआ, जाना गया, विदित ।

ज्ञाता ( ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) जनेया, वांक्रक, जानकार ।

ज्ञानि ( ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) पिता, बाप, संबंधी, जातिभाई ।

ज्ञानिपुत्र ( पु० ) गढ़ावर का दूसरा नाम, स्वगोत्रवाले का पुत्र जैनतीर्थंकर ।

ज्ञान ( ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) ज्ञानना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञान ।

ज्ञानवान् } ज्ञान ( वि० ) बुद्धिमान्, पंडित,  
जानी } विद्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।

ज्ञानवार्पा ( ज्ञान, वारप=वायना ) ( स्त्री० ) एक बावर्ली का नाम जो बनारस में श्रीविश्वनाथजी के मंदिर में है ।

ज्ञानेन्द्रिय ( ज्ञान+इन्द्रिय ) ( स्त्री० ) इंद्रियाँ जिनसे देखने, सुनने, सूँघने, स्वाद लेने और छूने आदि का ज्ञान होता है अर्थात् आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा अर्थात् शरीर के ऊपर का चमड़ा, अंतःकरण, मन ।

ज्ञापक ( ज्ञप्+जानना ) ( पु० ) जतलनेवाला, बतलाने-वाला, आज्ञा देनेवाला ।

ज्ञापन ( ज्ञप्+प्रत्ये, ज्ञप्+जानना ) ( पु० ) जानना, विदित करना, निदेश, हुक्म ।

ज्ञापित }  
ज्ञाप्य } ( वि० ) जाना हुआ, जानने योग्य ।  
ज्ञेय }

ज्ञेय ( वि० ) ज्ञानव्य, जानने अथवा जानने योग्य ।

ज्या ( ज्ञा=ज्ञानना होता या बूढ़ा होना ) ( स्त्री० ) मा, माता, पृथ्वी, धरती, वसुध का चिह्न ।

ज्यामिति ( ज्या० ) रेखागणित, क्षेत्रगणित ।

ज्येष्ठ ( जुह, यहा जुह की ज्या अंश हो जाता है ) ( वि० ) बड़ा, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।

ज्येष्ठ ( ज्येष्ठ ) ( पु० ) जेठ का महोत्सव, जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठ-नक्षत्र होता है और पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है ।

ज्येष्ठा ( ज्या=बूढ़ा बड़ा या पुराना होना ) ( स्त्री० ) अठारहवाँ नक्षत्र, बिचली उँगली, गंगा ।

ज्येष्ठाश्रम ( पु० ) गृहस्थाश्रम ।

ज्यों ( कि० वि० ) जैसे ।

ज्यों का त्यों ( बी० ) ठीक, वैसा ही, ठीक-ठीक ।

ज्योतिः ( ज्यु=चमकना ) ( स्त्री० ) जोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।

ज्योतिःशास्त्र ( ज्योतिः+शास्त्र ) ( पु० ) ग्रह नक्षत्र आदि की चाल जानने का शास्त्र ज्योतिष्, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचांग शास्त्र ।

ज्योतिर्गण ( पु० ) खद्योत, जुगनु ।

ज्योतिमय ( वि० ) प्रकाशपूर्ण, दीप्तिमय ।

ज्योतिर्लिंग ( पु० ) शिव, शंभु ।

ज्योतिर्लोक ( पु० ) ध्रुवलोक ।

ज्योतिर्विद् ( ज्योतिः+विद्, विद्=जानना ) ( पु० ) ज्योतिषी, नजूमो, गणक ।

ज्योतिश्चक्र ( पु० ) राशिचक्र, राशि और नक्षत्रमंडल ।

ज्योतिष् ( ज्योतिः ) ( पु० ) ज्योतिष-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र ।

ज्योतिष्क ( पु० ) ग्रह-नक्षत्रादिका समूह, चीता, मेथा ।

ज्योतिष्टोम ( पु० ) एक प्रकार का यज्ञ ।

ज्योतिषपथ ( पु० ) आकाश ।

ज्योतिष्मती ( स्त्री० ) मालकंगनी, रात, वैदिक छंद-विशेष, बाजा-विशेष ।

ज्योतिष्मान् ( वि० ) तेजस्वी, प्रतापी ।

ज्योतिरथ ( पु० ) ध्रुव-नक्षत्र ।

ज्योत्स्ना ( ज्यु=चमकना ) ( स्त्री० ) चाँदनी, चंद्रिका, चाँद की किरण ।

ज्योरी ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी ।

ज्वर ( ज्वर=ब्रीमार होना ) ( पु० ) तप, ताप, बुखार ।

ज्वराग्नि ( ज्वर+अग्नि ) ( पु० ) तप की गरमी ।

ज्वलन ( ज्वल्=जलना, चमकना ) ( स्त्री० ) जलन, तपन, दाढ़, आग ।

ज्वलित ( ज्वल्=चमकना ) ( वि० ) प्रकाशित, जलता हुआ, आलोकित ।

ज्वार ( स्त्री० ) एक प्रकार का अनानस, उफान, उभार ।

ज्वाला ( ज्वल्=चमकना ) ( स्त्री० ) आँच, लौ, छपट, लूका, चमक ।

ज्वालामुखी ( ज्वाल्=प्रग का लूका, मुख=पेह ) ( स्त्री० ) वह जगह जहाँ से आग निकलती है, आग का पहाड़, देवी, अंबिका, दुर्गा ।

## भ

भ ( पु० ) बृहस्पति, ईंद्र, शब्दध्वनि, नेपथ्य, भंकार, मित्राण, स्थिति ।

भक्त ( स्त्री० ) कोप, क्रोध, रिस, सनक, लहर ।

भक्तभोरी ( स्त्री० ) क्षीनाक्षीना, भपटाभपटी, खींचा-खींची, लुटपाट ।

भक्त मारना ( बाल० ) वृथा काम करना. निरर्थक काम करना, यह दूसरे की हलकाई उताने के लिये बोला जाता है ।

भक्ताभक्त ( वि० ) भक्ताभक्त, जगमग, सुधरा, साफ़ ।

भक्तीरना ( कि० स० ) हिलाना, कपाना, भक्तीर देना, भक्ती देना ।

भक्तीरा ( पु० ) अंधड़, वायु का वेग ।

भक्तीरना ( कि० स० ) हिलाना, डुलाना, कपाना ।

भक्त ( वि० ) साफ़, सुधरा, चमकीला. उज्ज्वल । ( स्त्री० ) सनक ।

भक्तड़ ( सं० भक्तर ) ( पु० ) अंधी, चौवाई, तूफान, हवा का बवंडर ( वि० ) भक्ती, सनकी ।

भक्ती ( वि० ) वृथा बकवाद करनेवाला, बक्ती, प्रलापो, लहरी, तरंगी, उन्मत्त, पागल ।

भक्तीकेतु ( पु० ) कामदेव, कंदर्प ।

भक्तीना ( कि० थ० ) बड़बड़ाना, बकना, झीखना ।

भक्तड़ना ( कि० थ० ) लड़ना, लड़ाई करना, बयैड़ा करना, वाद-विवाद करना, कलह करना ।

भक्तड़ ( पु० ) लड़ाई, रगड़ा, बयैड़ा, विवाद, तकरार, कलह ।

भक्तड़ालू ( भक्तड़ना ) ( वि० ) लड़नेवाला, लड़ाकू, लड़ाईखोर, भक्तड़ल, भक्तड़ करनेवाला ।

भक्तरी ( वि० ) अपने नेग के लिये लड़नेवाला ।

भक्तूला ( पु० ) बालक के पहनने का कुत्ता, चोला ।

भक्तीर ( भक्तीर शब्द, कृ=धरना ) ( पु० ) भक्ती-वाहट, भक्तीर होने का शब्द ।

भक्तीना ( कि० थ० ) बड़बड़ाना, चहचहाना, टें-टें करना, बकना, पछुताना, विक्षपना ।

भक्तीड़ा ( पु० ) विना पत्ते का पेड़ ।

भक्ती } ( पु० ) अंगा, कुरता, ऊपर पहनने का  
भक्ती } कपड़ा ।

भक्ती ( स्त्री० ) भक्तीर, भक्ती, ठिठक, अग्रिम गंध ।

भक्ती ( पु० ) लंबे बाज ।

भक्ती ( पु० ) घबराहट, भगड़ा, रगड़ा ।

भक्तीरना ( सं० ) ( भक्तीर, भक्तीर=ऐसा शब्द, कृ=करना ) ( कि० थ० ) ठनठनाना, बाजना ।

भक्तीर ( स्त्री० ) जाली, झरोखा ।

भक्ती ( स्त्री० ) वायु, वर्षाकतु, भक्तीर, भक्ती ।

भक्तीरना ( भक्तीरना ) ( पु० ) अंधड़, प्रचंड पवन ।

भक्ती ( स्त्री० ) फूटी कौड़ी ।

भट्ट ( सं० भट्टि, भट्ट=उलभन, मिलना ) ( कि० वि० ) तुरंत, शीघ्र, उसी दम, जल्दी ।

भट्ट से } ( बोले ) तुरंत, शीघ्र, उसी दम, जल्दी,  
भट्टपट } शीघ्रता से ।

भट्टकना ( कि० स० ) खींच लेना, खसोटना, ( कि० थ० ) दुबला होना, हिलना ।

भट्टका ( पु० ) भट्टके से मारने का शब्द, खिंचाव, खींच ( वि० ) भट्टके से मारा हुआ ।

भट्टिना ( कि० वि० ) शीघ्र, जल्दी, तुरंत ।

भट्ट ( स्त्री० ) भट्टी, अँच, एक तरह का ताखा ।

भट्टना ( कि० थ० ) गिरना ( जैसे पेड़ से फल अथवा पत्ते ), टपकना, चूना, बाजना ( जैसे नौवत ) ।

भट्टपना ( कि० थ० ) लड़ना, चिखलाना, भपटाभपटी करना, भट्टपाभट्टपी करना ।

भट्टवेर ( पु० ) } ( भट्टभाई, सं० बदरी=वेर )  
भट्टवेरी ( स्त्री० ) } वेर की भाँटी, वेर का पेड़ ।

भट्टाक ( कि० वि० ) शीघ्र, तुरंत ।

भट्टी ( स्त्री० ) लगातार मेह बरसना, बराबर बरसते रहना, बाहरी आमदनी, ऊपरी आमद ।

भट्टीता ( पु० ) फल की समाप्ति का समय ।

भट्टा ( पु० ) ध्वजा, पताका, कीर्ति-ध्वजा, राजचिह्न, सीमा-निर्देशक ।

भट्टूला ( वि० ) बहुपत्र, बहुकेश, बिना मुंडन किया हुआ लड़का ।

भप ( कि० वि० ) भट्ट, तुरंत ।

भप से ( बोल० ) भट्टपट से भट्ट संगीत में एक प्रकार की ताख ।

भपकना ( कि० स० ) भलना, पंखा भलना, ( कि० अ० ) खपकना, भरटना, पलक मारना, उँघना ।

भपकी ( स्त्री० ) भपकी, भरक, उँघाई, पलक मारना, पलक लगाना ।

भपट ( स्त्री० ) छीन-खसोट, खींचाखींची, खपक, उछल ।

भपट लेना ( बोल० ) छीन लेना ।

भपट्टा ( बोल० ) धावा, चढ़ाव, खपक, छीन, खसोट, वार ।

भपट्टा मारना ( बोल० ) भपट लेना, छीन लेना, धावा करना ।

भपताल ( पु० ) संगीत-कला की ताल-विशेष ।

भपना ( कि० अ० ) भँपना, लजित होना, पलकों का मुँदना ।

भपनी ( स्त्री० ) पिटाई, ठकना, ठकन ।

भपलाना ( कि० स० ) खँगालना, पानी से खूब धोना ।

भपसना ( कि० स० ) वृक्ष की लताओं का घना होना और फैलना ।

भपाभरी ( स्त्री० ) उतावली, हड़बड़ी ।

भपाट ( कि० वि० ) भटपट, तुरंत, शीघ्र ।

भपाना ( कि० अ० ) भँपाना, मुँदना, बंद करना ।

भपास ( स्त्री० ) फूँही, फुहार, भीसी, भड़ी, धूर्तता, शठता ।

भपासिया ( वि० ) धूर्त, शठ, कपटी, छुली ।

भपेटा ( स्त्री० ) आक्रमण, लपक, भपट ।

भयरा ( वि० ) बिखरे हुए बड़े-बड़े बाजोंवाला ।

भय्या ( पु० ) फूँदा, लटकन, गुच्छा ।

भयिया ( पु० ) खियों का एक प्रकार का गहना-विशेष ।

भनुआ ( वि० ) भबरा ।

भम ( भपू=खाना ) ( पु० ) भोजन, खानेवाला, भोजन ।

भमभम ( कि० वि० ) लगातार घूमघड़के के साथ ।  
भमभम

भमभमाना ( कि० अ० ) चमकना, झलकना ।

भमरभमर ( कि० वि० ) बूँद बूँद से ।

भमाना ( कि० अ० ) रोकना, धरना, छाना ।

भमेला ( पु० ) भगड़ा, बखेड़ा, भंभट ।

भंप ( पु० ) बुझाँग, कुदाव, उछाल ।

भर ( स्त्री० ) भड़ी, मेह का लगातार बरसना, भौंच, लूका ।

भरना ( सं० भरण ) ( पु० ) सोना, चरमा, भरनी, बर्छनी, ( कि० अ० ) चुना, टपकना, बहना, रसना, जारी होना, गिरना ( जैसे फल, पत्ते आदि ) ।

भरप ( स्त्री० ) भड़ोर, लपट, टेक, वेग ।

भरघेर ( पु० ) जंगली बेर, भाड़ी के बेर ।

भरी ( स्त्री० ) सोता, भड़ा, पानी का भरना ।

भरोखा ( पु० ) जाली, लिबकी, मोखा, दरोची ।

भर्भरा ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया ।

भर्भरी ( स्त्री० ) खँजड़ी, डफली ।

भर्ना ( पु० ) बहुत छेदवाला सूप-विशेष जिससे दाने पृथक्-पृथक् किए जाते हैं । ( कि० अ० ) भरना, गिरना, टपकना ।

भल ( सं० ज्वल ) ( स्त्री० ) उजाला, क्रोध, आँच, प्रबल इच्छा ।

भलक ( स्त्री० ) चमक, उजाला, जगमगाहट, आभा, दीप्ति, प्रकाश ।

भलकना ( सं० ज्वलन ) ( क० अ० ) चमकना ।

भलका ( पु० ) छाला, फफोला ।

भलकार ( पु० ) आव आभा, प्रकाश, जलन ।

भलकी ( स्त्री० ) चमक, दमक कटाक्ष ।

भलभलाना ( सं० ज्वलन ) ( कि० अ० ) चमकना, झलझल करना, क्रोध करना, टीसना ।

भलभलाहट ( स्त्री० ) चमक, झलक ।

भलना ( कि० अ० ) भपकना, पंखा चलाना या हँकना ।

भलमल ( पु० ) हलकी रोशनी, हलका उजाला ।

भलमलाना ( कि० अ० ) चमचमाना, बीच-बीच में चमकना, क्षीण प्रकाश होना ।

भलहया ( वि० ) संदेही, शंक्ति, धोखा खाया हुआ ।

भला ( पु० ) हलकी वृष्टि, बौछार, पंखा, भाँवर ।

भलाभल ( सं० ज्वलन ) ( वि० ) चमकीला, जगमगा ।

भलाना ( कि० स० ) सुधरवाना ।

भल्ल ( पु० ) भौंड़, विद्रूपक, दुर्बकबाजा, उवाला, खपट ।

भल्लक ( पु० ) भौंँ, मंतीरा ।

भल्ला ( पु० ) बड़ा टोकरा, वर्षा, ( वि० ) पागल, मूर्ख ।

भप ( भपू=मारना ) ( पु० ) मच्छ, वन, नाम, मछली, मकरमच्छ, बड़ी मछली, पाठन ।



भाषकेतु ( भाष=मकरमण्डल, केतु=भंडा अर्थात् जिसके भंडे पर मकर का निह्न है ) ( पु० ) कामदेव ।

भरहरना ( कि० अ० ) शिथिल पड़ना, भरभर ध्वनि करना, झिझकना, झल्लाना ।

भरहरना ( कि० अ० ) कितकिताना, झल्लाना, लड़-खड़ाकर गिरना ।

भाँई ( स्त्री० ) परछाँई, आभा, छाया, प्रतिबिम्ब, सिकुचन, चमके का सूत्रापन ।

भाँकाभाँकी ( पु० ) देखादेखी, ताकाताकी, परस्पर अवलोकन, ताकभाँक ।

भाँकना ( कि० स० ) छिपकर देखना, ढाकना, निहारना, कनखी से देखना ।

भाँकी ( स्त्री० ) दर्शन, अवलोकन ।

भाँख ( पु० ) बारहसिंगा, हरिण ।

भाँखना ( कि० अ० ) पछताना ।

भाँखर ( पु० ) भंखाड़, सूये काँटों की डाल ।

भाँगला ( वि० ) डोछाढाला ।

भाँजन ( स्त्री० ) पैर के नक्काशोदार पोले कड़े जो चलने समय बजते हैं ।

भाँझ ( सं० भर्झ, भर्झ=शब्द काना ) ( पु० ) मंजीरा, एक तरह का बाजा, क्रोध, गुस्सा, चिड़चिड़ाहट ।

भाँझन ( स्त्री० ) देखो भाँजन ।

भाँझर ( वि० ) जिसमें बहुत छिद्र हों, छिद्रयुक्त, झिझरा ।

भाँझरी ( स्त्री० ) झरना, बहुत छेदवाली कलछी ।

भाँझिया ( वि० ) क्रोधो, रिसवा, ( पु० ) भाँझ बजाने वाला ।

भाँझी ( स्त्री० ) खेल-विशेष ।

भाँझी कौड़ी ( पदा० ) फूटी कौड़ी, भंझो कौड़ी, निरर्थक ।

भाँपी ( स्त्री० ) मूँज की बनी हुई पिटारी ।

भाँपो ( स्त्री० ) छिनात्र स्त्री, व्यभिचारिणी, पक्षी-विशेष ।

भाँवभाँव ( स्त्री० ) बकबक, टंटा, तकरार ।

भाँवर ( स्त्री० ) डाबर, निचखी जमीन जिसमें बरसाती पानी भर जाता है । ( वि० ) सुस्त, मलीन, शिथिल, मटमैला, गुच्छ ।

भाऊ ( सं० भावु, भवे=मा शब्द या=ते ज्ञाना, बढ़ना ) ( पु० ) एक वृक्ष का नाम ।

भांग ( पु० ) फेन, गाज ।

भाखा ( पु० ) झलना, रोना, खीझना ।

भाभा ( पु० ) गाँजा-भंग आदि नशे की चीज़ ।

भाट ( पु० ) मँडवा, निकुंज ।

भाड़ ( पु० ) भाड़ी, कँटीला वन, एक प्रकार की आतिशबाज़ी, बत्तियों का भाड़, पंचशाखा, जुल्लाब, खगातार मेह, भाड़ी ।

भाड़भंखाड़ ( बोल० ) वीरान जंगल, बीहड़ वन ।

भाड़भटक ( बोल० ) भाड़ना, साफ़-सुधरा करना ।

भाड़भूड़ ( बोल० ) भाड़न, ऊपरी आमदनी, बचाबुचा

भाड़ डालना } ( बोल० ) साफ़ कर डालना, बुहार  
भाड़ देना } डालना, फटकार बता देना ।

भाड़न ( भाड़ना ) ( स्त्री० ) बुहारना, कूड़ा कचरा, कर्कट, असबाब पोंछने का मोटा-सा कपड़ा ।

भाड़ना ( कि० स० ) बुहारना, भाड़ू खगाना, कूँचो मारना या कूँची से सफाई करना, साफ़ करना, चकमक से आग भाड़ना ।

भाड़ना-फूँकना ( बोल० ) भूत उतारना, मंत्र पढ़ना, टोटका करना ।

भाड़ पछाड़कर देखना ( बोल० ) जाँचना, परखना, खूब देखना ।

भाड़त ( कि० वि० ) सब-के-सब, संपूर्ण रूप से ।

भाड़ा ( पु० ) दस्त, मल का त्याग ।

भाड़ा-भपटा-लेना ( बोल० ) दूँदना, खोजना, तलाशी लेना ।

भाड़ा देना ( बोल० ) तलाशी देना ।

भाड़ी ( स्त्री० ) छोटा और घना वन, सघन छोटा वृक्ष-विशेष ।

भाड़ू ( पु० ) कूँचा, बढ़नी, बुहारी ।

भाड़ूकश ( भाड़ू=बुहारी, का० कश=लींचना ) भंगी, मेहतर, हज्जाख़शोर ।

भाड़े भपटे जाना ( बोल० ) पाछाने जाना, भाड़ा फिरना ।

भापड़ ( पु० ) धप्पड़, तमाचा, चपेटा ।

भापा ( पु० ) दोरी बड़ी टोकरी, टोकरा, दौरा ।

भावर ( पु० ) दलदल ज़मीन ।

भावा ( पु० ) टोकरा, खोँचा, कुप्पा, कुप्पो, झंझरा ।

भाम ( पु० ) गुच्छा, कुण्ड से मिट्टी निकालने का यंत्र-विशेष, छल, कपट, धाँट-धपट ।

भाभर ( पु० ) सिन्धी, शाण्ड, अन्न तीखे करने का पत्थर ।  
 भाभा ( पु० ) भाँवा, पकी हुई ।  
 भाभी ( पु० ) धोयेबाज़, चाखाक, धूल, टग ।  
 भाभ ( वि० ) केवल, एकमात्र, कुछ, समूह, ( स्त्री० )  
 डाढ़, आग की लौ, चिरपरापन, तीखी गंध ।  
 भाभना ( क्रि० स० ) बालों में बंधा करना, छोटना,  
 खल्लास होना ।  
 भाभरी ( म० भ० ) ( स्त्री० ) मुराही जिसकी नली लंबी  
 होती है और जिसमें एक टोंटी लगी रहती है ।  
 भाभरी ( पु० ) सब, समूह ।  
 भाभ ( स्त्री० ) बड़ा टोकरा, तेज़ो, धातु के टूटे बरतन  
 को जोड़ना ।  
 भाभलना ( क्रि० म० ) ओपना, घोटना, जोड़ना ।  
 भाभलर ( स्त्री० ) किनारा, मून या रेशम की जाली ।  
 भाभलरा ( सं० भा० ) ( पु० ) पानी का बड़ा कुंड,  
 भरना ।  
 भाभा ( पु० ) तेल नापने का बरतन, मुर्ग बंद करने  
 का टापा ।  
 भाभा ( पु० ) भाँपा, बड़ा जालीदार टोकरा ।  
 भिभकना ( क्रि० अ० ) चौंकना, भड़कना, डर  
 जाना ।  
 भिभका ( स्त्री० ) फूटी कौड़ा, वृक्ष-विशेष ।  
 भिभकना ( क्रि० स० ) धमकाना, डराना, घुड़कना,  
 डाँटना ।  
 भिभकी ( भिभकना ) ( स्त्री० ) धमका, घुड़की,  
 भिड़क ।  
 भिनभिनी ( स्त्री० ) सनसनाहट, झनझनाहट, सनसनी  
 जो हाथ-पैर में जब सों जाते हैं तब मालूम होती है ।  
 भिरभिर ( क्रि० वि० ) धीरे-धीरे, मंद-मंद ।  
 भिरभिरा ( वि० ) पतला, बारीक, झीना ।  
 भिरभिराना ( क्रि० स० ) टपकना, बहना, भरना,  
 रसरसरकर गिरना ।  
 भिररी ( स्त्री० ) दरार, छेद, सुराज, पाछा, तुषार, पाछा  
 मारी हुई फसल ।  
 भिलंगा ( पु० ) टूटे चारपाई, सैनिक-विशेष ।  
 भिलम ( पु० ) जोहे की कुर्ती, कवच, बखतर ।  
 भिलमिल ( ) अस्थिर उद्योति, हिलती हुई रोशनी,  
 बारीक मुलायम कपड़ा ।

भिलमिली ( स्त्री० ) दरवाज़े की भँकरी, भिलमिल,  
 जाड़ो ।  
 भिल्लड़ ( वि० ) दूर-दूर पर बुनावटवाला वस्त्र ।  
 भिल्ली ( स्त्री० ) पतला चमड़ा, भाँगुर, आँख का जाला ।  
 भौंकना { ( क्रि० अ० ) पछताना करना, रोना, हाथ-  
 भौंखना } हाथ करना ।  
 भौंका ( पु० ) चक्को का कौर, अन्न का उतना परिमाण  
 जितना एक बार चक्को में डाला जाय ।  
 भौंगा ( स्त्री० ) एक तरह की मछली ।  
 भौंगुर ( पु० ) एक प्रकार का काड़ा ।  
 भौंभना ( क्रि० अ० ) झुँकलाना ।  
 भौन { ( सं० लीण ) ( पु० ) पतला, पनील, महीन,  
 भौना } सूक्ष्म ।  
 भौरुका ( स्त्री० ) भौंगुर, कीट ।  
 भौल ( स्त्री० ) सरोवर, सरवर, जलाशय, ताल, बहुत  
 बड़ा तालाब ।  
 भौंसी ( स्त्री० ) फूझी, फुहार, कपास, झड़ी, छोटी-  
 छोटी बूँद ।  
 भुकना ( क्रि० अ० ) नवना, निहुरना, नीचा सिर करना,  
 ऊँघना, प्रणाम करना, सलाम करना, नीचे लटक  
 आना ( जैसे वृक्ष की डाल ), क्रोध करना, क्रोधित  
 होना, चिढ़ना, जैसे “भुकी रानि अबरहु अरगानी”—  
 रामायण ।  
 भुकाय ( पु० ) ढाल, उतार, प्रवृत्ति, मनोवृत्ति ।  
 भुंभलाना ( क्रि० अ० ) चिड़चिड़ा होना, चिढ़ना,  
 खिसियाना, भटपट क्रोधित हो जाना, क्रोध करना,  
 क्रोधित होना ।  
 भुटलाना { ( भूट ) ( क्रि० स० ) झूठा करना, झूठा  
 भुटलाना } कलंक लगाना, झूठा ठहराना ।  
 भुटालना { ( भूट ) ( क्रि० म० ) झूठा कर दिखाना, झूठा  
 ठहराना, उच्छिष्ट करना, कुछ खाके छोड़ देना,  
 जुठार देना ।  
 भुटालना मुँह ( बीन० ) कुछ खाना, जुठारना ।  
 भुटालना मुँहमुँह ( बेल० ) किसी को उसके मुँह पर  
 या सामने झूठा ठहराना ।  
 भुंड ( पु० ) समूह, भीड़भाड़, दल, यूथ, ठठ, पेड़ों की  
 कुंज ।  
 भुंडा ( पु० ) झंडा, पताका ।

कुंडी (ख०) कड़ी, वर्षा का समूह, साधुओं का एक दक्ष-विशेष, पीढ़ों के काट लेने पर खेत में लगी हुई खूंटो।

कुन (ख०) समानता, सादृश्य, पक्षी-विशेष, रक्त-संचालन बंद हो जाने की स्थिति, अंग-विशेष के झूठा पड़ जाने की हालत।

कुनकुना (पु०) बालकों का एक खिलौना, घुनघुना।

कुनकुनी (ख०) धूँधरू, नूपुर।

कुमका } (पु०) देही, बर्णमूल, फूलों या फलों का  
कुमका } गुच्छा, एक फल का नाम।

कुमना (व०) भूमनेवाला, हिलने-डुलनेवाला, कुमका, कुमर।

कुमरी (ख०) पिटना, काट की मुँदरी।

कुरकुर (वि०) सूना हुआ, कुहनाया हुआ, कुरकुट।

कुरकुरी (ख०) कैपकैपी।

कुरना (क्रि० प्र०) मरना, कुहलाना, मरना।

कुरमुर (प०) समुदाय, दल, मंडली।

कुरसना (क्रि० प्र०) बाहर जल जाना, कुलस।

कुराना (क्रि० प्र०) सूना, कुहलाना, दुबना होना।

कुरावन (व०) सुवावन, नद अंग जो सूख जाता है।

कुरियाना (क्रि० प्र०) बोनना, निराना।

कुरी (ख०) चुनत, सकोड़।

कुलना (पु०) पलना, झूला।

कुलनी (ख०) नाक में पड़ने का गहना।

कुलसना (सं० उल्ल=जलना) (क्रि० प्र०) जलना, कुलसना।

कुलाना (क्रि० प्र०) डुलाना, हिलाना, झूला देना, लटकाना।

कुत्ता (ख०) झूला, खियों का कुर्नी।

कुँक (पु०) घासजा, खाना, पक्षियों के रहने की जगह।

कुँकना (क्रि० प्र०) कुँकना।

कुँकत (ख०) चिड़चिड़ाहट, खुनर, क्रोध, रिय।

कुँकना (क्रि० प्र०) लड़ना, युद्ध में जान देना, जूझना।

कुँठ } (सं० जुष्ट, जुन्युन देना) (वि०) झूठ, (ख०)  
जुँठ } उच्छिष्ट, खाने के पीछे बचा हुआ खाना।

कुँठ (ख०) मिथ्या, असत्य।

कुँठमूठ (बोल०) झूठ, अशुद्ध, मिथ्या, निरर्थक, बौही।

झूठा (झूठा) (वि०) झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, झूठा खाना, खाने के पीछे बचा हुआ खाना।

झूठाभाटा (बोल०) झूठा खाना, जुठन।

झूना (पु०) पतला, सूचम, झोना, पका नाटियल।

झूमक (ख०) सभा, भाड़, समुदाय, कर्ण-फूल, गुच्छा, गीत-विशेष जिसे स्त्रियाँ होली में झूम-झूम कर गाता है।

झूमक साड़ी (ख०) झालरदार साड़ी।

झूमझूम (बोल०) बादलों का उमड़ना।

झूमना (क्रि० प्र०) हिलना, खहरना, ऊँचना, सिर की ऊँचा-नीचा घुमाना, बादलों का घिर आना।

झूमर (पु०) गहना विशेष जिसे स्त्रियाँ अक्सर सिर में पहना करती हैं, एक प्रकार का गीत, एक प्रकार का नाच।

झूर (वि०) श्वर्थ, सूना, जुड़ा, (ख०) दाढ़, जड़न।

झूरना (सं० जूथन) (क्रि० प्र०) कूटना, चूर-चूर करना, पीसना, पेड़ से फल हिलाना, (क्रि० प्र०) झुरना, किसी की याद में सोच करना, कलपना, पछनाना, दुर्बल होना।

झूरा (वि०) सूना, जलभाव, (पु०) सूखी जगह।

झूल (ख०) चौड़ायों के शरीर पर घोड़ाने का कपड़ा, झोला, ओहार, झंझा, टोपा, सवारी का परी।

झूलना (सं० झूलन, दुल्ल=झूना) (क्रि० प्र०) झोलना, हिलाना, लटकना, (पु०) छद्-विशेष।

झूला (सं० देला, दुल्ल=झूलना) (पु०) हिडोला, पालना, डाला, एक रस्सी जिस पर झूलते हैं।

झूँसी (पु०) कूड़ी, फुडार, कायो, इलाहाबाद के पास एक शहर जिसको पहले प्रतिष्ठनपुर कहते थे और जो चंद्रांशियों की राजधानी था।

झेंपना (क्रि० प्र०) शरमाना, लजाना।

झेलना (क्रि० प्र०) बरदाश्त करना, भुगतना, पचाना, ऊपर लेना।

झोंक (ख०) ढकेल, झूलने में ढकेलना, हवा का झोंका, प्रवृत्ति, झुंझार, आघात, ठाट-बाट, चाल, प्रचंड गति।

झोंक देना (बोल०) आग में पुवाल डालना, जलाना, जला देना, धूँध फेंकना या डालना, फेंक देना, किसी को जालिम में डालना।

भोंकना (क्रि० स०) डालना, फेंकना, धुसेटना, दूल्हे में ईंधन डालना ।

भोंका (पु०) भूकोरा, दवा का भोंका, ठोकर, टेस ।

भोंका देना (बोल०) किसी का सिर अथवा सिर के बाल पकड़कर गौर से हिलाना ।

भोंटा (सं० ऋ०) (पु०) सिर के पिछले बाल, चोटी, हिंडोले का भोंका ।

भोंपड़ा (पु०) } मर्दा, कुटी, मर्दिया ।  
भोंपड़ी (स्त्री०) }

भोंपा (पु०) भूटवा, गुच्छा, स्तवक ।

भोंरा (पु०) फल का गुच्छा ।

भोंल (पु०) तरकारी आदि का गाढ़ा रसा, शोरवा, कपड़े की सिकुड़न, डाल-ढाल, वह धैली या झिल्ली जिसमें गर्भ में बच्चे या अंडे रहते हैं ।

भोंलभाल (पु०) चिरपरा रसा, डीजा-ढाला ।

भोंलना (क्रि० स०) धुनना, जलाना, भोंसना ।

भोंला (पु०) अर्द्धांग, लकड़ा, बड़ा धैला ।

भोंली (स्त्री०) कोथली, धैली ।

भोंड़ (पु०) भगड़ा, बखेड़ा, टंटा ।

भोंरा (वि०) गेहूँ-वर्ण, साँवला, गुच्छा, भुंड, जैसे—  
दाख की सी भोंरा भलकति ज्योति जौबन की चाटि  
जाते भौर जोन होतो रंग चंपा की—” पुली कवि ।

भोंगना (क्रि० प्र०) मुरभाना, कुम्हलाना, साँवला पड़ना ।

भोंर (स्त्री०) भगड़ा, लड़ाई, टंटा ।

भोंरना (क्रि० स०) भगटकर पकड़ना, दवा लेना, छापना ।

भोंरा (पु०) विवाद, भंभट, तकरार ।

भोंरी (स्त्री०) खेत की घाम ।

भोंया (पु०) टोकरी, खाँची ।

भोंसना (क्रि० स०) जलाना, कुलमाना, कुड़ाना, व्यंग्य-वाणों से दिल दुखाना ।

भोंटाना (क्रि० प्र०) गुराना, चिढ़ांचढ़ाना ।

## ज

ज व्यंजन का दसवाँ वर्ण इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है ।

ज

## ट

ट (पु०) वामन, शब्द, ध्वनि, चंद्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, वृद्धावस्था, नारियल का खोपड़ा ।

टक (स्त्री०) स्वभाव, ताक, दृष्टि, लगातार देखना, तराजू का पलड़ा ।

टकटकी (स्त्री०) ताक, धूर, एकटक ।

टकटकी बाँधना (बोल०) ताकना, धरना, एकटक देखना ।

टक लगाना (बोल०) धाट देखना ।

टकटोरना (क्रि० स०) आँधरे में टटोलना, बहुत थोड़ा-थोड़ा खाना ।

टकटोलना (क्रि० स०) स्पर्श के द्वारा छूटना, पता लगाना ।

टक टोहन (पु०) अन्वेषण, पता लगाना ।

टक बाँधना (बोल०) ताकना, धरना ।

टकराना (टकर) (क्रि० म०) टकर खिलाना, टकर देना, धकेलना, मुठभेड़ करना ।

टकताल (सं० टकशाला, टंक=सिका, शाला=जगह) (स्त्री०) मुद्रालय, वह जगह जहाँ सिका तैयार होता है ।

टकताल का खोटा (बोल०) शिक्षा अथवा उपदेश में चिगड़ा हुआ ।

टकताल चढ़ना (बोल०) शिक्षा पाना, उपदेश पाना, सिखाया जाना ।

टकताल बाहर (मं०) अनपढ़, कुपढ़, अनधक, खोटा, खराब ।

टकहाई (स्त्री०) हरजाई, नीच, व्यभिचारिणी स्त्री, टके का ।

टका (सं० टंक=सिका (पु०) दो पैसा, रुपया, धन, द्रव्य ।

टकाई (स्त्री०) सिलाई, टाँकने की मजूरी ।

टकाना (क्रि० म०) मिलवाना, लिखवाना, चिह्नित कराना, जुद्धवाना ।

टकासी (स्त्री०) दो पैसे रुपए का मूद्र ।

टकुआ } ( सं० तर्कु, कृत=शटना ) ( पु० ) तकला,  
टकुवा } तकुवा, फिर्की ।

टकैत ( वि० ) टकावाला, धनी, धनवान् ।

टकोर ( सी० ) डोल का शब्द, धुनि, धार, चुमकार ।

टकोरना ( कि० स० ) बजाना, ठोकर मारना, सँकना ।

टकोरा ( पु० ) छोटा आम, अंबिया, आघात से उत्पन्न शब्द ।

टकोना ( पु० ) टका, दो पैसा ।

टकोरी ( सी० ) सोना, चाँदी आदि तालने का छोटा तराजू ।

टकर ( सी० ) धका, ठोकर, टेलाटेली, रेला, डकेल, भोक, टेस, मुठभेड़ ।

टकर खाना ( बो० ) ठोकर खाना, किसी चीज़ से भिड़ जाना, दुःख में गिरना, नुकसान उठाना ।

टकर मारना ( बो० ) धका लगाना, ठोकर मारना, डकेलना, रेलना, पटकना, टेस मारना ।

टखना ( पु० ) टेवना, गुल्फ, घृटो ।

टगण ( पु० ) टवर्ग; ट, ठ, ड, ढ, ण ।

टगर ( पु० ) मुहागा, क्रीड़ा, तगर का वृक्ष ।

टगरना ( कि० अ० ) लुढ़कना, बड़ना, गिरना, डगरना ।

टगरा ( वि० ) बाँका, तिरछा, टेढ़ा, सरग पताली ।

टगराना ( कि० म० ) लुढ़काना, डगराना, फिराना ।

टधरना ( कि० अ० ) घुलना, गलना, पिघलना, द्रवित होना, शरीर से पसीना निकलना ।

टंक ( टकि=बाँधना ) ( सी० ) टाँक, चार मासे की तौल, टाँकी, छेनी, पत्थर काटने का औज़ार, तलवार, क्रोध, अहंकार, मुहागा, खुरपी, झगड़ाना ।

टंक ( पु० ) खनित्र, खंवा, खुरपा, फरहा, टाँकी, तलवार की म्यान ।

टंकक ( पु० ) चाँदो का सिका ।

टंककशाला ( टंकक=टकशा, शाला=मकान ) ( सी० ) टकसाल, सिंके डालने का स्थान ।

टंकण ( पु० ) मुहागा, टाँका लगाने का काम, घोड़े की एक जाति ।

टँकना ( कि० स० ) सीना, टाँकना, जोड़ना, चढ़ना, अंकित होना, निशान लगना ।

टँकाई ( सी० ) टाँकने की मजूरी, टँकाव ।

टँकार ( टम्=पेसा शब्द, क=करना ) ( पु० ) धनुष के चिल्ले का शब्द, अचंभा, नामवरी ।

टँकी ( सी० ) पानी भरने का छोटा या बड़ा चहबूचा ।

टँकोर ( पु० ) धनुष का शब्द ।

टँकोरी ( सी० ) टाँका, सोना, चाँदी आदि मूल्यवान् धातुओं के तालने का तराजू ।

टँगड़ी ( सी० ) पाँव, पैर, टाँग, थोड़ ।

टँगना ( कि० अ० ) लटकना, फँसना ।

टँगरी ( सी० ) कुल्हाड़ी ।

टन्नी ( सी० ) ठंडे तथा सोनार का नक़्क़ाशी का काम करने का औज़ार-विशेष ।

टंच ( वि० ) कृपण, सूँ, कंजूस, कठोर, खरा, पका, पड़ाया, सिलाया, कसा हुआ ।

टटका ( वि० ) नया, ताज़ा, तुरंत का ।

टटड़ी ( सी० ) धेरा, मेड़, थाला, ठठरी, खोपड़ी, टटो ।

टटपूँजिया ( वि० ) थोड़ी पूँजीवाला, दिवाखिया, हलका, उधका ।

टटवानी ( टटट ) ( सी० ) छोटी घोड़ी, टटुई ।

टटिया ( सी० ) टट्टर, टटो ।

टटोलना ( कि० स० ) टोपाटोई करना, टोना, छूकर ढूँढ़ना, ( जेमें अंधे लोग ढूँढ़ने हैं ) ।

टट्टर ( पु० ) बड़ी टट्टी, टट्टा, भाँप ।

टट्टी ( सी० ) टटिया, चटाई का चना हुआ छोटा टट्टर, ओट, आड़, ( टट्टी खस भी थौर फ़स आदि की भी बनती है ) टट्टी की ओट शिकार खेलना=छिपकर निशाना लगाना, घात में बैठना; किसी को आगे करके अपना मतलब गाँठना ।

टट्टू ( पु० ) टाँगन, पहाड़ी घोड़ा, छोटा घोड़ा ।

टट्टिया ( सी० ) छोटी थाली, टाटो ।

टन ( सी० ) घड़ी, घंटा आदि का शब्द, नील-विशेष ।

टनकना ( कि० अ० ) टनटन बजना, टनटन होना ।

टनटनाना ( कि० म० ) घंटा बजाना, आशा में अटका रखना, भाँसा-पटो देना ।

टनाका ( पु० ) कड़ा शब्द, घंटा आदि का शब्द ।

टप ( सी० ) गाड़ी, मोटर आदि की छत जो इच्छानुसार उतारी चढ़ाई जा सकती है, पानों रखने का बर्तन, बूँद-बूँद टपकने का शब्द, औज़ार-विशेष, मुर्गी के बच्चे ठकने का बाँस का टोकरा ।

टपक ( पु० ) रह-रहकर होनेवाला पोड़ा, बूँद गिरने का शब्द ।

टपकना ( कि० प्र० ) बूँद-बूँद गिरना या चूना ।

टपका ( पु० ) पानी की बूँद का गिरना, पड़े फल का गिरना ।

टपना ( कि० स० ) छाँचना, फाँटना, कूटना, उपवास करना, मूसा रहना ।

टपरा ( पु० ) छपरा, झीरना ।

टपाटप ( कि० वि० ) लगातार, टपटप कर टपकना ।

टपाना ( कि० प्र० ) नेंघाना, कुदवाना ।

टपाना ( पु० ) डाकघर, डाकवाना, एक प्रकार का गीत अथवा रागिणी, गेंद अथवा गोली का उछलना, दूर, उछाल ।

टपा खाना ( ब० ल० ) गोली अथवा गेंद का उछलना हुआ जाना ।

टप ( पु० ) टप, पानी रखने का बर्तन ।

टपकर ( पु० ) कुल, कुटुंब, परिवार, वंश ।

टपक ( स्त्री० ) टाप, पोड़ा, वेदना, धनि-विशेष, पानी से पानी गिरने का शब्द ।

टपका ( स्त्री० ) डगडुगिया ।

टपना } ( सं० ) टप-टपाकर होना या घागना ( कि० प्र० ) टपना } ( प्र० ) हटना, सरकना, चंचल होना, चले जाना, दबक रहना, छोट पोट जाना, अस्त-व्यस्त होना ।

टप ( वि० ) मगरा, दुष्ट, बकरी, जोरावर ।

टपना ( कि० स० ) टेंटे करना, बहक करना, चिड़चिड़ाता ।

टपल ( ग्ल=वहता ) ( पु० ) चंचल होना, शोक, उछल-पछल ।

टपप ( स्त्री० ) करन, खंड, अंश, भाग ।

टप्ला ( पु० ) झूठमूठ, असत्य ।

टपक ( स्त्री० ) टाप, पोड़ा, कहरना ।

टपकना ( कि० प्र० ) हिलना, चलना, सरकना, उकसना, कहरना, रोना-धोना, घटना, हटना ।

टपकाना ( कि० स० ) दूर करना, हटाना, खिसकाना, टरकाना ।

टपसना ( कि० प्र० ) फटन, फट जाना, मपकना ।

टपसर ( पु० ) एक प्रकार का रेशमा मोटा कपड़ा; इसको चादर, घोरा, साफा आदि बनते हैं ।

टहक ( स्त्री० ) गौड़ का पोड़ा, घण को वेदना ।

टहकना ( कि० प्र० ) व्यथा होना, दुखना, दर्द होना, पिघलना ।

टहकाना ( कि० स० ) पोड़ा देना, तपा कर टपकाना ।

टहनी ( स्त्री० ) डाला, छटा डालो, लचीली और कोमल डाली ।

टहरना ( कि० प्र० ) घूमना, फिरना ।

टहल } ( स्त्री० ) घर का कम-काज, सेवा,  
टहलटकीर } नौकरी, दाम का काम ।

टहलटकीर करना ( ब० ल० ) सेवा करना ।

टहलना ( कि० प्र० ) फिरना, चलना, हवा खाने को बाहर जाना ।

टहलनी } ( टहन ) ( स्त्री० ) घर का कम-काज  
टहलरी } करनेवाली, दासी ।

टहलुआ ( टःल ) ( पु० ) घर का काम-काज करनेवाला, दाम, सेवक, नौकर, चाकर ।

टहलुई ( ग्ल० ) दामा, लीड, लकड़ी जो दीपक में बर्तों उकसाने का डाला जाता है ।

टहो ( स्त्री० ) युक्ति, जोड़-बोड़, ताक ।

टहका ( पु० ) चुटकुला, पहेला ।

टहोक ( पु० ) थपाड़, घूँसा, चपेटा ।

टाँक ( स० टंक ) ( स्त्री० ) चार मशे की तोल, एक तरह की सुई, सीधन ।

टाँकना ( कि० स० ) सीना, टाँका मारना, तुरपना, जड़ना, झँझित करना, लिपिबद्ध करना ।

टाँका ( पु० ) सीधन, टाँक, जोड़ना ।

टाँके लगाना ( ब० ल० ) सीना जोड़ना, सीना ।

टाँकी ( सं० टक ) ( स्त्री० ) रुवाना, छेनी, नासूर, फाँड़ा, खरबूजे या तरबूज का चौंटीर टुकड़ा जो उसको अच्छा-भुग देखने के लिये काटा जाता है ।

टाँकू ( वि० ) पत्थर काटनेवाला, टाँकनेवाला ।

टाँग ( सं० टा ) ( स्त्री० ) टेंगड़ी, पिढली, गोड़, लटकाव, टेंगाव ।

टाँग झड़ाना ( ब० ल० ) अनधिकार चर्चा या हस्त-क्षेप ।

टाँग तले से निकलना ( ब० ल० ) हार मानना ।

टाँग तोड़ना ( ब० ल० ) अशुद्ध बोलना, निङ्गमा करना, परास्त करना ।

टाँग पसार कर सोना ( बोल० ) निश्चित सोना, बेकरार हो जाना ।

टाँग बढ़ाना ( बोल० ) उन्नति करना, आगे बढ़ना, भाग लेना, धुमना ।

टाँगें रह जाना ( बोल० ) थक जाना, आगे न बढ़ सकना ।

टाँगन ( पु० ) पहाड़ी घोड़े की एक जात ।

टाँगना ( कि० स० ) छटकना ।

टाँगी ( स्त्री० ) कुल्हाड़ी, फरसा ।

टाँगुन ( स्त्री० ) केंगुनी ।

टाँगन ( पु० ) घोड़े की जाति-विशेष ।

टाँच ( वि० ) हठी, देहा, वक्र, ( पु० ) पेच, दशाव, ( स्त्री० ) ताना, व्यंग्य वचन, दिख दुखानेवाला बात ।

टाँचना ( कि० अ० ) अङ्गचन उपस्थित करना, ताना मारना, सीना, खोंचना, छेड़ना, काटना ।

टाँट ( स्त्री० ) चाँदा, टट्टी, सिर के बीच का भाग, तलु, स्त्रीपरी ।

टाँठ ( वि० ) ठोस, कड़ा, उत्साही, उद्योगी, दिलेर, सूखा ।

टाँठाई ( स्त्री० ) उत्साह, पोढ़ापन, ठोसपन, प्रगल्भता ।

टाँड़ ( स्त्री० ) सामान रखने के लिये दीवारों में तल्ला, मंच, मधान ।

टाँडा ( पु० ) खेप, बनजारे की चीज़, वस्तु जैसे—  
“ परतीति को टाँड़ो लदावनो हँ ”—बोधा कवि ।

टाँडी ( स्त्री० ) टिड्डी, कोट-विशेष ।

टाँय-टाँय फिस ( बोल० ) निरर्थक बकवाद, परिणाम-रहित बकवाद ।

टाँसना ( कि० अ० ) पोड़ा होना, झिनझिनाना ।

टाउनहाल ( पु० ) सभास्थान, मजलिस, दरबार ।

टाट ( पु० ) सन का कपड़ा, बोरा ।

टाटक ( वि० ) टटका, ताज़ा, नवीन ।

एक टाट के ( मुहा० ) एक कुछ के, भाईबंधु ।

टाट पलटना ( मुहा० ) दिवाला निकालना ।

टाट में मूँज की बखिया ( मुहा० ) बे मंत्र बात ।

टाटी ( स्त्री० ) टट्टी, टट्टिया, माँ, आइ ।

टाठी ( स्त्री० ) थाली मज़बूत ।

टाड़ी ( स्त्री० ) छोटो कुल्हाड़ा, छोटो फरसा, खकड़ी काटने का अस्त्र-विशेष ।

टान ( स्त्री० ) तनाव, खिंचव ।

टानना ( कि० स० ) फैलाना, चौड़ा करना, ऐँचना ।

टाप ( स्त्री० ) घोंच के अगले पैर की चाहट, चढ़ने में घोड़े के सुम का शब्द, मजली पकड़ने के लिये बाँस का बना हुआ डोँचा, मुराँगों के बंद करने का भाषा ।

टापना ( कि० अ० ) निराश हो जाना, भूखे रह जाना ।

टापा ( पु० ) खाँचा, बड़ा पिंजरा, मैदान, उछाल, कूद, ऊपर भूमि ।

टापू ( पु० ) धरती का वह टुकड़ा जो चारों ओर पानी से घिरा हो, द्वीप ।

टावर ( पु० ) छोटो मोज, तालाब, ( पु० ) बालक, लड़का ।

टार ( पु० ) दुर्गचारी मनुष्य, भेंडुषा, कुटना ।

टारना } ( टालना ) ( कि० अ० ) हटाना, सरकाना, दूर  
टालना } करना, बहाना करना, देरी करना, टाल करना ।

टाल ( पु० ) बहाना, टालटोल, टालमटोल, ( स्त्री० ) ढेर ( अनाज या लकड़ी आदि का ), तूट, अंबार, अटाल, सूखी घास का गंज ।

टालटोल } ( बोल० ) बहाना, छल, ढीलठाल,  
टालमटोल } चकरमकर, घोंचघुमाव, जपेट-सपेट, बनावट ।

टाला ( पु० ) टालमटोल, घोंचघुमाव, बनावट, जपेट-सपेट, ढेर, तूट, गंज, टाल, छल, कपट, धोखा ।

टालायाला बताना ( बोल० ) टालना, घोंचघुमाव करना, टालमटोल बताना, टालटोल करना ।

टाली ( स्त्री० ) गाय-वैल के गज्जे की इँटी, तीन वर्ष से कम की जवान और चंचल गाय, बड़ी इँट ।

टाहली ( स्त्री० ) दासी, टहल करनेवाली, सेवा करने-वाली ।

टिकई ( स्त्री० ) वह गाय जिसके माथे में टोका हो, टिकर ( कि० अ० ) टिकता है, टहरता है, विश्राम करता है ।

टिकटिकी ( स्त्री० ) छिपकी, छिगकी, ऊँची तिपाई जिसमें बाँधकर अपराधी को बँट लगाए जाते हैं, या फाँसी दी जाती है ।

टिकठी ( स्त्री० ) तिपाई, तिथूरी, टिकठी ।

टिकड़ा ( पु० ) बाटी, आगकड़ी, चपटा गोल टुकड़ा,  
( सा० ) टिकड़ी ।

टिकना ( कि० थ० ) रहना, ठहरना, बसना, मुकाम  
करना, कपड़े आदि का बहुत दिनों तक चलना ।

टिकरी ( गी० ) एक प्रकार का पकवान, टिकिया ।

टिकली ( गी० ) बेंदा, बिंदु, टिकुली, पनखी रोटी,  
छोटी टिकिया ।

टिकम ( पु० ) कर, भाड़ा, किराया ।

टिकाऊ ( गी० ) टिकनेवाला, चलाऊ, ठहराऊ, चलने-  
वाला ।

टिकाना ( कि० ग० ) रखना, ठहराना, बसाना ।

टिकाव ( पु० ) टिकने का स्थान, ठहराव, पड़ाव,  
रहना ।

टिकामा ( पु० ) टिकने का स्थान, वाम-स्थान, ठहरने  
की भूमि ।

टिका-सा ( बि० ) पथिक, बटोही, टिकनेवाला

टिकिया ( गी० ) कोयले की गोल-गोल टिकली,  
पनखी और छोटी रोटी ।

टिकुरा ( पु० ) डोला, भीटा ।

टिकैत ( पु० ) सरदार, युवराज, अभिष्टाता, श्रीनाथ-  
हारे के गोसाईंजी की उपाधि ।

टिकोर ( पु० ) खेई, पुलटिम, लेप ।

टिकोरा ( पु० ) आम की बतिया ।

टिकड़ा ( पु० ) मोटा रोटा ।

टीका ( पु० ) तिलक, एक रस्म ।

टिटीहरी ( गी० टि० ) ( गी० ) एक पयैरु का नाम ।

टिट्टिम ( टिट्टि पेंसा आद, भाषा=बोलना ) ( पु० ) टिट्टि-  
हरी, एक पयैरु का नाम ।

टिना ( पु० ) फनगा, पतंगा, यह सेतों की बहुत  
नुरस्मान पहुँचाना है ।

टिट्टी ( गी० ) शलभ, अनाज को नाश करनेवाला  
कीड़ा ।

टिपका ( पु० ) दाग, उँगली से लगाया हुआ निशान,  
टीका ।

टिपटिप ( गी० ) बूँद-बूँद पानी गिरने का शब्द, पके  
फोड़े या फणोले का मीठा दर्द ।

टिपवाना ( कि० स० ) दबवाना, धीरे-धीरे प्रहार  
करवाना ।

टिप्पन } ( टिप्=कैरना ) ( पु० ) जन्मपत्र, जन्म-  
टिप्पनी } कुंडली, याददाश्त के लिये लिख रखना,

नोट ( गी० ) टीका, विवरण, व्याख्या, अर्थ,  
टिपनी, शरह ।

टिप्पस ( सा० ) युक्ति, हिकमत, डोज ।

टिप्पी ( सा० ) निशान, चिह्न, पेबंद ।

टिभाना ( कि० स० ) लालच देना, ललचाना, प्रति-  
दिन कुछ वृत्ति देना ।

टिमटिम ( पु० ) धीरे-धीरे पानी बरसना, अस्थिर ।

टिमटिमाना ( कि० थ० ) दीपक का मंद-मंद जलना,  
झिलमिलाना ।

टिमाक ( पु० ) अहंकार, गेंठ, शृंगार ।

टिरीना ( कि० थ० ) गेंठ से बोलना, क्रोध करना ।

टिलवा ( पु० ) लकड़ी का कुंदा, छोटा क्रद, टिंगना ।

टिलिया ( गी० ) मुर्गी का बच्चा, छोटी मुर्गी ।

टिल्ला ( पु० ) ऊँचा जगह, मिट्टी का ढेर ।

टिहरा ( पु० ) पुरा, पुरवा, छोटी बस्ती, छोटा गाँव ।

टिहुकना ( कि० थ० ) नाराज़ होना, रुटना ।

टिहुक ( गी० ) नाराज़गी, क्रोध ।

टीक ( गी० ) गले का एक गहना ।

टीका ( टीक=त्राता ) ( गी० ) शरह, टिप्पनी, विवरण,  
कठिन शब्दों के अर्थ और गूढ़ अभिप्राय का अच्छी  
तरह से समझाना ।

टीका ( गे० मिलक ) ( पु० ) तिलक, ललाट पर चंदन,  
केसर आदि का चिह्न, स्त्रियों के ललाट पर पहनने  
का एक सुवर्ण का गहना, द्याह में दुल्हन के  
घर से जो भेंट जानी है, गोटी का खुदवाना, छापा ।

टीका भेजना ( बोल० ) द्याह के शुरु में दुल्हन के  
घर से दुल्हे के घर वस्त्र, रुपया, नारियल आदि  
भेंट भजना ।

टीका लेना ( बोल० ) द्याह की भेंट को लेना, ग्रहण  
करना या स्वीकार करना ।

टीडी ( गी० ) टिट्टी, शलभ ।

टीप ( गी० ) टिपनी, बोहरे का तमस्सुक जिसमें मूख  
और व्याज के रूपों के बदले फसल पर अनाज  
आदि जिस देने को लिख देते हैं, गाने में राग को  
ऊँचा ले जाना, जल्दी में कोई बात लिख लेना,  
अटक लेना या टॉक लेना, दबाव, दबाहट ।



टीपटाप (खी०) ठाठ-बाट, तड़क-भड़क, सजावट, जोड़-गाँठ ।

टीपन (प०) जन्म-पत्र, चुराना, दीवार की दरार बंद करना, गाँठ, टाँका, घट्टा ।

टीपना (क्रि० स०) ससलना, दबाना, चुराना (प०) जन्म-पत्र ।

टीमटाम (खी०) सजावट, आडंबर, तड़क-भड़क ।

टीला (प०) मेड़, ऊँची धरती, पहाड़ी ।

टीस (खी०) पीड़ा, टपक, व्यथा, धड़क, दातों की पीड़ा ।

टीस मागना (बोल०) पीड़ा होना ।

टुक (सं० स्त्री०, टुक=पपक होना) (वि०) थोड़ा, कम, अल्प, ज़रा, ज़रा-सा ।

टुकड़तोड़ (प०) टुकड़ा खानेवाला, पराश्रित, दूसरों के अन्न से पलनेवाला ।

टुकड़ा } (सं० स्त्री०, टुक=पपक होना) (प०) टुक } खंड, भाग, हिस्सा, चिट, अंश, परमाणु ।

टुच्चा (वि०) पोचा, ओछा, बेहूदा, वाही, कमीना ।

टुटपुँजिया (वि०) थोड़ी पूँजी से रोज़गार करने-वाला, छोटा आदमी, थोड़ी हैसियतवाला ।

टुंड (वि०) ठूठा, काटा हुआ अंग ।

टुंडी } (सं० नुंदि, तुद=पीड़ा देना) (खी०) नाभि, टुंडी } ताँदी, (वि०) विना हाथ की ।

टुंडियाँ कसना } (बोल०) पीठ पीछे हाथों को टुंडियाँ चढ़ाना } बाँधना, मुपक बाँधना ।

टपकना (क्रि० अ०) धीरे-धीरे दर्द होना, बीच में बोल देना ।

टुसकना (क्रि० अ०) रोना, बिजबजना, सुसकना, पीड़ा होना, हटना ।

टूंगना (क्रि० स०) कुतुर-कुतुरकर खाना, थोड़ा-थोड़ा खाना ।

टूट (टूटना, सं० तुटि) (खी०) टूटन, फूटन, खंडन, टोटा, कमी, हानि, नुकसान, कोई बात जो पुस्तक के लिखने में भूल से छूट जाती है और हाशिए पर पीछे से लिखी जाती है ।

टूटना (सं० टोटन, तुट=काटना) (क्रि० अ०) टुकड़े होना, फूटना, फटना, चढ़ना, चढ़ाई करना, धावा

करना, जातिच्युत होना, नीचे गिरना, घेमनरथ होना ।

टूटा (टूटना) (वि०) टूटा हुआ, फूटा हुआ, (प०)

टोटा, कमी, हानि, नुकसान, घटी ।

टूटा-फूटा (वि०) टुकड़े टुकड़े, खंडहर, नष्ट-भ्रष्ट, पुराना, काम चलाऊ, भग्नावशेष ।

टूटना (क्रि० अ०) प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।

टूसी (खी०) कली, कोंपल, कीमल पत्ता, फुनगी ।

टेंक (खी०) धूना, टिकाव, सहारा, अवलंब, टेंकन, गंभा, रोक, प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, संकल्प ।

टेंकड़ी (खी०) टोला, छोटा पहाड़ ।

टेंकन (प०) सहारा, अवलंब, श्रीदंगन, गीत की टेंक ।

टेंकरा (प०) टोला, ऊँची धरती ।

टेंकला (खी०) धुन, रटन ।

टेंकी (प०) प्रणो, अपनी बात पर अड़ा रहनेवाला, टेंकने की लकड़ी ।

टेंकुआ (प०) चरख का सूआ, जिसमें सूत काता जाता है, तेकुआ ।

टेंकुआ सा सीधा करना (पदा०) डंड देकर बद-माशी दूर करना ।

टेंकुरी (खी०) चरखे का टेंकुआ ।

टेंड़ा (वि०) बक्र, बाँका, तिरछा, अकड़ा, वेड़ा ।

टेंड़ा करना (बोल०) झुकाना, बाँका करना, तिरछा करना ।

टेंड़ा-वेड़ा (बोल०) टेंड़ा, बाँका ।

टेंट (प०) करीज का फल, कपास का फल, आँख की फुली, कमर का वह भाग जहाँ रुपए-पैसे खाँसते हैं ।

टेंटुआ (प०) साँसा, नरेंटा, नरी ।

टेंटे (प०) चेंचें, किलकिलाहट, व्यर्थ की डींग ।

टेंना (क्रि० म०) हथियार पर शान चढ़ाना, तेज करना, मूर्छों पर ताव देना ।

टेंम (खी०) बत्ती की जलन या फूज, दीपक की लौ ।

टेंर (वि०) लय, स्वर, तान, ताज, राग, पुकार, हाँक, क्रयौद, गोहार ।

टेंरना (क्रि० अ०) पुकारना, ललकारना, बुलाना, हाँक मारना, अल्लापना ।

टेंरी (खी०) पतला डाल, छोटी टहनी ।

टेंव (खी०) बाख-चखन, रीति, बान-स्वभाव, आदत, चाट, चस्का ।

टैवकी ( स्त्री० ) धूनी, खंभा, टेक, टेकन ।

टैवना } ( क्रि० म० ) नीखा करना, चोखा करना,  
टैना } बाढ़ देना, धार लगाना, पैना करना ।

टैया ( पु० ) जन्मपत्रो, टैव, स्वभाव, चाट, चस्का ।

टैवैया ( पु० ) हथियार तेज करनेवाला, शान धरने-  
वाला ।

टैसू ( पु० ) पखाश का कूज, एक प्रकार का वेल् ।

टैहला ( पु० ) व्याह की एक रीति ।

टोक ( टोकरा ) ( स्त्री० ) रोक, रुकाव, अटकान, बुरी  
दृष्टि, नज़र, दीठ ।

टोकना ( क्रि० म० ) रोकना, प़चना, डाढ़ करना,  
बुरी नज़र से देखना, दंठ लगाना, ( पु० ) टोकरा ।

टोकनी ( स्त्री० ) डलिया, छोटा दौरा ।

टोकरा ( पु० ) डाला, खाँवा, बड़ी टोकरी, छटवा,  
पलड़ा ।

टोकरी ( स्त्री० ) डलिया, पलड़ो, खचिया ।

टोटका ( पु० ) मंत्र, जंत्र, गंडा, तांत्राज्ञ, टोना, मोहन,  
छटका, वशीकरण ।

टोटा ( पु० ) घटा, घाटा, कमी, लुप्तान, टेंटा, बाँस  
के छोटे और मज़बूत टुकड़े, कारतूस ।

टोंटा ( पु० ) पटाखा, मुरो, बाँस की गाँठ, कारतूस,  
( वि० ) त्रिमका हाथ टूटा हुआ हो ।

टोंटी ( स्त्री० ) नल्लो, नल ।

टोड़ी ( स्त्री० ) एक रागिणी का नाम ।

ठ टर्न का दूसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धो है ।  
ठ ( पु० ) शिव, चंद्रबिंब, मंडल, शय्य, महाधनि,  
मूर्ति, जन-समूह ।

ठकठक ( पु० ) कठिन काम, शर, भगड़ा, मनमोटाव ।

ठकठकाना ( क्रि० म० ) ठोंकना, खट खट करना, कुटना,  
मारना, लठो से खड़ना, लाठा खनना ।

ठकुर ( सं० ठकुरा ) ( पु० ) ठाकुर शब्द को देखो ।

ठकुरमुहानी ( स्त्री० ) मुशमद, मालिक की प्रसन्न  
करनेवाली बातें, चापलूयो ।

ठकुराइन ( स्त्री० ) जमोशगिन, स्वामिनी, मालकिन,  
ठाकुर की स्त्री ।

टोना ( पु० ) मोहन, टोटका, जादू, सेहर, छटका,  
( क्रि० स० ) टटोलना ।

टोनाटानी } ( बेल० ) मंत्र, जंत्र, टोना, टोटका ।  
टोनाटामन }

टोप ( पु० ) बड़ो टोपी, टाँका, सीवन ।

टोपरा ( पु० ) दौरा, टोकरा ।

टोपरी ( स्त्री० ) टोकरो, छोटा टोकरा ।

टोपा ( पु० ) टोप, सिर का ढकना, युद्ध के समय सिर  
ढकनेवाला आच्छादन ।

टोपी ( स्त्री० ) छोटा टोप, सिर का ढकना ।

टोल ( पु० ) धोक कुँद, जथा, सभा, दह ।

टोला ( पु० ) महल्ला, खंड, शहर का एक हिस्सा ।

टोली ( स्त्री० ) छोटी बस्ती या मुहल्ला, कतार, समुदाय,  
सैन्य ।

टोपना ( क्रि० स० ) छूना, स्पर्श करना, छूकर जानना ।

टोह ( स्त्री० ) पना, तलाश, खोज ।

टोह में रहना ( मुहा० ) सदा ढूँढ़ते रहना, चिंता में  
रहना ।

टोढ़ रखना ( मुहा० ) देवभाव करना ।

टुस्टी ( पु० ) विश्वस्त, मुश्कतमिद, जातविश्वास ।

टुई ( स्त्री० ) कोशित, उद्योग, परिश्रम, चेष्टा ।

टुंड एसोसिएशन ( स्त्री० ) सौदागरों की कमेटी ।

टुं सलेटर ( पु० ) मुतरजिम, अनुवादक, उल्था करने-  
वाला ।

ठकुराई ( सं० ठकुरा ) ( स्त्री० ) ईश्वरता, प्रधानता,  
स्वमोपन, बड़प्पन ।

ठकुराई टकरा टकरा का बंटा, बड़े-बड़े दाने की माला ।

ठकुर ( पु० ) मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि, देवताओं  
की मूर्ति, शालग्राम की बटिया ।

ठग ( पु० ) ठगनाला, बटमार, चोर, दगाबाज़, बह-  
कानेवाला, छुडी, कपटो ।

ठगयाज़ी } ( स्त्री० ) ठगाई, काट, छल, माया ।  
ठगियाँ }

ठग लाना ( बोल० ) ठगना, छलना, धोखा देना, बहका  
के ले लेना ।

ठग लेना ( बोल० ) छलना, धोखा देना, छल से लेना ।  
ठगई ( ठग ) स्त्री० ) ठगाई, ठग का काम, छल, धोखा ।

ठगना ( कि० स० ) छलना, भुलावा देना, धोखा देना, बहकाना ।

ठगाई ( ठग ) ( स्त्री० ) ठगाई, छल, धोखा ।

ठगिन ( स्त्री० ) धोखेबाज़ स्त्री, ठग की स्त्री, विश्वास-घातिनी ।

ठगोरी ( ठग ) ( स्त्री० ) ठगाई, भुलावा, माया, छल, धोखा ।

ठट्टा ( पु० ) भीड़भाड़, कुंड़, मंडली, समूह, जमाव ।

ठट्टा ( पु० ) हँसी ठट्टोली, खिल्ली, चुहल, दिखली, उपहास ।

ठट्टा करना ( बोल० ) हँसी करना, ठट्टोली करना, हँसना, उपहास करना, मसखरापन ।

ठट्टा मारना ( बोल० ) हँसी करना, ठट्टोली करना, हँसना, उपहास करना ।

ठट्टेबाज़ ( वि० ) ठट्टोल, हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

ठट्टाज़ी ( स्त्री० ) ठट्टा करना, हँसोड़पन, खेल, दिखली ।

ठठकना ( कि० अ० ) रुकना, ठहरना, हटना, खड़ा रह जाना, अचंचल में खड़ा रह जाना, किमकना, हिचकना, चिहुँकना ।

ठठरी ( स्त्री० ) ठट्टर, ठाठ, रथी, ढाँचा, पाँजर, अस्थि-पंजर, हड्डियों का ढाँचा, बहुत दुबला मनुष्य, कंकाळ ।

ठठाना ( कि० स० ) मारना, पीटना, कूटना, दुःख में अपना सिर पीटना, अपने को दुःख में डालना ।  
( कि० अ० ) अट्टहास करना, खूब हँसना, ठठाकर हँसना ।

ठठरा ( पु० ) कँसेरा, भर्त्सिया, धातु का बर्तन बनाने या रोज़गार करनेवाली जाति ।

ठठरे ठठरे बदलौअल ( मुहा० ) जैसे को तैसा ।

ठठोर { ( वि० ) हँसोड़, रसिक, ठट्टेबाज़ ।  
ठठोल }

ठठोली ( स्त्री० ) ठट्टा, हँसी, खिल्ली, हाँसी, मसखरी ।

ठडा ( वि० ) खड़ा ।

ठडा ( पु० ) गुड़ों के बीच की लकड़ी ।

ठंढ ( स्त्री० ) जाड़ा, सर्दी, शीत, शीतकाल ।

ठंढक ( स्त्री० ) ठंढाई, शीतलता ।

ठंढा ( वि० ) शीतल, सर्द ।

ठंढा करना कलेजा ( बोल० ) प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा संतान आदि को देखकर आनंदित होना, बदला लेने से मन प्रसन्न होना ।

ठंढा करना ( बोल० ) शीतल करना, सर्द करना, बुझाना, बुताना ( जैसे आग ), शांत करना, स्थिर करना, धीरज देना, दिक्कत देना ।

ठंढा पड़ना ( बोल० ) कम होना, घटना ( जैसे क्रोध, पोकथ, चंचलाहट का ) ।

ठंढा होना ( बोल० ) सद होना, शांत होना, बुझना, बुतना, शांत होना, धीरज धरना, स्थिर होना ।

ठंढाई ( स्त्री० ) ठंडो श्रोत्र (जैसे सौं-कासनी आदि) भंग, सर्दी, शीतलता ।

ठंढी साँस भरना ( बोल० ) हाय मारना, आह भरना, लंबी साँस लेना ।

ठनकना ( कि० अ० ) टोसना, टोस मारना, सिर में दर्द होना, झनकना, झनझनाना, ठनठनाना, मृदंग आदि का बजना, मंद-मंद पीड़ा होना ।

ठनठनाना ( कि० अ० ) झनझनाना, झनकना, ठनकना ।

ठनाका ( पु० ) झनकार, झनझन-हट, ठनकार ।

ठनाठन ( पु० ) हरणों की अधिकता, लगातार ठनठन शब्द होना ।

ठपका ( पु० ) उलहना, आघात, धक्का ।

ठपंत ( कि० अ० ) दृढ़ता के साथ किसी काम में लग जाना ।

ठप्पा ( पु० ) छापने का साँचा, छाप, मोहर ।

ठभोली ( स्त्री० ) ताना, व्यंग्य, ठट्टोली ।

ठमक ( स्त्री० ) टहराव, चलते-चलते रुक जाना, रुकावट ।

ठमकना ( कि० अ० ) टहरना, रुकना, लचकना, भटकने हुए चलना ।

ठमकाना ( कि० स० ) चलते-चलते रोकना, रोकना ।

ठरक { ( पु० ) खरीटा, घुरा ।  
ठरर }

ठरिया ( पु० ) एक तरह का मिट्टी का हुका ।

ठरी ( पु० ) बटा हुआ सूत, मोटा अन्न ।

ठवनि

ठवनि (सं०) चाल, स्थिति, आसन, बैठना, बैठने का ढंग।

ठस (वि०) ठोस, जो पोला न हो।

ठसक (स्त्री०) भड़क, छैनपन, अहंकार, धूमधाम, गेंठ, गवं।

ठसका (पु०) सूखी खाँसी।

ठसाठस (वि०) कमकम, खूब भरा हुआ।

ठस्सा (पु०) साँचा, डाँचा, अहंकार, घमंड, रोव, गेंठ।

ठहरना (म० प्रा०=ठहरना) (क्रि० अ०) ठिकना, रहना, बसना, खड़ा रहना, रुकना, अटकना, उतरना, ढेरा निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध होना, पक्का होना, दृढ़ होना, निपटना।

ठहराऊ (वि०) ठिकाऊ, बहुत दिनों तक रहनेवाला, ठहरानेवाला, निश्चय करनेवाला, प्रतीक्षा करनेवाला।

ठहराना (ठहरना) (क्रि० म०) ठिकाना, रखना, खड़ा करना, रोकना, अटकाना, उतारना, ढेरा देना, निर्णय करना, सिद्ध करना, ठिकाना करना, पक्का करना, निपटाना, दृढ़ करना, निश्चित करना, निश्चय करना, ठानना, विचारना, लगाना।

ठहराव (ठहरना) (पु०) ठिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय, समझौता।

ठहरावनी (स्त्री०) विवाह-संबंधी लेन-देन, जो पहले ही ठहरा लिया जाता है।

ठाकुर (म० ठाकुर=देवता का मूर्ति, प्रतिष्ठित पदना) (पु०) देवता, ईश्वर, देवता की मूर्ति, स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु, नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों में), जमींदार, नाई; वज्रभाषा के एक कवि का नाम।

ठाकुरद्वारा (म० ठाकुरद्वारा) (पु०) मंदिर, देवालय, देवस्थान।

ठाकुरयाड़ी (म० ठाकुरयाड़ी) (स्त्री०) मंदिर, देवालय, ठाकुरद्वारा।

ठाट (पु०) ठठरी, तैयारी, रचना, धूमधाम, साज, भड़क, शान, हशमन, भीड़भाड़, झूँड़, समूह, बहु-तायन, आडंबर, ढंग, शैली, दृश्य, वेश, विन्यास

ठाट करना (पु०) सामान एकत्रित करना।

ठाट बदलना (पु०) नया रूप धारण करना, रंग पलटना।

ठाटवर्दी (स्त्री०) खपड़े छाने के लिये ठाट करना।

ठाढ़ा (वि०) खड़ा, सोधा।

ठाढ़ा रहना (क्रि० अ०) खड़ा रहना।

ठान (स्त्री०) यज्ञ उत्सव आदि का प्रारंभ करना, बड़े काम का प्रारंभ करना, ज़िद, हठ, दृढ़ संकल्प, चेष्टा, मुद्रा।

ठानना (क्रि० स०) ठहराना, मन में पक्का करना, विचारना, निश्चय करना।

ठानी (स्त्री०) ठहराई, विचारी, निश्चय की।

ठाम (पु०) स्थान, टाँव।

ठार (पु०) पाला, हिम, अधिक सर्दी, खूब जाड़ा।

ठाल (स्त्री०) काम-धंधे का अभाव, अवकाश।

ठाला (वि०) बेकार, बिना काम, खाली।

ठाँ } (सं० स्थान) (पु०) ठौर, जगह, ठिकाना,  
ठाँधि } स्थान, स्थल।  
ठाम }

ठाँपना (क्रि० स०) दबा-दबा के भरना, घुसेड़ना, ठूपना, दबाना।

ठाहर (सं० स्थान) (स्त्री०) ठौर, ठाँ, ठाँव, ठाहरु स्थान।

ठिकरा (पु०) घड़े या मटकी का टुकड़ा।

ठिकाना (म० स्थान) (पु०) जगह, वास, स्थान, ठौर, पना, सीमा, हद्द।

ठिकाना दूँढ़ना (बोल०) वासा दूँढ़ना, काम दूँढ़ना, जौविका स्थान अथवा आश्रय दूँढ़ना।

ठिकाने लगना (बोल०) मारा जाना, मरना, पुरा होना, काम आना।

ठिकाने लगाना (बोल०) मार डालना, पूरा करना, खपाना।

ठिंगना (वि०) नाटा, छोटा, बीना, पस्ता क्रुद।

ठिठकना } (क्रि० अ०) अवंध में आना, थोड़ी  
ठिठक जाना } देर ठहर जाना।  
ठिठक रहना }

ठिनकना (क्रि० अ०) सिसकना, सिसकी भरना, धीरे-धीरे रोना, मचल-मचलकर रोना, ठुनकना।

ठिठरना (क्रि० अ०) जमना, जड़ना, अकड़ना, जाड़ा लगना, ठिठुरना।

ठिया (पु०) सीमा, सीमा का चिह्न, अड्डा।

ठिरना (क्रि० अ०) सरदी से ठिठुरना, जाड़े से संकुचित होना ।

ठिलना (क्रि० स०) ढकेला जाना, टेला जाना ।

ठिलवा (स्त्री०) मिट्टी का छोटा घड़ा, पैर का एक जेवर ।

ठिलिया (स्त्री०) गगरी, छुंटा घड़ा, पैर का एक जेवर ।

ठिलुआ (वि०) निठक्का, बेकाम ।

ठिल्ला (पु०) बड़ा घड़ा, गगरी ।

ठीक (क्रि० वि०) पूरा, बराबर, सही, शुद्ध, खरा, साफ, योग्य, उचित, सच, यथार्थ, जैसा चाहिए ।

ठीक आना (बोल०) मिलना, बराबर होना, बराबर आ जाना, कामयाब होना, सटीक आना ।

ठीक करना (बोल०) सही करना, निश्चय करना, मारना, रास्ते पर लाना ।

ठीकठाक (बोल०) सही, शुद्ध, सच ।

ठीकठाक करना (बोल०) सही करना, जाँचना, निश्चय करना, प्रबंध करना, तैयारी करना ।

ठीकरा (पु०) मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा ।

ठीका (पु०) भाड़ा, ठहराया हुआ मोजा, इजारा, मुकाना, मुस्ताजिरा, कटकना, चुकौता, लिखा-पट्टी ।

ठीलना (क्रि० स०) टेलना, ढकेलना ।

ठीवन (पु०) कफ, थूक, खत्तार ।

ठीहा (पु०) बैठने का स्थान, लोहार की निहाई रखने की मोटी और ऊँची लकड़ी ।

ठुकना (क्रि० अ०) मार खाना, पीट जाना, गले पड़ना, जबरदस्ती फँसना ।

ठुट्टी (स्त्री०) ठोढ़ा, चिबुक, भूँजा अनाज ।

ठुमकना (क्रि० अ०) अच्छी चाल चलना, गेंड कर चलना, धीरे-धीरे प्रसन्नता की चाख ।

ठुसकना (क्रि० अ०) धीरे-धीरे जो उबानेवाली वानें बोलना ।

ठुसकी (स्त्री०) धीरे से पादना ।

ठूँठ (पु०) डुंढा, बिना पत्ते की डाल, कटा हुआ हाथ, उबार-बाजरे आदि की क्रमज में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा ।

ठेउना (पु०) घुटना ।

टेक (स्त्री०) टेकनी, टेक, सहारा, अवलंब, नाज का भरा हुआ बोरा, पेंदा, घोड़े की चाल-विशेष, छड़ी

या छाठी की सामी, बर्तन में लगी हुई चकती ।

टेका (पु०) तबले का एक बोल, टीका, टेके की चीज़ ।

टेकाधिकारी (पु०) मुस्ताजिर, मुकालादार ।

टेगना (क्रि० स०) सहारा लेना, विश्वास करना, छाठी के सहारे चलना ।

टेंगा (पु०) छाठी, लट्ट, अँगूठा : जबरदस्त का टेंगा सिर पर अर्थात् अग्राचारी का अग्राचार सिर पर ।

टेंगा दिखाना (पु०) टेंगा दिखाकर किसी को बेइज्जती करना, निराश करना, धोखा देना ।

टेंगा बजाना (पु०) लड़ाई लड़ना, छाठी चलाना ।

टेंगा याजना (बोल०) छाठी चलना, बिगड़ना ।

टेंगे से (पु०) कोई परवाह नहीं, भय नहीं ।

टेठ (वि०) निपकेवल, खालिस, असल, साफ, बेमेल, ठीक, निपट, भगड़ाल ।

टेंटी (स्त्री०) कान का मैल, बट्टा, टेपी, घुटने तक की धोती

टेपी (स्त्री०) टेंटी,

टेपी मुँह में देना (बोल०) चुप रहना, अवाफ़ होना ।

टेलना (क्रि० स०) ढकेलना, रेलना, धक्का देना, भोंकना ।

टेला (पु०) धक्का, ढकेल, भोंक, माल लादने की गाड़ी ।

टेलाटेली (बोल०) धक्कमधक्का, रेंगपेल ।

टेम (स्त्री०) टोकर, चोट, चपेट, भराव ।

टेसना (क्रि० स०) छेड़ना, बेचना, ठोकर देना, ठुक-राना, ठाँसना ।

ठोकना (क्रि० स०) मारना, गड़ना, गाड़ना, धप-थपाना, पीटना (जैसे टोलक आदि भाँजे को) ।

ठोक देना (बोल०) गाड़ देना, गड़ देना, जड़ देना, नालिश-क़र्षाद करना, पीटना ।

ठाँकना पीठ (बोल०) पीठ थपथपाना (जब किसी को मराहो अथवा उसकी हिम्मत बढ़ाने हेतु), उम्माह देना, हिम्मत बढ़ाना ।

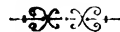
ठोकर (स्त्री०) पैर की मार, लात ।

ठाँकर खाना (बोल०) गिर पड़ना, लुढ़कना, भूखना, चूकना, घटी सहना, मारा मारा फिरना, असफल होना ।

ठोकर लगना (बोल०) पैर में चोट लगना, धक्का लगना, विफलता होना ।

ठोढ़ी ( स्त्री० ) ठुड़ी, चिबुक ।  
 ठोठ ( सं० ठोठि, युट्=काटना ) चोंच, ठोर ।  
 ठोर ( सं० ठोठि, युट्=काटना ) ( स्त्री० ) चोंच, ठोठ ।  
 ठोस ( वि० ) पोछा नहीं, घना, कठोर, बड़ा, दृढ़,  
 भारी, पोढ़ा, गाढ़ा ।  
 ठोसना ( कि० म० ) ठाँसना, दबा-दबा कर भरना,  
 दबाना, भरना ।  
 ठोसा ( पु० ) ठेंगा, अँगूठा दिखलाना, अँगूठे की  
 छाप ।

ठोहना ( कि० स० ) स्थान ढूँढ़ना, पता लगाना ।  
 ठोहर ( पु० ) अकाल, महींगी का समय ।  
 ठोनी ( स्त्री० ) ठवनि, स्थिति, स्थान ।  
 ठौर ( स्त्री० ) जगह, ठाँव-ठिकाना, स्थान ।  
 ठौर-कुठौर ( मुहा० ) बुरे ठिकाने, बिना अवसर,  
 बे-मौक़ा, अनुपयुक्त स्थान ।  
 ठौर-ठिकाना ( मुहा० ) रहने का स्थान, पता-ठिकाना ।  
 ठौर रहना ( बोल० ) खेत रहना, मारा जाना, मर  
 रहना ।



ड

ड ( पु० ) शिव, डर, शब्द, ब्रह्माग्नि, टवर्ग का तीसरा  
 वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है ।  
 डकई ( पु० ) केलें की जाति-विशेष ।  
 डकरा ( पु० ) विष, तालाब की सूखी काली मिट्टी ।  
 डकराना ( कि० प्र० ) गाय-भैंस आदि का बोलना,  
 चिल्लाना, चीखना, क्रूर मारकर रोना ।  
 डकवाहा ( पु० ) चिट्ठीरसा, डाकिया, चिट्ठे बाँटने-  
 वाला ।  
 डकार ( स्त्री० ) डेकार, डकार, उद्गार ।  
 डकारना ( कि० प्र० ) डकार लेना, रँभाना, हुँकारना,  
 गर्जना, भोंकारना, पचा जाना ।  
 डकार जाना { ( बोल० ) उड़ा जाना, खा जाना, पचा  
 नकार बैठना } जाना, पचा बैठना ।  
 डकार लेना ( बोल० ) डकारना, डकार लेना ।  
 डकैत ( पु० ) डाकू, बटमारी, लुटेरा, चोर ।  
 डकैती ( स्त्री० ) डाका, बटमारी, लूट, चोरी, ( पु० )  
 डाकू ।  
 डकौत { ( पु० ) एक जाति के लोग जो ब्राह्मण  
 उक्तांतिया } औरस से ग्वालिन के गर्भ से पैदा हुए,  
 ये लोग शनि का दान लेते हैं और उद्योतिष-  
 विद्या में पढ़े होते हैं ।  
 डग ( स्त्री० ) फाज, पद, लंबी चाल ।  
 डगना ( कि० प्र० ) हिलना, प्रतिज्ञा से च्युत होना,  
 विचलित होना, फिरना ।  
 डगमगाना ( कि० प्र० ) लड़खड़ाना, डगडगाना,  
 हिलना-डुलना, कांपना, अस्थिर होना ।

डगर ( पु० ) रस्ता, राह, मार्ग, पैदा, पथ, सड़क ।  
 डगरना ( कि० प्र० ) यात्रा करना, रास्ते चलना,  
 घूमना, डोलना ।  
 डगर बताना ( मुहा० ) मार्ग बताना, उपाय बताना,  
 चले जाने को कहना, टरकाना ।  
 डगरा ( पु० ) सूप, बाँस का बना हुआ पात्र, रास्ता,  
 मार्ग ।  
 डगराना ( कि० स० ) फिराना, पछोरना ।  
 डगरिया ( स्त्री० ) राह, रास्ता, मार्ग, पथ ।  
 डगा ( पु० ) डुगगी बजाने की लकड़ी ।  
 डगाना ( कि० स० ) विचलित करना, प्रतिज्ञा भ्रष्ट  
 करना ।  
 डगै ( वि० ) हिले, खपके, टसके, कंपित हो ।  
 डग्गा ( पु० ) दुर्बल घोड़ा, अदोखा घोड़ा ।  
 डंक ( सं० दंश, दंश=काटना वा डंक मारना ) ( पु० )  
 चमक बिच्छू का दाँत जिसमें जहर भरा रहता है,  
 कलम की जोभ, व्यंग्य ।  
 डंक मारना ( बोल० ) काटना ( बिच्छू, घिर्ना आदि वा ) ।  
 डंका ( सं० टका, टक् ऐसा शब्द, बै=शब्द करना ) ( पु० )  
 नकारा बजाने का डंका, धौसा, नकारा, बड़ा डोल ।  
 डंके की चोट कहना ( मुहा० ) निर्भय होकर कहना ।  
 डंका पीटना ( पु० ) किसी बात को फेंकना ।  
 डंका बजना ( मुहा० ) अधिकार की सूचना होना ।  
 डंका बजाकर लेना ( मुहा० ) बत्तपूर्वक लेना ।  
 उंकिनी ( स्त्री० ) डाकिन, भूत-प्रेत की विद्या जानने-  
 वाली स्त्री ।

डंगर ( पु० ) भूसा, खीरा, धूर्त, खल, सेवक, प्रसेप, चौपाया, गाय, बैल, भैंस इत्यादि. ( स्त्री० ) ककड़ो ।

डटना ( क्रि० अ० ) धमना, रुकना, जम जाना, दड़ रहना, अड़ना ।

डटाना ( क्रि० स० ) विचलित न होने देना, भिड़ाना ।

डट्टा ( पु० ) ठैली, ठेपी, डाट ।

डढ़न ( स्त्री० ) दहन, जलन, बरना, नष्ट होना ।

डढ़मुंडा ( सं० मुंडितश्मश्रु ) ( वि० ) दाढ़ो मुंडा, विना दाढ़ी का ।

डढ़ार ( वि० ) लंबी दाढ़ीवाला ।

डढ़ियल ( वि० ) लंबी दाढ़ीवाला ।

डढ़ुआ ( पु० ) बरें का नेल ।

डंठल ( पु० ) छोटे पौदों की पेड़ी और शाखा, पौदों का धड़ ।

डंड ( सं० दंड ) ( पु० ) भुजा, डंडा, सजा, घाटा, एक तरह की कसरत अथवा व्यायाम जिसमें हाथों को धरती पर टेककर नीचे को इस तरह से झुकना होता है कि छाती से ज़मीन छू जाय ; डंडपेल=डंड पेलनेवाला, डंड करनेवाला ।

डंडवन् ( पु० ) प्रणाम करने की एक रीति, डंडे की तरह झुकना अथवा गिरना ।

डंडवार ( पु० ) चारों ओर की दीवार, ऊँची दीवार ।

डंडवी ( वि० ) दंड देनेवाला, करद ।

डंडा ( सं० दंड ) ( पु० ) सोंटा, लट्ट, छड़ी, झंडे की लकड़ी, सीढ़ी का पाया, बाज़ार का कर उगाहनेवाला ।

डंडा खाना ( मुहा० ) मार खाना, अपमानित होना ।

डंडा यजाना ( मुहा० ) लड़ाई करना, लड़ा चलायाना ।

डंडिया ( पु० ) स्त्रियों का एक प्रकार का कपड़ा, स्त्रियों के ओढ़ने का दुपट्टा या ओढ़नी, बाज़ार का कर उगाहनेवाला ।

डंडी ( सं० दंडी ) ( स्त्री० ) डंडा, बेंट, पकड़ने की लकड़ी, तराजू का डंडा अथवा धारण, लकड़ी, ( पु० ) संन्यासी जो अपने हाथ में दंड रखते हैं; पगदंडो=पदचिह्न, चोरराह, लीक, गुस्तराह ।

डंडी मारना ( मुहा० ) कम तौलना ।

डंडीर ( स्त्री० ) सीधी धारी, लीक, सीधी लकड़ी ।

डंडोरना ( क्रि० स० ) खोजना, ढूँढ़ना ।

डंडौत ( पु० ) दंडवत्, प्रणाम ।

डपटना ( क्रि० अ० ) पुकारना, ससेड़ना, डाँटना, झिड़कना, चुड़कना ।

डपोरशंख ( पु० ) मूर्ख, कमसमझ, जो कहे तो बहुत पर दे या करे कुछ नहीं ।

डप्पू ( वि० ) बहुत मोटा, बहुत बड़ा ।

डफ ( फा० दफ ) ( स्त्री० ) बड़ी खँजरी ।

डफाली ( डफ ) ( वि० ) एक प्रकार के गुस्लमान फ़कीर जो डफ बजाकर भीख माँगा करते हैं, डफ बजानेवाला, डफ बनानेवाला ।

डफोरना ( क्रि० अ० ) जलकारना, गरजना, चिल्लाना ।

डव ( पु० ) शक्ति, बल, पराक्रम, जेब, धैर्य, पतला चमड़ा ।

डवकना ( क्रि० अ० ) शोभित होना, जगमगाना, चमकना, टीस मारना, लँगड़ा कर चलना ।

डवका ( पु० ) ताज़ा, कुँ का टटका जड़, ( वि० ) मोटा ।

डवकौंहा ( वि० ) अश्रुपूर्ण, आँसू भरा हुआ ।

डवगर ( पु० ) चमड़ा कमानेवाला, दूबारा ।

डवडवाना ( क्रि० स० ) आँखों में आँसू भर खाना ।

डवडवाना आँखें } ( बोल० ) रोनी सूरत बनाना ।  
डवडवाना आँसू }

डवरा ( पु० ) गँदले पानी का छोटा तालाब, डाबर, ताल ।

डवगिया ( वि० ) बाएँ हाथ से काम करनेवाला ।

डवरी ( स्त्री० ) छोटा ताल ।

डवस ( पु० ) चिन्ता, रक्षण, तैयारी, समुद्र-यात्रा के उपयोगी वस्तु ।

डविया ( स्त्री० ) छोटा दिव्वा ।

डवोना ( क्रि० स० ) दुबाना, सोता खिलाना, दुबकी देना, बोरना, उजाड़ना, बरबाद करना ।

डव्या ( पु० ) बड़ी डिविया, कुप्पा, रेखगाड़ी का कमरा ।

डव्यू } ( पु० ) कछला, बड़ी करछुल ।  
डवुआ }

डभकना ( क्रि० अ० ) पानी में डूबना-डतराना ।

डभका ( पु० ) कुँ का ताज़ा पानी, भूना हुआ मटर ।

डभकौरी ( स्त्री० ) उरद की बरी ।

उभरुआ (पु०) गठिया, मोड़ों का दर्द ।

उभरु (उप=रेगा शब्द, ऋ=जाना) (पु०) एक प्रकार का बाजा ।

उभरुमध्य (पु०) जमान का वह पतला हिस्सा जो जमान के दो बड़े हिस्सों को मिलाना है ।

उभरुयंत्र (पु०) अर्क स्वीचने का यंत्र, दवा बनाने का यंत्र ।

उयन (डी=आकाश में उड़ना) (पु०) उड़ना, आकाश-गमन ।

उर (सं० दर, द=उरना) (पु०) भय, आस, शंका, आतंक, दबदबा ।

उरना } (सं० द=उरना) (क्रि० अ०) भय खाना ।  
उरपना }

उरपोकना (उर) (वि०) कायर, भीरु, डरनेवाला ।

उराऊ (उर) (वि०) भयानक, भयावना, डरावना ।

उराना } (उरना) (क्रि० स०) भय दिखाना, त्रास  
उरावना } दिखाना, (वि०) भयानक, भयावना, डराऊ ।

उराया (पु०) पक्षियों के डराने का एक उपाय ।

उरीला (वि०) भीरु, डरपोंक ।

उलथा (पु०) टोकरी, छटवा, झवई ।

उला (पु०) डेला, ईंटा, लोढ़ा, टोकरी, बड़ी दौरी ।

उलिया (स्त्री०) टोकरी, दौरी ।

उली (पु०) टुकड़ा, प्यंड, टूक (नीली, मिथी अथवा मांस का) ।

उमना (सं० दशन, दंश=घाटना) (क्रि० स०) माँप का काटना, डंक मारना, चभकना ।

उहकाना (क्रि० स०) चहकाना, निराश करना, बिगाड़ना, धोखा देना, रगाना ।

उहउहा (वि०) गिल्ला हुआ, हरा-भरा, फूला हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न, हर्षित 'आक उहउहो होय' (कोई बचि) ।

उहउहाना (क्रि० अ०) गिल्लना, फूलना, विकसना ।

उहन (स्त्री०) पंख, पक्षियों के पर, डयन ।

उहना (क्रि० अ०) कुहना, बुरा मानना, जलना, (पु०) पंख, पर, डेना ।

उहरना (क्रि० अ०) टहलना, धूमना, चलना ।

उह (पु०) बड़हर का पेड़ और फल ।

उाँक (स्त्री०) चाँदी-सोने का बरक ।

उाँकना (क्रि० अ०) पुकारना, कूदना ।

उाँग (स्त्री०) लाठी, पहाड़ की ऊँची चोटी, डगर, पग-डंडी, रास्ता, टहनी, डाली ।

उाँगर (वि०) दुबला, पतला, (पु०) दुबला पशु, मूली या मरसों का पत्ता या फूल, पशु, गाय-बैल आदि ।

उाँटना (क्रि० स०) डपटना, धमकाना, घुड़कना, फिड़कना, ताड़ना ।

उाँड़ (सं० दंड) (पु०) दंड, नागदंड, धिगदंड, जुमाना या धनदंड, पलटा, बदला, सजा, नाव खेने का बाँस, बल्लो, रीढ़, पीठ की हड्डी, लकड़ी, लाठी, डंडा ।

उाँड़ना (क्रि० स०) दंड देना, बदला लेना ।

उाँड़ भरना (बोल०) जुमाना देना, दंड देना ।

उाँड़ लेना (बोल०) दंड लेना, जुमाना लेना ।

उाँवरु (पु०) बाघ का बच्चा ।

उाँवाडोल (सं० भावनदोलन) (वि०) इधर-उधर भटकना, तोन-तेरह, वासहीन, डगमग, अस्थिर ।

उाँस (सं० दंश) (पु०) बड़ी मक्खी, बड़ा मच्छड़, पशुओं का मच्छड़, टंक, हूल ।

डाइन (स्त्री०) राक्षसी, चुड़ैल, जादूगरनी ।

डाक (स्त्री०) ठप्पा, चिट्ठी डालने की अगह, घोड़े की अथवा पालकी की चौकी, लगातार वमन करना ।

डाकखाना (पु०) चिट्ठियों के आने-जाने का दफ्तर ।

डाकगाड़ी (स्त्री०) सबसे तेज चलनेवाली गाड़ी ।

डाकना (क्रि० अ०) कूदना, फाँदना, वमन करना, दुःख या भय में चिल्लाना ।

डाकर (पु०) ताजों की सूखी हुई काली मिट्टी ।

डाक लगाना (पहा०) खबर पहुँचाने का प्रबंध करना ।

डाका (पु०) लुटेरों का धावा, छापा, जब्रदस्ती धन-हरण ।

डाकाज़नी (स्त्री०) लूटना, डाका मारना ।

डाका डालना } (बोल०) लूटना, राह मारना, जब्र-  
डाका देना } दस्ती छीन लेना, मार लेना ।

डाका पड़ना (बोल०) लूट जाना, लूटा जाना, चोरी होना ।

डाकिनी (स्त्री०) डाइन, चुड़ैल, प्रेतनी ।

डाकिया (पु०) डाकू, डाकूरीबाड़ा, डाकवाला, चिट्ठी-रसा ।

डाकी (वि०) खाऊ, पेड़, बहुत खानेवाला ।



डाकू ( पु० ) डकैत, बटमार, लुटेरा, चोर ।

डागा ( पु० ) नगरा बजाने की लकड़ी ।

डागा देना ( मुहा० ) आक्रमण करने की सूचना देना ।

डाट ( डाटना ) ( स्त्री० ) धमकी, घुड़की, फिड़की, डपट, टेपो, काक, टेक ।

डाटना ( कि० स० ) डपटना, घुड़कना, धमकाना, कसकर खाना, डाट लगाना, चढ़ाना, कपड़े पहनकर तैयार होना, टेकना, सहारा लेना ।

डाठी ( स्त्री० ) डंठा, दाळी, डाँठ, डंडा ।

डाढ़ ( सं० दंष्ट्रा, दंश=काटना ) ( स्त्री० ) दाढ़, पीसने के दाँत, पिछले बड़े दाँत, जटा ।

डाढ़ना ( कि० स० ) जलाना, मुँह काला होना, भस्म करना ।

डाढ़ा ( पु० ) दावानल, आग, वन की आग ।

डाढ़ी ( सं० श्मश्रु ) ( स्त्री० ) दुष्टों के ऊपर के बाल, शीश ।

डाव ( सं० दर्भ ) ( पु० ) डाभ, कुशा, ( वि० ) तलवार का परतला, कचा नारियल ।

डावर ( पु० ) गोल तादात्र, डवरा, गड़हा, ( वि० ) गँदला, मैला ।

डाभ ( सं० दर्भ ) ( पु० ) डाव, आम की मंजरी, कुशा, ( सं० दाव ) जंगल, वन ।

डामर ( पु० ) तंत्रमंद, समान राष्ट्र का भय, शिवोक्त शास्त्र-विशेष, धूना, राल ।

डामल ( स्त्री० ) जन्मक्रेद ।

डामाडोल ( वि० ) अस्थिर, चंचल, अस्थायी ।

डायन ( सं० डाकिनी ) ( स्त्री० ) डाकिनी, चुड़ैल ।

डायरी ( स्त्री० ) दिनचर्या, रोज़नामचा, रोज़नामा ।

डार ( स्त्री० ) डाल, डाली, टहनो, शाखा ।

डार ( सं० धारा ) ( स्त्री० ) कतार, पाँत, पंक्ति ।

डार की डार ( बोल० ) फुँड-का-फुँड, जग्या, दल, टोली, समूह ।

डारना ) ( कि० स० ) फेंकना, भोंकना, खलाना,  
डालना } उड़ेलना, उफ़लना, भीतर फेंकना, रख देना, धर देना, जलदी से गिरा देना, चुमेड़ना ।

डाल ( स्त्री० ) डाली, डार, टहनो, शाखा, एक डाल, ( बोल० ) एक मेल का ।

डाल रखना ( मुहा० ) किसी वस्तु को रख छोड़ना, काम में मंजूराना, स्थगित करना ।

डाली ( पु० ) फल आदि को भेंट, फलों की टोकरी, डाल, टहनो, शाखा ।

डाली लगाना ( मुहा० ) उपहार को उत्तम वस्तुओं से डाला सजाना ।

डावरा ( पु० ) पुत्र, बेटा ।

डावरी ( स्त्री० ) कन्या, बेटो ।

डासना ( कि० स० ) बिछाना ।

डासी ( स्त्री० ) बिछाई ।

डाह ( सं० दाह=जलन ) ( स्त्री० ) लाग, चँर, जलन, द्रोह, द्वेष, खुनस, गाँठ ईर्ष्या, हसद, रश्क ।

डाहना ( सं० दाहन=जलन ) ( कि० स० ) डाह रखना, डाह से जलना, दुःख देना, ( कि० स० ) धातु को गलाना या पिघलाना, धातु को धिकाना या गर्म करना ।

डाहुक ( पु० ) पक्षी-विशेष जो अधिकतर जल के पास रहता है ।

डिक्शनरी ( पु० ) अभिधान, कोष, लुग़त ।

डिगना ( कि० स० ) हिलना, डगमगाना, थरथराना, काँपना, हटना, टलना, विचलित होना ।

डिग्गी ( स्त्री० ) पोखरा, तालाब, बग़ाचे का तालाब ।

डिगर ( पु० ) मोटा और छोटी लकड़ी जो नटखट गाय या भैंस के गले में बाँधी जाती है ।

डिंगल ( पु० ) वह भाषा जिसमें राजपूताने के चारण कविता करते हैं, ( वि० ) घृणित, नीच ।

डिटार ( वि० ) प्रत्यक्ष, आँखों के सामने, आँखों-वाला ।

डिटियार ( वि० ) आँखवाला ।

डिटोना ( पु० ) काजल का टीका जो बच्चों को लगाया जाता है ।

डिडिम ( डिडि ऐसा शब्द, मि=फेंकना अर्थात् करना या निकालना ) डमरू, डोल, दुगाङ्गी, मनादी, एक पेड़ का नाम, करंदा ।

डिडिर ( पु० ) समुद्र का फेन, समुद्र का भाग ।

डिथ ( पु० ) काठ का बना हाथो, विशेष लक्ष्यों-वाला पुरुष ।

डिपार्टमेंट ( पु० ) मुहकमा, सरिरता, विभाग, प्रकरण ।

डिबिया ( स्त्री० ) छोटा डिब्बा, डिब्बी ।

डिब्बा ( पु० ) बड़ा डिबिया, ढब्बा ।

डिभ ( पु० ) संग्राम, पाखंड, पाखंडी, प्रलय ।

डिभगना ( कि० स० ) वश में करना, मोहित करना ।

डिम ( पु० ) संग्राम, प्रलय, दृश्य-काव्य का एक भेद ।

डिमडिमी ( स्त्री० ) बाजा-विशेष ।

डिमी आफ्रिशियल ( वि० ) आधा सरकारी और आधा निज का लेख जिसमें आधा महसूल देना पड़ता है ।

डिउ ( पु० ) पाखंड, ढाका, लूटपाट, बे-हथियार की लड़ाई, अंड, फुफुस, रेडवृक्ष, हलचल, व्याकुलता की प्रकार ।

डिबिका ( स्त्री० ) मतवाली स्त्री, ओपधि-विशेष ।

डिभ ( पु० ) पाखंड, जवान पशु, शिशु, बालक, मृत्यु, अनाड़ी, गर्भ, अज्ञान ।

डिला ( पु० ) घास-विशेष, मोथा, यह ओपधि के काम में भी आती है ।

डिल्ला ( पु० ) छंद-विशेष, बैल के कंधे का कूबड़ ।

डिस्ट्रिक्ट ( पु० ) ज़िला, मंड, विभाग ।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड ( डिस्ट्रिक्ट=जिला वा मंड, बोर्ड=कमेटी ) ( पु० ) ज़िला की कमेटी, मंडसभा ।

डिहरी ( स्त्री० ) अन्न रखने का बड़ा पात्र, कोठा, अन्न रखने का मिट्टी का बर्तन ।

डींग ( स्त्री० ) बड़ाई, घमंड, शंका, अहंकार, अभिमान, दर्प ।

डींग मारना ( बोल० ) शंका करना, घमंड करना, बड़ाई करना, बड़ा बोल बोलना ।

डीठ ( सं० दृष्टि ) ( स्त्री० ) ताक, दीठ, नज़र, दृष्टि, देखना ।

डीठर्यदी ( बोल० ) जानू से नज़रबंद हो जाना, नज़र-बंदी, इंद्रजाल, नटमाया ।

डीन ( पु० ) पक्षी की गति, उड़ान ।

डीमडाम ( पु० ) टीमटीम, शृंगार, सजावट, गेंठ ।

डील ( पु० ) शरीर, देह, आकार ।

डीह ( पु० ) पूर्व-पुरुषों के रहने की भूमि, गाँव, बस्ती, ग्राम-देवता ।

डकरिया ( स्त्री० ) बुढ़िया, वृद्धा स्त्री ।

डुकियाना ( कि० स० ) घूसी मारना, पीटना, मारना ।

डुगडुगाना ( कि० स० ) डुग्गी बजाना ।

डुग्गी ( स्त्री० ) ढोंडी, एक बाजे का नाम ।

डुंग ( पु० ) टीखा, पहाड़ी, ऊँचा स्थान ।

डुंड ( पु० ) सूखा पेड़, शाखा और पत्र-रहित पेड़ ।

डुवकी ( स्त्री० ) चुभकी, गोता, डूब, जल में पैठना, बुड़की ।

डुयाना } ( कि० स० ) डुबोना, गोता खिलाना,  
डुयाना }

डुवकी देना, उजाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना ।

डुमरी, डूमर ( सं० उडुवर ) ( पु० ) गूलर का वृक्ष ।

डुगियाना ( सं० डोर ) ( कि० स० ) बागडोर हाथ में लेकर घोड़े को खाली ले चलना “कोतख संग जाहि डोरिआये”--गो० तु० दा० ।

डुलाना, डोलाना ( सं० दोलन, दल=कुताना ) ( कि० स० ) हिलाना, कुलाना ।

डुंग ( पु० ) टीखा, पहाड़ी, पर्वत ।

डुगरी ( स्त्री० ) छोटी पहाड़ी ।

डुंगा ( पु० ) चम्मच, डोंगा, रस्से का फंदा ।

डुंडा ( वि० ) एक सींग का बैल, अभूषण-रहित, हथकटा ।

डुवना ( कि० अ० ) डुवकी मारना, गोता खाना, बोरना, बुड़ना, पानी में मग्न होना, अस्त होना, बैठ जाना, उजड़ना, बरबाद होना, नष्ट होना, लय हाँ जाना, मग्न हो जाना, लग जाना ( जैसे किसी काम अथवा पढ़ने आदि में ), दिल डुबना ( बोल० ) मूर्च्छित होना, अचेत होना ।

डेउड़ी ( स्त्री० ) फाटक, दरवाज़ा, पोर, दहलीज ।

डेग ( पु० ) पद, पग ।

डेठी ( स्त्री० ) बंडी, नाज़ ।

डेड़हा ( पु० ) पानों का साँप ।

डेढ़ ( वि० ) एक और आधा ।

डेड़गत ( पु० ) एक तरह का नाच ।

डेड़पाय ( वि० ) पाव और आधापाव, छः छटाँक ।

डेड़पावा ( पु० ) डेढ़ पाव की तौल ।

डेढ़ी ( स्त्री० ) उधार देने की एक प्रथा; मूल से डेढ़ गुना अधिक देने पर उधार देना ।

टेरा ( पु० ) बासा, घर, तंबू, खीमा ( वि० ) भेंगा, टेढ़ा देखनेवाला ।

डेल, डेला ( पु० ) देखा, लोंदा, टुकड़ा, उल्लू, पक्षी,  
( स्त्री० ) रबी की क्रमल के लिये जोत कर छोड़ी  
हुई ज़मीन ।

डेवढ़ ( पु० ) क्रम, सिलमिला ।

डेवड़ा ( वि० ) डेदगुना ।

( स्त्री० ) उसारा, दालान, डेवड़ीदार=द्वार-  
पाल ।

डेन ( सं० डयन, डी=उडना ) ( पु० ) पाँख, पंख, पखेरू  
का पर ।

डोई ( स्त्री० ) काट की मूठ की कलछी ।

डोकरा ( पु० ) बुड़ड़ा, बड़ा ।

डोकगी ( स्त्री० ) बुढ़िया, वृद्धा ।

डोंकना ( क्रि० प्र० ) थोकरना, वमन करना, उलटी करना ।

डोंगा ( पु० ) उड़प, पल्लव, छोटी नाव, कटरा ।

डोंगी ( स्त्री० ) छोटी नाव, कछड़ी ।

डोंडी ( स्त्री० ) दिंदोरा, मनादी ।

डोव ( डवना ) ( पु० ) डूब, सोता, डूबकी, कपड़े को रंग  
में डुबोना ।

डोव देना ( बोल० ) कपड़े को रंग में डुबोना ।

डोम ( पु० ) एक नीच जाति, मुसलमान-जाति के लोग  
जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियों ही के सामने गानी  
और नाचती हैं और मर्द गवैया और बजंत्री होते हैं ।

डोमड़ा ( पु० ) डोम, अत्यंत नीच जातिवाला ।

डोमनी ( स्त्री० ) डोम की स्त्री ।

डोर ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी, जेवड़ी, सुतली ।

डोरा ( पु० ) तागा, धागा, तार, सुत, लीक, लकीर,  
तखवार की धार; आँख का डोरा=आँख में लोह  
की लाल-लाल लकीर या चिह्न ।

डोरा डालना ( मुहा० ) वश करना, प्रेम के वश करना,  
आल फेंकना, मृत्रपान करना ।

डोरिया ( पु० ) एक तरह का कपड़ा ।

डोरियाना ( क्रि० सं० ) बेचल जगाम से धीरे की ले  
जाना, डोर से बाँधना, आगे-आगे चलना ।

डोरी ( स्त्री० ) रस्सी, डोर, जेवड़ी, सुतली, पानी खींचने  
की डोर ।

डोरी खींचना ( मुहा० ) आकर्षण करना, स्मरण करके  
बुलाना ।

डोरी छोड़ना ( मुहा० ) उपेक्षा करना, असावधान  
होना ।

डोल ( पु० ) पानी निकासने का जोहे या चमड़े का  
बरतन, पलना ।

डोलची ( स्त्री० ) चमड़े या केनवस का छोटा डोल ।

डोलडाल ( पु० ) चालफेर, पाखाने जाना ।

डोलना ( सं० दोलन, दुल्=डोलना ) ( क्रि० प्र० ) हिलना,  
झुलना, फिरना, भटकना ।

डोला ( सं० दोल, दुल्=झूलना ) ( पु० ) एक तरह की  
पालकी, नीचे घराने की स्त्री जो बड़े राजा को  
व्याही जानी है और इस रानी का दर्जा बराबर  
घराने की रानियों से नीचा होता है ।

डोला देना ( बोल० ) शूद्र लोगों की बेटो जब राँड़ हो  
जाती है तब वे अपनी जाति में बेटो को दूसरे पति  
को दे देते हैं; इसे डोला देना कहते हैं, लक्ष्मी  
व्याह देना ।

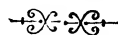
डोली ( सं० दोला ) ( स्त्री० ) चौपाला, दोला, स्त्रियों  
की पालकी ।

डोंगा ( पु० ) मंच, मचान, ऊँचा आसन ।

डोंड़ी ( स्त्री० ) मनादी, दिंदोरा ।

डोढ़ी ( स्त्री० ) डेवड़ा, उसारा, ( वि० ) डेदगुनी, ड्योड़ी,  
गाने में ऊँचा स्वर ।

डौल ( पु० ) प्रकार, रीति, ढब, भौति, रूप, आकृति ।



ढ

ढ ( पु० ) बड़ा डोल, ध्वनि, चौदहवाँ स्थंजन, यह भी  
मूर्धन्य है, कुत्ता, कुत्ते की पूँछ, साँप ।

ढई देना ( क्रि० प्र० ) धरना देना, भय दिखाकर कार्य  
सिद्ध करना ।

ढका ( पु० ) तौल-विशेष, बटखरा, बाँट ।

ढकना ( क्रि० सं० ) ढाँपना, ढपना, तोपना, मूँदना,  
बंद करना, छिपाना, बचाना, मढ़ना, छाना, ( पु० )  
ढकने की चीज़ ।

ढकनी ( स्त्री० ) चपनी, ढकने की चीज़, सरपोश ।

ढका ( पु० ) तीन सेरा बाँट, घाट, बड़ा डोल, धक्का, टक्कर ।

ढकार ( स्त्री० ) ढकार, 'ढ' अक्षर ।  
 ढकेल ( पु० ) रेज, टेज, पेज, धका ।  
 ढकेलना ( क्रि० स० ) टेलना, रेलना, पेलना ।  
 ढकेल ( पु० ) ढकेलनेवाला, पेलनेवाला, हटा देनेवाला ।  
 ढकोसना ( क्रि० स० ) एक साँस में पी जाना ।  
 ढकोसला ( पु० ) पाम्बड, आडंबर, मिथ्याज्ञान, कपट-  
 व्यवहार ।  
 ढकन ( पु० ) ढकना, लुकावन, छिपावन ।  
 ढका ( पु० ) बड़ा ढोल, डंका ।  
 ढंग ( पु० ) चलन, रीति, प्रकार, डोल, चाल, लक्षण ।  
 ढटिया ( स्त्री० ) बागडोर, लगाम-विशेष ।  
 ढट्टा ( पु० ) डंठल, ज्वार, जुहार आदि का सूखा डंठल ।  
 ढट्टा ( स्त्री० ) दाढ़ी बांधने का कपड़ा ।  
 ढड्काँवा ( पु० ) जंगली कौवा ।  
 ढड्वा ( पु० ) मैना की जाति का पक्षी ।  
 ढड्वा ( पु० ) बहुत बड़ा, बेहंगा, लंबा छाँचा, आडंबर ।  
 ढड्वा ( स्त्री० ) बुढ़िया, चरखी, एक पक्षी ।  
 ढंढोरना ( क्रि० प्र० ) खोजना, ढूँढ़ना, पता लगाना ।  
 ढंढोरा ( सं० ढंढन, ढंढ=खोजना ) ( पु० ) ढुगढुगी, डोंडी,  
 मनाड़ी ।  
 ढनमनाना ( क्रि० ) लुटकना, गिरना, उगमगाना,  
 काँपना ।  
 ढपढपाना ( क्रि० म० ) ढोल पीटना, ( जंगल लड़के  
 करते हैं ) ।  
 ढपना ( क्रि० प्र० ) ढक जाना, छिपना, लुकना, ( पु० )  
 ढकना, ढकने की चीज़ ।  
 ढपली ( स्त्री० ) छोटी डफ, डफली ।  
 ढप्पु ( वि० ) बहुत बड़ा ।  
 ढफ ( पु० ) बड़ी खँजड़ी ।  
 ढव ( पु० ) डोल, चाल, रीति, रूप, बनावट, गठन,  
 अकल ।  
 ढवरा ( वि० ) गँदला, मैला, कीचड़ ।  
 ढवीला ( वि० ) चालाक, चतुर, सुगठित ।  
 ढवुआ ( पु० ) पैसा, ताम्रमुद्रा, गोरखपुरो पैसा, मचान  
 के ऊपर का छप्पर ।  
 ढमढम ( पु० ) ढोल या नगारे का शब्द ।  
 ढमलाना ( क्रि० म० ) गिराना, लुटकाना ।  
 ढयना ( क्रि० प्र० ) ध्वस्त होना, नष्ट होना, उड़ना ।

ढरक ( स्त्री० ) ढालू, लुटकाव, नीचे की ओर झुकी  
 हुई भूमि ।  
 ढरकना ( क्रि० प्र० ) गिरकर बहना, ढलना ।  
 ढरका ( पु० ) आँख का एक रोग, बल्लूओं को मट्टा  
 आदि पिलाने का बॉस का पात्र-विशेष ।  
 ढरनि ( स्त्री० ) गिराव, पड़ाव, पतन, झुकाव, दयालुता ।  
 ढरहरना ( क्रि० प्र० ) हटना, खिसकना, दूर हटना ।  
 ढरहरा ( पु० ) ढालू जमीन ।  
 ढर्रा ( पु० ) डंग, स्वभाव, मार्ग, रास्ता, आदत ।  
 ढलकना ( क्रि० प्र० ) टुलकना, बह जाना, उगरना,  
 छलकना ।  
 ढलना ( क्रि० प्र० ) साँचे में पिघलना ( जैसे धातु ),  
 ढलकना, छलकना, लोटना, लुटकना, उगरना,  
 झुकना, नमना, दिन ढलना, ( बोल० ) दिन घटना,  
 दिन का बीतना, वृद्ध होना ।  
 ढलती फिरती दुर्ध ( बोल० ) संसार के कामों की  
 बदलने योग्य या अस्थिर दशा, संसार के कामों में  
 हेराफेरी ।  
 ढलमलाना ( क्रि० प्र० ) उगमगाना, काँपना ।  
 ढलवा ( पु० ) ढालकर बनाया हुआ बतेन, उतार ।  
 ढलाना ( क्रि० म० ) साँचे में ढालना, बनाना ।  
 ढलन ( ढाल ) ( पु० ) ढाल-नलवार बाँधनेवाला,  
 गोइरत ।  
 ढधाना ( क्रि० स० ) गिरवाना, ढहाना, खसवाना,  
 उजड़वाना, गिरा देना, जड़ से उखाड़ ढालना ।  
 ढहना ( क्रि० प्र० ) मकान आदि का गिरना, नष्ट होना ।  
 ढहरी ( स्त्री० ) दरवाज़ा, देहरी ।  
 ढाई ( सं० सार्द्धद्वय ) ( वि० ) अर्धाई, दो और आधा ।  
 ढाक ( पु० ) पलाशवृक्ष, तेज, प्रताप, शुहरत, शोहरा ।  
 ढाक के तीन पात ( मुहा० ) सदा एक ही अवस्था में  
 रहना, सदा दुःख भोगना ।  
 ढाँकना ( क्रि० स० ) ढाँपना, ढकना, छिपाना, बंद  
 कर देना ।  
 ढाँग ( स्त्री० ) कदला, शिखर, अंग, पहाड़ की चोटी  
 ढाँचा ( पु० ) साँचा, डोल, घर, ठाठ ।  
 ढाटा ( पु० ) दुपट्टा जो दाढ़ी और कानों पर बाँधा  
 जाता है, बड़ी पगड़ी जैसे मारवाड़ और उदयपुर  
 आदि राजपूताने के लोग बाँधा करते हैं ।

ढाड़स } ( सं० दाढ़ी, दड़=कठोर या स्थिर ) ( स्त्री० )  
 ढाड़स } मन की दृढ़ता, साहस, भरोसा, दिलासा,  
 ढारस } धैर्य, धीरज, शूरता, हिम्मत ।

ढाड़स देना ( भोल० ) दिलासा देना, हिम्मत बँधाना ।

ढाड़स बँधाना ( भोल० ) भरोसा देना, साहस देना,

धैर्य देना, हियाव कराना ।

ढाड़िन ( स्त्री० ) ढाड़ की स्त्री ।

ढाड़ी ( पु० ) गाने-बजानेवाला, वजंत्री, कृशाल ।

ढाना } ( क्रि० म० ) गिराना, उजाड़ना, नोव से  
 ढहाना } उखाड़ डालना ।

ढापना ( क्रि० स० ) छिपाना, ढाकना, बंद करना ।

ढायर ( वि० ) मेला, गँदला, गहरा, जलमय ।

ढावा ( पु० ) जाज, ओरी, ओलती, बरांडा, भोज-  
 नाश्रम ।

ढामक ( पु० ) ढोल आदि बाजे का शब्द, ढोल ।

ढार ( स्त्री० ) तरीका, भाँति, प्रकार, भेद, ढाल, ढाँचा,  
 ढंग, बनावट, गठन, गढ़न ।

ढारना ( क्रि० स० ) पानी गिराना, एक वर्तन से दूसरे  
 वर्तन में पानी उँडेजना, पूजन में जल ढारने की  
 क्रिया ।

ढारस ( पु० ) ढाड़स, आशवासन ।

ढारी ( स्त्री० ) ढलकाव, ढार, ढाल, ( क्रि० स० )  
 ढलका दी ।

ढाल ( पु० ) फरी, उतार, रोक, ढलाव, झुकाव, ( स्त्री० )  
 तलवार के वार रोकने का अस्त्र ।

ढालना ( क्रि० स० ) साँचे में उतारना, धातु को साँचे  
 में पिघलाना, बहाना, बिगाड़ना ।

ढालना वाँतल ( मुहा० ) खूब शराब पीना ।

ढालवाँ ( वि० ) उतार, ढाल, ढाला हुआ, साँचे में  
 ढला हुआ ( जैसे धातु ) ।

ढालू ( वि० ) उतार, ढलवाँ, बिगाड़ ।

ढास ( पु० ) विश्वासघाती, ठग, डाकू ।

ढासना ( क्रि० अ० ) खाँसना, ( पु० ) तकिया, उड़कन ।

ढाँसना ( क्रि० अ० ) दोष देना, कलंक लगाना, अपवाद  
 करना ।

ढाहा ( पु० ) नदी का ऊँचा किनारा, करारा ।

ढिग ( सं० दिक्=दिशा ) ( स्त्री० ) तरफ, ओर, दिशा,  
 ( क्रि० वि० ) पास, समीप, नगीच, निकट ।

ढिठाई ( सं० धृष्टता ) ( स्त्री० ) मगराई, मचलाई,  
 गुस्ताखी, चंचलता, निर्लज्जता, साहस, प्रगल्भता ।

ढिठोरा ( पु० ) डगडुगिया, मनादो, डुग्गी ।

ढिवका ( पु० ) गुमड़ा, गिलटी, फोड़े का धाव ।

ढिवरी ( स्त्री० ) रोशनी जलाने की डिबिया ।

ढिमका ( सर्व० ) अमुक, फलाना, फलौ ।

ढिमढिमी ( स्त्री० ) डमरू, खँजड़ी ।

ढिल्लड़ ( वि० ) सुस्त, आलसी, लापवा ।

ढिसरना ( क्रि० अ० ) सरकना, खिसकना, फिसलना,  
 झुकना, प्रवृत्त होना ।

ढोंगर ( पु० ) उपपत्ति, जाट, हठाकटा, जड़ व्यक्ति ।

ढाँठ } ( सं० धृष्ट ) ( वि० ) मगरा, मचला, साहसी,  
 ढीठा } निर्लज्ज, मिलान-जुलान, वीर, निडर, प्रगल्भ,  
 गुरताय ।

ढील ( स्त्री० ) ढिलाई, आसक्त, सुस्ती, अचेती, देरी,  
 देर, विलंब ।

ढील देना ( मुहा० ) ध्यान न देना, स्थगित करना,  
 टाजना, टरकाना ।

ढीलना ( क्रि० स० ) शिथिल करना, ढीला करना, छोड़  
 देना, उपेक्षा करना, विलंब करना, ध्यान न देना ।

ढीला ( वि० ) विना कसा हुआ, छुटा, शिथिल, धीमा,  
 आलसी, सुस्त, अचेत, मंद ।

ढीहा ( पु० ) ढोला, डूँगर, खंडल, पहाड़ी ।

ढुकना ( क्रि० अ० ) भीतर जाना, घुसना, प्रवेश  
 करना, शामिल होना, मिल जाना, झुकना, सिर  
 झुकाना ।

ढुकी ( स्त्री० ) पीछा करना, ताक, किसी के चरित्र का  
 गुप्त अनुसंधान करना ।

ढुनमुनिया ( स्त्री० ) बच्चों का वह खेल जिसमें बच्चे  
 लुढ़कते हैं, कजली गाने का एक ढंग, जिसमें श्रियाँ  
 धीरा बाँध कर गाती हैं ।

ढुरकना ( क्रि० अ० ) लुढ़कना, खिसकना, गिरना-  
 पड़ना ।

ढुरना ( क्रि० अ० ) नगरे से चलना, नाचना, कबूतर  
 का चलना, बहना, आना-जाना ।

ढुरहुगी ( स्त्री० ) इधर-उधर जाना, लुढ़कना ।

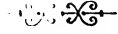
ढुराना ( क्रि० स० ) हिलाना, ढुलाना, नचाना, चलाना,  
 पलना ढुलाना, झुकाना ।



## ए

ए ( अक्ष=जाना ) ( पु० ) बिंदुदेव, भूषण, गुणरहित,  
निर्णय, ज्ञान, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अस्त्र,  
उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण, त्रिगुणाकर,

व्यंजन का पंद्रहवाँ अक्षर, यह मूर्द्धन्य है ।  
रागण ( पु० ) छंद-शास्त्र का एक मात्रिक गण-विशेष  
नगण, इसमें दोनों अक्षरों की मात्रा ह्रस्व होती है ।



त ( तक्ष=सहना या हँसना ) ( पु० ) चोर, मलेच्छ, पूँछ,  
योद्धा, सुमन, बौद्ध, रत्न, पुण्य, अनृत, तीव्र,  
कुटिल, तैरना, सोझहवाँ व्यंजन; यह दंत्य है ।

तअल्लुक ( पु० ) रिश्ता, संबंध, लगाव ।  
तअल्लुका ( पु० ) जमींदारों का समूचा भाग, इलाका ।  
तअल्लुकेंदार ( पु० ) जमींदार ।  
तअस्सुव ( पु० ) कटरपन ।

तई ( री० ) एक प्रकार की लोहे की कड़ाही ।  
तई ( सं० स्थान ) ( क्रि० वि० ) तक, तलक, लग,  
लौ, पर्यंत, को, लिये ।

तऊ ( अर्थ० ) ती भी, तथापि, तिस पर भी, तब भी ।  
तक ( अर्थ० ) तलक, लौ, तई, पर्यंत, ( स्त्री० ) लकड़ी  
या भूसा तोलने की तराजू ।

तक्रदीर ( स्त्री० ) नसीब, भाग्य, प्रारब्ध, क्रिस्मत ।  
तकना ( क्रि० म० ) ताक लगाना, देखा करना, टकटक  
देखना, चितवनना, शरण लेना ।

तकरार ( री० ) झगड़ा, टंटा, लड़ाई, क्रसल काटने के  
बाद खाद देकर जोता जानेवाला खेत, कविता में  
विषय का दुहराना ।

तकरार ( स्त्री० ) बहस, भाषण, मुक्तगु, वार्तालाप ।  
तकला ( सं० तर्क, कृत्=काटना ) ( पु० ) तेकुवा, फिरकी,  
कुतवा, सूत कातने का यंत्र ।

तकवाह ( पु० ) पहरेवाला, ताकनेवाला, रक्षक ।  
तकसीम ( स्त्री० ) भाग, बँटाई, विभक्त करने का कार्य ।  
तकाई ( स्त्री० ) ताकने की मजूरी, रखवाली ।  
तकाज़ा ( पु० ) तगादा, माँग, प्रेरणा, आवश्यकता ।  
तकान ( पु० ) हिलाव, भावभंगी, ढव, थकाव, परिश्रम,  
कष्ट-साध्य ।

तकावी ( स्त्री० ) दरिद्र रूपकों को राजा या जमींदार  
की ओर से मिली हुई अकाब या ऐसे ही मौकों

पर सहायता, जो पीछे ऋणरूप में वसूल कर ली  
जाती है ।

तकार ( पु० ) दही मथने का दंड, रई ।  
तकि ( अर्थ० ) ताककर, लचककर, देखकर ।  
तकिया ( स्त्री० ) सिर के नीचे रखने की कपड़े की बनी  
हुई रुईदार धैली, सिरहाना, यवन-साधुओं के रहने  
का एकांतस्थान ।

तकुआ ( पु० ) तकला, नोकदार सजाई ।  
तकैया ( पु० ) देखने या ताकनेवाला ।  
तक्र ( तक्ष=सहना, या तक्ष=जाना ) ( पु० ) छाछ, मट्टा,  
मही जिसमें चौथा हिस्सा पानी मिला हो ।  
तक्ष ( तक्ष=काटना या पतला करना ) ( पु० ) आच्छादन,  
कर्तन, काटना, चर्म, चित्रा-नक्षत्र ।

तक्षक ( तक्ष=काटना या पतला करना ) ( पु० ) लकड़ी  
काटनेवाला, बढ़ई, पाताल का एक बड़ा साँप, विश्व-  
कर्मा, सृष्टधार, एक वृक्ष का नाम ।

तक्षशिला ( स्त्री० ) पंजाब के एक प्राचीन नगर का नाम,  
जिसको यूनानी अपने इतिहास में 'Taxila'  
लिखते हैं, भरत के पुत्र की राजधानी, हाल में यह  
नगर रावलपिंडी के पास जमीन खोदकर निकाला  
गया है ।

तखमीना ( पु० ) अनुमान, अटकल ।  
तखरी ( स्त्री० ) तुला, तखड़ी, तराजू ।  
तखलिया ( पु० ) निर्जन स्थान, एकांतस्थान ।  
तख्मिहा ( वि० ) दो प्रकार की आँखोंवाला बेल ।  
तख्त ( पु० ) सिंहासन, राजाओं के बैठने की जगह,  
राज्यासन, बड़ी चौकी ।

तख्तताऊस ( पु० ) सुगंध बादशाह शाहजहाँ का बन-  
वाया हुआ एक बड़िया सिंहासन ।

तगड़ा ( वि० ) मजबूत, मोटा, बलिष्ठ, बलवान् ।

तगड़ी ( स्त्री० ) कर्धनी, कटि-सूत्र, तागड़ी, ( वि० )  
मोठी-नार्त्ता ।

तगण ( पु० ) छंद-शास्त्र का एक गण जिसमें प्रथम दो  
अक्षर दीर्घ और एक ह्रस्व हो ।

तगना ( कि० सं० ) सीया जाना, मिलाई की जाना ।

तगर ( पु० ) मरुआवृक्ष, सुगंधित काष्ठ, मैनफल ।

तगमा ( पु० ) तमसा, सम्मान में मिली चिह्न-विशेष ।

तंगा ( पु० ) दो पैसे, टका ।

तंगी ( स्त्री० ) शरीबी, संकीर्णता ।

तचना ( कि० अ० ) दुखा होना, संतप्त होना, गरम  
होना, तपना ।

तचा ( स्त्री० ) त्वचा, चमड़ा, चर्म, छाल ( कि० अ० )  
गर्म हुआ ।

तचाना ( कि० सं० ) जलाना, तपाना, फुलसाना, गर्म  
करना ।

तज ( सं० तज्ज ( पु० ) तेजपत्ते का तृक्ष अथवा उसकी  
छाल, एक सुगंधित श्रापधि ।

तजन ( पु० ) त्याग, परित्याग, कोड़ा, चाबुक, पशु  
हॉकने का दंड ।

तजना } ( सं० तजन्=छोड़ना ) ( कि० सं० ) छोड़ना,  
त्यजना } त्यागना, त्याग करना, छोड़ देना, संबंध छोड़ना ।

तज्जस्वत ( पु० ) तज्जस्वा, आज्ञामायश, विचार, अनु-  
मान, अनुभव, यथार्थ ज्ञान ।

तजर्थाज्ञ ( स्त्री० ) कंसला, निष्प्रेय, प्रबंध, उपाय, राय,  
सम्मति, प्रस्ताव, विचार ।

तज्ज ( तद्+ज्ञ, ज्ञ=ज्ञानना ) ( पु० ) तत्त्ववेत्ता, पंडित ।

तट ( तद्+ऊना होना ) ( पु० ) कछार, क्षेत्र, महादेव,  
प्रदेश, तार, किनारा, कड़ारा, ( कि० वि० ) निकट,  
पास, समीप ।

तटस्थ ( तद्+स्थ, स्थ=जानना ) ( वि० ) तौर पर रह-  
नेवाला, तार पर के, तारवासी, उदासीन, समाप-  
वर्ती, निरपेक्ष, संसुचित ।

तांटना ( स्त्री० ) नदा, नहर ।

तटी ( पु० ) कूल, किनारा, तटवाला, सेवक, ( स्त्री० )  
तराई, घाटी ।

तड़ ( पु० ) पड़, दड़, धड़ा, मारना, जल्था, टोलो,  
तड़-सेवा शब्द ।

तड़कना ( कि० अ० ) फटना, फूटना, टूटना, चटपटना ।

तड़का ( पु० ) भोर, बिहान, प्रभात, प्रातःकाल,  
भिनुसार, पौ, सबेरा ।

तड़के ( कि० वि० ) सबेरे, भोर के समय, पौ फटे ।

तड़प ( ) झपट, चमक, चटपट, भड़क ।

तड़पड़ा ( पु० ) वृष्टि होने का शब्द ।

तड़पदार ( वि० ) चमकीला, भड़कदार ।

तड़पना ( कि० अ० ) दुःख से छटपटाना, हाथ-पैर  
धुनना, तड़पना ।

तड़पाना ( कि० सं० ) दुःख देना, व्याकुल करना ।

तड़फ ( स्त्री० ) वेकली, व्याकुलता, धड़क, घबराहट,  
धड़धड़ाहट ।

तड़फड़ाना ( कि० अ० ) धड़कना, छटपटाना, व्याकुल  
होना, घबरा जाना, धकधकाना, तड़फना, तड़पना ।

तड़फड़ाहट ( स्त्री० ) धुकधुकी, धड़क ।

तड़फड़ई ( स्त्री० ) छटपटी, धुकधुकी ।

तड़ा ( पु० ) टापू, उपद्वीप, दीआव ।

तड़ाक ( वि० ) शीघ्र, तुरंत, भड़कीला, चटकीला ।

तड़ाका आहट, आवाज मारने का शब्द,  
( कि० वि० ) शीघ्र, झटपट, चटपट, तुरंत ।

तड़ाग ( तद्+पीटना या चमकना ) ( पु० ) तलाव,  
तालाब, सरवर, सरोवर, पोखरा, जलाशय ।

तड़ावान ( पु० ) ऊपर बैठे हुए हस्तिशुंड का आघात ।

तड़ाड़ा ( पु० ) जल की तीव्र धारा, तरेड़ा, तरखा ।

तड़ातड़ ( कि० वि० ) तड़तड़ शब्द-सहित ।

तड़ाया ( पु० ) छेलापन, चटक-मटक, रसिकता, तड़क-  
भड़क ।

तड़ाया ( पु० ) दर्, अभिमान, उपरी दिखावट, धोखा, छल ।

तड़ित् ( तद्+मिडाना, एक बादल का दूसरे बादल से )  
विजली, दामिनी, विद्युत्, बरक ।

तड़ित्वात् ( पु० ) मेघ, बादल ।

तड़ित्समाचार ( तड़ित्=तारवर्क, समाचार=हाल ) ( पु० )  
तारवर्क के समाचार, तार द्वारा वृत्तांत, बिजली की  
भाति शीघ्रता से फैलनेवाला समाचार ।

तड़ी ( स्त्री० ) हलका थप्पड़, चपत, धौल, धोखे से  
मारने की क्रिया, बहाना, होला ।

तंडक ( तद्+प्रक, तद्=भिडाना ) ( पु० ) मायावी,  
पाखंडी, समझ, संजन अर्थात् भारद्वाज पक्षा,  
खदरेचा, खद्रेचा, धनी, कड़ी, गृह ।



तंडुल ( तड्=पीटना या कूटना ) ( पु० ) चावल, कूटा हुआ धान ।

तंडुलिया ( स्त्री० ) चावल की बनी सामग्री ।

तटवीर ( स्त्री० ) युक्ति, तटवीर ।

तनारना ( क्रि० अ० ) गरम जल से धोना, धार देकर धोना, ततेरा देकर धोना ।

तनैया ( स्त्री० ) बरें, भिड़, ज़्यादा तेज़ मिर्च, ( वि० ) नीव, फुरतीला, तेज़, होशियार ।

तत्काल ( तत्=वट, काल=समय ) ( क्रि० वि० ) उसी दम, उसी समय, वही अथवा उसी क्षण, अभी, फौरन, शीघ्र, तुरंत ।

तत्क्षण ( तत्=वट, क्षण=समय ) ( क्रि० वि० ) उसी पल में, उसी समय, तुरंत, तत्काल, उसी क्षण ।

तत्ता ( सं० तप्त ) ( वि० ) गर्म, जलता हुआ, उष्ण, क्रोधी ।

तत्तार्द्ध ( स्त्री० ) गर्मी, ताप, गरमाहट ।

तत्तार्धे ( स्त्री० ) नाच की गति, नृत्य की बोली ।

तत्तार्थयो ( पु० ) दिक्षासा, धीरज, बीचबचाव, बहलाव ।

तत्पर ( तत्=वट, पर=लगा हुआ ) ( वि० ) किसी काम में लगा हुआ, उत्तमी, परिश्रम ।

तत्र ( तत्=वट ) ( क्रि० वि० ) वहाँ, तहाँ, उस जगह ।

तत्रभवान् ( पु० ) आज्ञावा, पूज्यवर, भद्रालु, मान्य ।

तत्त्व ( तत्=वट, त्व=भाव अर्थ में प्रत्यय, अर्थात् उभ परमेश्वर का ) ( पु० ) सार, मूल, यथार्थ, सत्य, आदि-कारण, पंचभूत ( जैसे मिट्टी, पानी, आग, हवा, आकाश ), परमात्मा, ब्रह्म, सार वस्तु, सांख्यशास्त्र में वर्णित प्रकृति आदि पचीस पदार्थ, सूक्ष्म ज्ञान, मूल व्यवस्था ।

तत्त्वज्ञान ( तत्त्व=ज्ञा या परमेश्वर का ज्ञान ) ( पु० ) ब्रह्म-ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परमार्थज्ञान, परमेश्वर का ज्ञान ।

तत्त्वतः ( अर्थ० ) ठीक-ठीक, यथार्थ, में इकट्ठा में ।

तत्त्वावधान ( पु० ) देखभाल, जाँच-पड़ताल ।

तत्थ्य ( पु० ) तथ्य, सत्य, निष्कपट, मिथ्या-रहित ।

तत्सम ( पु० ) वह शब्द जिसका हिंदी-भाषा में संस्कृत के समान व्यवहार होता हो, वैसा ही ।

तथा ( तत्=वट, धा प्रकार अर्थ में प्रत्यय ) ( क्रि० वि० ) उस प्रकार से, वैसा ही, उसी तरह से, वही, नैसा,

तिस प्रकार ।

तथापि ( तथा=तैसे, अपि=भी ) ( क्रि० वि० ) तो भी, तब भी, तिस पर भी ।

तथास्तु ( तथा=तैसे, अस्तु=हेवे, अयु=शेना ) ( क्रि० वि० ) वैसा ही हो, हों ।

तथ्यवादी ( वि० ) यथार्थ भाषण करनेवाला, सत्य-वक्ता, ज्ञानी ।

तद् ( सं० तदा ) ( क्रि० वि० ) तब, उस समय, फिर, इसके पीछे, उस दशा में ।

तदनंतर { ( तत्=उसके, अन्तर=पीछे ) ( क्रि० वि० ) तदुपरान्त } उसके पीछे, तिसके पीछे ।

तदपि ( तत्+अपि ) ( क्रि० वि० ) तब भी, तो भी, तथापि ।

तद्वीर ( सं० ) तरकीब, उपाय, प्रयत्न, सफलता का साधन ।

तदा { ( तत्=वट ) ( क्रि० वि० ) तब, तद्, तदानीम } उस समय ।

तद्व्युत्प ( पु० ) अलंकार-विशेष जिसमें अपना गुण त्याग के किसी अन्य वस्तु का गुण धारण किया जाय ।

तद्धित ( तत्+हित ) ( पु० ) उसका हित, दूसरे की भलाई, व्याकरण में संज्ञा से संज्ञा बनाए जाने की क्रिया है, जैसे विष्णु=वैष्णव, शिव=शैव, प्रत्यय-विशेष जिसे अंत में लगाने से शब्द बन जाता है ।

तद्भव ( पु० ) संस्कृत का अपभ्रंश रूप जो भाषा में व्यवहृत हो, जैसे हस्त का हाथ, अर्द्ध का आधा इत्यादि ।

तद्यपि ( अर्थ० ) तो भी, तथापि, तब भी ।

तन्नी ( सं० तदाहि ) ( क्रि० वि० ) तभी ।

तन ( सं० तन ) ( पु० ) शरीर, देह, काया, अंग, और, तरफ ।

तनक्रीड ( सं० ) पड़ताल, जाँच, खोज, वास्तविकता का ज्ञान, विचारणीय और विवादास्पद विषयों के प्रकट करने के कार्य को कचहरी में तनक्रीड कहते हैं ।

तनगना ( क्रि० अ० ) चिढ़ना, फटलाना, नाराज़ होना, जोर्धा होना ।

तनज्जैव ( स्त्री० ) एक प्रकार का मलमल-विशेष ।

तनज्जल ( स्त्री० ) अधोगत, अवनत ।

तनतनाना ( क्रि० अ० ) शान्त होना, दबदबा दिखाना, क्रोध दिखाना ।

तन तोड़ना ( पृ० ) अकड़ना, अँगड़ाई लेना ।

तन दिखाना ( पृ० ) प्रसंग करना, विषय करना ।

तन देना ( यो० ) ध्यान देना ।

तन मन वश करना ( पृ० ) इंद्रिय रोककर, अवयव और जी लगाकर ।

तनक ( सं० तनक, तन=तैलना ) ( वि० ) थोड़ा, अल्प, छोटा, ज़रा ।

तनना ( सं० तन=तैलना ) ( क्रि० स० ) फैलना, विस्तार देना, खिंचना, अकड़ना ।

तनय ( तन=तैलना, यन् का ) ( पृ० ) बेटा, पुत्र, संतान, औलाद, वंश वृद्धि करनेवाला ।

तनया ( तनया ) ( स्त्री० ) बेटो, कन्या ।

तनहा ( वि० ) अकेला, केवल, एकाकी ।

तना ( पृ० ) पेड़ का छड़ ।

तनाज़ा ( पृ० ) दुश्मनी, वैर, भगड़ा, अदावत ।

तनि ( क्रि० वि० ) तनिक, थोड़ा, टुक, ज़रा, छोटा, अल्प ।

तनिक ( वि० ) थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म ।

तनिया ( स्त्री० ) खँगोटी, कोपीन, कछुनी, जांधिया ।

तनी ( सं० तनय ) ( स्त्री० ) बेटो, अँगरेज का बंद ।

तनु } ( तन=तैलना ) ( पृ० ) शरीर, देह, तन,  
काया, अंग, तन पतला, थोड़ा, अल्प,  
तनू } सूक्ष्म ।

तनूज } ( तन=शरीर, जन्=पैदा होना ) ( पृ० ) बेटा,  
तनूज } पुत्र ।

तनुजा } ( तन=शरीर, जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० )  
तनुजाता } बेटो, लड़की ।  
तनूजा }

तनुता ( स्त्री० ) दुर्बलता, क्षीणता, छोटाई, लघुता ।

तनुत्र ( तन=शरीर, तन=तनाना ) ( पृ० ) कबूतर, बग़्तर ।

तनपात ( पृ० ) मृत्तु, मौत, शरीरांत ।

तनुरस् ( पृ० ) स्वेद, पसीना ।

तनुरुह ( तन=शरीर, रु=उगना ) ( पृ० ) बाल, केश, रोम ।

तंति ( तन=तैलना ) ( पृ० ) बतनेवाला, ज़लाहा, ताँती ।

तंतु ( तन=तैलना ) ( पृ० ) सूत, तागा, रेशा, तार, धागा, वंश, संतान ।

तंतुकीट ( तंतु=तागा, कीट=काँड़ा ) ( पृ० ) रेशम का कीड़ा, पाट-कीट ।

तंतुवाय ( तंतु=सूत, वै=तैलना या बतना ) ( पृ० ) बतनेवाला, ज़लाहा, ताँती, कोरी ।

तंत्र ( तन=तैलना ) ( पृ० ) एक शास्त्र का नाम जिसमें महादेव और पार्वती का संवाद है इसलिये नात्रिक लोगों के यही दोनों मुख्य देवता हैं, इस शास्त्र के बहुत से ग्रंथ मिलते हैं जैसे रुद्रयामल, मेरुतंत्र आदि । मंत्र-शास्त्र, मंत्र, मंत्र-यंत्र, टोना, टोटका, सिद्धांत, प्रमाण, प्रधान, वश, अधीन, अमल, काम ।

तंत्रि } ( पृ० ) निद्रा, नींद, उँघाई, ऊँघ,  
तंत्री } ( पृ० ) संपादक ।

तंद्रा ( तंद्रा=आलस करना या आलसी होना ) ( स्त्री० ) आलस, धकावट, धकान, श्रम, काहिली, सुस्ती ।

तंद्रालु ( तंद्रा ) ( वि० ) आलसी, सुस्त, निद्रालु ।

तन्मय ( पृ० ) तद्रूप, अभेद, उसी रूप का ।

तन्मात्र ( पृ० ) शब्द, रस, रूप, गंध, स्पर्श, उतना ही, जितना ही ।

तन्वी ( तन ) ( स्त्री० ) जिस स्त्री का शरीर पतला हो, कृशांगी ।

तप ( तप=तपना ) ( पृ० ) गरमी, उष्णता, गरमी की ऋतु, तपस्या, रियाज़त ।

तपत ( सं० तप ) ( स्त्री० ) गर्मी, ( वि० ) तत्ता, गर्म, तपा हुआ ।

तपतांशु ( पृ० ) किरण, रश्मि, सूर्य की किरणें ।

तपन ( तप=तपना ) ( पृ० ) सूर्य, एक नरक का नाम, गरमी, जलन, उष्णता, ग्रीष्म-ऋतु, गरमी की ऋतु । तपन-तनया ( स्त्री० ) यमुना-नदी, शमीवृक्ष, सूर्य-पुत्री ।

तपना ( सं० तपन ) ( क्रि० अ० ) गर्म होना, दहकना, भागवान् होना, तेजस्वी होना, ऐश्वर्यवान् होना ।

तपनी ( स्त्री० ) तापने का स्थान, कौड़ा, अलाव, तप, गोदावरी नदी, तपस्या की जगह, धूनी ।

तपलोक ( पृ० ) तपोलोक, एक लोक-विशेष, तपस्या करने का लोक ।

तपस्या (तपस्, तप=तप करना) (स्त्री०) तप, योग, काया को कष्ट देना, रियाज़त ।

तपस्वी (तपस्विन्, तपम्, तप=तप करना) (पु०) तपस्या करनेवाला, योगी, योग साधनेवाला, तापस, तपसी, रियाज़ी, मुनि, दीन, दयापात्र, धीकुशार, मछली-विशेष ।

तपा (पु०) पूजक, उप करनेवाला, तपस्वी, पूज्य ।

तपाना (तपना) (क्रि० स०) गर्म करना, तप्ता करना, गरमाना ।

तपास (पु०) अन्वेषण, खोज, संधान, ढूँढ़ ।

तपिश (स्त्री०) गर्मी, उष्णता, भूप की तेज़ी, अग्नि, ताप ।

तपी } (सं० तपस्वी) (पु०) तपस्या करनेवाला,  
तपसी } तपस्वी, योगी ।

तपु (पु०) तेज, अग्नि, दुरमन, शत्रु, गर्म, आदिभ्य ।  
तपेदिक (पु०) रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-रोग ।

तपोधन (तपम्=तप, धन=दौलत, अर्थात् जिनके तप दी धन है) (पु०) तपस्वी, तप करनेवाला, योगी, तपसी ।

तपोरति (पु०) तपस्वी, जिसकी तप में रति हो ।

तपोवन (तपम्=तपस्या, वन=जंगल) (पु०) तपस्या करने का वन, वह वन जिसमें योगी लोग तप करते हैं, एक नीर्थ का नाम ।

तपोनी (स्त्री०) तपस्या, तपनी, ठगों की एक रीति जिसमें किसी को लूट लेने के पश्चात् सब ठग मिल कर देवों की पूजा करते हैं और गुड़ चढ़ाकर आपस में प्रसाद बाँट लेते हैं ।

तप (तप=तपना) (पु०) गर्म, तपा हुआ, तप्ता, उष्ण, गर्मी अथवा पीड़ा अथवा मोच से जला हुआ, संतापित, पोजित ।

तप्तमुद्रा (पु०) शंख-चक्रादि से दागा हुआ चिह्न ।

तप्तरीह (स्त्री०) आनंद, हर्ष, खुशो, प्रसन्नता, मनो-रंजन, हास्य, हँस खने की क्रिया, सँवर, वायु-सेवन, थोड़ा घुमना, ताज़ापन ।

तप्तनील (स्त्री०) विस्तारपूर्वक, टोकायुक्त वर्णन, मूर्चा, विवरण, फेहरिस्त, द्योरा ।

तप्तायन (पु०) ऊँट, अंतर, भेद, दूरी ।

तप (सं० तदा) (क्रि० लि०) तप समय, उस समय, तदा, फिर, इसके पीछे, ऐसी दशा में ।

तपक (पु०) चाँदी आदि के तपक, परिशों की बाधा से बचने की पूजा, घोड़ों का रोग-विशेष, रक्त-विकार से उन्मत्त हुआ चकत्ता या दाग, चीड़ी और छिछली थाली ।

तपदील (वि०) बदला हुआ, जिसकी बदली हुई हो ।

तपाह (वि०) बरबाह, नष्ट-भ्रष्ट, चौपट ।

तपियत आना (पु०) किसी वस्तु की इच्छा करना ।

तपियत उलभना (पु०) जो घबराना, दिख का किसी प्रेमिका से फँस जाना ।

तपियत खराब होना (महा०) बीमार या तुम्बी होना ।

तपियत चाहना (पु०) जो चाहना ।

तपियत फड़कना (पु०) उन्माहित होना, उमंग उठना ।

तपियत फिरना (महा०) जो हटना ।

तपियत भरना (महा०) संतुष्ट होना, तसल्ली होना, तृप्त होना ।

तम (तम्=सताना या दुःख देना) (पु०) तमोगुण, अंधेरा, अंधकार, अज्ञान, राहु, अर्थ में प्रस्थय, मिश्रित ।

तमः (तम्=सताना या दुःख देना) (पु०) अंधेरा, अंधकार, तमोगुण, पाप, शोक, शोच, राहु ।

तमक (सं० तमः) (स्त्री०) घमंड, शेरी, मोश, अभिमान, क्रोध, गुस्से से मुँह लाल हो जाना, श्वास-रोग का एक भेद ।

तमकना (क्रि० य०) गुस्से से मुँह लाल हो जाना, बिमियाणा, क्रोध करना ।

तमगा (पु०) पदक, सम्मान-चिह्न, कुद हुआ ।

तमचुर (पु०) निशाचर, उल्लू, राक्षस, नमीचर ।

तमचुर (पु०) मुर्ग, कुकूट ।

तमत (वि०) आकांक्षी, इच्छुक, अभिलाषी ।

तमतमाना (क्रि० य०) लाल होना, झलझलाना, चमकना, मुँह लाल हो जाना, आवेश में आना ।

तमम (तम्=सताना या दुःख देना, या अंधेरा होना) (पु०) अंधेरा, तमोगुण, एक नरक का नाम, राहु ।

तमसा (तम्=चाहना) (स्त्री०) एक नदी का नाम ।

तमस्विनी (स्त्री०) हस्ते, रान, निशा ।

तमस्सुक (पु०) प्रामाणिक लेख, अष्टपत्र, एक प्रकार का प्रतिज्ञापत्र ।

तमहड़ी (सा०) तावे का छोटा वर्तन ।

तमादी (सी०) अवधि-समाप्ति, मियाद खत्म होना, याद का समय ख़त्म हो जाना ।

तमागि (तम=प्रेम, अग्नि=वेग) (पू०) सूर्य ।

तमाल (तम=प्रेम होना या चाहना) (पू०) एक वृक्ष-विशेष, जिसकी पत्तियाँ काली होती हैं, चंदन का टीका, तमाकू, मोरपंखी, काले कपड़े का पेड़ ।

तमाशखीनी (सी०) गेयाशी, बदकारी, दुष्कर्मा, टटोली, दिलगीबाजी ।

तमाशा (पू०) हवांपादक दृश्य, मनोरंजन करानेवाला खेल, मंला, नाटक, नाच-आनिशबाजी इत्यादि ।

तमि } (तम=प्रेम) (सी०) काली रात, रात्रि, रक्ती ।  
तमी }

तमिनाथ (पू०) चंद्रमा, शशि ।

तमिस्त्र (पू०) क्रोध, गुस्सा, अंधेरा, नरक-विशेष, अंधकारमय स्थान ।

तमिस्त्रपन्न (पू०) कृष्णपक्ष, अंधेरा पक्ष ।

तमिस्त्रा (सी०) अंधेरी रात ।

तमी (सी०) निशा, काली रात, हल्दी ।

तमीचर (तमी=रात, चर=चलनेवाला, या मानेवाला, चर=चलना, या घूमना) (पू०) राक्षस, निशाचर, चोर, अविचारी, लंपट ।

तमीज़ (सी०) बिक, बुद्धि, पहचान, शिष्टता, अदब ।

तमीश (पू०) चांद ।

तमोगुण (तमग=प्रेम, गुण=गुण) तीसरा गुण, तीन गुणों में से एक गुण, क्रोध, ग़ज़ब, गुस्सा, मोह, अज्ञान आदि ।

तमोदन (तमग+दन=दल को दान अर्पित हो गया) (पू०) सूर्य, चंद्र, अग्नि, दीप, गुरु, ज्ञानी, विष्णु ।

तमोर (पू०) तांबड़ा, पान, विवाह की रस्म ।

तमोल (पू०) पान, नागरबेल की पत्ती ।

तंबू (पू०) बेरा, पाल, रावटी, झोलदारी, कपड़फोट ।

तंबूरा (तारों तंबुरह) (पू०) एक बाजे का नाम, तानपुरा, तीन तार की वीन ।

तंबोली (तंबू=तांबरा, तान=पान) (पू०) पान बेचनेवाला ।

तय (वि०) निश्चय, सिद्ध, मुक़रर, निपटारा हुआ, फैसल, निर्णय, पूरा, समाप्त ।

तयना (क्रि० अ०) गरम होना, तपना, दुखी होना ।

तयार (वि०) तय्यर, कटिबद्ध, तैयार ।

तर } (सं० तल, तल=ठहरना) (क्रि० वि०) नीचे, तले ।  
तरे }

तर (वि०) अधिक अर्थ में प्रयुग, जैसे श्रेष्ठतर, गीला, शीतल, भरापुरा, मालदार, (पू०) तरना, अग्नि, गति, नाव की उतराई, मार्ग ।

तरई (सं० तारा) (सी०) तारा, तरैया, नक्षत्र ।

तरक (पू०) विचार, उक्ति, उद्घापोह, चतुर्थाई का वचन, अइचन, भूल-चूक, (सी०) तइक-भइक, त्याग ।

तरकना (क्रि० अ०) कूदना, विचारना, सोच-विचार करना, उछलना, विस्मित होना, झपटना ।

तरकस (पू०) तूनीर, तूखीर, बाण रखने का भाषा, चोंगा, श्रोण ।

तरका (पू०) लड़का, मृत मनुष्य की संपत्ति ।

तरकारी (सी०) भाजी, साग ।

तरकि (क्रि० अ०) तर्क करके, हुज्जत करके, टूट के ।

तरकी (सी०) कर्णफूल, कान में पहनने का आभूषण-विशेष ।

तरकुल (पू०) ताड़ का पेड़ ।

तरमा (सी०) प्रबल प्रवाह, तेज बहाव, जल का अधिक वेग ।

तरगुलिया (सी०) अनाज भरने का एक छिछला वर्तन ।

तरंग (तू=पार होना) (सी०) लहर, डेऊ, हिलकोरा, उमंग, ललक, मौज ।

तरंगिणी (तरंग) (सी०) नदी ।

तरंगी (तरंग) (वि०) लहरी, चंचल मनवाला, उछाहवाला, तरल ।

तरक़ुट (सी०) पानी या और किसी द्रव पदार्थ के नीचे बैठता हुआ मैल ।

तरछुन (सी०) गाद, पानी के नीचे बैठता हुआ मैल ।

तरछा (पू०) तेज़ियों का गोबर इकट्ठा करने का स्थान-विशेष ।

तरछाना (क्रि० म०) तिरछो आँख से संकेत करना, तलछट निकालना ।

तरज (पू०) तर्ज, रीति, प्रकार, रंग, डपट, डाँट, तर्जन, गाने की रीति ।

तरजत (क्रि० स०) तर्जना, तड़पता है, डौंटा है।  
 तरजन (पु०) डौंटा-डपट, गर्जन, तर्जन।  
 तरजना (क्रि० स०) फटकारना, डौंटा बतलाना।  
 तरजनी (स्त्री०) अँगूठे के समीप की उँगली, भय, डर।  
 तरजुई (स्त्री०) छोटी तराजू।  
 तरजुमा (पु०) अनुवाद, उल्था, भाषांतर।  
 तरण (तृ=पार होना) (पु०) तैरना, पार होना, उद्धार,  
 बचाव, डोंगा, नाव, स्वर्ग, (वि०) पार होनेवाला,  
 तरनेवाला, मुक्ति पानेवाला।  
 तरणी (तृ=पार होना) (पु०) सूर्य, किरण (स्त्री०)  
 नाव, नौका।  
 तरना (सं० तरण) (क्रि० स०) पार होना, मुक्त  
 होना, छुटकारा पाना, उद्धार होना।  
 तरपत (पु०) सुखीता, आराम, चैन, मुख।  
 तरपन (पु०) तर्पण, वृत्ति, मंत्रों के द्वारा पितरों को  
 जल देना।  
 तरफना (क्रि० अ०) तड़पना, व्याकुल होना।  
 तरवूज (फा० तरवूत) (पु०) एक फल का नाम।  
 तरल (तृ=पार होना) (वि०) चंचल, तरंगी, अस्थिर,  
 ओछा, पतला, तीक्ष्ण, (पु०) हार, हार के बीच का  
 मणि।  
 तरला (स्त्री०) मधु-मक्षिका, बाँस-विशेष, (वि०)  
 सबसे नीचेवाली, चंचला।  
 तरलाई (स्त्री०) तरलता, चंचलता, द्रव्य।  
 तरव (सं० तरु) (पु०) वृक्ष, पेड़, गाछ।  
 तरवर (सं० तरुवर, तरु=पेड़, वर=वड़ा) (पु०) बड़ा  
 वृक्ष, उपयोगी वृक्ष।  
 तरवरिया (तरवार) (पु०) तलवार रखनेवाला,  
 खड्गधारी, छोटी तलवार।  
 तरवार } (सं० तरवारि, तर चाल) बैरियों की } तृ=पार  
 तलवार } होना, और तृ=रोकना, अर्थात् जो बैरियों की  
 चाल को रोक देता है (स्त्री०) खड्ग, खौंड़ा।  
 तरसना (सं० तर्पण, तृप्=प्राप्त होना) (क्रि० अ०)  
 बहुत चाहना, जो लग रहा, रटना, दया प्राप्त करने  
 की इच्छा रखने पर भी दया न प्राप्त कर सकना।  
 तरहटी (स्त्री०) तराई, नीचे स्थान, नीची भूमि।  
 तरहदार (वि०) मनोहर, सुंदर, वज्रादार, सुंदर  
 बनावट का।

तरहेल (वि०) आश्रित, पराजित, अधीन।  
 तरा (पु०) तल, पटुआ, पटसन।  
 तराई (स्त्री०) दलदल, धरती, जलभूमि, चौगाव,  
 चरने की जगह, पहाड़ या नदी आदि के पास की  
 जगह, घाटी।  
 तरान (पु०) उगाहन, प्राप्त किया हुआ, वसूल किया  
 गया, राजकर, चंदा आदि।  
 तराना (पु०) राग, ध्वनि, शब्द।  
 तराप (स्त्री०) बंदूक आदि का शब्द, तड़ाक, एकदम  
 शब्द होना।  
 तरापा (पु०) नौका, बेड़ा, किरती, कोलाहल, कोहराम।  
 तराबोर (वि०) तरबतर, शराबोर।  
 तरावट (स्त्री०) टंड, शीतलता।  
 तराश खराश (स्त्री०) काट-छाँट, बनावट।  
 तरि } (तृ=पार होना) (स्त्री०) नाव, डोंगी, नौका,  
 तरी } तरणी।  
 तरु (तृ=पार होना, अर्थात् जिसका लगनेवाला तर जाता  
 है) (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, तरुवर, गाछ, दरदल।  
 तरुण (तृ=नीत जाना, या नला जाना) (वि०) जवान,  
 युवा, नया, नूतन, बड़ा, जोरा, अरंड, मोतिया,  
 अरुणवायुवाला।  
 तरुण उवर (पु०) सात दिन का पुराना उवर।  
 तरुणई (सं० तरुणता) (स्त्री०) जवानो, युवावस्था,  
 यौवन।  
 तरुणी (तरुण) (स्त्री०) जवान स्त्री, युवती, मध-  
 रागिनी, कामिनी।  
 तरैड़ा (पु०) टाँटी से पानी का गिरना, धार बंधकर  
 पानी गिरना।  
 तरैत (पु०) लंगर का चिह्न, बया।  
 तरैरना (क्रि० स०) घूरना, खोरी चढ़ाना, आँख  
 दिखाना।  
 तरैया (सं० तारा) (स्त्री०) तारा, तारागण, आँख की  
 पुतली।  
 तरौंछी (स्त्री०) जुलाहे के हथों के नीचे का लकड़ी,  
 जुआ के नीचे की लकड़ी जो बैलों के गले के नीचे  
 रहती है।  
 तरौंटा (पु०) चक्का के नीचे का पाट।  
 तरौंस (पु०) समोप, किनारा, पटरी, तट, तीर।

तर्क (तर्क=तर्क करना) (सं०) वाद, विवाद, शास्त्रार्थ, न्याय-संश्लेषी बानचौत, शंका, दलील, न्याय-शास्त्र, (न्यायशास्त्र में) अनुमान, कल्पना, व्यंग्य, त्याग, तजना, छाड़ना ।

तर्कक (पुं०) याचक, आकांक्षी, तर्क करनेवाला ।

तर्कन, तर्कण (पुं०) तर्क करने की क्रिया, तर्कना ।

तर्क-वितर्क (पुं०) शंका, संदेह, बहस, वाद-विवाद ।

तर्कविद्या (तर्क + विद्या) (सं०) न्याय-शास्त्र ।

तर्कित (वि०) विवेचिन, आलोचनित ।

तर्की (पुं०) तार्किक, तर्क करनेवाला, नुस्सताचीनी करने-वाला ।

तर्कुल (पुं०) ताड़ का वृक्ष या फल ।

तर्जु (पुं०) डंग, रीति, ढंग, प्रकार, क्रिस्म ।

तर्जक (तर्ज + कृ) (पुं०) कूदनेवाला ।

तर्जन (सं० तर्ज=धमकाना) (पुं०) कोप, क्रोध, ताड़न, धमकी, गर्ज ।

तर्जना (सं० तर्जन) (क्रि० प्र०) क्रोध करना, कूदना, (क्रि० प्र०) धमकाना ।

तर्जनी (तर्ज=धमकाना, जिममें (सं०) दूसरी उँगली, अँगूठे के पास की उँगली "जो तर्जनी देखि मरि जाहीं"—सं० तु० दा० ।

तर्जित (तर्ज + इत्) (वि०) कूदा, धमकाया गया ।

तर्पक (तर्प + कृ) (पुं०) तृप्ति देनेवाला, संतोष करनेवाला ।

तर्पण (तर्प=तृप्त होना) (पुं०) तृप्ति, संतोष, परि-पूर्णता, पितरों को जल देना ।

तर्पणी (सं०) गंगा, सुरसरी, खिरनी का पेड़, शान्ति-दात्री, तृप्ति देनेवाला ।

तर्पणीय (वि०) तृप्ति के लायक, तर्पण योग्य ।

तर्पित (तर्प + इत्) (पुं०) तृप्त, संतुष्ट, आसूदा ।

तर्पी (पुं०) तरमा, फोता, जिसे छड़ी में बांधकर चाबुक बनाया जाता है ।

तर्ष (तर्प्=पथ होना) (सं०) प्यास, चाह, इच्छा, तृष्णा ।

तर्स (सं०) दया, कृपा, करुणा ।

तर्स खाना (सं०) दया करना ।

तर्सना (तर्सना) (क्रि० प्र०) लज्जाना, लुभाना, सताना, वंचित रखना ।

तर्सी (क्रि० प्रि०) परसों के आगे का दिन, आज से पहला या पिछला तीसरा दिन ।

तल (तल्=उड़ना) (पुं०) तला, नीचा, नीचे का भाग, नीचे की जगह, थाह, तलवा, तला, तली, नरक-विशेष, मूठ, कलाई, मकान की छत, वन, जंगल, गड्ढा, तह, गोधा, स्वभाव, गोह ।

तलक (पुं०) ताल, तालाब, पोखरा, (अप०) तक, पर्यंत, अवधि ।

तलघर (पुं०) तहश्वाना, तालाना ।

तलघुट (सं०) मेल, निचोड़, खुद, मल ।

तलपना } (क्रि० प्र०) छुटपटाना, रोना, हाय  
तलफना } मारना, तड़पना ।

तलय (पुं०) वेतन, माँग, आवश्यकता ।

तलमलाना (क्रि० प्र०) लज्जाना, तरसना, कलपना, तड़पना, व्यग्र होना, परेशान होना ।

तलवान टिकना (पुं०) घूमते रहना, एक स्थान पर न बैठना, स्थिर न रहना ।

तलवे चलनी होना (पुं०) अधिक चलना जिससे शिथिलता आ आय, अधिक दौड़ना-धूपना, अधिक उद्योग करना ।

तलवे चाटना (पुं०) खुशामद करना ।

तलवे धोकर पाना (पुं०) अधिक सेवा करना, खुशामद की पत्ती काटा कर देना ।

तलवों से आग लगना (पुं०) समस्त शरीर से क्रोध करना, नीचे से ऊपर तक क्रोधित होना, क्रोध से जलना ।

तलवों से भेटना (पुं०) कुचलकर नाश करना ।

तलवासना (क्रि० प्र०) पैर खियाना ।

तलहटी (सं०) किनारा, निरुद्ध भूमि, तराई ।

तला (सं०) तल (पुं०) पेंदा, थाह, जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला, तली, तलवा ।

तलाई (सं०) छोटा तालाब, तलैया ।

तलाक (पुं०) पति-पत्नी का विधि-पूर्वक संबंध-त्याग ।

तलानल (पुं०) पाताल-विशेष ।

तलाय (सं०) ताल और तालाब (पुं०) तालाब, सरोवर, जलाशय ।

तलाशी (सं०) खोई वस्तु ढूँढ़ने के लिये घरबार देखने का काम, तलाश, जाँच-पड़ताल, अनुसंधान ।

तलित ( वि० ) तला हुआ, घी-तेल में भूना हुआ ।  
तली ( सं० तल ) ( स्त्री० ) तला, नीचा, पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा, चूर्ण, पाणि-ग्रहण के समय वर-वधु के आसन के नीचे रखी हुआ रुपया-पैसा ।

तलुया { ( सं० तल ) ( पु० ) पाँव का तला, पग-तलया } तली ।

तलुवे तले हाथ धरना ( बोल० ) चापलूसी करना, लज्जोपचो करना, खुशामद करना ।

तले ( सं० तल ) ( कि० वि० ) नीचे उतर कर, घट कर ।

तले ऊपर ( बोल० ) नीचे ऊपर, उलट-पलट ।

तलेंचा ( पु० ) मेहराब के ऊपर का भाग ।

तल्प ( पु० ) पलंग, शय्या, अट्टालिका, अटारी, नारी, अबला ।

तल्लिका ( स्त्री० ) कुंजी, तालो, कुचिका, कूची, तरुणी ।

तव ( सर्वना० ) तेरा, तुम्हारा ।

तवज्जह ( स्त्री० ) ध्यान, दृष्टि, रुज, निगाह ।

तवाज़ा ( स्त्री० ) त्वातिर, आदर, सम्मान, अतिथि-सत्कार ।

तवाना ( वि० ) मोटा-ताज़ा, दृष्ट-पुष्ट, ( कि० सं० ) तपाना, पिघलाना ।

तवायफ़ ( स्त्री० ) रंडी, नृत्य करनेवाली स्त्री, वेश्या ।

तवारीख़ ( स्त्री० ) इतिहास ।

तसर ( पु० ) एक प्रकार का रेशम, टसर ।

तसवीह ( स्त्री० ) माला ।

तसी ( पु० ) तीन बार जुता हुआ खेत ।

तस्कर ( तत्=वह, कृ=करना ) ( पु० ) चोर, चोरी करने-वाला, चोड़ा ।

तस्म ( पु० ) चमोटा, चमोटी, तस्मा ।

तस्मई ( स्त्री० ) खंर ।

तस्मै ( सर्वना० ) तुम्हारे लिये ।

तस्सू ( पु० ) हूँच, एक प्रकार का नाप ।

तहसनहस ( वि० ) नाश, नष्ट, तितर-बितर, चौपट, उजाड़ ।

तहाँ ( सं० तत्र ) ( कि० वि० ) उस जगह, वहाँ ।

ता ( सर्वना० ) उसको, उसे, उसको ( अर्थ० ) तक, पर्यंत, ताई ।

ताँगा ( पु० ) एक तरह की गाड़ी ।

ताँत ( सं० तंतु ) ( स्त्री० ) चमड़े का तार, चमड़े की डोरी, बाजे का तार, ताँती का यंत्र ।

ताँता ( सं० तंति, तन्=फैलाना ) ( पु० ) पाँत, श्रेणी, क्रतार ( जैसे घोड़े, हाथी, ऊँटों की ), क्रम, सिखसिला ।

ताँती ( सं० तंति ) ( पु० ) जुलाहा, बुननेवाला, क्रतार, पटवा ।

ताँवड़ा ( पु० ) ताँबे के रंग का, ताँबे की वस्तु, झूठी चुन्नो, ताँबे का छोटा बर्तन ।

ताँया ( सं० ताम्र ) ( पु० ) एक धातु का नाम ।

ताइत ( अरबी, तर्बित ) ( पु० ) गंडा, यंत्र, तंत्री, ताँत, टोटका ।

ताई ( स्त्री० ) बाप के बड़े भाई की स्त्री, ताई, जलेबी बनाने की कढ़ाही ।

ताईद ( स्त्री० ) अनुमोदन, भले प्रकार समर्थन, पुष्ट करना ।

ताऊ ( पु० ) बाप का बड़ा भाई ।

ताऊस ( पु० ) मोर, मयूर ।

ताक ( सं० तर्क ) ( स्त्री० ) दृष्टि, दीठ, भाँक, टकटकी, खोज, किसी मौके की वाट जोहना ।

ताकना ( ताक ) ( कि० सं० ) भाँकना, घूरना, देखना ।

ताग { ( पु० ) डोरा, सूत, धागा ।

तागतोड़ ( पु० ) गोटा, किनारी ।

ताजक ( पु० ) उद्योतिष का ग्रंथ-विशेष ।

ताज ( पु० ) राजा का मुकुट, शिखा, तुरां, कलगी, बुर्जी, आगरे की एक शाही इमारत, ताजमहल ।

ताज़ा ( वि० ) नया, हरा-भरा, स्वस्थ, हाल का, टटका ।

ताज़िया ( पु० ) एक आकृति-विशेष जिसे मुसलमान मुहर्रम में बनाते हैं ।

ताज़िया ठंडे हाना ( बोल० ) जोश ठंडा पड़ना, उद्योग शिथिल पड़ना ।

ताज़ीम ( स्त्री० ) आदर, अदब ।

ताज़ीमी ( पु० ) अधिक प्रतिष्ठित, अदब के योग्य, जिसके लिये बादशाह या राजा भी सम्मान प्रकट करें ।

ताड़क { ( ताड़ या ताड़ पीटना ) ( तत्=पीटना और अंक ताड़क ) ( चिद ) ( पु० ) देवी, कथ-भूषण, कान का गहना, डारें, एक प्रकार का छंद ।

ताड़ ( सं० ताल ) ( पु० ) ताल का वृक्ष, ( स्त्री० ) ताड़ना, पड़ना ।

ताड़क ( तड़+प्रकृ ) ( पु० ) पीटनेवाला, सजा देनेवाला,  
ताड़ना देनेवाला, दैत्य का नाम, एक मंत्र ।

ताड़का ( तड़=पीटना ) ( स्त्री० ) एक राक्षसी का नाम ।  
ताड़न ( पु० ) } ( तड़=पीटना ) दंड, भिड़की,  
ताड़ना ( स्त्री० ) } सजा, मार, डाँट, धमकी ।

ताड़ना ( कि० म० ) जानना, पहचानना, जाँचना ।

ताड़नी ( पु० ) चायुक, श्रीगो, पैना, कोड़ा ।

ताड़याज्ञ ( वि० ) समझनेवाला, भाँपनेवाला, ताड़ने-  
वाला, ताड़ ।

ताड़ित ( तड़=इत ) ( वि० ) मारा गया, पीटा गया ।

ताड़ि ( ताड़ ) ( स्त्री० ) ताड़ का रस जिसमें नशा  
होता है, महुए-सा शराब, कटार की मृद ।

ताड़्यमान ( वि० ) मारने योग्य, पीटने लायक ।

तांडव ( तंड+प्रकृ ) का नाम जिसमें पड़लेपड़त इस  
नाच कोनकाला और मिललाया, या तंडि=पटना ।  
( पु० ) महादेव और उनके गणों का नाच, पुरुषों  
का नाच, जैसे “पुंनृत्यं तांडवं प्रोक्तं स्त्रीनृत्यं क्षास्य-  
मृच्यते”, उद्धृत नृत्य, नृग-विशेष ।

तांडवी ( पु० ) संगीत के चौदह तालों में से एक ताल-  
विशेष ।

तांडि ( पु० ) नृत्य-शास्त्र, वह शास्त्र जिसके आदि  
आचार्य तांडि मुनि हैं ।

तांडी ( पु० ) सामवेदांतर्गत, तांड्य-शास्त्रा को पढ़ने-  
वाला ।

तात ( तन्=फैलाना अपने वश हो या वन को ) ( पु० )  
बाप, प्यारा, जैसे “तात प्रणाम तात सन कहेऊ”  
( रामायण ) यहाँ पहले ‘तात’ शब्द का अर्थ प्यारा  
और दूसरे ‘तात’ शब्द का अर्थ बाप है, प्यार का  
शब्द जिसे मा-बाप अपने लड़के-बालों के लिये और  
गुरु अपने शिष्यों के लिये बोलते हैं, जैसे “कहहु  
तात जननी बलिहारी” ( रामायण ) भाई, मित्र,  
मखा, ( वि० ) बड़ा, पूज्य, आर्य, प्रिय, स्नेह-भाजन ।

तात-ताता ( तंड+प्रकृ ) ( वि० ) गर्म, उष्ण, तपा  
हुआ ।

तातगु ( पु० ) चाचा, काका, ( वि० ) हाल का, उसी  
या इसी समय का ।

तातनी ( सर्वना० ) उसको ।

तातनी ( सर्वना० ) उसका ।

तातल ( पु० ) पिता के समान संबंधी, रोग, पकता,  
लोहे का काँटा, ( वि० ) गर्म, उष्ण, तप्त ।

ताताथेई ( स्त्री० ) नाच में पैरों के गिरने की गति, नृत्य  
की ध्वनि-विशेष ।

तातील ( स्त्री० ) छुट्टी, छुट्टी का दिन ।

ताते } ( सर्वना० ) उससे, तिससे ।  
ताते }

तात्कालिक ( तत्काल ) ( वि० ) उसी दम, उसी समय  
का, तत्कालीन ।

तात्पर्य ( तत्पर ) ( पु० ) अभिप्राय, आशय, अर्थ,  
मतलब ।

ताद्दर्श्य ( पु० ) तिसके लिये, तिसके अर्थ, तिस वास्ते ।

तादाद ( स्त्री० ) अनुमान, संख्या, गिनती, गुमार,  
परिमाण ।

तादृश ( तन्=वद्, दृश्=देखना ) वैसा ही, उसी के बरा-  
बर, उसी के समान, उसका-सा ।

तान ( तन्=फैलाना ) ( स्त्री० ) राग का उच्चारण, स्वर,  
राग, ताल ।

तानना ( कि० म० ) फैलाना, एक दूसरे के बराबर  
कराना, खींचना, कशमकश पैदा करना ।

तानकर ( पु० ) जोर से, पूर्णतः खींचकर, बलपूर्वक,  
संपूर्ण शक्ति से ।

तानकर सोना ( पु० ) आराम से खूब सोना,  
चिन्ता-रहित सोना, निरस्त होना ।

तान तोड़ना ( बोल० ) टट्टा मारना, ताल पूरी करना,  
मुख मनाना ।

ताना ( स+तन्=फैलाना ) ( पु० ) कपड़ा बुनने की कल  
पर सूत का फैलाना, ताना सूत, तानी

ताना } ( स+तपन, या तापन, तप=तपना ) ( कि०  
तापना } स+ गर्म करना, ताप देना, परखना ।

तांत्रिक ( तन्+प्रकृ ) तंत्रशास्त्र का जाननेवाला,  
पंडित ।

तान्ना, तानना ( स+तपन, तन्=फैलाना ) ( कि० स+ )  
फैलाना, खींचना, कसना, तंबू तानना, ( बोल० )  
उरा खड़ा करना ।

ताप ( तप=गर्म होना ) ( पु० ) गरमी, दुःख, पीड़ा,  
संताप, सोच, क्रिक, शोक, वेद, उदासी, ( पु० )  
तप, उबर, जर, बुझार ।



- तापक ( तप+प्रक ) ( १० ) दुःखदायी, दुःखद, दुःख दाता ।
- तापनिह्नी ( स्त्री० ) प्रीहा, पिह्नी, तेहा ।
- तापना ( सं० तापन्, तप=तपाना ) ( क्रि० स० ) गर्माना, देह सेकना, शरीर गर्म करना, जाड़े में आग के पास बैठकर देह को गर्माना, घाम खाना, विनाश करना, बर्बाद करना ।
- तापमान ( पु० ) थर्मोमीटर, गरमी नापने का यंत्र ।
- तापस ( तपस=तप ) ( पु० ) तपसी, तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।
- तापित ( ताप+इत ) ( पु० ) दुःखित, तापयुक्त संतप्त, कुलसा हुआ, जला हुआ ।
- ताफता ( पु० ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, जिसे धूपछाँह भी कहते हैं—“ताफता रंग”—महाकवि बिहारी ।
- ताय ( स्त्री० ) गरमी, उष्णता, चमक, रोशनी, आभा, सौंदर्य, शक्ति, मजाज, अधिकार, धैर्य, शान्ति ।
- तायड़तोड़ ( क्रि० वि० ) लगातार, क्रमशः, बराबर ।
- तावे ( वि० ) अधीन, अधिकार में, वशीभूत ।
- तावेदार ( पु० ) सेवक, नौकर ।
- तावेदारी ( स्त्री० ) नौकरी, सेवकाई ।
- ताम ( पु० ) घबराहट, क्लेश, ग्लानि, घृणा, ऐश, विकार ।
- तामचीनी ( स्त्री० ) ताँबा मिला हुआ धातु-विशेष ।
- तामजाम ( स्त्री० ) एक प्रकार की पालकी ।
- तामड़ा ( सं० ताम्र ) ( पु० ) ताँबे-जैसे रंग का एक हलके मोल का रत्न ।
- तामरस ( तामर=पानी, सम=सोना ) ( पु० ) कमल, कैवल, —“ परसत तुहिन तामरस जैसे ”— गो० तु० दा०—ताँबा, सोना, धनूरा, सारस ।
- तामलकी ( स्त्री० ) आवला, भूमिका ।
- तामस ( तमस=तमोगुण, या अंधेरा ) ( वि० ) तमोगुणी, तापसी, क्रोध-मोह आदि में लगा हुआ, ( पु० ) अंधेरा, तमोगुण, दुष्ट, अहंकार, क्रोध, मोह आदि ।
- तामसी ( सं० तामसिक ) ( वि० ) क्रोधी, तमोगुणी, रिस करनेवाला, स्त्री० अंधेरी रात्रि, दुर्गा, कालरात्रि, जटामासी ।
- तामिल ( स्त्री० ) भारतवर्ष के दक्षिण की एक जाति या उस देश की भूमि अथवा भाषा ।
- तामिन्न ( पु० ) अंधकारमय तरक-विशेष, क्रोध, द्वेष, अहंकार, अविद्या ।
- तामिल ( पु० ) संपादन करना, आज्ञानुसार काम कर देना, मालिक की आज्ञा का पालन करना, हुक्म बजाना, देश-विशेष ।
- तामेश्वर ( सं० ताम्रेश्वर, ताम्र+ईश्वर ) ( पु० ) ताँबे की राख, ताम्र, वंगताम्र की बनी शंकर की मूर्ति ।
- तायूल ( तम्=वाहना ) ( पु० ) पान, नागरवेज का पत्ता ।
- तायूली } ( पु० ) तमोली, पान बेचनेवाला ।  
तायूलिक }
- ताम्र ( तम्=चाहना ) ( पु० ) ताँबा, जाख रंग, कुष्ठ-रोग-विशेष ।
- ताम्रकार } ( पु० ) ठेरा, ताँबा पीटनेवाला ।  
ताम्रकुट्टक }
- ताम्रकूट ( पु० ) तंबाकू का पौदा ।
- ताम्रगर्भ ( पु० ) तूतिया, नीलाधोथा, जिससे ताँबा निकलता है ।
- ताम्रचूड़ ( पु० ) मुर्गा, कुकराँधा ।
- ताम्रपत्र ( पु० ) ताँबे का पत्तर या उसकी चदर का टुकड़ा, अमिट लेख ।
- ताम्रपर्णी ( स्त्री० ) बावली, एक नदी-विशेष जो मद्रास प्रांत में बहती है, तालाब, तड़ाग ।
- ताम्रवर्ण ( वि० ) ताँबे के रंग का, शरीर का चमड़ा, सीलोन-नामक द्वीप ।
- तायदाद ( पु० ) देखो “तादाद” ।
- तायफ्रा ( स्त्री० ) तवायफ़, रंडी, बेरया ।
- तार ( पु० ) लोहे आदि धातुओं का खिंचा हुआ पतला बारीक तागा जो सितार आदि बाजों में लगाया जाता है, टेलीग्राम, उसके द्वारा आया हुआ समाचार, सिलसिला, क्रम, व्योम, टीक, नाप, प्रणव, शुद्ध मोती, शिव, शंकर, विष्णु ।
- तारघर ( पु० ) वह स्थान जहाँ चुंबक और विजली की शक्ति द्वारा खबर आती हो ।
- तार टूटना ( बोल० ) अलग हो जाना, छूट जाना, किसी काम का बंद हो जाना, क्रम भंग होना ।
- तार तार करना ( मुहा० ) उधेड़ना, अलग-अलग करना, बारीकी से विश्लेषण करना ।

तार तार होना (पु०) धजियाँ अलग-अलग हो जाना ।

तार दबकना (पु०) गोटे-पट्टे के वास्ते तार पीटक चोड़ा करना ।

तारतार (पु०) अलग-अलग, अक्रम ।

तार बँधना या तार टूटना (पु०) क्रमशः लगा रहना, क्रम का बना रहना ।

तार बँधना (बोल०) किसी काम को लगानार जारी रखना, मिलमिला बनाए रखना ।

तार बँटना (पु०) सुविधा होना ।

तारक (तृ=तार करना, या बनाना) (पु०) बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, (पु०) एक राक्षस का नाम, एक प्रकार का मंत्र, तारा, मितारा, नक्षत्र, आँख का तारा, पुतली, नाविक ।

तारण (तृ=पार करना, बसाना) (वि०) पार करने-वाला, (पु०) उद्धार, पार करना, घरनई, बेड़ा ।

तारणतारण (तृ=पार करना) (वि०) पार करनेवाला और पार होनेवाला, पतितपावन ।

तारणा } (सं० तारण) (क्रि० सं०) पार करना, बचाना,  
तारना } उद्धार करना, मुक्ति देना, मुक्त करना ।

तारतम्य (पु०) ऊँच, अंतर, दर्जा बदर्जा, मिलमिला, परिणाम आदि का परस्पर मिलान ।

तारतौड़ (पु०) कारचोचो, यटा निकासना, बटे का काम, थुंटेकारी ।

तारपीन (पु०) चीड़ लकड़ी का तेल, ताड़पीन का तेल ।

तारुण्य (पु०) जल्लादि द्रव पदार्थ बहने का धर्म, अस्थिरता, चंचलता, तरलता ।

तारा (तृ=पार होना, अर्थात् जाना) (पु०) नक्षत्र, मितारा, आँख की पुतली, (स्त्री०) बालि वानर की स्त्री और अंगद की मा, बृहस्पति की स्त्री, देवी का नाम, सत्यवती हरिश्चंद्र राजा की रानी ।

तारा चमकना (पु०) भाग्य खुलना, तारे दिखाई देना, भाग्य फिरना ।

तारा जोड़ना (पु०) अति कठिन काम करना ।

तारा टूटा (पु०) आश्चर्य-जनक कार्य हुआ ।

तारा हो जाना (पु०) अधिक दूर चला जाना जहाँ दिखाई भी न पड़े, ऊँचा चला जाना ।

तारे गिनना (बोल०) नौद नहीं आना, नौद न पड़ना, चिंता करना, बेचैनी या आसरे में रहना ।

तारिक (पु०) उतराई, (स्त्री०) ताड़ी, तालरस ।

तारिणी (स्त्री०) दस महाविद्याओं में दूसरी महा-विद्या, उद्धार करनेवाली स्त्री ।

तारी (स्त्री०) ताड़ी, मादक द्रव्य, तार का बना हुआ, तेल मापने का बर्तन जिसमें पाँच सेर तेल आता है ।

तारीख (स्त्री०) तिथि, दिवस, दिन ।

तारीफ (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, स्तव, परिचय ।

तार्किक (तर्क) (पु०) नैयायिक, तर्कशास्त्री ।

ताल (तल्=ठहरना, या तट्=पटटना) (पु०) एक वृक्ष का नाम, ताड़, खजूर, ताली बजाने का शब्द, गान का परिमाण, भाँफ, मजीरा, ताला, तालाब, कुश्नी खड़ने में भुजा पर हाथ मारने का शब्द ।

तालक (पु०) आगल, चिल्ली, सिटकिनी ।

तालकूटा (पु०) भाँफ बजाकर भगवद्भजन करने-वाला ।

तालकेतु (पु०) ताड़ के चिह्नवाली ध्वजावाले भीष्म, बलराम ।

तालमखाना (पु०) एक पीढ़े का नाम ।

ताल मारना } (बोल०) कुश्नी लड़ने में भुजा को  
ताल ठोकना } करतल से ठोकना, युद्ध के लिये आ-  
ख्यान करना, (पु०) खलकारना, विग्रह मोल लेना ।

तालवृत्त } (पु०) पंखा, ध्वजन, घेना, बादकश ।  
तालवृत्तक }

तालव्य (तालु) (वि०) तालु-संबंधा अथवा जो तालु से बोले जायें, जैसे—“ह, हँ, च, छ, ज, झ, ञ, य, श” ।

ताला (सं० ताल) (पु०) बंद करने की कल, कुफल, कुफल ।

तालांक (ताल+अंक) (पु०) बलराम, महादेव, नाचने-वाला, ताल का लक्षण, आरा, प्रथ ।

ताली (सं० ताल) (स्त्री०) कुँजो, चाभी, करतल बजाने का शब्द, एक प्रकार का तालवृक्ष ।

ताली एक हाथ से बजाना (बोल०) यह मुहावरा अनहोनी बात का सूचक है ।

ताली बजाना } (बोल०) हाथ पर हाथ मारना, हाथ  
ताली मारना } बजाना, धिक्कारना, दुतकारना, झूठ करना, मज़ाक उड़ाना ।

तालु (तृ=पार होना प्रधात् जहाँ से अहर निकलने है) (पु०) तालुबा, तालू, मुँह के ऊपर का भाग।

ताव (सं० ताप, का० ताक) (पु०) ताप, गरमी, क्रोध, कोप, तमक, बख, ज़ोर, चमक, तेज, प्रताप, ऐंठ, मरोड़, बख, बट, अकड़, कागज़ की परत, जाँच, परख, कस, शीघ्रता, उतावली, हड़बड़ी, मौक़ा, अवसर।

ताव देना (बोल०) मरोड़ना, बटना, ऐंठना, मोछों पर हाथ फेरकर अपनी शक्ति जताना, मोछे सँवारना, गर्म करना, (जैसे लोहे को) उकसाना, उत्तेजित करना।

ताव पेच खाना (बोल०) गर्म होना, क्रोधित होना, गुस्सा होना।

तावत् (तत्=वह) (कि० वि०) उतना, इतना, यहाँ तक, यहाँ छोड़, तब तक।

तावना (सं० तपन, या तापन, तप=तपाना) (कि० स०) गर्म करना, गर्माना, तार देना, परखना, कसना, जाँचना, ऐंठना, मरोड़ना, क्रोधित करना, दुःख देना।

तावभाव (पु०) सुश्रवसर, मौक़ा, (वि०) श्रवण, थोड़ा-सा, हलका, ज़रा-सा।

तावर (खी०) बुझार, उवर, जलन।

तावरो (पु०) घाम, दाह, गरमी, चक्कर, मूर्च्छा, घब-बाहट।

तावल (खी०) शीघ्रता, उतावलापन, घबड़ाहट।

तावान (पु०) सज़ा, दंडा, डाँट।

तावीज़ (पु०) श्रलंकार-विशेष, गंडा, यंत्र।

ताश (पु०) छप्पा, बादला, बूटेदार पट्ट।

तास (पु०) गंजीक़ा, लप्पा, बादला, बूटेदार पट्ट।

तासा (पु०) ताशा, एक प्रकार का देशी बाजा।

तासीर (खी०) गुण, असर, प्रभाव।

तासु (सं० तस्य) (सर्वना०) उसका, तिसका।

तासों (सं० तस्मात्) (सर्वना०) उससे, तिससे।

ताहम (अव्य०) तो भी, फिर भी, तब भी, तिस पर भी।

ताहि (सं० तम्) (सर्वना०) उसको, उसे, तिसको, तिसे।

ताहिरी (खी०) भोजन-विशेष, पीले चाँवख और बरी।

तिआ (स्त्री०) खी, भार्या, जोरु, जुरा का एक दाँव, खेड़ने के पत्तों में से एक पत्ता।

तिआह (पु०) तीसरा विवाह या उसका करनेवाला पुरुष।

तिकड़ी (खी०) तीन कड़ियोंवाली, तीन रस्सियों की बुनाई।

तिकोनिया (सं० त्रिकोण) (वि०) तिरछा।

तिरू (तिज्=तीखा करना) (वि०) तीता, कड़वा, तीखा, चिरपिरा।

तिरूक (पु०) चिरायता, परवख, कृष्णखैर, नोम, कुरैया।

तिरूकांड (पु०) चिरायता।

तिरूगंधा (खी०) बाराहीकंद, बराहकांता।

तिरूघृत (पु०) कड़वी ओषधियों से बनाया हुआ घृत।

तिरूपर्वा (पु०) मुलैठी, गुर्च।

तिगुन (सं० त्रिगुण, त्रि=तीन, गुण=गुना) (वि०) तिगुना, तीन गुना, तिहरा।

तिग्म (तिज्+म) (पु०) तोचण, पैना, तेज़।

तिच्छुन } (सं० तीक्ष्ण) (वि०) तीखा, तीता, कठोर,  
तीछुन } कड़ा।

तिजहरिया (पु०) तीसरा पहर, दोपहर के बाद का एक पहर अर्थात् तीन बजे का समय।

तिजारत (खी०) व्यापार, उद्योग-धंधा, रोज़गार।

तिजारी (सं० तृतीयञ्वर, तृतीय=तीसरा, ज्वर=ताप) (खी०) जो बुझार एक दिन बीच में न आकर तीसरे दिन फिर आवे, अंतरिया उवर, कंपउवर, तीसरे दिन आनेवाला उवर।

तिजिल (तिज्+इल, तिज्=चमा करना) (पु०) चंद्रमा।

तिड़ीथिड़ी (वि०) तितर-वितर, छितराया हुआ, बेइश।

तित (सं० तत्र) (कि० वि०) वहाँ, तहाँ, तिधर, उस ओर, उसी तरफ़।

तितित्तक (पु०) सहनशील, क्षमा करनेवाला।

तितित्ता (तिज्=सहना) (खी०) धोरज, क्षमा, सहन-शीलता, धैर्य, सहना।

तिर्तिया (पु०) डकोसखा, पाखंड, दिखावा, उपसंहार, टिटिबा।

तितित्मा (पु०) परिशिष्ट, किसी ग्रंथ के अंत में लगाया हुआ प्रकरण।

तितित्ती (खी०) तर जाने की इच्छा, तैरने की इच्छा, तितित्ती।

तितितु ( वि० ) मोच का अभिलाषी, उद्धाराभिलाषी,  
तितीतु ।

तिने ( वि० ) तितने, उतने ( संख्या-वाचक ) ।

तिनेक ( वि० ) उतना, उतने ।

तिनो ( वि० ) उतना, उस परिमाण में ।

तिन्तिर ( पु० ) एक प्रकार का तीतर-विशेष, यजुर्वेद की  
तैत्तिरीय नामक शाखा ।

तिथ ( पु० ) आग, प्रेम, समय, वर्षा या शरद् ऋतु ।

तिथि ( अन्=ज्ञाना ) ( स्त्री० ) हिंदू महीनों के दिन,  
हिंदू महीनों की तारीख, चांद्रदिनम् ।

तिदरी ( स्त्री० ) तीन दरवाजे या विड़कियोंवाली कोठरी ।

तिधारा ( पु० ) जल के किनारे रहनेवाले पक्षी-विशेष ।

तिधर ( कि० वि० ) उधर, तिस ओर, उस ओर ।

तिनकना ( कि० प्र० ) बिगड़ना, रुष्ट होना, चिड़-  
चिड़ाना, कलखाना, अप्रसन्न होना ।

तिनका ( सं० तृण ) ( पु० ) खर, डाँडी, घास का टुकड़ा ।

तिनका तोड़ना ( मुहा० ) अलग होना, संबंध छोड़ना,  
प्यार करना, बछाय लेना, कुछ न करना, बेकार  
रहना ।

तिनका दाँतों में दवाना ( मुहा० ) प्रार्थना करना,  
गिड़गिड़ाना, जमा माँगना, शमिदा होना, आत्म-  
समर्पण करना ।

तिनका सिर से उतारना ( मुहा० ) थोड़ा उपकार  
करना ।

तिनके का सहारा ( मुहा० ) थोड़ी सहायता, अल्प  
आश्रय ।

तिनके की ओट पहाड़ ( मुहा० ) छोटी बात में बड़ा  
महत्त्व होना, थोड़ी साधना में महान् इष्ट की सिद्धि ।

तिनके को पहाड़ करना ( मुहा० ) छोटे को बड़ा  
करना, एक बात के लिये बहुत-सी बातें बनाना ।

तिनके नुनना ( मुहा० ) अचेत होना, पागल बनना,  
व्यर्थ काम करना ।

तिनधारा ( स्त्री० ) तीन धारवाला, तीन धार को रेतो  
जो पानी को तेज करने के काम में आती है ।

तिपड़ा ( पु० ) कामखाब बुननेवालों के करधे की दोनों  
बैलरों के बीच में रहनेवाली लकड़ी ।

तिपैरा ( पु० ) तीन घाटवाला बड़ा कूप, जिसमें तीन  
घरों से एक साथ चलाई जायें ।

तिवारा ( सं० त्रि=तीन, वार=दरवाजा ) ( पु० ) तीन  
दरवाजों का मकान, कमरा, तिदरा, ( वि० ) तीन  
बार, तीन दफ़े ।

तिमिर ( तिम्र=भिगोना, वा तम्=प्रधेरा होना ) ( पु० )  
अंधेरा, अंधकार, एक प्रकार का आँख का रोग ।

तिमिप ( पु० ) ककड़ों, फूट, सफ़ेद कुम्हड़ा ।

तिमी ( स्त्री० ) बड़ी मछली, दूध की पुत्री, कश्यप  
की स्त्री ।

तिमुहानी ( स्त्री० ) वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ या  
तीन रास्ते आकर मिलते हैं ।

तिय ( सं० स्त्री ) ( स्त्री० ) नारी, औरत, स्त्री ।

तियतरा ( वि० ) तीन डेटियों के बाद पैदा हुआ पुत्र ।

तियला ( पु० ) नारियों का पहनावा या स्त्रियों के वस्त्र ।

तिरकना ( कि० प्र० ) तड़कना, अपने-आप फटना,  
दरार होना, चक्कड़ाना ।

तिरखा ( सं० तृषा ) ( स्त्री० ) प्यास, पीने की चाह,  
पियास, तृष्णा, चाह ।

तिरखित ( वि० ) दुःखी, श्लेशित, तृपित ।

तिरछा ( सं० तिर्यक्ष, तिरस्=टेढ़ा, अन्=ज्ञाना ) ( वि० )  
तिर्छा, टेढ़ा, बाँका, आढ़ा ।

तिरछा देखना ( बां० ) कनखियों देखना, टेढ़ी आँख  
से देखना, तिरछी चितवन से देखना ।

तिरछा बाँका ( मुहा० ) छैल-छबीला ।

तिरछा चचन ( मुहा० ) टेढ़ी बात, व्यंग्य ।

तिरछी चितवन ( मुहा० ) नाराज़ी, बिना सिर फेरे  
बगल को देखना ।

तिरछी टोपी ( मुहा० ) टेढ़ी टोपी, एक ओर को झुकी  
हुई टोपी ।

तिरछापन ( पु० ) टेढ़ा या तिरछा होने का भाव ।

तिरछौंहा ( वि० ) कुछ टेढ़ा ।

तिरतिराना ( कि० प्र० ) रिसाना, फ़िरफ़ाराना, बूँद-  
बूँद टपकना ।

तिरना ( सं० तृण ) ( कि० प्र० ) पैरना, हेखना, तैरना ।

तिरपटा ( वि० ) टेढ़ी दृष्टिवाला, भेंगा, ऐंसाताना,  
पेंसीदा ।

तिरपद ( पु० ) तिपाई, तीन पैर की ऊँची चौकी ।

तिरपन ( सं० त्रिपंचाशत्, त्रि=तीन, पंचाशत्=पचास )  
( वि० ) तीन और पचास, ५३ ।

तिरपाल ( पु० ) रोगन लगा हुआ कैलास जो मेंह से चोत्रों की रक्षा करने के लिये अनाज या अन्य वस्तु से भरे बोरो पर डाला जाता है ।

तिरपौलिया ( त्रि=तीन, पोल=दरवाजा ) ( पु० ) तीन दरवाजों का मकान, तिराहा ।

तिरफला ( पु० ) त्रिफला—हर, बहेरा और आँवला; तीन फल की छुरी ।

तिरभंगा ( वि० ) टेढ़ा-मेढ़ा, ऊबड़-खाबड़, तिरछा बाँका ।

तिरभंगी ( पु० ) छंद-विशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम ।

तिरमिरा ( पु० ) चक्रीचोँध, नेत्र का एक रोग-विशेष, दुर्बलता-जनित नेत्र का एक रोग-विशेष, इस रोग में आँख के सामने कभी तारे-से दोखते हैं और झँधरा प्रतीत होता है, पानी के ऊपर के चिकनाईदार चमकते हुए छोटें ।

तिरवाह ( पु० ) नदी का किनारा, ( कि० वि० ) किनारे-किनारे, किनारे से ।

तिरश्चीन ( वि० ) बुरा, पाजो, कुटिल, टेढ़ा, तिरछा ।

तिरस ( कि० वि० ) टेढ़ेपन से, वक्रता से ।

तिरसठ ( सं० त्रिषष्टि, त्रि=तीन, षष्टि=साठ ) ( वि० ) तीन और साठ, ६३ ।

तिरस्कार ( तिरस्=अवज्ञा, या अनादर, क=करना ) ( पु० ) अपमान, अवज्ञा, अनादर, निंदा, घिन, धिक्कार ।

तिरस्कृत ( वि० ) अपमानित, बेहज़त, निरादर ।

तिरस्किया ( तिरस्+क्रिया ) ( लो० ) अनादर, त्याग, अप्रतिष्ठा, पहरावा ।

तिरहुत ( पु० ) मिथिला-देश ।

तिरानवे ( सं० त्रिनवति, त्रि=तीन, नवति=नब्बे ) ( वि० ) नब्बे और तीन, ६३ ।

तिराना ( तिराना ) ( कि० सं० ) तैरना, पैरना, हेजाना ।

तिरासना ( कि० सं० ) दुःख देना, त्रास दिखाना, डराना, भयभीत करना ।

तिरासी ( सं० त्र्यशति, त्रि=तीन, अशति=प्रस्ती ) ( वि० ) अस्सी और तीन, ८३ ।

तिराहा ( पु० ) तिरमुहानी, जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं ।

तिरिया ( सं० स्त्री० ) ( वि० ) नारी, स्त्री, औरत, नेपाल में उत्पन्न होनेवाला एक बाँस-विशेष ।

तिरिया-चरित्र ( सं० स्त्री-चरित्र ) ( पु० ) स्त्रियों के छल-बल, स्त्रियों के क्रूरत्व, स्त्री-स्वभावजन्य विशेषताएँ ।

तिरी-बिरी ( अव्य० ) तितर-बितर, छिन्न-भिन्न, उथल-पुथल ।

तिरेंदा ( पु० ) मछली मारने की बंसो में कटिया से छः-सात अंगुल ऊपर बँधी हुई लकड़ी जो पानी पर तैरती रहती है और जिसके डूब जाने से मछली फँस जाने का बोध होता है ।

तिरोधान ( पु० ) आच्छादन, गुप्त, अंतर्धान ।

तिरोधायक ( पु० ) आड़ करनेवाला ।

तिरोभूत ( वि० ) गुप्त, लुप्त, छिपा हुआ, गायब ।

तिरोहित ( तिरस्=छिपा, धा=रखना ) ( वि० ) छिपा हुआ, गुप्त, लुका हुआ ।

तिरौंझा ( वि० ) तिरछा ।

तिामराना ( कि० अ० ) चौधियाना, लहकना, हिलाना, फड़फड़ाना, पानी पर तैल का तैरना ।

तिर्यक् ( वि० ) टेढ़ा, तिरछा, कुटिल, ( पु० ) पशु, पक्षी ।

तिल ( तिल=चिकना होना ) ( पु० ) एक पौदा अथवा उसका बीज जिससे तेल निकलता है, देह में एक काला चिह्न अथवा बिंदु ।

तिल का ताड़ करना ( मुहा० ) छोटे को बड़ा करना । तिल की ओट पहाड़ ( मुहा० ) छोटी वस्तु को आड़ में बड़ी वस्तु, थोड़े परिश्रम से महान् इष्ट सिद्धि ।

तिल चावले बाल ( मुहा० ) सफ़ेद और काले केश, तिलचौर ।

तिल-भर ( मुहा० ) थोड़ा-सा, ज़रा-सा, रंचमात्र ।

“तिल भर भूमि न सकेउ छोड़ाई” — गो० तु० ३१० ।

तिलक ( तिल=जाना ) ( पु० ) टोका, ललाट में चंदन या केशर या रोज़ी आदि का चिह्न, ( वि० ) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य, जैसे “रघुकुल-तिलक सदा तुम उथपन थापन” अर्थात् रघुवंशियों में प्रधान या श्रेष्ठ ( जानकीमंगल ) गद्दी, विवाह-संबंध स्थिर करने की रीति, माथे पर पहनने का स्त्रियों का भूषण, ग्रंथ की अर्थबोधक व्याख्या या टोका, सेंधा नमक, एक प्रकार का जनाना कुर्ता जिसे मुसलमान स्त्रियाँ पहनती हैं, मूँज का फूल, घोड़े की एक ज़ीन, कोथ का पेड़, गीता पर विस्तृत टीका

करनेवाले महारमा तिलक, इनका पूरा नाम लोक-मान्य बाख्गंगाधर तिलक था, यह भारत में एक अग्रगण्य राष्ट्रीय नेता थे; महाराष्ट्रवाह्यों की एक उपाधि ।

तिलक देना ( मुहा० ) तिलक के साथ धन देना ।

तिलक भोजना ( मुहा० ) तिलक की सामग्री भोजना ।

राज-तिलक ( मुहा० ) गद्दी, राज्याधिकार ।

तिलक लगाना ( मुहा० ) चंदन आदि सुगंधित वस्तुओं का लेपन करना ।

तिलकट्ट ( तिल, कट्ट=कूटा हुआ ) ( पु० ) एक तरह की मिठाई जिसमें तिल कूटकर मिलाते हैं ।

तिलचटा ( पु० ) कौंगुर-विशेष, बाँदा, चपड़ा ।

तिलंगा ( सं० तेलंग, करनाटक-देश ) ( पु० ) तेलंग-देश का वासी, पहले पहल अंगरेजी-सेना में तेलंग अर्थात् इरनाटक-देश के लोग भरती हुए थे इस-लिये अंगरेजी सेना के सब सिपाहियों को तिलंगे कहते हैं ।

तिलंगी ( स्त्री० ) गुड़ी, पतंग, चंग ।

तिलड़ा ( सं० त्रि, प्रा० लड़, लड़ा ) ( पु० ) तीन खड़ का हार ।

तिलमि ( स्त्री० ) चकाचौंध, तिलमिलाहट ।

तिलग ( पु० ) संगतराशों की छेनी, ( वि० ) तीन लवों का ।

तिलस्म ( पु० ) चमत्कार, जादू, इंद्रजाज, करामात ।

तिलहन ( पु० ) वे पौदे जिनकी फलियों में से तेल निकलता है, सरसों, तिल, अरंडी आदि ।

तिलहा ( तैल ) ( वि० ) तेलिया, तेल का, तेलमिश्रित, चिकना, तिलका ।

तिला ( पु० ) तेल-विशेष, खिग-लेपन तेल, मूर्धन्य के दोषों को दूर करने के लिये बनाया हुआ तेल ।

तिलाक ( स्त्री० ) पति और पत्नी का संबंध बिच्छेद, मर्द-औरत का माता टटना ।

तिलांजलि ( पु० ) तिलांबु जो देव, अग्नि और पितरों के अर्थ दिया जाता है ।

तिलावा ( पु० ) तीन पुरवट चकानेवाला बड़ा कुर्छा, राज में पहरेदारों का गरत खगाना, घूमना, रौंद ।

तिलुवा ( तिल ) ( पु० ) तिल के छद्म, तिलवे ।

तिलहा ( पु० ) पक्षि-विशेष, घुग्घू, पंढुकी ।

तिलोकी ( पु० ) छंद-विशेष जिसमें २१ मात्राएँ होती हैं, तीनों लोक का ।

तिलोचन ( पु० ) त्रिलोचन, शंकर, महादेव ।

तिलोत्तमा ( स्त्री० ) स्वर्ग की वेश्या ।

तिलोदक ( पु० ) ( तिल + उदक ) तिल और जल, तर्पण, पितरों का पानी ।

तिलौंछुना ( क्रि० सं० ) तेल छगाकर चिकना करना ।

तिलौंछा ( वि० ) तेलिया रंग या स्वादवाला, जैसे तिलौंछा फल ।

तिलौंदन ( तिल + ओदन ) ( पु० ) कुराछ अर्थात् खिचड़ी ।

तिल्ली ( स्त्री० ) पिजड़ी, झोहा, तिल नाम का अन्न, बाँस-विशेष, छाते की कमानों, तीली ।

तिवारी ( पु० ) तिवारी, त्रिपाठी, ब्राह्मणों का एक वर्ग ।

तिवासी ( वि० ) तीन दिन का बना हुआ, जैसे तिवासी भोजन ।

तिप ( सं० ) ( स्त्री० ) प्यास, पियास ।

तिष्ठना ( क्रि० अ० ) ठहरना, रुकना, विराजना, खड़ा होना, गति-शून्य होना ।

तिसराय ( क्रि० वि० ) तीसरी बार ।

तिसरायत ( तीसरा ) ( पु० ) तीसरा मनुष्य, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच, तिहायत ।

तिसाना ( क्रि० अ० ) प्यासा होना, प्यास लगना ।

तिहत्तर ( सं० तिसमति, त्रि=तीन, सप्त=सत्तर ) ( वि० ) सत्तर और तीन, ७३ ।

तिहरा ( त्राणे=तीन ) ( पु० ) तिलड़ा, ( वि० ) तिगुना ।

तिहवार ( पु० ) त्योहार, पर्व, उत्सव का शुभ दिन ।

तिहवारी ( स्त्री० ) त्योहारों, हनाम-विशेष ।

तिहाई ( सं० तृतीय ) ( स्त्री० ) तीसरा भाग ।

तिहायत ( तीसरा ) ( पु० ) तीसरा मनुष्य, तिसरायत, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच ।

तिहारा ( सं० तव ) ( सर्वना० ) तेरा, तुम्हारा ।

तिहिं ( सर्वना० ) उनको ।

तिहुँ } ( सं० त्रि ) ( वि० ) तीन, तीनों ।  
तिहँ }

तीअन ( स्त्री० ) शाक, भाजी, तरकारी ।

तीकट ( पु० ) नितंब, परचादेश, कटि का पिछला भाग ।

तीकुर ( पु० ) फसल बटाई जिसमें जमींदार तृतीयांश ले लेता है, तिहाई ।

तीक्ष्ण ( तिज=तीखा होना ) ( वि० ) तीखा, चोखा, पैना, तेज, तीव्र, तोता, कबूआ, डस्साही, फुर्तीला, चालाक, तेज, चतुर, प्रवीण, क्रोधो, ( पु० ) गरमी, विष, ह्स्पात छोहा, युद्ध, मृत्यु, शास्त्र, समुद्री नमक, वच्छनाग, महामारी ।

तीक्ष्णकंटक ( पु० ) धतूरा ।

तीक्ष्णकंद ( पु० ) प्याज, पखंड ।

तीक्ष्णकर्मा ( वि० ) निपुण, दक्ष, चतुर, कुशल ।

तीक्ष्णगंध ( पु० ) छोटी इलायची, तुलसी, गंधद्रव्य, कुंदरू ।

तीक्ष्णता ( स्त्री० ) तीव्रता, शीघ्रता, तेज़ी ।

तीक्ष्णताप ( पु० ) शिव, शंभु, अधिक योग करनेवाले महादेव ।

तीक्ष्णदंत ( वि० ) तेज या पैने दाँतवाला ( पु० ) व्याघ्र, सिंह, बाघ ।

तीक्ष्णदृष्टि ( वि० ) तेज दृष्टिवाला, जैसे—चीक, परेवा आदि ।

तीक्ष्णबुद्धि ( वि० ) बुद्धिमान्, कुशाग्र बुद्धिवाला, बुद्धिशाली ।

तीक्ष्णरस ( पु० ) जवाखार, शोरा ।

तीक्ष्णलौह ( पु० ) ह्स्पात, फ़ोखाद, लोह-विशेष ।

तीक्ष्णा ( स्त्री० ) जोंक, मिर्च, मालकँगनी, जता-विशेष, वृक्ष-विशेष, बघ, कंवाच, ( वि० ) नोकीला, पैनी धारवाला, तेज नोकवाला ।

तीखा ( सं० तीक्ष्ण ) ( वि० ) चोखा, पैना, तेज, तीक्ष्ण, तीव्र, तीता, कबूआ, क्रोधो ।

तीखुर ( पु० ) अरारोट, एक वृक्ष-विशेष जो दक्षिण भारत में पैदा होता है ।

तीछन ( वि० ) देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीज ( सं० तृतीया ) ( स्त्री० ) हर पक्ष की तीसरी तिथि ।

तीजा ( पु० ) मुसलमानों की रस्म-विशेष, जिसमें मरने के तीसरे दिन मृतक के संबंधी यथासाध्य ग़रीबों को रोटियाँ बाँटते हैं और कुछ पाठ भी किया करते हैं, हिंदू स्त्रियों का घत-विशेष, ( वि० ) तीसरा, तृतीय ।

तीजिया ( स्त्री० ) श्रावण शुक्ल तृतीया का पर्व, खोहार-विशेष, छोटो तीज ।

तीजे ( वि० ) तीसरा, तीसरे ।

तीत } ( वि० ) तीखा, कबूआ, तीव्र, तीता, चर-तीता } परा, कटु ।

तीतर ( सं० तित्तिरि, तित्ति ऐसा शब्द, रा=लेना ) ( पु० ) एक पखेरू का नाम ।

तीतर के मुँह कुशल } ( मुश० ) जब कि कोई तीतर के मुँह लछुमी } अयोग्य और कमसमझ मनुष्य किसी बात का निर्णय करने के लिये नियत किया जाय तब उस मनुष्य के लिये यह बहावत कही जाती है ।

तीतरी ( स्त्री० ) तितली, चित्रित पंखवाला कीड़ा ।

तीन ( सं० त्रि ) ( वि० ) दो और एक, तीन, ३ ।

तीनतेरह ( बोल० ) तितर-बितर, बँवाडोज, छिन्न-भिन्न, खराब, सत्यानाश, चौपट, तहस-नहस ।

तीनी ( स्त्री० ) तिस्रो का चावल, धान-विशेष ।

तीमारदारी ( स्त्री० ) बीमारों की दहक, रोगी की सेवा-शुभ्रपा ।

तीय ( सं० स्त्री ) ( स्त्री० ) लुगाई, औरत, नारी, स्त्री, भार्या ।

तीयल ( तीय ) ( स्त्री० ) स्त्रियों के कपड़ों का जोड़ा ।

तीर ( तीर=पार हो जाना, वा पूरा करना ) ( पु० ) किनारा, तट, कूख, बाण, ( कि० वि० ) पास, ढिग ।

तीरथ ( पु० ) पुण्यस्थल ।

तीरंदाज ( पु० ) तीर चलानेवाला, निशानेबाज़ ।

तीरंदाज़ी ( स्त्री० ) तीर चलाने की क्रिया, धनु-बिंधा ।

तीरभुक्ति ( स्त्री० ) तिरहुत-भूमि, तीन नदियों—गंगा, गंडकी और कौशिकी—से घिरा स्थान या प्रदेश ।

तीरवर्ती ( वि० ) समीपी, पास रहनेवाला, पड़ोसी, तटस्थ ।

तीरस्थ ( पु० ) नदी पर पहुँचा हुआ वह व्यक्ति जो मरणासन्न हो, किनारे पर स्थित ।

तीर्थ ( वि० ) पारंगत, उत्तीर्थ, पार हुआ, तर, भीगा ।

तीर्थ ( तृ=पार होना ) ( पु० ) पवित्र जगह, पुण्यस्थान, यात्रा की जगह, जैसे प्रयाग, काशी, गया, जगन्नाथ-

पुरी आदि विशेषकर वह जगह जिसके पास पवित्र नदियाँ ( जेमे गंगा, यमुना आदि ) बहती हों और उनके आसपास की जगह, चरणामृत, यज्ञ, मंत्र, अग्नि, ईश्वर, माता-पिता, शास्त्र, अध्वर, क्षेत्र, उपाय, नारी-रज, अवतार, घाट, ऋषि-सेवित, जल, पात्र, उपाध्याय, उपदेशक, योनि, दर्शन, विप्र, आगम, संन्यासियों की उपाधि-विशेष, ब्राह्मण का दाहना हाथ [ दाहने अंगुष्ठ का ऊरी भाग ब्रह्मतोर्थ, अंगुष्ठ और तर्जनी का मध्य भाग पितृतोर्थ तथा कनिष्ठा का निचला भाग प्रजापत्य तोर्थ, एवं उँगलियों का अग्रभाग देवतोर्थ कहा जाता है ]

तीर्थकर ( पु० ) जैनियों के चौबीस अवतार, धर्माचार्य अथवा अवतार ।

तीर्थध्वान्त ( पु० ) तीर्थकाक, तीर्थ में रहनेवाले काक-प्रकृति के मनुष्य, भ्रष्टा-भक्तिहीन तीर्थ-यात्री ।

तीर्थपर्यटन ( पु० ) तीर्थ-भ्रमण ।

तीर्थपार ( पु० ) विष्णु ।

तीर्थपादीय ( पु० ) श्रीवैष्णव ।

तीर्थराज ( तीर्थ+राजा ) ( पु० ) तीर्थों का राजा, प्रयाण, हज़ाहावाद ।

तीर्थिक ( पु० ) पंडा, बौद्ध-धर्म-द्रोषी ब्राह्मण ।

तीली ( सं० तली ) ( स्त्री० ) सीक, सलाई, तूली, पिंडकी ।

तीवर ( पु० ) बहेलिया, मछुआ, व्याधा, समुद्र, वर्ण-संकर ।

तीव ( तीव्=मांटा होना, वा तित्=तेला होना ) ( वि० )

तीखा, तीक्ष्ण, तीता, चरपरा, बहुत कड़ुआ, अत्यंत, अपरा ।

तीव्रकंड ( पु० ) सूरन, जमीकंद ओला ।

तीव्रगंधा ( स्त्री० ) अजवाइन ।

तीव्रज्वाला ( स्त्री० ) धन का पुष्प जिसके स्पर्शमात्र से शरीर में घाव हो जाते हैं ।

तीव्रा ( स्त्री० ) तुलसी, अजवाइन, राई, दूब ।

तीस ( सं० त्रिंशत् ) ( वि० ) बीस और दश, ३० ।

तीसरा ( सं० तृतीय ) ( वि० ) तीजा, तिहायत ।

तीसी ( सं० पत्सी ) ( स्त्री० ) अलसी, असी ।

तुअना ( कि० अ० ) चूना, टपकना, गिर पड़ना ।

तुई ( सर्व० ) तू, ( स्त्री० ) बेछ, चैन ।

तुक ( स्त्री० ) दोहे-चौपाई आदि छंद में पद के अंत के अक्षरों का मित्रान, यमक, जमक, काक्रिया, खंड, भाग, संबंध, छंद का एक पद ।

तुकवंदी ( स्त्री० ) दोषपूर्ण कविता, तुक जिस कविता में केवल तुक हो, भाव चमत्कार आदि कुछ न हो ।

तुकली } ( स्त्री० ) छोटी गुड्डी, छोटी पतंग, कीट-  
तुकल } विशेष ।

तुका ( पु० ) गाँसी-रहित तीर या गाँसी के स्थान पर धुंडी के समान बना तीर ।

तुकांत ( पु० ) काक्रिया, अनुप्रासांत ।

तुकारना ( कि० अ० ) तू-तू करके पुकारना, तिरस्कार के साथ संबोधन करना ।

तुकड़ ( पु० ) तुकवंदी या नियम-रहित कविता करने-वाला, भद्दा कवि, जिसकी कविता में काव्य-नियम का भंग हो ।

तुका ( पु० ) टोछा या छोटी पहाड़ी, सोधी खड़ी वस्तु, तीर जिसमें गाँसी के स्थान पर धुंडी बनी हो ।

तुख ( पु० ) छिड़का, भूसी, चोकर ।

तुग ( तुच्=बचाना, वा दृढ़ होना ) ( वि० ) ऊँचा, लंबा, ( पु० ) एक पेड़ का नाम, पहाड़ ।

तुंगभद्रा ( स्त्री० ) एक नदी का नाम जो मैसूर में है ।

तुच्छ ( तुद्=दःख से, छो=काटना ) ( पु० ) तूतिया, नीलाधोधा, नील का वृक्ष या पीदा, पुवाल, तुस, ( वि० ) नीचा, नीच, शून्य, छुछा, निरफल, अवज्ञा करने योग्य, घृणा के योग्य, अधम, हलका, निकम्मा, ओछा, पोला, निरस ।

तुच्छता ( स्त्री० ) नीचता, कमीनापन, ओछापन, हीनता ।

तुट ( पु० ) संग्राम, टूट-फूट ।

तुड़ाना ( कि० अ० ) बड़कना, तोड़ना, छोरना, दाम घटाना ।

तुंड ( तुड्=तोड़ना ) ( पु० ) मुख, टोंट, वोटरी, नोक, घोंच, शिव, राक्षस-विशेष ।

तुंडकेरी ( पु० ) मुँह में होनेवाला एक रोग-विशेष ।

तुंडि ( स्त्री० ) नाभि, चंचु, मुख ।

तुतराना } ( कि० अ० ) हिचक-हिचक के बोझना,  
तुतलाना } हकलाना, अटक-अटक के बोझना,



अधूरा बोलना, साक़ नहीं बोलना, जैसे छोटे  
बाळक बोलते हैं ।

तुतिया ( स्त्री० ) तूतिया, उपधातु-विशेष, विष-विशेष,  
नीलाथोथा ।

तुतुही ( स्त्री० ) टोंटीदार छोटा जोटा ।

तुन ( पु० ) नंदीवृक्ष, वृक्ष-विशेष जो उत्तरीय भारत में  
होता है ।

तुनकी ( स्त्री० ) एक प्रकार की पतली रोटी ।

तुनतुनाना ( कि० स० ) सूक्ष्म स्वर से बजाना, सितार  
आदि बजाना ।

तुंद ( पु० ) जठर, पेट, उदर ।

तुंदिल ( वि० ) तोंदिल, लंबोदर, बड़े पेटवाला ।

तुन्न ( पु० ) तुनवृक्ष-विशेष ।

तुन्नवाय ( पु० ) दरज़ी, सूचोकार, कपड़े सीनेवाला ।

तुपक ( स्त्री० ) छोटी बंदूक, पिस्तौल ।

तुफ़ान ( पु० ) आँधी, आंधव, आँधी-पानी ।

तुम ( सं० त्वम् ) ( सर्वना० ) मध्यम पुरुष का बहु-  
वचन ।

तुमाना ( कि० स० ) धुनवाना, पिजाना ।

तुमुल ( पु० ) अत्यंत रोमहर्षण युद्ध, घोर युद्ध, बहेड़े  
का वृक्ष ।

तुंबरी ( स्त्री० ) बीन, बीणा ।

तुंवा ( पु० ) सूखा लउआ या लौकी, जिसकी तुमड़ी  
साधु लोग बनाते हैं, तूँवा ।

तुंबिया ( स्त्री० ) कमंडल, करवा ।

तुंवी ( स्त्री० ) मदारी की वंशो ।

तुंबुर ( पु० ) तेंबूरा नाम गंधर्व ।

तुरई ( स्त्री० ) एक तरकारी का नाम, तरीई ।

तुरक ( पु० ) तुर्क, देश-विशेष, तुरकदेशवासी ।

तुरकटा ( पु० ) मुसलमानों के रहने का स्थान, मुसल-  
मानों के लिये एक अपमानजनक संबोधन ।

तुरग { ( तुर=वेग से, रम्=जाना ) ( पु० ) घोड़ा,  
तुरी } चित्त, मन, अंतःकरण ।

तुरग-ब्रह्मचर्य ( पु० ) न मिलने के कारण स्त्री-त्याग ।

तुरगी ( स्त्री० ) घोड़ी, अरवगंधा ।

तुरंग { ( तुर=वेग से, रम्=जाना ) ( पु० ) घोड़ा,  
तुरंगम } तुरग, अरव, वाजो ।

तुरंगाहा ( स्त्री० ) औषध-विशेष, असगंध, अरवगंधा ।

तुरत } ( सं० त्वरित, त्वर=त्वरदा करना ) ( कि०  
तुरंत } वि० ) भटपट. तुरत-फुरत, शीघ्र, जल्दी,  
अभी ।

तुरपन ( तुरपना ) ( स्त्री० ) एक तरह का टाँका लगाना,  
सिलाई-विशेष ।

तुरपना ( कि० स० ) सीना, टाँकना ।

तुरमनी ( स्त्री० ) बाज, पक्षी-विशेष, क्रूर पक्षी ।

तुरही } ( सं० तूर्ण ) ( स्त्री० ) रणसिंगा, नफोरी,  
तुरी } सहनाई, करनाई, नरसिंहा ।

तुरा ( स्त्री० ) शीघ्रता, त्वरा, जल्दी, ( पु० ) घोड़ा,  
मन, चित्त, शीघ्रगामी ।

तुराई ( स्त्री० ) सेज, शय्या, तोशक, बिछौना ।

तुराना ( कि० अ० ) घबड़ाना, शीघ्रता करना, आतुर  
होना, फुर्ती करना ।

तुरी ( स्त्री० ) जुलाहों का एक औज़ार, तोरिया, तुरिया,  
हथी, जुलाहों की कूँची, घोड़ी, बाग, लगाम,  
फूलों या मोतियों का झंडा, ( वि० ) वेगवती,  
वेगवाली ।

तुरीय ( चतुर्=चार ) ( वि० ) चौथा, ( पु० ) निर्गुण  
ब्रह्म, ( स्त्री० ) जीव की एक अवस्था ।

तुरीयंत्र ( पु० ) सूर्य की गति का ज्ञान करानेवाला  
यंत्र-विशेष ।

तुरुप ( पु० ) ताश का एक खेल, सेना का एक समूह,  
जो एक लीडर के अधीन हो ।

तुरुपना ( कि० स० ) दुहरा कर सीना, तुरपना ।

तुर्याश्रम ( पु० ) चौथा आश्रम, संन्यास आश्रम ।

तुरी ( पु० ) लच्छेदार बालों की लट, कलंगी, झंडा,  
खच्छा, कुंदना, पत्तियों के सिर की शिखा, किनारा,  
छाजा, चाबुक, दुष्ट-विशेष ।

तुल { ( सं० तुल्य ) ( वि० ) बराबर, समान ।

तुल कर खड़े होना ( बोल० ) लड़ने के लिये आमने-  
सामने खड़े होना ।

तुलना ( सं० तुलन, तुल=तोलना ) ( कि० अ० ) तोला  
जाना, उपमा, बराबर होना, लड़ने की खड़े होना,  
अनुमान करना, ( स्त्री० ) मिज्ञान, उपमा, मान,  
वर्जन, गणना ।

तुलवाई ( स्त्री० ) तौलने की मजूरी ।

तुलसिका } (तुला=बराबरी, अर्ध=फेंकना, अर्थात्  
तुलसी } जिसके बराबर सृष्टि में कोई नहीं) एक  
पौदे का नाम ।

तुलसी } (पु०) हिंदी-रामायण के कर्ता, स्वनाम-  
तुलसीदास } धन्य कवि । (विशेष के लिये भा०  
च० देखें)

तुला (तुल=तोलना) (स्त्री०) बराबरी, तराजू, सातवीं  
राशि (ज्योतिष में) ।

तुलाकोटि (स्त्री०) लकड़ी की टंडी के दोनों किनारे,  
तौल-विशेष, अरब की संख्या, नुपुर, बिछिया,  
बिछुआ ।

तुलादान (पु०) दान-विशेष जो मनुष्य के मान के  
बराबर दिया जाता है ।

तुलाधार (तुला+आधार) (पु०) वैश्य, बनिया, बकाज,  
तुला-राशि, तराजू के पलड़े बाँधनेवाली रस्सी ।

तुलापरीक्षा (स्त्री०) दोषी या निर्दोष होने की दिव्य  
परीक्षा ।

तुलायंत्र (स्त्री०) तराजू, तखरी, तकड़ी ।

तुलित (वि०) तौला हुआ ।

तुली (स्त्री०) तुलिक, चित्र बनाने की कलम, बत्ती ।

तुल्य (तुल=तोलना, वा तुलना) (वि०) बराबर,  
समान, सट्टा, सम ।

तुल्ययोगिता (स्त्री०) अलंकार-विशेष ।

तुघर (पु०) अरहर जिसकी दाढ़ होनी है ।

तुघरी (स्त्री०) फिटकरी, औषध-विशेष ।

तुप (पु०) भूसी, छिड़का, चोकर ।

तुपानल (पु०) घाम-फूँस की आग, भूमी की आग  
जो प्रायश्चित्त विशेष के अर्थ की जाती है ।

तुपार (तुप=प्रमत्त करना, वा होना) (पु०) शीत,  
पाखा, हिम, बर्फ़, ओस, (वि०) ठंडा ।

तुपित (पु०) स्वर्ग-विशेष, विष्णुभगवान्, गण देवता-  
विशेष ।

तुष्ट (तुप=प्रमत्त होना) (पु०) तृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न,  
आनंद, हर्षित, साबिर ।

तुष्टि (तुप=प्रमत्त होना) (स्त्री०) तृप्ति, संतोष, आनंद,  
प्रसन्नता ।

तुसी (स्त्री०) भूषी, चोकर ।

तुहमत (स्त्री०) आकृत, दिक्कत, मुसीबत, पेच, लांछन ।

तुहिन (तुह=मारना, वा हानि पहुँचाना) (पु०) पाखा,  
बर्फ़, हिम, चाँदनी रात ।

तृ (सं० त्वम्) (सर्वना०) मध्यम पुरुष, एकवचन ।

तृ कारना (क्रि० प्र०) गाली देना, अपमानित करना,  
अनादर करने की इच्छा से तू-तू कहना, तुकारना ।

तृठना (क्रि० प्र०) अघाना, तृस होना, राज़ी होना,  
अफरना ।

तृथ्यों (वि०) संतुष्ट, तृप्त, तृष्णा-रहित ।

तृण } (तृण=भरना, वा सिकुड़ना) (पु०) भाथा,  
तृणीर } तर्कश, तोर रखने की पेटी, निपंग ।

तूतक (सं० तु+तृ, तृथ=फैलाना, वा ढकना) (पु०)  
तूतिया } नीलाधोधा ।

तूती (स्त्री०) तोती, छोटा तोता, एक पक्षी-विशेष,  
तुरई नाम का बाजा, बच्चों के खेलने की टोंटीदार  
मिट्टी की घरिया, शान, वैभव ।

तूती का पढ़ना (पढ़ा०) मधुर स्वर में बोलना ।

तूती बोलना (पढ़ा०) छूब चलता होना; नकारझाने  
में तूती की आवाज़ कौन सुनता है (पढ़ा०) शोर में  
धीरे से कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती ।

तूतू (पु०) कुत्ते को पुकारने का शब्द ।

तून (सं० तुव, तुर्=पीड़ा देना) (पु०) एक पेड़ का  
नाम, जिसकी लकड़ों की मेज़ कुरसी आदि बनती  
हैं उसके फूल पीले होते हैं जिससे कपड़े रंगे जाते  
हैं, “पीपर पती तून तज” — कोई कवि ।

तूना (क्रि० प्र०) टपकना, झड़ना, चूना, गिरना, पतन  
होना, गर्भपात होना ।

तूफ़ान (पु०) दंगा, क्रवाद, भगड़ा, बखेड़ा, डुबा  
देनेवाली बाढ़, आँधी-मैह का एक साथ आगमन,  
प्रलय, हलचल, तूलतवील, मुसीबत ।

तूफ़ाम करना (पढ़ा०) झूठा दोष लगाना ।

तूचर (पु०) रस-विशेष, (वि०) कपाय, कसैला ।

तूचरी (स्त्री०) तुंभी, नोंबी ।

तूमनड़ाक (स्त्री०) सज्जज, बनावट, शानशौक ।

तूमना (क्रि० स०) उधेड़ना, पृथक्-पृथक् करना, दलना,  
रहस्य प्रकट कर देना, बात खोज देना, रुई को इस  
प्रकार नोचना कि रेशे निकल आवें ।

तूमरी (स्त्री०) मगर की खोपड़ी, कुंभीर का कपाज ।

तूमिया (पु०) रुई धुननेवाला, धुनी हुई रुई का सूत ।

तूम्ना ( कि० स० ) हाथ से रुई सुधारना ।  
 तूधा ( सं० तुम्ब, तुवि=भाँगना ) ( पु० ) तुं बा, एक तरह का बरतन जिसमें साधु लोग पानी रखते हैं ।  
 तूरान ( पु० ) देश-विशेष ।  
 तूरानी ( स्त्री० ) तूरान देश की भाषा या वहाँ की स्त्री, ( पु० ) वहाँ का निवासी, तूरान-संबंधी ।  
 तूरी ( वि० ) समान, तुल्य, ( स्त्री० ) तुरही, एक बाजा ।  
 तूर्ण ( तूर् वा त्वर्=जल्दी करना ) ( कि० वि० ) झटपट, तुरंत, शीघ्र ।  
 तूर्य ( पु० ) नगाड़ा, भेरी, दुंदुभी, ( वि० ) चार की संख्या पूर्ण करनेवाली संख्या, तुरीय, चतुर्थ ।  
 तूल ( तूल=निकालना, वा भरना ) ( स्त्री० ) रुई, निर्बीज रुई, ( पु० ) बिनीला, सीमा, आकाश, शहतूत ।  
 तूलना ( कि० स० ) धुरी में तेज देने के लिये पहिए को निकालकर गाड़ी को किसी लकड़ी के सहारे ठहराना, उठाना, पहिए की धुरी को चिकना करना ।  
 तूला ( स्त्री० ) कपास, बिनीले सहित रुई ।  
 तूली ( तूल=भरना ) ( स्त्री० ) चितरे की कूँची, तीली, सीक ।  
 तूवर } ( पु० ) राजपूतों की एक जाति, सींग-रहित  
 तूँवर } बैल, अरहर ।  
 तूष्णीम् ( तूप्=तोष करना, वा संतुष्ट होना ) ( कि० वि० ) चुपचाप, मौन, खामोश ।  
 तूस ( पु० ) भूसा, ऊन-विशेष, पशमीना ।  
 तूसी ( वि० ) करंजई रंग का ।  
 तूख ( पु० ) जायफल ।  
 तूखा ( स्त्री० ) तूषा, छाछसा, प्यास ।  
 तूण ( तूह=नाश करना ) ( पु० ) घास, चारा, घासफूस, तिनका, खर ।  
 तूणकुटी ( स्त्री० ) घास की बनी झोपड़ी ।  
 तूणराज ( पु० ) नारियल, नारियल का पेड़, उख, ताजवृक्ष ।  
 तूणघत् ( तूण=तिनका, वत्=बराबर ) ( वि० ) तिनके के बराबर, तुच्छ, हलका, सार-रहित, निकम्मा, उठ्ठा ।  
 तूणोदक ( पु० ) घास और पानी, पशुओं का भोजन ।

तृतीय ( त्रि=तीन ) ( वि० ) तीसरा ।  
 तृतीया ( तृतीय ) ( स्त्री० ) तीसरी तिथि ।  
 तृपुंड्र ( पु० ) त्रिपुंड्र, तिलक-विशेष, तीन धारी का बँदा तिलक, जैसा शैव जगते हैं ।  
 तृपुर ( पु० ) एक दैत्य के नगर का नाम, त्रिपुर ।  
 तृप्त ( तृप्=तृप्त होना ) ( वि० ) संतुष्ट, हर्षित, आनंदित, सुखी ।  
 तृप्ति ( तृप्=तृप्त होना ) ( स्त्री० ) संतोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना ।  
 तृफला ( स्त्री० ) त्रिफला, तीन फल - हर, बहेड़ा और आंवला ।  
 तृवेनी ( स्त्री० ) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम, त्रिवेणी ।  
 तृभुवन ( पु० ) त्रिभुवन, तीन लोक, त्रिलोक, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।  
 तृत्य ( स्त्री० ) स्त्री, युवती, त्रिया ।  
 तृविक्रम ( पु० ) त्रिविक्रम, भगवान् का वामन अवतार, वामन ।  
 तृप् } ( तृप्=प्यासा होना ) ( स्त्री० ) पियास, प्यास,  
 तृपा } तृष्णा, पिपासा ।  
 तृषार्त्त ( तृषा=पियास, आर्त्त=घबराया हुआ ) ( वि० ) पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।  
 तृषार्त्त ( तृषा=पियास, वन्त=वाला ) ( वि० ) पियासा, प्यासा ।  
 तृपित ( तृषा ) ( वि० ) पियासा, प्यासा ।  
 तृष्णा ( तृप्=प्यासा होना, वा लोभ करना ) ( स्त्री० ) पियास, प्यास, लोभ, जालज, चाह, इच्छा, जालसा, जो वस्तु न मिली हो उसकी चाह ।  
 तृसूल ( पु० ) त्रिसूल, महादेवजी का मुख्य अस्त्र ।  
 ते ( सर्वना० ) वे, तेरा ।  
 ते } ( प्रत्य० ) से, लेकर ।  
 तेनालीस ( सं० त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस ) ( वि० ) चालीस और तीन, ४३ ।  
 तेज ( सं० तेजस्, तैज=तीला होना ) ( पु० ) प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, आग, तीक्ष्णता ।  
 तेजपात ( सं० तेजपत्र, तेज=ताला, पत्र=पत्ता ) ( पु० ) तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।

तेजमान } ( सं० तेजस्विन् ) ( वि० ) प्रतापी, ऐश्वर्य-  
तेजयन्त } वान् ।

तेता ( सं० तावत् ) ( क्रि० वि० ) तितना, उतना ।

तेतो ( क्रि० वि० ) तितना ।

तेंदुवा ( पु० ) चीता, बाघ ।

तेरस् ( सं० त्रयोदश ) ( स्त्री० ) तेरहवीं तिथि ।

तेरह ( सं० त्रयोदश ) ( वि० ) तीन और दश, १३ ।

तेरुस ( सं० तृतीय ) ( पु० ) तीसरे बरस ।

तेल ( सं० तैल ) ( पु० ) तिल से निकला हुआ चिकना पदार्थ ।

तेल चढ़ाना ( बोल० ) व्याह में दुलहा और दुलहिन के सिर व कंधे और हाथ-पैरों में तेल और हथी मलना ( यह व्याह का एक रीति है ) ।

तेलहन ( पु० ) दाने या बीज जिनसे तेल निकलता है ।

तेलिन ( स्त्री० ) तेली की लुगाई ।

तेलिया ( सं० तैल ) ( वि० ) एक प्रकार का रंग, तेल के समान चिकना या चमकीला, ( पु० ) कृष्ण, काळा, चिकना और चमकीला, छोटी मछली-विशेष, एक प्रकार के घोड़े का रंग-विशेष, सींगिया विप, बबल-विशेष ।

तेलियाकुमैत ( पु० ) काळापन लिये हुए जाख रंग का घोड़ा ।

तेली ( सं० तैली ) ( पु० ) तेल बेचनेवाला ।

तेवर ( पु० ) कुपित निगाह, क्रोधित दृष्टि, क्रोधयुक्त चितवन ।

तेवराना ( क्रि० प्र० ) भ्रम में पड़ना, अचेत होना, खोरी चढ़ाना ।

तेवरी ( स्त्री० ) घुबकी, धमकी, फिड़की, खोरी, निगाह, चितवन, दृष्टि ।

तेवरी चढ़ाना ( बोल० ) घुबकना, आँख दिखाना, भौं चढ़ाना ।

तेवहार ( पु० ) पर्व, उत्सव, मेला ।

तेवाना ( क्रि० प्र० ) चिन्ता करना, अकसोस करना, क्रिंक करना ।

तेह } ( पु० ) क्रोध, कोप, गुस्सा, रिस, झँझ ।  
तेहा }

तेहर ( पु० ) झियों के पौंस का गहना ।

तेहि ( सर्वना० ) उसने, उसको, उनको, तिससे, उससे ।

तैं ( क्रि० प्र० ) से ।

तैंयो ( क्रि० वि० ) तो भी, तऊ, तब भी ।

तैत्तिरीय ( स्त्री० ) यजुर्वेद की शाखा-विशेष, ( पु० )

शुक्ल यजुर्वेद का विद्वान्, यजुर्वेदज्ञ ।

तैनात ( वि० ) नियुक्त, नियत, मुकर्रर ।

तैनाती ( स्त्री० ) नियुक्ति, मुकर्ररी ।

तैयार ( वि० ) व्यवस्थित, उद्यत, मौजूद ।

तैरना ( सं० तरण ) ( क्रि० प्र० ) हेड़ना, पैरना, तरना, पार जाना, पानी पर चढ़ना ।

तैलंग ( पु० ) कर्णाटक देश ।

तैलद्रोणी ( स्त्री० ) एक प्रकार की लकड़ी का बरतन जिसमें तेल भरकर रोगी का इलाज के लिये छिटाते हैं ।

तैलफल ( पु० ) बहेड़ा, इंगुदी ।

तैलमाली ( स्त्री० ) बत्ती, पखीता, तेलवत्ती ।

तैलयंत्र ( पु० ) कोहू ।

तैलाक ( वि० ) तेल लगा हुआ, तैलपूर्ण ।

तैलाटी ( स्त्री० ) भिड़, बर ।

तौंद ( सं० तुंद, तुण्=स्ताना ) ( स्त्री० ) बड़ा पेट, पेट की फुलावट ।

तौंदैल } ( तौंद ) ( वि० ) बड़े पेटवाला ।  
तौंदैला }

तोटक ( पु० ) वर्णवृत्त-विशेष जिसमें चार सगण होते हैं ।

तोटका ( पु० ) टोटका, डोना, तांत्रिक प्रयोग-विशेष ।

तोड़ ( तोड़ना ) ( पु० ) टूट, फूट, खंडन, नदी का वेग, दही का पानी ।

तोड़जोड़ ( बोल० ) काटछाँट, काटकूट, बात को ठीक-ठाक करके बोलना ।

तोड़ डालना ( बोल० ) तोड़ना और नाश करना, गिराना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

तोड़ देना ( बोल० ) तोड़ना, बिगाड़ना ।

तोड़ना ( सं० त्रीटन, त्रुट=तोड़ना ) ( क्रि० प्र० ) फोड़ना, फाड़ना, टुकड़े करना, रुपया भुनाना, खींच लेना, ( पेड़ से फूल, फल आदि ) ।

तोड़ लेना ( बोल० ) खींचना, नोचना, खींच लेना ( जैसे पेड़ से फल, फूल आदि ) ।

तोड़ा ( पु० ) कमो, घटो, हज़ार रूपों की थैली,  
पछोता, रस्सी का टुकड़ा, सिंकली, पाँव में पहनने  
का गहना ।

तोड़ी ( स्त्री० ) सरसों-विशेष ।

तोतला ( वि० ) हकला, खड़बड़हा ।

तोता ( पु० ) सुगा, सुभा, सुगा, बंदूक का घोड़ा ।

तोताचश्म ( पु० ) निर्दयी, बेरहम, भट से प्रेम हटा  
लेनेवाला, स्वार्थी, बेमुरध्वत ।

तोताचश्मी ( स्त्री० ) बेवफाई, निष्प्रेयता, बेमुरध्वती ।

तोती ( स्त्री० ) अविवाहिता स्त्री, रखनी, तोते की  
मादा ।

तोप ( पु० ) अस्त्र-विशेष ।

तोपना ( क्रि० स० ) ठकना, छिपाना, गाड़ना, मूँदना ।

तोबड़ा ( पु० ) थैली जिसमें घोड़ा दाना खाता है ।

तोमर ( तु=नश करना, और मृ=मारा जाना, वा तो=गए  
हुए, तु=जाना और मृ=मारा जाना अर्थात् जो उसके  
सामने जाते हैं वे मारे जाते हैं ) ( पु० ) बरछी, साँगी,  
एक शस्त्र का नाम, १२ मात्राओं का छंद-विशेष,  
क्षत्रियों की जाति-विशेष ।

तोय ( तु=जाना, या बढ़ना या तु=पूर्णता, तु=भरना और  
या=जाना अर्थात् जो हर एक चीज को भर देता है )  
( पु० ) पानी, जल, नीर, बारि, नक्षत्र-विशेष,  
पूर्वाषाढ़ ।

तोयद ( तोय=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० )  
बादल, मेघ घटा, जलदान करनेवाला व्यक्ति, वृत्त,  
घो, नागरमोथा ।

तोयधर ( तोय=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० )  
बादल, मेघ, घन ।

तोयधि ( पु० ) सागर, समुद्र, जलधि ।

तोयनिधि ( तोय=पानी, निधि=खजाना ) ( पु० ) समुद्र,  
सागर, समंदर ।

तोयाशय ( पु० ) जलस्थान, तबाग आदि ।

तोर ( सर्वना० ) तेरा, तुम्हारा ।

तोरण ( तुर=जल्दी करना ) ( पु० ) घर के द्वार के बाहर  
सिंह के आकार का जो व्याह में अथवा और कोई  
उत्सव में बाँधा जाता है, फूलों की माला जो पर्व  
अथवा किसी उत्सव में फाटक पर बाँधी जाती है,  
बंदनवार, कंठ, शंभु, महादेव, कंठी, कधरा ।

तोरावान् ( वि० ) वेगशील, तीव्र, तेज़ ।

तोरिया ( स्त्री० ) गोटा-किनारी जपेटने का बेलन या  
झकड़ी ।

तोल } ( सं० तुल=तौलना ) ( पु० ) माप, जोख,  
तौल } नाप ।

तोलक ( पु० ) तोळा, तौलवेया, बटखरा, बाँट, बारह-  
माशे भर ।

तौलन ( पु० ) तौलने या उठाने की क्रिया, वह झकड़ी  
जो छत के नीचे सहारे के लिये लगाई जाती है ।

तोला ( सं० तुल=तौलना ) ( पु० ) बारह माशे की  
तौल ।

तोशक ( स्त्री० ) गुदगुदा बिछौना, रुई का गद्दा ।

तोशाखाना ( पु० ) राजा-महाराजाओं के बहुमुख्य  
बस्त्र और आभूषणों का भंडार ।

तोष ( तुप्=प्रसन्न होना ) ( पु० ) संतोष, हर्ष, आनंद,  
प्रसन्नता, हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि ।

तोषक ( तुप् + अक ) ( पु० ) तृप्तिकारक, संतोष-  
दायक, प्रसन्न करनेवाला ।

तोषण ( पु० ) तृप्ति, संतोष, शांति, आनंदकरण ।

तोड़फा ( पु० ) भेंद, उपहार, सौगात, ( वि० ) उम्दा,  
श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया, अच्छा ।

तोहमत ( स्त्री० ) झूठा कलंक, असत्य अभियोग,  
मिथ्यावाद ।

तोहि ( सर्वना० ) तुझको, तुम्हें ।

तौजा ( पु० ) विवाहादि में धूर्च के लिये खेतिहारों  
को पेशगी दिया हुआ धन, धियाही, ( वि० )  
हाथ उधार ।

तौन ( सर्वना० ) वह, सो, ( स्त्री० ) गाय बुढ़ने समय  
बछड़े के अगले पैर में बाँधने की रस्सी ।

तौर ( पु० ) यज्ञ-विशेष, चाखडाल, ( अर्थ० ) प्रकार,  
भाँति ।

तौरंत ( पु० ) यहूदियों का प्रधान धार्मिक ग्रंथ, जिसमें  
सृष्टि और आदम की उत्पत्ति आदि का हाल है ।

तौर्य ( पु० ) ढोख, मजीरा आदि बाजा ।

तौर्यत्रिक ( पु० ) नाच-गाना और बाजा आदि ।

तौल ( पु० ) तुलारामि, तराजू, तोख, माप, वज़न ।

तौलना ( सं० तुल=तौलना ) ( क्रि० स० ) जोखना, तौल  
करना, वज़न करना ।

तौला (पु०) दूध नापने का मिट्टी का बर्तन, बया,  
अनाज तौलनेवाला, कमोरा, महपू की शराब ।  
तौलिया (स्त्री०) मोटा गमछा, जिससे देह पोछते हैं ।  
तौसना (क्रि० अ०) गरमी से घबड़ाना ।  
तौहीन (स्त्री०) अपमान, अपमिष्टा, अनादर ।  
त्यक्त (त्यज्=छोड़ना) (वि०) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।  
त्याग (त्यज्=छोड़ना) (पु०) छोड़ना, तजना, दान,  
विरक्ति, वैराग्य, उत्सर्ग, विसर्जन ।  
त्यागना (गं० त्याग) (क्रि० ग०) छोड़ना, तजना,  
त्याग करना ।  
त्यागशील (वि०) दाता, दानी, कथ्याज्ञ ।  
त्यागी (त्यागिन, त्याग) (वि०) छोड़नेवाला, वैरागी,  
उदार, दाता, विरक्त ।  
त्याजित (वि०) छोड़ा हुआ, विसर्जित ।  
त्याज्य (वि०) त्यागने योग्य, छोड़ने लायक ।  
त्यौं (क्रि० वि०) उस भाँति, उस प्रकार ।  
त्योरी (स्त्री०) निगाह, दृष्टि, चितवन, घुड़की, धमकी ।  
त्योरी चढ़ाना (पु०) क्रोध करना, गुस्से होना ।  
त्योरस (पु०) गत या आगामी तीसरा वर्ष ।  
त्योहार (पु०) उत्सव का दिन, पर्व का दिन ।  
त्योहारी (स्त्री०) त्योहार के दिन दी जानेवाली  
वस्तु या द्रव्य ।  
त्यौराना (क्रि० अ०) मिर घूमना, दिमाग में चक्कर  
घमाना ।  
त्यौंरी (स्त्री०) घुड़की, धमकी, चितवन, क्रोधाभास ।  
अपा (स्त्री०) लज्जा, कीर्त्ति, यश, ख्याति, व्यभिचा-  
रिणी स्त्री, हया ।  
अपाक (वि०) लज्जालु, लज्जाशील ।  
अपित (अप् + इत्, अप्=लज्जाना) (वि०) लज्जित,  
शर्माया हुआ ।  
अपिष्ठ (वि०) अत्यंत लज्जित, सलज्ज ।  
अपु (पु०) सीसा, रौंदा ।  
अपुरी (स्त्री०) छोटी हलायची ।  
अय (वि०) तीन, तीसरा ।  
अय गंगा (स्त्री०) तीन गंगा भार्गवरी, मंदाकिनी  
और प्रभावती ।  
अय ताप (स्त्री०) तीन ताप-दैहिक, दैविक और  
भौतिक ।

अयपावक (पु०) तीन अग्नि—आहवनीय, दक्षणाग्नि  
और गार्हपत्याग्नि, अथवा जठरानल, दावानल और  
बढ़वानल ।  
अयी (स्त्री०) तीन वस्तुओं का संग्रह या समूह ।  
अयीधर्म (पु०) वैदिक धर्म ।  
अयोदशी (अय=तीन, दश=दश) (स्त्री०) तेरस,  
तेरहवीं तिथि ।  
असन (पु०) भय, डर, खौफ, व्याकुलता ।  
असना (क्रि० अ०) भयभीत होना, भय से काँपना,  
डरना ।  
अस्त (अप्=डरना, या ऊबना) (वि०) डरा हुआ, डर-  
पोक, भीन, डरोवा, सताया हुआ ।  
आटक (पु०) योग के षट् कर्मों में से छठवाँ साधन ।  
आणु (त्रे=बचाना) (पु०) बचाव, रक्षा, पालन, मुक्ति,  
मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, उद्धार, कवच, लोहे की  
कुर्ती ।  
आणुकर्त्ता (आणु + कर्त्ता) (पु०) बचानेवाला, मुक्ति-  
दाता, उद्धार करनेवाला, मोक्ष देनेवाला ।  
आता (त्रे=बचाना) (पु०) बचानेवाला, रक्षक, आणु-  
कर्त्ता, मुक्तिदाता ।  
आस (अप्=डरना) (पु०) डर, भय, शंका, धाक ।  
आसक (आप् + अक) (पु०) डरवानेवाला, आस  
देनेवाला ।  
आसित (अप्=डरना) (वि०) डरा हुआ, भयान्वित,  
भयभीत ।  
आहि (गं० आहि, त्रे=बचाना) (अव्य०) बचाओ,  
दया करो, हाहाकार, भय छा जाना ।  
आहि-आहि करना (बोल०) विलाप करना, हाय-हाय  
करना, दया के लिये पुकारना, दोष लगाना, बुरा  
कहना ।  
अत्रि (त्रृ=पार होना) (वि०) तीन, ३ ।  
अत्रिक् (पु०) तीन वस्तुओं का समूह, रीढ़ के नीचे का  
भाग, कमर, त्रिकला, त्रिकुट, त्रिमद, तीन रूप  
संकट का सूद या लाभ ।  
अत्रिकटु (अत्रि=तीन, कटु=कड़वी वस्तु) (पु०) सोंठ, मिर्च  
और पीपर ।  
अत्रिकर्मा (वि०) द्विज, जो पढ़े, पढ़ावे और यज्ञ करें ।  
अत्रिकांड (वि०) तीन कोढ़वाला, (पु०) अमर कोष,

निरुक्त का दूसरा नाम, इनमें तीन खंड हैं इसी से इनका नाम त्रिकांड पड़ा है।

**त्रिकालदर्शी** ( त्रि=तीन, काल=समय, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना ) ( पु० ) भूत, वर्त्तमान और भविष्य इन तीनों समय की बात जाननेवाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ, ऋषि, मुनि।

**त्रिकूट** ( त्रि=तीन, कूट=चोटी ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जिस पर लंकापुरी बसी थी, जैसे “गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहाँ रह रावण सहज अशंका” ( तुलसीकृत रामायण )

**त्रिकोण** ( त्रि=तीन, कोण=कोना ) ( पु० ) त्रिकोण, त्रिखूँट, त्रिभुज।

**त्रिगुण** ( त्रि० ) तीन से गुणा हुआ, त्रिगुण, तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, ( स्त्री० ) दुर्गा, माया, तंत्र का एक बीज।

**त्रिजटा** ( स्त्री० ) एक राक्षसी जो विभीषण की बहन थी, अशोकवाटिका में यह सीता की रखवाली करती थी, बेल का पेड़, श्रीफल।

**त्रिज्या** ( स्त्री० ) आधे विस्तार की रेखा, व्यासार्द्ध रेखा।

**त्रिदंड** ( पु० ) वैष्णव संन्यासियों का संन्यास आश्रम का चिह्न-विशेष।

**त्रिदंडी** ( पु० ) संन्यासी, जनेऊ, यज्ञोपवीत।

**त्रिदश** ( त्रि=तीन, दशा=अवस्था अर्थात् १ जन्मना, २ विद्यमान रहना, ३ नाश होना, ये तीन दशा जिनकी हों, अथवा त्रि=तीन, त्रिदश=तीन अर्थात् तैंतीस, यहाँ इस एक ही शब्द का अर्थ दो बार लिया जाता है मुख्य देवता ३३ हैं—१२ सूर्य, ११ रुद्र, ८ वसु और २ विश्वदेव ) ( पु० ) देवता, देव, सुर।

**त्रिदशारि** ( पु० ) राक्षस, अगुर, दैत्य।

**त्रिदशालय** ( पु० ) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत।

**त्रिदशाहार** ( पु० ) अमृत।

**त्रिदशेश्वर** ( पु० ) इंद्र।

**त्रिदिव** ( पु० ) स्वर्ग, आकाश, अंतरिक्ष, सुख।

**त्रिदेव** ( पु० ) ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

**त्रिदोष** ( त्रि=तीन, दोष=बिगाड़ ) ( पु० ) बात, पित्त और कफ का रोग।

**त्रिधा** ( त्रि=तीन, धा=प्रकार अर्थ में प्रत्यय ) ( कि० वि० ) तीन प्रकार से, त्रिविध, तीन ढंग से।

**त्रिनयन** } ( त्रि=तीन नयन वा नेत्र=आँख, अर्थात् तीन त्रिनेत्र } आँखवाला ) ( पु० ) शिव, महादेव।

**त्रिपथ** ( पु० ) धर्म, ज्ञान और उपासना।

**त्रिपथगा** ( स्त्री० ) गंगा।

**त्रिपद** ( पु० ) तिपाई, त्रिभुज, जिसके तीन पद या चरण हों।

**त्रिपदी** ( स्त्री० ) तिपाई, गायत्री, हंसपदी, हाथी बाँधने का रस्सा।

**त्रिपाठी** ( पु० ) तीन वेदों का ज्ञाता, त्रिवेदी, तिवारी।

**त्रिपाद्** ( पु० ) विष्णु, नारायण, ज्वर-विशेष।

**त्रिपादिका** ( स्त्री० ) हंसपदी, लता।

**त्रिपिटक** ( पु० ) बुद्धदेव के उपदेशों का बृहत् संग्रह।

**त्रिपुटी** ( स्त्री० ) छोटी इलायची, निसोथ, तीन वस्तुओं का समूह।

**त्रिपुंड** ( सं० त्रिपुंड्र, त्रि=तीन, पुंड्र=लंकार, पुंड्रि=मलना ) ( पु० ) तीन रेखा का तिलक, शिव और शक्ति मतवालों का तिलक।

**त्रिपुर** ( त्रि=तीन, पुर=नगर ) ( पु० ) बाराणसी का दूसरा नाम, मय दानव निमित्त तीन नगर, एक राक्षस का नाम, जिसे शंकरजी ने भस्म किया था।

**त्रिपुरदहन** ( त्रिपुर=एक राक्षस का नाम, दहन=जलाने-वाला, दह=जलाना ) ( पु० ) शिव, महादेव।

**त्रिपुरांतक** ( त्रिपुर + अंतक, नाश करनेवाला ) ( पु० ) शिव, महादेव।

**त्रिपुरारि** ( त्रिपुर, अरि=वैरी ) ( पु० ) शिव, महादेव।

**त्रिपुरुष** ( पु० ) पिता, पितामह और प्रपितामह, तीन पुरन।

**त्रिफला** ( त्रि=तीन, फल ) ( पु० ) हड़, बहेड़ा और आँवला।

**त्रिबली** ( स्त्री० ) पेट के ऊपर जो तीन बल पड़ जाते हैं, पेट्री।

**त्रिवेणी** ( स्त्री० ) त्रिवेणी; गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है।

**त्रिभंगी** ( त्रि=तीन, भंग=टूटा हुआ ) ( वि० ) टँगड़ी कमर और गरदन को झुकाकर खड़े होने की दशा जैसे “त्रिभंगीछवि” ( स्त्री० ) एक छंद का नाम।

१. “त्रिपुण्ड्रं शिवरूपेण मतीरूपेण बिन्दुकी” ( इति तंत्र-शास्त्रम् )

त्रिभुज ( त्रि=तीन, भुजा=बाहु ) ( पु० ) त्रिकोण, त्रिभूट, त्रिकोण ।

त्रिभुवन ( त्रि=तीन, भुवन=लोक ) ( पु० ) तीनों लोक, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।

त्रिभुवनसुंदरी ( स्त्री० ) पार्वती, दुर्गा ।

त्रिमद ( स्त्री० ) विद्या, धन और परिवार से एक साथ उत्पन्न अथवा अलग-अलग प्रत्येक के कारण उद्भूत अहंकार, मोथा, बायविद्वंग और चीता, इन तीनों का समूह ।

त्रिमधु ( पु० ) ऋग्वेद का एक ग्रंथ, धी, चीनी, शहद ।

त्रिमधुर ( पु० ) धी, चीनी और शहद ।

त्रिमात्रिक ( वि० ) तीन मात्राओंवाला, प्लुत ।

त्रिमुख ( पु० ) शास्त्रमुनि, गायत्री जपने की एक मुद्रा-विशेष ।

त्रिमुखा ( स्त्री० ) मायादेवी, बुद्धदेव की माता ।

त्रिमुनि ( पु० ) पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि ।

त्रिमुहानी ( स्त्री० ) तीन मार्गों का मिलान, जहाँ तीन मार्ग मिले हों ।

त्रिमूर्ति ( पु० ) ब्रह्मा, विष्णु और शिव, सूर्य, ( स्त्री० ) ब्रह्मा की एक शक्ति, यौद्धों की एक देवी ।

त्रिया ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, लुगाई, तिरिया, तिय, तीय ।

त्रियामा ( त्रि=तीन, याम=पहर ) ( स्त्री० ) रात, रजनी, रात्रि ।

त्रिरूप ( पु० ) अश्वमेध-यज्ञ का विशेष प्रकार का घोड़ा ।

त्रिलिंग ( पु० ) तैलंग शब्द का संस्कृतरूप ।

त्रिलोक ( त्रि=लोक ) ( पु० ) तीनों भुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।

त्रिलोकी ( त्रिलोकी ) ( स्त्री० ) तीनों लोकों का समूह, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।

त्रिलोकीनाथ ( त्रिलोकी+नाथ ) ( पु० ) तीन लोक के नाथ, विष्णु, ईश्वर ।

त्रिलोचन ( त्रि=तीन, लोचन=आंख ) ( पु० ) महादेव, शिव, तीन आंखवाला ।

त्रिलोह ( पु० ) सोना, चांदी और तांबा ।

त्रिवर्ग ( पु० ) धर्म, अर्थ और काम; सत्व, रज और तम ।

त्रिविक्रम ( त्रि=तीनों लोक में, वि=सब तरफ से, क्रम्=पांव

खना ) अर्थात् जिन्होंने अपने पैर से तीनों लोकों को नापा, जैसे हरिवंश में लिखा है—त्रिरिष्येव त्रयोलोकाः कीर्त्तिता मुनिसत्तमैः । क्रमते तान्विशेषेण त्रिविक्रम उदाहृतः । ( पु० ) विष्णु, वामनावतार में राजा बलि को बाँधने के समय विष्णु का विराट् रूप ।

त्रिविद ( पु० ) तीन वेदों का ज्ञाता ।

त्रिविध ( त्रि=तीन, विध=प्रकार ) ( वि० ) तीन प्रकार का, तीन तरह का ।

त्रिविष्टय ( पु० ) स्वर्ग, तिब्बत-देश ।

त्रिवेणी ( त्रि=तीन, वेणी=धारा ) ( स्त्री० ) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है, तीन नदियों का संगम ।

त्रिवेद ( पु० ) ऋक्, यजु और साम ।

त्रिवेदी ( पु० ) तीन वेदों का ज्ञाता ।

त्रिशंकु ( पु० ) बिल्ली, पपीहा, खद्योत, जुगुनू, एक सूर्यवंशी राजा ( विशेष के लिये भा० च० देखिए ) ।

त्रिशिर ( त्रिशिरस्, त्रि=तीन, शिरस्=सिर, अर्थात् जिसके तीन सिर हों ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम, रावण का एक वंशधर ।

त्रिशूल ( त्रि=तीन, शूल=लोहे का तीखा काँटा ) ( पु० ) एक अस्त्र का नाम जिसमें लोहे के तीन तीखे काँटे होते हैं, महादेव का अस्त्र ।

त्रिशूलपाणि ( त्रिशूल+पाणि=हाथ, अर्थात् जिसके हाथ में त्रिशूल है ) ( पु० ) महादेव, शिव, त्रिशूल रखनेवाला ।

त्रिष्टुप ( पु० ) छंद-विशेष, एक वैदिक छंद का नाम ।

त्रिसंधि ( स्त्री० ) फूल-विशेष जो सक्रेद, लाल और काला तीन रंगों का होता है ।

त्रिसंध्या ( त्रि=तीन, संध्या=समय ) ( स्त्री० ) प्रभात, दोपहर और साँझ, प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल ।

त्रिस्थली ( स्त्री० ) काशी, गया और प्रयाग ।

त्रिस्ताता ( स्त्री० ) गंगा ।

त्रुटि ( त्रुट्=तोड़ना ) ( स्त्री० ) टूट, हानि, कमी, न्यूनता; टूट शब्द को देखो ।

त्रेता ( त्रि=तीन, इता=पाया, वा त्रय=तीन ) ( स्त्री० ) यज्ञ की तीन पवित्र अग्नि, जैसे १ दक्षणाग्नि, २ गार्हपत्य, ३ आहवनीय दूसरा युग जो १२,९६,००० बरस का था ।



त्रैकालिक ( पु० ) त्रिकाल में होनेवाला, सदा होनेवाला ।

त्रैगर्त ( वि० ) त्रिगर्तवासी, त्रिगर्त-देश का राजा ।

त्रैगुण्य ( पु० ) सत्त्व, रज और तम इन तीनों का धर्म ।

त्रैमातुर ( पु० ) लक्ष्मण ।

त्रैमासिक ( वि० ) प्रत्येक तीसरे महीने होनेवाला ।

त्रैराशिक ( वि०=तीन, राशि=समूह ) ( वि० ) तीन जानी हुई राशियों से चौथी अज्ञात राशि का पता लगानेवाला ।

त्रैलोक्य ( त्रिलोक ) ( पु० ) त्रिभुवन, त्रिलोकी, आकाश, पाताल और पृथ्वी ।

त्रैवर्णिक ( पु० ) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म ।

त्रोटक ( श्रुट=तोड़ना ) ( पु० ) एक छंद का नाम ।

त्रोट्टी ( श्रुट=तोड़ना ) ( स्त्री० ) चंचु, चोंच, टोंट, पखेरू ।

त्रोण ( पु० ) तूण, तर्कस ।

त्र्यक्ष ( पु० ) शिव, महादेव, एक दैत्य जिसका वर्णन भागवत में है ।

त्र्यक्षर ( पुं० ) प्रणव, एक प्रकार का वैदिक छंद ।

त्र्यम्बक ( वि०=तीन, अम्बक=आँख ) ( पु० ) महादेव, शिव, त्रिनयन, त्रिलोचन ।

त्र्यशीति ( वि० ) तिरासी, ८३ ।

त्वक् } ( त्वच्=ढकना ) ( स्त्री० ) चमड़ा, स्पर्श-  
त्वचा } इन्द्रिय, छाल, छिकला, बकला, शरीर के ऊपर का चाम ।

त्वक्पत्र ( पु० ) तेजपात, दालचीनी ।

त्वदोष ( पु० ) कुष्ठ, कोढ़ ।

त्वरा ( त्वर्=जल्दी करना ) ( स्त्री० ) शीघ्रता, जल्दी, उतावली, तेज़ी ।

त्वरित ( त्वर्=जल्दी करना ) ( पु० ) तुरंत, झटपट, जल्दी, ( कि० वि० ) जल्दी से, वेग से ।

त्वरित गति ( पु० ) एक वर्णवृत्त का नाम ।

त्वष्टा ( त्वष्ट=दुर्बल होना ) ( पु० ) ब्रह्मा, विश्वकर्मा, नङ्गार, बढ़ई, सूर्य, महादेव, एक प्रजापति का नाम ।

त्विषा ( स्त्री० ) रश्मि, किरण, उद्योति, शोभा, आभा, दीप्ति ।

त्विषि ( विप्=दीप्ति, उजाला ) ( स्त्री० ) किरण, प्रभा, आभा, तेज ।

## थ

थ ( थुड=ढकना ) ( पु० ) पहाड़, खाना, रोग, डर, बचाव, मंगल, इसका उच्चारण-स्थान दंत है ।

थई ( स्त्री० ) ढेर, ठाँव, अटाला, जगह ।

थई ( स्त्री० ) कपड़ों का ढेर, धबी, थवई, गृह-निर्माता, राज, ईंटों की बनी अटारी ।

थंभना ( सं० स्तंभन, थंभ वा स्तंभ=ढकना वा ठहरना ) ( कि० थ० ) ठहरना, स्थिर होना, रुकना, संभलना ।

थक ( पु० ) थका, चका, देला, गाँव की सरहद, ग्राम-सीमा, ढेर, राशि, अटाला ।

थकना } ( सं० स्थगन, स्थग=ढकना ) ( कि० थ० )  
थाकना } माँदा होना, खेदित होना, अकुलाना, हारना, अधिक परिश्रम से इंद्रियों का अवश होना ।

थकरी ( स्त्री० ) कियों के बाल झाड़ने की खस की बनी कूँची ।

थका ( वि० ) थका हुआ, श्रान्त, ज्ञांत ।

थकान ( स्त्री० ) थकावट, शिथिलता ।

थकाना ( कि० सं० ) हराना, श्रान्त करना, हैरान करना, परास्त करना, शिथिल करना ।

थकामाँदा ( वि० ) श्रमित, थका हुआ ।

थकाव ( पु० ) थकावट, शिथिलता ।

थकित ( सं० स्थगित, स्थग=ढकना ) ( पु० ) थका हुआ, श्रमभित, विस्मित, श्रमभे में, तन्मज्जुव में ।

थकैनी ( स्त्री० ) थकावट ।

थकौहाँ ( वि० ) थका हुआ, शिथिल, थका-माँदा ।

थका ( पु० ) थोक, चटान, जमावट, लोंदा, जमा हुआ पदार्थ ।

थगित ( वि० ) रुका हुआ, मंद, शिथिल ।

थति ( स्त्री० ) थानी, धरोहर ।

थतिहार ( पु० ) जिसके पास धरोहर रखी हो ।

थती ( स्त्री० ) अटाला, ढेर, राशि ।

थन ( सं० स्तन ) ( पु० ) गाय, भैंस आदि की चूँची, लेवा, स्तन ।

धनदुष्ट (धा०) वह स्त्री जिसके धन का दूध रुक गया हो ।

धनी (स्त्री०) गलथना, हाथी-घोड़ों का एक पेव, बकरी के गले में लटकी हुई थैलियाँ ।

धनेला (पु०) स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला फोड़ा ।

धनैत (पु०) गाँव का मुखिया, लगान बसूल करनेवाला ।

धपक (पु०) धपथपाने का शब्द, थोप, धपड़, चपेटा, थाप, नुमकार, पुचकार ।

धपड़ा (पु०) थाप, धपेड़ा, चपेटा, तमाचा ।

धपड़ी (स्त्री०) ताली, हाथताली, करताली, धपेड़ ।

धपथपी (स्त्री०) धपड़ी ।

धपना (क्रि० म०) स्थापित करना, बैठाना, प्रतिष्ठा करना, ठहराना, जमाना, धीरे-धीरे टोंकना, (पु०) थापी, मुँगरी ।

धपुआ (पु०) खपड़ा ।

धपेड़ा (पु०) चपेटा, धौल, थाप, धपेड़ा, तमाचा ।

धपोड़ी (स्त्री०) धपड़ी, ताली ।

धपड़ (पु०) धपड़ा, धपेड़ा, धौल, चपेटा ।

धम (सं० स्तंभ) (पु०) खंभा, खंभ, थोभ, धूनी ।

धमकारी (वि०) रोकनेवाला ।

धमड़ा (वि०) तुँदिल, नोंदिल, बड़े पेटवाला ।

धमना (सं० स्तंभ) (क्रि० अ०) ठहरना, स्थिर होना, रुकना, मँभलना ।

धंभ } (सं० स्तंभ) (पु०) खंभा, खंभ, थोभ, धूनी,  
धंभ } सितून, पाया ।

धर (पु०) थल, सिंह-बाघ की खाँह, बीहड़ जंगल, (स्त्री०) तह, पत ।

धरकना (क्रि० अ०) भय से काँपना, धराना ।

धरधर (स्त्री०) डगमग, हलचल, डर से उत्पन्न कंप ।

धरधर-काँपनी (स्त्री०) एक छोटी चिटिया जो बैठने पर काँपती हुई जान पड़ती है ।

धरधराना } (क्रि० अ०) काँपना, हिलना, डग-  
धरहराना } मगाना ।  
धराना

धरधराहट } (स्त्री०), कंप, कँपाहट, कँपकँपी, कंपन ।  
धरधरी }

धरलिया (स्त्री०) छोटी थाली ।

धरिया (स्त्री०) थाली, टाठी ।

धराना (क्रि० अ०) दहलना, भय से काँपना, भयभीत हो जाना ।

धल (सं० स्थल) (पु०) जगह, सूखी जगह, ठाँव, धरती, स्थान, बाघ की माँद, फोड़े का धरा, ऊँची जमीन ।

धलकना (क्रि० अ०) धड़कना, फड़कना, तलकना ।

धलचर (सं० स्थलचर) (पु०) धरती पर चलने या रहनेवाले मनुष्य आदि जीव, भूचर, भूमिचर ।

धलचारी (वि०) पृथ्वी पर चलनेवाला प्राणी ।

धलथल करना } (क्रि० अ०) डगमगाना, लहराना,  
धलथलाना } हिलोरना, हिलना, (जैसे मोटे आदमी का टाला माँस) ।

धलवेड़ा (पु०) वह घाट जहाँ नाव लगती हो ।

धलिया (सं० स्थाली, स्था वा स्थल=ठहराना) (स्त्री०) थाळी, थाल, छोटा थार, छोटी थाळी ।

धली (स्त्री०) जगह, स्थान, बैठक, पानी, मैदान, जल के नीचे का तल, टीला, ऊँची जमीन, वन वा पर्वतप्रान्त-भूमि ।

धवई (पु०) थई, राज, मकान बनानेवाला, ईंट-पत्थर की जोड़ई करनेवाला कारीगर ।

धहराना (क्रि० अ०) धराना, काँपना, दुर्बलता के कारण श्रृंगों का काँपना ।

धहाना (क्रि० अ०) थाह लेना ।

धहारना (क्रि० म०) जहाज़ को ठहराना ।

धौंग (स्त्री०) चोरों की माँद अथवा घात की जगह, भेद, खोख, पता, सुराग ।

धौंगी (पु०) चोरों का भेदिया, चोरी का माल मोल लेनेवाला, चोरों का पता देनेवाला, चोरों का सरदार ।

धौभ (सं० स्तंभ) (पु०) खंभ, खंभा, थंभ, थंभ, धम, धूनी ।

धौभना (सं० स्तंभ, धंभ वा स्तंभ=रोकना वा ठहरना) (क्रि० स०) सहारा देना, ठहराना, सँभालना, टेक देना, आड़ देना, हाथ पकड़ना, बचाना, पालन करना, रक्षा करना, रोकना, अटकाना, छँकना, ठहरा देना, खड़ा करना (जैसे घोड़े को) ।

धौवला (सं० स्थल, स्थल=ठहराना) (पु०) पेड़ की जड़

के आसपास मिट्टी की मेंड़ अथवा धेरा, क्यारी, बालवाल, थाला ।

था ( कि० अ० ) 'होना' क्रिया का भूतकाल, रहा ।

थाई ( वि० ) स्थायी, बना रहनेवाला, ( पु० ) बैठक, अथाई, गीत का प्रथम पद जो गाने में बार-बार कहा जाता है, टेक ।

थाक ( पु० ) गाँव की हद्द, ग्राम-सीमा, राशि, ढेर, अटाला, थोक, ( स्त्री० ) थकावट, थकान ।

थाकना ( कि० अ० ) थकना, श्रान्त होना, शिथिल होना ।

थाती } ( सं० स्थापित, स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) धरोहर,  
थाथी } गिरों, जाकड़, बंधक, अमानत ।

थान ( सं० स्थान ) ( पु० ) जगह, सारा कपड़ा, घोड़े अथवा गाय-बैल के रहने की जगह, चरनी, सिक्का ( जैसे एक थान अक्षरफ़ी अथवा मोहर ), अद्द ।

थानक ( पु० ) जगह, थाला, फेन, भाग ।

थाना ( सं० स्थान ) ( पु० ) चौकी, कोतवाली, बाँस का टाल ।

थानी ( पु० ) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान या मुखिया ( वि० ) संपन्न, पूर्ण ।

थानेदार ( पु० ) थाने का प्रधान, कोतवाल ।

थानैत ( पु० ) स्थान का स्वामी, ग्रामदेवता ।

थाप ( स्त्री० ) धौल, थप्पड़, थपक, छोटे डोल के बजाने का शब्द, मर्यादा, नामवरी, सांगद, पंचायत ।

थापना ( सं० स्थापन ) ( कि० सं० ) थोपना ( जैसे गोबर ), थपथपाना, टोंकना, रखना, स्थापित करना, ठहरा देना, धरना ।

थापना ( सं० स्थापना ) ( स्त्री० ) नवरात्र में एक कोरे घड़े में पानी भर कर दुर्गादेवी के सामने रख के पूजा करना; आश्विन सुदी अथवा चैत सुदी परिव्रा को जो देवी की पूजा होती है उसे थापना की पूजा कहते हैं; अनुष्ठान आरंभ करना ।

थापरा ( पु० ) डांगी, छोटी नाव ।

थापा ( पु० ) चौपाए के पाँव का चिह्न ।

थापा देना या लगाना ( मुहा० ) मंगल कार्य के अवसर पर ब्रिजों पेवन के थापे लगाती हैं ।

थापित ( वि० ) स्थापित, प्रतिष्ठापित ।

थापी ( स्त्री० ) थपथपाने का शब्द, मोंगरी जिससे कुम्हार मिट्टी कूटते हैं या छत पीटी जाती है ।

थाम ( सं० स्तंभ ) ( पु० ) खंभा, सितून, थाँभ, धूनी, टेक, मस्तूल ।

थामना ( कि० सं० ) संभालना, रोकना, थामना, अटकाना ।

थार } ( सं० स्थाल, स्था वा स्थल=ठहरना ) ( पु० )  
थाल } बड़ी थाली, भोजन करने का बड़ा पात्र ।

थारा ( सर्व० ) तुम्हारा ।

थाला ( सं० स्थल, स्थल=ठहरना ) ( पु० ) थाँवला, पेड़ के आसपास का धेरा जिसमें पानी सोंचते हैं, एक गड्ढा अथवा खोखली जगह जिसमें पेड़ उगाया जाता है, ( सं० स्थाल ) बड़ी थाली ।

थाली ( सं० स्थाली, स्था वा स्थल=ठहरना ) ( स्त्री० ) थलिया, टडिया ।

थाव ( स्त्री० ) थाह ।

थावर ( पु० ) स्थावर, अचल ।

थाह ( सं० स्था=ठहरना ) ( पु० ) तली, पेंदा, पानी के नीचे की धरती, सीमा, पार, अंत, भेद, पता, खोख, आहट, अंदाज़ ।

थाहना ( कि० सं० ) थाह लेना, पता लगाना ।

थाहरा ( वि० ) छिछला, जिसमें गहरा पानी न हो ।

थाहा ( स्त्री० ) उथली नदी, वह नदी जो गहरी न हो ।

थाही ( पु० ) नदी का उथला स्थान, जहाँ अधिक जल न हो ।

थिगरी ( स्त्री० ) थिगली, चकती, पैबंद ।

थिति ( स्त्री० ) स्थिति, स्थिरता, निश्चितवास "प्रभु-चित्त हित थिति पावत नाही" — ( रामायण ) ।

थिर } ( सं० स्थिर, स्था=ठहरना ) ( वि० ) ठहरा हुआ,  
थीर } अटल, अचल, शान्त, सुस्थिर ।

थिरक ( पु० ) नाचने में पैरों का हिलना-डुलना या उठना-गिरना ।

थिरकना ( कि० अ० ) ठमक-ठमककर नाचना, ख़ास अंगों से नाचना ।

थिरकी ( स्त्री० ) चमत्कार, विशेषता, धूमने की रीति ।

थिरता ( सं० स्थिरता ) ( स्त्री० ) ठहराव, शान्ति, चैन, आराम ।

थिरा ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी, स्थिरा ।

थिराना ( कि० म० ) निधारना, मिट्टी के बैठ जाने से पानी का साक़ होना, बैठाना, ठहराना ।

थुकाना ( कि० म० ) उगलवाना, निंदा कराना, बदनामी कराना ।

थुक्काफ़ज़ीहत ( स्त्री० ) थुड़ीथुड़ी, धिक्कार, तिरस्कार ।

थुड़ी ( स्त्री० ) लानत, धिक्कार और घृणा-सूचक शब्द ।

थुतकारना } ( कि० म० ) दुरदुराना, अन्याय के साथ  
थुथकारना } निकाल देना, अपमान के साथ हटाना ।

थुथनी ( स्त्री० ) ऊँट-घोड़े आदि का मुँह ।

थुथाना ( कि० थ० ) भाँ चढ़ाना, तेवरों चढ़ाना ।

थूक ( पु० ) खग्वार, कफ़, राल, लार ।

थूककर चाटना ( बोल० ) वचन तोड़ना, कही अनकही करना, मुकर जाना, बात को बदलना ।

थूकना ( कि० थ० ) मुँह से खग्वार फेरना, तिरस्कार करना ।

थूगी } ( सं० स्थाणु, स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) थंभ,  
थूनी } खंभा, टेक, थांभ, धारन ।

थूथड़ा ( पु० ) मुँह, श्कर आदि पशुओं का मुख, थूकनी, ( वि० ) बुरा, खराब ।

थूथन, थूथना ( पु० ) आगे निकला हुआ लंबा मुँह, थूथड़ा, पशुओं का मुँह ।

थूरन ( पु० ) पीटन, कूचन, कूटना, कूचना ।

थूरना ( कि० म० ) दूँस-दूँस कर भोजन करना, कूटना, पीटना, मारना, रस्सी बनाने के लिये नारियल के खुम्बे को पीटकर पतला बनाना ।

थूल ( वि० ) भारी, भहा, मोटा ।

थूला ( वि० ) मोटा-ताज़ा, मोटा ।

थूली ( स्त्री० ) दलिया, सूजी, हाल की दवाई गाय को दिया जानेवाला पकाया हुआ दलिया ।

थूवा ( पु० ) दूह, टोला, मिट्टी का लोढ़ा, ( स्त्री० ) थुड़ी, धिक्कार का शब्द ।

थूहर } ( पु० ) ( स्त्री० ) एक काँटेदार पौधा ।  
थोहर }

थूहा ( पु० ) टीला, अटाला, दूह ।

थूही ( स्त्री० ) मिट्टी का ढेर, दूह ।

थेई थेई ( पु० ) ( स्त्री० ) नाचने में सुशी का शब्द ।

थेगली ( स्त्री० ) जोड़, चेरी, पैवंद ।

थेंथर ( वि० ) थका माँस, श्रांत ।

थेवा ( पु० ) अँगूठी का नगीना ।

थेंचा ( पु० ) खेत के मचान के ऊपर का छाजन ।

थैला ( पु० ) बोरा, गोम, लोथा, कोथला ।

थैली ( स्त्री० ) छोटा थैला, कोथली ।

थोक ( पु० ) ढेर, राशि, रोकड़, हिस्सा, भाग ।

थोड़ ( पु० ) फले हुए केले का गाभा, कम, अल्प, न्यून ।

थोड़ा ( पु० ) कम, तनिक, अल्प, कुछ, किंचित, ज़रा ।

थोड़ा-थोड़ा ( बोल० ) कुछ-कुछ, धीरे-धीरे, कम-कम ।

थोड़ा-थोड़ा होना ( बोल० ) लज्जित होना, कम होना, धीरे-धीरे आगे बढ़ना ।

थोड़ा बहुत ( बोल० ) घाट बाढ़, कमोवेश, न्यूनाधिक ।

थोड़े से थोड़ा ( बोल० ) बहुत थोड़ा, निहायत कम ।

थोतरा ( वि० ) कुंठित, तेजहीन, थोंथरा, भोंथर ।

थोती ( स्त्री० ) थथन ।

थोथ ( स्त्री० ) निस्सारता, खोखलापन, नाँद, पेटी, पोल ।

थोथरा ( वि० ) निकरमा, जो किसी काम में न आ सके ।

थोथला ( वि० ) विना धार का, कुंठित ।

थोथा ( वि० ) विना फल, फलहीन, खाली, छूँछा, ( पु० ) विना फल अथवा विना अनी का तीर, एक दवा का नाम ।

थोथी बात ( बोल० ) वृथा बात, निरर्थक वाक्य, अर्थहीन बात, सटर पटर, बेमतलब ।

थोप ( पु० ) पालकी के बाँस का मुखड़ा, टोप, ढाँप, छाप, मुहर, भूषण, अलंकार ।

थोपड़ी ( स्त्री० ) चपत, धौल, तही ।

थोपना ( सं० स्तुप्=ढेरी लगाना, बटोरना ) ( कि० सं० ) सहारना, थांभना, लेपना, थापना, छोपना, बटोरना, इकट्ठा करना ।

थोपियाना ( कि० म० ) चूना, बूँद-बूँद गिराना, झिर-झिरना, बुँदियाना ।

थोपी ( स्त्री० ) धक्का, थापी, मुक्का, चपत ।

थोवड़ा ( पु० ) थूथन ।

थोर ( पु० ) केले का गाभा, थूहर का पेड़ ।

थोरा ( वि० ) किंचित्, अल्प, थोड़ा ।

थोरी ( स्त्री० ) हीन, अनार्य, जाति-विशेष, थोड़ी ।

थोहर ( पु० ) थूहर, सेंहुड़, सीज ।

थौना ( पु० ) गीने के बाद की स्त्री को बिदाई ।

## द

द (दा=देना, वा देप्=शुद्ध करना, वा दो=काटना)  
(वि०) देनेवाला, दाता, (पु०) दान देना, पर्वत,  
खंडन, काटना, (स्त्री०) भार्या, पत्नी, शोधन,  
शुद्ध करना, रक्षा, कलत्र, मेघ ।

दर्ई (सं० देव) (पु०) ईश्वर, देवता, भाग्य, त्रिस्मृत,  
(स्त्री०) ईश्वरता ।

दर्ईमारा (बाल०) अभागा, दुर्भाग्यी, अभिशापित,  
धिक्कार, शापित, मंदभाग्य, प्रारब्धहीन ।

दउरना (कि० अ०) दौड़ना, भागना ।

दक (पु०) पानी, रस ।

दकार (पु०) तवर्ग का तृतीय वर्ण 'द' ।

दक्खन } (सं० दक्षिण) (पु०) दक्षिणदिशा,  
दखन } हिंदुस्थान का दक्षिण भाग ।  
दखिन }

दक्ष (दत्=बढ़ना) (पु०) ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजा-  
पति का नाम, कहते हैं कि दक्ष ब्रह्मा के दाहने हाथ  
के अँगूठे से पैदा हुआ था और उसके ६० बेटियाँ  
थीं । जिनमें से २७ तो चंद्र की व्याही थीं (वही  
सत्ताईस नक्षत्र कहलाते हैं) और एक उसकी बेटी  
सती महादेव की; १३ कश्यप मुनि को व्याहीं जो  
सब सृष्टि की माता थीं और १० धर्म की व्याहीं  
(एक बार दक्ष ने यज्ञ किया था उसमें महादेव को नहीं  
बुलाया और सती का निरादर किया इसलिये सती उस  
यज्ञ के कुंड में जल कर मर गई तब महादेव ने दक्ष  
का सिर तोड़ डाला); एक मुनि का नाम, अग्नि  
ऋषि, रुद्र, शिव, मुरगा, राजा उशीनर का पुत्र,  
बल, वीर्य, महादेव के बैल का नाम, (वि०) चतुर,  
निपुण, प्रवीण, समर्थ ।

दक्षकन्या } (दक्ष + कन्या वा सता=बेटी) (स्त्री०)  
दक्षसुता } दक्ष की बेटी, सती, दुर्गा ।

दक्षता (स्त्री०) पटुता, योग्यता, निपुणता ।

दक्ष सावर्णि (पु०) नवाँ मनु, चौदह मनु में एक  
मनु ।

दक्षा (वि०) पटुता, निपुणता, (स्त्री०) पृथ्वी ।

दक्षिण (दत्=बढ़ना) (वि०) चतुर, प्रवीण, निपुण,

दाहना, दक्षिण दिशा का, खरा, सच्चा, (पु०)

दक्खन, दक्षिणदिशा, दाहना भाग, सब नायि-

काओं में बराबर सनेह रखनेवाला नायक, अनुकूल  
नायक ।

दक्षिण (दत्=बढ़ना) (स्त्री०) दान, द्राक्ष्य को  
खिला के कुछ देना, गुरु की भेंट, दुर्गा की एक  
मूर्ति ।

दक्षिणार्ह (वि०) दक्षिण के अधिकारी ।

दक्षिणायन (दक्षिण=दक्खिन दिशा की ओर, अयन=  
चाल वा जाना) (पु०) दक्षिण दिशा की ओर  
सूर्य के जाने का समय जो सावन से पूस अथवा  
कर्क की संक्रांति से धन की संक्रांति तक रहता है ।

दक्षिणावर्त (पु०) एक प्रकार का बहुमुख्य शंख  
जिसका घुमाव दक्षिण की ओर होता है ।

दखनी } (दक्षिण) (वि०) दक्षिण का, दक्खिन  
दखिनी } का आदमी या चीज़ ।

दखल (पु०) अधिकार, सत्ता, कब्ज़ा, गति, प्रवेश ।

दखल दिहानी (स्त्री०) अधिकार दिलाना ।

दखलनामा (पु०) अधिकार जमाने का आज्ञा-पत्र ।

दखिना (पु०) दक्खिन से आनेवाली हवा ।

दखील (वि०) अधिकार रखनेवाला ।

दखीलकार (पु०) वह आदमी जिसका बारह वर्ष  
तक किसी खेत पर अधिकार हो ।

दखीलकारी (स्त्री०) दखीलकार की ज़मीन ।

दगड़ (पु०) नगाड़ा, बढ़ा डोल ।

दगड़ना (कि० अ०) सत्य पर विश्वास न करना ।

दगड़ा (पु०) राह, मार्ग, डगर, डगरा ।

दगड़ाना (कि० स०) दौड़ाना, धवाना ।

दगदगा (पु०) डर, संदेह, एक प्रकार की कंदील,  
(वि०) चमकीला ।

दगदगाना (कि० अ०) चमकना, चमकाना, चहकना,  
झकाझक करना ।

दगदगाहट (स्त्री०) चमक, चमस्कार, प्रकाश ।

दगधना (सं० दाघ) (कि० स०) जलना, जलाना,  
सताना, छेड़ना, सज़ा देना, धमकाना, डाटना,  
धुक्कना, ताड़ना करना ।

दगना (कि० अ०) झूटना, चलना, फुलस जाना ।

दगरा (पु०) देर, विलंब, रास्ता, डगरा ।

दगल फसल (पृ०) धोखा, छल ।

दगला (पृ०) रुईदार औरखा, रुई भरा औरखा ।

दगहा (वि०) दागवाला, प्रेत-क्रिया करनेवाला ।

दगा (स्त्री०) छल, धोखा, कपट ।

दगादार (वि०) धोखेबाज, छली, कपटी ।

दगावाज़ (वि०) छली, कपटी, (पृ०) छली आदमी ।

दगैल (वि०) दगहा दागवाला ।

दग्ध (दग्ध=जलना) (वि०) जला हुआ, फुलसा हुआ, भस्म, उजलित, विप्लुष्ट, जलाया हुआ, भस्मित ।

दग्धरथ (पृ०) गंधर्व-विशेष, इंद्र का सारथी, (विशेष के लिये भा० च० दीपिका)

दग्धा (स्त्री०) अगुभ मिथि, पश्चिम दिशा ।

दग्धान्तर (पृ०) पिंगल में झ, ह, र, भ, प, इन पाँच वर्णों को दग्धान्तर माना है । छंद के आरंभ में दग्ध न रखना चाहिए ।

दग्धिक (पृ०) दहीभात ।

दग्धादग्ध (वि०) श्रुत्या-पीडित ।

दंगा (पृ०) भगड़ा, गौला, बलवा, हुल्लाह ।

दंगेत (दंगा) (वि०) दंगा करनेवाला, भगडाल, लड़ाका ।

दग्ध (दग्ध=जलना) (पृ०) त्याग, हिंसा, नाश ।

दच्चक (स्त्री०) टोकर, धक्का, दबाव ।

दच्चकन (कि० अ०) दब जाना, टोकर खा जाना, भटका खा जाना ।

दच्चना (कि० अ०) पड़ना, गिरना ।

दच्छु { (पृ०) 'दक्ष' शब्द को देखो ।

दच्छुकुमारी (स्त्री०) सती ।

दच्छिना (स्त्री०) 'दक्षिणा' शब्द को देखो ।

दडकना { (कि० अ०) फटना, चिरना, तड़कना ।

दडोड़ा (स० रड) (पृ०) मेंह की बड़ी झड़ी, भारी वर्षा, प्रचंड झड़, आसाढ़ की वर्षा ।

दडोड़ना (कि० अ०) दहाड़ना, गर्जना, चीखना, चिखाड़ना ।

दड़मुंडा (दाढ़ी + मुंडा) (वि०) दाढ़ी मुँहा हुआ, बिना दाढ़ी का ।

दड़ियल (दाढ़ी) (वि०) लंबी दाढ़ीवाला ।

दंड (दंड=सत्ता देना वा दम्=वश करना वा शांत करना) (पृ०) लाठी, सोंटा, ताड़ना, सज़ा, शासन, जुर्माना, प्रकोड़, राजाओं का चौथा उपाय अर्थात् वध, दंड, फाँसी, एक घड़ी, साठ पल का समय, यमराज, एक प्रकार का व्यूह, इक्ष्वाकु राजा का पुत्र, कल, दमन ।

दंडक (दंड=सत्ता देना) (पृ०) एक राजा का नाम, एक छंद का नाम ।

दंडकारण्य (दंडक+रण्य) दंडक-नाम के राजा का देश (यह शुकाचार्य अथवा भृगु मुनि के शाप से नष्ट होकर जंगल हो गया) (पृ०) हिंदुस्थान के दक्षिण में दंडक-नामक वन जहाँ वनवास के समय श्रीरामचंद्र कुछ दिन रहे थे ।

दंडदास (पृ०) शोक, नदा, आयुध, यम, किंकर, सज़ा देनेवाला ।

दंडधर (दंड+धर, धृ=धरना) (पृ०) यमराज, कुलाल अर्थात् कुम्हार, लकुठधारी, राजा, दंडी, संन्यासी, द्वारपाल, सिपाही, आसावरदार ।

दंडन (पृ०) अनुशासन, विग्रह, सज़ा, दंड ।

दंडनायक (पृ०) यमराज, मुलाजिम, फौजदारी ।

दंडनीति (स्त्री०) नीति का एक अंग, दंडव्यवस्था ।

दंडनीय (वि०) सज़ा देने योग्य ।

दंडपाणि (पृ०) दंडधारी, यमराज, शिव के एक गण का नाम ।

दंडपांशुल (पृ०) सिपाही, चौकीदार, द्वारपाल ।

दंडपाशिक (पृ०) बधिक, फाँसी देनेवाला, जल्लाद ।

दंडप्रणाम (पृ०) सादर अभिवादन ।

दंडप्रणेत (पृ०) दंडकर्त्ता, दंडदाता ।

दंडमान (वि०) दंडित, सज़ा पाया हुआ ।

दंडयन् दंड=लाठी, वन्=बराबर, अर्थात् लाठी के समान गिर कर प्रणाम करना) (स्त्री०) प्रणाम, नमस्कार ।

दंडादंडी (( दंड=लाठी) (स्त्री०) लाठ-लाठी, लाठी से लड़ना, गदायुद्ध ।

दंडायमान (वि०) खड़ा हुआ, दंड के समान सीधा खड़ा हुआ ।

दंडाश्रम (पृ०) संन्यासश्रम, संन्यासी का आचार ।

दंडाश्रमी (पृ०) ससार-त्यागी, विरागी, संन्यासी, दंडी ।

दंडित ( वि० ) सज़ायाफ़्त, दंडप्राप्त ।

दंडी ( दंडिन्, दंड=लाठी अर्थात् लाठी रखनेवाला ) ( पु० )

एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में दंड रखते हैं, यमराज, राजा, द्वारपाल, काव्यादर्श तथा दशकुमार के बनानेवाले कवि का नाम, ( वि० ) लाठी रखने-वाला, लठैत, चोबदार ।

दंतना ( कि० अ० ) डाटना, सामना करना ।

दंतवन { ( सं० दंतधावन ) ( पु० ) दंतुन, दाँतन,  
दंतौन } दाँत साफ़ करने की लकड़ी ।

दंतारा ( वि० ) दाँतोंवाला, दँतैला ।

दंतिया ( स्त्री० ) छोटा दाँत, ( पु० ) पहाड़ी तीतर, नीला मोर, बुँदेलखंड की एक राजधानी ।

दंतूली ( स्त्री० ) छोटे-छोटे दाँत, बच्चों के दाँत, दँतुली ।

दत्त ( दा=देना ) ( वि० ) दिया हुआ, समर्पित, वैश्यों का उपनाम, उर्फ़, दत्तात्रेय ।

दत्तक ( दा=देना ) ( वि० ) गोद लिया हुआ, लेपालक, दत्तक पुत्र=गोद लिया हुआ लड़का, पोष्य पुत्र, सुतबन्ना ।

दत्तचित्त ( वि० ) किसी काम में खूब ध्यान लगाए हुए ।

दत्ता ( स्त्री० ) विवाहिता कन्या ।

दत्तात्मा ( पु० ) जिसके माता-पिता मर गए हों और जो स्वयं जाकर किसी का पुत्र बने ।

दत्तात्रेय ( पु० ) अग्नि ऋषि का पुत्र, विष्णु का अवतार-भेद; बड़े ज्ञानी थे इनके २४ गुरु थे ।

दत्ताप्रदानिक ( पु० ) दान किए हुए पदार्थ को प्राप्त करने का अन्याय-पूर्ण प्रयत्न ।

दत्तेद ( पु० ) इंद्र ।

ददन ( पु० ) दान देना, त्याग ।

ददरा ( पु० ) छानने का बख, साँकी ।

दद्रु ( पु० ) दाद-रोग, फुलाव ।

ददियाल ( पु० ) दादा का वंश या घर ।

ददोड़ा ( पु० ) फोड़ा, गुमड़ा ।

दधि ( दध्=रखना ) ( पु० ) दही, चक्का, समुद्र, सागर ।

दधिकर्दौ ( सं० दधि+कर्दम, दधि=दही, कर्दम=कीच ) ( पु० ) श्रीकृष्ण के जन्म-दिन अर्थात् जन्माष्टमी का उत्सव जिसमें मनुष्य दही और हल्दी मिलाकर

आपस में एक दूसरे पर इतना डालते और खेलते हैं कि कीच मच जाती है ।

दधिमुख ( पु० ) एक वानर का नाम, सुग्रीव का मामा ।

दधिसार ( पु० ) मक्खन, नवनीत, नैन्, धी ।

दधिसुता ( स्त्री० ) सीप ।

दधिस्नेह ( पु० ) दही की मलाई ।

दधीचि ( दध् वा धा=रखना ) ( पु० ) एक ऋषि का नाम जिसने अपने शरीर का हाड़ इंद्र और सब देवताओं को दिया, तब इंद्र ने उसका वज्र बनाकर वृत्रासुर को मारा ।

दनदनाना ( कि० अ० ) आनंद मानना, दनदन-ध्वनि करना ।

दनादन ( कि० वि० ) दन-दन शब्द-सहित ।

दनुज ( दनु=कथरप मुनि की स्त्री और दत्त प्रजापति की बेटी, ज=पेदा होना ) ( पु० ) दनु के बेटे, दानव, दैत्य, असुर, राक्षस ।

दनुजराज ( पु० ) हिरण्यकथरप ।

दनुजारी ( पु० ) विष्णु, देवता ।

दंत ( दध्=तोड़ना, वा वश करना ) ( पु० ) दाँत, ३२ की संख्या ।

दंतकथा ( स्त्री० ) जनश्रुति ।

दंतच्छुद् ( दंत=दाँत, छुद्=ढक्का ) ( पु० ) होठ, ओंठ, ओष्ठ ।

दंतधावन ( दंत=दाँत, धाव्=धोना ) ( पु० ) दाँतुन, दंतुवन ।

दंतवीज ( पु० ) अनार ।

दंतमास ( पु० ) मसूढ़ा, मस्कर ।

दंतमूल ( पु० ) दाँत का एक रोग-विशेष ।

दंतलेखन ( पु० ) एक अस्त्र-विशेष जिससे दाँत का मसूढ़ा चीरकर मवाद निकाला जाता है ।

दंतवेष्टन ( दंत=दात, वेष्ट=लपटना ) ( पु० ) मस्कर, मसूढ़ा ।

दंतशंकु ( पु० ) चीर-फाड़ करने का औज़ार-विशेष ।

दंतशठ ( पु० ) कैथा, नीबू, नारंगी, करीदा ।

दंतशूल ( पु० ) दाँत का दर्द ।

दंतायुध ( पु० ) जंगली सुअर ।

दंतालिका ( दंत+अलिका अल्=भूषण करना, रोकना ) लगाम ।

दंती ( दंत=दाँत यथार्थ जिगके बड़े दाँत होते हैं ) ( पु० )

हाथी, हस्ती, गज, ( वि० ) दंतैल, दंतीला ।

दंतीला ( सं० दंतुर, दंत=दाँत ) ( वि० ) दाँतवाला,

दंतैल, जिसके बड़े और ऊँचे दाँत हों, शूकर, वृक,

मुँधर, भेड़िया ।

दंतुर ( वि० ) जिसके दाँत ऊभड़-खाबड़ हों ।

दंतोन्मूलक ( पु० ) एक प्रकार के संन्यासी जो

श्रीमंली में कटा हुआ धान नहीं खाते ।

दंतोष्ठ्य ( वि० ) दाँत और होठ से उच्चारण होने-

वाले वण ।

दंत्य ( दंत ) ( वि० ) जो दाँतों से बोले जायँ “त, ल,

न, थ, द, ध, न, ल, म” ये अक्षर दंत्य कहलाते हैं ।

दंद्नाना ( कि० अ० ) आराम से रहना, चैन करना,

गाजना, विराजना, निर्भय होके काम करना ।

दध्र ( पु० ) बंदूक, तोप आदि के लुटने का शब्द ।

दपट ( दपटना ) ( गी० ) दौड़, सर्पट, बाग लुट दौड़,

घोड़े की बड़ी दौड़, घुड़की ।

दपटना ( कि० अ० ) सर्पट जाना, झपटना, दौड़ना,

दू पड़ना, डाटना, धमकाना, झिड़कना, घुड़कना ।

दपेट ( गी० ) दपट, घुड़की ।

दफती ( गी० ) गाना, जिल्द, पुट्टा ।

दफन ( पु० ) मुर्दे की जमीन में गाड़ने का काम ।

दफनाना ( कि० अ० ) मुर्दे को गाड़ना, गाड़ना ।

दफा ( गी० ) बार, बेर, कानून की धारा ।

दफतर ( पु० ) कार्यालय ।

दफतरी ( पु० ) जिल्दसाज, जिल्दबंदी का काम

करनेवाला ।

दधक ( गी० ) मिकुन, धातु आदि को लंबा करने

के लिये पीटने की क्रिया ।

दधकना ( कि० अ० ) छिप रहना, लुक जाना, घात में

बैठना, डर जाना, घुड़कना ।

दधक जाना } ( बोली० ) छिप रहना, लुक रहना, जी

दधक रहना } छिपाना, जो चुराना ।

दधकाना ( कि० अ० ) छिपाना, लुकाना, धमकाना ।

दधकी ( गी० ) दाँव, घात, छिपकी ।

दधकीला ( वि० ) दधकैल, दबा हुआ, परतंत्र ।

दधंग ( वि० ) कुशील, कुडंग, धृष्ट, मूढ़, निरुर, गँवार,

जड़, मूर्ख, गधा, पशु, प्रभाववान् ।

दधदवा ( पु० ) रोब, आनंद, प्रताप ।

दधना ( कि० अ० ) झुकना, नवना, चपना, सिकुड़ना,

आधीन होना, डरना, लजाना, छिप रहना, दबकना ।

दधचलना } ( बोली० ) वश होना, आधीन होना,

दधनिकलना } डर जाना ।

दधजाना ( बोली० ) चला जाना, हट जाना, पीछे

फिरना, हार जाना ।

दधमरना ( बोली० ) कुचल जाना, चूर-चूर होना ।

दवा ( पु० ) दाँव, पंच, घात, ( गी० ) ओपधि ।

दवाई ( गी० ) ओपधि, मँड़ाई, दंठल से अनाज के

दाने निकालने का काम ।

दवाऊ ( वि० ) दधू, दवानेवाला, गाड़ी या इक्का

जिसके अगले भाग में पीछे की अपेक्षा अधिक

बोझा हो ।

दवा मारना ( कि० अ० ) पराधीन को दुःख देना,

कुचल कर मार डालना ।

दवा लेना ( कि० अ० ) अपने आधीन करना,

छान लेना ।

दवाव ( पु० ) प्रभाव, पराक्रम, दाव, चाप ।

दवाव मानना ( कि० अ० ) डरना, सहमना, धाक

मानना ।

दवीला ( वि० ) ओपधि-विशेष, रोबीला ।

दधैल ( दधना ) आधीन, वश में, ( पु० ) प्रजा,

रह्यत ।

दधोचना ( कि० अ० ) दवा डालना, दाबना, पानी में

दबोच देना ।

दधोस ( पु० ) चकमक पत्थर ।

दधोसना ( कि० अ० ) घूँट-घूँट मदिरा पीना ।

दध्र ( वि० ) थोड़ा, कम, अल्प ।

दम ( दध=वश करना, वा शांत करना ) ( पु० ) इंद्रियों

को वश में करना, इंद्रियों की हच्छा को रोकना,

ताड़ना, सज्जा, वश करना, इंद्रिय, निग्रह, गर्व,

अहंकार, कीचड़, विष्णु, दबाव, रवास ।

दम उलटना ( मुहा० ) व्याकुल होना, जी घबराना ।

दम के दम में ( मुहा० ) क्षण भर में, थोड़ी देर में ।

दम खींचना ( मुहा० ) चुप हो जाना ।

दम घुटना ( मुहा० ) सौंस न लिया जा सकना ।

दम चुराना ( मुहा० ) जान-बूझकर सौंस रोकना ।



दम दूटना ( मुहा० ) प्राण निकलना ।

दम फूलना ( मुहा० ) अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना ।

दम भरना ( मुहा० ) किसी के प्रेम या मित्रता का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना ।

दम मारना ( मुहा० ) विश्राम करना ।

दम लगना ( मुहा० ) गाँजे या चरस का धुआँ खींचना ।

दमक ( दम्+अक ) ( पु० ) वश करनेवाला, रोकने-वाला ।

दमक ( दमकना ) ( स्त्री० ) चमक, झलक, शोभा, भड़क, आभा, दीप्ति ।

दमकन ( पु० ) दौना, एक छंद का नाम, ( वि० ) दमन करनेवाला, दमनशील ।

दमकना ( कि० अ० ) चमकना, झलकना ।

दमकल ( पु० ) आग बुझाने की कल, पंप ।

दमघोष ( पु० ) शिशुपाल का पिता, चँदेरी का राजा ।

दमचूल्हा ( पु० ) एक प्रकार का चूल्हा जिसमें लकड़ी या कोयला जलाया जाता है ।

दमड़ा ( सं० द्रम्म ) ( पु० ) धन, दौलत, विभव, संपत्ति ।

दमड़ी ( सं० द्रम्म ) ( स्त्री० ) पैसे का आठवाँ भाग, चिलबिल पत्नी ।

दमड़ी के तीन तीन होना ( बोल० ) उजड़ना, नष्ट होना, सत्यानाश होना, बरबाद होना ।

दमदमा ( पु० ) मोरचा, धुस ।

दमदमाना ( कि० अ० ) दमदम करना ।

दमदार ( वि० ) मजबूत, दृढ़, चोखा ।

दमन ( दम्=वश करना, वा शांत करना ) ( पु० ) वश करना, नाश करना, एक फूल का नाम, दम, निग्रह, शासन, विष्णु, शिव, एक ऋषि का नाम, कुंद, दौना ।

दमनी ( स्त्री० ) लज्जा, संकोच ।

दमनीय ( दम्+अनीय ) ( वि० ) दाबने के लायक, तोड़ने योग्य ।

दमबाज़ ( वि० ) फुसलानेवाला, बहकानेवाला, बहाना करनेवाला ।

दमबाज़ी ( स्त्री० ) धोखा, छल, बहानाबाज़ी ।

दमयंती ( दम्=वश करना ) ( स्त्री० ) नल राजा की पत्नी, विदर्भ देश के राजा भीमसेन की बेटी ( विशेष के लिये मा० च० देखिए ) ।

दमरक ( स्त्री० ) कमरख ।

दमा ( पु० ) श्वास का रोग ।

दमाद ( पु० ) जामाता, कन्या का पति ।

दमादम ( कि० वि० ) बराबर, लगातार, दम-दम शब्द के साथ ।

दमामा ( पु० ) नगारा, धौंसा, डंका ।

दमारति ( स्त्री० ) दमयंती ।

दमारि ( पु० ) वनाग्नि, वन की आग ।

दमी ( दम्+ई ) ( पु० ) नैचा जिससे दम लगाई जाती है, योगी, इंद्रियजिन्, ( वि० ) दमनीय ।

दंपति ( जाया=पत्नी, पति=भर्ता, यहाँ जाया को दम् आदेश हो जाता है ) ( पु० ) स्त्री-पुरुष, जोड़ा, जायापति, पति-पत्नी ।

दंभ ( दम्भ=छल करना ) ( पु० ) पाखंड, कपट, छल, घमंड, दर्प, अहंकार, जयान बेल ।

दंभी ( दंभ ) ( वि० ) पाखंडी, कपटी, छली, घमंडी, अभिमानी ।

दंभोक्ति ( स्त्री० ) गर्वोक्ति, अभिमानयुक्त वचन ।

दंभोलि ( पु० ) इंद्र का वज्र ।

दम्य ( वि० ) दमन करने योग्य, दंड देने योग्य, ( पु० ) वधिया करने योग्य बछड़ा ।

दया ( दय=देना, पालना ) ( स्त्री० ) कृपा, करुणा, किसी के दुःख दूर करने की इच्छा, मेहरबानी, रहम ।

दयादृष्टि ( स्त्री० ) करुणा का भाव ।

दयानत ( स्त्री० ) ईमान, सत्यनिष्ठा ।

दयानतदार ( वि० ) ईमानदार, सच्चा, सत्यनिष्ठ ।

दयाना ( कि० अ० ) दयालु होना ।

दयानिधान ( पु० ) अत्यंत दयालु पुरुष ।

दयानिधि ( पु० ) अत्यंत दयालु पुरुष, ईश्वर ।

दयापात्र ( पु० ) दया के योग्य व्यक्ति ।

दयामय ( वि० ) करुणामय, दयालु, ईश्वर ।

दयायुत ( दया=कृपा, युत=मिला हुआ ) ( वि० ) दयालु, कृपालु, दया करनेवाला ।

दयार्द्र ( वि० ) दया से भरा हुआ, दयालु ।

दयाल ( सं० दयालु ) ( वि० ) कृपालु ।  
 दयावंत } ( दया=कृपा, वन्=वाला ) ( वि० ) कृपालु,  
 दयावान् } दयालु ।  
 दयावती ( वि० ) दया करनेवाली ।  
 दयाशील ( वि० ) दयालु ।  
 दयासागर ( पु० ) जिसके चित्त में अगाध दया हो ।  
 दयित ( वि० ) प्रिय, ( पु० ) पति, स्त्रादि ।  
 दयिता ( दयु=देना वा पानना ) ( स्त्री० ) पत्नी, भार्या,  
 स्त्री, प्रिया, प्यारी ।  
 दर ( द=हाड़ना वा डरना ) ( पु० ) छेद, गुफा, खोह,  
 खड्डा, मोल, भाव, प्रतिष्ठा, खिड़की, दरार, डर,  
 शंख, ( वि० ) थोड़ा ।  
 दरकच ( स्त्री० ) रगड़ या दब जाने से लगी हुई चोट ।  
 दरकना ( कि० थ० ) फटना, विदीर्ण होना, चिरना ।  
 दरफा ( पु० ) दरार, चीर, छेद, फाँक ।  
 दरफाना ( कि० थ० ) चीरना, फाड़ना, विदीर्ण करना ।  
 दरकार ( वि० ) आवश्यक, जरूरी, अपेक्षित ।  
 दरकिनार ( कि० वि० ) अलगदूरा, अलग, पृथक् ।  
 दरकी ( स्त्री० ) फटी, चिरी ।  
 दरकूच ( कि० वि० ) बराबर भ्रमण करना हुआ ।  
 दरखास्त ( स्त्री० ) अर्जी, प्रार्थना-पत्र, निवेदन ।  
 दरकृत ( पु० ) वृक्ष, पेड़, द्रुम ।  
 दरगाह ( स्त्री० ) मकबरा, देहरी, दरवा, कचहरी,  
 दरबार, मित्र पुरुष की समाधि ।  
 दरगुज़रना ( कि० थ० ) छोड़ना, त्यागना, तमा  
 करना ।  
 दरज ( स्त्री० ) दरार, दराज़ ।  
 दरजा ( पु० ) कक्षा, वर्ग, श्रेणी ।  
 दरज़िन ( स्त्री० ) दरज़ी की स्त्री ।  
 दरज़ी ( पु० ) कपड़ा सीनेवाला ।  
 दरद ( पु० ) ग्लेच्छ जाति, भयानक, भय, हिंगुल,  
 हॉग, शिंगरफ, मुर्दाशंख, पारा, ( स्त्री० ) पीड़ा,  
 त्रास, भय ।  
 दरदर ( पु० ) द्वार द्वार, हँ गुर, सिन्दूर ।  
 दरदरा ( वि० ) मोटा पीसा हुआ, दलिया, अधपोसा ।  
 दरदरी ( स्त्री० ) पृथ्वी, ( वि० ) मोटे रवे की,  
 अधकुटी ।  
 दरना ( कि० स० ) पीसना, नष्ट करना ।

दरप ( पु० ) शरूर, दर्प, घमंड ।  
 दरपक ( वि० ) कामदेव, मदन ।  
 दरपन ( पु० ) दर्पण, आइना ।  
 दरपरदा ( कि० वि० ) छिपाकर, चुपके से ।  
 दरव ( पु० ) द्रव्य, धन, दौलत ।  
 दरवहरा ( पु० ) मद्य-विशेष, यह चाँवल से बनाया  
 जाता है ।  
 दरवा ( पु० ) काबुक, कबूतरों के रहने का खानेदार  
 संदूक ।  
 दरवान ( पु० ) द्वारपाल ।  
 दरवानी ( स्त्री० ) द्वारपाल का काम ।  
 दरवार ( पु० ) कचहरी, सभा ।  
 दरवारी ( पु० ) दरबार करनेवाला, राजसभा का  
 सभासद ।  
 दरमा ( स्त्री० ) बाँस को बनी चटाई ।  
 दरमाहा ( पु० ) वेतन, मासिक, महीना ।  
 दरमियान ( पु० ) बीच, मध्य, ( कि० वि० ) बीच में ।  
 दरमियानी ( पु० ) मध्यस्थ, ( वि० ) मध्य का,  
 बीच का ।  
 दरयाफ्त ( वि० ) ज्ञान, जाना हुआ, मालूम ।  
 दरवेश ( पु० ) सानु, क़रीर ।  
 दरस ( सं० दर्श ) ( पु० ) दर्शन, देखना, दीठ,  
 लखना ।  
 दरसनी हुंडी ( स्त्री० ) वह हुंडी जिसके भुगतान की  
 तिथि छાટ-दस दिन या इससे भी कम हो ।  
 दरसाना ( कि० स० ) दिखलाना, प्रकट करना ।  
 दरा } ( द=हाड़ना ) ( स्त्री० ) गुफा, खोह, कंदरा ।  
 दरी }  
 दराई ( स्त्री० ) दरने का काम, दरने का मेहनताना ।  
 दराज़ ( स्त्री० ) दरार, छेद, मेज़ में लगा संदूक,  
 ( कि० वि० ) ज़्यादा, अधिक, ( वि० ) भारी, लंबा ।  
 दराँती ( सं० दाव, दा=टुकड़े करना ) ( स्त्री० ) हँसुवा,  
 हँसिया ।  
 दरार ( सं० द=हाड़ना ) ( स्त्री० ) फटी हुई जगह,  
 दरज, शिगाक, चीर, फटा, दरका, फाड़ ।  
 दरारना ( कि० थ० ) फटना ।  
 दरारा ( पु० ) दरार, शिगाक ।  
 दरिद्र ( वि० ) गरीब, निर्धन, गाल ।

दरिहर ( पु० ) दरिद्र, गरीब ।

दरिद्र ( दरिद्रा=दुर्दशा होना ) ( वि० ) कंगाल, निर्धन, रंक, दीन, दुःखी, गरीब, मुफ्तलिस ।

दरिद्रता ( दरिद्र ) ( स्त्री० ) कंगालपन, निर्धनता, गरीब, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

दरिद्री ( सं० दरिद्र ) ( वि० ) कंगाल, निर्धन, दीन, दुःखी, गरीबी, दरिद्र ।

दरिया ( पु० ) सागर, समुद्र, नदी, नद ।

दरियाई ( वि० ) समुद्री, नदीसंबंधी ।

दरियाईघोड़ा ( पु० ) एक प्रकार का जानवर जो नदियों के दलदल में रहता है ।

दरियाईनारियल ( पु० ) एक प्रकार का नारियल ।

दरियादासी ( पु० ) साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब ने चलाया था ।

दरियादिल ( वि० ) उदार, दानी, साध्वर्च ।

दरियाव ( पु० ) सागर, समुद्र, नदी ।

दरी ( स्त्री० ) खोह, गुफा, मोटे सूत का बिछौना-विशेष, ( वि० ) चीरनेवाला, डरपोक, डरनेवाला ।

दरीचा ( पु० ) खिड़की, छोटा दरवाजा ।

दरीची ( स्त्री० ) जँगला, खिड़की ।

दरीबा ( पु० ) पान का बाज़ार, पान की सट्टी ।

दरेती ( स्त्री० ) चकरी, अन्न दरने की छोटी चक्री ।

दरेरना ( कि० अ० ) धक्का देना, रगड़ना ।

दरेस ( स्त्री० ) फूट के छापे का महीन वस्त्र ।

दरेसी ( स्त्री० ) तैयारी, मरम्मत, वस्त्र पर छपाई ।

दरोग ( पु० ) भूठ, असत्य ।

दरोगहलफ़ी ( स्त्री० ) भूठी गवाही देने का अपराध ।

दरोगा ( पु० ) प्रबंधक, थानेदार, देखरेख रखनेवाला व्यक्ति ।

दर्जन ( पु० ) बारह वस्तुओं का समुदाय ।

दर्जा ( पु० ) श्रेणी, कक्षा, वर्ग, कोटि ।

दर्द ( पु० ) व्यथा, पीड़ा ।

दर्दमंद ( वि० ) पीड़ित, व्यथित, दयालु, दयावान् ।

दर्दी ( वि० ) पीड़ित, दयालु ।

दर्दुर [ दुःख देना ( कानों को शब्द करके ) वा द=फाड़ना ] ( पु० ) दादुर, मेंढक, बेंग, भेक, मेघ, एक बाजे का नाम, एक पहाड़ का नाम ।

दर्प ( दृप्=धमंड करना ) ( पु० ) धमंड, अभिमान, अहंकार, दाप, गरूर ।

दर्पण ( दृप्=चमकना ) ( पु० ) काँच, आईना, आरसी, मुकुर ।

दापत ( वि० ) अहंकारी, धमंडी, मगरूर ।

दर्भ ( दम्=गाथना, बाधना ) ( पु० ) डाभ, कुशा, एक प्रकार की घास ।

दर्भट ( पु० ) भीतरी कोठरी ।

दर्रा ( पु० ) पहाड़ी रास्ता, घाटी, दरार ।

दर्राज ( स्त्री० ) लकड़ी सीधी करने का औज़ार ।

दर्दानी ( कि० अ० ) निषङ्गक और बिना ठहरे सीधा चला जाना ।

दर्वी ( द=फाड़ना ) ( स्त्री० ) कलछुली, कलछो, चमची, डोई ।

दर्वीकट ( पु० ) फनवाला साँप ।

दर्श ( दृश्=देखना ) ( पु० ) दर्शन, देखना, दृष्टि, अमावास्या जिस दिन चाँद और सूर्य एक जगह देखे जाते हैं ।

दर्शक ( दृश्=देखना ) ( पु० ) दिखानेवाला, द्वारपाल, पौरिया ।

दर्शन ( दृश्=देखना ) ( पु० ) देखना, दृष्टि, दीठ, भेंट, एक दूसरे को देखना, रूप, आकार, दिखाव, आँख, सपना, दर्पण, न्याय आदि छः शास्त्र ( १ न्याय—इसका आचार्य गौतम ऋषि, २ वैशेषिक—इसका आचार्य कणाद मुनि, यह बहुत बातों में न्याय से मिलता है और बहुतों में नहीं मिलता, ३ मीमांसा—इसका आचार्य जैमिनि ऋषि, इसमें यज्ञ, वन, तप, दान और वेद पढ़ना आदि कर्मों के करने में मुक्ति पाना लिखा है, ४ वेदान्त—इसका आचार्य व्यासदेव, ५ सांख्य—इसका आचार्य कपिल मुनि, इस मत के माननेवाले मृष्टि का कोई कर्ता नहीं मानते और कहते हैं कि संसार नित्य है और कोई इसका बनानेवाला नहीं है, ६ पातंजल—इसका आचार्य पतंजलि मुनि, यह और सब बातों से सांख्य से मिलता है । पर सांख्यवाले मृष्टि का कोई कर्ता नहीं मानते, और इसमें ईश्वर को मृष्टि का कर्ता माना है ) ।

दर्शनप्रतिभू ( पु० ) हाज़िराामिनी ।

दर्शनी ( सं० दर्शनीय=देखने योग्य ) ( स्त्री० ) वह हुंई जो देखने ही से पट जाय, भेंट, चढ़ावा, ( वि० )

सुंदर, सुडौल, रूखवान्, मनोहर, देखने योग्य ।  
 दर्शनीय ( वि० ) सुंदर, मनोहर, देखने योग्य ।  
 दर्शित ( पु० ) देखना, देख पड़ना ।  
 दर्शित ( वि० ) दिखलाया हुआ ।  
 दल ( दल=साड़ना वा टुकड़े-टुकड़े करना ) ( पु० ) वृक्ष का पत्ता, बड़ी सेना, ढेर, समूह, खंड, टुकड़ा, कीचड़, आधा, दलदार, ( वि० ) मोटा, गाढ़ा ।  
 दलक ( दलकना ) ( स्त्री० ) चमक, झलक, धमक, थरथराहट, टीस, दर्द, गुदई ।  
 दलकना ( क्रि० अ० ) चमकना, झलकना, झिझकना, थरथराना, विदीर्ण होना, फट जाना, भयभीत होना, डरना, काँटना ।  
 दलसंजन ( वि० ) बलवान् योद्धा, सेना को व्रस्त करनेवाला, ( पु० ) धान-विशेष ।  
 दलसंभन ( पु० ) औजार-विशेष जो कमखाव बुनने के काम आताहै, मुखिया, दल का थामनेवाला, अगुआ ।  
 दलदल ( सं० दल=कीचड़ ) ( पु० ) कीचड़, पाँका, काँरी, धसान, धसाव, पंक ।  
 दलदलाना ( क्रि० अ० ) काँटना, थराना ।  
 दलदार ( वि० ) मोटे दल या गुदावाला ।  
 दलन ( दल=टुकड़े करना ) ( पु० ) टुकड़े-टुकड़े करना, मर्दन, नाश, ( वि० ) नाश करनेवाला, टुकड़े करनेवाला, मर्दन करनेवाला ।  
 दलना ( म० दलन ) ( क्रि० म० ) मोटा पीसना, भुरभुराना, दौ टुक करना ( जंग दल का ) ।  
 दलनी ( स्त्री० ) दुमुट, लोह की मुगरी, लोहे का मुगदर ।  
 दलयादल ( म० दलवारिद, दल=सेना वा समूह, वारिद=बादल ) ( पु० ) बादलों की सेना, बादलों का समूह, बड़ी सेना, बड़ा डेरा ।  
 दलमलना  
 दलमसल करना } ( म० ) पीस  
 डालना, मीजना, तोड़ डालना, मर्दन करना ।  
 दलित ( दल+त ) ( वि० ) मर्दित, रौंदा हुआ, अधि-कृत, निरस्त ।  
 दलिद्र ( सं० दारिद्र ) ( पु० ) कंगालपन, निर्धनता, गरीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।  
 दलिद्री ( सं० दारिद्रा ) ( वि० ) कंगाल, निर्धन, दीन, दुःखी, गरीब ।

दलिया ( सं० द्वि+दल, द्वि=दो, दल=टुकड़ा ) ( पु० ) दला हुआ अनाज ।  
 दलिहन ( पु० ) अन्न-विशेष, जिससे दाल बनाते हैं, मूँग, अरहर, उरद आदि ।  
 दली ( वि० ) पत्तेवाला, दलवाला, दलित, दली हुई ।  
 दलील ( स्त्री० ) युक्ति, तर्क-वितर्क ।  
 दलैती ( सं० दलयती ) ( स्त्री० ) चर्की, जाँती, दाल बनाने की कल ।  
 दलेल ( स्त्री० ) सिपाहियों की वह क़वायद जो उनको सज़ारूप में दी जाती है ।  
 दलैया ( पु० ) दलनेवाला, नाश करनेवाला ।  
 दलभ ( पु० ) धोखा, छल, पाप, अधर्म, चक्र ।  
 दलाल ( पु० ) दलाल, मध्यस्थ, माल बिकवानेवाला ।  
 दलाला ( स्त्री० ) कुटनी, कूती ।  
 दलाली ( स्त्री० ) दलाली, कमीशन ।  
 दँवरी ( स्त्री० ) दँवरी, मेंढ़ाई ।  
 दव ( द=जलना, या पीड़ा होना ) ( पु० ) वन, जंगल, जंगल की आग, पीड़ा, दुःख ।  
 दवन ( पु० ) नाश, दौना का पौदा ।  
 दवना ( पु० ) एक प्रकार का पौदा, ढकना, ढाकने का पात्र-विशेष ।  
 दवनी ( स्त्री० ) पौदा-विशेष, मेंढ़ाई, दवारी ।  
 दवरिया ( स्त्री० ) दावानल, दवाग्न ।  
 दवा ( स्त्री० ) औषध, ओषधि ।  
 दवाई ( स्त्री० ) दवा, औषध, ओषधि ।  
 दवाखाना ( पु० ) औषधालय, दवाईखाना ।  
 दवागि ( स्त्री० ) दवारि, दावानल ।  
 दवागिन ( स्त्री० ) दवाग्न, दावानल ।  
 दवाग्न ( दव+अग्न ) ( स्त्री० ) वन की आग ।  
 दवात ( स्त्री० ) स्याही रखने का बर्तन, मसिपात्र ।  
 दवानल ( पु० ) दावानल, दवाग्न, वन की आग ।  
 दवामी ( वि० ) चिरस्थायी, सदा एक-सा रहनेवाला ।  
 दवामीर्दोबस्त ( पु० ) प्रबंध-विशेष जिसमें ज़मान का सरकारी लगान या भूमिकर सदा एक-सा रहे, उसमें कमीबेशी न हो ।  
 दवारि ( सं० दावानल ) ( स्त्री० ) वन की आग ।  
 दविष्ट ( वि० ) बहुत दूर ।  
 दवीयस ( वि० ) दूर ।

दश ( वि० ) दस, पाँच के दूने, अंचल ।

दशकंठ ( दश+कंठ ) ( पु० ) रावण, दशकंधर, दशानन ।

दशकंधर ( दश+कंधर ) ( पु० ) रावण ।

दशकर्म ( पु० ) गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस संस्कार अर्थात् १ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमंतोन्नयन, ४ जातकरण, ५ निष्क्रमण, ६ नामकरण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकरण, ९ उपनयन और १० विवाह ।

दशक्रिया ( पु० ) गणित-विशेष, दस गंडे की गणना ।

दशगात्र ( पु० ) वह कर्म जो मृतक के मरने के दिन से लेकर दस दिन तक होता है ।

दशग्रीव ( दश+ग्रीव ) ( पु० ) रावण ।

दशदिक् ( वि० ) पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ऊर्ध्व और अधः ।

दशदिक्पाल ( पु० ) दसों दिशाओं के अधिपति, इंद्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा और अनंत ।

दशधा ( क्रि० वि० ) दस प्रकार, दस बार, ( वि० ) दस तरह का ।

दशन ( दश=काटना ) ( पु० ) दाँत, दंत, कवच, शिखर ।

दशनामी ( पु० ) शंकराचार्य के मत के अनुयायी दस प्रकार के संन्यासी—१ तीर्थ, २ आश्रम, ३ वन, ४ अरण्य, ५ गिरि, ६ पर्वत, ७ सागर, ८ सरस्वती, ९ भारती और १० पुरी ।

दशभुजा ( स्त्री० ) दुर्गा, दस भुजाओं वाली ।

दशम ( दश ) ( वि० ) दसवाँ ।

दशमहाविद्या ( दश=दस, महाविद्या=महामाया ) ( स्त्री० ) दस प्रकार की दुर्गा, जैसे १ काली, २ तारा, ३ षोडशी, ४ भुवनेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता, ७ धूमावती, ८ बगला, ९ मातंगी, १० कमला ।

दशमलव ( दशम+लव ) ( पु० ) दशमांश, दसवाँ हिस्सा, क्यूरे अशारिया ।

दशमी ( दशम ) ( स्त्री० ) दसवीं तिथि ।

दशमुख ( दश+मुख ) ( पु० ) रावण ।

दशमुखांतक ( दशमुख=रावण, अंतक=नाश करनेवाला ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

दशमूल ( पु० ) औषध-विशेष, दस वृक्षों की छाल, जो औषध के काम में आती है ।

दशयोगभंग ( पु० ) ज्योतिष का नक्षत्र वेध-विशेष, जिसमें विवाहादि शुभ कर्म वर्जित हैं ।

दशरथ [ दश ( दसों दिशा में ) रथ ( रथ की गति है जिसकी ) अर्थात् जिसने दसों दिशाओं को जीत लिया ] ( पु० ) अयोध्या का राजा और श्रीरामचंद्र का बाप ।

दशशीश ( सं० दश=दस, शीर्ष=सिर ) ( पु० ) रावण, दशकंधर, दशानन ।

दशहरा ( दश, दस जन्म के पाप, ह=हरना ) ( पु० ) जो सुदी दशमी जो गंगा का जन्मदिन है, इस दिन जो कोई गंगा में नहाना है उसके दस जन्म के अथवा दस प्रकार के पाप दूर हो जाते हैं । [ दश ( दशमुख ) रावण, ह=नाश करना ] कुंवार सुदी दशमी जिस दिन रामचंद्र रावण को मारने के लिये चढ़े थे, इसलिए इसको विजयदशमी भी कहते हैं ।

दशा ( दश=काटना, विभाग करना ) ( स्त्री० ) अवस्था, हालत, गति, दशा दस प्रकार की हैं १ गर्भवास, २ जन्म, ३ बालपन, ४ लड़कपन, ५ किशोर, ६ जवानी, ७ अधवृद्धापा, ८ वृद्धापा, ९ प्राणरोध अर्थात् मरने के समय की अवस्था, १० नाश या मरना, ज्योतिष की दशाएँ ।

दशांग ( पु० ) सुगंधित वृक्षों से बना हुआ भूप जो पृजनादि में जलाया जाता है ।

दशांगुल ( पु० ) डंगरा, त्वरवृक्षा ।

दशांश ( दश+अंश ) ( पु० ) दसवाँ भाग, दसवाँ हिस्सा ।

दशानन ( दश+आनन ) ( पु० ) रावण, दशमुख, दशकंठ, दशकंधर, दशग्रीव, दशशीश ।

दशार्ण ( पु० ) देश-विशेष, विंध्यपर्वत के पूर्व और दक्षिण भाग का देश, मालवा का पश्चिम भाग, इस देश की राजधानी का नाम विदिशा है जो मिलसा का प्राचीन नाम है ।

दशार्ह ( पु० ) वृद्ध, वृष्णिवंशी पुरुष, देश-विशेष, यदु-देश, यदुदेश के रहनेवाले ।

दशावतार ( पु० ) चारों युगों में विष्णु के दस अवतार ।

दशाधिपाक ( पु० ) दुःख की अंतिम अवस्था ।

दशाश्व ( पु० ) चंद्रमा, निशाकर ।

दशाश्वमेध ( पु० ) दस अश्वमेधयज्ञ-विशेष, तीर्थ-विशेष, काशी में इसी नाम का एक घाट है ।

दशास्य ( पु० ) दशमुख, रावण, दशानन ।  
 दशास्यजित् ( पु० ) राम, रघुनाथ ।  
 दशाह ( पु० ) दस दिन में किए जानेवाले कर्म, दस दिन में साध्य कार्य ।  
 दशाहीन ( वि० ) अभागा, दुरवस्था, दुर्गत, दुरवस्था-पन्न, विना कोर का कपड़ा ।  
 दशीला ( वि० ) मुखी, श्रीमान् ।  
 दस ( सं० दश ) ( वि० ) पाँच का दूना ।  
 दसखत ( पु० ) हस्ताक्षर ।  
 दसन ( पु० ) दाँत, दशन ।  
 दसमाथ ( पु० ) रावण ।  
 दसवाँ ( वि० ) १ के बाद का स्थान ।  
 दसी ( स्त्री० ) कपड़े के किनारे का सूत, बैलगाड़ी की पटरी, चिह्न, पता, चमड़ा छीलने का औजार-विशेष, रापी ।  
 दसों द्वार ( सं० दश द्वार ) ( पु० ) शरीर के दसों रास्ते, २ आँखें, २ कान, २ नाक के नथुने, सातवाँ मुँह, आठवाँ लिंग, नवीं गुदा, दसवाँ ब्रह्मांड अर्थात् सिर का विचला भाग ; संस्कृत और हिंदी के बहुत-से ग्रंथों में नौ द्वार ही लिखे हैं वहाँ दसवाँ द्वार ब्रह्मांड नहीं माना है, नवद्वार शब्द को देखो ।  
 दसौंधी ( पु० ) भाट, राय, स्तावक, प्रशंसक, चारणों की एक जाति, ब्राह्मण-जाति का भाट, धंदीजन ।  
 दस्त ( पु० ) हाथ, कर, हस्त, पाखाना, ( वि० ) प्रसिद्ध, प्रस्थापित, नष्ट ।  
 दस्तकार ( पु० ) हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला व्यक्ति ।  
 दस्तकारी ( स्त्री० ) हाथ की कारीगरी ।  
 दस्तखत ( पु० ) स्वाक्षर, सही, अपने नाम की सही करना ।  
 दस्ता ( पु० ) धातु-विशेष, ताम चीनी, राँगा, कलई, मूठ, बेंट, फूलों का गुच्छा, सिराहियों की छोटी टोली, गारद, चपरास, संजाफ, कागज के चौकीय तख्तों की गह्वी, डंडा, सोटा, हरगिला ।  
 दस्ताना ( पु० ) हाथ का मोजा ।  
 दस्तावर ( वि० ) दस्त लानेवाली दवा, विरेचक, जुलाब ।  
 दस्तावेज़ ( पु० ) वह कागज जिसमें किसी व्यवहार-

विशेष की शर्तें लिखी हों, कृणपत्र ।  
 दस्ती ( वि० ) हाथ का, ( स्त्री० ) छोटी मुँठ, छोटा कलमदान ।  
 दस्तूर ( पु० ) रीति, प्रथा, रस्म, विधि, नियम, पार-सियों के पुरोहित ।  
 दस्तूरी ( स्त्री० ) कमीशन, हक ।  
 दस्त्यु ( दस=देखना, चुगना ) ( पु० ) शत्रु, चोर, तस्कर, अग्नि, खल, बड़ा साहसी, लुटेरा ।  
 दम्ब ( पु० ) अश्विनीकुमार, गधा, शिशिर, जोड़ा, ( स्त्री० ) अश्विनी-नक्षत्र ।  
 दह ( सं० दद ) ( पु० ) बहुत गहरा पानी, गहरा भँवर, ( जंगे कालीदह ) ( स्त्री० ) ज्वाला, लपट, लौ ।  
 दहकना ( सं० दहन ) ( क्रि० अ० ) जलना, खेद करना, पछताना ।  
 दहड़दहड़ ( सं० दहन ) ( क्रि० वि० ) बल से, जोर से, वेग से, प्रचंडता से ।  
 दहड़दहड़ जलना ( बाल० ) बड़े वेग से जलना, बहुत जोर से आग का लहकना ।  
 दहदल ( पु० ) दलदल ।  
 दहन ( दह=जलाना ) ( पु० ) आग, अग्नि, आगी, जलाना, जलन, दाह, चित्रक वृक्ष, भिलावा, तीन की संख्या, कबूतर, ज्यातिष का एक योग, ( वि० ) दुर्जन, दुष्टचिन्त, दुःख देनेवाला, जलानेवाला ।  
 दहनकंतन ( पु० ) धूप, धुआँ ।  
 दहनप्रिया ( स्त्री० ) स्वाहा और स्वधा, अग्नि की भार्या ।  
 दहनशील ( वि० ) जलनेवाला ।  
 दहना ( ग० दहन ) ( क्रि० अ० ) जलना, भस्म होना, कुड़ना, धँसना ।  
 दहना } ( सं० दक्षिण ) ( वि० ) दाहना, दक्षिण ।  
 दहिना }  
 दहनाराति ( पु० ) जल, सलिल, तोय, पानी, अग्नि का शत्रु ।  
 दहनीय ( वि० ) जलने योग्य, जलाने के उपयुक्त, दाह्य, दग्ध करने योग्य ।  
 दहनोपल ( पु० ) मूर्धकान्तमणि, आतशी शीशा, अग्नि-मय पथर ।  
 दहय ( क्रि० म० ) भस्म करे, जलावे, सतावे ।

दहर

दहर (दह=जलाना) (वि०) दुर्बोध, सूक्ष्म, ह्रस्व,  
(पु०) बालक, मूषक, चूहा, छोटा भाई, बहन,  
हीज़, हृदय, आकाश, वरुण, नरक, कुंड।

दहरदहर (कि० वि०) दहड़-दहड़, धाँय-धाँय, लपट  
फँकते हुए, धधकते हुए।

दहराकाश (पु०) ईश्वर, चिदाकाश।

दहल (स्त्री०) भय से सहसा कंपन।

दहलना (कि० अ०) काँपना, डरना, शंकित होना।

दहला (पु०) ताश का वह पना जिस पर दस बूटियाँ  
होती हैं, थाला, आलवाला।

दहलाना (कि० स०) काँपाना, चौंकाना, शंकित करना,  
भयभीत करना।

दहशत (स्त्री०) भय, डर, खौफ़।

दहसेरा (पु०) दस सेर की तौल-विशेष, परिमाण-  
विशेष।

दहाई (स्त्री०) दस का मान, दस का भाव, अंकों की  
गणना में दूसरे स्थान पर लिखा हुआ अंक।

दहाड़ना (कि० अ०) गरजना, डकारना।

दहाना (सं० दहन) (कि० म०) जलाना, भस्म करना,  
(पु०) बोरानदी, द्वार, मशक का मुख, मुहाना,  
मोरी, लगाम।

दहिजार (पु०) दाढ़ीजार, स्त्रियों की एक गाली जो  
क्रोध में पुरुषों को दी जाती है।

दहिना (वि०) दक्षिण, दक्षिण भाग, बाएँ का उलटा।

दही (सं० दधि) (पु०) जमा हुआ दूध, दधि।

दहूँ (अध्य०) अथवा, या, किंवा।

दहेज (पु०) दायज, यौतुक।

दहेड़-दहेल (पु०) पच्ची-विशेष।

दहेड़ी (सं० दधि=दही) (स्त्री०) दही की हाँडी।

दाँउ (पु०) दाँव।

दाँड़ (सं० दंड) (पु०) सज़ा, ताड़ना, दंड, जुर्माना,  
घटी, डाँड।

दाँड़ना (कि० म०) दंड देना, सज़ा देना।

दाँड़ा (पु०) सीमा, सीध, मेंढ़, सिवाना।

दाँड़ा मेड़ा (पु०) सिवाना, छोर, दो गाँव या खेतों  
के विभाग का चिह्न-विशेष।

दाँत (सं० दंत) (पु०) दंत, दशन, रदन।

दाँतों उँगली काटना (बोल०) अचभे में आकर दाँतों

से उँगली काटना, अचरज करना, विस्मय करना।  
दाँत कचकचाना (बोल०) खीस निकालना, खिसि-  
याना, दाँत पीसना।

दाँत कटकटाना (बोल०) दाँत पीसना, किचकिचाना,  
खूब जाड़ा लगाना।

दाँत काटी रोटी (बोल०) किसी का जी से मित्र  
होना, दिली दोस्त होना, पक्की मिताई होना।

दाँत खट्टे करना (बोल०) मन तोड़ना, मन मारना,  
हरा देना, बिना हिम्मत करना, सताना, हीसला  
पस्त करना।

दाँत तले उँगली दवाना या काटना (बोल०) हक्का-  
बक्का रह जाना, भौंचक रहना, अचभे में होना, मुन-  
हैयर होना।

दाँत निकालना (बोल०) हँसना, मुसकुराना, अपनी  
अयोग्यता और बेवशी जतलाना अथवा मानना।

दाँत पर चढ़ाना (बोल०) किसी की भलाई अथवा  
नामवरी को मिटाना, कलंक लगाना।

दाँत पीसना (बोल०) दाँत कड़कड़ाना, खिसियाना,  
दाँत कचकचाना, कटकटाना, क्रोध करना, खीस  
निकालना।

दाँत वजना या बाजना (बोल०) टेंटे करना, चेंचें  
करना, बकबक करना, भगड़ना।

दाँत रखना, या होना किसी पर (बोल०) किसी  
वस्तु को बहुत अधिक चाहना, धवज़ा करना,  
तुच्छ जानना।

दाँता किलकिल (सं० दंतकिणकिला) (स्त्री०) भगड़ा,  
लड़ाई।

दाँव (पु०) घात, जाल, पेंच, अवसर, मोक़ा, गौ,  
बारी, समय, कुशता के पेंच।

दाँव चलना (बोल०) वररहना, जीतना, सरस होना,  
बढ़ चबना, दाल गलना।

दाँव चलाना (बोल०) कावू चलाना, गौ पाना, चोट करना।

दाँव पकड़ना (बोल०) कुशनी करना, कुशनी लड़ना,  
पेंच करना, दाँव करना।

दाँव घेटना (बोल०) घात में घेटना, दबकना।

दाई (सं० दायक) (पु०) देनेवाला, (जैसे सख़्दाई)

दाई (फा० दायद) (स्त्री०) धाय, दूध पिलानेवाली,  
दाई, जनाई, दासी, चकरानी, खीड़ी।

- दाऊ ( पु० ) बड़ा भाई, बाप, बलदेवजी का नाम ।
- दाऊदिया ( पु० ) गुलदावदी का फूल, कवच-विशेष, एक तरह की आतिशबाज़ी, एक प्रकार का नरम छिलके का मोहूँ ।
- दाऊदी ( श्री० दावदी ) ( स्त्री० ) एक भाइ का अथवा उसके फूल का नाम, एक तरह की आतिशबाज़ी, मफेदी ।
- दाक्षायणी ( स्त्री० ) सती, पार्वती, अश्विन्यादि नक्षत्र, दंतीवृक्ष, जमालगोटे का वृक्ष, ( वि० ) सोने का ।
- दाक्षाय ( पु० ) गृध्र पक्षी ।
- दाक्षिण ( पु० ) कथन, उपाय, अधिकार, दक्षिणदेशीय एक हाम का नाम ।
- दाक्षिणात्य ( पु० ) नारियल वृक्ष, दक्षिण देशी, ( वि० ) दक्षिणीय, दक्षिण-संबंधी, दक्षिणा-संबंधी ।
- दाक्षिण्य ( पु० ) उदारता, होशियार, मददगार, अनुकूलता, प्रमत्तता, ( वि० ) दक्षिण-संबंधी ।
- दाक्षी ( स्त्री० ) दक्ष-कन्या, पाणिनि की माता का नाम ।
- दाक्ष्य ( स्त्री० ) पटुता, निपुणता, दक्षता ।
- दाक्ष्य ( सं० दाक्ष ) ( स्त्री० ) अंगूर, मुतका, किशमिश, दाक्ष ।
- दाखिल ( वि० ) प्रतिष्ठ, शामिल, शरीक, घुसा हुआ, ( पु० ) अर्पण, परिशोधकरण, ली हुई वस्तु का लौटाना, जमा करना ।
- दाखिल-खारिज ( पु० ) किसी सरकारी कागज़ पर किसी संपत्ति के अधिकारी का नाम काटकर किसी दूसरे व्यक्ति या उसके अधिकारी का नाम चढ़ाना ।
- दाखिल-दफ़तर ( वि० ) दबा रखना, डाल रखना ।
- दाखिला ( पु० ) प्रवेश, पहुँच, पैठ ।
- दाघ ( फा० दास और सं० दाघ ) ( पु० ) चिह्न, कलंक, दोष, गर्म लोहे से जलने का चिह्न, दाह, मृतक को जलाना ।
- दाघ चढ़ाना या लगाना ( बी०० ) कलंक लगाना, बदनाम करना ।
- दाघ देना ( बी०० ) गर्म लोहे से चिह्न करना, गुल देना, दाघना, जलाना, दोष लगाना, कलंक लगाना, मृतक को जलाना ।
- दाघ लगना ( बी०० ) बदनाम होना, अपकीर्ति होना ।
- दाघ लाना ( बी०० ) कलंक लगाना, तोहमत लगाना ।
- दाघना ( कि० सं० ) दाघ देना, गुल देना, गर्म लोहे से चिह्न करना, बंदूक अथवा तोप छोड़ना ।
- दाघी ( वि० ) दाघदार, चिह्नित, अंकित, दंडित, लांछित, कलंकित ।
- दाघ ( वि० ) दाह, जलना, ताप, गरमी ।
- दाघना ( कि० अ० ) डाटना, उपटना, बिगड़ना, गुस्सा होना ।
- दाडक ( पु० ) दाँत, दाढ़, दंष्ट्रा ।
- दाइस ( पु० ) एक प्रकार का सर्प ।
- दाड़िम } ( दलू=फटना ) ( स्त्री० ) अनार ।
- दालिम }
- दाड़ी ( स्त्री० ) अनार ।
- दाढ़ ( सं० दाढ़ा, दा=काटना, दंष्ट्रा, दंश=काटना ) ( स्त्री० ) बड़े दाँत, पिछले दाँत, पीसने के दाँत, चीँह, चौभर, चैहूँ, गरज, दहाड़, चित्ताहट ।
- दाढ़ना ( कि० सं० ) भस्म करना, जलाना, दग्ध करना ।
- दाढ़ा ( स्त्री० ) दाढ़ ।
- दाढ़ी ( सं० दाढ़िका ) दाढ़ अर्थात् दाढ़ के पास ( स्त्री० ) टोड़ी पर के बाल, चिपुक, टुड्डी और गाल पर के बाल ।
- दाढ़ीजार ( पु० ) जली दाढ़ीवाला, स्त्रियों की एक गाली ।
- दाढ़ी बनाना या मुड़ाना ( बी०० ) हजामत बनाना, खत बनाना, और कराना ।
- दात ( वि० ) दाता, दातव्य, ( पु० ) दान ।
- दातव्य ( वि० ) देने योग्य ( पु० ) दान ।
- दाता ( दा=देना ) ( वि० ) देनेवाला, दानी, उदार, दानशील, दयालु, हितकारी, सखी, कैयाज़ ।
- दातार ( सं० दातु, दा=देना ) ( वि० ) देनेवाला, दाता ।
- दाती ( वि० ) देनेवाली, दात्री ।
- दातुन ( स्त्री० ) दनुवन, दनुन, दतवन ।
- दातृता ( स्त्री० ) दानशीलता, वदान्यता, देने की प्रकृति ।
- दातृत्व ( पु० ) दानशीलता, दातृता, वदान्यता ।
- दातौन ( स्त्री० ) दंतधावन, दनुवन ।
- दात्यूह ( पु० ) चातक, पपीहा, मेघ ।
- दात्र ( दा=काटना, छेदना ) ( पु० ) हँसिया, बसूला, दाँती ।



दाद ( सं० दद्, दद=रखना, वा द=फाड़ना ) ( पु० )

दिनाथ, चक्रवाई, दद्रु, दाद, रोग-विशेष ।

दाद ( पु० ) दान, देना, न्याय ।

दादनी ( स्त्री० ) पेशगी दी हुई रकम ।

दादरा ( पु० ) एक प्रकार का चलता गाना ।

दादस ( स्त्री० ) ददिया सास, अजिया सास ।

दादा ( पु० ) बाप का बाप, पितामह, बड़ा भाई ।

दादी ( स्त्री० ) बाप की मा, आजी ।

दादुर ( सं० ददुर ) ( पु० ) मेंढक, मिचकुरी, बेंग ।

दादू ( पु० ) एक बड़ा साधु जिसने एक नया मत चलाया था, जो दादू पंथ के नाम से प्रसिद्ध है ।

दादूपंथी ( पु० ) दादू के धर्म को माननेवाला ।

दाधना ( सं० दग्ध ) ( कि० सं० ) दग्ध करना, जलाना, भस्म करना ।

दान ( दा=देना ) ( पु० ) देना, त्याग, पुण्यार्थ या नाम के लिये देना, पुण्य, जैरात, भीख, दक्षिणा, भेंट, समर्पण, अर्पण, गजमद ।

दानधर्म ( पु० ) दान-पुण्य ।

दानपति ( पु० ) सदा दान करनेवाला ।

दानपत्र ( पु० ) हितानामा, वह पत्र जो दान की ई वस्तु का स्वत्व बतलावे ।

दानपात्र ( पु० ) वह व्यक्ति जो दान लेने के योग्य हो ।

दानलीला ( स्त्री० ) भगवान् श्रीकृष्ण की लीला-विशेष ।

दानव ( दन् ) ( पु० ) दनु के बेटे, दनुज, असुर, दैत्य, राक्षस ।

दानवज ( पु० ) दान के लिये वज्र के समान, वैश्य, एक प्रकार का घोड़ा ।

दानवशुरु ( पु० ) शुक्राचार्य ।

दानववज्र ( पु० ) एक प्रकार का अश्व जो कभी बूढ़ा नहीं होता, देव गंधर्व की सवारी में रहता है और मन की तरह वेगवान् होता है ।

दान-वारि ( पु० ) विष्णु, देवता, इंद्र ।

दानवारि ( पु० ) हाथी का मद ।

दानवी ( स्त्री० ) दानव की स्त्री, राक्षसी, ( वि० ) दानव-संबंधी ।

दानवीर ( पु० ) प्रसिद्ध दानी, अति दानकर्ता, काव्य में एक प्रकार का नायक ।

दानवेंद्र ( पु० ) राजा बलि ।

दानशाली ( वि० ) दाता, वदान्य ।

दानशील ( दान=देना, शील=स्वभाव ) ( वि० ) दान करने का जिसका स्वभाव हो, दानी, दाता, उदार ।

दानशौंड ( पु० ) बड़ा दानी, दानशूर, बहुप्रद, बड़ा दाता ।

दाना ( फ्रा० दाना ) ( वि० ) अनाज, अन्न, बीज ।

दाना ( वि० ) बुद्धिमान्, अक्लमंद, ज्ञाता, अनुभवी, अभिज्ञ ।

दानाई ( स्त्री० ) बुद्धिमानी ।

दानाचारा ( पु० ) दाना-घास, खाना-पीना ।

दानाध्यक्ष ( पु० ) राज्य में दान का प्रबंध करनेवाला अफसर ।

दानापानी ( बोल० ) अन्नजल, संयोग, ( पु० ) खाना-पीना, संयोग, समय ।

दानार्चदी ( स्त्री० ) खड़ी क्रसल से उपज का अंदाजा करने का काम ।

दानिनी ( स्त्री० ) दान देनेवाली स्त्री ।

दानी ( दा=देना ) ( वि० ) दाता, देनेवाला, उदार, दानशील, पुण्यात्मा, कृपाज्ञ, परोपकारी ।

दानीय ( वि० ) दान के योग्य ।

दानेदार ( वि० ) जिसमें दाने हों, खादर ।

दांत ( दम्=दन्ताना ) ( वि० ) जितेंद्रिय, तपी, वशीभूत, सुशासित ।

दांति ( दम्+ति ) ( स्त्री० ) इंद्रियनिग्रह, दमन, इंद्रिय-वश करना, नफ़सकुशी, तपस्या के कष्टों के सहने की शक्ति ।

दाप ( सं० दर्प ) ( पु० ) घमंड, अभिमान, अहंकार, गरूर, शेखी, प्रताप, दर्प, गर्व, बल, जोर, उत्साह, शेष, क्रोध, ह्वाव ।

दापक ( वि० ) दवानेवाला, अहंकारी, प्रतापी ।

दापना ( कि० सं० ) रोकना, दवाना ।

दाय ( पु० ) चार, भार, बोझ, अधिकार, श्रेय, शासन, आतंक ।

दायना ( दवना ) ( कि० सं० ) दवाना, दमन करना, चापना, निचोड़ना ।

दाय रखना ( बोल० ) छिपा लेना, चुरा लेना, पकड़ रखना, दबाव रखना ।

दायि ( कि० वि० ) दाबकर, कसकर ।

दाबी ( स्त्री० ) कठी हुई कपल के वह पूले जो मजदूरी में दिए जाते हैं, वन ।

दाम ( दामन्, दं (=काटना) ( स्त्री० ) रस्सी, जेवरी, डोरी, माला ।

दाम ( पु० ) एक पैमे का पञ्चोपचां भाग, मोल-भाव, कीमत ।

दामन ( स्त्री० ) अंचल, आंचल, कपड़े का छोर, पर्वत, शरण, आश्रय, अवलंब ।

दामनगीर ( वि० ) पीछे पड़नेवाला, दाया करनेवाला, प्रसनेवाला ।

दामलिम ( पु० ) ताम्रलिसदेश ।

दामवती ( स्त्री० ) माला, मङ्ग, फूलों की माला ।

दामांचन ( दाम+अचन=वाधना ) ( पु० ) घोड़े की अगाड़ी-पिछाड़ी की रस्सी, घोड़े के पिछले पैर बांधने की रस्सी ।

दामाद् ( पु० ) जामाना, कन्या का पति ।

दामासाह ( पु० ) दिवालिया जिसकी जायदाद पावने वालों में उनके पावने के अनुसार बंट जाय ।

दामासाही ( स्त्री० ) यथार्थ भाग, उचित भाग के कार्य ।

दामिनी ( सं० गौदामिनी ) ( स्त्री० ) बिजली, तबित्, कींधा, बर्क ।

दामी ( स्त्री० ) कर, लगान, महसूल, बाछ, लगती ।

दामी लगाना ( कि० ध० ) कर ठहराना, कर लगाना ।

दामी वासिलात ( पु० ) गाँव के प्रधान ऋणदाता ।

दामीयात ( पु० ) वस्तु-विशेष जिससे रक्त-विकास होता है ।

दामोदर ( दामन्+रसी, उदर=पेट अर्थात् जिसके पेट पर रसी बांधी गई हो, आरुण्य ने एक बार दधन-दर्श के वरदान प्राप्त किये तब उनकी माता यशोदा ने उनके पेट पर रसी बांधी थी तब दामोदर ऐसा नाम हुआ या दामन=लोक, उदर=पेट, अर्थात् जिसके पेट में बहुत-से लोक हैं जैसा "वामानि लोकानामानि तानि यशोदरात्मरं । तेन दामोदरो देव" ( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु ।

दारपत्य ( पु० ) परिणयावस्था, विवाह की अवस्था, ( वि० ) स्त्री-पुरुष-संबंधी ।

दारपत्यमुक्लिपत्र ( पु० ) तलकनामा, स्त्री और पुरुष के छुड़ीती बोलने का पत्र; जिस पत्र को लिखकर स्त्री-पुरुष आपस का संबंध तोड़ देते हैं ।

दाभिभक ( वि० ) दंबयुक्त, अहंकारी, आत्मश्लाघी, आत्म-प्रशंसा करनेवाला, पाखंडी, धूर्त ।

दाप्य ( दा=देना ) ( पु० ) बाप-दादों का धन, पैतृक धन, वसीती, दान, दायजा, यौतुक, विपत्ति, आपद ।

दायक ( दा=देना ) ( पु० ) देनेवाला, दानी, दाता, उदार, दानशील ।

दायजा ( सं० दाय ) ( पु० ) दहेज, दैजा, यौतुक ।

दायभाग ( दाय+भाग ) ( पु० ) बाप-दादों के धन का हिस्सा, पैतृक धन का विभाग, एक ग्रंथ का नाम ।

दायरा ( पु० ) मंडल, वृत्त, मंडली, कक्षा, डफली, खंजड़ी ।

दाया ( पु० ) दया, दावा, अभियोग ।

दायाँ ( वि० ) दाहना ।

दायाद् ( दाय=पैतृक धन, या+दा=लेना ) ( पु० ) बेटा, पुत्र, स्वकुटुंबी, नातेदार, रिश्तेदार, भाई-बंधु, उत्तराधिकारी, दारिम ।

दायादी ( स्त्री० ) कन्या, दुहिता, उत्तराधिकारिणी ।

दायाह ( वि० ) पिता का धन पाने का अधिकार ।

दायित ( वि० ) निश्चित अपराधी, जिसका दोषी होना निश्चित हो चुका हो ।

दायी ( वि० ) दानशील, ऋणग्रस्त, भारग्रस्त, क्लेशयुक्त, प्रतिवादी, किसी काम के बनाने या बिगाड़ने का उत्तरदाता ।

द्वार } ( द=फाड़ना, जो भाइयों के स्नेह को घटा देता है ) ( स्त्री० ) भार्या, पत्नी जोरू, स्त्री, जाया ।

द्वारक ( द=फाड़ना, भेदना ) ( पु० ) बालक, सुअर, फाड़नेवाला, भेदक, काटनेवाला ।

द्वारकर्म ( पु० ) विवाह, दयाह ।

द्वारचीनी ( सं० द्वार=लकड़ी, चीनीय=चानदेश की ) ( स्त्री० ) दालचीनी, एक पेड़ की मसालेदार छाल ।

द्वारण ( पु० ) भेदन, विदारण, कर्तन, काटना ।

द्वारद् ( पु० ) विपभेद, पारा, शिंगरक, समुद्र ।

द्वारमदार ( वि० ) निर्भर, आश्रय, ठहराव ।

द्वारय ( कि० सं० ) नाश कर, विदीर्ण करे ।

द्वारा ( स्त्री० ) जाया, स्त्री, भार्या, पत्नी ।

द्वाराधिगमन ( पु० ) पाणिग्रहण, विवाह, दाराप्राप्ति ।

द्वारापत्य ( पु० ) पुत्र ।

दारिऊँ ( पु० ) अनार, दाहिम ।

दारिका ( दारक=वालक ) ( स्त्री० ) बालिका, बेटी, पुत्री, लड़की, कन्या ।

दारित ( वि० ) विदीर्ण, तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ, कृतभग्न ।

दारिद्र ( सं० दारिद्र ) ( पु० ) दरिद्रता, कंगालपन, दीनता ।

दारिद्र } ( दारिद्र=दुर्दशा होना ) ( पु० ) कंगालपन,  
दारिद्रा } निर्धनता, गरीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

दारी ( वि० ) व्यवहारी, परदारागामी, लंपट, ( पु० ) क्षुद्ररोग-विशेष, विवाह, पति ( स्त्री० ) लौंडी, दासी, युद्ध में पकड़ी हुई दासी ।

दारीजार ( पु० ) गाली-विशेष, दासी-पुत्र, दासी-पति, गुलाम ।

दारु ( द=फटना या फाड़ना ) ( स्त्री० ) लकड़ी, काठ, काष्ठ, देवदार वृक्ष ।

दारुक ( द=फाड़ना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण के सारथी का नाम, देवदार वृक्ष, काठ, लकड़ी, ( स्त्री० ) कठपुतली ।

दारुकदली ( स्त्री० ) वनकदली, वनकेला ।

दारुगंधा ( स्त्री० ) गंधद्रव्य-विशेष ।

दारुगर्भा ( स्त्री० ) गुड़िया, पुतलिका, कठपुतली ।

दारुचीनी ( स्त्री० ) दालचीनी, एक वृक्ष की छाल ।

दारुज ( वि० ) काष्ठमय, काठ का बना हुआ ।

दारुजचित्र ( पु० ) कठपुतली, काठ की पुतली ।

दारुण ( द=फाड़ना, मन को, वा डराना ) ( वि० ) भयानक, भयंकर, डरावना, विकट, कराल, कठिन, कठोर, ( पु० ) भयानक रस, रौद्ररस, चित्रकवृक्ष ।

दारुनिशा ( स्त्री० ) दारुहरिद्रा, दारुहलदी ।

दारुफल ( पु० ) शिलगोजा ।

दारुमय ( वि० ) काठ का बना हुआ मकान आदि, काष्ठमय, काष्ठनिर्मित ।

दारुहस्तक ( पु० ) काष्ठ का चिमचा, काठ की कलछी, करछी, काठ का बना हाथी ।

दारु ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, शराब, बारूत, बरूद ।

दारुड़ा } ( पु० ) मदिरा, मद्य ( स्त्री० ) शराब,  
दारुड़ी } दारु ।

दारोघा ( पु० ) द्रोणा, प्रबंधक, थानेदार ।

दाढ्य ( पु० ) दृढ़ता, कठिनता, काठिन्य ।

दायों ( पु० ) अनार ।

दार्शनिक ( वि० ) दर्शन-शास्त्र जाननेवाला ।

दार्ष्टान्तिक ( वि० ) दृष्टान्त-संबंधी ।

दाल ( दल=टुकड़े करना ) ( स्त्री० ) दली हुई मूँग, चने, उड़द, मोठ, मसूर, अरहर आदि, दलहन, दाली ।

दाल गलनी, किसी की ( बोल० ) सरस होना, वर पाना, जीतना, गठाव गाँठना, डौल बाँधना, युक्ति करना, काम बनाना ।

दालचीनी ( स्त्री० ) एक प्रकार के वृक्ष की छाल ।

दालभ्य ( पु० ) दलभ ऋषि के गोत्रज, एक ऋषि का नाम जिसका दूसरा नाम वृक था ।

दालिद्र ( सं० दारिद्र ) ( पु० ) कंगालपन, गरीबी, निर्धनता, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

दालिम ( पु० ) अनार, दाहिम ।

दाँधना ( कि० सं० ) डंठल से अन्न श्रीर भूसा निकालना, दँवरी करना ।

दाँधनी ( स्त्री० ) स्त्रियों के सिर पर पहनने का एक गहना, बंदी ।

दाँवरी ( स्त्री० ) रस्सी ।

दाव ( द=जलाना ) ( पु० ) जंगल, वन, वन की आग, गर्मी, पीड़ा, संताप ।

दावन ( पु० ) पीड़न, नाशन, दाबना, दबाना ।

दावना ( कि० सं० ) दँवरी करना, दबाना, अन्न निकालना, डंठल से अन्न के दाने निकालना ।

दावा ( पु० ) हक, स्वत्व, अधिकार, अधिकारप्राप्ति के लिये निवेदन, ( स्त्री० ) वन की आग ।

दावागीर ( पु० ) दावा करनेवाला ।

दावाग्नि } ( दाव=जंगल, अग्नि या अनल=आग )  
दावानल } ( स्त्री० ) वन की आग, जंगल की आग ।

दावात ( स्त्री० ) दवात, मसीपात्र ।

दावाद्वार ( पु० ) अपना अधिकार जनानेवाला ।

दाघिनी ( स्त्री० ) बिजली, स्त्रियों के माथे का एक गहना ।

दाघी ( स्त्री० ) नालिश, प्रार्थना, याचना ।

दाश ( दाश=देना जिसको दरमाहा आदि देते हैं ) ( पु० ) नौकर, सेवक, ( दश=काटना, मारना, जो मछलियों को मारता है ) मछुवा, धीवर ।

दाशरथ ( दशरथ ) ( पु० ) राजा दशरथ के बेटे श्रीरामचंद्र आदि ।

दाशरथी ( पु० ) दशरथ के पुत्र श्रीरामचंद्र आदि ।

दाशार्ह ( पु० ) विष्णु, नारायण ।

दाश्व ( पु० ) दानी, दाता, दानकर्ता ।

दास ( दाम्=देना जो अपनी आत्मा को देता है अथवा जिसको धन आदि देते हैं ) ( पु० ) नौकर, सेवक, किंकर, टहलुवा, शूद्र, शूद्रों का उपनाम, साधुओं की एक शाखा ।

दासता ( स्त्री० ) परतंत्रता, सेवकाई, दासवृत्ति ।

दासत्व ( पु० ) सेवकाई, दासता, सेवकभाव ।

दासनंदिनी ( स्त्री० ) ध्यास की माता, सत्यवती ।

दासपन ( पु० ) दासता, सेवकाई ।

दासवृत्ति ( स्त्री० ) नौकरी, पराधीन जीवन ।

दासा ( पु० ) आँगन के चारों ओर का चयूतरा जो घर के अंदर बरसानी पानी जाने से रोकता है, हँसुआ, ओरी की खूँटी ।

दासानुदास ( पु० ) सेवक का सेवक, शिष्टाचार दिखाने के लिये प्रायः इस शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

दासी ( दास ) ( स्त्री० ) लौंड़ी, बाँदी, चेरी, शूद्रा, पीत भंडी, बेंदी ।

दासेय ( पु० ) दासीपुत्र, सेवक, गुलाम ।

दास्तान ( स्त्री० ) वृत्तान्त, हाल, कथा, वर्णन ।

दास्य ( पु० ) सेवा, दासता, सेवकाई, भृत्यता, नौकरी ।

दाह } ( दह=जलाना ) ( पु० ) जलाना, जलन,  
दाहन } ताप, राख करना, झुलसाव, शव जलाने की क्रिया ।

दाहक ( दह=जलाना ) ( पु० ) जलानेवाला, विग्रक-वृक्ष ।

दाहकर्म, दाहक्रिया ( पु० ) मुरदे को जलाने का काम ।

दाहकाष्ठ ( पु० ) अगार ।

दाहज्वर ( पु० ) वह उवर जिसमें दाह अधिक हो ।

दाह देना ( बोल० ) मुरदा जलाना ।

दाहना ( सं० दाहना ) ( कि० सं० ) जलाना, भस्म करना, बालना, पीबा पहुँचाना ।

दाहना } ( सं० दक्षिण ) ( वि० ) दाहना, दक्षिण,  
दाहिना } दहिना ।

दाहसर ( पु० ) प्रेतावास, स्मशान, चिताभूमि ।

दाहा ( पु० ) ताजिया, जखन, भस्म किया ( कि० सं० ) जलाया ।

दाहात्मक ( वि० ) दाहस्वरूप, दाहप्रद ।

दाहा ( वि० ) दाह करने के उपयुक्त, जलाने योग्य, दाहाह ।

दाक्ष्य ( पु० ) निपुणता, दक्षता ।

दिअली ( स्त्री० ) मिट्टी का बहुत छोटा दीपक ।

दिआ ( पु० ) दीया, दीपक, चिराग ।

दिउली ( स्त्री० ) चेचक आदि के सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी, खुरटी, खुरंट मसूर और चने के छिलके निकाले हुए दाने ।

दिआवत्ती ( स्त्री० ) दीया जलाने के समय का काम ।

दिक्कदार ( वि० ) रोगी, रोगपीडित, ध्वयित, बीमार ।

दिक् ( पु० ) ओर, दिशा ।

दिक्क ( वि० ) परेशान, हैरान, ध्वयित, संतप्त, ( पु० ) हाथी का बच्चा ।

दिक्कत ( स्त्री० ) परेशानी, कठिनाई, तंगी ।

दिक्करी ( पु० ) आठों दिशाओं के हाथी, दिग्गज ।

दिक्पति } ( दिग्=दिशा, पति, राजा, या पाल=पालने  
दिक्पाल } वाला ) ( पु० ) दिशाओं के राजा, ( श्लोक )

“इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर

ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्” जैसे १ पूर्व का

ईश, २ अग्निकोण का अग्नि, ३ दक्षिण का यमराज, ४

नैर्ऋत्यकोण का नैर्ऋत, ५ पश्चिम का वरुण, ६ वा-

यव्यकोण का पवन, ७ उत्तर का कुबेर, ८ ईशानकोण

का महादेव, ९ ऊपर की दिशा का ब्रह्मा, १० नीचे

की दिशा का अनंत या विष्णु-अथवा ( श्लोक )

“सूर्यः शुक्रः क्षमापुत्रः संहिकेयः शनिः शशी ।

सौम्यस्त्रिदशमन्त्री च पूर्वादीनामधीश्वराः” जैसे १

पूर्व का दिक्पति सूर्य, २ अग्निकोण का शुक्र, ३

दक्षिण का मंगल, ४ नैर्ऋत्यकोण का राहु, ५

पश्चिम का शनैश्चर, ६ वायव्यकोण का चंद्रमा, ७

उत्तर का बुध, ८ ईशानकोण का बृहस्पति

कहलाता है ।

दिक्शुल } ( दिग् या दिशा=ओर, शुल=काँटा, या दुःख )

दिशोशुल } ( पु० ) वह दिशा जिस तरफ किसी

विशेष दिन को यात्रा करना अनुश्रुत है । ( श्लोक )

“शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणास्थं दिशं गुरौ ।

रवौ शुके पश्चिमां च बुधे भीमे तथोत्तराम्” जैसे

शनैश्चर और सोमवार को पूर्व में, बृहस्पति को दक्षिण में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, बुधवार और मंगलवार को उत्तर में दिशाशूल होता है ।

दिक्सुंदरी ( स्त्री० ) दिशारूपी कन्या ।

दिखना ( कि० स० ) दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना ।

दिखराना ( कि० स० ) दिखलाना, दिखाना ।

दिखलाना } ( देखना ) ( कि० स० ) बताना, बतलाना,  
दिखाना } समझाना, जताना, प्रकाश करना, प्रकट करना, लखाना, बुझाना, दर्शाना ।

दिखलावा ( पु० ) दिखावा ।

दिखाई ( स्त्री० ) दिखाने की क्रिया या भाव, दिखाने के बदले में प्राप्त धन ।

दिखाई देना, दिखलाई देना ( बोल० ) जान पड़ना, देख पड़ना, मालूम होना सूझना, सूझ पड़ना ।

दिखाऊ ( दिखाना ) ( वि० ) देखने योग्य, सुंदर, सजीला, सुहावना, रूपवान्, दिखावटी, बनावटी ।

दिखाना ( कि० स० ) दिखलाना ।

दिखाव ( पु० ) दृश्य ।

दिखावटी ( वि० ) बनावटी, दिखौआ ।

दिखावा ( पु० ) तटक-भड़क, आडंबर ।

दिखैया ( पु० ) दिखानेवाला, देखनेवाला ।

दिखौआ ( पु० ) बनावटी ।

दिगंत ( दिक्+अंत ) ( पु० ) दिशा का अंत, क्षितिज, दसों दिशाएँ ।

दिगंतराल ( पु० ) आकाश, आसमान ।

दिगंबर ( दिक्=दिशा या शून्य, अंबर=कपड़ा, अर्थात् जिसके दिशा ही कपड़ा है ) ( वि० ) नंगा, नग्न, वस्त्रहीन, ( पु० ) शिव का नाम, बौद्धमत का भिक्षु जैनमत की एक शाखा ।

दिग्गज ( दिक्=दिशा, गज=हाथी ) ( पु० ) दिशाओं के हाथी दिग्गज कहते हैं । वे आठ हैं जैसे ( श्लोक ) “पेशावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः । पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः” १ पेशावत, २ पुंडरीक, ३ वामन, ४ कुमुद, ५ अंजन, ६ पुष्पदंत, ७ सार्वभौम और ८ सुप्रतीक ।

दिग्गी } ( सं० दीर्घिका, दीर्घ=लम्बा ) ( स्त्री० ) लंबा  
दिर्घा } पोखरा, तालाब ।

दिग्दर्शकयंत्र ( पु० ) कुतुबनुमा, दिशा का ज्ञान करानेवाला यंत्र ।

दिग्दर्शन ( पु० ) जानकारी, नमूना, इंगित मात्र से दिखाना, प्रत्यक्षीकरण ।

दिग्ध ( पु० ) विष लपेटा बाण, अग्नि, स्नेह, लेप, लिप्त ।

दिग्भ्रम ( पु० ) दिशा का ज्ञान न रहना ।

दिग्विजय ( दिक्=दिशा, विजय=जीत ) ( स्त्री० ) चारों दिशाओं का जीतना ।

दिग्विजयी ( वि० ) विश्वविजयी, चारों दिशाओं को विजय करनेवाला ।

दिङ्मत्तत्र ( पु० ) वे नक्षत्र जो फलित-ज्योतिष में विशिष्ट दिशाओं से संबद्ध माने जाते हैं ।

दिङ्नाग ( पु० ) दिग्गज, एक दार्शनिक पंडित, यह बौद्धमत के आचार्य थे और कालिदास के समसामयिक माने जाते हैं ।

दिङ्मंडल ( पु० ) दिगंत, दिशाओं का समूह ।

दिठवन ( स्त्री० ) देवोत्थान-एकादशी ।

दिठियार ( वि० ) प्रत्यक्ष, आँखवाला, नेत्रवाला ।

दिठौना ( पु० ) बच्चों के माथे पर काजल की जो बिंदी दूसरे की नज़र लगने से बचाने के लिये लगाई जाती है ।

दिढ़ाना ( कि० स० ) हड़ करना, मज़बूत करना ।

दिंड ( पु० ) नृत्य-विशेष ।

दितवार ( पु० ) रविवार, आदित्यवार ।

दिति ( दो=टुकड़े करना ) ( स्त्री० ) दैत्यों की मा, दक्ष-प्रजापति की बेटी और कश्यप मुनि की पत्नी ।

दितिज ( पु० ) दैत्य, दिति से उत्पन्न ।

दिट्सा ( दा=देना ) ( स्त्री० ) दानेच्छा, देने की इच्छा ।

दिद्वार ( पु० ) देखादेखी, दर्शन ।

दिदृक्षा ( स्त्री० ) देखने की इच्छा ।

दिदृक्षु ( वि० ) देखने की लालसा रखनेवाला ।

दिधिपु ( स्त्री० ) दो बार व्याही स्त्री ।

दिन ( दा=नाश करना, अंधरे को ) ( पु० ) दिवस, दिवा, वासर ।

दिन काटना ( बोल० ) दुःख से समय बिताना, जिंदगी काटना ।

दिन को दिन रात को रात न जानना ( बोल० ) सोच में अथवा काम में दूब जाना ।

दिन खुलना ( बोल० ) भाग जागना, दुःख के दिन चले जाना और सुख के दिन आना, दिन फिरना, बढ़नी होना, फलना-फूलना ।

दिन गँवाना ( बोल० ) असावधानी से अथवा वृथा समय बिताना ।

दिन चढ़ना ( बोल० ) दिन आना, दिन बढ़ना, खियों के कपड़े से होने का समय बढ़ जाना ।

दिन चढ़ाना ( बोल० ) किसी काम को देर से शुरू करना, देर करना ।

दिन ढलना ( बोल० ) दिन घटना, दिन पलटना, संध्या होना ।

दिन थौले ( बोल० ) दिन-दोपहर, दिन चौस ।

दिन पड़ना ( बोल० ) दुःख आना, दुःख पड़ना ।

दिन फिरना ( बोल० ) क्रिस्मन्त खुलना, भाग जागना, बढ़नी होना, फलना-फूलना ।

दिनबदिन } ( बोल० ) हर एक दिन, प्रत्येक दिन,  
दिनोंदिन } प्रतिदिन ।

दिन भरना ( बोल० ) दुःख और कष्ट में समय बिताना ।

दिन मुँदना ( बोल० ) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सूर्य छिपना ।

दिनकर ( दिन, कर=करनेवाला, कृ=करना, या कर=किरण त्रिम सी किरण दिन में दिखाई देती है ) ( पु० ) सूर्य, रवि ।

दिनकरकन्या ( स्त्री० ) यमुना ।

दिनकेशर ( पु० ) अंधकार, तम ।

दिनक्षय ( पु० ) तिथि की हानि, तिथिक्षय ।

दिनचर्या ( स्त्री० ) दिन-भर का काम ।

दिनचारी ( पु० ) सूर्य, दिन में चलनेवाला ।

दिनज्योति ( स्त्री० ) धूप, आनप ।

दिनदानी ( पु० ) प्रतिदिन दान देनेवाला, दीन-रक्षक ।

दिननाथ ( पु० ) सूर्य ।

दिनवल ( पु० ) फलित-ज्योतिष की वे राशियाँ जो दिन में बली होती हैं, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश ये छः राशियाँ दिनवल मानी जाती हैं ।

दिनमणि ( दिन + मणि ) ( पु० ) सूर्य, भानु, रवि ।

दिनमान ( दिन, मान=मापना ) ( पु० ) दिन की नाप, दिन का परिमाण, सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच के समय का मान ।

दिनमुख ( पु० ) प्रातःकाल, प्रभात ।

दिनशेष ( पु० ) संध्या, सायंकाल ।

दिनाई ( स्त्री० ) दाढ़ ।

दिनागम ( पु० ) प्रभात, सबेरा, प्रातःकाल ।

दिनादि ( पु० ) दिनागम, प्रभात, सबेरा ।

दिनांत ( दिन + अंत ) ( पु० ) दिन का पूरा होना, साँझ, संध्या, सायंकाल, शाम होना ।

दिनांश ( पु० ) दिन का विभाग, जैसे प्रातःकाल, मध्याह्न, अपराह्न और सायंकाल ।

दिनारा ( वि० ) पुराना, बासी ।

दिनार्द्र ( पु० ) मध्याह्न, दुपहरिया ।

दिनी ( वि० ) प्राचीन, पुराना, बहुत दिनों का ।

दिनेश ( दिन + ईश ) ( पु० ) सूर्य, दिनकर, दिनपति ।

दिनींधी ( वि० ) दिन का अंधा, जिसे दिन में न सूके, दिन में न दिखाई देने का रोग ।

दिपति ( स्त्री० ) दीप्ति, आभा, झलक ।

दिपना ( कि० अ० ) चमकना, दीप्त होना, प्रकाशमान होना ।

दिव ( पु० ) अपनी निर्दोषता और सत्यता साबित करने की परीक्षा ।

दिमाक, दिमाध ( पु० ) मस्तिष्क, भेजा, घमंड, अभिमान, ऐंड ।

दिमागदार ( वि० ) घमंडी, जिसकी मानसिक शक्ति प्रबल हो, अकड़बाज़ ।

दियट ( स्त्री० ) दीवट, चिरागदान, जिसके ऊपर दिया रखा जाता है ।

दियरा ( पु० ) पकवान-विशेष ।

दिया ( सं० दीप ) ( पु० ) दीवा, दीपक, चिराग, ( देना ) ( कि० सं० ) देना, दे दिया ।

दियानत ( स्त्री० ) ईमान, सत्यनिष्ठा ।

दियावत्ती ( स्त्री० ) दिया जलाने का काम या समय ।

दियारा ( पु० ) कड़ार, खादर ।

दियासलाई ( स्त्री० ) आग काढ़ी, स्वनाम-प्रसिद्ध दिया जलाने की एक वस्तु ।

दिरमानी ( पु० ) चिकित्सक, वैद्य ।

दिल ( पु० ) हृदय, कलेजा, मन, चित्त, इच्छा, साहस ।

दिलगीर ( वि० ) उदास, खिन्न ।

दिलचला ( वि० ) बहादुर, साहसी, दाता, दानी, उदार ।

दिलचरूप ( वि० ) मनोरंजक, चित्ताकर्षक ।  
 दिलजमई ( स्त्री० ) संतोष, विश्वास, हृत्मीनान ।  
 दिलजला ( वि० ) दग्ध-हृदय, शोकाकुल ।  
 दिल-दरियाव ( वि० ) उदार, दाता, दानी ।  
 दिलदार ( वि० ) उदार, दानी, दाता, प्रेमी, रसिक ।  
 दिलपसंद ( वि० ) सुंदर, मनोहर, एक प्रकार का आम, एक प्रकार का बेल-बूटेदार वस्त्र-विशेष ।  
 दिलबहार ( पु० ) रंग-विशेष ।  
 दिलरुवा ( पु० ) प्यारा, प्रेम-पात्र ।  
 दिलवाना ( क्रि० सं० ) दिलाना, दान कराना, दूसरे को देने में प्रवृत्त करना ।  
 दिलवैया ( वि० ) दिलानेवाला ।  
 दिलावर ( वि० ) शूर, वीर, साहसी, उत्साही ।  
 दिलासा ( पु० ) ढाँडस, सांत्वना, धैर्य, आश्वासन ।  
 दिली ( वि० ) हार्दिक, अत्यंत घनिष्ठ, हृदय से ।  
 दिलीप ( पु० ) रघु राजा का पिता ।  
 दिलेर ( वि० ) शूर, वीर, उत्साही, साहसी ।  
 दिलेरी ( स्त्री० ) साहस, उत्साह, शूरता, वीरता ।  
 दिल्लगी ( स्त्री० ) हँसी, मज़ाक, उठोली, मसखरी ।  
 दिल्लगीबाज़ ( पु० ) हँसोड़, मसखरा ।  
 दिल्ली ( पु० ) भारत का प्राचीन नगर जहाँ हिंदू-मुसल-मानों की बहुत दिनों तक राजधानी रही; इस समय ब्रिटिश सरकार की भी राजधानी यहीं है ।  
 दिव ( दिव्=खेलना, चमकना, चाहना ) ( पु० ) स्वर्ग, आकाश, वन, दिवा, दिन ।  
 दिवरानी ( स्त्री० ) पति के छोटे भाई की स्त्री ।  
 दिवस } ( दिव्=खेलना, चमकना या व्यवहार करना )  
 दिवा } ( पु० ) दिन, बासर, रोज़ ।  
 दिवा ( पु० ) दिन, दिवस, एक वर्षावृत्त जिसमें २२ अक्षर होते हैं, एक वृत्त जिसके प्रत्येक पद में ७ भगण और एक गुरु होता है ।  
 दिवाकर ( दिवा=दिन, कर=करनेवाला ) ( पु० ) सूर्य, भानु, रवि, दिनेश, दिनकर, आक, मदार, काक ।  
 दिवान ( पु० ) मंत्री, वज़ीर ।  
 दिवाना ( वि० ) पागल, विक्षिप्त ।  
 दिवांध ( दिवा=दिन, अंध=अंधा ) ( वि० ) दिन में अंधा, दिनीधा, ( पु० ) उल्लू, छिमागदड़ ।  
 दिवाभिसारिका ( स्त्री० ) वह नायिका जो दिन को

सांकेतिक स्थान में अपने प्रेमी से मिलने जाती है ।  
 दिवाभीत ( पु० ) उल्लू, चोर ।  
 दिवाल ( स्त्री० ) दीवार, ( वि० ) देनेवाला ।  
 दिवाला ( पु० ) अण्य चुकाने की असमर्थता, कोठी अथवा दुकान का बिगड़ना, टाट उलटना ।  
 दिवाली ( सं० ) दीपावलि, दीप=दिया, अवलि=पाँत ( स्त्री० ) दीपमालिका, कार्तिक में एक त्योहार ।  
 दिविज ( वि० ) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक ।  
 दिविपद् ( दिव्=स्वर्ग, पद्=प्रकाश करना ) ( पु० ) देवता, अमर ।  
 दिवेश ( पु० ) इंद्र, दिग्पाल ।  
 दिवौकस ( दिव्=स्वर्ग, आकाश+यौकस=आश्रय ) ( पु० ) देवता, अमर, चालक, पपीहा ।  
 दिव्य ( दिव् स्वर्ग, दिव्=चमकना ) ( वि० ) स्वर्ग का, स्वर्गीय, सुंदर, मनोहर, स्वच्छ, मनभावन, ( पु० ) शपथ, गूगुल, जौ, आँवला, शतावर, ब्राह्मी, सक्तेदूब, हड़, लौंग, तखवेत्ता, कपूरकचरी, चमेली, ज़ीरा, आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात, केतु, तीन प्रकार के नायकों में से एक ।  
 दिव्यकवच ( पु० ) अलौकिक कवच, वे स्तोत्र जिनके पाठ से शरीर की रक्षा होती है ।  
 दिव्यगंध ( पु० ) लौंग, गंधक ।  
 दिव्यगायन ( पु० ) स्वर्गीय गायक, गंधर्व ।  
 दिव्यचक्षु ( पु० ) ज्ञानचक्षु ।  
 दिव्यतेज ( स्त्री० ) ब्राह्मी नाम की बूटो, ब्रह्मतेज ।  
 दिव्यदोहद ( पु० ) अयाचित वस्तु, विना माँगे मिली वस्तु ।  
 दिव्यदृष्टि ( दिव्य+दृष्टि ) ( स्त्री० ) चमत्कारी ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, ऐसी नज़र जिससे सब जगह की चीज़ें देख सके, ज्ञानचक्षु, अंतर्दृष्टि, सर्वज्ञता ।  
 दिव्यधर्मी ( पु० ) धार्मिक पुरुष, सुशील ।  
 दिव्यनगर ( पु० ) ऐरावती नगरी ।  
 दिव्यनदी ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, आकाशगंगा ।  
 दिव्यनारी ( स्त्री० ) अप्सरा, स्वर्गगंगा ।  
 दिव्यपुष्प ( पु० ) कनेर ।  
 दिव्यरत्न ( पु० ) चिंतामणि ।  
 दिव्यरथ ( पु० ) देव-विमान, ध्योमयान ।  
 दिव्यरस ( पु० ) पारा ।

दिव्यलता ( स्त्री० ) वृक्षा, वृक्ष ।

दिव्यवाक्य ( पु० ) आकाशवाणी ।

दिव्यस्त्री ( स्त्री० ) अप्सरा ।

दिव्यांगना ( स्त्री० ) देवांगना, अप्सरा, सुन्दर स्त्री ।

दिव्यादिव्य ( पु० ) तीन प्रकार के नायकों में से एक  
अलौकिक पुरुष ।

दिव्याश्रय ( पु० ) एक प्राचीन पुरुषक्षेत्र जहाँ पर विष्णु  
ने तप किया था ।

दिव्यास्त्र ( पु० ) वे अस्त्र जो मंत्र द्वारा चलाने जाते हैं ।

दिव्योदक ( पु० ) वर्षा का पानी, हिम, सुपार ।

दिश } ( दिश=देना या दिखलाना ) ( स्त्री० ) तरफ, ओर,  
दिशा } दिशा दश हैं—१ ऊपर, २ नीचे, ३ पूर्व,  
४ अग्निर्कोण, ५ दक्षिण, ६ नैऋत्यकोण, ७ पश्चिम,  
८ वायव्यकोण, ९ उत्तर, १० ईशानकोण, अंशुलत,  
ईशान, अक्षय ।

दिशाभ्रम ( पु० ) दिक्भ्रम, दिशा का ज्ञान न रहना ।

दिशाशूल ( पु० ) देखो दिक्शूल ।

दिशि ( स्त्री० ) दिशा ।

दिश्य ( वि० ) दिशा-संबंधी ।

दिष्ट ( पु० ) देव, भाग्य, काल, निपति ।

दिष्टबंधक ( पु० ) एक प्रकार का बंधक या रेहन रखने  
का बंध; इसमें महाजन को केवल रुपयों का व्याज  
मिलता है और गिरवी रखी हुई वस्तु के धाय से  
उसे कुछ प्रयोजन नहीं रहना ।

दिस ( पु० ) दिशा ।

दिसना ( कि० थ० ) दृष्टिगोचर होना, दिखना ।

दिसा ( स्त्री० ) दिशा, भाड़ा, मल-त्याग ।

दिसावर ( सं० देश ) ( पु० ) देश, विलायत, परदेश,  
दूसरा मुलक ।

दिसावरी ( दिसावर ) ( पु० ) एक बरह के पान, ( वि० )  
दिसावर का ( माल यात्रि ), अन्य देशीय ।

दिसैया ( वि० ) देखने या दिखानेवाला ।

दिहंदा ( वि० ) दानी, दाता ।

दिहरा } ( सं० देवगृह ) ( पु० ) देवता का मंदिर ।  
देहरा }

दिहली ( सं० देहली ) ( स्त्री० ) दोनों किबाड़ों के बीच  
का काल, इहलीज़, फाटक, द्वार, डेवरी, शहर  
का नाम ।

दिहात ( स्त्री० ) देहान, गाँव, गाँव ।

दिहाती ( वि० ) देहाती, गाँवार ।

दीघट ( पु० ) चित्तशदान ।

दीघा ( पु० ) दिघा, दीप, चिराग ।

दीक्षक ( दीक्ष+प्रक, दीक्ष=मंत्र देना ) ( पु० ) मंत्रदाता,  
गुरु ।

दीक्षण ( पु० ) दीक्षा देने का काम ।

दीक्षा ( दीक्ष=यज्ञ करना, मंत्र देना ) ( स्त्री० ) गुरु से  
मंत्र लेना, गुरुमुख होना, मंत्रोपदेश, यज्ञ, याग ।

दीक्षागुरु ( पु० ) वह जो मंत्र का उपदेश दे ।

दीक्षित ( दीक्ष=यज्ञ करना, मंत्र देना ) ( वि० ) गुरुयज्ञ  
करनेवाला, मंत्र ब्राह्म, गुरुमंत्र प्राप्त, उपदिष्ट, कलमा-  
विशेष ।

दीखना ( सं० दृश्=देखना ) ( कि० थ० ) देख पड़ना,  
दिखलाई देना ।

दीठ ( सं० दृष्टि ) ( स्त्री० ) दृष्टि, ताक, दर्शन, नज़र ।

दीठबंध ( स्त्री० ) नज़रबंद, जादू ।

दीष्टा ( पु० ) दृष्टि, नज़र, नेत्र, नयन ।

दीदार ( पु० ) दर्शन, भेट, मुलाकात ।

दीदी ( स्त्री० ) बड़ी बहन, बड़ी ननद ।

दीधिति ( स्त्री० ) किरण, मरीचि, रश्मि, उँगली,  
न्याय के एक ग्रंथ का नाम ।

दीन ( दी=नाश होना ) ( वि० ) कंगाल, निर्धन, दरिद्र,  
दुःखी, गरीब, दुखिया, अधीन, नज़, विनीत, ( पु० )  
मन, धार्मिक विश्वास ।

दीनता ( दीन ) ( स्त्री० ) दरिद्रता, गरीबी, कंगालपन,  
अधीनता, बख्शा ।

दीनताई ( स्त्री० ) दीनता, दरिद्रता ।

दीनदयालु ( दीन+दयालु ) ( वि० ) गरीबों पर दया  
करनेवाला, भक्तों पर कृपा करनेवाला, ईश्वर  
का नाम ।

दीनबंधु ( दीन+बंधु ) ( पु० ) गरीबों के अथवा भक्तों  
के भाई अथवा मित्र, ईश्वर का नाम ।

दीनानाथ ( सं० दीननाथ ) ( पु० ) गरीबों के अथवा  
भक्तों के स्वामी, ईश्वर का नाम ।

दीनार ( दी=नाश होना ) ( पु० ) सोने का एक सिक्का,  
सोने की एक तीक्ष्ण, सुवर्णकर्म, निष्कपरिमित  
( अशर्फी ) ।



दीप ( दीप=चमकना ) ( पु० ) दिया, दीबा, दीपक, चिराग ।

दीप ( सं० दीप ) ( पु० ) द्विष्य शब्द को देखो ।

दीपक ( दीप=चमकना ) ( पु० ) दिया, दीबा, दीप, चिराग, एक राग का नाम, एक अलंकार का नाम, ( वि० ) चमकीला, दीसिमान् ।

दीपकिट्ट ( पु० ) काजल ।

दीपन ( पु० ) पाचक, दीप्तिकारक ।

दीपना ( क्रि० अ० ) प्रकाशमान होना, चमकना, दीस होना ।

दीपनी ( स्त्री० ) अजवायन, पाठा, मेथी ।

दीपनीय ( वि० ) प्रकाशक, बर्द्धक, उत्तेजक ।

दीपमाला ( स्त्री० ) जलते हुए दीपकों की कतार ।

दीपमालिका ( दीप=दिया, मालिका=पाँत ) ( स्त्री० ) दिवाली, एक त्योहार का नाम ।

दीपवृक्ष ( पु० ) झाड़-फानूस, दीवट ।

दीपशिखा ( स्त्री० ) दीप की लौ ।

दीपित ( वि० ) प्रकाशित, प्रज्वलित, दीप्त ।

दीपोत्सव ( पु० ) दीवाली ।

दीप्त ( दीप=चमकना ) ( वि० ) प्रकाशित, चमकीला, प्रज्वलित, ( पु० ) सोना ।

दीप्तजिह्वा ( स्त्री० ) उरुकामुखी, सियारिन ।

दीप्तलोचन ( पु० ) बिहारी, बिबाल ।

दीप्ताक्ष ( पु० ) देखो 'दीप्तलोचन' ।

दीप्ताग्नि ( पु० ) अगस्त्य मुनि, ( वि० ) तीव्र जठराग्नि-वाला ।

दीप्तांग ( पु० ) मोर, मयूर ।

दीप्ति ( दीप=चमकना ) ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, झलक, तेज, शोभा ।

दीप्तिमान् ( दीप्ति=तेज, चमक, मान्=वाला ) ( वि० ) तेजस्वी, प्रतापी, शोभावात्, शोभायमान ।

दीप्यमान् ( दीप्य मन्=मान ) ( वि० ) प्रकाशमान, चमकता हुआ, शोभायमान ।

दीपक ( फ्रा० दीवक ) ( स्त्री० ) दीपों, बरसीक, एक प्रकार की सफेद चिड़ई ।

दीयट ( पु० ) चिरागादान ।

दीयमान ( वि० ) जो देने योग्य हो, जो दिया जाता हो ।

दीया ( पु० ) दीपक, दिबा, चिराग ।

दीरघ ( वि० ) दीर्घ ।

दीर्घ ( दृह्=बढ़ना, वा दृ=काटना वा छराना ) ( वि० ) लंबा, बड़ा, ऊँचा, ( पु० ) द्विमात्रिकस्वर, सातवृक्ष, द्विमात्रिक वर्ण, गुरुवर्ण, पंच, षष्ठ, सप्तम और अष्टम राशि ।

दीर्घकाय ( वि० ) लंबे-चौड़े शरीरवाला ।

दीर्घकेश ( वि० ) लंबे बालवाला ।

दीर्घग्रीव ( दीर्घ=लंबी, ग्रीव=गरदन ) ( पु० ) ऊँट, ( वि० ) लंबी गर्दनवाला ।

दीर्घजंघा ( पु० ) सारस पक्षी, ऊँट, बगुला ।

दीर्घजिह्वा ( पु० ) सर्प, दानव-विशेष, ( वि० ) लंबी जीभवाला ।

दीर्घजिह्वा ( स्त्री० ) एक राक्षसी जो राजा विरोचन की कन्या थी ।

दीर्घजीवी ( दीर्घ=लंबा अर्थात् बहुत दिनों तक, जीवी=जीनेवाला ) ( वि० ) दीर्घायु, चिरंजीवी, चिरायु ।

दीर्घतमा ( पु० ) एक ऋषि, यह उतथ के पुत्र थे और जन्म से ही अंधे थे ।

दीर्घतरु ( पु० ) बहुत ऊँचा पेड़, ताड़ का पेड़ ।

दीर्घदंड ( पु० ) रेंडी का पेड़ ।

दीर्घदर्शी ( दृश्=देखना ) ( वि० ) दूरदर्शी, विवेकी ।

दीर्घदृष्टि ( वि० ) दूरदर्शी, ( पु० ) गिद्ध ।

दीर्घनाद ( पु० ) शंख ।

दीर्घनिद्रा ( स्त्री० ) मौन, मृत्यु ।

दीर्घनिश्वास ( पु० ) साह, लंबी श्वास ।

दीर्घपत्रक ( पु० ) लाल लहसुन, रेंड, पुनर्वा ।

दीर्घपत्रा ( स्त्री० ) केतकी, शालपर्णी, चित्रपर्णी ।

दीर्घपृष्ठ ( पु० ) साँप ।

दीर्घमूल ( पु० ) शालपर्णी, जवासा ।

दीर्घमूलक ( पु० ) विधारा ।

दीर्घरसन ( पु० ) सर्प ।

दीर्घरोमन् ( पु० ) माल, रीछ ।

दीर्घलोचन ( वि० ) लंबी आँखवाला, ( पु० ) शिव का एक गण, भूतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

दीर्घबक्त्र ( दीर्घ=बड़ा, वक्त्र=मुख ) ( पु० ) हस्ती, हाथी ।

दीर्घवंश ( पु० ) मरकट ।

दीर्घस्त्री ( दीर्घ=लंबा अर्थात् बहुत देर से, स्त्र=चाहे हुए

काम को करना ) ( वि० ) आलसी, सुस्त, हरएक काम में देरी करनेवाला, धीमा, शिथिल ।  
 दीर्घायु ( दीर्घ=लंबी, आयुष=उमर ) ( वि० ) चिरंजीवी, दीर्घजीवी, बहुत दिनों तक जीनेवाला, ( पु० )  
 कौवा, सेमल का वृक्ष, मार्केड्य ऋषि ।  
 दीर्घिका ( स्त्री० ) बावली, तालाब ।  
 दीर्घक ( स्त्री० ) दीमक ।  
 दीघट ( स्त्री० ) दीपाधार, चिरासदान ।  
 दीवा ( सं० दीप ) ( पु० ) दीपक, दिया, चिराग ।  
 दीवान ( पु० ) राजसभा, मंत्री, वज़ीर ।  
 दीवानखाना ( पु० ) बैठक ।  
 दीवानखालसा ( पु० ) बादशाह की मुहर रखनेवाला कर्मचारी ।  
 दीवाना ( वि० ) पागल, विचिस ।  
 दीवानापन ( पु० ) पागलपन, विचिसता ।  
 दीवाल ( स्त्री० ) भीत ।  
 दीवाला ( पु० ) दिवाला ।  
 दीवाली ( पु० ) उत्सव-विशेष जो कार्तिक की अमावास्या को मनाया जाता है, दीपमालिका, चमड़े की पट्टी ।  
 दीसना ( सं० दृश्=देखना ) ( क्रि० अ० ) दीखना, दिखाई देना, देख पड़ना, सूझना, प्रकट होना ।  
 दीह ( वि० ) दीर्घ, लंबा, बड़ा ।  
 दुख } ( दुःख=दुःख करना ) ( पु० ) पीड़ा, कष्ट,  
 दुःख } क्लेश, तकलीफ, व्यथा, आपदा, विपदा ।  
 दुःखकर ( वि० ) दुख पहुँचानेवाला, कष्ट देनेवाला ।  
 दुःख का मारा ( बोल० ) दुखी, दुखारी ।  
 दुःखजीवी ( वि० ) कष्ट से निर्वाह करनेवाला ।  
 दुःखड़ा ( सं० दुःख ) ( पु० ) दुख, आपदा, अभाग, दुर्गति, तकलीफ ।  
 दुःखद् ( दुःख+द, दा=देना ) ( वि० ) दुःखदाता, दुख देनेवाला ।  
 दुःखदाई ( सं० दुःखदायी ) ( पु० ) दुख देनेवाला ।  
 दुःखदायक ( वि० ) दुख देनेवाला, कष्ट पहुँचानेवाला ।  
 दुःखना ( सं० दुःखन, दुःख=दुःख पाना ) ( क्रि० अ० ) पिराना, दर्द होना, पीड़ा होना, क्लेश होना, जलना, चरपराना ।  
 दुःख पाना ( बोल० ) कुटना, कलपना, दुख भरना, दुखी होना ।

दुःखप्रद ( वि० ) दुखद, कष्टकर ।  
 दुःखबहुल ( पु० ) दुखपूर्ण ।  
 दुःख भरना ( बोल० ) परिश्रम करना, दुख पाना, दुखी होना ।  
 दुःखमय ( वि० ) दुखपूर्ण, क्रेशयुक्त ।  
 दुःखलभ्य ( वि० ) कष्ट से प्राप्त होनेवाला ।  
 दुःखसागर ( दुःख+सागर ) ( पु० ) दुख का समुद्र, बड़ा भारी दुख, संसार, दुनिया ।  
 दुःखसाध्य ( वि० ) कठिनाई से होनेवाला ।  
 दुःखाना ( दुःखना ) ( क्रि० सं० ) दुख देना, सताना, पीड़ा देना, कलपाना ।  
 दुःखांत ( वि० ) जिसके अंत में दुःख हो, वह नाटक या कथानक जिसका दुःखसहित अंत हुआ हो, ( पु० ) दुःख का अवसान, दुःख का अंत ।  
 दुःखारी } ( सं० दुःखी ) ( वि० ) दुखी, दरिद्री,  
 दुःखिया } कंगाल, पीड़ित, उदास ।  
 दुःखियारी }  
 दुःखार्त ( वि० ) दुःख से व्याकुल ।  
 दुःखावह ( दुःख+वह=भोगना ) ( पु० ) दुःखिया, दुःखित, तकलीफ उठानेवाला ।  
 दुःखित ( दुःख ) ( वि० ) दुखी, दुःखियारी, दुःखिया, पीड़ित ।  
 दुःखी ( दुःख ) ( वि० ) दुःखित ।  
 दुःशला ( स्त्री० ) धृतराष्ट्र की कन्या, गांधारी की बेटा ( विशेष के लिये भारतीय चरितांशुधि देखें ) ।  
 दुःशासन ( दुर्=दुख से, शास्=सिखाना ) ( पु० ) राजा धृतराष्ट्र का बेटा और दुर्योधन का छोटा भाई ( विशेष के लिये भा० च० देखें ) ।  
 दुःशील ( वि० ) दुरचरित्र, दुष्ट स्वभाव का ।  
 दुःश्रव ( पु० ) काव्य में श्रुति-कटु दोष ।  
 दुःसंग ( पु० ) कुसंग ।  
 दुःसह ( दुर्=दुख से, सह=सहना ) ( वि० ) जो दुख से सहा जाय, असह्य, बहुत कठिन, नहीं सहने योग्य ।  
 दुःसाध्य ( वि० ) दुष्कर, कठिनाई से साधने योग्य, कष्टसाध्य, कठिन ।  
 दुःसाहस ( वि० ) अत्यधिक साहस, उत्कट साहस, निर्भयता, धैर्य का साहस ।

दुःसाहसी ( वि० ) असाह्यमान, निरर्थक साहस करने-  
वाला, असम साहसी, प्रमत्त ।  
दुःस्थ ( वि० ) दुर्दशाग्रस्त, दुःखी, दरिद्र, मूर्ख ।  
दुःस्थिति ( स्त्री० ) दुर्दशा, दुरवस्था ।  
दुःस्पर्शा ( स्त्री० ) कपिकच्छु, कवाक्ष, जवासा ।  
दुःस्वप्न ( पु० ) अशुभसूचक स्वप्न, कुस्वप्न ।  
दुःस्वभाव ( पु० ) बदमिजाज, बदचलन ।  
दुःआवा ( पु० ) दो नदियों के बीच की भूमि ।  
दुःआर ( पु० ) द्वार, दरवाजा ।  
दुई ( वि० ) दो ।  
दुइज ( स्त्री० ) दूज, द्वितीया ।  
दुकड़हा ( वि० ) नीच, अधम, कमीना, तुच्छ, दो  
कौड़ी का ।  
दुकड़ा ( सं० द्वि=दो ) ( पु० ) दो दमड़ी, छदाम, पैसे  
का चौथा भाग ।  
दुकड़ी ( स्त्री० ) दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता ।  
दुकान ( फा० दूकान ) ( पु० ) हाट, सौदा रखने-बेचने  
की जगह ।  
दुकाल ( पु० ) अकाल, दुर्भिक्ष ।  
दुकूल ( पु० ) कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, महीन  
कपड़ा, माता-पिता का कुल ।  
दुकूल ( वि० ) जिसके साथ कोई और भी हो, जो  
अकेला न हो ।  
दुकड़ ( पु० ) सहनार्ह के साथ बजाया जानेवाला तबले  
के आकार का बाजा-विशेष ।  
दुका ( वि० ) जो अकेला न हो, ( पु० ) ताश का वह  
पत्ता जिसपर दो बूटियाँ बनी रहती हैं ।  
दुख ( पु० ) दुःख ।  
दुखंडा ( वि० ) दो खंड का मकान, दुतल्ला, दुमंजिला ।  
दुखद ( वि० ) दुःखदायी, दुःखद, कष्टप्रद, दुःखदाई ।  
दुखदुंद ( पु० ) दुःख और उत्पात, दुःखसहित  
उत्पात ।  
दुखना ( कि० अ० ) पीड़ा होना, दर्द करना ।  
दुखवना ( कि० स० ) दुखाना ।  
दुखाना ( कि० स० ) दुख देना, पीड़ित करना, कष्ट  
पहुँचाना ।  
दुखारा ( वि० ) पीड़ित, दुःखिया ।  
दुखारी ( वि० ) व्यथित, दुःखी ।

दुखिया ( वि० ) दुःखी, दुखियारा ।  
दुगई ( स्त्री० ) ओसारा, बैटक, कैंची ।  
दुगुन ( सं० द्विगुण ) ( पु० ) दूना, राग, दुगुना, दोहरा ।  
दुगुना ( सं० द्विगुण, द्वि=दो, गुण=गुना हुआ ) ( वि० )  
दूना, दोगुना ।  
दुग्ध ( दह=दुहना ) ( पु० ) दूध, चीर, पय ।  
दुग्धफेन ( पु० ) दूध का भाग, एक पौदा ।  
दुग्धवती ( वि० ) चारिणी, क्षीरस्तनी, दूध देनेवाली  
गाय ।  
दुग्धसमुद्र ( पु० ) क्षीरसमुद्र, सात समुद्रों में से  
एक ।  
दुग्धाधि ( पु० ) क्षीरसमुद्र ।  
दुग्धिका ( स्त्री० ) दुधिया घास ।  
दुग्धी ( स्त्री० ) दुधिया पौदा, सेंहुड़, ( पु० ) पायस,  
खीर, तस्मई, दुग्धमय ।  
दुचित्त } ( सं० द्विचित्त, द्वि=दो, चित्त=मन ) ( वि० )  
दुचिता } जिसको दुविधा लगी हो, दोमना, दुबधैल,  
व्याकुल, उद्विग्न, सशंक ।  
दुचित्ताई ( स्त्री० ) द्वैधित्य, चिंता, दुविधा, व्याकुलता,  
संदेह ।  
दुज ( पु० ) द्विज, ब्राह्मण ।  
दुजीह ( पु० ) देखो 'द्विजिह्व' ।  
दुद्रूक ( वि० ) दो दूक, खंडित, खरा, स्पष्ट ।  
दुत } ( सं० युति ) ( स्त्री० ) चमक, चटक, भड़क,  
दुति } सुंदरता, प्रकाश ।  
दुत ( सं० दूर वा दूर ) ( अय्य० ) दूर हो, परे जा,  
निकल भाग, चला जा, तिरस्कारार्थक शब्द ।  
दुतकार ( पु० ) } झिड़की, घुड़की, ताड़ना, दुत-  
दुतकारी ( स्त्री० ) } कारना, डाटना, झिड़कना,  
घुड़कना ।  
दुतकारना ( कि० स० ) धिक्कारना, अपमान करना,  
दुत-दुत करके किसी को भगाना ।  
दुतदयक ( बाल० ) झिड़की, घुरकी, डाट ।  
दुति ( स्त्री० ) युति, आभा, झलक, दोसि ।  
दुतिमान् ( वि० ) प्रकाशित, दीप्त, झलकदार, युतिमान् ।  
दुतिवंत ( वि० ) चमकीला, भड़कदार, सुंदर ।  
दुतीया ( स्त्री० ) द्वितीया, दूज ।  
दुदल ( वि० ) दो बराबर खंड, द्विदल ।

दुदलाना ( कि० म० ) दुतकारना, फटकारना ।

दुदहंडी ( स्त्री० ) दूध की मटकी ।

दुदुकारना ( कि० म० ) दुतकारना, फटकारना ।

दुद्वी ( स्त्री० ) पीदा-विशेष जो द्वा के काम में आता है ।

दुधमुख ( वि० ) दुधमुँहाँ, दुधपीना, बच्चा ।

दुधमुँहाँ ( वि० ) दुधमुख, दुधपीता ।

धाँड़ी ( स्त्री० ) मिट्टी का बर्तन जिसमें दूध रक्खा या छौटाया जाता है ।

दुधार } ( दध ) ( वि० ) दूध देनेवाली, दुधारी ।  
दुधेल }

दुधारी ( वि० ) जिसमें दोनों तरफ धार हो, दूध देनेवाली ।

दुधिया ( वि० ) दूध-मिश्रित, दूध मिला हुआ, दूध के समान सफ़ेद, जिसमें दूध होता हो, सफ़ेद जाति का, ( स्त्री० ) दुद्धी नाम की घास, खरिया मिट्टी, कलियारी की जाति का एक विष, लटेरा नाम की चिया, दूध से तैयार की हुई विशेष दंग की भंग ।

दुधियाकंजई ( वि० ) नीलापन लिए भूरा ।

दुधियापत्थर ( पु० ) एक प्रकार का मुलायम सफ़ेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं, एक नग या रत्न ।

दुधियाविष ( पु० ) कलियारी की जाति का एक विष ।

दुनया ( पु० ) दो नदियों का संगम-स्थान ।

दुनरना } ( कि० य० ) किसी नरम या लचीली वस्तु  
दुनवना } का इस प्रकार झुकना कि उसके दोनों छोर एक दूसरे से मिल जायें या पास-पास हो जायें, ( कि० म० ) लचाकर दोहरा कर देना ।

दुनाली ( वि० ) दोनलीवाली, ( स्त्री० ) दुनाली बूँक ।

दुनिया ( स्त्री० ) संसार, जगत् । दोन-दुनिया=लोक परलोक ।

दुनिया की हवा लगना ( मुहा० ) सांसारिक अनुभव होना ।

दुनिया के परदे पर ( मुहा० ) सारे संसार में ।

दुनिया भर का ( मुहा० ) बहुत या बहुत अधिक ।

दुनिया से उठ जाना ( मुहा० ) मर जाना ।

दुनिया से चल बसना ( मुहा० ) मर जाना ।

दुनियार ( वि० ) सांसारिक ।

दुनियादार ( पु० ) संसारी, गृहस्थ, सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य ।

दुनियादारी ( स्त्री० ) दुनिया का कारबार, गृहस्थी का जंजाल, दुनिया में अपना काम निकालने का दंग, स्वार्थ-साधन ।

दुनियादारी की बात ( मुहा० ) बनावटी बात ।

दुनियासाज़ ( वि० ) चापलूस, झग्लोचप्पो करनेवाला, स्वार्थ-साधक ।

दुनियासाज़ी ( स्त्री० ) चापलूसी, बात बनाने का दंग, अपना मतलब निकालने का दंग ।

दुनी ( स्त्री० ) संसार, जगत्, जैसे—

तुम ही जग हो जग है तुम ही में ।

तुम ही बिरची मर्याद दुनी में ॥

( केशव )

दुंदुभि ( दूद ऐसे शब्द से, उभ=भरना ) ( पु० ) धौंसा, नगाड़ा, डंका, भेरी, बरुण, एक राक्षस जिसको बालि ने मारा ।

दुपट्टा ( सं० द्वि=दो, पट=कपड़ा ) ( पु० ) दो पाट का कपड़ा जिसको दोनों कंधों पर डालते हैं, बहुत बार एक पाट के कपड़े को भी दुपट्टा बोलते हैं ।

दुपट्टा तानकर सोना ( बोल० ) असावधानी से अथवा बेक्रिह होके सोना, निश्चित हो जाना ।

दुपट्टा बदलना ( मुहा० ) सहेली बनाना

दुपट्टा हिलाना वा फिराना ( बोल० ) संधि के लिये मोहलत या अवकाश चाहने के लिये झंडा हिलाना, झिला या गढ़ बैरी को सौंप देना ।

दुपट्टी ( स्त्री० ) बगलबंदी ।

दुपहरिया ( दोपहर ) ( पु० ) एक प्रकार का फूल, मध्याह्नपुष्प, ( वि० ) दोपहर का समय ।

दुपी ( पु० ) हाथी ।

दुफ़सली ( वि० ) दो फ़सल में उत्पन्न होनेवाला, अनिश्चित, संदिग्ध ।

दुबकना ( कि० य० ) दबकना ।

दुबगली ( स्त्री० ) मालखंभ की एक कसरत ।

दुबज्यौरा ( पु० ) गले का आभूषण-विशेष ।

दुबड़ा ( पु० ) एक प्रकार की घास जो चारे के काम में आती है ।

दुबध ( स्त्री० ) अनिश्चय, चिन्त की अस्थिरता, संशय, संदेह, असमंजस, आगापीछा, पशोपेश, खटका, चिन्ता । जैसे—“दुबध में दोड़ गए माया मिली नराम ।”

दुबधा में डालना ( मुहा० ) अनिश्चित दशा में रखना ।

दुबधा में पड़ना ( मुहा० ) अनिश्चित अवस्थामें पड़ना ।

दुबरा ( वि० ) दुबला, शरीर से क्षीण । जैसे—

“करी खरी दुबरी सु लगि तेरी चाह चुरैल” ।

( विहारी )

दुबराई ( स्त्री० ) दुर्बलता, कृशता, कमजोरी, अशक्तता ।

दुबराना ( कि० अ० ) दुबला होना, शरीर से क्षीण होना ।

दुबराल गोला ( पु० ) तोप का लंबोत्तरा गोला ।

दुबरालपलंग ( पु० ) पाल की वह डोरी जिसे खींचकर पाल के पेटे की हवा निकालते हैं ।

दुबला ( सं० दुर्बल ) ( वि० ) कृश, क्षीण शरीर का, हलके और पतले बदनवाला, अशक्त, कमजोर ।

दुबाइन ( स्त्री० ) दुबे की स्त्री ।

दुबागा ( पु० ) सन की मोटी रस्सी ।

दुबाहिया ( पु० ) दोनों हाथों से तलवार चलानेवाला योद्धा ।

दुबिधा ( सं० द्विविध्य, द्वि=दो, विध=प्रकार ) ( स्त्री० ) संदेह, खटका, दुश्चिन्ताई, पशोपेश, संकल्प-विकल्प ।

दुबिसी ( स्त्री० ) एक प्रकार का कमीशन जिसे गवर्नमेंट किसानों को देती है, अर्थात् बीस रुपए के लगान पर दो रुपए ।

दुबीचा ( पु० ) दुबधा, संशय, संदेह, असमंजस, आगा-पीछा, खटका, चिन्ता ।

दुभाखी ( पु० ) दुभायी ।

दुभापिया ( सं० द्वि=दो, भाषा=बोली ) ( पु० ) दोनों ओर की बोली समझानेवाला, एक बोली से उल्था करके दूसरी बोली में समझानेवाला ।

दुमंजिला ( वि० ) दो खंड का, दो तरातिब का ।

दुम ( स्त्री० ) पूँछ, पुच्छ ।

दुम के पीछे फिरना ( मुहा० ) पीछे-पीछे घूमना, साथ न छोड़ना, साथ-साथ लगा फिरना ।

दुम दबाकर भागना ( मुहा० ) डर के मारे न ठहरना, डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना ।

दुम दबा जाना ( मुहा० ) डर के मारे हट जाना, डर से भाग जाना ।

दुम में घुसना ( मुहा० ) शायब हो जाना, दूर हो जाना ।

दुम में घुसा रहना ( मुहा० ) दुश्शामद के मारे साथ लगा रहना ।

दुम में रस्सा बाँधना ( मुहा० ) नटखट चौपाए की तरह बाँधकर रखना ।

दुम हिलाना ( मुहा० ) कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना, खुशामद करना ।

दुमची ( स्त्री० ) घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है, दोनों नितंबों के बीच की हड्डी ।

दुमदार ( वि० ) पूँछवाला, जिसके पीछे पूँछ की-सी कोई वस्तु लगी या बँधी हो । जैसे—दुमदार टोपी, दुमदार सितारा ।

दुमन ( वि० ) अनमना, अप्रसन्न, खिन्न ।

दुमाता ( वि० ) बुरी माता, सोनेली मा ।

दुमाला ( पु० ) फंदा, पाश ।

दुर { ( उपस० ) बुरा, दुष्ट, अशुभ, नीच, तुच्छ,  
दुस् { अवज्ञा करने योग्य ( जैसे दुर्वचन, दुर्जन, दुर्बुद्धि, दुर्दिन आदि ) अनुचित, उल्टा, असत्य, झूठ ( जैसे दुस्तर ) निषेध, कम, नहीं, कठिनता से, दुःख से, यह उपसर्ग सु का उल्टा है ।

दुरखा ( पु० ) एक प्रकार का पतंगा जो नील, तमाखू, सरसों, गेहूँ इत्यादि की फसल को नुकसान पहुँचाता है ।

दुरंगा ( वि० ) दो रंगों का, जिसमें दो रंग हों, दोगला, मिश्रित ।

दुरचुम ( पु० ) दरी के ताने के दो-दो सूतों को इसलिये एक में बाँधना ताकि वे उलझ न जायँ ।

दुरतिक्रम ( दुर्+यतिक्रम ) ( वि० ) दुस्तर, कठिन, अपार, जिसका पार पाना कठिन हो ।

दुरत्यय ( वि० ) अपार, दुस्तर ।

दुरदाम ( वि० ) कठिन, कष्टसाध्य ।

दुरदाल ( पु० ) हाथी ।

दुरदुराना ( कि० सं० ) निरस्कारपूर्वक दूर करना, दुतकारना, फटकारना ।

दुरधिगम ( वि० ) दुःसाध्य, दुर्बोध ।

दुरध्व ( पु० ) कुपथ, कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

दुरना ( कि० अ० ) आँखों के आगे से दूर होना, छिपना, लुकना, भागना “दुरी किन मेरे आँखों से—” पद्याकर ।

दुरंत ( वि० ) जिसका अंत वा पार पाना कठिन हो,  
अपार, बड़ा भारी, दुर्गम, दुस्तर, कठिन, घोर,  
प्रचंड, भीषण, अशुभ, बुरा, कुत्सित, दुष्ट, खल ।

दुरयन्त्रा ( पु० ) एक मोतीवाली छोटी बाली ।

दुरयास ( पु० ) दुर्गंध, बुरी गंध ।

दुरभिग्रह ( वि० ) कठिनता से पकड़ में आनेवाला ।

दुरभिग्रहा ( स्त्री० ) केंवाच, कपिकच्छु, धमासा ।

दुरभिसंधि ( स्त्री० ) कुमंत्रणा, पड़यंत्र ।

दुरभेव ( पु० ) बुरा भाव, मनमोटाव, मनोमालिन्य ।

दुरमुस ( पु० ) कंकड़ या मिट्टी पीटनेवाला लोहा या  
पत्थर लगा हुआ गदा के आकार का डंडा ।

दुरलभ ( वि० ) दुष्प्राप्य ।

दुरवस्थ ( वि० ) जो अच्छी दशा में न हो ।

दुरवस्था ( स्त्री० ) खराब हालत, बुरी दशा, हीन  
दशा, दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा ।

दुरवाय ( वि० ) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से प्राप्त हो सके ।

दुरस ( पु० ) सहोदर भाई ।

दुराक ( पु० ) स्लेच्छ जाति-विशेष का नाम ।

दुरागौन ( पु० ) वधू का दूसरी बार अपनी समुराल  
जाना ।

दुराग्रह ( दूर+आग्रह, ग्रह=लेना ) ( पु० ) दुःखग्राह्य,  
दुःख से लिया जाय, किसी बात पर बुरे ढंग से  
अदना, हठ, जिद ।

दुराचरण ( पु० ) खोटा व्यवहार, बुरा चाल-चलन ।

दुराचार ( दूर=बुरा, आचार=चलन ) ( पु० ) बुरा चलन,  
बुरा व्यवहार, अन्याय, अधर्म, पाप, ( वि० ) दुष्ट,  
जिसका बुरा चाल-चलन हो ।

दुराचारी ( दुराचार ) ( वि० ) दुष्ट, पापी, अन्यायी,  
अधर्मी, भ्रष्ट, पापात्मा ।

दुराजी ( वि० ) दो राजाओं का, जिसमें दो राजा हों ।

दुरात्मा ( दूर=दुष्ट, आत्मा=चित्त, मन ) ( वि० ) दुष्ट,  
पापी, खोटा, अधर्मी, नीचाशय, दुष्टात्मा ।

दुरादुरी ( स्त्री० ) छिपाव, गोपन ।

दुरादुरी करके ( मुहा० ) छिपे-छिपे, गुप्त रूप से ।

दुराधर्ष ( दूर=दुःख से, आ+धर्ष=जीतना, दबाना )  
( वि० ) जो दुःख से जीता जाय, जो शत्रु से न  
दबे, प्रचंड, प्रबल, ( पु० ) पीला सरसों, विष्णु ।

दुराधर्षता ( स्त्री० ) प्रचंडता, प्रबलता ।

दुराधर्षा ( स्त्री० ) कुटुंबिनी का पौदा ।

दुराधार ( पु० ) महादेव ।

दुराना ( कि० स० ) छिपाना, लुकाना, दूर करना,  
हटाना, ( कि० अ० ) दूर होना, हटना, टलना ।

दुराय ( वि० ) दुर्लभ, दुष्प्राप्य, कठिनता से मिलने-  
वाला ।

दुराराध्य ( वि० ) कठिनाई से आराधना करने योग्य,  
जिसकी पूजा या संतुष्ट करना कठिन हो ।

दुरारुह ( पु० ) खेल, नारियल ।

दुरारुहा ( स्त्री० ) खजूर का पेड़ ।

दुरारोह ( वि० ) जिसपर चढ़ना कठिन हो, ( पु० )  
ताड़ का पेड़ ।

दुरारोहा ( स्त्री० ) सेमर का पेड़, खजूर का पेड़ ।

दुरालभ ( वि० ) जिसका मिलना कठिन हो, दुष्प्राप्य ।

दुरालभा ( स्त्री० ) जवासा, धमासा, हिंगुवा, कपास ।

दुरालाप ( दूर=बुरा, आलाप=बोलना ) ( पु० ) गाली,  
दुर्वचन ।

दुरान ( दुराना ) ( पु० ) छिपाव, लुकाव ।

दुरावाध ( पु० ) शिव ।

दुराशा ( दूर=बुरी, आशा=यास ) ( स्त्री० ) बुरी आशा,  
नीच आशा, झूठी उम्मीद, व्यर्थ की आशा ।

दुरासद ( वि० ) कठिन, दुःसाध्य, दुष्प्राप्य ।

दुरित ( दूर=बुरी जगह, इण्=जाना ) ( पु० ) पाप,  
अधर्म, उपपातक, छोटा पाप ।

दुरितदमनी ( वि० ) पाप का नाश करनेवाली ।

दुरियाना ( कि० स० ) दुरदुरागा, हटाना, दूर करना,  
तिरस्कार के साथ भगाना ।

दुरिष्ट ( पु० ) पाप, पातक, यज्ञ-विशेष जो मारण,  
मोहन, उच्चाटन आदि अभिचारों के लिये किया जाय ।

दुरिष्टि ( स्त्री० ) दुरिष्ट यज्ञ, अभिचारार्थ यज्ञ ।

दुरीषणा ( स्त्री० ) अहित कामना, शाप, बददुआ ।

दुरुक्त ( दूर=बुरा, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना ) ( पु० )  
शाप, बददुआ, दुर्वचन, बदकलाम ।

दुरुक्ति ( दूर+उक्ति ) ( स्त्री० ) भ्रष्ट रीति से कहना, मुह-  
मिल कहना, जैसे पानी-झानी, रोटी-भोटी ।

दुरुखा ( वि० ) जिसके दोनों ओर मुँह हो, दुमुँहा ।

दुरुत्तर ( वि० ) दुस्तर, जिसका पार पाना कठिन हो,  
( पु० ) दुष्ट उत्तर, बुरा जवाब ।

**दुरुपयोग** ( पु० ) बुरा उपयोग, अनुपयुक्त व्यवहार ।  
**दुरुम** ( पु० ) एक प्रकार का गेहूँ जिसका दाना पतला और लंबा होता है ।  
**दुरुस्त** ( वि० ) जो अच्छी दशा में हो, ठीक, दोष-रहित, उचित, मुनासिब, यथार्थ, वास्तविक ।  
**दुरुस्ती** ( स्त्री० ) सुधार, संशोधन ।  
**दुरूह** ( वि० ) गूढ़, कठिन. जिसका जानना कठिन हो ।  
**दुरोदर** ( पु० ) जुए का खेल, जुआड़ी, कपटी, धूर्त, व्यवहार, व्यवहारी ।  
**दुरौघा** ( पु० ) भरेठा, दरवाजे के ऊपर लकड़ी ।  
**दुर्ग** ( दुर्=कठिनता से वा दुःख से, गम्=जाना जहाँ ) ( पु० ) गढ़, कोट, किला, घाटा, एक राक्षस का नाम, दुर्ग छः प्रकार के होते हैं—१. धनुदुर्ग—जिसके चारों ओर निर्जल प्रदेश हो । २. महीदुर्ग—जिसके चारों ओर टेढ़ी-मेढ़ी ज़मीन हो । ३. जल-दुर्ग—जिसके चारों ओर जल हो । ४. वृक्षदुर्ग—जिसके चारों ओर घने वृक्ष हों । ५. नरदुर्ग—जिसके चारों ओर सेना हो । ६. गिरिदुर्ग—जो पहाड़ पर हो । ( वि० ) कठिन, अगम्य, दुर्गम्य ।  
**दुर्गत** ( दुर्=दुःख से, गम्=जाना ) ( वि० ) दुःखी, दीन, कंगाल, गरीब, दरिद्र, छीछालेदर ।  
**दुर्गति** ( दुर्=बुरी, गति=दशा ) ( स्त्री० ) बुरी दशा, दुर्दशा, बरबादी, खराबी, गरीबी, नीचपन, अधमता, नरक ।  
**दुर्गंध** ( दुर्=बुरी, गंध=वास ) ( स्त्री० ) बुरी बास, कुबास, बुरी महक, बदबू ।  
**दुर्गपाल** ( पु० ) दुर्ग का रक्षक, किलेदार ।  
**दुर्गम** ( दुर्=कठिनता से, गम्=जाना ) ( वि० ) कठिन, औघट, अगम्य, विकट, दुश्वार, गुज़ार, गंभीर ।  
**दुर्गमनीय** ( वि० ) जहाँ जाना कठिन हो ।  
**दुर्गल** ( पु० ) एक देश का नाम ।  
**दुर्गलंघन** ( पु० ) ऊँट ( रेतिले दुर्गम स्थानों को पार करनेवाला )  
**दुर्गसंचर** ( पु० ) दुर्गम स्थानों तक पहुँचने का साधन, जैसे—सीढ़ी, पुल, बड़ा हस्तादि ।  
**दुर्गा** ( दुर्ग एक राक्षस का नाम, उसको मारनेवाली देवी ) जैसे दुर्गापाठ में लिखा है कि “तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमास्थं महासुरम् । दुर्गादेवीति विख्याता”

अर्थ—देवी कहती है कि मैं वहाँ दुर्ग नाम असुर को मारूँगी तब मेरा नाम “दुर्गा” प्रसिद्ध होगा, ( स्त्री० ) देवी, भवानी, काली, भगवती, दुर्गापाठ, दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाचरित्र, जिसमें दुर्गा की महिमा लिखी है ।

**दुर्गाह** ( वि० ) जिसका अवगाहन करना कठिन हो ।  
**दुर्गाह्व** ( पु० ) भूमि, गूगल ।  
**दुर्गुण** ( पु० ) दोष, ऐश, बुराई, बुरा गुण ।  
**दुर्गेश** ( पु० ) किलेदार, दुर्गरक्षक, दुर्गाध्यक्ष ।  
**दुर्गांतसव** ( पु० ) दुर्गा-पूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है ।  
**दुर्ग्रह** ( वि० ) जिसे कठिनता से पकड़ सकें, जो कठिनता से समझ में आवे, दुर्ज्ञेय ।  
**दुर्घट** ( दुर्=कठिन, घट=चेष्टा ) ( वि० ) कठिन, औघट, विकट, अगम्य, कष्ट-साध्य, जिसका होना कठिन हो ।  
**दुर्घटना** ( स्त्री० ) अशुभ घटना, वारदात, बुरा संयोग, विपद्, आफ़त ।  
**दुर्घोष** ( वि० ) जो कटु या कर्कश ध्वनि करे ।  
**दुर्जन** ( दुर्=दुष्ट, जन=मनुष्य ) ( पु० ) दुष्ट मनुष्य ( वि० ) दुष्ट, बुरा, नीच, बुरा करनेवाला ।  
**दुर्जय** ( दुर्=कठिनता से, जि=जीतना ) ( वि० ) जो कठिनता से जीतने में आवे, ( पु० ) विष्णु, राक्षस का नाम ।  
**दुर्जर** ( वि० ) जो कठिनता से पचे या पके ।  
**दुर्जरा** ( स्त्री० ) मालकँगनी, ज्योतिष्मती जता ।  
**दुर्जात** ( वि० ) कमीना, नीच, अभागा, जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो या बुरी रीति से हुआ हो ( पु० ) व्यसन, असमंजस, कठिनता, संकट ।  
**दुर्जाति** ( स्त्री० ) बुरी जाति, नीच जाति, ( वि० ) बुरे कुल का, जिसकी जाति बिगड़ गई हो ।  
**दुर्जायि** ( वि० ) बुरी जीविकावाला, दूसरे के दिए अन्न पर रहनेवाला, ( पु० ) निर्दिष्ट जीवन, बुरा जीवन ।  
**दुर्जय** ( वि० ) दुर्जय, जिसे जीतना अत्यंत कठिन हो ।  
**दुर्ज्ञेय** ( वि० ) दुर्बोध, कठिनाई से जानने योग्य ।  
**दुर्दम** ( वि० ) प्रचंड, प्रबल, जो जख्मी दबाया या जीता न जा सके ।  
**दुर्दमन** ( वि० ) जिसका दमन करना कठिन हो ।

दुर्दमनीय ( वि० ) जिसका दमन करना बहुत कठिन हो, प्रचंड, प्रबल ।

दुर्दर्श ( वि० ) जो जल्दा दिखाई न पड़े, जो देखने में भयंकर हो ।

दुर्दशा ( दुर्=बुरी, दशा=हानत, अवस्था ) ( स्त्री० ) बुरी हालत, आपदा, विपदा, अभाग, बुरी अवस्था, दुर्दिन ।

दुर्दात ( वि० ) दुर्दमनीय, प्रचंड, प्रबल, ( पु० ) गाय का बछड़ा, कलह, शिव ।

दुर्दिन ( दुर्=दुःख, दिन ) ( पु० ) बुरा दिन, ऐसा दिन जिसमें बादल घिरे हुए हों और अंधेरा हो जाय ।

दुर्वुरुद्ध ( पु० ) नास्तिक ।

दुर्दृष्ट ( वि० ) ( व्यवहार ) जिसका राग, लोभ आदि के कारण सम्यक् निर्णय न हो, ( पुरुषार्थ ) जिसका घृस, अदायत आदि के कारण ठीक क्रैसला न हुआ हो ।

दुर्द्वेष ( पु० ) दुर्भाग्य, अभाग्य, बुरी क्रिसमत, बुरा संयोग, दिनों का बुरा पंर ।

दुर्द्धर ( वि० ) प्रबल, प्रचंड, जिसे कठिनता से पकड़ सकें, जो जल्दी पकड़ने में न आ सके, ( पु० ) नरक-विशेष, पारा, भिलावाँ, विष्णु, राक्षस-विशेष ।

दुर्द्धर्ष ( वि० ) जिसका दमन करना कठिन हो, जिसे जल्दी वश में न ला सकें, जिसे परास्त करना कठिन हो, प्रबल, प्रचंड, उग्र ।

दुर्द्धर्षा ( स्त्री० ) नागदीना, कंधारी का पेड़ ।

दुर्द्धर्षी ( वि० ) मंद बुद्धि, बुरी बुद्धि का ।

दुर्द्धरुद्ध ( पु० ) वह शिष्य जो गुरु की बात जल्दी न माने ।

दुर्नय ( पु० ) कुनीति, बुरी चाल, नीति-विरुद्ध आचरण, अन्याय ।

दुर्नाद ( पु० ) बुरा शब्द, अप्रिय ध्वनि ।

दुर्नाम ( पु० ) बुरा नाम, कुख्याति, बदनामी, गाली, बुरा वचन, बवासीर, सीप, सुतुही ।

दुर्नामक ( पु० ) बवासीर, अर्श-रोग ।

दुर्नामारि ( पु० ) सूरन, ज़िमीकंद ।

दुर्नास्त्री ( स्त्री० ) शुक्रि, सीप, सुतुही ।

दुर्निमित्त ( पु० ) होनेवाले अरिष्ट की सूचित करने-वाला असगुन, बुरा सगुन ।

दुर्निरीक्ष ( वि० ) भयंकर, कुरूप, जिसे देखते न बने ।

दुर्निवार्य ( वि० ) जो जल्दी टल न सके, जिसका निवारण करना कठिन हो, जो जल्दी रोक न जा सके ।

दुर्नीति ( स्त्री० ) दुष्ट नीति, बुरा न्याय, खराब इंसार ।

दुर्बल ( दुर्=थोड़ा वा नहीं, बल=जोर ) ( वि० ) निर्बल, निबल, दुबला, असमर्थ, बलहीन, कमजोर ।

दुर्बलता ( स्त्री० ) कमजोरी, दुबलापन ।

दुर्बला ( स्त्री० ) जलसिरीस का पेड़ ।

दुर्बाल ( पु० ) जिसके चमड़े पर रोग हो और बाल झड़ गए हों, गंजा ।

दुर्बुद्धि ( दुर्=बुरी, बुद्धि=समझ ) ( वि० ) मूर्ख, भोंदू, अनाड़ी, अज्ञान, नासमझ, मंदबुद्धि, बदअकल ।

दुर्बोध ( वि० ) मूढ़, झिलट, कठिन ।

दुर्भक्ष ( वि० ) खाने में बुरा, जिसे खाना कठिन हो ।

दुर्भग ( वि० ) अभाग, खोटे प्रारब्ध का ।

दुर्भगा ( दुर्=दुःख, भग=भाग ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसको उसका पति न चाहता हो ।

दुर्भर ( वि० ) भारी, गुरु, वज्रनी, दूभर ।

दुर्भाग ( पु० ) मंद भाग्य, बुरा अदृष्ट, खोटी क्रिसमत, दुर्भाग्य ।

दुर्भागी ( वि० ) अभाग ।

दुर्भाग्य ( दुर्=बुरा, भाग्य=भाग ) ( वि० ) अभाग, भाग्यहान, कमबख्त ।

दुर्भाव ( पु० ) द्वेष, मनमोहाव, मनोमालिन्य, बुरा भाव ।

दुर्भावना ( स्त्री० ) बुरी भावना, चिंता, खटका, अदेश ।

दुर्भाव्य ( वि० ) जो जल्दी ध्यान में न आ सके, जिसकी भावना सहज में न हो सके ।

दुर्भिक्ष ( दुर्=नहीं, भिक्ष=खाने की वस्तु ) ( पु० ) काल, अकाल, कुसमय, असमय, क्रहत ।

दुर्भेद ( वि० ) जो कठिनता से छिदे, जिसका पार करना कठिन हो ।

दुर्भति ( दुर्=बुरी, मति=बुद्धि ) ( वि० ) मूर्ख, अज्ञान, दुर्बुद्धि, मंदबुद्धि, ( स्त्री० ) बुरी समझ, नासमझी ।

दुर्मेद ( दुर्=दुःख, मेद=अभिमान ) ( वि० ) जिसको बहुत अथवा बुरा घमंड हो, उन्मत्त, नशे आदि में चूर, अभिमान में चूर, ( पु० ) एक राक्षस का नाम ।



दुर्मना ( वि० ) दुष्ट, बुरे चित्त का, उदास, खिन्न, अनमना ।

दुर्मर ( वि० ) जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो ।

दुर्मरण ( पु० ) बुरे प्रकार से होनेवाली मृत्यु ।

दुर्मरा ( स्त्री० ) दूब, दूर्वा ।

दुर्मर्य ( वि० ) दुःसह, जिसे सहन करना कठिन हो ।

दुर्मल्लिका ( स्त्री० ) दृश्य काव्य के अंतर्गत हास्य-रस-प्रधान उपरूपक; इसमें चार अंक होते हैं, गर्भांक नहीं होते ।

दुर्मिल ( पु० ) भरत के एक पुत्र का नाम, धृन्-विशेष ।

दुर्मुख ( दुर्=वृग, मुख=मूँह ) ( वि० ) जिसका मुँह बुरा हो, कड़ी बात बोलनेवाला, ( पु० ) एक बंदर का नाम, एक राक्षस का नाम, घोड़ा, रामचंद्रजी का एक गुप्तचर, नाग-विशेष, शिव, शतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, वह घर जिसका द्वार उत्तर की ओर हो, गणेशजी का एक गण ।

दुर्मुखी ( स्त्री० ) एक राक्षसी जिसे रावण ने जानकी को समझाने के लिये नियुक्त किया था । ( वि० ) बुरे मुँहवाली ।

दुर्मुख ( पु० ) कंकड़ या मिट्टी पीटने का मुगदर, दुर्मट ।

दुर्मूल्य ( वि० ) महँगा, जिसका दाम अधिक हो ।

दुर्मुंघ ( वि० ) मंदबुद्धि, नासमझ, दुर्बुद्धि, अज्ञानी ।

दुर्माँह ( पु० ) कौवाठोटी, काकतुंडी ।

दुर्माँहा ( स्त्री० ) सकेद घुँघची, कौवाठोटी ।

दुर्यश ( पु० ) अपयश, अशकीर्ति, बदनामी ।

दुर्योध ( वि० ) विकट लड़ाका, जो बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को सहकर भी युद्ध में स्थिर रहे ।

दुर्योधन ( दुर्=दुःख से वा बुरी तरह से, यधु=लड़ना ) ( पु० ) शतराष्ट्र का बड़ा बेटा और कौरवों का मुखिया जिसने अपने चचेरे भाई युधिष्ठिर आदि पांडवों से लड़ाई की थी; वह लड़ाई महाभारत कहलाती है ।

दुर्योनि ( वि० ) नीच कुल का, नीच कुल में उत्पन्न ।

दुरा ( पु० ) चाबुक, कोड़ा, धुरा ।

दुरानी ( पु० ) अश्रुगानों की एक जाति ।

दुर्लक्ष्य ( वि० ) जो कठिनता से दिखाई पड़े ।

दुर्लक्ष्य ( वि० ) जिसे जल्दी जाँच न सके ।

दुर्लभ ( दुर्=कठिनता से, लभ्=पाना ) ( वि० ) जो कष्ट से मिले, प्रिय, बहुत बढ़िया, दुष्प्राप्य, अलभ्य, अनोखा ।

दुर्लक्ष्य ( वि० ) जिसकी लिखावट बुरी हो, जो आसानी से पढ़ा न जा सके ।

दुर्वच ( वि० ) जो कठिनता से कहा जा सके, जिसके कहने में कष्ट हो, ( पु० ) दुर्वचन, गाली ।

दुर्वचन ( दुर्=बुरा, वचन=बोल ) ( पु० ) गाली, बुरी बात, बुरा वचन, दुर्वाद ।

दुर्यर्गा ( स्त्री० ) चोरी ।

दुर्वह ( वि० ) जिसको उठाकर ले चलना कठिन हो, भारी, वज्रनी ।

दुर्वाक्य ( पु० ) कुवाक्य, दुर्वचन ।

दुर्वाच् ( स्त्री० ) निद्रित वाक्य, बुरा वचन, कुवाक्य ।

दुर्वाद ( दुर्=बुरा, वाद=कहना ) ( पु० ) गाली, बुरा वचन, दुर्वचन, बुरी बात, दुष्णाम, बदनामी, अपवाद ।

दुर्वादी ( वि० ) हुज्जती, कुतर्की ।

दुर्घोर ( वि० ) अनिवार्य, जो जल्दी रोका न जा सके ।

दुर्घार्य ( वि० ) जिसका निवारण कठिन हो ।

दुर्घासना ( दुर्=वृग, वासना=इच्छा ) ( स्त्री० ) बुरी इच्छा, खराब इवाहिश, दुष्ट कामना, खोटी आकांक्षा ।

दुर्घासाः ( दुर्=वृग, वा इरावना, वासस्=कपड़ा ) ( पु० ) एक ऋषि का नाम जो अत्रि ऋषि का बेटा और शिव का अंश था, मेला कपड़ा, मलिन वस्त्र ।

दुर्विगाह ( वि० ) जिसकी थाह जल्दी न लगे ।

दुर्विज्ञेय ( वि० ) जो जल्दी जाना न जा सके ।

दुर्विद ( वि० ) जिसे जानना कठिन हो ।

दुर्विदग्ध ( वि० ) अधजला, अहंकारी, घमंडी ।

दुर्विध ( वि० ) दरिद्र, खल, मूर्ख ।

दुर्विधि ( स्त्री० ) बुरी विधि, कुनियम, ( पु० ) दुर्भाग्य ।

दुर्विपाक ( दुर्=वृग, विपाक=फल ) ( पु० ) बुरा फल, बदनतीजा, बदकिस्मती, दुर्दैव, अभाग्य, दुर्घटना ।

दुर्विभाव्य ( वि० ) जिसकी भावना न हो सके, जो मन में न आवे, जिसका अनुमान न हो सके ।

दुर्विलसित ( पु० ) दुष्कार्य ।

दुर्विवाह ( पु० ) निद्रित व्याह, बुरा विवाह ।

दुर्विप ( पु० ) महादेव ।

दुर्विपह ( वि० ) दुःसह, जिसे सहना कठिन हो,  
( पु० ) महादेव, शिव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्वृत्त ( वि० ) दुराचारी, दुश्चरित्र, जिसका आचरण  
बुरा हो।

दुर्वृत्ति ( स्त्री० ) बुरी वृत्ति, बुरा काम।

दुर्व्यवस्था ( स्त्री० ) कुप्रबंध, बद्दंतज्ञामी।

दुर्व्यवहार ( पु० ) बुरा व्यवहार, बुरा बर्ताव, दुष्ट  
आचरण।

दुर्व्यसन ( पु० ) खराब आदत, बुरी लत।

दुर्व्यसनी ( वि० ) बुरी लतवाला।

दुर्व्रत ( पु० ) नीच आशय, बुरा मनोरथ, ( वि० )  
बुरे मनोरथवाला।

दुर्हृद ( पु० ) शत्रु, अमित्र, जो मुहद न हो।

दुलकी ( स्त्री० ) घोड़े की एक चाल, कूकर चाल।

दुलखना ( कि० ग० ) बार-बार कहना, बार-बार दुहराना।

दुलखी ( स्त्री० ) एक पत्निगा जो ज्वार, नील, तमाकू,  
सरसों और गहूँ को नुकसान पहुँचाता है।

दुलड़ा ( दो लड़ ) ( पु० ) दो लड़ों की माला, ( वि० )  
दो लड़ों का।

दुलत्ती ( दु=दो, लात पँथ की मार ) ( स्त्री० ) पिछले दो  
पैरों से लात मारना।

दुलत्ती छाँटना } ( बाल० ) लात मारना, पिछले दो  
दुलत्ती मारना } पैरों से लात मारना, पुस्तक झाड़ना।  
दुलदुल ( पु० ) वह स्रक्षर जिसे सिकंदरिया ( मिय )  
के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नज़र में दिया था।  
साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम  
के दिनों में इसकी नक़ल निकालते हैं।

दुलन ( पु० ) डुलना।

दुलना ( कि० अ० ) झूलना, डुलना।

दुलराना ( कि० रा० ) लाड़ करना, बच्चों को बहलाकर  
प्यार करना, ( कि० अ० ) दुलारे बच्चों की-सी  
शेष्टा करना।

दुलरुखा ( वि० ) प्यारा, दुलारा।

दुलहन } ( स्त्री० ) बनी, बनरी, लाड़ी, नवविवा-  
दुलहिन } हिता वधू।

दुलहा } ( पु० ) बर, बनरा, बना।  
दुलहा }

दुलहेटा ( पु० ) लाइला बेटा, दुलारा लड़का।

दुलाई ( दु=दो+लाय=परत ) ( स्त्री० ) रज़ाई, दुलैया,  
रई भरा हुआ ओढ़ना।

दुलार ( पु० ) प्यार, स्नेह, प्रीति, प्रेम।

दुलारना ( कि० अ० ) प्यार करना, घुमना-चाटना।

दुलारी ( स्त्री० ) प्यारी, लाइली, प्रिया।

दुलीचा ( पु० ) गलीचा, क़ालीन।

दुलैचा ( पु० ) गलीचा, क़ालीन।

दुलोही ( स्त्री० ) लोहे के दो टुकड़ों को जोड़कर बनाई  
हुई तलवार-विशेष।

दुल्लौ ( स्त्री० ) गोली के खेल में वह गोली जो मीर या  
अगली गोली के पीछे हो, दूसरे नंबर की गोली।

दुवन ( पु० ) खल, दुर्जन, बुरा आदमी, शत्रु, राक्षस,  
दैत्य।

दुवार ( सं० द्वार ) ( पु० ) दरवाज़ा।

दुवाल ( स्त्री० ) चमड़े का तसमा, रिकाब का तसमा,  
रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा शीता।

दुवालबंद ( पु० ) चपरास या पेटी का तसमा।

दुवाली ( स्त्री० ) घोड़ा, रँग या छपे हुए कपड़ों पर चमक  
लाने के लिये घोंटने का औज़ार।

दुवालीबंद ( पु० ) परतला आदि लगाए हुए तैयार  
सिपाही।

दुचो ( वि० ) दोनों।

दुशन्नार ( वि० ) कठिन, मुश्किल, दुरूह।

दुशवारी ( स्त्री० ) कठिनता।

दुशाला ( पु० ) शाल का जोड़ा।

दुशाले में लपेट कर मारना ( मुहा० ) मीठी चुटकी  
लेना, छिपे-छिपे आक्षेप करना।

दुश्चरित ( दुः+चरित, चर=चलना ) ( पु० ) दुराचार,  
बद्दचलन, दुष्ट व्यवहार।

दुष्कर ( दुर्=दुःख से, क=करना ) ( वि० ) कठिन,  
असाध्य, जो करने में कठिन हो, मुश्किल।

दुष्कर्म ( दुर्=बुरा, कर्म=काम ) ( पु० ) बुरा काम, कुकर्म,  
पाप, नीच कर्म।

दुष्कर्मी ( दुष्कर्म ) ( वि० ) पापी, दुरात्मा, अधर्मी,  
कुकर्मी।

दुष्काल ( पु० ) कुसमय, दुर्भिक्ष, अकाल।

दुष्कीर्ति ( स्त्री० ) अपप्रश, बद्नामी।

दुष्कुल ( पु० ) नीच कुल।

दुष्कुलीन ( वि० ) नीच कुल में उत्पन्न ।  
 दुष्कृत ( पु० ) पाप, अपराध, दोष, बुरा काम ।  
 दुष्कृती ( वि० ) कुकर्मा, पापी, दुराचारी ।  
 दुष्कृतीत ( वि० ) महंगा ।  
 दुष्ट ( दुष्=विगड़ना, भ्रष्ट होना वा बुरा करना ) ( वि० )  
 बुरा, दुर्जन, कुजन, नीच ।  
 दुष्टचारी ( वि० ) दुराचारी, दुर्जन, खल ।  
 दुष्टचेता ( वि० ) छली, कपटी ।  
 दुष्टता ( दुष्ट ) ( स्त्री० ) बुराई, खोटाई ।  
 दुष्णाम ( दुष्+नाम ) ( पु० ) बुरा नाम, गाली, अशय, बदनाम ।  
 दुष्टपना ( पु० ) बुराई, खोटाई ।  
 दुष्टसाक्षी ( पु० ) बुरा गवाह, अयोग्य गवाह ।  
 दुष्टा ( स्त्री० ) व्यभिचारिणी, कुलटा, भ्रष्टा ।  
 दुष्टाचार ( पु० ) कुकर्मा, कुचाल ।  
 दुष्टात्मा ( वि० ) दुराशय, दुष्टाशय ।  
 दुष्पच ( वि० ) जो जलदी न पचे ।  
 दुष्परिग्रह ( वि० ) जो सहज में पकड़ा न जा सके ।  
 दुष्पूर ( वि० ) जो आसानी से पूरा न हो, अनिवार्य ।  
 दुष्प्राप्य ( दुष्=कठिनता से, प्राप्य=पाने योग्य ) ( वि० )  
 दुर्लभ, दुःख से या कठिनता से पाने योग्य ।  
 दुष्प्रेत ( पु० ) एक पुरुवंशी राजा का नाम, इसने कयव  
 मुनि की पालिता कन्या शकुंतला से गंधर्व विवाह  
 किया था ( विशेष के लिये मा० च० देखिए ) ।  
 दुसह ( सं० दुःसह ) ( वि० ) दुःसह शब्द को देखो ।  
 दुस्तर ( दुस्=दुःख से, तृ=पार होना ) ( वि० ) कठिन,  
 जिसका पार होना कठिन हो ।  
 दुसाखा ( पु० ) दो कनखेवाला शमादान ।  
 दुसाध ( पु० ) एक अत्यंत जाति जो मूँधर पालती है ।  
 दुसार ( पु० ) ऐसा छेद जिसमें दोनों ओर दिखाई पड़े ।  
 दुसूती ( पु० ) एक प्रकार का मोटा वस्त्र ।  
 दुहना ( सं० दौहन, दुह्=दुहना ) ( क्रि० म० ) दौहन  
 करना, गाय के थनों से दूध निकालना ।  
 दुहराना ( क्रि० म० ) दूना करना, दुहरा कर कहना,  
 बार-बार कहना ।  
 दुहाई ( सं० द्वौ=दो, हाहा=हाय, अर्थात् दोनों हाथ ऊंचे करके  
 पुकारना ) ( स्त्री० ) न्याय के लिये पुकारना, पुकार,  
 सौगंध, शपथ, जैसे “नंद दुहाई” ।

दुहाई तिहाई करना ( बोल० ) बार-बार पुकारना ।  
 दुहागिन ( स्त्री० ) विधवा ।  
 दुहिता ( दुह्=देना, वा दुहना जो मा-बाप के धन को दुहा  
 करे या लेती रहे ) ( स्त्री० ) बेटी, लड़की, कन्या,  
 पुत्री, सुता ।  
 दुहूँ ( सं० द्वौ ) ( वि० ) दो, दोनों ।  
 दुहेला ( वि० ) दुस्तर, दुःसाध्य, कठिन ।  
 दुहोतरा ( पु० ) नाती, ( वि० ) दो अधिक, दो ऊपर ।  
 दुह्य ( वि० ) दुहने योग्य ।  
 दुश्चा ( पु० ) हाथ का गहना-विशेष, पछेली, ताश की  
 दुकी, ( स्त्री० ) आशीर्वाद, प्रार्थना, दुश्चा ।  
 दुइज ( स्त्री० ) दूज, द्वितीया ।  
 दुखन ( पु० ) दूषण, दोष, ऐब ।  
 दुखना ( क्रि० म० ) दोष देना, ऐब लगाना ।  
 दुखित ( वि० ) दूषित, बुरा, त्रस्त ।  
 दुगुन ( वि० ) दुगना, दूना ।  
 दुगू ( पु० ) हिमालय की तराई में होनेवाला एक तरह  
 का बकरा ।  
 दूज ( सं० द्वितीया ) ( स्त्री० ) दूसरी तिथि, दुइज,  
 द्वितीया ।  
 दूज का चाँद होना ( मुहा० ) बहुधा न दिखाई पड़ना,  
 बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना ।  
 दूजवर ( सं० द्विजायावर, द्वि=दूसरी, जाया=पत्नी, वर=  
 दुल्हा ) ( पु० ) वह मनुष्य जो दूसरा दयाह करता है ।  
 दूजा ( सं० द्वितीय ) ( वि० ) दूसरा, और ।  
 दूत ( दू=जाना ) ( पु० ) समाचार ले जानेवाला, संदेश  
 पहुँचानेवाला, एलचा, हरकारा, चर, बसीठी ।  
 दूतघनी ( स्त्री० ) गोरखमुंडी, कदंबपुष्पी ।  
 दूतर ( वि० ) दुस्तर ।  
 दूतिका } ( दूत ) ( स्त्री० ) समाचार पहुँचानेवाली,  
 दूती } संदेश ले जानेवाली, कुटनी, नायिका ।  
 दूदकश ( स्त्री० ) भुआकश, चिमनी, एक प्रकार का  
 दमकला जिससे भुआँ देकर पौदों में लगे हुए कीड़े  
 छुड़ाए जाते हैं ।  
 दूदला ( पु० ) एक प्रकार का पेड़ ।  
 दूदुह ( पु० ) पानी का सोंप, डेंडहा ।  
 दूध ( सं० दुग्ध ) ( पु० ) दुग्ध, पय, क्षीर, किसी जड़ी  
 का अथवा पीढ़े का रस ।

दूध उगलना (मुहा०) बच्चे का दूध पीकर कैं कर देना ।  
 दूध उछालना (मुहा०) दूध को ठंडा करने के लिये बार-बार उसे धार बाँधकर कड़ाई में या और बर्तन में ऊँचा हाथ करके गिराना ।  
 दूध उतरना (मुहा०) द्वातियों में दूध भर जाना ।  
 दूध का दूध और पानी का पानी करना (मुहा०) पूरा-पूरा न्याय करना ।  
 दूध का बच्चा (मुहा०) वह बच्चा जो केवल दूध ही के आधार पर रहता है ।  
 दूध का सा उवाल (मुहा०) शीघ्र शांत हो जानेवाला कोप ।  
 दूध की बू आना (मुहा०) (मुहा०) अभी तक बच्चा धीरे अनुभवहीन होना ।  
 दूध की मक्खी (मुहा०) तुच्छ और तिरस्कृत पदार्थ ।  
 दूध के दाँत (मुहा०) वे दाँत जो बच्चों को पहले-पहल दूध पीने की अवस्था में निकलते हैं ।  
 दूध के दाँत न टूटना (मुहा०) ज्ञान और अनुभव न होना ।  
 दूध चढ़ना (मुहा०) स्तन से निकलनेवाले दूध की मात्रा का कम हो जाना ।  
 दूध चढ़ाना (मुहा०) दुहते समय गाय का अपने दूध को स्तनों में ऊपर की ओर खींच लेना ।  
 दूध छुड़ाना (मुहा०) बच्चों को दूध पीने की आदत छुड़ाना ।  
 दूध डालना (मुहा०) बच्चों का पिण्ड हुए दूध की कैं कर देना ।  
 दूध तोड़ना (मुहा०) गाय आदि का दूध देना बंद या कम कर देना, गरम दूध को ठंडा करने के लिये हिलाना ।  
 दूध दुहना (मुहा०) स्तनों को दबाकर दूध की धार निकालना ।  
 दूध देना (मुहा०) अपने स्तनों में से दूध छोड़ना ।  
 दूध पड़ना (मुहा०) अनाज में रस पड़ना ।  
 दूधों नहाओ पूर्णों फलों (मुहा०) धन और संतान की वृद्धि हो ।  
 दूधचढ़ी (वि०) दूध देने में बर्बा हुई ।  
 दूधधारी (सं० दूधधारि) (पु०) केवल दूध पीकर जीनेवाला ।

दूधमाती (दूध+मात) (स्त्री०) दूध के चौथे दिन एक रीति होती है जब दुलहा और दुलहिन एक साथ बैठकर खीर खाते हैं ।  
 दूधमुँहाँ (वि०) वह बालक जो अभी माता का दूध पीता हो, दूधमुख ।  
 दूधिया (वि०) दूध-मिश्रित, (पु०) एक प्रकार की घास ।  
 दूधी (पु०) दूधिया ।  
 दूना (सं० द्विगुण) (वि०) द्विगुना, दुहरा ।  
 दुय (सं० दुर्वी, दुर्व=हिंसा करना अर्थात् काटना) (स्त्री०) एक प्रकार की घास ।  
 दूवर (सं० दुर्वल) (वि०) दुबला, दूबरा, कमज़ोर ।  
 दुर्वहः (दुर्व=दुःख से, वह=ले जाना) कठिन ।  
 दूभना (क्रि० अ०) भुलना, हिलना, डोलना ।  
 दूभर (वि०) कठिन, दुस्तर, दुःसाध्य ।  
 दूमुँहाँ (वि०) दो मुँहाँ, दो मुँहवाला ।  
 दूर (दुर्व=दुःख से, दृग्=जाना) (स्त्री०) बीच, दूरी, (वि०) परे, अनंतर, अलग, न्यारा, बीच ।  
 दूर करना (बोल०) हटाना, सरकाना, टालना, हँका देना, निकाल देना ।  
 दूर भागना (बोल०) छोड़ना, मुँह फेरना, हाथ उठाना, धिन करना, अवज्ञा करना, खराब करना, बचना, टल जाना, अलग रहना ।  
 दूर हो (बोल०) चला जा, परे हो, निकल भाग ।  
 दूर होना (बोल०) हटना, अलग होना, टलना, निकल जाना, सरकना ।  
 दूरदर्शिता (पु०) दूर से देखना, पाण्डित्य, विवेकता, दूरदर्शी ।  
 दूरदर्शी (दूर=दूर से अर्थात् पहले से, दर्श=देखनेवाला, दृश्=देखना) (पु०) दूर से देखनेवाला, पहले से जाननेवाला, अग्रसोची, (पु०) पंडित, विवेकी, ज्ञानी, गीध ।  
 दूरदेश (वि०) दूरदर्शी, अग्रसोची ।  
 दूरदेशी (स्त्री०) दूरदर्शिता ।  
 दूरवीक्षण (पु०) दूर की चीज़ देखने का यंत्र, दूरबीन ।  
 दूरस्थ (वि०) जो दूर हो, दूर का, दूरवर्ती ।  
 दूरी (स्त्री०) अंतर, फासला ।  
 दुलहा, दुल्हा (पु०) पति, नौशा, दुलहा ।

दूषक ( दूष्=दोषी होना ) ( पु० ) निंदक ।  
 दूषण ( दूष्=दोषी होना ) ( पु० ) दोष, निंदा, चूक,  
 अपराध, अपवाद, भूल, एक राक्षस का नाम ।  
 दूषणीय ( दूष्+अनीय ) ( पु० ) निंदायोग्य, दुष्ट, बदनाम ।  
 दूषना ( कि० सं० ) दोष लगाना ।  
 दूषित ( दूष्=दोषी होना ) ( पु० ) निंदित, बुरा, खराब,  
 भ्रष्ट, बदनाम, कलंकित, बिगड़ा हुआ ।  
 दूष्य ( दूष्+य ) ( पु० ) अयोग्य, दूषण योग्य ।  
 दूसर } ( सं० द्वितीय ) ( वि० ) तूजा, और, अन्य ।  
 दूसरा }  
 दूहा ( पु० ) दोहा ।  
 दूहिया ( पु० ) एक प्रकार का चूहा ।  
 दृक्पथ ( पु० ) दृष्टि की पैठ, दृष्टि का मार्ग ।  
 दृक्पात ( पु० ) देखना, अवलोकन ।  
 दृग् ( सं० दृक्, दृश्=देखना ) ( पु० ) आँख, चक्षु ।  
 दृग्चल ( पु० ) पलक, पपनी ।  
 दृग्मिच्राव ( पु० ) आँखमिचौनी ।  
 दृग्गणित ( पु० ) प्रहों को वेध करके जानेवाली  
 गणित की विधि ।  
 दृग्गोचर ( वि० ) आँख से दिखाई देनेवाला ।  
 दृढ़ ( दृढ=वदना ) ( वि० ) कड़ा, कठोर, मजबूत, पोढ़ा,  
 पक्का, अचल, गाढ़ा, ठोस ।  
 दृढ़कर्मा ( वि० ) धैर्यवान् ।  
 दृढ़ता ( दृढ़ ) ( स्त्री० ) पकावट, मजबूती, पोढ़ाई,  
 कठिनता, ठोसपन, दृढ़त्व सत्ती ।  
 दृढ़धन्वा ( पु० ) वह जो धनुष चलाने में दृढ़ हो ।  
 दृढ़निश्चय ( वि० ) दृढ़प्रतिज्ञ ।  
 दृढ़नेत्र ( पु० ) विश्वामित्र का एक पुत्र ।  
 दृढ़पद ( पु० ) छंद-विशेष ।  
 दृढ़ाना ( सं० दृढ़ ) ( कि० सं० ) मजबूत करना, पक्का  
 करना, पोढ़ा करना, सबल करना ।  
 दृढ़ायुध ( वि० ) युद्ध में तत्पर, दृढ़हस्त ।  
 दृप्त ( वि० ) अभिमानी, घमंडी ।  
 दृष्ट ( वि० ) भयभीत, प्रथित ।  
 दृश् ( पु० ) दर्शन, प्रदर्शक, देखनेवाला, ( स्त्री० ) चक्षु,  
 आँख, ज्ञान, दो की संख्या ।  
 दृशत् ( स्त्री० ) पत्थर, सिल, शिला ।  
 दृशस्ती ( स्त्री० ) एक नदी का नाम ।

दृश्य ( दृश्=देखना ) ( पु० ) देखने योग्य, दर्शनीय,  
 सुंदर, सुहावना, मनोहर ।  
 दृश्यमान ( पु० ) देखने योग्य, दर्शनीय, देखने  
 काबिल ।  
 दृष्ट ( दृश्=देखना ) ( पु० ) देखा हुआ, प्रकट, जो देखने  
 में आवे, प्रत्यक्ष ।  
 दृष्टकूट ( पु० ) पहेली, क्लिष्ट, कठोर, कड़ा ।  
 दृष्टवत् ( वि० ) सांसारिक, लौकिक ।  
 दृष्टवाद ( पु० ) प्रत्यक्षवाद ।  
 दृष्टांत ( दृष्ट=देखा, अंत=आखिर, पार ) ( पु० ) उदाहरण,  
 उपमा, बराबरी ।  
 दृष्टि ( दृश्=देखना ) ( स्त्री० ) देखना, दर्शन, दीठ, नज़र,  
 आँख ।  
 दृष्टिक्षेप ( पु० ) दृक्पात ।  
 दृष्टिगत ( वि० ) जो देखा गया हो ।  
 दृष्टिगोचर ( वि० ) प्रत्यक्ष, दृग्गोचर ।  
 दृष्टिपात ( दृष्टि+पात, पत्=गिरना ) ( पु० ) दर्शन, कटाक्ष,  
 घूरना, देखना ।  
 दृष्टिपूत ( वि० ) देखने में पवित्र ।  
 दृष्टिबंधु ( पु० ) जुगनु, खद्योत ।  
 दृष्टिमान् ( वि० ) नेत्रवाला, आँखवाला ।  
 दृष्टिरोध ( पु० ) आड़, व्यवधान, छोटा ।  
 दृष्टिर्यंत ( वि० ) दृष्टिवाला, जानकार, जानी ।  
 दृष्टिशशि ( पु० ) महादेव, शिव ।  
 देई ( स्त्री० ) देवी ।  
 देखना ( सं० दृश्=देखना ) ( कि० सं० ) लखना, दृष्टि  
 करना, ताकना, निहारना ।  
 देखना भालना ( बोल० ) अच्छी तरह से देखना,  
 देखना, ताक रखना, निहारना ।  
 देखना-सुनना ( मुहा० ) पता लगाना, जानकारी पास  
 करना ।  
 देख लूँगा ( मुहा० ) उपाय करूँगा, समझ लूँगा ।  
 देखाऊ ( वि० ) बनावटी, भड़कीला ।  
 देखादेखी ( बोल० ) हिस्काहिस्की, बराबरी के ब्याज  
 से. देखने से, आपस में देखना ।  
 देखामाली ( स्त्री० ) देखभाल, निरीक्षण ।  
 देखावट ( स्त्री० ) बनावट, तबक-भड़क ।  
 देखोआ ( वि० ) बनावटी, देखाऊ ।

देग ( पु० ) चौड़े मुँह और चौड़े पेंदे का खाना पकाने का बर्तन ।

देदीप्यमान ( पु० ) चमकीला, जाज्वल्यमान, चमकदार ।

देन ( स्त्री० ) उधार, ऋण, ऋण ।

देनदार ( पु० ) ऋणदार, ऋणी ।

देनलेन ( देनालेना ) ( पु० ) व्यवहार, पलटा, व्यापार, बनिज, देवालेई, साहूकारी ।

देना ( स० दान, दा=देना ) ( क्रि० स० ) दे देना, दे ढालना, सौंपना, त्यागना. लौटाना, ( पु० ) ऋण, उधार ।

देना-पाना ( बोल० ) हाति-लाभ, देना-लेना ।

दे मारना ( बोल० ) पटक देना, पछाड़ डालना ।

देय ( दा=देना ) ( पु० ) देने योग्य ।

देर ( स्त्री० ) विलंब, अनिकाल ।

देरी ( स्त्री० ) देर, अघेर, विलंब ।

देवक ( पु० ) दीमक, दीवक ।

देव ( दिव=थेलना, वा गराहना ) ( पु० ) देवता, परमेश्वर, राजा, देवर, ब्राह्मणों का उपनाम, बादल, मेघ, ( वि० ) पूज्य, पूजने योग्य ।

देवभूषण ( पु० ) देवताओं के प्रति कर्तव्य, यज्ञादि ।

देवक ( दिव=थेलना, वा चमकना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण का नाना और देवकी का बाप ।

देवकली ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

देवकांडर ( पु० ) पौदा-विशेष, चनसुर ।

देवकार्य ( देव=देवता, कार्य=काम ) ( पु० ) पूजा-पाठ, होम आदि ।

देवकाष्ठ ( पु० ) काष्ठचंदन, देवदारु ।

देवकी { ( देवक ) ( स्त्री० ) देवक राजा की बेटी, वसु-  
देवकी } देव की स्त्री और श्रीकृष्ण की मा ।

देवकीनंदन ( देवकी+नंदन=बेटा ) ( पु० ) श्रीकृष्ण ।

देवकुंड ( पु० ) प्राकृतिक जलाशय, तालाब, झील ।

देवकुल ( पु० ) एक प्रकार का मंदिर, इसका द्वार बहुत छोटा होता है ।

देवकुसुम ( पु० ) लवंग, लौंग ।

देवगति ( स्त्री० ) स्वर्गप्राप्ति, मृत्यु ।

देवगायक ( पु० ) गंधर्व ।

देवगिरि ( पु० ) हिमालय-पर्वत ।

देवशुरु ( देव+शुरु ) ( पु० ) देवताओं के गुरु बृहस्पति ।

देवगृह ( देव+गृह ) ( पु० ) मंदिर, देवालय, देहरा, टाकुरद्वारा ।

देवठान ( सं० देवोत्थान ) ( पु० ) कानिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से जागते हैं ।

देवतरंगिणी ( देव=देवता, तरंगिनि=नदी ) ( स्त्री० ) गंगा, भागीरथी ।

देवतरु ( पु० ) मदार, पारिजात, करुपतरु ।

देवता ( देव ) ( पु० ) देव, अमर ।

देवताधिप ( पु० ) इंद्र ।

देवतीर्थ ( पु० ) उँगलियों का अग्रभाग ।

देवत्व ( पु० ) देव-पद, देव-भाव ।

देवदत्त ( पु० ) बुद्ध का छोटा चचेरा भाई, पंच प्राणों में से एक, अर्जुन के एक शंख का नाम, ( वि० ) देव-प्रसाद, देवताओं का दिया हुआ ।

देवदारु ( देव + दारु अर्थात् जिस पेड़ की लकड़ी देवताओं को प्यारी होती है ) ( पु० ) एक वृक्ष का नाम ।

देवदासी ( स्त्री० ) मंदिरों में नाचनेवाली बेश्या, अस्तरा ।

देवदूत ( पु० ) आग, अग्नि, धर्माचार्य, पैगंबर, पवन ।

देवदेव ( देव + देव ) ( पु० ) देवताओं का देवता, महादेव ।

देवधान्य ( पु० ) ज्वार ।

देवधुनी ( स्त्री० ) गंगा नदी ।

देवधूप ( पु० ) गुग्गुलु ।

देवध्वनि ( स्त्री० ) आकाश-गंगा ।

देवन ( पु० ) क्रीड़ा, खेल, व्यवहार, युत, जूआ, शोक, निंदा, देव का बहुवचन ।

देवनागरी ( देव+देवता, नागरी=नगर की ) ( स्त्री० ) देवताओं के नगर के अक्षर अथवा देवताओं के नगर की भाषा, शास्त्रीय अक्षर, शुद्ध हिंदी अक्षर, हिंदी-भाषा, नागरी बोली ।

देवन्न ( पु० ) चरु, हवि ।

देवमणि ( पु० ) कौस्तुभमणि, सूर्य, घोड़े की भँवरी ।

देवमाता ( स्त्री० ) अदिति, दाक्षायणी, दक्ष की कन्या ।

देवमास ( पु० ) गर्भ का आठवाँ मास ।

देवयानी ( स्त्री० ) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या ( विशेष के लिये भा० च० देखिए ) ।

देवर ( दिव्=खेलना ) ( पु० ) पति का छोटा भाई, जैसे  
“परयति देवरस्ते” ।

देवल ( पु० ) ( सं० देवालय ) मंदिर, ठाकुरद्वारा,  
देहरा, पुजारी, पंडा, देवर, नारद ।

देवलोक ( देव+लोक ) ( पु० ) देवताओं के रहने का  
स्थान, स्वर्ग, सात लोकों में एक लोक ( लोक  
शब्द को देखो ) ।

देववाणी ( देव+वाणी ) ( स्त्री० ) देवताओं की भाषा  
संस्कृतभाषा ।

देवश्वानी ( स्त्री० ) स्वर्ग की कुतिया ।

देवसदन ( पु० ) स्वर्ग, मंदिर, देवालय ।

देवसेना ( स्त्री० ) सावित्री की कन्या, कास्तिकेय की स्त्री ।

देवस्थान ( देव + स्थान ) ( पु० ) मंदिर, देवालय,  
देवल, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

देवहा ( स्त्री० ) सरयू नदी ।

देवहू ( पु० ) एक ऋषि का नाम, बायाँ कान, अन्न से  
भरी गाड़ी ।

देवा ( सं० देव ) ( पु० ) देवता ( देता ) देनेवाला ।

देवांगना ( स्त्री० ) अप्सरा ।

देवान ( पु० ) मंत्री, राजसभा, वज्जीर, अमात्य ।

देवाना ( वि० ) पागल, बावला, उन्मत्त, ( पु० )  
पत्नी-विशेष ।

देवानुचर ( पु० ) विद्याधर आदि उपदेव ।

देवांतक ( पु० ) रावण का पुत्र जिसको हनूमान् ने  
मारा था ।

देवारि ( पु० ) राक्षस, अमुर, दैत्य ।

देवाल ( देता ) ( पु० ) देनेवाला ।

देवालय ( देव=देवता, आलय=जगह ) ( पु० ) मंदिर,  
देवस्थान, देवली, ठाकुरद्वारा, देहरा, स्वर्ग ।

देवाला ( पु० ) दिवाला, टाट उलटना ।

देवालिया ( वि० ) निर्धन, जिसका दिवाला निकल-  
गया हो ।

देविका ( स्त्री० ) घाघरा नदी का पुराना नाम ।

देवी ( दिव्=कीड़ा करना, खेलना ) ( स्त्री० ) भवानी,  
दुर्गा, जगदंबा, देवता की स्त्री, रानी ।

देवेंद्र ( पु० ) इंद्र ।

देवोत्तर ( पु० ) देवअपंत धन ।

देवोत्थान ( देव=विष्णु भगवान्, उत्थान=उठना ) ( पु० )

कास्तिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की  
नींद से जागते हैं ।

देश ( दिग्=देना ) ( पु० ) मुल्क, देश, पृथ्वी का खंड,  
मंडल, चक्र, प्रदेश, स्थान राग-विशेष ।

देशकार ( पु० ) राग-विशेष जो परज, सोरठ और  
सरस्वती के मिलाने से बनता है और सवेरे पाँच  
वृं दिन चढ़े तक गाया जाता है, यह दीपक राग  
का पुत्र माना जाता है ।

देशज ( पु० ) प्रांतीय-शब्द, देश-विशेष में बोला  
जानेवाला शब्द, ( वि० ) देश में उत्पन्न ।

देशज्ञ ( पु० ) देश-दशा का ज्ञाता ।

देशदशाभिज्ञ ( पु० ) देश की दशा का ज्ञाता, मुल्क  
की हालत को जाननेवाला ।

देशनिकाला ( देश + निकालना ) ( पु० ) देश से  
निकालना ।

देशभाषा ( देश+भाषा ) ( स्त्री० ) देशी भाषा, देश की  
बोली ।

देशमल्लार ( पु० ) राग-विशेष जिसमें सम स्वर  
लगते हैं ।

देशस्थ ( देश+स्थ ) ( पु० ) देश में टिका, मुल्क में  
ठहरा हुआ ।

देशाचार ( देश+आचार ) ( पु० ) देश का व्यवहार,  
देश की रीति-नीति ।

देशाटन ( देश=मुल्क, अटन=फिरना ) ( पु० ) देश में  
फिरना, सफ़र करना ।

देशाधिपति ( देश+अधिपति ) ( पु० ) देश का राजा,  
देश का स्वामी ।

देशाधीश ( देश+अधीश ) ( पु० ) देश का राजा, देश  
का स्वामी ।

देशान्तर ( देश=मुल्क, अंतर=दूरा वा दूरी ) ( पु० )  
दूसरा देश, विदेश, मध्याह्नरेखा से पूर्व अथवा  
पश्चिम किसी जगह की दूरी—इंग्लैंड के भूगोल  
जाननेवाले ग्रीनिच शहर से और हिंदुस्तान के  
ज्योतिषी जंका से देशान्तर का हिसाब करते हैं ।

देशहितैषी ( पु० ) देश की भलाई की इच्छा  
करनेवाला, वीरप्रवाह-मुल्क ।

देशिक ( पु० ) पथिक, बटोही, गुरु, ब्रह्मज्ञान का  
उपदेश देनेवाला आचार्य ।

देशिनी ( स्त्री० ) तर्जनी उँगली, सूची ।  
 देशी ( सं० देशी ) ( वि० ) देश का, ( पु० ) रागिनी-  
 विशेष जो दीपक राग की भार्या है ।  
 देशीय ( वि० ) देशो ।  
 देशोन्नति ( देश+उन्नति ) ( स्त्री० ) देश की बढ़ती,  
 देश की वृद्धि, मुलक की तरकी ।  
 देशवाल ( वि० ) स्वदेशी, ( पु० ) पटसन ।  
 देह ( दिह=वढ़ना ) ( स्त्री० ) शरीर, तन, गात्र, काय ।  
 देहकानी ( वि० ) गँवार, देहानी ।  
 देहत्याग ( पु० ) मरण, मृत्यु ।  
 देहदुगना ( बोल० ) गुप्त अंगों को ढकना ।  
 देहधारण ( पु० ) जन्म, जीवन-रक्षा ।  
 देहधारी ( वि० ) शरीर धारण करनेवाला ।  
 देहपात ( पु० ) मरण, मृत्यु ।  
 देहभृत ( पु० ) जीव ।  
 देहयात्रा ( स्त्री० ) मृत्यु, मरण, पोषण, भोजन, निर्वाह ।  
 देहरा ( सं० देवग्रह ) ( पु० ) देवता का मंदिर, देवल,  
 टाकुरद्वारा, देवालया ।  
 देहली ( देह=लेपन, लिह=लेपना और ला=लेना ) ( स्त्री० )  
 दोनों किवाड़ों के बीच का काठ, दिहली, दहलीज़,  
 फाटक, द्वार, डेवड़ी भारत का एक प्रधान नगर ।  
 देह सँभालना ( बोल० ) सचेत होना, चैतन्य होना,  
 ढारस रचना, चेत में आना ।  
 देही ( देह ) ( पु० ) प्राणी, जीवधारी ।  
 देही ( सं० देह ) ( स्त्री० ) देह, शरीर, तन ।  
 देजा ( पु० ) दहेज, यौतुक ।  
 दैतय ( वि० ) दिति से उत्पन्न, ( पु० ) असुर, दानव,  
 दैत्य ।  
 दैत्य ( दिति ) ( पु० ) दिति के बेटे, राक्षस, असुर ।  
 दैत्यगुरु ( दैत्य+गुरु ) ( पु० ) राक्षसों के गुरु  
 शुक्राचार्य ।  
 दैत्यपुरोधा ( पु० ) शुक्राचार्य ।  
 दैत्यमाता ( स्त्री० ) दिति ।  
 दैत्ययुग ( पु० ) दैत्यों का युग जो मनुष्यों के चार  
 युगों के बराबर होता है ।  
 दैत्यसेना ( स्त्री० ) प्रजापति की कन्या जिसे केशी  
 दानव हर ले गया था और विवाह किया था ।  
 दैत्यारि ( दैत्य+अरि ) ( पु० ) विष्णु, इंद्र, देवगण ।

दैत्येंद्र ( पु० ) दैत्यों का राजा, गंधक ।  
 दैनंदिन ( पु० ) प्रतिदिन होनेवाला ।  
 दैनिक ( पु० ) दिन का, रोजाना, रोज-रोज़ ।  
 दैनिकवेतन ( पु० ) रोज की मज़दूरी ।  
 दैन्य ( पु० ) दीनता, दुःखीपन, गरीबी, लाचारी, पेबसी ।  
 दैया ( पु० ) दई, दैव, ( स्त्री० ) दाई ।  
 दैर्घ्य ( पु० ) लंबान-चौड़ान, दीर्घता ।  
 दैव ( देव=ईश्वर, अर्थात् ईश्वर से आया हुआ, वा ईश्वर  
 का ) ( पु० ) भाग्य, प्रारब्ध, कर्म का फल, संयोग,  
 ईश्वर, विधाता, ( वि० ) ईश्वर का ।  
 दैवगति ( स्त्री० ) प्रारब्ध, भाग्य, अदृष्ट, दैवी घटना ।  
 दैवज्ञ ( देव+ज्ञ=ज्ञानना ) ( पु० ) ज्योतिषी, नज्मी ।  
 दैवत ( वि० ) देव-संबंधी ।  
 दैवतंत्र ( वि० ) भाग्याधीन, प्रारब्धानुकूल ।  
 दैवतीर्थ ( पु० ) उँगलियों का अग्रभाग ।  
 दैवदुर्विपाक ( पु० ) दुर्भाग्य, भाग्य की प्रतिकूलता ।  
 दैवयुग ( पु० ) देवताओं का युग जो मनुष्य के चार  
 युगों के बराबर होता है ।  
 दैवयोग ( पु० ) अकस्मान्, संयोग ।  
 दैववश ( कि० वि० ) दैवात्, हठात्, अकस्मात् ।  
 दैववादी ( पु० ) अदृष्टवादी, अकर्मण्य, आलसी ।  
 दैवविवाह ( पु० ) आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।  
 दैवागत ( वि० ) दैवी, आकस्मिक ।  
 दैवात् } ( देव ) ( कि० वि० ) संयोग से, अचानक,  
 दैवी } एकाएकी, अकस्मात् ।  
 दैवानुरागी ( देव+अनुरागी ) ( पु० ) ईश्वर का प्रेमी,  
 ईश्वरभक्त, सुदापरस्त ।  
 दैविक ( वि० ) देवताओं से, आसमान से, ईश्वरीय ।  
 दैवी ( स्त्री० ) देव-संबंधी, ईश्वरीय ।  
 दैवीगति ( स्त्री० ) होनहार, प्रारब्ध, भावी ।  
 दैव्य ( वि० ) प्रारब्ध, देव-संबंधी, भाग्य ।  
 दैहिक ( वि० ) देह की, शरीर की, जिस्मानी ।  
 दैहीं ( देना ) ( कि० सं० ) दूँगा ।  
 दो ( द्वि० ) ( वि० ) दूसरी संख्या, एक और एक, २ ।  
 दोआब ( पु० ) दो नदियों के बीच का देश ।  
 दोऊ ( सं० द्वौ ) ( वि० ) दोनों "आखर मधुर मनोहर  
 दोऊ । वर्षा बिलोचन जन जिय जोऊ"—( रामायण )  
 दोक ( पु० ) दो दाँत का बड़ेड़ा ।



दोकल्ला ( पु० ) दो कलवाला ताला ।  
 दोकोहा ( पु० ) दो कूबरवाला ऊँट ।  
 दोख ( पु० ) दुर्गुण, दोष ।  
 दोखना ( कि० स० ) कलंक लगाना, दोष देना ।  
 दोखी ( वि० ) अपराधी, दोषी, ऐबी, शत्रु ।  
 दोगला ( वि० ) वर्णसंकर, कमअसल ।  
 दोगाड़ा ( पु० ) दुनाली बंदूक ।  
 दोगुना ( वि० ) दुगुना ।  
 दोग्धा ( दुह्+तु, दुह्=दुहना ) ( पु० ) वस्त्र, बछड़ा,  
 अहीर दुहनेवाला ।  
 दोग्धी ( दुह्+तु+ई ) ( स्त्री० ) धेतु, गौ, गाय ।  
 दोचना ( कि० स० ) दबाव डालना, मजबूर करना,  
 लाचार करना, बाध्य करना ।  
 दोचंद ( वि० ) दुगुना ।  
 दोचिन्ता ( वि० ) अस्थिर चिन्तवाला ।  
 दोचिन्ती ( स्त्री० ) चिन्त की अस्थिरता ।  
 दोजख ( पु० ) नरक, पीड़ा-विशेष ।  
 दोजा ( पु० ) वह जिसके दो विवाह हुए हों ।  
 दोजिया ( स्त्री० ) गर्भवती स्त्री ।  
 दोजीवा ( सं० द्विजीवा, द्वि=दो, जीव=प्राणी ) ( स्त्री० )  
 गर्भिणी, गर्भवती, पेट से ।  
 दो जी से होना ( बोल० ) पेट से होना, गर्भिणी होना ।  
 दोतरफा ( कि० वि० ) दोनों ओर, ( वि० ) दोनों  
 तरफ का ।  
 दोतला ( पु० ) दुमंजिला ।  
 दोतारा ( पु० ) बाजा-विशेष, एक प्रकार का दुशाखा ।  
 दोदना ( कि० स० ) मुद्दरना, झुठाना, अपनी बात पर  
 स्थिर न रहना ।  
 दोदिन ( पु० ) पेड़-विशेष जो रीठे की जाति का  
 होता है ।  
 दोदिला ( वि० ) अस्थिर-चित्तवाला, दोचिन्ता ।  
 दोधक ( पु० ) छंद-विशेष जिसमें तीन भगण और  
 अंत में दो गुरु होते हैं ।  
 दोन ( पु० ) दोआब, संगम, सिंचाई करने का काठ  
 का लंबा खोखला टुकड़ा ।  
 दोनली ( वि० ) जिसमें दो नालें हों ।  
 दोना } ( पु० ) पत्तों का बना हुआ बरतन जिसमें  
 दोना } तरकारी, मिठाई आदि लेकर खाते हैं ।

दोनाली ( सं० दिनाल ) ( स्त्री० ) दो नल की बंदूक ।  
 दोनिया ( स्त्री० ) छोटा दोना, दोनी ।  
 दोनी ( स्त्री० ) छोटा दोना, दोनिया ।  
 दोनों ( सं० द्वौ ) ( वि० ) दोऊ, उभय ।  
 दोपलका ( पु० ) एक प्रकार का कबूतर, दोहरा नगीना ।  
 दोपल्ली ( वि० ) दो पल्लेवाला ।  
 दोपहरी ( स्त्री० ) मध्याह्न, सवेरे और संध्या के बीच  
 का समय ।  
 दोपीठा ( वि० ) दोरुखा ।  
 दोफसली ( वि० ) जिसका संबंध दोनों फसल से हो ।  
 दोबारा ( कि० वि० ) दूसरी बार ।  
 दोभाषिया ( वि० ) दुभाषिया ।  
 दोमट ( स्त्री० ) बालू मिलो हुई ज़मीन ।  
 दोमहला ( वि० ) दुमंजिला ।  
 दोय ( वि० ) दो ।  
 दोयम ( वि० ) दूसरे नंबर का, दूसरा ।  
 दोरंगी ( वि० ) छल, कपट ।  
 दोरस ( पु० ) दोमट, दूमट ज़मीन ।  
 दोरसा ( वि० ) जिसमें दो प्रकार का स्वाद हो ।  
 दोराहा ( पु० ) वह जगह जहाँ से दो रास्ते निकले हों ।  
 दोरी ( स्त्री० ) डोरी, रस्सी ।  
 दोरुखा ( वि० ) दो नरक समान रंग या बेल-बूटेवाला ।  
 दोल ( पु० ) झूलना, हिंडोला, डोली ।  
 दोलन ( दुल्+अन ) झूलना, पैंगना ।  
 दोला ( दुल्=झूलना ) ( पु० ) झूला, दोल, हिंडोला,  
 नील का पेड़ ।  
 दोलायंत्र ( पु० ) यंत्र-विशेष जिससे धर्क-खींचा जाता है ।  
 दोलायमान ( वि० ) झूलना हुआ, चलायमान, चंचल ।  
 दोलिका ( दुल्=झूलना ) ( स्त्री० ) झूला, हिंडोला ।  
 दोश ( पु० ) एक प्रकार का लाख जिससे रंग बनाने का  
 काम लिया जाता है ।  
 दोशाला ( पु० ) दुशाला ।  
 दोष ( दुप्=दोषी होना ) ( पु० ) चूक, भूल, अवगुण,  
 अपराध, क्रूर ।  
 दोषक ( पु० ) बुराई करनेवाला, निंदक, गाय का बछड़ा ।  
 दोषग्राही ( पु० ) दुर्जन, दुष्ट ।  
 दोषधन ( पु० ) कुपित वात-पित्त आदि को शांत करने-  
 वाली औषध ।

दोषज्ञ ( पु० ) पंडित, चिकित्सक ।

दोषना ( दोष ) ( कि० म० ) दोष लगाना, कलंक लगाना, दाश लगाना ।

दोषा ( स्त्री० ) रात्रि, रात, बाँह ।

दोषाकर ( पु० ) चंद्रमा ।

दोषारोपण ( दोष+आरोपण, रूप=जमाना वा लगाना ) ( पु० ) दोष लगाना, कलंक लगाना, ऐव लगाना ।

दोषावह ( वि० ) दोषपूर्ण ।

दोषिन ( स्त्री० ) अपराधिनी, वह कन्या जो विवाह होने के पूर्व ही पुरुष-प्रसंग कर चुकी हो ।

दोषी ( दोष ) ( वि० ) पापी, अपराधी ।

दोसाद् ( पु० ) नीच जाति जिसका भंडा सुधर पालने का है ।

दोसाध ( पु० ) दुसाध ।

दोसूती ( स्त्री० ) दो परत की बिछाने की चादर ।

दोहगा ( स्त्री० ) रखनी, सुंतिन, उपर्या ।

दोहना ( म० दोहन, दहन=पेटा ) ( पु० ) पेटा का पेटा, नातो; दोहनी=पेटा की पेटा, नतिनी ।

दोहद् ( स्त्री० ) गर्भ, गर्भ का चिह्न, गर्भिणी की इच्छा ।

दोहदयती ( स्त्री० ) गर्भवती ।

दोहना ( म० दोहन, दह=दुहना ) ( कि० म० ) दुहना, दूध खींचना ।

दोहनी ( दह=दुहना जगम ) ( स्त्री० ) दूध दुहने का यरनन ।

दोहर ( दो ) ( स्त्री० ) दोहरा कपड़ा, भियान, दोहरी चहर ।

दोहरा ( दो ) ( वि० ) दूना ( पु० ) दोहा ।

दोहला ( स्त्री० ) दो बार की ध्याई हुई गौ आदि ।

दोहली ( स्त्री० ) अशोक वृक्ष, मदार ।

दोहा ( म० द्विपदा ) ( पु० ) दो पद का छंद, ४८ मात्रा का छंद, जिसमें प्रथम तृतीय चरण में तेरह तेरह और द्वितीय चतुर्थ चरण में ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती हैं ।

दोँगड़ा ( पु० ) भारी वर्षा ।

दोड़धूप ( स्त्री० ) परिश्रम, मिहनत ।

दोड़धूप करना ( बोल० ) बहुत मिहनत करना, परिश्रम करना ।

दोड़ना ( सं० दोर=तार से चलना ) ( कि० अ० ) भागना, जरूरी से चलना, डपटना, चढ़ना ।

दोड़ादोड़ी ( बोल० ) धावाधावी, हड़बड़ी, उतावली ।

दोड़ाहा ( दोड़ना ) ( वि० ) दौड़नेवाला, हलकारा, अगुआ दूत ।

दौत्य ( पु० ) दूत का काम ।

दौना ( पु० ) एक प्रकार का पौदा-विशेष ।

दौरा ( पु० ) चक्र, भ्रमण, टोकरा ।

दौरात्म्य ( पु० ) दुष्टता, दुर्जनता ।

दौरादौर ( कि० वि० ) लगातार ।

दौरान ( पु० ) फेरा, चक्र, भ्रमण, भोंक ।

दौरी ( स्त्री० ) टोकरा, चंगेरी ।

दौर्मनस्य ( पु० ) दुर्जन चित्त की खोटाई ।

दौहद् ( पु० ) दुष्टता ।

द्युति ( द्युत्=चमकना ) ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, सुंदरता, दीप्ति ।

द्युतिन् ( द्युत्+इत् ) ( पु० ) प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान् ।

द्युतिधर ( वि० ) दीप्त, आभायुक्त ।

द्युपथ ( पु० ) आकाश-मार्ग ।

द्युलोक ( पु० ) स्वर्गलोक ।

द्युपत् ( दिव्+सद्, दिव्=स्वर्ग, सद्=रहना ) ( पु० ) स्वर्गस्थ, स्वर्गनिवासी, बिहिरत का रहनेवाला ।

द्यूत ( दिव्=खेलना ) ( पु० ) पांसा खेलना, जुआ ।

द्युतकार ( द्युत्=जुआ, कार=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० ) जुआड़ी, जुआ देखनेवाला ।

द्यो ( द्युत्+अं, द्यु+विच् ) ( पु० ) स्वर्ग, देवलोक ।

द्योत ( द्युत्+य ) ( पु० ) प्रकाश, दीप्ति ।

द्योतक ( द्युत्=चमकना ) ( पु० ) चमकनेवाला, प्रकाश करनेवाला ।

द्योतन ( द्युत्+यन् ) ( वि० ) प्रकाश करना, ज़ाहिर करना, प्रकट करना ।

द्योतिन ( वि० ) प्रकाशित, दर्शित ।

द्योरानी ( म० देवर ) ( स्त्री० ) देवर की स्त्री ।

द्यौस ( पु० ) दिन, दिवस ।

द्रद्धिमा ( पु० ) दृढ़ता ।

द्रम्भ ( पु० ) मुद्रा-विशेष ।

द्रव ( द्रु=जाना ) ( पु० ) रस, अर्क, वेग, ( वि० ) पिघला हुआ, बहता हुआ ।

द्रवना ( सं० द्रव ) ( कि० अ० ) पिघलना, कृपालु होना, कोमल-चित्त होना ।

द्रविड़ (पु०) दक्षिण का एक प्रदेश, दक्षिण देश का निवासी ।

द्रविण (पु०) धन, रुपया, पैसा ।

द्रवीभूत (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ, दयालु ।

द्रव्य (द्रु=जाना) (पु०) धन, दौलत, सारवस्तु, पदार्थ ।

न्याय में नौ प्रकार के द्रव्य हैं ( १ धरती, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश, ६ समय, ७ दिशा, ८ आत्मा, ९ मन ), औषध, दवाई ।

द्रष्टव्य ( दृश्+व्य, दृश्=देखना ) ( वि० ) देखने योग्य, दर्शनीय, काबिलदीद ।

द्रष्टा ( दृश्+तृ ) ( पु० ) दर्शक, देखनेवाला, नाज़िर ।

द्राक्षा ( द्राक्ष्=नाहना ) ( स्त्री० ) दाख, अंगूर ।

द्राघण ( द्राघ्+अन, द्राघ्=आयाम वा अम ) ( पु० ) अम, महनत ।

द्राघित ( द्राघ्+इत ) ( वि० ) अमित, थकित ।

द्राघिमा ( स्त्री० ) दीर्घता, भूमध्य-रेखा के समानान्तर पूर्व-पश्चिम की मानी हुई कल्पित रेखाएँ ।

द्राव ( द्रु=बहना, चलना ) ( पु० ) बहाव, स्त्राय, चाल, अर्क शंखद्राव ।

द्रावक { ( द्रु=बहना ) ( वि० ) बहनेवाला, पनला  
द्रावी { होनेवाला ।

द्राविड़ी ( वि० ) छोटी लाची, द्राविड़ जाति की स्त्री ।

द्रुत ( द्रु=जाना ) ( वि० ) जल्द, तुरंत, शीघ्र, झटपट ।

द्रुतगति ( स्त्री० ) शीघ्रगमन ।

द्रुतगामी ( वि० ) शीघ्रगामी ।

द्रुतपद ( पु० ) छंद-विशेष ।

द्रुपद ( पु० ) द्रौपदी के पिता, पांचाल-देश का एक राजा ।

द्रुम ( द्रु=डाली, अर्थात् जिकमें डालिया हो, द्रु=जाना ) ( पु० ) वृक्ष, पेड़, रुख, तरुवर, तरु ।

द्रुमप्राधि ( पु० ) लाक्षा, लाह, पेड़ का रोग ।

द्रुमश्रेष्ठ ( पु० ) ताड़-वृक्ष ।

द्रुमारि ( द्रुम+रि ) ( पु० ) गज, हस्ती, कुठार, कुल्हाड़ा, प्रचंड वायु, तेज़ हवा ।

द्रुमालय ( पु० ) जंगल, वन ।

द्रुमाश्रम ( पु० ) गिरगिट ( वि० ) वृक्ष पर रहनेवाला ।

द्रुमिला ( स्त्री० ) छंद-विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं, द्रुमिक ।

द्रुमेश्वर ( द्रुम+ईश्वर ) ( पु० ) चंद्रमा, ताड़-वृक्ष, अरवलय-वृक्ष, पीपल ।

द्रुहिण ( पु० ) ब्रह्मा ।

द्रेकाण ( पु० ) राशि का तृतीय अंश ।

द्रोण ( द्रुण्=टेंटा करना, वा द्रु=जाना ) ( पु० ) द्रोणाचार्य जिन्होंने पांडवों और कौरवों को धनुषविद्या सिखलाई थी, चार आड़क का परिमाण अथवा आठ सेर, लकड़ी का एक पात्र, पत्तों का दोना, नाव, लकड़ी का रथ, वृक्ष, नील का पौधा ।

द्रोणकाक ( पु० ) काला कौआ या डोम कौआ ।

द्रोणगिरि ( पु० ) एक पर्वत का नाम ।

द्रोणपुष्पी ( स्त्री० ) गुमा ।

द्रोणमुख ( पु० ) चार सौ गांवों में प्रधान गाँव ।

द्रोणाचल ( पु० ) द्रोणगिरि-पर्वत ।

द्रोणी ( स्त्री० ) डोंगी, दोनी, काठ का प्याला ।

द्रोह ( द्रुह्=वृथा चीनना ) ( पु० ) धैर, लाग, द्वेष, डाह, ईर्ष्या, विरोध ।

द्रोहिया ( सं० द्रोही ) ( वि० ) द्रोही, द्वेषी, वैरी ।

द्रोही ( द्रोह ) ( वि० ) धैरी, द्वेषी, विरोधी, द्रोहिया, डाही, दुष्ट ।

द्रोणायन ( पु० ) अश्वत्थामा ।

द्रौपदी ( द्रुपद ) ( स्त्री० ) पांचाल-देश के राजा द्रुपद की बेटी, पांडवों की स्त्री ।

दुंछ ( दुं=दो दो ) ( पु० ) जोड़ा, युगल, कलह, झगड़ा, बखेड़ा, भय, डर, व्याकरण में एक समास का नाम, रागद्वेष ।

दुंछचर ( पु० ) चकवा ।

दुंछचारी ( पु० ) चकवा ।

दुंछज ( पु० ) दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलह आदि से उत्पन्न ।

दुंछयुद्ध ( पु० ) कुश्ती, मल्लयुद्ध ।

द्वादश ( द्वि=दो, दश=दस ) ( वि० ) बारह, बारहवाँ ।

द्वादशलोचन ( पु० ) कार्तिकेय ।

द्वादशांगु ( पु० ) बृहस्पति ।

द्वादशी ( द्वादश ) ( स्त्री० ) बारहवीं तिथि ।

द्वापर ( द्वि=दो, पर=प्रांछ, अर्थात् दो के प्रांछ ) ( पु० ) तीसरा युग जो ८,६४,००० बरस का था ।

द्वार ( दृ=ढकना ) ( पु० ) दरवाज़ा, किबाड़, राह, मार्ग, उपाय, कारण ।

द्वारकटक ( पु० ) कपाट, किवाड़ ।

द्वारका ( द्वार=उपाय, अर्थात् मोल का उपाय जहा हो ) ( स्त्री० ) एक पुरो का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने समुद्र के तीर पर बसाया ।

द्वारपांडित ( पु० ) राज्य का प्रधान पंडित ।

द्वारपाल ( द्वार=दरवाजा, पाल=भरवा रखनेवाला ) ( पु० ) ज्योदीवान्, पौरिया ।

द्वारस्थ ( पु० ) द्वारपाल ।

द्वारा ( दृ=दृक्ता ) ( कि० वि० ) कारण से, हेतु से, सहायता से, मदद से ।

द्वारावती } ( द्वार=मोल का उपाय जहा हो ) ( स्त्री० )  
द्वारका } द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी ।

द्वारी ( स्त्री० ) छोटा द्वार ।

द्वि ( वि० ) दो ।

द्विगु ( पु० ) एक समान का नाम ।

द्विगुण ( द्वि=दो, गुण=गुना ) ( वि० ) दूना, दुगना, दोहरा ।

द्विज ( द्वि=दो बार, जन=पैदा होना ) ( वि० ) दो बार जन्मा हुआ, ( पु० ) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के मनुष्यों को द्विज कहते हैं; क्योंकि ये एक बार तो अपनी मा के गर्भ से पैदा होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवीतादि संस्कार से, जैसे स्मृति में लिखा है—“जन्मना जायते शूद्रः संस्कारेद्भिर्ग उच्यते” अर्थ जन्म से शूद्र पैदा होता है और संस्कार से द्विज कहलाता है, और भी “मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मर्त्यजन्मधनम्” अर्थ—एक बार मा के गर्भ से पैदा होना और दूसरी बार मौनजीवन्धन-संस्कार से, दांत, पंथी आदि अंडे से पैदा होनेवाले जीव ।

द्विजपति ( पु० ) ब्राह्मण, चंद्रमा, गरुड़, कर्पूर ।

द्विजप्रिया ( स्त्री० ) सोम ।

द्विजरज ( द्विज=ब्राह्मण, राजन्=गया ) ( पु० ) चंद्रमा, चांद, गरुड़, विष्णु, शिव ।

द्विजाति ( पु० ) द्विज शब्द को देखो ।

द्विजिह्व ( वि० ) खल, दुष्ट, चोर, चुगुलखोर ( पु० ) सप, राग-विशार ।

द्विजोत्तम ( पु० ) ब्राह्मण, गरुड़ ।

द्वितय ( वि० ) दो, दोहरा ।

द्वितीय ( द्वि=दो ) ( वि० ) दूसरा, दूजा ।

द्वित्व ( पु० ) दोहराना, दोहरा होने का भाव ।

द्वित्रा ( द्वि=दो, धा=प्रकार ) ( कि० वि० ) दो प्रकार से, दो तरह से, संदेह की स्थिति ।

द्विप ( द्वि=दो म, पा=पाना, हाथी पहले अपनी गुंड में पानी भरकर फिर अपने मुह में उतारता है ) ( पु० ) हाथी, गज, वृत्त नागकेशर ।

द्विपथ ( पु० ) दुराहा ।

द्विपद ( द्वि=दो, पद=चलना ) ( पु० ) मनुष्य, राजस, देवता, ( वि० ) दो पैर से चलनेवाले ।

द्विपदी ( स्त्री० ) दो पद का छंद ।

द्विपाद ( वि० ) दो पैरवाला ।

द्विपायिन् ( द्वि=दो, पा=पाना ) ( पु० ) हस्ती, गज ।

द्विभाव ( पु० ) दुराव, दो भाव ।

द्विभाषी ( पु० ) दुभाषिया ।

द्विमुख ( पु० ) दोनोंमुँहों साँप ।

द्विमुखी ( स्त्री० ) वह गाय जो बचा दे रही हो ।

द्विग्द ( पु० ) हाथी, दुर्योधन का एक भाई ।

द्विरस्त ( पु० ) सर्प ।

द्विरागमन ( पु० ) गौना ।

द्विरेफ ( पु० ) भीरा ।

द्विविद ( द्वि=दो, विद=जानना ) ( पु० ) एक वानर का नाम ।

द्वीप ( द्वि=दोनों ओर, आप=पाना, अर्थात् जिसके सब ओर पानी हो ) ( पु० ) धरती का वह बड़ा टुकड़ा जिसके चारों ओर पानी हो, हिंदुओं के शास्त्र में सात द्वीप लिखे हैं और हर एक द्वीप एक-एक समुद्र से घिरा है, सातों द्वीपों के नाम—१ जंबूद्वीप, २ कुश, ३ प्रभ, ४ शालमली, ५ कौंच, ६ शाक, ७ पुण्डर ।

द्वीपवता ( स्त्री० ) पृथ्वी, एक नदी का नाम ।

द्वीपशत्रु ( पु० ) सतावर ।

द्वीपिका ( स्त्री० ) सतावर ।

द्वीपिन् ( पु० ) व्याघ्रभेद, चीता, गुलबघा ।

द्वीपी ( पु० ) व्याघ्र, चीता ।

द्वेष ( द्विप=वैर करना ) ( पु० ) द्वेह, वैर, ईर्ष्या, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी ।

द्वेषक ( द्विप+यक ) ( पु० ) वैरी, द्वेही, शत्रु, दुश्मन ।

द्वेषी ( द्वेष ) ( पु० ) वैरी, विरोधी, शत्रु, द्वेही ।

द्वेष्टा (पुं०) बैरी, शत्रु, दुश्मन ।

द्वै (मं० द्वौ) (वि०) दो ।

द्वैत (वि०) युग्म, दो ।

द्वैतवाद (पुं०) वह सिद्धांत, जिसमें आत्मा और जीव को दो माना जाता है ।

द्वैधीभाव (पुं०) तोड़-फोड़, लड़ाई, झगड़ा, आपस की नाइत्तिकारी ।

द्वैपायन (पुं०) व्यासजी ।

द्वैमातुर (पुं०) गणेश, जरासंध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो ।

## ध

ध (धा+गन्धना, वा धे+पाना) (पुं०) धर्म, कुंवर, ब्रह्मा, धन ।

धैसना (क्रि० अ०) पैठ जाना, गड़ जाना, घुस जाना ।

धकधकाना (क्रि० अ०) कारना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, जोर से फड़कना ।

धकधकी (स्त्री०) कैंपकैंपी, धड़क, थरथरी, धड़-धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी ।

धकेल देना (मुहा०) दकेलना, धका देना, भोंका देना ।

धकेलना (क्रि० म०) दकेलना, रेलना, धका देना, टेलना, हूलना, पेलना ।

धकमधका (मुहा०) टेलाटेजी, रेलपेल, टेलमटेल, कशमकश ।

धका (पुं०) दकेल, टेल, भोंक, रोला, रेल, टकर, हूल ।

धका देना (मुहा०) दकेलना, टेलना, रेलना, पेलना, भोंकना, हूलना ।

धकामुकी (स्त्री०) सारंगोट, हाथाबाही ।

धगड़ (पुं०) उपपत्ति, जार ।

धगड़वाज़ (वि०) कुलटा, ध्वनिचारिणी, छिनाल ।

धगरिन (स्त्री०) नाल काटनेवाली ।

धक्कचाना (क्रि० म०) दहलाना, डराना ।

धक्कना (क्रि० अ०) दलदल में फँसना ।

धज (मं० ध्वज, ध्वज=ज्ञाना) (स्त्री०) रूप, डील, आकार, चालढाल, रविश, आन, दशा, अवस्था, सजधज, वज़ह, टाटबाट, सजावट ।

धजा (मं० ध्वजा) (स्त्री०) पनाका, झंडा ।

धजीला (वि०) मुडील, सजीला, स्वरूपवान्, सुंदर ।

धज्जी (मं० ध्वज) (स्त्री०) कपड़े का अथवा कागज़ का टुकड़ा, लीर, कतरन, काटन, टुकड़ा, पुराना फटा कपड़ा, चिंदी ।

धजियाँ उड़ाना (मुहा०) बदनाम करना, बानों से हराना, हँसी उड़ाना ।

धजियाँ करना (मुहा०) टुकड़े-टुकड़े करना ।

धड़ी (स्त्री०) धर्जा, चौर, लँगोटी, कौपीन, वह वस्त्र जो गर्भाधान के बाद स्त्रियों को पहनने की दिया जाता है ।

धड़ (मं० धु+गन्धना) (स्त्री०) बिना सिर की देह, धर (मंड, शरीर, काया) ।

धड़क (धड़कना) (स्त्री०) धड़धड़ाहट, धुकधुकी, फड़क, थरथराहट, डर, भय ।

धड़कना (क्रि० अ०) काँपना, धुकधुकाना, धकधकाना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना, मारना ।

धड़का (पुं०) डर, संदेह, दुविधा, कैंपकैंपी, धड़क, धड़धड़ाहट, कड़क, गर्ज ।

धड़काना (क्रि० म०) डराना, भय दिखाना, काँपाना, दहलाना ।

धड़का (पुं०) टनक, टोकने की आवाज़, डर, दहलाना, भीड़ ।

धड़ंग (वि०) नग्न, नंगा ।

धड़धड़ाना (क्रि० अ०) धड़कना, काँपना ।

धड़ा (पुं०) जप्था, समूह, तरफ़, ओर, पक्ष, तौल, जोख, बाँट ।

धड़ाका (पुं०) कड़क, धमक, शब्द, आवाज़ ।

धड़ाधड़ (क्रि० वि०) लगानार, बराबर ।

धड़ी (स्त्री०) पाँच सेर की तौल ।

धत (स्त्री०) हाथी चलाने का शब्द, दुतकारना, हिकारत करना ।

धता (वि०) भागा हुआ, भगाया हुआ ।

धर्तीगड़ (वि०) बेडौल मनुष्य, मोटा-तगाड़ा आदमी, मंड-मुसंड ।

धनूरा (मं० धनूर, धा+गन्धना धानुश्रों का) (पुं०) एक प्रकार का पौधा, कनक ।

धनूरिया (धनूरा) (वि०) छली, बहुरूपिया ।

धधकना (मं० दहन) (क्रि० अ०) भभकना, बरना ।

धधच्छुर { (मं० दधाक्षर=जलानेवाले अक्षर) (पुं०) दधच्छुर } कविता में वे अक्षर जिनकी कवि अशुभ

गिनते हैं ( जैसे ह, ग, न कवित्त के शुरू में; र, ज, स बीच में और क, ट, झ अलग कवित्त के अंत में अशुभ गिने जाते हैं ) ।

धन ( धन=पैदा होता ) ( पू० ) दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी, संपत्ति, संपदा, गणित में जोड़ का चिह्न + ।

धनक ( पू० ) जड़ाव, कारचोधी ।

धनकटी ( स्त्री० ) एक प्रकार का वस्त्र, धन काटने का समय ।

धनकृति ( पू० ) कुंवर ।

धनखर ( पू० ) धन का खेत ।

धनंजय ( धनम्=दा त को, जि=जीतना ) ( पू० ) अजुन का नाम, आग, एक वृत्त का नाम ।

धननृणा ( धन+नृणा ) ( स्त्री० ) धन का लालच, धन की लालसा, लोभ ।

धनन्तर ( वि० ) धनी, धनवान्, अधिकतल, मेठ, कोठीवाल ।

धनद ( धन=दौलत, दे=पालना, दा=देना ) ( पू० ) कुंवर, धनपति, अग्नि, वायु, सीता, ( वि० ) दाता, उदार, धन देनेवाला ।

धनदंड ( पू० ) जरमाना, काहन ।

धनधाम ( पू० ) घरदार और रुपया-पैसा ।

धनपति ( धन+पति ) ( पू० ) कुंवर, धन का देवता ।

धनपाल ( पू० ) कुंवर, ( वि० ) धन की रक्षा करनेवाला ।

धनमद ( पू० ) धन का गव ।

धनवंत } ( धन=दौलत, वं=वाना ) ( वि० ) धनी,  
धनवान् } दौलतमंद, मालदार, धनिक, लक्ष्मीवान् धनाढ्य ।

धनशाली ( वि० ) धनी ।

धनहर ( पू० ) चोर, लुटेरा, संधूहर विशेष ।

धनहीन ( धन+हीन ) ( वि० ) मुकलिस, निर्धन, दरिद्र, कंगाल, गरीब ।

धनाढ्य ( धन=प, आ=अधिक ) ( वि० ) धनवान्, धनी, मालदार ।

धनाधार ( पू० ) धनागार, भंडार, खजाना रखने का मकान ।

धनाधिप ( धन+अधिप ) ( पू० ) कुंवर ।

धनाध्यक्ष ( धन+अध्यक्ष ) ( पू० ) कुंवर, खजानचो, भंडारी ।

धनाना ( कि० अ० ) गान का बरदान ।

धनांध ( धन+अंध ) ( वि० ) धन से अंधा, धन के मद में घमंडी, धन बित ।

धनार्थी ( धन+अर्थी ) ( वि० ) लोभी, लालची, कृपण ।

धनाशा ( धन+आशा ) ( स्त्री० ) धनेच्छा, धन की चाह ।

धनाश्री ( सं० धनेश्वरी ) ( स्त्री० ) एक रागिणी का नाम, एक छंद का नाम ।

धनिक ( धन ) ( वि० ) धनवान्, धनी, ( पू० ) महाजन उधार देनेवाला ।

धनिया ( पू० ) एक प्रकार का मसाला, वधू, युवती ।

धनिष्ठा ( धन=पैदा होता ) ( स्त्री० ) तेईसवें नक्षत्र का नाम ।

धनी ( धन ) ( वि० ) धनवान्, दौलतमंद, मालदार, लक्ष्मीवान्, ( पू० ) मालिक, स्वामी, अधिकारी, पति ।

धनीधोरी ( पदा० ) धन और मर्यादावाला, अधिकारी, मालिक ।

धनीमानी ( पदा० ) धनी और प्रतिष्ठित ।

धनीयक ( पू० ) धनिया ।

धनु } ( सं० धनुष् ) ( पू० ) कमान, चार, धनुष ।  
धनक }

धनुआ ( पू० ) कमान, धनुष, तान की डोरी की लंबी कमान जिससे धुनिष्ट रुई धुनते हैं ।

धनुकधारी ( सं० धनुर्धारी ) ( पू० ) तीरंदाज, कमटैन, धनुषधारी ।

धनुकवाई ( पू० ) लावने की तरह एक वायुरोग जिसमें जबड़े बैठ जाते हैं ।

धनुटंकार ( सं० धनुष्टंकार ) ( पू० ) कमान के चिल्ले का शब्द, रोदे की आवाज ।

धनुर्गुण ( पू० ) धनुष की डोरी, चिल्ला ।

धनुर्धर ( धनुष्=कमान, धु=रखना ) ( पू० ) कमान चढ़ानेवाला, धनुर्धारी, तीरंदाज, कमटैन ।

धनुर्धिया ( धनुष्+धिया ) ( स्त्री० ) तीर चलाने की विद्या, तीरंदाजी बाण चलाना ।

धनुस् } ( धनु=शब्द करना ) ( पू० ) धनुष, कमान,  
धनुष् } चाप, उद्योतिष में नवी राशि ।

धनेश } ( सं० धन+ईश वा ईश्वर ) ( पू० ) कुंवर,  
धनेश्वर } धनाधिप, धनराशि का स्वामी ।

धनेशा ( सं० धनेश ) ( पू० ) कुंवर ।

धंधक ( पू० ) काम करनेवाला, उद्यमी ।

धंधा ( पु० ) काम-काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार ।

धंधारी ( धंधा + धारी=शत्रु ) ( वि० ) शिथिल, उदासी, डीला, पेशा न करनेवाला, आलसी ।

धन्नासेठ } ( सं० धनश्रेष्ठ ) ( वि० ) बहुत धनवान्,  
धन्नासेठ } कृतार्थ, धन का धमंड ।

धन्नी ( स्त्री० ) गाय की एक जाति, एक प्रकार का घोड़ा, छत की लकड़ी ।

धन्य ( धन ) ( वि० ) सराहने योग्य, भाग्यवान्, श्रीमान्, ( धन्य० ) शास्त्राग, वाहवाह, धन, प्रशंसा को उतलानेवाला शब्द ।

धन्य मानना } ( मुहा० ) धन्यवाद करना, उपकार  
धन मानना } मानना, उपकृत होता ।

धन्यवाद ( धन्य वद=कहना ) ( पु० ) सराह स्तुति, आशीर्ष, शुक्रगुजारी, अहसानमंदी ।

धन्या ( स्त्री० ) वनदेवी, उपमाता, भाग्यवती स्त्री, धनिया, छोटा आँवला ।

धन्याक ( पु० ) धनिया ।

धन्वंक ( पु० ) धमिन का वृत्त ।

धन्वंतरि ( धन्वंत=वैद्यकशास्त्र वा शिल्पशास्त्र, री=जाना अर्थात् वैद्यकशास्त्र के पार जानेवाला ) ( पु० ) समुद्र-मंथन के समय उसमें से प्रकट देवताओं का वैश जो हुआ, एक पंडित का नाम जो विक्रमादित्य की सभा में था ।

धन्वा ( पु० ) चाप, धनुष्, निर्जल देश, आकाश ।

धन्वी ( धन्वा=धनुष्, धन्व=दीड़ना ) ( पु० ) धनुर्धर, तीरंदाज, कम्पैत, धनुर्धारी, अर्जुन, शिव, विष्णु ।

धप ( पु० ) धौल, तमाचा, चपत, किसी कोमल वस्तु के गिरने का शब्द ।

धपना ( क्रि० अ० ) लपकना, झपटना, दीड़ना ।

धपपा ( पु० ) धारा, थपड़, तमाचा, चपत ।

धपपाड़ ( स्त्री० ) दीड़, धावन, सरपट ।

धपवा ( पु० ) दाग, छराव चिह्न या निशान ।

धमक ( स्त्री० ) पाँव की आहट, ताड़न, दहशन, दहल ।

धमका ( पु० ) भारी चीज के गिरने का शब्द, किड़की, कड़ी धूप या गरमी ।

धमकाना ( क्रि० म० ) किड़कना, डाँटना, डराना, धुक्कना ।

धमकाहट } ( स्त्री० ) किड़की, धुक्की, डाट, भबकी ।  
धमकी }

धमकी ( स्त्री० ) भय, डाँट-डपट, धुक्की ।

धमधम ( स्त्री० ) धम-धम शब्द ।

धमधमाना ( क्रि० अ० ) धम-धम करके डोल वजाना ।

धमधुधर ( वि० ) तोंदिल, मोटा, स्थूलकाय ।

धमनो ( धन+धन्+ई, धम्=चलना वा शब्द करना ) ( स्त्री० ) नाकी, नाटिका, नरज, रग ।

धमाका ( पु० ) एक तरह की तोप जो हाथी पर ले जाई जाती है, आघात, धका, भारी चीज के गिरने का शब्द ।

धमानाँकड़ी ( स्त्री० ) उछल-कूद, गुल-गपाड़ा, मारपीट ।

धमार ( स्त्री० ) ताल, एक तरह का गीत जो होली में गाया जाता है ।

धमारिया ( पु० ) उछल-कूद करनेवाला नट, कलाबाज, आग में कूदनेवाला सधु ।

धभासा ( पु० ) जवासा, हिंगुवा, दुलाह ।

धमिका ( स्त्री० ) लोहारिन ।

धमूका ( पु० ) प्रहार, धमाका, आघात, धूसा, मुका ।

धम्मन ( पु० ) एक प्रकार की घाप ।

धम्मिला ( पु० ) जूबा ।

धम्हा ( पु० ) धातु गलाने की मटी ।

धरण ( धृ=ग्लना ) ( स्त्री० ) कड़ी, बरँग, नाभि, अथवा नाभि की कोई नम ।

धरण डिगना } ( मुहा० ) नाभि टलना, पेट की रग  
धरण उखड़ना } बिगड़ना ।

धरणा ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती ।

धरणि } ( धृ=ग्लना, वा पकड़ना ) ( स्त्री० ) धरती,  
धरणी } पृथ्वी, जमीन ।

धरणिधर } ( धरणि, वा धरणी=धरती, धर=ग्लनेवाला,  
धरणीधर } धृ=ग्लना ) ( पु० ) शेषजी, अनंत, विष्णु का नाम, पड़ड़, कछुआ ।

धरणीसुता ( धरणी=धरती, सुता=बेटी ) ( स्त्री० ) सीता, जानकी ।

धरता (पु०) देनदार, कर्जदार, ऋणी ।  
 धरती (मे० धरित्री) (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, भूमि ।  
 धरन (स्त्री०) कड़ी, धरती, टेक, हठ, गर्भाशय, पेशी ।  
 धरना (मे० धरण, धृ=रखना, पकड़ना) (क्रि० म०)  
 रखना, रख देना, रीपना, पकड़ना, पकड़ लेना,  
 गहना, अड़ना, आग्रह करना ।  
 धरना देना } (मुहा०) जब कोई मनुष्य किसी से रूप  
 धरना बैठना } मांगता हो और वह न दे तब रूप  
 मांगनेवाला उसके दरवाजे पर आ बैठता है और जब  
 तक उसके रूप का कुछ निपटारा नहीं होता, तब  
 तक न आप कुछ खाता है और न उसको खाने देता  
 है । इसको धरना देना या धरना बैठना कहते हैं ।  
 धरनैत (वि०) धरना देनेवाला, दुराग्रही, हठी ।  
 धरवाना (क्रि० म०) पकड़ना, धमकाना ।  
 धरणना (मे० धरण, धृ=रखना, पकड़ना या पनादर करना)  
 (क्रि० म०) दवाना, कोप करना ।  
 धरहरा (पु०) मीनार, धौहरा ।  
 धरहरिया (पु०) बिचवनिया, रतक ।  
 धरा (धृ=रखना) (स्त्री०) धरी, पृथ्वी, धरणी,  
 जमीन, गर्भाशय, भेद, नाड़ी, चार मेर का परि-  
 माण, बाँट ।  
 धराऊ (वि०) रखवा हुआ ।  
 धरातल (धरा + तल) (स्त्री०) पृथ्वी का तल, भूतल,  
 सतह जमीन ।  
 धराधर (धरा=धरती, धर=धारण करनेवाला, धृ=रखना)  
 (पु०) वाराहरूप विष्णु, पहाड़, शेषनाग ।  
 धराधीश (पु०) राजा ।  
 धरित्री (धृ=रखना) (स्त्री०) धरती, पृथ्वी, जमीन ।  
 धरेला (पु०) जार, किसी स्त्री का वह पति जिसकी  
 विना व्याह के ही उसने प्रहण कर लिया हो ।  
 धरोहर (धरना) (स्त्री०) गिरवा, भाती, अमानत,  
 बंधक ।  
 धर्ता (पु०) ऋणी, धारणिक, कर्जदार ।  
 धर्म (धृ=रखना) (पु०) पुण्य, पवित्र, काम, न्याय,  
 नेकी, पंथ, मन, मजहब, जाति-व्यवहार, कानून,  
 व्यवस्था, कर्तव्य-कर्म, करने योग्य काम, धर्मराज ।  
 धर्म कमाना (मुहा०) धर्म करके उसका फल संचित  
 करना ।

धर्म खाना (मुहा०) धर्म की शपथ खाना ।  
 धर्म बिगाड़ना (मुहा०) धर्म भ्रष्ट करना, धर्म के  
 विरुद्ध आचरण करना, स्त्री का मनोरंजन करना ।  
 धर्म में आना (मुहा०) अंतःकरण से उचित जान पड़ना ।  
 धर्म रखना (मुहा०) धर्म के विरुद्ध आचरण करने से  
 बचना या बचाना ।  
 धर्म लगती कहना (मुहा०) धर्म का ध्यान रखकर  
 कहना, सत्य कहना, उचित बात कहना ।  
 धर्म से कहना (मुहा०) सत्य-सत्य बात कहना, उचित  
 बात कहना ।  
 धर्मक्षेत्र (धर्म+क्षेत्र) (पु०) पवित्र जगह, कुरुक्षेत्र ।  
 धर्मशुद्धी (स्त्री०) ऐसे स्थान पर लगे हुए बड़ी बड़ी  
 जिसे सब कोई देख सकें ।  
 धर्मचक्र (पु०) अस्त्र-विशेष, बुद्धदेव, बुद्ध की  
 धार्मिक शिक्षा ।  
 धर्मज्ञ (धर्म+ज्ञ=ज्ञाननेवाला, ज्ञा=ज्ञानना) (पु०)  
 धर्मात्मा, धर्मज्ञानी ।  
 धर्मत (वि०) सत्य-सत्य, धर्म से ।  
 धर्मधुरंधर (धर्म=पुण्य, धुरंधर=बोझा उठानेवाला)  
 (वि०) धर्म के काम में प्रधान, धर्मात्मा ।  
 धर्मध्वजी (धर्म=पुण्य, ध्वजा=ध्वजावाला) (वि०)  
 पाखंडी, कपटरूप जो जीविका के लिये जटा आदि  
 बटा लेता है ।  
 धर्मनिष्ठ (वि०) धार्मिक, धर्मपरायण ।  
 धर्मपत्नी (धर्म+पत्नी) (स्त्री०) पहली स्त्री जो धरती  
 जाति की हो और धर्म की रीति से दयाही न हो ।  
 धर्मपाल (पु०) धर्म का पालन करनेवाला, दंड ।  
 धर्मपीठ (पु०) काशी, धर्म-कर्म का मुख्य स्थान ।  
 धर्मपुत्र (धर्म=धर्मराज, पुत्र=पेटा) (पु०) युधिष्ठिर,  
 गोद लिया हुआ पुत्र ।  
 धर्मबुद्धि (स्त्री०) धर्माधर्म का विचार ।  
 धर्मभिच्छु (पु०) धर्म के लिये भिक्षावृत्ति करनेवाला  
 भिक्षु ।  
 धर्मभीरु (वि०) जिसे धर्म का भय हो ।  
 धर्ममूर्ति (धर्म+मूर्ति) (पु०) धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा,  
 धर्मावतार ।  
 धर्मयुद्ध (पु०) वह युद्ध जिसमें किसी नियम आदि  
 का उल्लंघन न हो ।



धर्मराज ( धर्म=न्याय, राज=राजा, राज=शोभना, अर्थात् जो धर्म से सोढ़ता है अथवा धर्म का राजा ) ( पु० )  
यमराज, युधिष्ठिर का नाम, न्यायी राजा ।

धर्मवीर ( पु० ) धर्म-कर्म में साहसी ।

धर्मशाला ( धर्म+शाला ) ( स्त्री० ) वह मकान जहाँ गरीबों को खैरात बाँटी जाती है, विचारस्थान, न्याय करने की जगह, निःशुल्क दफ्तर का स्थान ।

धर्मशास्त्र ( धर्म+शास्त्र ) ( पु० ) व्यवस्थाशास्त्र, कानून की किताब, जैसे “मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्न, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शाश्वतप और वशिष्ठ” ये धर्मशास्त्र के प्रवर्तक हैं ।

धर्मशील ( धर्म+शील=स्वभाव ) ( वि० ) साधु, पुण्यवान्, धर्मात्मा, नेक ।

धर्मशीलता ( पु० ) साधुता, नेकी, धर्म की प्रकृति ।

धर्मसेवा ( स्त्री० ) न्यायालय ।

धर्मसूत्र ( पु० ) जैमिनि-प्रणीत एक ग्रंथ ।

धर्मसेतु ( पु० ) धर्म का पालन करनेवाला ।

धर्मात्मा ( धर्म+आत्मा ) ( वि० ) पवित्र मनुष्य, साधु, नेक, पुण्यात्मा ।

धर्माधिकरण ( पु० ) न्यायालय, विचारालय, कचहरी ।

धर्माध्यक्ष ( धर्म=न्याय, अध्यक्ष=स्वामी ) ( पु० ) न्यायी, न्याय करनेवाला, मजिस्ट्रेट, जज ।

धर्मवितार ( धर्म+वितार ) ( पु० ) धर्म का अवतार, धर्मस्वरूप, धर्ममूर्ति ।

धर्मिष्ठ { ( धर्म ) ( वि० ) पुण्यवान्, न्यायी, साधु,  
धर्मी } धर्मात्मा, नेक ।

धर्मीपुत्र ( पु० ) नट, नाटक का अभिनेता ।

धर्मोपाध्याय ( पु० ) पुरोहित ।

धर्म ( धर्म=क्रोध करना ) ( वि० ) प्रगल्भ, धृष्ट ।

धर्मक ( धर्म+यक ) ( वि० ) साहसी, दिलीर, धैर्यवान् ।

धर्मण ( पु० ) दिलीरी करना, साहस करना ।

धव ( पु० ) पति, स्वामी, वृक्ष-विशेष ।

धवर ( पु० ) पत्नी-विशेष जिसका कंठ लाल और सारा शरीर सफेद होता है ।

धवल ( धाव=शुद्ध करना, वा धव=कैपाना और ला=लेना ) ( वि० ) धौला, श्वेत, सफेद, सुंदर, ( पु० ) शुक्ल वर्ण, धौलारंग, एक वृक्ष का नाम ।

धवलपत्त ( पु० ) शुक्लपत्त, हंस ।

धवला ( स्त्री० ) सफेद गाय, ( वि० ) सफेद ।

धवलित ( वि० ) स्वच्छ किया हुआ ।

धवली ( स्त्री० ) सफेद गाय, सफेद भिच, रोग-विशेष ।

धवा ( पु० ) कहार ।

धस ( पु० ) गीता, डुबकी ।

धसकना ( क्रि० अ० ) गड़ना, धस जाना, गिरना, पड़ना, बैठ जाना ।

धसना ( क्रि० अ० ) खुबना, चुभना, छिदना, गड़ना, काँचड़ में पाँव डूब जाना, धस जाना ।

धसान { ( धमा ) ( पु० ) दलदल, पाँका, फँसाव,  
धसाव } उतार, ढाल ।

धाँक ( पु० ) भालों से मिलती-जुलती एक जंगली जाति ।

धाँगर ( पु० ) किसान, कुली, कुआँ, तालाब आदि खोदने का काम करनेवाली जाति, एक अनार्य जाति ।

धाँधना ( क्रि० अ० ) भखना, भँकासना, अफरना, बहुत अधिक खा लेना ।

धाँधल { ( स्त्री० ) नटखटी, अगढ़ा, बेईमानी, लुटस,  
धाँधली } लूट, उधम, उपद्रव ।

धाँधा ( स्त्री० ) इलायची ।

धाँसना ( क्रि० अ० ) खँफना, खोखना, पगुओं का खँसना ।

धाँसी ( स्त्री० ) खँसी, खोखी, घोड़े की खँसी ।

धाई { ( म० धाँवा ) ( स्त्री० ) लड़के को दूध पिलाने-  
धाथ } वाली, दाई ।

धाउ ( पु० ) नाच का एक भेद ।

धाऊ ( पु० ) आवश्यक कार्य के लिये दीड़कर जानेवाला आदमी ।

धाक ( स्त्री० ) डर, भय, धमकी, आतंक, राठ, धूम-धाम, नाम, यश, कीर्ति ।

धाक धँधना ( मुहा० ) आतंक जमाना ।

धाक धाँधना ( मुहा० ) राव जमाना ।

धाखा ( पु० ) पञ्चाश का पेड़ ।

धागा ( पु० ) डोरा, नागा, सूत ।

धागा भरना (पृ०) रक्त् करना ।

धागे-धागे करना (पृ०) टुकड़े-टुकड़े करना ।

धाड़ (स्त्री०) डाकुओं का आक्रमण ।

धाड़ पड़ना (पृ०) बहुत जल्दी होना ।

धाड़ी (पु०) भारी लुटेरा या डाकू ।

धात (स० धातु) (स्त्री०) 'धातु' शब्द को देखो ।

धाता (धातुस्थाना, पातना) (पु०) ब्रह्मा, विष्णु, पालने-वाला, वायु-विशेष ।

धातु (धातुस्थाना) (स्त्री०) मनुष्य के शरीर का सार अंश, जैसे (वात-पित्त-मूत्र) बीज, वीर्य, योना, रूपा, तांबा, आदि स्थान से निकली हुई चीजें, व्याकरण में शब्दों का मूल अर्थात् ऐसा शब्द जिससे क्रिया आदि शब्द बनें ।

धातुक्षय (पु०) खाँसी का रोग, प्रमेह आदि रोग जिनमें शरीर से बहुत वीर्य निकल जाता है ।

धातुगर्भ (पु०) देहगोला, बीज का सातु-महाधागाओं के दाँत या हड्डी रमने का कैगुंदा र दिव्या ।

धातुघ्न (पु०) शरीर का धातु नष्ट करनेवाला पदार्थ ।

धातुचैतन्य (पु०) धातु को उत्पन्न या चैतन्य करने-वाला, वीर्य-वर्द्धक ।

धातुद्रावक (पु०) सोहागा, जिसके डालने से योना आदि गल जाता है ।

धातुपुष्पका } (स्त्री०) धव का फूल ।  
धातुपुष्पा }

धातुप्रधान (पु०) वीर्य ।

धातुभृत (पु०) पर्यंत, पहाड़ ।

धातुमारिणी (स्त्री०) सोहागा ।

धातुराग (पु०) धातुओं से निकला हुआ रंग ।

धातुराजक (पु०) शुक या वीर्य ।

धातुरेचक (पु०) वीर्य को बहानेवाला ।

धातुवहलभ (पु०) सोहागा ।

धातुवाद् (पु०) कला-विशेष, कामियागिरी, रसायन बनाने का काम ।

धातुविलेपक (धातु=रसा, पारा, विलेप=लेप करनेवाला)  
(पु०) कलईसाज, कलईगर ।

धातुवेरी (पु०) गंधक ।

धातुशेखर (पु०) कसीस, सीसा ।

धातुसंज्ञ (पु०) सीसा ।

धातुहन (पु०) गंधक ।

धातुपल (पु०) खरी, खरिया मिट्टी, दुधिया ।

धातुपुत्र (पु०) ब्रह्मा के पुत्र, सनत्कुमार ।

धात्र (पु०) बरतन, पात्र ।

धात्रिका (स्त्री०) आँवला ।

धात्री (धा=पालना) (स्त्री०) धाय, धाई, मा, माना, आँवला ।

धान (सं=धान्य) (पु०) विना कूटा हुआ चावल ।

धानक (पु०) धनिया, एक रस्ती का चौथाई भाग, धनुषीरी, धुनिया ।

धाना } (सं० धावन, धाव=जाना) (कि अ०)  
धावना } दीवना, जल्दी से चलना, परिश्रम करना,  
(सं० ध्यान) पूजना, अर्चना, आराधना करना ।

धानाचूर्ण (पु०) मत्तू ।

धानी (धान) (स्त्री०) एक प्रकार का विना कूटा हुआ चावल, हलका हरा रंग ।

धानुक (पु०) धनुर्दूर, धनुषारी, एक नीच जाति के लोग जो प्रायः विवाह आदि में तुरही आदि यज्जाने हैं ।

धानुष्क (पु०) धनुष चलाकर अपनी जीविका का निर्वाह करनेवाला ।

धान्य (धा=पोषना, पातना, जिये शरीर का पोषण होना है) (पु०) सब प्रकार का अनाज, पर विशेष करके विना कूटा हुआ चावल, धान, तौल-विशेष ।

धान्यतुषोद् (पु०) काँजी ।

धान्यपति (पु०) चावल, जी ।

धान्यमूल } (पु०) काँजी ।  
धान्ययोनि }

धान्यराज (पु०) जी ।

धान्यवीर (पु०) उरद ।

धान्यारि (पु०) चूहा ।

धावरी (स्त्री०) कबूतरों का दूँवा ।

धाभाई (सं० धात्रीधाता) (पु०) दूधभाई, कोही ।

धाम (धा=धारण करना, रखना) (पु०) घर, स्थान, गेह, मकान, जगह ।

धामा (पु०) भोजन का निमंत्रण ।

धाय मारना } (पृ०) पुकार के रोना, हाथ मार  
धाय मार रोना } के रोना ।

धार (सं० धारा, धृ=पकड़ना वा गिरना) (स्त्री०) लकीर,

बहाव, सोता, प्रवाह, नोक, तीखी अनी, तीक्ष्णता, बाढ़, चोखाई, किनारा, सिरा, छोर, सेना, क्रीज, डाका, आक्रमण, ओर, तरफ, दिशा, जोर से पानी बरसना ।

धार चढ़ाना ( मुहा० ) किसी देवी-देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना ।

धार टूटना ( मुहा० ) लगातार गिरना या बहना बंद हो जाना ।

धार देना ( मुहा० ) दूध देना, कोई उपयोगी कार्य करना ।

धार निकालना ( मुहा० ) दूध दुहना ।

धार पर मारना ( मुहा० ) किसी चीज को तुच्छ या अप्राप्त्य समझना ।

धार बँधना ( मुहा० ) किसी तरल पदार्थ का धार बनकर गिरना ।

धार यँधना ( मुहा० ) किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार गिराना कि धार बँध जाय, मंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना ।

धार मारना ( मुहा० ) जोर से पेशाब करना ।

धारक ( धृ+रन् ) ( वि० ) ऋणी, मकरुज, उधरहा ।

धारका ( स्त्री० ) योनि, स्त्री की मूर्ध्निद्रिय ।

धारण ( धृ+रण ) ( पु० ) पकड़ना, रखना, संभालना, सहायना, पहनना, सेवन करना, खाना, अंगीकार करना, याद, स्मृति, योग का अंग-विशेष ।

धारणवान् ( पु० ) मेधाशाली, प्रबंध धारणा शक्तिवाला ।

धारणी ( स्त्री० ) नाड़ी, श्रेणी, पंक्ति, पृथ्वी, सीधी लकीर ।

धारणीया ( वि० ) धारण करने योग्य ।

धारधूरा ( पु० ) नदी के हट जाने से उसके रेत से बनी हुई जमीन, गंगबरा ।

धारन ( पु० ) हाथी के खाने के लिये तैयार की हुई दवा, “धारण” को देखो ।

धारना ( सं० धारण ) ( कि० म० ) स्मरण, चेत, याद-दास्त रखना, पढ़ना, पहनना ।

धारा ( धृ+गिरना ) ( स्त्री० ) बहाव, अधिक वर्षा, प्रवाह, सोता, चरमा, घाड़े की चाल, उल्लसि, रथ का पहिया, यश, कीर्ति, नगर-विशेष, पंक्ति, चोटी ।

धाराट ( पु० ) चानक, मेघ, बादल, घोड़ा, मस्त हाथी ।

धाराधर ( पु० ) मेघ, बादल, खज्ज, तलवार ।

धाराल ( वि० ) तेज धारवाला, धारदार ।

धाराली ( स्त्री० ) तलवार, खज्ज, कटारी ।

धारावनि ( पु० ) वायु, हवा ।

धारावर ( पु० ) मेघ, बादल

धारावाहिक ( धारा + वाहिक, वह=चलना ) ( पु० ) परंपरागतिक, कड़ीम राह पर चलनेवाला ।

धाराविप ( पु० ) खज्ज, तलवार ।

धारासंपात ( पु० ) ज़ोरों की बारिश ।

धारासार ( पु० ) भारी वर्षा ।

धारि ( स्त्री० ) सेना, क्रीज, समूह, झुंड ।

धारिणी ( स्त्री० ) धरणी, पृथ्वी, भूमि, जमीन, सेमर का पेड़, चौदह देताओं का स्त्रियौ ।

धारी ( सं० धार ) ( स्त्री० ) लकीर, रेखा, एक पीढ़े का नाम, ( वि० ) रखनेवाला, धरनेवाला, कज़दार ।

धारजल ( पु० ) खज्ज, तलवार ।

धार्मिक ( धर्म ) ( वि० ) धर्मात्मा, धर्मिष्ठ, पुण्यवान्, साधु, पुण्यात्मा ।

धार्थ ( धृ+धन ) ( वि० ) धरने योग्य, लेने लायक, ( पु० ) कपड़ा, वस्त्र ।

धावक ( धाव+दौड़ना ) ( पु० ) दूत, दौड़ाहा, चखने-वाला, क्रासिद्, हरकारा, घोड़ी, रजक ।

धावड़ा ( पु० ) धव का पेड़ ।

धावन ( धाव+दौड़ना ) ( पु० ) जाना, दौड़ना, गमन, दौड़ाहा, दूत, हरकारा ।

धावना ( कि० म० ) दौड़ना, भागना, वेग से चलना ।

धावमान ( वि० ) दौड़ता हुआ, भागता हुआ ।

धावरी ( स्त्री० ) मक्रेद गाय, धौरी ।

धावा ( सं० धावन ) ( पु० ) दौड़, चढ़ाई, हल्ला, हमला, आक्रमण ।

धावा बोलना ( मुहा० ) अकसर का अपनी क्रीज को आक्रमण करने की आज्ञा देना ।

धावा मारना ( मुहा० ) चढ़ाई करना, छापा मारना, हमला करना, जल्दी-जल्दी चलना ।

धाव ( स्त्री० ) हाथ, कूक, बिघार ।

धाही ( स्त्री० ) दाई, दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय ।

धिआ ( स्त्री० ) कन्या, बेटा, छोटी लड़की ।

धिक् ( अन्त्य० ) फिट, छी छी, निंदासूचक शब्द ।

धिक्कार ( धिक्=झी छी, क=करना ) ( पु० ) फिटकार, निरस्कार, शाप, छी छी, लानत ।

धिक्कारना ( सं० धिक्कारण ) ( क्रि० म० ) फिटकारना निरस्कार करना, लानत देना ।

धिग ( स्त्री० ) धींगाधींगो, उपद्रव, ऊधम, शरारत ।

धिगा ( पु० ) बदमाश, उपद्रवी, निर्लज्ज, बेशर्म ।

धिगाई ( स्त्री० ) शरारत, ऊधम, निर्लज्जता ।

धिगी ( स्त्री० ) दुरांगी, बदमाश स्त्री, निर्लज्ज स्त्री ।

धिया ( सं० धी ) ( स्त्री० ) बेटा ।

धिरकार ( सं० धिक्कार ) ( पु० ) धिक्कार, फिटकार, अपमान ।

धिरवना ( क्रि० म० ) धमकाना ।

धिराना ( क्रि० म० ) डराना, भय दिखाना ( क्रि० य० ) धीमा होना ।

धिपणा ( स्त्री० ) बुद्धि, अकल, ज्ञान, पृथ्वी, स्थान ।

धा ( धि=गोचन ) ( स्त्री० ) बुद्धि, मति, अकल, ज्ञान, बेटा, पुत्री ।

धीगना ( क्रि० म० ) प्रहण करना, स्वीकार करना, अंगीकार करना, धीरज धरना, अति प्रसन्न होना ।

धींग ( पु० ) हटा-कटा मनुष्य, ( वि० ) मजबूत, शरीर, बदमाश, पापी, कुमार्गी । जैसे—“अपनायो तुलसी सो धींग धमधूसरो ।”—तुलसीदास ।

धींगधुकड़ी ( स्त्री० ) पाजोपन, धींगामुरती ।

धींगरा ( वि० ) हटा-कटा, मुसंड, मोटा-ताजा, शठ, बदमाश, कुकर्मा, गुंडा ।

धींगा ( वि० ) शरीर, बदमाश ।

धींगड़ ( वि० ) पाजो, तुष्ट, बदमाश, वर्णसंकर, दोगला, हरामी ।

धीत ( वि० ) जो पिया गया हो, अनाहत, आराध्य ।

धीति ( स्त्री० ) पीना, प्यास ।

धीदा ( स्त्री० ) कन्या, बेटा, पुत्री, कुँआरी लड़की ।

धीन ( पु० ) छोहा ।

धीप्रिय ( स्त्री० ) वह हृदय जिससे किसी बात का ज्ञान प्राप्त किया जाय । जैसे—मन, आँख, स्पर्श, जीभ, नाक, ज्ञानेन्द्रिय ।

धीपति ( पु० ) बृहस्पति ।

धीमत ( वि० ) अकलमंद, बुद्धिमान् ।

धीमा } ( सं० धीर ) ( वि० ) डीला, धीरा, सुस्व,  
धीरा } आलसी, काहिल, कोमल, शान्त, ठंडा, स्थिर,  
गंभीर ।

धीमान् ( धी=बुद्धि, मन्=वाला ) ( वि० ) बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, अकलमंद ।

धीमे-धीमे ( क्रि० वि० ) धीरे-धीरे, हँले-हँले, आहिस्ता-आहिस्ता ।

धीया ( स्त्री० ) लड़की, बेटा ।

धीर ( धी=बुद्धि, ग=लेना ) ( वि० ) धीरज रखनेवाला, साहसी, धीर, स्थिर, समाधान, संतोषी, साबिर, गंभीर, शान्त, बुद्धिमान्, पंडित ।

धीरज ( सं० धैर्य ) ( स्त्री० ) साहस, स्थिरता, सहनशीलता, बरदाश्त, सय, संतोष, धीरता, गंभीरता, दृढ़ता ।

धीरट ( पु० ) हंस पक्षी ।

धीरता ( स्त्री० ) चित्त की स्थिरता, धैर्य, स्थिरता, संतोष ।

धीरमन्त्री ( स्त्री० ) जर्मोकंद ।

धीरललित ( पु० ) नायक-विशेष जो सदा बनाठना और प्रमत्तचित्त रहता है ।

धीरशान्त ( पु० ) नायक विशेष जो सुशील, दयालु, गुणी और पुण्यात्मा हो ।

धीरा ( स्त्री० ) नायिका-विशेष जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर धैर्य से कोप प्रकाशित करे तब से अपना कोप प्रकट करनेवाली नायिका, गुरिच, गिल्लाय, मालकंगनी ।

धीराधीरा ( स्त्री० ) नायिका-विशेष जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुस्से और कुछ प्रकटरूप से अपना क्रोध जतला दे ।

धीरावी ( स्त्री० ) शीशम का पेड़ ।

धीरी ( स्त्री० ) आँख की पुतली ।

धीरोदात्त ( पु० ) निरभिमानी, दयालु, क्षमाशील, धीर-वीर और योद्धा नायक ।

धीरोद्धत ( पु० ) प्रचंड, चंचल, दूसरों का गर्व न सहनेवाला और सदा आरना हो की बात करनेवाला नायक ।

धीवर ( धा=रखना, वा पकड़ना ) ( पु० ) मछुआ, कैवर्त, मछली पकड़नेवालों की जाति, नौकर ।

धुआँ } (सं० धूम) (पु०) धुवाँ, धूम, भाफ, मरण,  
धुवाँ } मरना, जैसे—“धुवाँ देखि खरदूषण बेरा, जाह  
सुपनखा रावण प्रेरा ।”

धुएँ का धौरहर (मुहा०) क्षय-गुरु वस्तु ।

धुएँ के बादल उड़ाना (मुहा०) भारी गप हाँकना ।

धुआँ देना (मुहा०) धुआँ निकालना, धुआँ पहुँचाना ।

धुआँ निकालना या काढ़ना (मुहा०) शोषी हाँकना ।

धुआँ रमना (मुहा०) धुएँ का छाया रहना ।

धुआँ सा मुँह होना (मुहा०) चेहरे को रंगत उड़  
जाना, लज्जा से मुख मलिन होना ।

धुआँ होना (मुहा०) काला पड़ना, भाँवरा होना ।

धुएँ उड़ाना (मुहा०) टुकड़े-टुकड़े करना, धजियाँ  
उड़ाना ।

धुएँ छवेरना (मुहा०) छिन्न-भिन्न करना ।

धुआँकश (पु०) स्टीमर, अग्निबोट ।

धुआँदान (पु०) चिमनी, छत में धुआँ निकलने के  
लिये बना हुआ छेद ।

धुआँधार (वि०) धुएँ से भरा, गहरे रंग का,  
भड़कीला, धुएँ का-सा, काला, स्याह, बड़े जोर  
का, प्रचंड, घोर ।

धुआँना (कि० अ०) अधिक धुएँ में रहने से स्वाद  
और गंध का बिगड़ जाना ।

धुआँगा (पु०) धुआँदान, चिमनी, छत में धुआँ  
निकलने का छेद ।

धुई (स्त्री०) धूनी ।

धुँकार (स्त्री०) गरज, जोर का शब्द, गड़गड़ाहट ।

धुँगार (स्त्री०) झोंक, बघार, तड़का ।

धुँगारना (कि० अ०) झोंकना, बघारना, मारना, पीटना ।

धुक (स्त्री०) कलाबत्तू बटने की सलाह ।

धुकड़पुकड़ } (स्त्री०) धड़क, धरधराहट, धड़पड़ाहट,  
धुकड़पुकड़ } हिलाव-डुलाव ।

धुकड़ी (स्त्री०) बटुवा, छोटी थैली ।

धुकधुकी (स्त्री०) छटकन, गले में पहनने का गहना,  
धबराहट, हड़बड़ी, ध्याकुलता, मोच ।

धुकना (कि० अ०) फुकना, नवना, झपटना, टूटना,  
टूट पड़ना ।

धुंकार (स्त्री०) धुँधकार, घोर शब्द, गड़गड़ाहट  
का शब्द ।

धुजिनी (स्त्री०) सेना, कौज ।

धुडंगी (वि०) जिसके शरीर पर कोई बख न हो,  
केवल धूल ही धूल हो ।

धुत (धुक्पना) (पु०) कंपित, भीत, डरा हुआ ।

धुत्ता (सं० धूर्तता) (पु०) धोखा, छल, दगाबाजी ।

धुत्ता देना (मुहा०) धोखा देना, फरेब करना, छलना ।

धुन (सं० ध्यान) (स्त्री०) इच्छा, चाह, जहर, तरंग,  
लौ, अभ्यास, (पु०) कंपन ।

धुन } (सं० ध्वनि) (स्त्री०) शब्द, आवाज़, स्वर,  
धुनि } नाद ।

धुन का पक्का (मुहा०) आरंभ किए काम की जो  
समाप्त करके ही छोड़े ।

धुनकी (स्त्री०) फटका, पिंजा, रई धुनने का औज़ार ।

धुनिया (धुवा) (पु०) रई तूमनेवाला, नहाक ।

धुनी (स्त्री०) नदी, जैसे सुरधुनी ।

धुनीनाथ (पु०) समुद्र सागर ।

धुन्ना } (सं० धुनना, धुक्पना) (कि० सं०)  
धुनना } तूमना, रई को सुधारना, हिलाना, कँपाना,  
पीटना, सिर धुनना (मुहा०) दुख से सिर  
हिलाना या पीटना ।

धुपना (कि० अ०) धुलना, धोना ।

धुपाना (कि० सं०) धूप देना, धूप के धुएँ से  
सुवासित करना ।

धुपेना (पु०) धुपदानी ।

धुपेली (स्त्री०) अँभौरी, पिन्नी ।

धुपना (पु०) जहँगा, घाँवरा ।

धुमला (पु०) अंधा ।

धुर (धु रघुना, वा धुरे=मारना) (पु०) बोझा, भार,  
जुआ, अंन, किनारा, धुरा, अल, खूँटी, शीर्षस्थान,  
उँगली, चिनगारी, भाग, अंश, धन ।

धुर (पु०) आरंभ, शुरू, अवधि, अंत ।

धुर से धुर तक (मुहा०) आदि से अंत तक ।

धुरकट (पु०) जेठ में ज़िम्मीदार को पेशगी दिया  
जानेवाला लगान ।

धुरचट (पु०) प्रचुरता, अधिकता ।

धुरंधर (धुरम=भार का, धुर=खना) (पु०) बोझ  
उठानेवाला, भारवाहक, संतोष के साथ काम पूरा  
करनेवाला, सुखिया, प्रधान, सरदार ।

**धुरना** (कि० ग०) पीटना, मारना, बजाना, पुआरी करना ।

**धुरपद** (सं० ध्रुवपद) (प०) एक प्रकार का गीत ।

**धुरवा** (प०) बादल, मेघ ।

**धुरसा** (प०) धुसा, लोह ।

**धुरसाँझ** (स्त्री०) गोधूनी का समय, ठीक संध्या समय ।

**धुरा** (धृ=धरना) (स्त्री०) चिन्ता, भार, रथ की धुरी ।

**धुरियाधुरंग** (वि०) विना साज के गाया जानेवाला गाना, अकेला ।

**धुरियाना** (कि० ग०) किसी वस्तु पर धूल डालना, धूल से ढकना, ऐस या बदनामी को किसी प्रकार ढकाना, ऊख के खेत को पहलेपहल गोड़ना ।

**धुरी** (स० धुरा, धृ=खनना, वा धृ=मारना) (स्त्री०) गाड़ी के पहिए का लोहे का डंडा ।

**धुरीण** (धृ=बोझ) (प०) धुरंधर, बोझ उठानेवाला, प्रधान, मुखिया, बैल, रथ, वृषभ, लाँगला अर्थात् बंध ।

**धुरेंटना** (कि० ग०) धूल से लपेटना, धूल लगाना ।

**धुर्य** (धृ=बोझ) (प०) धुरंधर, बोझ उठानेवाला, प्रधान सरदार ।

**धुरी** (प०) कण, त्ररी, रजकण ।

**धुरें उड़ाना** (महा०) बहुत दुर्गति करना ।

**धुलाई** (धुलाना) (स्त्री०) कपड़े धोने की मजदूरी ।

**धुलाना** (धोना) (कि० ग०) धुवाना, कपड़े सफ़ करना ।

**धुलेंदी** (स्त्री०) होली का दूसरा दिन जिसमें धूल धुलेंदी उड़ाते हैं ।

**धुवका** (स्त्री०) गीत का पहला पद, टेक ।

**धुवन** (प०) आग ।

**धुस्तूर** (प०) धतूरा ।

**धुस्ता** (प०) लोह, एक प्रकार का उनी कपड़ा ।

**धूआ** (स० धूम) (प०) धुआ, धूम, धुआ, भाऊ ।

**धूआधार** (सं० धूमाधार) (प०) बहुत धुआँ, (वि०) धूआँसा, हराया, भगाया, मंदिर, सँवारा हुआ, शोभित ।

**धूवारा** (सं० धूम) (प०) धुएँ के निकलने का मोखा अथवा राह ।

**धूनी** (सं० धूम) (स्त्री०) धुआँ, आग जिसको तपस्वी तपस्या करने के लिये जलाते हैं, किसी दवा को आग पर रखकर उसका धुआँ पिलाना वा भूत-प्रेत भाड़ने के समय किसी चीज़ को आग पर रखकर उसको महक मुँघाना, किसी चीज़ के माँगने के लिये आग जलाकर धरना देना ।

**धूनी देना** (महा०) धरना देना, बार-बार माँगना, धुआँ, आग सुलगाना, पिलाना ।

**धूनी लगाना** (महा०) हट करना अथवा बराबर माँग करना ।

**धूनी लेना** (महा०) धुआँ पीना, बफ़ारा लेना ।

**धूप** (धृप=तपना, वा चमकना, वा महकना) (प०) गूल और लोबान आदि सुगंधित वस्तु जिसको पूजा के समय देवता के आगे आग पर रखते हैं ।

**धूप** (स० धृप=तपना) (स्त्री०) घाम, तपिश ।

**धूम** (धृ=वापना) (प०) धुआँ, भाऊ ।

**धूम** (स्त्री०) रौंछा, बखेड़ा, कोलाहल, हलचल, खड़बड़ी, हाहू, चर्चा, शोहरत, नामवरी ।

**धूमकधैया** (स्त्री०) उपद्रव, उत्पान, शोर-गुल, उछल-कूद ।

**धूमकेतन** (प०) अग्नि ।

**धूमकेतु** (धूम=धूआ, केतु=भंडा) (प०) पृच्छलतारा, आग, केतु, एक राक्षस का नाम ।

**धूमगंधि** (प०) रुसा घास ।

**धूमग्रह** (प०) राहु ग्रह ।

**धूमज** (प०) बादल, मोथा, मुस्तक ।

**धूमजांगज** (प०) वज्रक्षार, नौसादर ।

**धूमदर्शी** (प०) धूँधला देखनेवाला आदमी ।

**धूमधड़का** (प०) समारोह, भारी आयोजन, ठाठबाट ।

**धूमधर** (प०) अग्नि, आग ।

**धूमधाम** (स्त्री०) भड़क, शोभा, ठाठबाट, हुहा, रौंछा, कोलाहल, भीड़भाड़ ।

**धूमध्वज** (प०) आग ।

**धूमपथ** (प०) धुआँ निकलने का रास्ता ।

**धूमपान** (प०) सिगरेट, तमाखू पीने का कार्य ।

**धूमपोत** (प०) धुआँकश, अग्निबोट ।

**धूमप्रभा** (स्त्री०) नरक-विशेष जो सदा धुएँ से भरा रहता है ।

धूमयंत्र ( पु० ) रेल का पंजिन ।

धूमरा } ( सं० धूम्र वा धूम्रन, धूम=धुवा, रा=लेना )  
धूमला } ( वि० ) धूँ से रंग, लाल और काला  
धूमा } भिला हुआ ।

धूमवाहनी ( धूम+वाहनी ) ( स्त्री० ) रेल, रेल का पंजिन ।

धूमावती ( स्त्री० ) दस महाविद्याओं में से एक देवी ।

धूमित ( वि० ) जिसमें धुआँ लगा हो ।

धूमिल ( वि० ) धुंधला, धूँ के रंग का ।

धूमा ( वि० ) उपद्रवी, उत्पाती ।

धूम्र ( वि० ) बैजनी, ( पु० ) गंध-द्रव्य-विशेष, शिव, राम की सेना का एक भालू ।

धूम्रकेतु ( पु० ) राजा भरत के एक पुत्र का नाम ।

धूम्रकेश ( पु० ) एक राजस का नाम जो शुभ का सेनापति था, कवृतर ।

धूम्रवर्ण ( पु० ) धूँ का रंग, ( वि० ) धूँ के रंग का ।

धूम्राक्ष ( वि० ) जिसकी आँखें धूमले रंग की हों ।

धूर } ( म० धूलि ) ( स्त्री० ) धूल, खाक, रेत, रज,  
धूल } रेणु ।

धूर ( स्त्री० ) बिस्वे का बीसवाँ हिस्सा, बिस्वांसा ।

धूरकट ( पु० ) ज़मींदार की जेठ या आषाढ में पेशगी दिया जानेवाला लगान या कर ।

धूरधान ( पु० ) धूल का ढेर ।

धूरधानी ( स्त्री० ) धूल का ढेर, ( वि० ) नष्ट, ध्वस्त ।

धूरा ( पु० ) चूर्ण, चुकनी, गर्द, धूल ।

धूरि ( स्त्री० ) धूल ।

धूरी ( स्त्री० ) धूल ।

धूर्जटि ( धूर्=घोस, जटि वा जटा=केशों का समूह ) ( पु० ) शिव का नाम, जटाधारी ।

धूर्त ( धूर् वा धूर्=मारना, हानि पहुँचाना ) ( वि० ) नटखट, छली, फरेबी, मक्कार, कपटी, ठग, उचक्का, दुष्ट, हानि पहुँचानेवाला ।

धूर्तचरित्र ( पु० ) नाटक का एक भेद ।

धूर्तता ( धूर्त ) ( स्त्री० ) नटखटी, मक्कारी, फरेब, ठगाई, छल-कपट ।

धूलि } ( धू=कांपना ) ( स्त्री० ) धूर, धूल, रज,  
धूली } रेत, रेणु ।

धूसर ( धू=कांपना ) ( वि० ) कबरा, भूरा, धुँधला, ह्लाकी, मिटिया ।

धूहा ( पु० ) धोखा, दूहा, खेत में सिंचियों की भगाने के लिये लगाया हुआ कपड़े आदि का पुतळा या काळी हाँड़ी आदि ।

धृत ( धृ=रखना ) ( वि० ) धारण किया हुआ, रखवा हुआ, पकड़ा हुआ ।

धृतराष्ट्र ( धृत=रखना है, राष्ट्र=राज्य, जिमने ) ( पु० ) दुर्योधन का बाप और पांडवों का चाचा ।

धृतव्रत ( पु० ) व्रत धारण किया हुआ व्यक्ति, जयव्रथ के पौत्र का नाम ।

धृतात्मा ( पु० ) धीर पुंस्य, विष्णु, ( वि० ) धीर ।

धृति ( धृ=रखना ) ( स्त्री० ) धीरज, संतोष, स्थिरता, मजबूती, धैर्य, हस्तकलाल ।

धृतिमान् ( वि० ) बुद्धिमान्, मतिमान्, अक्लमंद ।

धृतिस्ख्या ( वि० ) अठारह, दश और आठ ।

धृष्ट ( धृष्ट=दीठ होना ) ( वि० ) दीठ, धीठ, साहसी, निर्लज्ज, मगरा, मचला, गुस्ताख ।

धृष्टता ( स्त्री० ) डिठाई, शोषी, साहसपन, गुस्ताखी ।

धृष्टु ( पु० ) दीठ, साहसी, शोष, निर्लज्ज ।

धृष्ट्य ( वि० ) धर्पण योग्य, धर्पणीय ।

धैर्यामुष्टि ( स्त्री० ) ( महा० ) दैवमधुसा, धकमधका, मुकममुका ।

धेनु ( धे=पीसा, जिसका दूध आदि पीते हैं वा जो अपने बछड़ों को दूध पिलाती हैं ) ( स्त्री० ) गाय, दूध देनेवाली गाय ।

धेनुक ( धेनु ) ( पु० ) एक राजस का नाम ।

धेनुमत्तिका ( स्त्री० ) डंक, बड़े मच्छड़ ।

धेनुमती ( धेनु=गाय, मती=वाती ) ( स्त्री० ) गोमतीनदी ।

धेय ( वि० ) पीने योग्य, पीसने योग्य, धारण करने योग्य ।

धैर ( पु० ) एक अनर्थ जानि ।

धैलत्वा ( पु० ) अधैला ।

धैला ( पु० ) आधा पैसा, ( अधैला शब्द का देखा ) ।

धैली ( स्त्री० ) अठखी ।

धैना ( स्त्री० ) स्वभाव, कामधंधा ।

धैर्य ( धैर ) ( स्त्री० ) धीरज, स्थिरता, दिलेरी, हिम्मत ।

धैवत ( पु० ) सात स्वर्गों में से छठवाँ स्वर्ग जो मध्यम के आगे खोला जाता है ।

धोक ( स्त्री० ) देवता की मूर्ति के सामने झुकना,  
दंडवत्, प्रणाम ।

धोकड़ ( वि० ) महाबली, बलवान्, पराक्रमी, पहलवान,  
ताकतवर ।

धोखा ( पु० ) छल, कपट, दगा, ठगाना, चूक, भूल,  
भ्रम, निराश, संदेह, मृगवृत्त्या, कोई कल्पित  
वस्तु ।

धोखा खाना ( मुहा० ) धोखे में खाना, ठगा जाना,  
बहकना, भूलना, भुलाने में खाना ।

धोखा देना ( मुहा० ) ठगना, छलना, बहकाना, भुलाना  
देना, दगा देना, फरेब में लाना ।

धोतर ( पु० ) गान्धे के समान मोटा कपड़ा-विशेष ।

धोती ( सं० धौत, धातु=धोना ) ( स्त्री० ) एक कपड़े  
का नाम ।

धोना ( सं० धावन, धातु=धोना ) ( क्रि० म० ) पखारना,  
साफ करना ।

धोप ( स्त्री० ) एक प्रकार की तलवार ।

धोप } ( धोना ) ( पु० ) धोना, साफ करना, पखारना  
धोष }

धोषी ( धोना ) ( पु० ) कपड़े धोनेवाला ।

धोषीघास ( स्त्री० ) बड़ी दूब ।

धोषीपछाड़ ( पु० ) कुरती का एक पेंच ।

धोर ( स्त्री० ) सामीप्य, सन्निकटता, भार, किनारा ।

धोरण ( पु० ) सवारी, दौड़, सरपट ।

धोरणि ( स्त्री० ) परंपरा, श्रेणी ।

धोरी ( पु० ) बैल, बर्ध, वृषभ ।

धोरे ( क्रि० वि० ) पास, निकट ।

धोवती ( स्त्री० ) धोती ।

धोसा ( पु० ) गुड़ आदि की भेली या पिंडी ।

धौ ( शब्द० ) न जाने, कि, या कि, क्या ।

धौक ( पु० ) लपट, ताप, लू, काशश्वास ।

धौकना ( सं० ध्या=धौकना ) ( क्रि० म० ) फूकना ।

धौकनी ( धौकना ) ( स्त्री० ) आग फूँकने की चमड़े  
की भाथी, धौकी ।

धौका ( स्त्री० ) लू, भाथी ।

धौज ( स्त्री० ) दौड़, धूम, व्याकुलता ।

धौन ( शब्द मन ) ( पु० ) बीस सेर, आधा मन ।

धौस ( पु० ) धुँकी, धमकी, डाँट, डपट ।

धौसपट्टी ( स्त्री० ) फाँसापट्टी, भुलावा ।

धौसा ( पु० ) बड़ा नगाड़ा ।

धौसिया ( पु० ) धोखेबाज़, छली, नगाड़ा बजानेवाला ।

धौ ( पु० ) एक प्रकार का पेड़, धव का वृक्ष ।

धौत ( धातु=धोना ) ( वि० ) धोया हुआ, प्रच्छिन्न ।

धौताल ( सं० धनवंत ) ( वि० ) धनवान्, मालदार,  
मजदूर, बलवान्, शूरमा, वीर, दुष्ट, दुर्जन ।

धौर ( पु० ) कवूर, सफ़ेद परेवा ।

धौरा } ( सं० धवल ) ( वि० ) श्वेत, शुक्ल, सफ़ेद ।  
धौला }

धौरी ( स्त्री० ) कलिला, सफ़ेद रंग की गाय ।

धौल ( स्त्री० ) धप्पा, धप्पड़, थाप, चपन ।

धौल जड़ना } ( मुहा० ) ठगना, मुका मारना, थाप  
धौल मारना } मारना, धप्पड़ मारना ।  
धौल लगाना }

धौल लगना ( मुहा० ) घटी सहना, हानि सहना,  
नुकसान उठाना, घटी होना ।

धौलधप्पा ( मुहा० ) धौलधप्पड़, धौलाधकड़, धप्पा-  
धप्पी, मारकूट, चोट-चपेट, दंगा-क्रसाद, उपद्रव ।  
धौला ( पु० ) सफ़ेद बैल, धव का पेड़, ( वि० ) सफ़ेद,  
शुक्ल ।

धौलागिरि ( सं० धवलगिरि, धवल=धौला, गिरि=पहाड़ )  
( पु० ) हिमालय पहाड़ की एक चोटी ।

धौली ( स्त्री० ) एक प्रकार का पेड़ ।

ध्यात ( ध्ये=चिन्ता करना ) ( वि० ) चिन्तित, विचारित ।  
ध्यातव्य ( ध्ये+तव्य ) ( वि० ) ध्यान योग्य, याद के  
लायक ।

ध्याता ( पु० ) चिंतक, विचारक, ध्यान करनेवाला ।

ध्यान ( ध्ये=मोचना ) ( पु० ) सोच, विचार, चिन्ता,  
परमेश्वर में मन लगाना, लौ, लगन ।

ध्यानयोग ( वि० ) समाधियोग ।

ध्याना ( सं० ध्यन ) ( क्रि० म० ) ध्यान करना, लौ  
लगाना, मन लगाना, स्मरण करना ।

ध्यानी ( ध्यान ) ( पु० ) ध्यान करनेवाला, विचार  
करनेवाला, सोचनेवाला, योगी, भक्त ।

ध्यानीय ( ध्ये+घनीय ) ( वि० ) चिन्तनीय, विचारणीय,  
विचार योग्य, भजन योग्य, याद के लायक ।

ध्यायक ( ध्ये+यक ) ( पु० ) चिंतक, विचारी, योगी, भक्त ।



ध्येय ( ध्ये=विचारना ) ( वि० ) ध्यान योग्य, विचारणीय, ध्यानाहर्ह ।

ध्रुपद ( पु० ) राग-विशेष ।

ध्रुव ( ध्रु=ठहरना ) ( वि० ) ठहरा हुआ, पक्का, दृढ़, अटल, ठीक, किल, सच, निश्चय, ( पु० ) विष्णु, एक भक्त का नाम जो उत्तानपाद राजा का बेटा था, ध्रुव का तारा, उत्तर केंद्र ।

ध्रुवतारा ( पु० ) मेरु के ऊपर रहनेवाला तारा ।

ध्रुवलोक ( पु० ) मर्त्यलोक के अंतर्गत एक लोक जहाँ ध्रुव रहते हैं ।

ध्रुवा ( स्त्री० ) ध्रुपद गीत, सती साध्वी स्त्री, सखिन, यज्ञपात्र-विशेष ।

ध्वंस } ( ध्वम्=नाश करना ) ( पु० ) नाश, क्षय,  
ध्वंसन } हानि ।

ध्वंसक ( ध्वम्+क ) ( पु० ) नाशक, क्षयकारक, हानि-कर्ता ।

न ( कि० वि० ) नहीं, निषेध, अभाव, सूर्य, शनैश्चर, दीर्घ, मनुष्य ।

न } व्रजभाषा में और कविता में बहुवचन का चिह्न ।  
नि } जैसे "वेगि करहु किन आँखिन ओटा।" "तब कपीस चरननि सिरनावा ।"

नइहर ( पु० ) मयका, नैहर, पिता का घर ।

नउ ( वि० ) नवीन, नया, नूतन ।

नउआ ( पु० ) हजाम, नाऊ, नापित ।

नउत ( वि० ) नत, नीचे की ओर झुका हुआ ।

नाक ( सं० नासिका ) ( पु० ) नाक, नासिका, नासा ।

नाकघिसनी ( मुहा० ) दंडवत् करने में या आधीनी से जमीन पर नाक रगड़ना ।

नाकचढ़ा ( मुहा० ) चिड़चिड़ा, खुनसाहा, रिसहा, क्रोधी, जिसका बुरा स्वभाव हो ।

नाकझिकनी ( स्त्री० ) सूँघनी ।

नाकटा ( नाक कटा ) ( वि० ) नाक कटा हुआ, बिना नाक का, निर्लज्ज, बेशरम ।

नाकड़ा ( पु० ) नाक का एक रोग ।

नाकतोड़ा ( पु० ) नाक चढ़ाना, नाक चढ़ाकर अभिमान बतलाना ।

ध्वंसित ( ध्वम्+इत ) ( वि० ) नाशित, क्षयकृत, हानिकृत ।

ध्वजा ( सं० ध्वज, ध्वज्=जाना ) ( स्त्री० ) पताका, केतु, झंडा ।

ध्वजिनी ( स्त्री० ) एक प्रकार का सोना, सीमा पर लगाया हुआ वृक्ष आदि का निशान, सेना-विशेष ।

ध्वजी ( वि० ) पताकाधारी, ( पु० ) ब्राह्मण, सर्प, मयूर, घोड़ा, रथ, समर ।

ध्वन् } ( ध्वन्=शब्द करना ) ( स्त्री० ) शब्द, स्वर,  
ध्वनि } नाद, आवाज़ ।

ध्वनित ( ध्वन्+इत ) ( वि० ) शब्दित, उदित, कथित ।

ध्वस्त ( ध्वम्+नीचे गिरना ) ( वि० ) गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, मात किया गया, हत किया गया ।

ध्वांत् ( पु० ) तद्रक, भिक्षुक, कौआ, काक ।

ध्वांत ( पु० ) अंधकार, तम ।

ध्वांतशत्रु ( पु० ) सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, शुक्ल अर्ध ।

नक्रद ( पु० ) रोकड़, सिंका ।

नकना ( कि० सं० ) व्याकुल होना, डाकना, मार जाना, नकियाना, नाकों दम आना ।

नकफूल ( पु० ) नाक में पहनने की कील या लौंग ।

नकय ( स्त्री० ) संय ।

नकवेसर ( स्त्री० ) छोट्टा नथ ।

नकल ( स्त्री० ) प्रतिरूप, प्रतिबिंब, अनुकरण, प्रतिलिपि ।

नकली ( वि० ) बनावटी ।

नकसोर ( सं० नासिका नाक और शिरा नस ) ( स्त्री० )

नाक की नस अथवा रग ।

नकसीर चलना } ( मुहा० ) नाक से लोहू बहना ।  
नकसीर फूटना }

नकार ( न=नहीं, क=करना ) ( पु० ) नहीं, निषेध, न मानना ( यस्त्री में इनकार ) ।

नकारना ( यं० नकार ) ( कि० सं० ) नहीं मानना, निषेध करना, स्वीकार नहीं करना ।

नकारा ( पु० ) नकार ।

नकाशना ( कि० सं० ) किसी पदार्थ पर बेखबूटे बनाना ।

नकाशीदार ( वि० ) विभ्रित, बेखबूटेवाला ।

नकियाना ( कि० अ० ) नाक से बोलना, दुख उठाना, अस्फुट होना ।

नकीय ( पु० ) भाट, बंदी, चारण ।

नकुरा ( पु० ) लंबी नाक, नाक ।

नकुल ( न=नहीं, कुल=वंश जिनके ) ( वि० ) निर्वंश, कुलहिन, जिसके वंश न हो, ( पु० ) युधिष्ठिर का भाई, पाँचों पांडवों में का चौथा, नेवला जानवर, महादेव ।

नकेल ( नाक ) ( स्त्री० ) लकड़ी अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज जो ऊँट के नाक में डाली जाती है और उसमें डोरी डालकर ऊँट को चलाते हैं ।

नक्का ( पु० ) नास का पका, सुई का छेद ।

नक्कारखाना ( पु० ) नकारा यज्ञ के स्थान ।

नक्कारखाने में तूनों की आवाज़ कौन सुनता है ( मुहा० ) बड़ों के सामने छोटी को कौन पूछता है ।

नक्कारा ( पु० ) आत्ता-विशेष ।

नक्काल ( वि० ) विद्वेष, नकल करनेवाला ।

नक्की ( स्त्री० ) ताश का एक खेल, ( वि० ) तार से बोलनेवाला ।

नक् ( वि० ) अपयश, निखट्ट, बदनाम, नकारा, युग, नाच, निकम्मा ।

नक्क ( नक्क=नजाना ) ( स्त्री० ) रात, रजनी ।

नक्कक ( वि० ) लघुवस्त्र, मलिन, भूखवर्ण, धुमला रंग ।

नक्कचा ( पु० ) रात में चलनेवाला राक्षस ।

नक्कांध ( वि० ) रात का अंधा, जिसे रत्तीधी आती हो ।

नक्क ( न=नहीं, कम्=दूर जाना ) ( पु० ) मगर ।

नक्कराज ( नक्क+राज ) ( पु० ) ग्राह, हांगर ।

नक्कत्र ( नक्क=पहुँचना व जाना ) ( पु० ) तारा, नक्श २७ हैं ।

जैसे- १ अश्विनी, २ भर्गु, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाषाढा, १२ उत्तराषाढा, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिष, २५ पूर्वाभाद्रपद, २६ उत्तराभाद्रपद, २७ रेवती ।

नक्षत्रनाथ ( पु० ) चंद्रमा ।

नक्षत्रसूची ( पु० ) निश्चित ज्योतिषी ।

नक्कत्री ( नक्कत्र, अर्थात् जो अच्छे नक्शों में पैदा हुआ हो ) ( वि० ) भाग्यवान् ।

नक्कत्रेश ( नक्कत्र+ईश ) ( पु० ) चंद्र, चाँद ।

नख ( न=नहीं, ख=छेद जिसमें, अथवा, नह=बाँधना ) ( पु० ) नाखून, नखर, बीस की संख्या, विभाग, गुड़, खौड़, ( फा० नख ) ( पु० ) पतंग की डोरी, ( स्त्री० ) सीप, शुक्ति ।

नखकृत ( पु० ) नख का चिह्न, नख के गड़गे का निशान, स्त्री के स्तनों पर नखों के गड़गाने का निशान ।

नखत ( म० नक्त्र ) ( पु० ) नक्त्र ।

नखमुख ( पु० ) नम्रता, बाण, धन्वा ।

नखरा ( पु० ) चोंचला, हावभाव, इच्छा रहने भी किसी बात के लिये इनकार करना ।

नखरानिद्रा ( पु० ) नखराबाज़ी, चोंचला ।

नखरायुध ( पु० ) शेर, बाघ, व्याघ्र ।

नखरेवाज़ ( वि० ) नखरे करनेवाला ।

नखरेवाज़ी ( स्त्री० ) नखरा, नखरा करना ।

नखशिख से ( मुहा० ) सिर से पाँच तक, सब नख से शिख तक ) का सब, बिल्कुल ।

नखहरणी ( स्त्री० ) नहरनी, नख काटने का एक औज़ार ।

नखायुध ( नख+आयुध ) ( पु० ) व्याघ्र, कुकुट, बिल्ली, वृषिह, मोर ।

नखियाना ( कि० अ० ) नख से खरोचना ।

नखी ( नख ) ( वि० ) फाड़नेवाले वे जानवर जिनके नख और पंजा होते हैं, नखैल, नख से प्रहार करनेवाला ।

नग ( पु० ) नगीना, अँगूठी में जड़ने का पत्थर ।

नग ( न=नहीं, गम्=चलना ) ( पु० ) पहाड़, पर्वत, वृक्ष, सात की संख्या, अद्द, संख्या, सर्प, ( वि० ) अचल, स्थिर ।

नंग ( पु० ) नंगापन, ओछापन, शरीर पर वस्त्र का न होना ।

नंगधड़ंग ( वि० ) दिगंबर, बिना वस्त्र, नंगा ।

नंगर ( पु० ) लंगर, नाव ठहराने के लिये पानी में छोड़ा जानेवाला लंगर ।

नंगा ( वि० ) दिगंबर, बिना वस्त्र, वस्त्रहीन ।

नंगाभोरी } ( स्त्री० ) शरीर की नलाशी ।  
नंगाभोली }

नगाबुधा ( वि० ) बदमाश, लुच्चा, निर्धन ।

नगचाना ( सं० निकट ) ( कि० अ० ) पाम आना,  
पहुँचना, नगिचाना, नियराना ।

नगजा ( स्त्री० ) पार्वती, पर्वत-पुत्री ।

नगण ( पु० ) तीन लघु अक्षरों का छंद-शास्त्र का एक  
गण, जैसे कमल, मरन इत्यादि ।

नगण्य ( वि० ) तुच्छ, हेच ।

नगद ( पु० ) नकद ।

नगदंती ( स्त्री० ) विभोषण की स्त्री का नाम ।

नगधर ( पु० ) गिरिधारी, श्रीकृष्ण ।

नगन ( सं० नग्न ) ( वि० ) नंगा ।

नगनी ( स्त्री० ) छोटी कन्या जो नंगा इधर-उधर घूम  
सकती हो ।

नगपति { ( नग=पताइ, पति वा अधिराज=राजा )  
नगाधिराज { ( पु० ) पहाड़ों का राजा, हिमालय  
पहाड़, सुमेरु ।

नगभिद् ( स्त्री० ) लता-विशेष जो पत्थर फोड़कर  
निकलती है ।

नगर ( नग=वृज वा पहाड़ अर्थात् जिनमें वृज वा पहाड़ हो )  
( पु० ) शहर, पुर, पत्तन या पटन ।

नगरकीर्तन ( पु० ) वह कीर्तन या उत्सव जो नगर में  
घूमकर किया जाता हो ।

नगर-नायिका ( स्त्री० ) नगर भर की स्त्री, वेश्या, रंडी ।

नगर-नारी ( नगर+नारी ) ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया ।

नगरह्वा ( पु० ) नगरबासी, नागरिक ।

नगराई ( स्त्री० ) चतुराई, धूर्तता ।

नगरी ( नगर ) ( स्त्री० ) पुरा, छोटा शहर ।

नगाड़ा } ( पु० ) नगारा, नकारा ।  
नगारा }

नगी ( स्त्री० ) नगीना, छोटा नग, नाग की स्त्री, पार्वती ।

नगेंद्र ( पु० ) हिमाक्षय, पर्वतों का राजा ।

नग्न ( नज्ज=नजाना ) ( वि० ) नंगा, उघाड़ा, वस्त्र-हीन,  
बिना कपड़े का, ( पु० ) नंगा साधु वा भिखारी,  
बौद्ध वा जैनमत का दिगंबर ।

नगना ( कि० सं० ) डाँकना, पार जाना, लाँघना ।

नगाना ( कि० सं० ) लँघा देना, पार उतार देना ।

नचनि ( स्त्री० ) नृत्य, नाच ।

नचनिया ( पु० ) नाचनेवाला ।

नचवाना } ( नाचना ) ( कि० सं० ) नाच कराना ।  
नचाना }

नचवैया ( नाच ) ( पु० ) नाचनेवाला, नृत्यक,  
नचनिया ।

नछत्र ( पु० ) नसत्र, तारा ।

नछत्री ( वि० ) भाग्यवान्, प्रतापी ।

नज़दीक ( वि० ) पास, समीप, निकट ।

नज़दीकी ( वि० ) समीप, निकट-संबंधी ।

नज़र ( स्त्री० ) दृष्टि, चितवन, आँख ।

नज़र आना ( मुहा० ) मुझना, दिखाई देना ।

नज़र करना ( मुहा० ) देखना ।

नज़र पर चढ़ना ( मुहा० ) शय्यता होना ।

नज़र देना ( मुहा० ) उपहार देना, भेंट देना ।

नज़र रखना ( मुहा० ) देखरेख रखना, निगरानी करना ।

नज़रबंद ( वि० ) वह अपराधी जो नज़र के सामने  
रक्खा जाय, जो कहीं आ जा न सके ।

नज़रबंद करना ( मुहा० ) जादू करना ।

नज़रबंद होना ( मुहा० ) नज़रबंदी की सज़ा पाना ।

नज़रयास ( पु० ) उद्यान, घर के भीतर का छोटा बाग़ ।

नज़रसानी ( स्त्री० ) देखा यात को फिर देखना ।

नज़राना ( पु० ) भेंट की वस्तु, नज़र देने की सामग्री,  
( कि० अ० ) जादू करना, नज़र खगाना, देखना,  
पसंद करना ।

नज़ला ( पु० ) जुकाम, सर्दी, रोग-विशेष ।

नज़ाकत ( स्त्री० ) कोमलता, मुकुमारता ।

नज़ारा ( पु० ) दृश्य, देखने की वस्तु, दर्शनीय वस्तु ।

नज़ीक ( कि० वि० ) निकट, नज़दीक, पास, समीप ।

नज़ोर ( स्त्री० ) दृष्टांत, उदाहरण, साधारण अभियोग  
का फैसला ।

नट ( नट=नाचना ) ( पु० ) नटवा, नर्तक, जायाजीबी,  
नटुआ, नटवर, स्वांगी, हँसुजाही ।

नटई ( स्त्री० ) गरदन, धोवा, गला ।

नटखट ( सं० नट ) ( वि० ) कपटी, झूठी, पाखंडी, धूर्त,  
क्रूरबी, फरफंदी, गँटीला ।

नटखटी ( स्त्री० ) हरामजद्गी, दगाबाज़ी, क्रूरब, झूठ,  
कपट, धूर्तता ।

नटन ( नट+यन ) ( पु० ) नाचना, नृत्य करना ।  
 नटना ( क्रि० अ० ) नाचना, प्रतिज्ञा तोड़ना, कही बात को उलट देना, मुकर जाना ।  
 नटनारायण ( पु० ) एक राग-विशेष ।  
 नटनी ( स्त्री० ) नट की स्त्री, नाचने-गानेवाली स्त्री ।  
 नटमाया ( नट+माया ) ( स्त्री० ) छलविद्या, बाजीगरी, नट का खेल, धोखा, फरफंद, प्रपंच ।  
 नटवर ( नट+वर ) ( पु० ) बड़ा नट, नटवा, महादेव, नाट्यकला का पंडित, श्रं कृष्ण, ( वि० ) चतुर, धूर्त ।  
 नटवा ( पु० ) नाटा, छोटा, जादूगर, छोटा बैल ।  
 नटसाल ( पु० ) बांस का फाँस, कांटे या फाँस का वह भाग जो शरीर में रह जाय ।  
 नटी ( नट ) ( स्त्री० ) नटिनी, नट की स्त्री, वेश्या, नाचनेवाली, पतुनिया ।  
 नटना ( क्रि० अ० ) थिगड़ना ।  
 नट ( पु० ) दूरी बनानेवाली ज्ञानि-विशेष, नरकट, नृण-विशेष ।  
 नत ( नम=भुकना, नवना ) ( वि० ) भुका हुआ, नमा हुआ, नम्र, नमित ।  
 नतइत ( पु० ) गोत्री, संबंधी, कुटुंबी ।  
 नतकुर ( पु० ) नाती, नवासा ।  
 नतर ( म० नात्यतर, न=नहीं अत्यन्त और प्रचार ) ( क्रि० वि० ) नहीं तो ।  
 नतांगी ( नत=भुक्त गया है स्नान योग आप यदि के भार में श्रम-शरीर-जगता ) ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, सुंदरी, कोमलांगी, नायिका ।  
 नति ( नम=भुकना ) ( स्त्री० ) नवना, भुकना, नमस्कार, प्रणाम ।  
 नतिनी ( म० नतीनी ) ( स्त्री० ) दोहती, घेरी की घेरी ।  
 नतीजा ( पु० ) परिणाम, फल ।  
 नतु ( क्रि० वि० ) नहीं तो, ऐसा नहीं तो, अन्यथा ।  
 नतैत ( नाता ) ( वि० ) नातेदार, सगा, रिश्तेदार, कुटुंबी ।  
 नृत्य ( स्त्री० ) नथिया, नथ, नाक में पहनने का गहना ।  
 नत्था ( पु० ) एक में मिलाना, साथ सिलाई करना ।  
 नथ } ( म० नाथ=पति, यर्थात् पति के जाने या निद्र )  
 नथनी } ( स्त्री० ) नाक का गहना, नाक की बाखी, एक गहना जो चोड़ा और गोल होता है जिसको बहो

स्त्री नाक में पहनती है जिसका पति जीता हो ।  
 नथना ( पु० ) नाक का छेद, नाक, बैल घोड़े आदि की नाक ।  
 नथनी ( स्त्री० ) लड़कियों के पहनने की नथ, छोटी नथ ।  
 नथिया ( स्त्री० ) नथ ।  
 नथुना ( पु० ) नथना, नाक ।  
 नथुनी ( स्त्री० ) छोटी नथ ।  
 नद् ( नद=शब्द करना ) ( पु० ) बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, शोणभद्र और सिन्धु आदि ।  
 नदन ( पु० ) रजन, शब्दकरण, आवाज़ होना, बोलना ।  
 नदनदीपति ( पु० ) समुद्र, नद और नदियों का स्नायो ।  
 नदान ( वि० ) नादान, बेसमझ, मूर्ख ।  
 नदारद् ( वि० ) अभाव, अप्रस्तुत होना, दिखाई न पड़ना, न होना ।  
 नदिता ( पु० ) शब्दकर्ता, शब्द करनेवाला ।  
 नदिया ( पु० ) नंदी, बैल, शिवजी का वाहन, एक गाँव का नाम ।  
 नदी ( नद=शब्द करना ) ( स्त्री० ) बहता हुआ पानी, जलधारा, जल का प्रवाह जैसे गंगा, यमुना आदि ।  
 नदीगर्भ ( पु० ) नदी के दोनों किनारों के बीच का भाग, नदी की धारा बहने का स्थान ।  
 नदीत्त ( पु० ) भीष्मपितामह, अर्जुन नामक वृक्ष, एक प्रकार का नमक ।  
 नदीमानृक ( वि० ) नदी के द्वारा पाखित, खेतीवारी जहाँ नदी के जल से होती है ।  
 नदीमुख ( पु० ) संगमस्थान, नदी का मुहाना ।  
 नदीश ( नदी+ईश ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।  
 नदेश ( नद+ईश ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।  
 नदीला ( पु० ) छोटी नाँद ।  
 नद्ध ( वि० ) बँधा हुआ, नधा हुआ ।  
 नद्युत्सृष्ट ( पु० ) गंगबारा, नदी का छोड़ा हुआ स्थान ।  
 नन्द ( म० ननन्दा, न=नहीं, नन्द=प्रसन्न होना, अर्थात् जो बहुत कुछ देने से भी रागी नहीं होता है ) ( स्त्री० ) पति की बहन, ननँदिया, ननँदी ।  
 ननँदिया ( म० ननन्दा ) ( स्त्री० ) ननँद, पति को ननन्दी बहन ।

ननदोई ( स्त्री० ) ननद का पति, पति का बहनोई ।

ननसार }  
ननिअउरा } ( स्त्री० ) नाना का घर ।  
ननिहाल }

ननु ( अन्त्य० ) प्रश्न, निश्चय, अवधारण, अनुमति, अनुज्ञा, अनुनय, आमंत्रण, संबोधन, परकृत अवि-  
कार, संभ्रम, स्तुति, आक्षेप, उत्प्रेक्षा, विरोधाक्ति ।

नन्द ( नन्=आनन्द करना, वा प्रपन्न होना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण  
का पालनेवाला बाप, आनन्द, हर्ष ।

नन्दक ( पु० ) श्रीकृष्ण की तलवार का नाम, मंडक,  
( वि० ) आनन्ददायक, कुलपालक ।

नन्दन ( सं० नन्=आनन्द करना, प्रपन्न होना ) ( पु० )  
बेटा, पुत्र, इन्द्र का बाग, ( वि० ) सुखदायक, आनन्द  
देनेवाला ।

नन्दनन्दन ( नन्द+नन्दन ) ( पु० ) नन्द का बेटा, श्रीकृष्ण,  
नन्दलाल, एक प्रकार का विप, महादेव, मंडक,  
केसर, चंदन, लङ्का, मेघ, बादल ।

नन्दलाल ( नन्दलाल+प्याग ) ( पु० ) नन्द का बेटा,  
नन्द-नन्दन, श्रीकृष्ण ।

नन्दि ( नन्=आनन्द करना ) ( पु० ) शिव का द्वारपाल,  
द्युतकीड़ा, जुआ खेलना ।

नन्दिघोष ( नन्दि+घोष ) ( पु० ) अजुन का रथ, बंदीजनों  
का शब्द, भाटों की स्तुति ।

नन्दित ( वि० ) सुखी, प्रसन्न, शब्द करना हुआ ।

नन्दिनी ( स्त्री० ) पार्वती, गंगा, ननद, वशिष्ठ मुनि की  
गौ, कन्या, जटामासी ।

नन्दीमुख ( पु० ) पुत्र जन्म के समय किया जानेवाला  
यज्ञ-विशेष, आहुति-विशेष ।

नन्दोई }  
नन्दीसी } ( सं० ननंदापति ) ( पु० ) ननद का पति ।

नन्दा } ( सं० न्यून ) ( वि० ) छोटा, लघु, प्यारा,  
ननका } लाड़ला, ( पु० ) छोटा लङ्का, बेटा ।

नन्हाई ( स्त्री० ) छोटापन, अप्रतिष्ठा, नटखटी ।

नपाक ( वि० ) अपवित्र, अशुद्ध ।

नपुआ ( पु० ) नापने का पात्र, एक प्रकार की तीख ।

नपुंसक ( न=नहीं, पुंसक=पुरुष ) ( पु० ) हिजड़ा,  
खोजा, क्लीब, नामर्द, ( वि० ) वरपोक, कायर,  
हेठा ।

नप्ता ( पु० ) नाती ।

नफर ( पु० ) नौकर, दास, भूष्य ।

नफरी ( स्त्री० ) एक दिन का वेतन ।

नफ्फा ( पु० ) लाभ सूद, व्यापार का लाभ ।

नफ्फरी ( स्त्री० ) तुरही, सहनाई, सहनाय ।

नन्ज़ ( स्त्री० ) नाड़ी ।

नन्ज़ देखना ( मुहा० ) देख को नाड़ी बताना ।

नभःसद ( पु० ) वायु, मरुत, देवता, आकाशचारी ।

नभ } ( गृह=बांधना ) ( पु० ) आकाश, गगन,  
नभस् } आममान, सावन का महीना, सूर्य, मेघ, वर्षा ।

नभग ( नभ=आकाश, गम=जाना ) ( पु० ) पखेरू, पक्षी ।

नभगनाथ } ( नभग=पखेरू, नाथ या ईश=राजा ) ( पु० )  
नभगेश } गरुड़ ।

नभच्चर ( ग० नभश्चर, नभभू=आकाश, चर=चलनेवाला,  
चर=चलना ) पखेरू, पक्षी, विधाधर, मेघ, हवा,  
पवन, ( वि० ) आकाश में चलनेवाला ।

नभस्थल ( पु० ) आकाश, आकाशमार्ग, शून्यस्थान ।

नभस्थान ( पु० ) वायु, हवा, पवन ।

नभोगति ( पु० ) आकाश में चलने की शक्ति रखनेवाला ।

नभोभूम ( पु० ) मेघ, वारिद ।

नमः ( नम=नमना ) ( अन्त्य० ) नमस्कार, प्रणाम, दान ।

नम ( वि० ) तर, भोगा हुआ ।

नमक ( पु० ) नोन, खार ।

नमक अदा करना ( मुहा० ) उपकार का बदला उप-  
कार से देना ।

नमक खाना ( मुहा० ) आश्रय में रहना, पालित होना ।

नमक फूटना ( मुहा० ) वैईमानी का फट पाना ।

नमकखार ( वि० ) नमक का बदला चुकानेवाला,  
उपकार का बदला उपकार से देनेवाला ।

नमकहराम ( वि० ) उपकार के बदले अपकार करने-  
वाला ।

नमकहलाल ( वि० ) अपने आश्रयदाता का उपकार  
करनेवाला ।

नमकीन ( वि० ) नमक भिखा हुई वस्तु, पकवान, सुंदर ।

नमन ( वि० ) प्रणाम ।

नमस्कार ( नमस्=प्रणाम, कृ=करना ) ( पु० ) प्रणाम,  
दंडवत् ।

नमित ( नम्=भुक्ता ) ( पु० ) भुका हुआ, खाया हुआ ।

नमी ( स्त्री० ) गीलापन, आर्द्रता ।

नमुचि ( पु० ) एक राक्षस का नाम ।

नमूना ( पु० ) बानगी, आदर्श ।

नमरु ( पु० ) रुद्राक्ष का पेड़, वृक्ष-विशेष ।

नम्र ( नम=नमता, भुक्तता ) ( वि० ) झुका हुआ, अर्धान,

विनयी, मिन्ननसार ।

नम्रता ( नम्र ) ( स्त्री० ) अधीनता, विनय ।

नय ( नी=ले जाना, चलाना, वा पाना ) ( स्त्री० ) नीति, हंसार ।

नयकारी ( पु० ) नरक, नाचनेवाला ।

नयन ( नी=ले जाना, पहचाना, वा पाना ) ( पु० ) आँख, नेत्र, छोचन ।

नयनगोचर ( पु० ) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, आँखों के दिखानेवाला ।

नयनपट ( नयन=आँख, पट=परदा ) ( पु० ) पलक ।

नयना ( सं० नयन ) ( स्त्री० ) आँख की पुतली आँख का तारा ।

नयनागर ( नय=नीति, नाग=चतुर ) ( वि० ) नीति में निपुण, नीति में चतुर अथवा प्रवीण, नीति जाननेवाला ।

नयनामृत ( नयन+अमृत ) ( पु० ) शंजन विशेष, सुरमा, काजल ।

नयनू ( पु० ) मरुवन, वस्त्र-विशेष, यूरीदार मलमल ।

नयशील ( पु० ) नीतिमान, नीतिज्ञ ।

नया } ( सं० नव ) ( वि० ) नवेली, नवीन, टटका, नया } नूतन ।

नये सिर से ( मुहा० ) फिर से, दूसरी बार से ।

नर ( नृ=ले जाना वा चलाना ) ( पु० ) मनुष्य, पुरुष, मर्द, मनुष्य जाति, परमेश्वर, नरावतार, अर्जुन ।

नरक ( नर=मनुष्य, कै=शब्द कर्मता, जहाँ पापी गते हैं वा नृ=ले जाना, जहाँ पापी लोग ले जाये जाते हैं ) ( पु० ) पापों के फल भुगतने की जगह, दोज्ज १ तामिस्र २ अंधतामिस्र ३ रौरव ४ महारौरव ५ कुंभीपाक ६ कालसूत्र ७ अमिषप्रान ८ शंकरमुख ९ अंधकूप १० कृमिभोजन ११ संदेश १२ तप्तभूमि १३ वज्रकंटक १४ शास्मली १५ वैतरणी १६ पृषोद १७ प्राणरोध १८ विशसन १९ लालाभक्ष २० सारमेवाहन २१ अग्नीचिरयःपान २२ क्षारकर्म २३

रक्षोगणभोजन २४ शूलप्रोत २५ दंदशूक २६ अवनिरोधन २७ पर्यावर्तन २८ सूचीमुख ।

नरककुंड ( नरक+कुंड ) ( पु० ) वह कुंड जिसमें पापी लोग दुःख भुगतने के लिये डाले जाते हैं ८६ हैं वह ब्रह्मवैवर्तपुराण में वर्णित हैं ।

नरकट } ( सं० नलकांड ) ( पु० ) सरकंडा, एक प्रकार नरकल } का बाँस, नरकुल ।

नरकासुर ( नरक+असुर ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम जो कंस का मित्र था ।

नरकी ( वि० ) पापी, नरक का अधिकारी ।

नरकेशरी ( नर=मनुष्य, केशरी=भिह ) ( पु० ) नरसिंह-अवतार, विष्णु का चौथा अवतार ।

नरकांतक ( नरक+अंतक ) ( पु० ) विष्णु ।

नरकदेवता ( स्त्री० ) अभाग्य, दरिद्र, यमराज, चित्रगुप्त ।

नरकामय ( नरक+आमय ) ( पु० ) कोढ़रोग, जिससे शरीर नरकसम हो जाय ।

नरंग } ( पु० ) नारंगी, नारंग, कौला । नारंग }

नरत्व ( पु० ) मनुष्य के गुण और धर्म, मनुष्यत्व ।

नरद ( स्त्री० ) पौदा-विशेष, चौसर की गोटी ।

नरदन ( पु० ) गर्जन, हुंकार ।

नरद्वी ( पु० ) मोरी, पनाला ।

नरदा ( पु० ) मोरी, नरद्वी ।

नरदेव } ( पु० ) राजा, भूपाल, नृपति । नरनाथ }

नरनारायण ( नर+नारायण ) ( पु० ) श्रीकृष्ण और अर्जुन का अवतार, दो मुनि ।

नरनाथि ( स्त्री० ) नर की स्त्री, द्रौपदी ।

नरनाह ( पु० ) नरनाथ, राजा, भूपाल ।

नरपति ( नर+पति ) ( पु० ) मनुष्यों का राजा, राजा, महाराज, भूपाल ।

नरपशु ( पु० ) नृसिंह, भगवान् का एक अवतार, मूर्ख मनुष्य ।

नरपाल ( पु० ) नरपति, नृपति ।

नरपिशाच ( पु० ) मनुष्य के रूप में पिशाच, क्रूर मनुष्य ।

नरपुर ( नर+पुर ) ( पु० ) मर्त्यलोक, पृथ्वी, यह लोक ।

नरभक्षी ( पु० ) राक्षस, हिंसक जंतु ।

नरमट ( स्त्री० ) तलुही जमीन, मुलायम मिट्टी की जमीन ।

नरम ( वि० ) कोमल, सुकुमार ।

नरमाना ( कि० म० ) क्रोध दूर करना, शांत करना ।

नरमानिनी ( स्त्री० ) दाढ़ी-मूँड़वाली स्त्री, अपने को पुरुष समझनेवाली स्त्री ।

नरमी ( स्त्री० ) कोमलता, सुकुमारता ।

नरमंथ ( नर=मनुष्य, मंथ=यज्ञ ) ( पु० ) नरबलि, वह यज्ञ जिसमें मनुष्य होमा जाता है ।

नरवाई ( स्त्री० ) गेहूँ का एक डंठल ।

नरवाहन ( पु० ) मनुष्य के द्वारा ढोई जानेवाली सवारी, एक राजा का नाम ।

नरव्याघ्र ( पु० ) मनुष्यों में श्रेष्ठ, उत्तम मनुष्य ।

नरसिंगा ( सं० नलश्रंग, नल=नली, श्रंग=संग ) ( पु० ) नुरही, सींगी, एक प्रकार का बाजा ।

नरसिंह ( नर+सिंह ) ( पु० ) विष्णु का चौथा अवतार जो हिरण्यकशिपु को मारने के लिये और प्रह्लाद को बचाने के लिये हुआ था, मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य, नरश्रेष्ठ ।

नरसों ( पु० ) आज से चौथा दिन ( पहला अथवा पिछला ) ।

नरहर ( पु० ) पिंडली के ऊपर की पैर की हड्डी ।

नरहरि ( नर=मनुष्य, हरि=सिंह ) ( पु० ) नरसिंह, विष्णु का चौथा अवतार, तुलसीदास के गुरु का नाम ।

नराच ( पु० ) शर, बाण, छंद-विशेष ।

नराधम ( नर+अधम ) ( पु० ) मनुष्यों में नीच, पापी, नीच, कमीना ।

नराधिप ( नर=मनुष्य, अधिप=राजा ) ( पु० ) मनुष्यों का राजा, नरपति, बादशाह ।

नरियरी ( स्त्री० ) नारियल के खोपड़े का धना पात्र ।

नरिया ( पु० ) खपरा ।

नरियाना ( कि० य० ) चिखाना, ज़ोर-ज़ोर से चिखाना, व्यर्थ की बकवाद करना ।

नरेटी ( स्त्री० ) गल्ला, घांटी, गर्दन, टेंदुवा ।

नरेटी दवाना ( मुहा० ) गल्ला घोटना ।

नरेंद्र ( नर+इंद्र ) ( पु० ) राजा, नरपति ।

नरेश } ( नर=मनुष्य, ईश वा ईश्वर=स्वामी ) ( पु० )  
नरेश्वर } राजा, नरेंद्र, नरपति ।

नरों ( स्त्री० ) आज से अगला या पिछला चौथा दिन ।

नर्तक ( नृत=नाचना ) ( पु० ) नाचनेवाला, नट ।

नर्तकी ( नर्तक ) ( स्त्री० ) नाचनेवाली, नटिनी ।

नर्तन ( नृत=नाचना ) ( पु० ) नाच, नृत्य ।

नर्तनप्रिय ( वि० ) जिसको नाचना अच्छा लगे, मोर ।

नर्दक ( नर्द=शब्द करना ) ( पु० ) बोलनेवाला ( फा० )  
नर्द ( स्त्री० ) गोठ ।

नर्दा ( पु० ) नाली, पनाला ।

नर्म ( पु० ) हँसी-टट्टा, दिल्लीगी, ठठोली ।

नर्मद ( नर्म=दया वा आनंद, दा=देना ) ( पु० ) सुखद, सुखदायक, आनंदकारी, खुशी देनेवाला ।

नर्मदा ( नर्म=दया वा आनंद, दा=देनेवाली, दा=देना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम जो दक्षिण में है, रेवा, मेकलसुता ।

नर्म सन्धिव ( पु० ) विद्वत्क, मसखरा ।

नल ( नलु=वाधना ) ( पु० ) सरसंडा, सेंडा, नरकट, नेज़ा, बाँस, नली, फोंफी, चोंगा, टोंटा, टोंटी, नाली, प्रणाली, एक राजा का नाम, एक बंदर का नाम, एक राक्षस का नाम ।

नलकूवर ( पु० ) कुंवर के दो बेटे जो नारद मुनि के शाप से पेड़ हो गए थे ।

नलनीर ( पु० ) कूवारा ।

नला ( पु० ) नल, पेशाब का नला ।

नलराना ( कि० म० ) निराना, ज्वेत की यास आदि का निकालना ।

नलिका ( स्त्री० ) छोटा नल औषध-विशेष ।

नलिन ( नलु=वाधना ) ( पु० ) कमल, पद्म, पानी, सारस ।

नलिनी ( नलिन ) ( स्त्री० ) कमलिनी, कुमुदिनी, कमलों का समूह, कमलों से भरा तालाब ।

नल्ली ( सं० नल ) ( स्त्री० ) फोंफी, चोंगा, टोंटी, नरेटी, साँसी, बंदूक की नाल, टेंगड़ी की हड्डी ।

नलुग्रा ( पु० ) पगुओं का एक रोग, छोटी नली ।

नली ( स्त्री० ) पैर के नीचे की पिंडली, औषध-विशेष ।

नय ( नु=यगहता ) ( वि० ) नया, नवीन, नूतन, नौ संख्या, १, स्तुति, स्तोत्र ।

नयकारिका ( स्त्री० ) नई दुलहिन ।

नवखंड ( नव=नौ, खंड=भाग ) ( पु० ) पृथ्वी के नौ

खंड—भरतखंड, इलावृतखंड, किंपुरुषखंड, भद्रखंड, केतुभालखंड, हरिखंड, हिरण्यखंड, रम्यखंड और कुशखंड ।

नवग्रह (नव+ग्रह) (पु०) सूर्य आदि नौ ग्रह जैसे १ सूर्य, २ चंद्र, ३ मंगल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु ।

नवछावरि (श्री०) न्योछावर, घेरान करना ।

नवदुर्गा (नव+दुर्गा) (श्री०) दुर्गा की नौ मूर्तियाँ, जैसे १ शैलपुत्री, २ वल्लभारिणी, ३ चंद्रघंटा, ४ कूटमांडा, ५ स्कंदमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्री, ८ महा-गारा, ९ सिद्धिदा ।

नवद्वार (नव+द्वार) (पु०) शरीर के नौ रस्ते—२ आँखें, २ कान, २ नाक के छेद, सान्ता मुँह आठवां लिंग, नवाँ गुदा, जैसे “नवद्वार का पीजरा यामें पंछा पाँन”—कथौर ।

नवधामिनि (श्री०) नव प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, चंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन ।

नवनिधि (नव=नौ, निधि=धाना) (श्री०) संपदा, कुंवर का धन, कुंवर का नवसज्जाना—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व ।

नवनी (नव=नवनीत) (श्री०) मखन, नैनू ।

नवनीत (नव=नया, नी=नैन जाना) (पु०) मखन, माखन, नैनी, नवनी ।

नवशाला (नव=नई, शाला=जवान रंग या लड़की) (श्री०) नवयौवना, सोलह बरस की लड़की, जवान स्त्री ।

नवम (नव) (वि०) नवाँ ।

नवमालिका (श्री०) एक पुष्प का नाम, वर्षावृत्त-विशेष ।

नवमी (नवम) (श्री०) नवमी, नवीं तिथि ।

नवयज्ञ (पु०) नवीन यज्ञ के निमित्त किया गया यज्ञ-विशेष ।

नवयुवक (वि०) युवा, तरुण, नौजवान ।

नवयौवना (नव=नई, यौवना=जवान रंग) (वि०) जवान स्त्री, नवशाला, नवोडा, तरुणी, युवती ।

नवरंग (वि०) रँगोला, सुंदर

नवरंगी (वि०) प्रसन्नचित्त, हँसोड़ा, हँसमुख, नया-नया आनंद करनेवाला, (श्री०) फल-विशेष, नारंगी ।

नवरत्न (नव+रत्न) (पु०) नौ जवाहिर (अर्थात् १ हीरा, २ पद्मा, ३ माणिक्य, ४ नीलम, ५ लहसुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मृगा), विक्रमादित्य की सभा के नौ पंडित (१ धन्वंतरि, २ लपणक, ३ यमरसिंह, ४ शक्र, ५ वेतालमठ, ६ घटकर्पूर, ७ कालिदास, ८ वामाहर्मिहिर, ९ वररुधि), हाथ में पहनने का एक गहना जिसमें नौ रत्न जड़े हों ।

नवरस (पु०) नवीन रस, काव्य के नौ रस—शृंगार, वीर, करुण, अद्भुत हास्य, भयानक, धीमत्स, रौद्र और शान्त ।

नवरात्र (नव=नौ, रात्र=रात का समूह) (पु०) आश्विन-सुदी परीवा से ले नवमी तक के नौ दिन-रात, आश्विन, चैत, आसाढ़ और माघ शुक्ल-पक्ष के नौ दिन-रात नवरात्र कहलाते हैं, दुर्गापूजा के नौ दिन ।

नवल (नव=नया, ला=लेना) (वि०) नया, नवा, नवीन, सुंदर, मनोहर, (पु०) एक पाँदे का नाम ।

नवसंगम (पु०) प्रथम समागम, द्वपति का प्रथम मिलन ।

नवसर (पु०) आभूषण-विशेष, नवलरा हार ।

नवशिक्षक (शिव=गीतना) (पु०) नया पढ़नेवाला, सुबनदी ।

नवाई (श्री०) विनय, नम्रता, (वि०) नया ।

नवागत (पु०) अनिधि, अभी का आया हुआ ।

नवांश (नव+अंश) (पु०) नवाँ भाग ।

नवाड़ा (नाव) (पु०) एक प्रकार की नाव, छोटी नाव ।

नवाना (नव=नमन, नम=भुक्तना) (क्रि० ग०) झुकाना, नीचे करना, वश करना ।

नवानी (श्री०) ऐशो आराम, मनमाना व्यवहार, उच्छृंखलता ।

नवासा (पु०) नाती ।

नवाह (पु०) नौ दिन का अनुष्ठान, नवीन दिन, वर्ष का पहला दिन ।

नवी (श्री०) नोई, दूध दुहने के समय गाय के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी ।

नवीन (नव, नु=सराहना) (वि०) नया, नवा, नूतन ।

नवेद (श्री०) न्योता, निमंत्रण-पत्र ।

नवेली (वि०) नवीन, सुंदर, नया, तहण, युवा ।

नवेली (श्री०) युवती स्त्री, सुंदरी स्त्री ।



नवोद्गा ( नव+नवीना. उद्गा=स्त्री ) ( स्त्री० ) नई दयाही  
हुई, नई स्त्री, बनी ।

नव्य ( वि० ) नया ।

नशाखोर ( पु० ) नशा खानेवाला ।

नशाना ( कि० स० ) नष्ट करना, बरबाद करना ।

नशीला ( वि० ) मादक पदार्थ ।

नशतर ( पु० ) एक प्रकार की पतली और तेज़ छुरी  
जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं ।

नशतर देना ( मुहा० ) फोड़ा चीरना ।

नश्वर ( नश=नहीं दीखना, नाश होना ) ( पु० ) नाश  
होनेवाला, विनाशी, हानि करनेवाला, हिंसक ।

नष्ट ( नश=नाश होना ) ( पु० ) जो नाश हुआ, अष्ट,  
विनष्ट, मलमेट, मटियामेट ।

नष्टचेतन } ( वि० ) चेतनाहीन, अचेत, बेहोश ।  
नष्टचेष्ट }

नष्टप्रभा ( वि० ) तेज़हीन, प्रभाहीन ।

नष्टभ्रष्ट ( वि० ) टूटा-फूटा, बिगड़ा हुआ ।

नष्टा ( वि० ) व्यभिचारिणी, अष्टा, दुष्टा ।

नस ( स्त्री० ) रुधिरवाहिनी नलिका ।

नसकटा ( वि० ) नपुंसक, हिजड़ा ।

नसा ( स्त्री० ) नाक, ( पु० ) मद, नशा ।

नसाना } ( सं० नाशन, नश=नाश होना ) ( कि०  
नसावना } स० ) नाश करना, बिगाड़ना ।

नसीठ ( पु० ) अशकुन, अशुभ शकुन ।

नसीनी ( स्त्री० ) सीढ़ी, जीना ।

नसीपूजा ( स्त्री० ) हलपूजा, खेत जोतने के बाद जो  
हल की पूजा की जाती है ।

नसीब ( पु० ) भाग्य, तक्रदीर ।

नसीब होना ( मुहा० ) प्राप्त होना, मिलना ।

नसीबवर ( वि० ) भाग्यवान्, क्रिस्मनवर ।

नसाला ( वि० ) नशे की चीज़ें ।

नसीहत ( स्त्री० ) सीख, उपदेश, ज्ञानन-मलामत ।

नसूडिया ( वि० ) नम्रवाला, वह फोड़ा जिसमें नासूर  
हो गया हो, संक्रामक-रोगवाला अंग ।

नसूर ( पु० ) नासूर, नाङ्गप्रण, विकृत फोड़ा ।

नरुपा ( स्त्री० ) पशुओं को नाथने के लिये नाक में किया  
जानेवाला छेद ।

नरुय ( पु० ) नस, सूँघनी ।

नहलूँ ( पु० ) विवाह की एक रीति-विशेष जिसमें वर  
की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और  
उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है ।

नहन ( पु० ) रस्सा, पुरवट सींचने का रस्सा, लेजुर ।

नहना ( कि० अ० ) लगाना, जोड़ना, बाँधना, जोतना ।

नहनी } ( सं० नखहरणा ) ( स्त्री० ) नख काटने का  
नहरनी } औज़ार ।

नहलाना ( नहाना ) ( कि० स० ) स्नान कराना,  
अंग धोना ।

नहसून ( पु० ) नाख के गढ़ाने का चिह्न ।

नहान ( नहाना ) ( पु० ) स्नान ।

नहाना } ( सं० स्नान, वा अवगाहन ) ( कि० अ० )  
नहाना } स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अंग धोना,  
स्नानपर्व ।

नहानी ( नहाना ) ( स्त्री० ) कपड़ों से होने का समय,  
रजफूल ।

नहारी ( स्त्री० ) प्रातःकाल का जलपान, कलेवा, कलेऊ ।

नहारुआ ( पु० ) नार, जाँघ में अथवा और कहीं  
शरीर में एक सूत सा रोग जो निकलता है ।

नहियर ( पु० ) पीहर, मैका ।

नहीं ( सं० नहि, नष्ट=बाँधना, रोकना ) ( कि० वि० )  
निषेध, नमना, नाँह ।

नहसत ( पु० ) मनहूसी, उदासीनता ।

नहसत टपकना ( मुहा० ) मनहूसी बरसना ।

नहसत बरसना ( मुहा० ) मनहूसी के चिह्न प्रकट होना ।

नाइन ( स्त्री० ) नाई की स्त्री ।

नाई } ( सं० नापित ) ( पु० ) हजाम, हजामत  
नाऊ } बनानेवाला, उस्ताँ ।

नाई ( स्त्री० ) भाति, तरह ।

नाँदिया ( सं० नैदि ) ( पु० ) महादेव का बाहन, बैल ।

नाँव } ( सं० नाम ) ( पु० ) नाम संज्ञा, यश,  
नाऊँ } नामवरी ।

नाँह ( सं० न, वा नहि ) ( कि० वि० ) नहीं, निषेध, ना ।

नाक ( सं० नासिका ) ( स्त्री० ) नासा, नासिका, सूँघने  
की इंद्रिय ।

नाक ( न=नहीं, अक=दुःख अर्थात् जहा दुःख नहीं है और  
अक=बना है, अ=नहीं और क=सुख, अर्थात् सुख नहीं  
दुःख ) ( पु० ) स्वर्ग, देवलोक ।

नाक कटना ( मृदा० ) बेहूज्ञानी होना ।

नाक कटाना ( मृदा० ) अपमान करना, अनादर करना, पानी उतारना, बदनाम होना ।

नाक कटी होना ( मृदा० ) अपना मान खोना, अपनी बढ़ाई को मिटाना, बदनाम होना ।

नाक काटना ( मृदा० ) बेहूज्ञान करना, भारी दंड देना ।

नाक का बाल ( मृदा० ) जिसका बहुत मान हो, प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय, अधिक प्रिय ।

नाक चढ़ाना ( मृदा० ) क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्सा होना, नाराज होना ।

नाकों चने चघवाना ( मृदा० ) तंग करना, दंड देना, कष्ट देना ।

नाक पर सुपारी फाड़ना ( मृदा० ) घेंटना, अभिमान करना, सूब तंग करना ।

नाक-भों सिकोड़ना ( मृदा० ) अप्रसन्नता बतलाना ।

नाक में दम करना ( मृदा० ) सताना, तंग करना, श्याकुल करना ।

नाक रखना ( मृदा० ) अपना यश बना रखना, अपनी हूँह को बना रखना ।

नाक रगड़ना ( मृदा० ) खुशामद करना ।

नाकों आना ( मृदा० ) तंग हो जाना, हैरान होना ।

नाक सिकोड़ना ( मृदा० ) नाक चढ़ाना, अप्रसन्न होना, नाराज होना ।

नाकड़ा ( पु० ) नकड़ा, नाक का एक रोग ।

नाकपति ( नाक=स्वर्ग, पति=राजा ) ( पु० ) स्वर्ग का राजा, इंद्र ।

नाकनटी ( नाक=स्वर्ग, नटी=नाचनेवाली ) ( स्त्री० ) स्वर्ग की अप्सरा ।

नाकना ( क्रि० म० ) नाकों आना, तंग होना, डाकना, उछलकर कूटना ।

नाकपृष्ठ ( पु० ) स्वर्ग, स्वर्ग की भूमि ।

नाका ( पु० ) रस्ते का श्रेत, मुई का जेद या वेह, गली, राह, नाकेबंदी, ( मृदा० ) रस्ता बंद करना ।

नाका ( म० नाक ) ( पु० ) मगर, घड़ियाल, हागर ।

नाकाबंदी ( स्त्री० ) घिराव, घिरा डालना, आने-जाने की रुकावट ।

नाकाधिल ( वि० ) अयोग्य ।

नाकिन ( स्त्री० ) वह स्त्री जो नाक से बोले ।

नाकिस ( वि० ) बुरा, खराब ।

नाकेदार ( पु० ) नाका पर रहनेवाला, नाके की रक्षा करनेवाला ।

नाखना ( क्रि० म० ) नष्ट करना, खराब करना, रखना, रख छोड़ना ।

नाखूना ( पु० ) आँख का एक रोग ।

नाखुश ( वि० ) अप्रसन्न, क्रोधी ।

नाखुशी ( स्त्री० ) कोप, अप्रसन्नता, क्रोध ।

नाखून ( पु० ) नख, नह ।

नाखून लेना ( मृदा० ) नाखून काटना ।

नाग ( न=नहीं, अग=ठहरा हुआ ) ( पु० ) कश्यप मुनि की स्त्री कद्रु के बेटे जिनका मुँह मनुष्य का-सा और फण और पूँछ साँप की-सी होती है जो पानाल में रहते हैं और देवता कहलाते हैं, साँप, सर्प, हाथी, नागकेशर ।

नागकन्या ( नाग+कन्या ) ( स्त्री० ) नागों की अथवा पानाल के देवताओं की लड़कियाँ जो बहुत रूपवती और सुंदर होती हैं ।

नागकेशर ( पु० ) कृलों के एक पेड़ का नाम ।

नागदंत } ( नाग=हाथी, दंत=दान ) ( पु० ) हाथी-  
नागदंतक } दंत, दाँतों का टुकड़ा जो हाथी के दाँत की तरह होता है, ( स्त्री० ) खूँटी ।

नागदमन ( पु० ) पौधा-विशेष ।

नागदंति ( पु० ) नागदमन का पौधा । कहते हैं जहाँ इस पौधे की लकड़ी रहती है, सर्प नहीं जाते ।

नागपंचमी ( नाग+पंचमी ) ( स्त्री० ) माघसुदी पंचमी जिस दिन हिंदू लोग साँप की पूजा करते हैं ।

नागपाश ( नाग=साँप, पाश=फंदा ) ( स्त्री० ) वरुण का अस्त्र, फंदा, फाँसी, फाँस, अड़ाई फेरे के बंधन को नागपाश कहते हैं ।

नागफाँस ( सं० नाग+पाश ) ( स्त्री० ) वरुण का अस्त्र, फंदा, फाँसी, पाश ।

नागयल ( पु० ) दस हजार हाथियों का बल रखने-वाला, भीम ।

नागधेल ( सं० नागवल्ली ) ( स्त्री० ) पान की वेल, बेत-बूटे, घोड़े की चाल-विशेष ।

नागमाता ( स्त्री० ) कद्रु ।

नागमुख ( पु० ) गणेश, हाथी के समान मुखवाला ।

नागयष्टि ( स्त्री० ) लट्टा या खंभा-विशेष जो तालाब के बीचोबीच गाड़ा जाता है ।

नागर ( नगर=शहर ) ( वि० ) नगर का वासी, चतुर, प्रवीण, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

नागररंग ( पु० ) फल-विशेष, नारंगी, वृक्ष-विशेष ।

नागरवेल ( स्त्री० ) नागवल्ली, पान की लता ।

नागरमोथा ( पु० ) पौदा-विशेष, यह प्रायः जलाशयों के पास होता है, इसकी जड़ दवा के काम में आती है ।

नागराज ( पु० ) वासुकि, छंद-विशेष ।

नागरिक ( वि० ) नगर में उत्पन्न, नगर-संबंधी, चतुर, चालाक, सभ्य ।

नागरिपु ( नाग=हाथी, पिपु=वर्ग ) ( पु० ) सिंह, शेर, बाघ ।

नागरी ( नागर ) ( स्त्री० ) चतुर स्त्री, नागर की स्त्री, देवनागरी अक्षर वा भाषा ।

नागल ( सं० नागल, ललित=मिलना वा जाना ) ( पु० ) हल ।

नागलोक ( नाग+लोक ) ( पु० ) नागों का लोक, पानाळ ।

नागवार ( वि० ) बुरा, असहनीय, अप्रिय ।

नागशुद्धि ( स्त्री० ) मकान बनाने में नागों का विचार, वस्तु-शुद्धि ।

नागा ( सं० नाग ) ( पु० ) नाग संन्यासी, पूर्वी बंगाल की एक जाति, परत-विशेष, अनश्याय ।

नागिन { ( सं० नागा ) ( स्त्री० ) नाग की स्त्री,  
नागिनी } साँपिनी, सर्पिणी ।

नागोद ( पु० ) राज-विशेष ।

नागौर ( पु० ) मारवाड़ का एक नगर, यहाँ के गाय-बैल बहुत प्रसिद्ध हैं ।

नाँघना ( सं० लघन ) ( क्रि० अ० ) लाँघना, पार होना, उतरना, कूटना ।

नाच ( सं० नाच्य, वा नृत्य ) ( पु० ) नाचना, नृत्य, नाच्य, अंगों द्वारा भाव प्रदर्शित करना ।

नाच काठुना ( मुहा० ) नाचने के लिये तैयार होना ।

नाच नचाना ( मुहा० ) खिलाना, बिड़ाना, सताना ।

नाचनेवाले को घूँ घुट क्या ( मुहा० ) जिस काम को

करना उत्तमता से करना, जब कोई काम करने ही लगे तो लाज क्यों, अधीन करके जैसा चाहे वैसा काना ।

नाचीज़ ( वि० ) तुच्छ, निःसार, व्यर्थ ।

नाज़ ( पु० ) नज़रा, धमंड, मान ।

नाज़ उठाना ( मुहा० ) नज़रा सहना ।

नाज़ ( पु० ) अनाज, अन्न ।

नाजायज़ ( वि० ) अनुचित, ज़ेकानूनी, नियमविरुद्ध ।

नाज़िम ( पु० ) प्रबंधकर्ता ।

नाज़ुक ( वि० ) सुकुमार, कोमल, दुर्बल ।

नाज़ुक दिमाग ( वि० ) जो अधिक परिश्रम न कर सके ।

नाज़ुक मिज़ाज ( वि० ) थोड़ी-थोड़ी बातों पर क्रोध करनेवाला, सुकुमार स्वभाववाला ।

नाट ( नट=नागना ) ( पु० ) कर्णाटक देश, नाच, नृत्य ।

नाटक ( नट=नागना ) ( पु० ) दृश्यकाल्य का एक भेद, एक प्रकार का काव्य जो अभिनय आदि के द्वारा देखा जाय । जैसे "शकुंतलानाटक" "विक्रमोर्वशी" "वेणीसंहार" "उत्तररामचरित आदि", नट, नाचनेवाला ।

नाटकशाला ( स्त्री० ) नाटकगृह, थैटर खेलने का स्थान ।

नाटकावतार ( पु० ) एक नाटक के भीतर दूसरे नाटक का दिखाया जाना ।

नाटकी ( पु० ) रसों दिखानेवाला, नक़लची, नाटक करनेवाला ।

नाटकांश ( वि० ) नाटक-संबंधी, नाटक के पात्र, नाटक की कथा ।

नाटन ( पु० ) नाचना, नर्तन ।

नाटना ( क्रि० अ० ) नटना, कहीं बान से फिर जाना, प्रतिज्ञा तोड़ना ।

नाटा ( वि० ) बावना, दिगता, परत कद, छोटा बैल, तेला का नाटा ।

नाटिका ( स्त्री० ) दृश्यकाल्य के उपरूपक का एक भेद, इसमें कथा कल्पित होती है ।

नाटित ( वि० ) अभिनीत ।

नाट्य ( पु० ) नटीमुख, वेश्यापुत्र ।

नाट्य ( नट ) ( पु० ) नटों का काम, जैसे नाचना, गाना और बजाना ।

नाट्यरासक ( पु० ) एक उपरूपक का नाम, एकांकी नाटक ।

नाट्यशाला ( नाट्य+शाला ) ( स्त्री० ) नाचघर, रंगशाला, जहाँ नाटक होता हो ।

नाठ ( पु० ) नास्तिक, शून्यता, अभाव, नाश ।

नाठा ( पु० ) असहाय, अनाथ, अकेला ।

नाठी ( कि० प्र० ) नष्ट हुई, भागी, टल गई, मुकर गई, पछट गई ।

नाङ्ग ( स्त्री० ) गला, नरेंद्रा, घांटी ।

नाङ्गा ( पु० ) हज़ारबंद ।

नाङ्गिका ( स्त्री० ) एक घड़ी, माठ पल, घड़ी ।

नाङ्गिया ( पु० ) वैद्य, चिकित्सक ।

नाडि { ( सं० नड=गिरना ) ( स्त्री० ) धमनी, शिरा,  
नाडी } नड्ग, नस ।

नाडीग्रन्थ ( पु० ) नसों का घाव, नासूर ।

नात ( पु० ) कुटुम्ब, नातेदार, ननहन ।

नातर { ( सं० नान्यतर, वा नान्यथा, न=नहीं, अन्यतर  
नातरु } वा अन्यथा=ग्राम प्रकार ) ( कि० वि० ) नहीं तो ।

नाता ( सं० ज्ञातिय, ज्ञाति=जाति भाई ) ( पु० ) संबंध, अपनायत, रिश्तेदारी ।

नाताक्रान्त ( वि० ) दुर्बल, बलहीन ।

नातिन ( सं० नप्या ) ( स्त्री० ) बेटो की बेटो ।

नाती ( सं० नप्ता, न=नहीं, पत=गिरना ) ( अर्थात् नाती के होने में पितर अर्थात् पुरुषों में नहीं गिरने हैं ) ( पु० ) बेटो का बेटा, दोहना ।

नाते ( कि० वि० ) मिस से, संबंध में, लिये, निमित्त ।

नातेदार ( पु० ) संबंधी ।

नाथ ( नाथ=मागना, जियमें मागने हैं ) ( पु० ) स्वामी, मालिक, पति, धनी, योगियों की पदवी, जैसे गोरखनाथ, गंभीरनाथ, सुमेरुनाथ आदि कहलाते हैं ।

नाथ ( नाथ=मताना, दुःख देना ) ( स्त्री० ) रस्सी जो बैल के नाक में डाली जाती है ।

नाथना ( सं० नाथन, नाथ=मताना वा दुःख देना ) ( कि० सं० ) बैल की नाक छेदना, वशोभूत करना ।

नाथबाज ( पु० ) पराधीन, मालिक के साथ ।

नाँद ( स्त्री० ) बटोखा, गाय-बैल की सानी का बड़ा मिट्टी का बरतन ।

नाद ( नद=शब्द करना ) ( पु० ) शब्द, गर्ज, आवाज़, ध्वनि, मिट्टी का बरतन ।

नादन ( नाद+अन ) ( पु० ) शब्द करना, गर्जना, नाद करना ।

नादना ( कि० सं० ) आरंभ करना, स्वयं शब्द करना ।

नादान ( वि० ) मूर्ख, निर्बुद्धि, नासमझ ।

नादिरशाही ( स्त्री० ) अस्याचार, अन्याय, धर्म और क़ानून को तोड़ना ।

नादिहृद् ( वि० ) लौटाने में असमर्थ, न देनेवाला ।

नाधना ( कि० सं० ) जोतना, जोड़ना, बाँधना, लगाना, तत्पर कराना, चलाना ।

नाधा ( पु० ) नाधने की चमके की रस्सी ।

नानक ( पु० ) सिखों के मत का चलानेवाला ।

नानकपंथी { ( पु० ) नानक के मत की माननेवाला,  
नानकशाही } सिख ।

नानकार ( पु० ) माफ़ी इमीन, कर-रहित भूमि ।

नानखताई ( स्त्री० ) सौंधी खस्ता मिठाई-विशेष ।

नानबाई ( पु० ) रोटी बनाने और बेचनेवाला ।

नानसरा ( पु० ) ननिया समुद्र ।

नाना ( अव्य० ) अनेक प्रकार, भौति-भौति, उभयार्थ ।

नाना ( पु० ) माँ का बाप, मातामह ।

नानार्थ ( नाना+अर्थ ) ( पु० ) बहुत अर्थ, अनेक प्रयोजन, बहुत आशय ।

नानिहाल ( पु० ) नानी का घर ।

नानी ( स्त्री० ) माता की माता, नाना की स्त्री ।

नानी मरना ( मुहा० ) दुःख पड़ना ।

नानी याद आना ( मुहा० ) कष्ट होना, दुःख होना ।

नानुसर ( पु० ) अस्वीकार, नाहीं, संदेह ।

नान्दी ( नद=शब्द करना ) ( स्त्री० ) देवता-पितर जहाँ आनंद का शब्द करें, प्रशंसा, नकारा, नगारा, स्तुतिसंयुक्त आशीर्वाद ।

नान्दीमुख ( पु० ) वृद्धिआद, वृद्धिआदभुक् पितृगण, कुर्माँ के डारने का पट, कूप-मुख-बंधन ।

नान्ह ( वि० ) छोटा, बच्चा, बालक ।

नान्हरिया ( पु० ) छोटा बच्चा, प्यारा बालक ।

नान्हो ( वि० ) छोटा ।

नाप ( सं० मापना, वा नापना ) ( पु० ) माप, परिमाण, नापजोख, ( मुहा० ) नापतौल ।

नापना ( सं० नापन, मा=मापना ) ( कि० म० ) मापना,  
परिमात्र करना ।

नापित ( पु० ) नाई, हजाम ।

नाफा ( पु० ) मृगों के नाभि में की कस्तूरी की थैली ।

नाबदान ( पु० ) पनारा, नाखी, पनाखा, नरदा ।

नाबदान में मुँह मारना ( मुहा० ) बुरा और घृणित  
काम करना ।

नाबालिग ( वि० ) अठारह वर्ष से कम अवस्था का  
मनुष्य, अप्रसन्न वयस्क ।

नाबूद ( वि० ) नष्ट, ध्वस्त ।

नाभक ( पु० ) हृद्, हरीतकी ।

नाभारन ( स्त्री० ) भीरी जो घोड़े की नाभि के नीचे  
हो, यह दूषित मानी जाती है ।

नाभि ( नह=बांधना ) ( स्त्री० ) नाभ, नाभी, तोंदी, तुंडी,  
कस्तूरी, ( पु० ) इस नाम का राजा ।

नाभिकंटक ( पु० ) निकली हुई तुंडी या ढोंडी ।

नाभिगुडक } ( पु० ) तुंडी का उभरा अंश, नाभि  
नाभिगोलक } का आवर्त ।

नाभिपाक ( पु० ) बालकों का एक रोग जिसमें नाभि  
में घाव हो जाता है और वह पक जाती है ।

नाभिल ( वि० ) उभरी हुई नाभिवाला ।

नाभिसंबंध ( पु० ) गोत्र-संबंध ।

नाभील ( पु० ) उरुसंधि, स्त्रियों का कमर के नीचे का  
भाग, नाभी की चहुराई, कट ।

नाम ( नम=पुकारना ) ( पु० ) नावें, संज्ञा, पदवी, यश,  
ख्याति ।

नाम उछालना ( मुहा० ) बदनामी करना ।

नाम उठ जाना ( मुहा० ) नाम न रह जाना ।

नाम कमाना ( मुहा० ) मशहूर होना ।

नाम करना ( मुहा० ) नामी होना, नामवर होना,  
यशस्वी होना, विख्यात होना, प्रसिद्ध होना, नाम  
रखना, कोई बात पूरी तरह से न करना, दिखाने या  
उछाहना छुड़ाने भर के झिये थोड़ा सा करना ।

नाम का ( मुहा० ) नामधारी ।

नाम का कुत्ता न पालना ( मुहा० ) नाम से खिदना ।

नाम के लिये ( मुहा० ) थोड़ा सा कहने सुनने भर के  
झिये ।

नाम चढ़ना ( मुहा० ) नाम दर्ज होना ।

नाम चमकना ( मुहा० ) कीर्ति फैलना, प्रसिद्ध होना ।

नाम चलना ( मुहा० ) यादगार बनी रहना ।

नाम डुबोना ( मुहा० ) अपना यश खोना, बदनाम होना ।

नाम देना ( मुहा० ) नाम रखना ।

नाम धरना ( मुहा० ) नाम रखना, नाम उठराना,  
किसी नाम से पुकारना, खराब करके कहना, बुरा  
नाम रखना, बदनाम करना ।

नाम धराना ( मुहा० ) बदनामी कराना, नामकरण  
कराना ।

नामधेय ( पु० ) नाम, संज्ञा, नाम-वाचक ।

नाम निकालना ( मुहा० ) नामी होना, नाम करना,  
दोषी का नाम निर्णय करना ।

नाम पर जूता न लगाना ( मुहा० ) अर्थात् तुच्छ  
सम्भना ।

नाम पर मरना या मिटना ( मुहा० ) किसी के प्रेम  
में लीन होना ।

नाम रखना ( मुहा० ) नाम धरना, नाम देना, बदनाम  
करना, दोष लगाना ।

नाम लेकर माँग खाना ( मुहा० ) दूसरे मनुष्य के नाम  
से भीख माँग खाना ।

नाम लेना ( मुहा० ) सराहना, प्रशंसा करना, परमेश्वर  
का नाम लेना, अप करना, माफा फेरना ।

नाम होना ( मुहा० ) यश होना, यश फैलना ।

नामक ( वि० ) नाम से प्रसिद्ध ।

नामकरण ( नाम+करण ) ( पु० ) लड़के का नाम  
रखना, नाम देना, लड़के के पैदा होने के पीछे  
दसवें दिन नाम रखने का संस्कार अर्थात् रीति ।

नामकर्म ( पु० ) नामकरण-संस्कार ।

नामजूद ( वि० ) निश्चित या चुना हुआ, मशहूर ।

नामदार ( वि० ) नामी, प्रसिद्ध ।

नामधन ( पु० ) राग-विशेष ।

नामधराई ( स्त्री० ) बदनामी, निंदा

नामधाम ( पु० ) नाम और पता ।

नामधारक ( वि० ) नाममात्र का ।

नामनिशान ( पु० ) पता, ठिकाना ।

नामबोला ( पु० ) नाम लेनेवाला ।

नामयज्ञ ( पु० ) यज्ञ-विशेष जो केवल नाम या धूमधाम  
के लिये किया जाता है ।

नामर्द (वि०) नपुंसक, क्लीब, भीरु, डरपोक, कायर ।  
नामलेखा (पु०) नाम लेनेवाला, नाम स्मरण करने-  
वाला, उत्तराधिकारी, संतति, वारिस ।

नामवर (वि०) नामी, प्रसिद्ध ।

नामवरी (स्त्री०) कानि, गुहरन, प्रसिद्धि ।

नामांकित (वि०) जिस पर नाम लिखा या खुदा हो ।

नामाकुल (वि०) अयोय, नालायक, अनुचित ।

नामिक (वि०) नाम-संबंधी, संज्ञा संबंधी ।

नामित (वि०) कुहाया हुआ ।

नामी (सं० नाम) (वि०) विख्यात, यशस्वी, उजागर ।

नामोद्गामी (वि०) विद्यान, प्रसिद्ध ।

नामा होना (पु०) नामवर होना, प्रसिद्ध होना,  
विख्यात होना, उजागर होना ।

नामुर्नाम्य (वि०) अनुचित, अयोय ।

नामुमकिन (वि०) असंभव ।

नामुसी (स्त्री०) बदनामी, निंदा, वेदगुर्ता ।

नास्य (वि०) अकान्ते योग्य ।

नायँ (पु०) नाम (प्रत्यय) नहीं, नाहीं ।

नाय (पु०) नीति, नय, उपाय, युक्ति, नेता, अगुआ ।

नायक (सं०) जाना या नाना (पु०) अगुवा,  
मुखिया, सरदार, प्रधान, सेनापति, थोड़ा सी सेना  
का सरदार, प्रेमाभिलाषी पुरुष, नाचने और गाने  
में निपुण पुरुष, ये चार प्रकार के होते हैं—धीरोदात्त,  
धीरोद्भूत, धीर ललित और धीर प्रशान्त ।

नायकी (पु०) राग विशेष ।

नायकी कान्हड़ा (पु०) राग-विशेष जिसमें सब  
कोमल स्वर होते हैं ।

नायकी मल्लार (पु०) संपूर्ण जाति का राग-विशेष,  
जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

नायत (पु०) धैर्य ।

नायन (सं०) नदों की स्त्री ।

नायथ (पु०) मुनीम, मुन्तार, सहायक, सहकारी ।

नायिका (नायक) (स्त्री०) नायक की स्त्री, जवान  
स्त्री वा लवली, कूटनी, हूनी, रूपवती स्त्री, सुंदर  
स्त्री, साहित्य में नायिका तीन प्रकार की हैं (१)  
सौंदर्या जो केवल अपने पति से प्रेम करे, २ परलौका  
जो परलोक पुरुष से प्रेम करे, ३ सामान्या जो धन लेकर  
किसी से प्रेम करे) जैसे दोहा "रविकिया व्याही

नायिका, परकीया परवाम । सो सामान्या नायिका,  
जाके धन सों काम", अवस्था-भेद से प्रत्येक नायिका  
आठ प्रकार की हैं (१ प्रोषितपतिका, २ खंडिता, ३  
कलहोतमिता, ४ विप्रलब्धा, ५ उत्क्रांतता, ६ वामकशय्या,  
७ स्वाधीनपतिका, ८ अस्मिमारिका) ।

नार (सं० नार्ग) (स्त्री०) लुगाई, स्त्री, (सं० नाल)  
बंदूक की नाल व नली, कमलों की नाल, गरदन,  
जुलाहों की डरकी, नाल, बहुत मोटा रस्सा, स्त्रियों  
के घोंघरा कसने की मृत् की डोरी, घरने के लिये  
जानेवाले चौपायों का झुंड, तस्मा, रस्सी, इज्जारबंद ।

नारक (पु०) नरक, नरकस्थ प्राणी ।

नारकी (नरक) (वि०) नरकवासी, नरक भोगनेवाला  
जीव, नरक ।

नारकीट (पु०) एक प्रकार का कीड़ा, किसी को आशा  
द्वर निराश करनेवाला, अधम मनुष्य ।

नारगा (सं० नार्ग) (स्त्री०) केवला, कौला, एक  
नारंज प्रकार का खटमोटा फल ।

नारद (नार=ज्ञान, नरवपुत्र या जलमपुत्र, दा=देना या  
सहित करना) (पु०) एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का  
पेटा और दश ऋषियों में का एक देवऋषि, (विशेष  
के लिये भा० १० देखिए) ।

नारना (क्रि०) गंवा पना लगाना, भाँवना, ताड़ना ।

नारमन (पु०) फ्रांस के नारमंडी प्रदेश का निवासी,  
जहाजों का रस्सा बांधने का मूँटा ।

नारा (पु०) इज्जारबंद, हल के जुग में बँधी हुई रस्सी,  
छोटी नदी ।

नारान्य (नार=मनुष्य का समूह, या=जागें और में, नम्=  
भाषा) (पु०) नीर, वाण, लोहे का वाण, दुर्दिन ।

नाराची (स्त्री०) सुनारों का काटा, तराजू ।

नाराज (वि०) खका, रुठ, अप्रसन्न ।

नारायण (नार=मनुष्य का समूह, अयन=स्थान, अर्थात्  
जिनमें सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=पानी, अयन=स्थान,  
अर्थात् जो जलमपुत्र में मंते हैं) (पु०) विष्णु का  
नाम, आदिपुरुष ।

नारायणक्षेत्र (पु०) गंगा के प्रवाह से चार हाथ तक  
की भूमि ।

नारायणी (नारायण) (स्त्री०) विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी,  
गंगा, शतावरी, श्रीकृष्ण की सेना का नाम जो

कुरुक्षेत्र में दुर्योधन की सहायता के लिये दी थी।

नाराशंस ( वि० ) प्रशंसा-संबंधी।

नारिक ( वि० ) जलका, आत्म-संबंधी, आध्यात्मिक।

नारिकेल ( नारि=डाठा, क=हवा वा पानी, एल=गलना, अर्थात् जिसकी डाठा हवा में वा पानी में गड़ती है )  
( पु० ) नारियल, श्रीफल।

नारियल ( म० नारिकेल ) ( पु० ) श्रीफल, नारिकेल,  
एक फल का नाम।

नारियली ( स्त्री० ) नारियल का दुका, नारियल की  
ताड़ी, नारियल का खोपड़ा।

नारी ( म० ) ( स्त्री० ) लुगाई, स्त्री, आरत, अबला,  
वनिता, जन।

नारीतरंगक ( वि० ) जार, व्यभिचारी, मियों के हृदय  
को चंचल करनेवाला पुरुष।

नारुतुंद ( वि० ) अवाहन, जिसके शरीर पर किसी प्रकार  
का अघात न लग सके।

नारु ( पु० ) 'नहारु' शब्द को देखो।

नाल ( नलु=बाधना व नमकना ) ( स्त्री० ) नली, बंदूक  
की मुहरी वा नली, मृगाल, कमल की डोंडी, डोंडी,  
जुआ की चिरागी।

नालकी ( स्त्री० ) एक प्रकार की पालकी।

नाला ( पु० ) नहर, छोटी नदी, सेना, पनाला, मोरी।

नालिक ( नालु=डक ) ( पु० ) बंदूक, भुण्डी, कमल,  
भैंसा।

नालिका ( स्त्री० ) नाली, छोटी नाल या डंडल।

नालिजंघ ( पु० ) डोम, कौट्रा।

नालिनी ( स्त्री० ) नथने का नात्रिक नाम।

नालिश ( स्त्री० ) फरियाद।

नानी ( स्त्री० ) जल बहने वा पनना मार्ग, मोरी, डंड  
करने का गड्ढा, ढरका, धमनी, कमल, हाथियों की  
कनछेदनी, घड़ी।

नालीग्रण्य ( पु० ) नासूर।

नालौट ( वि० ) मुकर जानेवाला, इनकार करनेवाला,  
वादा करके हट जानेवाला।

नाव ( म० नौ ) ( स्त्री० ) नौका, डोंगी, तरणी, पोत,  
वशिष्ट, होड़।

नावक ( पु० ) एक प्रकार का छोटा बाण, मधुमक्खी का  
डंक।

नावघाट ( पु० ) नावों के ठहरने का घाट।

नावना } ( सं० नमन, नम=भुक्तना ) ( क्रि० स० )  
नाना } भुक्ताना, निहुराना, सिर भुक्ताना, नमस्कार  
करना।

नावर ( स्त्री० ) नाव, नौका।

नावरि ( स्त्री० ) नाव भुक्ताना, नाव फेरना, नाव पर का  
खेल।

नावी ( पु० ) वह रकम जो किसी के नाम लिखी हो।

नावक्रिफ ( वि० ) अनजान, अनभिज्ञ।

नाविक ( नौ ) ( पु० ) मंकी, कर्णधार, केवट, मल्लाह।

नावेल ( पु० ) उपन्यास, कादंबरी।

नाश ( नश=नाश होना ) ( वि० ) धांस, बरबादी, नष्ट  
होना, क्षय, हानि, बिगाड़।

नाशक ( नश=नाश करना ) ( वि० ) नाश करनेवाला,  
उजाड़ू, बिगाड़ करनेवाला, हानि करनेवाला।

नाशन ( नाशक्यन ) ( पु० ) नाश करना, बिगाड़ देना,  
उड़ा देना।

नाशवान ( वि० ) नाश होनेवाला।

नाशनीय } ( वि० ) नाश करने योग्य, उजाड़ने  
नाशितव्य } लायक।  
नाश्य }

नाशी ( नाशु=ई ) ( वि० ) नाश करनेवाला, उजाड़,  
उजाड़ू।

नाशुक ( वि० ) नरवर, नष्ट होनेवाला।

नाशना ( पु० ) कलेवा, जलपान, पनपियाव।

नाम ( म० नाश ) ( पु० ) नाश, ( म० नश्य, नाया=  
नाक ) ( स्त्री० ) हुलास, सूँघनी।

नामना ( म० नाश ) ( क्रि० अ० ) भागना, पनाना, पीट  
देना, ( क्रि० म० ) नाश करना।

नासपाल ( पु० ) कच्चे अनार का छिलका जो रंग  
निकालने के काम में आता है, कच्चा अनार, एक  
प्रकार की आनशवाजी।

नासपाली ( वि० ) कच्चे अनार के छिलके के रंग का।

नासमभ ( वि० ) अशोध, अज्ञान।

नासा } ( नास=शब्द करना ) ( स्त्री० ) नाक, सूँघने  
नासिका } की इद्रिय, मोटा, अद्भुत।

नासाग्र ( पु० ) नाक की नोक।

नासापुट ( पु० ) नथना।

नासाबोध ( पु० ) नाक का वह छेद जिसमें नथ आदि पड़नी जाती है ।

नासायोनि ( पु० ) वह नपुंसक जिसे प्राण करने पर उड़ापन हो, सौगंधिक नपुंसक ।

नासालु ( पु० ) कायफज ।

नासाघंश ( पु० ) नाक का बाँसा, नाक की हड्डी ।

नासाशोष ( पु० ) नाक में कफ सूख जाने का रोग ।

नासीर ( नाम=शब्द करना ) ( पु० ) सेना का मुख, आगे चलनेवाली सेना ।

नास्ति ( न=नहीं, अस्ति=है, अय=होना ) ( अव्य० ) नहीं है, नहीं, अभाव ।

नास्तिक ( नास्ति=नहीं है अर्थात् परमात्मिक और ईश्वर वा सृष्टि का कर्ता नहीं है ऐसा कहनेवाला ) ( वि० ) ईश्वर और परब्रह्म को नहीं माननेवाला, अनोश्वरवादी ।

नास्तिकवाद ( पु० ) ईश्वर को न मानना, नास्तिकों का ऋग्वा, कुक की बातें ।

नास्तित्व ( पु० ) अभाव, शून्यता, नाश ।

नाह ( सं० नाथ ) ( पु० ) स्वामी, सालिक, नाथ, पति ।

नाहक ( कि० वि० ) व्यर्थ, वृथा, बेमतलब ।

नाहट ( वि० ) बुरा, नटखट ।

नाहनूह ( स्त्री० ) इनकार ।

नाहर ( पु० ) बाघ, शेर ।

नाहरसाँस ( पु० ) घोंके की दम फूलने की बीमारी ।

नाहि } ( सं० नाहि ) ( कि० वि० ) नहीं, न ।

नि ( उपस० ) नहीं, विना, रहित, नीचे, नित्य, सदा, हास, निश्चय, अच्छी तरह से, सब तरह से, बीच में, मध्य, भीतर, बाहर, क्षेत्र, कौशल, आश्रय, दान, मोक्ष, भाव, बंधन, स्थापन, निवेश ।

निःशंक ( निर्=नहीं, शंका=डर ) ( वि० ) निडर, निर्भय ।

निःशेष ( निर्=नहीं, शेष=बाकी ) ( वि० ) पूरा, समाप्त, जहाँ कुछ नहीं बचे ।

निःश्वास ( निर्=बाहर, श्वास=सास ) ( पु० ) मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, पवन, साँस, प्राण-वायु, पछतावा, हाय, ठंडी साँस, लंबी साँस ।

निःसंदेह ( निर्=विन, संदेह=शक ) ( वि० ) विना संदेह, निश्चय, बेशक ।

निःसरण ( निर्+सृ=जाना ) ( पु० ) निकलना, द्वार, मार्ग, मृत्यु, उपाय, मोक्ष, निर्गम ।

निःसारण ( पु० ) निकालना, निछावर, घर के निकलने का दरवाजा ।

निःस्पृह } ( निर् वा नि=नहीं, स्पृहा=इच्छा ) ( वि० )  
निःस्पृह } जिसको किसी बात की इच्छा न हो, इच्छा-रहित, अनिच्छुक, बेइवाहिश ।

निःस्वादु ( निर्=विन, स्वादु=रस ) ( वि० ) बेस्वाद, बेरस, फीका, अखोना ।

निश्चर ( अव्य० ) निकट, पास, समीप ।

निश्चराना ( कि० म० ) निकट जाना, समीप पहुँचना ।

निश्चान ( पु० ) अंत, परियाम ।

निश्चामत ( स्त्री० ) अलभ्य पदार्थ ।

निकट ( नि=पास, कट=जाना ) ( अव्य० ) करीब, पास, नगीच, नजदीक, समीप ।

निकटवर्ती ( वि० ) नजदीक का ।

निकटस्थ ( निकट+स्था ) ( वि० ) पास रहनेवाला, करीबी, नजदीकी ।

निकटंक ( सं० निष्कटंक ) ( वि० ) अकटंक, शत्रु रहित, आराम से, सुखी, बेज़रज़शा ।

निकती ( स्त्री० ) छोटा तराजू ।

निकंद } ( नि=नहीं, कंद=जड़ ) ( पु० ) नाश,  
निकंदन } नाश करनेवाला, उखड़ा हुआ ।

निकम्मा ( सं० निष्कर्म, निर्=विन, कर्म=काम ) ( वि० ) जो कुछ काम का न हो, बेकाम ।

निकर ( नि, कृ=विक्षेपना, फैलना ) ( पु० ) समूह, भीड़-भाड़, झुंड, राशि, निधि ।

निकर्मा ( वि० ) आलसी, जो काम न करे ।

निकल ( स्त्री० ) धातु-विशेष ।

निकलना ( म० नि, कल=जाना ) ( कि० अ० ) बाहर आना, बाहर जाना, निकलना, फटना, उत्पन्न होना, बढ़ जाना ।

निकल चलना ( मुहा० ) भागना, टक जाना, बढ़ चलना, आगे निकलना, बहुत बोलना अथवा अपना गुण दिखाना ।

निकल जाना ( मुहा० ) भाग जाना, चला जाना ।

निकल पड़ना ( मुहा० ) बाहर आ जाना ।

निकल भागना ( मुहा० ) भाग जाना ।



निकष ( पु० ) कसौटी, कसौटी पर चढ़ाने का काम ।

निकसना ( सं० नि, कम्=जाना ) ( कि० अ० ) निक-  
खना, बाहर आना ।

निकाई ( फा० नेक ) ( स्त्री० ) शोभा, भलाई, अच्छाई ।

निकाज ( वि० ) निकम्मा, बेकाम ।

निकाम ( नि=नहीं, काम=चाहना ) ( वि० ) जिसको  
किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, निःस्पृह,  
बेतमा, कामना-रहित, ( कि० वि० ) आप से, इच्छा  
से, मन से ।

निकाय ( नि, चि=इकट्ठा करना ) ( पु० ) समूह, घर,  
स्थान, शरीररहित, परमात्मा ।

निकार ( पु० ) पराभव, हार, अपकार, अपमान,  
निकास, ईश्वर का रस पकाने का कढ़ाहा ।

निकारण ( पु० ) मारण, बध ।

निकाल ( निकालना ) ( पु० ) निकास, निसार, बाहर  
आना, उपाय, युक्ति, जोड़, तोड़ ।

निकाल डालना ( मुहा० ) काटना, काट डालना,  
खारिज कर देना, अलग करना ।

निकाल देना ( मुहा० ) छुड़ा देना, बाहर करना, अलग  
कर देना, दूर करना ।

निकाल लाना ( मुहा० ) ले आना, बचा लाना, ढूँढ़  
लाना ।

निकाल लेना ( मुहा० ) ले जाना, उखाड़ लेना, काढ़  
लेना, छुँट लेना ।

निकालना } ( सं० निकामन, नि, कम्=जाना ) ( कि०  
निकासना } म० ) बाहर लाना, बाहर करना, ले लेना,  
उखाड़ना, प्रकट करना, काटना, बनाना ।

निकाला ( पु० ) बहिष्कार, निष्कासन ।

निकास ( स्त्री० ) प्रस्थान, रवानगी, मुनाफ़ा, प्राप्ति,  
जदाई, भरती, बिक्री, खपत, चुगी, रक्बा ।

निकासपत्र ( पु० ) वह कागज़ जिसमें जमाखर्च और  
बचत का हिसाब दिखाया गया हो ।

निकाह ( पु० ) मुसलमानों पद्धति के अनुसार किया  
हुआ विवाह ।

निकियाना ( कि० स० ) मोचकर धज्जी-धज्जी अलग  
करना ।

निकुत ( वि० ) खंडित, जड़ से कटा हुआ ।

निकुति ( स्त्री० ) तिरस्कार, अपकार, नीचता, पृथ्वी ।

निकुती ( वि० ) तुष्ट, नीच, शठ ।

निकुष्ट ( नि=नीचे, कृष्=लेंचना ) ( वि० ) नीच, अधम,  
तुच्छ, जाति से निकाला हुआ ।

निकेत } ( नि=अच्छी तरह से, कित्=रहना, बसना )  
निकेतन } ( पु० ) घर, स्थान ।

निकोसना ( कि० स० ) दाँत निकालना ।

निकौनी ( स्त्री० ) निराई, निराने की मज़दूरी ।

निक्का ( वि० ) छोटा, नन्हा ।

निकीड़ ( पु० ) कौतुक, क्रीड़ा, तमाशा ।

निकरण ( पु० ) बोन की भनकार, किन्नरों का शब्द ।

निलण ( पु० ) चुंबन ।

निल्ला ( स्त्री० ) जूँ का आँदा, लीख ।

निल्लित ( नि=नीचे, लिप्=फेंकना ) ( पु० ) फेंका हुआ  
डाला हुआ, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ ।

निक्षभा ( स्त्री० ) ग्राह्यणी ।

निक्षेप ( पु० ) धरोहर, अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।

निखट्टर ( वि० ) कड़े दिल का, कठोर चित्त का ।

निखट्टू ( वि० ) सुस्त, आलसी, उबाऊ, निर्दयी, कठोर,  
नितुर, निकम्मा ।

निखंड ( वि० ) मध्य, सटीक, ठीक ।

निखनन ( पु० ) खोदना, खनना, मिट्टी, गाढ़ना ।

निखरना ( कि० अ० ) साक्र होना, चमकना, उजलना,  
उजला होना, फर्छा होना ।

निखरवाना ( कि० स० ) धुलवाना, साक्र करवाना ।

निखरी ( स्त्री० ) पक्षी, घी की पक्षी हुई रसोई, सखरी  
का उलटा ।

निखर्व ( पु० ) अधिक, दीर्घ, ह्रस्व, बौणा, दस खर्व ।

निखयख ( वि० ) बिलकुल, सब ।

निखात ( नि, खन्=खोदना ) ( पु० ) खप्ता, गर्त,  
खंडक ।

निखार ( पु० ) स्वच्छता, सफाई, सजाव, शृंगार ।

निखारना ( कि० स० ) मैल छुँटाना, साक्र करना,  
उजला करना, फर्छा करना ।

निखारा ( पु० ) शक्कर बनाने का कढ़ाहा जिसमें रस  
उबाला जाता है ।

निखालिख ( वि० ) विशुद्ध, जिसमें और कोई मेल न हो ।

निखिल ( नि=नहीं, खिल=शेष, बाकी ) ( वि० ) पूरा,  
संपूर्ण, सब, सारा ।

निखोट (वि०) निर्मल, निर्दोष, खोटहीन, स्वच्छ, दोषहीन ।  
निखोरना (क्रि० म०) नोचना, चचोरना, वह से  
खरोचना, खरोचना ।

निगड़ (पु०) वेड़ी, हथकड़ी, जंजीर, आँट,  
मोटी जंजीर ।

निगड़ित (नि, गड़=नाचना) (वि०) बैधा हुआ,  
कसा हुआ ।

निगढ़ (नि, गढ़=कहना) (पु०) कहना, औपम्य, कथन ।

निगदित (नि, गद=कथित) (वि०) कथित, कहा हुआ ।

निगम (नि, गम=जाना) (पु०) वेद, पवित्र लेख ।

निगमनिवास (निगम=वेद, निवास=रहनेवाला) (पु०)  
वेदों में रहनेवाला, विष्णु, प्रत्ना ।

निगमागम (पु०) वेद-शास्त्र ।

निगम (पु०) भोजन ।

निगमण (पु०) निगलना, गन्ना ।

निगरा (पु०) निरोचक ।

निगरा (वि०) खालिश ।

निगराना (क्रि० म०) निर्णय करना, पृथक् करना,  
स्पष्ट करना ।

निगरानी (स्य०) देख-रेख, निरीक्षण ।

निगर (वि०) झलका ।

निगलना (म० नि, गल=गलना, वा गुं गलवाना) (क्रि०  
म०) लीलना, गल उधारना, घोंटना, खा जाना,  
गल करना, दूसरे का धन या कोई वस्तु मार बैठना ।

निगह (स्य०) नजर दृष्टि ।

निगहवान (पु०) रक्षक ।

निगहचाना (स्य०) रगधाली, देखरेख, चौकसी ।

निगाढ़ (पु०) भाषण, कथन ।

निगाढ़ा (वि०) बका ।

निगार (पु०) भक्षण, चित, बेलबूटा, नकारा ।

निगालिका (स्य०) वण-वृत्ति विशेष ।

निगाली (स्य०) दुर्घे की नली ।

निगम (वि०) अर्पण गोपनीय ।

निगुफ (पु०) समुद्र, गुल्फ ।

निगुरा (वि०) अद्विजित ।

निगूढ़ (नि+गूढ़) (वि०) गहरा, सूक्ष्म, गंभीर, गुप्त,  
छिपा हुआ ।

निगूहन (पु०) क्षिपाना, गुप्त करना, गोपन, छिपाव ।

निगृहीत (वि०) धरा हुआ, पकड़ा हुआ, आक्रान्त,  
पीड़ित, दंडित ।

निगोड़ा (नि=नहीं, गोड़=पाव, तो इसका अन्वयार्थ हुआ  
बिना पैर का) (वि०) निकम्मा, अकर्म, कुकर्म,  
दुष्ट, चंडाल ।

निग्रह } (नि, ग्रह=पेना) (पु०) रोक, विरोध,  
निग्रहण } कलह, युद्ध, भर्त्सन, जलाना, मर्यादा,  
पराभव, मानखंडन, चिकित्सा, हठ, क्रोध, बंधन,  
बुद्धि, धमकी, रोप ।

निग्राह (पु०) शाप, आक्रोश ।

निगंटु (नि, गंटु=कटका करना) (पु०) औपम्य-कोष-  
संग्रह, औपम्यों का गुणदोषमूचक ग्रंथ ।

निघरघट (वि०) निर्लज्ज, बेहया, जिसे कहीं ठिकाना न हो ।

निघगा (वि०) जिसे घरवार न हो ।

निघात (पु०) प्रहार, अनुदात्त स्वर ।

निचय } (नि, नि=चुनना, इकट्ठा करना) (पु०)

निचाय } राशि, डेर, समूह, समुच्चय ।

निचिंत } (म० निश्चित) (वि०) वै क्रिक, वेशोच,  
निश्चित } यशोनी, सावधान ।

निश्चित होना (महा०) काम पूरा करना, निबटाना,  
वै क्रिक होना, क्रुस्त पाना ।

निचाई (स्य०) या नीचान, बुद्धि ।

निचोड़ (वि०) निचोड़ना (पु०) किसी काम का अंत, सिद्धांत,  
नतीजा, निष्पत्ति, बोझ, भार, वह चीज जिस पर  
कोई दूसरी चीज टहरे, सारवस्तु, सार, सुझावा ।

निचोड़ना (क्रि० म०) गीले कपड़े से पानी निकास-  
जना, मरोड़ना, दबाना, गारना, पेरना ।

निचोना (क्रि० म०) निचोड़ना ।

निचोल (पु०) आच्छादन वस्त्र, धोड़नी, उत्तरीय  
वस्त्र घाघरा, लहंगा, कपड़ा ।

निचोला (पु०) कंचुक, आंग, बक्रा ।

निचौंहा (वि०) नीचे की ओर झुका हुआ ।

निछुका (पु०) निराला, पकान, निर्जन ।

निछुल (वि०) लज्जहीन, कपट-रहित ।

निछुला (वि०) बिना मिलावट का, एकमात्र, बिलकुल ।

निछुल (वि०) विशुद्ध, खलिस, केवल, एकमात्र ।

निछावर (स्य०) उतारा, बखिदान, कुरबान, बखि-  
हारी, इनाम, नेग ।

निङोह } ( वि० ) निष्ठुर, निर्दय ।  
निङोही }

निज ( नि, जन्=पैदा होना ) ( वि० ) अपना, स्व, आप का, आत्मीय ।

निजकाना ( कि० अ० ) समीप आना, पास पहुँचना ।  
निजकारी ( स्त्री० ) बँटाई की क्रसल, वह जमीन जिसके खगान में उससे उत्पन्न वस्तु ही ली जाय ।

निजगति ( स्त्री० ) अपनी दशा, अपनी हालत ।

निजतंत्र ( पु० ) स्वतंत्र, स्ववश, खुदमुखार ।

निजवृत्ति ( स्त्री० ) अपनी जोविका, अपना पेशा ।

निजा ( पु० ) विवाद, झगड़ा ।

निजाम ( पु० ) बंदोबस्त, इंतजाम, हैदराबाद के नवाबों की उपाधि ।

निजोर ( वि० ) निर्बल ।

निझाना ( कि० स० ) ताक-झाँक करना, आँक में छिप कर देखना ।

निझोटना ( कि० स० ) झपटना, खींचकर छीनना ।

निझोभ ( पु० ) हाथी का एक नाम ।

निट्टर ( वि० ) जिस खेत या जमीन में कुछ दम न हो ।

निटल ( पु० ) मस्तक, कपाल ।

निटोल ( पु० ) टोला, मुहल्ला, पुरा, बस्तो ।

निटल्ला } ( वि० ) निकम्मा, सुस्त, आलसी, बेकार,  
निटल्लू } खाली, बे-रोजगार ।

निटुर ( सं० निष्ठुर ) ( वि० ) कठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर, जिसका दिल पत्थर-सा कड़ा हो ।

निटुरता } ( सं० निष्ठुरता ) ( स्त्री० ) कठोरता, निर्द-  
निटुराई } यता, कड़ापन, बेरहमी ।

निटुराव ( पु० ) निर्दयता, निटुराई ।

निठोर ( पु० ) कुठँव, बुरी जगह, बुरी दशा ।

निडर ( सं० निर्दर, निर्=नहीं, ड=डरना ) ( वि० ) निर्भय, निश्चक, निःशंक, ठीठ, बेडर, अशंक, बेझीर ।

निढाल } ( सं० निर्दाल, निर्=नहीं, ढल=ढिलाना )  
निढोल } ( वि० ) अचेत, सुन्न, मुनसान, निश्चक,  
अचल, पस्त, शिथिल, अशक्त, सुस्त, थकामाँदा ।

निडिल ( वि० ) कसा, कसा या तना हुआ जो ढीला न हो ।

नित ( सं० नित्य ) ( कि० वि० ) सदा, सर्वदा, निरंतर, हमेशा, हमेशा, रोज-रोज ।

नित उठ } ( मुहा० ) सदा, निरंतर, रोज-रोज,  
नित उठके } हमेशा, हरदम ।

नितःनित ( मुहा० ) सदा, नित उठ, हरदम, रोज-रोज, निरंतर, हमेशा ।

नितप्रति ( सं० प्रतिनित्य, प्रति=हरएक, नित्य=सदा ) ( कि० वि० ) नित-नित, नित उठ, सदा, हर रोज, रोज-रोज, हमेशा ।

नितंथ ( नि=नीचे, तंथ=जाना, वा स्तंभः ठहरना ) ( पु० ) कमर के नीचे का भाग, पुट्टा, कूछा, चूतड़ ।

नितराम ( अ० ) सर्वदा, हमेशा, सदा ।

नितल ( पु० ) सान पाताखों में से एक ।

नितांत ( वि० ) एकांत, अतिशय, निरंतर, बहुत अधिक, एकदम, निरा, निपट ।

नित्य ( नि=निश्चय, अर्थान जो निश्चय ही हो ) ( कि० वि० ) सदा, सर्वदा, नित, हमेशा, सनातन, निरंतर, लगातार, मामूली ।

नित्यकर्म ( नित्य=सदा का, कर्म=धर्म का काम ) ( पु० ) स्नान, संध्या, वंदन, तर्पण, पूजा, जप, तप आदि पट्कर्म, हरएक दिन का अवश्य करने योग्य काम ।

नित्यगति ( पु० ) वायु, हवा ।

नित्या ( स्त्री० ) पार्वती, मनसादेवी, एक शक्ति का नाम ।

नित्यानित्य ( सं० नित्ये+अनित्य ) ( कि० वि० ) निरंतर हमेशा, हमेशागी, जावेदानी ।

नित्यानंद ( नित्य+आनंद ) ( पु० ) सदा सुख, सदा हर्ष ।

नित्यशः ( अ० ) रोज, प्रतिदिन, सदा, सर्वदा ।

नित्यंभ ( पु० ) खंभा, स्तंभ ।

निथरा ( वि० ) छर्छा, स्वच्छ, निर्मल ।

निथारना ( कि० स० ) ढाँखना, उलझना, निखारना, पानी को अथवा और किसी रस को साफ करना, निर्मल करना ।

निटई ( वि० ) निर्दयी ।

निद्रना ( सं० निरादर ) ( कि० स० ) निरादर करना ।

निदर्शन ( नि, दृश्=दिखाना ) ( पु० ) उदाहरण, दृष्टांत, प्रमाण ।

निदर्शना ( स्त्री० ) काव्यालंकार-विशेष ।

निदाघ ( नि, दह्=जलाना, नाश करना ) ( पु० ) ग्रीष्म-काल, ग्रीष्म-ऋतु, घाम, उष्ण, पसीना ।

निदान ( नि=निश्चय, दा=देना ) ( कि० वि० ) अंत में,

पोछे, ( पु० ) आदिकारण, मूलकारण, सबूत, हुक्म, नज़ीर ।  
 निदाकृण ( वि० ) भयानक, कठिन, कठोर ।  
 निदिध्यासन ( पु० ) पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ, चिन्ता-विशेष ।  
 निदेश ( नि, दिश्=हुक्म देना ) ( पु० ) आज्ञा, हुक्म, निकट, भाजन, बर्तन ।  
 निदि ( स्त्री० ) निधि, खज़ाना ।  
 निद्र ( पु० ) अस्थ-विशेष ।  
 निद्रा ( नि, द्रा=माना ) ( स्त्री० ) नींद ।  
 निद्रालु ( निद्रा ) ( वि० ) निद्रालु, उँघासा, निद्रासा, जिसको नींद आ रही हो ।  
 निद्राशन ( निद्रा+अशन ) ( पु० ) सोना और खाना, रुबाव व घुर ।  
 निद्रित ( वि० ) सोया हुआ, नींद में भरा हुआ ।  
 निभङ्गक ( सं० निर्दर, निर्=नहीं, द=उरना ) ( वि० ) निडर, निर्भय अशंक ।  
 निधन ( नि, हन्=मारना ) ( पु० ) मौत, मरण, मृत्यु, ( नि=नहीं, धन=दौलत ) ( वि० ) निर्धन, कंगाल, गरीब ।  
 निधनता ( निधन ) ( स्त्री० ) कंगालपन, गरीबी ।  
 निधान ( नि=भीतर, धा=रखना ) ( पु० ) घर, आधार, स्थान, जगह, ठाँव, कुबेर का भंडार, खज़ाना, निधि ।  
 निधि ( नि=भीतर, धा=रखना ) ( पु० ) कुबेर का भंडार, खज़ाना, संपदा, कोष, आधार जगह, स्थान, घर, आसरा ।  
 निधेय ( वि० ) रखने योग्य, स्थापनीय ।  
 निनद् ( पु० ) शब्द, ध्वनि ।  
 निनाद् ( पु० ) शब्द, रव, आहट, गर्जन, ध्वनि ।  
 निनाया ( पु० ) खटमख, खटकिरवा ।  
 निनायी ( पु० ) मुख का एक रोग-विशेष ।  
 निनार ( वि० ) संपूर्ण, बिजकुल, निराला, इकला ।  
 निनाँवा ( पु० ) छारूरोग ।  
 निनीषा ( नी=प्राप्त करना, पेदा करना ) ( स्त्री० ) लेने की इच्छा, हासिल करने का हरादा ।  
 निनीषु ( वि० ) प्राप्ति की इच्छा करनेवाला ।  
 निनेता ( पु० ) सरदार, नायक ।

निनीना ( कि० सं० ) नीचे करना, झुकाना ।  
 निन्दक ( निन्द=बुराई करना ) ( वि० ) निंदा करनेवाला, बुराई करनेवाला, हजो करनेवाला ।  
 निन्दना ( सं० निन्दन, निन्द=बुराई करना ) ( कि० सं० ) कलंक लगाना, दूषण, बुरा कहना, निंदा करना ।  
 निंदा ( निन्द=निंदा करना ) ( स्त्री० ) बुराई, कलंक, दोष, अपवाद, कुरा, धिक्कार ।  
 निंदास ( स्त्री० ) जँवास, झपकी ।  
 निन्दित ( निन्द=निंदा करना ) ( वि० ) दोष लगाया हुआ, दूषित, बुरा, बदनाम ।  
 निन्द्य ( निन्द=निंदा करना ) ( वि० ) निंदा के योग्य, बुराई करने के लायक ।  
 निन्दकर्म ( पु० ) कुस्तिनकर्म, बुरा काम ।  
 निन्नानये ( सं० नवनवति, नव=नौ, नवति=नव्वे ) ( वि० ) नव्वे और नौ, ६६ ।  
 निन्नानये के फेर में पड़ना ( मुहा० ) धन के इकट्ठा करने ही में लगा रहना, दुःख में फँसना ।  
 निपट ( वि० ) बहुत, अधिक, अत्यंत, बिलकुल ।  
 निपटना ( कि० सं० ) पूरा होना, समाप्त होना, फ़ारिश होना ।  
 निपटाना ( कि० सं० ) ठहराना, पूरा करना, समाप्त करना ।  
 निपटारा ( पु० ) निर्याय, फ़ैसला ।  
 निपटारू ( पु० ) निर्यायक, निपटानेवाला ।  
 निपतन ( नि=नीचे, पत्=गिरना ) ( पु० ) नीचे गिरना ।  
 निपतित ( वि० ) च्युत, भ्रष्ट, गिरा हुआ ।  
 निपात ( नि=नीचे, पत्=गिरना ) ( पु० ) गिरना, मौत, मृत्यु, मरण, व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय ।  
 निपात ( पु० ) नाश किया, उजाड़ दिया ।  
 निपातक ( निपात् + अक ) ( वि० ) नाशक उजाड़ने-वाला, दहानेवाला ।  
 निपातना ( सं० निपात ) ( कि० सं० ) गिराना, नाश करना, मारना ।  
 निपातित ( वि० ) अधःपतित, निक्षिप्त, नीचे गिरा हुआ, उजाड़ा हुआ ।

१. निपाताधोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः ।  
 अनेकार्थाः स्मृतासर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥

निपान ( नि+पा=पीना ) ( पु० ) जलाधार, चरही, कुएँ का चढ़बचा, हौदी, कठरा, आहाव, दोहनो, दूध दुहने का पात्र ।

निपीडन ( नि+पीड=मारना, मथना ) ( पु० ) पीड़ा देना, तकलीफ देना ।

निपीडित ( वि० ) पीड़ा दिया गया, घातित, निचोड़ा गया ।

निपुण ( नि+पुण=पवित्र होना ) ( वि० ) प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।

निपुणार्ह ( स्त्री० ) चतुरार्ह, अजलमर्दी ।

निपूता ( सं० निपुत्र ) ( वि० ) जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, निःसंतान, बे-झौल्लाद, अनपत्य ।

निपोडना { ( कि० स० ) दाँत निकालना, निको-  
निपारना { सना ।

निफोट ( वि० ) रस, सार-सार ।

निषकौरी ( स्त्री० ) नीम का फल ।

निषटना { ( सं० निवर्तन ) ( कि० अ० ) हो चुकना,  
निषडना { निपटना, खर्च होना, नाश होना, पूरा होना, खत्म होना, मल त्यागना ।

निषटी ( वि० ) छटी हुई, चट ।

निषटेरा ( पु० ) सफाई, निर्णय, छुटकारा ।

निषद ( वि० ) बँधा हुआ, गुँथा हुआ ।

निबंध ( पु० ) प्रमाण, बंधन, प्रबंध, कारण, अनाह-रोग, मृत्वादि रोग, ग्रंथ की वृद्धि, संग्रह-विशेष, माह-वारी, साखाना, दैवीसंपत् ।

निबंधन ( बंध्=बंधना ) ( पु० ) बंधन, बंधेज, रोक, कैद ।

निषल ( सं० निर्बल ) ( वि० ) दुबला, दुर्बल, कमजोर ।

निषाह ( सं० निर्वाह ) ( पु० ) पूरा करना, निर्वाह, पूरा, समाप्त, गुजारा, बपरा ।

निषाहना ( सं० निर्वहण, निर्=निश्चय, वह्=सहना, ले जाना ) ( कि० स० ) पूरा करना, सिद्ध करना, समाप्त करना, पार लगाना, बचाना, रक्षा करना, वचन पूरा करना, अपना विश्वास बनाए रखना, व्यवहार करना ।

निषाह ( वि० ) टिकाऊ, स्थायी, चिरस्थायी ।

निषुकना ( कि० अ० ) छुड़ाना, छुटकारा पाना, सिकुड़ना, छोटा होना ।

निवेडना { ( सं० निवर्तन ) ( कि० स० ) पूरा करना,  
निवेडना { निपटाना, चुकाना ।

निवेडा { ( सं० निवर्तन ) ( पु० ) निबटारा, छुटकारा,  
निवेडा { पूरा करना ।

निवेरू ( वि० ) निर्णायक ।

निबौरी ( स्त्री० ) निमकौरी, नीम का फल ।

निभ ( नि=पास, भा=चमकाना ) ( वि० ) बराबर, समान, सदृश, ( पु० ) कपट, छल, व्याज ।

निभना ( सं० निर्वहण ) ( कि० अ० ) पार लगाना, होना, पूरा होना, बन जाना ।

निभाना ( कि० स० ) निबाहना, चलाना, रक्षा करना ।

निभाव ( पु० ) निर्वाह ।

निभृत ( नि, भृ=भरना ) ( वि० ) नम्र, अचल, निश्चल, एकाग्र, निर्जन, बुद्धिमान्, ( पु० ) गृहीत, लिया गया, छिपा, छुक्रिया ।

निभृतम् ( अव्य० ) बलारकार, हठ, आग्रह ।

निम ( पु० ) सूची, सूजा, कर्तन, कतरनी, घोंसला, क्लेश ।

निमकहराम ( वि० ) अविश्वासी, विश्वासघातक ।

निमकी ( स्त्री० ) नीबू का अचार ।

निमग्न ( नि=नीचे, मग्=दूबना ) ( वि० ) डूबा हुआ, मग्न ।

निमज्जन ( नि=नीचे, मग्=दूबना ) ( पु० ) स्नान, नहाना, जल में डूबना, गुस्ल करना ।

निमनार्ह ( स्त्री० ) सुंदरता, अच्छापन ।

निमनाना ( कि० स० ) सुंदर करना, अच्छा बनाना ।

निमात्ता ( वि० ) सावधान, जो उन्मत्त न हो ।

निमान ( पु० ) ठलुवाँ स्थान, नीची जगह ।

निमाना ( वि० ) नीचा, ठलुवाँ ।

निमंत्रण ( नि, मंत्र=बुलाना ) ( पु० ) :योता, बुलाहट, बुलौआ ।

निमंत्रित ( वि० ) :योता गया, बुलाया गया ।

निमि ( पु० ) एक राजा का नाम जो इक्ष्वाकु राजा का पुत्र था ।

निमित्त ( नि, मिद+त ) ( पु० ) कारण, हेतु, सबब, लिये, माग्य, भाग, शकुन, फल, शक्य ।

निमिष ( पु० ) पलक, चाँखों का टकाना, पलक मारने का समय, पलक का एक रोग-विशेष ।

निमिषक्षेत्र ( पु० ) नैमिषारण्य ।

निमिषित ( वि० ) निमीक्षित, मित हुआ ।

निमीलन ( माल्=मीचना ) ( पु० ) संकोचन, आँख मीचना, पलक का गिरना, आँख का झपकना, एक क्षण, मृत्यु, तंदा, ऊँच, बड़ी नींद ।

निमीलित ( वि० ) मुद्रित, बंद कर लिया ।

निमिष } ( नि, मिप्=पलक मारना ) ( पु० ) पलक, पल,  
निमेष } क्षण, लव ।

निमुह्य ( वि० ) चुपका, कम बोलनेवाला, न बोलनेवाला ।

निमूल ( वि० ) मूलरहित ।

निमेष ( पु० ) निमेष, पलक का गिरना, आँख का झपकना, क्षण, पल, आँख का एक रोग जिसमें आँखें फटती हैं ।

निमेषक ( पु० ) पलक, खद्योत, जुगनु ।

निमेषण ( पु० ) आँख मुँदना, पलक गिरना ।

निमोना ( पु० ) चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों को मसाले के साथ घी में भूनकर बनाई हुई रसेदार तरकारी ।

निमोनी ( स्त्री० ) वह दिन जब ईश्वर पहलेपहल काटी जाती है ।

निम्न ( नि=नीचे, धा=ग्रन्थाम करना, याद करना ) ( वि० ) नीचे, जैल, गहरा ।

निम्नग ( पु० ) नीचे जानेवाला ।

निम्नगा ( निम्न=नीचे, गम्=जाना ) ( स्त्री० ) नदी ।

निम्नोच्च ( पु० ) सूर्य का अस्त होना ।

निम्नोच्चनी ( पु० ) वरुण की नगरी का नाम ।

निम्नोच्चा ( स्त्री० ) एक अप्सरा का नाम ।

नियत ( नि, यप्=रोकना ) ( वि० ) रोका हुआ, ठहरा हुआ, निश्चित, मुक़रर किया हुआ, ( कि० वि० ) लगातार ।

नियंतव्य ( वि० ) शासन योग्य, नियमित होने योग्य ।

नियंता ( नि, यप्=त ) ( पु० ) शिल्पक, सारथी, पशु-प्रेरक, चालक ।

नियंत्रित ( वि० ) नियम से बंधा हुआ, क़ायदे का पाबंद ।

नियतात्मा ( वि० ) योगी, जो आत्मा को वश में रखे, संयमी, जितेंद्रिय ।

नियताप्ति ( स्त्री० ) नाटक में अन्य उपायों को छोड़ एक ही उपाय से फलप्राप्ति का निश्चय ।

नियति ( स्त्री० ) प्रमाण, ईमान, धर्म, बंधेज, ठहराव ।

नियम ( नि, यप्=रोकना, ठहराना ) ( पु० ) वचन, शर्त, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, धर्म का काम, जैसे—व्रत, जागरण, प्रार्थना, यज्ञ आदि—रीति, चखन, व्यवहार, क़ायदा ।

नियमित ( वि० ) क्रमबद्ध, नियमबद्ध, बाक़ायदा ।

नियमी ( पु० ) नियम पालन करनेवाला ।

नियर ( सं० निकट ) ( कि० वि० ) पास, नज़दीक, जैसे “नियर गढ़वा, सियरे पानो ।”

नियराना ( नियर ) ( कि० अ० ) पास आना, नग-चाना, पहुँचना, करीब आना ।

नियुक्त ( नि, युज्=मिलना ) ( वि० ) लगा हुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, मुक़रर किया, मशगूल ।

नियान ( पु० ) अन्न, परिणाम ।

नियाम ( पु० ) नियम ।

नियामक ( वि० ) नियम करनेवाला, नियम-निर्माता, शासक, प्रभु, माँझी, मल्लाह ।

नियामकगण ( पु० ) रसायन में पारे को मारनेवाली ओषधियों का समूह ।

नियामत ( स्त्री० ) दुर्लभ पदार्थ, अलभ्य पदार्थ, स्वादिष्ट भोजन, धन, दौखत, माल ।

नियार ( पु० ) जौहरी या सुनारों की दुकान का कूड़ा कतवार ।

नियारा ( वि० ) न्यारा, पृथक्, अलग, निर्णय, क्रैसला ।

नियारिया ( पु० ) चतुर मनुष्य, चालाक आदमी, सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालनेवाला, छानबीन करनेवाला, तर्क-वितर्क करनेवाला ।

नियाय ( पु० ) न्याय, न्याय ।

नियुक्त ( वि० ) नियोजित, लगाया हुआ, तैनात, मुक़रर, प्रेरित, ठहराया हुआ ।

नियुक्ति ( स्त्री० ) मुक़ररी, तैनाती ।

नियुत् ( पु० ) वायु का अरब ।

नियुत ( नि, यु=मिलना ) ( वि० ) दस लाख ।

नियुत्वत् ( पु० ) बायु ।

नियुद्ध ( पु० ) बाहुयुद्ध, हाथाबाँही, कुश्ती ।

नियोग ( नि, युज्=मिलना ) ( पु० ) आज्ञा, प्रेरणा, हुक्म, ताकीद, काम, शुशल, अनुमति, देवर या पति के किसी गोत्रज से संतानाभाव में संतान उत्पन्न कराना ।

नियोगी ( पु० ) अशुभचित्तक, बदध्वाह, अहत्कार, कारकुन, जो किसी स्त्री के साथ नियोग करे ।

नियोजन ( नि, युज्=मिलना ) ( पु० ) प्रेरणा, ताकीद, ( कि० स० ) लगाना, मिलाना, तैनात या मुक़रर करना ।

नियोद्धा ( पु० ) मल्लयोद्धा, पहलवान, कुश्ती लड़ने-वाला ।

निर् ( उपस० ) नहीं, बिना, निश्चय, बाहर, अच्छी तरह से ।

निरंकार ( सं० निराकार ) ( वि० ) आकाररहित, बिना आकार का, अस्वरूप, ( पु० ) परमेश्वर, विष्णु ।

निरंकुश ( निर्=बिना, अंकुश=आंकुश ) ( वि० ) बिना रुकावट, नहीं रोका हुआ, स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला, स्वतंत्र, वैश्वदेव, उच्छृंखल ।

निरखना ( सं० निरीक्षण ) ( कि० स० ) गौर से देखना, ताकना ।

निरंग ( वि० ) अंगरहित, केवल, खाली, रूपक-अलंकार का एक भेद, कामदेव ।

निरंजन ( निर्=चला गया है, अंजन=मल अथवा अंधकार तमोगुण आदि ) ( वि० ) निर्मल, निस्पृह, स्वच्छ, निर्दोष, काम व क्रोध से रहित, बेमक्र, बेरिया, परमेश्वर, परब्रह्म ।

निरंजना ( स्त्री० ) पूर्णिमा, दुर्गा का एक नाम ।

निरंजनी ( स्त्री० ) साधुओं का एक संप्रदाय, ये कौटीन पहनते तथा तिलक और कंठी धारण करते हैं; मारवाड़ में इनके अखाड़े बहुत हैं ।

निरत ( नि=भीतर, रत=लगा हुआ ) ( वि० ) लगा हुआ, नियुक्त, आसक्त, तत्पर, मशगुल ।

निरतना ( कि० स० ) नाचना, नृत्य करना ।

निरति ( स्त्री० ) अत्यंत प्रीति, जिस होने का भाव, खोन होने का भाव ।

निरतिशय ( वि० ) हृद् दर्जे का ।

निरधानु ( वि० ) शक्तिहीन, वीर्यहीन, अशक्त ।

निरधार ( पु० ) निश्चय, निर्णय, ठीक ।

निरधारना ( कि० स० ) निश्चय करना, स्थिर करना, समझना ।

निरंतर ( निर्=नहीं, अंतर=बीच ) ( कि० वि० ) लगा-तार, नितउठ ।

निरन्न ( वि० ) निराहार, जो अन्न न खाए हो ।

निरन्नेमुँह ( मुहा० ) बिना कुछ खाए, बासीमुँह, जैसे यह दवा निरन्ने मुँह पीनी चाहिए ।

निरपना ( वि० ) ग़ैर, बेगाना, जो अपना न हो ।

निरपराध ( निर्=नहीं, अपराध=पाप ) ( वि० ) निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध, बेक़मूर ।

निरपवर्त्त ( पु० ) जिसमें भाजक के द्वारा भाग लगे ( गणित )

निरपवाद ( वि० ) जिसकी कोई बुराई न की जाय, निर्दोष, जिसका कभी अन्यथा न हो ।

निरपाय ( वि० ) जिसका विनाश न हो ।

निरपेक्ष ( वि० ) बेपरवा, अलग, तटस्थ, जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो ।

निरपेक्षा ( स्त्री० ) अवज्ञा, निराशा, अपेक्षा ।

निरवंशी ( वि० ) जिसे वंश या संतान न हो ।

निरवर्ती ( पु० ) विरामी, त्यागी ।

निरभिमान ( वि० ) अहंकारशून्य, अभिमानरहित ।

निरभ्र ( वि० ) बिना बादल का, मेघशून्य ।

निरमना ( कि० स० ) बनाना, निर्माण करना ।

निरमसोर ( पु० ) एक जड़ी जिससे अक्रोम के विष का प्रभाव दूर हो जाता है ।

निरमित्र ( वि० ) जिसका कोई शत्रु न हो ।

निरमोही ( वि० ) जिसे किसी प्रकार का मोह न हो ।

निरय ( पु० ) नरक, दुर्गति, दोषत्रय ।

निरगल ( निर्=नहीं, अगल=संकली ) ( वि० ) निर्बाध, बेरोक, निरंकुश, बेजंजीर, बेसौकल का ।

निरर्थक ( निर्=नहीं, अर्थ=प्रयोजन ) ( वि० ) निष्प्रयोजन, वृथा, निष्फल, अर्थहीन, बेकार्यदा ।

निरवकाश ( निर्=प्रवकाश ) ( पु० ) फुरसत का अभाव, लुटी का अभाव ।

निरवग्रह ( वि० ) बाधरहित, निबाध, अपनी इच्छा के अनुसार ।

निरवच्छिन्न ( कि० वि० ) लगातार, क्रमशः, क्रमबद्ध ।

निरवयव ( निर्=नहीं, अवयव=दोष ) ( वि० ) निर्दोष, बेपेच ।

निरवधि ( वि० ) अपार, असीम, बेहद, निरंतर, लगातार, बराबर, सदा, संतत ।

निरवयव ( वि० ) अंगों से रहित, निराकार ।

निरवलंब ( वि० ) आधार-रहित, निराश्रय, अवलंबहीन ।

निरवसित ( वि० ) निर्वासित, जो ऊंची जातियों से अलग हो, जिसके स्पर्श या भोजन से पात्र आदि अशुद्ध हो जायें । ( चांदाल आदि )

निरवस्कृत ( वि० ) परितस्कृत, साक किया हुआ ।

निरवाना ( कि० म० ) निराहं का काम करना, खेत की घास-पान आदि साक करना ।

निरवारना ( कि० म० ) हटाना, टालना, निवारण करना, आहं हुई विपत्ति को दूर करना ।

निरशन ( पु० ) उपवास, भोजन न करना ।

निरस ( नि=विन, रस=स्वाद ) ( वि० ) फीका, बेस्वाद, अलोना, फीका ।

निरसंक ( वि० ) शंका-रहित, बेखटके, निःशंक ।

निरसन ( निर्=अपन, अत=फेकना ) ( पु० ) परित्याग, अनिश्रेय, वध, निकारना ।

निरस्त ( वि० ) हार गया, फेंका गया, मारा गया, भस्मित, जलाया गया, लस्तपस्त, गिरा ।

निरस्त ( वि० ) अस्त्रहीन, निरायुध ।

निरहंकार ( वि० ) अभिमान-रहित, सरल, सादा-स्वभाव ।

निरा ( सं० निरालय, निर्=बाहर, एकांत, आलय=जगह ) ( अर्थ० ) केवल, मात्र, बिजकुल, मित्र ।

निराई ( स्त्री० ) खेत से घास-पान आदि का निकालना ।

निराकरण ( पु० ) मिली हुई वस्तु को अलग करना, फैसला करना, निबटारा, शंका मिटाना ।

निराकांत ( वि० ) निःस्पृह, आकांक्षारहित ।

निराकार ( निर्=नहीं, आकार=रूप ) ( वि० ) अस्वरूप, निरंकार, आकारहीन, ( पु० ) परमेश्वर, अरूप, ब्रह्म ।

निराकुल ( वि० ) निःशंक, निश्चित ।

निराकृत ( वि० ) अपमानित, निरस्कृत, अस्वीकृत ।

निरास्त्र ( वि० ) अस्त्रहीन, बिना अस्त्र का ।

निरागस ( वि० ) पाप-रहित, निरपराध, निर्दोष ।

निरादर ( निर्=नहीं, आदर=मान ) ( पु० ) अपमान, अमान, अप्रतिष्ठा, बेहूज्जतो, बेकदरी ।

निराधार ( वि० ) निराश्रय, असहाय, असत्य ।

निराना ( कि० म० ) निकाई करना, खेत से घास-पान निकालना ।

निरापद ( वि० ) सुखी, आपत्तिशून्य, निर्विघ्न ।

निरापन ( वि० ) अपना नहीं, अनास्मीय ।

निरामय ( निर्=नहीं, आमय=रोग ) ( वि० ) तंदुरुस्त, नीरोग, सुखी, ( पु० ) सुअर, वन का बकरा ।

निरामिष ( निर्=नहीं, आमिष=मांस ) ( वि० ) मांस विना, बिना मांस का ( भोजन ) ।

निरायुध ( निर्=नहीं, आयुध=शस्त्र ) ( वि० ) बिना शस्त्र, बिना हथियार ।

निरार ( वि० ) न्यारा, अलग, पृथक्, निनार ।

निरालंब ( वि० ) निराश्रय, आलंब-रहित ।

निरालस ( वि० ) तरार, मुस्तैद, आलस्य-रहित ।

निराला ( सं० निरालय, निर्=बाहर, एकांत, आलय=जगह ) ( पु० ) एकांत, अलग, निरा, केवल, मात्र, ( वि० ) अनूठा, निर्जन, अद्भुत, अनोखा ।

निरावना ( कि० म० ) खेती से कृषा-करकट जुदा करना, साक करना, पछोरना ।

निराश ( निर्=नहीं, आश=उम्मेद ) ( वि० ) आशाहीन, नाउम्मेद, बेवहाग, बेभरोसा ।

निराशा ( स्त्री० ) आशा का न होना, आशा का अभाव ।

निराश्रय ( निर्=नहीं, आश्रय=आमरा ) ( वि० ) बिना आसरे, निराधार, निरावलंब ।

निराहार ( निर्=विन, आहार=खाना ) ( पु० ) उपवास, उपास, फाका, ( वि० ) बिना भोजन किए, बिना खाये ।

निरिच्छ ( वि० ) इच्छारहित, निरभिलाष ।

निरिच्छुना ( कि० म० ) देखना, निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष करना ।

निरिन्द्रिय ( वि० ) इंद्रिय-रहित, जिसके इंद्रिय न हो ।

निरी ( स्त्री० ) केवल, निरा, निपट ।

निरीक्षक ( पु० ) जाँच करनेवाला, देखनेवाला ।

निरीक्षण ( निर्=निश्चय, ईक्ष=देखना ) ( पु० ) देखना, दर्शन, दृष्टि, नज़र करना, ताकना ।

निरीक्षित ( वि० ) देखा हुआ, दृष्ट, जाँच किया हुआ ।



निरीश्वरवाद ( पु० ) ईश्वर के अस्तित्व को न मानना, नास्तिक दर्शन, चार्वाक दर्शन, दर्शन का एक सिद्धांत ।

निरीश्वरवादी ( वि० ) नास्तिक, ईश्वर को न मानने-वाला ।

निरीह ( निर्=नहीं, ईहा=इच्छा, चेष्टा ) ( वि० ) जिसकी किसी बात की अथवा चीज की इच्छा न हो, निःचेष्ट, निःरुह, विना नयाज, छाछचरहित ।

निरुक्त ( निर्=निश्चय, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना ) ( पु० ) वेद का एक अंग जिसमें वेद के शब्दों का अर्थ लिखा है, वेद का व्याकरण और कोष, ( वि० ) कहा हुआ, कथित ।

निरुक्ति ( स्त्री० ) व्याकरणानुसार शब्दों की व्याख्या ।

निरुच्छास ( वि० ) अधिक भीड़, जहाँ सौँस लेने तक की जगह न हो, सौँस का न आना, हर्ष का अभाव ।

निरुत्तर ( निर्=नहीं, उत्तर=जवाब ) ( वि० ) चुप, अवाक्, लाजवाब, बेजवाब ।

निरुत्साह ( निर्=विन, उत्साह=उमंग ) ( वि० ) जिसके मन में किसी बात की उमंग न हो, सुस्त, आलसी, ठीका, ( पु० ) उत्साह की कमी ।

निरुद्ध ( वि० ) धेरा हुआ, धेरा डाला हुआ, रोका हुआ ।

निरुद्यम ( वि० ) उद्यमहीन, निकम्मा, बेकार ।

निरुद्यमी ( वि० ) उद्योगहीन, बेकार, निकम्मा ।

निरुद्योगी ( वि० ) जिसे कोई काम न हो, जो कोई काम-धंधा न करे ।

निरुद्धेग ( वि० ) निराकुल, निश्चित, जो ध्याकुल न रहे ।

निरुपद्रव ( वि० ) शांत, उपद्रव-शून्य, निरुपात ।

निरुपद्रवी ( वि० ) शांत, झगड़ा-टंटा न करनेवाला ।

निरुपम ( निर्=नहीं, उपमा=बराबरी ) ( वि० ) जिसकी बराबरी न हो सके, अनूप, अनुपम, अनुस्य, अपूर्व, बेमिसल ।

निरुपयोगी ( वि० ) अनुपयोगी, निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा ।

निरुपाधि ( निर्=नहीं, उपाधि=गुण नाम, विशेषण वा छल ) ( वि० ) उपाधिरहित, गुणरहित, निर्गुण, शुद्ध, निर्मल, बेप्रशस्त्र, बेरुग्ना ।

निरुपाय ( वि० ) छाचार, जिसको कोई उपाय न हो ।

निरुवरना ( कि० अ० ) मुक्त होना, छुटकारा पाना, उद्धार पाना, उबरना, सुलभना ।

निरुद्ध ( वि० ) प्रसिद्ध, परंपरागत, विख्यात, विदित, बहुत दिनों से चला आया, अंकुरित, कुंभारा ।

निरुद्धलक्षणा ( स्त्री० ) वह लक्षणा जिसमें शब्द का ग्रहीत अर्थ रुद्ध हो गया हो अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजनवश ही न ग्रहण किया गया हो ।

निरूप ( निर्=नहीं, रूप=आकार ) ( वि० ) निराकार, अस्वरूप, अरूप, बेसूरत, ( पु० ) परमेश्वर, वायु, देवता, आकाश ।

निरूपण ( निर्=निश्चय, रूप=आकार बाँधना, वा देखना ) ( पु० ) वर्णन, निर्णय, निर्द्धार, विचार, दर्शन, देखना, किसी विषय का विवेचनापूर्ण निर्णय ।

निरूपना ( कि० अ० ) निश्चित करना, निर्णय करना ।

निर्ऋति ( स्त्री० ) नैऋत्य कोण की स्वामिनी, राक्षसी, मृत्यु, दरिद्रता, विपत्ति ।

निरेखना ( कि० सं० ) निरखना, देखना ।

निरै ( पु० ) नरक ।

निरोग ( निर्=नहीं, रोग=बीमारी ) ( वि० ) भला, चंगा, अरोग, तंदुरुस्त ।

निरोगी ( पु० ) स्वस्थ, तंदुरुस्त ।

निरोट ( वि० ) कुरूप, बदशकल, बदसूरत ।

निरोध ( पु० ) रोक, रुकावट, बंधन, धरा, नाश, योग में चित्त को समस्त वृत्तियों को रोकना ।

निरोधक ( वि० ) रोकनेवाला, जो रोकता हो ।

निरोधन ( पु० ) रोक, रुकावट, पारे का छूटा संस्कार ।

निरोधी ( वि० ) निरोध करनेवाला ।

निर्ख ( पु० ) भाव, दर ।

निर्ख्यंदी ( स्त्री० ) भाव या दर निश्चित करने की क्रिया ।

निर्गत ( निर्=बाहर, गम्=जाना ) ( पु० ) निकला हुआ, बाहर गया हुआ ।

निर्गंध ( निर्=नहीं, वा विना, गंध=वास ) ( पु० ) बिना वास का, बिना महक का, गंधरहित ।

निर्गम ( निर्=बाहर, गम्=जाना ) ( पु० ) निकलना, बाहर जाना, निकास ।

निर्गमन ( पु० ) निकलने का काम, निकलना, द्वार ।

निर्गर्व ( वि० ) गर्व या अभिमान-रहित ।

निर्गुण ( निर्=नहीं, गुण=हुनर, चतुर्गई, वा सत, रज, तम ) ( पु० ) परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म, ( वि० ) निर्विकार, निराकार, निर्जन, सत, रज और तम इन तीनों गुणों से रहित, मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा ।  
 निर्गुडी ( स्त्री० ) वृक्ष-विशेष, ओषधि-विशेष ।  
 निर्गूढ़ ( पु० ) वृक्ष का कोटर, ( वि० ) बहुत हो गूढ़ ।  
 निर्ग्रन्थ ( पु० ) श्रौद्ध चरणक, दिगंबर, एक प्राचीन मुनि का नाम, ( वि० ) शरीर, देवकूक, निर्धन ।  
 निर्घट्ट ( पु० ) क्लिष्टरहित, शब्द या ग्रंथ-सूची ।  
 निर्घर्षण ( निर्=निर्गन्ध, घर्ष=गर्दना ) ( पु० ) घिसना, रगड़ना ।  
 निर्घात ( पु० ) वह शब्द जो हवा में बहुत तेज चलने से होता है ।  
 निर्घोष ( निर्+गुप=शब्द करना शब्द, आवाज़ ।  
 निर्वृण ( वि० ) जिसे वृणा न हो, जिसे घुरे कामों से वृणा या लज्जा न हो, अति नीच, अयोग्य, निकम्मा, निर्दित ।  
 निर्जल ( वि० ) निष्कपट ।  
 निर्जन ( निर्=विना, जन=मनुष्य ) ( वि० ) एकांत, जहाँ कोई मनुष्य न हो, मुनसान ।  
 निर्जर ( निर्=नहा, जग=बुढ़ापा ) ( पु० ) देवता, कभी बुढ़ा न होनेवाला, अमृत, ( वि० ) अजर, अमर ।  
 निर्जल ( निर्=विन, जल=पानी ) ( पु० ) जंगल, मैदान, महस्थल, ऐसी जगह जहाँ पानी न मिले, ( वि० ) ऊपर, उजाड़, पानी-रहित जलविहीन, सूखी ( धरती ) ।  
 निर्जल व्रत ( पु० ) वह व्रत या उपवास जिसमें वती जल तक न पीए ।  
 निर्जला एकादशी ( स्त्री० ) जेठ-सुदी एकादशी जिस दिन खोग निर्जल व्रत करते हैं ।  
 निर्जित ( निर्=नहीं, जि=जीतना ) ( वि० ) अजय, अपराजित, अजीत ।  
 निर्जीव ( निर्=विन, जीव=पाण ) ( वि० ) अचेत, जड़, प्राणहीन, अशक्त ।  
 निर्भर ( निर्=नीचे, भू=उपर का पटना वा गिरना ) ( पु० ) झरना, पहाड़ का सोता, चरमा ।  
 निर्णय ( निर्=निश्चय, नी=पाना वा चलाना ) ( पु० ) निश्चय, विचार, विवेचना, सीमांसा, फैसला ।

निर्णयोपमा ( पु० ) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है ।  
 निर्णीत ( पु० ) निश्चयकृत, फैसल हुआ, विचारित ।  
 निर्त ( सं० नृत्य ) ( पु० ) नाच, नृत्य ।  
 निर्तक ( पु० ) नट, नाचनेवाला, भाँड़ ।  
 निर्तना ( कि० अ० ) नाचना, नृत्य करना ।  
 निर्दई ( सं० निर्दयः, निर्=विन+दया ) ( वि० ) जिसके मन में दया न हो, कठोर, कड़ा, दयाहीन, जिसका दिख पत्थर-सा कड़ा हो, संगदिल, निटुर ।  
 निर्दंड ( वि० ) जिसे सब प्रकार के दंड दिए जा चुके हों ।  
 निर्दंभ ( वि० ) निरछल, निष्कपट, बेमक, दंभहीन ।  
 निर्दय ( वि० ) निटुर, बेरहम ।  
 निर्दयता ( स्त्री० ) निटुरता, बेरहमी ।  
 निर्दहन ( पु० ) भिलावे का पेड़ ।  
 निर्दहना ( कि० स० ) जला देना ।  
 निर्दिष्ट ( निर्=अच्छी तरह से, दिशू=देना वा दिखाना, जानना ) ( वि० ) अच्छी तरह से कहा हुआ, दिख-छाया हुआ, निर्णय किया हुआ, नियत किया गया ।  
 निर्देश ( पु० ) आज्ञा, हुक्म, कथन, उल्लेख, जिक्र, वर्णन, नाम, संज्ञा, ठहराना या निश्चित करना ।  
 निर्दोष ( निर्=विना, दोष=अपराध ) ( वि० ) निरपराध, दोषहीन, विना ढूँक, बेकसर ।  
 निर्द्वेष्ट ( निर्=विना, द्वेष्ट=दो, वा बखेड़ा ) ( वि० ) विना बखेड़े, बेभगड़े, आराम से, चैन से, जिसका कोई द्वेष्टी न हो ।  
 निर्धन ( निर्=विन, धन=दौलत ) ( वि० ) शरीर, कंगाल, दरिद्री ।  
 निर्धर्म ( पु० ) जो धर्म से रहित हो ।  
 निर्धार } ( निर्=निश्चय, धृ=रखना ) ( पु० )  
 निर्धारण } निश्चय, निर्णय, पृथक्करण, जुदा करना ।  
 निर्धारना ( कि० स० ) निश्चित करना, ठहराना ।  
 निर्धारित ( वि० ) निश्चित किया हुआ, ठहराया हुआ ।  
 निर्धूत ( वि० ) धोया हुआ, खंडित, टूटा हुआ, जिसका त्याग कर दिया गया हो ।  
 निर्निमित्त } ( वि० ) अकारण, बिना वजह ।  
 निर्निमित्तिक }

निर्निमेष ( कि० वि० ) एकटक, विना पलक रूपकाय,  
तुरंत, ( वि० ) जो पलक न गिरावे ।

निष्पत् ( निर्+पत्=विना, पत्=सहाय ) ( वि० ) असहाय,  
बेवशा, अनाथ, विना मदद, निर्लेप, उदासीन ।

निष्कल ( निर्+कल ) ( वि० ) निष्कल, वृथा, व्यर्थ ।

निर्वन्ध ( निर्+बन्ध=बंधना ) ( पु० ) आप्रह-विशेष, ज़िद,  
बेरोक, बेक़ैद, बेसहारा, बेरोज़गार ।

निर्यल ( निर्+बल ) ( वि० ) निबल, तुर्बज़, दुबला,  
कमज़ोर ।

निर्वहना ( कि० अ० ) पार होना, अलग होना,  
दूर होना, निबहना ।

निर्वुद्धि ( निर्+बुद्धि ) ( वि० ) मूर्ख, असमझ, अन-  
समझ, अज्ञान ।

निर्बोध ( वि० ) जिसे कुछ भा बोध न हो, अज्ञान,  
अनज्ञान ।

निर्भय ( निर्+नहीं, भय=डर ) ( वि० ) निडर, बेवक़ौफ़,  
( पु० ) बढ़िया घोड़ा ।

निर्भर ( निर्=निश्चय, भू=भरना ) ( वि० ) पूरण, पूरा,  
बहुत, अस्थान, अतिशय, भरा हुआ, आधारित, आधारित ।

निर्भरत्न ( पु० ) डॉट-डपट, निंदा, बदनामी, तिरस्कार ।

निर्भीक ( वि० ) निडर, जिसे डर न हो ।

निर्भीत ( वि० ) निडर, जिसे भय न रह गया हो ।

निर्भूति ( स्त्री० ) गायब, अंतर्धान होना ।

निर्भ्रम ( वि० ) शंका रहित, भ्रम रहित ( कि० वि० )  
निधक्क, बेखटके, विना संकोच के, दृढ़ ।

निर्भ्रान्त ( वि० ) निश्चित, भ्रम-रहित ।

निर्मथ ( पु० ) अरणां जिसे रगड़कर यज्ञ के लिये  
आग निकालते हैं ।

निर्गथ्या ( स्त्री० ) गंध-द्रव्य-विशेष ।

निर्मम ( वि० ) जिसे ममता न हो, वासना-रहित ।

निर्मल ( निर्=विना, मल=मेल ) ( वि० ) पवित्र, शुद्ध,  
स्वच्छ, उजला, साफ़, मल-रहित, निर्दोष ( पु० )  
अभ्रक ।

निर्मला ( पु० ) एक नानावर्था संप्रदाय, इस संप्रदाय  
का कोई व्यक्ति ।

निर्मली ( स्त्री० ) रीठे का वृक्ष या फल, कनक ।

१. 'निर्वन्धं तस्य तं ज्ञात्वा विचिन्त्यानकदुन्दुभिः'  
( इति भागवतम् )

निर्मलोपम ( पु० ) स्फटिक ।

निर्मांस ( पु० ) वह मनुष्य जो भोजन के अभाव के  
कारण दुबला हो गया हो, जैसे तरसरी या दरिद्र,  
भिक्षुमंगा आदि ।

निर्माण ( निर्+मा=नापना वा बनाना ) ( पु० ) बनावट,  
रचना, तसनीक, सार ।

निर्माणक ( पु० ) मुसन्निक, कर्ता ।

निर्माण करना ( कि० स० ) बनाना, रचना ।

निर्माणविद्या ( स्त्री० ) वास्तु-विद्या, इंजीनियरी,  
इमारत, नहर, पुल आदि बनाने की विद्या ।

निर्मात्रिक ( वि० ) जिसमें मत्रा न हो ।

निर्माद्य ( निर्मल में, अथवा निर् और माद्य फल या  
फलों की माला ) ( पु० ) देवता का जूटा प्रसाद,  
देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, पवित्रत, सफ़ाई,  
फर्छाई, ( वि० ) पवित्र, साफ़, शुद्ध ।

निर्मित ( निर्+मा=नापना वा बनाना ) ( पु० ) बनाया  
हुआ, रचित, कल्पित ।

निर्मिति ( वि० ) निर्माण, बनाने की क्रिया ।

निर्मुक्त ( वि० ) जो मुक्त हो गया हो, जो छूट गया हो ।

निर्मुक्ति ( स्त्री० ) मुक्ति, मोच, छुटकारा ।

निर्मूल ( निर्=विन, मूल=जड़ ) ( वि० ) उखड़ा हुआ,  
जड़ में खोड़ा हुआ, विना जड़ का, निर्बीज, बे  
ठिकाने, उजाड़, नाश, ध्वंस ।

निर्मोक ( पु० ) साँस की कँचुली, शरीर के ऊपर की  
खाल, सावधि मनु के एक पुत्र का नाम, आकाश ।

निर्मोक्ष ( पु० ) पूर्ण माल जिसमें कोई भा संस्कार  
बाक़ी न रह जाय, त्याग ।

निर्मोल ( वि० ) बहुत अधिक मूल्य का, जिसके मूल्य  
का अनुमान न हो सके, अमूल्य ।

निर्मोह ( वि० ) जिनके मन में मोह या ममता न  
हो ( पु० ) सावधि मनु के एक पुत्र का नाम ।

निर्मोहिनी ( वि० ) निर्दय, कठोर-हृदय ।

निर्मोही ( निर्=विन, मोह=ध्यान ) ( वि० ) निर्दय,  
कठोर, कड़ा ।

निर्याण ( पु० ) यात्रा, बाहर निकलना, रवानगी,  
सेना का युद्ध-क्षेत्र की ओर अथवा पगुओं का चरई  
की ओर प्रस्थान, शहर के बाहर की ओर जानेवाली  
सड़क अदृश्य होना, गायब होना, शरीर का आत्मा

द्वारा त्याग, मृग्य, मोक्ष, हाथी की आँख का बाहरी कोना, पशुओं के पैरों में बाँधने की रस्सी ।

निर्यातन ( पु० ) प्रतीकार, बदला चुकाना, ऋण चुकाना, मार डालना ।

निर्याम ( पु० ) मझाह ।

निर्यास ( निर्, यस्=निकलना ) ( पु० ) वृक्षरस, गोंद, गंध, काथ, काढ़ा, भरना या वहना, पेड़-पौदों में से यों ही अथवा चीरने से निकलनेवाला रस ।

निर्लज्ज ( निर्=विना, लज्जा=लज्जा ) ( वि० ) निर्लज्ज, वेशर्म, नकटा ।

निरलेप ( निर्=नहीं, निप=लेपना ) ( वि० ) बेलाग, बिना लगाव, झलेप, बेलाँप ।

निरलोभ { ( निर्=विना, लोभ=लालच ) ( वि० ) जियको  
निरलोभी { लालच न हो, लोभहीन, घेतमा ।

निर्येश ( निर्=विना, येश=हुन ) ( वि० ) वंशहीन, जिसके वंश न हो, अपूता, निपूता, बे-घोलाद, लावकद ।

निर्यर ( वि० ) निर्लज्ज, निडर, निर्भय, वेशरम ।

निर्यहण ( पु० ) गुह्य, निर्वाह, निवाह, समाप्ति ।

निर्यहं ( वि० ) बीन गण, छुट गण ।

निर्वाक् ( वि० ) जिसके मुँह से बात न निकले, जो चुप हो ।

निर्वाक्य ( वि० ) गुँगा ।

निर्वाचक ( पु० ) चुननेवाला ।

निर्वाचन ( निर्, वच=वहना ) ( पु० ) चुनना ।

निर्वाण ( निर्, वा=वहना, णा ) ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, लय होना ( वि० ) थना हुआ, बुझा हुआ, ठंडा किया हुआ, नष्ट ।

निर्वाणी ( पु० ) जैनों के एक शासन-देवता ।

निर्वात ( वि० ) वायुरहित स्थान, बे हवा का ।

निर्वाद् ( पु० ) अपवाद, निदा, अवज्ञा, लापरवाही ।

निर्वाप ( पु० ) दान, दितरों के उद्देश्य से किया गया दान ।

निर्वास ( निर्=वास=वहना ) ( पु० ) निकालना, बाहर करना, मारना, मना करना, प्रवास ।

निर्वासक ( निर्वासक ) ( वि० ) निकालनेवाला ।

निर्वासित ( वि० ) निकाला गया ।

निर्वाह ( निर्=निश्चय, वह=ले जाना ) ( पु० ) निवाह, पुरा करना, समाप्ति ।

निर्वाहक ( पु० ) वह जो किसी काम का निर्वाह करे ।

निर्विकल्प ( निर्=नहीं, विकल्प=भेद, भ्रम ) ( वि० ) भेद और भ्रम से रहित, बे-शक-शुद्धता ।

निर्विकार ( निर्=विना, विकार=बदलना ) ( वि० ) नहीं बदला हुआ, जिसमें किसी तरह का विकार या दोष न हो, एक भाग, एक रंग ।

निर्विघ्न ( निर्=विना, विघ्न=विगाड़ ) ( वि० ) विन-रहित, बिना विगाड़, बेखटके ।

निर्विचार ( वि० ) विचार रहित, ( पु० ) एक प्रकार की समाधि ।

निर्विद्य ( वि० ) विद्याहीन, जो पढ़ा-लिखा न हो ।

निर्विवाद् ( वि० ) जियमें कोई विवाद न हो, बिना झगड़े का ।

निर्विवेक ( वि० ) विवेकहीन, जो किसी बात को विवेचना न कर सकना हो ।

निर्विशेष ( पु० ) परमात्मा, परब्रह्म ।

निर्विष ( वि० ) विषहीन, जियमें विष न हो ।

निर्विष्ट ( वि० ) जो भोग कर चुका हो, जिसका विवाह हो चुका हो, जो अग्निहोत्र कर चुका हो, जो मुक्त हो गया हो ।

निर्वीज ( वि० ) बीज-रहित, जो कारण से रहित हो ।

निर्वीजा ( वि० ) किशमिश, सेवा-विशेष ।

निर्वीरा ( वि० ) वह स्त्री जिसके पति और पुत्र न हो ।

निर्वीर्य ( वि० ) वीर्यहीन, कमजोर, निस्तेज ।

निर्वृत्त ( वि० ) जो पूरा हो गया हो, जिसकी निवृत्ति हो गई हो ।

निर्वृत्तान्मा ( पु० ) विष्णु ।

निर्व्येग ( वि० ) स्थिर, वेग या गति से रहित ।

निर्वेद् ( पु० ) वैराग्य, खेद, दुःख, अनुताप ।

निर्वोध्यम ( पु० ) कान छेदने का एक औजार ।

निर्वेश ( पु० ) भोग, वेदन, विवाह, मूर्छा ।

निर्वर ( वि० ) द्वेष-रहित ।

निर्व्यलीक ( वि० ) छल-रहित, निष्कारण ।

निर्व्याज ( वि० ) निष्कारण, बाधा-रहित ।

निर्व्याधि ( वि० ) रोग या रोग से मुक्त ।

निर्हरण ( पु० ) शय को जलाने के त्रिये ले जाना, जलाना, नाश करना ।

निर्हेतु ( वि० ) किसी हेतु या कारण से रहित ।

निल (पु०) विभीषण का मंत्री, जो माली नाम के राक्षस का बसुदा नाम की स्त्री से उत्पन्न हुआ था।

निलजरी } ( स्त्री० ) निर्लज्जता, वंशर्मी, बेहयाई।  
निलजता }

निलय ( नि=भीतर, ली=लेना वा मिलना ) ( पु० ) घर, स्थान।

निलीन ( वि० ) बहुत अधीक लीन।

निवत्त ( पु० ) यज्ञ आदि में उत्सर्ग किया जानेवाला जीव या पशु।

निवड्डिया ( स्त्री० ) एक प्रकार की नाव।

निवपन ( पु० ) वह जो कुछ वितरों आदि के उद्देश्य से दान किया जाय।

निवार ( वि० ) निवारक, निवारण करनेवाला।

निवरा ( वि० ) जिसके वर न हो, कुपारी, अविवाहिता।

निवर्तन ( नि वृ=वर्तना रोकना ) ( कि० म० ) लौटना वापस आना।

निवर्ती ( पु० ) वह जो युद्ध से भाग आया हो, वह जो पीछे की ओर हट आया हो।

निवसथ ( पु० ) गाँव, सीमा, हद्द।

निवसन ( पु० ) गाँव, घर, वस्त्र, स्त्री का सामान्य अधोवस्त्र।

निवसना ( कि० प्र० ) रहना, निवास करना।

निवह ( पु० ) दूध, समूह, सान वायुओं में से एक वायु।

निवाई ( वि० ) नय, नदीन, अनोखा, विज्ञक्षण।

निवाज ( वि० ) अनुग्रह करनेवाला, कृपा करनेवाला।

निवाजना ( कि० म० ) अनुग्रह करना।

निवाजित ( स्त्री० ) कृपा, मेहरबानी, दया।

निवाड़ा ( पु० ) छोटी नाव, नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चकर देने हैं, नावर।

निवान ( पु० ) घर, रहने का स्थान, वह वर्म जो शस्त्र के द्वारा छेदा न जा सके।

निवान ( पु० ) जलाशय, झील, बड़ा तालाब, नीची जमीन जहाँ सीढ़, कीचड़ या पानी भरा रहता हो।

निवाना ( कि० म० ) झुकाना, नीचे की तरफ करना।

निवार ( स्त्री० ) कुर्छ की नींव में दिया जानेवाला पहिण के आकार का लकड़ी का गोख चकर जिसके ऊपर

कोठी की जुड़ाई होती है, जालन, जमवा, निवाड़, नेवार ( पु० ) मिट्टी का धान, पसही, एक प्रकार की मोठी और मोठी मूखी।

निवारक ( वि० ) रोकनेवाला, रोधक, मिशनेवाला।

निवारण ( नि, वृ=घेरना, रोकना ) ( पु० ) रोक, रुकावट, अड़काव, बाधा दूर करना, हटाना, निवारना।

निवारना ( सं० निवारण ) ( कि० सं० ) रोकना, दूर करना, अटकाना।

निवार-वाफ ( पु० ) निवार बुननेवाला।

निवाला ( पु० ) कौर, घास, लुकमा।

निवास ( नि=भीतर वस=रहना ) ( पु० ) बासा, घर, मकान डेरा, जगह वस्त्र कपड़ा।

निवासी ( निवास ) ( पु० ) रहनेवाला, बसनेवाला, वासी।

निविड़ ( नि=बहुत, विड़=इकट्ठा होना ) ( वि० ) गहरा, घना, सघन, गुंजान, चिपटी या दबी नाकवाला।

निविड़ना ( स्त्री० ) वंशी या उसी प्रकार के किसी और बाजे के स्वर का गंभीर होना।

निविद्धान ( पु० ) एक ही दिन में समाप्त होनेवाला यज्ञ आदि।

निविष्ट ( वि० ) एकाम्र, जिसका चित्त एकाम्र हो, लपेटा हुआ, बाँधा हुआ ठहरा हुआ, स्थित।

निवीत ( पु० ) छोड़ने का कपड़ा, चादर।

निवीर्य ( वि० ) वीर्य या पुरुषार्थहीन।

निवृत्त ( नि=नहीं, वृ=वर्तना ) ( पु० ) छूटा हुआ, मुक्त, प्ररागत पाया हुआ।

निवृत्ति ( वि० ) छूटी, रिहाई, मुक्त, सिद्धि।

निवेदन ( नि=यच्छा तरह से, विद=जानना ) ( पु० ) विनयी, प्रार्थना, विज्ञापन, विनयपत्र, दरद्वारस।

निवेरना ( कि० म० ) क्रैसला करना, निवशना, झोंटना, छुड़ाना, दूर करना।

निवेरा ( वि० ) चुना हुआ, छाँटा हुआ, नवीन, अनोखा।

निवेरा ( पु० ) शिविर, डेरा, प्रवेश, घर।

निवेष्ट ( पु० ) सामवेद का मंत्रभेद, वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ ढाँकी जाय।

निवेप्य ( पु० ) व्याप्ति वस्त्र का पानी, जलस्तम्भ।

निव्याधी ( पु० ) पृथ रुद्र का नाम।

निशु } ( नि=नव तरह से, शो=पतला करना अर्थात् कामों  
निशा } को पूरा करना ) ( स्त्री० ) रात, रात्रि, हल्दी ।

निशाकर ( निशा=रत, कर=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० )  
चाँद, चंद्र, चंद्रमा ।

निशाचर ( निशा=गत, चर=चलनेवाला वा खानेवाला, चर्=चलना वा खाना ) ( पु० ) राक्षस, भूत, उल्लू, चोर,  
गीदड़, ( वि० ) रात को चलनेवाला वा खानेवाला ।

निशाचरपति ( पु० ) शिव, महादेव, रावण ।

निशाचरी ( निशाचर ) ( स्त्री० ) राक्षसी, वेश्या, द्युभि-  
चारिणी, कुक्षी केशिनी नामक गंधद्रव्य ।

निशाचर्म ( पु० ) अंधेरा, अंधकार ।

निशाचारी ( पु० ) शिव, निशाचर ।

निशाजल ( पु० ) ओस, पाखा, हिम ।

निशाट ( पु० ) उल्लू, निशाचर ।

निशाटक ( पु० ) गृहज ।

निशाटन ( पु० ) उल्लू, ( वि० ) रात में विचरण करने-  
वाला ।

निशानकंठा ( पु० ) उत्तर और पूर्व का कोण, ईशान-  
कोण ।

निशानची ( पु० ) राजा, सेना या दल के आगे झंडा  
लेकर चलनेवाला, निशानबंदार ।

निशान देना ( पृष्ठा० ) पता बताना ।

निशानदेही ( स्त्री० ) असामी का पता बनाने का  
काम ।

निशानपट्टी ( स्त्री० ) हुलिया, चेहरे को बनावट आदि  
अथवा उसका वर्णन ।

निशानन }  
निशामुख } ( निशा=शानन ) सायकाह, प्रदोष, शाम ।  
रात्रिमुख }

निशानाथ } ( निशा=गत, नाथ वा पति=गजा ) ( पु० )  
निशापति } चाँद, चंद्रमा, चंद्र ।

निशाना ( पु० ) लक्ष्य ।

निशापुत्र ( पु० ) नक्षत्र आदि, आकाशीय पिंड ।

निशापुष्प ( पु० ) कुमुदिनी, कोई ।

निशामणि ( पु० ) चंद्रमा, कूर ।

निशामम ( पु० ) दर्शन, देखना, सुनना ।

निशामुख ( पु० ) गोधूली का समय, संध्याकाळ ।

निशामृग ( पु० ) गोदड़ ।

निशारल ( पु० ) चंद्रमा, कूर ।

निशारुक ( पु० ) सात प्रकार के रूपक तालों में से  
एक प्रकार का ताळ, जिसमें दो खजु और दो गुरु  
मात्राएँ होती हैं और जिसका व्यवहार प्रायः हास्य  
रस के गीतों के साथ होता है । ( वि० ) बहुत हिंसा  
करनेवाला ।

निशावन ( पु० ) सन का पौदा ।

निशावसान ( पु० ) प्रभात, तड़का, रात का अंतिम  
भाग ।

निशि } ( सं० निशु वा निशा ) ( स्त्री० ) रात, रात्रि,  
निसि } रजनी ।

निशिचर } ( सं० निशाचर, निशि=रात में, चर=चलने-  
निसिचर } वाला ) ( पु० ) राक्षस ।

निशिचरराज ( पु० ) राक्षसों का राजा, विभीषण ।

निशित ( नि=अच्छा तरह से, शि=तोखा करना ) ( वि० )  
तोखा, तीक्ष्ण, चोखा, शाणित, पैना किया हुआ ।

निशानाथमुखी ( स्त्री० ) चंद्रमुखी वा चंद्रवदनी ।

निशीथ ( नि=अच्छा तरह, शी=सोना ) ( पु० ) अर्द्ध-  
रात्रि, आधी रात ।

निशीथिनी ( स्त्री० ) रात्रि ।

निशुंभ ( नि=निश्चय, शुंभ=मारना ) ( पु० ) एक राक्षस  
का नाम जिसको दुर्गा ने मारा ।

निशुंभन ( पु० ) वध, मार डालना ।

निशुंभमर्दिनी ( स्त्री० ) दुर्गा ।

निशुंभी ( पु० ) एक युद्ध का नाम ।

निशेश ( निशा=रात, ईश=राजा ) ( पु० ) चाँद, शशि ।

निशैत ( पु० ) बक, बगुछा ।

निशोरसर्ग ( पु० ) प्रभात, तड़का ।

निशकुला ( वि० ) अपने कुल से निकाळी हुई स्त्री ।

निश्चय ( निर्=अच्छा तरह से, चि=इकट्ठा करना ) ( पु० )  
निर्णय, ठीक करना, पक्का करना, भरोसा, विश्वास,  
( वि० ) ठीक, सच, असंशय ।

निश्चयात्मक ( वि० ) ठीक-ठीक, असंदिग्ध ।

निश्चर ( निश्=रात, चर=चलनेवाला, चर्=चलना )  
( पु० ) राक्षस, एकादश मन्वन्तर के सप्तर्षियों में  
से एक ।

निश्चल ( निर्=नहीं, चल्=चलना ) ( वि० ) अचल,  
अटख, स्थिर, ठहरा हुआ, जो न चले ।

निश्चलता ( स्त्री० ) दृढ़ता, स्थिरता ।

निश्चला ( स्त्री० ) पृथ्वी, जमीन ।

निश्चलांग ( पु० ) बगला, पर्वत आदि जो सदा निश्चल रहते हैं ।

निश्चायक ( पु० ) निर्णायक, निश्चयकर्ता ।

निश्चारक ( पु० ) प्रवाहिका नाम का रोग, वायु, हवा ।

निश्चित ( निर=अच्छी तरह से, चि=इकट्ठा करना ) ( वि० ) निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ ।

निश्चित ( निर=नहीं, चिंता=शोच ) ( वि० ) निश्चित, बेक्रिह, विना चिंता, चिंता-रहित ।

निश्चिता ( स्त्री० ) पृथ्वी, शान्तपर्णा, एक नदी का नाम ।

निश्चेतन ( वि० ) बेसुध, बेहोश, बदहवाश, अज्ञ ।

निश्चेष्ट ( वि० ) चेष्टा-रहित, अचेत, बेहोश ।

निश्छुंद ( वि० ) जिसने वेद न पढ़ा हो ।

निश्छल ( वि० ) निष्कपट, सीधा, छल-रहित ।

निश्छेद ( पु० ) गणित में वह राशि जिसका किसी गुणक के द्वारा भाग न दिया जा सके, ( वि० ) अविभाज्य ।

निश्चम ( पु० ) अध्यवसाय, किसी कार्य से न थकना अथवा न घबराना ।

निश्चयणी ( स्त्री० ) सोढ़ी ।

निश्चोक ( पु० ) सोढ़ी ।

निश्चेणी ( स्त्री० ) सोढ़ी, ज़ोना, मुक्ति, खजूर का पेड़ ।

निश्चेयस ( पु० ) कल्याण, मोक्ष, दुःख का अत्यंत अभाव ।

निश्वास ( नि=बाहर, श्वस्=सांस आना वा लेना ) ( पु० ) मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, साँस, निःसास ।

निश्शंक ( वि० ) जिसमें शंका न हो, निर्भय, निडर, बेझीर, संदेह-रहित ।

निश्शक्त ( वि० ) जिसमें शक्ति न हो, निर्बल, नाताकृत ।

निश्शील ( वि० ) बुरे स्वभाववाला, बेमुरीबत, बद-मिज़ाज ।

निश्शीलता ( स्त्री० ) दुष्ट स्वभाव, बदमिज़ाजी ।

निश्शेष ( वि० ) जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो ।

निष्कपुत्र ( पु० ) रक्षस, निशाचर, असुर ।

निष्कर्ष ( पु० ) स्वरसाधन की एक प्रणाली जिसमें प्रत्येक स्वर दो-दो बार अलग-पना पड़ता है ।

निष्क ( पु० ) जनक, पिता, बाप ।

निषंग ( नि, षञ्ज=मिलना ) ( पु० ) भाथा, तूण, तूणोर, तर्कश ।

निषंगधि ( पु० ) आलिंगन करनेवाला, रथ, कंथा, तूण, सारथी, धनुर्धारी ।

निषंगी ( वि० ) धनुर्धारी, तोर चलानेवाला, खड्ग धारण करनेवाला ।

निषण्ण ( नि=नहीं, षद=चलना ) ( वि० ) बैठा हुआ, आसीन, आसन्न ।

निषद् ( स्त्री० ) यज्ञ की दीक्षा ।

निषद् ( पु० ) निषाद स्वर ( संगीत ) एक राजा का नाम ।

निषद्वर ( पु० ) कीचड़, चहल्ला ।

निषद्वरी ( स्त्री० ) रान ।

निषध ( पु० ) संगीत के स्वरों में से अन्तिम या सातवाँ स्वर, निषाद, पर्वत-विशेष, कुरु के एक लड़के का नाम ।

निषधा ( स्त्री० ) हाट, वह स्थान जहाँ कोई चीज़ बिकती हो, छोटी खाट ।

निषधापरीपत ( पु० ) जिस स्थान में स्त्री पंड आदि का आगम हो न रहे और यदि हृष्टानिष्ट का उपसर्ग हो तो भी अपने चित्त को चलायमान न करना ।

निषधाभास ( पु० ) आक्षेप, अलंकार के ५ भेदों में से एक ।

निषाद ( नि, षद=मारना ) ( पु० ) चाँडाख, जो ब्राह्मण से शूद्र के गर्भ में पैदा हो, मल्लाह, एक राग का नाम ।

निषादी ( पु० ) महावन, हाथीवान, पीलवान

निषिक्त ( पु० ) वीर्य से उत्पन्न गर्भ ।

निषिद्ध ( नि, षिध्=जाना, पर नि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ रोकना ) ( वि० ) रोक हुआ, निवारित, वर्जित, खराब, बुरा, मना ।

निषूदन ( वि० ) मारनेवाला ।

निषेक ( पु० ) गर्भाधान, रेत, वीर्य, श्रवण, चूना, टपकना ।

निषेचन ( कि० स० ) भिगोना, तर करना, सींचना ।

निषेध ( नि, षिध्=रोकना ) ( पु० ) रोक, रकाव, बाधा, नाहीं ।

निषेधक ( नि, षिध्+अक ) ( वि० ) रोकनेवाला, मना करनेवाला ।

निषेधपत्र ( पु० ) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया गया हो ।

निषेधविधि ( स्त्री० ) किसी बात का निषेध करनेवाली बात या आज्ञा ।

निषेधित ( पु० ) वर्जित, मना किया हुआ ।

निषेधन ( पु० ) सेवन, व्यवहार, सेवा ।

निषेधी ( पु० ) सेवन करनेवाला ।

निषेध्य ( वि० ) सेवनीय, सेवन के योग्य ।

निषङ्ग ( पु० ) अशर्मा, मोने का रूपया, दानार ।

निषकंटक ( निर्=विन, कंटक=कोटा ) ( वि० ) विना दुःख अकंटक, विना शत्रु ।

निषकंठ ( पु० ) वरुण या बहना नाम का पेड़ ।

निषकपट ( निर्=विन, कपट=छल ) ( वि० ) छल-रहित, सीधा, सरल, सच्चा ।

निषकंप ( वि० ) स्थिर कंठ-रहित ।

निषकंभ ( पु० ) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।

निषकर ( निर्=विन, कर=लगान ) ( वि० ) बेखगान, मुञ्चाक्री ।

निषकरुण ( वि० ) निरुद्ध, निर्दय, बेरहम ।

निषकर्म ( वि० ) अकर्म, जिसके पास काम न हो ।

निषकर्मण्य } ( वि० ) अयोग्य, निरहमा, जो कुछ  
निषकर्मो } काम न कर सके ।

निषकर्ष ( पु० ) निश्चय, सुझावा, तत्त्व सारांश ।

निषकल ( वि० ) कला-रहित, वृद्ध, नपुंसक, अंग-रहित, ( पु० ) ब्रह्मा ।

निषकला ( स्त्री० ) बुढ़िया, वृद्धा स्त्री ।

निषकली ( स्त्री० ) अधिक अस्वास्वाली वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बंद हो गया हो ।

निषकलंक ( वि० ) निर्दोष, बेदश, बेदेव ।

निषकपाय ( पु० ) वह जिसका चित्त स्वच्छ और पवित्र हो, मुमुक्षु ।

निषकाम ( निर्=विन, काम=इच्छा ) ( वि० ) वसना रहित, जिसकी किसी बात की इच्छा न हो, निःस्पृह ।

निषकारण ( वि० ) बेप्रयोजन, बेवचन ।

निषकालक ( पु० ) मुँडे हुए बाल या रोण आदि ।

निषकालन ( पु० ) चखाने की क्रिया, मार डालने की क्रिया, मारण ।

निष्काश ( पु० ) प्रासाद आदि का बाहर निकला हुआ भाग, बरामदा ।

निष्काशन ( पु० ) बाहर निकालना, देश निकाला ।

निष्काशित ( वि० ) वहिष्कृत, निर्दित, निकाला हुआ ।

निष्किंचन ( वि० ) दरिद्र, धनहीन ।

निष्कुट ( पु० ) नज़रबाग, पाईबाग, क्षेत्र, खेत, किवाड़ा, जनाना-मझ, पर्वत-शिखर ।

निष्कुटि } ( स्त्री० ) इलायची ।  
निष्कुटी }

निष्कुंभ ( पु० ) दंतीवृत्त ।

निष्कुट ( पु० ) कोटर, पेड़ का खोड़र ।

निष्कृत ( वि० ) मुक्त, छुटा हुआ, स्वतंत्र, निश्चित ।

निष्कृप ( वि० ) चोखा, धारदार, तेज़, तीक्ष्ण ।

निष्क्रम ( वि० ) बेनतीब, बेसिखसिले ।

निष्क्रमण ( पु० ) बाहर निकालना, हिंदुओं में छोटे बच्चे का एक संस्कार जिसमें जब बालक चार महीने का होता है, तब उसे घर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है ।

निष्क्रम्य ( पु० ) घेवन, मजदूरी, भाड़ा, बदला, विनिमय, बिक्री पुरस्कार, इनाम, सामर्थ्य, शक्ति ।

निष्क्रिय ( वि० ) निश्चेष्ट, जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो ।

निष्केवल ( निर्=अकेला ) ( वि० ) अकेला, तनहा ।

निष्कवेश ( वि० ) क्लेश-रहित, सब प्रकार के कष्टों से मुक्त ।

निष्काथ ( पु० ) शंरवा, मांस आदि का रसा ।

निश्चेष्ट ( वि० ) बेकाम, चेष्टहीन, तद्वीर से खाली स्तब्ध ।

निष्ठ ( वि० ) स्थित, ठहरा हुआ, तत्पर, लगा हुआ ।

निष्ठा ( स्त्री० ) धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, क्लेश, घत, उत्पत्ति, नाश, अंत, उत्कर्ष ।

निष्ठान } ( पु० ) चटनी आदि ।  
निष्ठानक }

निष्ठान्त ( वि० ) नष्ट होनेवाला, जिसका नाश अवश्य हो ।

निष्ठानान् ( वि० ) जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो ।

निष्ठित ( वि० ) दृढ़, निष्ठायुक्त ।

निष्ठैवन }  
निष्ठैव } ( पु० ) थक ।  
निष्ठैवन }



निष्ठुर ( नि, स्था=ठहरना ) ( वि० ) निठुर, निर्दयो,  
कठोर, कड़ा, कठिन ।

निष्ण ( वि० ) होशियार, कुशल ।

निष्णात ( वि० ) किसी विषय का पूरा पंडित, निपुण,  
विज्ञ ।

निष्पत्तपात ( वि० ) मित्रतारहित, बेसहायता, बिछा  
तरफ़दारी, नहीं हराना, और न लेना, मदद न देना,  
बेतअस्सुब, उदासीन ।

निष्पत्ति ( निर्-अच्छी भांति से, पद=जाना ) ( स्त्री० )  
सिद्धि, पूरा होना, सिद्ध होना, निर्वाह, मोमांसा,  
निश्चय, निर्वारण ।

निष्पत्रिका ( स्त्री० ) करीब का पेड़, जिसमें पत्ते न हों ।

निष्पद् ( पु० ) दिना पहिप आदि की सवारी, जैसे नाव  
आदि ।

निष्पन्न ( निर्, पद=जाना ) ( वि० ) सिद्ध, पूरा, पूर्ण,  
पूरा किया हुआ, संपूर्ण ।

निष्परिग्रह ( वि० ) जो दान आदि न ले, रंडुवा,  
अविवाहित, कुँआरा ।

निष्परुष ( वि० ) कोमल, जो सुनने में कर्कश न हो ।

निष्पन्न ( पु० ) धान आदि की भूसी निकालना, बूटना-  
छांटना ।

निष्पाद ( पु० ) अनाज की भूसी निकालने का काम,  
दाना, मटर, बोड़ा, सेम ।

निष्पाप ( निर्=नहीं, पाप=अपराध ) ( वि० ) निरपराध,  
निर्दोष, बेगुनाह ।

निष्पीडन ( पु० ) निचोड़ना ।

निष्प्रचार ( पु० ) जिसमें गति न हो, जो एक स्थान  
से दूसरे स्थान पर न जा सके ।

निष्प्रभ ( वि० ) तेज-रहित, प्रभा-शून्य ।

निष्प्रयोजन ( वि० ) निरर्थक, व्यर्थ, प्रयोजन-रहित ।

निष्प्राण ( वि० ) मुरदा, मरा हुआ ।

निष्प्रेही ( वि० ) जिसे किसी वस्तु या बात की चाह या  
इच्छा न हो, निस्पृही ।

निष्फल ( निर्+फल ) ( वि० ) बृथा, विफल, निरर्थक,  
फलहीन ।

निष्फला ( स्त्री० ) बृद्धा स्त्री, वह स्त्री जिसका रजोधर्म  
बंद हो गया हो ।

निष्फली ( पु० ) अस्त्रों के निष्फल करने का अस्त्र ।

निस्स ( वि० ) निर्दय, क्रूर, बेरहम ।

निस्संज्ञा ( कि० अ० ) हाफना, निश्वास लेना ।

निसक ( वि० ) कमज़ोर, दुर्बल ।

निसकर ( पु० ) चंद्रमा, चाँद ।

निसत ( वि० ) असत्य, मिथ्या, झूठा ।

निसतरना ( कि० अ० ) छुट्टी पाना, निस्तार पाना,  
छुटकारा पाना ।

निसयांस ( कि० वि० ) रात दिन, निरन्तर, सदा ।

निसघत ( स्त्री० ) संबंध, तालुक, जगाव, मैगनी,  
विवाह-संबंध की बात ।

निस ( उपम० ) नहीं, निश्चय, सब तरह से, सब  
प्रकार से ।

निसरना ( मं० निःसरण, निर्=बाहर, सु-जाना )  
( कि० अ० ) निकलना, निकसना ।

निसंग ( नि, सृज उपजाना ) ( पु० ) प्रकृति, स्वभाव,  
स्वरूप, सृष्टि, मिलन ।

निसग ( वि० ) श्याम-रहित, बेहोश, अचेत ।

निसाक ( वि० ) बेघोकर, निर्भय, अखटके ।

निसांस ( पु० ) ठंडी साँस, लंबी साँस, ( वि० ) बेदम,  
मृतप्राय ।

निसा ( स्त्री० ) संतोष, वृत्ति ।

निसाद ( पु० ) भंगी, मेहतर, एक नीच जाति ।

निसान ( पु० ) निशान, नगाड़ा, धौंसा ।

निसानन ( पु० ) संस्था का समय, प्ररोपकाल ।

निसाक ( पु० ) न्याय, इन्साफ़ ।

निसाभर ( मुहा० ) जी भर के, खूब अच्छी तरह ।

निसार ( पु० ) निछावर, सरका, उतारा, मुगलों के  
समय की चवड़ी, समूह ।

निसारक ( पु० ) शालक राग का एक भेद ।

निसारना ( कि० मं० ) निकालना, बहर करना ।

निसाग ( स्त्री० ) केले का पेड़ ।

निसावरा ( पु० ) एक प्रकार का कव्तर ।

निसास ( मं० निःश्वास ) ( पु० ) साँस, उसास,  
पछतावा, गहरी या ठंडी साँस ।

निसासी ( वि० ) बेदम, जिसकी साँस न  
चलती हो ।

निसि ( स्त्री० ) निशि, वृत्त-विरोध जिसके प्रत्येक चरण  
में एक भगण और एक लघु होता है ।

निसि-निसि ( स्त्री० ) अर्धरात्रि, आधी रात, निशीथ ।

निसिपति }  
निसिपति } ( पु० ) चंद्रमा ।  
निसिमणि }

निनिघासर ( कि० वि० ) रात-दिन, सदा, सर्वदा, निग्य ।

निनीठी ( वि० ) निःपार, नीरस, थोथा ।

निसूदक ( वि० ) हितक, हिंसा करनेवाला ।

निसूदन ( नि०, मुद=सोदना ) ( पु० ) मारना, वध करना, कल करना, खोदना ।

निसृष्ट ( वि० ) छोड़ा हुआ, मध्यस्थ, प्रेरित, दत्त, अप्रति ।

निसृष्टार्थ ( पु० ) नृत्त-विशेष जो उभय पक्षों का अभि-  
प्राय समझकर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर देता  
और कार्य सिद्ध कर लेता है, मालिक का काम  
तत्परता से करनेवाला मनुष्य, जो धन के आय-व्यय  
और कृषि तथा वाणिज्य की देखरेख के लिये नियुक्त  
किया गया हो ।

निसैनी }  
निसैनी } ( स० निःश्रेणी ) ( स्त्री० ) सीढ़ी, सोपान ।

निसोच ( वि० ) निश्चित, बहिक, चिन्ता-रहित ।

निसोत ( वि० ) विशुद्ध, निरा, खालिस, जिसमें और  
किसी चीज़ का मेल न हो ।

निसोधु ( स्त्री० ) सुध, खबर, संदेश ।

निसुकी ( स्त्री० ) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा ।

निस्तंतु ( वि० ) संतानहीन, सूत्रहीन ।

निस्तंद्र ( वि० ) निरालस, बलवान्, मजबूत ।

निस्तत्र ( वि० ) निस्मार, तत्रहीन ।

निस्तब्ध ( वि० ) जड़वत्, निश्चेष्ट, जो गड़ या जम-  
सा गया हो ।

निस्तरण ( पु० ) छुटकारा, निस्तार, उद्धार, पार जाना ।

निस्तर्षी ( स्त्री० ) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा ।

निस्तार ( निर्=निश्चय, तृ=पार होना ) ( पु० ) उद्धार,  
मुक्ति, मोक्ष, पार होना, बचाव, छुटकारा, प्राण,  
जन्म-मरण का निबेड़ा, करागत ।

निस्तारना ( सं० निस्तारण ) ( कि० स० ) बचाना,  
उबारना, मुक्ति देना, जन्म-मरण से छुटकारा  
करना ।

निस्तारा ( सं० निस्तार ) ( पु० ) छुटकारा, निबेड़ा,  
मोक्ष, मुक्ति, वर, आशिष ।

निस्तिमिर ( वि० ) अंधकार से रहित या शून्य ।

निस्तीर्ण ( वि० ) पार गया हुआ, मुक्त, छुटा हुआ ।

निस्तुप ( वि० ) विना भूमी का, निर्मल ।

निस्तुपरत्न ( पु० ) स्फटिक-मणि ।

निस्तुपत्तीर ( पु० ) गेहूँ ।

निस्तैज ( वि० ) मस्तिष्क, अग्रभ, तेजरहित ।

निस्तैल ( वि० ) तैलरहित, विना तेल का ।

निस्त्रप ( वि० ) बेशर्म, बेहया, निर्लज्ज ।

निस्त्रिस ( स्त्री० ) संगीत, बंदूक ।

निस्त्रिशपत्रिका ( स्त्री० ) धूहर ।

निस्पद ( वि० ) कंवरहित, स्थिर ।

निस्पृह ( वि० ) लालच या कामना आदि से रहित ।

निस्फ ( वि० ) आधा, अर्द्ध ।

निस्त्रव ( पु० ) भात का मर्द, पसेव ।

निस्त्र ( वि० ) दरिद्र, गरीब ।

निस्त्रन ( पु० ) शब्द, आवाज़ ।

निस्संदेह ( निर्=विन, संदेह=शक ) ( कि० वि० ) निश्चय,  
बेशक ।

निस्सरण ( पु० ) निकास, निकलने का मार्ग ।

निस्सार ( वि० ) सार-रहित, निस्तध्व ।

निस्सारित ( वि० ) निकाला हुआ, बाहर किया हुआ ।

निस्सृत ( पु० ) तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

निहंग ( वि० ) अकेला, एकाकी, नंगा, बेशर्म ।

निहंग-लाडल ( वि० ) जो अति दुलार के कारण  
बहुत ही उहड़ और लापरवाह हो गया हो ।

निहचक ( पु० ) निवार, जमवट, जाखिम ।

निहठा ( स्त्री० ) लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर रखकर  
बड़ई गढ़ने की चीज़ों को बसूल से गढ़ते हैं ।

निहत ( निहन्=मार डालना ) ( वि० ) मारा गया, वध  
किया गया ।

निहन्था ( वि० ) शस्त्रहीन, जिसके हाथ में कोई शस्त्र  
न हो, निर्धन, खाली हाथ ।

निहनना ( कि० स० ) मारना, मार डालना ।

निहंता ( वि० ) विनाशक, मारनेवाला ।

निहल ( पु० ) गंगवरार, कछार, वह ज़मीन जो नदी के  
पीछे हट जाने से निकल आई हो ।

निहलिस्ट ( पु० ) रूस-देश का एक राजनैतिक दल जो सामाजिक और राजनैतिक नियंत्रित नियमों का ध्वंसक और नाशक बन गया. इस दल का कोई आदर्श नहीं।

निहाई ( स्त्री० ) घन, हथौड़ा।

निहाउ ( पु० ) लोहे का घन।

निहाका ( स्त्री० ) घड़ियाल, गोह।

निहानी ( स्त्री० ) एक प्रकार की अर्द्धचंद्राकार नोक की रस्खानी जो खुदाई के बारीक काम में आती है।

निहायत ( वि० ) अत्यंत, बहुत अधिक।

निहार ( पु० ) कुहर, कुहरा, पाला।

निहारना ( क्रि० सं० ) ताक लगाना, देखना।

निहारिका ( स्त्री० ) एक प्रकार का आकाशस्थ पदार्थ जो देखने में धुंधले रंग के भयंके को ताक होता है।

निहाल ( वि० ) प्रसन्न, सुखा, आनंदित, हर्षित, बड़ा हुआ।

निहालचा ( पु० ) छोटी तोशक या गद्दा जो प्रायः बच्चों के नीचे बिछाई जाती है।

निहाललोचन ( पु० ) वह घोड़ा जिसकी आंखों में दो भागों में बंटी हो—आधी दाहिनी ओर और आधी बाईं ओर।

निहाली ( स्त्री० ) रज़ाई, फर्द, तोशक, गद्दा।

निहाय ( पु० ) लोहे का घन।

निहित ( वि० ) स्थापित, रक्खा हुआ।

निहीन ( वि० ) नीच, पामर।

निहुकना } ( क्रि० अ० ) झुकना, नबना।  
निहुरना }

निहोरा ( पु० ) उपकार, विनती, अदमान, अनुग्रह, कृतज्ञता।

नींद } ( सं० निद्रा ) ( स्त्री० ) सोने की इच्छा,  
नींद } ऊँचाई।

नींद उचाट होना ( मुहा० ) नींद का न आना, नींद का टूटना, आँख का न लगना।

नींद का दुखिया ( मुहा० ) बहुत सोनेवाला।

नींद का माता ( मुहा० ) नींद से व्याकुल।

नींद खराब करना ( मुहा० ) सोने का हर्ज करना, सोने में बाधा डालना।

नींद खुलना ( मुहा० ) नींद टूटना, जागना, आँख खुलना।

नींद खोना या गंवाना ( मुहा० ) सोने का हर्ज करना।

नींद टूटना ( मुहा० ) जाग पड़ना।

नींद पड़ना ( मुहा० ) नींद आना, निद्रा की अवस्था होना।

नींद भरना ( मुहा० ) नींद पूरी करना, सोना।

नींद भर सोना ( मुहा० ) इच्छा-भर सोना।

नींद मारना } ( मुहा० ) सोना।  
नींद लेना }

नींद संचरना ( मुहा० ) नींद आना।

नींद हराम करना ( मुहा० ) सोने न देना, सोना छुड़ा देना।

नींद हराम होना ( मुहा० ) सोने की नीवत न आना, सोना छूट जाना।

नींदड़ी ( स्त्री० ) नींद।

नींदना ( क्रि० म० ) निराना।

नीक ( वि० ) अच्छा, सुंदर, भला, अनुकूल।

नीक लगना ( मुहा० ) भाना, रुचना, अच्छा लगना।

नीका } ( फा० नेक ) ( वि० ) भला, सुंदर, अच्छा,  
नीकी } सुडोल, चंगा।

नीकाश ( वि० ) तुल्य, समान।

नीके ( क्रि० वि० ) अच्छी तरह, भली भाँति।

नीगुने ( सं० निर्गुण ) ( वि० ) बेगिनती, बेगुमार, अनगिनत, नहीं गिना हुआ।

नीग्रो ( पु० ) हबशी।

नीच ( नि=नीचे, अच्=जाना अथवा नि=नीच संपदा को, नम=माना, भांगना ) ( वि० ) ओछा, अधम, छोटा, निकम्मा, निकृष्ट, कमीना।

नीच कमाई ( स्त्री० ) निम्न व्यवसाय, तुच्छ काम, छोटा काम, बुरे कामों से पैदा किया हुआ धन।

नीचका ( स्त्री० ) अच्छी गाय।

नीचको ( पु० ) ऊँचा, श्रेष्ठ, उच्च, जिसके पास अच्छी गायें हों।

नीचग ( वि० ) पामर, आँछा, नीचे जानेवाला।

नीचगा ( स्त्री० ) नदी, नीच के साथ गमन करनेवाली स्त्री।

नीचगामी ( वि० ) ओछा, नीचे जानेवाला।

नीचग्रह ( पु० ) वह स्थान या ग्रह जो किसी ग्रह के उच्च स्थान या राशि से गिनती में सातवें पड़े ।

नीचट ( वि० ) दृढ़, पक्का ।

नीचता } ( स्त्री० ) खोटाई, वृद्धता, कमीनापन ।  
नीचत्व }

नीचवज्र ( पु० ) वैकांतमणि ।

नीचा ( म० नीच ) ( वि० ) नीच, अधम, छोटा, ( पु० ) नलातल ।

नीचा-ऊँचा ( मुहा० ) नीची-ऊँची ज़मीन, ना-हमवार, बुरा-भला, हानि-लाभ, दुःख-पुख ।

नीचा दिखाना ( मुहा० ) तुच्छ बाना, हेठा करना, लजित करना, पराजित करना ।

नीची दृष्टि करना ( मुहा० ) गिर झुकाना, सामने न ताकना ।

नीची दृष्टि से देखना ( मुहा० ) कद्र न करना ।

नीचाशय ( वि० ) श्रुत, ओछा, तुच्छ विवर का ।

नीचू ( वि० ) जो टपकता न हो, जो चुप न ।

नीचे ( कि० वि० ) नीचे की ओर, अधोभाग में ।

नीचे-ऊपर ( मुहा० ) तले-ऊपर, उथल-पुथल ।

नीचे गिरना ( मुहा० ) मान-मर्यादा खोना, पतित होना, पछाड़ खाना, कुरती में पटका जाना ।

नीचे डालना ( मुहा० ) फेंकना, गिराना, जीतना ।

नीचे लाना ( मुहा० ) कुरती में पछाड़ना, गिराना ।

नीचे से ऊपर तक ( मुहा० ) सर्वत्र, सर्वोपमे, सिर से पैर तक ।

नीज ( पु० ) रस्सी ।

नीजन ( वि० ) सुनसान, निर्जन, जनशून्य ।

नीजू ( स्त्री० ) रस्सी, पानी भरने की बोरी ।

नीझर ( पु० ) झरना, सोता, निर्झर ।

नीठि ( स्त्री० ) अनिच्छा, अरुचि ।

नीठि-नीठि करके ( मुहा० ) उपाय-रथों करके, किसी-न-किसी तरह ।

नीठो ( वि० ) अप्रिय, अनिष्ट, न मानेवाला ।

नीड़ ( निःश्रुति तरह में, इल्ल=मोना ज़िममें ) ( पु० ) पखेरुओं का घर, घोंसला, खोंता, आशियाना, रथ में बैठने का मुख्य स्थान ।

नीड़क } पु० चिड़िया, पक्षी ।  
नीड़ज }

नीत ( नी+त, नी=ले जाना ) ( वि० ) प्राप्त, लाया गया ।

नीति ( नी=ले जाना ) ( स्त्री० ) अच्छा चलन, उचित व्यवहार, राजनीति, देश-प्रबंध संबंधी विद्या, न्याय ४ प्रकार के हैं—साम, दाम, दंड, भेद ।

नीतिकला ( स्त्री० ) राजनीति, हिकमतअमली, पालिसी ।

नीतिधात्री } ( पु० ) मुहकमा दीवानी ।  
नीतिविधायक }

नीतिज्ञ ( नीति+ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) नीति जाननेवाला, राजज्ञानी ।

नीदना ( कि० स० ) निंदा करना ।

नीधना ( वि० ) धनहीन, दरिद्र ।

नीध्र ( पु० ) वन, पहिण का एक चक्र, चंद्रमा, रेवती नक्षत्र ।

नीप ( पु० ) कदव, दुपहरिया, अशोक, पहाड़ का निचला भाग ।

नीपर ( पु० ) लं० में बंधा हुई रस्सियों में से एक ।

नीयर ( वि० ) दुर्बल, कमज़ोर ।

नीम } ( म० निव, निव=मिचिना ) ( पु० ) एक वृक्ष  
नीय } का नाम ।

नीमगिर्दी ( पु० ) बड़ई का एक औज़ार-विशेष ।

नीमचा ( पु० ) खाँड़ा ।

नीमजाँ ( वि० ) अधमरा ।

नीमटर ( वि० ) अधकचरा, जिसे पूरी विद्या या ज्ञान-कारी न हो, जो किसी विषय को थोड़ा-बहुत जानता हो, अर्द्ध-शिक्षित ।

नीमन ( वि० ) अच्छा, भला, नीरोग, चंगा ।

नीमबर ( पु० ) कुरती का एक पेंच ।

नीमर ( वि० ) दुर्बल, शक्तिहीन ।

नीमर-रज़ा ( वि० ) थोड़ी बहुत रज़ामंदी, कुछ तोप या प्रसन्नता ।

नीमा ( पु० ) एक प्रकार का जामे के नीचे पहनने का, सामने बटन और घुटने तक का, ऊँचा श्रृंगरखा ।

नीमावन ( पु० ) वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

नीमास्तीन ( स्त्री० ) एक प्रकार की आधी बाँई की कुरती या फ़तुई ।

नीयत ( स्त्री० ) भाव, आशय, इच्छा, संकल्प, भावना ।

नीयत डिगना ( मुहा० ) मन में विकार उत्पन्न होना, बुरा संकल्प होना ।

नीयत बदल जाना ( मुहा० ) बुरा विचार होना, अनु-  
चिन्तन या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना ।

नीयत बद होना ( मुहा० ) बेईमानी सूझना ।

नीयत बाँधना ( मुहा० ) हरादा करना ।

नीयत बिगड़ना ( मुहा० ) नीयत बद होना ।

नीयत भरना ( मुहा० ) इच्छा पूरी होना ।

नीयत में फर्क आना ( मुहा० ) बेईमानी या बुराई  
सूझना ।

नीयत लगी रहना ( मुहा० ) इच्छा बनी रहना, जो  
ललचाया करना ।

नीर ( नी=पानी ) ( पु० ) पानी, जल, रस ।

नीर ढलना ( मुहा० ) मरते समय आँख से आँसू  
बहना ।

नीर ढल जाना ( मुहा० ) निर्लज्य या बेहया हो जाना ।

नीरज ( नीर=पानी, जन्=जन्मा होना ) ( पु० ) कमल,  
कैवल, ऊर्बिलाक, ( वि० ) पानी में पैदा हुई  
चीज़ ।

नीरद ( नीर=पानी, दा=देना ) ( पु० ) बादल, मेघ,  
घन, ( वि० ) वेदांत का अर्थ ।

नीरधर ( नीर=पानी, धृ=ग्वना ) ( पु० ) बादल, मेघ ।

नीरधि ( पु० ) समुद्र ।

नीरना ( क्रि० सं० ) बिखेरना, छितराना ।

नीरनिधि ( नीर=पानी, निधि=खजाना ) ( पु० ) सभं,  
दर, समुद्र, सागर ।

नीरपति ( पु० ) वरुण देवता ।

नीरम ( पु० ) वह बौद्ध जो जहाज़ पर केवल उसकी  
स्थिति ठीक रखने के लिये रहता है ।

नीरस ( नीर=पानी, रस=स्वाद ) ( वि० ) निरस, फीका,  
असार, रसहीन ।

नीराजन ( पु० ) दीपदान, आरती, देवता को दीपक  
दिलाने की विधि ।

नीराजना ( क्रि० अ० ) दीपक दिखाना, आरती उता-  
रना, हथियारों को मांजना ।

नीरिंदु ( पु० ) सिंघोर का पेड़ ।

नीरे ( क्रि० वि० ) नियरे, पास ।

नीरोग ( वि० ) स्वस्थ, चंगा ।

नील ( नील=नीला होना ) ( वि० ) नीला, काला, कृष्ण,

सौ खरब, ( स्त्री० ) एक पौदा जो नीला रँगने के  
काम में आता है, एक नदी का नाम जो मिसर  
देश में है, ( पु० ) एक पहाड़ का नाम, एक बानर  
का नाम, कुबेर की नव निधि अथवा खज़ाने में  
से एक खज़ाना ।

नील का खेत ( मुहा० ) कलंक का स्थान ।

नील का टीका लगाना ( मुहा० ) कलंक लेना, बद-  
नामी उठाना ।

नील की सलाई फिरवा देना ( मुहा० ) आँखें  
फोड़वा डालना, अंधा कर देना ।

नील घोंटना ( मुहा० ) झगड़ा-बहलवा मचाना ।

नील जलाना ( मुहा० ) पानी बरसने के लिये नील  
जलाने का टोटका करना ।

नील डालना ( मुहा० ) गहरी मार मारना ।

नील बिगड़ना ( मुहा० ) चाल-चलन बिगड़ना, आच-  
रण-अप होना, आकृति बिगड़ना, चेहरे का रंग  
उड़ना, बुद्धि ठिकाने न रहना, शामत आना,  
दिवाला होना ।

नीलकंठ ( नील=नीला, कंठ=गला ) ( पु० ) महादेव  
जिन्होंने समुद्र मथने के समय जो विष निकला  
था उसको पिया, इसलिये उनका गला नीला  
हो गया, मोर, मयूर, एक पक्षरू का नाम, कटनास,  
मूली, पियासाल ।

नीलकंठाक्ष ( पु० ) रुद्राक्ष ।

नीलकंठो ( स्त्री० ) एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

नीलक ( पु० ) मटर, भौंरा, काच, लवण, बीजगणित  
में अष्ट्यक्त राशि का एक भेद ।

नीलकण ( पु० ) नीलम का टुकड़ा, ठोड़ी पर गोदे  
हुए गोदने का बिंदु ।

नीलकणा ( स्त्री० ) स्याह ज़ीरा, काला-ज़ीरा ।

नीलकांत ( पु० ) विष्णु, नीलम, एक पहाड़ी  
चिड़िया ।

नीलकेशी ( स्त्री० ) नील का पौदा ।

नीलकान्ता ( स्त्री० ) विष्णुकान्ता जता जिसमें बड़े-बड़े  
नीले फूल लगते हैं ।

नीलगाय ( सं० नील गी० ) ( स्त्री० ) नीली गाय,  
रोक ।

नीलग्रीव ( नील=नीली, ग्रीव=गर्दन ) ( पु० ) महादेव,

शिव, (वि०) नीले गङ्गावाला, जिसका गङ्गा नीला हो, मोर ।

नीलम ( सं० नीलमणि ) ( पु० ) नीले रंग का रत्न, ज़मुन्द ।

नीलमणि ( सं० नील=नीला, मणि=रत्न ) ( स्त्री० ) नीलम, ज़मुन्द ।

नीलमाप ( पु० ) काला उरद, राजमाप ।

नीलमृत्तिका ( स्त्री० ) कालीमिट्टी ।

नीललोहित ( वि० ) बैंगनी, नीलापन लिए लाल ।

नीलवल्ली ( स्त्री० ) बाँदा, परगाछा, बदाक ।

नीलवसन ( पु० ) नीला कपड़ा ।

नीलवृत्त ( पु० ) तूख, रुई ।

नीलवृष ( पु० ) विशेष प्रकार का साँड़ या बछड़ा ।

नीलवृषा ( स्त्री० ) बैंगन ।

नीला ( ग० नील ) ( वि० ) नीला में रँगा हुआ, नीलवर्ण ।

नीलांग ( वि० ) नीले अंग का ( पु० ) सारस पक्षी ।

नीलांजन ( पु० ) नीला सुरमा, तूतिया, नीलाधोथा ।

नीलांजना ( स्त्री० ) बिजली, काली कपास ।

नीलांजसा ( स्त्री० ) बिजली, एक अप्सरा, एक नदी ।

नीलाधोथा ( पु० ) तूतिया, नीलांजन ।

नीलाम ( पुर्तगाल की भाषा का शब्द "नीलाम" ("Leilam") का अपभ्रंश ) ( पु० ) किसी चीज़ का पहले कुछ मोल बोलना, फिर उधो-उया माहक मोल बढ़ाने जायें और अंत में जो सबसे अधिक बोले उसने के हाथ उसे बेच देना ।

नीलांशर ( नील=नीला, अंशर=नपुंसक जिसका हाँ ) ( पु० ) बलदेव, शनैश्चर, नीला कपड़ा ।

नीलांशरी ( स्त्री० ) एक राशिनी ।

नीलांजुज ( पु० ) नील कमल ।

नील् ( स्त्री० ) एक प्रकार का घास ।

नीलोपल } ( नील=नीला, उपल=तर, उपन=कमल )  
नीलोपल } ( पु० ) नीला पत्थर, नीलमणि या नीला कमल ।

नीलोत्तर ( पु० ) नील कमल, कुई, कुमुद ।

नीवानास ( पु० ) जब मूल से नाश, ध्वंस, बरबादी ।

नीवार ( पु० ) परिवाजक, भिक्षु, कीचड़, जल ।

नीवार ( नी, वृ=याच्छादन करना ) ( घेरना ) ( पु० ) तिन्नी का वृक्ष, तालाब का चावल ।

नीवी ( स्त्री० ) बनियों का मूलधन, पूँजी, कमरबंद, इंज़ारबंद, नारा ।

नीवृत् ( पु० ) देश, जनपद, जनस्थान ।

नीशार ( नी+शृ=मारना ) ( पु० ) तंवू, कनान, डेरा, कमल, रेशमी वस्त्र, मसहरी ।

नीम् ( पु० ) मक़ेद धतूरा ।

नीम् ( पु० ) ज़मीन में गड़ा हुआ काठ का कुंदा जिस पर रखकर चारा या गन्ना काटते हैं ।

नीहार ( नी, ह=लेना ) ( पु० ) घना पाला, ओस, कुहरा, शिशिर ।

नीहारिका ( स्त्री० ) आकाश में भुँई या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफ़ेद धब्बे की तरह कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है ।

नुकताचीनी ( स्त्री० ) छिट्छानेपण, दंग निकालने का काम ।

नुकती ( स्त्री० ) एक प्रकार का मिठाई, बेसन की छोटी और महीन बुंदियाँ ।

नुकरा ( पु० ) चाँदी, घोड़े का सफ़ेद रंग ( वि० ) सफ़ेद रंग का घोड़ा ।

नुकरी ( स्त्री० ) जलाशयों के पामरहनेवाली एक चिड़िया जिसके पैर सफ़ेद और चोंच काली होती है ।

नुकसान ( पु० ) घटा, कमी, क्षीणता, ह्रास, हानि, घाटा ।

नुकाई ( स्त्री० ) खुरपा से निराने का काम ।

नुकड़ ( पु० ) नोक, पतला सिरा, सिर, छोर, अंत ।

नुका ( पु० ) नोक ।

नुकाटोपा ( स्त्री० ) पतली दुपट्टिया टोरी ।

नुका मारना ( मुहा० ) गंदी के खेब में लकड़ी मारना, कोल टोटना ।

नुक्स ( पु० ) बुराई, दाप, ऐब ।

नुखटना ( कि० अ० ) भालू का चिन लेटना ।

नुखाट ( स्त्री० ) छड़ी को मार जैसा भालू के मुँह पर मारते हैं ।

नुत ( वि० ) प्रशंसित, वंदित ।

नुति ( स्त्री० ) स्तुति, वंदना ।

नुत्त ( वि० ) प्रेरित, चलाया हुआ ।

नुत्फा ( पु० ) वीर्य, शुक्र ।

नुत्फा ठहरना ( मुहा० ) गर्भ रहना ।

नुत्फाहराम ( वि० ) वर्णवन्कर, दोगला, कमीना, बदमाश ।

नुनस्वरा ( वि० ) नमकीन, स्वाद में नमक-सा खारा ।

नुनना ( क्रि० म० ) खेत काटना, लुनना ।

नुमाइश ( स्त्री० ) प्रदर्शन, दिखाव ।

नुनन } ( नव, नु=मगहना ) ( पु० ) नया, नवीन,  
नूल } टटका ।

नून } ( म० लवण ) ( पु० ) निमक, नमक, खोन,  
नीन } खार ।

नूपुर ( नु=गहना, पुर=आगे जाना, अर्थात् जो गन गहनों के आगे रहता है ) ( पु० ) चिड़िया, पाँव में पहनने का गहना ।

नूर ( पु० ) ज्योति, प्रकाश, आभा ।

नूरवार ( पु० ) जूझाहा, ताँती ।

नूरा ( पु० ) आपस में मिलकर खड़ी जानेवाली कुश्ती ।

नृ ( नी=ले जाना वा चलना ) ( पु० ) मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द ।

नृग ( पु० ) एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।

नृधन ( वि० ) नरधानक ।

नुत्त } ( नृत्=नाचना ) ( पु० ) नाच, नर्तन ।  
नृत्य }

नृत्यक ( नृत्=नाचना ) ( पु० ) नाचनेवाला, नर्तक ।

नृप ( नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला, पा=पालना ) ( पु० ) राजा, भूपाल, भूपति ।

नृपघाती ( नृप=राजा, हन्=मारना ) ( पु० ) राजाओं का मारनेवाला, परशुराम ।

नृपति ( नृ=मनुष्य, पति=स्वामी, मालिक ) ( पु० ) राजा ।

नृपमान ( पु० ) बाजा-विशेष जो राजाओं के भोगन के समय बजाया जाता था ।

नृपाध्वर ( पु० ) राजसूय-यज्ञ ।

नृपाल ( नृ=मनुष्य, पाल्=पालना ) ( पु० ) राजा ।

नृमर ( पु० ) राक्षस ।

नृमिथुन ( पु० ) स्त्री-पुरुष का जोड़ा ।

नृमेध ( पु० ) नरमेध-यज्ञ ।

नृत्यज्ञ ( पु० ) अतिथिपूजा, अभ्यागत का सत्कार ।

नृशंस ( नृ=मनुष्य, शंस=मारना ) ( वि० ) मारनेवाला,

दुष्ट, दुःखदायी, क्रूर, परद्रोही, बेहया, बदकार ।

नृशंसता ( स्त्री० ) क्रूरता, निर्दयता ।

नृशृंग ( पु० ) अलीक पदार्थ, मनुष्य के सींग के समान अतर्हीनी बात ।

नृसिंह ( नृ+सिंह ) ( पु० ) नरसिंह अवतार ।

नृहरि ( नृ=मनुष्य, हरि=सिंह ) ( पु० ) नरसिंह अवतार ।

नेक } ( वि० ) कुछ, थोड़ा, अल्प, तनिक, ज़रा ।  
नेकु }

नेकचलन ( वि० ) सदाचारी ।

नेकनाम ( वि० ) नामवर, यशस्वी, सुयशी ।

नेकवस्तु ( वि० ) सुशक्तिस्मत्, सुशील ।

नेकरी ( स्त्री० ) समुद्र की लहर का थपड़ा ।

नेह्ला ( निज्+नृ, निज्=पोषण करना ) ( पु० ) पोषक, पालक, पोषणकर्त्ता ।

नेग } ( पु० ) व्याह में अथवा और किसी  
नेगचार } उत्सव में अपने नातेदारों को कुछ देना,  
व्याह में पुरोहित की दक्षिणा, बाँटा हिस्सा ।

नेगटी ( पु० ) दस्तूर पर चलनेवाला, नेग या रीति पर चलनेवाला ।

नेगी } ( नेग ) ( वि० ) बँटानेवाला, हिस्सेदार,  
नेगीजोगी } परजा, भँगता ।

नेचवा ( पु० ) पलँग का पाया ।

नेजक ( निज्+थक, निज्=गुद करना ) ( पु० ) धोखा, परिष्कारक ।

नेजन ( पु० ) शोधना ।

नेजा } ( पु० ) भाजा, बरछा, साँग, निशान ।  
नेजान }

नेजावरदार ( पु० ) भाजा या राजाओं का निशान लेकर चलनेवाला ।

नेटा ( पु० ) नाक से निकलनेवाला कफ या मल ।

नेटा रहना ( मुहा० ) गंदा और मैला-कुचैला रहना ।

नेट्टे ( क्रि० वि० ) पास, निकट, नज़दीक ।

नेत ( पु० ) ठहराव, निर्धारण, मयानी की रस्सी, गहना-विशेष ।

नेतली ( स्त्री० ) एक प्रकार की पतली डोरी ।

नेतव्य ( पु० ) ले जाने योग्य ।

नेता ( नी=ले जाना ) ( पु० ) ले जानेवाला, अगुआ, नायक, प्रभु, स्वामी ।

नेति ( न=नहीं, इति=यह ) ( वि० ) ऐसा नहीं, यह नहीं,  
जिसका पार नहीं, अनन्त, परमेश्वर का गुण ।

नेती ( म० नेव, नी=ले जाना या चलाना ) ( स्त्री० ) दही  
मथने की रस्सी ।

नेतीधोती ( स्त्री० ) हठयोग की एक क्रिया जिसमें कपड़े  
की धज्जी पेट में डालकर आतें साक़ करते हैं ।

नेत्र ( नी=ले जाना या चलाना या पहचाना या पाना )  
( पु० ) आँख, नयन, लोचन, नेनी, मथानी की  
रस्सी एक प्रकार का वस्त्र वृत्तमूल, रथ, जटा,  
नाड़ी, वस्त्रशलाका, दो की संख्या का सूचक शब्द,  
( वि० ) नायक, चलानेवाला ।

नेत्रकनीनिका ( स्त्री० ) आँख का तारा ।

नेत्रच्छुद् ( नेत्र=आँख, छुद्=ढकना ) ( पु० ) नेत्रपुट,  
आँखपट ।

नेत्रज ( पु० ) आँख ।

नेत्रपर्यंत ( पु० ) आँख का कोना ।

नेत्रपाक ( पु० ) आँख का एक रोग ।

नेत्रपिंड ( पु० ) आँख का डेला, नेत्रगोलक ।

नेत्रवैध्र ( पु० ) आँखमिर्चानी का खेल ।

नेत्ररंजन ( पु० ) काजल, वज्रल ।

नेत्रस्तंभ ( पु० ) आँख की पलकों का स्थिर हो  
जाना ।

नेत्रांशु ( नेत्र=आँख, अंशु=पानी ) ( पु० ) आँसू, आँख  
का पानी ।

नेत्रोपमफल ( पु० ) बादाम ।

नेपथ्य } ( पु० ) पदों से रास्ता, आड़ का रास्ता,  
नैपथ्य } विनय के लिये सर्जो भूमि, मतांतरा अलं-  
कार, पंथ, वेश, भूषण, सजावट, वेश-स्थान ।

नेपाल ( पु० ) एक देश का नाम ।

नेपुर ( म० नूपर ) ( पु० ) नूपुर ।

नेफा ( पु० ) पायजामा या लहंगे के धेर में नाड़ा या  
हजारबंद पिरोने का स्थान ।

नेथ ( पु० ) सहायक, मंत्री, दीवान ।

नेम ( नि० ) अर्ह, आधा, निस्क ।

नेम ( सं० नियम ) ( पु० ) वचन, प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प,  
वाचा, होड़, हठ, व्रत, संयम आदि ।

नेमधर्म ( सं० नियमधर्म ) ( पु० ) उपवास, व्रत,  
अच्छा चलन ।

नेमि ( स्त्री० ) धुरी जिसमें पहिया लगे, कुँ की  
जगत, कुँ की जमवट, किनारे का हिस्सा ( पु० )  
तिन्नी, जंगली चावल ।

नेरवा ( पु० ) कोल्हू के नोचे बनी हुई तेल बहने  
की नाली ।

नेरे } ( सं० निकट ) ( कि०वि० ) निश्च, पास, समीप,  
नेरी } नगोब ।

नेव } ( स्त्री० ) भीत की जड़ ।  
नीव }

नेवज ( पु० ) देवता को अर्पित करने की वस्तु ।

नेवजा ( पु० ) चिखगोत्र ।

नेवतना } ( सं० निमंत्रण ) ( कि० सं० ) न्योना देना,  
न्योतना } खिन्नाने के लिये बुलाना ।

नेवता }  
नोता } ( म० निमंत्रण ) ( पु० ) बुलाहट, खिलाने  
न्योता } के लिये बुलाना ।

नेवर }  
नेवल } ( पु० ) घोड़े के पाँव का घाव अथवा रोग ।

नेवल } ( म० नकुल ) ( पु० ) एक जंतु का नाम ।  
नेवला }

नेवा ( पु० ) रवाज, रीति, दस्तूर, कहावत  
लोकोक्ति ।

नेवार } ( फा० नेवार ) ( स्त्री० ) एक प्रकार की चौड़ी  
निवार } पट्टी या कौर जिससे पतंग बुने जाते हैं,  
नेपाख में बसनेवाली वहाँ की एक आदिम जाति ।

नेवारी ( स्त्री० ) एक प्रकार का फूल ।

नेस ( पु० ) जंगली जानवरों के लबे-नुकीले दाँत, जिनसे  
वे काटते हैं ।

नेसकुन ( पु० ) बंदरों का जोड़ा खाना ।

नेसुक ( वि० ) थोड़ा-सा, तनिक, ( कि० वि० ) थोड़ा,  
जरा, टुक, तनिक ।

नेसुहा ( पु० ) ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा  
जिस पर गन्ना या चारा काटते हैं ।

नेस्त ( वि० ) जो न हो ।

नेस्ती ( स्त्री० ) न होना, आलस्य, नाश, बर्बादी ।

नेह ( म० स्नेह ) ( पु० ) प्यार, प्रीति, मोह, मुहब्बत,  
चिकना, तेज या घी ।

नेही ( म० स्नेही ) ( वि० ) प्यारा, मित्र ।



नै ( स्त्री० ) बाँसुरी, हुक़े की निगाही ।

नैकचर ( वि० ) जो अकेले न चखते हों, झुंड में चखते हों, जैसे-सुअर, भेड़िया, हिन हत्यादि ।

नैकट्य ( पु० ) निकटता, निकट होने का भाव ।

नैकृतिक ( वि० ) निन्दुर, कटुभाषी ।

नैगम ( वि० ) निगम-संबंधी, जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो, जैसे-उपनिषद्, ( पु० ) उपनिषद्-भाग, नय, नीति ।

नैचा ( पु० ) हुक़े की दोहरी नखी ।

नैचावद् ( पु० ) नैचा बनानेवाला ।

नैचिक ( पु० ) गाय आदि चौपायों का खिर ।

नैचिकी ( स्त्री० ) अच्छी गाय ।

नैची ( स्त्री० ) पुर, मोट वा चरसा खींचते समय बैलों के चखाने के लिये बनी हुई डालू राह, रपट पैड़ी ।

नैन } ( म० नयन ) ( पु० ) आँख, नेत्र, खोचन ।  
नैना }

नैमित्तिक ( पु० ) निमित्त-संबंधी, निमित्त से आया, गौर मामूली, जो रोज़ न हो ।

नैमिष ( निमिष, अर्थात् जहाँ विष्णु ने पक्ष भर में एक गजस का माग था ) ( पु० ) एक तीर्थ का नाम ।

नैमिषारण्य ( नैमिष+अरण्य ) ( पु० ) एक जंगल का नाम जहाँ बहुत ऋषि रहते थे और जहाँ सूतजी ने इन सनकादि ऋषियों को महाभारत और पुराण आदि सुनाए थे ।

नैमय ( पु० ) विनिमय, वस्तुओं का बदला, वाणिज्य ।

नैया ( स्त्री० ) नाव, किरनी ।

नैयायक ( न्याय ) ( पु० ) न्यायशास्त्र का जाननेवाला, न्यायशास्त्र का पंडित, मुंसिक ।

नैरंतर्य ( पु० ) निरंतरत्व, अविच्छेदत्व, निरंतर का भाव ।

नैर ( पु० ) शहर, देश, जनपद ।

नैराश्य ( पु० ) निरासरा, नाउत्सेही, आशाशून्यता, आशारहित ।

नैऋत्य ( नैऋत=एक राक्षस का नाम जो इम कोंण का दिक्पाल है ) ( पु० ) दक्षिण-पश्चिम का कोण ।

नैवासी ( पु० ) वृक्ष पर रहनेवाला देवता ।

नैवेद्य ( निवेद ) ( पु० ) देवता का भोग, प्रसाद, चढ़ावा, बखि ।

नैष्ठ्य ( पु० ) क्रूरता, निठुराई ।

नैष्ठिक ( पु० ) धार्मिक, मुक्ततत्त्व, विश्वासिक ( स्त्री० )

नैष्ठिका, धार्मिका, विश्वासिका ।

नैसर्गिक ( वि० ) स्वाभाविक, प्राकृतिक, कुदरती ।

नैसा ( वि० ) बुरा, खराब ।

नैहर ( पु० ) पीहर, मैका, स्त्री के बाप का घर ।

नोआ ( पु० ) } दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने  
नोई ( स्त्री० ) } की रस्सी, बंधो

नोक की लेना ( महा० ) डाँग हाँकना, बढ़-बढ़कर बातें करना ।

नोकचोंक ( बोल० ) ( स्त्री० ) रस्सियों से बातें करना, इशारों से बातें करना, जगडौट ।

नोकभोंक ( बोल० ) ( स्त्री० ) खिंचाखिंची, चढ़ाउपरी, खिंचातानी ।

नोक दुम भागना ( महा० ) जी छोड़कर भागना ।

नोक बनाना ( बोल० ) रूप सँवारना ।

नोक रह जाना ( महा० ) आन की बात रह जाना, बात रह जाना ।

नोकना ( कि० म० ) खखाना ।

नोकपलक ( स्त्री० ) चेहरे की बनावट, आँख, नाक आदि की गढ़न ।

नोकपलक से ठीक ( महा० ) नख से शिख तक सुंदर ।

नोकाभोंकी ( स्त्री० ) छेड़छाड़, ताना, आवाजकशी, परस्पर की चोट, विवाद, झगडा ।

नोखा ( वि० ) अद्भुत, विचित्र, अनूठा, अपूर्व ।

नोचना ( कि० म० ) खसोटना, बकोटना, खरोटना, छील डालना, नाखून से डखाटना ।

नोट ( पु० ) याददाश्त, हुंडी, हाशिया, निशान, पत्र, टिप्पणी, सरकारी हुंडी ।

नोटिस ( स्त्री० ) विज्ञप्ति, सूचना, विज्ञापन, इशितहार ।

नोदून ( पु० ) प्रेरणा, बैलों के हाँकने की छुकी या कोड़ा, पैना, औगी ।

नोयां ( वि० ) सुंदर, सज्जोना, अच्छा, बढ़िया ।

नोर ( वि० ) नया, नवीन ।

नोहर ( वि० ) अलभ्य, दुर्लभ, अनोखा ।

नौकर ( पु० ) चाकर, सेवक, दास ।

नौकरी ( स्त्री० ) चाकरी, सेवा ।

नौ } ( नुद=चलाना ) ( स्त्री० ) नाव, तरणी ।  
नौका }

नौखंड ( सं० नव खंड ) ( पु० ) पृथ्वी के नव भाग-

१ भरत, २ हलायूत, ३ किंपुरुष, ४ भद्र, ५ केतु-  
माज, ६ हिरण्य, ७ कुरु, ८ रम्य, ९ हरिवर्ष ।  
नौगरी ( स्त्री० ) स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना,  
नौगिरही ।  
नौची ( स्त्री० ) वेश्या की पाली हुई लड़की जिसे वह  
अपना व्यवसाय सिखाती है ।  
नौछावर ( स्त्री० ) निछावर, सद्का, डतारा, बलिहारी ।  
नौज़ ( अन्त्य० ) ऐसा न हो ।  
नौड़ाना ( सं० नमन, नम=भुक्ताना ) ( क्रि० म० ) सिर  
भुक्ताना ।  
नौतना ( सं० निमज्ज ) ( क्रि० म० ) नेवतना, न्योतना ।  
नौता ( सं० निमज्ज ) ( पु० ) नेवता, न्योता ।  
नौतेरही ( स्त्री० ) पुरानी चाल का छोटी ईंट, जूए का  
खेल-विशेष ।  
नौदसी ( स्त्री० ) एक रीति जिसके अनुसार कियान  
अपने जर्मादर से रुपया उधार लेता है और साज  
भर में रु० के १०० देता है ।  
नौध ( पु० ) नया पौधा, शंकुवा ।  
नौधत ( स्त्री० ) पारा-पारा, गति, दशा, हालत, समय-  
समय पर बजनेवाला बाजा ।  
नौधत झड़ना ( मुहा० ) नौधत बजना ।  
नौधत बजना ( मुहा० ) आनंदोत्सव होना ।  
नौधत बजाकर ( मुहा० ) डंके की चोट, गुने आम ।  
नौधत बजाना ( मुहा० ) सुशा मनाना, आनंद प्रकट  
करना ।  
नौधत का टंकोर ( मुहा० ) डंके की चोट, डंके या  
नगाड़े की आवाज़ ।  
नौधतखाना ( पु० ) नकारखाना, फाटक के ऊपर  
बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौधत बजाई  
जाती है ।  
नौधती ( पु० ) नकारची, नौधत बजानेवाला, पहरेदार,  
कोतल घोड़ा, बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा,  
बड़ा खेमा या तंजु ।  
नौधरार ( पु० ) वह भूमि जो किसी नदी के हट जाने  
से निकल आती है ।  
नौमि ( क्रि० सं० ) नमस्कार करता हूँ ।  
नौमी ( स्त्री० ) पक्ष की नवी तिथि ।  
नौरूप ( पु० ) नील की क्रसल की पहली कट ई ।

नौरोज़ ( पु० ) पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन,  
सुशी का दिन ।  
नौलासी ( वि० ) कोमल, नये, मुलायम ।  
नौशा ( पु० ) वर, दूल्हा ।  
नौशी ( स्त्री० ) नववधू, दुलहित ।  
नौसत ( पु० ) सोलहो शृंगार, सिंगार ।  
नौमरा ( पु० ) नीलबी की माला, हार या गजरा ।  
नौसादर ( पु० ) एक तरह का खार ।  
नौसार ( स्त्री० ) वह स्थान जहाँ नोनिया लोग लोनी  
मिट्टी से नमक बनाते हैं ।  
नौहेंड ( पु० ) कंरी हैंदिया, मिट्टी की नई हाँड़ी ।  
नौहेंडा ( पु० ) कनागत, पितृपक्ष ।  
न्यक ( पु० ) रथ का एक अंग ।  
न्यकु ( वि० ) बहुत दौड़नेवाला ।  
न्यजतिका ( स्त्री० ) नीचे की ओर की हुई अंजली या  
हथेली ।  
न्यच्छु ( पु० ) चर्म-रोग-विशेष जिसमें शरीर पर काले  
चकत्ते पड़ जाते हैं ।  
न्यस्त ( वि० ) स्थापित, क्षिप्त, त्यक्त, चुनकर सजाया हुआ,  
( पु० ) धरोहर रखवा हुआ, अमानत रखवा हुआ ।  
न्याद् ( पु० ) आहार ।  
न्याय ( नि, निश्चय, इ=ज्ञान ) ( पु० ) धर्म, विचार,  
ईसाक्र, नीति, तर्कशास्त्र, निर्णय ।  
न्यायकारी } ( पु० ) न्याय करनेवाला मुसिक, झादिल ।  
न्यायी }  
न्यायालय ( न्याय+आलय ) ( पु० ) झदालत, कचहरी,  
न्यायसभा ।  
न्यायी ( न्याय ) ( पु० ) न्याय करनेवाला, धार्मिक,  
धर्मात्मा, न्यायशास्त्र का जाननेवाला ।  
न्यार ( सं० न्याद, नि, अद=माना ) ( पु० ) चारा, सूखी  
घास ।  
न्याग ( भा० निरालय ) ( वि० ) जुदा, अलग, एकांत ।  
न्यारिया ( पु० ) एक जाति के मनुष्य जो सोने-चाँदी  
आदि धातुओं को मेल, मिट्टी से जुदा करके  
निकालते हैं ।  
न्याव ( सं० न्याय ) ( पु० ) धर्मविचार, ईसाक्र ।  
न्यशनल कांग्रेस ( पु० ) जातीय महासभा, क्रीमी  
दरबार ।

न्यस्त ( नि+अस्त, अस्=देना ) ( पु० ) स्थापित, अर्पित, दिया गया ।

न्यास ( नि+अप् ) ( पु० ) अर्पण, निक्षेप, विन्यास, संन्यास, स्थापन, उपनिधि, धरोहर ।

न्यासस्वर ( पु० ) वह स्वर जिससे कोई राग समाप्त किया जाय ।

न्यासिक ( वि० ) धरोहर रखनेवाला ।

न्युज ( नि+उञ्ज=कौमत्त करना ) ( पु० ) अधीमुख, नीचा मुँह, कुञ्जमुख, टेढ़ा मुख ।

न्यून ( नि=निश्चय ऊन=थोड़ा, कम होना ) ( वि० ) थोड़ा, कम, दोषी, पामर, नीच ।

न्यूनता ( न्यून ) ( स्त्री० ) कमी, घटी, छोटापन, चुत्रता, निचाई ।

न्यूनाधिक ( न्यून+अधिक ) ( वि० ) थोड़ा-बहुत, घट-बढ़, कम-बेग ।

## प

प ( पत्=गिरना वा पा=चवाना, या पांना ) ( पु० ) हवा, पवन, पत्ता, पीना, ( वि० ) बचानेवाला, पीने वाला, तीव्र, लाज रंग का, शूरवीर ।

पैंगता ( सं० पंगु ) ( वि० ) लँगड़ा, टेढ़े पाँव का, अपंग ।

पैवार ( सं० प्रमर, प्र=बहुत, मृ=मरना ) ( पु० ) राज-पूतों की ३६ जातियों में एक जाति ।

पैवारा ( पु० ) कहानी, कथा, इतिहास, लंबा आख्यान ।

पैवारिया ( पैवारा ) ( पु० ) भाट, कहानी कहनेवाला, नक़्खिया ।

पैवाी ( सं० पर्णवाटी ) ( स्त्री० ) पान की बाड़ी ।

पकड़ना ( कि० म० ) गहना, हाथ में लेना, धरना, रोकना, बाधा करना, टोकना, तर्क करना, दोष निकालना ।

पकना ( सं० पचन, पच्=पकाना ) ( कि० अ० ) रूँधना, पका होना ।

पकवान ( सं० पकाव, पक=पका हुआ, अल=अनाज ) ( पु० ) पका हुआ अन्न, तखी हुई चीज़, मिठाई ।

पकापकाया ( वि० ) तैयार, पका हुआ ।

पका } ( सं० पक ) ( वि० ) पका हुआ, कच्चा नहीं  
पका } ( जैसे फल ) रींघा हुआ, पूरा, चतुर, होशि-  
यार, निपुण, प्रवीण, मावधान, रढ़, मजबूत,  
पोढ़ा, सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ ।

पक़ि ( पच्+ति, पच्=पकना, पकाना ) ( स्त्री० ) पचन, पकना, पकाना, पाक, सिद्धि, पकाई ।

पक ( पच्=पकना ) ( वि० ) पका, पाका, पका हुआ, पका, रढ़, चतुर, प्रवाय ।

पक्ष ( पल्=लेना वा पकड़ना ) ( पु० ) पख, पाख, अंधेरा उजला पाख, आधा महीना, पंख, पौख, पर, डैना, सहाय, बख, तरक, ओर, अंग, पार्व, पौजर, जप्था, दल, टोली, तड़, मित्र, आधा, शरीर का आधा भाग, तोर का पंख, तरकदार, जुलक, जूरा, कबरी अर्थात् पटिया ।

पक्षक ( पल्+अक ) ( पु० ) खिड़की, मित्र, मददगार ।

पक्षार ( पु० ) खिड़की ।

पक्षपात ( पल्=तरक अथवा अनुचित सहाय, पल्=गिरना ) ( पु० ) अन्यायी की सहायता करना, तरकदारी, पक्ष, पक्षेदारी, अन्याय ।

पक्षपाती ( पक्षपात ) ( वि० ) पक्षपात करनेवाला, अन्याय से सहाय करनेवाला, पक्ष करनेवाला, तरकदार, सहायक, समर्थक ।

पक्षघात ( पल्=शरीर का एक भाग, आघात=मारना ) ( पु० ) अर्द्धांग, झोला ।

पक्षान्तर ( पल्=तरक, अंतर=दूसरी ) ( पु० ) दूसरी ओर, विपक्ष ।

पक्षिराज ( पक्षिन्=पखेरू, राजन्=राजा ) ( पु० ) पखेरूओं का राजा, गरुड़ ।

पक्षी } ( पल् ) ( पु० ) पखेरू, परिंद, बाय, तीर,  
पक्षीय } सहायक, हिमायती ।

पक्षम ( वि० ) अतिलोमी, खिन्न ( पु० ) पखक ।

पख } ( सं० पल् ) ( पु० ) पखबारा, आधा महीना,  
पाख } पक्ष, तरक, जप्था, सहाय ।

पखड़ी ( सं० पख=पंख ) ( स्त्री० ) फूल की पत्ती ।  
 पखरांटा ( पु० ) सोने आदि का पत्र जो पान पर  
 लगाया जाता है ।  
 पखवारा ( सं० पख ) ( पु० ) पाख, पख, पंद्रह दिन,  
 आधा महीना ।  
 पखान ( सं० पापाण ) ( पु० ) पत्थर ।  
 पखारना } ( सं० प्रखालन ) ( क्रि० म० ) धोना,  
 पखालना } खँधालना, शुद्ध करना, साफ करना ।  
 पखाल ( सं० पयःखल, पयस=पानी, खल=खान ) ( स्त्री० )  
 एक प्रकार का चमड़े का बड़ा थैला जिसमें पानी  
 लाया जाता है और वह थैला, भैसे आदिवा ऊँट पर  
 लादा जाता है ।  
 पखावज ( स्त्री० ) मृदंग, ढोलक, एक प्रकार का वाजा ।  
 पखावजी ( पु० ) पखावज बजानेवाला ।  
 पखेरा ( पु० ) निशान, चिह्न, अंक, छाप ।  
 पखेरू ( सं० पखी ) ( पु० ) पंखी, पक्षी, परिंद ।  
 पखोर ( पु० ) ठोकर ।  
 पखौड़ा ( पु० ) कंधे की हड्डी ।  
 पग ( सं० पद ) ( पु० ) पाँव, पैर, गोड़ ।  
 पग पट तार बजाना ( मुहा० ) नाचने में पाँवों में गत  
 बजाना ।  
 पगडंडी } ( पग=पाव, दंडी=लकड़ी ) ( स्त्री० ) छोटा  
 पगडंडी } या मकीर्ण रास्ता पदचिह्न, चौर राह, लीक,  
 गुप्त मार्ग ।  
 पगड़ी ( स्त्री० ) पगा, पगिया, चौरा, दुश्मार, अम्नामा,  
 शमला, मंथीर ।  
 पग धारना ( पग=पैर, धारना=रखना ) ( क्रि० अ० )  
 पग धारना, सिधारना, जाना, आना ।  
 पगना } ( क्रि० अ० ) मिलना, जीन होना, रस में  
 पागना } डूबना ।  
 पगला ( वि० ) पागल, बावला, मूर्ख ।  
 पगहा ( पु० ) थैल, गाय आदि के बाँधने की रस्मी ।  
 पगार ( पु० ) गारा, गीली मिट्टी, बेतन ।  
 पगिया ( स्त्री० ) पगड़ी, चौरा, पाग, दुश्मार,  
 शमला ।  
 पगुराना ( क्रि० अ० ) जुगाली करना, पागुर करना ।  
 पंक ( पचि=फैलना ) ( पु० ) कीचड़, कंदम, बोधा,  
 कीच, काँदी, दलदल, पाप ।

पंकज ( पंक=कीचड़, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) कमल,  
 पद्म, कंबल ।  
 पंकनिधि ( पङ्क=कीचड़, निधि=खजाना ) ( पु० ) समुद्र,  
 सागर ।  
 पंकरुह } ( पंक=कीचड़ में, रुह=उगना ) ( पु० ) कमल,  
 पंकरुह } कंबल ।  
 पंकार ( पु० ) सोपान, सीढ़ी, पुल, बाँध, सिवार ।  
 पंक्लि ( वि० ) कंदमयुक्त देश, ( पु० ) नाव, नौका,  
 कीचड़वाली जगह ।  
 पंक्लि ( पचि=फैलना, वा फैलाना ) ( स्त्री० ) पानि, पॉन,  
 पंगत, धारी, लकीर, श्रेणी, क्रतार ।  
 पंख ( सं० पख ) ( पु० ) पाँख, पर ।  
 पंखडी ( सं० पख ) ( स्त्री० ) फूल की पत्ती, कली, पखड़ी ।  
 पंखा ( सं० पख ) ( पु० ) बिजना, बेना ।  
 पंखी ( सं० पखी ) ( पु० ) पखेरू, पक्षी, ( स्त्री० ) छोटा  
 पखा ।  
 पंग ( पु० ) पतंगा, पाँखी ।  
 पंगत ( सं० पंक्ति ) ( स्त्री० ) पॉन, पॉती, श्रेणी ।  
 पंगु ( खजि=लगाशे चलना ) ( वि० ) खँगड़ा, पँगुला,  
 अपंग, ( पु० ) शनि ।  
 पंगुल ( पु० ) सफेद रंग का घोड़ा, ( वि० ) पंगु ।  
 पचक ( स्त्री० ) सुखाई, उतार, पटकन ।  
 पचखना ( सं० पच=पाच, खण्ड=भाग ) ( वि० ) ( घर )  
 जिसमें पाँच खंड हों, पचमहला ।  
 पचन ( पच=पचना ) ( पु० ) पचना, पाक, पका हुआ,  
 आग, पकानेवाला ।  
 पचना ( सं० पचन ) ( क्रि० अ० ) गलना, हजम होना,  
 सड़ना, जलना, बिगड़ना, मिहनेत करना, यत्न  
 करना ।  
 पचमेल ( वि० ) मिश्रित, जिसमें कई प्रकार हों ।  
 पचनीय ( पच+अनीय ) ( वि० ) पाक योग्य, पकाने के  
 लायक ।  
 पचपन ( सं० पंच+पचाशत्, पंच=पाँच, पचाशत्=पचास )  
 ( वि० ) पचास और पाँच, ५५ ।  
 पचमहला ( सं० पच=पाँच और श्रवणी महल ) ( वि० )  
 पचखना, पचकोठा ।  
 पचमान ( वि० ) पकानेवाला या पकाता हुआ ।  
 पचलड़ी ( स्त्री० ) पाँच खड़ की माला ।

पचानवे ( सं० पंचनवति, पञ्च=पाँच, नवति=नब्बे )  
( वि० ) नब्बे और पाँच, ६२ ।

पचास ( सं० पञ्चाशत् ) ( वि० ) दस का पाँच गुना, ५० ।

पचासी { ( सं० पंचाशीति, पंच=पाँच, अशीति=  
पचियासी } अस्सी ( वि० ) अस्सी और पाँच, ८५ ।

पचिण ( पु० ) आग, अग्नि ।

पचीस { ( सं० पंचविंशति, पंच=पाँच, विंशति=बीस )  
पचीस } ( वि० ) बीस और पाँच, २५ ।

पचीसी ( स्त्री० ) कौड़ी से खेलने का एक खेल-विशेष ।

पचूका ( पु० ) पिचकारी, दमकला ।

पचोतरा ( पु० ) पाँच रुपए सैकड़ा ।

पचौनी ( सं० पच्=पचना ) ( स्त्री० ) ओझरी, आमाशय,  
पेट में एक थैली-सी होती है, जो खाना खाते हैं सो  
पहले उसमें पहुँचता है ।

पघर ( पु० ) फणी, डेका, कील, खूँटी, मेख ।

पघर मारना ( मुहा० ) खिझाना, सताना, दुःख देना,  
आइ देना, किसी का काम आइ देना ।

पघी ( वि० ) लगा हुआ, संयुक्त, सटा हुआ ।

पघी होना ( मुहा० ) आपस में सटाना जैसे लेई से,  
बहुत प्यार होना ।

पघीकारी ( स्त्री० ) जड़ाई, खुदाई, रफ़ करना, टाँका  
मारना ।

पछुम { ( सं० पश्चिम ) ( स्त्री० ) पछाई, पश्चिम  
पछिम } दिशा ।

पछुनी ( सं० पर्त्ता ) ( पु० ) सहायी, साथी, सहायक,  
पखेरू, पक्षी ।

पच्यमान ( वि० ) पकाया गया ।

पछुड़ना ( कि० अ० ) पीछे हटना, गिरना, गिर  
पड़ना ।

पछुताना ( सं० पश्चात्तापन, पश्चात्=पीछे, तपू=जलना )  
( कि० अ० ) पछुतावा करवा, सोचना, पीछे दुःख  
करना, हाथ मखना, शोक, अनुताप या खेद करना,  
कुदना, कलपना ।

पछुतावा ( सं० पश्चात्ताप ) ( पु० ) खेद, सोच, अनु-  
ताप, चिंता, शोक, संताप, अकसोस ।

पछुनी ( स्त्री० ) छुरा, नहरनी ।

पछुवा { ( सं० पश्चिम वात, पश्चिम=पच्छिम, वात=  
पछियाव } हवा ) ( स्त्री० ) पश्चिम की हवा ।

पछाड़ ( पछाड़ना ) ( स्त्री० ) पटकना, गिराना, नीचे  
गिराना, फटकना ।

पछाड़ खाना ( मुहा० ) सिर के बल गिरना ।

पछाड़ना ( कि० सं० ) गिराना, पटकना, अधीन  
करना, परास्त करना ।

पछोड़ना ( सं० स्फुट=जुदा करना ) ( कि० सं० )  
फटकना ।

पजावा ( फा० पजावा ) ( पु० ) भाँवा, ईंट पकाने की  
जगह ।

पजेय ( फा० पाजिय, पा=पैर, जिय=शोभा वा गहना ) ( स्त्री० )  
पाजिय, पैर में पहनने का गहना, किंकिणी ।

पजोखा ( पु० ) मातमपुरसा ।

पजोड़ा ( वि० ) नीच, अधम, निकम्मा ।

पंच ( पचि=फलना ) ( वि० ) पाँच, ( पु० ) पंचायत में  
बैठकर विचार करनेवाला, मध्यस्थ, विचारकर्त्ता ।

पंचक ( पंच=पाँच ) ( पु० ) ज्योतिष में धनिष्ठादि  
रेवती पर्यंत पाँच नक्षत्रों का एक जगह पर आना,  
पाँच का समूह, ( वि० ) पाँच, पाँच-संबंधी ।

पंचगव्य ( पंच=पाँच, गव्य=गायका ) ( पु० ) गाय के  
पाँच पदार्थ ( जैसे १ दूध, २ दही, ३ घी, ४ गोबर,  
५ गोमूत्र ) ।

पंचचामर ( पु० ) एक प्रकार का छंद-विशेष जो सोलह  
अक्षरों का होता है ।

पंचतत्त्व ( पंच=पाँच, तत्त्व=भूत वा पदार्थ ) ( पु० )  
पाँच भूत ( अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा,  
५ आकाश ) ।

पंचतन्मात्र ( पु० ) शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पंच-  
तत्त्वों के गुण ।

पंचता ( स्त्री० ) { ( पंच=पाँच पदार्थ अर्थात् शरीर के  
पंचतत्त्व ( पु० ) { पाँचों तत्त्वों का पाँचों में मिल जाना )  
मौन, मृत्यु, मरण ।

पंचतीर्थी ( पंच=पाँच, तीर्थ=पवित्र जगह ) ( स्त्री० )  
प्रयाग, पुष्कर आदि पाँच तीर्थ, कासिक मुदी ११  
से पूनो तक के पाँच दिन ।

पंचदश ( ( पंच+दश ) ( वि० ) पंद्रह, १५ ।

पंचधा ( पंच=पाँच, धा=प्रकार ) ( कि० वि० ) पाँच  
प्रकार से, पंचविध ।

पंचनख ( पु० ) पाँच नखवाला, हस्तो, कच्छप, व्याघ्र,

कुकलास, विस्तुह्या, पल्ली, छिपकली ।

पंचनद ( पंच+नद ) ( पु० ) पञ्जाब अर्थात् जिस देश में १ सतलज, २ व्यास, ३ रावी, ४ चनाब, ५ झेलम ये पाँच नदियाँ बहती हैं ।

पंचपात्र ( पंच+पात्र ) ( पु० ) एक वर्तन जो शायद पाँच धातुओं का बना होता है और पूजा के समय काम आता है, पाँच पात्रों का समूह ।

पंचप्राण ( पंच=पाँच, प्राण=माँस ) ( पु० ) पाँच प्रकार का हवा जिनके माँस लेने से मनुष्य जीता है और उनके नाम ये हैं ( १ प्राण, २ अपान, ३ व्यान, ४ उदान, ५ समान ) ।

पंचभद्र ( पु० ) अश्व-विशेष जिसके पाँच शुभ चिह्न हों, ओषधि-विशेष, एक प्रकार का काढ़ा ।

पंचभूत ( पंच+भूत ) ( पु० ) पाँच तत्त्व ( अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश ) ।

पंचभूतात्मा ( पंचभूत+आत्मा ) ( पु० ) मनुष्य जो पाँच तत्त्वों से बना हुआ है, देह ।

पंचम ( पंच ) ( वि० ) पाँचवाँ, ( पु० ) एक राग का नाम, स्वर-विशेष ।

पंचमी ( पंचम ) ( स्त्री० ) पाँचवीं तिथि, पाँच ।

पंचमुख ( पंच+मुख ) ( पु० ) शिव, महादेव, सिंह, शेर ।

पंचरत्न ( पंच+रत्न ) ( पु० ) पाँच रत्न ( जेमे १ मोता, २ हीरा, ३ मोती, ४ लाल, ५ नीलम, गौर कहाँ-कहीं सोने की जगह मगा गिनते हैं ) ।

पंचवक्त्र ( पंच=पांच, वक्त्र=मुख ) ( पु० ) शिव, महादेव, सिंह ।

पंचघटी ( पंच=पाँच, घट=वृत्त ) ( स्त्री० ) एक जगह का नाम जो गोदावरी के पास थी, जहाँ रामचंद्र वनवास के समय रहे थे, और जहाँ १ पीपल, २ बिख, ३ बड़, ४ धात्री, ५ असोक ये पाँच वृक्ष थे ।

पंचशर } ( पंच=पांच, बाण वा शर=तीर ) ( पु० )  
पंचबाण } कामदेव का नाम, जिसके पाँच बाण कहे जाते हैं, जैसे "समोहनोन्मादनौ च, शोषणस्ताप-स्तथा । स्तग्भनश्चेति कामस्य, शराः पंच प्रकी-र्त्तिताः" अर्थ—१ मोहना, २ मस्त्र करना, ३ सु-खाना, ४ सताना या जलाना, ५ शिथिल अथवा अचेत करना ये पाँच कामदेव के बाण कह-लाते हैं ।

पंचशाख ( पु० ) हाथ, कर, पाँचशाखा अर्थात् उँगली ।

पंचसूना ( पंच=पाँच, सूना=जीववधस्थान ) ( स्त्री० ) चुल्ली, चूल्हा, पेपणी, चक्री, कंडनी, गाली वा झोखली, उपस्कर, बढ़नी, उदकुंभ, घनीची वा घड़ा रखने का स्थान ।

पंचांग ( पंच+अंग ) ( पु० ) तिथिपत्र, पत्रा ( जिससे १ तिथि, २ वार, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ करण ये पाँच जाने जायें ), पंजिका, " चन्दनागुरुकपूर्कुम्भं गुग्गुलुस्तथा । पञ्चाङ्गमुच्यते धीरैर्धूपदानविधा विद्मः " १ चंदन, २ अगुरु, ३ कूर्पूर, ४ केशर, ५ गुग्गुलु, १ फल, २ फूल, ३ जड़, ४ पत्ता, ५ दार ।

पंचानन ( पंच=विस्तृत, या पांच, आनन=मुख ) ( पु० ) सिंह, केसरी, शेर, शिव, महादेव ।

पंचामृत ( पंच+अमृत ) ( पु० ) १ दूध, २ दही, ३ चीनी, ४ घी, ५ शहद इन पाँचों से बनी हुई वस्तु ।

पंचायत ( पंच+अयत ) ( स्त्री० ) सभा जहाँ पाँच आदमी मिलकर विचार करते हैं, विचार करने की सभा ।

पंचाल ( पु० ) पञ्जाब-देश ।

पंचालिका ( स्त्री० ) कठपुतली, गुड़िया, गुड्डा, द्रौपदी ।

पंचायस्था ( स्त्री० ) बाल्य, कुमार, पीगंड, युवा, वृद्धा ।

पंचेन्द्रिय ( पंच+इन्द्रिय ) ( स्त्री० ) पाँच इन्द्रियाँ, ( इन्द्रिय शब्द को देखो ) ।

पंछी ( सं० पक्षी ) ( पु० ) पक्षेरु, परिंद ।

पंजर ( पञ्जि=रोकना वा बेरना ) ( पु० ) पेंसली, ठठरी, पेंसलियों का समूह, पंजरा ।

पट ( पट=धरना वा बँट्ठा ) ( पु० ) कपड़ा, पल्ला, परदा, चाद, ओट ( सं० पटन, पट=जाना ) ( पु० ) गिरने या मारने का शब्द, किबाड़, झिल-झिल, ( वि० ) ऊपर, नीचे, उल्टा, औंधा ।

पटक ( पु० ) डेरा, क़नात, पड़ाव, क़ीज की छावनी, रद्दने की जगह ।

पटशर ( पु० ) जीर्णवस्त्र, बिथड़ा, चोर, संध देने-वाला, ठग ।

पटकन (पटकना) ( स्त्री० ) पछाड़, चोट ।  
 पटकन खाना (पु०) पछाड़ खाना, नीचे गिरना ।  
 पटकना ( कि० सं० ) पछाड़ना, नीचे गिराना,  
 दे मारना, परास्त करना ।  
 पटका ( सं० पट्ट=बैठना वा लपेटना ) ( पु० ) कमर-  
 बांधा, दुपट्टा ।  
 पटकार ( पु० ) जुआहा, कोरी, बुननेवाला ।  
 पटका } ( सं० पट्ट, पट्ट=धरना ) ( पु० ) लहता, पाटा,  
 पट्टा } पीड़ा ।  
 पटतर ( वि० ) बराबर, समान, समानता ।  
 पटना ( कि० अ० ) मिछना, भर पाना ( जैसे हुंडी का  
 पटना ), पानी सींचा जाना, पनियाना, भरना, छाया  
 जाना, ढक जाना, निभना ।  
 पटना ( सं० पाटलिपुत्र ) ( पु० ) एक शहर का नाम जो  
 सूबे बिहार में है ।  
 पटनि ( पु० ) कपड़े, वस्त्र, ओढ़ना ।  
 पटनी ( पु० ) माँझी, मल्लाह ।  
 पटपर ( वि० ) बंजर, वीरान, उसर ।  
 पट्टा ( पु० ) पट्टा, पीढ़ा, सिखी ।  
 पट्टरानी } ( पाट+रानी ) ( स्त्री० ) पहली और बड़ी  
 पाट्टरानी } रानी, महारानी ।  
 पट्टरी ( सं० पट्ट, पट्ट=धरना ) ( स्त्री० ) खिलने की पट्टी,  
 पट्टिया, तख्ती, कच्ची सड़क ।  
 पटल ( पट्ट=कपड़ा, या आड़, ला=लेना ) ( पु० ) ढकने  
 का कपड़ा, परदा, आँख का परदा, समूह ।  
 पटली ( स्त्री० ) पाँत, पंक्ति, श्रेणी ।  
 पट्टा ( पु० ) पट्टेरा, एक जाति जिसका काम गहनों  
 को गूँथना है ।  
 पट्टवाना ( कि० सं० ) चुकता करवाना, भरवाना,  
 सिंचवाना, अर्था करवाना, पाटने का काम दूसरे  
 से कराना ।  
 पट्टवाय ( पु० ) कनात, तंबू, डेरा ।  
 पट्टवारी ( पु० ) गाँव के खेतों का हिसाब रखनेवाला ।  
 पट्टा ( पु० ) बाना, पटा, डंका, नक़ारा, नगारा ।  
 पटा ( सं० पट्ट, पट्ट=धरना ) ( पु० ) पाट, पाटा, आसन  
 जिस पर हिंदू लोग बैठकर पूजा करते हैं, अथवा  
 खाना खाते हैं, गद्दा ।  
 पटाक ( पु० ) किसी छोटी चीज़ के गिरने का शब्द ।

पटाका } ( पु० ) टोंटा, मुरा, छूँदर ।  
 पटाखा }  
 पटाना ( कि० सं० ) सोंचना, पानी देना, पनियाना,  
 चौका देना, लोपना, धोपना, छत को कच्ची  
 अथवा धरन से छाना, हुंडी के रुपये पाना, भगवा  
 शांत होना, भ्राग शांत होना ।  
 पटाव ( पु० ) सिंचाई, छत बनाना, द्वार के ऊपर  
 का काठ ।  
 पट्टिया ( सं० पट्टिका ) ( स्त्री० ) पट्टी, पट्टी, स्लेट,  
 ( पु० ) गले में पहनने का एक गहना, सिर के  
 गुहे बाज ।  
 पट्टीमा ( पु० ) छापने का पट्टा, वह पट्टा जिस पर  
 छोपी कपड़ा छापने हैं ।  
 पट्टीर ( पु० ) बसफोड़, चंदन, घटा, मूख, केदार,  
 क्यारी, कामदेव, चलनी, पपीहा, राँगा, खदिर,  
 उदर ।  
 पट्टीलना ( कि० अ० ) मारना, पीटना, निचोड़ना,  
 चूसना, निपटाना ।  
 पट्टु ( पट्ट=जाना वा चमकना ) ( वि० ) चतुर, निपुण,  
 प्रवीण, तेज़, होशियार ।  
 पट्टुता ( स्त्री० ) चतुराई, निपुणता, प्रवीणता ।  
 पट्टुल ( पु० ) पट्टुता ।  
 पट्टुत्व ( पु० ) { ( पट्ट ) चतुराई, निपुणता,  
 पट्टुता ( स्त्री० ) { प्रवीणता ।  
 पट्टुवा ( पाट ) ( पु० ) रेशम का काम करनेवाला,  
 रेशम से माला और मोती आदि पिरोनेवाला ।  
 पट्टूफा ( पु० ) पट्टवा, कटिबंध, कमर कसने का कपड़ा ।  
 पट्टूवा ( पु० ) पाट, सन-विशेष ।  
 पट्टेल ( पु० ) चौधरी, गाँव का मुखिया ।  
 पट्टेला } ( पु० ) एक प्रकार की नाव, जिससे धरती  
 पट्टेला } बराबर करते हैं, धरन ।  
 पट्टैत ( वि० ) लड़ैत, पटा खेखने या खबनेवाला ।  
 पट्टोतन ( पु० ) तख्ते से पट्टा ।  
 पट्टोल ( पु० ) परिवर, परवर ।  
 पट्टोनी ( पु० ) नैया, नाविक, माँझी ।  
 पट्ट ( पु० ) पीढ़ा, तख्ती, जाल रेशमी पगड़ी, राज-  
 सिंहासन, उत्तरीय वस्त्र, पाषाण, चौराहा ।

पट्टन ( पु० ) नगर, शहर ।

पट्टा ( सं० पट ) ( पु० ) बाल, अलक, पटिया जिसे कुत्ते के गले में डालने हैं, चकनामा, ठेका अथवा किसी जमान का कागज़ ।

पट्टू ( पाठ ) ( पु० ) छाँड़, कंबल, तोता ।

पट्टा ( वि० ) बवान, पड़लवान, पाठा, नस, शिरा ।

पठन ( पठ=पढ़ना ) ( पु० ) पढ़न, पाठ, पढ़ना, अध्ययन, सयक ।

पठाना ( कि० सं० ) भोजना ।

पठानी ( कि० सं० ) भोजना, पठवाना ।

पठावनी } ( श्री० ) पठाने की मजदूरी, जो वस्तु  
पठानी } भेजा गई हो ।

पठित ( पठ=पढ़ना ) ( वि० ) पढ़ा हुआ ।

पठनीय } ( वि० ) पढ़ने योग्य ।  
पाठ्य }

पठिया ( वि० ) जवान स्त्री. यावना, ( श्री० ) छाँटी बकरी ।

पठाना ( कि० सं० ) भोजना, पठवाना ।

पढ़ जाना ( कि० थ० ) लेटना, गिरना, थमना ।

पढ़ना ( सं० पतन, पठ=गिरना ) ( कि० थ० ) गिरना, लेटना, आ जाना, संयोग होना, पड़ाव डालना, डेरा करना, टपकना, चूना ।

पड़ रहना } ( मुहा० ) व्यवस्था रहना, सो रहना, लेट  
पड़ रहना } रहना ।

पड़ा पाना ( मुहा० ) सहज में पाना ।

पड़ाव ( पड़ना ) ( पु० ) ठहरने की जगह, ठहराव, छावनी, डेरा, कपू, सेना, भीड़ ।

पड़िया ( श्री० ) भेय की चर्बी ।

पड़ोस ( सं० प्रतिवास ) ( पु० ) पास बसना, समीपता, सहवास ।

पड़ोसी ( सं० प्रतिवासी ना पार्ष्व ) ( पु० ) पास रहनेवाला ।

पढ़न ( सं० पठन ) ( पु० ) पढ़ना ।

पढ़ना ( सं० पठन ) ( कि० म० ) पाठ करना, बाँचना, सीखना, रटना, जपना ।

पढ़ंत ( सं० पठन ) ( श्री० ) पढ़न, पढ़ना, पाठ, संस्था, मंत्र, टोना, जानू ।

पढ़ागुणा } ( वि० ) पढ़ा हुआ, पंडित, प्रवीण,  
पढ़ालिखा } निपुण ।

पढ़ाना ( पढ़ना ) ( कि० सं० ) सिखाना, सीख देना, शिक्षा देना ।

पण ( पण=व्यवहार करना ) ( पु० ) प्रतिज्ञा, वचन, होइ, राते, बाज़ी, बीस गंडे अथवा ८० कौड़ी का परिमाण, व्यवहार, लेनदेन, मूल्य, वेतन, शाक, साग, क्रार ।

पणन ( पु० ) विक्रय, बेचना ।

पणव ( पण=व्यवहार या जाना अथवा पण=सराहना ) ( पु० ) छोटा डोल ।

पणित ( वि० ) बेचा गया, स्तुत, प्रशंसित ।

पंड ( पण=सराहना ) ( श्री० ) बुद्धि, मति, समझ ।

पंडा ( सं० पंडित ) ( पु० ) पुजारी ।

पंडित ( पंडा=बुद्धि ) ( पु० ) बुद्धिमान्, विद्यावान्, पढ़ा हुआ, विद्वान्, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक ।

पंडितमन्य ( वि० ) विद्याभिमानी, मूर्ख ।

पंडु ( सं० पांडु ) ( पु० ) दिल्ली का पुराना राजा, कुंती का पति और युधिष्ठिर आदि पाँचों पांडवों का बाप ।

पंडुक ( पु० ) कबूतर की जाति का एक पक्षी ।

पंडुवी ( श्री० ) जल-पक्षी ।

पण्य ( पण=लेनदेन करना वा सराहना ) ( वि० ) बेचने योग्य, लेनदेन करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बेचने की वस्तु, बाणिज्य, सराहने योग्य ( श्री० ) वेश्या, बेचने की चोज, क्रोड्ढती ।

पण्यवीथी ( श्री० ) हाट, बाज़ार, दूकान ।

पण्यशाला ( पण्य=लेनदेन करने योग्य, शाला=जगह ) ( श्री० ) दूकान, हाट, बाज़ार ।

पण्यस्त्री ( पण्य+स्त्री ) ( श्री० ) वेश्या, नगरनारी, पतु-रिया, रंडी ।

पत ( सं० पद=अधिकार ) ( श्री० ) प्रतिष्ठा, इज्जत, आब्रू, बड़ाई, नामवरी, ( सं० पति ) ( पु० ) स्वामी, प्रभु, धनी, माझिक, भर्त्ता, ( सं० पत्र ) पत्ता ।  
पतंग ( पतन=गिरता हुआ, गम=जाना ) ( पु० ) सूर्य, फड़ंग, पतिंगा, टिड्डी, उड़नेवाला कीड़ा, गुड्डी, कनकवा, एक लकड़ी जिससे रंग निकलता है, पारा ।

१. “यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः” ( इति गीतायाम् )



पतंग ( पु० ) चिमगारी, चिनगी ।

पतञ्जलि ( पु० ) शेष, महाभाष्य का बनानेवाला ऋषीश्वर ।

पतझड़ ( पत=पता, झड़=झड़ना ) ( स्त्री० ) एक ऋतु का नाम जिसमें वृद्धों के पत्ते झड़ जाते हैं ।

पतत्र ( पु० ) पंख, पत्त, पर ।

पतदग्रह ( पु० ) पीकदान, अवशेष, सेना, लशकर ।

पतन ( पत=गिरना ) ( पु० ) पड़ना, गिरना, पछाड़, पटकन, गिर पड़ना, झवनति ।

पतला ( सं० प्रतनु ) ( वि० ) पतील, झीना, महीन, बारीक, दुबला ।

पतलो ( पु० ) मूँज का सूखा हुआ पत्ता, सरकंडे की पताई ।

पतवार ( स्त्री० ) जहाज़ में एक चीज़ जिससे जहाज़ चलाया जाता है, नाव का कर्ण ।

पता ( पु० ) ठिकाना, चिह्न, खोज ।

पताका ( पत=जाना या गिरना या जानना ) ( स्त्री० ) ध्वजा, झंडा, चिह्न, फरहरा ।

पताकी ( पु० ) पताकाधारी, निशान उभानेवाला ।

पति ( पा=वचाना ) ( पु० ) स्वामी, माझिक, धनी, भर्ता, स्वाविंद, ( स्त्री० ) हज्जत ।

पतित ( पत=गिरना ) ( वि० ) गिरा हुआ, भ्रष्ट, पारी, नष्ट, दुष्ट, धर्म से गिरा हुआ ।

पतितपावन ( पतित=पारी, पावन=पवित्र करनेवाला ) ( वि० ) पापियों को शुद्ध करनेवाला, ( पु० ) परमेश्वर का नाम और गुण ।

पतितस्त्री ( स्त्री० ) पतितत्रिया, पतुरिया ।

पतिदेवता ( पति+देवता ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसके पति ही देवता के बराबर हों, पतिव्रता ।

पतिभुक्त ( वि० ) पति को न चाहनेवाली स्त्री ।

पतिया } ( सं० पत्रिका ) ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्री, पत्र, पाती } खत, प्रतीतपत्र, जिसमें पंडित लोग अपनी सम्मति लिखकर देते हैं ।

पतियाना ( सं० प्रत्ययन=विश्वास, प्रति=फिर, इण=जाना ) ( क्रि० सं० ) भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना ।

पतियारा ( सं० प्रत्यय ) ( पु० ) भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

पतिवरा ( स्त्री० ) स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

पतिव्रता ( पति=भर्ता, व्रत=नियम ) अर्थात् ( जिसका पति की सेवा करना ही नियम है ) ( स्त्री० ) सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पतिसेवा करनेवाली स्त्री ।

पतीरी ( स्त्री० ) एक प्रकार की चटाई ।

पतील ( वि० ) पतला, झीना, महीन, बारीक ।

पतीला ( पु० ) बड़ी बटलोही, बटुवा, बटुला ।

पतुकी ( स्त्री० ) छोटी हाँड़ी ।

पतुरिया

पतरिया स्त्री० ) वेश्या, गणिका, रामजनी ।

पतुली ( स्त्री० ) कलाई में पहनने का एक आभूषण ।

पतुही ( स्त्री० ) छोटे दानों की मटर की छुमी ।

पतोह } ( सं० पुत्रवधू ) ( स्त्री० ) बेटे की स्त्री, बहू ।  
पताह }

पतौवा ( पु० ) पत्ता, पल्लव, पात ।

पत्तन ( पद=जाना ) ( पु० ) नगर, शहर ।

पत्तन ( पु० ) मृदंग, नगर, शहर ।

पत्तर ( सं० पत्र ) ( पु० ) पत्ता, चिट्ठी, दानपत्र जो तंत्र पर खोदा जाता है, सोने-चाँदी का वर्क ।

पत्तल ( सं० पत्रायली, पत्र-पत्ता, यत्रली=पात ) ( स्त्री० ) पनवारा, पत्तों की बनी हुई चीज़ जिसमें खाना खाते हैं ।

पत्ता ( सं० पत्र ) ( पु० ) पात, दल, गहना, पाना ।

पत्ता खड़कना ( मुहा० ) किसी के पास आने की आहट मिलना ।

पत्ता तोड़कर भागना ( मुहा० ) वेग से भागना ।

पत्ता न हिलाना ( मुहा० ) हवा का बंद होना, हवा में गति न होना, निस्तब्धता ।

पत्ता होना ( मुहा० ) भाग जाना, चंपन होना ।

पत्ति ( पु० ) पैदल, गत, गड़वा, मूल, वीरभेद, सैन्य-भेद, एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े, पाँच पैदल जिस क्रांज में हों उसकी पत्ति संज्ञा है, गति, चाल, प्राप्ति ।

पत्ती ( सं० पत्र ) ( स्त्री० ) पातों, पेंखड़ी, भाँग, भंग, बूटी, सड़नी, हिस्सा, भाग ।

पत्थर ( सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=कलाना ) ( पु० ) पाषाण, पाथर, शिक्षा ।

पत्थर छाती पर रखना ( मुहा० ) सत्र करना, संतोष करना, चुप हो रहना, बश न चलना ।

पत्थर पसीजना ( मुहा० ) पिघलना, नर्म होना, कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना, कठिन काम का सहज होना ।

पत्थर पानी हो जाना ( मुहा० ) कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना ।

पत्थर सा फेंक मारना ( मुहा० ) किसी की बात को बिना समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना ।

पत्थर से सिर फोड़ना ( मुहा० ) मूर्ख को शिक्षा देना ।

पत्थर होना ( मुहा० ) भारी होना, अचंचल होना, अटल होना, चुप खड़ा रहना, निर्दयी होना, कठोर-चित्त होना ।

पत्थरकला { ( प० प्रस्तरकला ) ( स्त्री० ) बंदूक, पथरकला } तुपक ।

पत्नी ( स्त्री० ) वेद-विधि से विवाहिता स्त्री, जोरू, भार्या ।

पत्न्याट ( पत्नी+आट, आट=पुसना, मँसूरना ) ( पु० ) मंगली पुरुष, सुशदिल, सुशतबन्ध, पुंश्चल जो औरत को लेकर सैर करे ।

पत्र ( पत्र=गिरना ) ( पु० ) पत्ता, चिट्ठी, पुस्तक का पत्रा, सोने-चाँदी अथवा और किसी धातु का पत्तर, सवारी, दिस्ता, रथ, बाण, पंख ।

पत्रणा ( स्त्री० ) गोटा, लड़ी, रोटा, कपड़ों का छीर ।

पत्रदाना ( पु० ) चिट्ठीरस, पोस्टमेन ।

पत्रदारक ( पु० ) अश्रु, आँसू, बालक, वायु, आरा, आरी ।

पत्रपरशु ( पु० ) सुवर्णादि कतरने की कैंची ।

पत्रपाश्या ( स्त्री० ) सोने का टोका, सोने का खोर ।

पत्ररंजन ( पु० ) पत्र लिखना, चित्र लिखना, शृंगार करना ।

पत्ररेखा ( स्त्री० ) तिलक की रेखा, संदनादि का लगाना ।

पत्रा ( स० पत्र ) ( पु० ) निधिवत्र, पंचांग, पन्ना, सफ़ा ।

पत्रांक ( पु० ) पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या ।

पत्रालय ( पु० ) डाकखाना, पोस्टाफिस ।

पत्रिका { ( सं० पत्र ) ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्र, पक्षी, पत्री } वृक्ष, कमल ।

पत्सल ( पु० ) सबक, रास्ता, पथ, राजमार्ग ।

पथ ( पथ=जाना ) ( पु० ) रास्ता, मार्ग, बाट, पैदा, डगर ।

पथर ( पु० ) पत्थर, पाषाण ।

पथरकला ( पु० ) बंदूक ।

पथरचटा ( पु० ) शाक-विशेष, रूपय, कंजूस ।

पथरफोड़ ( पु० ) कठफोड़वा, खोलवा पक्षी ।

पथराना ( पत्थर ) ( कि० अ० ) कड़ा होना, पत्थर मारना, ताजगी न रहना, जड़ हो जाना ।

पथरी ( सं० प्रस्तर ) ( स्त्री० ) कंकड़ी, चकमक, पेट में पथरीरोग, पत्थर का बरतन, कुँड़ी ।

पथरीला ( पत्थर ) ( वि० ) कँकरीला ।

पथरीटी ( स्त्री० ) पथरी ।

पथिक ( पथ=जाना ) ( पु० ) बटोही, यात्री, मार्ग, राही, मुसाफिर ।

पथिल { ( पु० ) मार्गगामी, मुसाफिर । पथी }

पथिवाहक ( पथि=राह, वह=चलना ) ( पु० ) कहार, मजूर ।

पथ्य ( पथ=मार्ग, राह, जो इलाज के मार्ग में अर्थात् इलाज के लिये हितकारी हो ) ( पु० ) रोगी का खाना, बीमार के खाने योग्य चीज़, पथ, उचित, हित ।

पथ्या ( स्त्री० ) हरीतकी, हड़, मुक्राद, सेंधा नमक, हरेँ ।

पद् ( पद=चलना जिसमें चलते हैं ) ( पु० ) पाँव, पैर, चरण, पदचिह्न, पाँव का चिह्न, स्थान, जगह, प्रतिष्ठा, बक्काई, अधिकार, ओहदा, लकड़ब, पदवी, उपाधि, शब्द, विभक्तिसमेत शब्द, रत्नलोक का पद, वस्तु, पदार्थ ।

पदक्रम ( पु० ) पाँव का फाल, डग ।

पदचर { ( पद=पाँव, चर=चलना ) ( पु० ) पैदल । पदचारी }

पदच्युत ( वि० ) अधिकार-भ्रष्ट, पद-भ्रष्ट ।

पदज ( पद=पाँव, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) पाँव की उँगली ।

पद-व्याख्यान ( पु० ) इस्तीफा, अधिकार-व्याख्यान ।

पद-त्राण ( पद=पैर, त्रा=वचाना ) ( पु० ) जुता, पग-रखी, पनही ।

पदम } ( सं० पद्म ) ( पु० ) कमल, कैवल, सौ नील ।  
पदुम }

पदवी ( सं० पद ) ( स्त्री० ) बड़ाई, प्रतिष्ठा, अधिकार-उपनाम ।

पदवी ( पद=ज्ञाना ) ( स्त्री० ) मार्ग, रास्ता ।

पदवृत्त ( पु० ) युक्तशब्द, व्युत्पन्न शब्द ।

पदस्थ ( पु० ) अपने पद में, महिमायुक्त ।

पदांक ( पु० ) पद-चिह्न, पाँव का चिह्न ।

पदाघात ( पु० ) पाँव से प्रहार, पैर की चोट, लान ।

पदाति ( पद=पाँव, अन् चलना ) ( पु० ) पैदल, पियादा, पैदल सेना ।

पदाभोज ( पद=पैर, भोजन=कैवल ) ( पु० ) चरणकमल, कमल के से पाँव, पदारविन्द ।

पदारविन्द ( पद=पैर, अरविन्द=कमल ) ( पु० ) चरण-कमल, कमल के-से पाँव ।

पदार्थ ( पद=शब्द, अर्थ=अभिप्राय ) ( पु० ) वस्तु, चीज़, उत्तम वस्तु, न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने हैं ( १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष ६ समवाय, ७ अभाव, कोई कोई नैयायिक सोलह पदार्थ मानते हैं ) शब्द का अर्थ, पद का अर्थ ।

पद्धति ( पद=पाँव से, हन्=मारना ) ( स्त्री० ) मार्ग, रास्ता, पंक्ति, पूजा का ग्रंथ ।

पद्म ( पद=ज्ञाना ) ( पु० ) कमल, कैवल, सौ नील, ग्युह ।

पद्मगर्भ ( पदम=कमल, गर्भ=उत्पत्ति ) ( पु० ) ब्रह्मा जो विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुए ।

पद्मनाभ ( पदम=कमल, नाभ=नाभि, अर्थात् जिनकी नाभि में कमल हो ) ( पु० ) विष्णु ।

पद्मबंध ( पु० ) चित्रकाव्य-विशेष, अलंकार-विशेष ।

पद्मराग ( पदम=कैवल, राग=रङ्ग, अर्थात् जिसका रंग लाल कमल जैसा हो ) ( पु० ) लालमणि, माणिक्य, मानिक ।

पद्मलान्जुन ( पु० ) राजा-विशेष, ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर ।

पद्मस्तुपा ( पदम+स्तुपा=कन्या ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी, दुर्गा, रंगा ।

पद्मा ( पदम=कैवल अर्थात् जिसके हाथ में कमल हो ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमला ।

पद्माकर ( पदम=कैवल, आकर=खान ) ( पु० ) कमलों का बड़ा तालाब ।

पद्माक्ष ( पु० ) कमलगण्ड, जिसकी कमल-जैसी आँखें हों ।

पद्मावती ( पदम=कैवल, वती=वाली ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, एक स्त्री का नाम, मनसा देवी, एक प्राचीन नगरी का नाम ।

पद्मासन ( पु० ) ब्रह्मा, प्रजापति, एक प्रकार का योग का आसन ।

पद्मिनी ( पदम ) ( स्त्री० ) सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, कम-जिनी ( स्त्रिया चार प्रकार की होती हैं—१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शशिनी, ४ हरिती ) ।

पद्म ( पद=चरण अथवा श्लोक आदि का पाद ) ( पु० ) श्लोक, छंद, कविता, छंदप्रबंध, नज़्म ।

पद्धारना ( सं० पदधारण, पद=पाँव, धारण=रखना ) ( कि० अ० ) जाना, सिधारना, पग धारना, आना, तशरीफ लाना वा ले जाना ।

पन ( सं० पण ) ( पु० ) वचन, होंड, शर्त ।

पन ( पु० ) भाववाचक संज्ञा का चिह्न। जैसे—लड़कपन, भलापन आदि ।

पनकपड़ा ( पु० ) भोगा करड़ा, पान रखने का कपड़ा ।

पनगोटी ( स्त्री० ) शीतला, चेचक ।

पनघट ( सं० पानीय=पानी, घट=घाट ) ( पु० ) पानी भरने का घाट ।

पनच ( सं० प्रयत्ना, प्रति=सामने, अन्=जाना ) ( स्त्री० ) चिंता, धनुष की रस्सी, जिह, रोड़ा ।

पनचक्की ( सं० पानीय=पानी, चक=चक्का ) ( स्त्री० ) पानी के वेग से चलनेवाली चक्की ।

पनपना ( कि० अ० ) मोटा होना, बढ़ना ।

पनपनाहट ( स्त्री० ) सनसनाहट ।

पनघड़ा ( पु० ) पान रखने का डब्बा, गिझीरीदान ।

पनवाड़ी } ( सं० पर्णवाटी, पर्ण=पान, वाटी=वाड़ी )  
पनवारी } ( स्त्री० ) पान की बाड़ी ।

पनवारा ( सं० पर्णवारी, पर्ण=पान, अवारी=पाँव ) ( पु० ) पत्त, पत्रावली ।

पनशलेला ( स्त्री० ) पनसरा, प्याऊ, पौसला ।

पनस ( पन्=मराहना ) ( पु० ) कटहल, बंदर का नाम ।

पनसा ( त्रि० ) फीका, अछोना, छाला ।

पनसारी ( सं० पण्य=बेचने योग्य वस्तु, मृ=कुलाना )  
( पु० ) पसारी ।

पनसोई ( स्त्री० ) छोटी नाव, डोंगी ।

पनहा ( पु० ) चोरी का माछ छोटानेवाले को दिया जाने  
वाला दंड, वस्त्र आदि की चौड़ाई ।

पनहाना ( कि० म० ) स्नान में दूध छाना ।

पनहारा ( पु० ) पानी भरनेवाला नौकर, जलभरैया ।

पनहारिन } ( सं० पानीयहारिणी, पानीय=पानी, हारिणी=  
पनहारी } लानेवाली ) ( स्त्री० ) पानी भरनेवाली ।

पनही ( म० पन्नदध्री, पद=पान, नह=बाधना ) ( स्त्री० )  
जूना, जूनी, पगरम्बी ।

पनारी } ( म० प्रणानी ) ( स्त्री० ) मोरी, नाली,  
पनाली } प्रणाळी ।

पनिया ( म० पानीय ) ( पु० ) पानी, जल, ( त्रि० )  
पानी का ।

पनियाना ( पानीय ) ( कि० म० ) सोचना, पानी देना ।

पनीर ( पु० ) छेने से बना हुआ खाद्य, फाड़कर जमाया  
हुआ दूध ।

पनीहा ( पु० ) जल से उत्पन्न, जल के संयोग से बना  
हुआ पदार्थ ।

पनेरी ( पु० ) बरह, तमोली, पान बेचनेवाला ।

पनैरिन ( स्त्री० ) बरहन, तमोछिन ।

पंथ ( सं० पंथा, पथ=जाता ) ( पु० ) रास्ता, मार्ग, राह,  
मत, धर्म ।

पंथा ( पु० ) रास्ता, राह, मार्ग ।

पन्नग ( पन्न=गिरता हुआ, ना नीचे मुंह किये, गम=चलना,  
ना पद=पैर, न=नहीं, गम=नचना, जो पैरो में न चले )  
( पु० ) सर्प, सर्प, नाग, सूर्य ।

पन्नगारि ( पन्नग=पाप, अरि=वैरी ) ( पु० ) गरुड़, विष्णु  
का वाहन ।

पन्नगाशन ( पन्नग=पाप, अश्न=माना ) गरुड़, विष्णु का  
वाहन ।

पन्ना ( सं० पर्ण ) ( पु० ) पत्र, पत्रा, नीलमणि ।

पन्नी ( स्त्री० ) तबक, सोना, चाँदी आदि का महीन पत्तर ।

पपड़ा ( पु० ) झिलका, टुकड़ा ।

पपड़ीला ( त्रि० ) परतीला ।

पपनी ( स्त्री० ) भ्राँख की बरोनी ।

पपरा ( पु० ) पपड़ा ।

पपरी ( स्त्री० ) पपड़ी ।

पपि ( पा=पीना ) ( पु० ) पीनेवाला । जैसे कि “रामः  
सोमं पपियजे” याग में राम ने सोमरस का पान  
किया ।

पपिस् } ( पु० ) सूर्य, चंद्रमा, रत्नक, पीनेवाला ।  
पपी }

पपीता ( पु० ) एक फल-विशेष ।

पपीहा } ( पु० ) एक पक्षी जो बरसान में बहुधा  
पपिहा } बोझा करता है, चातक ।

पपु ( पा=पालना ) ( पु० ) पालक, पालनेवाला, रक्षा,  
रक्षक, पिता, पालक, ( स्त्री० ) माता, धात्री, दाई,  
उपमाता, धाय ।

पपैया ( पु० ) खिलौना, पपीता ।

पपोटा ( पु० ) पलक, अस्त्र का पुट ।

पपयः ( पा=पीना ) ( पु० ) दूध, पानी, जल ।

पपयनिधि ( सं० पपयनिधि ) ( पु० ) समुद्र ।

पपयमुख ( पु० ) दूध पीनेवाला, शोरखोरा ।

पपयस्विनी ( पपय=पानी वा दूध ) ( स्त्री० ) नदी, कुधार  
गाय, दुधेल गाय, भेड़ी, बकरी ।

पपान ( सं० प्रयाण ) ( पु० ) चलना, कूच, बिदा,  
प्रस्थान, यात्रा ।

पपाल ( म० पनाल, पल=जाना वा बचाना ) ( पु० )  
पुष्पल, खर तिनका, बिचाली ।

पपान्द ( पपय=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० )  
बादल, बहल ।

पपोधर ( पपय=पानी वा दूध, धर=रखनेवाला, धु=रखना )  
( पु० ) मेघ, बादल, स्त्री की चूँची, स्तन, नारि-  
यल, गन्ना, सुगंधित घास, पर्वत, दुग्धवृक्ष ।

पपोधि ( पपय=पानी, धा=रखना ) ( पु० ) समुद्र, सातों  
सागर, जलधि, जलाधार, जल रखने का बर्तन ।

पपानिधि ( पपय=पानी, निधि=खजाना ) ( पु० ) समुद्र,  
सागर ।

पयोराशि : पपय=पानी, राशि=समुद्र, ढेर ) ( पु० ) समुद्र,  
सागर ।

१. “पयः शिरं पयो जलम्” ( इति अनेकार्थमन्जय्याम् )

पर (पृ=भरना) (वि०) दूसरा, पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी, परदेशी, दूर, परे, अंतर, पर, विच्छन्ना, उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि, प्रधान, सबसे बड़ा, विरोधी, प्रतिकूल, बहुत, अत्यंत, अधिक, तत्पर, लगा हुआ, (पु०) बैरी, शत्रु, (कि० वि०) केवल, इसके पीछे, (अव्य०) परंतु, किंतु, लेकिन ।

पर (सः उपरि) (अव्य०) निम्न (मं०) ऊपर, पै । जैसे कोठे पर ।

परकना (कि०अ०) चसकना, सधना, अभ्यासी होना ।

परकाजी (वि०) परोपकारी, उपकारी, प्रार्थी ।

परकाना (कि० स०) साधना, सिखाना, परचाना ।

परकीय (वि०) दूसरे का, अन्य संबंधनीय ।

परकीया (पर द्मग) (स्त्री०) दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास जानेवाली स्त्री ।

परख (मं० परीक्षा) (स्त्री०) जाँच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।

परखना (मं० परीक्षण) (कि० मं०) जाँचना, परीक्षा करना, देखना, निरखना ।

परखी (स्त्री०) एक छोटा लोहा, जिससे बोरे से अन्न, चीनी आदि निकालकर देखा जाता है ।

परखैया (पु०) परीचक, कुतवैया, जँचवैया ।

परखरी (स्त्री०) सोना ढालने का साँचा, कछाई ।

परचून (पु०) आटा, दाल, हल्दी, मसाला आदि ।

परचूनिया (पु०) आटा-दाल बेचनेवाला, मोदी, बनिया ।

परचूनी (स्त्री०) मोदी का व्यवसाय ।

परछुती (स्त्री०) हलका छपर ।

परछुना (कि० मं०) दूहा और दुलहिन की आरती उतारना ।

परछाई (स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया ।

परजकर (पु०) जमीन में बसने के कारण जो कर उसके मालिक को दिया जाता है ।

परजंक (मं० पर्यंक) (पु०) पलंग ।

परजान (पर=अन्य, जात=उत्पन्न) (पु०) अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्षासेकर, जारज, बार से पैदा किया गया, दूसरी जाति का, दूसरी ज़ौम का ।

परत (स्त्री०) पुट, तह, चुनत, लव, थाक, नकल, कापी ।

परतंत्र (पर=दूसरा, तंत्र=प्रधान है जिसका, अथवा पर=दूसरे के, तन्त्र=वश में) (वि०) परवश, पराधीन, दूसरे के वश ।

परतय (वि०) सबसे बड़ा, बड़े से बड़ा ।

परतल (पु०) डेरा-बंङा, लहू, घोड़े को पीठ पर रखने का बोरा ।

परतला (पु०) तलवार को पट्टी ।

परता (पु०) परेता, चरखी, भाव, निरख ।

परती (पड़ना) (स्त्री०) पक्षी धरती, बिना बोई धरती, बंजर ।

परतीत (स्त्री०) प्रतीति, भरोसा, विश्वास ।

परत्र (अव्य०) अन्यत्र, परब्लोक, और जगह, दूसरी जगह । जैसे कि (परत्र मोक्षमाप्नुयात्) परब्लोक में मुक्ति को पाता है ।

परत्व (पु०) भिन्नता, जुदाई, फ़ासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महार ।

परदार (स्त्री०) दूसरे की स्त्री ।

परदेश (पर=दुसरा, देश=मूलक) (पु०) विदेश, पराया देश, और मुसल ।

परदेशी (परदेश) (वि०) विदेशी ।

परन (स्त्री०) प्रतिज्ञा, हठ, नियम ।

परनाना (कि० अ०) शादी करना, ब्याह करना, (पु०) नाना का बाप ।

परंतप (पु०) शत्रु, दुष्ट, (वि०) शत्रुनाशक, जीतने-वाला ।

परंतु (परम्भु) (अव्य०) पर, किंतु, लेकिन ।

परपराना (कि० अ०) चरपराना, जलना ।

परपूर (वि०) भरपूर, परिपूर्ण ।

परपुष्ट (पु०) कोकिल, (वि०) दूसरे से पालापोसा हुआ ।

परथ (पु०) उत्सव, अध्याय, पर्व ।

परब्रस (मं० परवश) (वि०) पराधीन ।

परब्रह्म (पर=सबसे बड़ा, ब्रह्म=ईश्वर) (पु०) सर्व-शक्तिमान्, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा ।

परभुका (वि०) दूसरे की भोगी हुई स्त्री ।

परभृत (भृ=पालना) (पु०) काक पक्षी, कोयल पक्षी,

( वि० ) शत्रु का सहायक, अन्य से पाखा गया ।

परम ( पर=उत्तम, सर्वोप अर्थात्, मा=नापना, अथवा पृ=भरना ) ( वि० ) बहुत अच्छा, बहुत श्रेष्ठ, उत्तम, मुख्य, प्रधान, सबसे पहला, भला ।

परमगति ( परम=उत्तम, गति=दशा ) ( स्त्री० ) मोक्ष, मुक्ति, उत्तम दशा ।

परममत्त ( पर=मिष्ट अथवा दुर्गम का मत=मल ह वा गमति ) ( पु० ) दूसरे की सलाह, भिन्न सम्मति ।

परमधाम ( परम=उत्तम, धाम=जगह ) ( पु० ) वैकुण्ठ, परमपद, स्वर्ग ।

परमपद ( परम=उत्तम, पद=जगह ) ( पु० ) सबसे अच्छा जगह, स्वर्ग, वैकुण्ठ, मुक्ति, मोक्ष “यदगत्या न निवर्तन्ते तद्धाम परमं पदम्” जहाँ जाकर कोई नहीं लौटता है उस धाम को परमपद परमधाम कहते हैं ।

परमव्रज ( परम=सर्वोप बड़ा, व्रज=ईश्वर ) ( पु० ) परमेश्वर, परव्रज ।

परममित्र ( परम=मुख्य, मित्र=दोस्त ) ( पु० ) पक्का दोस्त, सबसे अच्छा मित्र ।

परमल ( पु० ) ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना ।

परमहंस ( परम=उत्तम, हंस=आत्मा, अर्थात् जगत्की आत्मा उत्तम हो ) ( पु० ) संन्यासी, योगी, ( स्त्री० ) शोभा, कान्ति, छवि ।

परमा ( स्त्री० ) बड़ी, उत्तमा, शोभा, कान्ति ।

परमाणु ( परम=बहुत ही, अणु=छोटा ) ( पु० ) बहुत ही छोटी वस्तु, कन, कनिका, जरी, रेशा, पल, बहुत थोड़ा समय ।

परमात्मा ( परम=उत्तम वा सर्वोप बड़ा, आत्मा=जीव ) ( पु० ) परब्रह्म, परमेश्वर ।

परमानन्द ( परम=बहुत ही, आनन्द=हर्ष ) ( पु० ) बहुत खुरी, अत्यंत आनन्द ।

परमायुस् ( परम=आयुस् ) ( पु० ) बड़ी उमर, दीर्घावस्था, दीर्घायु, दराज उमर ।

परमार्थ ( परम=उत्तम, अर्थ=प्रयोजन ) ( पु० ) उत्तम पदार्थ, सबसे अच्छा विषय वा प्रयोजन, यथार्थ ज्ञान, पवित्र ज्ञान, उत्तम अथवा पहला काम, धर्म, पुण्य ।

परमेश्वर ( परम=ईश्वर ) ( पु० ) सर्वशक्तिमान्, परमात्मा, ईश्वर ।

परमेश्वरी ( स्त्री० ) दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी, परमेश्वर की शक्ति ।

परमेष्ठ ( परम=ईष्ट ) ( पु० ) श्रेष्ठ, महान्, परमेश्वर, ब्रह्मा, देवता ।

परमेष्ठिन् } ( परम=व्योम, चिदाकाश, स्था=ठहरना )  
परमेष्ठी } ( पु० ) ब्रह्मपद में टिकनेवाला, ब्रह्मा, गुरु ।

परमोदार ( परम=बड़ा, उदार=दातार ) ( वि० ) बड़ा दातार, श्रेष्ठ, उत्तम ।

परंपरा ( परम=बहुत, पृ वा पृ=पूरा करना वा भरना ) ( स्त्री० ) संतान, वंश, पीढ़ी, रीति, परिपाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, क्रदागत, परंपरा से, ( कि० वि० ) पहल से, अगले समय से ।

परला ( म० पर ) ( वि० ) दूसरी ओर का, उस तरफ का ।

परलोक ( परमलोक ) ( पु० ) स्वर्ग, दूसरा लोक, मृत्यु, शत्रुजन, अन्यजन श्रेष्ठजन ।

परवल ( पु० ) परोरा, परवख ।

परवश ( पर=दुर्गम के, वश=आधीन ) ( वि० ) पराधीन ।

परवा ( स्त्री० ) प्रतिपदा, दोनों पक्षों की पहली तिथि ।

परशु } ( पर=वेग, शू=मारना, नाश करना ) ( पु० )  
पशु } फरसा, कुल्हाड़ी, टाँगी ।

परशुधर ( परशु=फरसा, धर=रखना ) ( पु० ) परशुराम ।

परशुराम ( परशु=फरसा, अर्थात् फरसा रखनेवाला राम ) ( पु० ) यमदग्नि ऋषि का बेटा और विष्णु का छठा अवतार जिसने राजा सहस्रार्जुन को मारा और इकौस बार पृथिवी के सब सन्तियों को नाश किया ।

परस् ( म० स्पर्श ) ( पु० ) छुना, छूना, स्पर्श ।

परस्न ( कि० वि० ) छूते ही, स्पर्श करते ही ।

परस्नना ( म० स्पर्शन, स्पृश=छूना ) ( कि० म० ) छुना ।

परसिया ( स्त्री० ) हंसिया, दरांतो ।

परजून ( पु० ) रोग-विशेष जो स्त्रियों की प्रसव के बाद होता है ।

परमूर्ती ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसने हास में बच्चा जना हो, जन्मा, वह जिसकी प्रसूतरी हुआ हो ।

परसैया ( पु० ) परोसनेवाला ।

परसों ( सं० परस्वस्, पर=पिछला वा दूसरा, स्वस्=कल का दिन ) ( कि० वि० ) आगे वा पीछे का तीसरा दिन ।

परस्थौ ( पु० ) रहना, बास करना, ठहरना ।

परस्पर ( पर=दूसरा, पर=दूसरा ) ( कि० वि० ) आपस में, दोनों में, अन्योन्य, एक दूसरे को, बाह्य ।

परा ( उपस० ) उलटा, पीछे, विपरीत, प्रभुता, बड़ाई, विरोध, अहंकार, अनादर, तिरस्कार, बहुत, अधिक, जोर, बल, सामर्थ्य से, ( पु० ) पाँत, श्रेणी, दल, समूह, मंडली, टोली, विमोक्ष, प्राधान्य, विक्रम, गति ( स्त्री० ) ब्रह्मविद्या ।

परांठा } ( पु० ) एक तरह की रोटी जो घी या तेल  
पराठा } लगाकर कई पतें देकर बनाई जाती है ।

पराक्रम ( परा=जोर से, क्रम=जाना, बा पाँव रखना ) ( पु० ) बल, जोर, सामर्थ्य, साहस ।

पराक्रमी ( पराक्रम ) ( वि० ) बलवान्, जोरावर, महा-बली, साहसी, शूरी ।

पराग ( परा=बहुत, गम=जाना ) ( पु० ) फूलों की सुगन्धित धूलि, पुष्पारज, उपराग, चंदन, स्वच्छंद गमन ।

परागत ( वि० ) प्राप्त, विस्तृति, नष्ट, निरस्त ।

परांगद ( पु० ) शिव ।

परांगव ( पु० ) समुद्र, महानद ।

परांमुख ( परा+मुख ) ( वि० ) विमुख, रहित, भिन्न, छिन्न, अधोमुख, शरमिद्धा, बारी ।

पराचीन ( वि० ) पुराना, प्राचीन ।

पराजय ( परा=उलटा, जय=जीत, अर्थात् जीत का उलटा ) ( स्त्री० ) हार, पराभव, तिरस्कार, शिकस्त ।

पराजित ( वि० ) पराभूत, शिकस्त, हारा हुआ ।

पराजिता ( स्त्री० ) विष्णुकी लता ।

पराजेता ( पु० ) पराजयकर्ता, जीतनेवाला, विजयी ।

पराठा ( पु० ) उलटा, रोटी-विशेष ।

परात ( स्त्री० ) थाल, बड़ी थाली ।

परानी ( स्त्री० ) थाली, परात, गानाविशेष जो प्रातः-काळ गाया जाता है ।

पराधीन ( परा=दूसरे के, अधीन=वश ) ( वि० ) दूसरे के अधीन, परवश ।

पराना } ( सं० पलायन, परा=उलटा, अय=जाना )  
पलाना } ( कि० अ० ) भाग जाना, पीठ देना, पीठ दिखाना, चंपत होना ।

पराश्र ( पु० ) पराये का अन्न, पर भोजन ।

परापर ( वि० ) पहला और पिछला, अच्छा और बुरा, शत्रु-मित्र, उल्टाधम ।

पराभव ( परा=तिरस्कार, भू=होना ) ( स्त्री० ) हार, परा-जय, तिरस्कार, बे-इज्जती, बरबादी ।

पराभूत ( वि० ) पराजित, शिकस्त, हारा हुआ ।

परामर्श ( परा=बहुत, मर्श=सोचना ) ( पु० ) विचार, मंत्र, उपदेश, मंत्रणा, सलाह, विवेक, भेद, राज्ञ ।

परामर्शक ( पु० ) मंत्री, वजीर, सलाही ।

परामर्शित ( वि० ) विवेचित, उपदेशित ।

परामर्ष ( पु० ) क्रोध, गुस्सा, तीव्र सहन, क्षमा ।

परामृष्ट ( वि० ) उपदेशित, सलाह दिया गया ।

परामंथ ( पु० ) भुज्जावा, झोला-पट्टा ।

परायण ( पर=लगा हुआ वा बहुत, अय=जाना ) ( वि० ) लगा हुआ, तरार, मगन, अत्यासक्त, मशगूल ।

पराया ( सं० पर ) ( वि० ) दूसरा, और, उपरी, बाहरी, विदेशी, दूसरे का ।

परार्थ ( पु० ) अन्य के निमित्त, पर के लिये ।

पराई ( स्त्री० ) ब्रह्मा को आधो आयु, आखिरी शुमार, संख्या का अंत ।

पराल ( स्त्री० ) घास, न्यार, पक्षाश ।

पराशर ( पु० ) व्यासजी के बाप ।

पराश्रय ( परा=दूसरे के, आश्रय=आमरे में ) ( वि० ) पराधीन, परवश ।

परास्क ( वि० ) पराजित, प्रक्षिप्त, निरस्त, प्रहत, शिकस्त ।

परास्त ( परा=तिरस्कार वा अनादर, अस्=कंकना या निकालना ) ( वि० ) हारा हुआ, पराजित किया हुआ ।

पराह ( पर+अहः ) ( पु० ) दूसरा दिन, परदिन ।

पराह्न ( पर+अह्न ) ( पु० ) दिन का पिछला भाग, दोपहर के पीछे का दिन, सेहपहर ।

परि ( परा=परा ) ( उपस० ) चारों ओर से, सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, बहुत, अतिशय, पहले, पास, आसपास, आपस में, बुरा ।

परिकर ( परि=चारों ओर से, कृ=करना ) ( पु० ) कमर, नीकर-चाकर, सेवक, अनुचर, परिवार, समूह, साज, सैयारी ।

परिकीर्तन ( पु० ) प्रस्ताव, बड़ाई, गण्य ।

परिक्रमा ( परि=चारों ओर, क्रम=पाँव रखना ) ( स्त्री० ) प्रदक्षिणा, चारों तरफ घूमना ।

**परिचित** } ( परि=पहले, चिन्ता करना, क्योंकि परिचित  
**परीक्षित** } को अपनी मा के गर्भ में ही अश्वत्थामा ने मार  
 डाला था पर श्रीकृष्ण ने उसको जिलाया था । इसकी कथा  
 श्रीमद्भागवत और महाभारत में है ) ( पु० ) अर्जुन  
 का पोता, अभिमन्यु का बेटा और हस्तिनापुर  
 का राजा ।

**परिखा** ( परि=चारों ओर में, खन=खोदना ) ( स्त्री० )  
 खाई, खंदक, किले के चारों ओर का नाला ।

**परिख्यात** ( वि० ) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात ।

**परिगत** ( गम=जाना ) ( वि० ) विस्मृत, भूला हुआ,  
 वेष्टित, लपेटा हुआ, गया हुआ ।

**परिग्रह** ( पु० ) स्त्री, औरत, परिवार, मूल, स्वीकार,  
 शपथ, सौम्य, शाप, सूर्यग्रहण, नौकर ।

**परिग्राहक** ( पु० ) ग्राहक, स्वीकारक ।

**परिग्रह** ( परि=चारों ओर में, दन=मारना ) ( पु० ) लोहे  
 की लाठी, गदा, लोहे का मुद्गर, घर, मोहल्ला ।

**परिग्रोव** ( पु० ) गाली, श.द. मेघश.द. कदृश.द. मेघ  
 का गरजना ।

**परिचय** ( परि=चारों ओर में, चि=चकड़ा करना ) ( पु० )  
 जान-पहचान, बहुत मिलाई ।

**परिचर्या** ( परि=सब तरह में, चर=जाना ) ( पु० ) सेवा,  
 पूजा, उपासना ।

**परिचारक** ( परि=चारों ओर, चर=जाना ) ( पु० ) दाम्प,  
 सेवक, नौकर, आलापकता, प्रसिद्धकर्ता ।

**परिचारिका** ( स्त्री० ) दासी, सेविका, मजदूरिन ।

**परिचित** ( वि० ) जान, जाना हुआ, पहचाना हुआ ।

**परिच्छेद** ( पु० ) पुरस्कर, उपयोगी वस्तु, याज, वि-  
 क्षोभा, उपना, सभारसक, आन्तरण, हाथियों का  
 भुल्ल-असबाध ।

**परिच्छेद** ( वि० ) आच्छादित, महपूर, घिरा हुआ ।

**परिच्छेद** ( परि, छि=काटना ) ( पु० ) भाग, खंड,  
 विभाग, अध्याय, पर्व ।

**परिजन** ( परि=पाम के, जन=मनुष्य ) ( पु० ) परिवार,  
 कुटुंब, घराना, घर के लोग, नौकर-चाकर, अनुचर ।

**परिणत** ( परि, नम=भुकना ) ( पु० ) भक्त, नम्र, पका  
 हुआ, भुका हुआ ।

**परिणति** ( परि, नम=भुकना ) ( स्त्री० ) नमस्कार,  
 मञ्जरा, भुकाव, शांति ।

**परिणय** ( परि+नी=ले जाना ) ( पु० ) विवाह, नवरात,  
 प्राप्ति ।

**परिणाम** ( परि, नम=भुकना, पर परि उपमर्ग के साथ  
 आने से इसका अर्थ बदलना होता है ) ( पु० ) अंत,  
 समाप्ति, बदलना, भिन्नभाव, अंत की अवस्था,  
 फल ।

**परिणामदर्शी** ( परिणाम=अन्त, दर्श=देखनेवाला,  
 दृश=देखना ) ( पु० ) पहले से हरणक काम का  
 भला-बुरा फल जाननेवाला, अग्रशीर्षा, बुद्धिमान् ।

**परिणायक** ( परि + नी=ले जाना ) ( पु० ) पासों का  
 खेलनेवाला, पति, वर ।

**परिणाह** ( पु० ) चौड़ाई, विस्तार, निबंधन, संबंध,  
 रिश्ता ।

**परिणीता** ( स्त्री० ) दयाही हुई, विवाहिता ।

**परितः** ( अग्र० ) सर्वतः, चारों तरफ, चारों ओर ।

**परिताप** ( परि=चारों ओर से तप=तपना ) ( पु० ) दुःख,  
 शोक, सोच, पीड़ा, संताप, कष्ट, एक नरक का नाम ।

**परितुष्ट** ( वि० ) संतुष्ट, हर्षित, आनंदित ।

**परितुष्टि** ( परि + तुष्ट=तुष्टि ) ( स्त्री० ) संतुष्टि, हृत्मी-  
 जान ।

**परितृप्त** ( परि + तृप्त + त, तृप्त=संतोष ) ( वि० )  
 सब प्रकार से तृप्त, आसूदा ।

**परितृप्ति** ( स्त्री० ) संतोष ।

**परितृस्त** ( वि० ) डरा हुआ, भोत ।

**परितोष** ( परि=सब तरह में, तृप्त=सब होना ) ( पु० )  
 संतोष, तृप्ति, हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, खुशी ।

**परित्यक्त** ( वि० ) छोड़ा गया, सम्यक्स्यक्त, जरूद  
 छोड़ा गया ।

**परित्याग** ( परि=सब तरह में, त्यज=छोड़ना ) ( पु० )  
 त्याग, छोड़ना, तजना ।

**परिघ्राण** ( परि=सब तरह में, घे=वचाना ) ( पु० )  
 बचाव, रक्षा, उद्धार, डर से अथवा बुराई से बचाना,  
 रक्षण, हिक्काजत ।

**परिभ्रात** ( वि० ) रक्षित, महकूज ।

**परिभ्राता** ( पु० ) रक्षक, महाकूज ।

**परिदान** ( परि=सब प्रकार, दा=देना ) ( पु० ) दाना-  
 दान, देनलेख, त्याग, प्रक्षेप, धरोहर, धरना,  
 निरस्कार, निवारण ।



परिदेवक (परि=सब तरह से, देव=क्रीड़ा) (पु०)

विलापकर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतनेवाला, व्यवहारी, स्तुतिकर्ता, शोभायमान ।

परिदेवन (देव=स्तुति, क्रीड़ा) (पु०) विलाप, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, धृतकर्म, जुआ खेलना, स्तुति ।

परिधान (परि=चारों ओर से, धा=पहनना) (पु०) पहनने का कपड़ा, नाभि से नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिधि (परि=चारों ओर से, धा=रखना अर्थात् घेरना) (स्त्री०) गोल लकीर जिससे वृत्त घेरा जाता है, घेरा, मंडल, सूर्य का अथवा चाँद का मंडल ।

परिध्रिय (परि=चारों ओर से, धा=पहनना) (वि०) पहनने योग्य कपड़ा ।

परिध्वंस (परि=चारों ओर से, ध्वस्=नाश होना) (पु०) नाश, बिगाड़, हानि ।

परिपक्व (परि=बहुत, पक्व=पका हुआ) (वि०) खूब पका हुआ, पका, चतुर, बुद्धिमान् ।

परिपंथी (पु०) (परि, पंथ=केश देना, मारना) (पु०) शत्रु, ठग, चोर, लुटेरा, पापी, कुमार्गी, उन्मादी ।

परिपाक (पु०) फल, नतीजा ।

परिपाटी (परि=पत्र तरह से, वा चारों ओर से, पट्ट=जाना) (स्त्री०) रीति, दस्तूर, अनुक्रम, परंपरा की रीति ।

परिपालन (पु०) भरण, रक्षण, पोषण ।

परिपालक (पु०) रक्षा करनेवाला व्यक्ति, भरण-पोषण करनेवाला मनुष्य ।

परिपालित (वि०) रक्षित, आश्रित ।

परिपूर्ण (परि=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) (वि०) पूरा, भरा हुआ, संपूर्ण, समाप्त ।

परिव्राजक (पु०) संन्यासी ।

परिभव } (परि=अनादर, भ्रू=हाना) (पु०) अना-  
परिभाव } दर, अवज्ञा, निरस्कार, नक्ररत ।

परिभाषण (पु०) निंदापूर्वक कथन ।

परिभाषा (परि=चारों ओर से, भाषू=कहना) (स्त्री०) लक्षण, व्याख्या, संज्ञा ।

परिभूत (वि०) अनादर, पराजित, हराया हुआ ।

परिभ्रमण (परि=चारों ओर, भ्रम=घूमना) (पु०) फिरना, घूमना ।

परिभ्रष्ट (वि०) नष्ट, पतित, बरबाद ।

परिमंडल (पु०) घेरा, दायरा, परिधि, एक प्रकार का विपैला मच्छड़ ।

परिमल (पु०) सुगंध, सुवास, सौरभ, पंखियों का समुदाय ।

परिमाण (परि=चारों ओर से, मा=नापना) (पु०) माप, नाप, तौल, अंदाज़ ।

परिमाजित (परि=माजित, मृज्=शुद्ध करना, साफ करना) (पु०) शुद्ध, संशोधित, पाक-साफ ।

परिमित (परि=चारों ओर से, मा=नापना) (वि०) नापा हुआ, मापा हुआ, नियमित ।

परिमिति (स्त्री०) परिमाण, इह, किनारा, अवधि ।

परिरंभ (परि+रंभू=उत्सुक होना) (पु०) आलिंगन, भेंटना, श्लेष, मुलाकात ।

परिवर्जन (परि+वृज्=त्यागना) (पु०) मारना, त्याग करना ।

परिवर्त (पु०) विनिमय, ग्रंथ-विच्छेद, युगांतकाल, किसी काल का अंत ।

परिवर्तन (परि+वृत्=होना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होता है) (पु०) बदल, हेरा-फेरी, पलटना, तब्दीली ।

परिवा (सं० प्रतिपक्ष) (स्त्री०) पक्ष की पहली तिथि, पहली तारीख ।

परिवाद (परि=युग, वद=कहना) (पु०) गाली, निंदा, अपवाद, दुर्वाद ।

परिवादक (पु०) निंदक, बदगी, द्वेषी ।

परिवार (परि=चारों ओर से, वृ=घेरना वा ढकना) (पु०) घराना, कुटुंब, परिवजन ।

परिवारण (परि, वृ=घेरना) (पु०) माँगना, तक्राज़ा करना ।

परिवाह (परि, वद्=बहना) (पु०) उपद्रव, जल का उछलना, बहाव, चहबूबा, तरंग, खहर ।

परिवृत (परि=चारों ओर से, वृत्=रहना) (वि०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ, परिबेष्टित ।

परिव्रण (पु०) परोसना, भोजन परोसना ।

परिवेष्टन (परि, वेष्ट=लपेटना) (पु०) लपेटना, छिप्राका ।

परिव्राज } (परि=यत्र तरह वा सब काम छोड़ के,  
परिव्राजक } वृज्=फिरना) (पु०) संन्यासी, यती, योगी, मुसाई ।

परिशिष्ट ( परि, शास्त्र=मिखाना ) ( वि० ) अवशेष,  
निनिग्मा, बाक़ी, अवशिष्ट ( पु० ) पुस्तक या लेख  
का वह अंश जो यथास्थान देने से छूट गया हो और  
जिसके देने से पुस्तक की पूर्ति हो ।

परिशुद्ध ( वि० ) परिशोधित, शुद्ध, पवित्र ।

परिशेष ( पु० ) अन्त, सीमा, समाप्ति, हद ।

परिशोधन ( परि, शुध=शुद्ध करना ) ( पु० ) कण  
चुकाना, कर्ज़ा अदा करना, कर्ज़ा करना ।

परिश्रम ( परि=चारों ओर मे, श्रम=मिहनन करना ) ( पु० )  
मिहनन, श्रम, यकावट, उद्योग ।

परिश्रमी ( पु० ) मिहनती ।

परिश्रान्त ( वि० ) थका हुआ ।

परिषद् ( परि+पद=माना ) ( पु० ) सभा, मजलिस,  
समूह, समाज ।

परिष्कार ( परि+कार, कृ=करना ) ( पु० ) सफ़ाई,  
स्वच्छता, शुद्धता, संस्कार ।

परिष्कृत ( वि० ) अलंकृत, भूषित, शुद्ध, स्वच्छ ।

परिष्वंग ( पु० ) आखिगम, भेटना, हमसोश  
होना ।

परिसर ( पु० ) नदी, नगर, पर्वतादि के निकट की  
भूमि, निधि, घर, चौड़ाई, निकास, कगार ।

परिहरना ( सं० परिहरण, परि, ह=लेना ) ( कि० म० )  
छोड़ना, दूर करना ।

परिहार ( परि+हार, ह=हटना, लेना ) ( पु० ) हरना,  
लेना, छीनना, अवज्ञा, अपमान, त्याग ।

परिहास ( परि=बहुत, हस=हँसना ) ( पु० ) हँसी, उट्टा,  
कोतुक, खेल, मसखरी, लोकापवाद ।

परिहास्य ( वि० ) हँसी के लायक, हँसने योग्य ।

परिहित ( वि० ) आच्छादित, धरा हुआ, आच्छन्न,  
गुप्त, पोशीदा ।

परी ( स्त्री० ) अपसरा, कछछी-विशेष जिससे तेल  
निकासने हैं ।

परीक्षक ( परि=चारों ओर मे, ईत्=देखना ) ( पु० ) परीक्षा  
करनेवाला, परखनेवाला, इम्तिहान लेनेवाला ।

परीक्षा ( परि=चारों ओर से, ईत्=देखना ) ( स्त्री० ) परख,  
जाँच, इम्तिहान ।

परीक्षित ( पु० ) 'परिखिन' शब्द को देखो ।

परीक्षोत्तीर्ण ( परीक्षा+उत्तीर्ण, तृ=पार जाना ) ( वि० )

परीक्षा में पूरा, इम्तिहान पास, क़ेस नहीं, पास ।

परु ( पु० ) गौँट, पोर ।

परुष ( पृ=भरना ) ( वि० ) बडोर, कड़ा, टेढ़ा,  
भयंघ, ( पु० ) कुबचन, गाली ।

परे ( सं० पर ) ( कि० वि० ) उधर, उस ओर, दूर ।

परे रहना ( मुहा० ) दूर रहना ।

परेखा ( सं० परीक्षा ) ( स्त्री० ) परख, जाँच, पड़तावा,  
पश्चात्ताप ।

परेत ( परा, इण्=जाना ) ( पु० ) भूत, पिशाच, शैतान,  
( वि० ) मुर्दा, मृतक ।

परेता ( पु० ) रहटा, चर्खा, चर्खी ।

परेद्युस् ( अव्य० ) दूसरा दिन, कल, प्राद ।

परेवा ( पु० ) कपोत, कबूतर, प्रतिपदा ।

परेशान ( वि० ) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्याकुल ।

परेह ( पु० ) कढ़ी, शोरवा, रसा ।

परोक्ष ( पर=परे, अक्ष=आँख ) ( वि० ) नहीं देखा हुआ,  
आँखों के परे ।

परोपकार ( पर=दूसरे का, उपकार=भला ) ( पु० ) दूसरे  
का भला, पराये का हित ।

परोपकारी ( परोपकार ) ( वि० ) दूसरे का भला करने-  
वाला ।

परोस ( पु० ) समीपता, गूँझा, नज़दीकी, पड़ोस ।

परोसना ( सं० परिवेषण, परि=चारों ओर से, विप्=फँलाना )  
( कि० सं० ) खाना पत्तलों में रखना, खाना चुनना,  
पत्तल लगाना ।

परोसा ( पु० ) खाद्य वस्तुओं से सजाई हुई थाली या  
पत्तल ।

परोसाँ ( वि० ) पड़ोसी, घर के बगल में रहनेवाला ।

परोसैया ( वि० ) परोसनेवाला ।

परोहन ( पु० ) वाहन, रथ, गाड़ी, सवारी ।

परोहा ( सं० परीवाह, परि=सव और मे, वह=ले जाना )  
( पु० ) चरम, मोट, पुर ।

पर्कटि ( स्त्री० ) पाधरि, पहरिया ।

पर्चा } ( सं० परीक्षा ) ( पु० ) परख, जाँच, परीक्षा,  
पर्ची } पुरज़ा, खत, प्रश्न-पत्र, परिचय, जानकारी ।

पर्चाना ( सं० परिचयन ) ( कि० सं० ) भेंट कराना,  
मिलाना, बातों में लगाना ।

पछुती ( स्त्री० ) कोटी छपरिया ।

पछा ( पु० ) तेखी के बैल की आँखें बाँधने का कपड़ा,  
बड़ी बटखोई, बड़ा देग, भीड़ का छँटाव ।

पछाई ( सं० प्रतिच्छाया, प्रति=अपने रूप, छाया=छाव )  
( स्त्री० ) प्रतिबिम्ब, अक्स, प्रतिच्छाया ।

पर्ज ( स्त्री० ) ढोल का एक बोल ।

पर्जन्य ( पृष्-सौचिना, गर्ज=गर्जना ) ( पु० ) मेघ, इंद्र,  
मेघ-गर्जन, नवीन मेघ, बरसाती मेघ ।

पर्ण ( पर्ण=हरा होना, वा पृ=भरना ) ( पु० ) पत्ता,  
पान ।

पर्णकार ( पु० ) बरहूँ, तंबोली ।

पर्णकुटो ( स्त्री० ) पत्तों आदि से बनी झोपड़ी ।

पर्णशाला ( पर्ण=पत्ता, शाला=घर ) ( स्त्री० ) पत्तों की  
बनी कुटी, झोपड़ी ।

पर्णो ( पु० ) वृक्ष, पेड़, ढाक, पलाश-वृक्ष ।

पर्दा ( पु० ) आव, ओट ।

पर्पट ( पु० ) पित्तपापड़ा ।

पर्परा ( स्त्री० ) पापर, पापड़ ।

पर्परी ( स्त्री० ) मुलतानी मिट्टी, पद्यावती सुगंधित  
द्रव्य ।

पर्यंक ( परि=पास, अंक=गोद, अकि=जाना वा चिह्न करना )  
( पु० ) पलंग, खाट, चारपाई, योग का एक  
आसन ।

पर्यटक ( पु० ) मुसाफिर, पथिक ।

पर्यटन ( परि=चारों ओर, अटन=घूमना ) ( पु० ) घूमना,  
भ्रमण करना, सफ़र करना, सैर करना ।

पर्यनुयोग ( पु० ) जिज्ञासा, प्रश्न, सवाल ।

पर्यंत ( परि=पास, अन्त=सीमा ) ( पु० ) इंत, सीमा, हद,  
( अव्य० ) तक, तलक ।

पर्यवसान ( पु० ) समाप्ति, राग, क्रोध, अंत, परिणाम ।

पर्याप्त ( परि=चारों तरफ़, आप=व्याप्त होना ) ( पु० ) समर्थ,  
तृप्त, योग्य, पूर्ण, पूरा, काफी, बस ।

पर्याय ( परि=चारों ओर से, इण्=जाना ) ( पु० ) एक  
अर्थ का शब्द, एकार्थी शब्द, अनुक्रम, रीति,  
प्रकार, अवसर, उर्फ़, डमनामो, निर्माय, ओसरी,  
बारी ।

पर्यायवाचक ( पु० ) एकार्थ-बोधक, मुतरादिक, एकार्थ  
वाची ।

पर्यालोचना ( परि=आलोचना ) ( स्त्री० ) विचार करना,

गौर करना, यहलियात करना, चौकसी करना,  
सब प्रकार से देखना, जाँच करना ।

पर्युत्सुक ( वि० ) ध्याकुल, शोक-विह्वल, चिंतित ।

पर्युषित ( वि० ) बासी, पिछले दिन की बनी हुई चीज़ें ।

पर्व ( पृ=भरना ) ( पु० ) त्योहार, उत्सव, अभ्यास,  
परिच्छेद, गोंठ ।

पर्वणी } ( पृ=भरना ) ( स्त्री० ) त्योहार, उत्सव,  
पर्विणी } निवहार ।

पर्वत ( पर्व=भरना ) ( पु० ) पहाड़, शैल, गिरि, भूधर ।

पर्वतारि ( पर्वत+अरि ) ( पु० ) इंद्र ।

पर्वतारी ( पु० ) इंद्र ।

पर्वतिया ( स्त्री० ) लौकी, लोआ, ( वि० ) पार्वतीय,  
पहाड़ी ।

पर्वतीय ( पर्वत ) ( वि० ) पहाड़ी, पहाड़ का ।

पर्वाल ( पु० ) काजखवाली ।

पल ( पल=जाना ) ( स्त्री० ) घड़ी का साठवाँ भाग,  
निमेष, दम, आन, जहमा, चार तोला ।

पलक ( स्त्री० ) आँख का पुट, पपोटा, बरुनी, पपनी,  
पल, क्षण ।

पलंग ( सं० पत्येक परि+अंक ) ( पु० ) सेज, शय्या,  
खाट, चारपाई ।

पलंगारि ( कि० सं० ) निकार, कर, निकारी, दूर की ।

पलंगड़ी ( स्त्री० ) खटोला, छोटा पलंग ।

पलंजी ( स्त्री० ) एक प्रकार की घास ।

पलटन ( अ० बैटालियन ) ( पु० ) हज़ार सिपाहियों का  
यूथ या थोक, ज़स्था, सेना, फ़ौज ।

पलटना ( कि० अ० ) पीछे आना, फिर जाना, लौट  
जाना, बदलना, बदल लेना, नकारना, इनकार  
करना ।

पलटा ( पलटना ) ( पु० ) बदला, हेराफेरी, बट्टा,  
अदला-बदला, प्रतिफल, पीछा, उपकार करना,  
पिछला वैर लेना ।

पलटा लेना ( मुहा० ) वापस ले लेना, लौटा लेना,  
बदला लेना, वैर लेना, वैर सारना ।

पलटाव ( पु० ) विरोध, फ़िराव, लौटाव ।

पलड़ा ( पु० ) तराजू का एक पल्ला ।

पलथी ( स्त्री० ) कुआ टेकर ज़मीन पर बैठना, एक  
प्रकार का आसन या बैठने का ढंग ।

पलना ( मं० पलन, पल=बचाना ) ( क्रि० अ० ) पनपना, प्रतिपालित होना ।

पलभर में ( मृदा० ) तुरंत, उम्मीद में, पल मारते ।

पल मारते ( मृदा० ) तुरंत, पलभर में ।

पल्ल ( पु० ) मांस, कीचड़, निलच्छर्ण, निष्ठ का फूल, लाश, शवस ।

पलवल ( मं० पटोल, पट=जाना ) ( पु० ) परवल, एक तरकारी का नाम ।

पलवाना ( क्रि० म० ) रक्षा कराना, पोसवाना ।

पलवार ( पु० ) एक प्रकार का नाव, पटैया ।

पलवारी ( पु० ) मर्फी, खेवट, खेनेशाला ।

पला ( पु० ) दबा चमचा, कलकुल, दर्वा, डोई नेछ आदि निकालने का बरतन ।

पलांडु ( पु० ) प्याज, सखाराम, शलजम ।

पलाना ( क्रि० य० ) भागना, छाना, छाजना ।

पलाशा ( क्रि० ग० ) ज्ञान बाधना, पखानना ।

पलायक ( पु० ) भगोड़ा ।

पलायन ( पग मे, अथवा उलटा, अय=जाना ) ( पु० ) भागना, भागाभाग, भगेल ।

पलायमान ( पु० ) भगोड़, भागू ।

पलायित ( पु० ) भगोड़ा, प्रस्थित, चम्पत ।

पलान ( पु० ) पलानी, छवनी, छपार ।

पलाश ( पल=बलना, अश=फलाना वा खाना ) ( पु० ) दैम् का वृक्ष, ढाक का वृक्ष ।

पलित ( पल=पालना, जाना ) ( पु० ) वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

पली ( श्री० ) चमची, जिससे नेल आदि निकाला जाता है ।

पलीत ( मं० पेत ) ( पु० ) भूत, पिशाच, प्रेत ( वि० ) गँदला, मैला ।

पलीता ( फ० पलीता वा फलीता ) ( पु० ) बत्ती, बंदूक का तोड़ा, जामगी ।

पलुवा ( वि० ) पालनू, पाजा-पोसा हुआ ।

पलेथन ( पु० ) सूखा ज़ाटा जो रोटी पर बेछने के समय लगाया जाता है ।

पलेथन निकालना ( मृदा० ) बहुत मारना, बहुत पीटना ।

पलेथ ( पु० ) शोरवा, कड़ी, जूस, हलकी सिचाई ।

पलोटत ( क्रि० अ० ) धीरे से पाँव दाबता है, चरण सेवा करता है ।

पलोटना ( क्रि० म० ) धीरे-धीरे पाँव दाबना ।

पलोठा ( वि० ) पहलौठा, ज्येष्ठ, प्रथम पुत्र ।

पल्ल ( पु० ) गोला, गोली, घान रखने का स्थान ।

पल्लव ( पल=जाना, अर लू=काटना, अथवा पल्ल=जाना ) ( पु० ) नया पत्ता, अंकुर, कैल ।

पल्लवप्राप्ति ( पट=जाना ) ( पु० ) पत्रा बाधनेवाला, पुरोहित ।

पल्लवित ( पलव ) ( वि० ) नये पत्तोंवाला, नये पत्तों से युक्त, पुष्कलित, रोमांचित, हर्षित, प्रसन्न ।

पल्ला ( क्रि० वि० ) अंतर, दूरी, टेंपा ( पु० ) सहायता, कपड़े का छोर, अंचल, छोर, किनारा, किवाड़, तीन मन बीज का ।

पल्लादार ( पु० ) मोटिया, मजदूर, बांझा होनेवाला ।

पल्ली ( श्री० ) छिपकिली, खलप ग्राम, छोटा गाँव, कुटी, झोपड़ा, कुटनी, शतरंजो जाज़िम ।

पल्लू ( पु० ) काड़े का सूँट, अंचल, अंचल, छोर ।

पल्लूदार ( पु० ) कपड़ा जिसका पल्ला मुनहला वा रुपहला हो ।

पलवल ( पु० ) तलैया, पानी का भरा गड्ढा, छोटा तालाब ।

पल्लिट्टा ( पु० ) पनहंडा, पानी का घड़ा रखने की निपाई ।

पवन ( पू=पवित्र करना ) ( श्री० ) हवा, वायु, बयार, बतार, बाव, अनाज का उसाना वा पसाना ।

पवनकुमार ( पवन=हवा, कुमार=बेटा ) ( पु० ) हनुमान्, पवन का बेटा ।

पवनतनय ( पवन=हवा, तनय=बेटा ) ( पु० ) हनुमान् ।

पवनरेखा ( पवन=हवा, रेखा=लकीर ) ( श्री० ) राजा उग्रसेन की रानी और कंस की मा ।

पवनस्तु ( पवन=हवा, स्त=बेटा ) ( पु० ) हनुमान्, पवन का पुत्र ।

पवनायन ( पु० ) झरोखा, खिड़की, मोखा ।

पवनाशन ( पवन=हवा + अशन=भोजन, अश=खाना ) ( पु० ) वायुभक्षक, सर्प, साँप ।

पवाई ( श्री० ) एक जूता, घोड़े के पैर की साँकल, एक पैल ।

पवाज ( पु० ) प्रामोह्य, नीच लोग ।

पवाँट ( पु० ) क्षत्रियों की एक जाति ।

पवाँरना ( कि० सं० ) फेंकना, डालना, भेजना ।

पवि ( पृ०=शुद्ध करना, अर्थात् दुष्ट जनों को मार-पीटकर शुद्ध करना ) ( पु० ) वज्र, इंद्र का शस्त्र, हीरा ।

पवित्र } ( पृ०=शुद्ध करना ) ( वि० ) शुद्ध, निर्मल, पाप-  
पवित } रहित, साफ, भिमल ( पु० ) यज्ञोपवीत,  
जनेऊ, कुश, ताँबा, जल ।

पवित्रता ( पवित्र ) ( स्त्री० ) निर्मलता, शुद्धता, सफाई ।

पवित्री ( सं० पवित्र ) ( स्त्री० ) कुश घास की अथवा सोना, चाँदी और ताँबा इन तीनों धातुओं की बनी हुई श्रृंगटी जिसको हिंदू लोग पूजा करते समय पहनते हैं ।

पश ( पशु=जाना, बाँधना ) ( पु० ) स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा ( वि० ) छूनेवाला, बाँधनेवाला, शत्रु ।

पशम ( पु० ) ऊन, पुरुष या स्त्री के मूर्च्छित्व के ऊपर के बाल ।

पशमीना ( पु० ) पशम, पशम का बना हुआ कपड़ा या चादर ।

पशु ( दृशु=देखना, जो सबको अवसर देखता है और मले-बुरे का विचार नहीं करता ) ( पु० ) चौपाया, जंतु, जीव, गाय, भैंस घोड़ा आदि, देवता ।

पशुपति ( पशु=देवता, जीव अथवा चौपाया ( बैल ) पति=स्वामी ) ( पु० ) महादेव, शिव ।

पशुपाल } ( पशु=चौपाया, पालू=वचाना ) ( पु० )  
पशुपालक } ग्वाला, अहीर ।

पशुराज ( पशु=चौपाया, राज=राजा ) ( पु० ) सिंह ।

पश्चात् ( अत्य० ) पीछे, इसके पीछे, पश्चिम दिशा की ओर ।

पश्चात्ताप ( पश्चात्=पीछे, ताप=दुःख ) ( पु० ) पछतावा, पश्चादा, अनुताप ।

पश्चिम ( पश्चत्=पीछे ) ( स्त्री० ) पश्चिम दिशा, पछाँह ( वि० ) पश्चिम का ।

पश्यतोहर ( पश्यतः=देखते देखते, हर=चुग लेना ) ( पु० ) सुनार, मृत्पु, चोर, गँठकड़ा ।

पषान ( सं० पाषाण ) ( पु० ) पत्थर, शिखा, पाषाण ।

पस ( पयु=बाँधना, गाँठ देना ) ( पु० ) बाँधना, छूना ( वि० ) बाँधनेवाला, छूनेवाला ।

पसरना ( सं० प्रसरण, प्र=बहुत, सृ=जाना वा फैलना ) ( कि० अ० ) फैलना, विस्तृत होना ।

पसली ( सं० पार्श्व ) ( स्त्री० ) पाँसुली, पंजर, पाँजर ।

पसा ( पु० ) मुट्टी भरा, दो मुट्टी भर, अंजलि ।

पसाई ( स्त्री० ) घास-विशेष जो नालों में होती है ।

पसाना ( सं० प्रसावण, प्रसृ=वृत्ता या टपकना ) ( कि० सं० ) माँझ निकालना, रीधे हुए चौखलों में से पानी निकालना ।

पसारना ( सं० प्रसारण, प्रसृ=जाना वा फैलना ) ( कि० सं० ) फैलाना, बिछाना ।

पसारा ( पु० ) विस्तार, फैलाव ।

पसारी ( पु० ) ' पनसारी ' शब्द का देखो ।

पसीजना ( सं० प्रस्वेदन, प्र, स्विद=पर्याप्त निकलना ) ( कि० अ० ) पिघलना, नर्म होना, पसीना निकलना, कोमलचित्त होना ।

पसीना ( सं० प्रस्वेद, प्र, स्वेद=पर्याप्त होना ) ( पु० ) पसेव, स्वेद ।

पसृज ( स्त्री० ) तुर्पन, सीधन ।

पसृजना ( कि० सं० ) तुर्पना, तागना, डोरा डालना ।

पसेव ( सं० प्रस्वेद ) ( पु० ) पसीना, प्रसजता, खुशो ।

पस्ताना ( सं० पश्चात्ताप ) ( कि० अ० ) पछताना, पश्चात्ताप करना ।

पह ( स्त्री० ) भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सबेरा ।

पह फटना } ( मुद्रा० ) भोर होना, तड़का होना,  
पौफटना } रोशनी फैलना दिन निकलना, सूर्योदय होना ।

पहचान ( पहचानना ) ( स्त्री० ) जानना, जान-पहचान, जान, बिन्हार, लक्षण, बिन्हानी, धिक्क, परिचय ।

पहचानना } ( सं० प्रतिज्ञान ) ( कि० सं० ) जानना,  
पहिचानना } चौगहन, लक्षण करना ।

पहनना } ( सं० परिधान ) ( कि० सं० ) कपड़ा  
पहरना } ओढ़ना, कपड़ा पहनना, शरीर पर कपड़ा  
पहिरना } धारण करना ।

पहननाथा ( पहनना ) ( पु० ) पहिराव, पोशाक ।

पहर ( सं० प्रहर, प्र=पहल, ह=लेना ) ( स्त्री० ) दिन-रात का आठवाँ भाग, तीन घंटा, आठ घड़ी ।

पहरा ( पहर ) ( पु० ) चौकी, गश्त, फेर, एक नायक अथवा जमादार और छः चौकीदार ।

पहराना ( सं० परिधान ) ( कि० सं० ) पहरना, उढ़ाना ।

पहरा देना ( मुहा० ) जागने रहना, चौकस रहना,

चौकी देना, रखवाली करना ।

पहरे में डालना ( मुहा० ) हवाखान्त में रखना, पहरूप को सँपना ।

पहरे में पड़ना ( मुहा० ) हवाखान्त में रहना ।

पहरावनी ( सं० परिधान ) ( स्त्री० ) दयाह में दुलहिन के घर से बरातियों को जो कपड़ा रुखा आदि दिया जाता है ।

पहरिया ( सं० प्रहर, प्रहर=पहर ) ( पु० ) चौकी-पहरुआ } दार, चौकी देनेवाला, रक्षा करनेवाला, रख-पहर्नु } वालो करनेवाला, पोरिया ।

पहल ( पु० ) रुई का गाजा, रुई का फाड़ा, प्रारंभ, आरंभ, गुरु, आदि, खेत की भुजा ।

पहला, पहिला ( सं० प्रथम ) ( वि० ) प्रथम, आदि ।

पहाड़ ( पु० ) पर्वत, जैल, गिरि ।

पहाड़ सी रातें ( मुहा० ) लंबी रातें, बड़ी रातें, दुःख की रातें ।

पहाड़ ( पु० ) जोड़नी, गुना का नक़्शा ।

पहाड़िया } ( वि० ) पहाड़ का, पर्वतीय ।  
पहाड़ी }

पहाड़ी ( स्त्री० ) छोटा पहाड़, टीला, टेकरी ।

पहिया ( पु० ) पाया, चाका, चक्का, चक्र ।

पहिरना ( कि० सं० ) धारण करना, पहनना ।

पहिरावन ( स्त्री० ) ओढ़ाव, पहिराव ।

पहिला ( सं० प्रथम ) ( वि० ) अगला, आगे का ।

पहिलौठा ( वि० ) पहला, जेठा, ज्येष्ठ ।

पहुँच ( पहुँचना ) ( स्त्री० ) आना, आगमन, शक्ति, सयानारन, अच्छी समझ, पैठ, पैसार, प्रवेश, दखल, गुजर, घुस पैठ, रसोद ।

पहुँचना ( कि० सं० ) आ जाना, दाखिल होना, उतरना आ रहना, जाना, फैलना, चलना, बह जाना, पगना, पास आना ।

पहुँचा ( पु० ) कलाई ।

पहुँची ( स्त्री० ) पहुँच में पहनने का गहना, कंकण, कँगना ।

पहुड़ना ( कि० अ० ) लेटना, सोना, आराम करना ।

पहुनई ( सं० प्रायुषता ) ( स्त्री० ) आदर, मान, मनुहार, अतिथिसेवा, मेहमानी ।

पहुप } ( सं० पुष्प ) ( पु० ) फूल, सुमन ।  
पुहप }  
पुहुप }

पहेना ( पु० ) बरात की बिदाई के दिन पूरी की जानेवाली एक रस्म ।

पहेली ( सं० प्रहेलि अथवा प्रहेलिका, प्र=वहुत, हेल् वा हेड्=अनादर करना ) ( स्त्री० ) दृष्टकूट, गूढ़ प्रश्न, श्लेष, बुझौवल ।

पन्हेड़ा ( पु० ) पानी के घड़े रखने का स्थान ।

पन्हेड़ी ( स्त्री० ) छोटा पन्हेड़ा ।

पाँक } ( सं० पक ) ( पु० ) कीचड़, दखल,  
पाका } काँदा ।

पाँगा ( पु० ) समुद्री जवण ।

पाँच ( सं० पच ) ( वि० ) दो और तीन ।

पाँचसात ( मुहा० ) बबराहट, ध्याकुलता, भ्रंशट, जंताल ।

पाँजर ( सं० पंजर ) ( पु० ) पसली, पार्श्व ।

पाँडे } ( सं० पंडित ) ( पु० ) ब्राह्मणों की पदवी,  
पाँडे } पाठक, अध्यापक, पढ़ानेवाला ।

पाँत } ( सं० पंक्ति ) ( स्त्री० ) क्रतार, श्रेणी, जकीर,  
पाँति } अवली, सिपाहियों का परा ।  
पाँती }

पाँतर ( पु० ) निर्जनस्थान, वीरान, उजाड़ ।

पाँयती ( सं० पादांत, पाद=पांव+अंत ) ( स्त्री० ) पायतल, बिछौने के पैर की ओर ।

पाँव ( सं० पाद आरं का० पा ) ( पु० ) पैर, पद, चरण, गोड़ ।

पाँव उठाना वा चलाना ( मुहा० ) झटझट चलना, जल्दी-जल्दी चलना ।

पाँव उतरना ( मुहा० ) पाँव का जोड़ टलना, पाँव गाँठ से उखड़ना ।

पाँव काँपना या धरधरना ( मुहा० ) किसी काम के करने से डरना ।

पाँव किसी का उखाड़ना ( मुहा० ) किसी को किसी काम पर जमने न देना ।

पाँव किसी का गले में डालना ( मुहा० ) किसी

मनुष्य को उसी की बातों से अथवा तर्क से दोषी अथवा अपराधी ठहराना ।

पाँव चल जाना (मुहा०) डगमगाना, अस्थिर होना ।

पाँव जमाना (मुहा०) दड़ होके ठहरना, मजबूती से ठहरना ।

पाँव ज़मीन पर न ठहरना (मुहा०) बहुत पसल होना, बहुत खुश होना, बहुत घमंड करना ।

पाँव डालना (मुहा०) किसी बड़े काम के करने के लिये तैयार होना और उसको शुरू करना ।

पाँव डिंगना (मुहा०) फिसलना, खिसकना, रपटना, किसी काम से हिम्मत हार जाना, विचलित होना ।

पाँवतले मलना (मुहा०) किसी को दुःख देना, ब्रिक्काना, सताना, पीड़ा देना, खराब करना ।

पाँव तोड़ना (मुहा०) किसी के मिलने से रुक रहना, किसी मनुष्य से मिलने के लिये कई बार जाना, थक जाना ।

पाँव दूबे आना (मुहा०) धीरे से आना ।

पाँव धो-धो पीना (मुहा०) बहुत मानना, किसी का बहुत विश्वास करना, बहुत खुशामद करना ।

पाँव निकालना (मुहा०) अपनी मर्यादा अथवा हद से बढ़ जाना, किसी बड़े काम के करने से फिरना, किसी अपराध के करने में मुखिया होना ।

पाँव पकड़ना (मुहा०) गरीबी अथवा अधीनी से विनती करना किसी को जाने से रोकना, अधीन होना, शरण लेना ।

पाँव पड़ना (मुहा०) विधियाना, गिड़गिड़ाना, गरीबी से विनती करना, खुशामद करना ।

पाँव पर पाँव रखना (मुहा०) दूसरे मनुष्य का चाल-चलन ग्रहण करना अथवा ले लेना, दूसरे की चाल चलना, ऐल फँस बैठना, आराम से बैठना, एक पैर को दूसरे पैर पर रखकर बैठना, बढ़ा तकाज़ा करना ।

पाँव पाँव } (मुहा०) पैदल, पियादे पाँव, पैरों ।  
पाँव पाँवों }

पाँव पीटना (मुहा०) अधीरता से पाँव पटकना, वृथा कोशिश करना ।

पाँव पूजना (मुहा०) किसी को बढ़ा जानना, किसी से बचना, अलग रहना, दूर रहना ।

पाँव फूँक फूँक रखना (मुहा०) हरएक काम को

सावधानी से करना, समझ कर काम करना ।

पाँव फैलाकर सोना (मुहा०) सुखी रहना, चैन से रहना, बचाव से रहना, बेखटके रहना, निडर रहना ।

पाँव फैलाना (मुहा०) हठ करना, अड़ना, मचलना ।

पाँव भर जाना (मुहा०) पाँव ठिडुरना, पाँव सों जाना ।

पाँव रगड़ना (मुहा०) वृथा और मूर्खता से भटकते फिरना, वृथा चकर खाना, मरने के दुःख में होना ।

पाँव लगना (मुहा०) प्रणाम करना, नमस्कार करना ।

पाँव से पाँव बाँधना (मुहा०) किसी के पास बराबर बैठे रहना अथवा किसी को खूब रखवाजी रखना ।

पाँव से पाँव भेड़ाना (मुहा०) पास होना ।

पाँव सोना (मुहा०) पाँव सुख हो जाना ।

पाँपोश (पु०) नारियल की जटा आदि की बनी हुई छोटी चटाईयाँ जो पोछने के काम में आती हैं ।

पाँवड़ा (पाँव) (पु०) वह कपड़ा अथवा शतरंजी या गलीचा आदि जिस पर बड़े आदमी पैर रखकर चलते हैं ।

पाँशव (पांशु=बाधन) (पु०) पाँगा नमक, लवण-विशेष ।

पांशु (पु०) मिट्टी, धूलि, रेंगु, रजोधर्म, हैज़, शुष्क गो-मय, सूखा गोबर गोबर का ढेर, पाँस, कपूर ।

पांशुका (स्त्री०) रेंगु, धूलि, रजस्वला स्त्री, बेरवा ।

पांशुपत्र (पु०) बथुप का शक ।

पांशुल (पु०) शिव (वि०) धूलियुक्त ।

पांशुला (स्त्री०) कुत्ता स्त्री, बेरवा, जैसे “अपांशुलानां धुरि कीर्त्तनीया” इति रघुः (अ=नहीं, पांशुला=कुलटा अर्थात् पतिव्रता) ।

पांसक (पांस्+अक, पस्=बाधा करना) (पु०) मिथ्या, कुरिस्त, झूठा, अधम, नाशक, दूषक, जैसे - कुल-पांसक ।

पांसु (पु०) धूलि, रज, रेंगु, पाँस, पाप, कलंक ।

पा (पु०) पैर, चरण, पद ।

पाई (सं० पाद चाँथा भाग) (स्त्री०) एक आने का चौथा भाग, एक पैसा, अँगरेज़ी पाई, एक आने का बारहवाँ हिस्सा ।

पाक (पच्=पकना वा पकाना) (पु०) रींभना, पचन, रसोई, पकवान, पकाई हुई दवाइ अथवा और कोई वस्तु, उल्लू, एक दैत्य का नाम, फलप्राप्ति, दशा.

सक्रेद बाल, (पा=पाना) बाळक, शिशु, छोटा लड़का ।

पाककर्ता ( पु० ) रसोहया, वावरची ।

पाकड़ ( म० परकी, पृच=मिलाना वा छूना ) ( पु० ) एक वृक्ष का नाम, पाकड़िया, एक प्रकार का गुल्लर-वृक्ष ।

पाकपुटी ( पु० ) स्थाली, चूल्हा, चूल्ही, पजावा, आवाँ, भट्ठा, पाकशाला ।

पाकरिपु ( पाक=एक अंगुर का नाम, रिपु=वैरा ) ( पु० ) ईद्र ।

पाकशाला ( पाक=पकाना, शाला=घर ) ( स्त्री० ) रसोई-घर, पाकस्थान, पकाने की जगह ।

पाकशासन ( पाक=एक गजम का नाम, शास=दण्ड देना ) ( पु० ) ईद्र ।

पाका ( पु० ) फोड़ा, गलका ।

पाकु ( पु० ) पकानेवाला, रसोईवर्दार ।

पालिक ( वि० ) सहायक, हिमायती, मदद देनेवाला, पखवारे का ।

पाख ( पु० ) पखारा, पज, भोज, दीवार ।

पाखंड ( पा=पाना वेदों का धर्म, खंड=खंडित करना ) ( पु० ) दंभ, डिभ, पाखंड, छल ।

पाखंडी ( वि० ) दंभा, छुंछा, मक्कार ।

पाखर ( म० प्रखर ) ( पु० ) पोंडे हाथी का बचाने के लिये बस्तर, झूल ।

पाखा ( स्त्री० ) छोर, कोना ।

पाग ( स्त्री० ) पगड़ी ।

पागल ( पु० ) पगला, मिरा, उन्मत्त, वावला, बीराहा, मूर्ख ।

पागा ( पु० ) धोती का कुंड ।

पागुर ( पु० ) जुगली, उगाल ।

पागुराना ( कि० म० ) जुगली करना, पगुराना ।

पात्रक, पाचुक ( पात्र=पकाना ) ( पु० ) पकानेवाली वस्तु, जैसे चूर्ण आदि, आग, रसोहया ।

पाचिका ( स्त्री० ) पकानेवाली ।

पाछुना ( कि० म० ) चीरना, टीका देना, चीरा लगाना ।

पाछे { ( म० पश्चात् ) ( कि० वि० ) पीछे, इसके बाद, पाछे { इसके अनंतर, पीठ पीछे, पर ।

१. "पालनाम चार्थाधर्मः पाशब्देन निगद्यते ।

ते सर्वव्यन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना" ॥ १ ॥

( इति पञ्चम्याख्यायाम् )

पांचजन्य ( पंचजन=देव्य मे हुया अर्थात् बना ) ( पु० ) विष्णु का शंख ।

पांचाल ( पु० ) देश का नाम ।

पांचाली ( स्त्री० ) द्रौपदी ।

पाट ( पु० ) कपड़े की अथवा नदी की चौड़ाई, सन, सनई ।

पाट ( म० पट, पट=घेरना ) ( पु० ) रेशम, चक्री का पत्थर, सिंहासन, जैसे—राजपाट, राजा का सिंहासन, चौकी, तख्ता, पटरा, पाटा ।

पाटना ( कि० म० ) छाना, ठकना, भरना, भरपूर करना, रेल-पेल करना, सँचना ।

पाटवर ( म० पटाम्बर, पट=रेशम, यवम=कपड़ा ) ( पु० ) रेशमी कपड़ा, रेशम का कपड़ा ।

पाटरानी ( पाट=गनी ) ( स्त्री० ) पटरानी, महारानी ।

पाटल ( पट=जाना दा चमकना ) ( पु० ) एक पेड़ का नाम, गुलाबी रंग, श्वेतरक्तवर्ण, लाज-सक्रेद रंग, गुलाब का फूल, गुलाबी रंग ।

पाटला ( स्त्री० ) दुर्गा, पार्वती ।

पाटलिपुत्र ( पु० ) पटना-नगर ।

पाटव ( पट=चतुर ) ( पु० ) चतुराई, प्रवीणता, होशियारी ( वि० ) होशियार, चतुर, पटु ।

पाटा ( म० पट ) ( पु० ) पटरा, तख्ता, धोखी के कपड़ा धोने का तख्ता ।

पाटिका ( स्त्री० ) एक दिन की मजदूरी, पौदा-विशेष, छान, छिलका ।

पाटा ( म० पटिका, पट=जाना ) ( स्त्री० ) खाट की पटिया, एक तरह की चटाई, तख्ती जिस पर लड़के लिखना सीखते हैं, बालों की पट्टी ।

पाटीर ( पु० ) चंदन, मलय, एक प्रकार का चंदन ।

पाठ ( पट=पढ़ना ) ( पु० ) पढ़ना, सबक अध्याय ।

पाठक ( पट=पढ़ना वा पढ़ाना ) ( पु० ) शिक्षक, अध्यापक, पढ़ानेवाला, मुकुल्लिम, मुद्दरिस, पंडित, पढ़ने-वाला, विद्यार्थी, शिष्य, ब्राह्मणों की पदवी ।

पाठन ( पु० ) पढ़ना वा पढ़ाना ।

पाठशाला ( पाठ=पढ़ना, शाला=जगह ) ( स्त्री० ) पढ़ाने की जगह, चटशाळा, स्कूल, कालिज, मर्सा ।

पाठा ( पु० ) जवान जानवर, मल्ल, थोढ़ा, जवान, मोटा, नगड़ा ।



पाठित (वि०) पढ़ाया गया, पढ़ा हुआ ।

पाठी (पु०) पढ़ानेवाला ।

पाठीन (पठि=पठ, नम=भुक्ता) (पु०) एक प्रकार की मछली ।

पात्र्य (वि०) पढ़ने योग्य ।

पाढ़ (स्त्री०) गरगज, डौना, मचान ।

पाड़ना (स० पातन, पत्=गिरना) (क्रि० स०) गिराना ।

मारना, पूरा करना, काजल इकट्ठा करना ।

पाड़ा (पु०) भैसे का बच्चा, टीला ।

पाड़ा (सं० पृषत्, पृष=सींचना) (पु०) एक जंगली जानवर का नाम ।

पाढी (स्त्री०) सूत की लच्छी, नाव-विशेष ।

पाण (पु०) क्रयविक्रय व्यवहार, स्तुति, तारीफ, बढ़ाई, हाथ, पान ।

पाणि (पण्=लेनदेन करना) (पु०) हाथ, हस्त, कर, दस्त ।

पाणिग्रहण (पाणि=हाथ, ग्रह=पकड़ना) (पु०) व्याह, विवाह, शादी, हाथ पकड़ना ।

पाणिग्र (पाणि=हाथ, हन्=मारना) (पु०) तबला या ढोलक या मृदंग का बजानेवाला ।

पाणिनि (पणनं पणः, ततः अस्तीति पर्णा पणिनो गोत्रापत्य पुमान् पाणिनिः अर्थात् पणियों से उत्पन्न हुआ अथवा पणि का शिष्य, पण्=स्तुति करना) (पु०) अष्टाध्यायी व्याकरण आदि का बनानेवाला मुनि ।

पाणिनीय (पाणिनि) (वि०) पाणिनि ऋषि के बनाए ग्रन्थ (व्याकरण, शास्त्र आदि) ।

पाणिपीड़न (पु०) विवाह, व्याह ।

पांडर (पडि=जाना वा मिलना) (वि०) पीला और धौला, सीठा, फीका (पु०) कुंदफूल, श्वेतपुष्प ।

पांडव (पांडु=युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का बाप) (पु०) पांडु के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ।

पांडित्य (पंडित) (पु०) पंडिताई, विद्या, विद्वत्ता ।

पांडु (पडि=जाना) (पु०) दिल्ली का एक पुराना राजा और युधिष्ठिर आदि पाँचों पांडवों का बाप, धौला और पीला रंग, श्वेत रंग, एक फूल और पीढ़े का नाम (वि०) पीला और धौला, सीठा, फीका ।

पात (सं० पत्र) (पु०) पत्ता, कान में पहनने का एक

तरह का गहना, गिरना, राहु, लक्षा पात आदि का एक योग ।

पातक (पत्=गिरना) (पु०) पाप, दोष, अपराध, गुनाह ।

पातकी (पातक) (वि०) पापी, दोषी, अपराधी, गुनहगार ।

पातंजलि (पतंजलि) (पु०) पतंजलि ऋषि का बनाया हुआ योगशास्त्र आदि ।

पातर (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, कन्नौरी, गणिका (वि०) पतला, टुबला ।

पाता (पा=रक्षण करना) (पु०) रत्नक, पालक ।

पाताल (पा=गिरना, तला पापी गिरने जाते हैं, अथवा पात=गिरना, आलय=स्थान) (पु०) नीचे का लोक, नागलोक, नरक, पाताल ७ हैं (१ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ तलातल, ५ महातल, ६ रमातल, ७ पाताल) ।

पाति (पु०) माता, पिता, गुरु, पति, सूर्य, चंद्र विश्व ।

पातित (वि०) अधःक्षिप्त, नीचे गिराया गया ।

पातिव्रत्य (पु०) पातिव्रत धर्म, पतिव्रता का लक्षण ।

पाती (सं० पत्नी, पत्नी) (स्त्री०) चिट्ठी (सं० पत्र) पत्ता ।

पात्र (पा=पचाना वा पीना जियंस) (पु०) बरतन, वासन, आभार, प्याला, कटोरा, दान देने योग्य विद्यावान् ब्राह्मण (वि०) उचित, योग्य ।

पात्रता (स्त्री०) (पात्र=योग्य) योग्यता, लिखाकृत ।

पात्रत्व (पु०) (पात्र=योग्य) योग्यता, लिखाकृत ।

पाथ { (पा=पीना) (पु०) पानी, तोय, जल, अनिल

पाथना (क्रि० म०) थापना, टिकिया बनाना, थापना ।

पाथर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फलाना) (पु०) पत्थर, पापाण, शिला ।

पाथ्य (पथ=गस्ता) (पु०) रास्ते का खाना, रास्ते की खुराक, राहखर्च ।

पाथोज (पाथस्=पानी, जन्=पेदा होना) (पु०) कमल, कँवल, पद्म ।

पाथोद् (पाथस्=पानी, दा=देना) (पु०) बादल, मेघ, अन्न ।

पाथोधर ( पाथम्=पानी, धर=रखना ) ( पु० ) बादल, | पान ( पा=पीना ) ( पु० ) पीना ।

मेघ ।

पाथोधि ( पाथम्=पानी, धा=रखना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।

पाथोनिधि ( पाथम्=पानी, निधि=खजाना ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।

पाद् ( पद=जाना जिसमें चलते हैं ) ( पु० ) पैर, पैर, चरण, चौथा भाग, चतुर्थी, वृत्त की जड़ ।

पाद् ( में० पद, पद=नीच की तरफ हवा छोड़ना ) ( पु० ) फुसकी, दुसकी, नीचे की हवा, अपशब्द, वायु-सङ्गना, गुञ्ज ।

पादकटक ( पु० ) घेंघरू, पैर का कड़ा ।

पादकुच्छ ( पु० ) एक प्रायश्चित्त व्रत जो चार दिन का होता है ।

पाद्ग्रहण ( पाद=पैर, ग्रहण=पकड़ना ) ( पु० ) चरण-स्पर्श, पैर छूना ।

पादचारी } ( पाद=पैर, चर=चलना ) ( पु० ) पैदल,  
पादचारिणी } पैरों से चलनेवाला वा चलनेवाली ।

पादज ( पु० ) शूद्र ।

पादत्राण ( पाद=पैर, त्रा=रक्षा करना ) ( पु० ) जूता, खड़ाऊँ, पैर के संजो ।

पादधारिणी ( स्त्री० ) पैकड़ा, रिक़ाब घोड़े की ।

पादप ( पाद=पैर वा जड़, पा=पीना जो पैर अर्थात् जड़ में पानी खींचते हैं ) ( पु० ) वृक्ष, पेड़ । पाद=पाव, पा=वचाना ) पादुका, पादपीठ ।

पादप्रक्षालन ( पाद=पैर, प्रक्षालन=धोना ) ( पु० ) पाँव धोना ।

पादप्रहार ( पाद=पैर, प्रहार=चोट ) ( पु० ) लात की मार ।

पादसंवाहन ( पु० ) पैर दबाना, पैचप्पी करना, गोड़ दबाया ।

पादार्पण ( पु० ) पूज्यजनों को पैर धोने को जख देना ।

पादुका ( पाद=पैर ) ( स्त्री० ) खड़ाऊँ, पाँवड़ी, जूता ।

पादोदक ( पाद=पैर, उदक=पानी ) ( पु० ) देवता अथवा ब्राह्मण के पाँव धोने का पानी, पाय ।

पाय ( पाद=पाव ) ( पु० ) पाँव धोने का पानी ।

पाथा ( में० पाथ्याय ) ( पु० ) शिक्षक, गुरु, उपाध्याय ।

पान ( में० पान ) ( पु० ) पीना, नांजल ।

पानपात्र ( पान=पीना, पात्र=बरतन ) ( पु० ) प्याला, गिलास ।

पाना } ( में० प्रापण, प्र=बहुत, आप=पाना ) ( कि०स० )  
पावना } मिलना, लेना, इकट्ठा करना, हासिल करना,  
वाक़ी होना, भोग करना, बिलसना, भुगतना,  
सहना, पकड़ना, धरना, पहुँचना, पास आना ।

पानासल ( वि० ) मद्यपी, शराबी ।

पानाहार ( पान+आहार ) ( पु० ) पीना, खाना, खुर्द-नोश, अन्नजल ।

पानी ( में० पानीय, पा=पीना ) ( पु० ) जल, नौर, बीज, वीर्य, धातु, चमक, भड़क, यश, कीर्ति, मान, मर्यादा, नाम ।

पानी करना ( मुहा० ) लजाना, चपाना, लजित करना, सहज करना, सुगम करना, आसान करना ।

पानी का बुलबुला ( मुहा० ) अस्थिर, चंचल, यह बोलचाल अस्थिरता प्रकट करने के लिये बोला जाता है ।

पानी देना ( मुहा० ) पितरों को जल देना, तर्पण करना ।

पानी न माँगना ( मुहा० ) तलवार आदि के एक ही वार से तुरंत मर जाना ।

पानी पड़ना ( मुहा० ) मेह बरसना, पानी बरसना, शमिंदा होना ।

पानी पी पी कोसना ( मुहा० ) बहुत सरापना, बद-दुस्सा देना ।

पानी भरना ( मुहा० ) नीचा होना, तुच्छ होना, निचाई को मान लेना, शरमा जाना, वश होना ।

पानी मरना ( मुहा० ) मूख जाना, छजाना, लाज लगना, किसी बात का इशारा करना ।

पानी में आग लगाना ( मुहा० ) जो अगड़ा मिट गया हो उसको फिर उठाना, असंभव को संभव करना ।

पानी से पतला करना ( मुहा० ) छजित करना, लजाना, चपाना, तुच्छ करना, हज़ोर करना ।

पान्थ ( पवित्र=रास्ता, पथ=जाना ) ( पु० ) पथिक, बटोही, मार्ग, मुसाफिर, राह चलनेवाला, राही ।

पाप ( पा=वचाना अर्थात् जिससे अपने को बचाना ) ( पु० ) अपराध, दोष, पानक, बुराई, गुनाह ।

पापजनक ( जन्=पैदा करना ) ( वि० ) पापीपादक,  
पापी, गुनहगार ।

पापड़ ( सं० पर्यट, पर्य=जाना ) ( पु० ) उबड़ या मूँग  
की पतली रोटी-सी चीज़ ।

पापड़ बेलना ( मुहा० ) बहुत मिहमत करना अथवा  
दुःख सहना ।

पापभाक् ( पाप+भाक्, भज्=सेवा ) ( वि० ) पाप करने-  
वाला, अपराधी, गुनहगार ।

पापरूप ( पाप=अपराध, रूप=सुरत ) ( वि० ) पाप की  
मूर्ति, बड़ा पापी, दुष्ट, आसी, गुनहगार ।

पापात्मा ( पाप+आत्मा ) ( वि० ) जिसकी आत्मा पाप-  
युक्त हो, जिसका मन पाप में लगा रहे, पापी, दुष्ट,  
कुकर्मी ।

पापिन } ( पाप ) ( वि० ) दुष्टा स्त्री, दूरी स्त्री, वह  
पापिनी } स्त्री जिसका मन पाप में लगा रहे, अप-  
राधिनी ।

पापिष्ठ ( पाप ) ( वि० ) पापी, पापात्मा ।

पापी ( पाप ) ( वि० ) अपराधी, दुष्ट, पापात्मा,  
कुकर्मी, पापिष्ठ ।

पामर [ पा=नीनों वेद का धर्म ( पा, में धातु है पा=बचाना )  
आर मृ=नष्ट होना जिससे वैदिक धर्म नष्ट होता है या  
पामर खजली अर्थात् दुःख, रा=देना ] ( वि० ) नीच,  
अधम, दुष्ट मूढ़ ।

पामा ( पा=बचना जिसमें ) ( स्त्री० ) खुजली, खाज, दाद ।

पामारि ( पामा=खजली, अरि=वैरी ) ( पु० ) गंधक  
जिसके लगाने से खुजली मिट जाती है, पमार के बीज ।

पायक ( पु० ) पदाति, पैदल, सेवक ।

पायक ( पु० ) मर्च, मचान ।

पायँती ( सं० पादांत, पाद+अंत ) ( स्त्री० ) खाट के पैर  
की ओर, पायतल, पैता, पैताना ।

पायल ( सं० पाद=पाँव ) ( स्त्री० ) पैरों में पहनने का  
गहना, पैरी, पायज़ेब, बाँस की सीढ़ी ।

पायस ( सं० पयस्=दूध ) ( पु० ) खीर, जावर ।

पाया ( सं० पाद, अथवा फा० पाया ) ( पु० ) खाट या  
मेज़ अथवा कुरसी आदि का पावा ।

पायिक } ( सं० पादिक या पदातिक फा० पैक ) ( पु० )  
पायक } दूत, पियादा, नट, ध्वजा, पैदल ।  
पाहक }

पायी ( पा=पीना ) ( पु० ) पोनेवाला ।

पार ( पृ वा पार=पूरा होना ) ( पु० ) नदी अथवा समुद्र  
का परला तीर, दूसरी ओर, समाप्ति, पूर्णता, शेप,  
नित्य, अंत ( कि० वि० ) आरपार, वारपार, उस  
ओर, उससे परे, उस तीर ।

पारक ( पार+अक ) ( पु० ) कर्मसमाप्तिकर्ता, उतरने-  
वाला, पार जानेवाला ।

पार करना ( मुहा० ) पार उतरना, नाँघना, पूरा  
करना, कोई काम पार उतारना, निबाहना, छेदना,  
बेधना, फोड़ना ।

पारख ( पु० ) परीक्षक, निरीक्षक, परखेया ।

पारखी ( ग० परीक्षक ) ( पु० ) परखनेवाला, पर खेया,  
जौहरी ।

पारग ( पार=अंत, गम्=जाना ) ( वि० ) समर्थ, पारगंत ।

पारण ( पार=काम पूरा होना ) ( पु० ) व्रत के दूसरे दिन  
भोजन करना, पृ=भरना ) मेघ, बादल ।

पारतंत्य ( पु० ) पराधीनता, परतंत्रता ।

पारद ( पृ=भरना या पूरा करना ) ( पु० ) पारा, ( पार=  
पार करना, दा=देना ) ( वि० ) पार करनेवाला, मोक्ष  
करनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

पारदर्शी ( वि० ) निपुण, चतुर, होशियार, दक्ष ।

पारदारिक ( वि० ) पराई स्त्री-गमन करनेवाला, पर-  
स्त्रीगामी ।

पारना ( सं० पारण ) ( पु० ) व्रत के दूसरे दिन भोजन  
करना, ( कि० सं० ) निवेदना, पूरा करना ।

पारभूत ( पार=अंत, भृ=भरना ) ( पु० ) दान, समर्पण ।

पारमार्थिक ( वि० ) श्रेष्ठ, योग्य, परोपकारी ।

पारलौकिक ( वि० ) परलोक-संबंधी, परलोकविषयक ।

पारशव ( पु० ) ब्राह्मण से शत्रु की कन्या में पैदा हुआ,  
परस्त्री-पुत्र, परशुधारी ।

पारस ( सं० स्पर्शमणि, स्पर्श=छूना, मणि=रतन ) ( पु० )  
ऐसा पत्थर जिसको कहते हैं कि लोहे के छूने से  
लोहे का सोना हो जाता है ।

पारस ( सं० पारग, अथवा पारसीक ) ( पु० ) कारग  
देश, ईरान ।

पारसनाथ ( सं० पार्वनाथ ) ( पु० ) जैनियों का  
तेईसवाँ जिन ।

पारसी ( सं० पारसी, अथवा पारसीक ) ( पु० ) पारस

देश का रहनेवाला, ईरानी, ज़रदुश्त का मत मानने-वाला ( स्त्री० ) फ़ारसी बोली, तुर्की या अरबी बोली, तुर्क, चलेच्छ ।

पारा ( सं० पार या पारद ) ( पु० ) एक प्रकार की धातु ।

पारायण ( पार=पूर्णता, अर्थ=जाना ) ( पु० ) पूर्णता, समाप्ति, पुराण का पाठ, सात दिन श्रीमद्भागवत का पाठ सुनाना ।

पारावत ( पु० ) कपोत, कबूतर ।

पारावार ( पार=उम पार, अवार=इम पार ) ( पु० ) समुद्र, नदी के दोनों तीर, वारापार, वारपार, इस-उस पार, उह, सौंवा ।

पाराशर ( पराशर ) ( पु० ) पराशर ऋषि का बेटा वेदव्यास, पराशर के बनाए हुए ग्रंथ, जैसे- पराशर-स्मृति, भिष्मसूत्र आदि ।

पाराशर्य ( पु० ) पराशर का पुत्र वेदव्यास ।

पारिजात ( पारि=पामुद्र, जत्=पेदा होना ) ( पु० ) देवताओं का वृक्ष, तृषा, देवतरु, सुरद्रुम, मूँगा ।

पारिणाष्ट ( पारि=बहुत, नष्ट=गन्ध करना ) ( पु० ) संबंध, बंधन, निश्चिन्ता, विराट्परा, निबंधनता, चौड़ाई ।

पारितस्थ ( स्त्री० ) बेटी, टिकुली, ( पु० ) तिलक, यथार्थ ।

पारितोषिक ( पारि=बहुत, तुष=प्रमथ होना, संतुष्ट होना ) ( पु० ) इनाम, दान, भेंट, प्रतिकूल, दायज, देजा, दक्षिणा ।

पारिपाथिक ( पु० ) चोर, टग, बधिक, लुटेरा ।

पारिद्र ( पु० ) सिंह, अजगर, सर्प ।

पारिपात्र ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जो विष्णु-पारियात्र चक्र की श्रेणी का पश्चिमी भाग है और मालवा की सीढ़ पर है, चौतुक, दहेज ।

पारिपार्श्वक ( पु० ) नाटक का वह पात्र जो सूत्रधार की सहायता करता है ।

पारिभद्र ( पु० ) पारिजात, निंब का पेड़, सालू का पेड़ ।

पारिभाष्य ( पु० ) प्रतिभू, ज्ञमानत ।

पारिभाषिक ( पु० ) सांकेतिक, शब्द-विशेष जो विषय के विशेष अर्थ के द्योतक हों ।

पारिमाण्डल्य ( पु० ) अत्यंत-सूक्ष्म परिमाण ।

पारिषद् ( पु० ) सेवक, सभासद् ।

पारी ( पू=भरना ) ( स्त्री० ) पानी की, ठिलिया बारी, अवसर, उसरी ।

पारुष्य ( पु० ) पराई निंदा, परद्रोह, कटुक्ति ।

पार्थ ( पृथा=कुंती ) ( पु० ) कुंती के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

पार्थिव ( पृथ्वी ) ( वि० ) पृथ्वी का, ( पु० ) राजा, शिव, पार्थिवी, ( स्त्री० ) भीता, जानकी ।

पार्यण ( पर्व+अन, पर्व=पूर्ण करना ) ( पु० ) पर्व अमा-वस आदि में जो हो, उत्सव ।

पार्वती ( पर्वत=पहाड़ ) ( स्त्री० ) हिमालय की बेटी, शिवरानी, दुर्गा ।

पार्श्व ( स्पृश=छूना, या पृश=पसली ) ( पु० ) पाँजर, पाखा, बगल के नीचे का भाग, पसलियों का समूह ( वि० ) पास, नगीच, नज़दीक, समीप ।

पार्श्वभाग ( पु० ) पसली ।

पार्श्ववर्त्ती ( पार्श्व=पास, वर्त्ती=होने या रहनेवाला, वृत्=होना या रहना ) ( वि० ) पास रहनेवाला, निकटस्थ, समीपवर्त्ती, पास का, करीबी ।

पार्श्वशूल ( पु० ) पसली का दर्द ।

पाल ( पु० ) नाव का बादवान, छोटा तंबू, घास और पत्ते आदि का तह जिसमें कच्चे आम पकाते हैं, पाखाना ।

पालक ( पाल=पालना ) ( पु० ) पालनेवाला, बचानेवाला, रक्षक, मुहाकिज़ ।

पालक ( सं० पालक, पाल=बचाना और अंक=जाना ) ( पु० ) एक तरह का साग, ( सं० पल्यंक ) पजैंग ।

पालकता ( स्त्री० ) परवरिश, दयालुता ।

पालकी ( सं० पयंक, या पल्यंक ) ( स्त्री० ) एक प्रकार की सवारी, चौपाला, डोली ।

पालन ( पाल=पालना ) ( पु० ) पालना, पोषण, रक्षा, बचाव, बचाना ।

पालना ( सं० पालन ) ( कि० सं० ) पोषना, बचाना, रक्षा करना, ( पु० ) हिंडोला, झूलना ।

पालनीय ( पाल+घनीय ) ( वि० ) पालने योग्य, रक्षा योग्य ।

पाला ( सं० प्राण्य, प्र=बहुत, आ=चारों ओर से, ली=पिघलना ) ( पु० ) हिम, बर्फ़, ठार, चुषार ( सं० पालन ) भरोसा, विश्वास, अमानत बचाना, कबूटरी के खेल

में बीच में बनाई हुई रेत की मेढ़, ऊड़वेरी के पसे ।

पालागन ( सं० पादलग्न, पाद=पैर, लग्न=लगना ) ( पु० )

पाँव का छूना, प्रणाम करना ।

पालाश ( वि० ) पलाशवृक्ष-संबंधी, हरे रंग का ।

पालि ( पाल्=बचाना ) ( स्त्री० ) मागधी, प्राकृतभाषा, मगधदेश की मातृभाषा ।

पालिक ( वि० ) रक्षा करनेवाला, पालनेवाला ।

पालित पाल्=पालना ( वि० ) रक्षित, बचाया हुआ, पाखा हुआ ।

पाली ( स्त्री० ) पंक्ति, कोण, प्रशंसा, कल्पित भोजन, प्रांत, कर्णपत्र, कर्णकूल, सेतु, चिह्न, अश्वों की धार, अश्रु, क्रोध, गोद, उत्संग, कनियाँ ।

पाले ( सं० पालन=बचाव ) ( अव्य० ) अधीन, बचान में, हाथ में, वश में ।

पाले पड़ना ( मुहा० ) दूसरे के वश में आ जाना, जैसे—  
“आज करउँ खल काल हवाले;  
परेउ कठिन रावण के पाले ।” ( रामायण ) ।

पाव ( सं० पाद ) ( पु० ) चौथाई, चौथा भाग, चौथ, चतुर्थीश ।

पावक ( पू=पवित्र करना ) ( पु० ) आग, अग्नि ( वि० ) पवित्र ।

पावन ( पू=पवित्र करना ) ( वि० ) पवित्र, पवित्र करने-वाला, स्वच्छ ( पु० ) पानी, आग, गोबर, कुशा, घृत, स्त्री, गंगा, गौर ।

पावली ( पाव ) ( पु० ) चार आना, मुद्रा अर्थात् सिके का चौथा भाग ।

पावस ( सं० प्रावृष्, प्रा=बहुत, वृष्=बरसना ) ( पु० ) वर्षा-काल, वर्षा-अनु, बरसात ।

पाश ( पाश=बाँधना जिमसे ) ( स्त्री० ) फंदा, फाँसी, जानवरों के बाँधने की डोरी ।

पाशक ( पु० ) पाँसा, अच, जल्लाद, फाँसी ।

पाशा } ( सं० पाशक, पशु=छूना या जाना ) ( पु० )  
पासा } चौपड़ खेलने की एक छः पहलू चीज़, अच ।  
पाशित ( वि० ) बंद, बाँधा हुआ ।

पाशी ( पु० ) पाशधर, जल्लाद, वरुण, व्याघ्र, यमराज ।

पाशुपत ( पु० ) शैव, शिव के उपासक ।

पाषंड ( सं० पाषण्ड्य, पाषंड ) ( पु० ) कपट, छल, झिद्र, क्रूरव ।

पाषंड } ( पा, वेद का धर्म, प=बचाना और षंड=निष्कल  
पाखंड } करना, या खंड=खंडन करना, अर्थात् वेद के धर्म  
पाखंडी } को निष्कल करनेवाला या खंडन करनेवाला )  
( वि० ) नास्तिक, धर्म को न माननेवाला,  
कपटी, छली, ठग, धोबी ।

पाषाण ( पिष्=चूर करना ) ( पु० ) पत्थर ।

पाषाणदारण ( दृ=फाड़ना ) ( पु० ) पत्थर टाँकने की टाँही, वज्र ।

पास ( सं० पाश ) ( स्त्री० ) फाँसी, फंदा ।

पास ( सं० पार्श्व ) ( अव्य० ) नंगाच, समीप, निकट ।

पासा ( पु० ) चौपड़, जुआ का खेल-विशेष ।

पासी ( सं० पाश ) ( स्त्री० ) फंदा, फाँसी, रस्सी जिससे घोड़े के पैर बाँधे जाते हैं सं० पाशी ) ( पु० ) बहेलिया, चिकीमार ।

पासी ( सं० पार्सी पाश ) ( पु० ) एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा ताड़ी बेचने का है और जब वे ताड़ पर चढ़ते हैं तब अपने पैरों के चारों तरफ रस्सी बाँधते हैं ।

पाहन } ( सं० पाषाण ) ( पु० ) पत्थर, पाथर, ढेला ।  
पाहान }

पाहरु ( पु० ) पहरुआ, चौकीदार ।

पाहि ( पु० ) ( पा=बचाना ) ( कि० म० ) बचाओ, रक्षा करो । जैसे—“शूलेन पाहिनीं देवि” अर्थ—अहो देवि ! हमारी त्रिशूल से रक्षा करो ।

पाही ( स्त्री० ) दूसरे गाँव में कारनकारी करना, पराएँ गाँव में खेती करना ।

पाहीं ( अव्य० ) पास, निकट, समीप ।

पाहुन } ( सं० प्रावृण, प्र=बहुत, आ=चारों ओर, वृण्=  
पाहुना } फिरना ) ( पु० ) मेहमान, अतिथि ।

पाहुँ ( पु० ) जनता, सर्वसाधारण ।

पिउ } ( सं० प्रिय ) ( वि० ) प्यारा प्रियतम ।

पिऊ } ( पु० ) पति, स्वामी भर्ता ।

पिक ( पि ऐसा शब्द, के=बोलना या अपि बार बार, के=शब्द करना, यहाँ भौगुरि के मत में अपि के ‘अ’ का लोप हो गया है ) ( स्त्री० ) कोयल, कोकिल ।

पिकदान ( पु० ) पीकदान, थूकने का बर्तन ।

१. “बहिमागुरिल्लोपमवापोरपसर्गयोः ।

आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा ” ॥ १ ॥

पिकवयनी } ( सं० पिक=कोयल, वाणी=बोली ) ( वि० )  
पिकवयनी } जिस स्त्री की कोयल-सी बोली हो, मीठी  
बात बोलनेवाली स्त्री ।

पिप्रलना ( सं० प्रगलन, प्र=बहुत, गल=टपकना ) ( कि०  
अ० ) गलना, टिघलना, पानी होना ।

पिंग ( पिजि=रंगना ) ( वि० ) पीला, कपिल, पीतवर्ण ।

पिंगल ( पिंग=पीला रंग, ला=लाना ) ( वि० ) पीला,  
पीत-वर्ण, दीया की लौ, सारंग ( पु० ) छंदशास्त्र  
का कर्ता, छंद-ग्रंथ, कपिलवर्ण, चिमगादर, सूर्य ।

पिंगुरा ( पु० ) हिंडोला, झूला ।

पिचकारी ( स्त्री० ) पिचका, दमकला ।

पिचंडिल ( वि० ) नोदवाला, स्थूल, बड़े पेटवाला ।

पिचु ( पु० ) रुई, कपास, कर्प, एक असुर का नाम,  
शम्भु-भेद, कुष्ठभेद ।

पिचुमंद ( पिचु=कुष्ठ, मंद=जड़ करना ) ( पु० ) नीबूवृक्ष ।

पिचु ( पु० ) पूँछ, मोरपंख, मुकुट, मोर, हिंसा,  
कपासवृक्ष, केला, सेमर, भान का माँड़, घोड़े के  
पंर का रोग ।

पिछलना ( कि० अ० ) फिपलना, खिसलना ।

पिछलपाई ( स्त्री० ) चुईख, भूतनी ।

पिछुला ( पांदा ) ( वि० ) पीछे का, पिछाई का, नया ।

पिछुवाड़ा ( पु० ) } ( पांदा ) पीछे का भाग, पीछा ।  
पिछुवाड़ी ( स्त्री० ) }

पिछेत ( पांदा ) ( पु० ) घर का पिछुला भाग ।

पिछौरा ( पु० ) } दोहर, चहर, दुपट्टा, ओढ़नी ।  
पिछोरी ( स्त्री० ) }

पिंजन ( पु० ) मारण, रुई का ओटना, रुई धुनना,  
धनुही ।

पिंजर ( पिजि=शब्द करना, या रहना जिसमें पखेरू शब्द  
रहने हैं या रहते हैं, या पिजि=रंगना ) ( पु० ) पिंजरा,  
पखेरुओं का घर, पीला रंग, जाल और पीला  
मिला हुआ रंग, भूरा रंग ।

पिंजरा ( सं० पिंजर ) ( पु० ) पखेरुओं के रहने का काठ  
का घर ।

पिंजरा होना ( मुहा० ) दुबला होना ।

पिंजल ( वि० ) अनिश्चयन, मिला हुआ ( पु० ) बिजा-  
यड, कंकण, जोशान, बिष्टर अर्थात् कुशा, ध्याकुल  
सेना ।

पिंजियारा ( पींजना ) ( पु० ) धुनियाँ, रुई पींजनेवाला,  
रुई धुननेवाला ।

पिंजूल ( पु० ) वस्तिका, बत्ती, मशाख ।

पिंजूय ( पु० ) मोम, संदूक, पिटारा, पिटारी, खोम्बी,  
खड़ी ।

पिट ( पु० ) संदूक, टोकरी, पिटारा, शोर, हल्ला,  
फोड़ा ।

पिटना ( सं० पिट्=मारना ) ( कि० अ० ) मार खाना ।

पिटारा ( सं० पेटा या पेटिका, पिट्=इकट्टा करना )  
( पु० ) टोकरी, मंजूपा, कपड़े रखने का झोखा ।

पिटारी ( सं० पिटक, पिट्=इकट्टा करना ) ( स्त्री० ) कपड़े  
रखने की चमड़े की मंजूपा, छोटा पिटारा ।

पिटेशन ( स्त्री० ) अर्जी ।

पिंड ( पिंड्=इकट्टा करना ) ( पु० ) पितरों के लिये अन्न  
आदि का पिंडा, देह, शरीर, गोल वस्तु, गोला ।

पिंड छुड़ाना ( मुहा० ) बचना, भागना, पीछा छुड़ाना,  
टलना ।

पिंडली ( सं० पिंड ) ( स्त्री० ) पिंडरी, फिलिजी, टेंगड़ी ।

पिंडा ( सं० पिंड ) ( पु० ) शरीर, देह, मिट्टी आदि का  
देला, डोरी का गोला अथवा गेंदा, पितरों के लिये  
अन्न आदि का पिंडा ।

पिंडाग ( सं० पिंड, अन्न का पिंडा, और का० आर, लाने-  
वाला ) ( पु० ) लुटेरों की एक जात, लुटेरा, ठग,  
डकैत ।

पिंडित ( वि० ) राशिकृत, इकट्ठा किया हुआ ।

पिंडूक ( पु० ) पिंडकी, पिंडुकी, पेदुकी नामक पक्षी ।

पिंडोल ( पु० ) लुई, खड़ियामिट्टी ।

पिण्याक ( पु० ) खल, होंग, पीतल की बीमारी ।

पितर ( सं० पितृ ) ( पु० ) पुरुष, पुर्खा, पूर्वपुरुष,  
पूर्वजलोग ।

पितराई ( स्त्री० ) कुटुंब, जंगाल, पीतल का जंग ।

पितरौ ( पु० ) मा-बाप, माता-पिता ।

पितलाना ( पीतल ) ( कि० अ० ) ताँबे-पीतल के बर-  
तन में रखने से सट्टी चीज़ का ग़िराई जाना ।

पिता ( पा=पचाना ) ( पु० ) रक्षक, बाप ।

पितामह ( पिता ) ( पु० ) दादा, आज्ञा, ब्रह्मा ।

पितामही ( स्त्री० ) दादी ।

पितृक ( वि० ) पितृ-संबंधी ।

पितृकर्म } ( पितृ=पितर, कर्म या कार्य=काम ) ( पु० )  
पितृकार्य } आद्ध, पिंडदान आदि ।

पितृकानन ( पु० ) पितृवन, रमशान, गयाक्षेत्र,  
पितृलोक ।

पितृक्रिया ( स्त्री० ) अंशेष्टि क्रिया, आद्ध ।

पितृगण ( पु० ) पितृसमूह, प्रजापतिपुत्राः, यथा मरीचि,  
अत्रि, भृगु, अंगिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अग्नोध्र,  
अग्निपुत्रात्ता ।

पितृगृह ( पु० ) पितृस्थान, पितृलोक ।

पितृतिथि ( स्त्री० ) समावास्या, आद्ध-दिन ।

पितृदान ( पु० ) पिंडदान ।

पितृपक्ष ( पितृ=पुत्री, पक्ष=पखवारा ) ( पु० ) आद्धपक्ष,  
आश्विन का अंधेरा पक्ष, कनागत, पितरपक्ष ।

पितृप्रसू ( स्त्री० ) पिता की माता ।

पितृव्य ( पु० ) चचा ।

पितृपुत्रा ( स्त्री० ) कूकी, पिता की बहन ।

पित्त ( अग्नि, दा=काटना, यहाँ अग्नि के 'य' का लोप और  
'द' को 'त' हुआ है ) ( पु० ) शरीर की एक प्रकार  
की धातु ।

पित्तघ्नी ( स्त्री० ) गुडूच ।

पित्तज्वर ( पु० ) पित्तविकार से उत्पन्न ज्वर ।

पित्तल ( पु० ) धातु-विशेष, पीतल, भोजपत्र का पद ।

पित्तपापड़ा ( सं० पपेट, पपू=जाना ) ( पु० ) एक  
ओषधि का नाम ।

पित्ता ( सं० पित्त ) ( पु० ) पित्त, पित्त की थैली, पित्ता-  
धार, क्रोध ।

पित्ता निकालना ( मृदा० ) दंड देना, ताड़ना करना,  
सजा देना ।

पित्ता मारना ( मृदा० ) क्रोध घटना, क्रोध ठंडा पड़ना,  
खूब परिश्रम करना ।

पिटड़ी ( स्त्री० ) एक छोटा-सा पत्थर, फुदकी ।

पिधान ( पु० ) पिहना, ढकना ।

पिधायक ( पु० ) पिहना, ढकना ।

पिनकी ( स्त्री० ) पीनक, उँचाइट, अफ्रीम का दशा ।

पिनाक ( पा=वचाना मृष्टि का ) ( पु० ) शिव का धनुष,  
शिव का त्रिशूल ।

पिनाकिन ( पु० ) प्रमथाधिप, शिव ।

पिनाकी ( स्त्री० ) वीणा, शिव का धनुष, त्रिशूल,  
( पु० ) शिव, महादेव ।

पिन्ना ( पु० ) खली ।

पिन्नी ( स्त्री० ) चाँवल का लड्डू ।

पिपा ( पु० ) लकड़ी का गोछाकार बड़ा बर्तन ।

पिपासा ( सं० पा=पीना ) ( स्त्री० ) पीने की इच्छा,  
प्यास, तृषा ।

पिपासातुर ( पिपासा+आतुर ) ( वि० ) बहुत प्यासा ।

पिपील ( स्त्री० ) चिउँटी, चोंटी ।

पिपीलक ( पु० ) चिउँटा, चोंटा ।

पिपीलिका ( अग्नि, पील=रोकना ) ( स्त्री० ) छाक  
चिउँटी ।

पिप्पल ( पा=पचना ) ( पु० ) पीपल, पीपर, एक वृक्ष  
का नाम ।

पिप्पली ( स्त्री० ) पीपर ।

प्रिय } ( सं० प्रिय ) ( पु० ) स्वामी, प्रियतम, भर्ता  
प्रिया } ( वि० ) प्यारा ।  
पी }

प्रियाना ( कि० सं० ) पिछाना, प्यावना ।

प्रियार ( सं० प्रेम या प्रीति ) ( पु० ) प्यार, प्रेम, प्रीति,  
नेह, छोड़, दुलार, मुहब्बत ।

प्रियारा ( सं० प्रिय ) ( वि० ) प्रेमी, सनेही ।

प्रियारी ( सं० प्रिया ) ( वि० ) प्यारी, प्रिया, मनोहर ।

प्रियाल ( पु० ) चिरौजी ।

प्रियाला ( पु० ) कटोरा, बेल ।

प्रियास ( सं० पिपासा ) ( स्त्री० ) तृषा, तृष्या, पीने की  
इच्छा, प्यास ।

प्रियासा ( सं० पिपासित, पा=पीना ) ( वि० ) प्यासा,  
तृषावंत ।

प्रिरकी ( स्त्री० ) फोड़ा, फुँसी, फुड़िया ।

प्रिराना ( सं० पीड़न, पीट=दुःख देना ) ( कि० अ० )  
दुखना, दर्द करना, पीड़ा होना ।

प्रिरिने ( सं० प्रियतम ) ( वि० ) प्यारा । जैसे—

“हे रघुनंदन प्राणप्रिरिने ।

तुम बिनु जियन बहुत दिन बीने ।”

( इति रामायणम् )

पिरोजा ( सं० परोज, और फारसी में परिजा अथवा  
फ़ीरोजा ) ( पु० ) जंगली रंग की मणि ।

“मैं बेगी सुम्राव पियाम । कारण कवन नाथ स्वहिं मार”  
( इति रामायणम् )

पिरोना ( कि० म० ) गूँथना, मूँई में तारा डालना, लड़ियाना ।

पिलई ( म० सीहा, सिद्ध=जाना ) ( स्त्री० ) तापतिस्त्री, पिलही ।

पिलचन ( कि० स० ) लिपटना, चिमटना ।

पिलड़ी ( स्त्री० ) मास, गोली, पिंडी ।

पिलना ( सं० पेलम, पिल=प्रेरणा करना, या फेंकना या पेल=जाना ) ( कि० म० ) धावा मारना, टेकना, धकेलना, ज़ोर करना ( कि० अ० ) कुचल जाना, पिस जाना, चूर होना, लड़ने को आगे बढ़ना ।

पिलपिला ( वि० ) नर्म, पिचपिचा, कोमल, ठीला ।

पिलुवा } ( म० पालु, पालू=संकना ) ( पु० ) कीड़ा ।  
पिल्लू }

पिल्ला ( म० पिल, मुंथला ) ( पु० ) कुत्ते का बच्चा ।

पिशाच ( पिशित=मांस, अश्वत्थाना या पिशित=मांस, आ=नागों और से, चम्=खाना ) ( पु० ) प्रेत, भूत, शैतान ।

पिशाच ( पु० ) मूत, मूत्र ।

पिशित ( पिशि=टुकड़े करना ) ( पु० ) मांस ।

पिशुन ( पिशु=टुकड़े करना ) ( वि० ) चुसल, निंदक, दुष्ट, नीच, भेदिया, जामूस ।

पिष्टक ( पु० ) पूरी, पुआ, मिष्टाक्ष ।

पिष्टन ( पु० ) स्वर्ग, भुवन, जगन्, दुनिया ।

पिष्टिका ( स्त्री० ) पीठी ।

पिसाई ( स्त्री० ) पीसने की मज़दूरी ।

पिसान ( सं० पिष्ट, पिप्=पीसना ) ( पु० ) आटा, पिष्टक, पीठी, चौरठा, पिस्ती ।

पिस्तु ( पु० ) पीछू, जंतु-विशेष ।

पिहित ( अपि+धा=धारण करना ) ( वि० ) गुप्त, आच्छादित, छिपा हुआ ।

पी ( पु० ) स्वामो, पिय, प्रियतम ।

पीक ( स्त्री० ) खलार, थूक ।

पीकदान ( पु० ) थूकने का कर्तन ।

पीच ( पु० ) माँई, भात का पसाव ।

पीचना ( कि० स० ) पीटना, कुचलना, ज़तमर्दन करना ।

पीछा ( सं० परचात् ) ( पु० ) पिछला भाग, पिछवाड़ा, रगेदना, खदेरना, भगा देना ।

पीछा करना ( मुहा० ) खदेरना, रगेदना, पीछे-पीछे जाना ।

पीछा फेरना ( मुहा० ) जौटा देना, पीछा दे देना, फेर लेना ।

पीछे ( सं० परचात् ) ( कि० वि० ) पीठ पीछे, परे, इसके बाद, अंत में, निदान ।

पीछे डालना ( मुहा० ) पीछे छोड़ना, आगे निकल जाना, आगे बढ़ जाना ।

पीछे पड़ना ( मुहा० ) पीछे दौड़ना, दबाना, बार-बार माँगना, सताना, छेड़ना, खिझाना, दुःख देना, पीछे रह जाना, आग्रह करना ।

पीछे लगना ( मुहा० ) पीछे जाना, साथ होना, साथ लगना, लगा रहना ।

पींजना ( कि० स० ) रूई धुनना, रूई साफ़ करना ।

पीटना ( म० पिट्=पीटना, या पीट्=दुःख देना ) ( कि० स० ) मारना, कुटना, ठोंकना, खटखटाना, चूर-चूर करना, छाती पीटना, विज्ञाप करना रोना, पछतावा करना, दुःख करना ।

पीठ ( सं० पृष्ठ ) ( स्त्री० ) पिछाड़ी का अंग ।

पीठ के पीछे डाल लेना ( मुहा० ) बचाना, पछ करना, रक्षा करना ।

पीठ के पीछे पड़ना ( मुहा० ) शरण लेना, पनाह लेना ।

पीठ ठोंकना ( मुहा० ) दाढ़स देना, साहस देना, हिम्मत बँधाना ।

पीठ देना ( मुहा० ) भाग जाना, फिरना, हटना, टकना, अप्रसन्न होकर फिर जाना ।

पीठ पर हाथ फेरना ( मुहा० ) पीठ थपथपाना, शाबाशी देना, दाढ़स देना ।

पीठ फेरना ( मुहा० ) चला जाना, भागना, हटना ।

पीठ लगना ( मुहा० ) पीठ पर घाव होना ( जैसे घोड़े के ) घोड़े पर चढ़ना, पछाड़ खाना, हार जाना ।

पीठ ( पिट्=मारना, ठोंकना ) ( पु० ) आसन, पीड़ा ।

पीठा ( पु० ) एक प्रकार का भोजन ।

पीठियाठोंक ( वि० ) सटे-सटे, भिड़ा हुआ, एक दूसरे में जुड़ा हुआ ।

पीठी ( सं० पिष्टिका, पिप्=चूर करना ) ( स्त्री० ) पिसी हुई उबड़ की दाढ़ ।



पीठौता ( पु० ) पीठ, पत्रे का पृष्ठ ।

पीड़ ( सं० पीड़ा ) ( स्त्री० ) बालक के पैदा होने के समय का दुःख जो लुगाई को होता है, प्रसव की पीड़ा ।

पीड़ा ( पीड़=दुःख देना ) ( स्त्री० ) दुःख, दर्द, व्यथा, वेदना ।

पीड़ित ( पीड़=दुःख देना ) ( वि० ) दुःखित, दुःखी, बीमार ।

पीड्यमान ( वि० ) पीड़ायुक्त, पीड़ाविशिष्ट ।

पीड़ा ( सं० पीठ ) ( पु० ) पटरा, मोटा, मचिया ।

पीढ़ी ( सं० पीठिका ) ( स्त्री० ) मचिया, वंशावली, वंश की परंपरा ।

पीत ( पा=पीना अर्थात् आँखों से दिखाई देना ) ( वि० ) पीला, पीला रंग, पिया हुआ, पानकृत ।

पीत } ( सं० प्रीति ) ( स्त्री० ) प्यार, प्रेम, नेह, स्नेह,  
पीति } झोह ।

पीतम ( सं० प्रियतम ) ( वि० ) बहुत प्यारा, ( पु० ) स्वामी, भर्ता ।

पीतमणि ( पु० ) पुष्कराज ।

पीतरस ( पु० ) हाथी ।

पीतल ( सं० पित्तल या पीतल का, पीत=पीला, ला=लेना ) ( पु० ) एक प्रकार की पीली धातु ।

पीतला ( वि० ) पीतल का बना हुआ ।

पीताम्बि ( पु० ) अगस्त्य मुनि ।

पीताम्बर ( पीत=पीला, अंबर=कपड़ा ) ( पु० ) पीला रेशमी कपड़ा, जिसके कपड़े पीले हों, श्रीकृष्ण ।

पीन ( पे या प्याय=वदना, मोटा होना ) ( वि० ) मोटा, स्थूल, पुष्ट ।

पीनक ( स्त्री० ) अक्लीम के नशे से ऊँचाई आना ।

पीनस ( पु० ) पाखकी, रोग-विशेष, जुकाम ।

पीनसवादे ( वि० ) पीनस रोगवाला, जिसके नाक में कीड़े पड़ गये हों ।

पानस्कंध ( पु० ) महिष, भैंसा ।

पीना ( सं० पान ) ( कि० सं० ) पान करना, तमाकू का धुआँ खींचना, ( पु० ) खली ।

पी जाना ( पु० ) पीना, पी लेना, सोखना, क्रोध को पीना, मारना, चुप रहना, उत्तर देने से रुकना ।

पीपल ( सं० पिप्पल ) ( पु० ) एक वृक्ष का नाम जिसकी हिंडू पंडित मानते हैं, ( सं० पिप्पली, पा=वचाना ) ( स्त्री० ) एक तरह का गर्म मसाला ।

पीपला ( पु० ) खड्ग तलवार आदि की नोक ।

पीपलामूल ( सं० पिप्पलीमूल ) ( पु० ) पीपल अथवा पिप्पली की जड़ ।

पीपा ( पु० ) शराब रखने का लकड़ी का बर्तन ।

पीयूष } ( पीयू=पीना या तृप्त होना ) ( पु० ) अमृत, अमी,  
पेयूष } सुधा, आबहयात, दूध ।

पीर ( सं० पीड़ा ) ( स्त्री० ) पीड़, दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना ।

पीरा ( पु० ) दुःख, दर्द, पीड़ा ।

पीराई ( स्त्री० ) ढोख बजानेवाला ।

पीलक ( पु० ) पिपीलिका, चिउँटा, मकोड़ा ।

पीला ( सं० पीत ) ( वि० ) पीतवर्ण ।

पीलाई ( स्त्री० ) पीला रंग ।

पीलाम ( यह शब्द चीनी है ) ( पु० ) साटिन, एक तरह का रेशमी कपड़ा ।

पीली ( स्त्री० ) मोहर, सुवर्णमुद्रा ।

पीलु ( पु० ) प्रसूत, परमाणु, मातंगज, अस्थिखंड, फल-विशेष ।

पीवकूड़ ( वि० ) शराबी, मद्यप ।

पीवर ( वि० ) स्थूल, मोटा ।

पीवरा ( स्त्री० ) शतावर, अरवगंधा ।

पीवरी ( स्त्री० ) शालपर्णी, युवती स्त्री, तरुणी गौ ।

पीसना ( सं० पेयण, पीप्=पीसना ) ( कि० सं० ) चूर-चूर करना, चुकनी करना, चूर्ण करना, आटा करना, दलना, चकनाचूर करना, कड़कड़ाना, ( जैसे दाँत पीसना ) ।

पीहर ( पु० ) स्त्री के बाप का घर, नैहर, मैका ।

पीहू ( पु० ) कृमि, पिरमू ।

पुं ( पु० ) पुरुष, नर, प्रमान ।

पुंगनिया ( स्त्री० ) फुल्ली या लौंग जो नाक में पहनी जाती है ।

पुंलिंग } ( पुम्=पुरुष, लिंग=चिह्न या निशान ) ( पु० )

पुंलिंग } पुरुषचिह्न, पुरुषत्व, पुरुष का वाची शब्द ।

पुंशक्ति ( स्त्री० ) पुरुषत्व, तेज ।

पुंश्चली ( स्त्री० ) वेरया, छिनाल, इयमिचारिणी ।

पुकार ( स्त्री० ) हाँक, गोहार, डाक, चिल्लाना, चिल्लाहट ।

पुकारना ( कि० सं० ) हाँक मारना, चिल्लाना, बुलाना ।

पुखराज ( पु० ) एक रत्न का नाम, पीले रंग का रत्न ।

पुंखवन ( पु० ) गर्भ-संस्कार-विशेष, सियौर, दूध ।

पुंग ( पु० ) मृषारो, मृगफल ।

पुंगव ( पु०=पुष्प, गो=गाय ) ( पु० ) बैल, वृषभ, और जब यह किसी दूसरे पद के पीछे आये तब इसका अर्थ होता है श्रेष्ठ, उत्तम - जैसे नर-पुंगव=मनुष्यों में श्रेष्ठ, नर-प्रधान ।

पुंगीफल } ( म० पुंगफल, पुं=पवित्र होना ) ( पु० )  
पूगीफल } मृषारो, डल्ला ।

पुचकार ( पु० ) डाढ़स, प्यार, सात्वना ।

पुचारा ( पु० ) भीत लीपने का कूँचा ।

पुच्छल ( वि० ) पूँछवाला ।

पुच्छैया ( पु० ) अनुसंधान करनेवाला, खोजी ।

पुजना ( म० पूर=भरना ) ( क्रि० अ० ) पूरा होना, प्रतिष्ठा पाना ।

पुजवाना } ( म० पूज=पूजना ) ( क्रि० स० ) पूजा  
पुजाना } करना, ( म० पूर्ण ) ( पु० ) पूरा करना, भराना ।

पुजापा ( म० पूजा ) ( पु० ) पूजा की सामग्री ।

पुंज ( पु०=पुष्प, जी=जीतना या जन्=पैदा होना अर्थात् जो पुष्पा में दकड़ा किया जाता है ) ( पु० ) देर, समूह, राशि, थोक, जम्हा ।

पुट ( पु०=मिलना ) ( पु० ) दोना, मिलाव, मिलना, ठकना ।

पुटक ( पु० ) दोना, पत्र ।

पुटकिनी ( स्त्री० ) पत्थिनी, दुनिया ।

पुटित ( पु० ) युक्त, शामिल ।

पुट्टा ( पु० ) जानवर का चूतड़, पट ।

पुट्टिया ( स० पुट्टा, पुट्ट=मिलना ) ( स्त्री० ) कागज की छोटी सी गाँठ ।

पुङ्गी ( पु० ) खाल, ढोखक का चमड़ा ।

पुंङ ( पु० ) तिलक, टीका ।

पुंङरीक ( पुंङि=मसलना, मलना ) ( पु० ) कमल, रवेत कमल, अग्निकोण के हाथी का नाम, बाघ, एक प्रकार का साँप, एक प्रकार का कोढ़, सक्नेद छाता ।

पुंङरीकाक्ष ( पुंङरीक=कमल, अक्ष=धौल ) ( पु० ) विष्णु, जिसकी आँखें कमल-सी हों ।

पुण्य ( पुं=पवित्र होना ) ( पु० ) पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, ( वि० ) पवित्र, शुद्ध, पावन, सुंदर, सुगंधित ।

पुण्यकृत ( पु० ) धार्मिक, सुकृती ।

पुण्यजनक ( पु० ) पुण्योत्पादक, पुण्यकर्ता ।

पुण्यभूमि ( पुण्य=पवित्र, भूमि=धरती ) ( स्त्री० ) पवित्र धरती, आर्यावर्त, अंतर्वेद ।

पुण्यवान् ( पुण्य=धर्म, वन्=वाला ) ( वि० ) धर्मात्मा, धार्मिक ।

पुण्यश्लोक ( पु० ) विष्णु, नल, युधिष्ठिर ।

पुण्यात्मा ( पुण्य=पवित्र, आत्मा=मन, जिंगका आत्मा धर्म में लगी हो ) ( वि० ) पुण्यवान् धर्मात्मा, पवित्रात्मा ।

पुण्यायी ( स्त्री० ) धार्मिकता, सुकृत कर्म ।

पुतला } ( म० पुतल ) ( पु० ) मूर्ति, काठ की बनी  
पुतला } हुई मूर्ति ।

पुतली } ( सं० पुतला ) ( स्त्री० ) आँख का तारा,  
पुतली } काठ की मूर्ति ।

पुताई ( स्त्री० ) पोतने की क्रिया, पोतने की मज़दूरी ।

पुत्तिका ( स्त्री० ) पुतली, चूड़मक्षिका ।

पुत्र ( पुं=एक नरक का नाम, पुं=वचाना, जो पुत्र नाम नरक से अपने बाप को बचावे या पवित्र करे ) ( पु० ) बेटा ।

पुत्रदा ( स्त्री० ) सक्रेद भटकटैया, बंध्या ककौटकी ।

पुत्रिका } ( पुत्र ) ( स्त्री० ) बेटा, लड़की, कन्या,  
पुत्री } गुदिया ।

पुत्रेष्टि ( स्त्री० ) संतानार्थ यज्ञ ।

पुन्दल ( पु० ) शरीर, आत्मा, ( वि० ) सुंदर, संपत्तिवान् ।

पुन } ( म० पुनर् ) ( अ० ) फिर, बहुवि, पीछे ।  
पुनि }

पुनः पुनर् ( अ० ) बारंबार, फिरफिर ।

पुनर् ( अ० ) प्रथम, निश्चय, अधिकार, भेद, पक्षांतर, फिर फिर, और ।

पुनःपुना ( पुनर्=बारंबार, पुं=पवित्र करना ) ( स्त्री० ) पुन-पुन नदी जो पटने से पाँच कोस गया के रास्ते पर है, "कीकटेयु गया पुण्या, नदी पुण्या पुनःपुना" ( वायुपुराण ) अर्थ—कीकट अर्थात् मगध-देश में गया और पुनपुन नदी पवित्र हैं ।

पुनरागमन ( पुनः + आगमन ) ( पु० ) फिर आना, लौटना ।

पुनराय ( पु० ) दूसरी बार ।

पुनरुक्ति ( पुनरु=फिर, उक्ति=कहना ) ( स्त्री० ) फिर कहना, दुबारा कहना ।

पुनरुत्थान ( पु० ) फिर उठना, बहुरना ।

पुनर्जन्म ( पुनरु=फिर, जन्म=पैदा होना ) ( पु० ) दूसरा जन्म ।

पुनर्भव ( पु० ) नख, नहँ, पुनर्जन्म, फिर से पैदा होना ।

पुनर्भू ( स्त्री० ) दुबारा व्याहो स्त्री, द्विरूढ़ा ।

पुनर्वसु ( पुनरु=फिर, वसु=रहना ) ( पु० ) सातवाँ नक्षत्र, गंधर्व, मुनिभेद ।

पुनवाना ( कि० सं० ) अनादर करना, अपमान करना, निरादर करना ।

पुनश्च ( अव्य० ) पुनरपि, फिर भी ।

पुनि ( अव्य० ) फिर, बहुरि, पुनः ।

पुनीत ( सं० पूत, पू=पवित्र होता ) ( वि० ) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ।

पुष्पा ( कि० अ० ) गाली देना, तिरस्कार करना ।

पुष्पाग ( पु० ) जायफल, वृक्ष-विशेष, बायविदंग का पेड़, सक्तेद कमल ।

पुमान् ( पु० ) पुरुष, आदमी, मनुष्य ।

पुर ( पुर=आगे जाना या पृ=भरना ) ( पु० ) नगर, शहर, घर, देह, एक राक्षस का नाम ।

पुरहन ( स्त्री० ) कुमुदिनी, कुई, नखिनी ।

पुरजन ( पु० ) पुर के मनुष्य ।

पुरंजन ( पु० ) जीव जैसे ( पुरंजनोपास्थान )

पुरःसर ( पुरस्=आगे, सृ=जाना ) ( वि० ) अगुआ, अग्रगामी, पेशवा ।

पुरट ( पुर=आगे जाना ) ( पु० ) सोना, कंचन ।

पुरतः ( अव्य० ) अग्रे, आगे, पेश ।

पुरनिया ( पु० ) हितकारी, प्राचीन, बूढ़ा ।

पुरंदर ( पुर=नगर, दृ=फाड़ना ) ( पु० ) इंद्र जो राक्षसों के नगरों को नाश करना है, चोर ।

पुरंध्री ( स्त्री० ) कुटुंबिनी, भिक्षिनी ।

पुरवासी ( पुर=नगर, वासी=रहनेवाला ) ( पु० ) शहर का रहनेवाला, नगरनिवासी ।

पुरस्कार ( पुरस्=आगे, कृ=करना ) ( पु० ) आदर, सत्कार, पूजा, दान, फल, इनाम, बदला ।

पुरस्कृत ( वि० ) पूजित, पारितोषिकप्राप्त ।

पुरस्तात् ( अव्य० ) आगे, अग्रे, पेशतर, पूर्व में ।

पुरा ( सं० पुर ) ( पु० ) गाँव ।

पुरा ( अव्य० ) प्राचीन, पुराना, पुराण, निकट, अतीत, भावी, पूर्व समय, पिछला वक्त ।

पुराकृत ( पुरा=पहले, कृत=किया ) ( पु० ) पहले का किया हुआ, पूर्वजन्म, अष्टष्ट, भाग्य ।

पुराचीन ( अव्य० ) प्राचीन पुराना, दिनी ।

पुराण ( पुरा=पुराना, पुर=आगे जाना अर्थात् जिसमें पुराने समय की बातें हों, अथवा जो पुराने समय में बने हों ) ( पु० ) वे ग्रंथ जिनमें से बहुतों को व्यसजी ने बनाए अथवा इकट्ठे किए थे । पुराण सब पद्य में लिखे हुए हैं और उनको हिंदू पवित्र मानते हैं । हर एक पुराण में विशेष करके इन पाँच बातों का वर्णन है । जैसे—

“सर्गश्च प्रतिसर्गश्च”

“वंशो मन्वन्तराणि च”

“वंशानुचरितं चैव”

“पुराणं पंचखण्डयम्”

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २ प्रलय और प्रलय के पीछे फिर संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूरवीरों की वंशावली, ४ मनुष्यों का राज, ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चखन । पुराण अठारह हैं—१ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्मांडपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुडपुराण, ७ ब्रह्मवैवर्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिङ्गपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कंदपुराण, १२ मार्कंडेयपुराण, १३ भविष्यपुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५ वराहपुराण, १६ कूर्मपुराण, १७ वामनपुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण । इन सब पुराणों में चार लाख श्लोक गिने गए हैं और अठारह उपपुराण भी हैं, जीव ( वि० ) प्राचीन, पुराना, पहले का, सबसे पहला, बूढ़ा, ८० कौड़ी की संख्या, मूँछ ।

पुराणपुरुष ( पुराण=पुराना या सन्तमे पहला, पुरुष=मनुष्य ) ( पु० ) विष्णु, भगवान्, बूढ़ा आदमी ।

पुरातन ( पुरा=पुराना ) ( वि० ) पुराना, प्राचीन, अगले समय का ।

**पुरातम** ( सं० पुरातन ) ( वि० ) पुराना, क़दीम, प्राचीन ।

**पुराना** ( सं० पुराण ) ( वि० ) अगले समय का, प्राचीन, पुरातन, बोदा, बहुत दिन का, बूढ़ा ।

**पुराना** ( सं० पुर=पूरा करना ) ( कि० सं० ) भर देना, भरना, पूरा करना ।

**पुरारति** } ( पुर=एक राक्षस का नाम, आरानि या अरि=वेगी ) ( पु० ) शिव, महादेव जिन्होंने पुर नाम दैत्य की मारा था ।

**पुरी** ( पुर ) ( स्त्री० ) नगरी ।

**पुरीप** ( पृ=भरना ) ( पु० ) विष्टा, गृह, मछ ।

**पुरु** ( पृ=भरना ) ( पु० ) एक चंद्रवंशी राजा का नाम ।

**पुरुखा** } ( सं० पुरुष ) ( पु० ) बड़े, बापदादे, दादे  
**पुरखा** } परदादे, पूर्वपुरुष ।  
**पुर्खा** }

**पुरुष** ( पृ=आगे जाना ) ( पु० ) मनुष्य, नर, परमेश्वर, पुरुषा ।

**पुरुषसिंह** ( पुरुष+सिंह ) ( वि० ) पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठ मनुष्य ।

**पुरुषाधम** ( वि० ) नीच, चंडाख, पामर, निकृष्ट ।

**पुरुषार्थ** ( पुरुष=मनुष्य, अर्थ=प्रयोजन ) ( पु० ) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, बल, ज़ोर, वीरता, साहस, पराक्रम, परोपकार ।

**पुरुषोत्तम** ( पुरुष=मनुष्य, उत्तम=श्रेष्ठ ) ( पु० ) विष्णु, नारायण, उत्तम मनुष्य ।

**पुरुह** } ( वि० ) प्राचीन, बहुत, बहुत, अधिक ।  
**पुरुह** }

**पुरुहत** ( पु० ) हंद्र ।

**पुरोगम** ( पुरस्=आगे, गम्=जाना ) ( वि० ) श्रेष्ठ, अग्रगामी, पेशवा ।

**पुरोडाश** ( पुरस्=आगे, दाश=देना ) ( पु० ) होम की सामग्री, धी आदि हविस्, खीर ।

**पुरोधा** } ( पुरस्=आगे, धा=रखना ) ( पु० ) कुलगुरु,  
**पुरोहित** } उपाध्याय ।

**पुरोवर्ती** ( वि० ) अगुआ, अग्रगामी ।

**पुर्वक** ( स्त्री० ) छल, बड़ाना, दाढ़स ।

**पुर्वा** } ( सं० पूर्ववायु ) ( स्त्री० ) पूर्व की हवा ।  
**पुर्व्या** }

**पुर्सा** ( सं० पौरुष ) ( वि० ) मनुष्य की उँचाई के बराबर, ( पु० ) मनुष्य के डील की उँचाई के बराबर विस्तार, चार हाथ का नाप ।

**पुल** ( पुल=ऊँचा होना ) ( पु० ) सेतु, बंध, बाँध ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम ।

**पुलक** ( पुल=बढ़ना या ऊँचा या खड़ा होना ) ( पु० ) मारे खुशी के रोपे खड़े होना, रोमांचित होना, प्रसन्न होना, रोमांच, गजभोजन, हरताल, गड़हा, तुच्छधान्य ।

**पुलकित** ( पुल=बढ़ना या ऊँचा होना ) ( वि० ) रोमांचित, हर्षित, आनंदित ।

**पुलपुला** ( वि० ) गुलगुला, पिछपिला ।

**पुलपुलाना** ( कि० अ० ) डरना, डीला पड़ना ।

**पुलहना** ( कि० सं० ) मनाना, फुसलाना ।

**पुलस्त** } ( पुल=बड़ा होना ) ( पु० ) ब्रह्मा का बेटा,  
**पुलस्त्य** } रावण का दादा, सप्तश्रपियों में का एक ऋषि ।

**पुलाक** ( पु० ) थोड़ा सा, संक्षेप, अलंकार ।

**पुलापित** ( पु० ) घोड़े की एक चाल ।

**पुलिन** ( पुल=ऊँचा होना ) ( पु० ) नदी के बीच में बालू का टापू, तट, किनारा, द्वीप, जज़ीरा ।

**पुलिंद** ( पु० ) भिल, निपाद, शबर, म्लेच्छ ।

**पुलिंदा** ( पु० ) पारख, गठरी, गठिया, गाँठ ।

**पुलोमजा** ( पुलोमा=असुरभेद, जा=उमये पैदा ) ( स्त्री० ) इंद्रप्रिया, शची, इंद्राणी ।

**पुनाल** ( सं० पनाल, पल्=जाना या बचना ) ( पु० ) पुवाल, खर, तिनका, बिचाजी, डाँटी, पयाल ।

**पुपा** ( स्त्री० ) पुष्टि, पालन ।

**पुषित** ( वि० ) पाला हुआ ।

**पुष्कर** ( पुष्प=बढ़ना या पालना ) ( पु० ) बैँख, आकाश, पानी, एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से तीन कोस पर है, सात द्वीपों में का एक द्वीप, पोखरा, तालाब, कमल, हाथी की सूँड़, डोल, सर्प, तूर्यबाजा, तुरही ।

**पुष्करमूल** ( पु० ) ओषधि-विशेष ।

**पुष्करिणी** ( स्त्री० ) तलैया, हथिनो, पुष्करमूज, पुष्करमूज, पद्मसमूह ।

**पुष्कल** ( पुष्प=अधिक होना ) ( वि० ) बहुत, ढेर, नृस, संपूर्ण, तुष्ट, श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, ( पु० ) मेरुपर्वत, कस्तूरी ।

पुष्ट ( पुष् पालना या बढ़ना ) ( वि० ) पाला हुआ, मोटा-ताजा ।

पुष्टई ( स्त्री० ) ताकत की दवा, पुष्टकर औषधियाँ ।

पुष्टांग ( पुष्ट=मोटा, अंग=शरीर ) ( वि० ) मोटा-ताजा, जिसका शरीर पुष्ट हो ।

पुष्टि ( स्त्री० ) पालना, पोषण, वृद्धि, असंगंध औषध, मातृकाभेद विवाहों में सोलह मातृका पूजी जाती हैं उनमें की एक ।

पुष्टिकर ( पु० ) पुष्टई, बल-वर्द्धक ।

पुष्प ( पुष्=फूलना, विकसना ) ( पु० ) फूल, कुसुम, सुमन, स्त्री का रज, कुबेर का विमान, एक प्रकार का आँखों का रोग ।

पुष्पक ( पुष्प=फूल, अर्थात् फूल सा हलका ) ( पु० ) कुबेर का विमान, भंकण, रसाँत, लोहपात्र, अँगीठी, लोहा, काँसाधातु ।

पुष्पकरंडक ( पु० ) पुष्पचयनपात्र, बाँस की बनी हुई फूल चुनकर रखने की पिटारी, फूलों की पिटारी, डलिया ।

पुष्पकेतन ( पु० ) कामदेव, कुबेर ।

पुष्पकेतु ( पु० ) शिव, महादेव ।

पुष्पचाप ( पु० ) कामदेव ।

पुष्पदंत ( पु० ) वायुदिशा का दिग्गज, विद्याधर, गर्ध्व ।

पुष्पपुर ( पु० ) कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, पटना ।

पुष्पमास ( पु० ) चैत्र ।

पुष्परस ( पुष्प+रस ) ( पु० ) फूलों का रस, मकरंद, मधु ।

पुष्पराग ( पु० ) मणिभेद, पुखराज, पद्मराग ।

पुष्परेणु ( पु० ) पराग ।

पुष्परोचन ( पु० ) नागकेसर ।

पुष्पलिट् ( पुष्प=फूल, लिट्=स्वाद लेना ) ( पु० ) अमर, भौरा ।

पुष्पवर्त ( पु० ) सूर्य, चंद्र ।

पुष्पवर्ती ( स्त्री० ) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पवाटी ( पुष्प=फूल, वाटी=वाड़ी ) ( स्त्री० ) फूलों की बाड़ी ।

पुष्पविमान ( पुष्प+विमान ) ( पु० ) फूलों का विमान, देवताओं का विमान, कुबेर का विमान ।

पुष्पांजली ( पुष्प+अंजला ) ( स्त्री० ) दोनों हाथों में

फूल लेकर और कुछ मंत्र पढ़कर देवता को चढ़ाना, निछावर, भेंट ।

पुष्पित ( पुष्प=विकसना ) ( वि० ) फूला हुआ, विकसा हुआ, विकसित ।

पुष्पिताग्न ( स्त्री० ) एक अर्द्धसम वृत्त, एक पहर का नाप ।

पुष्प्य ( पुष्प=पुष्ट करना किसी काम को ) ( पु० ) आठवाँ नक्षत्र ।

पुस्तक ( पुस्त=आदर करना या बाँधना ) ( स्त्री० ) पोथी, ग्रंथ, किताब ।

पुहप ( पु० ) सुमन, फूल, पुष्प ।

पुहानि ( स्त्री० ) पृथ्वी ।

पूश्ना ( सं० पूष, पू=शुद्ध करना ) ( पु० ) मालपूश्ना ।

पूग ( पू=पवित्र होना ) ( पु० ) सुपारी, समूह, एक वृक्ष का नाम ।

पूगीफल ( पु० ) सुपारी ।

पूछ ( पूछना ) ( स्त्री० ) खोज, अन्वेषण, प्रश्न ।

पूछना ( सं० प्रच्छन, प्रच्छ=पूछना ) ( कि० सं० ) प्रश्न करना, सवाल करना, जिज्ञासा करना ।

पूछपाछ ( मुहा० ) पूछना, निर्णय करना, प्रश्न ।

पूछी ( स्त्री० ) मछली की पूँछ ।

पूजक ( पूज=पूजना ) ( पु० ) पुजारी, पूजनेवाला, सेवक ।

पूजन ( पूज=पूजना ) ( पु० ) अर्चा, पूजा, अर्चन ।

पूजना ( सं० पूजन ) ( कि० सं० ) परस्तिश करना, पूजा करना, अर्चना, भजना, ध्यान करना, बहुत मानना, ( सं० पूर्ण ) ( कि० अ० ) पूरा होना ।

पूजनीय } ( पूज=पूजना ) ( वि० ) पूजने योग्य, मान्य,  
पूजमान } क़ाबिल परस्तिश ।

पूजयिता ( पु० ) पूजक, पूजनेवाला ।

पूजा ( पूज=पूजना ) ( स्त्री० ) अर्चा, परस्तिश, पूजन, अर्चन, आदर, सम्मान, सेवा ।

पुजारी } ( सं० पूज=पूजना ) ( पु० ) पूजनेवाला,  
पुजारी } सेवक ।

पूजित ( पूज=पूजना ) ( वि० ) पूजा हुआ, अर्चित, खिद-मन किया गया ।

पूज्य ( पूज=पूजना ) ( वि० ) पूजने योग्य, पूजनीय, ( पु० ) गुरुजन ।

पूँछ ( सं० पुच्छ, पुच्छ=मस्त होना, जिसके बल पशु मस्त रहते हैं ) ( स्त्री० ) दुम, लंगूल, पुच्छ ।

पूँजी ( सं० पुत्र ) ( स्त्री० ) धन, मूलधन, असलधन, संपत्ति, समीया, संपदा ।

पूठ ( पु० ) बूला, चून्च, पुठा ।

पूठा ( सं० पठिका ) ( पु० ) गत्ता, जिरद, गाता ।

पूड़ा ( पु० ) बड़ा पर्काड़ा, कुलौड़ी ।

पूड़ी ( स्त्री० ) पूरी ।

पूणी ( स्त्री० ) रुई का पहल जो कानने के लिये बनाया जाता है ।

पूत ( पू=पवित्र करना ) ( पु० ) पवित्र, सफा, शुद्ध, सच्चाई, सफाई, कुश, शंख ।

पूत ( सं० पुत्र ) ( पु० ) बेटा ।

पूतना ( पू=पवित्र करना ) ( स्त्री० ) एक राक्षसी जिसका श्रीकृष्ण ने मारा, रोग विशेष, जटामासी ।

पूतली ( स्त्री० ) गुड़िया, पुत्तिका ।

पूता ( स्त्री० ) दूता, पाक, पवित्रा ।

पूतान्मा ( पु० ) निष्पाप, पाक, शुद्धस्वभाव ।

पूति ( स्त्री० ) पवित्रता, सफाई, स्वच्छता, निर्मलता, महक ।

पूतलार ( स्त्री० ) पतली लकड़ी जिस पर रुई की पुनियाँ कातने के लिये बनाते हैं ।

पूनियाँ } ( सं० पूर्णिमा ) ( स्त्री० ) पूर्णमासी, हिंदी  
पूनों } महीने का पिल्ला दिन ।  
पूनों }

पूनी ( स्त्री० ) पुनी हुई रुई की वह बत्ती जिससे सूत काता जाता है ।

पूप ( पू=शुद्ध करना ) ( पु० ) पूषा, मालपुषा ।

पूपली ( स्त्री० ) पोली नली ।

पूय ( वि० ) निषिद्ध, कुरिसत, ( पु० ) पीब, बिगड़ा रक्त ।

पूर ( पु० ) जलसमूह, वल्लगुडि, खाद्य-विशेष, बाढ़, वह पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरा जाय ।

पूरक ( पूर=भरना ) ( पु० ) भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, प्राणायाम में हवा को ऊपर खींचना, बिजौरा नीच, गुणक ।

पूरण ( पूर=भरा करना ) ( वि० ) भरा, पूरा, सारा, सब ( पु० ) पूरक, पिंड, वृष्टि, अंक, गुणन, सेतु, समुद्र, भरने या पूरा करने की क्रिया ।

पूरणीय ( पूर+अनीय ) ( वि० ) पूरा होने योग्य ।

पूरना ( क्रि० सं० ) बुनना, बिनना, बनाना ।

पूरब ( सं० पूर्व ) ( पु० ) पूर्वदिशा ।

पूरा ( सं० पूर्ण ) ( वि० ) सब, सारा, भरा, समाप्त, बस, ठीक, तमाम, पक्का ।

पूराई ( स्त्री० ) भराई, पूर्णता ।

पूरिया ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

पूरी ( स्त्री० ) सुहारी, धी से बनी रोटी ।

पूर्ण ( पूर=पूरा करना ) ( वि० ) पूरा, भरपूर, भरा, सब, सारा, तमाम, समस्त, समाप्त, ठीक, पक्का ।

पूर्णपात्र ( पु० ) वस्तुपूर्णपात्र, २२६ मुट्ठी भर चावल जो होमादि के पीछे ब्राह्मणों को दिया जाता है ।

पूर्णभूत ( पु० ) भूतकाल का एक भेद ।

पूर्णमा ( स्त्री० ) पूर्णमासी ।

पूर्णमासी ( पूर्ण=पूरा, मास=चाँद वा महीना ) ( स्त्री० ) पूनी, पूर्णिमा ।

पूर्णाहुति ( पूर्ण + आहुति ) ( स्त्री० ) होम में सबके पीछे की आहुति या बलि ।

पूर्णिमा } ( पूर्ण=पूरी अर्थात् जिस दिन चाँद की कला  
पूर्णमा } पूरी होती है ) ( स्त्री० ) पूनी, पूर्णमासी ।

पूर्त ( वि० ) पूरा, समाप्त, पूरित, ( पु० ) बावली, तालाब, कुआँ, बगीचा, देवमंदिर ।

पूर्ति ( स्त्री० ) भरण, पालन, पूराई, पूर्णता, समाप्ति ।

पूर्तिन ( पु० ) पूर्णकर्ता ।

पूर्व } ( पूर्व=रहना या चलाना ) ( पु० ) पूरब दिशा,  
पूर्व } ( वि० ) पूरब दिशा का, पूर्वी, पहला, ( क्रि० वि० ) पहले, प्रथम, आगे ।

पूर्विया } ( सं० पार्विक ) ( वि० ) पूर्वदेशी, पूर्व का  
पूर्वी } ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

पूर्वगंगा ( स्त्री० ) नर्मदा नदी ।

पूर्वज ( पूर्व=पहले, जन्=पंदा होना ) ( पु० ) बड़ा भाई, ज्येष्ठ भ्राता ।

पूर्वपक्ष ( पु० ) कृष्णपक्ष, मुहूर्त का दावा ।

पूर्वपुरुष ( पु० ) पुरुषा, पितामह आदि ।

पूर्वयाम ( पु० ) पहला पहर ।

पूर्वराग ( पु० ) नायक और नायिका की अवस्था का भेद ।

पूर्वलिखित ( पूर्व=पहले का, लिख=लिखना ) ( वि० ) पहले का लिखा हुआ ।

पूर्वा ( स्त्री० ) प्रक्षय, प्राची दिशा, पूर्व दिशा, ( वि० )  
पूर्वपुरुष, ( पु० ) गाँव, बस्ती ।

पूर्वाधिमुख ( पु० ) पूर्व के सम्मुख ।

पूर्वाभ्यास ( पु० ) पहले का अभ्यास ।

पूर्वार्द्ध ( पूर्व=पहला, अर्द्ध=आधा ) ( पु० ) पहला, आधा ।

पूर्वाषाढ ( स्त्री० ) बीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वोक्त ( पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ ) ( वि० ) पहले कहा हुआ, मजकूर ।

पूला ( सं० पूल, पूल=ढेर लगाना ) घास का बोझा अथवा गट्टा ।

पूष ( पु० ) शहनूत का पेड़, पूष, पोष, धनुमास ।

पूषन् ( पुष्प=बढ़ना ) ( पु० ) सूर्य ।

पूस् ( सं० पोष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम ) ( पु० ) चंद्रवर्ष का नवाँ महीना जिसमें पूरा चाँद पुष्य-नक्षत्र के पास रहना है और पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है ।

पूक्त ( पृथ=मिलना ) ( वि० ) मिश्रित, मिला हुआ, मुरकब ।

पृच्छुक ( पृच्छ=अक, प्रच्छ=पूछना, प्रश्न करना ) ( पु० ) प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु, पूछनेवाला ।

पृच्छुन ( पु० ) पूछना, प्रश्न ।

पृतना ( स्त्री० ) सेना, कौज २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े, १२१५ मनुष्य जिस कौज में हों ।

पृथक् ( पृथ=फँकना ) ( अव्य० ) जुदा, अलग, भिन्न, न्यारा ।

पृथक्करण ( पृथक्=जुदा, करण=करना ) ( पु० ) जुदा करना, अलग करना ।

पृथक्क्षेत्र ( पु० ) भिन्नक्षेत्र, अलग का खेत, जारजपुत्र, वर्णसंकर की माता जो यार से पुत्र पैदा करे ।

पृथक्जन ( वि० ) नीच, मूर्ख, पापी ।

पृथग्विधि ( वि० ) नाना रूप, बहुरूप ।

पृथा ( स्त्री० ) कुंती, पांडु की स्त्री और युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माँ, विस्तार, प्रक्षेप ।

पृथिकु ( प्रथु=विख्यात होना ) ( पु० ) यदुवंशियों का एक राजा और श्रीकृष्ण का पुरुष ।

पृथिवी ( प्रथु=विख्यात होना, फैलना ) ( स्त्री० ) धरती, धरणी, भूमि, जमीन ।

पृथिवीनाथ { ( पृथिवी=धरती, नाथ या पति=मालिक )  
पृथिवीपात { ( पु० ) राजा, नृपति, भूपति ।

पृथिवीपाल ( पृथिवी=धरती, पाल=बचाना ) ( पु० ) राजा, पृथिवीनाथ, भूपति ।

पृथु { ( पृथु=फँकना, या प्रथु=विख्यात होना ) ( पु० )  
पृथुक { सूर्यवंशियों का पाँचवाँ राजा, बालक, चिउरा,  
( वि० ) बड़ा, मोटा, चतुर, विशाल ।

पृथुल ( वि० ) महत्, बड़ा ।

पृथुदर ( पु० ) मेड़ा, मेप, बड़ा पेटवाला ।

पृथ्वी ( पृथु=बड़ी, चौड़ी, प्रथु=विख्यात होना, फैलना ) ( स्त्री० ) धरती, धरणी, भूमि, जमीन ।

पृथ्वीका ( स्त्री० ) बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कर्लोजी, स्याहजीरा ।

पृष ( पु० ) सोचना, वलेश, छोटा, दान, लाभ, छोटा करना ।

पृषत ( पु० ) मृगभेद, विभाग, हिस्सा, बिंदु, बूँद, छोट, बेल-बूटा, सूक्ष्म, पतला, वायु, हवा, सिंह ।

पृषदश्य ( पु० ) वायु, पवन, स्वाती-नक्षत्र, ४६ की संख्या, एक राजपि का नाम ।

पृषोदर ( पृष + उदर ) ( वि० ) सूक्ष्मोदर, छोटे पेट-वाला ।

पृष्ट ( प्रच्छ=पूछना ) ( वि० ) जिज्ञासित, पूछा गया ।

पृष्ठ ( पृष्=खींचना ) ( स्त्री० ) पीठ, पिछाई का अंग, हरएक चीज का पिछला भाग, ( पु० ) पिठौला, पुस्तक के पन्ने की एक छोर ।

पैई ( सं० पेटक, पिट्ट=झट्टा करना ) ( स्त्री० ) पिठारी ।

पैठ ( स्त्री० ) हाट, बाज़ार, मंडी ।

पैदा ( पु० ) तला, नीचे का भाग ।

पेखना ( सं० प्रेक्षण ) ( क्रि० सं० ) देखना, निरखना, खॉग बनाना, कीड़ा करना ।

पेखनिया ( पु० ) बहुरूपिया, कौतुकी ।

पेखवैया ( पु० ) निरीक्षक, देखनेवाला ।

पेखित ( वि० ) प्रेषित, भेजा हुआ ।

पैंग ( स्त्री० ) फूले का हिजला ।

पेच ( पु० ) घुमाव, मरोड़, काँटा, कीड़ा, पेंडन ।

पेचक ( पचि=फँलाना ) ( पु० ) उलझ, उलूक, पेचा ।

पेचा ( सं० पेचक ) ( पु० ) उलझ ।

पेट ( पिट्ट=झट्टा करना ) ( पु० ) उदर, जठर, गर्भ-

स्थान, कोख, गर्भाधान, बंदूक आदि की मुहड़ी, छेद, खोह, कंदरा, बंदूक, पिटारा, टोकरी, डब्बा, बिबिया ।

पेट आना ( मुहा० ) पेट चलना, बहुत झट्टा फिरना, बहुत दर्शन होना, दर्शन की बीमारी होना ।

पेट का दुःख देना ( मुहा० ) भूखों मारना ।

पेट का पानी न हिलना ( मुहा० ) यह उस जगह बोलता जाता है जब घोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिले झुले नहीं और न किसी तरह का दुःख पावे ।

पेट की आग ( मुहा० ) माँ-बाप का प्यार, संतान, औलाद, जड़के का दुःख न देख सकना ।

पेट की आग बुझाना ( मुहा० ) कुछ खाना, भूखे को कुछ खिलाना ।

पेट की बातें ( मुहा० ) मन की बातें, गुप्त बातें, छिपी बातें ।

पेट गड़गड़ाना ( मुहा० ) पेट गड़बड़ाना, पेट बोलना, पेट हड़बड़ाना ।

पेट गिरना ( मुहा० ) गर्भ गिरना, गाभ गिरना, अधूरा जाना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चे का गिरना ।

पेट जलना ( मुहा० ) बहुत भूखा होना ।

पेट दिखाना ( मुहा० ) अपनी गरीबी और भूख को जताना ।

पेट पालना ( मुहा० ) अपना निर्वाह करना, गुजरान करना, स्वार्य होना ।

पेटपीठ एक होना ( मुहा० ) बहुत दुबला होना, लामार होना ।

पेटपोलून ( मुहा० ) स्त्री का सबसे पिछला बालक ।

पेटपोस् ( मुहा० ) खाऊ, पेट, पेटार्थ, पेटपाल ।

पेट फूलना ( मुहा० ) बहुत हँसना, हँसी के मारे छोट-पेट होना, गर्भ रहना ।

पेट बढ़ाना ( मुहा० ) बहुत खाना, दूसरे के हिस्से पर हाथ बढ़ाना ।

पेट बाँधना ( मुहा० ) भूख से कम खाना ।

पेटभर ( मुहा० ) जीभर, भरपेट, अघाके ।

पेट भरना ( मुहा० ) खाना, खा चुकना, अघाना, तृप्त होना ।

पेट मारना ( मुहा० ) आत्मघात करना, अपघात करना, खुदकुशी करना ।

पेट में पैठना ( मुहा० ) दूसरे का भेद लेना, खुशामद को बातें करके मित्र बन जाना ।

पेट में लेना ( मुहा० ) सहना, संतोष रखना ।

पेट रहना ( मुहा० ) पेट से होना, गर्भिणी होना, गर्भ रहना ।

पेट लग जाना ( मुहा० ) भूखों मरना, बहुत भूखा होना ।

पेट लग रहना ( मुहा० ) बहुत भूखा होना ।

पेटवाली } ( मुहा० ) गर्भिणी, गर्भवती ।  
पेट से }

पेट से होना ( मुहा० ) गर्भिणी होना, पेट रहना ।

पेट हड़बड़ाना ( मुहा० ) दर्शन को हाजन होना, पेट गड़बड़ाना ।

पेटा ( पु० ) किसी पदार्थ का मध्य भाग, नदी का पाट, पिटारा, पिटारी ।

पेटारा ( पु० ) टोकरी ।

पेटार्थी } ( सं० पेट, और अर्थ=चाहनेवाला, अर्थ=चाहना  
पेटार्थू } या माँगना ) ( वि० ) खाऊ, पेट, पेटपाल ।

पेटिका ( पिट=इकट्ठा करना ) ( स्त्री० ) संदूक, पिटारा, पेटी, टोकरी, डब्बा ।

पेटिया ( पेट ) ( पु० ) सोधा, हर एक दिन का खाना ।

पेटो ( पिट=इकट्ठा करना ) ( स्त्री० ) पिटारी, कमरबंद, पेट पर बाँधने की चमड़े की बँधनी, छाती ।

पेट ( पेट ) ( वि० ) अपना पेट भरनेवाला, पेटार्थ, पेटार्थी, मभूखा, पेटपाल, खाऊ ।

पेटौखा ( पेट ) ( पु० ) पेट चलना, अतिसार-रोग, आँव ।

पेटा ( पु० ) कूमांड, कुम्हड़ा ।

पेट ( पु० ) रूख, तरु, वृक्ष, पौदा ।

पेटड़ा ( सं० पिट ) ( पु० ) एक प्रकार की मिठाई ।

पेटड़ी ( स्त्री० ) छोटा पेटड़ा, एक तरह का पान, नील की डाँठी, सुपारी ।

पेट ( पेट ) ( पु० ) नाभि के नीचे का भाग, तलपेट, पेटतल ।

पेम ( सं० प्रेम ) ( पु० ) प्यार, स्नेह ।

पेमी ( सं० प्रेमी ) ( वि० ) प्यारा, प्रीतम, प्रेमी, छोड़ी, मित्र ।

पेय ( पा=पीना ) ( पु० ) पानी, दूध, ( वि० ) पीने योग्य ।

१. ' पेयं पेयं श्रवणपुटं रामनामाभिरामम् ।'



पेरु ( पु० ) पक्षी-विशेष, बिलायती मुर्गा ।

पेलना ( सं० पेलन, पिल् या पेल्=जाना ) ( कि० सं० )

टेलना, ढकेलना, रेलना, धक्का देना, ठाँसना,  
निचोड़ना, आज्ञा भंग करना, वचन तोड़ना ।

पेल्य ( पु० ) दोष, अपराध, गर्भ ।

पेवड़ी ( स्त्री० ) पीतवर्ण, पीले रंग की बुकनी ।

पेवसी ( स्त्री० ) अमृत, सुधा, हाल की व्याई हुई  
गौ का दूध ।

पेश } ( वि० ) सुंदर, दल, कोमल, चतुर, निर्मल,  
पेशल } मनोहर, रुचिर ।

पेशगी ( स्त्री० ) अगाऊ, अग्रिम ।

पेशाव ( सं० प्रस्राव प्र, मु=चूना, वहना ) ( पु० ) मूत,  
मूत्र ।

पेशि ( पिश्=अंगविभाग ) ( पु० ) वज्र, अंडा ।

पेशी ( स्त्री० ) भूँजी, बड़ी कली, मियान, मांस, पुंज-  
समूह, गर्भ रहने की थैली, पिशाची या राक्षसी-  
विशेष ।

पेपक ( पु० ) मर्दक, पीसनेवाला ।

पेपण ( पु० ) पीसना ।

पेपण्णि } ( पिप्=पीसना ) ( स्त्री० ) चक्री, दलैती,  
पेपण्णि } जाती ।

पेपणीय ( वि० ) पीसने योग्य, मर्दनीय ।

पेपि ( पु० ) लोटा, बट्टा ।

पेपित ( वि० ) पीसा हुआ ।

पैचा ( पु० ) हाथ उधार, उधार, ऋण, बदला,  
पलटा ।

पैजनी ( स्त्री० ) घुँघुरू, पैर का एक गहना ।

पैङ्ग ( सं० पण्ड, पण्डू=जाना ) ( पु० ) पाँच, डग, क्रदम,  
पद, उँचान, ऊँची धरती ।

पैङ्गा ( सं० पण्ड, पण्डू=जाना ) ( पु० ) रास्ता, मार्ग,  
बाट, सड़क ।

पैंताना ( सं० पादान्त, पाद+अन्त ) ( पु० ) पाँचती,  
पाँचतल ।

पैंतालीस ( सं० पंचचत्वारिंशत्, पंच=पाँच, चत्वारिंशत्=  
चालीस ) ( वि० ) चालीस और पाँच, ४५ ।

पैंती ( स्त्री० ) पवित्री, कुशा की बनी झूँझूटी ।

पैंतीस ( सं० पंचत्रिंशत्, पंच=पाँच, त्रिंशत्=तीस ) ( वि० )  
तीस और पाँच, ३५ ।

पैंसठ ( सं० पंचषष्टि, पंच=पाँच, षष्टि=साठ ) ( वि० )  
साठ और पाँच, ६५ ।

पै ( सं० पयस् ) ( पु० ) दूध, पानी, ( सं० पर )  
( अव्य० ) परंतु, पर ।

पैकड़ा ( पु० ) बेड़ी, साँकल ।

पैकड़ी ( स्त्री० ) जंजीर, पैर में बाँधने की साँकल ।

पैकार ( पु० ) फेरीवाला, घूम-घूमकर माल खरीदने  
या बेचनेवाला ।

पैकी ( पु० ) मेले या बाज़ार में घूम-घूमकर हुक्का  
पिलानेवाला ।

पैखाना ( पु० ) दिशा जाने की जगह, मल त्यागने का  
स्थान ।

पैगंवर ( पु० ) नबी, ईश्वर का दूत ।

पैग्राम ( पु० ) संदेश ।

पैगू ( पु० ) एक प्रकार का हरा पत्थर, बरमा-देशका  
एक प्रांत ।

पैज ( पु० ) पण, होड़, प्रतिज्ञा, अहेद, कौज, वचन ।

पैठ ( स्त्री० ) हुंडी की दूसरी नक़ल, जब हुंडी खो  
जाती है तब पैठ कराते हैं, पैठना, पहुँच, भरोसा ।

पैठना ( सं० प्रविष्ट ) ( कि० अ० ) घुसना, धसना,  
प्रवेश करना ।

पैड़ी ( स्त्री० ) सीढ़ी, झीना, निसेनी ।

पैतरा ( पु० ) कुश्नी जड़ने या लट्टवाजी करने की एक  
चाक, गति-विशेष ।

पैतला ( वि० ) छिछला, उथला, उतान ।

पैतृक ( पितृ ) ( वि० ) पिता का, बाप का, वपौती,  
मौरूसी ।

पैदल ( सं० पादात् या पदाति ) ( पु० ) पियादा, पैरों  
से चलनेवाला, शतरंज की एक गोद, सिपाही ।

पैदा ( वि० ) प्रकट, उत्पन्न ।

पैदायश ( पु० ) जन्म, उत्पत्ति ।

पैदायशी ( वि० ) स्वाभाविक, जन्म से ही ।

पैदावार ( पु० ) मुताक़ा, उपज ।

पैदावारी ( स्त्री० ) पैदावार ।

पैन ( सं० पानीय ) ( पु० ) नाई, नाछा ।

पैना ( पु० ) आर, अंकुश, आँकुस, बैल के मारने  
का चाबुक, सीखा काँटा, ( वि० ) सीखा, तेज़,  
धारदार ।

पैनाना ( कि० स० ) तीक्ष्ण कराना, तेज कराना, शान धराना ।

पैनाली ( पु० ) नाखी, मोरी, पनारी ।

पैया ( पु० ) पहिया, चक्र, चक्का, धान आदि का वह अंश जिसमें छिन्नके के सिवा भीतर कुछ नहीं रहता ।

पैयाना ( पु० ) बिदा, यात्रा, प्रस्थान ।

पैर ( सं० पद ) ( पु० ) पाँव, चरण, कदम ।

पैरना ( कि० ग० ) तैरना, हेलना ।

पैरवी ( स्त्री० ) विनती, सुशामदा ।

पैराई ( स्त्री० ) पैरने की क्रिया या भाव, तैराई ।

पैराक ( पु० ) तैरनेवाला, पैरनेवाला ।

पैराव ( पु० ) गहरा, अधिक जल, पैरने योग्य जल ।

पैरी ( स्त्री० ) पैर का एक गहना, दायने का काम, दँवाई ।

पैला ( पु० ) काठ का पात्र-विशेष जिससे अन्न आदि नापा जाता है ।

पैवँदीघेर ( पु० ) बड़े बड़े घेर ।

पैगुन्य ( पु० ) अधमना, ओछापन, चुगलखोरी नीचपन ।

पैसा ( पु० ) ताँबे का सिक्का, धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

पैसा उड़ाना ( मुहा० ) बहुत खर्च करना, अंधाधुंध खर्च करना, दूसरे का धन चुरा लेना या ठग लेना ।

पैसा खाना ( मुहा० ) पैसा उड़ाना, बहुत खर्च करना, मजदूरी करके पेट भरना, रिशवत लेना, डकार जाना, विश्वासघात करके ले लेना ।

पैसा दुबोना ( मुहा० ) धन गँवाना ।

पैसा डूबना ( मुहा० ) धन बरबाद होना, रुपया-पैसा खो जाना ।

पैसे लगाना ( मुहा० ) धन खर्च करना, धन लगाना ।

पैसेवाला ( वि० ) धनवान्, दौलतमंद, एक पैसे का ।

पैसों से दरबार बाँधना ( मुहा० ) रिशवत देना, घूस देना ।

पैसार ( पु० ) पहुँच, पेंठ, प्रवेश ।

पेहँ ( पाना ) ( कि० स० ) पावेगा, पाओगे ।

पोआ ( पु० ) सँपोआ, साँप का छोटा बच्चा ।

पोआना ( कि० स० ) रोटी बेलाना, तपाना, घमाना ।

पोरस ( सं० पश्य=देख ) ( कि० वि० ) अलग हो, दूर हो, अरे, जब किरासो पर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और न छुआने के लिये भंगी यह शब्द बहुत बार बोला करता है ।

पोंकना ( कि० अ० ) हग मारना, पतले दस्त होना ।

पोंका ( पु० ) कीड़ा, कृमि, कीट ।

पोंगा ( पु० ) बाँस की गाँठ, ( वि० ) अनाड़ी, मूर्ख, छुँछा, खाली, शून्य ।

पोंगी ( स्त्री० ) बाँसुरी जिसको साँप पकड़नेवाले बजाते हैं, माँहर ।

पोंछुना ( कि० स० ) झाड़ना, फड़ों करना, साफ़ करना ।

पोखर } ( सं० पुष्कर ) ( पु० ) तालाब, ताल, झील,  
पोखरा } तड़ाग ।

पोगंड ( वि० ) विकलांग, नपुंसक, अंगहीन, कुपुरुष, ( पु० ) सोलह वर्ष की अवस्था ।

पोच ( फ्रा० "पुच" ) ( वि० ) नीच, तुच्छ, बुरा ।

पोट ( स्त्री० ) मोट, गाँठ, गठरी ।

पोटला ( पु० ) बड़ी गठरी ।

पोटली ( स्त्री० ) छोटी गठरी, मोटरो ।

पोटा ( पु० ) पखक, पेट की थैली, उदराग्नय कलेजा, उँगली का छोर, चिड़िया का बच्चा जिसके पर न निकले हों, बालक ।

पोढ़ा } ( सं० प्रोढ़ ) ( वि० ) बलवान्, कड़ा, ठोस,  
पोढ़ा } दृढ़, साहसी, वीर ।

पोढ़ाई } ( सं० प्रोढ़ता ) ( स्त्री० ) बल, कड़ापन,  
पोढ़ाई } दृढ़ता, ठोसाई, साहस ।

पोत ( पू=शुद्ध करना ) ( पु० ) बच्चा, बालक, ( स्त्री० ) नाव ।

पोत ( पु० ) स्वभाव, प्रकृति, गुण, बनावट, कौंच का दाना, मालगुजारी, शिशु, नौका, दस वर्ष का हाथी ।

पोतक ( पू=शुद्ध करना ) ( पु० ) बालक, बच्चा ।

पोतड़ा ( पु० ) बच्चे का बिछौना, गद्दतरा ।

पोतड़ी ( स्त्री० ) हल, झिल्ली, खेरी ।

पोतन ( वि० ) शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र, ( पु० ) पवित्र करनेवाला ।

पोतना ( कि० स० ) लीपना, लेसना ।

पोता ( सं० पोत ) ( पु० ) बेटे का बेटा, चंडकोश ।

पोतिया ( स्त्री० ) नहाने के समय पहनने का कपड़ा, गँवार लोगों के सिर पर बाँधने का कपड़ा, एक खिलौने का नाम ।

पोती ( सं० पौत्री ) ( स्त्री० ) बेटे की बेटी :

पोथा ( सं० पुस्त, पुस्त=आदर करना, या बाँधना ) ( पु० ) बड़ी पुस्तक, ग्रंथ ।

पोथी ( सं० पुस्ती, पुस्त=आदर करना, या बाँधना ) ( स्त्री० ) पुस्तक, बही, किताब ।

पोदना ( पु० ) एक पखेरू का नाम, बौना, टिंगना आदमी ।

पोना ( क्रि० स० ) पिरोना, गाथना, गूथना, गुहना, रोटी बेजना या बनाना ।

पोपनी ( स्त्री० ) बाजा-विशेष ।

पोपला ( वि० ) बे-दाँत का, दंतरहित, अदाँत, जिसके दाँत गिर गये हों ।

पोमचा ( पु० ) एक तरह का रंगीन कपड़ा ।

पोर ( सं० पर्व ) ( स्त्री० ) गाँठ, गिरह, दो गाँठों का बीच ।

पोरी ( सं० पर्व ) ( स्त्री० ) बाँस की अथवा गन्ने की गाँठ, छोटा पोर ।

पोला ( वि० ) झाली, छूँझा, कोमल, नर्म ।

पोलिटिकल आफिसर ( पु० ) राजनैतिक कर्मचारी ।

पोलिटिकल एजुकेशन ( पु० ) राजनीतिक शिक्षा ।

पोलिटिकल एजेंट ( पु० ) राज्य-प्रबंधकर्ता ।

पोलिटिकल डिपार्टमेंट ( पु० ) पोलिटिकल=राजनैतिक, डिपार्टमेंट=प्रकरण, विभाग ।

पोलिटिकलसभा ( स्त्री० ) राजनैतिक सभा ।

पोली ( वि० ) अनाड़ी, मूर्ख, अज्ञानी, खोखली ।

पोशाक ( स्त्री० ) कपड़ा, पहिनावा, वस्त्र ।

पोशीदा ( वि० ) गुप्त, छिपा हुआ ।

पोष ( पु० ) पालन, परवरिश ।

पोषक ( पुष्=पोसना, पालना ) ( पु० ) पोसनेवाला, पालनेवाला, रक्षक ।

पोषण ( पुष्=पोसना ) ( पु० ) पालन, भरण, रक्षा ।

पोषणीय ( पुष् + अर्थाय ) ( वि० ) रक्षा योग्य, पालन योग्य ।

पोषना } ( सं० पोषण ) ( क्रि० स० ) पालना, रक्षा  
पोखना } करना, प्रतिपालन करना ।  
पोसना }

पोषयितु ( पु० ) भर्ता, स्वामी, ख़ाविद ।

पोष्टा ( पु० ) पाखन करनेवाला ।

पोष्य ( वि० ) पोषने योग्य, पोषणीय ।

पोष्यपुत्र ( पोष्य=पाला हुआ, पुत्र=लड़का ) ( पु० ) लेपालक, दत्तकपुत्र, गोद लिया हुआ, सुतबन्ना ।

पोह ( स्त्री० ) भीर, तबका, बिहान, मुबह ।

पोहना ( क्रि० स० ) रोटी बनाना, पिरोना, गूँथना, जड़ना, डालना, घुसेड़ना ।

पोहारी ( वि० ) जो केवल दूध पीकर रहे ।

पौ ( स्त्री० ) पासे में का एका, वह जगह जहाँ बटोहियों को पानी पिछाया जाता है ।

पौड़ा ( सं० पृष्ट, या पौष्ट, पृष्ठि=मलना ) ( पु० ) एक प्रकार की उस ।

पौंडू ( पु० ) भीम के शंख का नाम, मोटा पौड़ा, ईख, देश-विशेष ।

पौंडूक ( पु० ) एक जाति-विशेष, ईख, एक राजा का नाम ।

पौढ़ना ( क्रि० अ० ) सोना, लेटना, आराम करना ।

पौतालिक ( पु० ) मूर्ति पूजनेवाला ।

पौत्र ( पुत्र ) ( पु० ) पोता, बेटे का बेटा ।

पौत्री ( पुत्र ) ( स्त्री० ) पोती, बेटे की बेटी ।

पौधा ( पु० ) नया पेड़, केड़ा, पौदा ।

पौन ( सं० पवन ) ( स्त्री० ) हवा, वायु ।

पौन ( सं० पादोन, पाद=वाया हिस्सा, उन=कम ) ( वि० ) तीन चौथाई, चार भाग का तीन ।

पौना ( पु० ) भरना, भरनी, एक छोह की चीज़ जिसमें बहुत से छेद होते हैं और जिससे पकीड़ी आदि तली जाती है ।

पौर ( स्त्री० ) बड़ा दरवाज़ा, द्वार, फाटक ।

पौराणिक ( पुराण ) ( वि० ) पुराणवक्ता, पुराण बाँचने वाला, पुराण पढ़ा हुआ पंडित ।

पौरिया ( पौर ) ( पु० ) ड्योदीवान, द्वारपाल, दरबान, छोटी खड़ाऊँ ।

पौरी ( स्त्री० ) पौर, ड्योदी, द्वार ।

पौरुष ( पुरुष ) ( पु० ) पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पराक्रम, बल, जोर, पुसा ।

पौर्णमासी ( पूर्ण=पूरा, मास=महीना, या चाँद ) ( स्त्री० )

पूर्यमासी, पूर्यमा, पूनो ।

पौलस्त्य ( वि० ) पुलस्त्य-संबंधी, पुलस्त्य का, ( पु० )

विभीषण, रावण, कुंभकर्ण, कुबेर ।

पौली ( स्त्री० ) पीर, पीरी ।

पौवा ( सं० पाद=चाथा भाग ) ( पु० ) चौथा भाग,

पावभर का बाँट ।

पौप ( पु० ) ' पूप ' शब्द को देखो ।

पौष्टिक ( पु० ) पुष्ट, पुष्टक, बलवर्द्धक ।

पौसला ( पु० ) प्याऊ, पनशाला ।

पौह ( पु० ) पौसला ।

प्याऊ ( पु० ) पौसला ।

प्यार ( सं० प्रीति, या प्रेम ) ( पु० ) पियार, प्रेम, प्रीति,

नेह, बॉह, तुलार, मुहब्बत ।

प्यारा ( सं० प्रिय ) ( वि० ) प्रेमी, स्नेही ।

प्यारा जानना ( मुहा० ) आदर करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ समझना ।

प्यारा ( सं० प्रिया ) ( स्त्री० ) पियारी, प्रिया, ( वि० ) मनोहर ।

प्यास ( सं० पिपासा ) ( स्त्री० ) पियास, तृष्णा, तृषा, पीने की चाह ।

प्यास बुझाना ( मुहा० ) प्यास मिटाना, कुछ पी लेना, पानी पिछाना ।

प्यास लगना ( मुहा० ) प्यासा होना ।

प्यासा ( सं० पिपासित ) ( वि० ) पियासा, तृषावंत, पानी चाहनेवाला ।

प्यासे मरना ( मुहा० ) बहुत प्यासा होना ।

प्र ( उपप० ) पहले, आगे, बढ़के, दूर, श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर, मुख्य, बहुत, अधिक, अतिशय, प्रारंभ, शुरू, चारों ओर से, सब तरह से, उत्पत्ति, पैदा होना ।

प्रकट ( प्र=सब तरह से, कट=घेरना ) ( पु० ) प्रकट, प्रत्यक्ष, चौड़े, जाहिर, स्पष्ट, खुलासा ।

प्रकटन ( पु० ) प्रकाश करना, जाहिर करना ।

प्रकटित ( वि० ) प्रकशित, रोशन ।

प्रकंप ( प्र=बहुत, कम्प=कापना ) ( पु० ) कांपना, थर-थराहट, कंपकंपी ।

प्रकंपन ( पु० ) नरक-विशेष, वायु ।

प्रकर ( पु० ) दक्ष, गिरोह, समूह, झुंड ।

प्रकरण ( प्र=बहुत या शुरू, कृ=करना ) ( पु० )

भूमिका, आशय, बात, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसंग, कांड, खंड, विषय, अध्याय, सरिस्ता, अवसर, मौक़ा, विभाग ।

प्रकरी ( स्त्री० ) नाट्यशाला, रंगशाला ।

प्रकर्ष ( प्र=बहुत या ऊपर, कृष=खींचना ) ( पु० )

उत्तमता, बढ़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष ।

प्रकांड ( पु० ) वृक्ष की जड़ और डाली के बीच की लकड़ी, वृक्ष का धड़ या स्तंभ, प्रशस्तवाणी, आशीर्वाद, ( वि० ) विशाल, वृहद्, बड़ा ।

प्रकाम ( वि० ) यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छापूर्वक ।

प्रकार ( प्र, कृ=करना ) ( पु० ) भेद, भांति, ढंग, डोझ, तरह, शैति, सादृश्य, क्रिस्म ।

प्रकाश ( प्र=बहुत, काश=चमकना ) ( पु० ) उजाला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, फैलाव, प्रसिद्ध, ( वि० ) प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल, उजागर, प्रकाशित, चमकता हुआ, ( कि०वि० ) खुल्लमखुला, साफ़-साफ़ ।

प्रकाशक ( प्रकाश ) ( पु० ) प्रकाश करनेवाला, रोशन करनेवाला, जाहिरकुनिदा, पुस्तक छपवाकर बेचनेवाला ।

प्रकाशान्मन् ( प्रकाश+आत्मन् ) ( पु० ) सूर्य, परमेश्वर ।

प्रकाशनाय } ( दि० ) प्रकाशनार्ह, प्रकाश योग्य ।  
प्रकाश्य

प्रकाशित ( प्रकाश ) ( वि० ) प्रकट, प्रत्यक्ष, जाहिर, उजागर, प्रसिद्ध ।

प्रकीर्ण ( कृ=फैलना ) ( वि० ) विस्तृत, फैला हुआ, ( पु० ) चमर, चौर, छरव ।

प्रकीर्तन ( प्र=बहुत, कृत=रहना ) ( पु० ) वर्णन, कथन, भजन ।

प्रकीर्तित ( वि० ) कथित, वर्णित ।

प्रकृत ( प्र=शुरू, या पहले, कृ=करना ) ( वि० ) किया हुआ, शुरू किया हुआ, ठीक-ठीक, यथार्थ, सच ।

प्रकृति ( प्र=बहुत, कृ=करना ) ( स्त्री० ) स्वभाव, गुण, माया, परमेश्वर की शक्ति, किसी वस्तु की असली दशा, एक छंद का नाम जिसके हर एक पद में इकीस अक्षर होते हैं, राजा, मंत्री, मित्र, खजाना,

देश और गढ़ इन सबके समूह को भी प्रकृति कहते हैं ।  
 प्रकीर्ण ( कृ=कैलाना ) ( वि० ) बिखरा हुआ, छिटका हुआ ।  
 प्रकृष्ट ( प्र=बहुत अथवा ऊपर, कृ=खींचना ) ( वि० ) उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।  
 प्रकोष्ठ ( पु० ) कोठे के नीचे का कोठा, अटारी, हाथ की कलाई से कोहनी तक का हिस्सा, कलाई और कोहनी के मध्य का भाग ।  
 प्रक्रम ( प्र=शुरू, क्रम=जाना ) ( पु० ) प्रारंभ, शुरू, पर्यटन, जाना, अवकाश, अवसर, गणना ।  
 प्रक्रिया ( प्र+कृ=करना ) ( स्त्री० ) विभाग, प्रकरण, रीति, प्रकार, विधि, व्यवहार, बढ़ती, उन्नति, महिमा, प्रभाव, प्रताप, गणना, स्थल, अधिकार ।  
 प्रक्लिप्त ( क्लिप्त=तर होना ) ( वि० ) तृप्त, अघाना, आसूदा ।  
 प्रक्षालन ( प्र=बहुत, क्षल्=शुद्ध करना ) ( पु० ) पखारना, धोना, शुद्ध करना ।  
 प्रक्षेप ( क्षिप्=फेंकना ) ( पु० ) फेंकना, त्याग करना ।  
 प्रखर ( प्र=बहुत, खर=तीखा ) ( वि० ) बहुत तीखा, तेज, ( पु० ) घोड़े-हाथी का बख्तर, पाखर, घोड़े का चारनामा ।  
 प्रखरांशु ( पु० ) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण ।  
 प्रख्यात ( प्र=बहुत, ख्या=प्रसिद्ध होना ) ( वि० ) प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर, प्रतिष्ठित, मुञ्जङ्गिज्ज ।  
 प्रगट् ( प्र=प्रकट ) ( वि० ) प्रसिद्ध, ज़ाहिर, परगट् ( प्रत्यय ) ।  
 प्रगटना ( प्र=प्रकट ) ( कि० अ० ) प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना, पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना ।  
 प्रगल्भ ( प्र=बहुत, गल्भ=टीठ होना ) ( वि० ) धृष्ट, शोख, डीठ, निरुत, साहस, दृढ़, प्रबल, सामर्थ्य ।  
 प्रगल्भता ( प्रगल्भ ) ( स्त्री० ) डीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता, टिठाई ।  
 प्रगाढ़ ( वि० ) दृढ़, कठोर, अधिक, बहुत ।  
 प्रगुण ( पु० ) उत्तम स्वभाव, उत्तम प्रकृति, ( वि० ) सरल, उदार ।  
 प्रग्रह ( पु० ) लगाम, हथकड़ी-बेड़ी, तराजू की रस्सी, किरण, चंदन, वेध, भुजा, बाँधने की रस्सी ।  
 प्रग्राह ( पु० ) पगहा, बाँधने की रस्सी ।

प्रघरी ( स्त्री० ) कुल्हिया, घरिदा जिसमें सोना-चाँदी गलाया जाता है ।  
 प्रघ्राण ( पु० ) बरांडा, बरामदा, मकान के आगे का सायबान ।  
 प्रचंड ( प्र=बहुत, चण्ड=डरावना ) ( वि० ) बहुत डरावना, भयानक, बहुत तीखा, प्रबल, बहुत क्रोधी, अत्यंत गर्म अथवा जलता हुआ, अनसहा, न सहने योग्य, असह्य, अत्युग्र, उत्कृष्ट, तेज ।  
 प्रचलन ( पु० ) रीति, व्यवहार, विस्तार, प्रचार, व्यापकता, फैलाव ।  
 प्रचलित ( प्र=आगे, चल=चलना ) ( वि० ) व्यवहारी, चलनसार, वर्तमान, जिसका चलन हो, जो चलता हो अथवा व्यवहार में आता हो, जैसे—प्रचलित सिका, प्रचलित भाषा ।  
 प्रचार ( प्र=बहुत या आगे, चर्=जाना ) ( पु० ) चखन, व्यवहार, रीति, प्रकट करना, फैलाव, विस्तार ।  
 प्रचारक ( वि० ) प्रकाशक, प्रेरक, विस्तारक, फैलाने-वाला ।  
 प्रचारना ( प्र=प्रचारण, प्र=आगे, चर्=जाना ) ( कि० सं० ) ललकारना, पुकारना ।  
 प्रचुर ( अत्य० ) बहुत, अधिक ।  
 प्रचुरपुरुष ( पु० ) चोर, डाकू, तरकर ।  
 प्रचुरवर्ग ( पु० ) साथी-संगता, हमराही ।  
 प्रचोदित ( वि० ) नियोजित, प्रेरित, जाने की आज्ञा पाया हुआ ।  
 प्रचुद्ध ( छुद्ध=आश्चर्यजन ) ( पु० ) उत्तरीय, डपट्टा, ढकन ।  
 प्रचुद्धपट ( पु० ) परदा, कनात, चिक ।  
 प्रचुद्ध ( छुद्ध=ढापना ) ( वि० ) गुप्त, ढका हुआ, अदृश्य ।  
 प्रच्युत ( वि० ) पदच्युत, पतित, गिरा हुआ ।  
 प्रजरित ( वि० ) जला हुआ, दग्ध ।  
 प्रजल्प ( पु० ) कथा, कहानी, क्रिस्ता, निरर्थक वचन ।  
 प्रजा ( प्र=बहुत, जन्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) संतान, प्राणी, सृष्टि, राज के लोग, रैयन, अधिकार, स्थित जन ।  
 प्रजाधिकारीराज्य ( पु० ) जम्हूरी सत्तनत, जिस राज्य में प्रजा ही सब राज-काज करे, राजा कोई न हो ।

**प्रजापति** ( प्रजा+पति ) ( पु० ) सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनानेवाला, ब्रह्मा, दत्त, कश्यप आदि दस मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहलेपहल पैदा किया और सृष्टि बनाने का काम सौंपा। उनके नाम—१ मरीचि, २ अग्नि, ३ अंगिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७ प्रचेता, ८ वशिष्ठ, ९ भृगु, १० नारद, और कितने आचार्य कहते हैं कि प्रजापति सात हैं और कुछ दत्त, नारद और भृगु इन तीनों ही को प्रजापति कहते हैं और कुछ ग्रंथकार इक्कीस प्रजापति बतलाते हैं, राजा, बाप, पिता, जमाई, जामाता, आग, सूर्य, कुम्हार।

**प्रजारना** ( प्र० प्रः+जलन ) ( क्रि० म० ) जारना, जलाना।

**प्रजावती** ( स्त्री० ) बड़े भाई की स्त्री, वह स्त्री जिसके संतान हो।

**प्रजाशन** ( प्रजा+प्रशन, प्रश्न=भक्षण करना ) ( पु० ) प्रजा को दुःख देना, प्रजा का नाश करना।

**प्रजाशासन** ( प्रजा+शासन, शास्=गिनाना ) ( पु० ) प्रजा को सिखाना, दंड देना, सजा देना।

**प्रजेश** } ( प्रजा+ईश या ईश्वर ) ( पु० ) दक्षप्रजा-  
**प्रजेश्वर** } पति।

**प्रज्ञ** ( पु० ) पंडित, बुद्धिमान्।

**प्रज्ञा** ( प्र=बहुत, ज्ञा=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) बुद्धि, मति, समझ, सरस्वती।

**प्रज्ञाचक्षु** ( पु० ) धृतराष्ट्र, चक्षुहीन, बुद्धिचक्षुवाला।

**प्रज्ञापत्र** ( फा० इस्तेफना ) ( पु० ) उसे कहते हैं जिसमें गुरु अथवा आचार्य से पूछकर सांसारिक कार्य किये जायें।

**प्रज्वलित** ( प्र=बहुत, ज्वल्=जलना या चमकना ) ( वि० ) ज्योतिमान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला।

**प्रडीन** ( प्र, डी=उड़ना ) ( पु० ) उड़ना, पक्षी की गति।

**प्रण** ( सं० पण ) ( पु० ) प्रतिज्ञा, वन, होश, नियम, पण, कौल

**प्रणत** ( प्र=बहुत, नप्=भुकना ) ( वि० ) अधीन, झुका हुआ, नम्र, भक्त, दीन, शरणागत।

**प्रणतपाल** ( पु० ) दीनपालक।

**प्रणति** ( प्र=बहुत, नप्=भुकना ) ( स्त्री० ) नमस्कार, प्रणाम, दंडवत्।

**प्रणय** ( प्र, नी=ले जाना ) ( पु० ) प्यार, प्रेम, प्यार से माँगना, भरोसा, मुक्ति, नम्रता, सुशीलता, विनती, स्तुति।

**प्रणयन** ( पु० ) निर्माण, रचना, ग्रंथन।

**प्रणयिनी** ( स्त्री० ) प्रिया, भार्या, स्त्री, प्रियतमा।

**प्रणयी** ( वि० ) स्नेही, प्रेमी।

**प्रणव** ( प्र=बहुत, न्=स्तुति करना ) ( पु० ) ओं, अंकार, तीनों देवताओं का मंत्र।

**प्रणष्ट** ( नश=नाश करना ) ( वि० ) नाश हो गया, विशेष नाश।

**प्रणाम** ( प्र=बहुत, नप्=भुकना ) ( पु० ) नमस्कार, दंडवत्, प्रणति।

**प्रणमित** ( वि० ) प्रणाम करनेवाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम कराया हुआ।

**प्रणम्य** ( वि० ) प्रणाम योग्य, नमस्करणीय या प्रणाम करके।

**प्रणाली** ( प्र=बहुत अथवा चारों ओर में, नल्=बाधना या नङ्=गिरना ) ( स्त्री० ) नाली, पनाला परंपरा की रीति, क्रदामत।

**प्रणिधान** ( धा=धारण, पोषण करना ) ( पु० ) मन में ध्यान करना, यगौर सोचना, समाधिभेद।

**प्रणिधि** ( प्रणि+धा=धारण करना ) ( पु० ) चर, दूत, जासूस।

**प्रणिपात** ( प्र=बहुत, नि=नीच और पत्=गिरना ) ( पु० ) प्रणाम, दंडवत्, सलामी।

**प्रताप** ( प्र=बहुत, तप्=तपना ) ( पु० ) तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, अक्रबाल, शूरता, वीरता, प्रभाव, ताप, गर्मी, एक आरमत्यागी देशभक्त राजा।

**प्रतापवान्** } ( प्रताप ) ( वि० ) तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।  
**प्रतापी**

**प्रतारक** ( वि० ) धूर्त, बंचक, दुष्ट।

**प्रतारण** ( तृ=पार जाना, तेरना ) ( पु० ) प्रवंचना, छलना।

**प्रति** ( उपस० ) को, के तर्ह, की ओर, पास, सामने, विरुद्ध, उलटा, विपरीत, इसकी अपेक्षा, इसके देखने, बनिश्चत, ऊपर, पर, लगभग, जिये, बास्ते,

विषय में, अनुसार से, हरएक की एक-एक, सब, पीछे, फिर, पीछा, एवज, बदले में, पलटे में, जगह में, स्थान में, आपस में, बराबर, समान, सदृश, नक़ल, पुस्तक, जिल्द ।

प्रतिउपकार ( सं० प्रत्युपकार, प्रति=पीछा, उपकार=भला ) ( पु० ) पीछे उपकार, उपकार का बदला ।

प्रतिकार } ( प्रति=बदले में, क=करना ) ( पु० ) वैर  
प्रतीकार } का बदला, पलटा, दुःख दूर करने का उपाय, हलाज, निवारण, वर्जन, बदला, एवज ।

प्रतिकारक ( पु० ) निवारक, नासिख ।

प्रतिकार्य ( वि० ) निवार्य, रोकने योग्य ।

प्रतिक्रिया ( स्त्री० ) बदला, प्रतीकार ।

प्रतिकूल ( प्रति=उलटा वा विरुद्ध, कूल=पल, कूल=ढकना ) ( वि० ) उलटा, विरुद्ध, विमुख, बखिलाफ़ ।

प्रतिक्षण ( प्रति=हरएक, क्षण=पल ) ( कि० वि० ) पल-पल में, हरएक पल, हरदम, हरवक़्त ।

प्रतिग्रह ( प्रति=ग्रह, ग्रह=लेना ) दान लेना, ख़ैरान लेना ।

प्रतिग्रहण ( पु० ) अदला-बदला, आदान-प्रदान, ग्रहण, स्वीकार ।

प्रतिघात ( प्रति=पीछा, घात=मारना ) ( पु० ) उलट के मारना, मार के बदले मार, आघात, रुकावट, बाधा ।

प्रतिच्छा ( स्त्री० ) इतिज़ारी ।

प्रतिच्छापा ( प्रति=बग़ावत, छापा ) ( स्त्री० ) प्रतिबिम्ब, परछाईं, छाया ।

प्रतिज्ञा ( प्रति=आपस में, ज्ञा=जानना ) ( स्त्री० ) नचन, प्रण, नेम, कौलकरार ।

प्रतिज्ञात ( वि० ) स्वीकृत, प्रतिज्ञा किया हुआ ।

प्रतिज्ञापत्र ( पु० ) प्रणपत्र, अहदनामा ।

प्रतिदान ( पु० ) दानोपरि दान, दान के बाद दान, दान के बदले दान, धरोहर वापस देना, थानी लौटाना ।

प्रतिदिन ( प्रति=हरएक, दिन ) ( कि० वि० ) हरएक दिन, दिन-दिन, नित्य, प्रत्यह ।

प्रतिध्वनि ( प्रति=पीछा अथवा बराबर, ध्वनि=शब्द ) ( स्त्री० ) प्रतिशब्द, गूँज, शब्द प्रति शब्द ।

प्रतिनिधि ( प्रति=एवज या बराबर, नि=में, धा=गठना ) ( पु० ) एवज, एक की जगह दूसरा, सरसता, प्रतिमा, मूर्ति, मुखतार, प्रतिभू ।

प्रतिपक्षी ( प्रति=उलटा, पक्ष=तर्फ ) ( पु० ) वैरी, शत्रु, रिपु, दुश्मन ।

प्रतिपत्ति ( पत्=गिरना ) ( स्त्री० ) प्रवृत्ति, बोध, निष्पत्ति, प्राप्ति, आगल्भ गौरव, पदप्राप्ति, दान, प्रक्षेप, दीनता ।

प्रतिपद ( प्रति, पद=जाना, और प्रति उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ शुरू होना ) ( स्त्री० ) परिवा, पहली तिथि ।

प्रतिपक्ष ( वि० ) स्वीकृत, ज्ञात, मान्य, सम्मानीय ।

प्रतिपन्न ( पद=जाना ) ( वि० ) विज्ञात, अङ्गीकृत, प्राप्त, शरणागत ।

प्रतिपादक ( पु० ) कहनेवाला, निरूपक, मुञ्जारिज, प्रकाशक, बोधक, पुष्ट करनेवाला ।

प्रतिपादन ( पु० ) त्याग, कथन, दान, प्रतिपत्ति, निरूपण, समर्पण, बोध करना, जताना, संपादन, पूर्ति ।

प्रतिपाद्य ( वि० ) बोधनीय, विश्वास योग्य, कथन, योग्य, प्रकटित, ज्ञातव्य ।

प्रतिपाल ( प्रति, पाल=पालना ) ( पु० ) पोषण, भरण, पालन, प्रतिपालन ।

प्रतिपालक ( प्रति, पाल=पालना ) ( पु० ) पालनेवाला, राजा, रक्षक ।

प्रतिपालन ( प्रति, पाल=पालना ) ( पु० ) पोषण, भरण, पालन, रक्षा, बचाव, परवरिश ।

प्रतिपालना ( में० प्रतिपालन ) ( कि० सं० ) पालना, पोषना ।

प्रतिपालित ( वि० ) रक्षित, महकूज ।

प्रतिपुरुष ( पु० ) प्रतिनिधि, हरएक आदमी ।

प्रतिप्रसव ( पु० ) किसी कार्य या वस्तु को एक बार मना करके फिर आज्ञा देना ।

प्रतिफल ( पु० ) बदला, मावज़ा, एवज ।

प्रतिबंधक ( प्रति, बन्ध=बाधना ) ( पु० ) बाधक, रोकने-वाला, रुकावट, रोक, बाधा ।

प्रतिबंधन ( पु० ) रोज़ाना, निबंधन ।

प्रतिभट ( पु० ) रिपु, दुश्मन, विपक्षी ।

प्रतिभा ( प्रति, भा=चमकना ) ( स्त्री० ) समझ, बुद्धि, बुद्धि की तेज़ी, उद्योति, चमक, ज्ञान ।

प्रतिभाग ( पु० ) अंश, राज्य-भाग ।

प्रतिभू ( प्रति=प्रतिनिधि वा पुत्र, भू=होना ) ( पु० )  
जामिन, जमानतदार ।

प्रतिभूति ( स्त्री० ) जमानत, जामिनी ।

प्रतिम ( वि० ) समान, सदृश ।

प्रतिमा ( प्रति=वगवर, मा=नापना, अर्थान् किमी के वगवर  
बनाना ) ( स्त्री० ) मूर्ति, पुतली ।

प्रतिमान ( पु० ) प्रतिबिंब, परछाईं ।

प्रतिमाला ( स्त्री० ) जयमाला, मंडल, परिधि, वैत-  
बाजी ।

प्रतिमास ( प्रति=हर एक, मास=महीना ) ( कि० वि० )  
महीने का महीने, हर महीने, महीने-महीने ।

प्रतिमुख ( पु० ) किसी चीज का पिछला भाग ।

प्रतिमूर्ति ( स्त्री० ) प्रतिभा ।

प्रतियोगिन् ( युन=मिलना, जोड़ना ) ( वि० ) विरुद्धपक्ष,  
विरोधी, उद्योगी, प्रतिकूल ।

प्रतिरंभ ( रभू=प्रसक्त होना ) ( पु० ) भेंट, मिलाप,  
आलिंगन, क्रोध, कोप ।

प्रतिरूप ( प्रति=वगवर, रूप=आकार ) ( पु० ) प्रतिबिंब,  
मूर्ति, ( वि० ) समान, सदृश ।

प्रतिरोध ( प्रति + रुध=रोकना ) ( पु० ) निरोध, रोक,  
प्रतिबंध, निरादर, अप्रियंभ ।

प्रतिरोधक ( पु० ) चोर, तस्कर, डाकू ।

प्रतिर्लिपि ( स्त्री० ) नकल ।

प्रतिलेखक ( पु० ) मकतूबअलेह या जिसको पत्र  
लिखा जाय ।

प्रतिलोम ( वि० ) विलोम, उलटा, वाम, बायें, विररीत,  
अधम, नीच, कुत्सित, ( पु० ) रोम-रोम, हर एक  
रोम ।

प्रतिलोमन ( वि० ) वर्णसंकर, शूद्र पुरुष और उत्तम  
वर्ण की स्त्री से उत्पन्न ।

प्रतिवचन } ( पु० ) प्रत्युत्तर, उत्तर ।  
प्रतिवाक्य }

प्रतिवादी ( पु० ) विरोधी, मुद्दालेह ।

प्रतिवाधक ( पु० ) बाधा करनेवाला, निवारण करने-  
वाला ।

प्रतिवास ( पु० ) सल्लिकट, पड़ोस ।

प्रतिवासर ( पु० ) प्रतिदिन ।

प्रतिवासी ( वस्=रहना ) ( पु० ) पड़ोसी, हमसाया ।

प्रतिविधान ( पु० ) कथनोपकथन, कहे को कहना,  
दुबारा कहना, निवारण, प्रतीकार, प्रतिवाधा ।

प्रतिबिंब ( प्रति=पीछा, वा समान, बिंब=छाया ) ( पु० )  
परछाईं, छाया, प्रतिरूप, अक्स ।

प्रतिवेश ( पु० ) पड़ोस ।

प्रतिवेशी ( वि० ) पड़ोसी ।

प्रतिशब्द ( पु० ) प्रतिध्वनि, गूँज ।

प्रतिश्याय ( पु० ) पीनस का रोग, जुकाम, सरदी ।

प्रतिश्रव ( सु=सुनना ) ( पु० ) श्रंगीकार, मंजूर,  
स्वीकार ।

प्रतिश्रुत ( वि० ) श्रंगीकृत, स्वीकृत ।

प्रतिश्रुति ( वि० ) स्वीकृति, अनुमति ।

प्रतिषिद्ध ( वि० ) निषेधित, निषेध किया हुआ ।

प्रतिषेध ( सिध्=करना ) ( पु० ) निषेध, निरोध,  
सुमानश्चत, मना करना, मनाही ।

प्रतिष्क ( पु० ) दूत ।

प्रतिष्ठ ( वि० ) प्रस्थात, प्रसिद्ध, मशहूर ।

प्रतिष्ठा ( प्रति, था=टहरना ) ( स्त्री० ) बड़ाई, गौरव,  
मान, यश, आदर, इज्जत, सम्मान, नाम, देवता  
के नये मंदिर को अथवा देवता की नई मूर्ति को  
संस्कारों से पवित्र करना, स्थापना ।

प्रतिष्ठासूचक ( प्रतिष्ठा + सूच=जताना ) ( पु० ) इज्जत  
को ज्ञाहिर करनेवाला, सम्मानप्रकाशक ।

प्रतिष्ठित ( प्रतिष्ठा ) ( वि० ) नामी, नामवर, प्रतिष्ठा-  
वाला, यशस्वी, गौरवयुक्त, सम्मानित, आदरित,  
मुञ्चइज्जत, मुकर्रम, गिरामी, स्थापित, संस्कार  
किया हुआ ।

प्रतिसर्ग ( प्रति, सृज्=पैदा करना ) ( पु० ) प्रलय, नाश,  
क्रयामत ।

प्रतिसीरा ( स्त्री० ) परदा, यवनिका ।

प्रतिस्पर्द्धा ( स्त्री० ) डाढ़, जलन, ईर्ष्या, मस्सरता ।

प्रतिस्पर्द्धी ( वि० ) उहड़ ।

प्रतिहत ( प्रति, हत्=मारना ) ( वि० ) नष्ट, हर्षहीन,  
उद्विग्न, तिरस्कृत, जपमानित ।

प्रतिहार ( पु० ) द्वारपाल, ड्योदीदार, सिपाह, द्वार,  
दरवाजा, रथाग, ग्रहण, उपाय ।

प्रतिहारक ( प्रति, ह्=हरना ) ( पु० ) इंद्रजाजी,  
मायावी, बाजीगर, उद्योगी, उद्धारक ।



प्रतिहारी ( स्त्री० ) ज्योद्दीदार, द्वारपाल, पौरिया, दरबान ।

प्रतिहिंसा ( स्त्री० ) अपकार का बदला ।

प्रतीक ( पु० ) देश-विशेष, अंग, अवयव, व्याख्या में किसी श्लोक या वाक्य का उद्धृत एक अंश या चरण ।

प्रतीकार ( प्रति, कृ=कहना ) ( पु० ) उपाय, यत्न, तद्दीर, चारा, धैर-शोधन, प्रतिफल, प्रतिशोध, बदला ।

प्रतीक्षक ( पु० ) राह देखनेवाला, प्रत्याशी, मुंतज़िर ।

प्रतीक्षा ( प्रति=हरएक बार, ईक्ष्=देखना ) ( स्त्री० ) बाट देखना, प्रत्याशा, इंतज़ारी, अपेक्षा ।

प्रतिकाश ( पु० ) समान, तुल्य, सदृश, उपमा ।

प्रतीची ( स्त्री० ) पश्चिम-दिशा ।

प्रतीचीन ( वि० ) पश्चिम दिशा में उत्पन्न या स्थित ।

प्रतीच्य ( वि० ) पश्चिमी ।

प्रतीत ( प्रति, इण्=जाना ) ( वि० ) प्रसिद्ध, विख्यात, नामी, जाना हुआ, सिनासा, हर्षित ।

प्रतीत ( स० प्रतीति पु० इण्=जाना ) ( स्त्री० ) भरोसा, विश्वास, परतीति ।

प्रतीत करना ( मुहा० ) परीक्षा करना, भरोसा करना ।

प्रतीति ( प्रति + इति ) ( स्त्री० ) विश्वास, निश्चय, पुनमाद, आदर, हर्ष ।

प्रतीप ( प्रति+अप्=जाना ) ( वि० ) प्रतिकूल, नाफर्मा-बरदार, विपरीत, ( पु० ) शस्त्र, राजा शान्तनु का पिता ।

प्रतीयमान ( वि० ) बोध, अनुभूत ।

प्रतीहार ( पु० ) संधि या मेल का एक भेद ।

प्रतोद् ( पु० ) पैना, चाबुक, सामगान-विशेष ।

प्रतोलो ( स्त्री० ) चौड़ी सड़क, शाही राह ।

प्रत्न ( वि० ) पुराना, प्राचीन ।

प्रत्नतत्त्व ( पु० ) पुरातत्त्व ।

प्रत्यंगिरा ( पु० ) सिरस का पेड़, विसखोपरा, नात्रिकों की एक देवी का नाम ।

प्रत्यंचा ( स्त्री० ) चिह्ना, धनुष की डोरी ।

प्रत्यंजन ( पु० ) अंजन लगाकर आँखें अच्छी करना ।

प्रत्यंतपर्वत ( पु० ) वह छोटा पहाड़ जो किसी बड़े पहाड़ के पास हो ।

प्रत्यक् ( कि० वि० ) पीछे, पश्चिम ।

प्रत्यक् चेतन ( पु० ) अंतरात्मा, परमेश्वर ।

प्रत्यक्ष ( प्रति=सामने, अक्ष=आँख ) ( वि० ) सम्मुख, सामने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध ।

प्रत्यक्षदर्शी ( पु० ) गवाह, साक्षी ।

प्रत्यक्षवादी ( पु० ) वह मनुष्य जो इंद्रियजन्य ज्ञान को ही सत्य माने, जैसे चावोक् ।

प्रत्यग्र ( वि० ) नया, ताज़ा ।

प्रत्यनीक ( पु० ) अर्थालंकार-विशेष, शत्रु, दुश्मन, मुकाबला करनेवाला ।

प्रत्यनुमान ( पु० ) दूसरे के अनुमान को खंडन करने में किया हुआ अनुमान ।

प्रत्यपकार ( पु० ) अपकार के करने में किया गया अपकार ।

प्रत्यभिज्ञा ( स्त्री० ) स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान ।

प्रत्यय ( प्रति=फिर, इण्=जाना ) ( पु० ) भरोसा, विश्वास, प्रतीति, श्रद्धा, पुनवार, ज्ञान, व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के अंत में जोड़ा जाता है, ह्रस्वमानवी ।

प्रत्याख्यान ( प्रति+आख्यान, ख्या=कहना ) ( पु० ) त्याग, तिरस्कार, खंडन, तरदीद करना, मना करना, रोक देना ।

प्रत्याशा ( प्रति=फिर, आशा=आप्त ) ( स्त्री० ) आशा, भरोसा, उम्मीद, बाट देखना, इंतज़ारी, अतीक्षा, चाह, इच्छा ।

प्रत्याशी ( पु० ) मुंतज़िर, राह देखनेवाला ।

प्रत्याहार ( प्रति=फिर, आ=चारों ओर से, ह=लेना ) ( पु० ) व्याकरण में वर्णमाला के दो अथवा अधिक अक्षरों का समूह—जैसे “अइउण्, ऋलृक्” आदि, समाधि, योग ।

प्रत्युत्तर ( प्रति=पीछा, उत्तर=जवाब ) ( पु० ) उत्तर का उत्तर, पीछे जवाब ।

प्रत्युत्पन्न ( वि० ) प्रस्तुत, प्रतिभाषित ।

प्रत्युप } ( पु० ) प्रातःकाल, प्रभात, सूर्य ।  
प्रत्यूप }

प्रत्युद् ( प्रति+ऊद्=तर्क करना ) ( पु० ) विष्णु, उपद्रव, हर्ष ।

प्रत्येक ( प्रति+एक ) ( वि० ) एक-एक, हरएक, अलग-अलग ।

प्रथम ( प्रथम=नामवर होना ) ( वि० ) पहला, प्रधान,  
उत्तम, मुख्य, आदि, ( कि० वि० ) पहले, पहले ही ।

प्रथमा ( स्त्री० ) शराव, मदिरा, ध्याकरण का कर्त्ता-  
कारक ।

प्रथमी ( स्त्री० ) पृथ्वी ।

प्रथा ( स्त्री० ) रीति, यश, विस्तार. प्रक्षेप, कीर्ति,  
नामवरो, पांडु की स्त्री कुन्ती ।

प्रथित ( प्रथ=प्रामिद्ध होना ) ( वि० ) रीति, प्रसिद्ध,  
मशहूर ।

प्रथिति ( स्त्री० ) प्रसिद्धि, रीति ।

प्रद ( प्र=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना ) ( वि० )  
देनेवाला ।

प्रदक्षिण ( प्र=प्रारम्भ, दक्षिण=दाहिनी ओर में ) ( स्त्री० )  
दाहिनी ओर से देवता के चारों ओर फिरना,  
परिक्रमा, नवाफ ।

प्रदत्त ( वि० ) दिया हुआ ।

प्रद्वर ( पु० ) स्त्रीरोग-विशेष, वाण, तीर ।

प्रदर्शक ( प्र=याग, दर्शक=दिखानेवाला ) ( पु० ) दिखानेवाला,  
शिक्षक, बतानेवाला ।

प्रदर्शनी ( स्त्री० ) नुमायश, शोभा, सजाव ।

प्रदर्शनस्थान ( पु० ) नुमायशगाह ।

प्रदर्शी ( पु० ) दर्शक ।

प्रदल ( पु० ) वाण, तीर ।

प्रदाता ( पु० ) बहुत बड़ा दानी, दंव ।

प्रदान ( पु० ) दान, धैराव, विवाह, शार्दा, अंकुश ।

प्रदायक } ( वि० ) देनेवाला, जो दे ।  
प्रदायी }

प्रदाव ( पु० ) दावागिन, जंगल की आग ।

प्रदाह ( पु० ) ज्वर आदि के कारण शरीर में होनेवाली  
ज्वलन, दाह ।

प्रदिग्ध ( वि० ) तेल या घी से चिकना किया हुआ,  
( पु० ) विशेष प्रकार से पका हुआ मांस ।

प्रदिशा ( स्त्री० ) कोण, विदिशा, दो मुख्य दिशाओं के  
बीच का कोना ।

प्रदीप ( प्र=बहुत, दीप=चमकना ) ( पु० ) दीपक, दिया,  
चिराग, सूर्य, प्रकाश, तोसरे पहर गाया जानेवाला  
एक राग-विशेष ।

प्रदीपिका ( स्त्री० ) छोटी लाजटेन, एक रागिनी-विशेष ।

प्रदीप्त ( वि० ) प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला, जलता  
हुआ ।

प्रदूषक ( वि० ) नष्ट करनेवाला ।

प्रदूषण ( पु० ) चीपट करना, नष्ट करना ।

प्रदेय ( वि० ) देने योग्य, दान करने योग्य ।

प्रदेश ( प्र=मुख्य, देश=देस ) ( पु० ) मुख्य देश, मुल्क,  
ज़िला, परगना, दीवार, संज्ञा नाम परदेश, दूसरा  
मुल्क, बाज़िरत, अंग ।

प्रदेशन ( पु० ) भेद, नज़र ।

प्रदेशनी } ( स्त्री० ) अँगूठे के पास की उँगली, तर्जनी ।  
प्रदेशिनी }

प्रदेह ( पु० ) फोड़े को दवाने के लिये लेप या ओ-  
पधि-विशेष ।

प्रदोष ( प्र=प्रारम्भ, दोष=दात, दूष=बदलना वा बिगड़ना )  
( पु० ) संख्या, सायंकाल, सूर्य डूबने के पीछे दो  
घड़ी तक का समय, रजनीमुख, सफ़क, बड़ा दोष,  
दुष्ट, पाजी ।

प्रदोषकाल ( पु० ) सायंकाल, शाम का वक्त ।

प्रद्युम्न ( प्र=बहुत, युम्न=बल, दिव्य=चमकना ) ( पु० )  
कामदेव का अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा ।

प्रद्योत ( पु० ) आभा, चमक, किरण, एक यक्ष का नाम ।

प्रद्वार ( पु० ) दरवाज़े का अगला भाग ।

प्रद्वेष ( पु० ) वैर, दुश्मनी, शत्रुता ।

प्रधन ( पु० ) धनी, युद्ध, लड़ाई ।

प्रधर्पण ( पु० ) अनादर, बलात्कार, आक्रमण ।

प्रधन ( प्र=बहुत, धा=रखना ) ( पु० ) प्रकृति, माया,  
ईश्वर, मुखिया, राजा का मुख्य मंत्री, सेनापति  
आदि, अधिपति, ( वि० ) मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा ।

प्रधि ( पु० ) पहिए का घुरा ।

प्रधी ( वि० ) श्रेष्ठ, प्रधान कर्मचारी, बड़ा बुद्धिमान्  
मीर मुंशी, बुद्धियुक्त ।

प्रध्वंस ( प्र=बहुत, ध्वं=नाश करना ) ( पु० ) नाश,  
विध्वंस, हानि, विनाश, क्षय ।

प्रनामी ( पु० ) प्रणाम करनेवाला ।

प्रपंच ( प्र=बहुत, पचि=फैलाना ) ( पु० ) विस्तार,  
फैलाव, विरोध, विपरीतता, छल, धोखा, कपट,  
ठगाई, चूक, भूल, संसार, जगन्, माया, दिखाव ।

प्रपत्ति ( स्त्री० ) अनन्य भक्ति ।

प्रपथ ( वि० ) थका-मौंदा, शिथिल ।

प्रपद ( पु० ) पैर का अगला भाग ।

प्रपन्न ( वि० ) पास, शरणागत, आश्रित ।

प्रपर्ण ( पु० ) गिरा हुआ पत्ता ।

प्रपा ( प्र=बहुत, पा=पान करना ) ( स्त्री० ) पनघट, पानी का घर, प्याऊ, पौसळा, पौसरा, यज्ञशाला ।

प्रपात ( प्र=बहुत, पत्=गिरना ) ( पु० ) निर्भर, कूल, किनारा, तटहीन, पर्वतस्थान, निरवलंब, वेसहारा, भूग, पतन, गिरना ।

प्रपादिक ( पु० ) मोर, मयूर ।

प्रपान ( पु० ) प्याऊ, पौसरा ।

प्रपानक ( पु० ) पत्ता ।

प्रपितामह ( प्र=पैदा हुआ है, पितामह=दादा ( जिससे ) या प्र=वडा, पितामह=दादा ) ( पु० ) परदादा, पुरखा, ब्रह्मा ।

प्रपितृव्य ( पु० ) परदादा का भाई ।

प्रपीडक ( पु० ) बहुत कष्ट देनेवाला ।

प्रपुंज ( पु० ) भारी कुंड, बड़ा समूह ।

प्रपूर्ति ( प्र=पूरा करना ) ( स्त्री० ) संपूर्णता, तमाम, इक्षिताम ।

प्रपोत्र ( प्र=आगे वा उपर हुआ, पोत्र=पांता से ) ( पु० ) पोते का बेटा, परपोता ।

प्रफुल्ल } ( प्र=बहुत, फुल्ल=विकसना या फूलना )  
प्रफुल्लित } ( वि० ) फूला हुआ, खिला हुआ, विकसित, प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, चमकता हुआ, दीप्तिमान् ।

प्रफुल्लवदन ( प्रफुल्ल=प्रसन्न, वदन=मुख ) ( वि० ) जिसके मुँह से खुशी प्रकट होती हो, जो प्रसन्न देखा जाय, प्रसन्नमुख ।

प्रबंध ( प्र=बहुत अथवा चारों ओर से, बंध=बँधना ) ( पु० ) बंदोबस्त, काव्य की रचना, यमक, उपाय, इतिज्ञाम, कायदा ।

प्रबंधक ( पु० ) प्रबंधकर्ता, मुंतज्जिम ।

प्रबल ( प्र=बहुत, बल=शक्ति ) ( वि० ) बलवान्, जोरावर, समर्थ, बळी, धृष्ट, तीव्र, साहसी ।

प्रबाल ( प्र=बहुत, बल=कौपना ) ( पु० ) प्रवाल, नवीन पल्लव, नया पत्ता, मूँगा, रक्तवर्ण, वीणादंड ।

प्रबाहु ( पु० ) हाथ का अगला भाग, पहुँचा ।

प्रबुद्ध ( प्र=बहुत, बुध्=ज्ञानना ) ( वि० ) जागता हुआ, सचेत, पंडित, ज्ञानी, विकसित ।

प्रबोध ( प्र=बहुत, बुध्=ज्ञानना ) ( पु० ) ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना, सावधानी, नींद से अथवा अज्ञानता से जागना या चैतन्य होना ।

प्रबोधन ( प्र=बहुत, बुध्=ज्ञानना ) ( पु० ) जगाना, चिंताना, सावधान करना, सिखाना, जतनाना, बताना ।

प्रभंजन ( प्र=बहुत, भंज=तोड़ना ) ( पु० ) हवा, पवन, वायु, विदारण, तोड़ना, टूटना, ( वि० ) विदारक, तोड़नेवाला ।

प्रभंजनजाये ( सं० प्रभंजन=पवन, प्रा० जाये=पैदा हुए ) ( पु० ) हनूमान् ।

प्रभंजनसुत ( प्रभंजन+सुत ) ( पु० ) हनूमान् ।

प्रभद्र ( पु० ) नीम का पेड़ ।

प्रभव ( प्र=पैदा होना, जिससे ) ( पु० ) उत्पत्ति, जन्मकारण, जिससे पैदा होते हैं, जैसे—मा-बाप, उत्पत्तिस्थान, जोर, पराक्रम, जन्म ।

प्रभा ( प्र=बहुत, भा=चमकना ) ( स्त्री० ) चमक, झलक, ज्योति, जात, प्रकाश, दीप्ति ।

प्रभाकर ( प्रभा=प्रकाश, कर=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० ) सूर्य, चाँद, आग ।

प्रभात ( प्र=बहुत, भा=चमकना ) ( पु० ) भोर, बिहान, प्रातःकाल, कजर, सुबह ।

प्रभाती ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष जो सवेरे गाई जाती है, दतुअन, दंतधावन ।

प्रभान ( पु० ) प्रकाश, ज्योति, दीप्ति ।

प्रभाव ( प्र=बहुत, भू=होना ) ( पु० ) तेज, प्रताप, बल, शक्ति, प्रादुर्भाव, असर ।

प्रभास ( प्र=बहुत, भा=चमकना ) ( पु० ) एक तीर्थ की जगह, दीप्ति, ज्योति ।

प्रभिन्न ( वि० ) पूर्ण भेदयुक्त, ( पु० ) मतवाला हाथी ।

प्रभु ( प्र=पहल या बहुत, भू=होना ) ( पु० ) नाथ, स्वामी, धनी, माजिक, पति, पाखक, ईश्वर, विष्णु, ( वि० ) बड़ा, समर्थ, बलवान् ।

प्रभुन्व ( पु० ) } ( प्रभु ) बह्मपति, ईश्वरता, स्वामीपन,  
प्रभुता ( स्त्री० ) } बड़ाई, महत्त्व, महिमा, ऐश्वर्य,  
हुकुमत ।

प्रभृत ( वि० ) उद्गम, निकला हुआ, उत्पन्न, उन्नत, प्रचुर ।

प्रभृति ( स्त्री० ) उत्पत्ति, शक्ति, प्रचुरता, अधिकता ।

प्रभृति ( प्र=बहुत, भृ=मरना ) ( स्त्री० ) प्रकार, भाँति, ( अर्थ० ) छात्ति, हत्यादि, और सब ।

प्रभेद { ( पु० ) भेद, विभिन्नता, स्फोटन, फोड़कर प्रभेदन } निकलना ।

प्रभेदिका ( स्त्री० ) छेदने या भेदने का एक औज़ार ।

प्रभन्त ( वि० ) मगनाला, मरन, नशे में चूर, विचित्र, पागल, बावला ।

प्रमथ ( प्र=बहुत, मथ=मथना ) ( पु० ) महादेव के एक गण का नाम, घोड़ा, मथन या पीड़ित करनेवाला ।

प्रमथन ( पु० ) मथना, पीड़ित करना, बलेश देना, बध करना, नाश करना ।

प्रमथा ( स्त्री० ) पांशु, हड्डी, हारीतकी ।

प्रमथाधिप ( प्रमथ + अधिप ) ( पु० ) शिव, महादेव ।

प्रमथालय ( पु० ) नरक, दुःख या यंत्रणा का स्थान ।

प्रमथित ( वि० ) झूब मथा हुआ ।

प्रमद ( पु० ) मगनालापन, धतूरे का फल, हर्ष, आनंद, दान-विशेष ।

प्रमदक ( पु० ) नास्तिक, परलोक को न माननेवाला ।

प्रमदा ( प्र=बहुत, मदा=प्रमथ होना, त्रिमकी देमकर ) ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, सुलभणा स्त्री, रूपवती नारी, सुंदर स्त्री, उत्तम स्त्री ।

प्रमना ( वि० ) प्रसन्न, हर्षयुक्त ।

प्रमन्यु ( वि० ) बहुत क्रुद्ध ।

प्रमर्दन ( पु० ) खूब कुचबना, रंदिना, दमन करना, नष्ट करना, अच्छा तरह मलना, दखना, विष्णु ।

प्रमा ( प्र=बहुत, मा=नापना ) ( स्त्री० ) यथार्थ ज्ञान, सच्चा ज्ञान, ऐसा ज्ञान जिसमें किसी तरह का भ्रम न हो, प्रमाण, उपमा, नांव, माप ।

प्रमाण ( प्र=बहुत, मा=नापना ) ( पु० ) नाप, माप, तोल, अंदाज़ा, परिणाम, साख, साक्षी, गवाही, सिद्धांत, सत्य, निश्चय, सच्चा ठहराना, निर्णय, निष्पत्ति, कारण, हद्द, सीमा, उदाहरण, दृष्टांत, ऐसा शास्त्र जिसका शुद्ध प्रमाण मिले, ( वि० ) सच्चा, सही, ठीक-ठीक, यथार्थ मानने योग्य ।

प्रमाणकुशल ( वि० ) अच्छा तर्क करनेवाला ।

प्रमाणकोटि ( स्त्री० ) प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा ।

प्रमाणपत्र ( पु० ) सर्टिफिकेट ।

प्रमाणपुरुष ( पु० ) पंच, जिसका निर्णय सब माने ।

प्रमाणिक ( सं० प्रामाणिक ) ( वि० ) भरोसेवाला, विश्वासपात्र, योग्य, प्रतिष्ठित, ( पु० ) सभापति ।

प्रमाणित ( वि० ) निश्चित, सत्य ठहराया हुआ ।

प्रमातव्य ( वि० ) मारने योग्य, बध्य ।

प्रमातामह ( प्र=उत्पन्न हुआ है, मातामह=नाना जिससे ) ( पु० ) परनाना ।

प्रमात्र ( पु० ) निर्दिष्ट संख्या ।

प्रमाथ ( मन्थु=मथना ) ( पु० ) नाश, मरण, विलोडन, मथना, विघ्न, हानि, बलात्कार, मर्दन, बलपूर्वक हरण, छीन-खसोट ।

प्रमाथी ( वि० ) मथनेवाला, दुःखदायी, पीड़ित करने-वाला ।

प्रमाद ( प्र=बहुत, मदा=मस्त होना ) ( पु० ) नशा, मगनालापन, मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, असावधानी, भूल, चूक, असावधानता ।

प्रमादिका ( स्त्री० ) वह कन्या जिसे किसी ने दूषित कर दिया हो ।

प्रमादिनी ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

प्रमादी ( प्रमाद ) ( वि० ) उन्मत्त, बावला, बौरहा, नशे में मस्त, असावधान, अचेत, बेहोश, हठो, ज़िद्दी ।

प्रमार्जक ( वि० ) पोछनेवाला, साफ करनेवाला, दूर करनेवाला ।

प्रमित ( प्र. मा=नापना ) ( वि० ) नापा हुआ, मापा हुआ, जँचा हुआ, जाना हुआ, विदित, निश्चित, प्रमाणित ।

प्रमिति ( स्त्री० ) यथार्थ ज्ञान, ठीक समझ ।

प्रमीढ़ ( वि० ) गाढ़ा, घना, मूत्र होकर निकला हुआ ।

प्रमीत ( वि० ) मरा हुआ, यज्ञ के लिए मारा हुआ पशु ।

प्रमीति ( स्त्री० ) बध, हनन, मृत्यु ।

प्रमीलन ( पु० ) मूँदना, निमीलन ।

प्रमीला ( प्र. मील=नेत्र मीचना ) ( स्त्री० ) तंद्रा, उनींदा, उरसाहस्य, काहिली, शिथिलता, ग्लानि ।

प्रमीली ( वि० ) आँख मुँदानेवाला ।

प्रमुख ( वि० ) मान्य, प्रधान, मुख्य, प्रथम, पहला, श्रेष्ठ, मुखिया, ( कि० वि० ) सम्मुख, सामने, आगे, ( पु० ) मुनि, आदि, आरंभ ।

प्रमुदित ( प्र=बहुत, मुद=प्रसन्न होना ) ( पु० ) प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, प्रफुल्ल, खुश ।

प्रमेय ( वि० ) प्रमाण साध्य, प्रतिपादन करने के योग्य ।

प्रमह ( प्र, मिह=सर्पिण ) ( पु० ) धातु-रोग, वीर्य-संबन्धी रोग, यह रोग इक्षीस प्रकार का है, जिरियाँ ।

प्रमोद ( प्र=बहुत, मुद=प्रसन्न होना ) ( पु० ) हर्ष, आनंद, सुख, खुशी, उल्लास ।

प्रयत ( प्र=बहुत, यप्=शक्ति करना ) ( वि० ) पवित्र, नियमयुक्त, आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, तैयार ।

प्रयत्न ( प्र=बहुत, यत्=जतन करना ) ( पु० ) बहुत परिश्रम, लगातार मिहनत, बहुत सावधानी ।

प्रयाग ( प्र=बहुत, यज्=यज्ञ करना ) ( पु० ) हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में "इलाहाबाद" भी कहते हैं, जहाँ गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का गुप्त संगम भरती के नाँचे हुआ है ; उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शंखामुर राक्षस से वेदों को लाकर दस अश्वमेध यज्ञ किए, यज्ञ ।

प्रयाण ( प्र=पहले या दूर या बहुत, या=जाना ) ( पु० ) धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

प्रयास ( प्र=बहुत, यप्=जतन करना या परिश्रम करना ) ( पु० ) परिश्रम, मिहनत, थकावट, यत्न ।

प्रयोग ( प्र=बहुत, युज्=मिलना ) ( पु० ) अनुष्ठान, बशीकरण, वश करना, दृष्टि, उदाहरण, कारण, प्रयोजन, फल, काम, कार्य, व्यापार, नियुक्त करना, नियत करना, ठहराना, लगाना, इस्तेमाल करना, निदर्शना, उदाहरण, सूक्ष्म, धोका, अमलदरामद, बर्ताव करना ।

प्रयोजक ( पु० ) प्रेरक, प्रेषक, नियोग करनेवाला, लगानेवाला, उपाय करनेवाला ।

प्रयोजन ( प्र=बहुत, युज्=मिलना ) ( पु० ) कारण, अभिप्राय, मतलब, आशय, मनोरथ ।

प्रयोज्य ( वि० ) जिसका प्रयोग किया जा सके, ( पु० ) भूख, चेला, मूलधन ।

प्ररोचना ( स्त्री० ) रोचक कथा, फुसलाहट ।

प्ररोह ( प्र, रुह=बीज जमना, निकलना ) ( पु० ) ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, अंकुर ।

प्रलपित ( वि० ) कथित, मिथ्या उच्चारित, ऊटपटाँग कहा हुआ ।

प्रलंघ ( प्र=आगे, लवि=रोकना, ठहराना वा लटकाना ) ( वि० ) लंबा, विशाल, नीचे लटका हुआ, बड़ा, ( पु० ) एक राक्षस का नाम जिसको बलदेवजी ने मारा ।

प्रलय ( प्र=बहुत या चारों ओर से, ली=गलना या मिलना ) ( पु० ) कल्प का अंत, जब सारा संसार नष्ट हो जाता है, युगांत, नाश, मृत्यु ।

प्रलाप ( प्र=बहुत, लप्=बोलना ) ( पु० ) वृथा बकवाद, निरर्थक वाद, अनर्थक वाक्य ।

प्रलापी ( प्रलाप ) ( वि० ) बहुत बकनेवाला, वृथा बकनेवाला ।

प्रलीन ( वि० ) समाया हुआ, निरोहित, चेष्टा-शून्य ।

प्रलीनता ( स्त्री० ) प्रलय, नाश, विलीनता, जड़त्व ।

प्रलेप ( पु० ) लेप, पुलिटस ।

प्रलेपक ( पु० ) लेप करनेवाला, एक प्रकार का जीर्ण-उत्तर ।

प्रलेह ( पु० ) कोरमा ।

प्रलेहन ( पु० ) चाटना ।

प्रलोप ( पु० ) ध्वंस, नाश ।

प्रलोभ ( पु० ) अत्यंत लोभ, लालच ।

प्रलोभक ( पु० ) लालच देनेवाला ।

प्रलोभन ( प्र=बहुत या चारों ओर से, लुप्=लुभाना ) ( पु० ) मोहन, लुभाव, लोभ, लालच, फुसलाहट, लुभाना ।

प्रलोभित ( वि० ) मूख, मोहित, ललचाया हुआ ।

प्रलोभी ( वि० ) लुब्ध, लोभ में फँसनेवाला ।

प्रवंचक ( वि० ) भारी ठग, धोखेबाज़, भारी धूर्त ।

प्रवंचना ( स्त्री० ) छल, ठगपना, धूर्तता ।

प्रवंचित ( वि० ) जो ठगा गया हो, जिसने धोखा खाया हो ।

प्रवक्ता ( पु० ) अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला ।

प्रवग ( पु० ) पक्षी ।

प्रवचन ( पु० ) व्याख्या, अच्छी तरह समझाकर कहना ।

प्रवट ( पु० ) गेहूँ ।

प्रवण ( प्र=चलना ) ( पु० ) गमन, पशु, नीची जगह, उदर, आयत, गुण, चण, ( वि० ) प्लुत, स्निग्ध, नम्र, चिकना, आसक्त, क्षीण ।

प्रवस्यत्पतिका ( स्त्री० ) वह नायिका जिसका पति परदेश जानेवाला हो ।

प्रवर ( प्र=बहुत, वर=यच्छा, वृ=वृत्ति करना ) ( पु० ) संतान, गोत्र, गोत, एक मुनि का नाम जिसने हर-एक कुल का गोत्र ठहराया, उनकास गोत्रों में से एक गात्र, ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम ।

प्रवर्ग ( पु० ) होमाग्नि, हवन करने की अग्नि ।

प्रवर्त ( पु० ) कार्यारंभ, शानना, एक प्रकार का मेघ ।

प्रवर्तक ( प्र, वृत्=होना, पर, प्र उपगम्य के साथ आने में इसके अर्थ शुरू करना, आगे बढ़ना, लगना इत्यादि होते हैं ) ( वि० ) आरंभ करनेवाला, उठानेवाला, करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक, लगा हुआ, आदिकर्त्ता, मूलकारक ।

प्रवर्तन ( प्र+वृत्=काम में लाना ) ( पु० ) प्रवृत्ति, आज्ञापन, प्रेरण, प्रेषण, पठाना ।

प्रवर्तित ( वि० ) आज्ञापित, प्रेरित, प्रेषित ।

प्रवर्णण ( प्र=बहुत, वृत्=वर्णना ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जो किर्किष्ठापुरी के पास था, उस पर श्रीरामचंद्र और लक्ष्मण वर्षा-ऋतु में रहे थे ।

प्रवस्थ ( पु० ) प्रस्थान, प्रवास ।

प्रवसन ( पु० ) बाहर जाना, विदेश में जाना या रहना ।

प्रवह ( पु० ) प्रवाह, वायु-विशेष, घर नगर आदि से बाहर निकलना ।

प्रवहण ( पु० ) छोटा परदेदार रथ, बहलो, डोली, नाव, कन्या को विवाह देना ।

प्रवाक् ( पु० ) घोषणा करनेवाला ।

प्रवाचू ( वि० ) बहुत बोलनेवाला, अच्छी बहस करनेवाला ।

प्रवान्चक ( पु० ) अच्छा वक्ता ।

प्रवात ( पु० ) हवा का झोंका, तेज हवा, हवादार स्थान, ढाल, उतार ।

प्रवाद ( पु० ) बातचीत, अनरव, अनश्रुति, अपवाद, झूठी बदनामी ।

प्रवाः ( पु० ) वस्त्र, आच्छादन, उत्तरीय वस्त्र, चादर या दुपट्टा ।

प्रवारण ( पु० ) निषेध, काम्यदान ।

प्रवाल ( पु० ) मूँगा, कांपल, किशलय, कोमल पत्ता, बीणादंड, सितार या तैयरे की लकड़ी ।

प्रवास ( प्र=दूर, वस=रहना ) ( पु० ) विदेश, परदेश में रहना ।

प्रवासन ( पु० ) प्रक्षेप मारण, देहत्याग, निकालना, भगाना, परदेश भेजना ।

प्रवासी ( वि० ) परदेशी, विदेशी ।

प्रवाह ( प्र=बहुत या लगातार, वह=बहना ) ( पु० ) धारा, बहाव, सोता, स्रोत, काम का जारी रहना, व्यवहार, प्रवृत्ति, घोड़ा या वाहन, नार ।

प्रवाहक ( पु० ) गाड़ीवान, संग्रहणी, दस्त, राक्षस ।

प्रवाहिका ( स्त्री० ) प्रतिमार-रोग ।

प्रविग्रह ( पु० ) संधिभंग ।

प्रविचय ( पु० ) खोज, अनुसंधान, परीक्षा ।

प्रविष्ट ( प्र+विश्=गमना, जाना ) ( वि० ) घुसा हुआ, पैठा हुआ, भोतर पहुँचा हुआ ।

प्रवीण ( प्र, वीणा, वीन अर्थात् जो वीणा बजा के गावे, पर यह रुढ़ि पद है इमानिये इसका अलगर्थ ठीक नहीं लगता ) ( वि० ) चतुर, निपुण, बुद्धिमान्, सयाना, होशियार ।

प्रवीणता ( प्रवीण ) ( स्त्री० ) चतुराई, निपुणता, सयानपन, ज्ञियाकृत ।

प्रवीर ( वि० ) सुभट, अच्छा वीर, बहादुर

प्रवृत्त ( वि० ) तत्पर, तैयार, उद्यत ।

प्रवृत्ति ( प्र, वृत्=होना ) ( स्त्री० ) किसी काम में लगना, अभ्यास, समाचार, वार्ता, खबर, प्रवाह, इच्छा ।

प्रवेता ( पु० ) सारथी, रथवान् ।

प्रवेश ( प्र, विश्=गमना ) ( पु० ) घुसना, पैठना, पहुँचना, दखल, गति ।

प्रवेशक ( पु० ) प्रवेशकारी, घुसनेवाला, नाटक में वह स्थल जहाँ कोई पात्र अप्रदर्शित घटना का परिचय वार्तालाप द्वारा देता है ।

प्रवेशिका ( स्त्री० ) प्रवेशपत्र, दाखिला, प्रवेश करानेवाली ।

प्रव्रज्या ( स्त्री० ) यस्याश्रम, खानकाह ।

प्रशंसनीय ( प्रशंसा ) ( वि० ) प्रशंसा के योग्य, सराहने योग्य, स्तुति करने योग्य ।

प्रशंसा ( प्र=बहुत, शंसा=सराहना ) ( स्त्री० ) सराहना, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, श्लाघा ।

प्रशंसित } ( वि० ) स्तुत्य, तारीफ़ के लायक ।  
प्रशंस्य }

प्रशमन ( प्र=बहुत, शम्=ठण्डा करना ) ( पु० ) ठंडा करना, शांत करना, दूर करना, मारना ।

प्रशस्त ( प्र=बहुत, शस्=सराहना ) ( वि० ) सराहने योग्य, श्रेष्ठ, यथोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य, उत्तम, बहुत अच्छा, सुफल, अमोघ, समन्वित ।

प्रशस्ति ( प्र=बहुत, शस्=सराहना ) ( स्त्री० ) स्तवन, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, अलकाव ।

प्रशंता ( वि० ) धैर्यवान्, शांत ।

प्रशस्ता ( पु० ) होना का सहकारी ।

प्रश्न ( प्रच्छ=पूछना ) ( पु० ) पूछना, सवाल, जिज्ञासा, जानने की इच्छा ।

प्रश्नदूती ( स्त्री० ) पहेली, बुझौबल ।

प्रश्रय ( प्रश्रि=मेवा करना ) ( पु० ) प्रणय, नम्रता, प्रेम, सेवा, आराधन, सहारा, आधार, शिष्टता ।

प्रश्रित ( वि० ) विनीत, आश्रित, निर्भर ।

प्रष्टव्य ( प्रच्छ=पूछना ) ( वि० ) पूछने योग्य ।

प्रष्टा ( वि० ) जिज्ञासु, पूछक, पूछनेवाला ।

प्रष्टि ( पु० ) वह घोड़ा या बैल जो तीन घोड़ों के रथ या तीन बैलों की गाड़ी में आगे जोता जाता है, दाहने ओर का घोड़ा या बैल, तिपाई ।

प्रष्ट ( वि० ) अगुआ, अग्रगामी ।

प्रष्टौही ( स्त्री० ) वह गाय जो पहलेपहल गभिणी हुई हो ।

प्रसंख्या ( स्त्री० ) जोड़, मीजान, टोटल ।

प्रसंग ( प्र=पहल, सन्=मिलना ) ( पु० ) प्रस्ताव, संगम, मेल, चर्चा, बात, कथा, संबंध ।

प्रसंग ( वि० ) श्रेयोबद्ध ।

प्रसक्त ( वि० ) लगा हुआ, संबद्ध, आसक्त ।

प्रसक्ति ( स्त्री० ) संपर्क, प्रसंग, अनुमति, आरति, व्याप्ति ।

प्रसन्न ( प्र=अच्छा तरह से, सद्=बैठना ) ( वि० ) हर्षित, आनंदित, खुश, कृपालु, दयालु, अनुकूल, निर्मल ।

प्रसन्नता ( प्रसन्न ) ( स्त्री० ) हर्ष, आनंद, खुशी, कृपा, दया ।

प्रसन्नमुख } ( प्रसन्न=हर्षित, मुख वा वदन=मुँह )  
प्रसन्नवदन } ( वि० ) जिसके मुँह पर खुशी बरसती हो, प्रसन्न, आनंदित ।

प्रसर ( प्र, सू=जाना ) ( पु० ) प्रभव, वेग, समूह, युद्ध, प्रेम, फैला ।

प्रसव ( प्र, सू=पैदा होना ) ( पु० ) जन्मना, उत्पत्ति, जन्म ।

प्रसाद ( प्र, सद्=जाना या बैठना ) ( पु० ) देवता का भोग, देवता पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य, गुरु की जूठन, कृपा, अनुग्रह, प्रसन्नता, निर्मलता, सफ़ाई, क़ैत, बरक़त, तयरेक, तुफ़ैल ।

प्रसादी ( वि० ) क़ैतयाब, अनुगृहीत, मेहरबानी किया गया ।

प्रसाधक ( पु० ) बनानेवाला ।

प्रसाधन ( प्र+गाध्=मिश्र करना ) ( पु० ) बनाना, सँवारना ।

प्रसाधनी ( स्त्री० ) कंड़ी, कँगड़ी ।

प्रसाधिका ( स्त्री० ) शृंगार करानेवाली, वस्त्राभूषणादि पहरानेवाली, मशराना ।

प्रसार ( पु० ) फैलाव, विस्तार ।

प्रसारण [ ( प्र+सृ=जाना ) ( पु० ) प्र उपपत्ति से श्रद्धा बदल गया ] ( पु० ) फैलाना, जारी करना, पसारना ।

प्रसारित ( वि० ) विस्तृत, फैला हुआ ।

प्रसिद्ध ( प्र=पहल या बहुत या दूर, सिद्ध=जाना ) ( वि० ) विख्यात, नामी, यशस्वी, प्रकट, प्रकाशित, ज़ाहिर, शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सिंगार किया हुआ ।

प्रसिद्धि ( प्र, सिध्=जाना या पूरा करना ) ( स्त्री० ) नाम, यश, नामवरी, विख्याति, कोसि, पूरा करना, गहना, आभूषण, प्रकट होना ।

प्रसू ( प्र, सू=पैदा होना ) ( स्त्री० ) मा, माता, जवनी, घोड़ी, हरिणी, लता ।

प्रसूति ( स्त्री० ) प्रसव, अपत्य, पुत्र, उद्भूत, माता ।

प्रसूतिका } ( प्र, सू=पैदा होना ) ( स्त्री० ) वह स्त्री  
प्रसूता } जिसके बालक जना हो, ( पु० ) दुग्ध ।

प्रसून ( प्र=बहुत, सू=पैदा होना ) ( पु० ) फूल, पुष्प, फल, ( वि० ) जन्मा हुआ, पैदा हुआ ।

प्रसृत ( वि० ) फैला हुआ, प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ, विनीत,  
भेजा हुआ, प्रेरित, नियुक्त, प्रचलित, लंपट, बहा हुआ।  
प्रसेद ( पु० ) पसीना।  
प्रसेव ( पु० ) बीन की तूँबी, थैला, कपड़े की थैली।  
प्रस्कन्न ( वि० ) पतित, समाज का नियमभंग करने-  
वाला, घोंड़े का रोग-विशेष।  
प्रस्खलन ( पु० ) स्खलन, पतन।  
प्रस्तर ( प्र=वहना, स्तृ=कैलाना ) ( पु० ) पत्थर, पाषाण,  
रत्न, जवाहर, चमड़े की थैली, चाँदी सतह।  
प्रस्तार ( पु० ) फैलाव, नृण का वन, पत्तों की रचो  
शय्या, छंदों का ग्रंथ।  
प्रस्ताव ( प्र=वहनु, स्तु=मगहना, कहना ) ( पु० )  
अवसर, प्रसंग, प्रकरण, बात, कथा, चर्चा।  
प्रस्तावना ( स्त्री० ) भूमिका, टीका, आरंभ, तमहीद,  
तजवीज करना, स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा, वर्णन।  
प्रस्ताविक ( प्रस्ताव ) ( वि० ) समय पर, समयानु-  
सार, यथासमय।  
प्रस्तायित ( वि० ) प्रारंभित, विस्तारित, उक्त, कथित,  
विचारित, जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो।  
प्रस्तिर ( पु० ) पर्णशय्या, घास-कुसआदि का बिछौना।  
प्रस्तुत : प्र=वहना, स्तु=मगहना ) ( वि० ) सहा  
हुआ, प्रशंसित, कहा हुआ, किया हुआ, पूरा किया  
हुआ, उद्यत, उत्तारु, तैयार, उपस्थित।  
प्रस्तुति ( स्त्री० ) प्रशंसा, स्तुति, प्रस्तावना, उपस्थिति,  
निष्पत्ति, तैयारी।  
प्रस्थ ( प्र+स्था=ठहरना ) ( पु० ) विस्तार, आध सेर,  
पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि।  
प्रस्थान ( प्र=गाने या दूर, स्था=ठहरना ) ( पु० ) गमन,  
गवन, यात्रा, कूच, गृह के लिये कूच करना।  
प्रस्नवण ( पु० ) चुपचान, बहाव।  
प्रस्नाव ( स्तु=वहना ) ( पु० ) मूत्र।  
प्रस्फुटित ( प्र+स्फुट=फूलना ) ( वि० ) खिला हुआ,  
फूला हुआ।  
प्रस्फुरित ( वि० ) प्रकाशित, दीप्तिमान्, चमकनेवाला।  
प्रहर ( प्र=वहनु, ह=हरण ) ( पु० ) दिन का आठवाँ  
भाग, पहर।  
प्रहरक ( पु० ) घड़ियाली, जो पहर पर रहता है और  
घंटा बजाता है।

प्रहरण ( पु० ) छीनना, हरना, हरण करना, अस्त्र, युद्ध,  
प्रहार, वार मारना।  
प्रहरी ( पु० ) चौकीदार, पहरा, पहर-पहर पर घंटा  
बजानेवाला।  
प्रहर्ता ( वि० ) योद्धा, प्रहार करनेवाला।  
प्रहर्ष ( पु० ) हर्ष, आनंद।  
प्रहसन् ( प्रहस+अन्, हस=हँसना ) ( पु० ) हास्य, हँसी,  
परिहास, व्यंग्य-वचन।  
प्रहस्त ( प्र=वहनु, हस्त=हाथ ) ( पु० ) चपत, थप्पड़,  
रावण का बेटा, ( वि० ) बड़े अथवा फैले हुए  
हाथवाला।  
प्रहाण ( पु० ) परिश्रम, ध्यान, चित्त की एकाग्रता।  
प्रहार ( प्र, ह=भेना, पर, प्र, उपपत्ति के साथ आने से  
मारना अर्थ होता है ) ( पु० ) चोट, आघात, वार,  
मार, मारना।  
प्रहारी ( प्रहार ) ( वि० ) मारनेवाला, नाश करनेवाला,  
घातक, दूर करनेवाला।  
प्रहारक ( वि० ) वज्रपूर्वक हरण करनेवाला, ज़बरदस्ती  
छीननेवाला।  
प्रहृष्ट ( प्र=वहनु, हृष्ट=प्रमद होना ) ( वि० ) संतुष्ट, तुष्ट,  
पुष्ट, प्रसन्न।  
प्रहेलिका ( प्र=वहनु, हेड या हेल्=अनादर करना )  
( स्त्री० ) पहेली, टटकूट, गूढ़ प्रश्न, श्लेष, बुझावल।  
प्रह्लाद ( प्र=वहनु, प्लाद=प्रमद होना ) ( पु० ) हिरण्य-  
कशिपु का बेटा और परमेश्वर का भक्त, हर्ष,  
आनंद, खुशी।  
प्रह्ल ( प्रे=कलना ) ( वि० ) श्रेष्ठ, नम्र, भक्त, विस्वात।  
प्राइममिनिस्टर ( पु० ) वज़ारआज़म, महामंत्री।  
प्राइवेट सेक्रेटरी ( स्त्री० ) स्वकीय लेखक, ज्ञानी मोर मुंशी।  
प्राक् ( प्र=पहले, अन्=जाना ) ( वि० वि० ) पहले, पूर्व,  
आगे, आदि।  
प्राकृतन ( वि० ) पुराना, पहला, पूर्व-दिशा।  
प्राकार ( प्र=चारों ओर, कृ=कैलाना ) ( पु० ) घेरा, कोट  
की भीत, फसीख, सफीख, गढ़, पक्का महल।  
प्राकृत ( प्र=वहनु, अकृत=बुरा काम अथवा ईर्ष्या जिसके मन  
में हो ) ( वि० ) नीच, अधम, नीचा, क्षुद्र, सामान्य  
( प्रकृति ) स्वाभाविक, प्रकृति-संबंधी, माया का  
विकार, ( पु० ) एक प्रकार की भाषा जो संस्कृत



से बिगड़ कर बनी है और संस्कृत-नाटकों में बहुत जगह लिखी जाती है ।

प्रागभाव ( पु० ) संभावना, जिस पदार्थ का आदि न हो पर अंत हो ।

प्रागल्भ्य ( पु० ) घमंड, गर्व, अहंकार, स्त्रियों का प्राकृतिक भाव ।

प्राग्व्योतिषपुर ( प्राक्=पहले व्योतिष=चमकीला, पुर=स्थान या नगर ) ( पु० ) कामरूप देश, आसाम का भाग और भोमासुर की पुरानी राजधानी ।

प्राघुण ( प्र+था, घृण्=वृमना ) ( पु० ) पाहुन, अभ्यागत, मेहमान ।

प्रांगण ( प्रा+अण् ) ( पु० ) आंगन, सहन, मृदंग, पखावज ।

प्राची ( प्राक् ) ( स्त्री० ) पूर्व-दिशा ।

प्राचीन ( प्राक्=पहले ) ( वि० ) पुराना, अगला, पहले समय का, पूर्व-दिशा का ।

प्राचीर ( चि=चुनना ) ( पु० ) चहारदीवारी, शहरपनाह, नगर का धरा ।

प्राचुर्य ( पु० ) प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता ।

प्राज्य ( वि० ) प्राचीन ।

प्राज्ञपत्य ( पु० ) रोहिणी-नक्षत्र, विवाह-विशेष, तत-विशेष ।

प्राज्ञ ( प्र=बहुत, ज्ञा=ज्ञानना ) ( पु० ) पंडित, ( प्रज्ञा ) ( वि० ) बुद्धिमान्, विज्ञ, प्रवीण, चतुर ।

प्राज्ञमानो } ( वि० ) विद्याभिमानो ।  
प्राज्ञमान्य }

प्रांजल ( वि० ) सरल, सीधा, सच्चा ।

प्रांजली ( स्त्री० ) अंजली, अंजलिबद्ध ।

प्राड्विवाक ( पु० ) पंच, न्यायाधीश, अक्षदर्शक, वकील, प्लीडर ।

प्राण ( प्र=बहुत, अन्=जाना या साथ लेना ) ( पु० ) साँस, श्वास, वायु, जीव, जीवन, ( वि० ) प्यारा, प्यारी, प्रिय, प्रिया, प्राण पाँच हैं ( १ प्राण, २ अपान, ३ व्यान, ४ समान, ५ उदान ) ।

प्राणत्याग ( पु० ) मृत्यु, मौत, मरण ।

प्राणदा ( स्त्री० ) जीवनदाता, प्राण-रक्षक ।

प्राणनाथ } ( प्राण=जीवन, नाथ या पति=स्वामी )  
प्राणपति } ( पु० ) पति, प्रियतम, स्वाभिद, स्वामी ।

प्राणांत ( प्राण + अंत ) ( पु० ) प्राण का अंत, मरना, मरण ।

प्राणप्रतिष्ठा ( स्त्री० ) मंत्र द्वारा देवता आदि की प्रतिमा में प्राण संस्थापन करना ।

प्राणयात्रा ( स्त्री० ) निर्वाह, जीविका, रोजी ।

प्राणायाम ( प्राण=साँस, आ=चाराँ से, यम्=रोकना ) ( पु० ) साँस का रोकना, योग की एक विधि जिसमें नाक के दाहने नथुने को बंद करके बाएँ नथुने से साँस को ऊपर खींचते हैं उसको 'पूरक' कहते हैं, और फिर दोनों नथुनों को बंद करके साँस को भीतर रोकते हैं उसको 'कुंभक' कहते हैं, और फिर उस साँस को धीरे-धीरे दाहने नथुने की राह से निकाल देते हैं उसको 'रेचक' कहते हैं, योगांग-विशेष ।

प्राणी ( प्राण ) ( पु० ) जीवधारी, जीव, जंतु, ( वि० ) प्राणवाला ।

प्राणीमात्र ( पु० ) सब जीव, जीवमात्र ।

प्राणेश ( प्राण=जीवन, ईश=मातृक या स्वामी ) ( पु० ) प्राणनाथ, प्राणपति, स्वामी, पति ।

प्रातः ( प्र=पहले, अन्=जाना ) ( क्रि० वि० ) भोर, बिहान, तड़का, प्रभात, सवेरा ।

प्रातःकाल ( प्रातः=भोर, काल=समय ) ( पु० ) भोर का समय, बिहान, प्रभात, तड़का ।

प्रातःक्रिया ( स्त्री० ) सवेरे का कृत्य, जैसे—शौच, स्नान, स्नाना आदि ।

प्रातःसंध्या ( स्त्री० ) सवेरे की जानेवाली वैदिक मंत्रोपासना ।

प्रातराश ( पु० ) प्रभात का भोजन, जलपान, खरमिटाव, जलखावा ।

प्रादुर्भाव ( प्रादुर्=प्रकट, भू=होना ) ( पु० ) प्रकट होना, प्रत्यक्ष, प्रकाश होना, निकलना, उगना, उदय, उत्पत्ति ।

प्रादेश ( पु० ) बाजिरत, बीना ।

प्राधान्य ( पु० ) प्रधानता, श्रेष्ठता ।

प्रांत ( प्र + अंत ) ( पु० ) अंत, छोर, किनारा, अंत भाग, प्रदेश, मंड, सूबा, चारों तरफ़ ।

प्रांतर ( पु० ) उजाड़ स्थान, छायाशून्य पंथ, दुर्गम पंथ ।

प्रापक

प्रापक (प्र + आप् + अक, आप्=पाना) (पु०) पैदा करना, प्राप्त करना, हासिल करनेवाला ।

प्राप्त (प्र=बहुत, आप्=पाना) (वि०) पाया हुआ, मिला हुआ, लब्ध, उचित, वसूल ।

प्राप्ति (प्र=बहुत, आप्=पाना) (स्त्री०) पाना, लाभ, मिलना, वृद्धि, उदय, सूद, नफ़ा, संगति, समिति, संघ ।

प्राप्य (प्र=बहुत, आप्=पाना) (वि०) पाने योग्य ।

प्रामाण्य (प्रमाण) (वि०) विश्वासवाला, प्रधान, प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से सिद्ध, शास्त्रसिद्ध ।

प्रामाण्य (प्रमाण) (वि०) प्रमाण करने के योग्य, विश्वास के योग्य, (पु०) प्रमाण, सिद्धांत ।

प्रायः } (प्र + अय्=जाना) (कि० वि०) बहुधा,  
प्रायः } कभी-कभी, लगभग, फिर-फिर, बार-बार,  
बहुत बार, (पु०) तब ।

प्रायश्चिन्त (प्रायश्चिन्त, चिन्त=निश्चय, जैसे—“प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते । तपो निश्चयमेयुक्तं प्रायश्चिन्तमिति स्मृतम्” ॥ अथवा “प्रायः पापं विजानीयान्, चित्तं तस्य विशेषनम्” अर्थात् “प्रायस्” पाप का कहने हैं और “चिन्त” उसमें शुद्ध करने का कहने हैं) (पु०) पाप को दूर करने का साधन, जैसे—चांद्रायण-व्रत आदि ।

प्रारब्ध } (प्र + आ, रभ्=शुरू करना) (पु०) भाग्य,  
प्रारब्ध } पूर्वकृत कर्म, कर्म में लिखा हुआ, देव,  
योग्य, संयोग, (वि०) शुरू किया हुआ ।

प्रारंभ (प्र + आ, रभ्=शुरू करना) (पु०) आरंभ, शुरू, प्रथम, उपक्रम ।

प्रार्थक (पु०) याचक, मांगनेवाला, मुस्तदई ।

प्रार्थना (प्र=बहुत, अर्थ=मांगना या चाहना) (स्त्री०) विनयी, चाहना, याचना, मांगना, बोधना, परमेश्वर से अपने पापों की माफ़ी चाहना ।

प्रार्थनीय } (वि०) याचनीय, याचित ।  
प्रार्थित }

प्रार्थयिता (वि०) चाहनेवाला, आशिक, आसक ।

प्रावृट् } (प्र=बहुत, वृप्=बरसना) (स्त्री०) वर्षा-  
प्रावृष्ट } काल, वर्षाकाल, बरसात, जैसे—  
प्रावृषा }

“प्रावृट् सरद पयोद घनेरे ;  
लरन मनहुँ मारुत के प्रेरे ।”

(रामायण)

प्राविश (पु०) सूबा, खंड, प्रांत ।

प्राविशनल सर्विस (स्त्री०) सूबे की नौकरी ।

प्रास (प्र+अस्=फेंकना) (पु०) भाला, आयुध, फाँसी, क्लोच, रयाग ।

प्रासाद (प्र=अच्छी तरह से, सद=बैठना) (पु०) महल, राजभवन, राजमंदिर, देवता का मंदिर ।

प्रिय (प्री=प्यार करना या प्रसन्न होना) (पु०) प्रियतम, पति, स्वामी, भर्ता, (वि०) प्यारा, सनेही ।

प्रियतम (प्रिय=प्यारा, तम=बहुत ही बहुत) (वि०) बहुत प्यारा, अत्यंत प्यारा, (पु०) प्रियतम, पति ।

प्रियपात्र (वि०) प्यारा, स्नेह-भाजन ।

प्रिय भाषण (प्रिय=प्यारा, भाषण=बोलना) (पु०) प्यार से बोलना, प्यारा बोल, प्यारी बात ।

प्रियंवद (वि०) प्रियवादी, शीर्षकलास ।

प्रियंवदक } (वद=कहना) (वि०) प्रियवादी, शीर्ष-  
प्रियवक्ता } कलास ।

प्रियवादिनी (प्रिय=प्यारा, वद=बोलना) (वि०) प्यारी बात बोलनेवाली, मांठी बात बोलनेवाली ।

प्रियवादी (प्रिय=प्यारा, वद=बोलना) (वि०) मांठी और प्यारी बातें बोलनेवाला, मिष्टभाषी ।

प्रिया (प्रिय) (स्त्री०) प्यारी स्त्री, भार्या, जोरू ।

प्रीत (स० प्रीति) (स्त्री०) प्यार, प्रेम ।

प्रीतम (स० प्रियतम) (वि०) बहुत प्यारा, अत्यंत प्यारा, (पु०) पति ।

प्रीति (प्री=प्यार करना या तृप्त होना) (स्त्री०) प्यार, प्रेम, सनेह, मोह, दुलार, हर्ष, वृत्ति ।

प्रुष्ट (प्रुप्=जलाना) (वि०) दग्ध, जला ।

प्रक्षक (प्र+क्ष्+अक) (पु०) द्रष्टा, देखनेवाला, नाज़िर ।

प्रेक्षण (प्र+ईत्=देखना) (पु०) देखना, दर्शन, आँख, दृष्टि ।

प्रेक्षणीय (प्र+ईत्+अनीय) (वि०) देखने योग्य, दृश्य ।

प्रेक्षण (पु०) अच्छी तरह हिलना या झूलना, रूपक-विशेष ।

प्रेत ( प्र=दूर, इण्=जाना ) ( पु० ) भूत, पिशा मुर्दा,  
मृतक, ( वि० ) मरा हुआ, मरा ।

प्रेतकर्म ( पु० ) श्रंशेष्टि-क्रिया ।

प्रेतगृह ( पु० ) श्मशान, मरघट, मसान ।

प्रेतनदी ( स्त्री० ) वैतरणी नदी ।

प्रेतनी ( प्रेत ) ( स्त्री० ) भूतनी, पिशाचनी, डायन,  
चुड़ैल ।

प्रेतवन ( पु० ) नरक, प्रेतों का स्थान, गयाक्षेत्र ।

प्रेम ( प्री=प्यार करना या प्रसन्न होना ) ( पु० ) प्यार,  
प्रोति, स्नेह, लाव, दुलार, जैसे प्रेम रंगराना=प्रेम  
में रंगा हुआ, बहुत प्यार में हुआ हुआ ।

प्रेमसागर ( प्रेम=प्यार, सागर=समुद्र ) ( पु० ) प्यार का  
समुद्र, श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का हिंदी  
भाषा में श्रीलाललालजी कवि का किया हुआ  
उल्हास ।

प्रेमास्पद ( वि० ) प्रणयी, स्नेह-पात्र, प्रेम-भाजन ।

प्रेमी ( प्रेम ) ( वि० ) प्यार करनेवाला, प्यारा, प्रियतम,  
स्नेही ।

प्रयसी ( स्त्री० ) प्रिया, प्यारी ।

प्रयान् ( पु० ) प्रिय, प्यारा ।

प्रेरक ( प्र, ईर्=भेजना ) ( पु० ) भेजनेवाला, पठवैया,  
ताकीद करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।

प्रेरण ( पु० ) } ( प्र, ईर्=भेजना ) भेजना, आज्ञा  
प्रेरणा ( स्त्री० ) } करना, ताकीद करना, उभाड़ना ।

प्रेरना } ( सं० प्रेरण ) ( क्रि० सं० ) भेजना, पठाना,  
प्रेरा } उभाड़ना, जैसे—

“धुआँ देखि खर दूषण केरा ;

जाह सुपनखा रावण प्रेरा ।”

( रामायण )

प्रेरित ( प्र+ईर्=भेजना ) ( वि० ) भेजा हुआ, पठाया  
हुआ, प्रेरण किया हुआ, आज्ञा किया हुआ ।

प्रेरण ( प्रेप्=जाना ) ( पु० ) प्रेरणा करना, पठाना ।

प्रेषित ( वि० ) प्रेरित, भेजा गया ।

प्रंस ( पु० ) यंत्रालय, मतबा ।

प्रेसीडेंट ( पु० ) सभापति, मीरमजलिस ।

प्रोक्त ( प्र=पहले, उक्त=कहा हुआ ) ( वि० ) पहले कहा  
हुआ, पूर्व कथित ।

प्रोक्लेमेशन ( पु० ) मुनास, दिवोरा ।

प्रोक्त ( प्र=बहुत, उल्+अक, उल्+सीचना ) ( पु० )  
सीचनेवाला ।

प्रोक्षण ( प्र+उल्+अण ) ( पु० ) सीचना, बध, यज्ञार्थ  
पशु को बध करना ।

प्रोक्षित ( वि० ) सिद्ध, सींचा गया, बध किया गया ।

प्रोत्साह ( पु० ) बढ़ा उद्योग, बढ़ा उत्साह ।

प्रोत्साहन ( पु० ) उत्तेजित करना, उत्साहित करना ।

प्रोविनशलक्लेव ( पु० ) जनपदसमूह ।

प्रोपित ( प्र=दूर, वप्=रहना ) ( वि० ) जो विदेश में हो,  
विदेश गया हुआ, विदेशी ।

प्रोपितपति ( प्रोपित+पति या भर्ता=स्वामी ) ( स्त्री० )

प्रोपितभर्ता } नायिका जिसका पति परदेश में हो ।

प्रोहित ( सं० प्रोहित ) ( पु० ) पुरोहित, पुरोधा, कुल-  
गुरु, उपाध्याय ।

प्रौढ़ ( प्र=बहुत, वृ=ले जाना ) ( वि० ) बड़ा, मोटा, पूरा  
जवान, पूरा बड़ा हुआ, साहसी, निपुण, युवावस्था  
के बाद की अवस्था ।

प्रौढ़ा ( प्रौढ़ ) ( स्त्री० ) जवान स्त्री, तीस बरस से २५  
बरस तक उमर की स्त्री, नायिका-विशेष ।

प्रौढ़ी ( स्त्री० ) चतुरता, पूर्ति, प्राचीनता, विठाई,  
गरमी, प्राप्त ।

सत्त ( प्लच्=खाना ) ( पु० ) पाकरवृत्त, पीपलवृत्त, भोजन,  
दरवाजे की चौखट, बाजू सान द्वीपों में से एक  
द्वीप ।

सव ( प्रु=कूद जाना ) ( पु० ) डोंगा, मेंढक, घानर,  
श्वपच, चांडाल, बगल्ला, सारस ।

सवक ( प्रु+अक ) ( पु० ) नर्तक, नाचनेवाला, कज्ज-  
धारी, नट ।

सवग } ( सवत्=कूदना हुआ, प्रु=कूदना और गम्=  
सवंग } जाना ) ( पु० ) वानर, बंदर, हिरन, मेंढक,  
सूर्य का सारथी ।

सवंगम् ( पु० ) मर्कट, वानर, भेड़, मेंढक, मृत्त ।

साधित ( वि० ) पानी से धिरा हुआ, जलमय ।

सीढा ( सिद्=जाना ) ( स्त्री० ) सिखरी, नापतिर्ज्ञा, बरबट ।

प्लुत ( प्रु=कूदना अथवा ऊँचा जाना ) ( पु० ) स्वर्ग का  
नीसरा भेद जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना समय  
लगता है, ( वि० ) कूदा हुआ, उछला हुआ ।

प्लुति ( स्त्री० ) उछलना, कूदना, फाँटना ।

प्लुप ( प्लुप्=जलाना ) ( पु० ) दाह, जलन, जलना,  
अग्नि, शोक, उष्ण, नाश ।  
प्लुप्त ( प्लुप्+त ) ( वि० ) दग्ध, जला हुआ ।

प्रोप ( पु० ) दाह, जलना ।  
प्रोपिता ( प्लुप्+तृ ) ( पु० ) जलानेवाला या फूँकने-  
वाला ।

## फ

फ ( पु० ) फकड़, फटकार, वृथावार्ता-साधन, वायु का  
भूकोर ।

फंका ( पु० ) मुट्ठी-भर चीज जो एक ही बार में मुँह  
में डाली जा सके ।

फंका मारना ( पृ० ) मुट्ठी-भर चीज को एक बार में  
मुँह में डालना ।

फंदना ( कि० अ० ) अटकना, फँसना, उलझना ।

फंदलाना ( कि० स० ) कुसलाना, फुलाना ।

फँदना ( ग० पश्=बाधना ) ( कि० ग० ) फँसाना, उलझ-  
झाना, अटकाना, फँदे में डालना ।

फंदा } ( ग० पाश ) ( पु० ) पाश, फाँसी, जाल,  
फादा } फँसवा, जंजाल, भूभट, कठिनाई ।

फँसना } ( ग० पश्=बाधना ) ( कि० अ० ) उलझना,  
फसना } बहना, पकड़ा जाना, दूसरे के वश में आना ।

फँसाव ( पु० ) उलझन, अटकाव ।

फँसियार ( पु० ) बटमार, शग, जल्लाद ।

फकड़ी ( स्त्री० ) दुर्गति, अन्याय ।

फकनी ( स्त्री० ) बुकनी, फंकी ।

फकिया ( स्त्री० ) टुकड़ा, खंड, फाँक ।

फकोड़िया ( वि० ) बकबादी, बातूनी, शर्पी ।

फकोड़ियात ( स्त्री० ) गप्प, अंडबंड बातें ।

फफ ( फफू=दाँचा ) ( पु० ) असदाचार, बदचलन,  
मंदगति, रिंगना ( वि० ) कानिहोन, प्रभाहीन ।

फफड़ ( वि० ) आवाशरिंद, बखोड़िया, लड़ाका, झग-  
ड़ालू ।

फफा ( पु० ) पतला, पानी-सा, बिगड़ा ।

फफाक ( वि० ) व्यर्थ, बेकार्यदा ।

फफा मारकर रह जाना ( पृ० ) भूखे रहना ।

फफिका ( फफू=पुस व्यवहार करना या धीरे-धीरे चलना )  
( स्त्री० ) फाँकी, तर्क, लपेट की बात, पेंच, उलझन  
की बात, चाल, कपट, छद्म ।

फगुनहट ( स्त्री० ) फागुन की हवा, फाल्गुन-सामीप्य ।

फगुवा ( फागुन ) ( पु० ) होली का पर्व, अथवा स्योहार ।

फट ( वि० ) प्रफुल्लित, विकसित, खिला हुआ, (अव्य०)  
फटकार, मंत्रास्त्र ।

फटकना ( सं० स्फोटन, स्फुट=जुदा-जुदा करना ) ( कि० स० )  
पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज को पछोड़ना,  
छोटना, भाड़ना, ( कि० अ० ) पास जाना, जा  
निकलना ।

फटकार ( स्त्री० ) दुस्कार, तिरस्कार ।

फटकिरी ( स्त्री० ) फटकिरी, क्षार ।

फटकी ( स्त्री० ) चिड़ीमार का जाल, बड़ा पिंजड़ा, एक  
रस्सी जिसकी आवाज़ से पखेरुओं को डराते हैं ।

फटना ( सं० स्फटन, स्फुट=फटना ) ( कि० अ० ) चिरना,  
तड़कना, तार-तार होना, दो टूक होना ।

फटाक ( कि० वि० ) शीघ्र, उसी समय, तत्काल,  
तत्क्षण ।

फटाका ( पु० ) धड़ाका, भारी आवाज़ ।

फटाना ( कि० स० ) चिरवाना, फड़वाना ।

फटाव ( पु० ) भेद, अंतर, दूट ।

फटिक ( सं० स्फटिक ) ( पु० ) बिस्लीरी पत्थर,  
स्फटिक ।

फड़ ( स्त्री० ) जुआँ खेजने की जगह, वह जगह जहाँ  
बेचने के लिये माल असबाब रहता है, गाड़ी का  
बंडा ।

फड़क ( स्त्री० ) फड़कने की क्रिया, फड़कन ।

फड़कना } ( सं० स्फुट=फटना या विकसना ) ( कि०  
फरकना } अ० ) फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना,  
हिलना ( जैसे आलू का पपीटा ), दोस मारना, तड़-  
पाना, बहुत खुश होना ।

फड़की ( स्त्री० ) झाड़, झोटा, टट्टी ।

फड़फड़ाना ( कि० अ० ) फड़कना, तड़पना, हिलना ।

फड़फड़िया ( वि० ) बड़बड़िया, हड़बड़िया ।

फड़िया ( पु० ) झींगुर, एक प्रकार का पतिया ।

फड़िया (पु०) फड़बाज़, पैकार, घूत-स्थान का मालिक ।  
फण (फण=जाना) (पु०) साँप का फैलाया हुआ सिर  
या टुंडी ।

फणधर (फण, धृ=रखना) (पु०) साँप, सर्प ।

फणिक (फण) (पु०) साँप, सर्प ।

फणिक (पु०) छोटा पत्ता, मरुवा या दवना,  
तुलसीदल ।

फणी (फण) (पु०) साँप, सर्प ।

फणींद्र } (फणी=साँप, इंद्र वा ईश्वर=राजा) (पु०)  
फणीश्वर } सरंराज, अनंत, वामुकि ।

फंड (पु०) समूह, पुंज, पूंजी, सरमाया ।

फनगा (सं० पतंग) (पु०) टिड्डा, अँखफोड़ा ।

फफसा (वि०) फूला, पोला, फीका ।

फफूँदना (क्रि० अ०) सड़ना, भुअरी या भोंड़ी लगना ।

फफूँदी (स्त्री०) गीली सड़ी हुई चीज़ पर एक तरह  
की सफ़ेद-सी तह ।

फफोला (सं० स्फोट, स्फुट=फटना) (पु०) फुलका,  
फाला, छाला ।

फफोले दिल के फोड़ने (मुहा०) मन की चाह पूरी  
करना, दिल के गुबार निकालना ।

फफोले फूटना (मुहा०) दिल दुख पाना, मन में  
चिंता होना, दुःख पाना, गुबार निकालना ।

फब  
फबन (स्त्री०) शोभा, सजावट ।

फबती कहना (मुहा०) चुटकुला कहना, चुहल करना,  
किसी के पहरावे की हँसी करना, व्यंग्य करना, ताना  
मारना ।

फबना (क्रि० अ०) सोहना, छाजना, खुलना, मला  
खगना, अच्छा खगना, ठीक होना ।

फबीला (वि०) सजीला, रम्य, शोभित ।

फर (पु०) फल ।

फरकना (क्रि० अ०) काँपना, तड़पना, फड़कना, हिछना ।

फरचा (वि०) शुद्ध, साफ़, पवित्र ।

फरचाना (क्रि० सं०) बर्तन आदि धोकर साफ़ करना,  
आज्ञा देना, आदेश देना ।

फरछा (वि०) निर्मल, स्वच्छ, खरा ।

फरछाना (क्रि० सं०) निर्मल करना, साफ़ करना,  
मलना, शोधना ।

फरफंद (सं० प्रपंच) (पु०) छल, कपट, धोखा,  
दुष्टता, जाल, फरेब ।

फरफंदिया (वि०) कपटी, छली, फरेबी ।

फरस (पु०) बिड़ौना, गलीचा, दरी, साक्र-सुथरी  
शिकनी जमीन ।

फरसा (सं० परशु) (पु०) कुल्हाड़ी, बसूला, फावड़ा ।

फरहरा (पु०) } ध्वजा, पताका, झंडो का कपड़ा  
फरहरा (स्त्री०) } जो हवा में उड़ता है, (वि०)  
अधसूखा ।

फराठी (स्त्री०) बाँस आदि की खपाची ।

फरिया (स्त्री०) सारी, लहंगा, ओढ़नी, विधवा होते  
समय पहनने का वस्त्र-विशेष ।

फरी (सं० फर, फर्=जाना या भेदना) (स्त्री०) ढाल,  
गाड़ी का हरसा, फड़ ।

फरहा (पु०) मिट्टी बटोरने का औज़ार, फावड़ा ।

फराटा (पु०) वेग, तेज़ी ।

फराना (सं० स्फुरण) (क्रि० अ०) हिछना, उड़ना,  
फहराना (जैसे झंडा) ।

फरारा (पु०) बाँस का टुकड़ा, फूँक ।

फल (फल=फलना, सिद्ध होना या भेदना) (पु०) मेवा,  
काम की सिद्धि, लाभ, फायदा, प्रयोजन, मतलब,  
परिणाम, नतीजा, संतान, वंश, संतति, औलाद,  
प्रतिफल, बदला, प्रतीकार, पारितोषिक, बाण के  
आगे का लोहा, फाल, (गणित में) लब्धि, ढाल,  
फरी, भाले अथवा तलवार की नोक ।

फल पाना (मुहा०) भले या बुरे काम का बदला  
मिलना, बदला मिलना, परिणाम ।

फल-फलारी (मुहा०) नाना प्रकार के फल ।

फल-फूल (मुहा०) वनस्पति, ढाली, उपहार ।

फलक (फल=जाना या भेदना) (पु०) ढाल, लजाट  
की ढङ्गी, मूटि, तह, परत, कटज़ा, तलत, पटेरा ।

फलद (फल, दा=देना) (वि०) फलदायक, फल देने-  
वाला, (पु०) वृक्ष ।

फलदाता (फल + दाता) (वि०) फल देनेवाला ।

फलना (सं० फलन, फल=फलना) (क्रि० अ०) फल  
लाना, फल देना, फल लगना, (जैसे वृक्ष का)  
सफल होना, फलदायक होना, भाग्यवान् होना,  
सुखी होना, फूलना, खुश रहना, वंश बढ़ना ।

फलप्राप्ति ( फल + प्राप्ति ) ( स्त्री० ) मनोरथसिद्धि,  
मनलब्ध पूरा होना ।

फलना-फूलना ( मुहा० ) भाग्यवान् होना, सुखी होना ।

फलबुझावल ( पु० ) एक खेल का नाम जिसको 'मन-  
केखा' भी कहते हैं, जैसे—मन में कोई अंक मान  
लो, फिर उस को दूना करो और उसमें दस जोड़ दो,  
फिर उसमें पाँच निकाल लो तो बाकी कितना  
रहा ?—इसी, तो वह अंक आठ है—इत्यादि ।

फलवान् ( फल, वान्=वाला ) ( वि० ) सफल, सार्थक,  
फलयुक्त ।

फलश्रेष्ठ ( पु० ) आम ।

फलाध्यक्ष ( फल + अध्यक्ष ) ( पु० ) खिरिणी या खित्री ।

फलांग ( फल लयन, लय=नाचना, कृदना ) ( स्त्री० ) कूद,  
उछलना, डग ।

फलान ( पु० ) अमुक ।

फलास ( पु० ) फलाना, कूद-फाँद, ताश का एक खेल ।

फलित ( फल=फलना ) ( वि० ) फला हुआ, सफल,  
उद्योग-विशेष ।

फलितज्ञ ( फलित + ज्ञ=ज्ञानना ) ( पु० ) उद्योगिणी,  
नजुमी ।

फलितार्थ ( पु० ) तात्पर्य, सिद्धि ।

फलियाँ ( स्त्री० ) छोमी, छोटी फूल दानेदार फली ।

फली ( सं० फल ) ( स्त्री० ) छोमी, ( जैसे मटर आदि की ) ।

फलूबा ( पु० ) गठीला, झालर ।

फलेग्रहि ( फल+ग्रह=लना ) ( पु० ) फल का लेनेवाला ।

फलोत्तमा ( फल + उत्तमा ) ( स्त्री० ) दाख या मुनक्का ।

फलोदय ( फल + उदय ) ( पु० ) लाभ, प्राप्ति, आनंद,  
हप् ।

फलका ( पु० ) फलका, फफोला, छाला ।

फलगु ( फल=फल देना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम  
जिसके तीर पर गया-नामक शहर बसा हुआ है, एक  
प्रकार का अंजीर का पेड़, गुलाल, ( वि० ) असार,  
तुच्छ ।

फुवारा ( पु० ) फुहार ।

फसकड़ ( पु० ) फले पाँच की बैठक, पसरकर बैठना ।

फसकना ( कि० अ० ) फटना, फूटना, शिथिल होना ।

फसकाना ( कि० स० ) फाड़ना, ढीला करना, गिरा देना ।

फसफसा ( वि० ) निर्बल, ढीला, पिलपिला, स्थूल ।

फसरी ( स्त्री० ) फाँसी, फंदा ।

फसाना ( कि० स० ) बझाना, क्रैद में डालना,  
उलझाना ।

फहराना } ( सं० स्फुरण स्फुर=हिलना ) ( कि० अ० )  
फराना } उड़ना, खहराना, हिलना ( जैसे भंडा ) ।

फाँक ( स्त्री० ) टुकड़ा, चकनी, ककड़ी आदि फल का  
टुकड़ा ।

फाँकना ( कि० स० ) फंका मारना ।

फाँको ( सं० फकिका ) ( स्त्री० ) लपेट की बात, उलझन  
की बात, तर्क, फकिका ।

फाँड़ ( पु० ) अंचल, अँचरा ।

फाँद } ( पु० ) फंदा, फाँसी, फाँदा ।

फाँदना ( सं० फालन, फल=उछलना ) ( कि० स० )  
कूदना, उछलना, छाँवना ।

फाँदी ( स्त्री० ) भार, बोझ, गन्ने का बोझा ।

फाँपना ( कि० अ० ) सूजना, फूलना ।

फाँपा ( वि० ) फूला, सूजा, फोक ।

फाँफड़ ( पु० ) छेद, मुँद, अवकाश ।

फाँस ( स्त्री० ) बाँस आदि का बहुत ही छोटा टुकड़ा,  
अथवा काँटा अथवा सीक ।

फाँसी ( सं० पाश ) ( स्त्री० ) फंदा, फँसड़ी एक रस्सी  
जिसे गले में डालकर खींच लेते हैं तो गरदन की  
रग दबने से आदमी मर जाता है ।

फाँसी देना ( मुहा० ) गला दबाना, मार डालना, फाँसी  
पर चढ़ाना या लटकाना ।

फाँसी पड़ना ( मुहा० ) फाँसी दिया जाना, मारा जाना,  
लटकाया जाना ।

फाँसी लगाना ( मुहा० ) गला घोटना, गला दबाना,  
मार डालना ।

फाग ( सं० फाल्गु ) ( पु० ) होली में गुलाल आदि का  
उड़ाना, होली के खेल, होली के गान ।

फाग खेलना ( मुहा० ) अबीर उड़ाना, होली खेलना ।

फागुन ( सं० फाल्गुन ) ( पु० ) हिंदुओं का बारहवाँ महीना ।

फाट ( पु० ) भाग, हिस्सा, चौड़ाई ।

फाटक ( पु० ) बड़ा दरवाजा, द्वार, किवाड़, रोक,  
अटकाव ।

फाइ (पु०) दराज़, सूराम, दर्रा।  
 फाइखाऊ (वि०) काट खानेवाला, खूँख़ार।  
 फाइ खाना (मुहा०) भँभोड़ना, सताना, बहुत क्रोध करना।  
 फाइना (सं० स्फाटन) (क्रि० सं०) चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना।  
 फाइना (वि०) फटा हुआ, चिरा हुआ, शिगाफ।  
 फारा (पु०) कतरा, टुकड़ा।  
 फारनेसेक्रेटरी (पु०) विदेश-मंत्री।  
 फाल (फल=फाइना) (पु०) नोकदार छोटा जो हल में लगाया जाता है, शरथ-विशेष, सुपाड़ी का टुकड़ा।  
 फालसा (पु०) एक फल का नाम।  
 फाल्गुन (फाल्गुनी एक नक्षत्र का नाम) (पु०) फागुन, इस महीने में पूनो के दिन “पूर्वाफल्गुनी” नक्षत्र होता है।  
 फाव (पु०) घलुआ धेलवा।  
 फावड़ा (पु०) भरती खोदकर मिट्टी फेंकने या उठाने का एक औज़ार, कुदाल, कुदाली।  
 फावड़ी (स्त्री०) छोटा फावड़ा।  
 फासिला (पु०) अंतर, दूरी।  
 फाहा (पु०) रुई का पहड़ा अथवा छोटा गाला, वह कपड़ा जिस पर मरहम लगाकर घाव पर बाँधने हैं।  
 फिकना (क्रि० अ०) फेंकना।  
 फिकाना (क्रि० सं०) फेंका जाता।  
 फिकारना (क्रि० सं०) सिर नंगा करना।  
 फिट (पु०) फिटकार, सराप, (क्रि० वि०) छीछी।  
 फिटकार (स्त्री०) गाछी, सराप।  
 फिटकारना (क्रि० सं०) धिक्कारना, सरापना, छीछी करना।  
 फिट (वि०) फीका, शर्मिंदा, लज्जित, उदास।  
 फिट पड़ना (मुहा०) लज्जित होना, उदास होना।  
 फिटफिट (मुहा०) धिक्धक्, छीछी।  
 फिर (अव्य०) पीछे, पुनि, इसके बाद।  
 फिरका (पु०) क्रौम, जमात, जत्था।  
 फिरकी (फिरना) (स्त्री०) फिरनी, चकई, एक खिचौने का नाम।  
 फिर जाना (क्रि० अ०) वापस जाना, लौट जाना।

फिरत (वि०) लौटाया हुआ, (स्त्री०) वापसी, जैसे—  
 चुंगी का महसूख।  
 फिरता (वि०) चलता, घूमता, भ्रमता, वापस।  
 फिरना (शायद सं० परिक्रम से) (क्रि० अ०) घूमना, चकर खाना, पलटना, टहलना, चलना, भटकना, रमना, भ्रमण करना, बलवा करना।  
 फिर जाना (मुहा०) पलटना, बलवा करना, वासी होना, पेंटना, बल खाना, टेढ़ा होना।  
 फिराना (क्रि० सं०) लौटाना, घुमाना, मोड़ना।  
 फिल्ली (स्त्री०) पिंडली, टैंगड़ी, पुटना।  
 फिश (अव्य०) छी, धिक्।  
 फिसफिसाना (क्रि० सं०) डरना, भयभीत होना, चकित होना, ठीला पड़ना आँसू बहाना।  
 फिसलना (क्रि० अ०) खिसलना, डिगना, रपटना, खिसकना, उलट जाना, लुढ़कना, गिरना, लड़खड़ाना।  
 फिसलाव (पु०) रपटन, बिछलन।  
 फिसलाइट (स्त्री०) चिकनाइट, बिछलाइट।  
 फिदरिस्त (स्त्री०) सूखी, बही, खाना।  
 फौंचना (क्रि० सं०) धोना, साफ करना, खँघाछना।  
 फीका (वि०) बेस्वाद, बेनमक, मीठा, पीला, बदरंग, कमरंग, हलका, (जैसे रंग)।  
 फीता (पु०) कपड़े की पट्टी।  
 फुंरना (पु०) धौंकनी, (क्रि० अ०) धौंकना, मुँह से हवा करना।  
 फुंकार (सं० फुकार, फुत्=ऐसा शब्द, क=करना) (स्त्री०) साँप के साँस लेने का शब्द, फुफकार, फुस्कार।  
 फुंगी (स्त्री०) कली, फुनगी।  
 फुंदना (पु०) गुच्छा, भाखर, भट्ठा।  
 फुंसी (स्त्री०) छोटी फुडिया, अन्होरी।  
 फुंहार (स्त्री०) मेंह की छोटी-छोटी बूँदें, कुही, कोहार।  
 फुहारा (फुंहार) (पु०) कव्वारा।  
 फुकना (पु०) मूत्राधार, थैली।  
 फुट (सं० स्फुट) (वि०) अलग-अलग, भिन्न, विपम, अयुग्म, (पु०) माप-विशेष।  
 फुटकर } (सं० स्फुट=अलग-अलग होना) (वि०) भिन्न,  
 फुटकल } फुट, अयुग्म, विपम, अलग-अलग, एक-एक।  
 फुटकी (स्त्री०) छिटकी, धन्ना।  
 कुटैल (वि०) फुट, चकड़ा।

फुत्कार ( पु० ) फुफकार, दुत्कार, धुत्कार ।  
 फुद्कना ( कि० अ० ) कुद्कना, उछलना-कुद्ना ।  
 फुनगी ( स्त्री० ) कली, कोंपल, मंजरी, शंकर, शिखर,  
 चोटी ।  
 फुनंग ( पु० ) पुनहुँ, वृक्षादि का सबसे ऊँचा भाग ।  
 फुनसी ( स्त्री० ) छोटा फोड़ा ।  
 फुफा ( पु० ) फुफा का पति ।  
 फुफा ( स्त्री० ) बारा की बहन ।  
 फुफकार ( स्त्री० ) फुंकार, फूँकार ।  
 फुफेरा } ( वि० ) फुफी का जैसे फुफेरा भाई=फुफी  
 फुफेरी } का बेटा, फुफेरी बहन=फुफी की बेटी ।  
 फुर ( वि० ) सच, सच्चा, ठीक, यथार्थ ।  
 फुरफुराना ( सं० स्फुर=हिलना ) ( कि० अ० ) कोंपना, हिलना ।  
 फुर्त } ( सं० स्फूर्ति, स्फुर=हिलना ) ( स्त्री० ) जल्दी,  
 फुर्ती } चटपटी, शीघ्र, वेगता, चालाकी ( वि० ) तत्पर ।  
 फुर्तीला ( फुर्त ) ( वि० ) चालाक, चटपटिया, जल्दबाज़ ।  
 फुलका ( सं० फूल=फूलना ) ( वि० ) फूला हुआ, हलका,  
 ( पु० ) फफोला, छाला, पतली रोटी ।  
 फुलकारना ( कि० अ० ) फुलाना, फुफकारना ।  
 फुलकारी ( सं० फुलकार, फूल=फूल, आकार=डाल )  
 ( स्त्री० ) एक प्रकार का कपड़ा जिस पर फूल निकले  
 होते हैं, नैन्, जामना ।  
 फुलझड़ी ( स्त्री० ) एक तरह की श्रावणबाज़ी, शिगूफा ।  
 फुलवारी } ( सं० फुलवाटी, फूल=फूल, वाटी=वाड़ा )  
 फुलवाड़ी } ( स्त्री० ) पुष्पवाटिका, फूलों का बगीचा ।  
 फुलहथा ( पु० ) लट्ट की मार ।  
 फुलासरा ( पु० ) चापलूसी, लल्लोपत्ती ।  
 फुलेल ( सं० फूल=ल ) ( पु० ) सुगंधित तेल फूल का  
 तेल ।  
 फुलौरी ( स्त्री० ) पकौड़ी ।  
 फुल ( पु० ) पुष्पयुक्त वृक्ष, विकसना, खिलना, हर्ष ।  
 फुलला ( वि० ) फूला हुआ ।  
 फुली ( सं० फूल ) ( स्त्री० ) आँख की बीमारी जिससे  
 आँख में एक सफेद बुन्दा-सा पड़ जाता है ।  
 फुसफुसाना ( कि० अ० ) कानाफूसी करना, काना-  
 कानी करना ।  
 फुसलाना ( कि० सं० ) दिखावा देना, भुलाना, भाँसा  
 देना, धोखा देना, बहकाना, दम देना, बहलाना

फुसलावा ( पु० ) भुलावा, बहकाव ।  
 फुस्का ( पु० ) छाछा, ( वि० ) दुबला, ढीला ।  
 फूँक ( फूँकना ) ( स्त्री० ) दम, साँस ।  
 फूँक देना ( मुहा० ) आग लगा देना ।  
 फूँकना ( सं० फुत्कार ) ( कि० सं० ) मुँह से हवा निका-  
 लना, आग लगाना, जलाना, सुलगाना, बजाना  
 ( जैसे तुरही, सीगा आदि ) ।  
 फूँक-फूँक कर पाँव धरना ( मुहा० ) बहुत सावधानी  
 से काम करना या रहना ।  
 फूँकारना ( सं० फुत्कार ) ( कि० अ० ) फनफनाना,  
 फुंकार मारना, फुत्कारना ( जैसे साँप का ) ।  
 फूँही } ( स्त्री० ) छोटी-छोटी मेंह की बूँदें, भीसी,  
 फोहार } मंद-मंद वर्षा ।  
 फूहार }  
 फूआ ( स्त्री० ) बुआ, पिता की बहन ।  
 फूट ( सं० स्फुटि, स्फुट=फूटना या टूटना ) ( स्त्री० ) एक  
 तरह की ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, ( स्फुट ) बिगाड़,  
 वैर, विरोध, बखेड़ा, झगड़ा, असम्मति, अनमेल,  
 जुदा होना, अलगाव, बिलगाव, खंडन, टूट, संध,  
 दरार ।  
 फूट पड़ना ( मुहा० ) बखेड़ा मचना, विरोध होना,  
 झगड़ा उठना, ब्रीच पड़ना ।  
 फूट-फूटकर रोना ( मुहा० ) उमँड़-उमँड़कर रोना,  
 बहुत रोना ।  
 फूट रहना ( मुहा० ) अलग हो जाना ।  
 फूट होना ( मुहा० ) किसी की सम्मति न मिलना,  
 एकमत न होना ।  
 फूटना ( सं० स्फुटन, स्फुट=फूटना ) ( कि० अ० ) टूटना,  
 छिन्न-भिन्न होना, बिखरना, अलग होना, फटना,  
 चिरना, उठना, फैलना ( जैसे सुगंध ), कली का  
 खिलना, भेद खुल जाना, वैरी से मिल जाना ।  
 फूटा ( वि० ) खंडित, टूटा हुआ ।  
 फूटी ( कि० वि० ) टूटी हुई, ( स्त्री० ) कौड़ी, झंझो ।  
 फूटी सहें पर काजन न सहें ( मुहा० ) थोड़ी घटी  
 न सहना और सबका सब नुकसान सहना ।  
 फूफा ( पु० ) फुफी का पति ।  
 फूफी } ( स्त्री० ) बाप की बहन ।  
 फूफू }



फूल ( पु० ) ( सं० फुल, फुल्ल=फूलना ) ( पु० ) पुष्प, पुहुप, कुसुम, सुमन, स्त्री का रज, निहानी सुर्दे की हड्डियाँ जो जब जाने के पीछे चुनी जाती हैं, एक प्रकार का काँसा जो बहुत साफ़ और सफ़ेद होता है, फुलाव, सूजन, ( वि० ) बहुत हलका ।  
फूल जाना ( मुहा० ) सूज जाना, प्रसन्न होना, आनंदित होना, मोटा होना ।

फूल झड़ना ( मुहा० ) सुंदरता से बोज़ना, मीठा बोलना, दीपक से जले हुए तेल के टपकों का गिरना ।

फूल पड़ना ( मुहा० ) आग लग जाना, जल जाना ।  
फूल बैठना ( मुहा० ) खुश होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बहुत प्रसन्न होकर बैठना ।

फूल गोबी ( स्त्री० ) गोबी, करमकला ।  
फूलना ( सं० फुलन, फुल्ल=फूलना ) ( क्रि० अ० ) खिलना, विकसना, डहडहाना, प्रसन्न होना, खुश होना, हुलसना, नीरोग रहना, बढ़ना, पनपना, फखना, सूजना, मोटा होना, वायु से भरना, वायु से फूलना, घमंड करना ।

फूलता फिरना ( मुहा० ) अत्यंत प्रसन्न होना ।  
फूला ( सं० फुल ) ( वि० ) फुला हुआ, सूजा हुआ, खिला हुआ, विकसा हुआ, डहडहा हुआ ।  
फूला न समाना ( मुहा० ) मगन होना, अत्यंत आनंदित होना, आनंद से फूल जाना ।

फूस ( पु० ) सबी और सूखी घास ।  
फूस में चिनगारी डालना ( मुहा० ) बखेड़ा मचाना, अगड़ा उठाना ।

फूसड़ा ( पु० ) चिथड़ा, गुदड़ा, फटा-पुराना वस्त्र ।  
फूसी ( स्त्री० ) अनाज का छिलका, चोकर, भूसी, मैल ।  
फूदड़ ( वि० ) अनसीखी, मूर्ख, घामड़, गँवार, बुरी, भोड़ी ( यह शब्द स्त्री के लिये बोला जाता है ) ( स्त्री० ) मैली-कुवैली स्त्री ।

फूदड़पन ( स्त्री० ) भद्दापन, गँवारपन ।  
फूदड़ा ( वि० ) गँवार, भद्दा, बुरा ।  
फूढा ( पु० ) रुई का फाहा जिसको दूध में भिगोकर बच्चे के मुँह में निचोड़ते हैं जब बच्चा अपनी माँ के स्तनों से दूध नहीं पी सकता ।  
फूहार ( स्त्री० ) झींसी, फूही ।

फेंकना ( सं० वेपण, लिप्=फेंकना ) ( क्रि० सं० ) डालना, बीगना, दूर गिराना, अलग करना, बगभूट दौड़ाना ( घोड़े को ) सरपट जाना ।

फेंक देना ( मुहा० ) दूर गिरा देना ।  
फेंकाव ( पु० ) फेंकने का भाव या क्रिया ।  
फेंट } ( ) कमरबंद, पटका, कटिबंध ।  
फेंट }

फेंट बाँधना ( मुहा० ) किसी काम के लिये तैयार होना, तानना, ठहराना, कमर बाँधना ।

फेंटा } ( पु० ) कमरबंद, छोटी-सी पगड़ी ।  
फेंटा }

फेन ( स्थायु=बढ़ना ) ( पु० ) भाग, कफ, फेना, समुद्र-फल ।

फेनावाहिन ( पु० ) जल, रस, दुग्ध, दूध, समुद्र ।  
फेनी ( सं० फेन ) ( स्त्री० ) एक भौंति की मिठाई ।  
फेनुस ( पु० ) नई बियाई गाथ का दूध, पीयूष, अमृत ।  
फेफड़ा ( पु० ) साँस लेनेवाला अंग ।  
फेफड़ी ( स्त्री० ) शून्य, गमन-शक्ति ।  
फेर ( पु० ) शृगाल, मीढ़ ।

फेर ( फेरना ) ( पु० ) घुमाव, बाँका, चकर, पंच, तबदील, बदली, विकार, बुरे दिन, बुरा भाग, अभाग्य, कठिनता, दूरी, ( क्रि० वि० ) दूसरी बार, पीछा, फिर, उलटा ।

फेर खाना ( मुहा० ) घूमना, चकर खाना, दुःख पाना, तकलीफ उठाना ।

फेर देना ( मुहा० ) उलटा देना, पीछा दे देना, लौटा देना ।

फेर पड़ना ( मुहा० ) कर्क पड़ना, बीच रहना, चकर पड़ना, दुःख होना ।

फेरफार ( मुहा० ) छल, फरेब, धोखा, दगा, ओसरा-ओसरी, परस्पर, फेराफेरी ।

फेरफार करना ( मुहा० ) अदल-बदल करना, परिवर्तन करना, कपट करना, धोखा देना ।

फेराफेरी ( मुहा० ) आपस में किसी चीज़ को लेना और पीछे देना ।

फेरना ( क्रि० सं० ) उलटना, घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना, हटाना, दूर करना, पीतना ( जैसे चूना, कलई आदि ) ।

फेरना सिर पर हाथ ( मुहा० ) कुसलाकर  
उगना, साहस देना ।

फेरना हाथ ( मुहा० ) प्यार करना, दुलार करना, छोड़  
करना, हिम्मत बढ़ाना, हाथ साफ़ करना ।

फेरा ( पु० ) घुमाव, घेरा, चक्कर ।

फेरी ( स्त्री० ) प्रदक्षिणा, घूमना, जैसे प्रभातफेरी ।

फेरीवाला ( गच्चा-गली घूमकर बेचनेवाला,  
पैकार, पैकरहा ।

फेरू ( पु० ) मियार, मीढ़ ।

फेल } ( पु० ) काम, किया ।  
फैलाना }

फैलक ( फेल+अक, फल=जानना ) ( वि० ) उच्छिष्ट, जूँटा

फैलन ( पु० ) फैकना ।

फैलित ( वि० ) फैका हुआ ।

फैलोन्न ( पु० ) मेंबर, अंग ।

फैलना ( क्रि० अ० ) बिछना, पसरना, बिथरना, निख-  
रना, चौड़ा होना, प्रसिद्ध होना ।

फैलाना ( क्रि० सं० ) बिछाना, पसारना, छितराना,  
खोल देना, चौड़ा करना, प्रसिद्ध करना, प्रकट  
करना, हिसाब करना ।

फैलाव ( पु० ) प्रचार, बिछाव, पसराव, चौड़ाई, विस्तार ।

फोंक ( स्त्री० ) बाण का वह छोर जो पंच में लगना

है, ( वि० ) छूँछा, खाली, खोखला, पोला ।

फोंकी ( स्त्री० ) नली, छूँछी ।

फोंफो ( स्त्री० ) नली, छूँछी, पोखी चीज़ ।

फोंहार ( स्त्री० ) भीसी, फूँही ।

फोकट ( पु० ) गरीब, दरिद्र, कंगाल, ( वि० ) मुफ्त,  
बिना दाम का ।

फोकड़ ( पु० ) कूड़ा, कर्कट, तख़्ख़ट ।

फोटो ( पु० ) प्रतिबिम्ब, श्रवस, तस्वीर ।

फोटोग्राफ़र ( पु० ) चित्रलेखक, मुसव्विर ।

फोड़ना ( सं० स्फोटन, स्फुट=फटना ) ( क्रि० सं० )  
तोड़ना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, प्रकट  
करना, भेद खोल देना ।

फोड़ा ( सं० स्फोटक, स्फुट=फटना ) ( पु० ) घाव, ज़हरम,  
कुंभी ।

फोला ( पु० ) फफोला, छाला ।

फोंजदारी ( स्त्री० ) जुमे, भगड़ा, टंटा ।

फोंजी ( वि० ) सैनिक ।

फोंत ( स्त्री० ) मौत, मृत्यु, देहांत ।

फौरन् ( क्रि० वि० ) सद्यः, तुरन्त, उसी दम, तत्काल,  
तत्क्षण ।

फौलाद ( पु० ) पका लोहा ।

फौलादी ( वि० ) फौलाद का बना हुआ, मज़बूत ।

## व

व ( पु० ) बरुण, घड़ा, समुद्र, पानी ।

वक ( सं० वक, वकि=टेढ़ा होना ) ( पु० ) बगला ।

वकध्यान लगाना ( मुहा० ) पाखंड करना, काट  
करना ।

वक ( सं० वाक् ) ( स्त्री० ) वकवाद, वकवक, गपशप,  
बड़बड़ाहट, भक, गुलगपाड़ा, वृथा बातें ।

वकभक ( मुहा० ) वकवक, गपशप, वकवाद, वृथा  
बातें ।

वकभक करना } ( मुहा० ) टेंटे करना, चेंचें करना,  
वकथक करना } वकवक करना, वकवाद करना,  
बड़बड़ाना, वृथा बकना ।

वक लगाना ( मुहा० ) ह-हा करना, गुल मचाना, हुल्लड़  
करना ।

वकना ( सं० वाक् ) ( क्रि० अ० ) वड़वड़ाना, वकभक  
करना, हुल्लड़ करना, गुल मचाना ।

वकरा ( सं० वकीर, वृकु=लेना ) ( पु० ) छाल, अज ।

वकरी ( स्त्री० ) छेरी, अजा ।

वकला } ( सं० वल्कल, वल्=ढकना ) ( स्त्री० ) छाल,  
वकल } छिलका, पोस्त ।

वकवाद } ( वक=बड़बड़ाहट और वाद=भगड़ा )  
वकवास } ( स्त्री० ) वकवक, वकभक, वृथा  
बातें ।

वकवादी ( वकवाद ) ( वि० ) भकी, बकी, वकवाद  
करनेवाला ।

वकवादा ( पु० ) बातूनी, गप्पी ।

वकासुर ( सं० वक=बगला, असुर=राक्षस ) ( पु० ) एक

राक्षस का नाम जो बगला बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था ; उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

बकिया ( स्त्री० ) छुरी, चकू ।

बका ( स्त्री० ) पूनना राक्षसी का नाम, पक्षी-विशेष ।

बकोटना ( क्रि० प्र० ) नोचना, खसोटना ।

बकम ( पु० ) काष्ठ-विशेष जो रँगने के काम में आता है ।

बक्री ( बकना ) ( वि० ) गायी, भक्री, बकवादी ( सं० वक्ता ) ।

बकदंत ( सं० बक=बॉका, दंत=दांत ) ( पु० ) शिशुपाल के भाई का नाम, जिसके दाँत बक हों, वह व्यक्ति ।

बख ( पु० ) संसार, दुनिया, पृथ्वी, जगत् ।

बखरी ( स्त्री० ) बटखरा, मकान, भोपड़ी, घर ।

बखान ( सं० व्याख्यान ) ( पु० ) वर्णन, व्याख्या, बयान, स्तुति, सराहना ।

बखान करना } ( क्रि० प्र० ) सराहना, स्तुति करना,  
बखानना } तारीफ़ करना, वर्णन करना ।

बखार ( पु० ) } अनाज रखन का भंडार ।  
बखारी ( स्त्री० ) }

बखिया ( पु० ) एक तरह का टाँका, मजबूत टाँका, दड़ सीवन ।

बखी ( स्त्री० ) बगल ।

बखेड़ा ( पु० ) भगड़ा, लड़ाई, दंगा, रीला ।

बखेड़ा चुकाना ( मुहा० ) भगड़ा मिटाना ।

बखेड़ा मचाना ( मुहा० ) दंगा करना, बलवा करना ।

बखेड़िया ( वि० ) भगड़ाल, खड़ाका, दंगई ।

बखेरना ( सं० विकीर्ण, वि, कृ=विलरना ) ( क्रि० सं० ) फैलाना, अलग-अलग करना, छिटकाना, छितराना, बिथराना, छोटना ।

बखोर ( पु० ) असुगुन, अशुभ लक्षण ।

बखोरना ( क्रि० प्र० ) टोकना, पूछना, तंग करना ।

बखोरा ( पु० ) कंधा ।

बकिशिश ( पु० ) इनाम, पारितोषिक, दान ।

बग ( सं० बक ) ( पु० ) बगला ।

बगछूट ( बग=बागडोर, छूट=छुटना ) ( स्त्री० ) सरपट, धावा ।

बगछूट दौड़ना ( मुहा० ) सरपट जाना, तेज़ दौड़ना ।

बगड़ ( पु० ) एक प्रकार का चावल ।

बगड़ा ( पु० ) धोखा, छल, कपट, दंढ़-फंद ।

बगड़िया ( वि० ) धूर्त, छली, कपटी, फ़सादी ।

बगदना ( क्रि० प्र० ) लौटना, फिरना, लुढ़कना, बिगड़ना, भूखना ।

बगल ( पु० स्त्री० ) कल, काँस, किनारा ।

बगला } ( सं० बक ) ( पु० ) एक जल का पक्षी,  
बगुला } बग ।

बगलाभूत ( मुहा० ) कपटी, छली, पाखंडी, कपट-धर्मी, फ़रेबी ।

बगला मारे पंख हाथ आए ( मुहा० ) शरीर को दुःख देने से बहुत ज़ाब नही होता है, निरर्थक परिश्रम करना ।

बगलाना ( क्रि० प्र० ) एक किनारे होना, हट जाना, एक बगल हो जाना ।

बगली ( स्त्री० ) थैली, जेरा ।

बगहंस ( पु० ) पक्षी-विशेष ।

बगार ( पु० ) चरागाह, रमना, दूरतों की क़तार, बाग़ ।

बगारना ( क्रि० सं० ) फैलाना, छितराना ।

बगावत ( स्त्री० ) बलवा, फ़साद, अराजकता ।

बगूला ( वायु अथवा वायु से ) ( पु० ) हवा का चक्कर जिसमें धूल ऊँची उठता है, बवंडर, चक्रवात ।

बगौर ( अव्य० ) बिना ।

बग्गी } ( स्त्री० ) एक तरह की सवारी गाड़ी जिसमें  
बग्गी } घोड़ा जोता जाता है ।

बघनहा ( पु० ) सुगंधित द्रव्य-विशेष, बाघ का नाखून ।

बघार ( पु० ) छींकना, घी-तेल में कुछ मसाखा गर्म करके दाख़ आदि तरकारियों में डालना ।

बघी ( स्त्री० ) मक्खी, डाँस ।

बघेला ( बाघ ) ( पु० ) एक जानि के राजपूत, बाघ का बच्चा ।

बंक ( वि० ) झुका हुआ, बक्र, टेढ़ा ।

बंकाई ( सं० बङ्कना, बङ्क, बकि=टेढ़ा होना ) ( स्त्री० ) टेढ़ापन, टेढ़ाई, निरुद्धापन, बाँकपन, फेर, घुमाव ।

बंग ( पु० ) राँग की भरम रस-विशेष, एक प्रकार की धातु, बंगाल-प्रदेश ।

बंगड़ी ( स्त्री० ) खियों के हाथ में पहनने का एक गहना ।

बंगरी ( स्त्री० ) खियों के हाथ का एक आभूषण ।

बंगला ( पु० ) एक तरह का बड़ा मकान जो चारों ओर से

मुला रहना है, ( सं० वृत्त ) एक तरह का पान,  
बंगाली बोली ।

बंगाला ( सं० बंग ) ( पु० ) बंगाल-देश का नाम ।

बंगाली ( सं० बंग ) ( पु० ) बंगाल का रहनेवाला,  
( स्त्री० ) बंगाले की बोली ।

बंगी ( स्त्री० ) भौरा, लट्ठ ।

वच ( सं० वचमू, वच=वाचना ) ( पु० ) वचन, वाक्य,  
( स्त्री० ) श्रोतृ-विशेष ।

वचकाना ( फा० बचा सं ) ( वि० ) छोटा, ( पु० )  
कथक का लड़का, छोटा जुना, बच्चों का जुना ।

वचकानी ( स्त्री० ) लींड़ा, ( वि० ) छोटी, बच्चों की ।

वचन ( स्त्री० ) शेष, बाक़ी, बक़िया, बकाया, अवशेष ।

वचती ( स्त्री० ) बाक़ी, शेष ।

वचन ( सं० वचन ) ( पु० ) बात, वाक्य, कहना, क़ौल,  
करार, प्रण, होइ, शर्त ।

वचनचूक ( मुहा० ) अविश्वामी, घेपतवार ।

वचन छोड़ना ( मुहा० ) वचन तोड़ना, क़ौल छोड़ना ।

वचन तोड़ना ( मुहा० ) कही हुई बात से फिर जाना,  
शर्त से फिर जाना ।

वचन देना ( मुहा० ) पक्का क़ौल करना, प्रण करना,  
प्रतिज्ञा करना, बात देना ।

वचन निभाना या पालना ( मुहा० ) कहे को पूरा  
करना, अपनी बात पर अड़े रहना, बात देना ।

वचनभद्र करना ( मुहा० ) वचन लेना, इकरार  
कराना ।

वचनभद्र होना ( मुहा० ) वचन देना ।

वचन मानना ( मुहा० ) बात मानना, आज्ञा पालन  
करना ।

वचन लेना ( मुहा० ) इकरार कराना ।

वचन हारना ( मुहा० ) मान लेना, इकरार कर लेना ।

बचना ( कि० अ० ) रक्षा पाना, अलग रहना, बाक़ी  
रहना ।

बचपन ( पु० ) लड़कपन, लड़काई ।

बचाना ( कि० म० ) रक्षा करना, रखवाली करना,  
जवाब देना, उत्तर देना ।

बचाव ( पु० ) रक्षा, रखवाली, उद्धार, हिमायत, आश्रय ।

बच्चा ( सं० बत्स या फा० बचा ) ( पु० ) छोटा लड़का  
या लड़की, छोटी उमर का जानवर ।

( सं० बत्स ) ( वि० ) लाज, प्यारा, ( पु० ) बच्चा,  
लड़का, बछड़ा ।

बच्छल ( सं० बत्सल ) ( वि० ) प्यारा, छोटी, प्रेमी,  
दयालु, कृपालु, कोमल ।

बच्छासुर ( सं० बत्स=बछड़ा, अमुर=राक्षस ) ( पु० ) एक  
राक्षस जो बत्स के कहने से बछड़ा बनकर श्रीकृष्ण  
के मारने को गया था ।

बछड़ा } ( सं० बत्स ) ( पु० ) गाय का बच्चा ।  
बछड़ू }

बछिया ( स्त्री० ) गाय की बछड़ी ।

बछेरा ( बत्स ) ( पु० ) घोड़े का बच्चा ।

बजरा ( पु० ) पकौड़ी, कुत्तरी, काड़े की गाँठ ।

बजना ( सं० बाध, बज=शब्द करना ) ( कि० अ० )  
शब्द या स्वर निकलना, कुरती लड़ना, ( पु० )  
भगड़ा, बखेड़ा, टंटा होना ।

बजनी ( स्त्री० ) बाजा बजाने की वस्तु ।

बजंत्री ( सं० बाध=बाजा, यंत्री=बजानेवाला ) ( पु० )  
बाजा, बजानेवाला, सम्राज ।

बजवजाना ( कि० अ० ) बड़ना, गलना, उबलना,  
खोलना, उफनाना, मथ जाना ।

बजरवट्ट ( पु० ) एक जंगली फल का नाम जिसे रीछ  
नचानेवाले बच्चों के खिये देते हैं इसलिये कि बुरी  
नज़र न लगे ।

बजरंग ( सं० बज्रंग, बज्र+अंग अर्थात् जिसका शरीर  
बज्र-मा कड़ा है ) ( पु० ) हनुमान् का नाम, महावीर ।

बजरंगी ( पु० ) एक प्रकार का तिलक जो हनुमान् के  
भक्त लगाते हैं, बज्रवत् अंगवाला ।

बजरा ( पु० ) बड़ी नाव जिस पर बैठकर नदी की सैर  
करते हैं ।

बज़ाज़ ( पु० ) कपड़े का व्यापारी ।

बजा लाना ( कि० सं० ) पूरा करना, निबाहना, पालन  
करना ।

बजाय ( कि० वि० ) बदले में, एवज़ में ।

बजेट ( स्त्री० ) आय-व्यय का लेखा, आमदनी और  
खर्च का हिसाब ।

बज्र ( सं० बज्र, वज्र=जाना ) ( पु० ) इंद्र का अस्त्र,  
विजली, गाज, हीरा, ( वि० ) कड़ा, कठिन, कठोर ।

बभ्रना ( कि० सं० ) फसना, उलझना, लगना ।

बभाना ( कि० स० ) फँसाना, डल्लभाना, पकड़ा जाना ।

बट ( पु० ) बरगद का वृक्ष ।

बटई ( स्त्री० ) ज़री बादला का काम, सोने का सूत बनाने का काम, पत्नी-विशेष ।

बटखरा ( सं० बंटक, बंट=बाँटना ) ( पु० ) बाँट, तोलने का तोला ।

बटन ( पु० ) बूतल, समेट, शिकन ।

बटना ( सं० बट्=लपेटना ) ( कि० स० ) बल देना, पेंटना, ( बट्=बाँटना ) पाना, ( कि० अ० ) बाँटा जाना, हिंसा होना ।

बटपाड़ { ( बाट=रस्ता, पाड़ना=गिराना अर्थात् लूटना )  
बटपार { ( वि० ) लुटेरा, डाकू ।  
बटमार {

बटमारी ( स्त्री० ) ठगी, लूट, डकैती, राहजनी ।

बटरी ( स्त्री० ) पियाही, कटोरी ।

बटलोही ( स्त्री० ) एक तरह का बरतन जिसमें दाल भात आदि पकाने हैं, बटुवा, भरतिया, पतेली ।

बटवार ( सं० बट्=बाँटना ) ( पु० ) कर उगाहनेवाला ।

बटवारा ( सं० बट्=बाँटना ) ( पु० ) बाँट भाग, अंश ।

बटाई ( स्त्री० ) बाँटने की क्रिया, बाटने की मजदूरी ।

बटाऊ ( बाट ) ( पु० ) बटोही, मुसाफिर, राहो, पथिक, बटमार ।

बटिया ( स्त्री० ) बटखरा, छोटा बाँट ।

बटुआ { ( सं० बट्=घेरना ) ( पु० ) कपड़े की एक  
बटुवा { छोटी थैली, बटलाहा

बटुक ( पु० ) एक भैरव का नाम, प्रह्वचारी, विद्या पढ़नेवाला प्रह्वचारी, लवंग ।

बटेर ( सं० बर्तक, बट्=होना ) ( पु० ) एक पखेरू का नाम ।

बटोरना ( कि० स० ) इकट्ठा करना, चुन लेना ।

बटोही ( बाट ) ( वि० ) राहगीर, मुसाफिर, रास्ता चखनेवाला पथिक ।

बट्टा ( पु० ) जो कुछ सिके के बदलने के समय दिया जाय, कमी, घटी, कलंक, दोष, दाग, गोला, ( लकड़ी वा पत्थर का ) डिब्बा ।

बट्टाढाल ( वि० ) बराबर, सपाट ।

बट्टा लगना ( मुहा० ) दाग लगना, कलंक लगना ।

बड़ { ( सं० बट ) ( पु० ) एक वृक्ष का नाम जिसकी  
बर { छाया घनी और बड़ी चौड़ी होती है, बरगद ।

बड़ ( वि० ) बड़ा ।

बड़पेटा ( मुहा० ) बहुत खानेवाला ।

बड़योला ( मुहा० ) शेखी बघारनेवाला ।

बड़भकुवा ( मुहा० ) मूर्ख ।

बड़ना ( कि० अ० ) घुसना, पैठना ।

बड़बड़ाना ( कि० स० ) मुँह ही मुँह में कुछ कहना, कुक्कुड़ाना, बकबक करना, अश्लेष बकना, अनर्गल प्रकाश ।

बड़वा ( बड़=बल, वा=जाना ) ( स्त्री० ) दास्यणी, सूर्य की स्त्री जिससे अश्विनीकुमार हुए हैं, कुम्भासी, अश्विनी, घोड़ी, बड़वानल ।

बड़वाकृत { ( पु० ) दासीपुत्र, भद्रदास ।  
बड़वाहत {

बड़वाग्नि { ( बड़वा=घोड़ी, अग्नि या अतल=आग )  
बड़वानल { ( स्त्री० ) समुद्र के भीतर की आग जो घोड़ी के मुँह से निकलती है ( हिंदुओं के शास्त्र के अनुसार ) ।

बड़वामुख ( पु० ) समुद्र का कालानल, समुद्राग्नि ।

बड़हल ( पु० ) एक फल का नाम ।

बड़ा { ( सं० बड़ा, बट्=विभाग करना या घेरना )  
बरा { ( पु० ) पोसी हुई दाल की टिकिया जिसकी घी अथवा तेल में तखकर खाते हैं, चक्र ।

बड़ा ( सं० बट्, बलु=घेरना ) ( वि० ) जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी उमर का, महान् ।

बड़ा करना ( मुहा० ) बढ़ाना, चिराग को बुझा देना ।

बड़ा योल ( मुहा० ) घमंड की बात ।

बड़ा रास्ता पकड़ना ( मुहा० ) मर जाना, क़त्ल करना ।

बड़े पेटवाला होना ( मुहा० ) संतोषी होना, धोर होना, चमावान् होना, अथवा अर्पणशी होना ।

बड़े योल का सिर नीचा ( मुहा० ) घमंड से खराबी होती है ।

बड़ाई ( सं० बट्टा ) ( स्त्री० ) बढ़ापन, बड़पन, महत्त्व, सराहना, स्तुति, प्रशंसा, घमंड, अभिमान ।

बड़ाई करना { ( मुहा० ) सराहना, प्रशंसा करना,  
बड़ाई मारना { स्तुति करना, घमंड करना, शेखी बघारना, डींग मारना, लंबी-चौड़ी हँकना, अपनी सराहना करना ।

बड़ाई देना ( मुहा० ) आदर देना, इज़्जत देना

बढ़ी (सं० बटी) (स्त्री०) एक तरह की खाने की चीज जो दाल की बनती है और तरकारी की तरह बनाई जाती है, (बढ़ा) बढ़ी उमर की स्त्री, (वि०) बढ़ा शब्द का स्त्रीलिंग।

बड़ी बात नहीं (महा०) कुछ कठिन नहीं।

बढ़ई (म० वर्द्धक, वृधु=बढ़ाना) (पु०) खानी, सुतार, मिस्त्री।

बढ़ती } (सं० वृद्धता, वृधु=बढ़ना) (स्त्री०) अधिक-  
बढ़ती } काई, वृद्धि, संपदा का बढ़ना, तरकी, उन्नति।  
बढ़न (स्त्री०) बढ़ती, प्रसि।

बढ़ना (सं० वर्द्धन, वृधु=बढ़ना) (क्रि० अ०) अधिक होना, बहुत होना, ऊँचा होना, आगे चलना।

बढ़ चलना (महा०) दौड़ होना, अभिमानो होना, अग्रसर होना।

बढ़ जाना (महा०) अंदाज से बाहर हो जाना।

बढ़नी (स्त्री०) भाड़ू, बुढ़ारो।

बढ़ाना (क्रि० स०) अधिक करना, बहुत करना, बढ़ा करना, ऊँचा करना, लंबा करना, आगे खाना, उठा ले जाना, अलग कर देना, बंद करना (दुकान की)।

बढ़ा लाना (क्रि० स०) सामने लाना, आगे लाना।

बढ़ाव (बढ़ना) (पु०) बढ़ती, अधिक, चढ़ाव, उभार।

बढ़ावा (बढ़ाना) (पु०) खुशामद, तारीफ़, बसाई, उभार।

बढ़िया (बढ़ना) (वि०) बहुत मोल का, महंगा, बहुमूल्य।

बढ़ेला (पु०) सुधर, बनेला।

बढ़ोतर (पु०) नक्रा, सूद, व्याज।

बणिक (पगु=लेनदेन करना) (पु०) बनिया, महाजन, व्यापारो, सौदागर।

बणिकपथ (पु०) हट, हाट, बाज़ार।

बणिज (सं० वाणिज्य) (पु०) व्यापार, लेन-देन, सौदागरी।

बणिया } (सं० बणिह) (पु०) महाजन, व्यापारो,  
बनिया } वैश्य, सौदागर, दूकानदार।

बत (पु०) बात, कौख।

बतबढ़ाव (महा०) बात बढ़ाना, विवाद।

बतबना (महा०) बानूनी, बात बननेवाला।

बतक (अ० बतख) (स्त्री०) एक जल का पक्षी।

बतकट (वि०) बात काटनेवाला जैसे —'बतकट पनही

बतकट जोय'—घाघ।

बतकटा (पु०) बात काटनेवाला।

बतकटी (स्त्री०) बात काटने की क्रिया।

बतकहा (पु०) गप्पो, बक्री।

बतकहाव (पु०) } (सं० वार्ता, कथन) बातचीत।

बतकही (स्त्री०) } जैसे—करत बतकही अनुज सन,  
मन सियरूप जोभान। रामा०

बतकड़ (वि०) बक्री, बानूनी, बाचाख, गपोड़िया।

बतराना (सं० वर्ता) (क्रि० अ०) बतियाना, बातचीत करना।

बतलाना } (सं० वद=कहना) (क्रि० स०) जताना,  
बताना } चिन्ताना, सुझाना, बुझाना, दिखाना,  
सिखलाना, समझाना, संकेत करना, इशारा करना,  
व्याख्या करना, अर्थ करना।

बता (पु०) बाँस की खपाची।

बतास (सं० बात) (स्त्री०) हवा, पवन, बयार, वायु।

बतासा } (बताम, हवा) (पु०) एक तरह की  
बताशा } मिठाई, बुलबुला।

बतौरी (स्त्री०) फोड़ा विशेष, मांसवृद्धि-विशेष।

बत्ती (सं० वर्ति, वृत्त=होना) (स्त्री०) बाली, पलीता,  
बाँस आदि की छड़, लाख की डंडी, पगड़ी जिसकी  
सिपाही लपेटकर गोल कर लेते हैं।

बत्ती चढ़ाना (महा०) घाघ में बत्ती डालना।

बत्ती जलाना (महा०) चिराग जलाना, दीया जलाना।

बत्तीस (सं० द्वाविंशत्) (वि०) तीस और दो, ३२।

बत्तीसो (स्त्री०) दाँतों की लड़ी, सब दाँत।

बत्तीसी दिखाना (महा०) दाँत दिखाना, हँसना।

बत्तीसी (स्त्री०) बत्तीस सुपाड़ी, बत्तीस लुहारा  
और रुपया जो दुलहा-दुलहिन के ननिहाल को  
जाना है उसे बत्तीसी कहते हैं।

बत्सा (पु०) एक तरह का चावल।

बथुना (सं० वास्तुक) (पु०) एक तरह का साग।

बद (वि०) खराब, बुरा, (स्त्री०) रोग-विशेष, बाधी।

बदना (सं० वदन, वद=कहना) (क्रि० स०) दाँव  
लगाना, मानना, रचना, भाग में लिखा जाना।

बदनाम (वि०) अपमानित बेइज्जत।

बदमाश (वि०) लुच्चा, पाजी, शराबी।

बदर (बद=दृढ़ होना या ठहरना) (पु०) बेर का फूल,  
बिनीला, कपासबीज।

बदरि ( बद=टढ़ होना ) ( पु० ) बेर, एक फल का नाम ।

बदरिकाश्रम ( बदरिका + आश्रम ) ( पु० ) बदरीनाथ,  
बदरीनाथ का पहाड़ ।

बदल ( पु० ) प्रतीकार, बदला ।

बदलना ( अ० बदल ) ( कि० स० ) पलटना, बदला  
करना, उलटना, और तरह से बना देना ।

बदला ( पु० ) प्रतीकार ।

बदलाना ( कि० स० ) पुरानी वस्तु के स्थान में नई  
वस्तु लेना ।

बदली ( बादल ) ( स्त्री० ) बादल, मेघ ।

बदली ( बदलना ) ( स्त्री० ) तबदीली, एक जगह से  
दूसरी जगह जाना ।

बदा ( सं० वद=कहना ) ( वि० ) होनहार, भवितव्य ।

बदाबदी ( अर्थ० ) देखादेखी, मुकाबिले में हिस्सा,  
ईर्ष्या, होड़ ।

बदि { ( स्त्री० ) श्रृंगेरा पाख, कृष्णपक्ष, महीने का  
बदी } पहला पाख ।

बदीलत ( कि० वि० ) सबब से, भाग्य से ।

बहल ( सं० वारिद ) ( पु० ) बादल, मेघ, घटा ।

बद्ध ( बन्धू बांधना ) ( वि० ) बाँधा हुआ, रुका हुआ,  
टढ़, रचित, वृत्तभेद ।

बध ( बधू=मारना ) ( पु० ) मारण, हिंसा, हत्या, हत्याना ।

बधना ( सं० बधन, बधू=मारना ) ( कि० स० ) मार  
डालना ।

बधना { ( पु० ) लोटे-जैसा एक मिट्टी का छोटा  
बदना } बरतन ।

बधाई ( स्त्री० ) { मंगलाचार, आनंद मंगल, आनंद  
बधाया ( पु० ) } के गीत, जयजयकार, सुबारकबादी,  
सुशी का बाजा ।

बधक { ( बधू=मारना ) ( पु० ) शिकारी, बहेलिया,  
बधिक } आखेटही, मारनेवाला ।

बधनीय ( बधू+यनीय ) ( वि० ) बधाई, मारने योग्य ।

बधिया ( सं० बंधू=बांधना ) ( पु० ) नपुंसक, बेल,  
आम्रता ।

बधिर ( बंधू=बन्ध होना अर्थात् जिसकी सुनने की इंद्रिय  
बँधी हुई हो ) ( वि० ) बहरा, कनफूटा ।

बधू ( बन्धू=बांधना या बद्ध हो जाना ) ( स्त्री० ) बहू,  
लड़के की स्त्री, भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री-कुलबधू=

उत्तम घराने की स्त्री, देवबधू=देवता की स्त्री ।

बधूटी ( बधू ) ( स्त्री० ) युवती, स्त्री, पत्नी, भार्या,  
जोरू ।

बध्य ( बधू=मारना ) ( वि० ) मारने योग्य ।

बध्यस्थान ( पु० ) फाँसी देने की जगह, बधभूमि ।

वन ( सं० वन ) ( पु० ) जंगल, आपसे उगे वृक्ष ।

वनज { ( सं० वाणिज्य ) ( पु० ) व्यापार, लेनदेन,  
बनिज } सौदागरी ।

वनजर ( सं० वंश्या ) ( स्त्री० ) पड़नी धरती, उत्तर,  
वह धरती जिसमें कुछ नहीं उपज सकता ।

वनजात्रा ( सं० वनयात्रा ) ( स्त्री० ) व्रज के दस वनों की  
यात्रा ।

वनजाग ( सं० वणिज् ) ( पु० ) जो नाज आदि वणिज  
की चीजों को बेलों पर लादकर ले जाते हैं ।

वनठन के ( कि० पु० ) सज-धज के, सिंगार करके ।

वनत ( स्त्री० ) गोटा-किनारी का काम ।

वनना ( कि० अ० ) पटना, मेछ रहना, प्रेम होना, नक्रल  
उतारना, स्वाँग रचना ।

वन पड़ना ( कि० अ० ) निभना, कामयाब होना,  
सुधरना ।

वनमानुष ( सं० वनमानुष ) ( पु० ) एक जानवर  
जिसका डीलडौल आदमी का-सा होता है, जंगली,  
वनवासी ।

वनमाल ( सं० वनमाला ) ( स्त्री० ) फूलों की माला जो  
पैरों तक लंबी बनाई जाती है और बहुत बार  
तुलसी, कुंद, मंदार, पारिजात और कमल के फूलों  
से बनती है ।

वनरपकड़ ( पु० ) हठ, दुराग्रह, शिद ।

वनरा { ( पु० ) दुलहा, वर ।  
वना }

वनरी { ( स्त्री० ) दुलहिन ।  
वनी }

वनसी ( सं० वडिशा ) ( स्त्री० ) मछली पकड़ने का  
काँटा, ( सं० वंशी ) मुरली, बाँसुरी ।

बनात ( स्त्री० ) ऊनी कपड़ा जो दलदल और मोटा  
होता है ।

बनाना ( कि० स० ) रचना करना, तैयार करना,  
निर्माण करना, ठोक करना, उठाना ( जैसे मकान,  
दीवार आदि ), इकट्ठा रखना, मिलाना, ग्रंथरचना,

सँवारना, सिंगारना, मेल कराना, मिलाना, मनाना, पकाना, सुधारना, मरम्मत करना, निकालना, शुद्ध करना, स्रिक्लाना, चिढ़ाना, टट्टा करना, चुहल करना, मिरजना, पैदा करना, पूरा करना, शरमाना, लजाना, पबती कहना ।

बनाव ( बनाना ) ( पु० ) सिंगार, सँवार, मेल, मिलाप ।  
बनाव करना ( मुहा० ) सँवारना, सिंगार करना ।  
बनावट ( बनाना ) ( स्त्री० ) ढील, रचना, कल्पना, झूठी दिवावट ।

बनावटी ( वि० ) झूठा, बक्री, मिथ्या, काल्पनिक ।  
बनिक ( सं० बणिक् ) ( पु० ) बनिया, महाजन, व्यापारी, सौदागर ।

बनिया ( पु० ) वैश्य, वाणिज्य करनेवाला ।  
बनियायन ( स्त्री० ) बनिये की स्त्री, गंजी ।  
बनी ( स्त्री० ) दुलहिन ।

बनैला } ( सं० वन्य ) ( वि० ) जंगली ।  
बनैला }  
बनैठी } ( स्त्री० ) एक लकड़ी जिसके दोनों ओर  
बनैठी } मशाल बांधकर चारों ओर फिराते हैं जिससे  
आग का दोहरा चक्कर बन जाता है ।

बनैनी ( स्त्री० ) बनियायन ।  
बनोटिया ( वि० ) कपासी रंग का ।

बंदनवार ( सं० बंधू=बाधना और वार=दखाना )  
( स्त्री० ) फूल और पत्तों की माला जिसे व्याह  
अथवा कोई उत्सव और पर्व के दिन दरवाजे पर  
बांधते हैं ।

बंदर ( सं० वानर ) ( पु० ) एक जानवर जिसका ढील-  
ढोल और मुँह आदमी से बहुत मिलता है ।  
बंदर की तरह नचाना ( मुहा० ) बड़ा कठिन काम  
करवाना ।

बंदर की-सी आँख बटलना ( मुहा० ) तुरंत  
रिसाना, जल्द गुस्से में होना ।  
बंदर क्या जाने अर्दरक का स्वाद ( मुहा० ) मूख  
आदमी अच्छी चीजों का गुण नहीं जानता ।

बंदूबा } ( सं० बंधू=बाधना ) ( पु० ) कैदी ।  
बंधुबा }  
बंदी ( सं० बंदी, बंदि=सराहना या भुक्तना, नमस्कार  
करना ) ( पु० ) बंधुबा, कैदी, भाट ।

बंदी ( स्त्री० ) स्त्रियों के लड़ाए पर पहनने का एक  
गहना, बंदिया ।

बंदीगृह ( सं० बंदीगृह, बंदी=कैदी, गृह=घर ) ( पु० )  
जेलखाना, कैदखाना, कारागार ।

बंदीजन ( सं० बंदी + जन ) ( पु० ) भाट, चारण,  
यश बखाननेवाले ।

बंदोड ( सं० बंधू=बाधना ) ( स्त्री० ) दासी, खौड़ी,  
बाँदी ।

बंध ( बंधू=बाधना ) ( पु० ) बाँधना, गाँठ, पट्टी, कैद ।  
बंध में पहुँचा या आना ( मुहा० ) कैदी होना, कैद  
में आना ।

बंधक ( बंधू=बाधना ) ( पु० ) धरोहर, धाती, गिरों,  
बाँधना, कैद ।

बंधकदाता ( बंधक=ग्रहण, दाता=देनेवाला, दा=देना )  
( पु० ) राहिन ।

बंधकधारी ( पु० ) मुर्तहिन ।

बंधनपत्र ( पु० ) रेहननामा ।

बंधन ( बंधू=बाधना ) ( पु० ) बाँधना, गाँठ, कैद, रोक,  
रकाव, लगाव, जुड़ाव ।

बंधना ( सं० बंधन ) ( क्रि० अ० ) बंधन होना, रुकना,  
अटकना, गिराव लगाना, जोड़ा जाना ।

बंधनालय ( बंधन+आलय ) ( पु० ) कैदखाना ।

बंधान ( पु० ) रोजाना, वज्रीका, नियम, कैद ।

बंधित ( बन्धु+इत ) ( वि० ) बाँधा गया, मुक्त्युद्ध ।

बंधु ( बंधू=बाधना, जो स्नेह में आपस में अपने मनो को  
बाधते हैं ) ( पु० ) भाई, सगेज, नातेदार, नतैन,  
मित्र, सखा ।

बंधुआ ( पु० ) कैदी ।

बंधुर ( पु० ) मुकुर, तिलकक, बधिर, हंस, विरंड,  
बिहंग, ( वि० ) रम्य, नम्र, ऊँच, नीच, ( स्त्री० )  
बेरया, सत्तू ।

बंधुल ( पु० ) अस्तौपुत्र, ( वि० ) रम्य, सुंदर,  
नम्र ।

बंधेज ( सं० बंधू=बाधना ) ( पु० ) किरायत, कमखर्ची,  
दकना, वज्रीका ।

बंधूक ( बंधू=बाधना ) ( पु० ) एक तरह का लाल फूल,  
गुलदुपहरिया, लाल बूटी, लाल छीट ।

बंध्या ( बंधू=बाधना ) ( स्त्री० ) बाँक की, अपुत्रवती ।



बन्ना } ( कि० अ० ) होना, तैयार होना, सुधरना,  
बनना } मरम्मत होना, ठीक होना, सफल होना,  
सिद्ध होना, बन पड़ना ।

बन आना ( मुहा० ) हो सकना, भाग्य जागना, क्रिस्मत  
खुलना ।

बन जाना ( मुहा० ) हो जाना, सँभल जाना ।

बन पड़ना ( मुहा० ) सुधारना, भला होना, बनना,  
हो सकना, सफल होना, सिद्ध होना ।

बन-बनकर बिगाड़ना ( मुहा० ) तैयार होकर खराब हो  
जाना, सुमार्ग पर चलते हुए कुमार्गगामी हो जाना ।

बना-चुना ( मुहा० ) सँवारा हुआ, सिंगारा हुआ, सजा  
हुआ, मक्कार ।

बन्ना-ठन्ना ( मुहा० ) खूब सिंगार करना, आरास्ता  
होना, बनना-ठनना ।

बना-बनाया ( मुहा० ) तैयार, पूरा, सिद्ध, कामिज ।

बना रहना ( मुहा० ) ठहरा रहना, क्लायम रहना ।

बपुरा ( वि० ) बेवश, अनाथ, दीन, कंगाल, बेचारा ।

बपोती ( बाप ) ( स्त्री० ) पैतृक धन, विरासत, बाप की  
संपत्ति ।

बफारा ( सं० वाष्प=भाफ ) ( पु० ) भाऊ ।

बफारा लेना ( मुहा० ) भाऊ को बंद करके शरीर में  
जाने देना ।

बघसी ( स्त्री० ) रोग-विशेष, बवासीर ।

बबुवा ( पु० ) लाइला बेटा, दुलारा पुत्र ।

बबूर } ( सं० बवूर ) ( पु० ) एक कँटीले वृत्त का  
बबूल } नाम ।

बबेसिया ( पु० ) शप्पी, बातूनी, बवासीर के रोग से  
ग्रस्त ।

बब्बी ( स्त्री० ) मिट्टी, चुम्मा, चुंबन ।

बभ्र ( पु० ) गमन, चाल, सर्वादा, ( वि० ) चलनेवाला ।

बभ्रिक ( पु० ) पालक, रक्षक, मुखदायी ।

बभ्रु ( बभ्रु=गमन करना ) ( पु० ) शिव, विष्णु, नकुल,  
न्योला, बह्नि, मुनिभेद, देशभेद, ( वि० ) धूसरवर्ण,  
पीतवर्ण, सुंदर ।

बभ्रधातु ( पु० ) सोना, धनूरा, गेरू ।

बम ( स्त्री० ) सोता, पानी का चरमा, चार हाथ का  
माप, विस्फोटक पदार्थ आदि से भरा हुआ गोळा  
जो शत्रुओं पर लड़ाई में फेंका जाता है ।

बमकना ( कि० अ० ) चिड़ाना, नाराज़ होना, उभरना,  
ऊपर उठना ।

बया ( सं० वयस्, अज्=जाना ) ( पु० ) एक पखेरू जो  
सिखलाने से स्त्रियों की टिकुड़ी उतार खाता है,  
तौलने का काम करनेवाला ।

बयान ( पु० ) वर्णन, कथन, कहना ।

बयाना ( पु० ) साईं, किसी वस्तु का मूल्य आदि तथ्य  
हो जाने पर कुछ पेशगी देना ।

बयार ( सं० वायु ) ( स्त्री० ) हवा, पवन, बाव, बतास,  
वायु ।

बयाला ( वि० ) बातूनी, बरबादी ।

बयालीस ( सं० द्वित्रिंशत् ) ( वि० ) चाक़ीस और  
दो, ४२ ।

बयासी ( सं० द्व्यशीति, द्वि=दो, अशीति=अस्सी ) ( वि० )  
अस्सी और दो, ८२ ।

बर ( सं० वर, वृ=पसन्द करना ) ( पु० ) बरदान, आशिष,  
चाही हुई चीज़, पति, स्वामी, दुखड़ा, जँवाई,  
( वि० ) सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, उम्दा ।

बरई ( पु० ) पीन बेचनेवाला, तमोली ।

बरखना } ( सं० वर्षण, वृप्=बरसना ) ( कि० अ० )  
बरसना } पानी पड़ना, मेह गिरना, वर्षा होना ।

बरगा ( पु० ) धरन, धन्नो, कड़ी ।

बरजना ( सं० वर्जन, वृज्=छोड़ना ) ( कि० सं० )  
रोकना, मना करना, निषेध करना ।

बरट ( पु० ) हंस, बर्र, भिड़ ।

बरटा ( स्त्री० ) हंसी, एक प्रकार की चिड़िया ।

बरत ( सं० व्रत ) ( पु० ) उरास, उपवास, रोज़ा,  
( स्त्री० ) रस्सी, डोरी ।

बरतन } ( पु० ) बालन, पात्र, भाँड़ा ।  
वर्तन }

बरतना } ( कि० सं० ) काम में खाना, इस्तेमाल  
वर्तना } करना, व्यवहार में लाना ।

बरतनी ( स्त्री० ) वर्षामाला ।

बरताना ( कि० अ० ) विभाग करना, बाँटना, हिस्सा  
लगाना ।

बरदान ( बर=चाही हुई चीज़, दा=देना ) ( पु० )  
आशिष, दुआ ।

बरदी ( स्त्री० ) लड़ा हुआ बैल ।

वरदैत ( पु० ) भाट, शायर, गवैया, दर्सीधी ।

वरध्र } ( सं० बलीवर्द ) ( पु० ) बैल ।  
वरधा }

वरधाना ( कि० म० ) गाय-भैंस का जोड़ा खिलवाना ।

वरन ( सं० वग्म् ) ( अय्य० ) बहिरु, ( पु० ) ( 'वर्ण' शब्द को देखो ) ।

वरनन ( सं० वर्णन ) ( पु० ) बखान, बयान, कथन, स्तुति ।

वरनन करना } ( कि० म० ) बखान करना, बयान  
वरनना } करना, सराहना ।

वरना ( सं० वृ=पसन्द करना ) ( कि० म० ) व्याह  
करना, विवाह करना, शादी करना, स्वीकार करना ।

वरवनी ( स्त्री० ) बरौनी ।

वरवरी ( बार वरी (Barbary) एक जगह आफ्रिका में  
है वहाँ की बकरी मोटी और बड़ी होती है ) ( स्त्री० )  
एक तरह की बकरी ।

वरवस ( पु० ) } बरमोरी, जोराजोरी, बख, जोर,  
वरवाई ( स्त्री० ) } बड़ाई, ( कि० वि० ) जोरावरो से,  
जबरदस्ती से, हठ से ।

वरवाद् ( वि० ) नष्ट, धास्त, सत्यानाश ।

वरमा } ( पु० ) बड़हूँ का एक श्रीज्जार जिससे  
वर्मा } लकड़ा छेदने हैं, प्रांत का नाम ।

वरमाना ( कि० म० ) वरमे से सूराल करना ।

वरराना ( कि० म० ) नौद में कुछ कहना, बुदबुदना ।

वरघट ( पु० ) तिलछो, पिलही ।

वरवा ( पु० ) एक छंद का नाम, एक रागिनी का  
नाम ।

वरस ( सं० वर्ष ) ( पु० ) साल, संवत् ।

वरसगाँठ ( सं० वर्षप्रन्थि, वर्ष=साल, प्रन्थि=गाँठ )  
( स्त्री० ) सालगिरह, जन्मदिन ।

वरसौड़ी ( सं० वार्षिक ) ( स्त्री० ) सालाना महसूल,  
बप का कर, वार्षिक कर ।

वरहा ( पु० ) गायों के चरने का खेत, चरागाह, खेत  
में पाना ले जाने की राह, गोचर-भूमि, मोटा  
रस्ता ।

वरही ( पु० ) मोर, मयूर ।

वरा ( पु० ) उर्द आदि की छोटी और कुछ मोटी  
परी ।

वरात ( सं० रात, वृ=पसंद करना ) ( स्त्री० ) दुलहे की  
सवारी की धूमधाम, विवाह का जलूस ।

वराती ( पु० ) वरात में जानेवाले ।

वराना ( कि० म० ) बचाना, दूर हाँकना, टाक देना,  
हटा देना ।

वरावर ( वि० ) जगातार, साथ-साथ, समान ।

वरावरी ( स्त्री० ) समानता मुक्ताबिला ।

वरामदा ( पु० ) बैठका, दाजान ।

वराग ( पु० ) रस्सी, डोरी ।

वरान्न ( पु० ) बचाव, संयम, परहेज ।

वराह ( सं० वगह, वर=हित अर्थात् अपने हित के लिये और  
आ + हन्=मारना या खोदना अर्थात् अपने खाने की  
चीज ढूँढ़ने में जो जमीन को खोदता है ) ( पु० )  
मुअर, शूकर, विष्णु का तीसरा अवतार ।

वरिवंड ( वि० ) बलवान्, तेजस्वी, जोरावर, दुष्ट, बद ।

वरियार ( वि० ) मजबूत, बलवान् ।

वरी ( वर ) ( स्त्री० ) कपड़ों का जोड़ा जो दुलहे  
के घर से दुलहिन को भेजा जाता है, ( वटी )  
बकी ।

वरु ( सं० वर ) ( कि० वि० ) चाहे, परंतु, लेकिन,  
भला, अच्छा ।

वरुण ( सं० वरुण, वृ=देरना या पसंद करना ) ( पु० )  
पानी का देवता और पश्चिम-दिशा का दिक्पाल ।

वरुणालय ( वरुण + आलय ) ( पु० ) समुद्र,  
सागर ।

वरुणी ( सं० वरुणी, वृ=ढकना ) ( स्त्री० ) पपनी,  
आँख के बाल, बिन्ने, मिझगाँ, बरौनी ।

वरेंज ( पु० ) पनधाड़ी, पान का भीटा ।

वरेंठन ( स्त्री० ) धोबिन, बरेठा की स्त्री ।

वरेंठा ( पु० ) धोबी, कपड़ा धोनेवाला ।

वरौनी ( स्त्री० ) आँख की पपनी के ऊपर के बाल ।

वर्छा ( पु० ) भाजा, अन्न-विशेष ।

वर्छी ( स्त्री० ) शक्ति, संग, सेज, भाजा ।

वर्छित ( पु० ) भलैत, बर्छी चलानेवाला ।

वर्त्ताव ( पु० ) व्यवहार, आचरण ।

वर्द्धी ( पु० ) बैल, वरधा ।

वर्द्धर ( वर्द्ध=जाना ) ( वि० ) मूर्ख, जंगली, हबशी,  
बकी, चर्बजवान ।

बर्ष ( सं० वर्ष, वृष्=बरसना या पैदा होना ) ( पु० )  
साल, बरस, संवत् ।

बर्षा } ( सं० वर्षा, वृष्=बरसना ) ( स्त्री० ) बरसात,  
बर्खा } मेह, वर्षाञ्चतु ।

बर्सात ( सं० वर्षा ) ( स्त्री० ) वर्षाञ्चतु, चतुर्मास, पावस  
ञ्चतु, वर्षाकाल, पेर्याम बारिश ।

बर्सी ( बरस ) ( स्त्री० ) वार्षिक श्राद्ध ।

बर्ह ( पु० ) मोरपंख, पल्लव, पत्ता ।

बर्ही ( पु० ) मोर, मयूर ।

बल ( बल्=जीना ) ( पु० ) जोर, शक्ति, सामर्थ्य, बल-  
देवजी का नाम, सेना, स्थूलता, मुट्ठाई, गंधरस-  
रूप, शुक्र, बीज, वरुणवृक्ष, दैत्यभेद, काकपत्नी ।

बल ( सं० बलि ) ( स्त्री० ) बलि, बलिदान, चढ़ावा ।

बल ( स्त्री० ) ऐंठ, मरोड़, बट ।

बलकना ( कि० अ० ) खोलना, उफनना, अपने मुँह  
अपनी बड़ाई करना ।

बल खाना ( मुहा० ) ऐंठ जाना, क्रोध करना, गुस्सा  
करना, बक्र होना ।

बलग्राम ( पु० ) कफ ।

बलज ( पु० ) क्षेत्र, पुरदार, अन्न, संग्राम, दर्पण,  
शोशा, ( स्त्री० ) पृथ्वी, श्रेष्ठ स्त्री, जाही, जुही ।

बल जाना } ( मुहा० ) बखिहारी जाना, निछावर  
बल बल जाना } होना ।

बलतोड़ ( पु० ) फोड़ा-विशेष जो बाल के टूटने से  
होता है ।

बलद ( पु० ) बैल ।

बलदाऊ ( सं० बलदेव ) ( पु० ) श्रीकृष्ण का बड़ा  
भाई ।

बल देना ( मुहा० ) मरोड़ना, ऐंठना ।

बल देना } ( मुहा० ) बखिदान करना, कुर्बानी  
बल करना } करना ।

बलदेव ( बल + देव ) ( पु० ) श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

बलना } ( कि० अ० ) जलना ।  
बरना }

बलनिधि ( बल + निधि ) ( वि० ) बलवान्, बहुत  
बली, जोरावर ।

बलभद्र ( बल + भद्र ) ( पु० ) बलराम, श्रीकृष्ण का  
बड़ा भाई ।

बलम ( पु० ) पति, स्वामी ।

बलमि ( पु० ) बलम, पति ।

बलराम ( बल=जोर, रम्=खेलना ) ( पु० ) बलदेव,  
शेषजी का अवतार और श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

बलवत् ( वि० ) बलयुक्त, बली, पुष्ट, मश्ल,  
बलवान् ।

बलवन्त } ( बल=जोर, बन्=वाला ) ( वि० ) जोरा-  
बलवान् } वर, बली, समर्थ ।

बलवीर ( बल=बलदेवजी, वीर=भाई ) ( पु० ) श्रीकृष्ण  
का नाम ।

बलवा ( पु० ) दंगा, झगड़ा, क्रसाद, बगावत ।

बलही ( स्त्री० ) लग्गा, लंघी और पतली लकड़ी, भार,  
भट्टा, बोझ ।

बलाका ( स्त्री० ) बकपंक्ति, बगलों की कतार ।

बलात् ( अव्य० ) हठात् ।

बलात्कार ( पु० ) हठ, बरजोरी, जबरदस्ती ।

बलानुज ( बल=बलभद्र, अनुज=छोटा भाई ) ( पु० )  
श्रीकृष्ण ।

बलाराति ( बल=असुर, आसति=शत्रु ) ( पु० ) इंद्र,  
देवराज ।

बलाहक ( बलाह=पानी, बल=जाना या घेरना, अर्थात्  
जिसमें पानी हो अथवा बल=कंपन, हा=छोड़ना )  
( पु० ) बादल, बहल, मेघ, घन, दैत्य, नागभेद ।

बलि ( बल्=जीना ) ( पु० ) एक राजा का नाम जिसकी  
विष्णु भगवान् ने वामन-अवतार लेकर पाताछ में  
भेज दिया, नैवेद्य, देवता का भोग, भेंट, कुर्बानी ।

बलिदान ( बलि + दान ) ( पु० ) देवता के सामने  
बकरा आदि पशु को मारकर चढ़ाना, देवता के लिये  
भोग, नैवेद्य ।

बलिष्ठ ( वि० ) बलवान्, बली ।

बलिसंग ( पु० ) अंकुश, चाबुक, कोड़ा, बंदरों का  
समूह ।

बलिहारी ( सं० बलि ) ( स्त्री० ) निछावर, तसदुक्र,  
कुर्बान जाना ।

बलिहारी जाना ( मुहा० ) निछावर होना, बल जाना,  
बल-बल जाना ।

बली ( बल ) ( वि० ) जोरावर, बलवान्, पराक्रमी ।  
बलीबर्द ( पु० ) सौंद ।

**बलीमुख** } ( बली या बलि=टीला चमड़ा, बलु=हिलना  
**बलिमुख** } या घेरना, मुख=मुँह अर्थात् जिसके मुँह के  
 ऊपर का चमड़ा टीला हो ) ( पु० ) बानर, बंदर,  
 कपि, मर्कट ।

**बलीयम्** ( वि० ) अत्यंत बली, बड़ा जोरावर ।  
**बलीयान्**  
**बलुवा** ( बालू ) ( वि० ) बालू का, बालूमय, रेंतीझा,  
 करकरा ।

**बलूरना** ( कि० स० ) बकोटना, नोचना, खसोटना ।  
**बलुला** ( पु० ) बुल्ला, बुलका, बुदबुद ।  
**बलैयाँ** ( स्त्री० ) आशीर्वाद, असीम ।  
**बल्लम** ( पु० ) भाला, सेल, बछ्छा, नेत्रा ।  
**बल्ली** ( स्त्री० ) नाव का डंडा, छगो ।  
**बल्ली मारना** ( मुहा० ) नाव चखाना ।  
**बवंडर** ( पु० ) अंधड़ ।  
**बवाई** ( स्त्री० ) पैर का फटना ।  
**बवाईर** ( पु० ) अर्शरोग, गुदा में मस्सों का रोग ।  
**बश** ( सं० बशा, बश्=चाहना ) ( पु० ) क्रायू, बल,  
 ज़ोर, अधिकार, ( वि० ) अधीन ।  
**बश करना** ( मुहा० ) अधीन करना, दबाना, क्राबू  
 में लाना, अधीन बनाना ।  
**बस** ( वि० ) बहुत, पूरा, बहुतेरा, चुप, काफ़ी ।  
**बस करना** ( मुहा० ) ठहरना, कर चुकना ।  
**बसन** ( सं० बसन, बस्=पहनना ) ( पु० ) कपड़ा, जोड़ा,  
 बख, लूगा ।  
**बसना** ( सं० बसन, बस्=रहना ) ( कि० अ० ) रहना,  
 ठिकना, बास करना, आबाद होना, घर बनाना ।  
**बसनी** ( स्त्री० ) रुपए रखने की थैली जो कमर में बाँधी  
 रहती है ।  
**बसंत** ( सं० बसेंत, बस्=रहना या सुगन्ध आना ) ( स्त्री० )  
 एक ऋतु का नाम जो चैत और कुछ वैशाख के  
 महीने तक रहती है, मधुमास, एक राग का नाम ।  
**बसंत आँखों में फूलना** ( मुहा० ) तिलमिलाना ।  
**बसंत के घर का भी खबर है** ( मुहा० ) यह भी  
 जानते हो कि क्या हो रहा है ।  
**बसंत फूलना** ( मुहा० ) सरसों के फूलों का खिलना ।  
**बसंती** ( वसंत ) ( पु० ) एक प्रकार का पीला रंग,  
 ( वि० ) पीछा ।

**बसराना** ( कि० स० ) पूरा करना, समाप्त करना ।  
**बसाना** ( बसना ) ( कि० स० ) आबाद करना, बस्ती  
 कराना, आदमियों से भरना, ( वस्=सुगंधित होना )  
 सुगंधित करना ।  
**बसुला** ( पु० ) वह औज़ार जिससे बड़ई लकड़ी छोजते हैं ।  
**बसेरा** ( सं० वास ) ( पु० ) बास, रहने की जगह,  
 पखेरू का घोंसला अथवा अड्डा, पखेरू का रात में  
 रहने का बास ।  
**बसुदेव** ( सं० बसुदेव, बसु=धन, दिव्=चमकना ) ( पु० )  
 श्रीकृष्ण का बाप और शूरसेन का बेटा ।  
**बस्ती** ( सं० बसती, बस्=रहना ) ( स्त्री० ) छोटा गाँव,  
 आबादी ।  
**बस्तु** } ( सं० वस्तु, वस्=रहना या टकना ) ( स्त्री० )  
**वस्त** } चीज़, पदार्थ ।  
**बस्त्र** ( सं० वस्त्र, वस्=पहनना ) ( पु० ) कपड़ा, लूगा, बसन ।  
**बहकना** ( कि० स० ) धोखा खाना, नरो में कुछ कहना,  
 नोंद में कुछ बोलना, बढ़कर कहना ।  
**बहकाना** ( कि० स० ) धोखा देना, भुलाना ।  
**बहूँगी** ( सं० बिहंगी ) ( स्त्री० ) बहूँगी या काँवरि ।  
**बहुत्तर** ( सं० द्विसप्तति ) ( वि० ) सत्तर और दो, ७२ ।  
**बहुधा** ( सं० बाधा ) ( पु० ) दुःख, आपदा, रुकावट ।  
**बहिन** } ( सं० भगिनी ) ( स्त्री० ) मा की बेटो, सहो-  
**बहिन** } दरा, सखी, बहना ।  
**बहना** ( सं० बह=बहना या ले जाना ) ( कि० अ० )  
 चखना, पानी का जारी होना, हवा का चखना ।  
**बहने पानी में हाथ धोना** ( मुहा० ) जब तक अपना  
 काम बना रहे तब तक अच्छा काम कर लेना, समय  
 की गति के साथ प्रवाहित होना ।  
**बहनऊ** } ( सं० भगिनीपति ) ( पु० ) बहन का  
**बहनोई** } पति ।  
**बहरा** } ( सं० बधिर ) ( वि० ) वह आदमी जिसके  
**बहिरा** } सुनने की शक्ति खराब हो गई हो, कनफूटा ।  
**बहरिया** ( पु० ) अपवित्र बरतन, छुतिहा ।  
**बहरी** ( स्त्री० ) बाजपत्ती ।  
**बहल** } ( स्त्री० ) एक तरह की गाड़ी, बैलगाड़ी ।  
**बहली** }  
**बहलाना** ( कि० स० ) प्रसन्न करना, भुलाना, बहकाना,  
 किसी बात में लगा रखना, फुसलाना ।

बहाना ( बहना ) ( कि० स० ) चलाना, पानी का जारी रहना, ( पु० ) छल, कपट, हीला ।

बहा देना ( मुहा० ) उजाड़ना, नाश करना ।

बहा फिरना ( मुहा० ) भटकते फिरना, इधर-उधर फिरना या घूमना ।

बहाव ( बहना ) ( पु० ) पानी की प्रगति, बाढ़, चढ़ाव ।

बहिराना ( कि० स० ) बाहर निकालना, घर से दूर करना ।

बहिर्मुख ( सं० बहिर्=बाहर, मुख=मँह ) ( वि० ) धर्म-विमुख, अधर्मी, बागी ।

बहिला ( स्त्री० ) बाँझ गाय, बाँझ भैंस आदि ।

बही ( स्त्री० ) महाजनों के हिसाब रखने की किताब जो एक किनारे की ओर सी जाती है ।

बहीर } ( स्त्री० ) सेना की सामग्री, डेराडंडा आदि ।  
बदाइ } ( स्त्री० )

बहु ( बहि=बढ़ना ) ( वि० ) बहुत, ढेर, बड़ा, अधिक ।

बहुत ( बहु ) ( वि० ) अधिक ।

बहुत गई थोड़ी रही ( मुहा० ) उमर लगभग पूरी हो चुकी ।

बहुतात } ( सं० बहुता ) ( स्त्री० ) अधिकाई ।  
बहुतायत }

बहुतिथ ( वि० ) बहुत दिन, बहुत बेर, अनेक बार, अनेक, बहुत ।

बहुतेरा ( सं० बहुतर ) ( वि० ) बहुत-सा, बहुत ही बहुत ।

बहुदर्शी ( वि० ) दूरदर्शी, पंडित ।

बहुधा ( बहु=बहुत, धा=प्रकार ) ( कि० वि० ) बहुत प्रकार से, बहुत भाँति से, बहुत बार, अक्सर ।

बहुबाहु ( बहु=बहुत, बाहु=भुजा ) ( पु० ) रावण ब सहस्र-बाहु आदि ।

बहुमूल्य ( बहु=बहुत, मूल्य=मोल ) ( वि० ) बहुत मोल का, बहिया, महँगा ।

बहुर } ( अ० ) फिर, पुनि, और ।  
बहुरि }  
बहोरी }

बहुरना ( कि० अ० ) खौटना, वापस आना ।

बहुराना ( कि० स० ) खौटाना, वापस करना, फेर लाना ।

बहुरिया ( स्त्री० ) पतोह, पुत्र की स्त्री, बहू, बधू ।

बहुरूपिया ( सं० बहुरूपी ) ( वि० ) भाँड़, स्वाँगी, अनेक रूप धारण करनेवाला ।

बहुरूपा ( पु० ) गिरिगिट, अंजु-विशेष, बहुत रूप धरनेवाला ।

बहुल ( वि० ) प्रचुर, बहुत, ( पु० ) कृष्णवर्ण, अग्नि, आकाश ।

बहुलगंधा ( स्त्री० ) एला, इलायची ।

बहुवचन ( बहु + वचन ) ( पु० ) बहुत को बतलाने-वाला, बहुत बातें ।

बहुविध ( बहु=बहुत, विध=प्रकार ) ( कि० वि० ) बहुत प्रकार से, अनेक भाँति से ।

बहुश्रुत ( श्रु=सुनना ) ( वि० ) पंडित, विद्वान्, शास्त्री ।

बहू ( सं० वधू ) ( स्त्री० ) दुलहिन, भार्या, जोरू, पतोह, बेटे की दुलहिन ।

बहेड़ा ( पु० ) फल-विशेष ।

बहेलिया ( पु० ) चिड़ीमार, ब्याधा ।

बाँक ( सं० वङ्क, वकि=टेढ़ा होना ) ( स्त्री० ) टेढ़ापन, तिछापन, झुकाव, नदी का घुमाव, दोप, अपराध, दुष्टता, एक गहने का नाम जिसे बाजू पर पहनते हैं, एक शस्त्र का नाम जो कटार-जैसा होता है ।

बाँकपन ( पु० ) शोहदापन, गुंडई, तिरछापन ।

बाँका } ( सं० वंक ) ( वि० ) टेढ़ा, तिछा, बहानुर,  
बाकुरा } वीर, छैला, अरुद्ध, अकबवेग, शोहदा,  
लुच्चा ।

बाँगा ( पु० ) कच्ची रुई, बिनौला-सहित रुई ।

बाँचना ( सं० वचन, वच्=बोलना ) ( कि० स० ) पढ़ना, पाठ करना, बचना, ( कि० अ० ) बचना, जीतना रहना ।

बाँझा ( सं० बाँझा ) ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

बाँझित ( सं० बाँझित ) ( वि० ) चाहा हुआ, इच्छित ।

बाँजर ( पु० ) बंजर, ऊसर, पटपर ।

बाँझ ( सं० बन्ध्या ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसके खड़का-बाला न होता हो, बन्ध्या ।

बाँट ( सं० वण्टक, वटि=बाँटना ) ( पु० ) भाग, हिस्सा, अंश, बटखरा, गाय-भैंस का दुहते समय का खाना ।

बाँटना ( सं० बण्टन, बटि=हिस्सा करना ) ( कि० स० )  
हिस्सा करना, भाग देना ।

बाँड़ा ( सं० बण्ड, बडि=काटना ) ( वि० ) पुँछकटा,  
बेपूँछ, बेधर्म, निर्लज्ज, असहाय, निराश्रय ।

बाँड़ी ( स्त्री० ) आधी बाँह का कुरता, छोटा बंडा ।

बाँदुर ( पु० ) बंदर ।

बाँदी ( स्त्री० ) लॉबी, दासी, चेरी ।

बाँध ( सं० बंध ) ( पु० ) पानी की रोक, तालाब की  
पाल, मेंढबन्ध, आड़ ।

बाँधना ( सं० बंधन ) ( कि० स० ) जकड़ना, कसना,  
बंध करना, पानी रोकना, टहराना, धामना, छपेटना,  
गाँठ देना, गिरह देना ।

बाँधनू ( सं० बंधू=बांधना ) ( पु० ) एक तरह का  
रँगना जिसमें कपड़े को बहुत-सी जगह बाँध  
कर रँग चढ़ाते हैं ताकि हर एक रंग जुदा-जुदा  
दिखेगाई दे ।

बाँबी ( स्त्री० ) साँप का बिल ।

बाँस ( सं० वंश ) ( पु० ) एक पेड़ जिसकी लकड़ी  
पोखी और गाँठदार होती है, ज़मीन नापने की  
लगी, वंशवृक्ष ।

बाँस पर चढ़ना ( मुहा० ) कलंकी होना, बदनाम  
होना ।

बाँसफोड़ ( पु० ) बाँस चीरकर टोकरी आदि बनाने-  
वाली जाति ।

बाँसरी }  
बाँसली } ( सं० वंशी ) ( स्त्री० ) मुरली, वंशी, वेणु ।  
बाँसुरी }

बाँसा ( पु० ) नाक की हड्डी ।

बाँसी ( स्त्री० ) बाँसली, मुरली ।

बाँह ( सं० बाहु ) ( स्त्री० ) भुजा, बाजू, आस्तीन ।

बाँह गहना ( मुहा० ) सहायता करना ।

बाँहगहे की लाज ( मुहा० ) जिसकी सहायता करे  
उसकी छोड़ना यही लाज की बात है ।

बाँह चढ़ाना ( मुहा० ) लड़ाई के लिये तैयार होना ।

बाँह टूटना ( मुहा० ) कोई सहायक न रहना ।

बाँह देना ( मुहा० ) सहायता देना, मदद करना ।

बाँह पकड़ना ( मुहा० ) सहायता करना, पकड़ करना,  
आश्रय देना ।

बाँहबल ( मुहा० ) सहायक, साथी, हिमायती ।

बाई ( स्त्री० ) महारानी ( मरहटों में ), कंचनी ।

बाई ( सं० वायु ) ( स्त्री० ) हवा, बारी, वात-रोग ।

बाई पचना ( मुहा० ) शेखी उतरना, दब जाना, उदास  
होना ।

बाई में भड़कना ( मुहा० ) बड़बड़ाना, बकना ।

बाईस ( सं० द्वाविंशति ) ( वि० ) बीस और दो, २२ ।

बाईसी ( पु० ) शाही फ़ौज, सेना-विशेष ।

बाईहा ( पु० ) वात-रोगवाला ।

बाकला ( पु० ) एक प्रकार की तरकारी ।

बाकस ( पु० ) पेटी, पेटारी, मंजूपा ।

बाक्री ( वि० ) बचा हुआ, अवशिष्ट ।

बाखर } ( पु० ) आंगन, चौक, अँगनाई, कई एक  
बाखल } घर जो एक हाते में होते हैं ।

बाग } ( स्त्री० ) बागडोर, लगाम, फंदा, जाळ,  
बागुरु } फुलवाड़ी, वाटिका ।

बाग छूटना ( मुहा० ) बेवश होना, वश में न रहना ।

बाग मोड़ना ( मुहा० ) शीतला का ढल जाना ।

बागडोर ( स्त्री० ) वह रस्सी जिसको लगाम में खगा-  
कर साईस घोड़े को ले चलता है ।

बागा ( सं० वस्त्र ) ( पु० ) जोड़ा, पहनने के बहुत अच्छे  
कपड़े जो पारितोषिक में दिये जाते हैं, म्बिलश्नत ।

बागी ( पु० ) शत्रु, विद्रोही, उपद्रवी ।

बाघ } ( सं० व्याघ्र ) ( पु० ) नाहर, शेर ।  
बाघा }

बाघवर ( सं० व्याघ्रवर ) ( पु० ) बाघ की खाज, शेर  
की पोस्त ।

बाघी ( स्त्री० ) पीठ में होनेवाली एक प्रकार की गिल्टी ।

बाछु ( स्त्री० ) चुनाव, निर्वाचन ।

बाछुना ( सं० बाच्छन=चाहना ) ( कि० स० ) छाँटना,  
चुनना ।

बाछी ( स्त्री० ) बछिया ।

बाजन } ( सं० वाय ) ( पु० ) बजाने का यंत्र, जो  
बाजा } चीज़ बजाने के लिये बनाई जाय ।

बाजागाजा ( मुहा० ) बहुत-से बाजों की आवाज़ ।

बाजना ( सं० वाय, वद=शब्द करना ) ( कि० प्र० )  
आवाज़ निकलना, प्रसिद्ध होना ।

बाजरा ( पु० ) एक प्रकार का नाज जो भारबाद में  
बहुत पैदा होता है ।

बाजीगर ( पु० ) नट, जादूगर ।

बाजीगरनी ( स्त्री० ) नटिन, जादूगरनी ।

बाजू, } ( पु० ) एक गहना जिसको बाजू पर  
बाजूबंद } बाँधते हैं, भुजबंध ।

बाट ( सं० बाट, वट्=घेरना ) ( पु० ) मार्ग, रास्ता, राह,  
डगर, पंथ ।

बाट काटना ( मुहा० ) रास्ता चलना, सफ़र तय करना ।

बाटिका ( सं० बाटिका, वट्=घेरना ) ( स्त्री० ) बाड़ी,  
फुल्लवाही, बगीचा, उपवन ।

बाड़ ( सं० बाट, वट्=घेरना ) ( स्त्री० ) छुरी या तलवार  
की धार, अहाता या धेरा जिसे काँटों से बनाते हैं,  
सिपाहियों की क्रतार ।

बाड़ उड़ाना ( मुहा० ) एक साथ बंदूक चलाना, बंदूकों  
के फ़ैर करना ।

बाड़ भाड़ना ( मुहा० ) बहुत आदमियों का एक साथ  
बंदूक दागना ।

बाड़ दिलवाना ( मुहा० ) सान पर चढ़ाना, तीखा  
करना, तीक्ष्ण करना ।

बाड़ बाँधना ( मुहा० ) काँटों से खेत को या किसी  
जगह को घेरना ।

बाड़ रखना ( मुहा० ) तीखा करना, सान पर चढ़ाना ।

बाड़ ही जब खेत को खाय तो रखवाली कौन करे  
( मुहा० ) जिस पर भरोसा हो जब वही चुरा ले  
तब कोई चीज़ नहीं बच सकती ।

बाड़व ( पु० ) नरक, समुद्र की अग्नि; स्त्रियों के कान,  
घोड़ों का समूह, ग्राहाण ।

बाड़ा ( वट्=घेरना ) ( पु० ) अहाता, धेरा ।

बाड़िया ( पु० ) सान चढ़ानेवाला ।

बाड़ी ( सं० बाटी, वट्=घेरना ) ( स्त्री० ) छोटा आग,  
बगीचा, उपवन, बगीचे में घर, बंगाली घर को  
बाड़ी कहते हैं ।

बाढ़ ( वादना ) ( स्त्री० ) बढ़ती, अधिकाई, नदी के  
पानी का उभड़ना या अपनी हद से अधिक बढ़  
जाना ।

बाढ़ना ( सं० बृध्=बढ़ना ) ( क्रि० अ० ) बढ़ना, उमड़ना ।

बाण } ( सं० बाण, वण्=शब्द करना ) ( पु० ) तीर,  
{ भुँज की बनी हुई रस्सी, बिरोचन का पुत्र  
बाणासुर ।

बाणलिंग ( पु० ) बाणासुर की स्थापित की हुई नर्मदा-  
नदी के तट पर शिवमूर्ति ।

बाणि } ( सं० बाणि, वण्=शब्द करना ) ( स्त्री० )  
बाणी } बोझी, सरस्वती, उक्ति, वचन ।

बाणिज्य ( पण्=लेनदेन करना ) ( पु० ) व्यापार, बनिज,  
सौदागरी, लेनदेन ।

बात ( सं० वार्ता, वृत्=होना ) ( स्त्री० ) बोलचाल,  
कथा, समाचार, बोली, कहना, विषय, प्रश्न,  
सवाल, कारण, सबब, मामला, वृत्तांत, दशा,  
अवस्था, हठ ।

बात उठाना ( मुहा० ) बात सहना, बात चलाना ।

बात करना ( मुहा० ) बोलना, बातचीत करना,  
कहना ।

बात काटना ( मुहा० ) दूसरे की बात को रद्द करना ।

बात का बतझड़ करना ( मुहा० ) छोटी-सी बात पर  
बहुत-सा बोलना ।

बात की बात } ( मुहा० ) दम-भर में, पल-भर में,  
बात की बात में } थोड़ी-सी देर में, झटपट, तुरंत ।

बात गढ़ना ( मुहा० ) मतलब की बात करना, झूठी  
बात बनाना, किसी बात को इस तरह से बनाकर  
कहना कि दूसरे के मन में जम जाय ।

बात चबाना ( मुहा० ) बोलते-बोलते चुप रहना, ठहर-  
ठहरकर बोलना ।

बात चलाना ( मुहा० ) कुछ कहना, शुरू करना ।

बातचीत ( मुहा० ) बोलचाल, गुप्ततम् ।

बात टालना ( मुहा० ) असल बात का उत्तर न देना,  
झीर-झीर बातें करना ।

बात पर बात याद आना ( मुहा० ) जिस तरह  
की चर्चा हो उसी तरह की बातें आपसे आप याद  
आ जाना ।

बात पी जाना ( मुहा० ) कच्चे वचन सहना, बात को  
बर्दाश्त करना ।

बात फेंकना ( मुहा० ) टट्टा करना, बिना सोचे-विचारे  
कोई बात बोलना ।

बात फेरना ( मुहा० ) कहते-कहते बात का मतलब  
बदल देना, प्रतिज्ञा भंग करना, वचन वापस लेना ।

बात बढ़ाना ( मुहा० ) वाद करना, तकरार करना,  
किसी बात को झूब फैलाकर कहना या छिन्नना ।

बात बनाना ( मुहा० ) मतलब गाँटना, झूठ कहना ।  
 बात बाँधना ( मुहा० ) झूठा तर्क करना ।  
 बात बिगाड़ना ( मुहा० ) मतलब खोना, बिगाड़ करना, मर्यादा भंग करना ।  
 बात मानना ( मुहा० ) कहना मानना, साब्य मानना ।  
 बात रखना ( मुहा० ) कहना मान लेना ।  
 बात रहना ( मुहा० ) हज़न और आवर रहना, प्रतिष्ठा रहना ।  
 बात लगाना ( मुहा० ) चुगली खाना, निंदा करना ।  
 बातें करना ( मुहा० ) झूठ-उधर की चर्चा करना ।  
 बातें बनाना ( मुहा० ) छल करना, सुशामद करना ।  
 बातें मारना ( मुहा० ) शेखा करना, डोंग मारना ।  
 बातें सुनना ( मुहा० ) कड़वी बात सहना ।  
 बातें सुनाना ( मुहा० ) कड़वी बात कहना ।  
 बातों में उड़ाना ( मुहा० ) हँसी-चुहल में डालना ।  
 बातों में धर लेना ( मुहा० ) कायल करना, चुप कर देना ।  
 बातों में लपेटना ( मुहा० ) बातों में धोखा देना, बातों में फँसा लेना ।  
 बात ( म० बात ना जाना ) ( स्त्री० ) हवा, पवन, वायु, वायु-रोग ।  
 बातों ( म० वार्ति, वृत्त=होना ) ( स्त्री० ) बत्ती ।  
 बातूनिया } ( बात ) ( वि० ) बहुत बातें बनानेवाला,  
 बातूनी } सम्पा, वाचाञ्ज, वाचाट ।  
 बादर } ( म० वारिद ) ( पु० ) बहल, मेघ ।  
 बादल }  
 बादरायण ( वेद+अयन ) ( पु० ) वेदव्यास, व्यास महाराज, पाराशर्य, पराशर के पुत्र ।  
 बादला ( पु० ) सोने-रूपे का तार, लम्पा ।  
 बादि ( कि० वि० ) वृथा, किञ्जल ।  
 बादुर ( पु० ) चमगीदड़ ।  
 बाध ( पु० ) रुकावट, रोक, बाधा, मूँज की रस्सी ।  
 बाधक ( बाध+रोकना ) ( पु० ) रोकनेवाला, प्रतिबंधक, हारिज, हर्ज करनेवाला ।  
 बाधा ( बाध+रोकना ) ( स्त्री० ) रोक, रुकाव, दुःख, पीड़ा या वेदना ।  
 बाधित ( बाध+रोकना ) ( वि० ) रोक हुआ, दुःखित, पीड़ित, अनुग्रहीत ।  
 बाध्य ( वि० ) रोकने के योग्य, बाधा के योग्य ।

बात ( सं० वयं रंग वा गुण ( स्त्री० ) स्वभाव, प्रकृति, चाल, टेव, आदत ।  
 बानगी ( स्त्री० ) नमूना, अटकल, कयास, आदर्श ।  
 बानवे ( सं० दानवति ) ( वि० ) नव्वे और दो, १२ ।  
 बाना ( सं० वर्ष ) ( पु० ) वेप, लिखास, ढंग, चाल, एक तरह का हथियार, वह सूत जिससे कपड़े की चौड़ाई बुनी जाती है, भर्ती ।  
 बाना ( कि० सं० ) खोलना, पसारना ।  
 बानी ( स्त्री० ) राख, वह सूत जिससे कपड़ा बुना जाता है ।  
 बानी (विना) ( पु० ) बिना डालनेवाला, जड़ डालनेवाला, नीव जमानेवाला, बुनियाद डालनेवाला, बनिया ।  
 बांधव ( वंधु ) ( पु० ) भाई, रिश्तेदार, संबंधी, नतैत, मित्र ।  
 बाप ( सं० वपु, वपु=बोना ) ( पु० ) पिता, जनक, तात, पापा ।  
 बाप करना ( मुहा० ) बाप के बराबर मानना ।  
 बाप न मारी पीढ़ी घेठा तीरंदाज़ ( मुहा० ) यह कहावत वहाँ बोलते हैं जव किसी के बाप-दादे किसी योग्य न हों और वह कुछ बढ़कर किया या दिखाया चाहे ।  
 बाप मेरा } ( मुहा० ) अर्चभा, सोच और डर आदि  
 बाप रे बाप } के बतलानेवाले शब्द ।  
 बापमारे का वैर ( मुहा० ) बड़ा भारी वैर ।  
 बापड़ा  
 बापरी ( वि० ) बेवश, बेचारा, अनाथ, दीन, कंगाल ।  
 बापुरा )  
 बाफ ( सं० वाष्प ) ( स्त्री० ) धुआँ, भाऊ ।  
 बाघा ( पु० ) बाप दादा, बड़ा आदमी, बेटा, लड़का, 'यारा ।  
 बाघाजी ( पु० ) योगी, संन्यासियों की पदवी ।  
 बाबू ( पु० ) लड़का, बालक, छोटा राजा या राजकुमार, बड़ा आदमी, रहस, हिंदुओं में और विशेष करके बंगालियों में बड़े आदमी को 'बाबू' कहते हैं; जैसे—  
 दिल्ली-आगरे की और बड़े आदमी को 'खाजा साहब' या 'मुंशी साहब' बोलते हैं, और अँगरेज़ अँगरेज़ी लिखनेवाले किरानियों को 'बाबू' कहते हैं, योगी और फुज़रों की बोखचाल में हर एक मर्द को 'बाबू' और स्त्री को 'माई' कहते हैं ।



वाम (सं० ब्राह्मी) (स्त्री०) एक मछली का नाम,  
सुंदर स्त्री, (सं० वाम, वा=जाना) (वि०) बायाँ,  
उलटा, सुंदर, (पु०) महादेव या कामदेव ।  
वामश्रंग (सं० वामांग) (पु०) बाईं ओर, बाईं तरफ़ ।  
वामा (सं० वामा, वाम=बायाँ अर्थात् पुरुष के बाईं ओर  
बैठनेवाली) (स्त्री०) लुगाई, स्त्री, भार्या, पत्नी ।  
वामहण } (सं० ब्राह्मण) (पु०) ब्राह्मण, हिंदुओं में  
वामहन } जमींदारों की एक जाति जो बिहार और  
बनारस की ओर बहुत होते हैं ।  
वायन } (पु०) वस्तु जो आनंद-मंगल के अवसर  
वायना } पर इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है,  
चुनौती—जैसे “भले भवन तुम वायन दोन्हा” ।  
वायव्य (सं० वायव्य) (स्त्री०) वायुकोण, पश्चिम-  
उत्तर का कोना, पृथक्, अलग ।  
वायाँ (सं० वाम) (वि०) बाईं ओर, उल्टा ।  
वायाँ पाँच पूजना (मुहा०) पाखंडी मनुष्य के छल  
और पाखंड को मान लेना ।  
वार (सं० वार, वृ=ढकना) (स्त्री०) समय, अवकाश,  
अवसर, देरी, देर, विलंब, (पु०) अठवाड़े का दिन,  
दरवाजा, (सं० बाल) लड़का, केश, (सं० बाला)  
(स्त्री०) सोलह वरस की लड़की ।  
वार लगाना (मुहा०) देरी करना ।  
वारण (सं० वारण, वृ=ढकना, बचाना) (पु०) रोक,  
अटकाना, हाथी, रुकावट ।  
वारना (कि० सं०) रोकना, बिछगाना, अलग करना ।  
वारनारी (स्त्री०) रंडी, वेश्या, पतुरिया ।  
वारंवार (सं० वारंवार, वार) (कि० वि०) बार-बार,  
फिर-फिर, घड़ी-घड़ी, मुतवातिर, लगातार ।  
वारह (सं० द्वादश) (वि०) दस और दो, १२ ।  
वारहखरी (सं० द्वादशाक्षरी) (स्त्री०) ४५ जनों में बारह  
स्वरों का मिलान ।  
वारहदरी (वारह+दर=दरवाजा) (स्त्री०) वह मकान  
जिसमें बारह दरवाजे हों, बैंगला, हवादार मकान ।  
वारहघाँट (पु०) १ मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ हास,  
५ हानि, ६ खानि, ७ क्षुधा, ८ तृषा, ९ मृत्यु,  
१० शोभ, ११ मृषा, १२ अपकीर्ति ।  
वारहघाट होना (मुहा०) उजड़ना, बिगड़ना, सत्पा-  
नाश होना, दुःख पाना, सताया जाना ।

वारहसिंगा } (सं० द्वादश=बारह, श्रृंग=सींग) (पु०)  
वारासिंगा } एक जानवर जो हरिण-सा होता है  
जिसके सींग लंबे होते हैं और सींग में सींग होता है ।  
वाराह (सं० वराह) (पु०) शूकर, सूअर ।  
वारिश (स्त्री०) मेह, वर्षा, वृष्टि ।  
वारी (सं० वाटी) (स्त्री०) बाड़ी, बगीचा, हरी तरकारी  
का खेत (सं० बालिका) लड़की, बाली (अव्य०)  
(सं० वार) नियत समय, पारी, नौबत, उसरी ।  
वारी (स्त्री०) झरोखा, दरीची, छोटा दरवाजा, हिंदुओं  
में एक जाति के लोग जो मशाल दिखाते और  
पत्तल बनाते हैं, एक गहने का नाम जो नाक और  
कान में पहना जाता है ।  
वारांक (वि०) भीना, पतला, महीन ।  
वारीदार (पु०) वह नौकर जिसकी नौकरी का समय  
नियत हो ।  
वारुणी (सं० वारुणी, वरुण अर्थात् जिसका देवता वरुण  
है) (स्त्री०) मदिरा, मद्य, शराब, पश्चिम-दिशा,  
शतभिषा-नक्षत्र, दूब ।  
वारुद (स्त्री०) दारू, शोरा, गंधक और कोयले आदि  
से बनी हुई चीज़, जो आग पड़ते ही भक से उड़  
जाती है ।  
वारो (सं० बाल) (पु०) बालक ।  
बाल (बल्=जाना, दान, कहना) (पु०) लड़का, बालक,  
केश, (वि०) मूर्ख, नासमझ, अज्ञान, बेहोश ।  
बाल (सं० बाला) (स्त्री०) सोलह वर्ष की लड़की,  
(पु०) सात-आठ वर्ष का लड़का या लड़की, अनाज  
की फुनगी, वह निशान जो काँच और पिघाले  
आदि में होता है ।  
बालक (बाल) (पु०) लड़का, छोटी उमर का बच्चा  
मूर्ख, घोड़ा, हाथी, अँगूठी, कंकण, बलय,  
हाहू बर ।  
बालका (सं० बालक) (पु०) योगी या संन्यासियों  
का चैरा ।  
बालगोपाल (मुहा०) लड़के-बाले, बाल-बच्चे ।  
बालग्रह (पु०) बालकों के दुःख देनेवाले ग्रह, उपग्रह ।  
बाल-बच्चे (मुहा०) लड़के-बाले  
बालघाँधी कौड़ी मारना या उड़ाना (मुहा०)  
बे-चूके निशाना मारना, ठीक निशाना लगाना ।

बाल-बाल गजमोती पिरोना ( मुहा० ) खूब सँवारना ।  
बाल-बाल बैरी होना ( मुहा० ) हरएक अपने और  
पराए से वैर होना ।

बाल बाँका न होना } ( मुहा० ) किसी तरह का  
बाल बंका न होना } नुकसान न होना ।

बालना } ( कि० ग० ) जलाना, मुलगाना ।  
बारना }

बालभोग ( सं० बाल=बालक, भोग=पाने की चीज )  
( पु० ) वह नैवेद्य जो देवता को सवेरे चढ़ाया जाता है ।

बालम ( सं० बलम ) ( पु० ) प्रियतम, प्यारा, पति ।

बालमखोरा ( स्त्री० ) एक तरह का लंबा खोरा ।

बालराई ( सं० बालरगडा ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जो  
बालकपन में विधवा हो जाय ।

बाललीला ( बाल+लीला ) ( स्त्री० ) लड़कपन का खेल,  
बालचरित्र ।

बालघट्ट ( पु० ) कबूतर, ( वि० ) बालकों के ऊपर  
दयालु ।

बालसुख ( बाल+सुख ) ( पु० ) बालकपन का सुख ।

बाला ( बाल ) ( स्त्री० ) लड़की, सोलह वर्ष से कम  
उमर की लड़की ।

बाला ( सं० बाल ) ( पु० ) छोटी उमर का लड़का,  
एक तरह का सोने का गहना जो गोल होता है और  
कानों में पहना जाता है ।

बालाचाँद ( सं० बालचन्द्र ) ( पु० ) द्वितीया का चंद्र,  
गुहज का चाँद, नया चाँद ।

बालापन ( पु० ) बालकपन, लड़कई, लड़कपन ।

बालाभोला ( मुहा० ) वह लड़का जो कुछ छल-कपट न  
जानता हो ।

बालि } ( सं० बल=तोर ) ( पु० ) एक बंदर का नाम  
बाली } जो हँस का बेटा, सुमीव का भाई और  
अंगद का बाप था जिसको श्रीरामचंद्र ने मारा ।

बालिकुमार ( बालि + कुमार ) ( पु० ) अंगद ।

बालिश ( बाल + श ) ( वि० ) अज्ञ, मूर्ख, ( पु० )  
बालक, उपबर्हण, तकिया, मसनद, उपधान ।

बाली ( सं० बालिका ) ( स्त्री० ) छोटी उमर की लड़की,  
एक गहने का नाम जो नाक और कान में पहना  
जाता है ।

बालु ( बल + उ ) ( स्त्री० ) सुगंधित द्रव्य, रेत ।

बालू ( सं० बालुका ) ( स्त्री० ) रेत, रेती ।

बालूचरी ( स्त्री० ) रेशमी वस्त्र-विशेष ।

बालूशाही ( स्त्री० ) एक तरह की मिठाई ।

बाल्य ( पु० ) लड़कपन ।

बाव ( सं० वायु ) ( स्त्री० ) हवा, पवन, बयार ।

बाव के घोड़े पर सवार होना ( मुहा० ) घमंडी  
होना, शेखी करना ।

बाव वहना ( मुहा० ) हवा चखना, किसी बात का  
प्रचार होना ।

बाव बाँधना ( मुहा० ) खुशामद करना, ढोंग रचना ।

बाव सरना ( मुहा० ) पादना ।

बावग ( पु० ) बोझाई, बोने का काम ।

बावगोला ( पु० ) पेट की पीड़ा, वायुसंबंधी पेट का  
रोग, वायुशूल ।

बावभक्त } ( वि० ) गप्पी, झुकी, बड़बड़िया, भूत,  
बावभक्त } प्रेत ।

बावड़ी } ( स्त्री० ) बड़ा कुआँ, जिसमें उतरने के लिये  
चावली } सोड़ी होती है ।

बावन } ( सं० वामन ) ( वि० ) नाटा, ढिंगना, ( पु० )  
बावना } विष्णु का पाँचवाँ अवतार ।

बावन ( सं० द्विपञ्चाशत् ) ( वि० ) पचास और दो, ५२ ।

बावरा } ( सं० वातूल, वात=हवा ) ( वि० ) सिढ़ी,  
बावला } पागल, दीवाना ।

बावस्ल ( सं० वातशूल ) ( पु० ) पेट की पीड़ा, वायु-  
गोला ।

बाप ( पु० ) नेत्रजल, आँसू, उष्म, भाव, लोहा ।

बास ( सं० वासु=सुगंधित होना ) ( स्त्री० ) महक, सुगंध,  
गंध ।

बास } ( सं० वास, वासु=रहना ) ( पु० ) रहने की  
बासा } जगह, डेरा, बसेरा ।

बासन ( पु० ) बरतन, भाँड़ा, पात्र ।

बासना ( सं० वासना, वासु=सुगंधित होना ) ( स्त्री० ) हचछा,  
चाह, सुगंध, ( कि० सं० ) महकाना, सुगंधित  
करना ।

बासी ( सं० वासी, वासु=रहना ) ( पु० ) बसनेवाला,  
निवासी, रहनेवाला ।

बासी ( सं० वास=सूचना, रहूँ आना ) ( वि० ) रात का  
बचा हुआ खाना, चाँसा, बदबूदार, जिसमें बुरी  
बास आवे ।

बासी फूलों बास नहीं परदेसी बालम तेरी आस नहीं (मुहा०) यह कहावत निराश होने पर बोली जाती है।

बासी बच्चे न कुत्ता खाये (मुहा०) कुछ बाली नहीं रहता; जमा-खर्च बराबर।

वासुदेव (सं० वामदेव, वसुदेव का) (पु०) वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण।

वाहक (पु०) मजदूर, मोटिया, होनेवाला।

वाहन (सं० वाहन, वह=ले जाना) (पु०) सवारी, असवारी, घोड़ा, गाड़ी आदि जिस पर आदमी चढ़ते हैं।

वाहना (कि० सं०) गाय, भैंस आदि का गर्भ धारण करना, चखाना, फेंकना, छोड़ना।

बाहर } (सं० बाहिर) (कि० वि०) बाहर की ओर।  
बाहिर }

बाहर के खा जायें घर के गीत गायें (मुहा०) अपने सब धरे रहर और दूसरों को लाभ हो।

बाहु (बाधू=रोकना) (पु०) बाँध, भुजा, भुजवंड।

बाहुज (बाहु + जन्=पैदा होना) (पु०) (बाहूराजन्या-विति श्रुतिः) क्षत्रिय, बाहु से पैदा हुए।

बाहुयुद्ध (बाहु + युद्ध) (पु०) मल्लयुद्ध, कुश्ती।

बाहुल्यता (धी०) आधिक्य, अधिकारी, कसरत।

बिंजन (सं० व्यंजन, वि=बहुत, खूब, अंजू=साफ करना) (पु०) तरकारी, भाजी, साग।

बिक (पु०) हुँकार, भेड़िया, हिंसक, जानवर-विशेष।

बिकट (सं० विकट, वि=बहुत, कट=जाना या घेरना) (वि०) खराबना, भयानक, भयंकर, कठिन।

बिकना (सं० वि, का=लानदेन करना) (कि० अ०) खपना, उठना, बिक्री होना, बिक जाना।

बिकरार } (सं० विकराल) (वि०) डरावना, भया-  
बिकराल } नक, भोंड़ा, कुरूप।

बिकल (सं०) विकल, वि=नहीं, कला=अंश) (वि०) बेचैन, व्याकुल, दुःखी, घबराया हुआ, उद्विग्न।

बिकसन (सं० विकसन, वि, कम्=जाना) (कि० अ०) खिलना, फूलना, प्रसन्न होना, मुसकुराना।

बिकसित (सं० विकसित, वि, कस=जाना) (वि०) खिला हुआ, फूला हुआ, प्रकुल, हर्षित, प्रसन्न, ख़श।

बिकाऊ (बिकाना) (वि०) बेचने के योग्य, जो चीज़ बेचने के लिये हो।

बिकाना (बिकना) (कि० सं०) उठाना, खपाना, बेचना।

बिकाव (पु०) बिक्री, खपत।

बिकाश (सं० बिकाश, वि, काश=चमकना) (पु०) प्रकाश, चमक, (वि०) चमकता हुआ, प्रसन्न, आनंदित, हर्षित।

बिक्री (सं० विक्रय, वि=बहुत, की=मोक्ष लेना) (स्त्री०) बिकाव, खपाव, उठाव, बिकना, खपत।

बिखरना (सं० वि, क=छीटना) (कि० अ०) फैलना, छीटना, तितर-बितर होना, तीन-तेरह होना, कोपना, क्रोध करना, गुस्सा करना।

बिगाड़ना (सं० बिग्रह) (कि० अ०) खराब होना, नुकसान होना, नहीं बनना, फूट रहना, अनबन रहना, फिर जाना, बागी होना।

बिगाड़ (बिगाड़ना) (पु०) बिघ्न, नुकसान, उपाध, वैर, अनबन, तोड़फोड़, विरोध, भगड़ा।

बिगाड़ना (बिगाड़ना) (कि० सं०) खराब करना, नुकसान करना, मित्रों में वैर करवा देना, वैर करना, विरोध डानना।

बिगोई (धी०) चकमा, छिपाव, भुलावा।

बिघ्न (सं० बिघ्न, वि=पहने, हन्=मारना) (पु०) रोक, रुकाव, बाधा, बिगाड़, अड़चन।

बिच (अव्य०) बीच, अंतर, कर्क, व्यवधान।

बिचकना (कि० अ०) सतर्क होना, सावधान होना।

बिचकाना (कि० सं०) भड़काना, सावधान करना।

बिचलना (कि० अ०) खिसकना, बिछलना, बिचलित होना।

बिचवई (पु०) दलाल, पंच, मध्यस्थ।

बिचार (सं० विचार, वि, चर=चलना) (पु०) सोच, ध्यान, खयाल, सम्मति, राय, न्याय।

बिचारक (पु०) निरीक्षक, न्यायकर्ता।

बिचारना (सं० विचरण, वि, चर=चलना) (कि० सं०) सोचना, ध्यान करना, खयाल करना, समझना, सूझना, निर्णय करना।

बिचाली (स्त्री०) पुआल, पयाल, बाँस की खपाचियों की बनी चटार्ई।

बिचित्र (सं० बिचित्र, वि=बहुत, चित्र=भँति-भँति का)

( वि० ) भानि-भानि का, नाना प्रकार का, अद्भुत,  
अनोखा, अजीब ।

बिच्छू ( सं० वृश्चिक ) ( पु० ) एक जहरीले कीड़े का  
नाम जिसके डंक में जहर भरा रहता है ।

बिछुड़ना } ( सं० वि=वहूत, छुड़=काटना ) ( कि० अ० )  
बिछुरना } अलग होना, जुदा होना, अखाहदा होना ।  
बिछुड़ना }  
बिछुरना }

बिछुना ( सं० विस्तर, वि, स्तृ=फँलना ) ( कि० अ० )  
फँलना, पसरना ।

बिछुलना ( कि० अ० ) रपटना, फिसलना, अलग होना ।

बिछुलाहट ( छी० ) फिसलाहट ।

बिछुलाना ( बिछना ) ( कि० स० ) फँलना, पसरना,  
( पु० ) बिछौना, बिस्तर ।

बिछिया ( पु० ) पैर की उँगलियों का एक गहना, नूपुर ।

बिछुवा ( पु० ) एक तरह का हथियार जो टेढ़ा होता है,  
एक गहना जिसे पाँव में पहनते हैं ।

बिछोह } वि=विना, छोह=प्यार या बिछुरना से ) ( पु० )  
बिछोहा } विरह, वियोग, जुदू है ।

बिछौना ( बिछना ) ( पु० ) बिस्तर, सेज ।

बिजना ( सं० व्यजन, बि, अजु=चलना ) ( पु० ) पंखा ।

बिजली ( सं० विद्युत् ) ( छी० ) दामिनी, चपला, वह  
भाग जो बादलों में चमकती है ।

बिजया ( छी० ) भंग ।

बिजान ( वि० ) मूर्ख, अनाड़ी, अज्ञान ।

बिजायठ ( पु० ) बाजुबंद, शाय का एक गहना ।

बिजार ( पु० ) सौँह, बैल ।

बिजारा } ( पु० ) बीजवाला, बीजयुक्त ।  
बिजाला }

बिजोग ( सं० वियोग ) ( पु० ) जुदाई, बिछुड़ना, वियोग ।

बिजुनु ( सं० विद्युन् ) ( छी० ) बिजली, दामिनी ।

बिजुनु ( पु० ) जंतु-विशेष ।

बिभकना ( कि० अ० ) डरना, चमकना, भयभीत होना ।

बिजन ( पु० ) व्यजन, तरकारी, भाजी ।

बिट ( पु० ) मल, बीट, बिछा ।

बिटचर ( पु० ) शूकर, बाँव का सूअर, कौआ ।

बिटना ( कि० अ० ) छिटकना, छितरना ।

बिटप ( पु० ) बूछ, पेड़, बूछ की शाखा, नए पत्तलव ।

बिटाना ( कि० स० ) फैलाना, पसरना, छिटकाना ।

बिटोरा ( पु० ) गोइठा, कंड़ा, उपला ।

बिडरना ( कि० अ० ) भागना, डरना, भयभीत होना ।

बिडार ( पु० ) बनबिलाव ।

बिडारना ( कि० स० ) भगाना, बिचलाना ।

बिडारी ( स्त्री० ) भगाई, भागड़, पटाऊ ।

बिडौजा ( पु० ) इंद्र, देवराज ।

बितरण ( पु० ) त्याग, दान, बाँटना ।

बितरना ( कि० स० ) दे देना, बिना मूल्य देना, बाँटना ।

बिताना ( बीतना ) ( कि० स० ) गँवाना, काटना, व्य-  
तीत करना ।

बितीत ( सं० व्यतीत ) ( वि० ) बीता हुआ, गुज़रा  
हुआ, जो पूरा हो चुका हो, मुत्कजी, गत ।

बित्त ( सं० वित्त, विन्=छोड़ना, देना ) ( पु० ) धन,  
शौलन, द्रव्य, गात, बूता ।

बित्ता ( पु० ) बालिरत, बाज़रत ।

बित्तिया ( वि० ) बीना, टिंगना ।

बिथकना ( कि० अ० ) चकित होना, अचंभे में होना,  
हैरत में आना, स्तंभित होना ।

बिथरना } ( सं० विस्तरण ) ( कि० अ० ) बिखरना,  
बिथुरना } छिटकना, फँलना ।

बिथा ( सं० व्यथा ) ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, दर्द ।

बिदरना ( कि० अ० ) फटना, चिरना ।

बिदा } ( सं० विद=फाड़ना या जुदा होना और धरती  
बिदाई } में विदश=रुखसत होना ) छुट्टी, जाने की  
आज्ञा, रुखसत, रुखसती ।

बिदा करना ( मुहा० ) रुखसत करना ।

बिदारना ( सं० विदारण, वि=बहुत, दू=फाड़ना ) ( कि०  
स० ) फाड़ना, चिरना, बिथके-बिथके करना ।

बिदाहना ( कि० अ० ) हंगाना, जोते हुए खेत को  
हंगा चलाकर बराबर करना ।

बिदूषक ( पु० ) मसखरा, भाँड़, नक्रण करनेवाला ।

बिदेश ( सं० विदेश, वि=दूसरा, देश=मुल्क ) ( पु० )  
दूसरा देश, दूसरा मुल्क, परदेस ।

बिदेशी ( विदेश ) ( वि० ) परदेसी, ग़ैर मुल्क का ।

बिदोरना ( कि० अ० ) चिढ़ाना, बिराना ।

बिध ( स्त्री० ) व्यवहार, रीति, विधि ।

बिधना ( सं० विधि ) ( पु० ) बिधाता, ब्रह्मा, दैव ।

विधवा ( सं० विधवा, वि=विना, धव=पति ) ( स्त्री० )

जिसका पति मर गया हो ।

विधावट ( स्त्री० ) छेद, रंध्र ।

विन } ( सं० विना, वि+ना ) ( अव्य० ) छोड़के, छुट,  
विना } रहित, बिदून, सिवा, विना, अतिरिक्त ।

विन आये तरना ( मुहा० ) बे-मौत मरना ।

विन भय प्रीति नहीं ( मुहा० ) विना डराये कोई नहीं मानता ।

विन माँगे दूध बराबर माँगे सो पानी ( मुहा० )  
विना माँगे मिले बही अच्छा है ।

विन रोये लड़का दूध नहीं पाता ( मुहा० ) विना  
माँगे कुछ नहीं मिलता ।

विनती ( स्त्री० ) प्रार्थना, चिरीगी, विनय, अर्ज ।

विनना ( कि० सं० ) एकत्रित करना, चुनना, बटोरना ।

विनवना } ( सं० विनमन, वि=बहुत, नम्=नमस्कार  
विनीना } करना ) ( कि० सं० ) नमस्कार करना,  
पूजना ।

विनवाई ( स्त्री० ) विनने की मज़दूरी ।

विनसना ( सं० वि, नश्=नाश होना ) ( कि० अ० )  
नाश होना, बिगड़ना ।

विनाई ( स्त्री० ) विनावट, विनने का काम ।

विनास ( सं० विनाश ) ( पु० ) नाश, संहार, विध्वंस ।

विनीना ( कि० सं० ) पूजना, मनाना, ध्यान करना,  
विनय करना ।

विनीला ( पु० ) रुई का बीज ।

विनीती } ( सं० विनीति या विनति या विनय, वि=बहुत,  
विनीती } नि=पाना या चलाना या नम्=नमस्कार करना )  
( स्त्री० ) विनय, नम्रता, प्रार्थना, अर्ज ।

विंदू } ( सं० विंदू ) ( पु० ) ( स्त्री० ) शून्य, सिकर, बिंदु  
बिंदी }

विधना ( कि० अ० ) डंक मारना, छिड़ना, डसना ।

विज्ञा ( कि० सं० ) जाली काटना, कपड़े में बेल-बूटे  
निकाखना ।

विपत } ( सं० विपत्ति ) ( स्त्री० ) आपदा, दुःख,  
विपता } बिपदा, तकलीफ़, आपत्ति ।

विपरना ( कि० अ० ) आक्रमण करना, चढ़ाई करना,  
झापा मारना, धावा करना ।

विपादिका ( स्त्री० ) बिवाई, बधवाई ।

विफरना ( कि० अ० ) धट होना, ठीठ होना, बिड़ना ।

विमाता ( स्त्री० ) सौतेली माता ।

विथोट ( पु० ) दोमक, बारमोक ।

विथी ( सं० बीज ) ( पु० ) बीज, गुठली ।

बियारी ( स्त्री० ) ब्यालू, रात्रि का भोजन ।

वि लू ( स्त्री० ) रात का खाना ।

विरत ( वि० ) बैरागी, मुमुक्षु, उदासीन ।

विरद ( पु० ) यश, नाम, ख्याति, हथियार ।

विरदावलि ( विरद=यश, सं० अवलि=पाँत ) ( स्त्री० )  
बहुत यश, बहुत ख्याति, बड़ी नामवरी ।

विरमना ( सं० वि, रम्=ठहरना, चैन करना ) ( कि० अ० )  
ठहरना, रहना, बिलमना ।

विमला ( सं० विरल, वि, रा=देना या लेना ) ( वि० )  
कोई कोई, अनूठा, अपूर्व, अनूप ।

विरवा ( पु० ) रूख, वृक्ष, पौधा ।

विरसता ( स्त्री० ) भगड़ा, टंटा, मनमुटाव ।

विरसना ( कि० अ० ) टिकना, ठहरना, रहना ।

विरह ( सं० विहर, वि=बहुत, रह=छोड़ना ) ( पु० ) जुदाई,  
बिछोड़, वियोग, बिछुड़ना, फुरकत ।

विरहनी ( सं० विरहिणी, विरह ) ( वि० ) वह स्त्री जो  
अपने पति से जुदा रहे ।

विरहा ( पु० ) वियोग, बिछोड़, अहीरी का गीत ।

विरहिया ( वि० ) विरहिणी, विरही ।

विरही ( पु० ) वियोगी ।

विराजना ( सं० वि=बहुत, राज्=शोभना ) ( कि० अ० )  
शोभना, सुख भोग करना, चैन से रहना ।

विराना ( वि० ) पराया, दूसरे का, ( कि० सं० ) बिद्वाना ।

विराम ( पु० ) विश्राम, वाक्य की समाप्ति ।

विरियाँ ( सं० वेला ) ( स्त्री० ) समय, वृत्त, काल,  
वेला, अवसर, वारी ।

विरोग ( सं० वियोग ) ( पु० ) विरह, वियोग, जुदाई ।

विरोगन ( सं० वियोगिनी ) ( वि० ) वह स्त्री जो विरह  
से व्याकुल हो ।

विनी ( स्त्री० ) बरनी, हड्डा, बरें ।

बिल } ( सं० बिल, बिलू=ढकना या छिपना ) ( पु० )  
बिला } चूहे आदि के रहने का छेद, छिद्र माँद,  
बाँबी, बामी ।

विलकना ( कि० अ० ) सिमकना, खड़े का रोना ।  
 विलखना ( सं० विलक्षण, वि=बुग, लख=विह )  
 ( कि० अ० ) उदास होना, ( कि० म० ) देखना,  
 उदास होकर देखना, करुणा करके रोना ।  
 विलग ( म० विलग्न, वि=नहीं, लग=मिलना ) ( वि० )  
 अलग, जुदा, न्यारा ।  
 विलग मानना ( मु० ) बुरा मानना जैसे—“विलग  
 न मानब जानि गैवारी” । गो० तु० दा०  
 विलगना ( म० विलग्न ) ( कि० स० ) जुदा होना,  
 अलग होना, फटना, छटना ।  
 विलगाना ( विलगना ) ( कि० म० ) जुदा-जुदा करना,  
 बलगाना, ( कि० अ० ) फटना, फाटना ।  
 विलचना ( कि० म० ) चुनना, छंटना ।  
 विलटना ( कि० अ० ) नष्ट होना, बिगड़ना, धर्मभ्रष्ट  
 होना, असफल होना ।  
 विलनी ( आ० ) आँख को फुड़िया, सूझ काट-विशेष ।  
 विलवेद ( पु० ) निपटारा, निर्णय ।  
 विलविलाना ( कि० अ० ) व्याकुल होना, कूकना,  
 तड़फना, विलाप करना ।  
 विलम ( सं० विलम्ब ) ( श्री० ) देरा, देर, ढंज ।  
 विलमना } ( म० विलम्ब ) ( कि० अ० ) देरा करना,  
 विलयना } ठहर जाना, रुक जाना ।  
 विललाना ( कि० अ० ) रोना, विलाप करना ।  
 विलल्ला ( श्री० ) भाँदू, मूर्ख, बेइया, बेराऊर ।  
 विलसना ( म० वि, लग=खेचना ) ( कि० अ० ) प्रसन्न  
 होना, सुख भोगना, भोगना, आनंदित होना ।  
 विलस्त ( सं० वितास्त ) ( पु० ) बिस्ता, बिखरना,  
 बालिश्त, अँगूठे से कनउँगली तक का माप ।  
 विलहरा ( पु० ) पान रखने का डबा, पनवटा ।  
 विलाई ( सं० विडाली ) ( श्री० ) विल्ली एक लोहे की  
 चीज़ जिस पर ‘कहू’ छीलते हैं, किवाड़ बंद करने  
 की लकड़ी ।  
 विलाना ( म० विलय, वि=बहुत, ली=मिलना, पर वि  
 उपमर्ग के माथ आने में दम धातु का अर्थ नाश होना  
 होता है ) ( कि० अ० ) मिट जाना, नाश होना ।  
 विलाद ( श्री० ) विलसन, बिता ।  
 विलापना } ( सं० विताप, वि=बुग तथा मे, लप=बोलना  
 विलपना } अर्थात् रोना ) ( कि० अ० ) बिखखना, रोना,  
 विलाप करना, दुःख करना ।

विलार } ( सं० विडाल ) ( पु० ) बिज्ञा, मार्जार,  
 विलाय } गुबह ।  
 विलावल ( श्री० ) एक राग का नाम ।  
 विलोना } ( सं० विलोडन, वि, लुइ=मथना ) ( कि० स० )  
 विलोचना } मथना, महना ।  
 विल्ली ( म० विडाली ) ( श्री० ) एक जानवर का नाम ।  
 विल्ली के भागों छीका टूटा ( मु० ) अयोग्य मनुष्य  
 को संयोग से बड़ा काम मिलना ।  
 विल्ली भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा धर लेती है  
 ( मु० ) जब लड़ना हो तो पहले अपना बचाव  
 सोचलेना चाहिए ।  
 वियाई ( श्री० ) पैर के तलवे का घाव ।  
 विपखोपरा ( पु० ) गोह, मोघा ।  
 विसन ( सं० व्यसन ) ( पु० ) दोष, अवगुण, बुराई,  
 बुरा काम, प्रेम, बशौक, रसगत ।  
 विसनी ( वि० ) व्यसनी, लुचा, लंपट ।  
 विसविसाना ( कि० म० ) सड़ना, बजबजाना ।  
 विसर ( पु० ) भूल-भूक, विस्मरण ।  
 विसरना ( सं० विस्मरण, वि=नहीं, स्मृ=याद रखना )  
 ( कि० अ० ) भूल जाना ।  
 विसाल ( श्री० ) पूँजी, मूल, धन, हैसियत, स्थिति ।  
 विसाली ( पु० ) छोटी-छोटी चीज़ें बेचनेवाला ।  
 विसाना } ( कि० म० ) मोल लेना, खरीदना,  
 विसाटना } लेना । जैसे—“आनेहु मोल बेसाहि कि  
 मोही” । गो० तु० दा० ।  
 विसारना ( विसरना ) ( कि० म० ) भूलाना, बिसरना ।  
 विसरना ( कि० अ० ) धीरे-धीरे रोना, सिमकना चुपचाप  
 सोचना । जैसे—“जान कठिन सिवचाप बिसरति”  
 — गो० तु० दा०  
 विसेला ( विप ) ( वि० ) जहरीला ।  
 विस्तारना ( विस्तार ) ( कि० स० ) फैलाना ।  
 विस्वा ( ग्राम ) ( पु० ) बांधे का बीसवाँ भाग ।  
 विहन ( पु० ) खेत में बोने के लिये रक्खा हुआ विया ।  
 विहनौर ( श्री० ) विया बोने की बयारी ।  
 विहरना ( म० विहरण ) ( कि० अ० ) बिहार करना,  
 खुशी करना, हुलसना, सैर करना, पेश-इशरत करना ।  
 विहरी ( श्री० ) चंद्रा, पातड़ी उगाहनी ।  
 विहरना ( म० विदारण ) ( कि० अ० ) फटना, छाती  
 फटना, छाती दरकना, मध्य से फटना ।  
 बिहँसना ( सं० बिहसन ) ( कि० अ० ) हँसना, मुसकुराना

बिहाग ( स्त्री० ) एक राग का नाम ।

बिहान ( पु० ) भोर, तड़का, प्रातःकाल, प्रभात, भिन-  
सार, सुबह, सबेरा ।

बिहाना ( सं० वि, हा=छोड़ना ) ( कि० सं० ) छोड़ना,  
त्यागना ।

बिही ( स्त्री० ) अमरूद ।

बीघा ( पु० ) बीस बिस्वे की नाप ।

बीच ( अव्य० ) भीतर, अंदर, में, माँक, मध्य, ( पु० )  
अंतर, फूट, विरोध ।

बीच पड़ना ( मुहा० ) अंतर पड़ना, फूट पड़ना ।

बीच-बिचाव करना ( मुहा० ) दो आदमियों में मेल  
कराना ।

बीच में पड़ना ( मुहा० ) दो आदमियों में मेल कराने  
के लिये मध्यस्थ होना ।

बीचोबीच ( मुहा० ) ठीक बीच में, मध्य में ।

बीछा ( पु० )

बीछी ( स्त्री० ) ( सं० वृश्चिक ) बिच्छू या बीछी ।

बिच्छो ( स्त्री० )

बीजक ( पु० ) माल की फेहरिस्त, चालान चिट्ठी,  
टिकट जो माल की गठरी पर लगाया जाता है,  
रक्का, रवानगी ।

बीजना ( सं० व्यजन ) ( पु० ) तालवृत्तक, पंखा ।

बीजार ( पु० ) अधिक बीजवाला, बीजमय ।

बीभना ( कि० सं० ) खोदना, ठेलना, रेलना ।

बीट ( सं० विघा ) ( स्त्री० ) जानवरों का गू ।

बीटना ( कि० अ० ) बिथरना, छलकना, उपराना ।

बीठा ( पु० ) बीड़ा, गेंदुरी ।

बाड़ा } ( सं० वं टिका, वि, इट=जाना ) ( पु० ) पान की  
बीरा } खिली, चूना, कथा और सुपाबी आदि सहित  
लगाया हुआ पान, वह डोरा जिससे तखवार की  
म्यान उसके कब्जे में बँधी रहती है ।

बीड़ा उठाना ( मुहा० ) किसी बड़े काम को करने का  
ज़िम्मा भरना ।

बीड़ा डालना ( मुहा० ) किसी कठिन काम के लिये  
सवाल करना, हिंदुस्तान में रीति है कि जब किसी  
सरदार को कठिन काम आ पड़ता है तो वह  
अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम  
को कहता है, फिर एक पान का बीड़ा रक्काबी में

रखकर सबके सामने फेरा जाता है, जो उसको उठा  
कर चबा ले, वह काम उसके ज़िम्मे हो जाता है ।

बीण } ( सं० बीणा ) ( स्त्री० ) बाणा, तंत्री, एक  
बीन } बाजे का नाम जिसके दोनों ओर तूँबा और  
डंडो पर बहुत सी खँटियाँ होती हैं जिन पर तार  
चढ़े रहते हैं ।

बीतना ( सं० व्यतीत ) ( कि० अ० ) व्यतीत होना,  
हो चुकना, चला जाना, गुज़रना, पूरा होना,  
कटना, अनुभव होना ।

बीधना ( सं० विद्ध या वेधन, विधू या व्यधू=छेदना )  
( कि० सं० ) छेदना, बेधना ।

बीवी ( स्त्री० ) स्त्री, बहू, मेम, बहन, नंद ।

बीभत्स ( वि० ) जुगुप्सित, निंदित, घृणित, ( पु० )  
नवरसों में एकरस ।

बीमा ( स्त्री० ) जोषिम, हुंडा, भाड़ा ।

बीर ( पु० ) भाई, भैया, कान में पहनने का एक गहना,  
( सं० वीर ) ( वि० ) बहादुर, शूरवीर, ( स्त्री० ) बहन ।

बीरबहूटी ( स्त्री० ) एक प्रकार का लाल कीड़ा जो  
सावन में पैदा होता है, इंद्रबधू ।

बीरा ( पु० ) भाई, भैया ।

बीरी ( सं० बीटिका ) ( स्त्री० ) पान की खिली ।

बीस ( सं० विंशति ) ( वि० ) दो दहाई, २० ।

बीसा ( पु० ) बीस नखवाला कुत्ता ।

बीसी ( स्त्री० ) अनाज नापने का परिमाण ( सं०  
विंशति ) बीस, कोड़ी ।

बुकनी ( स्त्री० ) चूर्ण, बूरा, चूर ।

बुकलाना ( कि० अ० ) बकना, बकवकाना ।

बुक ( पु० ) हृदय का मांस, कलेजा, क्लेश, झिजका,  
वर्णन, चमक, ( वि० ) दाता, बक्रा ।

बुकन ( बुक + अन, बुक=कटना, भूकना ) ( पु० ) कुकुर-  
शब्द, कुत्ते का भूकना ।

बुक्का ( पु० ) मुट्ठी-भर, चुटकी, बुकटा, एक प्रकार का  
लाल रंग ।

बुक्कार ( पु० ) पृष्ठमांस, पीठ का मांस, हृदय, कलेजा,  
सिंहनाद ।

बुजना ( पु० ) मासिक धर्म की अवस्था में स्त्रियों के पहनने  
का कपड़ा, नहान का कपड़ा ।

बुजहरा ( पु० ) पानी गर्म करने का पात्र-विशेष ।

बुझना ( कि० अ० ) ठंडा होना, बुतना, धिराग गुल होना, आग का ठंडा होना ।

बुझाना ( कि० स० ) ठंडा करना, बुताना, धिराग गुल करना, आग को ठंडा करना ।

बुझीचल ( स्त्री० ) पहेली, दृष्टकूट ।

बुझ ( बुझ्=त्याग, आच्छादन ) ( पु० ) संवरण, आवरण, आच्छादन, ढापना, ( वि० ) ढाँपनेवाला ।

बुझाना ( कि० स० ) बुझाना, बोरना ।

बुझुदा ( सं० वृद्ध ) ( वि० ) बुढ़ा ।

बुद्धभस ( वि० ) यह बुढ़ा जो जवानों की चाल चले ।

बुद्धभस लगना ( मुहा० ) बुढ़ापे में जवानों की बातें करना ।

बुढ़वा ( सं० वृद्ध ) ( वि० ) बुढ़ा ।

बुढ़ापा ( वृद्धा ) ( पु० ) बुढ़ापन, बुढ़ावस्था ।

बुढ़ापा बिगड़ना ( मुहा० ) बुढ़ापे में दुःख पाना ।

बुढ़िया ( स्त्री० ) बूढ़ी स्त्री ।

बुंड़ा ( पु० ) कान का एक गहना ।

बुतना ( कि० अ० ) बुझना, गुल होना, ठंडा होना ।

बुत्त ( पु० ) वस्तु-विशेष जिस पर जुआ खेलने में पाँसे फेंकते हैं, मुष्ट, चेष्टा-विहीन ।

बुत्ता ( पु० ) ठगई, छल, कपट, धोखा, झूठासापटी ।

बुत्ता देना ( मुहा० ) ठगना, छलना, धोखा देना ।

बुद्ध ( बुध्=ज्ञानना ) ( पु० ) विष्णु का नवौं अवतार, बौद्धमत का स्थापन करनेवाला, बुद्धिमान्, पंडित, परलखित वृक्ष, ( वि० ) विदित, जाना हुआ, जागता हुआ ।

बुद्धि ( बुध्=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) मनीषा, मति, भी, धियणा, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अज्ञान ।

बुद्धिबल ( पु० ) अज्ञान की ताकत ।

बुद्धिमान् ( बुद्धि+मान् ) ( वि० ) समझदार, ज्ञानवान्, विवेकी, अज्ञानमत् ।

बुद्धिहीन ( बुद्धि+हीन ) ( वि० ) बेसमझ, मूर्ख, बेअज्ञान ।

बुद्धिद्रिय ( बुद्धि+द्रिय ) ( पु० ) ( स्त्री० ) धारि, नाक, कान, जीभ, स्पर्श, अर्थात् चमत् ।

बुध ( बुध्=ज्ञानना ) ( पु० ) बृहस्पति की स्त्री के नाँव

से उत्पन्न हुआ बेटा, चौथा ग्रह, बुधवार, पंडित, बुद्धिमान् ।

बुधजन ( बुध+जन ) ( पु० ) पंडित लोग, बुद्धिमान् ।

बुधवार ( बुध+वार=दिन ) ( पु० ) बुध का दिन, चौथा वार ।

बुधान ( पु० ) गुरु, पंडित, अध्यापक, ब्रह्मा का पार्षद ।

बुधित ( वि० ) ज्ञात, जाना हुआ ।

बुँदा ( सं० बिंदु ) ( पु० ) बिंदी, शून्य, सिकर, बिंदु ।

बुँदला ( पु० ) बुँदलखंड का राजपूत ।

बुझा ( कि० स० ) बिज्ञा, विनना ।

बुभुत्ता ( बुभु=खाना ) ( स्त्री० ) क्षुधा, भूख, खाने की चाह ।

बुभुत्तित ( बुभुत्ता ) ( वि० ) भूखा ।

बुरा ( वि० ) खराब, दुष्ट, नीच, निकम्मा ।

बुरा कहना ( मुहा० ) निंदा करना, बदनाम करना ।

बुरा चेतना ( मुहा० ) किसी का बिगाद चाहना, किसी की बुराई चाहना ।

बुरा घेठा खोटा पैसा काम आता है ( मुहा० ) अपना बेटा निकम्मा हो तो भी किसी समय काम आता है ।

बुरा मानना ( मुहा० ) अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, नाज़ुश होना ।

बुरा लगना ( मुहा० ) भला न मालूम होना ।

बुराई ( स्त्री० ) खराबी, दुष्टता, बदनामी ।

बुराई पर कमर बांधना ( मुहा० ) बुराई अथवा हानि करने पर तैयार होना ।

बुर्ज ( पु० ) घरहरा, मीनार, स्तंभ ।

बुलबुला } ( सं० बुलबुल ) ( पु० ) बुलबुल ।  
बुल्का, बुल्का }

बुलाक ( स्त्री० ) नाक में पहनने का आभूषण ।

बुलाहट ( स्त्री० ) पुकार, तलबी ।

बुहनी ( स्त्री० ) पहखी बिक्री ।

बुहरी ( स्त्री० ) भुना अन्न, भुना हुआ यव ।

बुहारना ( कि० स० ) झाड़ना ।

बुहारी ( स्त्री० ) झाड़ू ।

बूझा ( स्त्री० ) बहन, फूफू, पिता की बहन ।

बूई ( अव्य० ) छोटे बच्चों के डराने का शब्द ।

बूकना ( कि० स० ) चूर-चूर करना, बुकनी करना ।

बूका ( पु० ) बुकनी, चूर्ण ।



बूचा ( वि० ) बनकटा ।

बूझ ( सं० बोध या बुद्धि ) ( स्त्री० ) समझ, बुद्धि, ज्ञान ।

बूझना ( सं० बुध्=ज्ञानना ) ( कि० सं० ) समझना, जानना, सोचना ।

बूट ( पु० ) चना, रहिजा, चणक, अँगरेजों के गे का बना जूता ।

बूटा ( पु० ) छोटा पेड़, काड़, कपड़े पर काढ़ा हुआ फूल आदि ।

बूटी ( स्त्री० ) जड़ी, फूल, छोटा बूटा, भंग ।

बूड़ना ( कि० अ० ) दूबना ।

बूड़िया ( वि० ) गोताखोर, पनबुढ़वा ।

बूड़ा ( स्त्री० ) भाले आदि को नोक ।

बूढ़ा ( सं० वृद्ध ) ( वि० ) बुढ़वा, पुराना, बहुत उमर का, प्राचीन ।

बूढ़ाघाघ } ( मुहा० ) बहुत बूढ़ा, जिसने ज़माना  
बूढ़ाखराँट } देखा हो ।

बूता ( पु० ) बख, ज़ोर, शक्ति, सामर्थ्य ।

बूँद ( सं० बिंदु ) ( स्त्री० ) छीटा, टपका, टपकन, कतरा ।

बूँदा ( सं० बिंदु ) ( पु० ) घड़ी बूँद, टपका ।

बूँदाबाँदी ( मुहा० ) मेह की थोड़ी-थोड़ी बूँदें गिरना ।

बूर ( स्त्री० ) भूसी, तुप, छिलका, चोकर ।

बूर के लड्डू ( मुहा० ) एक मिठाई जो गेहूँ की चोकर से बनती है और उसके ऊपर शकर का शिल्लक चढ़ाते हैं, वह बहुत सस्ती बिकती है । इसलिये जो काम देखने में बहुत अच्छा पर सचमुच निकम्मा हो उसको बोलचाल में बूर का लड्डू कहते हैं और जो लोग बूर का लड्डू बचते हैं वे इस तरह पुकारते हैं कि “बूर का लड्डू जो खावे सो भी पछतावे, न खावे सो भी पछतावे”—और कोई-कोई कहते हैं कि यह मिठाई कोई नहीं खेचता, न खाता है, न बनाता है पर इसी कहावत में बोलते हैं ।

बूरा ( पु० ) सारा की हुई चीनी, लकड़ी और हाथोर्दाँत का चूरा ।

बे ( अव्य० ) अवे, अरे, अनादर-सूचक शब्द ।

बेंग ( सं० व्यंग, वि=बुरा, अंग=शरीर ) ( पु० ) मेंढक ।

बेंट ( पु० ) दस्ता, वह लकड़ी जिसे कुल्हाड़ी आदि में लगाते हैं ।

बंका ( वि० ) लिछाँ, ठेका, बाँका ।

बेग ( सं० वेग, बिजु=कौपना ) ( पु० ) उतावली, फुर्ती,

शीघ्रता, प्रवाह, ( कि० वि० ) जल्दी से, ज़ोर से ।

बेगार ( पु० ) सेंट, मुफ्त, किसी मजदूर को ज़बरदस्ती पकड़ना और उसको मजदूरी न देना या बहुत थोड़ी मजदूरी देना ।

बेगार पकड़ना ( मुहा० ) ज़बरदस्ती किसी मजदूर को अथवा गाड़ी को पकड़ना और काम कराकर मजदूरी न देना या थोड़ी बहुत नाममात्र को दे देना ।

बेचारा ( वि० ) असहाय, बेचारा, दुःखी ।

बेचू ( वि० ) बेचनेवाला ।

बेजू ( पु० ) नकुल, नेवला ।

बेभी ( पु० ) निशाना, चिह्न ।

बेटवा ( पु० ) पुत्र, लड़का, बेटा ।

बेटा ( पु० ) पुत्र, लड़का ।

बेठन ( पु० ) खोज, आच्छादन, पुट्टा ।

बेड़ ( पु० ) मेंढ़, धरा, बाग ।

बेड़ा ( पु० ) घरनई, चौघड़ा, जहाज़ों या नावों का समूह ।

बेड़ा पार करना या लगाना ( मुहा० ) दुःख से छूटना, दुःख दूर करना, उतारना, पार करना ।

बेड़ा पार होना ( मुहा० ) दुःख से छूटना, सब चाह पूरी होना ।

बेड़िया ( स्त्री० ) जाति-विशेष ।

बेड़ी ( पु० ) पैकड़ी, पात्र-विशेष, जो सींचने के काम में आता है ।

बेड़ौल ( वि० ) कुरूप, बदशक्ल ।

बेदय ( वि० ) भद्दा, कुरूप, मुतफ़्फ़ी ।

बेढ़ना ( कि० सं० ) धरना, बाढ़ा बाँधना ।

बेढ़ा ( पु० ) कठघरा, कटहरा ।

बेणू } ( सं० वेणु, वेणु=बाजा बजाना ) ( स्त्री० )  
बेणू } बाँसुरी, मुरली, बाँस ।

बेत ( सं० वेत, अजू=जाना ) ( स्त्री० ) एक तरह की लकड़दार लकड़ी, बेत का पेड़ ।

बेदखल ( वि० ) बहिष्कृत, निकाला हुआ, अधिकार-रहित ।

बेदम ( वि० ) धका हुआ, विना दम का ।

बेदिका } ( स्त्री० ) स्थंडिल, यज्ञ की बाल की बेदी ।  
बेदी }

वेध ( पु० ) छिद्र, छेद, साध, नक्षत्रयुक्त योग-विशेष ।

वेधङ्क ( वि० ) निधङ्क, निडर, निर्भय ।

वेधना ( सं० वेधक ) ( कि० म० ) बाधना, छेदना ।

वेन ( स्त्री० ) वंशा, वंशुरी ।

वेना ( पु० ) पंखा ।

वेनी ( स्त्री० ) चोटी, जुड़ा, किचाड़ में लगा एक काठ ।

वेवस ( वि० ) पराधीन, परवश ।

वेवाक ( वि० ) चुकता ।

वेमात ( म० विमाता, विरुद्ध, माता=मा ) ( स्त्री० )  
सौतेली मा ।

वेर ( सं० वेदर ) ( पु० ) एक प्रकार का फल ।

वेल ( सं० विल्व ) ( पु० ) एक फल का नाम, ( सं०  
वल्गि ) ( स्त्री० ) बेखी, लता, वंश, औलाद,  
संतान ।

वेला ( पु० ) एक पेड़ का नाम जिसका पुष्प फल  
सुगंधित होता है, कठोरा, एक बाजे का नाम जो  
सारंगी-जैसा होता है ।

वेलि } ( म० वल्गि, वल्=धरना ) ( स्त्री० ) वेल,  
वेली } खता ।

वेलू ( पु० ) लुङ्कन, लुङ्काव ।

वेलीस ( वि० ) स्पष्टवक्ता, किसी का पक्ष न लेनेवाला ।

वेवक्रफ ( वि० ) मूर्ख, अज्ञान, अनाड़ी ।

वेवहार ( सं० व्यवहार ) ( पु० ) लेनदेन, लेवादेई,  
रीतिरस्म, चालचलन ।

वेवहारा } ( सं० व्यावहारिक ) ( पु० ) लेनदेन करने-  
वेवहरिया } वाला, महाजन जैसे—“अथ आनिय  
वेवहरिया बोली ।” गो० तु० दा०

वेवान ( पु० ) विमान, मृतक की अस्थि ।

वेसन ( पु० ) चने का आटा ।

वेसनीटी ( स्त्री० ) बेसन की रोटी ।

वेसर ( स्त्री० ) एक गहना जो नाक में पहना जाता है ।

वेसरा ( पु० ) पक्षी-विशेष, बाज, सिकरा ।

वेसुरा ( वि० ) भड़ी आवाजवाला ।

वेस्या ( सं० वेस्या ) ( स्त्री० ) कंचनी, पतुरिया, गणिका,  
नगरनारी, कसबी, रंडी ।

वेह ( पु० ) छेद, छिद्र, साल ।

वेहकु ( वि० ) नाबराबर, ऊँच-नीच, ऊँचा-नीचा

वेहना ( पु० ) रुई धुननेवाला, धुनिया ।

वेहोश ( वि० ) मूर्छित, चेतना-रहित ।

वेकाल ( पु० ) तीसरा पहर, अपराह्न ।

वेंगन ( पु० ) वृंताक, भाँटा ।

वेंगनी } ( वेंगन ) ( वि० ) कुछ स्थाही लिये लाल  
वेजनी } रंग ।

माल ( सं० वेजंतीमाला, वेजंती=जीतनेवाली,  
माला=फूलों का हार ) ( स्त्री० ) पैँचरंगी माला,  
विष्णुभगवान् के पहनने की माला, जो नीलम,  
मोती, माणिक, पुष्कराज और हीरा, इन पाँच  
रंगों से बनती है ।

वेठक } ( सं० वेठना ) ( स्त्री० पु० ) बैठने की जगह ।  
वेठका }

वेठना ( सं० उपविष्ट ) ( कि० अ० ) आसन मारना,  
बैठ जाना, जमना, दीवार आदि का गिर पड़ना,  
मातमपूरसी को जाना, बेकाम होना ।

वेठ जाना ( मुहा० ) गिर पड़ना ।

वेठ रहना ( मुहा० ) छोड़ देना, आशा तोड़ना, सुस्त  
होना ।

वेठाना ( कि० म० ) बैठने की आज्ञा देना, बिठ-  
वेठारना लाना, जमाना ।  
वेठालना

वेतरा ( पु० ) एक प्रकार की सोंठ, सुखा अदरक ।

वेद ( सं० वेद ) ( पु० ) रोगियों का इलाज करने-  
वाला, मिश्र, हकीम, चिकित्सक, दवादारू करने-  
वाला ।

वेदक ( सं० वेदक ) ( पु० ) इलाज करने की विद्या,  
चिकित्सा करने की विद्या, दवादारू करने की विद्या,  
इत्मेहिकमत, डाक्टरी ।

वेदी ( सं० वेदि ) ( स्त्री० ) टिकड़ी, बिंदी, टीकी,  
एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ खलाट पर पहनती हैं ।

वेन ( सं० वर्णा या वचन ) ( पु० ) बोल, वचन,  
कलाम ।

वेना ( पु० ) एक आभूषण जो खलाट पर पहना जाता  
है, बखरा, भाजी ।

वेपार ( सं० व्यापार ) ( पु० ) वणिज, लेनदेन, सौदा-  
गरी ।

१. “बासीसीपासूकरी करोदरीमठशाल ।

पठषट्मुक्ता पोहिये सो बैजंतीमाल ॥ १ ॥”

बैपारी ( पु० ) सौदागर, ताजिर, महाजन ।  
 बैमात्र ( पु० ) सौतेला भाई ।  
 बैयरवानी ( स्त्री० ) ( सं० वीरवनिता ) चारों वर्ण की स्त्री को कहते हैं ।  
 बैया ( पु० ) पक्षी-विशेष ।  
 बैयान ( पु० ) प्रसव, जन्म, उत्पत्ति ।  
 बैयाना ( कि० सं० ) प्रसव करना, उत्पन्न करना ।  
 बैयाला ( वि० ) बाढ़ी, बायुवाला ।  
 बैरंग ( वि० ) बिना टिकट लगा पत्र, महमूली ।  
 बैर ( सं० वैर ) ( पु० ) दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।  
 बैर पड़ना ( मुहा० ) दुश्मनी हो जाना, विरोध पड़ना ।  
 बैर लेना ( मुहा० ) बदला लेना ।  
 बैरख ( फ्रा० बैरक ) ( पु० ) झंडा, ध्वजा, पताका, बैरागी का वेप ।  
 बैरखी ( स्त्री० ) स्त्रियों के बाँह का एक आभूषण, बिरखी ।  
 बैरन ( सं० वैरिणी ) ( स्त्री० ) दुश्मन स्त्री, विरोधिनी ।  
 बैरागड़ा ( पु० ) बैरागी, वैष्णव साधु ।  
 बैरागन ( सं० वैरागिणा ) ( स्त्री० ) योगिन, वैरागिन स्त्री ।  
 बैरागा ( पु० ) बैरागी का वेप ।  
 बैल ( सं० बलीवर्द ) ( पु० ) एक चौपाये का नाम, बर्द, ( वि० ) मूर्ख, अज्ञानी, भादू ।  
 बैस ( सं० वयस्, वयु=जाना या अजु=जाना ) ( स्त्री० ) उमर, अवस्था; किशोर बैस=जवानी की शुरु अवस्था ।  
 बैस ( सं० वैश्य ) ( पु० ) तीसरा वर्ण, बनिया, राज-पूतों की एक जाति जिसके नाम से अवध के पास का बहुत-सा प्रांत बैसवाड़ा कहलाता है ।  
 बैसंदर ( सं० वैश्वानर, विश्व=संसार या सब, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसको सब मनुष्य चाहते हैं ) ( पु० ) आग, आगी, अग्निदेवता ।  
 बैसाख ( सं० वैशाख ) ( पु० ) एक महीने का नाम, दूसरा महीना ।  
 बैसाखी ( स्त्री० ) टेक, धूनी, अन्न-विशेष ।  
 बोआना ( कि० सं० ) खेत में बिया बोना ।  
 बोआरा ( पु० ) सुकाख, खेत बोने का समय ।  
 बोइया ( स्त्री० ) छोटी टोकरी ।  
 बोक ( स्त्री० ) बकरे की बोखी ।

बोकरा ( पु० ) बकरा, भज, छाग ।  
 बोकरी ( स्त्री० ) बकरी, छागी ।  
 बोच ( पु० ) मगर ।  
 बोचा ( पु० ) पालकी-विशेष ।  
 बोझ ( पु० ) भार, बोझा ।  
 बोझ सिर पर होना ( मुहा० ) कोई कठिन काम आ जाना, जिम्मेदारी होना ।  
 बोझल ( वि० ) भारी, बज़नी ।  
 बोटी ( स्त्री० ) मांस का छोटा टुकड़ा ।  
 बोटी-बोटी फड़कना ( मुहा० ) बहुत चालाक होना, फरफंदी होना ।  
 बोठा ( पु० ) डंडल, फल के ऊपर की डंठी ।  
 बोड़ी ( स्त्री० ) कच्ची ।  
 बोताम ( पु० ) बटन, घुंडी ।  
 बोदर्ली ( वि० ) भोलीभाली ।  
 बोदा ( वि० ) मूर्ख, अशक्त, निर्जीव, नामर्द ।  
 बोध ( बुध्=जानना ) ( पु० ) ज्ञान, समझ, बुद्धि ।  
 बोधक ( बुध्=जानना ) ( पु० ) शिक्षक, समझानेवाला, जतानेवाला, नामेद, नसीहत करनेवाला ।  
 बोधन ( बुध्=जानना ) ( पु० ) जतलाना, ज्ञान, बोध, विज्ञापन ।  
 बोधनी } ( बुध्=जानना ) ( स्त्री० ) सिखानेवाली,  
 बोधिनी } बोध करानेवाली, नसीहत करनेवाली ।  
 बोधनीय }  
 बोधित } ( वि० ) बोधनार्ह, समझाया गया,  
 बोधितव्य } समझाने योग्य, नसीहत किया गया ।  
 बोध्य }  
 बोना ( सं० वपन, वपु=बोना ) ( कि० सं० ) बीज डालना ।  
 बोरना ( कि० सं० ) डुबाना, बुझाना ।  
 बोरा ( पु० ) एक तरह का बड़ा थैला, गोना ।  
 बोर्डिंगहाउस ( पु० ) छात्रालय, तालिबानों के रहने का मकान ।  
 बोल ( सं० बोलना ) ( पु० ) वचन, बात, गीत का शब्द ।  
 बोलचाल ( पु० ) गुप्ततर्क, बातचीत, मुहावरा ।  
 बोलना ( सं० वद या वच्=कहना ) ( कि० अ० ) बात करना, कहना, बजाना, आवाज़ निकलाना ।

बोलबाला ( बोल=वचन और फारसी शब्द बाला का अर्थ  
उपर ) ( पु० ) आसीर्वाद, आत्मक, प्रताप ।

बोलबाला होना ( मुहा० ) भज्जा होना, फलना,  
बढ़ना, वैभव बढ़ना ।

बोली ( बोलना ) ( स्त्री० ) बाणो, भाषा, बात ।

बोली-ठोली मुनाना ( मुहा० ) ताना देना ।

बोहिन ( स्त्री० ) नाव, जहाज ।

बोछाड़ } ( स्त्री० ) मेह की वूँटें जो हवा के कारण  
बोछार } निरछी पड़ती हैं, व्यंग्य, तानाकशी ।

बोछियाना ( कि० अ० ) चकर खाना, घूमना, बवंडर  
के साथ घूमना, कली खाना ।

बोछ ( बुद्ध ) ( पु० ) बौद्धमनी, जैनी, विष्णु का अव-  
तार, जगन्नाथजी ।

बोना ( वि० ) टिंगना, चामन ।

बोर ( पु० ) बाल, मंजरी, मोर, बोंड ।

बोरहा } ( म० वातुल ) ( वि० ) दीवाना, पागल,  
बोराहा } मिथ्या, बाबला, गूंगा, जैसे 'पातर कृपी  
बोरा' } बोरहा भाव' ( धाव ) ।

बाराणा ( कि० अ० ) पागल होना, मदोन्मत्त होना ।

बोला ( वि० ) दंतहीन, पोखला ।

बोहा ( वि० ) पथरीला, कंकरीला ।

बोहार ( स्त्री० ) उपदेश, रागिणी स्त्री ।

ब्यजन ( पु० ) पंखा ।

ब्याज ( पु० ) मूद, बियाज ।

ब्यान ( पु० ) पशुओं का प्रसव, बिछाना ।

ब्याना ( म० बयन, बी=जनना ) ( कि० म० ) बचा  
देना, जनना, उपजाना, प्रसव करना ।

ब्यापना ( म० व्यापन, वि=बहुन, आप=फैलना )  
( कि० अ० ) सब जगह फैलना, फैल जाना ।

ब्याल ( पु० ) रात का खाना ।

ब्याह ( म० विवाह ) ( पु० ) शादी, विवाह, गँठबंधन,  
पाणिग्रहण ।

ब्याह रचाना ( मुहा० ) शादी की रीतें या रस्में  
करना ।

ब्याह लाना ( मुहा० ) दुलहिन को घर में लाना ।

ब्याहता ( म० विवाहिता ) ( वि० ) ब्याही हुई स्त्री,  
विवाहिता, परिणीता ।

ब्याहा ( म० विवाहित ) ( वि० ) ब्याहा हुआ ।

ब्यौत ( पु० ) कपड़े का तराश, छाँट, डील ।

ब्यौतना ( कि० सं० ) कपड़े की तराशना या कतरना ।

ब्योपार ( सं० व्यापार ) ( पु० ) बणिज, लेनदेन,  
सौदागरी ।

ब्योपारी ( पु० ) महाजन, सौदागर ।

ब्योमासुर ( सं० व्योमासुर, व्योम=आकाश, असुर=राक्षस )  
( पु० ) एक राक्षस का नाम जो कंस का मंत्री था ।

ब्योरा } ( पु० ) समाचार, वृत्तान्त, बात, पता,  
ब्योरा } निशान, भेद ।

ब्योहार } ( सं० व्यवहार ) ( पु० ) काम, धंधा, व्या-  
ब्योहार } पार, लेनदेन, रीतिभाँत, चलन ।

ब्रज ( म० ब्रज ब्रजू=जाना ) ( पु० ) मथुरा का जिला  
जिसमें गोकुल, वृंदावन आदि हैं और जो १६८ मील  
के धरे में है—ब्रजमंडल=ब्रज का जिला ।

ब्रजवाला ( म० ब्रजवाला ) ( स्त्री० ) ब्रज की स्त्री,  
गोपा ।

ब्रजभाषा ( म० ब्रजभाषा ) ( स्त्री० ) ब्रज की बोली ।

ब्रह्म ( बृह=बढ़ना ) ( पु० ) परमेश्वर, सर्वशक्तिमान्,  
सर्वव्यापी, परमात्मा, आदिपुरुष, वेद, तत्त्व, तप,  
ब्रह्म, ब्राह्मण ।

ब्रह्मअस्त्र ( सं० ब्रह्मास्त्र ) ( पु० ) ब्रह्मा का दिया हुआ  
अस्त्र, ब्रह्मबाण ।

ब्रह्मघातक } ( ब्रह्म=ब्राह्मण, हन्=मारना ) ( पु० )  
ब्रह्मघ्न } ब्राह्मण को मारनेवाला, ब्रह्महत्यारा ।

ब्रह्मचर्य ( ब्रह्म=वेद, चर्=चलना अर्थात् वेद के पढ़ने के  
लिये फिरना ) ( पु० ) ब्रह्मचारी का धर्म ।

ब्रह्मचारी ( ब्रह्म=वेद, चर्=चलना, जो वेद पढ़ने के लिये  
फिरता है ) ( पु० ) पहला आश्रमी, वेद पढ़नेवाला,  
विद्यार्थी, मनुष्य की अवस्था के चार भाग किये हैं  
उनमें से पहलो २५ वर्ष तक की अवस्था को ब्रह्मचर्य  
कहते हैं और उस अवस्था में वह केवल वेदशास्त्र  
पढ़ता है और ब्याह नहीं करता ।

ब्रह्मज्ञ ( ब्रह्म=परमेश्वर, ज्ञ=ज्ञानना ) ( पु० ) परमेश्वर को  
जाननेवाला, ऋषि, मुनि ।

ब्रह्मज्ञान ( ब्रह्म+ज्ञान ) ( पु० ) परमेश्वर का ज्ञान, सच्चा  
ज्ञान, आत्मज्ञान ।

ब्रह्मसूत्र ( ब्रह्म ) ( पु० ) विष्णु, ( वि० ) ब्राह्मण का या  
ब्राह्मण के योग्य, स्या का ।

ब्रह्मन् ( पु० ) वेद, तप, सत्य, तत्त्व, निर्गुणेश्वर, विशुद्ध, विप्र, ब्राह्मण ।

ब्रह्मपुरी ( स्त्री० ) सुमेरुपर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।

ब्रह्मबाण ( ब्रह्म+बाण ) ( पु० ) ब्रह्मअक्ष, ब्रह्मा का बाण ।

ब्रह्मभूति ( स्त्री० ) ब्राह्मणत्व, वेदाधिकार, ब्रह्मा का ऐश्वर्य ।

ब्रह्मभोज } ( ब्रह्म=ब्राह्मण, भोज या भोजन=खिलाना )  
ब्रह्मभोजन } ( पु० ) ब्राह्मणों को खिलाना ।

ब्रह्मयोग ( ब्रह्म+योग ) ( पु० ) परमेश्वर की प्रार्थना, भक्ति, उपासना आदि ।

ब्रह्मरात्रि ( ब्रह्म=ब्रह्मा, रात्रि=रात ) ( स्त्री० ) ब्रह्मा की रात जिसमें १००० युग अथवा मनुष्यों के २१,६०,००,००० वर्ष बीत जाते हैं, छः महीने की रात जिसमें श्रीकृष्ण ने राम किया था ।

ब्रह्मर्षि ( ब्रह्म+ऋषि ) ( पु० ) परमेश्वर का ध्यान करने-वाला और वेद जाननेवाला ऋषि, जैसे वशिष्ठ आदि ।

ब्रह्मर्षिदेश ( पु० ) आर्यावर्त, कुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पांचालदेश, मथुरा, सूरसेनदेश ।

ब्रह्मलोक ( ब्रह्म=ब्रह्मा, लोक=स्थान ) ( पु० ) ब्रह्मा का स्थान, सत्यलोक ।

ब्रह्मवर्चस् ( पु० ) ब्रह्मनेत्र ।

ब्रह्मवादी ( ब्रह्म=परमेश्वर, वादी=कहनेवाला, वद=कहना ) ( पु० ) वेदांती, ब्रह्मज्ञानी ।

ब्रह्मशेष ( ब्रह्म=ब्राह्मण, शेष=बचा हुआ ) ( पु० ) ब्राह्मणों के खाने के पीछे जो खाना बच रहे ।

ब्रह्मसूत्र ( पु० ) वेदांती, यज्ञोपवीत ।

ब्रह्मस्वरूप ( ब्रह्म=परमेश्वर, स्वरूप=रूप ) ( वि० ) परमेश्वर के बराबर, परमेश्वर का रूप ।

ब्रह्महत्या ( ब्रह्म=ब्राह्मण, हत्या=मारना ) ( स्त्री० ) ब्राह्मण को मारना ।

ब्रह्मदा ( ब्रह्म+दत् ) ( वि० ) ब्रह्मदाती, ब्राह्मण को मार डालनेवाला ।

ब्रह्मा ( बृह्=बृहन्ना ) ( पु० ) सृष्टि को पैदा करनेवाला, देवता, विधाता, विधना, ब्रह्मा के चार मुँह हैं जिनसे चार वेद निकले हैं और ब्रह्मा का वाहन हंस है ।

ब्रह्माक्षर ( ब्रह्म+अक्षर ) ( पु० ) तीनों देवताओं का मंत्र, ओ३म् ।

ब्रह्माणी ( ब्रह्मा० ) ( स्त्री० ) ब्रह्मा की स्त्री ।

ब्रह्मांड ( ब्रह्म+अण्ड ) ( पु० ) जगत्, सृष्टि, भूमंडल, सबसृष्टि, चाँद, मिर के बीच का भाग, कांसयसर ।

ब्रह्मादिक ( ब्रह्म+आदिक ) ( पु० ) ब्रह्मा और सब देवता ।

ब्रह्मावर्त ( ब्रह्म+आवर्त ) ( पु० ) स्थान का नाम जो बिठूर के नाम से प्रसिद्ध है ।

ब्रह्मासन ( ब्रह्म+आसन ) ( पु० ) परमेश्वर का ध्यान करते समय का आसन, ऋषि-मुनियों का ध्यान करते समय बैठने का ढंग ।

ब्राह्मण ( ब्रह्म अर्थात् जो ब्रह्म का अथवा वेद का जानने-वाला हो ) ( पु० ) पहले वर्ण के मनुष्य, विप्र, द्विज ।

ब्राह्मणी ( स्त्री० ) ब्राह्मण की स्त्री ।

ब्राह्म्य ( सं० ब्रह्म ) ( पु० ) ब्रह्म की पूजा, परमेश्वर की पूजा ।

ब्राह्म्यमुहूर्त ( ब्राह्म्य+मुहूर्त ) ( पु० ) प्रभात, भोर, बिहान, प्रातःकाल, पोह, सूर्य निकलने के पहले का समय ।

ब्रिटिश ( वि० ) अँगरेजी ।

## भ

भ ( भा=चमकना ) ( पु० ) नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, दीप्ति, भरद्वाज, अमर ।

भँभुआ ( पु० ) भूख के कारण लूटमार करनेवाला क्रूर ।

भँभोरना ( कि० सं० ) काट खाना, फाड़ खाना ( जैसे कुत्ता करता है ) ।

भँवर ( सं० अमर, भ्रम्=घूमना ) ( पु० ) भीरा, चक्र, आवले, चक्र ।

भँवरकली ( स्त्री० ) डोरी, गलाची, लोहे की कड़ा-विशेष ।

भँवरा ( सं० अमर, भ्रम्=घूमना ) ( पु० ) एक प्रकार की बड़ी मक्खी, भँवर, बज्रि, चंचरीक ।

भँसार ( पु० ) भार ।

भई ( कि० वि० ) हुई, हो गई, ( पु० ) भाई, भैया ।

भकसी ( स्त्री० ) क्रैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तंग श्रैथरा मकान ।

भकुवा ( वि० ) मूर्ख, भौंदा, कुपड़, निबुद्धि ।

भकुवाना ( क्रि० अ० ) अकचकाना, भुलाना, कर्तव्य-मूढ़ होना ।

भकोसना ( क्रि० स० ) दूस-दूसकर खाना, खाना ।

भक्र ( भज्=सेवा करना ) ( वि० ) भक्ति करनेवाला, सेवक, ( पु० ) भान, भोदन ।

भक्रकार ( पु० ) रसोई बनानेवाला, सूपकार, रसोईदार ।

भक्रवत्सल ( भक्त+वत्सल ) ( पु० ) भक्तों पर दया करनेवाला, परमेश्वर ।

भक्ति ( भज्=सेवा करना ) ( स्त्री० ) पूजा, आराधना, विश्वास, परमेश्वर में अथवा अपने राजा या मालिक में प्यार, नवधाभक्ति १ श्रवण, २ कीर्तन, ३ अर्चन, ४ वंदन, ५ स्मरण, ६ निवेदन, ७ स्तव्य, ८ दृश्य, ९ सेवन ।

भक्तिवंत ( भं० भक्तिमन् ) ( वि० ) जिसके मन में भक्ति हो, भक्त, सेवक ।

भक्त ( भं० भक्त्य भक्=खाना ) ( पु० ) खाना, ( वि० ) खाने योग्य ।

भक्तक ( भक्+अक ) ( वि० ) खानेवाला, खाऊ, पेद, खवैया ।

भक्तण ( भक्+अण ) ( पु० ) भोजन, छाहार ।

भक्तणीय ( भक्+अनीय ) ( वि० ) खाने योग्य, खाने की चीज ।

भक्तित ( भक्+इत ) ( वि० ) खाया हुआ ।

भक्ष्य ( भक्+अ, भक्=खाना ) ( वि० ) खाने योग्य, ( पु० ) खाना, भोजन ।

भग ( भज्=सेवा करना ) ( पु० ) योनि, स्त्रीचिह्न, सुभाग, ऐश्वर्य, इच्छा, चाह, शोभा, सुंदरता, सूर्य, चाँद ।

भगत ( भं० भक्त ) ( पु० ) सेवक, भक्ति करनेवाला, नर्तक, गानेवाला ।

भगत खेलना ( मुहा० ) स्वाँग खाना, नकल बनाना ।

भगतन ( भगत ) ( स्त्री० ) वेश्या, कंचनी, पतुरिया, नाचनेवाली ।

भगतिया ( पु० ) कथक, गवैया, जाति-विशेष ।

भगदत्त ( पु० ) कामरूपदेशाधिप, राजा का नाम जो महाभारत में प्रसिद्ध था ।

भगंदर ( पु० ) रोग-विशेष, गुदा के आसपास का नासूर ।

भगल ( पु० ) छद्म, कपट, धोखा ।

भगलिया ( वि० ) छली, कपटी, ठग ।

भगवत } ( भग=ऐश्वर्य, वत्=वाला ) ( पु० ) ईश्वर,  
भगवंत } परमेश्वर, ( वि० ) ऐश्वर्य आदि गुणयुक्त ।  
भगवान }

भगवती ( स्त्री० ) चंडी, देवी, ऐश्वर्यादि गुणयुक्ता ।

भगवाँ ( पु० ) गेरुवा वस्त्र, गेरू में रँगा हुआ कपड़ा ।

भगिनी ( भज्=सेवा करना ) ( स्त्री० ) बहन, बहिन, सहोदरा ।

भगीरथ ( भग=ऐश्वर्य ) ( पु० ) एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो अपने तप के प्रभाव से गंगा की स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया, दिक्षीप का पुत्र ।

भगेल ( स्त्री० ) पराजय, हार, ( वि० ) भगोड़ा, भागनेवाला ।

भगोड़ ( वि० ) भगल, भगीया, भागनेवाला ।

भग्गुल ( वि० ) भगोड़, ( पु० ) दूत, हरकारा ।

भग्गू ( वि० ) भगोड़ा, डरपोक, चुज़दिल ।

भग्न ( भज्=तोड़ना ) ( वि० ) टूटा हुआ, फूटा हुआ, नष्ट, हराया हुआ, जीता हुआ ।

भग्नाश ( भग्न=टूटी, आश=अंशा निमर्क ) ( वि० ) निराश, नाउम्मेद ।

भग्नाशा ( वि० ) निराश हुनाश, हत-मनोरथ ।

भग्नी ( स्त्री० ) स्वसा, बहन ।

भंग ( भज्=तोड़ना ) ( पु० ) तोड़ना, खंडन, लहर, तरंग, हार, पराजय, छेद, डर, ( स्त्री० ) भँग, सवङ्गी, एक प्रकार की नशीली पत्ती ।

भंगन ( स्त्री० ) मेहतारानी, पाख़ाना साक़ करनेवाली ।

भंगी ( पु० ) मेहतर, पाख़ाना साक़ करनेवाला, भाङ्कूकश ।

भंगुर ( भज्=तोड़ना ) ( वि० ) टेढ़ा, बाँका, नाश होनेवाला, नष्ट, ( पु० ) नदी की बंकाई ।

भंगेरा ( भंग ) ( पु० ) बहुत भंग पीनेवाला ।

भचकना ( सं० भयचकित ) ( क्रि० अ० ) अचंचे में आना ।

भजन ( भज्=सेवा करना ) ( कि० स० ) माला फेरना,  
परमेश्वर का नाम रटना, जप ।

भजना ( सं० भजन ) ( कि० स० ) जपना, ध्यान करना,  
माला फेरना ।

भजना } ( कि० अ० ) भरणा, चला जाना, दौड़  
भजि जाना } जाना ।

भजनीक ( वि० ) भजन करनेवाला, अर्चक, पूजक ।

भजि ( अ० ) भजन करके, भजके, स्मरण करके ।

भजि जाना ( मुहा० ) भागना, चंपत होना, छिपना,  
लुकना, हटना ।

भजिय ( कि० अ० ) हट जाइए, भागिए, हटना चाहिए,  
स्मरण कीजिए ।

भजी ( स्त्री० ) दौड़ी, भागी ।

भज्यमान ( वि० ) सेव्यमान, सेवित, सेवा किया गया ।

भंजक ( भञ्ज्+अक, भञ्ज्=तोड़ना ) ( वि० ) तोड़नेवाला,  
खंडन करनेवाला ।

भंजन ( भञ्ज्+अन, भञ्ज्=तोड़ना ) ( पु० ) तोड़न,  
फोड़न, खंडन, ( वि० ) तोड़नेवाला ।

भंजनहार ( वि० ) तोड़नेवाला ।

भंजित ( भञ्ज्+इत ) ( वि० ) खंडित, टूटा हुआ ।

भट ( भट्=पोषना ) ( वि० ) वीर, योधा, लड़ाका,  
बहादुर, शूर, मज ।

भटई ( स्त्री० ) बखान, गुणगान, स्तुति, मिथ्या प्रशंसा,  
भाटों का काम ।

भटकना ( कि० अ० ) डारौंडोल फिरना, इधर-उधर  
वृथा फिरना, भूलना, भ्रमना ।

भटकाना ( कि० स० ) भुलाना, भ्रमाना ।

भटकीला ( वि० ) भयावना, डरावना, भटकनेवाला ।

भट पड़ना ( कि० अ० ) गिर पड़ना ।

भटभर ( पु० ) घात प्रतिघात, धक्काधुकी ।

भटिब्र ( भट्+इव ) ( पु० ) शूल, पक्ख मांस, कबाब ।

भठियारा } ( भट्टाहारा ) ( पु० ) खाना पकाने-  
भठियारा } वाला ।

भट्ट ( स्त्री० ) प्रिया, सखी, प्रणयिनी ।

भट्ट ( भट्=पोषना ) ( पु० ) ब्राह्मणों की एक पदवी,  
विद्वान्, पंडित, भाट ।

भट्टार ( पु० ) सूर्य, पूष्य, ( वि० ) पूजनीय, मांय ।

भट्टारक ( भट्+अक+अक, अट्=जाना ) ( पु० ) देवता,

तपस्वी, राजा, सूर्य, विद्वक्, भौंड, ( वि० ) पाप-  
रहित, निष्पाप, पुण्यवान् ।

भट्टाचार्य ( पु० ) बंगालियों का आश्रय, विद्या-संबंधी  
उपाधि ।

भट्टी } ( सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज्=भूँजना ) ( स्त्री० ) बड़ा चूल्हा,  
भट्टी } भाड़, पजावा ।

भठाना ( कि० स० ) गाढ़ना, छिपाना, तोपना ।

भठियाना ( कि० अ० ) धार में बहना, कुआँ खादि  
भठना देना ।

भठियारा ( पु० ) सराय का स्वामी, जाति-विशेष ।

भठियाल ( पु० ) प्रवाह, बहाव, घटाव ।

भड् ( वि० ) एक तरह की बड़ी नाव, डोंगा ।

भड्क ( स्त्री० ) चमक, दमक, शोभा, झलक, दिखनौट,  
चौक, घबराहट ।

भड्कना ( कि० अ० ) चमकना, चौंकना, आग का  
लूका उठना ।

भड्की ( स्त्री० ) भभकी, घुड़की ।

भड्कीला ( वि० ) सजीला, चटकीला ।

भड्केल ( वि० ) जंगली, अनपरचा, अपरिचित ।

भडंग ( वि० ) सीधा, निरछल, कपट-रहित, सरल ।

भड्भडिया ( वि० ) उतावला, अस्वभाव, अकफडिया ।

भड्भूँजा ( सं० भ्राष्ट्रभंजक, भ्राष्ट्र=भाड़, भर्जक=भूँजनेवाला,  
भ्रस्ज्=भूँजना ) ( पु० ) भाड़ फोड़नेवाला, काँडू,  
भूँजा ।

भड्भरिया ( पु० ) जाति-विशेष जो हाथ देखती है, पंडा,  
निषिद्ध दान लेनेवाली जाति के लोग, ( वि० )  
छली, टोनहा ।

भड्साई\* ( स्त्री० ) भरभाड़, भट्टो, बड़ा चूल्हा, भूँजे  
का चूल्हा ।

भड्हा ( वि० ) चटोर, चोर, चोरी करके खानेवाला ।

भड्हाई ( स्त्री० ) कुटनाई, कुटनापन, चोरी, दगा,  
धोखा, छल, कपट, भ्रष्टा, भ्रष्टा, ( पु० ) वेश्या-  
पुत्र, कुटना, चेरया के साथ रहनेवाला ।

भड्हात ( पु० ) किराएदार ।

भणना ( सं० भण्=बोलना या कहना ) ( कि० स० )  
बोखना, पढ़ना ।

भणित ( भण्=बोलना ) ( वि० ) कहा हुआ, बताया  
हुआ, कथित, उक्त ।

भंटा ( सं० भंटाकी, भट्टि=पाषाणा ) ( पु० ) बैंगन,  
वृंताक ।

भंड ( वि० ) कौतुकी, भाँड़ ।

भंडक ( पु० ) खंजन पक्षी, खँडरेचा ।

भंडन ( भंड+अन, भंड=बोलना ) ( पु० ) प्रतारण,  
छलना ।

भंडा ( सं० भण्ड ) ( पु० ) मटका, बड़ा बर्तन, पात्र ।

भंडार ( सं० भाण्डागार, भाण्ड=वरतन, आगार=घर )  
( पु० ) खजाना, कोठा, कोठार, खत्ता ।

भंडारा ( पु० ) भाषुओं का भोज ।

भंडारी ( भंडार ) ( पु० ) कोठारी, रोकड़िया, खजानाची,  
रसोइया ।

भंडूर ( पु० ) प्रवचना, छलना ।

भंडेरिया ( पु० ) भंडरिया ।

भंडेला ( सं० भण्ड, भंडि=टट्टा करना ) ( पु० ) भाँड़,  
भट्टुवा ।

भनार ( सं० भनी ) ( पु० ) पति, स्वामी, भर्ता ।

भनीजा ( सं० भानुज, भानु=भाई, जन्=पेदा होना )  
( पु० ) भाई का बेटा, भाई का लड़का ।

भन्ता ( पु० ) भान, बाहर जाने का पुरस्कार ।

भन् ( श्री० ) बदनामी, धट्टा, पद्माका, गिरने का  
शब्द, पैर का शब्द ।

भन्देसल } ( वि० ) भोंडा, कुडौल, गोंवारू, अनाड़ी,  
भन्देसा } वेडौल, कुडंगा ।

भन्हा ( वि० ) मुख्य, अजानी, भौन्दू, गावदी, घेरस, मोटे  
काम की चीज़ ।

भन्त्र ( भन्दि=कल्याण होना ) ( वि० ) नेक, दोस्त, भाग-  
वान्, श्रेष्ठ, उत्तम, ( पु० ) कल्याण, मंगल,  
शिव, मुबारक ।

भन्त्र होना ( महा० ) सिर और दाढ़ी-मूँछ के बाल  
सुँढ़ाना ( हिंदुओं में एक रीति है कि जब कोई मरता  
है तब अथवा तीर्थ पर बाल मुँढ़ाने हैं ) ।

भन्त्रक ( पु० ) लाभ, क्रायदा, रस, मज्जा, भलाई ।

भन्त्रकाली ( भन्दि=कल्याणरूप, काली, दुर्गा ) ( श्री० )  
दुर्गा, महामाया, कालीदेवी ।

भन्त्रश्री ( श्री० ) चंदन, केसर, कुंकुम, मंगल, शोभा,  
शृंगार ।

भन्त्रा ( भन्दि=सुखी होना ) ( श्री० ) श्रीकृष्ण की एक

स्त्री का नाम, ज्योतिष में दूसरी, सातवीं और  
बारहवीं तिथि, द्योमनदी, अशकुन ।

भन्त्राक्ष ( पु० ) कृत्रिम रत्नाक्ष ।

भन्त्रिका ( श्री० ) दशा-विशेष, कल्याणी ।

भन्त्री ( पु० ) डकौतिया, सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता ।

भनक ( पु० ) आवाज़, शब्द ।

भयक ( श्री० ) झुलना, फुँदना ।

भयकना ( कि० अ० ) क्रुद्ध होना, उलझना, जल  
उठना, तड़पना ।

भयका ( पु० ) अर्क निकालने का पात्र ।

भयकाना ( कि० सं० ) जलाना, क्रुद्ध करना, तड़पाना ।

भयकी ( श्री० ) धमकी, घुड़का, फिड़की, डाट ।

भयभङ्ग ( पु० ) शोर, गुल, अव्यवस्था, हल्ला,  
खटका ।

भयकना ( कि० अ० ) आग लगाना, आग का लूका  
उठना, क्रोध में आना, जल मरना, घोड़े का खूब  
वेग से दौड़ना ।

भभर ( पु० ) डर, झौक, घबड़ाहट, उद्विग्नता, भौड़-  
भाड़, शोरगुल ।

भभरना ( कि० सं० ) फूलना, सूजना, खटकना, अदेशा  
होना ।

भभूका ( पु० ) झल, ज्वाला, ( वि० ) खूब झाल ( जैसे  
जलता हुआ काँयला ), बहुत चमकदार, सुंदर ।

भभूत } ( सं० विभूति ) ( श्री० ) राख, भस्म जिसकी  
भभूती } योगी-संन्यासी अपने शरीर में मलते हैं ।

भभोरना ( कि० अ० ) काट खाना, फाड़ खाना ।

भय ( भी=डरना ) ( पु० ) डर, शंका, झौक, घ्रास ।

भयंकर ( वि० ) डरावना, भयावह, भयानक ।

भयकारक ( भय=डर, कृ=करना ) ( पु० ) डरावना,  
भयानक, भयजनक, झौकनाक ।

भय खाना ( महा० ) डरना ।

भयचक } ( सं० भयचकित, भय=डर, चकित=अचंच-  
भयचक } भित ) ( वि० ) डरा हुआ, घबराया हुआ,  
भयातुर, भयभीत ।

भयभीत ( भी=डरना ) ( वि० ) डरा हुआ, घबराया  
हुआ, भयातुर ।

भयवान् ( भय=डर, वान्=वाला ) ( वि० ) डरा हुआ,  
भयातुर ।



भया } ( सं० भू=होना ) ( क्रि० अ० ) हुआ ।  
भयौ }

भयातुर ( भय=डर, आतुर=घबराया हुआ ) ( वि० )  
डर से घबराया हुआ, भयचक ।

भयानक ( भौ=डरना ) ( वि० ) डरावना, भयंकर, नव  
रसों में से एक रस का नाम ।

भयापह ( भय+अप+हन्=नाश करना ) ( वि० ) भय-  
नाशक, डर छुड़ानेवाला ।

भयावना ( सं० भयानक ) ( वि० ) डरावना, भयंकर,  
भयानक ।

भयावह ( वद्=जाना ) ( वि० ) भयंकर, भयानक, भय-  
दायक, खौफनाक ।

भयाह ( स्त्री० ) छोटे भाई की स्त्री ।

भर ( भृ=भरना ) ( वि० ) पूरा, मुँहामुँह, सब, सारा,  
तमाम । जैसे—उमर-भर ( मुहा० ) सारी उमर ।

भरका ( पु० ) बुझाया हुआ चूना ।

भरकाना ( क्रि० स० ) चूना बुझाना ।

भरण ( भृ=पालना ) ( पु० ) भरना, पोषण, पालन,  
रक्षा, बचाव, तनखाह ।

भरणी ( भृ=भरना ) ( स्त्री० ) एक नक्षत्र का नाम,  
साँप का झड़ाना ।

भरणीय ( वि० ) पोष्य, पालन योग्य ।

भरत ( भृ=भरना, पालना ) ( पु० ) राजा दशरथ का  
बेटा, एक राजा का नाम जिसके नाम से यह देश  
भरतखंड अथवा भारतवर्ष कहलाता है, दुष्यंत  
का पुत्र, एक धातु जिसमें ताँबा, जस्ता और सीसा  
मिला होता है ।

भरतपुत्रक ( पु० ) विदूषक, भाँड़, बहुरुपिया,  
बाजीगर ।

भरताग्रज ( भरत + अग्रज ) ( पु० ) श्रीरामचंद्रजी ।

भरद्वाज ( पु० ) एक मुनि का नाम जो बृहस्पति का  
बेटा था, एक पक्षी का नाम, खद्वैचा ।

भरन ( पु० ) पोषण, पूर्ति, पूरन, ( स्त्री० ) मूसलाधार  
बारिश ।

भरना ( सं० भरण ) ( क्रि० स० ) पूरा करना, महसूल  
या ऋण चुका देना, बंदूक में गोली आदि ढाखना,  
सहना, पाना, जैसे—दुःख भरना, ( मुहा० ) दुःख  
पाना, दुःख सहना ।

भरनी ( स्त्री० ) बाना पूरना ।

भर पाना ( क्रि० स० ) वसूख पाना, जब कोई आदमी  
निराश होता है तब वह बोलता है कि “मैंने  
भर पाया” ।

भरपूर ( वि० ) खूब भरा हुआ ।

भरभराना ( क्रि० स० ) भसकना, फूँकना, छिड़कना ।

भरभरी ( स्त्री० ) सूजन, फुलाव ।

भरम ( सं० भ्रम ) ( पु० ) संदेह, धोखा, भूल, चूक,  
यश, नामवरी ।

भरम खुलना या खुल जाना ( मुहा० ) भेद खुल  
जाना, मर्यादा खुल जाना ।

भरम खोल देना ( मुहा० ) छिपी बात को प्रकट कर देना ।

भरम गँवाना ( मुहा० ) अपने यश में बड़ा लगाना,  
आबरू खोना ।

भरम जाना ( मुहा० ) किसी पर किसी बात का संदेह  
होना ।

भरम निकल जाना ( मुहा० ) भेद खुल जाना ।

भरमाना ( सं० भ्रम=धोखा ) ( क्रि० स० ) धोखा देना,  
भुलाना, फुसलाना, छलचाना ।

भरमीला ( वि० ) संशयवाला, भ्रमवाला, संदेही ।

भरा ( भरना ) ( वि० ) पूरा, पूर्ण, मुँहामुँह ।

भराई ( स्त्री० ) भराने का काम या मजदूरी ।

भरावट ( पु० ) भरनी, पूर्ति, समाप्ति, पूर्णता ।

भरित ( भृ=भरना ) ( वि० ) पूरित, पालित, पोषित,  
रक्षित ।

भरी ( स्त्री० ) बारह मासे की एक तोल, तोला ।

भरु ( पु० ) महादेव, विष्णु, पिता, स्वामी ।

भरैत ( पु० ) किराणदार ।

भरोसा ( सं० भद्राशा, भद्र=अच्छी, आशा=आशा ) ( पु० )  
आशा, आस, विश्वास, उम्मेद ।

भर्ग ( भृन्=चमकना ) ( पु० ) महादेव, ब्रह्मा, ज्योति,  
तेज, प्रकाश, किरण ।

भर्जन ( भर्ज=भूँजना ) ( पु० ) भूँजना, पचाना ।

भर्त्ता ( भृ=पालना, पोसना ) ( पु० ) पति, स्वामी,  
प्राबिंद, ( वि० ) पाखनेवाला, प्रतिपाद्यक ।

भर्तिया ( पु० ) ठेकरा, कसेरा, जाति-विशेष ।

भर्ती ( स्त्री० ) भरावट, दाखिलना, पूर्णता ।

भर्त्सक ( भर्त्स+अक ) ( वि० ) निरङ्कारक, निन्दक ।

भर्त्सन् ( पु० ) कुत्सा, निंदा ।

भर्तृहरि ( पु० ) राजा विक्रमादित्य का भाई ।

भल ( सं० भद्र ) ( वि० ) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

भलमनसाई } ( स्त्री० ) अच्छा आदमी होना, इन-  
भलमनसात } सानियत ।  
भलमनसी }

भल ( पु० ) तरफ़, ओर से, जैसे—सिर के भल=सिर की तरफ़ ।

भला ( सं० भद्र ) ( वि० ) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, चंगा ।

भला आदमी ( मुहा० ) अच्छा आदमी ।

भला कर भला हो सौदा कर नफ़ा हो ( मुहा० )  
जैसा करेगा वैसा पावेगा ।

भलाचंगा ( मुहा० ) नोरोग, मोटा-ताज़ा ।

भला मानना ( मुहा० ) एहसान या भलाई मानना ।

भले आये ( मुहा० ) बहुत देर में आये ।

भलाई ( स्त्री० ) नेकी, नेकनामी, अच्छापन, क्षेम, कुशल ।

भलाई रहना ( मुहा० ) सुयश रहना, नेकनाम रहना ।

भलाई लेना ( मुहा० ) ज़ांगों के साथ एहसान करना,  
नेकी करना ।

भल्ल ( पु० ) भाला, बरछा, रीछ ।

भल्लुक } ( पु० ) रीछ, भालू ।  
भल्लूक }

भव ( भू=होना ) ( पु० ) संसार, जगत्, जन्म, कुशल,  
शेम, मंगल, पाना, प्राप्ति, शिव, महादेव ।

भवर्तीय ( वि० ) स्वर्तीय, तुम्हारा, आपका ।

भवन ( भू=होना ) ( पु० ) घर, स्थान, बास, भाव,  
सन, चिन्तन ।

भवन्त ( पु० ) 'आपक', तुम्हारा, समय, काज ( वि० )  
पूज्य, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

भवन्ति ( वि० ) समय, वर्तमान काज, पूजा का समय,  
श्रेष्ठ, पूज्य ।

भवभूति ( पु० ) मालती-माधव नाटक के लेखक,  
नकुल, म्योला, ( स्त्री० ) संसार की विभूति, संसार  
का ऐश्वर्य ।

भवसमुद्र } ( भव=संसार, समुद्र या सागर=समंदर )  
भवसागर } ( पु० ) संसाररूपी समुद्र, संसारसागर ।

भवार्णव ( भव=संसार, अर्णव=समुद्र ) ( पु० ) संसार-  
समुद्र, भवसागर ।

भवादृश ( भव + आदृश ) ( वि० ) आपके तुल्य,  
तुम्हारे समान, आप सरीखा ।

भवानी ( भव=शिव ) ( स्त्री० ) शिव की स्त्री, शिवरानी,  
पार्वती, दुर्गा ।

भवितव्य ( भू=होना ) ( वि० ) होनेवाला, होनहार ।

भवितव्यता ( भवितव्य ) ( स्त्री० ) होनहार, भाग्य, भाग ।

भविता ( वि० ) होनहार, होनेवाला, पूज्य, श्रेष्ठ ।

भविन ( पु० ) बात करनेवाला, मुत्कलिम ।

भविष्यु ( वि० ) होनेवाला ।

भविष्य ( भू=होना ) ( वि० ) होनहार, होनेवाला, जो  
होगा ।

भविष्यत् ( भू=होना ) ( पु० ) आनेवाला समय, ( वि० )  
होनहार ।

भविष्यत्काल ( भविष्यत्=होनहार, वक्ता=कहनेवाला ) ( पु० )  
भविष्यत्काल की बात जाननेवाला, आगमज्ञानी,  
होनहार जाननेवाला ।

भविष्योन्नति ( भविष्य+उन्नति ) ( स्त्री० ) आगामी वृद्धि,  
होनेवाली तरकी, आयंदा तरकी ।

भव्य ( भू=होना ) ( वि० ) भागवान्, होनहार, योग्य,  
शुभ, सच्चा ।

भपी ( भप्=भूकना ) ( पु० ) कुत्ता, खान ।

भसकना ( कि० अ० ) गिरना, पड़ना, फलकना ।

भसना ( कि० अ० ) तैरना, गिरना, भसकना ।

भसभसा ( वि० ) खोलखा, पोला, थोथा, तुंदख, तुँदीला ।

भसाना ( कि० स० ) चलाना, गिराना, बहाना ।

भस्त्रा ( स्त्री० ) चमड़े की धौंकनी ।

भस्म ( भग्=चमकना ) ( स्त्री० ) राख, छार, भभूत ।

भस्मक ( भस्म=राख, कृ=करना ) ( पु० ) बहुभुला, रोग,  
बहुत भोजन करनेवाला ।

भस्मसात् ( अर्थ० ) सर्वभस्म, सब जल गया ।

भहराना ( कि० अ० ) डगमगाना, गिरना, पड़ना ।

भा ( भा=चमकना ) ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, शोभा,  
सुंदरता, ( पु० ) सूर्य ।

भाँग ( सं० भंगा, भञ्ज=तोड़ना ) ( स्त्री० ) बूटी, भंग,  
विजया, सगुनी ।

भाँजना ( सं० भञ्जन, भञ्ज=तोड़ना ) ( कि० स० ) तोड़ना,

पूठना, मोड़ना, मिलावना, जैये—रस्सी का ।  
 भांजा } ( सं० भागिनोत्र या भागिनिय ) ( पु० ) बहन  
 भान्जा } का बेटा ।  
 भांजी } ( सं० भागिनियी ) ( स्त्री० ) बहन की  
 भान्जी } बेटी ।  
 भाँजी ( सं० भंजनी, भञ्ज=तोड़ना ) ( स्त्री० ) रुकाव, रोक ।  
 भाँजीमारना ( मुहा० ) रोक देना, बंद करना, बाधा डालना ।  
 भाँड़ ( सं० भण्ड, भडि=हँसी करना ) ( पु० ) बहुरूपिया,  
 स्वाँग करनेवाला ।  
 भाँड़ना ( सं० भण्डन, भडि=बुरा कहना ) ( क्रि० सं० )  
 गाली देना, बुरा-भला कहना ।  
 भाँड़ } ( सं० भाण्ड, भा=चमकना ) ( पु० ) बर्तन,  
 भाँड़ा } हंड़ा ।  
 भाँत } ( स्त्री० ) डौल, डब, रोति, प्रकार, तरह ।  
 भाँति }  
 भाँति-भाँति ( मुहा० ) तरह-तरह के, नाना प्रकार के,  
 क्रिस्म-क्रिस्म के ।  
 भाँपना ( क्रि० सं० ) ताड़ना, जानना, देखना ।  
 भाँवर ( पु० ) } ( सं० भ्रम्=भ्रमना ) व्याह में दुख-  
 भाँवरी ( स्त्री० ) } हिन की दूल्हे के चारों ओर सात  
 बार घुमाना या दूल्हा-दुलहिन का वेदी की परिक्रमा  
 देना, फेरा, घुमाव ।  
 भाई ( सं० भ्राता ) ( पु० ) एक बाप का बेटा, माजाया  
 भैया, संगी, साथी, मित्र ।  
 भाईचारा ( पु० ) भयापा, भायप, ननैनी, बिरादरी ।  
 भाईबंद ( भ्राता+बंधु ) ( पु० ) जाति के लोग, भयापा,  
 बिरादरी ।  
 भाकसी ( स्त्री० ) क्रौंद करने के लिये बहुत छोटा  
 तंग और झंघेरा मकान ।  
 भाखना } ( सं० भाषण ) ( क्रि० सं० ) बोलना,  
 भाषना } कहना ।  
 भाखा ( सं० भाषा ) ( स्त्री० ) बोखी, भाषा, ज़बान,  
 ( क्रि० अ० ) कहा, बोला ।  
 भाग ( भञ्ज=हिस्सा करना ) ( पु० ) हिस्सा, बाँट, अंश,  
 विभाग, खंड ।  
 भाग ( सं० भाग्य ) ( पु० ) प्रारब्ध, क्रिस्मत, नसीब,  
 भाग्य ।  
 भाग खुलना } ( मुहा० ) भाग्यवान् होना, धनी  
 भाग जागना } होना, खास होना ।

भाग चलना ( मुहा० ) निकल चलना, भाग जाना,  
 चला जाना ।  
 भाग जाना ( मुहा० ) चला जाना, रफूचक्क हो जाना ।  
 भाग निकलना ( मुहा० ) निकल चलना, भाग चलना ।  
 भाग भरोसा ( मुहा० ) धीरज, ढाँस ।  
 भागाभाग ( मुहा० ) दीड़ादीड़ लगातार दीड़ना ।  
 भागग्राही ( ग्रह=लेना ) ( पु० ) भागी, हिस्सेदार ।  
 भागना ( क्रि० अ० ) पलायन करना, दीड़ना, भवज्ञा  
 करना ।  
 भागधेय ( धा=लेना ) ( पु० ) भाग्य, शुभकर्म, उपायन,  
 राजा का कर खिराज, दायद, सपिंड, बलि ।  
 भागवत ( सं० भगवत् अर्थात् परमेश्वर की जिसमें कथा हो )  
 ( पु० ) अठारह पुराणों में से एक पुराण जिसको  
 वेदव्यासजी ने बनाया, जिसमें बारह स्कंध हैं और  
 सब पुराणों से यह पुराण इन दिनों बहुत पढ़ा-  
 पढ़ाया जाता है । इसमें अठारह हजार श्लोक हैं ।  
 भागहार ( ह=हरण ) ( पु० ) भाजक, ( वि० ) भाग-  
 हर्ता, मत्सूमझलेह ।  
 भागी ( भाग=हिस्सा ) ( वि० ) साझी, बँटत, बँटवैया,  
 हिस्सेदार ।  
 भागीरथी ( भगीरथ ) ( स्त्री० ) गंगा; कहते हैं कि गंगा  
 को राजा भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से पृथ्वी पर  
 लाये, इसलिये इसका नाम भागीरथी पड़ गया ।  
 भागुरि ( पु० ) स्मृति-व्याकरणादि का कर्ता, धर्मशास्त्र  
 और व्याकरण का आचार्य ।  
 भाग्य ( भञ्ज=सेवा करना ) ( पु० ) प्रारब्ध, भाग,  
 क्रिस्मत, नसीब ।  
 भाग्यवंत } ( भाग्य=भाग, वन्त=वाला ) ( वि० ) भाग-  
 भाग्यवान् } वान्, प्रारब्धी, क्रिस्मतवाला, लक्ष्मीवान्,  
 धनवान् ।  
 भाग्यशाली ( वि० ) प्रारब्धी, क्रिस्मतवर ।  
 भाग्यहीन ( भाग्य+हीन ) ( वि० ) मंदभागी, दृष्टिही,  
 बद्-क्रिस्मत ।  
 भाग्यानुसार ( भाग्य+अनुसार ) ( वि० ) प्रारब्धानुसार,  
 तर्कहीर के मुआक्रिक ।  
 भाजक ( भाज्=बाँटना ) ( पु० ) बाँटनेवाला, वह अंक  
 जिसका भाग दिया जाय, मत्सूमझलेह ।  
 भाजन ( भाज्=गुंदा करना ) ( पु० ) बर्तन, बासन,  
 पात्र, भाँड़ा ।

भाजना ( कि० य० ) भागना ।

भाजित ( भाज्=बाँटना ) ( वि० ) बाँटा हुआ, जुदा किया हुआ ।

भाजी ( भाज्=बाँटना ) ( स्त्री० ) साग, तरकारी ।

भाजी ( सं० भाजित, भाज्=बाँटना ) ( स्त्री० ) खाने का हिस्सा, बखरा, बैना ।

भाज्य ( सं० भाज्=बाँटना ) ( वि० ) भाग देने योग्य, ( पु० ) भाग, हिस्सा, विभाग, गणित में वह संख्या जिसमें भाग दिया जाता है, मक्रमूम ।

भाट ( पु० ) कवि, चारण, यश बखाननेवाला ।

भाटक ( भाट=वेतन ) ( पु० ) भाड़ा, किराया, भाड़ा देनेवाला ।

भाटा ( पु० ) समंदर के पानी का उतार या गिरना, भाटा ।

भाठी ( स्त्री० ) भाथी, धौकनी ।

भाड़ ( सं० भाट्ट, भाज्=भुंजना ) ( पु० ) एक तरह का बड़ा चूल्हा जिसमें चने आदि भूने जाते हैं ।

भाड़ा ( पु० ) किराया ।

भाँडीर ( पु० ) एक वन का नाम जो वृंदावन में है, बड़ का वृक्ष ।

भान ( भा=शक्ति ) ( वि० ) दीप्तिमान्, रोशन, प्रकाशवान् ।

भान ( सं० भक्त, भज्=पकाना ) ( पु० ) पका हुआ चावल ।

भाथा ( पु० ) नीर रखने का घर, तूण, तर्कश ।

भादी ( सं० भाद्र, भद्र=भाद्रपदा नक्षत्र ) ( पु० ) वर्ष का छठा महीना जिसमें पूरा चाँद भाद्रपदा नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है ।

भादी की भरन ( महा० ) बहुत भारी मेह जो भादी में बरसता है ।

भानमती ( स्त्री० ) इंद्रजाल जाननेवाली स्त्री ।

भाना ( कि० सं० ) अच्छा लगाना, मनचाहा होना, सोहाना, पसंद होना ।

भानु ( भा=चमकना ) ( पु० ) सूर्य, सूर्य की किरणें ।

भानुज ( भानु+ज, जन्=पदा होना ) ( पु० ) अश्विनी-कुमार, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण ।

भानुजा ( भानु=पुत्र, जन्=पदा होना ) ( स्त्री० ) यमुना-नदी, यमुना ।

भाक्षा ( सं० भंजन ) ( कि० सं० ) तोड़ना, भाँजना ।

भापना ( कि० सं० ) ताड़ जाना, कृतना, अटकल लगाना ।

भाफ़ ( सं० वाष्प ) ( स्त्री० ) धुआँ, बाफ ।

भाभी ( सं० भ्रातृवधू ) ( स्त्री० ) बड़े भाई की स्त्री, भावज, भौजाई ।

भाम ( पु० ) सूर्य, क्रोध, प्रकाश, वहनोई ।

भामा ( स्त्री० ) क्रोधयुक्त स्त्री ।

भामिनी ( भाम्=क्रोध करना ) ( स्त्री० ) क्रोध करनेवाली स्त्री, कर्कशा, लड़ाका स्त्री, लुगाईमात्र, स्त्रीमात्र, वनिता, भार्या, स्त्री ।

भार्मा ( वि० ) क्रोधी ।

भायप ( पु० ) भाईपन ।

भार ( भृ=भरना ) ( पु० ) बोझ, बोझा, ६४ माप का पल, २००० पल का भार या ८००० तोले का ।

भारत ( भरत एक राजा का नाम ) ( पु० ) भरत राजा का वंश अथवा देश, भरतखंड, महाभारत ग्रंथ जिसमें भरतवंशी राजा अर्थात् कौरव और पांडवों की लड़ाई का वर्णन है ।

भारती ( भृ=भरना ) ( स्त्री० ) सरस्वती, वाणी ।

भारद्वाज ( पु० ) मुनिभेद, द्रोणाचार्य, अग्रस्त्य मुनि, बृहस्पति का पुत्र, खड्गेचा पत्नी, हड्डी ।

भारवाह } ( भार=बोझ, वह=ले जाना ) ( पु० )  
भारवाहक } बोझ ले जानेवाला पशु, जैसे—बैल, गधा आदि, मोटिया ।

भारा ( पु० ) किराया, बोझ, भार ।

भारिक ( भृ=भरना ) ( पु० ) कहार ।

भारी ( भार ) ( वि० ) बोझिल, गरु, बड़ा मोटा, महंगा, बहुत मोल का ।

भारी पत्थर चूमकर छोड़ देना ( महा० ) जो काम अपने से न हो सके उसको छोड़ देना ।

भारी भरकम ( महा० ) गंभीर, भलामानुष, सहने-वाला, रोबोळा ।

भापी होना ( महा० ) बहुत कठिन होना ।

भार्गव ( भृगु ) ( पु० ) शुक्र, परशुराम, गज, धन्वी, धनुषधारी, ( स्त्री० ) पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दूब ।

भार्या ( भृ=भरना ) ( स्त्री० ) जोरू, ब्याही हुई स्त्री, बहू, पत्नी ।

भार्यातिक्रम ( भार्या + अतिक्रम ) ( पु० ) परस्त्रीगमन,  
स्त्रीत्याग, स्त्री का नाश होना, स्त्री का अपराध ।

भाल ( भा=चमकना ) ( पु० ) ललाट, लिज्जाइ, खिलार ।

भाल ( सं० भल, भल्लू=मारना ) ( स्त्री० ) नीर की नोक  
या फाल ।

भाला ( सं० भल, भल्लू=मारना ) ( पु० ) बछ्छी, सेल,  
सांग ।

भालुक } ( सं० भल्लूक, भल्लू=मारना ) ( पु० ) रीछ,  
भालू } एक जगली जानवर ।  
भाल }

भालैत ( वि० ) वह जो भाला चलावे ।

भाव ( भू=होना या सोचना ) ( पु० ) सम्मति, मन,  
जो की बान, मानसविकार, दशा, अवस्था, गुण,  
स्वभाव, प्रकृति, अर्थ, अभिप्राय, मतलब, मन,  
मन की तरंग, काम, क्रोध, मोह, स्नेह आदि,  
आन, अदा, नज़रा, चोंचला, हाव-भाव, होना,  
पदार्थ, द्रव्य, नाटक में बहुत बातों का जाननेवाला  
पंडित, तन्वादि द्वादशस्थान अर्थात् कुंडली के  
बारह घर ।

भाव बनाना ( मुहा० ) चोंचले करना, नाचने में हाथ-  
पैर-आँख आदि अंगों से इशारा करना ।

भाव ( पु० ) मोल, निश्व ।

भाई ( सं० भावी ) ( कि० वि० ) देवयोग से, भविष्य,  
होनहार ।

भावक ( वि० ) चिंताकारक ।

भावज ( सं० भ्रातृजाया, भ्रातृ=भाई, जाया=रही ) ( स्त्री० )  
बड़े भाई की स्त्री, भाभी, भौजाई ।

भावना ( भू=होना या सोचना ) ( स्त्री० ) चिंता,  
ध्यान, भाव, सोच, संदेह, अनुभव, जो बात पहले  
हो चुकी हो उसको फिर याद करना ।

भावह ( स्त्री० ) भवर्हा, छोटे भाई की स्त्री ।

भावांतर ( पु० ) प्रकारांतर, अन्य तरह से ।

भावाभाव ( भाव + अभाव ) ( पु० ) होना न होना,  
अदम-वजूद ।

भावार्थ ( पु० ) मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य ।

भाविक ( पु० ) अभिप्रायज्ञाता, नर्तक, चतुर, जोहरी,  
परखनेवाला ।

भावित ( भू=होना या सोचना ) ( वि० ) सोची, धितित,

क्रिकमंद, सचेत, शंकित, डरता हुआ, चिंता  
करता हुआ ।

भावी ( भू=होना ) ( वि० ) होनहार, होनेवाला,  
होतव्य, भविष्य, जो कुछ होनेवाला हो, बदा  
हुआ ।

भावुक ( भू=होना ) ( पु० ) मंगल, कल्याण, प्रसन्नता,  
( वि० ) प्रसन्न, नीरोग ।

भावै ( सं० भावे=होने में ) ( अव्य० ) लेखे, विचार में,  
मन में जानने में, पसंद आवे ।

भाषण ( भाषू=बहना ) ( पु० ) कहना, बोलना ।

भाषणीय ( वि० ) कहने योग्य ।

भाषा ( भाषू=कहना ) ( स्त्री० ) बोली, वाणी, ज़बान ।

भाषांतर ( पु० ) अन्य भाषा, उल्था, अनुवाद ।

भाषित ( भाषू=कहना ) ( वि० ) कहा हुआ, कथित ।

भाषी ( वि० ) वक्ता, वादा ।

भाष्य ( भाषू=कहना ) ( पु० ) टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ,  
महाभाष्य नामक एक ग्रंथ जो संस्कृत व्याकरण की  
एक टीका है ।

भाष्यकार ( वि० ) टीकाकार, टीका बनानेवाला, शरह  
करनेवाला ।

भास्कार ( स्त्री० ) प्रकाश, दीप्ति, संपदा, प्रभा, शोभा,  
किरण, ( पु० ) गूढ़, सुर्ग, अढीर प्राम ।

भासना ( कि० अ० ) जान पड़ना, मालूम होना, ज्ञात  
होना, प्रकट होना, विदित होना ।

भासंत ( वि० ) सुंदराकार, रमणीक, मनोहर, प्रकाश-  
वान्, ( पु० ) सूर्य, चंद्रमा, कमल, मोर की चोटी,  
सुर्ग, गूढ़, ( स्त्री० ) तारागण ।

भासु ( पु० ) सूर्य, दिवाकर ।

भासुर ( भासू+उर ) ( वि० ) वीर, वीसिमान्, शोभित,  
( पु० ) बिल्लीरी पत्थर, कुष्ठ की औषध ।

भास्कर ( भासू=प्रकाश, भासू=चमकना और कृ=करना )  
( पु० ) सूर्य, आग, भास्कराचार्य प्रियने सिद्धांत-  
शिरोमणि आदि उद्योतिष के ग्रंथ बनाये हैं, मोना,  
स्वर्ण, ( वि० ) चमकता हुआ, प्रकाशित ।

भास्वर ( भासू=चमकना ) ( पु० ) सूर्य, दिन, अर्कवृष,  
( वि० ) तेजस्वी, दीप्तिमान् ।

१. "सूत्रार्थी वर्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्यन्ते भाष्यभाष्यविदो विदुः ॥"

भास्वान् ( पु० ) सूर्य, दिनमणि ।

भिकारी } ( सं० भिक्षाहाग, भिक्षा=भीख, आहारी=  
भिक्षवारी } लेनेवाला या खानेवाला, ह=लेना ) ( पु० )

भीख माँगनेवाला, याचक, मँगता ।

भिक्षा ( भिक्षा=माँगना ) ( स्त्री० ) भीख माँगना, भिक्षित  
वस्तु ।

भिक्षाटन ( भिक्षा + अटन, अट=जाना ) ( पु० ) भीख  
माँगने के लिये घूमना ।

भिक्षु ( भिक्षु=माँगना ) ( पु० ) संन्यासी, यती, भिक्षारी ।

भिक्षुक ( भिक्षु=माँगना ) ( पु० ) भिक्षारी, याचक, मँगता,  
संन्यासी ।

भिक्षुरी ( वि० ) ग्लाडी, शून्य, रिक्त, पोपला, खोखला ।

भिगाना } ( क्रि० म० ) तर करना, छोड़ा करना, गीला  
भिगोना } करना ।  
भिजाना }

भिजनी ( स्त्री० ) भेंटी, स्तन का अग्र भाग, डंटी,  
डंठल ।

भिड़ाई ( स्त्री० ) बहन, भनीजा आदि से मिछने के समय  
भाई आदि जो चीज़ उन्हें देते हैं, भेंट, उपहार ।

भिड़ना ( क्रि० अ० ) बहुत ही पास-पास हो जाना,  
सट जाना, मिल जाना, मुठभेड़ होना, दो सेनाओं  
का लड़ाई में पास-पास आ जाना ।

भिड़ना ( क्रि० स० ) मिछाना, दो चीज़ों को पास-  
पास सटा देना, दो आदमियों को लड़ा देना, ठोकर  
देना ।

भिड़ी ( स्त्री० ) रामतरोई, एक तरकारी का नाम ।

भित्त ( भिद=तोड़ना ) ( वि० ) खंड, विभाग, टुकड़ा,  
अर्थ, आधा ।

भित्ति ( भिद=फोड़ना ) ( स्त्री० ) भीत, दीवार, पगार ।

भिदक ( भिद+अक ) ( पु० ) वज्र, खड्ग, अस्त्र शस्त्र ।

भिदुक ( पु० ) भेदक, तोड़-फोड़ करनेवाला ।

भिनकना ( क्रि० अ० ) मक्खियों का किसी चीज़ पर  
झुकना होना, भिनभिनाना ।

भिनभिनाना ( क्रि० अ० ) मक्खियों का शब्द करना,  
भिनकना ।

भिदिपाल ( भिदि=भेदन, भिद=फाड़ना, पाल=पालना )  
( पु० ) हाथ से फँकने का एक हथियार, देखबाँस,  
गोफना, गोफनी ।

भिन्न ( भिद=टुकड़े करना ) ( वि० ) जुदा, अलग,  
न्यारा, पृथक्, ( पु० ) टुकड़ा, हिस्सा, बाँटा,  
कसर ।

भिन्न-भिन्न ( मुहा० ) जुदा-जुदा ।

भिन्नाना ( क्रि० अ० ) दिमाग चकराना, सिर ठनकना ।

भिन्नार्थक ( वि० ) दूसरे अर्थवाला, अन्य आशय का ।

भिसार } ( सं० भानुसार, भानु=सूर्य, सु=जाना ) ( पु० )  
भिनुसार } सूर्य के निकलने का समय, भोर, बिहान,  
प्रभात, प्रातःकाल ।

भिलावाँ ( पु० ) ओपधि-विशेष ।

भिलौजा ( स्त्री० ) भिलावें का बीज ।

भिल्ल ( पु० ) भील, एक पहाड़ी जाति ।

भिपक् } ( भिपू=रोग प्रतीकार ) ( पु० ) वैद्य, रोगों को  
भिपज् } दूरवानेवाला अथवा जिससे रोग डरें, रोग-  
प्रतीकारक ।

भीख ( सं० भिक्षा ) ( स्त्री० ) भिक्षा माँगना, याचना  
करना ।

भीगना ( क्रि० अ० ) गीला होना, भीजना ।

भीचना ( क्रि० म० ) दबाना, चूसना, निचोड़ना ।

भीजना ( क्रि० अ० ) छोड़ा होना, गीला होना,  
भीगना ।

भीजा ( वि० ) छोड़ा, भीगा ।

भीटा ( पु० ) खँडहर, गिरा-पड़ा पुराना मकान ।

भीड़ ( स्त्री० ) ठट्ट, जमघट, जमाव, जत्था, कष्ट, दुःख ।

भीड़भड़का ( मुहा० ) बहुत-से आदमियों का झुकना होना ।

भीड़भाड़ ( मुहा० ) ठट्ट, भीड़ ।

भीड़ा ( वि० ) संकीर्ण, संकेन ।

भीत ( भी=डरना ) ( वि० ) डरा हुआ, भययुक्त ।

भीति ( सं० भित्ति ) ( स्त्री० ) दीवार, ओछे की प्रीति,  
ज्यों बालू की भीति, ( मुहा० )—नीच आदमी  
की मित्रता बालू की भीति की तरह अस्थिर है ।

भातर ( सं० अभ्यन्तर ) ( अव्य० ) अंदर, बीच,  
मध्य, में ।

भीति ( भी=डरना ) ( स्त्री० ) डर, भय, त्रास, शंका,  
खटक ।

भीम ( भी=डरना जिससे ) ( वि० ) डरावना, भयानक,  
( पु० ) राजा युधिष्ठिर का भाई, वायु देवता से  
उत्पन्न, भयानक रस, शिव ।

भीमसेनी ( स्त्री० ) एक प्रकार का कपूर, ज्येष्ठ शुक्लपक्ष को एकादशी ।

भीमा ( भीम ) ( स्त्री० ) दुर्गा ।

भीरु ( भी=डरना ) ( वि० ) डरपोक, डरनेवाला, कमहिम्मत, कादर, ( पु० ) शृगाल ।

भीरुक ( वि० ) भययुक्त, कातर, डरपोक, ( पु० ) उलू पक्षी, चिमगादड़, कुहरा, नीहार ।

भीरुता ( स्त्री० ) भय, कादरपन ।

भील ( सं० भिल्ल, भिल्ल=भेदना ) ( पु० ) एक पहाड़ी जाति का नाम, चुड़ाड़, किरात ।

भीषण ( भी=डराना ) ( पु० ) सेहुँ बृहत्, भटकटैया, बाजपत्नी, त्रास, भय, भयानक रस, शिव, ( वि० ) भयानक, भयंकर, डरावना ।

भीषा ( स्त्री० ) त्रास, भय, भयंकरता ।

भीष्म ( भी=डरना जिससे ) ( पु० ) पांडवों का दादा, शांतनु राजा और गंगा का पुत्र, भय, डर, दह भयानक रस, ( वि० ) डरावना, भयानक, भयंकर ।

भीष्मपंचक ( पु० ) भीष्म के व्रताये पाँच दिन—कात्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी पर्यंत व्रतादिक करना ।

भीष्मसू ( सू=जनना ) ( स्त्री० ) गंगा, भीष्म की जननी, मा ।

भुआल } ( सं० भूपाल ) ( पु० ) राजा, नरपति ।  
भुवाल }

भुक्त ( भुज्=भक्षण करना ) ( वि० ) खादित, खाया हुआ ।

भुक्तभोगी ( वि० ) विषय रूप से अनुभव किया हुआ ।

भुक्ति ( भुज्+ति ) ( स्त्री० ) भोजन, भोग, खाना ।

भुगतना ( सं० भोग, भुज्=खाना ) ( क्रि० म० ) भोगना,

सहना, भले-बुरे का फल पाना ।

भुगताना ( क्रि० स० ) भले-बुरे का फल देना, भोग करवाना, चुकाना ।

भुगा ( वि० ) सीधा-सादा, भोला ।

भुगत ( वि० ) कुटिल, टेढ़ा, वक्र ।

भुग्न ( भुज्+त ) ( वि० ) परेशान, कुटिल, वक्र, कुबड़ा ।

भुज् } ( वि० ) गँवार, जंगली, मूर्ख, अनगढ़,  
भुज् } अनपढ़, कूड़मग्न ।

भुज ( पु० ) } ( भुज्=खाना जिससे खाते हैं, या भुज्=  
भुजा ( स्त्री० ) } टेढ़ा होना ) बाँह, बाहु, दंड, तिलूट  
और चौखूँट आदि खेतों की लकीर ।

भुजग ( भुज्=टेढ़ा गम्=जाना ) ( पु० ) साँप, सर्प, नाग ।

भुजगहन ( पु० ) भुजवन, भुजसमूह ।

भुजगांतक ( पु० ) गरुड़ ।

भुजगाशन ( भुजग+अशन ) ( पु० ) गरुड़ ।

भुजंग } ( भुज्=टेढ़ा, गम्=जाना ) ( पु० ) साँप,  
भुजंगम } सर्प ।

भुजवंध ( भुज्=बाँह, बंध=बाँधना ) ( पु० ) बाजूबंद ।

भुजबीहा ( सं० भुजबृह ) ( पु० ) भुजसमूह, बीसभुजा ।

भुजान ( वि० ) भोगकारो ।

भुजन ( भुज्=खाना ) ( पु० ) भोजन, खादन ।

भुजि ( पु० ) अग्नि ।

भुजिया ( वि० ) भूँजा हुआ, तला हुआ, सोंधा, पकाया हुआ ।

भुजिष्य ( भुज्+इष्य, भुज्=खाना ) ( पु० ) दास, सेवक ।

भुजिष्या ( स्त्री० ) दासी, टहलुई ।

भुट्टा ( पु० ) मकाई की बाखी ।

भुतना ( सं० भूत ) ( पु० ) छोटा भूत, भेत, पिशाच ।

भुतहा ( वि० ) फूहड़, बोढ़ा, भतवाला, भूत के समान ।

भुनाई ( स्त्री० ) बटा, भुनने की क्रिया या मज़दूरी ।

भुन्ना ( सं० भुर्जन, भुज्=भूना ) ( क्रि० अ० ) सेंका जाना, सिंकना, भूँजा जाना ।

भुरभुरा ( वि० ) सूखी बुकनी या ऐसी चीज़ें जो थोड़े ज़ोर से ही चूर-चूर हो जायँ ।

भुरभुराना ( क्रि० स० ) छिड़कना, छीटना, सूखी हुई चीज़ को गिराना ।

भुरकाना ( क्रि० स० ) पीसी हुई चीज़ को किसी चीज़ पर छिड़कना ।

भुरकी डालना ( मुहा० ) जादू से वश में कर लेना ।

भुलकड़ ( वि० ) भूलनेवाला ।

भुलसना ( क्रि० अ० ) जलना, कुलसना, गर्म रेत या पत्थर से अधजला होना ।

भुलाना ( क्रि० स० ) भूल जाना, भुना देना, याद न रखना, बहकाना, भ्रमाना, फुपलाना ।

भुलावा ( पु० ) धोखा, झल, कपट ।

भुलावा देना ( मुहा० ) धोखा देना, झलना ।

भुव ( पु० ) स्वर्ग, पृथ्वी, आकाश ।

भुवग ( सं० भुजङ्ग ) ( पु० ) साँप ।

भुवन ( भू=होना ) ( पु० ) लोक, जगत्, सृष्टि ।

भुवर ( भू=होना ) ( पु० ) आकाश अंतरिक्ष, दूसरा लोक ।

भुशुंडी ( आयुध-विशेष ) बंदूक 'भुशुण्डी लोहलिका नखिका च भुशुण्डिका' ( इति पंचतत्त्वप्रकाशः ) गुर्जर-भाषायामपि ।

भुस ( भू=भूमि, भुस=होना ) ( पु० ) अनाज के उपर का छिन्नका ।

भुसंड ( वि० ) बहुत मोटा चादमी ।

भुसेरा ( पु० ) भूमा रखने का घर ।

भू ( भू=होना ) ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी, भूमि, धरणी, स्थान, जगह, यज्ञ की आग ।

भूईडोल ( भू=भूमि=पृथ्वी, डोल=डोलना ) ( पु० ) भूचाल, भूकंप ।

भूईसना ( भू=भूमि=भोंकना ) ( कि० अ० ) भोंकना, हँ-हँ करना, कुत्ते का शब्द ।

भूई ( स्त्री० ) जमीन, भूमि, पृथ्वी ।

भूईसी ( स्त्री० ) मांगलिकोत्सव के अवसर पर विना संकल्प किए जो द्रव्य ब्राह्मणों को दिया जाता है ।

भूकंप ( भू=धरती, कंप=झपना ) ( पु० ) भूचाल, भूडोल ।

भूकेश ( पु० ) बट, बरगद, शैवाल, सिवार ।

भूख ( सं० भुभुता ) ( स्त्री० ) खाने की चाह, क्षुधा ।

भूख बंद हो जाना ( मुहा० ) भूख नहीं लगना ।

भूख भागना ( मुहा० ) सुख होना, आराम पाना, खाने-पीने का कुछ दुःख न रहना ।

भूख लगना ( मुहा० ) भूख मालूम होना ।

भूखा ( सं० भुभुक्षित ) ( वि० ) जिसको खाने की चाह हो, किसी चीज़ का चाहनेवाला, कंगाल, गरीब ।

भूगर्भ ( वि० ) जमीन के अंदर, पृथ्वी के भीतर ।

भूगोल ( भू+गोल ) ( पु० ) पृथ्वी-मंडल ।

भूचक्र ( पु० ) भूमंडल ।

भूचर ( भू=धरती, चर=चलना ) ( पु० ) धरती पर चलने वाला जीव ।

भूचाल ( पु० ) भूकंप ।

भूड़ ( स्त्री० ) बलुवा धरती, रेतीली धरती, रेगिस्तान ।

भूड़ल ( पु० ) अन्नक ।

भूत ( भू=होना ) ( पु० ) पिशाच, पेत, प्राणी, जीवधारी, जंतु, शिव के गण, अतीतकाल, बीता हुआ समय,

भूतकाल, तत्त्व ( जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश ) वि० ) हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, सच, ठीक, कुमार्गी, धरणी ।

भूतकाल ( पु० ) अतीतकाल ।

भूतघ्न ( भूत+घ्न ) ( पु० ) भोजपत्र, लहसुन, लशुन, ऊँट, बायबिड़ंग, हींग, भूत को मारनेवाला ।

भूतनाथ ( भूत+नाथ ) ( पु० ) महादेव, भैरव ।

भूतनी ( स्त्री० ) भूत की स्त्री, पिशाचिनी, प्रेतिनी, चुबैल ।

भूतल ( भू+तल ) ( पु० ) पृथ्वी, धरती, धरातल ।

भूतात्मा ( पु० ) जीवात्मा, देही, ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।

भूति ( भू=होना ) ( स्त्री० ) ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, भस्म, राख ।

भूतेश ( भूत+ईश ) ( पु० ) महादेव, शिव ।

भूदार ( द=फाड़ना ) ( पु० ) शूकर, सूअर ।

भूदेव ( भू=धरती, देव=देवता ) ( पु० ) ब्राह्मण, विप्र, भूसुर ।

भूधर } ( भू=धरती, धृ=रखना ) ( पु० ) पहाड़, पर्वत,  
भूध्र } गिरि ।

भून्ना ( सं० भर्जन, भृन् या भृसृन्=भृता ) ( कि० सं० ) आग पर रखकर झुलस लेना, जैसे—मक्का आदि, गर्म घा या तेल में डालकर सूख हिलाना, जैसे—मांस आदि, गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे—चना आदि ।

भूप ( भू=पृथ्वी, पा=पालना ) ( पु० ) राजा, नृप, बाद-शाह, ज्योतिष में १६ का नाम ।

भूपति ( भू+पति ) ( पु० ) राजा, महीपाल, भूपाल ।

भूपाल ( भू=पृथ्वी, पाल=पालना ) ( पु० ) राजा, भूप, नरपति, भूपति ।

भूभल ( स्त्री० ) गर्म राख, अंगार, गर्म रेत ।

भूभुरि ( पु० ) छोटा कौटा ।

भूभृत् ( पु० ) पहाड़, राजा, शेष, कच्छपराज, दिग्गज ।

भूमि ( भू=होना, जिस पर मनुष्य होते हैं ) ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, जगह, स्थान ।

भूमिका ( भूमि ) ( स्त्री० ) प्रसंग, मुखबंध, छद्मवेश, चित्तावस्था, विशेष प्रकरण, आभास, तमहीद, प्रस्तावना ।

भूमिनाग ( पु० ) केंचुआ, साधारण सर्प, सँपोला ।

भूमिपति ( भूमि+पति ) ( पु० ) राजा, भूपाल, भूपति ।



भूमिपाल ( भूमि=पृथ्वी, पाल्=बचाना ) ( पु० ) राजा ।

भूमिपिशाच ( पु० ) तादृश, तालद्रुम ।

भूमिया ( भूमि ) ( पु० ) ज़मींदार, पृथ्वी का देवता ।

भूमिहार ।

भूर } ( स्त्री० ) दक्षिणा, दान, भोख ।  
भूरसी }

भूरा ( वि० ) एक तरह का रंग ।

भूरि ( भू=होना ) ( वि० ) बहुत, अधिक, ढेर, ( पु० ) बिष्णु, ब्रह्मा, शिव, इंद्र ।

भूरिप्रेमा ( पु० ) चकई-चकवा, चक्रवाक ।

भूरिभाय ( पु० ) गीदड़ ।

भूरिलाभ ( पु० ) बहुत लाभ ।

भूरिशः ( अव्य० ) बहुत बार, बारंबार, मुतवातिर ।

भूरिश्रवा ( वि० ) यशस्वी, कीर्तिमान्, ( पु० ) एक राजा का नाम ।

भूरुह ( रुह=उगना ) ( पु० ) वृक्ष, दरख्त ।

भूर्ज ( पु० ) भोजपत्र का पेड़ ।

भूर्जपत्र ( पु० ) भोजपत्र ।

भूर्लोक } ( पु० ) मर्त्यलोक ।  
भूर्लोक }

भूल ( सं० भ्रम ) ( स्त्री० ) चूक, सहो, भ्रम, छुटि, चूक ।

भूलना ( कि० सं० ) चूकना, याद न रखना ।

भूला-बिसरा } ( पु० ) भटका हुआ, रास्ता भूल-  
भूला-भटका } कर इधर-उधर फिरनेवाला ।

भूषक ( भूष+अक ) ( पु० ) अलंकारकारक, भूषणधारी ।

भूषण ( भूष=शोभना ) ( पु० ) गहना, आभूषण, आभरण ।

भूषित ( भूष=शोभना ) ( वि० ) शोभित, शोभायमान, अलंकृत ।

भूसा ( सं० बुष, बुष=छोड़ना ) ( पु० ) जानवरों के खाने का चारा, तुस ।

भूसी ( सं० बुष, बुष=छोड़ना ) ( स्त्री० ) चोकर, अनाज के ऊपर का छिलका ।

भूसुर ( भू=पृथ्वी, सुर=देवता ) ( पु० ) नाह्य, विप्र, भूदेव ।

भुकुटी ( भ्र=भौं, कुट=टेढ़ा होना ) ( स्त्री० ) थोरी, बुझकी, भौं का चढ़ाना ।

भृगु ( भृज्=भुनना अर्थात् सबके मन में धर्म की आग को

प्रकाश करना ) ( पु० ) एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति ।

भृगुकुलकेतु ( पु० ) परशुराम, भृगुवंश के पताका ।

भृगुनाथ } ( भृगु=भृगुवंशीयों के नाथ या पति=स्वामी )  
भृगुपति } ( पु० ) परशुराम, परशुधर ।

भृंग ( भृ=भरना या भम्=फिरना ) ( पु० ) भौंरा, भ्रमर ।

भृंगी ( सं० भृंग ) ( स्त्री० ) भौंरी, लखेरी, शिवगण, पार्वती ।

भृतक ( पु० ) नौकर, कार्यकर्ता ।

भृति ( भृ=भरना ) ( स्त्री० ) मूल्य, वेतन, भरण, पोषण ।

भृतिभुज ( वि० ) वेतनपोषावी, नौकरी से जीनेवाला ।

भृत्य ( भृ=भरना अर्थात् जिसको मजदूरी या तनखाह दी जाय ) ( पु० ) नौकर, चाकर, टहलू, खिदमतगार ।

भृश ( अव्य० ) अतिशय, बहुत ।

भृष्ट ( वि० ) भूँजा हुआ, पतित ।

भृष्टि ( स्त्री० ) भूँजना ।

भंगा ( वि० ) टेढ़ा देखनेवाला, ढेरा, ढेरा, स्वर्ग-पाताल ।

भेंट } ( स्त्री० ) मिलाप, मुलाकात, सौगात, डाखी,  
भेंट } नज़र ।

भेंटना } ( कि० सं० ) मिलना, मिलाप करना, मुला-  
भेंटना } कात करना ।

भेंटनी ( स्त्री० ) नज़र, उपहार ।

भेंटी }  
भेंटी } ( स्त्री० ) डंठी, डंठल, स्तन का अग्रभाग ।  
भेंटू }

भेक ( भी=डरना ) ( पु० ) मेंढक, बेंग, दादुर ।

भेख ( सं० वेष ) ( पु० ) भेष, लिबास, रूप बदलना, स्वरूप बनाना ।

भेखधारी ( पु० ) भेष बनानेवाला, अपना और रूप बनानेवाला ।

भेजना ( कि० सं० ) पहुँचाना पठाना ।

भेजा ( पु० ) सिर का गूदा, सिर का मग्न ।

भेड़ ( भी=डरना ) ( स्त्री० ) गाढ़र, भेड़ी ।

भेड़ा ( सं० भेड ) ( पु० ) मेढ़ा, मेघ ।

भेड़िया ( सं० भेडहा, भेड=भेड़ा, हन्=मारना ) ( स्त्री० ) हूँडार, घयाली, एक जंगली जानवर ।

भेड़ियाधसान (गृहा०) सब जानते हैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है उसी ओर सब चलती हैं, इस लिये जब बहुत आदमी बेसमके किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोला जाता है।

भेड़ी (सं० भेड़) (स्त्री०) भेड़, गाड़र, मेढ़ी।

भेद (भिद=तोड़ना) (पुं०) छिपी बात, गुप्त बात, राज, जुदा होना, भिन्नता, अलग्ग, अंतर, प्रकृ, प्रकार, जाति, भाँति, विरोध, विच्छेद, अन्तर्भेद।

भेदक (भेद+क) (वि०) तोड़नेवाला, विदारक।

भेदन (भिद=तोड़ना) (पुं०) तोड़ना, तोड़न, फोड़न।

भेदरिया (पुं०) गुप्तचर भेदी।

भेद कहना (गृहा०) छिपाने योग्य बात को कह देना, राज खोलना।

भेद खोलना (गृहा०) छिपी बात को प्रकट करना।

भेद लेना (गृहा०) छिपी हुई बात को मालूम करना।

भेदि } (पुं०) विदारक, छेद करनेवाला, (पुं०)  
भेदी } वक्र।

भेदित (वि०) फाड़ा हुआ।

भेदिया } (भेद) (पुं०) भेद, भेद जाननेवाला।  
भेदी }

भेदू (भेद) (वि०) भेद जाननेवाला, भेदी।

भेद्य (भिद=तोड़ना) (वि०) भेदने योग्य, तोड़ने के लायक।

भेर } (भी=डर पैदा करना) (स्त्री०) एक प्रकार का  
भेरी } बाजा, तुरही, नफीरी, सहनाई, दुंदुभी, नगारा, घोंसा।

भेली (स्त्री०) गुद् का देखा।

भेव (सं० भेद वा भाव) (पुं०) भेद, भाव, स्वभाव, तरह।

भेष (सं० वेष) (पुं०) भेष, रूप बदलना, स्वरूप बनाना।

भेष बदलना (गृहा०) स्वाँग भरना, रूप बदलना।

भेषज (भेष=रोग का डर, भेष=डरना, जि=जीतना या भिपू=रोग को दूर करना) (पुं०) दवा, दारू, औषध।

भेषज्य (पुं०) औषध, दवा।

भैस (सं० महिष) (स्त्री०) एक चौपाये का नाम।

भैसा (सं० महिष) (पुं०) एक चौपाये का नाम।

भैसादाद } (सं० महिषदद) (स्त्री०) एक प्रकार  
भैसियादाद } का दाद, दिनाई।

भैचक (अव्य०) धड़ाका, अचरज, आश्चर्य।

भैया (सं० भ्राता) (पुं०) भाई, दादा, भ्राता।

भैयापा } (सं० भ्रातृता) (पुं०) भाईचारा, बिरादरी।  
भायप }

भैरव (भी=डर पैदा करना) (पुं०) शिवदुर्गा के पास रहनेवाला देवता जो शिव का अवतार है, भैरव आठ हैं (१ अस्तितांग, २ रुरु, ३ चंड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६ कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) भयानक रस, एक राग का नाम, (वि०) डरावना, भयंकर।

भैरवी (भी=डर उपजाना) (स्त्री०) दुर्गा, काली, देवी, एक रागिनी का नाम।

भैरों (पुं०) भूत, देवता-विशेष।

भैरुं (स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री।

भौकड़ा (वि०) स्थूल, बड़ा, मोटा।

भौकना } (सं० भपू=भौकना) (क्रि० अ०) भूकना, हँ-  
भौकना } र्नी करना, कुत्ते का शब्द, चुभाना,  
ठोकना।

भौकस (पुं०) श्रोभा, टोनहा, भूतहा।

भौघरा (पुं०) तलकोठा, तलघर।

भौंडा (वि०) कुडील, कुरूप, कुत्तित।

भौंधा } (वि०) जो तीखा न हो, कुंठित, कुन्द,  
भौंधरा } गोठिछ।

भौंदू (वि०) गँवार, अनजान, सीधा, भोला।

भौंपू (पुं०) नरसिंगा, बाजा-विशेष।

भौई (पुं०) कहार, पाखी उठानेवाला।

भौकृत्य (भुजु=खाना) (वि०) खाने के लायक।

भौक्री (भुच=खाना) (पुं०) खानेवाला।

भोग (भुजु=खाना) (पुं०) खाना, प्रसाद, नैवेद्य, सुख, हर्ष, विलास, ऐश, आराम।

भोगना (भोग) (क्रि० सं०) भुगतना, सहना, पाना, दुःख या सुख उठाना।

भोगपत्र (पुं०) वक्रनामा, क्रमानुसार, जागीर-नामा।

भोगा (पुं०) छल, धोखा, कपट।

भोगिवल्लभ (भोगि=सर्व, वल्लभ=प्यारा) (पुं०) चंदन।

भोगी ( भोग ) ( वि० ) भोगविहास करनेवाला, सुखी,  
( भुज्=टेढ़ा चलना ) ( पु० ) साँर, सर्प ।

भोगींद्र ( भोगी+इंद्र ) ( पु० ) शेषनाग, वासुकि,  
नागराज ।

भोज ( भुज्=पालना ) ( पु० ) उज्जैन के एक राजा का  
नाम जो विद्या फैलाने के लिये बहुत प्रसिद्ध है;  
भोजकट देश जो पटना और भागलपुर के पास है या  
जिसको अब भोजपुर कहते हैं और जो शाहाबाद  
के जिले में है ।

भोज ( सं० भोज्य, भुज्=खाना ) ( पु० ) खाना,  
आहार ।

भोजक ( भुज्+अक ) ( वि० ) भक्षक, खानेवाला ।

भोजकट ( पु० ) भोजपुर, देश-विशेष ।

भोजन ( भुज्=खाना ) ( पु० ) खाना, आहार, क्रिया  
भोजन करना, खाना खाना, जेवना ।

भोजनीय ( भुज्+अनीय ) ( वि० ) भोजन के योग्य ।

भोजपत्र ( सं० भूर्जपत्र ) ( पु० ) एक वृक्ष की छाल ।

भोजयिता ( भुज्+इ+तृ ) ( पु० ) भोजन करानेवाला ।

भोज्य ( भुज्=खाना ) ( पु० ) खाने की चीज़, ( वि० )  
खाने योग्य ।

भोड़ल ( पु० ) अन्नक, भूडल, धातु-विशेष ।

भोता ( वि० ) कुंडित, कुंद ।

भोपा ( पु० ) मंत्र-तंत्र करनेवाला, टोन्हा, ओम्हा ।

भोभीरा ( पु० ) मूँगा, प्रवाल ।

भोभो ( अव्य० ) संबोधन, संभ्रम, आदरार्थ संबोधन ।

भोर ( पु० ) बिहान, पौ, प्रभात ।

भोर होना ( मुहा० ) बिहान होना, सबेरा होना ।

भोरा } ( वि० ) सीधासादा, निष्कपट, कम अञ्जल ।  
भोला }

भोलानाथ ( मुहा० ) महादेव, शिव ।

भोलाभाला ( मुहा० ) सादा, सीधा ।

भोली बातें ( मुहा० ) सीधी बातें, कपटरहित बातें ।

भौंह } ( सं० भ्रू ) ( पु० ) आँख के ऊपर का बाल,  
भौं } भृकुटी ।  
भौंह }

भौ चढ़ाना ( मुहा० ) गुस्सा होना ।

भौ टेढ़ी करना ( मुहा० ) खोरी चढ़ाना ।

भौहें तानना ( मुहा० ) खोरी चढ़ाना ।

भौंचाल ( सं० भूमिचाल ) ( पु० ) भुईँडोल, भूकंप,  
जलजला जमीन का ।

भौर ( पु० ) पानी का चक्कर, भँवर, घुमर, आवर्त, भौरा ।

भौरा ( सं० भ्रमर ) ( पु० ) एक तरह की बड़ी मक्खी,  
मधुप, अलि ।

भौरियाणा ( कि० सं० ) घुमाना, फिराना, चक्कर देना ।

भौरी ( स्त्री० ) भ्रमर की स्त्री, घोड़े का एक दोष ।

भौपना ( कि० अ० ) भूकना, भोकना ।

भौ ( सं० भय ) ( पु० ) डर, खौफ ।

भौचक ( अव्य० ) अकरमात्, अचानक, ( वि० ) आश्च-  
र्यान्वित ।

भौजाई } ( सं० भ्रातृजाया ) ( स्त्री० ) बड़े भाई की  
भौजी } स्त्री ।

भौतिक ( भूत ) ( वि० ) भूत-संबंधी, पृथिव्यादि या  
पिशाचादि संबंधी ।

भौना ( कि० अ० ) घूमना, फिरना ।

भौनास ( पु० ) हाथी बाँधने का खूँटा ।

भौम ( भूमि=पृथ्वी ) ( वि० ) पृथ्वी का, ( पु० ) मंगल-  
ग्रह, नरकासुर राक्षस ।

भौमवार ( भौम + वार ) ( पु० ) मंगलवार ।

भौमावती ( भौम ) ( स्त्री० ) भौमासुर की स्त्री ।

भ्रंश } ( भ्रंश या भ्रम्=गिरना ) ( पु० ) नीचे गिरना,  
भ्रंस } नाश, ध्वंस, बिगाड़ ।

भ्रंशित } ( वि० ) द्युत, गिरा ।  
भ्रंसित }

भ्रम ( भ्रम्=फिरना ) ( पु० ) भ्रांति, भूलचूक, संदेह,  
संशय, झूठा ज्ञान, फेर, धोखा ।

भ्रमण ( भ्रम्=फिरना ) ( पु० ) फिरना, घूमना, विचरना ।

भ्रमर ( भ्रम्=फिरना ) ( पु० ) भौरा, मधुप, मधुकर, अलि ।

भ्रष्ट ( भ्रश्=नीचे गिरना ) ( वि० ) गिरा हुआ, पतित,  
अधर्मी, धैर्य से गिरा हुआ ।

भ्रष्ट करना ( कि० सं० ) बिगाड़ना, बुरे काम में लगाना ।

भ्रष्ट होना ( कि० अ० ) बिगाड़ना, बुरे काम में लगना ।

भ्राजना ( सं० भ्राज्=शोभना ) ( कि० अ० ) शोभना,  
सोहना ।

भ्राजिष्यु ( भ्राज् + इष्यु ) ( वि० ) दीप्तिमान्, शोभा-  
युक्त ।

भ्राता ( भ्राज्=शोभना ) ( पु० ) भाई, भैया, सहोदर ।

भ्रान्त (वि०) भूला हुआ ।

भ्रान्ति (भ्रम्=फिरना) (स्त्री०) भ्रम, भूलचूक, घुमना, भ्रमण ।

भ्रामक (भ्र + यक) (वि०) भ्रमजनक, अशुद्ध, घुमनेवाला ।

भ्राम्यमान (वि०) घुमनेवाला ।

भ्राश (पु०) प्रकाश, चमक ।

भ्रू (भ्रम्=फिरना) (पु०) छाँखों के ऊपर का बाल, भौंह, भौं ।

भ्रूण (पु०) गर्भ, हमल ।

भ्रूणहत्या (स्त्री०) गर्भनाश, गर्भपात ।

भ्रूभंग (भ्रू=भौं, भञ्ज=तोड़ना) (पु०) घुड़की, खोरी, भौं चढ़ाना, कटाक्ष, वक्रदृष्टि ।

## म

म (मा=नापना या आदर करना) (पु०) ब्रह्मा, शिव, चंद्र, विष्णु, यम, समय, विष ।

मंगता (मांगना) (वि०) भिखारी, भिखमंगा ।

मँगनी (मांगना) (स्त्री०) सगाई, निश्चित, उधार ।

मँगनी देना (पु०) उधार देना ।

मँगसिर } (मं० मार्गशिर) (पु०) अगहन ।  
मगशिर }  
मगशिर }

मँजना (मं० मञ्जन, मञ्ज=माफ़ होना) (क्रि० अ०) उज्झा होना, चिफ़ना होना, साफ़ होना ।

मंजीरा } (सं० मंजीर, मञ्ज=शब्द करना) (पु०)  
मजीरा } एक वाजे का नाम, भाँक, करनाल ।

मँडुआ (पु०) एक अनाज का नाम ।

मँदुना } (मं० मडू=मँदारना) (क्रि० अ०) ढकना  
मदुना } (जंगे किताब को फूट में या टॉन डफ़ आदि को चमड़े में) लपेटना ।

मकड़ा (सं० मर्कट, मर्क=जाना) (पु०) एक तरह का कीड़ा ।

मकड़ाना (क्रि० अ०) टेढ़ा चलना, अकड़ के चलना, काम करने से जो चुराना ।

मकड़ी (सं० मर्कटी) (स्त्री०) एक तरह का कीड़ा जिसके आठ पैर होते हैं ।

मकर (म=मन्य और क=मारना जो मन्य्यों को मार डालता है; यहाँ मन्य शब्द को म हो जाता है) (पु०) मगरमच्छ, दसवीं राशि ।

मकर गाँठना (पु०) चाल चलना ।

मकर न कर (पु०) छल-कपट न कर ।

मकरापन्न होना (पु०) बहुत धनी होना ।

मकरकेतु } (मकर=मगर, केतु या ध्वजा=झंडा)  
मकरध्वज } (पु०) कामदेव, जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है ।

मकरंद (पु०) फूलों का रस, पुष्परस, पराग ।

मकराक्ष (पु०) रावण का सेनापति ।

मकराकृत (मकर=मगर, आकृति=रूप) (वि०) जिस चोज़ का आकार मगर जैसा हो, जैसे—मकराकृत-कुंडल ।

मकरिन (पु०) समुद्र, सागर ।

मकरी (मकर) (स्त्री०) मछली, पानी का एक जीव, जो जाला तानती है ।

मकरोना (क्रि० सं०) थोड़ा-सा गीला करना, कर-मोना ।

मकुट } (मंक=शोभना) (पु०) किरीट, ताज,  
मुकुट } राजाधियों के सिर का गहना ।

मकुर } (मकि=शोभना) (पु०) दर्पण, काँच,  
मुकुर } आईना, धारसी, शीशा ।

मकुल } (मकि=जाना) (स्त्री०) फूल की कली,  
मुकुल } कोपल ।

मकोड़ा (पु०) कीड़ा ।

मक्षिका } (मक्ष=कोध करना) (स्त्री०) मक्खी,  
मक्षीका } माखी ।

मक्खन } (सं० मन्थज, मन्थ=मथना और जन्=पैदा  
माखन } होना, जो मथने से निकलता है) (पु०)

मक्खन, नैनु, नवनीत, हैयंगवीन ।

मक्खी } (मं० मक्षिका) (स्त्री०) एक तरह का उड़ने-  
माखी } वाला कीड़ा, माखी ।

मक्खी उड़ाना (पु०) किसी की खुशामद या गुलामी करना, बेकार रहना ।

मक्खीचूस (पु०) कंजूस, सूम, कृपण ।

मक्खी मारना (पु०) सुस्त बैठे रहना, बेकार बैठे रहना ।

मख (मक्ष=जाना) (पु०) यज्ञ ।

मखना ( पु० ) एक प्रकार का छोटा हाथी ।

मखनिया ( पु० ) मक्खन बेचनेवाला ।

मखाना ( पु० ) फल-विशेष ।

मखी ( स्त्री० ) बंरू का घोड़ा जिसके दबाने से गोली छूटती है, मक्खी ।

मग ( सं० मार्ग ) ( पु० ) रास्ता, बाट, पेंड, डगर ।

मग देखना ( मुहा० ) बाट जोहना, राह निहारना ।

मगध ( पु० ) सूबे बिहार का दक्खिन भाग, एक देश का नाम ।

मगन ( सं० मग्न ) ( वि० ) डूबा हुआ, प्रसन्न, आनंदित, हर्षित ।

मगर ( सं० मकर ) ( पु० ) मगरमच्छ ।

मगरमच्छ ( वि० ) मस्त, स्वतंत्र ।

मगरमच्छ होना ( मुहा० ) स्वेच्छाचारी होना ।

मगरा ( अ० मगरूर ) ( वि० ) ठीठ, घमंडा, गुस्ताख़, अभिमानी ।

मगराई ( स्त्री० ) डिटाई, गुस्ताख़ी, घमंड, धृष्टता ।

मगरापन ( पु० ) मगराई, घमंड ।

मगह ( मगध ) ( पु० ) सूबे बिहार का दक्खिन भाग जिसमें गया आदि शहर हैं ।

मगही ( सं० मागधीय ) ( वि० ) मगह का ( जैसे पान आदि ) ।

मगहैया ( सं० मागधीय ) ( स्त्री० ) मगध-देश का वासी, ( पु० ) ब्राह्मणों की एक जाति ।

मग्न ( मग्न=डूबना या शुद्ध करना ) ( वि० ) डूबा हुआ, प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, मग्न ।

मघवा } ( मघ=पूजना, मघ=धन, वा=वाला ) ( पु० )  
मघवान् } इंद्र, देवताओं का राजा, सुरपति ।

मघा ( मघ=पूजना ) ( स्त्री० ) दसवाँ नक्षत्र ।

मघोनी ( स्त्री० ) सची, इंद्र की स्त्री ।

मंगल ( मणि=जाना ) ( पु० ) कुशल, कल्याण, आनंद, तीसरा ग्रह, मंगलवार, भौमवार, ( वि० ) शुभ, अच्छा, आनंद देनेवाला ।

मंगलवार ( मंगल+वार ) ( पु० ) मंगल का दिन, भौमवार ।

मंगलसमाचार ( मंगल+समाचार ) ( पु० ) अच्छा समाचार, सुखसमाचार, शुभ समाचार ।

मंगलाचरण ( मंगल+आचरण ) ( पु० ) देवताओं की नमस्कार, वंदना, शुभकामनाएं अनुष्ठान ।

मंगलाचार ( मंगल+आचार ) ( पु० ) बधावा, ब्याह आदि अच्छे कामों में आनंद के गीत ।

मंगलामुखी ( मंगल+मुख अर्थात् जिसके मुँह में मंगल है ) ( वि० ) वैश्य, व्याह आदि अच्छे कामों में गानेवाली ।

मंगली ( मंगल ) ( वि० ) मंगल करनेवाला, मंगलामुखी, जिसके जन्मचक्र में चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश मंगल ग्रह पड़े हो ।

मचक ( स्त्री० ) गाँठ का दर्द, धीमा दर्द ।

मचकना ( क्रि० अ० ) पीड़ा होना, धमकना ।

मचकाना ( क्रि० अ० ) मटकाना, पलक मारना, सैन चलाना, दुःख पहुँचाना, दबाना ।

मचना ( क्रि० अ० ) होना, रचना, उठना, किया जाना ।

मचमच ( अर्थ० ) मरमर, चरमर, अव्यक्त ध्वनि-विशेष ।

मचमचाना ( क्रि० अ० ) चराना, ( क्रि० सं० ) हिलाना, कंपाना, टूटना ।

मचलना ( क्रि० अ० ) मगरा होना, हठ करना, ज़िद्द करना ।

मचलपन ( पु० ) ज़िद्द, हठ ।

मचला ( वि० ) मगरा, ठीठ, हठीला, ज़िद्दी, हठी ।

मचलाई ( स्त्री० ) मगराई, डिटाई, हठ ।

मचलाना ( क्रि० अ० ) मतलाना, क्रे किया चाहना, क्रे करने को जी चाहना, बहाना करना ।

मचलाहा ( वि० ) घमंडी, ज़िद्दी, मगरूर ।

मचान ( सं० मंच ) ( पु० ) मंच, टॉड, खेतों में बाँसों से बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर एक आदमी खेत की रखवाली करने के लिये बैठता है, शिकार करने का ऊँचा स्थान ।

मचाना ( क्रि० म० ) करना, रचाना, उठाना, बनाना ।

मचामच ( अर्थ० ) खचाखच, परिपूर्ण, घचापच ।

मचिया ( सं० मंच ) ( स्त्री० ) पीड़ा, चौकी, कुरसी ।

मचोड़ना ( क्रि० म० ) निचोड़ना, गारना ।

मच्छ ( सं० मत्स्य ) ( पु० ) बड़ी मछली, विष्णु का पहला अवतार ।

मच्छुर ( सं० मशक ) ( पु० ) माछुर, कुटकी, मच्छड़ ।

मच्छी ( स्त्री० ) मीठी, चुम्मा ।

मछंदर ( पु० ) चूड़ा, मूसा ।

मछली ( सं० मत्स्यी ) ( स्त्री० ) एक जलचर का नाम ।

मछुवा } ( मत्स्य ) ( पु० ) मछली पकड़नेवाला,  
मछुवा } धीमर, कहार, महारा ।

मजीठ ( सं० मंजिष्ठा ) ( पु० ) एक लाल चीज़ जो रँगने के काम में आती है ।

मजीत ( वि० ) प्राचीन, पुराना, निकम्मा ।

मजूर ( पु० ) सेवक, नौकर, दास ।

मज्जक ( पु० ) स्नान करनेवाला ।

मज्जन ( मज्ज=न्हाना ) ( पु० ) नहाना, स्नान ।

मज्जा ( मज्ज=न्हाना ) ( स्त्री० ) हड्डि के भीतर का गूदा, चर्बी ।

मज्जासार ( पु० ) जायफल ।

मज्जित ( वि० ) दुबा हुआ, नहाया हुआ ।

मभला ( सं० मध्य ) ( वि० ) बिचला, मध्यम, मध्यका ।

मभार ( सं० मध्य ) ( पु० ) बीच, मध्य, बीच में ।

मभारी ( वि० ) भीतरी, बीच की, मध्य की ।

मभेली ( स्त्री० ) हलकी गाड़ी, मभोली बहली ।

मंच ( मन्त्रि=ऊंचा करना ) ( पु० ) माँच, मचान, खेतों में बाँसों से बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर खेत की रखवाली करने के लिये बैठते हैं, पलंग, खाट, खटिया, माँचा ।

मंचा ( पु० ) चौकी, खाट, सिंहासन ।

मंजन ( मन्त्र=माफ होना ) ( पु० ) दाँत धोने का चूर्ण, मिस्सी ।

मंजरी ( मंज=माफ होना या शुद्ध होना ) ( स्त्री० ) कली, कोंपल, तुलसीपुष्प, अमृता, यौर, मुकुल ।

मंजार ( सं० मार्जार ) ( पु० ) बिलान, बिल्ला ।

मंजि ( स्त्री० ) मंजरी, बेल, लता, बकरी ।

मंजिका ( वि० ) छिनाछ, बेरया ।

मंजीर ( मन्त्र=शब्द करना ) ( पु० ) नूपुर, पाँय का गहना, मंजीरा, बुद्धघंटिका, छोटी घंटी, घुँघुरू, पायजेब ।

मंजु } ( मन्त्र=शुद्ध अथवा संदूर होना ) ( वि० )

मंजुल } मनोहर, सुंदर, मधुर, मनमाना, मनचाहा ।

मंजूषा ( मन्त्र=संदूर होना ) ( स्त्री० ) पिटारा, पिटारी, कपड़े रखने की संदूक, बक्स ।

मटक } ( मटकना ) ( स्त्री० ) चोंचछा नहरा, हाव-  
मटकन } भाव, भाँवली ।

मटकना ( कि० अ० ) पक्षक मारना, भपकना, आँखें लबाना, आँख मारना, तिरछी चितवन से देखना,

इटलाना, इतराना, भाव बताना, भाँकना, ताकना ।

मटका ( मिट्टी ) ( पु० ) गगरा, बड़ा घड़ा ।

मटकी ( मिट्टी ) ( स्त्री० ) गगरी, बड़ी गगरी, मटकी ।

मटकोठा ( पु० ) मिट्टी का घर ।

मटर ( पु० ) एक अनाज का नाम ।

मटरा ( पु० ) बड़ी मटर, रेशमी वस्त्र-विशेष ।

मटरी ( स्त्री० ) मटर की बीमी ।

मटियाना ( कि० अ० ) टाक देना, आँख भपकाना, सहना ।

मटियारा ( पु० ) जुताऊ खेत, कड़ी मिट्टीवाला खेत ।

मटियाव ( पु० ) उदासीनता, प्रदर्शन, आनाकानी ।

मट्टी } ( सं० मृत्तिका ) ( स्त्री० ) माटी, रेत, धूस,  
मिट्टी } जीव-रहित शरीर ।

मट्टा करना ( मुहा० ) नाश करना, बरबाद करना, सत्यानाश करना ।

मट्टी खाना ( मुहा० ) मांस खाना ।

मट्टी डालना ( मुहा० ) दूसरे का दोष छिपाना, ऐब-पोशी करना ।

मट्टी देना ( मुहा० ) गाड़ना, मुर्दे को दफन करना ।

मट्टी पर लड़ना ( मुहा० ) धरती के लिये झगड़ना ।

मट्टी में मिलना ( मुहा० ) सरयानाश हो जाना, नष्ट होना, खराब होना, बरबाद होना, बेहड़ज्ञ होना ।

मट्टी होना ( मुहा० ) दुबला होना, निर्बल होना, सत्यानाश होना ।

मट्टा ( सं० मन्थित, मन्थ=मथना ) ( पु० ) छाछ, मही, तक्र, मठा ।

मठ ( मठ=वसना ) ( पु० ) गुसाइयों के रहने का घर, विद्यार्थियों के पढ़ने की जगह, पाठशाला, देवागार ।

मठगी } ( मिष्ट ) ( स्त्री० ) एक तरह का मीठा  
मठलो } पकवान ।

मठा ( पु० ) मट्टा, तक्र, छाछ, मही, ( वि० ) धीमा, शिथिल, ढीला ।

मठोर ( पु० ) मटका, घड़ा, भाँड ।

मड़ियाना ( कि० अ० ) जमाना, पिचकाना, बिपकाना ।

मड़ुआ ( पु० ) एक प्रकार का अन्न ।

मड़ोड़ } ( मड़ोड़ना ) ( स्त्री० ) पेंठ, बल, पंच ।  
मरोड़ }

मड़ोड़ना } ( क्रि० स० ) पेंठना, पेंच देना, बल देना ।  
मरोड़ना }

मदून ( स्त्री० ) खोल, अस्तर, आवरण ।

मदूना ( क्रि० अ० ) कपड़ा चढ़ाना, ढाँकना, तोपना ।

मढ़ा ( सं० मण्डप ) ( पु० ) उस जगह का नाम जिसको  
व्याह में फूलों आदि से सँवारते हैं और जहाँ  
शास्त्र के अनुसार व्याह का काम होता है, मंडप ।

मढ़ी } ( सं० मठ ) ( स्त्री० ) भोपड़ी, कुटी, छोटा  
मढ़ैया } घर  
मढ़ी }

मण ( मणु = यात्रा निकलना ) ( स्त्री० पु० ) हीरा,  
पत्था आदि रत्न, बहुत मोल का पत्थर ।

मणिक ( पु० ) पानी का बड़ा वर्तन ।

मणिपूर ( पु० ) शरीर के पटचक्रों में से तीसरा  
चक्र, नाभि-चक्र, देश-विशेष ।

मणिवंध ( पु० ) पहुँचा, कलाई, मध्यस्थान ।

मणिमय ( वि० ) जवाहर से बना हुआ ।

मणिमाल ( स्त्री० ) मणि की माला, हार, दंतचत-  
विशेष, लक्ष्मी, कांति, दीप्ति, प्रकाश ।

मणियारा ( वि० ) मणियुक्त, मणिवाला ।

मणिहार ( पु० ) मणिहार, चूड़ोवाला, चुड़िहार ।

मंड ( पु० ) माँड़, पाँच, पिच्छ, फालूदा, कलार,  
कलवार, मदिरा ।

मंडन ( मंडि=शोभना ) ( पु० ) गहना, जेवर, अलंकार,  
भूषण, शोभा, समर्थन ।

मंडप ( मण्ड=शोभा, पा=वचाना ) ( पु० ) एक खुला  
हुआ मकान जिसको व्याह अथवा और किसी  
उत्सव में फूलों से सँवारते हैं और जहाँ व्याह का  
काम होता है, मंदिर, देवालय ।

मंडल ( मंडि=शोभना ) ( पु० ) गोल जगह, चक्र,  
गोला, चाँद या सूर्य का घेरा, गोल तंबू, देश,  
जिन्ना, सूबा जो बीस अथवा चालीस योजन तक  
हर ओर फैलाव में हो, जैसे—वज्रमंडल, कारोमंडल  
आदि, सैनिकों की स्थिति, क्रांति की किलेबंदी,  
साँप, कुत्ता ।

मंडलाकार ( मण्डल+आकार ) ( वि० ) गोला, गोलाकार,  
चक्राकार, कुंडली ।

मंडलाधिप ( मण्डल+अधिप ) ( पु० ) चार सौ योजन

क्षेत्र का मालिक, कलक्टर, डिप्टी कमिशनर, छोटा  
राजा, सूबेदार ।

मंडलाना ( मंडल ) ( क्रि० स० ) घिर आना, घूमना,  
फिरना, चकर काटना ।

मंडलिया ( पु० ) कपोत-विशेष ।

मंडली ( मंडि=शोभना ) ( स्त्री० ) सभा, समाज,  
गिरोह ।

मंडलीक ( पु० ) दस लाख रुपए की आमदनीवाला ।

मंडहारक ( पु० ) कलाल, कलवार ।

मंडा ( पु० ) एक पेड़-जैसी मिठाई, शराब, आँवला,  
संदेश, ( वि० ) मंडित, सज्जित ।

मंडित ( मंडि=शोभना ) ( वि० ) शोभायमान, शोभित,  
भूषित, युक्त ।

मंडियाना ( क्रि० स० ) कलप चढ़ाना, मड़ियाना ।

मंडी ( स्त्री० ) बाज़ार, अनाज और ची आदि बिकने  
की जगह ।

मंडूक ( मंडि=शोभा देना, वर्षा ऋतु को ) ( पु० ) मेंढक,  
बेंग, मुनि-विशेष ।

मंडूकी ( स्त्री० ) ब्राह्मी, मजीठ की लता, मंडूकपत्नी,  
होशियार औरत ।

मत ( मत्=जानना ) ( पु० ) सलाह, सम्मति, अभि-  
प्राय, चाह, धर्म, मज़हब, प्रतीति, विश्वास, ज्ञान,  
सीमा, तरीका, ( वि० ) जाना हुआ, माना हुआ,  
पूजा हुआ, पूज्य ।

मत सं० मा ) ( क्रि० वि० ) न, नहीं, नाहीं, निषेध-  
वाचक ।

मतंग ( मद=मस्त होना ) ( पु० ) हाथी, गज, मेघ,  
बादल, एक ऋषि का नाम ।

मतना ( पु० ) ऊख-विशेष ।

मतभेद ( पु० ) सिद्धांत-विरोध, राय न मिलना,  
विरुद्ध, अभिप्राय, भिन्न मत ।

मतमतांतर ( वि० ) दूसरा धर्म, दूसरा मज़हब, दूसरी  
राह ।

मतराना ( क्रि० स० ) समझाना, मनाना, बुझाना,  
बताना ।

मतलाना ( क्रि० अ० ) जी मचलाना, मचलाना ।

मतवाला ( सं० मतवत् ) ( वि० ) मस्त, मदमाता,  
उन्मत्त ।

मतविरुद्ध ( वि० ) मज्झिम के द्वितीय, धर्मविरोधी ।

मता } ( सं० मत ) ( पु० ) सलाह, विचार, सम्मति ।  
मतौ }

मतांतर ( पु० ) विरुद्ध सम्मति, भिन्न मत ।

मतावलंबी ( मत=धर्म या सम्मति, अवलम्बी=रखनेवाला )  
( वि० ) किसी धर्म को माननेवाला, पंथी, किसी  
के सलाह पर चलनेवाला ।

मति ( मन=जानना ) ( स्त्री० ) बुद्धि, समझ, ज्ञान,  
इच्छा, चाह, स्मृति, याद करने की शक्ति ।

मतिधीर ( वि० ) दृढ़ बुद्धि ।

मतिभ्रम ( मति+भ्रम ) ( पु० ) भ्रम, चक्र, उलटी समझ,  
विपरीत बुद्धि ।

मतिमंद ( वि० ) मंदबुद्धि, कमअज्ञान, कुंक्षेह्न ।

मतिमान् ( मति+मान, मान=वाला ) ( वि० ) बुद्धिमान्,  
समझदार, चतुर, प्रवीण ।

मतिष्ठ ( वि० ) महान् चतुर ।

मतिहीन ( मति+हीन ) ( वि० ) बेसमझ, मूर्ख, बुद्धि-  
हीन, निर्बुद्धि ।

मत्त ( मद=मस्त होना ) ( वि० ) मत्तवाला, मस्त,  
उन्मत्त, घमंडी, ( पु० ) धतूरा, कोयल पक्षी, भैंसा,  
शराब ।

मत्सर ( मद=घमंड करना या मस्त होना ) ( पु० ) डाह,  
द्वेष, जलन, हसद, ईर्ष्या, परस्तेनाप ।

मत्सरता ( स्त्री० ) क्रोध, कमीनापन, नीचता, कलुषी,  
लालचपन ।

मत्स्य ( मद=गुशी करना या मस्त होना ) ( पु० ) मछली,  
मछ, विष्णु का पक्षी अवतार, हिंदुस्थान का एक  
भाग जिसकी अब दिनाजपुर और रंगपुर कहते हैं,  
एक पुराण का नाम ।

मत्स्यगंधा ( स्त्री० ) मत्स्योदरी, व्यास की माता ।

मत्स्यविष्ठा ( स्त्री० ) कुटकी ।

मत्स्यांड ( पु० ) मछली का ंडा ।

मथन ( मथ=मथना ) ( पु० ) महना, मँथना, बिलोना,  
बी निकाटना ।

मथना ( सं० मथन ) ( कि० ग० ) महना, बिलोना,  
बिलोना ।

मथनिया } ( सं० मन्थान या मंथी, मथ=मथना ) ( स्त्री० )  
मथनी } दूध मथने की लकड़ी, मथानी, महानी ।

मथित ( वि० ) मथा गया, विचार किया गया ।

मथुरा ( मथ=मारना या कुचलना, जहाँ बहुत-से राजस कुचले  
और मार गये हैं ) ( स्त्री० ) एक नगरी का नाम जो  
श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और हिंदुओं के तीर्थ की  
जगह है ।

मथुरिया ( सं० माथुरीय ) ( पु० ) मथुरा के ब्राह्मणों की  
एक जाति ।

मथौर ( पु० ) चंदा, सूरजमुखी ।

मद ( मद=प्रसन्न होना या मस्त होना या घमंड करना )  
( पु० ) आनंद, हर्ष, खुशी, हाथी की कनपटियों  
अथवा गालों से चूना हुआ पानी, मदिरा, दारू,  
मद्य, शराब, घमंड, गर्व, अहंकार, मत्तवालापन,  
नशा, मस्ती, वीर्य, कस्तूरी ।

मदक ( पु० ) शक्ती के संयोग से बना हुआ नशा,  
नशा करनेवाली चीज ।

मदकट ( पु० ) खाँड़, चीनी ।

मदन ( मद=प्रसन्न होना या मस्त होना ) ( पु० ) कामदेव,  
वसंत, धतूरा, मैनाफल, भौरा, उड़द, खैर का पेड़,  
शराब, मैना पक्षी ।

मदनपाठक ( पु० ) कोयल, कोकिल ।

मदनबाण ( मदन+बाण ) ( पु० ) एक फूल का  
नाम ।

मदनललित ( पु० ) छंद-विशेष ।

मदनशलाका ( स्त्री० ) कोकिल, कोयल, मैना ।

मदनालय ( पु० ) पद्म, लग्न से सानवाँ ग्रह,  
कौल फूल ।

मदमाता ( सं० मदमत्त ) ( वि० ) मत्तवाला, मस्त ।

मदमती ( स्त्री० ) चमेली, मल्लिका ।

मदाढ्य ( पु० ) कामदेव, शराब, दलाल, मेघ ।

मदार ( सं० मदार ) ( पु० ) अकवन, अर्क, आक ।

मदारी ( पु० ) रुपैया, साँपवाला, बाजीगर ।

मदालस ( वि० ) सुस्त, आलसी, निरुद्यम ।

मदिक ( वि० ) घमंडी, अभिमानी ।

मदिर ( पु० ) लाल खदिर, ( वि० ) उन्मत्त ।

मदिरा ( मद=प्रसन्न होना अथवा मस्त होना ) ( स्त्री० )  
मद, मद्य, दारू, शराब, आसव, अर्क ।

मदोत्कट ( पु० ) मत्तगज ।

मदोद्धत ( वि० ) मत्तवाला ।



मदोन्मत्त ( मद=धमंड, उन्मत्त=मस्त ) ( वि० ) धमंड से मस्त, मत्तवाला, मदमाता ।

मद्गु ( पु० ) नाव, बगला, दोगला ।

मद्य ( मद=प्रसन्न होना या मस्त होना ) ( पु० ) दारू, शराब, मदिरा, मद ।

मद्यप ( मद्य+प, पा=पीना ) ( वि० ) मुरापायी, शराबी ।

मद्र ( पु० ) हर्ष, खुशी, मारवाड़, देश-विशेष ।

मद्रक ( वि० ) मारवाड़ी ।

मधु ( मन्=पूजना या मद=प्रसन्न होना ) ( पु० ) शहद, फूलों का रस, मद, मदिरा, शराब वसंतकृत, चैत का महीना, एक राक्षस का नाम जिसको महामाया की सहायता से विष्णु ने मारा, दूध, पानी, मीठा रस, महुआ, मिठास, ( वि० ) मीठा ।

मधुकर ( मधु=शहद, क=करना ) ( पु० ) भँवरा, भौरा, भ्रमर ।

मधुकरी } ( स्त्री० ) अतिथि-मित्रा, ब्रह्मचारियों की मधूकरा } मित्रा ।

मधुकोश ( पु० ) शहद का छत्ता ।

मधुगंध ( पु० ) मौलसिरी का वृक्ष ।

मधुच्छदा ( स्त्री० ) बूटी, मोर की शिखा ।

मधुज ( स्त्री० ) मोम, मिसरी, जमीन, पृथ्वी ।

मधुतृण ( पु० ) ऊख, ईख ।

मधुदूत ( पु० ) आम का पेड़ ।

मधुधातु ( वि० ) सोनामक्खो, उपधातु-विशेष ।

मधुप ( मधु=फूलों का रस, पा=पीना ) ( पु० ) भौरा, भँवरा, मधुकर ।

मधुपर्क ( मधु=शहद, पृन्=मिलाना ) ( पु० ) दही, घी और शहद मिली हुई चीज़ अथवा “आज्यमेक पलं ग्राह्यं दधि त्रिपलमेव च । मधुना पलमेकन्तु मधुपर्कस्य उच्यते” । घी टकाभर, दही तीन टकाभर, शहद टकाभर, इसको ‘मधुपर्क’ कहते हैं ।

मधुपर्श ( पु० ) पका हुआ रसीला फल ।

मधुपुरी ( मधु=एक राक्षस का नाम, पुरी=नगरी ) ( स्त्री० ) मथुरा ।

मधुपुष्प ( पु० ) मौहा, महुआ ।

मधुवन ( मधु=एक राक्षस या मधु=मीठा, वन=जंगल ) ( पु० ) मथुरा के पास का वन, सुग्रीव के बाग का नाम, कोयल ।

मधुमक्खी } ( सं० मधुमल्लिका ; ( स्त्री० ) शहद की मधुमाखी } मक्खी ।

मधुमल ( पु० ) मोम ।

मधुमात ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

मधुमास ( मधु+मास ) ( पु० ) चैत का महीना ।

मधुर ( मधु=मिठास, रा=लेना ) ( वि० ) मीठा, मन माना, मनचाहा, प्यारा ।

मधुरता ( मधु ) ( स्त्री० ) मिठास ।

मधुरी ( मधुर ) ( वि० ) मीठी, रसीली, सुहानी ।

मधुलिह ( मधु=शहद, लिह=चाटना ) ( पु० ) भ्रमर, भौरा ।

मधुव्रत ( पु० ) भ्रमर ।

मधुसूदन ( मधु=एक राक्षस का नाम, सूदन=मारनेवाला, सूद=मारना ) ( पु० ) विष्णु, भगवान् ।

मध्य ( मन्=जानना या मा=शोभा, धा=रखना ) ( पु० ) बीच में, में, मँझ, भीतर, अंदर, दूरमियान ।

मध्यदिवस ( पु० ) दोपहर ।

मध्यदेश ( पु० ) मुल्कमुनबस्मित, सेंद्रज प्राविसेज, मध्य का देश, बीच का देश ।

मध्यम ( मध्य ) ( वि० ) बिचला, बीच का, अच्छा न बुरा, उदासीन ।

मध्यमलोक } ( मध्य+लोक ) ( पु० ) बीच का लोक, मध्यलोक } पृथ्वी, मनुष्यलोक, मर्त्यलोक, यह दुनिया ।

मध्यम ( मध्यम ) ( स्त्री० ) बीच की उँगली, ( वि० ) बीच की, ( पु० ) स्वर-विशेष, राग विशेष, उपपत्ति-विशेष, ग्रहों की सामयिक संज्ञा, मध्यम में उत्पन्न ।

मध्यमा ( स्त्री० ) बीच की उँगली, नायिका-विशेष ।

मध्यवर्त्ती ( मध्य=बीच में, वर्त्ती=होनेवाला या रहनेवाला, वृन्=होना ) ( पु० ) बिचवैया, मध्यवर्त्ती, साक्षी ।

मध्यस्थ ( मध्य=बीच में, स्था=ठहरना ) ( पु० ) बिचवैया, मध्यवर्त्ती, साक्षी ।

मध्याह्न ( मध्य=बीच, अह्न=दिन ) ( पु० ) दोपहर, दिन का बीच ।

मन ( मनस्, मन=जानना ) ( पु० ) चित्त, हृदय, हिरण्य, आत्मा, दिङ्ग, चालीस सेर की तौल ।

मनचोर ( मुहा० ) मन को लुभानेवाला, जिसमें मन लग जाय, दिलगीर, चितचोर ।

मन भाना ( मुहा० ) मन को अच्छा लगाना, सुहावना लगाना ।

मन भाना मुँड़िया दिलाना ( मुहा० ) जिस चीज़ को मन चाहें उसको न चाहने का बहाना करना ।

मनभावना { ( मुहा० ) मनोहर, सुहावना, दिलचस्प,  
मनभावना { दिलगिर ।

मनमानना { ( मुहा० ) सुहावना, जो मन को अच्छा  
मनमाना { लगें, मनचाहा, दिलखाह ।

मन मारना ( मुहा० ) अपनी चाह को रोकना ।

मन मार रहना ( मुहा० ) मनोप के साथ दुःख को सह  
लना ।

मन लाना ( मुहा० ) मन लगाना, ध्यान देना, गौर  
करना ।

मनई ( पु० ) नर, मनुष्य ।

मनका ( सं० मणि ) ( पु० ) माला का दाना, गरदन  
की हड्डी ।

मनका ढलकना ( मुहा० ) मरने पर होना, मरा  
चाहना, अबतय होना ।

मनकामना ( सं० मनःकामना ) ( स्त्री० ) मन की इच्छा  
मनोरथ, दिली स्वाहिस ।

मनखरा ( वि० ) मनफटा, चित्तफटा ।

मनघटा ( पु० ) कुँ के आसपास का चक्करा, कुँ की  
जगत, चौतरा ।

मनचला ( वि० ) उस्माही, साहसी, रसिक ।

मनचौर ( वि० ) दिल चुरानेवाला ।

मनत ( पु० ) मनौती, मानना, स्वीकार ।

मनन ( मनु=जानना ) ( पु० ) चिंतन, सुमिरन, ध्यान,  
ज्ञान, अभ्यास, विचार ।

मननशक्ति ( स्त्री० ) विचारशक्ति, गौर करने की ताकत ।

मनमथ ( पु० ) कामदेव, मन्मथ ।

मनमाना ( वि० ) मनचाहा ।

मनमुटाव ( पु० ) अनबन ।

मनमोहन ( मन+मोहन ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, ( वि० ) मन-  
भावन, मनोहर ।

मनमोज ( पु० ) उच्छृंखलता, यथेच्छाचारिता ।

मनसा ( सं० मानस ) ( स्त्री० ) मन, चाह, इच्छा,  
विचार, मतलब ।

मनसिज ( मनमि=मन में, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) काम-  
देव, ( वि० ) मन का, मन से जो पैदा हो ।

मनसेधू { ( पु० ) मानव, मनुष्य ।  
मनसेरू {

मनस्नाप ( पु० ) मानसिक दुःख, हृदय की पीड़ा ।

मनस्विन् ( वि० ) वीर, मनमौमी, यथेच्छाचारी, प्रशस्त ।

मनहारी ( वि० ) चित्तचोर, मनोहारी ।

मनहुँ {  
मनहुँ { ( सं० मन्य ) ( कि० वि० ) मानों, जानों, जैसे ।  
मानहुँ {

मनाक ( अव्य० ) ईपत्, स्वरूप, किंचित्, मूक्षम, बारीक,  
मद ।

मनाना ( कि० म० ) प्रसन्न करना, मनौती करना ।

मनार्थ ( वि० ) विचारार्थ ।

मनि { ( सं० मणि ) ( स्त्री० ) रतन, जवाहर, बहुत  
मन { मोल का पत्थर ।

मनित ( वि० ) विदित, अवगत, जाना हुआ ।

मनिया ( पु० ) मनका, गुरिया, मणिका

मनियारा ( पु० ) मणिधर, जोहरी, मनिवाला साँप ।

मनिहार ( सं० मणिकार ) ( पु० ) चूड़ी बेचनेवाला,  
बिसाती, चुड़िहार ।

मनीक ( स्त्री० ) मूर्खता, लजा, काजल ।

मनीया ( स्त्री० ) बुद्धि, अज्ञ ।

मनीषिन् ( पु० ) पंडित, बुद्धिमान् ।

मनु ( मनु=जानना ) ( पु० ) ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का  
पुरखा, मनुस्मृति का बनानेवाला, ( स्वयंभू आदि  
चौदह मनु हैं ) ।

मनुज ( मनु, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) मनु का वंश,  
मनुष्य, आदमी ।

मनुजाद ( मनुज=मनुष्य, अद=खाना ) ( पु० ) राक्षस,  
दैत्य ।

मनुष्य ( मनु ) ( पु० ) मनु के बेटे-पोते, आदमी,  
मनुज ।

मनुष्यगणना ( स्त्री० ) मनु मनुगणना ।

मनुष्यता ( स्त्री० ) इन्सानियत, आदमियत ।

मनुसाई ( सं० मनुष्यता ) ( स्त्री० ) पुरुषार्थ, मनुष्यपन,  
जवाँमर्दी ।

मनुहार ( सं० मनोहारि, मनस्=मन, ह=लेना ) ( वि० )

सुंदर, मनोहर, मन हरनेवाली, ( स्त्री० ) आदर, मान, मोटा बोलना ।

मनोज ( मनस्=मन, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) कामदेव, ( वि० ) जो मन से पैदा हो ।

मनोजव ( मनस्+जव ) ( वि० ) मन के समान जिसका वेग हो, अति वेगवान्, तेज रां ।

मनोज्ञ ( मनस्=मन, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, सुडौल ।

मनोभव { ( मनस्=मन, भू=पैदा होना ) ( पु० )  
मनोभू { कामदेव, ( वि० ) जो मन से पैदा हो ।  
मनोभूत {

मनोऽभिलाषित ( मनः + अभिलाषित ) ( वि० ) मनोवांछित, मनचाहा, हृस्वदिल्लवाह ।

मनोरथ ( मनस् + रथ अर्थात् मन का रथ ) ( पु० ) चाह, इच्छा, अभिलाष, कामना ।

मनोरम ( मनस्=मन, रम्=प्रसन्न करना ) ( वि० ) मनोहर, सुंदर ।

मनोर्लोल्य ( पु० ) ललक, मन की तरंग या लहर, मानसिक भाव ।

मनोहत ( वि० ) व्यग्रचित्त, व्याकुल ।

मनोहर ( मनस्=मन, ह=लेना ) ( वि० ) मन को ले लेनेवाला, सुंदर, सुहावना ।

मनोनी ( स्त्री० ) जामिनी, बिचवई, मानता, पूजा ।

मंतव्य ( मन् + तव्य, मन्=विचारना ) ( वि० ) माननीय, चिंतनीय, सलाह, राय ।

मंता ( पु० ) मंत्री ।

मंत्र ( मन्त्रि=एकांत में कहना या सलाह करना ) ( पु० ) वेद का एक भाग जिसमें देवताओं की स्तुति है, मंत्र, यंत्र, जादू, टोना, लटका, सलाह, छिपो बान, सम्मति, उपदेश ।

मंत्रज्ञ ( पु० ) तांत्रिक, मंत्र जाननेवाला, नीतिज्ञ, जासूस, दून ।

मंत्रण ( पु० ) सम्मति, विचार ।

मंत्रणा ( स्त्री० ) परामर्श, विचार, युक्ति, सलाह, सम्मति ।

मंत्रचित् ( मन्त्र + चित्=जानना ) ( पु० ) तांत्रिक, मंत्रज्ञ, नीतिज्ञ ।

मंत्रित ( वि० ) मंत्र से शुद्ध किया गया, संस्कार किया गया, संस्कृत ।

मंत्री ( मन्त्र ) ( पु० ) प्रधान, उपदेशक, सचिव, सलाहकार, वज़ीर ।

मंथन ( मन्थ्=बिलोना ) ( पु० ) मथन, बिलोवन, बिलोडन ।

मंथनी ( स्त्री० ) मथानी, रई ।

मंथर ( पु० ) कोष्ठ, फल, क्रोध, कोप, भंडार, कुपुम का फूल, व्याधि, एक प्रकार का उगर, ( वि० ) आलसी, अकर्मण्य, मूढ़ ।

मंथरा ( स्त्री० ) कैकेयी की दासी ।

मंद ( मदि=आलसी होना वा अचेत होना वा सोना ) ( वि० ) सुस्त, आलसी, धीमा, धीरा, मूढ़, मूर्ख, निकम्मा, नीच, बुरा, अभागा, अभागी, नीचा, थोड़ा, कम, पतला, ( पु० ) शनैश्चर, ( क्रि० वि० ) धीरे-धीरे ।

मंद-मंद ( मुहा० ) धीरे-धीरे ।

मंदगति ( मन्द=धीमी, गति=चाल ) ( स्त्री० ) धीमी चाल, ( वि० ) धीरे चलनेवाला ।

मंदबुद्धि { ( मन्द=सुस्त या कम, बुद्धि वा मति=अकल )  
मंदमति { ( वि० ) मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन ।

मंदभाग्य ( मन्द=सुस्त या कम, भाग्य=भाग ) ( वि० ) अभागा, कमबल ।

मंदर ( मदि=सराहना या प्रसन्न होना ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम जिससे देवता और राजसों ने समुद्र मथा था, स्वर्ग का पेड़, पारिजात, स्वर्ग, ( वि० ) भारी, मोटा ।

मंदा ( म० मन्द ) ( वि० ) धीमा, धीरा, कोमल, ठंडा, सस्ता ।

मंदाकिनी ( मन्द=धीरे, अक्=जाना ) ( स्त्री० ) स्वर्ग-गंगा, एक नदी का नाम ।

मंदाक्रांता ( स्त्री० ) छंद-विशेष ।

मंदाग्नि ( पु० ) अजीर्ण, बद्धज्ञमी ।

मंदादर ( मन्द + आदर ) ( वि० ) निरादर, कम-क्रूर ।

मंदायु ( वि० ) कम उम्र, अल्पायु ।

मंदार ( मदि=सराहना ) ( पु० ) स्वर्ग का एक पेड़, कल्प-वृक्ष, नीम, मदार ।

मंदिर ( मदि=सराहना या सोना जिसमें ) ( पु० ) घर, देवालय, देवस्थान, देहरा, राजभवन ।

मंदिरा ( पु० ) कौक, मंजीर ।

मंदोदरी ( मन्द=पतला, उदर=पेट, जिसका पेट पतला हो ) ( स्त्री० ) मयतनया, रावण की स्त्री ।

मंदोष्ण ( वि० ) थोड़ा गरम, कम उष्ण, गुनगुना ।

मंद्र ( पु० ) हार्थी की चिंगाड़, बाजा-विशेष ।

ममत्त ( स्त्री० ) मनोनी, स्वीकृति ।

मन्मथ ( मन्=ज्ञान, मथु=विगाड़ना, नाश करना या दुलाना ) ( पु० ) कामदेव ।

मन्मथारि ( मन्मथ + अरि ) ( पु० ) महादेव ।

मन्मन ( पु० ) भँरि का ध्वनि, गदगद ध्वनि, गुन-गुनाना ।

मन्यु ( पु० ) शिव, यज्ञ, क्रोध, शोक, दीनता, अहंकार ।

मन्वतर ( पु० ) एकहत्तर चौयुगी या ३१,१४,४८,००० वर्ष का समय, मनु चौदह हैं, उनमें से एक का अधिकांश ।

मपना ( क्रि० सं० ) नापना, तालना, अंदाज़ करना ।

मम ( अस्मद् ) ( गर्वना० ) मेरा, मेरी ।

ममता ( मम ) ( स्त्री० ) मोह, माया, प्रेम, प्यार, स्नेह, अभिमान, घमंड, अपनापन, आत्मीयता ।

ममेरा ( वि० ) मामा से संबंध रखनेवाला ।

ममोड़ा ( पु० ) पीड़ा, मरोड़ा, पेड़न ।

मय ( म० मयट ) ( वि० ) यह शब्द जब दूसरे के साथ आता है तब इसका अर्थ मिला हुआ या बना हुआ होता है, जैसे—मणिमय=मणियों से बना हुआ युक्त ।

मय ( मय=जाना ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम, ऊँट, खच्चर ।

मयंक ( म० मृगाङ्ग ) ( पु० ) चाँद ।

मयतनया ( मय=एक राक्षस का नाम, तनया=बेटी ) ( स्त्री० ) मंदोदरी, रावण की स्त्री ।

मयत्री ( सं० मैत्री ) ( स्त्री० ) मित्रता है, मिता है, प्रीति, प्यार, दोस्ती ।

मयन ( म० मदन ) ( पु० ) कामदेव, मन्मथ, शहस्रन ।

मया ( स्त्री० ) ममता, मोह, प्रीति, माया ।

मयु ( मि + उ ) ( पु० ) क्लृप्त, देवजाति-विशेष ।

मयूख ( मा=नापना या मपु=जाना ) ( पु० ) किरण, तेज, शोभा, शिक्षा, चोटी ।

मयूर ( मी=मारना, जो साप आदि जानवरों को मारता है ) ( पु० ) मोर, एक पक्षी का नाम ।

मयूरक ( पु० ) नृत्तिया, लटजीरा, अपामार्ग ।

मरक ( मृ=मारना ) ( पु० ) मरी, सबमें फैलनेवाला रोग, महामारी, संक्रामक रोग ।

मरकत्ता ( पु० ) बरेंडो, खजरा ।

मरकत ( मृ=नाश होना, जिससे अंधेरा नष्ट हो जाता है ) ( पु० ) पक्षा, हरी मणि, ज़मुरद ।

मरकटा ( वि० ) मारनेवाला, मरवैया, मरोक ।

मर खपना ( मुहा० ) मर जाना, मर भिटना ।

मरघट ( सं० मरघट, मर=मरना, घट=घाट ) ( पु० ) शमशान, मसान, वह जगह जहाँ मुर्दा जलाया जाता है ।

मर जाना ( क्रि० अ० ) मुरझा जाना, सूख जाना, नष्ट हो जाना ।

मरजिया ( पु० ) पनहुटवा, नदी आदि में डूबकर वस्तु निकालनेवाला ।

मरण ( मृ=मरना ) ( पु० ) मरना, मौत, नाश, विनाश ।

मरणप्राय ( वि० ) मरने के निकट, मृत्यु के समीप ।

मरना ( म० मरण ) ( क्रि० अ० ) जी निकलना, प्राण छूटना, किसी चीज़ को बहुत चाहना ।

मर पचना ( क्रि० अ० ) बहुत दुःख सहना, बहुत मिहनत करना ।

मरभुखा ( वि० ) खाऊ, पेट ।

मरम ( म० मर्म ) ( पु० ) भेद, छिपी बात, अभिप्राय, सार बात, हृदय आदि अंग ।

मरमराना ( क्रि० अ० ) मचमचाना, चरचराना ।

मरवैया ( वि० ) मरनेवाला, मरनहार ।

मारयल ( वि० ) दुर्बल, कमज़ोर, निर्बल ।

माराल ( मृ=मरना ) ( पु० ) हंस, राजहंस, मेघ, ( वि० ) सार, स्वच्छ ।

मारी ( म० मारी, मृ=मरना या मारना ) ( पु० ) महामारी, मारनेवाला रोग हैज़ा या ताऊन, संक्रामक रोग ।

मरीचि ( मृ=नाश करना, अंधेरे को या अज्ञान को ) ( पु० ) सप्तऋषियों में से एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा, ( स्त्री० ) किरण, ( वि० ) कंजूम, कृपण ।

मरीचिका ( स्त्री० ) मृगनृष्णा, जलभ्रम ।

मरीचिमाला ( स्त्री० ) किरणसमूह ।

मरीचिमाली ( पु० ) सूर्य ।

मरु ( मृ=मरना, जहाँ पानी के बिना लोग मर जाते हैं )  
( पु० ) निर्जल देश, मरुस्थल, मारवाड़, बिना  
पानी का जंगल ।

मरुन् ( मृ=मरना, जिनको इंद्र ने दिति के गर्भ में मारकर  
उन्चास टुकड़े किये थे । उनके नाम ये हैं—१ एकज्योति,  
२ द्विज्योति, ३ त्रिज्योति, ४ च्योति, ५ एकशक,  
६ द्विशक, ७ त्रिशक, ८ इंद्र, ९ गतदृश्य, १० ततः, ११  
पनिसकृन्, १२ पर, १३ मित, १४ मभिमत, १५ सुमति,  
१६ ऋतुजित्, १७ सत्यजित्, १८ सुषेण, १९ सनजित्,  
२० अतिमित्र, २१ अनमित्र, २२ पुरुमित्र, २३ अपरा-  
जित्, २४ ऋत, २५ ऋतवाह, २६ धर्मा, २७ धरुण,  
२८ भूव, २९ विधारण, ३० देवदेव, ३१ ईदृक्ष, ३२  
अदृक्ष, ३३ व्रतित्, ३४ असदृक्ष, ३५ समर, ३६ धाता,  
३७ दुर्गा, ३८ धिति, ३९ भाम, ४० अभिमुक्त, ४१ अर्थीत्,  
४२ सह, ४३ धुनि, ४४ यपु, ४५ अनाय्य, ४६ अथ-  
वास, ४७ काम, ४८ जय, ४९ विराट् । इनका कथा  
श्रीमद्भागवत में ऐसी लिखी है कि एक बार देवों  
की मा दिति इस विचार से, अपने पति कश्यपजी के  
बलाने से, अगहन का व्रत करने लगी कि मेरे ऐसा धेटा  
हो कि इंद्र को मार डाले । इंद्र को इस बात के सुनने  
में बड़ा डर हुआ । तब इंद्र ब्राह्मण का रूप धरकर  
दिति को टहल करने लगा । एक दिन दिति सिर के  
बाल खुले छोड़कर जूट मूँह में गई । ये दोनों बातें  
व्रत में अशुद्ध होने से इंद्र अपना छोटा-या रूप बनाकर  
वज्र लिये हुए दिति के पेट में घुस गया और वहाँ जकर  
गर्भ में जो बालक था उसके साथ टुकड़े कर डाले । तब  
ये सातों रोने लगे । फिर इंद्र ने एक-एक के सात-सात  
टुकड़े किये । पर परमेश्वर की इच्छा से और दिति के  
व्रत के प्रताप से कोई मरा नहीं । उन सातों के उन्चास  
बालक होकर, रो करके बोले कि हे इंद्र ! अब हमको  
मत मारो । हम तुम्हारी सहायता करेंगे । यह दशा देख-  
कर इंद्र उन लड़कों से बोला कि अब तुम मत रोओ ।  
मरुन् नाम होकर मेरे साथ रहो, फिर इंद्र उन  
उन्चासों बालकों समेत गर्भ की राह बाहर निकल आया ।  
इसलिये मरुन् नाम पड़ा ) ( पु० ) हवा, पवन,  
वायुदेवता ।

मरुत्पर्क ( पु० ) आकाश, गगन, अंतरिक्ष ।

मरुत्फल ( पु० ) झोला, बनडरी, घनोपल ।

मरुभूमि ( मरु+स्थल ) ( पु० ) निर्जल देश, मारवाड़,  
मरुस्थल } मरुभूमि, रेगिस्तान ।

मरुसख ( पु० ) इंद्र, अग्नि, अनन्त ।

मरुक ( पु० ) मृग-विशेष, मोर, ताऊस ।

मरोलि ( पु० ) मकर, मगर, जलजीव ।

मरोह ( स्त्री० ) प्यार, प्रेम, दुलार, लाइ ।

मर्कट ( मर्क=जाना ) ( पु० ) वानर, बंदर, मकड़ी, मछली,  
देव, विप-विशेष ।

मर्कटो ( स्त्री० ) वानरी, अपामार्ग, लटजीरा,  
केवोंच ।

मर्कर ( पु० ) भृंगराज का पेड़, ( स्त्री० ) दरी, भोंड,  
बक ।

मर्जु ( स्त्री० ) सकाई, शुद्ध, ( पु० ) धोबी ।

मर्त } ( मृ=मरना ) ( पु० ) मनुष्य, आदमी ।  
मर्त्य }

मर्त्यलोक ( मर्त्य+लोक ) ( पु० ) पृथ्वी, मनुष्यलोक,  
यह संसार ।

मर्दक ( मर्द+शक ) ( पु० ) प्रेपक, लोड़ा, सिल का  
बट्टा ।

मर्दन ( मृद=चूर-चूर करना ) ( पु० ) मलना, रगड़ना,  
चूर करना, नाश करना ।

मर्दनियाँ ( सं० मर्दनीया ) ( पु० ) नौकर जो शरीर का  
मैल उतारने के लिये तेल आदि मखते हैं ।

मर्दिन ( वि० ) चूर्णित ।

मर्म ( मृ=मरना ) ( पु० ) भेद, छिपी बात, मतलब ।  
शरीर के जोड़, शरीर के वे अंग जिन पर आघात  
पहुँचने से आदमी जी नहीं सकता ।

मर्मज्ञ ( मर्म=भेद, ज्ञ=जाना ) ( वि० ) भेद जाननेवाला,  
बुद्धिमान् ।

मर्मर ( पु० ) शब्द या ध्वनि-विशेष, सूखे पत्ते का  
शब्द, चुरचुर ध्वनि ।

मर्मरीक ( वि० ) दीन, दरिद्र, दुखिया, गरीब ।

मर्मी ( वि० ) भेदी, भेद जाननेवाला, राजदूत ।

मर्यादा ( मर्या=सीमा, आ+दा=लेना या रखना ) ( स्त्री० )  
मान, पन, प्रतिष्ठा, इज्जत, सीब, सीमा, हद्द ।

मर्यादिक ( वि० ) मानी, सम्मानी ।

मर्श { ( मृश्=छूना, ध्यान करना ) ( पु० ) स्मरण,  
मर्शन { विचार, सम्मति, निश्चय ।

मर्ष { ( मृष्=महना, क्षमा करना ) ( पु० ) तितिक्षा,  
मर्षण { सहना, शांति, बदोस्त ।

मल ( मल्=धारण करना ) ( पु० ) मैल, तलछट, गाद,  
गूह, पाप, ( वि० ) मैला ।

मलकना ( कि० अ० ) नखरे से चलना, मटकना ।

मलंगी ( पु० ) जाति-विशेष जो नोन बनाती है ।

मलग्राही { ( पु० ) भंगो, त्वाकोब ।  
मलापकर्षा {

मलज ( पु० ) मल से उत्पन्न ।

मलन ( वि० ) मिलवट, घिसा हुआ ।

मलद्राविक ( पु० ) जमाखमोटा ।

मलन ( पु० ) मर्दन, दखन, रगड़ना, खेमा ।

मलना ( सं० मर्दन ) ( कि० स० ) रगड़ना, मसलना,  
मोजना, घिसना ।

मलया ( पु० ) कूबा-करकट, मैल ।

मलभूज ( पु० ) कौआ, काक ।

मलमल ( स्त्री० ) एक तरह का महीन कपड़ा ।

मलमास ( पु० ) अधिक महीना, लौंदा का महीना ।

मलमेट करना ( मुहा० ) नष्ट करना ।

मलराशि ( स्त्री० ) पाप की राशि ।

मलय { ( मल्=रखना ) ( पु० ) एक पहाड़ जो  
मलयगिरि { दक्षिण में है और जहाँ बहुत अच्छा  
चंदन होता है ।

मलयागिरी { ( सं० मलयगिरि ) ( पु० ) चंदन का  
मलागारी { रंग ।

मलाई ( स्त्री० ) दूध का सार ।

मलाका ( स्त्री० ) कूती, कामिनी, छिनाल, कुटनी,  
इस्तिनो, इथिनी ।

मलाना ( कि० स० ) रगड़ाना, घिसाना, मर्दन करना ।

मलार ( सं० मलार ) ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम जो  
बरसात में गाई जाती है ।

मलिन { ( मल्=मैल ) ( वि० ) मैला, अशुद्ध, अप-  
मलीन { विप्र, बुरा, उदास, घबराया हुआ ।

मलिनचित्त ( वि० ) कपटी, दशावाज, बुरे दिल का ।

मलिद् ( पु० ) अमर, भौरा ।

मलिया ( पु० ) तेज का पात्र-विशेष ।

मनुक ( पु० ) कीड़ा-विशेष ।

मलेछ ( सं० म्लेच्छ ) ( पु० ) मैली जाति के लोग,  
जंगली, असभ्य, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत  
नहीं है और न जो हिंदुओं के शास्त्र को मानते हैं ।

मलेपंज ( वि० ) दस वर्ष से अधिक अवस्था का  
घोड़ा ।

मल्ल ( मल्ल=रखना या पकड़ना ) ( पु० ) बलवान्, पहल-  
वान्, कुश्ती लड़नेवाला, बतैन, गाल, मछली,  
वर्णसंकर जाति-विशेष, देश-विशेष, ( स्त्री० ) मानिनी,  
( वि० ) दृढ़, मजबूत, सर्वश्रेष्ठ ।

मल्लक ( पु० ) दीपक, नारियल का पात्र ।

मल्लकीड़ा ( स्त्री० ) कुश्ती, मल्लयुद्ध ।

मल्लयुद्ध ( मल्ल+युद्ध ) ( पु० ) कुश्ती, पहलवानों की  
लड़ाई, भिड़ाभिड़ी, बाहुयुद्ध ।

मल्लार ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

मल्लिका ( मल्ल=रखना ) ( स्त्री० ) चमेली ।

मल्लूर ( पु० ) श्रेष्ठ, बेल का पेड़, तिलव ।

मलास ( पु० ) आसरा, भरोसा, आश्रय ।

मशक ( मश्=जना ) ( पु० ) मच्छर, मच्छड़, मसा,  
डॉस ।

मशक ( मश्क ) ( स्त्री० ) एक तरह का चमड़े का थैला  
जिसमें पानी लाया जाता है, ( पु० ) मसा, मच्छड़ ।

मशन ( पु० ) कुत्ता ।

मशहरी ( सं० मशक=मच्छर, हरी=दूर करनेवाली, ह=दूर  
करना ) ( स्त्री० ) एक प्रकार का जाखीदार कपड़ा  
जिसको मच्छड़ों से बचने के लिये पलंग पर तानते हैं ।

मपि ( स्त्री० ) स्याही, रोशनाई ।

मपिकपी ( स्त्री० ) दावान ।

मष्ट ( अव्य० ) चुप, मौन ।

मष्ट मारना ( मुहा० ) चुप रहना, मौन रहना, खामोश  
रहना ।

मसक ( स्त्री० ) पुर, चमड़े का जखपात्र ।

मसकना ( कि० अ० ) फटना, टूटना, दरकना, खिन्न  
जाना ।

मसकाना ( कि० स० ) चीरना, फाड़ना, दरकाना ।

मसमसाना ( कि० अ० ) मन ही मन जलना, पिस-  
पिसाना ।

मसविर्द ( स्त्री० ) मस्ला, मांस-बुद्धि ।

मसलना ( सं० मलण, मल=मलना ) ( कि० स० ) कुच-लना, मलना, मोजना ।

मसान ( सं० श्मशान ) ( पु० ) मरघट, श्मशान, मुर्दा-घाट ।

मसानिया ( पु० ) डोम, ( वि० ) श्मशानवासी ।

मसिदानी ( स्त्री० ) दावान ।

मसी ( मसू=बदल जाना या नापना ) ( स्त्री० ) स्याही, काली रोशनाई ।

मसीपात्र ( मसी+पात्र ) ( पु० ) दावान ।

मसुडा } ( मांस ) ( पु० ) दाँतों के ऊपर का मांस ।  
मसोड़ा }

मसूर ( मसू=नापना या बदलना ) ( पु० ) एक प्रकार का अनाज जिसकी दाल बनती है ।

मसूरिया ( स्त्री० ) चंचक, शीतला, माता ।

मसूँ ( स्त्री० ) मोछें निकलने के पहले के बहुत छोटे-छोटे बाल, रेखें ।

मसोसना ( कि० स० ) मरोड़ना, पेंटना, निचोड़ना, कुड़ना, कलपना ।

मस्तक ( मसू=बदलना या नापना ) ( पु० ) सिर, माथा, कपाड़ ।

मस्तूल ( पोर्तुगाली भाषा के शब्द Mastro या Mastro से ) ( पु० ) नाव का डंडा जिस पर पाल ताना जाता है ।

महंगा ( सं० महार्घ, महा=बड़ा, अर्थ=मोल ) ( वि० ) बड़े मोल का, बहुत कीमत का, बेश कीमत, बहुमूल्य ।  
महंगी ( महंगा ) ( स्त्री० ) काल, अकाल, गिरानी, कुस-मय, ( वि० ) महंगा शब्द का स्त्रीलिंग ।

मह ( पु० ) शादी, उत्सव, यज्ञ, तेज, रोशनी, भैंसा ।

महक ( स्त्री० ) सुगंध, सुवास, गंध, खुशबू ।

महत् ( मह=पूजना या बढ़ना ) ( वि० ) बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, मानने योग्य, पूजने योग्य, ( स्त्री० ) बड़ाई, मान, प्रतिष्ठा ।

महतारी ( सं० महत्तरा=बड़ी ) ( स्त्री० ) मा, माता ।

महतो ( सं० महत् ) ( पु० ) वह आदमी जो जमींदार की तरफ से गाँव में महसूल उगाहने के लिये नियत किया जाय, चौधरी, सजावल, जानि का प्रतिष्ठित व्यक्ति ।

महत्त्व ( महत् ) ( पु० ) बड़ापन, बड़ाई ।

महत्तम ( वि० ) सबसे बड़ा ।

महत्ता ( स्त्री० ) बड़ाई, प्रधानता ।

महना ( सं० मथन ) ( कि० स० ) मथना, बिलोना ।

महंत ( महत् ) ( पु० ) मठधारी, गुसाईं अथवा वैरा-गियों का प्रधान ।

महंताना ( पु० ) मजूरी, ( वि० ) महंत के योग्य ।

महर ( सं० महत्तर, बहुत बड़ा ) ( पु० ) प्रधान, मुख्य नेता, ( स्त्री० ) स्त्री, पत्नी, भार्या, जैसे—नंद-महर ।

महरा ( पु० ) कहार, भोई, पालकी उठानेवाला ।

महरि } ( सं० महिला, मह=पूजना ) ( स्त्री० ) भार्या,  
महरी } स्त्री, पत्नी, लुगाई, कहारी ।

महर्षि ( महा+ऋषि ) ( पु० ) परमऋषि, वेदव्यास आदि बड़े ऋषि ।

महलोक ( पु० ) सात लोकों में से चौथा लोक ।

महा ( महत्, मह=पूजना या बढ़ना ) ( वि० ) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत ।

महाकच्छा ( पु० ) पहाड़, वरुण ।

महाकंद ( पु० ) लहसुन, मूली, बड़ी प्याज़ ।

महाकपित्थ ( पु० ) बेज का पेड़ ।

महाकाम ( पु० ) शिव का द्वारपाल, नंदीश्वर, हाथी ।

महाकाय ( महा=बड़ा, काया=शरीर ) ( पु० ) शिव का द्वारपाल, नंदी, हाथी, ( वि० ) बड़ा मोटा शरीर-वाला ।

महाकाल ( महा=बड़ा, काल=काला या समय या मौत अर्थात् सबको नाश करनेवाला ) ( पु० ) प्रलय के समय में महादेव का रूप, नंदी, भुंगी ।

महाकाली ( महाकाल ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी ।

महाकोढ़ ( सं० महाकृष्ट ) ( पु० ) बड़ा कोढ़ ।

महाम्बाल ( पु० ) समुद्र की खाड़ी ।

महागद् ( पु० ) ज्वर, बुखार ।

महागोधूम ( पु० ) बड़ा गेहूँ ।

महाग्रीव ( वि० ) बड़ी गर्दनवाला, ऊँट ।

महाघोर ( महा=बहुत या बड़ा, घोर=डगबना ) ( वि० ) बड़ा भयानक, बहुत डरानेवाला, ( पु० ) एक नरक का नाम ।

महाज ( पु० ) बड़ा बकरा, ( वि० ) मशहूर, प्रसिद्ध ।

महाजन ( महा+जन ) ( पु० ) बड़ा आदमी, कोठेवाला, साहूकार ।

महाजनी ( महाजन ) ( स्त्री० ) महाजन का काम, कोठी-वाकी, लेन-देन, साहकारी ।

महाजान ( सं० महाजानी ) ( वि० ) बहुत बुद्धिमान्, बौद्धों का एक महायान संप्रदाय ।

महातम ( सं० महात्म्य ) ( पु० ) बड़ाई, प्रतिष्ठा, अग्र्यंत श्रेय ।

महातल ( पु० ) पाँचवाँ पानाल ।

महानेजा ( वि० ) तेजस्वी, प्रतापी, भाग्यवान् ।

महात्मा ( महा-आत्मा, आत्मा=जीव ) ( वि० ) महाशय, सज्जन, उत्तम, युत्तुर्ग, श्रेष्ठ ।

महादेव ( महा=वडा, देव=देवता ) ( पु० ) शिव, महेश, उभय ।

महादेव ( पु० ) कलह, वाक्युद्ध, जंगी बाजा ।

महाध्वनिक ( पु० ) हिमालय में जाकर गल मरना ।

महान् ( महत् ) ( पु० ) महत्त्व, ( वि० ) बडा, श्रेष्ठ ।

महानट ( पु० ) फिर, महादेव ।

महानंद ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, परमहर्ष ।

महानवमी ( स्त्री० ) आश्विन शुक्ला नवमी ।

महानस ( पु० ) पाकस्थान, चूल्हा, ( वि० ) अति प्रसन्न, हर्षित ।

महानाद ( पु० ) सिद्ध, व्याघ्र, हाथी, ऊँट, घोर ध्वनि करनेवाले जीव ।

महानिद्रा ( स्त्री० ) घोर निद्रा, मृत्यु ।

महानिशा ( स्त्री० ) आधी रात ।

महानील ( पु० ) गुग्गुलु ।

महानुभाव ( वि० ) प्रतापी, तेजस्वेकार, महाशय ।

महापथ ( पु० ) बड़ी सड़क, स्यास रास्ता ।

महापद्मक ( पु० ) सर्प-विशेष, निधि-विशेष ।

महापातक ( महा+पातक ) ( पु० ) बडा पाप, जैसे—ब्रह्महत्या आदि ।

महापाप ( महा+पाप ) ( पु० ) बडा पाप, महापातक ।

महापुरुष ( महा+पुरुष ) ( पु० ) बडा आदमी, महात्मा, साधु, सज्जन ।

महाप्रभ ( वि० ) भद्रकदार, कान्तिपूर्ण, बड़ी चमकवाला ।

महाप्रभा ( स्त्री० ) अधिक आभायुक्त ।

महाप्रभु ( महा+प्रभु ) ( पु० ) परमेश्वर, शिव, महाराज, पवित्र मनुष्य ।

महाप्रलय ( महा+प्रलय ) ( पु० ) सृष्टि का नाश जो हर

एक ४,३२,००,००,००० वर्षों पीछे होता है, सारी सृष्टि का नाश जो ब्रह्मा के १०० वर्षों के पीछे होता है, जिस वर्ष का हरएक दिन ऊपर लिखे हुए वर्षों के बराबर होता है और ब्रह्मा की रात्रि भी इतने ही वर्षों की होती है। और इस महाप्रलय में ऋषि, मुनि, देवता और ब्रह्मा समेत सातों लोक नष्ट हो जाते हैं ।

महाप्रसाद ( महा=बडा, प्रसाद=भोग या भोग्य ) ( पु० ) देवता का भोग या भोग्य, श्रीजगन्नाथजी का प्रसाद ।

महाबली ( महा+बली ) ( वि० ) बडा बलवान्, बडा पराक्रमी ।

महाव्रत ( पु० ) बारह वर्ष का व्रत ।

महाव्रती ( पु० ) शंकर, भगवान् ।

महाब्राह्मण ( पु० ) महापात्र, अत्येष्टि कर्म करानेवाला ब्राह्मण ।

महाभटमानी ( पु० ) बडा योद्धा माननेवाला ।

महाभा ( वि० ) शूरवीर, महापराक्रमी, सिपाही ।

महाभारत ( महा+भारत ) ( पु० ) एक बहुत बडा इतिहास जो पद्य में लिखा हुआ है, भरतवंशी राजा कौरवों और पांडवों की बड़ी लड़ाई जो कुरुक्षेत्र के मैदान में हुई थी ।

महाभीम ( वि० ) डरावना, अति भयानक ।

महाभूत ( पु० ) पंचनख, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ।

महामद ( पु० ) मस्त हाथी, ( वि० ) बड़ी सुखी ।

महामुनि ( पु० ) व्यास आदि महर्षि, ओषधि, धनियौ ।

महामाया ( महा+माया ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, शक्ति ।

महामृत्युंजय ( पु० ) शिव का मंत्र-विशेष ।

महामोही ( स्त्री० ) धनूर का पेड़ ।

महारजत ( पु० ) धनूरा, सोना, सुवर्ण ।

महारथी ( महा+रथी ) ( वि० ) जो अकेला ११ सहस्र धनुषारियों से युद्ध करे, जो शस्त्र-विद्या में प्रवीण हो ।

महारस ( पु० ) पारा, काँजी, रसराज ।

महाराज ( महा+राजा ) ( पु० ) बडा राजा, राजा-धिराज

महाराजाधिराज ( महाराज+अधिराज ) ( पु० ) सबसे बडा राजा ।



महारानी ( सं० महाराज्ञी, महा=बड़ी, राज्ञी=रानी )  
( स्त्री० ) राजा की बड़ी रानी, पटरानी ।

महारूप ( पु० ) शिव, अतिसुन्दर ।

महारोग ( पु० ) उन्माद, त्वचादोष, राजयक्ष्मा, श्वास,  
मधुमेह भगदर, उदर, अश्मरीरोग महारोग कह-  
लाते हैं ।

महारौरव ( पु० ) नरक-विशेष ।

महार्घ ( महा+अर्थ ) ( वि० ) बड़े मोल का, बहुमूल्य ।

महालक्ष्मी ( महा+लक्ष्मी ) ( स्त्री० ) संपदा, संपत्ति,  
ऐश्वर्य अठारह भुजावाला देवा, लक्ष्मी ।

महालोह ( पु० ) चुंबक ।

महावट ( माघ ) ( स्त्री० ) माघ महीने का मेह ।

महावत ( पु० ) हाथीवान ।

महावर ( पु० ) ज्ञानी रंग ।

महावरा ( स्त्री० ) दूब, घास-विशेष, ( पु० ) बोलचाल ।

महाविद्या ( स्त्री० ) दश महाकाली—१ काली, २ नाग,  
३ पोद्दशी, ४ मुक्तेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता,  
७ धुमावानी, ८ बालामुखी, ९ मातंगी, १०  
कमलात्मिका ।

महावीर ( महा+वीर ) ( वि० ) बड़ा शूरवीर, ( पु० )  
हनुमान्, गरुड, लक्ष्मण, अंगद आदि ।

महाशलि ( पु० ) काला धान ।

महाशय ( महा+आशय ) ( वि० ) सज्जन, महात्मा,  
उदार, बड़ा और भला आदमी ।

महाशुक्ल ( वि० ) बहुत श्वेतवर्ण का, ( स्त्री० ) सर-  
स्वती देवी, अतिश्वेत वर्णवाली स्त्री ।

महाशूद्र ( पु० ) अहीर, गोप, खाजा ।

महाश्वेता ( स्त्री० ) सरस्वती ।

महि } ( मह=पूजना या बड़ा होना ) ( स्त्री० ) धरती,  
मही } धरणी, जमीन, पृथ्वी ।

महिका ( स्त्री० ) हिम, बर्फ ।

महिदेव ( महि+देव ) ( पु० ) भूदेव, ब्राह्मण ।

महिपाल } ( महि=धरती, पाल=वचाना ) ( पु० ) राजा,  
महीपाल } महाराज ।

महिमन ( पु० ) महत्त्व, बड़ाई, कीर्ति ।

महिमा ( मह=पूजना या बड़ा होना ) ( स्त्री० ) बड़ाई,  
सराहना ।

महिला ( स्त्री० ) नारी, स्त्री, माझकँकुनो ।

महिष ( मह=पूजना जो यज्ञ में या बलिदान के समय  
पूजा जाता है ) ( पु० ) भैंसा ।

महिषासुर ( महिष + असुर ) ( पु० ) एक राक्षस का  
नाम जिसको दुर्गा ने मारा ।

महिषी ( मह=पूजना या मानना ) ( स्त्री० ) भैंस,  
रानी, जैसे—राजमहिषी ।

महिपेश ( पु० ) महिषासुर, यमराज ।

मही } ( सं० मथित, मथ=मथना ) ( पु० ) छाछ,  
मही } मट्ठा ।

महीधर ( मही=धरती, ध=रखना ) ( पु० ) पहाड़, पर्वत,  
ईंगर ।

महीना ( सं० माघ ) ( पु० ) तीस दिन, तनखाह,  
स्त्रियों का मासिकधर्म, तीस दिन की मजदूरी ।

महीप ( मही=धरती, पा=पालना ) ( पु० ) राजा ।

महीपति ( मही=धरती, पति=मालिक ) ( पु० ) राजा,  
भूपति ।

महीभूत ( पु० ) राजा, पर्वत ।

महीरुह ( पु० ) वृक्ष, वनस्पति ।

महीसुर ( मही + सुर ) ( पु० ) ब्राह्मण ।

महुआ ( सं० मधुक, मधु=मीठा ) ( पु० ) एक पेड़ जिसका  
फल मीठा होता है और उसकी मदिरा बनाई  
जाती है ।

महुरत ( सं० मुहूर्त ) ( पु० ) दो घड़ी का शुभ समय,  
निश्चित समय ।

महेंद्र ( महा + इन्द्र ) ( पु० ) इन्द्र, महाराजाधिराज,  
एक पहाड़ का नाम ।

महेंद्रनगरी ( स्त्री० ) अमरावती, इन्द्रपुरी ।

महेरी ( स्त्री० ) पायस, खीर, महेर ।

महेला ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, ( पु० ) घोड़े का भोजन-  
विशेष ।

महैला ( स्त्री० ) बड़ा हल्लाघी ।

महेश } ( महा=बड़ा, ईश या ईश्वर=मालिक )  
महेश्वर } ( पु० ) महादेव, शिव ।

महेष्वास ( महा + इष्+आस ) ( पु० ) बड़े धनुषवाले ।

महोछ ( पु० ) बड़ा बैल, नौकेश्वर, साँड़ ।

महोत्पल ( पु० ) कमल, पद्म ।

महोत्सव ( महा + उत्सव ) ( पु० ) बड़ा त्योहार,  
बड़ा पर्व, बड़ा दिन ।

महोदधि ( पु० ) समुद्र, सागर ।

महोदय ( पु० ) कान्यकुब्ज-देश, कन्नौज, ( वि० )  
प्रतापी, नामवर ।

महोदरी ( स्त्री० ) महासनावरी ।

महोन्नत ( पु० ) ताड़ का पेड़, ( वि० ) अत्युन्नत ।

महोरग ( पु० ) नगर की जड़, सूर्यगण-विशेष, बड़ा  
साँप ।

महोसा ( पु० ) लहसुन, तिल ।

महोजस ( वि० ) अति तेजस्वी, चमकीला, शक्ति-  
शाली ।

महोपध ( स्त्री० ) दासी, लाजवंती, लहसुन ।

मा ( माःशंभिता या आदर करना ) ( स्त्री० ) शोभा,  
लक्ष्मी, माता, ( कि० वि० ) मत, नहीं ।

मा } ( म० माता ) ( स्त्री० ) मैया, महतारी ।  
माई }

माई ( स्त्री० ) मामी ।

माँग ( स्त्री० ) लुगाइयों के मिर में एक लकीर-सी होती  
है जहाँ से बाल तुड़े किये जाते हैं, वह कुँआरी  
लड़की जिसकी सगाई हुई हो ।

माँग देना ( कि० स० ) उपहार देना, बिना दाम के  
देना ।

माँगना ( म० मार्गण, मृन्=स्वोजना ) ( कि० स० )  
चाहना, याचना, सगाई करना, निश्चय करना,  
संबंध करना ।

माँज ( पु० ) पीप, कच्चा मूत्र, बिगड़ा रक्त, मवाद ।

माँजना ( म० मार्जन, मृन्=शुद्ध करना या मज्जन,  
मृन्=साफ करना ) ( कि० स० ) मलना, उजळा  
करना, उजालना, साफ करना ।

माँजा } ( पु० ) एक रोग जो मछलियों को बहुत  
माँभा } होता है, वर्षा के नवीन जल का फेना ।

माँभ ( म० मध्य ) ( पु० ) बाघ, मध्य ।

माँभधार ( पु० ) नदी के बीच में ।

माँभत ( स्त्री० ) कान्ति, आभा, शोभा, सज्जधज ।

माँभा ( पु० ) पतंग की डोर, जिसमें काँच पीसकर  
और लेंह या गोंद से मिलाकर लगाया जाता है  
जिससे दूसरे की पतंग की डोर को काटते हैं ।

माँभी ( मध्य ) ( पु० ) नाविक, नाव का मालिक ।

माँड़ ( सं० मण्ड, मन्=रखना ) ( पु० ) भात का पानी ।

माँड़ना ( सं० मर्दन ) ( कि० स० ) मलना, मीजना,  
मसलना, करना, रचना, बनाना, कलप देना ।

माँडा ( पु० ) एक प्रकार की रोटी ।

माँड़ी ( स्त्री० ) कलप, लेंह ।

माँढ़ा ( पु० ) यज्ञस्थान, मंडप, देवगृह ।

माँद ( स्त्री० ) जंगली जानवर की गुफा, ( वि० ) हलका,  
फीका, सोठा ।

मांस ( मन्=रखना या पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ  
आदि में पूजा जाता है ) ( पु० ) गोश्त, सालन ।

मांसभक्षक } ( मांस, भक्ष=खाना ) ( वि० ) मांस  
मांसभक्षी } खानेवाला, मांसाहारी ।

मांसल ( वि० ) स्थूल, मोटा, पुष्टेदार, गटा हुआ ।

मांसाद ( मांस + अद ) ( वि० ) मांस खानेवाला,  
गोश्तप्रेम ।

मांसाहारी ( मांस + आहारी=खानेवाला ) ( वि० )  
मांस खानेवाला, मांसभक्षी ।

माँह } ( म० मध्य ) ( अत्य० ) में, भीतर, बीच ।  
माँहि }

माकद ( पु० ) आम, रसाल ।

माखना ( कि० अ० ) क्रोध करना, कोपना, खिसियाना ।

माखड़ा ( वि० ) मूर्ख, निर्वुद्धि ।

माखित ( माखना ) ( वि० ) क्रोधित, खिसियाया हुआ,  
ईर्ष्या द्वेष या डाह करता हुआ ।

मागध ( मगध ) ( वि० ) मगध-देश का, ( पु० )  
भाट या कड़खेत; जिनका काम राजाओं की और  
बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है ।

माघ ( मघा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चाँद  
इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनी  
के दिन यह नक्षत्र होता है ) ( पु० ) वर्ष का  
ग्यारहवाँ महीना ।

माघी ( स्त्री० ) माघ महीने की अमावस्या, हिंदुओं का  
पर्व ।

माच्चा ( पु० ) बड़ी खाट, पल्लंग ।

माच्ची ( स्त्री० ) छोटी खाट, खटोळिया ।

माछुर ( पु० ) मच्छड़, डाँस, मसा ।

माछी ( सं० मत्तिका ) ( स्त्री० ) मच्छी, माली ।

माजाई ( स्त्री० ) सहोदरा माता से उत्पन्न ।

माजूफल ( पु० ) एक फल जो दवाई में काम आता है ।

माभूदार ( पु० ) कठिनाई में, मध्य में, अनाश्रिता-  
वस्था में ।

माटी ( सं० मुक्तिका ) ( स्त्री० ) मट्टी, मिट्टी ।

माठा ( वि० ) नटखट, ढोठ, मगरा, सुस्त, ( सं० मन्थित,   
 मन्थ=मथना ) ( पु० ) मट्टा, ढाछ ।

माठू ( वि० ) हँसोड़, कौतुकी ।

माड़नी ( स्त्री० ) कलप, लेई, माँड़ी ।

माड़िया ( वि० ) दुबला, पतला, दुर्बल ।

माड़ौ ( पु० ) मँडवा, मंडव, भारत का एक इतिहास  
प्रसिद्ध स्थान ।

माणवक ( पु० ) बालक, बटु, उपनयन किया हुआ  
ब्राह्मण, बीस खड़ी का हार ।

माणिक ( सं० माणिक्य, मणि ) ( पु० ) लाल, एक  
लाल रंग का बहुमुख्य पत्थर ।

मात ( सं० मात्रा ) ( स्त्री० ) मात्रा, लगमात, स्वरों का  
व्यंजनों के साथ मिश्रण, ( सं० माता ) मा, माता ।

मात ( स्त्री० ) बाजीहराना, जीतना, शहमात, हार, पराजय।  
मात करना } ( पु० ) बाजी जीतना ।  
मात देना }

मातंग ( मद्=मस्त होना ) ( पु० ) हाथी, हस्ती, गज,  
मुनि-विशेष ।

मातंगी ( स्त्री० ) नवीं महाविद्या ।

मातना ( कि० अ० ) मतवाला होना, पागल होना ।

मातलि ( मत=मताह, ला=लाना अर्थात् गलाह बतलाना )  
( पु० ) इंद्र के सारथी का नाम, इंद्र का सारथी ।

माता ( सं० मत ) ( वि० ) मस्त, मतवाला, उन्मत्त ।

माता ( मान्=पूजना या मन्=आदर, मान करना ) ( स्त्री० )  
मा, मैया, माई, शीतलादेवी ।

मातामह ( माता ) ( पु० ) मा का बाप, नाना ।

मातुल ( मातृ=मा ) ( पु० ) मा का भाई, मामा ।

मातुलानी } ( स्त्री० ) मामी, माई ।  
मातुली }

मातृष्वसा ( स्त्री० ) मौसी, खाला, मा की बहन ।

मातृष्वश्रेय ( पु० ) मौसी का बेटा, खालाजाद ।

मात्र ( मा=नापना ) ( कि० वि० ) न्यून, केवल, अल्प,  
थोड़ा, कुछ, उतना ही, वही, भर ।

मात्रा ( मा=नापना ) ( स्त्री० ) माप, परिमाण, ह्रस्व-  
दीर्घ-प्लुत स्वर, द्वाकी नाप, औषध का परिमाण,  
एक बार खाने का परिमाण ।

मात्सर्य ( पु० ) जलन, ईर्ष्या, डाह, द्वेष ।

माथा ( सं० मस्तक ) ( पु० ) सिर, कपाल, मस्तक,  
नाव का अगला भाग ।

माथा ठनकना ( मुहा० ) किसी काम के बिगड़ने का  
हाल पहले से मालूम हो जाना, अनिष्ट का अनु-  
मान होना, चौकसा होना ।

माथा रगड़ना ( मुहा० ) बहुत गरीबी से प्रार्थना करना  
या देवता, मुनि अथवा राजा से गरीबी के साथ  
माँगना, बहुत मिहनत करना, विनय करना, चिरीरी  
करना ।

माथी लेना ( मुहा० ) बराबर करना, समान बनाना ।

माथे पर चढ़ना ( मुहा० ) अन्याय करना, जुल्म करना,  
प्रजा को बहुत दुःख देना, सताना ।

माथुर ( मथुरा ) ( पु० ) मथुरा का रहनेवाला, कायस्थों  
की एक जाति, मथुरा के ब्राह्मणों की एक जाति ।

मादक ( मद्=मस्त होना ) ( वि० ) मस्त करनेवाला,  
नशे की चीज़, ( स्त्री० ) नशा, अमल ।

मादकता ( स्त्री० ) नशा, अमल, सुरू ।

मादन ( वि० ) हँसारक, ( फा० ) खान से निकली  
चीज़ें ( खानि ) ।

मादा ( स्त्री० ) जानवरों की स्त्री ।

माधव ( मा=लक्ष्मी, धव=पति ) ( पु० ) लक्ष्मीपति,  
विष्णु ।

माधव ( मधु ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, वसंत-ऋतु, वैशाख का  
महीना, महुआ, ( वि० ) शहद का, मधु से बना हुआ ।

माधवी ( स्त्री० ) लता-विशेष, वासंतीलता ।

माधुर्य ( मधुर ) ( पु० ) मिठास, मधुरता ।

माध्वी ( मधु ) ( स्त्री० ) महुए की मट्ठा, एक तरह  
की मछली ।

मान ( मा=नापना ) ( पु० ) नाप, माप, अंदाज़, परि-  
माण, ( मत=धर्मद करना या बढ़ा जानना ) आदर,  
सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पद, धर्मद, अभिमान,  
घोचला, तावभाव, नाज़नज़रा, ( वि० ) बराबर ।

मानत ( पु० ) आदर, सम्मान, यश, कीर्ति ।

मानना ( पु० ) प्रतिज्ञा, मनौती ।

मानन ( मान्+अन ) ( पु० ) पूजा करना, आदर करना ।

मानना ( कि० सं० ) प्रण करना, स्वीकार करना,  
आदर करना, प्रेम करना ।

माननीय ( वि० ) पूज्य, मान्य, श्रेष्ठ ।

मानव ( मनु ) ( पु० ) मनु के बेटे-पोते, मनुष्य, आदमी ।

मानस ( मनस्=मन ) ( वि० ) मन का, मानसिक, ( पु० ) मन, हृदय, हिमाचल पहाड़ के पास मानसरोवर-नामक झील ।

मान-सम्मान ( पु० ) आदर-प्रतिष्ठा ।

मानसिक ( मनस्=मन ) ( वि० ) मन का, मन से पैदा हुआ, दिव्य, मनसंबंधी ।

मानहानि ( स्त्री० ) अपमान, निरदर, बेक्रदरी, बेहज्जती ।

मानहुँ, मानहूँ ( अन्त्य० ) मानो, समान, सदृश, ( कि० म० ) जानो, समझो, रहने दो ।

माणिक ( पु० ) रत्न, माणिक ।

मानिनी ( मान=घमंड ) ( वि० ) घमंड करनेवाली स्त्री, मानवती स्त्री, एक नायिका ।

मानी ( मान ) ( वि० ) घमंडी, अभिमानी ।

मानुष ( मनु ) ( पु० ) मनुष्य, आदमी ।

मानो ( पु० ) विज्ञी, बिलाव, ( अन्त्य० ) हूँ, यथा, उपमार्थक, ( कि० म० ) जानो, स्वीकार करो, ज्ञात करो ।

माप्ना ( सं० मान्=विचारना ) ( कि० म० ) सम्मान करना, आदर करना, चाहना, जानना, पतियाना, भरोसा करना, स्वीकार करना, कबूल करना, इकरार करना, ठहरा लेना, अनुमान करना, कल्पना करना ।

मान्य ( मान्=पूजना ) ( वि० ) पूजने योग्य, मानने योग्य, माननीय ।

मान्यता ( स्त्री० ) पूजा, सत्कार, प्रतिष्ठा ।

माप ( मा=नापना ) ( पु० ) नाप, परिमाण ।

मापक ( मा=नापना ) ( पु० ) नापनेवाला, मापविद्या में दो बराबर खेतों में कोई आधे कटाव से कटे हुए खेत और बाकी दो बराबर खेतों के मिलने से मापक बनता है, पैमाना, अमीन ।

मापा ( वि० ) म्पापा, अस्तर किया, छाया ।

मामा ( सं० मामक, मम=मेरा ) ( पु० ) मा का भाई, मामू ।

माया ( मा=नापना या बनाना ) ( स्त्री० ) ईश्वर की शक्ति, कुरुरत, इंद्रजाळ, कुरक, कृपा, दया, मोह, प्यार,

नेह, मुहुरचत, छद्म, दंभ, कपट, धन, संपदा, दौलत, मायापात्र, ( वि० ) धनवान् ।

मायापति ( माया+पति ) ( पु० ) विष्णु, ईश्वर ।

मायात्री ( माया=छल ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम जो मय का बेटा था जिसको बालि ने मारा, ( वि० ) छली, फरेबी ।

मायिक ( वि० ) नट, नज़रबंद, पेंद्रजालिक ।

मायी ( वि० ) माया करनेवाला ।

मार ( मृ=मरना या मारना ) ( पु० ) मरना, काम-देव ।

मार ( मारना ) ( स्त्री० ) मारना, पीटना, लड़ाई, युद्ध, चोट ।

मारक ( पु० ) कामदेव, ( वि० ) नाशक, हिंसक ।

मारकुटाई ( मुहा० ) मारना और कुचलना, मारपीट ।

मारकेश ( पु० ) जन्मपत्र में लग्न से दूसरे या सातवें घर का स्वामी ।

मार खाना }  
मार खानी }

( मुहा० ) पीटना, मार पड़ना ।

मार गिराना ( मुहा० ) पछाड़ना, पटक देना ।

मार पड़ना ( मुहा० ) पीटना, मार खाना ।

मारपीट ( मुहा० ) मारकुटाई, मारना, पीटना ।

मार मरना ( मुहा० ) अपवात करना, आत्महत्या करना, लड़ाई में धैरी को मारकर मरना ।

मार लाना ( मुहा० ) लूट लाना, अटक लाना ।

मार लेना ( मुहा० ) मारना, जीत लेना ।

मार हटाना ( मुहा० ) जीत लेना, मारना और निकाल देना ।

मारग ( सं० मार्ग ) ( पु० ) रास्ता, राह, पंथ, घाट, डगर, पैदा ।

मारना ( सं० मारण, मृ=मरना या मारना ) ( कि० म० ) जी लेना, मार डालना, प्राण निकालना, पीटना, ठोकना, टकराना, दंड देना, सज़ा देना, नाश करना, बिगाड़ना ।

मारात्मक ( मार=मारना, आत्मा=जीव ) ( वि० ) मारने-वाला, हिंसक, घातक, शत्रु ।

मारा पड़ना ( मुहा० ) मारा जाना, टोटा होना, क्षतिहोना ।

मारा-मारा फिरना ( मुहा० ) भटकता फिरना, ढाँवाँ-ढोल फिरना, इधर-उधर फिरना, निरुद्देश्य भटकना ।

मारामारी (मुहा०) आपस में मारपीट, धौलधप्पा, लातमुक्ती ।

मारी (मृ=मरना या मारना) (स्त्री०) मरी, मौत, महामारी, हैजा या ताऊन ।

मारीच (मृ=मरना या मारना) (पु०) एक राजस का नाम जो ताड़का राक्षसी का बेटा, सुबाहु का भाई और रावण का नौकर था जिसको रामचंद्र ने मारा ।

मारुत (मृ=मारना) (पु०) हवा, वायु, बयार, पवन, वायुदेवता (मरुत् शब्द को देखो) ।

मारुतसुत (मारुत+सुत) (पु०) हनूमान्, पवन का बेटा ।

मारुतात्मज (मारुत+आत्मज) (पु०) वायुपुत्र, हनूमान् ।

मारू (मृ=मारना) (पु०) लड़ाई का बाजा, एक रागिनी का नाम जो लड़ाई में गाई जाती है ।

मारें (अव्य०) निमित्त से, कारण ।

मार्कंडेय (पु०) एक मुनि का नाम, मुकुंद मुनि का पुत्र ।

मार्ग (मृज्=साफ करना या मृग् या मार्ग=खोजना) (पु०) रास्ता, याट, पंथ, मग ।

मार्गण (मार्ग+अन, मार्ग=हूँदना) (पु०) बाण, अन्वेषण, भिक्षा, तलाश ।

मार्गध (पु०) व्याध, अहेरी ।

मार्गांशुर } (मृगशिरा एक नक्षत्र का नाम है, इस महीने  
मार्गशीर्ष } में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और  
इस महीने का पूर्णमासी के दिन वह नक्षत्र होता है)  
(पु०) अगहन, मँगसर, मगसिर ।

मार्गित (वि०) तलाश किया गया, ढूँढ़ा गया ।

मार्ग्य (वि०) ढूँढ़ने योग्य ।

मार्जन (मृज्=शुद्ध करना) (पु०) शुद्ध करना, पवित्र करना, साफ करना, संध्या-पूजा आदि करने के पहले पवित्रता के लिये शरीर पर पानी छिड़कना ।

मार्जनी (स्त्री०) झाड़ू, बढ़नी ।

मार्जनीय (वि०) साफ करने योग्य ।

मार्जार (मृज्=शुद्ध करना या मलना) (पु०) बिल्लाव ।

मार्तंड (मृतण्ड=मृय का बाण) (पु०) सूर्य, शूकर ।

माल (पु०) मरुज, पहलवान, योद्धा, धन, द्रव्य ।

मालका } (माला) (स्त्री०) माला, हार, पाँत,  
मालिका } पाँति, श्रेणी, पंक्ति ।

मालती (माल=विष्णु, अतः=जाना अर्थात् विष्णु को चढ़ना या मा=शोभा, ला=लेना) (स्त्री०) एक फूल का नाम, चमेली ।

मालपूर्वा (पु०) मीठा पूवा, एक प्रकार की मीठी पूरी ।

मालव (पु०) मालवादेश ।

माला (मा=शोभा, ला=लेना) (स्त्री०) फूलों का हार, सोने या मोती आदि का हार, सुमरना, जपमाला, पाँत, पंक्ति, श्रेणी, कतार ।

मालाकार (माला=हार, कार=करनेवाला, कृ=करना) (पु०) माली, बागवान ।

मालादीपक (पु०) अर्थालंकार-भेद ।

मालिन (स्त्री०) माली की स्त्री ।

मालिन्य (पु०) मैलापन, मलीनता, मैल ।

माली (माला) (पु०) बागवान, मालाकार ।

माल्य (माला) (वि०) माला के योग्य, (पु०) फूल, माला, हार ।

मावस (सं० अभावस्था) (स्त्री०) अंधेरे पास की पंद्रहवीं तिथि, अमावस ।

मावा (पु०) अंडे का पोलापन, खोआ ।

माशुक्त (पु०) प्रिय, प्यारा ।

माशुक्ता (स्त्री०) प्यारी, प्रिया ।

माष (पु०) क्रोध, कोप, उद्ध ।

माषा } (सं० माष, मष्=अंदाज करना) (पु०)  
माशा } आठ रत्ती की तौल ।

मास (मा=मापना) (पु०) महीना, ३० दिन, मांस, गोरोन ।

मासकषार (पोर्तुगाल की भाषा का शब्द—mes महीना acabar पूरा होना—मे बिगड़ा हुआ) (पु०) महीने के अंत का दिन, साहवारी नक्रशा; यह शब्द मास एक बार से भी बना मालूम होता है क्योंकि साहवारी नक्रशे आदि महीने में एक बार भेजे जाते हैं ।

मासन (पु०) ओषधि-विशेष ।

मासांत (मास + अन्त) (पु०) पूर्णमासी, संक्रांति ।

मासिक (मास) (वि०) जो महीने महीने मिले, (पु०) तनखा, वेतन, हर एक महीने में अमावस के दिन का आद ।

१. मृते अण्डे मवः मार्तण्डः शकन्वादिरिति ।

मासी ( मं० मात् + स्वम्, मात्=मा, स्वम्=बहन )

( स्त्री० ) मा की बहन, मौसी ।

मासुरी ( स्त्री० ) दाढ़ी ।

मासूम ( वि० ) अल्पायु, छोटा बच्चा ।

मास्य ( वि० ) मासिक, माहवारी, मापसंबंधी ।

माह ( पु० ) महीना, मास, माघ ।

माहर ( पु० ) फल-विशेष, इसकी गंध से सर्प नहीं आता ।

माहात्म्य ( पु० ) बड़ाई, महत्त्व, प्रताप, प्रभाव ।

माहि ( अव्य० ) मध्य, बीच में, माँक ।

माहियत ( स्त्री० ) दशा, हाजर ।

माहिर ( पु० ) देवराज, ईंद्र ।

माहिय ( वि० ) भैससंबंधी ।

माहिष्य ( पु० ) वर्णसंकर जाति, वेश्या के गर्भ में क्षत्रिय से पैदा हुई संतान ।

माही ( पु० ) मछली ।

माहीणीर ( पु० ) मछुवा, मछली मारनेवाला ।

माहुर ( पु० ) जहर, विष ।

माहेश्वरी ( महेश ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, पार्वती, शिवरानी, वैश्य की एक जाति ।

मिक्रदार ( कि० वि० ) परिमाण, अंदाज ।

मिकराज ( स्त्री० ) कैंची, कतरनी, छुरा, अस्तुरा ।

मिचना ( कि० अ० ) बंद होना, मुँदना ।

मिचराना ( कि० अ० ) मिचलाना ।

मिचलाना ( कि० अ० ) मीचना, आवें मुँदना, अरुचि होना ।

मिज़राब ( पु० ) लोहे के तार की बनी हुई एक चीज़ जिससे सितार बजाते हैं ।

मिज़ाज ( पु० ) चित्त, तबियत ।

मिज़ाजदार ( वि० ) अभिमानो, घमंडी ।

मिटना ( सं० मृष्ट, मृज्=माफ करना ) ( कि० अ० ) बिगड़ना, साफ़ होना, दूर होना, चला जाना, सिलरट होना, नाश होना ।

मिटिया ( मिट्टी ) ( वि० ) एक तरह का रंग, खाकी रंग, ( स्त्री० ) मिट्टी का बर्तन ।

मिट्टू ( पु० ) प्यारा तोता, ( वि० ) मीठा बोलनेवाला, खुशामदी ।

मिठाई ( सं० मिष्टान्न, मिष्ट=मीठा, अन्न=अनाज ) ( स्त्री० )

शीरीनी, मीठी चीज़, मीठा पकवान मिठास, मधुरता ।

मिठास ( सं० मिष्टांश, मिष्ट + अंश ) ( पु० ) मिठाई, मीठापन ।

मिट्टी ( स्त्री० ) चुग्मा, बच्चों का चुंबन ।

मित ( मा=नापना ) ( वि० ) न.पा हुआ, मापा हुआ, परिमित ।

मितपत्र ( पु० ) कंजूस, किरायनी ।

मितप्रद ( पु० ) थोड़ा देनेवाला ।

मिति ( स्त्री० ) ररिमाण, तादाद, अंत, मर्याद ।

मिती ( मं० मिति, मा=नापना ) ( स्त्री० ) तिथि, दयाज, सूद ।

मित्र ( मिद=प्यार करना ) ( पु० ) जो प्रत्युपकार की इच्छा से उपकार करे या स्नेह करे वह मित्र है, दोस्त, स्नेही, प्यारा, हितु, बंधु, सखा, सुहृद्, सूर्य ।

मित्रता ( मित्र ) ( स्त्री० ) मिताई, मित्रता, दोस्ती, प्यार, हित ।

मित्रद्रोही ( वि० ) मित्र का वैरी ।

मित्रवर्ग ( पु० ) सुहृद्गण ।

मित्राई { ( सं० मित्रता ) ( स्त्री० ) दोस्ती, प्यार ।  
मिताई

मिथस् ( मिथ्=मिलना या समझना ) ( कि० वि० ) आपस में, एक दूसरे को, परस्पर, बाहम ।

मिथिला ( मिथ्=नाश करना वरियों को ) ( स्त्री० ) तिरहुत, राजा जनक की नगरी, जनकपुर ।

मिथिलेश ( मिथिला + ईश ) ( पु० ) जनक राजा ।

मिथिलेशकुमारी ( मिथिलेश + कुमारी ) ( ) जनकदुलारी, जानकी, सोता, वैदेही ।

मिथिलेशि ( मिथिलेश ) ( स्त्री० ) जनक राजा की रानी ।

मिथुन ( मिथ्=मिलना या समझना ) ( पु० ) जोड़ा, स्त्री-पुरुष, ज्योतिष में एक राशि का नाम ।

मिथ्या ( मिथ्=मारना या हानि पहुंचाना ) ( कि० वि० ) अथवा ( वि० ) द्रोण, झूठ, असत्य, अनर्थ ।

मिनती ( स्त्री० ) विनती, प्रार्थना, चिरोरी ।

मिमियाना ( कि० अ० ) बकरी का शब्द करना, में-में शब्द करना ।

मिरगी ( स्त्री० ) एक रोग का नाम ।

मिरजई ( ) कमर तक की अँगरखी ।  
मिर्जई

मिरज़ा ( पु० ) मुगलों की पदवी ।  
 मिरासी ( पु० ) रंडी का साजिदा, रंडी का भंडुआ ।  
 मिर्च ( सं० मरिच, मृ=मरना ) ( स्त्री० ) एक मसाले का नाम, गोल मिर्च=काजी मिर्च ।  
 मिर्दंग ( पु० ) पखावज, मृदंग, वाद्य-विशेष ।  
 मिर्दहा ( पु० ) अर्दली, ग्रामवासी ।  
 मिलक ( वि० ) संधिकारी, मेल करनेवाला ।  
 मिलन ( मिल्=मिलना ) ( पु० ) मिलना, मेल, मिलाप, संयोग ।  
 मिलनसार ( मिलन ) ( वि० ) मेली, मिलापी ।  
 मिलना ( सं० मिलन ) ( क्रि० अ० ) मिलाप होना, भेंटना, मिखा रहना, पँचमेल होना, गड़बड़ हो जाना, पाना, एक होना, बराबर होना ।  
 मिलना-जुलना ( मुहा० ) सदा मिलते रहना, सचाई से मिलना, मेल-मुलाकात होना ।  
 मिलना-हिलना ( मुहा० ) इकट्ठा रहना, शामिल रहना ।  
 मिले-जुले रहना ( मुहा० ) मेल से रहना, मिलाप से रहना ।  
 मिलाप ( मिलना ) ( पु० ) मेल, बनाव, भेंट, योग, संयोग ।  
 मिलित ( मिल्=मिलना ) ( वि० ) मिला हुआ, लगा हुआ ।  
 मिश्र ( मिश्र=मिलना ) ( वि० ) मिला हुआ, ( पु० ) ब्राह्मणों की पदवी, प्रतिष्ठित मनुष्य, आर्यहिंदू-वैद्य ।  
 मिश्रक ( मिश्र + अक ) ( वि० ) मेलक, मिखानेवाला, देवोद्यान, देववन ।  
 मिश्रकेशी ( स्त्री० ) स्वर्गवेश्या ।  
 मिश्रित ( मिश्र=मिलना ) ( वि० ) मिखा हुआ, जुड़ा हुआ, युक्त ।  
 मिष ( मिप्=हिस्का या बगवरी करना ) ( पु० ) छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट, हिस्का ।  
 मिष्ट ( मिप्=सौंभना ) ( वि० ) मीठा, मधुर ।  
 मिष्टान्न ( मिष्ट+अन्न ) ( पु० ) मिठाई, शीरीनी, पकवान ।  
 मिस { पु० ) कारण, सबब, हीला, बहाना ।  
 मिसि {  
 मिसु {  
 मिसना ( क्रि० स० ) चूर्ण करना, पिसना, मलना ।

मिसल ( पु० ) मुकदमे के कागज़ों का मुट्ठा ।  
 मिसाल ( पु० ) उदाहरण, नज़ीर, दृष्टांत ।  
 मिखी ( पु० ) कारीगर ।  
 मिस्सी ( स्त्री० ) काले रंग का चूर्ण जिसको स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं ।  
 मिहदी } ( सं० मेन्धी, मा=शोभा, इन्ध=चमकना )  
 मेंहदी } ( स्त्री० ) एक पौधा जिसकी पत्तियों से स्त्रियाँ अपने हाथ रचाती हैं ।  
 मिहना ( पु० ) बोलीठोली, ताना ।  
 मिहरा ( पु० ) मेहरा, हिजड़ा, ज़नाना, जनस्रा ।  
 मिहरारू } ( सं० महिला, मद्=पूजना ) ( स्त्री० )  
 मिहरिया } लुगाई, नारी, स्त्री ।  
 मिहरी ( स्त्री० ) मिहरिया स्त्री, भार्या, पत्नी ।  
 मिहाना ( क्रि० अ० ) गोला होना, भोगना ।  
 मिहिका ( स्त्री० ) नीहार, कुहिरा, हिम, बर्फ़ ।  
 मिहिर ( पु० ) सूर्य, आकृताब् ।  
 मींगी ( स्त्री० ) बीज, गूदा, सार, मज्जा, मेद ।  
 मीजना ( सं० मृज्=साफ़ करना ) ( क्रि० स० ) मसलना, मलना, रगड़ना ।  
 मीजू ( पु० ) मसूर, कलाई-विशेष ।  
 मीच ( सं० मृच्यु ) ( स्त्री० ) मरण, मृत्यु, मीत, क़ज़ा । जैसे —  
 चितनीय द्वय बस्तु हैं सदा जगत के बीच ।  
 ईश्वर के पदपद्मयुग और आपनी मीच ॥  
 मीचना ( क्रि० स० ) साँवें बंद करना, मूँदना, ढाँकना, मरना ।  
 मीठा ( सं० मिष्ट ) ( वि० ) मधुर, मिष्ट, धीमा ।  
 मीठिया ( पु० ) } चुम्मा, बोसा ।  
 मीठी ( स्त्री० ) }  
 मीणा { ( पु० ) जंगली आदमियों की एक जाति जो  
 मीना } चोर और डाकू होती है । जैसे —  
 निंदहि आप सराहहि मीना ।  
 धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥  
 —रामायण  
 मीत ( सं० मित्र ) ( पु० ) मित्र, दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा ।  
 मीन ( मी=मारना ) ( स्त्री० ) वा ( पु० ) मछली, एक राशि का नाम ।  
 मीनकेतन ( मीन=मछली, केतन=पताका ) ( पु० ) कामदेव ।

मीनार (पू०) लाट, ऊँचा खंभा ।

मीमांसक (मीमांसा) (पू०) मीमांसाशास्त्र का जानने-  
वाला, विचार करनेवाला ।

मीमांसा (मान=विचारना) (खी०) छः शास्त्रों में से  
एक शास्त्र, सिद्धान्त, विचार ।

मीमांसित (वि०) विचारित, विचारा गया ।

मीमियाना } (क्रि० अ०) में-में करना, बकरी के  
मिमियाना } बच्चे का बोलना ।

मीर (पू०) समुद्र, सीमा, सरदार, संयद ।

मील (पू०) १७६० गज की लंबाई, वन, जंगल ।

मीलन (मील=पलक मार्गना) (पू०) टिमकाना, टिम-  
टिमाना, मिलन, संकोच ।

मीलित (वि०) संकुचित, घँघा हुआ ।

मुँडना (क्रि० रा०) इजामत बनवाना, धोखा खाना ।

मुँडासा (पू०) मिरबंथा, दुपट्टा ।

मुँडंग (पू०) दीवार का सबसे ऊँचा भाग, दीवार का  
सिरा ।

मुँदना (क्रि० अ०) बंद होना, बंद करना ।

मुँह } (मे० म०) (पू०) मुखड़ा, मुख, वदन,  
मुँह } चेहरा, बल, शक्ति, जोर, योग्यता ।

मुँह अंधेरा (मुहा०) संध्या, साँझ, शाम, कुछ-कुछ  
अंधेरा ।

मुँह अपना-सा लेकर फिर जाना (मुहा०) निराश  
होकर चला जाना ।

मुँह आना (मुहा०) मुँह में छाले हो जाना, रोग-  
विशेष ।

मुँह उतर जाना (मुहा०) उदास हो जाना ।

मुँह करना (मुहा०) सामने होना, मिलाना, बराबरी  
देना, गाली देना, फोड़े में छेद करना, फोड़े या  
घाव का फूटना, सबसे पहले इमला करना (जैसे  
शिक्काई कृता या और जानवर दूसरे कृते या जानवर पर  
करते हैं) किसी चीज़ या जगह की ओर देखना या  
उस तरफ़ पैर उठाना ।

मुँह का फूहड़ (मुहा०) बुरी बात बोलनेवाला, बद-  
ज़बान, निंदक ।

मुँह काला (मुहा०) कलंक, अपमान, अनादर, बुराई ।

मुँह काला करना (मुहा०) कलंक लगाना, दाग  
लगाना, आबरू उतराना, सज़ा देना, चले जाना ।

मुँह के कौवे उड़ जाना (मुहा०) उदास दिखाई देना,  
व्याकुल दिखाई देना ।

मुँह खोलना (मुहा०) गाली देना, निंदा करना ।

मुँह चढ़ाना (मुहा०) हिलमिल जाना, मुँह जगाना,  
सामना करना, सम्मुख होना ।

मुँह चलाना (मुहा०) काटना, काटा चाहना ( जैसे  
घोड़ा ) ।

मुँहचोर (मुहा०) शर्माला, लजीज़ा, डरपोक ।

मुँहचोरी (मुहा०) लाज, शर्म ।

मुँह छिपाना (मुहा०) लाज से मुँह ढकना ।

मुँह ठठाना (मुहा०) किसी के मुँह पर तमाचा मारना,  
थपड़ मारना ।

मुँह डालना (मुहा०) माँगना, याचना, चाहना, काटना  
( जैसे घोड़ा ) ।

मुँह तकना (मुहा०) चकित रह जाना, भौचक रहना,  
घबराना, व्याकुल होना ।

मुँह तोड़ना (मुहा०) खिझाना, मुँह में मारना, तक-  
बीफ़ देना ।

मुँह तो देखो (मुहा०) यह मुहावरा उम्र जगह बोला  
जाता है जब कोई आदमी अपनी ताकत या  
योग्यता से अधिक कोई काम करने की डींग  
हाँकता हो ।

मुँह थुथाना (मुहा०) मुँह बन्दाना ।

मुँहदिखाई (खी०) जब नई दुलहिन आती है तब  
उसको उसकी सास, नंद आदि सुसराल की  
लुगाइयाँ मुँह देखकर रुपया अथवा गड़ना आदि  
देती हैं, उसको मुँहदिखाई कहते हैं ।

मुँह देखकर बात करना (मुहा०) खुशामद करना,  
मेसी बात कहना जो सुननेवाले के मन भाये ।

मुँह देखना (मुहा०) मदद चाहना, सहायता माँगना,  
किसी का बहुत आदर-सम्मान करना, घबराना या  
बेबश होना ।

मुँह देख रहना (मुहा०) अचंभे में किसी का मुँह  
ताकना ।

मुँह देखे की प्रीति (मुहा०) किसी के सामने प्यार  
की बातें करना और उसके पीठ पीछे उसका कुछ  
ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मित्रता अथवा प्यार ।

मुँह पर गर्म होना (मुहा०) बड़े आदमी के अथवा



अपने अक्रसर के सामने बैअदबी अथवा दिठाई से बंजना ।

मुँह पर लाना ( मुहा० ) कहना, अताना ।

मुँह पर हवाई उड़ना ( मुहा० ) मुँह का रंग बदल जाना ।

मुँह पसारना ( मुहा० ) अर्चने में होकर मुँह फाड़ना, जमुहाना ।

मुँह फेरना ( मुहा० ) किसी काम के करने से रुक जाना ।

मुँह फैलाना ( मुहा० ) घमंड करना, बहुत चाहना, जमुहाना, जमुहाई लेना, लालच करना ।

मुँह बंद करना ( मुहा० ) किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना, कुछ देकर संतुष्ट करना, कायल करना ।

मुँह बनाना ( मुहा० ) मुँह थुथाना, भीं टेढ़ी करना, थ्योरी चढ़ाना ।

मुँह बाना ( मुहा० ) मुँह खोलना, मुँह फाड़ना, जमुहाना, जमुहाई लेना, माँगना ।

मुँह बिगाड़ना ( मुहा० ) अप्रमत्त होना, नाराज़ होना, बुरा मानना, रिसाना, कोई कड़वी या बुरी चीज़ के खाने से मुँह का स्वाद बिगाड़ जाना ।

मुँह बिगाड़ना ( मुहा० ) भीं टेढ़ी करना, थ्योरी चढ़ाना, मुँह बनाना ।

मुँहबोला ( मुहा० ) माना हुआ, किया हुआ, धर्म का, जैसे मुँहबोला भाई=धर्म का भाई, वह आदमी जिसको अपना भाई करके माने ।

मुँहभरी ( मुहा० ) शिवन, वृष, अक्रोर ।

मुँहमाँगा ( मुहा० ) जैसा चाहा वैसा ही, जैसा मुँह से माँगा वैसा ही ।

मुँह मारना ( मुहा० ) चुप करना, जीभ पकड़ना, मुँह बंद करना, काटना ।

मुँह में पानी आना या पानी भर आना ( मुहा० ) किसी चीज़ को बहुत चाहना, किसी चीज़ के लिये बहुत ललचाना ।

मुँह मोड़ना ( मुहा० ) फिर जाना, चला जाना, किसी काम के करने से रुक जाना ।

मुँह लगाना ( मुहा० ) मिच आदि चरपरी चीज़ से मुँह जकनना या चरपराना, हिजमिल जाना, मुसाहिब होना, पक्का दोस्त होना, ठीठ होना ।

मुँह लगाना ( मुहा० ) छोटे आदमी से मेल करना, हिलाना, मुसाहिब बनाना, ठीठ बनाना ।

मुँह लेके रह जाना ( मुहा० ) शर्म से चुप हो जाना ।

मुँह सिकुड़ना ( मुहा० ) मुँह का रंग बदलना ।

मुँह से फूल भड़ना ( मुहा० ) गाली देना, धिकारना, झिड़कना, मधुर हास्य करना ।

मुँहामुँह ( मुहा० ) खूब पूरा भरा हुआ, लबालब ।

मुअज़िज़ ( वि० ) हज़तदार ।

मुअज़िज़ा ( पु० ) अद्भुत, अचंभा, करामात ।

मुअतवर ( वि० ) विश्वस्त, भरोसेवाला ।

मुअत्तर ( वि० ) सुगंधित, महकदार ।

मुअस्सिर ( वि० ) असर रहनेवाला ।

मुअ्रा ( पु० ) मुरा, मरा हुआ ।

मुकद्दम ( पु० ) प्रधान, अग्रगता ।

मुकद्दमा ( पु० ) अभियोग, मुआमिला ।

मुकरना ( कि० सं० ) न करना, इनकार करना, नटना ।

मुक्तर ( पु० ) नौकर रखना, नियुक्त करना ।

मुकरी ( मुकरना ) ( स्त्री० ) एक तरह का छोटा छंद जो वज्रभाषा में बहुत आता है और जिसमें चार पद होते हैं; उसमें से पहले तीन पदों से ऐसा जाना जाता है कि बोलनेवाली स्त्री अपने प्रियतम की यात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है कि क्यों सखी 'मजन' यह हुआ उस पर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज़ की बताती है, जैसे—

“वा बिन चित्त चहुँ दिसि डोले ।

चातक उयों पुनि पिय पिय बोले ॥

प्रलय होय आर्थ नहिं गेह ।

क्यों सखि सजन ना सखि मेह ॥”

मुकु ( पु० ) मोक्ष, उत्सर्ग, छोड़ना ।

मुकुट ( मकु+उट, मकि=भूषण ) ( पु० ) शिरोभूषण, ताज, कलंगी ।

मुकुंद ( मुकु=प्रकृति को, मुकु में धातु मुच्=छुड़ाना, दा=देना ) ( पु० ) मुक्तिदाता, विष्णुभगवान् ।

मुकुम् ( अट्प० ) निर्वाण, मोक्ष ।

मुकुर ( मुक्+उर, मकि=भूषण ) ( पु० ) दर्पण, बकुल-वृक्ष, मौलिश्री, कुम्हार का डंढा, मल्लिकावृक्ष ।

मुकुल ( पु० ) अधखिली कली, कली, बीर ।

मुकुलित ( वि० ) कलियाना, कलिकायुक्त, पुष्पित, अधखिला, अर्द्धस्फुटित ।

मुकेल ( पु० ) नकेल, ऊँट का नथना ।

मुक्का ( म० मुष्किका ) घोंसा, धौल, चपेट ।

मुक्त ( मृत्=खोदना या छूटना ) ( वि० ) छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, जिसकी मुक्ति हो गई हो, प्रसन्न, आनन्दित, विहा, बरी, करामत पाया हुआ ।

मुक्कामाल ( म० मुक्कामाला ) ( पु० ) मोती की माला ।

मुक्कहस्त ( वि० ) बड़ा दानी, प्रयत्नात् ।

मुक्का ( मृत्=छूटना या खोदना, जो साँप से छूटा है ) ( पु० ) मोती ।

मुक्का ( वि० ) बहुत ब घना ।

मुक्काफल ( मुक्का + फल ) ( पु० ) मोती ।

मुक्कावली ( मुक्का + अवली ) ( स्त्री० ) मोती की माला, मोती का हार ।

मुक्काहल } ( म० मुक्काफल ) ( पु० ) मोती ।  
मुकुताहल }

मुक्ति ( मृत्=छूट जाना ) ( स्त्री० ) छुटकारा, संसार के दुःख अथवा पाप से छूट जाना, मोक्ष, गति, उद्धार, प्राण ।

मुक्तिदाता ( पु० ) मुक्ति देनेवाला, ज्ञान, सद्गुरु, उद्धारक ।

मुक्त ( मृत्=खोदना जो धमा का खाँदा हुआ है ) ( पु० ) मुँह, मुखड़ा, वदन, चेहरा, ( वि० ) पहला, प्रधान, मुख्य ।

मुखड़ा ( म० मुख ) ( पु० ) मुँह, वदन ।

मुखभूषण ( मुख=मह, भूषण=शोभा ) ( पु० ) पान, बीड़ा, वाणी ।

मुखर ( मुख=मह की बात, म=लेना अर्थात् मह में बुरी बात, वाचान, बहुत बोलनेवाला ) ( वि० ) कड़वी बात बोलनेवाला, दुर्वचन बोलनेवाला, ( पु० ) प्रधान, मुखिया, शब्द, काक, शंख ।

मुखलांगल ( मुख=मह, लांगल=हर ) ( पु० ) शूकर, सुअर ।

१. विषयाशामहापाशाद्यविमुक्तः सुदुस्त्यजात् ।

स एव कल्पते मुक्त्ये नान्यः पश्यान्व्येवपि ॥

मुखवल्लभ ( पु० ) दाहिम, अनार ।

मुखशुद्धि ( स्त्री० ) मुखप्रक्षालन, दंतधावन, पान इलायची आदि ।

मुखस्थ ( वि० ) मौखिक, कंठाग्र, जिह्वाग्र ।

मुखागर ( म० मुखाग्र, मुख=मुँह, अग्र=अग्नी या अगला भाग ) ( पु० ) जवानी, मुँह से कहना, लगाम ।

मुखापेक्षा ( स्त्री० ) अनुरोध, पक्षपात ।

मुखामुखी ( स्त्री० ) मुँहामुँही, आमने-सामने ।

मुखालिफ ( पु० ) शत्रु, वैरो ।

मुखावलोकन ( पु० ) मुख देखना, मुखदर्शन ।

मुखिया ( म० मुख्य ) ( वि० ) प्रधान, मुख्य, पहला ।

मुख्य ( मुख ) ( वि० ) प्रधान, मुखिया, पहला, श्रेष्ठ ।

मुग्ध ( मृद्=यंचित होना ) ( वि० ) मूर्ख, अज्ञानी, सुंदर, मनोहर, कमसिन ।

मुग्धा ( मृग्धा ) ( स्त्री० ) जवान और सुंदर स्त्री, एक प्रकार की नायिका ।

मुचक ( पु० ) लाख, लाक्षा ।

मुचकुंद ( पु० ) सूर्यवंशी राजा, मान्धाता का बेटा; जिसको श्रीकृष्ण ने मुक्ति दी, एक पुष्प ।

मुच्चा ( पु० ) साँस का टुकड़ा ।

मुजरा ( पु० ) सलाम, राम राम, प्रणाम, नमस्कार, राजपूताने में 'सलाम' या 'आदाब' की जगह छोटा बड़े की और बराबरीवाला बराबरीवाले को 'मुजरा' करते हैं, मिनहा करना, काटना, चेश्या का गान ।

मुजरिम ( पु० ) अपराधी, क्रसूरवार ।

मुज ( मुजि=शब्द करना ) ( स्त्री० ) मूँज, काँस के छिलके जिनकी रस्सी बनती है ।

मुट्टाई ( स्त्री० ) } ( मोटा ) मोटापन, स्थूलता ।  
मुट्टापा ( पु० ) }

मुट्टी ( म० मुष्टि ) ( स्त्री० ) मुक्की, बुक्का, बुकटा, मुक्का ।

मुट्टभेड़ ( मुह० ) सामना होना, मिल जाना ।

मुठिया ( म० मुष्ठिका ) ( स्त्री० ) मुट्टी-भर, हाथ-भर ।

मुडना ( कि० अ० ) पीछे हट जाना, भुक्त जाना, बल खाना, टेढ़ा होना ।

मुडियाना ( कि० अ० ) मुडना, घूमना, फिरना ।

मुड्ड ( म० मुण्ड ) ( पु० ) प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

मुंड ( मुडि=मुंडना ) ( पु० ) सिर, माथा, मस्तक,

मुँद, कपाल, एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गाजी ने मारा, (वि०) मुँड़ाया हुआ।

मुंडक (पु०) नाऊ, नापित, हजाम।

मुंडखई (स्त्री०) बकवाद करना, सिर खाना, बेक्रायदा बकना।

मुंडन (मुडि=मुँड़ाना) (पु०) मुँड़ाना, बाल बनवाना, सोखह संस्कारों में से एक, हिंदुओं में एक रीति है कि पहलेपहल किसी देवता के सामने लड़के के बाल मुँड़वाते हैं उसको मुंडन या मुँड़ना कहते हैं।

मुंडमाला (मुण्ड + माला) (स्त्री०) आदमियों के सिरों की माला।

मुंडित (मुडि=मुँड़ाना) (वि०) मुँड़ा हुआ, भद्र।

मुडिया (सं० मुण्ड) (पु०) सिर, माथा, मस्तक, जिसका सिर घुटा हुआ हो।

मुंडी (पु०) नापित, नाई, हजाम, संन्यासी।

मुंडू (पु०) संन्यासी, यनी, मुंडित सिर।

मुंडेर, मुँड़ेरी (स्त्री०) छोटी भोत।

मुतअल्लिक (वि०) नातेदार, संबंधी, संबंध में।

मुतना (वि०) खटमुतबा, जो निद्रावस्था में खाट पर ही मृत दे।

मुद } (मुद=प्रसन्न होना) (स्त्री०) प्रसन्नता, खुशी,  
मुदा } हर्ष, आनंद, सुख।

मुदर्सि (पु०) पढ़ानेवाला।

मुदित (मुद=प्रसन्न होना) (वि०) प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, खुश।

मुदिर (मुद + इर) (वि०) कातक, कामी, मेघ।

मुदी (स्त्री०) चंद्रिका, ज्योत्स्ना, प्रीति, हर्ष।

मुदुग (पु०) मूँगाग्रज, कृनात, तंबू, मूल, परदा, गिलाफ।

मुदगर } (मुद=खुशी को, गू=निकालना) (पु०) एक  
मुदगर } बहुत भारी पत्थर जिसके बीच में पकड़ने को कटा हुआ ऋद्धा होता है जिसको मरल और पहलवान हाथ से पकड़कर ऊँचा उठाते हैं, लकड़ी के भी ये बनते हैं। बेले का वृक्ष।

मुदई (पु०) वैरी, प्रार्थी, वादा।

मुद्रा (मुद=प्रसन्न होना) (स्त्री०) रुपया, अशर्की आदि, छाप, मुहर, अँगूठी, छवळा, योगियों के कानों के कुंडल, संन्या-पूजा में उँगलियों को आपसमें मिलाना, जैसे—धेनुमुद्रा, योनिमुद्रा आदि, टकसाळ।

मुद्रिका (मुद्रा) (स्त्री०) ऐसी अँगूठी जिस पर अपना नाम खुदा हो।

मुद्रित (मुद्रा) (वि०) छपा हुआ, छपा गया, मुहर लगा हुआ, मुँदा हुआ, जो खिला न हो, बंद।

मुद्रा (मुद=अज्ञानी होना या अचेत होना) (कि० वि०) भूठ, बेक्रायदा, वृथा, व्यर्थ, निरर्थक।

मुनाफ़ा (पु०) छात्र, फ़ायदा।

मुनासिब (पु०) उचित, ठीक।

मुनि (मन्=जानना) (पु०) दुःखेश्वरनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते ॥ (अर्थ) दुःख-सुख में एक-सा, राग-भय और क्रोध-रहित, स्थिरबुद्धि मुनि कहाता है; ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सात को संख्या।

मुनिघरनी (सं० मुनिगृहिणी) (स्त्री०) मुनि की स्त्री।

मुनिंद (सं० मुनिंद) (पु०) बड़ा ऋषि, श्रेष्ठ मुनि, मुनीश, ऋषिराज।

मुनिपट (पु०) वस्त्रक, भोजपत्र।

मुनिपुंगव (मुनि=ऋषि, पुंगव=श्रेष्ठ) (पु०) मुनियों में श्रेष्ठ, मुनिवर, मुनिनायक।

मुनिराज } (मुनि+राजा) (पु०) प्रधान ऋषि,  
मुनिराय } मुनीश।

मुनिंद } (मुनि=ऋषि, इंद्र या ईश=स्वामी) (पु०)  
मुनींद्र } मुनिवर, पिश्वरराज, मुनिंद, बड़ा ऋषि।  
मुनीश }

मुनीय (पु०) मालिक, स्वामी, मुरब्बी।

मुनीम (पु०) हिसाब लिखनेवाला, क्लर्क।

मुंतकिल (पु०) दूसरे को देना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

मुंदना (सं० मुदण) (कि० अ०) बंद होना, मिथना, ढकना।

मुंद्रा (पु०) कड़ा, गोरखपंथी साधुओं के कान में डाली हुई गोल वस्तु-विशेष।

मुंद्रा (स्त्री०) अँगूठी, मुँदरी, मुद्रिका।

मुन्यन्न (मुनि+अन्न) (पु०) नीवार, तिन्नी का चावल।

मुंशी (पु०) लेखक, मुहर्रिर।

मुंसिफ़ (पु०) ज़ाज़ी, न्यायाधीश।

मुफलिस (पु०) निर्धन, कंगाल, बेज़र।

मुफ्रीद (वि०) फ़ायदेमंद, लाभदायक।

मुफ्त ( पु० ) विना मूल्य, सेंटमेंट, वेदाम ।  
 मुमाखी ( स्त्री० ) शहद की मक्खी ।  
 मुमानिश्चत ( स्त्री० ) रुकावट, मनाई ।  
 मुमुत्तू ( वि० ) मुक्ति का इच्छुक, मुक्ति चाहनेवाला ।  
 मुमुषु ( वि० ) स्तत्राय, आसन्नमृत्यु, गरणाशंकी, क्रीमुत्सर्ग ।  
 मुर ( मुर=घरना ) ( पु० ) एक राजस का नाम, जिसके पाँच सिर थे, उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।  
 मुरई ( सं० मूल ) ( स्त्री० ) मूली ।  
 मुरकना ( कि० अ० ) गेंटना, नवों में बल पड़ना, हड्डो का झुक जाना ।  
 मुरकी ( स्त्री० ) कान का एक गहना, देड़ी, गेंठी ।  
 मुरचंग ( स्त्री० ) एक तरह का बाजा ।  
 मुरज ( पु० ) सूर्य, राजा-विशेष, ( स्त्री० ) कुंवर की पत्नी ।  
 मुरझाना ( सं० मूर्च्छन, मूर्च्छ=मुरझाना ) ( कि० अ० ) सूख जाना, कुम्हलाना ।  
 मुरदा ( पु० ) मुरा, लाश, शव ।  
 मुरमुरा ( पु० ) चबना-विशेष ।  
 मुरला ( पु० ) पोपला, पत्नी-विशेष, मोर. ( स्त्री० ) एक नदी ।  
 मुरली ( मुर=घरना श्रीं ला=लेना ) ( स्त्री० ) वंशी, बाँसुरी ।  
 मुरलीधर ( मुरली=वशी, धर=रामनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, वंशीधर ।  
 मुरहा ( वि० ) नटखट, चोहली, ( पु० ) मयूर ।  
 मुराई ( स्त्री० ) कुँतड़ा, कोहरी, शाकभात्री बेचनेवाला ।  
 मुराद ( स्त्री० ) अभिलाषा, मिश्रत ।  
 मुरारि ( मुर+रारि ) ( पु० ) विष्णु, श्रीकृष्ण ।  
 मुरेठा ( पु० ) साफा, फेंटा ।  
 मुरैला ( पु० ) मोर का बच्चा, छोटा मोर ।  
 मुरा ( पु० ) छुईं दर, पटाव्वा, ( स्त्री० ) एक तरह की भैंस ।  
 मुलतानी ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम, ( वि० ) मुलतान की ( जैमि मुलतानी मिठी ) ।  
 मुलहट्टी ( मूल ) ( स्त्री० ) जेरीमधु, मुरेठी ।  
 मुलाई ( मूलाना ) ( स्त्री० ) अँकाव, कूत, निर्र, मोल-तोल ।  
 मुलाकात ( स्त्री० ) भेंट, मिलाप ।  
 मुलाजिम ( पु० ) नौकर, दास, सेवक ।  
 मुलाजिमत ( स्त्री० ) नौकरी, सेवकाई ।

मुलाना ( सं० मूल्य ) ( कि० स० ) मोल करना, भाव ठहराना, आँकना ।  
 मुलायम ( वि० ) नर्म, नाज़ुक, कोमल ।  
 मुलाहिज़ा ( पु० ) मुआयना, देखना, अवलोकन, संकोच, खयाल ।  
 मुल्ला ( पु० ) शिक्षक, मास्टर, मुदरिस, मौलवी ।  
 मुशादिरा ( पु० ) वेतन, तलब, तनख्वाह ।  
 मुश्किल ( स्त्री० ) कठिन, दुःसाध्य, कठोर ।  
 मुश्की ( वि० ) काळा रंग, स्याह ।  
 मुश्क ( पु० ) बाहु, मुजा ।  
 मुश्कें बाँधना } ( मुहा० ) हाथों को पीठ पीछे बाँधना,  
 मुश्क चढ़ाना } जकड़ना ।  
 मुपित ( वि० ) चुराया हुआ ।  
 मुष्क ( पु० ) वृषण, श्रंडकोश, फ़ोता, चोर, समूह, कस्तूरी, ( वि० ) स्थूल, मोटा ।  
 मुष्ट ( वि० ) हत, चोरित, चोरी, चौरकर्म ।  
 मुष्टि ( मुष्ट=लेना या मारना जिससे ) ( स्त्री० ) मुट्ठी, मुकी, मूठी ।  
 मुसकान ( मुसकाना ) ( स्त्री० ) मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे-धीरे हँसना ।  
 मुसकाना ( कि० अ० ) मुसकुराना, धीरे-धीरे हँसना ।  
 मुसम्मा ( पु० ) नाम किया गया, नाम लिया गया ।  
 मुसम्मात ( स्त्री० ) नाम की गई, नाम ली गई, आँस्त, स्त्री ।  
 मुसल ( ( मुष्क=टुकड़े-टुकड़े करना ) ( पु० ) चावल मूसल } आदि नाज़ कटने का सोटा ।  
 मुसलमान ( पु० ) मुहम्मद का मत माननेवाला ।  
 मुसलमानी ( स्त्री० ) मुसल की रस्म, ( स्त्री० ) मुसलमान की स्त्री ।  
 मुसली ( पु० ) बलभद्र, मूसल धारण करनेवाला ।  
 मुसाफ़िर ( पु० ) पथिक, यात्री, राही, राहगीर ।  
 मुसाफ़िरखाना ( पु० ) सराय, धर्मशाखा, स्टेशन का बरामदा ।  
 मुसाहिब ( पु० ) दोस्त, मित्र, यार, साथ बैठने-उठनेवाले ।  
 मुसीबत ( स्त्री० ) आपत्ति, बुरे दिन, दुःख ।  
 मुस्तहक ( वि० ) हिस्सेदार, हक़दार ।  
 मुस्ता ( पु० ) नागरमोथा ।  
 मुस्ताजिरी ( स्त्री० ) ठेका ।  
 मुस्नैद ( पु० ) तैयार, प्रस्तुत ।  
 मुहताज ( पु० ) भूखा, दरिद्र, गरीब, इच्छुक ।

मुहर ( पु० ) सोने का सिक्का, छाप ठप्पा ।

मुहल्ला ( पु० ) नगरशाखा, शहर का हिस्सा ।

मुहाना ( मुँह ) ( पु० ) नदी का मुँह ।

मुहार ( स्त्री० ) नकल ऊँट की नाक की रस्सी ।

मुहाल ( वि० ) असंभव, नामुमकिन, मुश्किल ।

मुहासा ( पु० ) कुंसी, कुबिया, मुँह के ऊपर के दाने ।

मुहावरा ( पु० ) लोकोक्ति, बोखचाल ।

मुहिम ( स्त्री० ) बड़ा काम ।

मुहिर ( मुह+इर, मुह=मोहना ) ( पु० ) कामदेव, मूर्ख, खलवाट, बरमुढ़ा, गंजा ।

मुहुमुहुः ( अव्य० ) पुनः-पुनः, बारंवार ।

मुहूर्त ( मुहर्=वार-वार ) ( पु० ) दो घड़ी, दिन-रात का तीसरा भाग, ४८ मिनट का समय, शुभ समय, निश्चित समय ।

मूर्खा ( वि० ) मुर्दा, मरा, मृत ( अव्य० ) निरस्कारमूचक शब्द ।

मूक ( पु० ) दैत्य, दीन, गूँगा ।

मूकना ( कि० स० ) छोड़ना, त्यागना, निराश होना ।

मूंग ( सं० मृग, मृ=प्रसन्न होना ) ( पु० ) एक तरह का अनाज जिसकी दाल बनती है ।

मूँगा ( पु० ) एक चीज जो समुद्र में मिलती है और जिसकी माला बनती है; उसको नवरत्नों में गिनते हैं, विद्रुम, प्रवाल ।

मूँगिया ( मृगा ) ( वि० ) मूँग के ऐसा रंग ।

मूँछ ( स्त्री० ) होठ के ऊपर और नाक के नीचे के बाल, मोँछ ।

मूँज ( सं० मृज ) ( स्त्री० ) एक तरह की घास के छिन्नक जिनकी रस्सी बनती है ।

मूँड़ } ( सं० मृण्ड ) ( पु० ) माथा, सिर, मस्तक,  
मूँड़ } कपाल ।

मूँड़ फिकारना ( मुहा० ) सिर नंगा करना ।

मूँड़ना ( सं० मृण्डन ) ( कि० स० ) बाल काटना या कतरना, हजामत करना, चेला करना, शिष्य बनाना, फुसलाना, ठगना ।

उलटे उस्तरे से मूँड़ना ( मुहा० ) किसी को ठगना, छलना, धोखा देना ।

मूँड़ी ( सं० मृण्ड ) ( स्त्री० ) सिर, ( वि० ) मुँडी हुई ।

मूँदना ( मुँदना ) ( कि० स० ) बंद करना, सीपना, ढकना ।

मूँदरी ( सं० मुद्री या मुद्रिका ) ( स्त्री० ) अँगूठी, हज्जा ।

मूक ( मू=बंध होना ) ( वि० ) गूँगा जो बोल न सकता हो, अवाक्, मौन, ( पु० ) मर्त्य, दैत्य, दीन, प्रेत ।

मूकना ( सं० मुच्=बोड़ना, या मू=बंध करना ) ( कि० स० ) छोड़ना, त्यागना, जैसे—रामायण में 'जीवन आश वशानन मूकी ।'

मूकी ( सं० मृष्टि ) ( स्त्री० ) मुकी, मुट्टी ।

मूखा ( पु० ) दीवार, मुँडेर, मेंढ़ ।

मूगरी ( स्त्री० ) मूँगरी, कपड़े पोतने का मोगरा ।

मूचकाना ( कि० स० ) मुँह चिढ़ाना, घँठना ।

मूचना ( पु० ) चिमटी, चिमटा ।

मूछ ( स्त्री० ) मूँछ, मोँछ, होठ के ऊपर और नाक के नीचे के बाल ।

मूछाकड़ा ( पु० ) बड़ी मूँछ ।

मूछैल ( वि० ) बड़ी मूँछोंवाला ।

मूठ ( सं० मृष्टि ) ( स्त्री० ) बेंट, कब्जा, दस्ता, मुकी, मुट्टी, भर, एक प्रकार का मारण-प्रयोग ।

मूठा ( सं० मृष्टि ) ( पु० ) भरमूठ, हाथ-भर, मुक्का, कड़जा ।

मुठी ( सं० मृष्टि ) ( स्त्री० ) मुकी, मुट्टी, घूँसा, मुक्का, मुकी ।

मूढ़ ( मुह=अचेत होना या अज्ञानी होना ) ( वि० ) मूर्ख, अनपढ़, अज्ञानी ।

मूढ़ा ( पु० ) तिपाई, बिना पीठ की कुर्सी ।

मृत ( सं० मृत्, मृत्=मृतना ) ( पु० ) पेशाब ।

मूत्रकृच्छ्र ( पु० ) अशमरीरोग, पथरीरोग, मृत का बंद होना ।

मृना ( कि० अ० ) मरना ।

मृन् ( वि० ) लघु, छोटा, थोड़ा ।

मूर } ( सं० मूल ) ( पु० ) जड़, असल, मूलधन ।  
मूरि }

मूरख ( सं० मूर्ख ) ( वि० ) अज्ञानी, अनादी, मूढ़, बेवकूफ ।

मूरत ( सं० मूर्ति ) ( स्त्री० ) पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई मूरत, प्रतिमा, पुतली, आदमी, जैसे—सावु या बैरागियों में बोला जाता है कि 'कितनी मूरत हैं' अर्थात् कितने आदमी हैं ।

मूर्ख ( मुह=अज्ञानी होना ) ( वि० ) अज्ञानी, अनादी, बेवकूफ ।

मूर्च्छा ( मूर्च्छ=अचेत होना ) ( स्त्री० ) झँव, राश, बेहोशो, मोह, अचेत होना ।

मूर्च्छित ( मूर्च्छा ) ( वि० ) अचेत, बेसुध, बेहोश, मोहित ।

मूर्च्छित ( मूर्च्छ=मोहित होना जिसको देखने से ) ( स्त्री० ) मुरत, मुरत, पुतला, प्रतिमा ।

मूर्च्छज ( पु० ) बाज, केश ।

मूर्च्छय ( मूर्च्छ=मिर ) ( वि० ) मिर का, सिरसंबंधी, ( पु० ) वे अक्षर जो ताल से ऊपर जीभ लगाने से बोले जायें, जैसे—‘मृ-मृ-उ-उ-उ-उ-र-प’ ।

मूर्छा ( मूर्=बाधना या मृ=अचेत होना-अर्थात् जिसमें चोट लगने से आदमी अचेत हो जाता है ) ( पु० ) सिर, मस्तिष्क, माथा, शीश, कपाळ ।

मूल ( मूल=उद्गमना या जमाना, गंपना या मृ=बाधना ) ( पु० ) जड़, असल, वंश, कुल, संतान, असल धन, पूँजी, मूलग्रन्थ, किसी पुस्तक का सूत्र अथवा रत्नको ( पर टीका नहीं ), उल्लेखार्थ नक्षत्र ।

मूलक ( मूल=जमाना, गंपना ) ( पु० ) मूखी, मुरई ।

मूलकारिका ( स्त्री० ) महानस, रसोई, चूल्हा, चूल्ही ।

मूलधन ( पु० ) मूलद्रव्य, असल पूँजी ।

मूलभूत ( पु० ) जड़, असलियत ।

मूलिया ( स्त्री० ) मुरहा, मूल-नक्षत्र में उत्पन्न ।

मूली ( स्त्री० ) मुरई ।

मूल्य ( मूल ) ( पु० ) मोल, कीमत, भाव, निर्णय, दर, दाम ।

मूय } ( मृ=गमना ) ( पु० ) मूसा, चूहा, चोर ।  
मूयक }  
मूयिक }

मूयण ( पु० ) हरण, चोरी करना ।

मूयिका ( स्त्री० ) मूसरिया, चुहिया ।

मूसना ( सं० मृ=गमना ) ( भि० सं० ) चुराना, लसोसना, लटका ।

मूसल ( पु० ) मूसर, चावल आदि धान कटने का सौंटा ।

मूसला ( सं० मृ=दकड़-दकड़े करना ) ( पु० ) असल जड़ ।

मूसलाधार बरसना ( मुहा० ) बहुत जोर से मेह गिरना ।

मूसा ( सं० मूयक ) ( पु० ) चूहा, एक पैगम्बर ।

मृग ( मृग=खोजना ) ( पु० ) पशुमात्र, सब चौपाए जानवर, हरिण, कुरंग, हाथी, पाँचवाँ नक्षत्र, खोजना ।

मृगछाला ( मृग=हरिण, छाला=चमड़ा ) ( स्त्री० ) हिरन का चमड़ा, हिरन की खाज ।

मृगणा ( स्त्री० ) अपहृत द्रव्य का अन्वेषण, गए हुए द्रव्य का खोजना, पना लगाना ।

मृगतृपा } ( मृग=पशु, तृपा या तृष्णा और तृष्णिका=  
मृगतृष्णा } प्यास ) ( स्त्री० ) एक तरह की भाक  
मृगतृष्णिका } जो रेत के मैदानों में बालू के कणों

पर पड़ती है और तब दूर से पानी ऐसा जान पड़ता है । अथवा रेतीले देशों में बालू के कणों पर सूर्य की किरणों के पड़ने से दूर से पानी ऐसा दिखाई देता है तब प्यासे हरिण उस ओर पानी के लोभ में जाते हैं, पर पानी न पाकर उलटे फिर आते हैं इसलिये ऐसा नाम पड़ा, आब-सुराव ।

मृगनयनी ( मृग=हरिण, नयन=आँख ) ( वि० ) वह स्त्री जिसकी आँखें हरिण की-सी हों, सुंदर स्त्री, रूपवती, बड़ी आँखवाली ।

मृगनाभि ( मृग=हरिण, नाभि=नाभ में पैदा हुई चीज ) ( स्त्री० ) कस्तूरी, मृगमद ।

मृगपति ( मृग+पति ) ( पु० ) पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

मृगमद ( मृग=हरिण, मद=धमंड, अर्थात् जिस पर हरिण को धमंड रहता है ) ( पु० ) कस्तूरी ।

मृगया ( मृग=खोजने को, या=जाना ) ( स्त्री० ) शिकार, अहेर ।

मृगयु ( पु० ) व्याध, शिकारी ।

मृगराज ( मृग+राजा ) ( पु० ) पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

मृगलोचनी ( मृग=हरिण, लोचन=आँख ) ( वि० ) वह स्त्री जिसकी आँखें हरिण की-सी हों, मृगनयनी ।

मृगशिरा ( मृग=हरिण, शिरस्=सिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के सिर ऐसा है ) ( पु० ) एक नक्षत्र का नाम ।

मृगांक ( मृग=हरिण, अङ्क=चिह्न, अर्थात् जिसमें हरिण के ऐसा चिह्न हो ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा ।

मृगारि ( पु० ) सिंह, व्याघ्र, कुत्ता ।

मृगित ( मृग+इत, मृग=खोजना ) ( वि० ) अन्वेषित, दक्षित ।

मृगी ( मृग ) ( स्त्री० ) हरिणी, रोग-विशेष ।

मृगेंद्र ( मृग+इन्द्र ) ( पु० ) पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

मृग्य ( वि० ) अन्वेषणीय, दर्शनीय, दूँदने लायक ।

मृजा ( मृज्=शुद्ध करना, माजना ) ( स्त्री० ) मार्जन, मार्जना ।

मृड ( मृड=प्रसन्न करना ) ( पु० ) शिव, ( स्त्री० ) मृङ्गानी, पार्वती ।

मृण ( मृण=मारना ) ( पु० ) क्लेश, शोक, मिट्टी, ( वि० ) क्लेशद ।

मृणाल ( मृण=नाश करना ) ( पु० ) कमलनाल, कमल की डंडे, जड़ व भसीड़ा ।

मृत ( मृ=मरना ) ( वि० ) मरा हुआ, मुश्ना, मरा, मुर्दार, ( पु० ) मरण, मरना, मौत ।

मृतक ( मृ=मरना ) ( पु० ) मुर्दा, मरा, लोथ, मरा हुआ शरीर ।

मृतसंजीवनी ( स्त्री० ) विद्याभेद, औषधभेद ।

मृत्तिका ( मृद=चूर-चूर करना या मलना ) ( स्त्री० ) मिट्टी, मट्टी ।

मृत्यु ( मृ=मरना ) ( स्त्री० ) मौत, मरण, काल, ( पु० ) यम, जम, क़त्ला ।

मृत्युंजय ( मृत्यु=मौत को, जय=जीतनेवाला, जि=जीतना ) ( पु० ) शिव, महादेव ।

मृत्युनाशक ( पु० ) असृत, पारा-धातु का रस ।

मृत्युपुष्प ( पु० ) इक्षु, ऊँख, गन्ना फूलने से खराब हो जाता है ।

मृत्सा } ( स्त्री० ) प्रशस्त मृत्तिका, श्रेष्ठ मिट्टी, तुँबी,  
मृत्सना } लौकी ।

मृदग ( मृद=पीटना ) ( पु० ) ढोलक, तबलक, एक तरह का बाजा, पटह ।

मृदु ( मृद=मलना ) ( वि० ) कोमल, नरम, नम्र, मुलायम ।

मृदुता ( मृद ) ( स्त्री० ) कोमलता, नरमो, मुलायमिषत ।

मृदुल ( मृद=मलना ) ( वि० ) कोमल, नरम, नम्र ।

मृषा ( मृष्=सहना ) ( क्रि० वि० ) झूठ, मिथ्या, वृथा, झूटमूठ, बेक्रायदा ।

मृष्ट ( वि० ) शोभित, निर्मल, साक ।

मैंड ( स्त्री० ) बाँध, आड़, घेरा, पुस्ता ।

मैंडक ( सं० मण्डक ) ( पु० ) दादुर, बंग ।

मैंडुकी को ज़ुकाम होना ( मुहा० ) यह बोलचाल छोटे और नीच आदमी का घमंड जतलाने के लिये बोला जाता है ।

मैंदा } ( सं० मेह या मेह, मिह=संचिना ) ( पु० ) मेड़ा,  
मैंदा } मेघ ।

मैंह } ( सं० मेघ ) ( पु० ) वर्षा, पानी, झड़ी, वृष्टि,  
मैंह } बरसात ।

मैंहदी ( स्त्री० ) पौदा-विशेष, मिहदी, मुहरम की एक रस्म ।

मैंकलकन्यका } ( मेकल=एक पहाड़, कन्यका या सुता=  
मैंकलसुता } बेटी ) ( स्त्री० ) नर्मदा नदी ।

मैंख ( पु० ) कील, काँटा, खूँटा ।

मैंखला ( मि=फेंकना ) ( स्त्री० ) क्षुद्रघंटिका, करधनी, जनेऊ, तलवार का परतला, पहाड़ का उतार या ढाल, नर्मदा नदी ।

मैंखली ( स्त्री० ) टाट, पट्टी ।

मैंघ ( मिह=संचिना ) ( पु० ) बादल, घन, एक राक्षस का नाम, एक राग का नाम ।

मैंघध्वनि ( मैंघ+ध्वनि ) ( स्त्री० ) बादलों का शब्द, गर्जन, गाज, बादलों का-सा शब्द ।

मैंघनाद ( मैंघ+नाद, अर्थात् जिसका शब्द बादल का-सा हो ) ( पु० ) रावण का चेरा, हँदजित, बादलों का शब्द, पलाश का पेड़, वरुणदेवता ।

मैंघपति ( मैंघ+पति ) ( पु० ) बादलों का राजा, इंद्र ।

मैंघवरण ( सं० मैंघवर्ण, मैंघ=बादल, वर्ण=रंग ) ( वि० ) जिसका रंग बादलों का-सा हो ।

मैंघमाला ( मैंघ+माला ) ( स्त्री० ) बादलों का समूह ।

मैंघागम ( पु० ) वर्षाकाल ।

मैंघाध्वा ( पु० ) मेघपथ, अंतरिक्ष, आकाश ।

मैंचक ( मेन्=पाखंड करना ) ( वि० ) काला, श्याम, ( पु० ) श्यामवर्ण, काला रंग, मेघ, सुरमा, अंजन, धुआँ, सँधेरा, अंधकार ।

मेचकताई ( मे० मेचकता ) ( स्त्री० ) कालापन, कलास, रयामता ।

मेज़ ( स्त्री० ) खाना खाने या लिखने की बड़ी चौकी ।

मेज़बान ( पु० ) मेहमानदार ।

मेड ( पु० ) गर्व, उन्मत्तता, क्रुद्धियों का सरदार ।

मेटना ( मिटना ) ( क्रि० म० ) मिटा डालना, धो डालना, छीज डालना, उड़ा देना, मलमेट करना, नष्ट करना, सम्मानाश करना, लोप करना, काट डालना ।

मेटीफ़्युलेशन ( पु० ) इंद्रीय का इस्तिहास ।

मेढू ( मिहू=सींचना ) ( पु० ) मेघ, बकरा, भेड़ा, लिंग ।

मेथी ( मेथू=काटना ) ( स्त्री० ) एक साग का नाम ।

मेद ( मे० मेदम, मेद=भारना ) ( स्त्री० ) गूदा, मज्जा, वसा, चर्बी, एक बीमारी जिसमें गले का अथवा और किसी जगह का मांस बहुत मोटा होकर लटक पड़ता है या एक गाँठ-सी हो जाती है ।

मेदिनी ( मेदम=मेद, अर्थात् जो सभू-कैटभ के मेद से बनी हुई है, उग्या मेदम का नाम 'मेदिनी' हुआ ) ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी, भूमि, जमीन ।

मेदुर ( मिद+र ) ( वि० ) बहुत स्निग्ध, सांद्र, सघन, निचिड़, घना, आच्छन्न, ढपा हुआ, शीतल ।

मेघ ( मेथू=भारना ) ( पु० ) यज्ञ, बलिदान ।

मेघा ( मेथू=भारना ) ( स्त्री० ) धारणा-शक्ति, बुद्धि, समझ, बूझ ।

मेघात्री ( मेघा ) ( वि० ) बुद्धिमान्, पंडित, निपुण ।

मेघि ( पु० ) खलिहान में पशुओं को बांधने के लिये ऊँचा गाढ़ा हुआ काष्ठ ।

मेघ्य ( वि० ) पवित्र, पूत, ( पु० ) बकरा, खैर, जी, हल्दी, गीरोचन ।

मेनका ( स्त्री० ) स्वर्ग की वेश्या, उमा, शकुन्तला की माता ।

मेना ( स्त्री० ) हिमालय की स्त्री, पार्वती की मा ।

मेम ( स्त्री० ) स्त्री, औरत ।

मेमना ( पु० ) बकरी या भेड़ का बच्चा ।

मेमोरियल ( वि० ) याददास्त, अर्जदास्त, स्मारक ।

मेरु ( मि=कटना, अर्थात् प्रगल्भ को कलाना ) ( पु० ) सुमेरु पहाड़ जो हिंदुओं के मत के अनुसार धरती के बीच में है ।

मेल ( मिल=मिलना ) ( पु० ) मिलाप, एका, मिलना, संयोग, संबंध ।

मेलक ( पु० ) मेखकर्ता ।

मेना ( मिल=मिलना ) ( पु० ) किसी जगह पर बहुत-से आदमियों का इकट्ठा होना ।

मेला-टेला ( मुहा० ) बहुत-से आदमियों का इकट्ठा होना, भीड़भाड़, रौखा ।

मेली ( मेल ) ( पु० ) मिलापी, साथी, साथी, ( क्रि० म० ) डाल दी, पहनाई ।

मेवाती ( वि० ) मेवात का रहनेवाला ।

मेप ( मिपू=सींचना ) ( पु० ) मेढ़ा, पहली राशि ।

मेहतार ( पु० ) भंगी, भावूकश, ( वि० ) बुजुर्ग ।

मेहतरानी ( स्त्री० ) भंगिन, भठियारी ।

मेहन ( मिह+थन, मिहू=सींचना ) ( पु० ) लिंग, शिश्न, मूत्रैत्रिय, वीर्यपान, मनी का गिर जाना, पेशाब करना ।

मेहना ( पु० ) ठठोली, ताना ।

मेहना मारना ( मुहा० ) ताना देना, बोली बोलना ।

मेहरिया ( स्त्री० ) मनहरिया, स्त्री ।

मैका ( मायका ) ( पु० ) मा का घर, नैहर, पीहर ।

मैत्र ( पु० ) मित्रता, अनुराधा नक्षत्र, शौचक्रिया, ( स्त्री० ) सफाई ।

मैत्री ( मित्र ) ( स्त्री० ) मित्रता, दोस्ती, प्यार, स्नेह ।

मैथिली ( मिथना ) ( स्त्री० ) तिरहुत के राजा जनक की बेटी, सीता, जानकी ।

मैथुन ( मिथुन=मोड़ा ) ( पु० ) स्त्री-पुरुष का मिलाप, रति, संगम, स्त्रीसंग, हमाशोशी ।

मैदा ( पु० ) गेहूँ का महीन आटा ।

मैना ( स्त्री० ) एक पक्षेरूप का नाम, सारिका, पार्वती की माता ।

मैनाक ( मेनक=हिमालय पहाड़ की स्त्री ) ( पु० ) हिमालय पहाड़ का बेटा, एक पहाड़ का नाम जो हिंदू के डर से समुद्र में जा रहा था ( इसकी कथा रामायण में है ) ।

मैया ( सं० माता ) ( स्त्री० ) मा, माई, महतारी, माता ।

मैल ( सं० मल ) ( पु० ) मल, मूत्र, गाज, मुर्चा ।



मैला ( सं० मलिन ) ( वि० ) गँदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र, खराब ।  
 मो ( सर्वना० ) मुझको, मुझे ।  
 मोकना ( कि० सं० ) छोड़ना, धरना, रखना ।  
 मोल ( मोल=छूट जाना या मुक्ति पाना ) ( स्त्री० ) मुक्ति, छुटकारा, संसार के दुःख से अथवा पाप से छूट जाना ।  
 मोखा ( मुख=मुँह ) ( पु० ) एक छोटा छेद जिसकी राह से धुआँ निकलता है और रोशनो तथा हवा आती है ।  
 मोगरा ( सं० मुद्गर, मुद्=सुरी, गृ=निकालना ) ( पु० ) एक तरह का फूल, नीलोफल, कुमोदिनी ।  
 मोगरी ( सं० मुद्गर ) ( स्त्री० ) लकड़ी की बनी हुई भारी चीज़ जिसको कसरत करनेवाला उठाता है, छत या कपड़ा कूटने की लकड़ी ।  
 मोघ ( मुद्=अचेत होना ) ( वि० ) वृथा, बेफायदा, निष्फल, झूठ, ( पु० ) प्राचीर, दीवाल ।  
 मोच ( स्त्री० ) लचक, कचक, मचक ।  
 मोचन ( मू=छोड़ना ) ( पु० ) छुटकारा दिलाना, छुड़ाना, उद्धार, मुक्ति, छुड़ानेवाला ।  
 मोचना ( सं० मोचन ) ( कि० सं० ) छोड़ना, त्यागना, आँसू डालना ।  
 मोची ( पु० ) जूता बनानेवाला, चमार ।  
 मोट } ( स्त्री० ) गठरी, बस्ता, मोटरी, पुलिदा, गट्टा,  
 मोठ } बोझा, जोड़, कुलजमा, पानी निकालने का चमड़े का डोल ।  
 मोटकी ( स्त्री० ) कुदासी, मोटी स्त्री ।  
 मोटरी ( स्त्री० ) पोटरा, छोटी गाँठ ।  
 मोटा ( वि० ) स्थूल, पुष्ट, जिसके शरीर में बहुत मांस हो, भारी, बड़ा, गाढ़ा ।  
 मोटिया ( पु० ) बोझा ढोनेवाला, कुन्नी ।  
 मोठ ( पु० ) एक तरह का अनाज जिसकी दाल बनती है, घोड़ों का दाना ।  
 मोड़ ( पु० ) घुमाव, एंटेन, फेर ।  
 मोड़ा ( पु० ) साधु, वैरागी, संन्यासी ।  
 मोतिया ( पु० ) एक फूल का नाम ।  
 मोतियाबिंद ( सं० मुक्ताबिंदु ) ( पु० ) आँख की एक बीमारी जिसके होने से दिखाई नहीं देता ।

मोती ( सं० मौक्तिक ) ( पु० ) एक रत्न जो समुद्र में सीपी के मुँह में पैदा होता है ।  
 मोती काँसी आब उतरना ( मुहा० ) बेइज्जत होना, अपमानित होना, अनादत होना ।  
 मोती कूटकर भरना ( मुहा० ) खूब चमकीला होना ( यह मुहावरा आँख के लिये बोला जाता है ) ।  
 मोती पिरोना ( मुहा० ) माला गूँथना, मिठास के साथ बोलना, रोना ।  
 मोतीचूर ( पु० ) एक तरह की मिठाई ।  
 मोथरा ( पु० ) घोड़े की हड्डी का रोग ।  
 मोथा ( पु० ) नागरमोथा ।  
 मोथन } ( वि० ) कुंठित ।  
 मोथरा }  
 मोद ( मुद्=प्रसन्न होना ) ( पु० ) आनंद, हर्ष, खुशी ।  
 मोदक ( मुद्=प्रसन्न होना ) ( पु० ) आनंद करनेवाला, एक प्रकार का लड्डू ।  
 मोदी ( पु० ) बनिया, दुकानदार, व्यापारी, महाजन, आनंद करनेवाला ।  
 मोधू ( वि० ) सीधा, भोला, कपट रहित ।  
 मोनी ( स्त्री० ) नोक, अस्त्र आदि का अग्र भाग ।  
 मोम ( पु० ) मधुमज ।  
 मोमिया ( पु० ) ओषधि-विशेष, दवा-विशेष ( वि० ) मोम से बना हुआ ।  
 मोर ( सं० मयूर ) ( पु० ) एक पक्षी का नाम ।  
 मोरपंखी ( स्त्री० ) एक तरह की नाव, बजरा ।  
 मोरमुकुट ( पु० ) मोर की कलगी के ऐसा मुकुट, मोरपंख का मुकुट ।  
 मोर }  
 मोरा } ( सर्वना० ) मेरा ।  
 मोरचंग ( स्त्री० ) एक बाजे का नाम ।  
 मोरछल ( पु० ) एक तरह का चँवर जो मोर के पंखों का बनता है ।  
 मोरी ( स्त्री० ) नाली, पनाली ।  
 मोल ( सं० मूल्य ) ( पु० ) भाव, क्रीमत, दाम ।  
 मोल ठहराना ( मुहा० ) क्रीमत लगाना, निर्ण ठहराना, दाम ठहराना ।  
 मोल-तोल ( मुहा० ) भाव, निर्ण, क्रीमत ।  
 मोल बढ़ाना ( मुहा० ) क्रीमत बढ़ाना, भाव बढ़ाना ।

मोल लेना ( मुहा० ) बिसाहना, झरीदना ।

बिना मोल की खेरी ( मुहा० ) बिना मोल की दासी ।  
( यह मुहावरा बहुत ही अर्थानता जतलाने के लिये बोला जाता है ) ।

मोसना ( कि० अ० ) चुराना, टगना, लूटना ।

मोह ( मूढ=अचेत या अज्ञानी होना ) ( पु० ) मूर्च्छा, बेहोशी, राग, अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफी, प्यार, माया, दया, दुलार, लाइ, स्नेह, छोह ।

मोह में आना ( मुहा० ) अपने मित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत हो जाना ।

मोह लेना ( मुहा० ) रिझाना, किसी का मन अपनी ओर खींच लेना, लुभाना, वश में करना, मंत्र फूँकना ।

मोहन ( मूह=मोहना ) ( वि० ) मोहनेवाला, जिसके देखने से शरीर की मुष्ट न रहे, मनमाना, प्यारा, ( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम, मोहना, वश करना ।

मोहनभोग ( मोहन=मनमाना, भोग=पाना ) ( पु० ) शीश, उत्तम भोजन ।

मोहनमाला ( मोहन + माला ) ( स्त्री० ) एक तरह की माला जो सोने के दाने और मूँग की बनती है ।

मोहना ( ग० मोहन ) ( कि० सं० ) वश में करना, मन हरना, लुभाना, मंत्र फूँकना, प्रसन्न करना ।

मोहनी } ( मोहन ) ( स्त्री० ) मन हरनेवाली  
मोहिनी } स्त्री, मोहनेवाली, रूपवती, मनोहर, सुंदर ।

मोहमय ( वि० ) मिथ्या व झूठा ।

मोहि ( सर्वना० ) मुझको, मुझे ।

मोहित ( वि० ) अचेत, मूर्च्छित, लुभाया हुआ ।

मोही ( पु० ) मुग्ध, अवाच्य ।

मा ( ग० मधु ) ( पु० ) शहद, मधु ।

मौका ( पु० ) अवसर, ठीक, जगह ।

मौकूफ ( पु० ) बंद, लुप्ताना ।

मौकिक ( पु० ) मौती ।

मौज ( स्त्री० ) जहर, तरंग ।

मौजी ( स्त्री० ) मूँज की करधनी, मेखला ।

मौड़ ( सं० मौलि ) ( पु० ) सेहरा, मुकुट, मोर जो दूँहे के सिर पर बाँधा जाता है ।

मौन ( पुनि ) ( पु० ) चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना, ( स्मृति में लिखा है कि १ पाखाने जाते, २ पेशाब करते, ३ स्त्री-प्रसंग करते, ४ दंतवन करते, ५ स्नान करते, ६ खाना खाते समय मौन रहना चाहिए ) ।

मौनी ( मौन ) ( पु० ) एक तरह के मुनि जो सदा चुप रहते हैं, ऋषि, योगी ।

मौर ( पु० ) आम की मंजरी ।

मौराना ( कि० अ० ) आम की मोर का खिलना ।

मौरूसी ( पु० ) पुश्तैनी, पोढ़ी दर पीढ़ी ।

मौर्वी ( स्त्री० ) उया, रोड़ा, धनुष की डोरी, चिल्ला ।

मौलना ( कि० अ० ) मौल लगना ।

मौलसिरी ( स्त्री० ) एक तरह के पुशवृदार फूल के पेड़ का नाम ।

मौलाना ( पु० ) सुवलमानों का धर्मगुरु ।

मौलि ( मूल ) ( पु० ) फेरिट, मुकुट, शिला, चोटी, सिर, ( स्त्री० ) धरती, पृथ्वी ।

मौलिक ( वि० ) मूल-संबंधी, जब का, जब की वस्तु, ( पु० ) अकुञ्जान ।

मौली ( स्त्री० ) मस्तक, मुकुट, नारा, लाल रँगा हुआ सूत ।

मौसी ( स्त्री० ) मा की बहन ।

म्लान ( वि० ) ग्लानियुक्त, उदास, लजित, मलीन, शुष्क, मुरझाया हुआ ।

म्लानि ( म्ले=उदास होना वा मुरझाना ) ( स्त्री० ) थका-वट, थकान, मलिनता, मैलापन, कुम्हलाना, मुरझाना, उदास होना ।

म्लिष्ट ( वि० ) मलीन, ग्लानियुक्त, ( पु० ) अव्यवस्थित, गद्गदवाक् ।

म्लेच्छ ( म्लेच्छ=अशुद्ध या बुरा बोलना या गंवारू बोलती बोलना ) ( पु० ) नीच जाति, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न जो हिंदुओं के शास्त्र को मानते हैं, यह शब्द जंगलियों और दूसरे विजायत के लोगों के लिये बोला जाता है, ( वि० ) पापी ।

## य

य (य=जाना) (पु०) हवा, यश, कीर्ति, मेल, योग, सवारी, गति, (वि०) जानेवाला ।

यक् (पु०) यज्ञ-विशेष ।

यक्तीन (कि० वि०) विश्वास, भरोसा, निश्चय ।

यकृत् (पु०) उदररोग, तापतिल्ली, ग्रीहा, पित्तही-रोग, लीवर, कलेजा ।

यक्ष (यत्=पूजना) (पु०) गुह्यक, देवता, कुबेर के नौकर ।

यक्ष्मन् } (पु०) क्षयरोग, राजरोग, तपेदिक ।  
यक्ष्मा }

यज्ञ (पु०) अग्निहोत्री ।

यजन (यन्=पूजना) (पु०) यज्ञ, पूजा ।

यजमान (यज्=पूजना या यज्ञ करना) (वि०) यज्ञ करनेवाला ।

यजाक (वि०) दाता, क्रैयाज्ञ, उदार ।

यजुः (यज्=पूजना) (पु०) यजुर्वेद, दूसरा वेद ।

यज्ञ (यज्=पूजना) (पु०) बलिदान, पूजा, होम, हवन, याग, विष्णुभगवान् ।

यज्ञसूत्र (यज्ञ+सूत्र) (पु०) जनेऊ ।

यज्ञांत (पु०) यज्ञ के अंत का स्थान ।

यज्ञीर (पु०) महादेव, शिव ।

यज्ञोपवीत (यज्ञ+उपवीत) (पु०) जनेऊ ।

यज्वा (यज्=पूजना) (पु०) विधिपूर्वक यज्ञ करने-वाला ।

यन् (अव्य०) जो, जितना ।

यतः (अव्य०) क्योंकि, यस्मात् ।

यतन (सं० यत्) (पु०) यत्न, उपाय, तदबीर, हिकमत ।

यति } (यत्=यत्न करना मुक्ति के लिये) (पु०)  
यती } संन्यासी, वैरागी, जैन-भिक्षु ।

यतीम (पु०) अनाथ, विना मा-बाप का बालक ।

यत्न (यत्=यत्न करना) (पु०) जतन, उपाय, उद्योग, कोशिश, मिहनत, सावधानी ।

यत्नी (वि०) यत्न करनेवाला, उपाय करनेवाला, हिकमत करनेवाला ।

यत्र (यद्=जो) (कि० वि०) जहाँ, जिस जगह ।

यथा (यद्=जो) (कि० वि०) जैसे, जिस प्रकार से, उ्यों, जिस रीति से, बराबर, तुल्य ।

यथाकाम (कि० वि०) यथेच्छ, अभिलाषा से अधिक ।

यथाकाल (पु०) ठीक समय पर, समय के अनुकूल ।

यथाक्रम (स्त्री०) परिपाटी से, सिलसिलेवार, क्रमानुसार ।

यथायोग्य (यथा=जैसा, योग्य=ठाक) (कि० वि०) जैसा चाहिए, जैसा ठीक है, जैसा उचित है, यथोचित ।

यथार्थ (यथा=जैसा, अर्थ=अभिप्राय, मतलब) (वि०) ठीक, सत्य, सच, (कि० वि०) ठीक-ठीक, हकीकतनु, जैसा चाहिए ।

यथाशक्ति (यथा=जैसी या अनुसार, शक्ति=बल) (कि० वि०) जैसी सामर्थ्य हो, अपने बल के अनुसार, जितना हो सके, हतुल्हम्कान ।

यथासाध्य (कि० वि०) इच्छापूर्वक, हतुल्हम्कान, शक्ति-भर ।

यथेच्छ } (कि० वि०) इच्छानुसार, दिखानाह ।  
यथेच्छा }

यथेच्छाचारिता (स्त्री०) इच्छानुसार, मर्जी के मुवाफ़िक़ ।

यथेस्तिन (कि० वि०) यथेच्छ, इच्छानुसार, मनचाहा, हस्वदिखानाह ।

यथेष्ट (वि०) काफ़ी, प्रचुर, इच्छानुसार ।

यथोक्त (अव्य०) कहे के अनुसार ।

यथोचित (यथा+उचित) (कि० वि०) जैसा चाहिए, यथायोग्य ।

यद् (वि०) जो ।

यद्यपि (सं० यद्यपि) (अव्य०) जो भी, जो ।

यदा (यद्=जो) (कि० वि०) जब, जिस समय ।

यदि (यद्=जो) (कि० वि०) जो ।

यदु (पु०) एक राजा का नाम जो राजा ययाति का बेटा और श्रीकृष्ण का पुरखा था और चंद्रवंशी राजाओं में पाँचवाँ राजा था ।

यदुकुल (यद्+कुल) (पु०) यदु राजा का घराना, यदुवंश ।

यदुनाथ } (यद्=यदुवंशियों का नाथ या पति=मालिक)  
यदुपति } (पु०) श्रीकृष्ण ।

यदुवंश (यदु+वंश) (पु०) यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

यदुवंशी (यदुवंश) (पु०) यदु के वंश के लोग, यादव ।

यदुच्छ्रा (यदु+श्रृ+या) (स्त्री०) स्वातंत्र्य, खुदराय ।

यद्यपि (याद=जो, यपि=मर्मा) (अव्य०) जो भी, यदपि ।

यद्वा (अव्य०) पश्चात्तर-बोधक, उर्ध्व ।

यद्वातद्वा (अव्य०) भला-बुरा, ऐसा-वैसा ।

यंता { (पु०) मृत, सारथी, पोलवान, हथवाल,  
यनार { (वि०) दमनकारक, रथ हाँकनेवाला ।

यंत्र (यन्त्र या यम=गंकना) (पु०) कल, हर एक तरह का यंत्रार या हथियार, राजा, तंत्रशास्त्र में अपने हृष्ट देवता का चक्र, टोठका, यंत्र, मंत्र, ताला, कुफल ।

यंत्रण (पु०) रक्षण, दमन, बंधन, संकोच, यातना ।

यंत्रणा (यन्त्रि=गंकना या यम=दंड देना) (स्त्री०) दुःख, पीड़ा, क्रोध ।

यंत्रस्थ (वि०) ज़ेर तबय, जो छप रहा हो, जो मुद्रित हो रहा हो ।

यंत्रिका (यन्त्रि=गंकना, बंद करना) (पु०) ताला, कुफल, जैसे—“लोचन निज पद यंत्रिका...” रामायण ।

यंत्रित (यन्त्रि=गंकना) (वि०) रोकड़ा हुआ, बंद किया हुआ, मुक़ैयद, (पु०) बन्ध, कैद ।

यंत्री (पु०) यंत्र देनेवाला, यंत्र मंत्र करनेवाला ।

यम (यम=गंकना, दंड देना, वश करना या दवाना) (पु०) यमराज, धर्मराज, दक्षिण-दिशा का दिक्पाल, काल, इन्द्रियों का रोकना, (वि०) जोड़ा ।

यमक (यम=मिलना) (पु०) जोड़ा, एक शब्दालंकार जहाँ एक ही पद दो-तीन बार आता है, पर उस पद का अर्थ हर एक जगह जुड़ा-जुड़ा होता है ।

यमगुफा (सं० यमगुहा) (स्त्री०) मौत का घर, काल की गुफा ।

यमज (यम=जोड़ा, ज=पैदा) (पु०) जो दो लड़के एक साथ जन्मे हों, जुड़वाँ ।

यमदग्नि (पु०) परशुरामजी के पिता का नाम ।

यमद्विया (सं० यमद्वीपक) (पु०) वह दीपक जो कालिक बरी १३ के दिन यम के नाम से जलाया जाता है ।

यमदूत (यम+दूत) (पु०) यम के दूत ।

यमधार (यम+धार) (स्त्री०) कटार, छुरा, तेंगा, तलवार ।

यमन (पु०) संयम, बंधन, छेदन, बाँधना, रोकना, अंतर, राग-विशेष, जाति-विशेष, म्लेच्छ ।

यमनिका (स्त्री०) परदा, कनात, यवनिका ।

यमल (यम=जोड़ा, ला=लेना) (पु०) जोड़ा ।

यमलार्जुन (यमल=जोड़ा, अर्जुन एक वृक्ष का नाम) (पु०) एक तरह के दो पेड़ जो वृंदावन में थे; कुवेर के दो लड़के जो वारुणी मदिरा को पीकर गंगा में वेश्याओं के साथ नग्न स्नान करते समय नारद के शाप से वृक्ष हो गये थे, श्रीकृष्णजी महाराज ने उनको वृक्षत्व से मुक्त किया ।

यमुना (यम) (स्त्री०) यमुना नदी जो यमराज की बहन और सूर्य की बेटी है ।

ययाति (य=हवा, या=जाना जो हवा की तरह सब जगह जा सकता हो) (पु०) नहुष राजा का बेटा ।

यय (यु=मिलना) (पु०) जो, एक तरह का अनाज, वेग, तेज़ी ।

ययन (यु=मिलना या जुड़नावाला होना) (पु०) पहले समय में यूनान या आयोनिया के रहनेवालों को ययन कहते थे; पर अब मुसलमान और क्रिस्ती आदि सब विदेशियों को ययन कहते हैं, म्लेच्छ, मलेच्छ ।

ययस (पु०) नृप, घास ।

ययिष्ठ { (वि०) अतियुवा, अतिशीघ्रगामी,  
ययीयान { तेज़री ।

यश (यशम् यश=फलना) (पु०) कीर्ति, नामवरी, ख्याति, सुहरत ।

यशस्वरी (स्त्री०) विद्या, इहम ।

यशस्वी (यशम्) (वि०) नामो, नामवर, प्रतिष्ठित, मुञ्जिज्ञ ।

यशोदा (यशम्=यश, दा=देन) (स्त्री०) ‘जसोदा’ शब्द को देखो ।

यह (सर्वना०) निकटवर्ती संज्ञामूचक शब्द के स्थान पर इसका प्रयोग होता है, (वि०) निकटस्थ वस्तु की ओर संकेत करता है ।

यहाँ (सं० इह) (कि०वि०) इस जगह, इस ठौर, इधर ।

यहाँ का यहाँ (मुहा०) ठीक इसी जगह ।

या (सर्वना०) जो, जौन ।

याग (यज्=पूजना (पु०) यज्ञ, होम, हवन, पूजा, बलिदान ।

याचक (याच्=माँगना) (वि०) माँगनेवाला, माँगता, याचक, भिखारी ।

याचना (याच्=माँगना) (स्त्री०) भीख माँगना, चाहना, अभ्यर्थना, दरखवास्त करना ।

यान्त्रित (याच्=माँगना) (वि०) माँगा हुआ, चाहा हुआ ।

याचना (स्त्री०) याचना, माँगना, दरखवास्त ।

याजक } (यज्=यज्ञ करना या पूजना) (पु०) यज्ञ  
याजी } करानेवाला, पुजारी, पुरोहित ।

याजन (पु०) यज्ञ-विधान, पूजा कराना ।

याजुष (वि०) यजुर्वेद-संबंधी, यज्ञ का ।

याज्य (पु०) यज्ञाधिकारी, जिसका यज्ञ कराया जा सके ।

यात (वि०) गत, गया ।

यातना (यत्=दंड देना, दुःख देना) (स्त्री०) नरक का दुःख, पीड़ा, क्रोध, बड़ा भारी दुःख ।

यातयाम (वि०) म्लान, जीर्ण, पुराना ।

याता (पु०) जाने या चलनेवाला ।

यातायात (पु०) आवागमन ।

यातु (या=चलना) (पु०) राक्षस, (वि०) चलनेवाला ।

यातुधान (यातु=ऐसा, धा=रखना अर्थात् कहलाना) (पु०) राक्षस, निशाचर, दैत्य, अशुर ।

यात्रा (या=जाना) (स्त्री०) तीर्थ को जाना, सफ़र जाना, जियारत, वृत्त, प्रस्थान, बिदा, कोई पर्व अथवा उत्सव जिसमें देवता की मूर्ति को रथ आदि में बिठाकर बाहर ले जाते हैं, जैसे—रथयात्रा आदि ।

यात्रिक } (यात्रा) (पु०) यात्रा करनेवाला, यात्री,  
यात्री } जियारती, तीर्थ करनेवाला ।

याथार्थिक (वि०) ठीक, यथार्थ, जो ठीक काम करे ।

याथार्थ्य (पु०) सत्यता, सचाई, यथार्थता ।

याद् (पु०) कंठ, सुध, स्मरण ।

यादव (यदु) (पु०) यदु के वंशज, यदुवंशी, श्रीकृष्ण ।

यादवपति (यादव+पति) (पु०) श्रीकृष्ण, यदुनाथ, यदुपति ।

यादृश (कि० वि०) जैसा, जैसी, जिसके समान ।

यान (या=जाना) (पु०) वाहन, सवारी, असवारी, जैसे—हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी आदि ।

यान-मुख (पु०) जूआ, रथ का अगला हिस्सा ।

यानी (श्रव्य०) अर्थात् ।

यापन (पु०) निर्वाह, समय बिताना, हटाना ।

यावू (पु०) दृढ़, टाँघन ।

याम (यम्=बीतना, रोकना) (पु०) पहर, रात्रि-दिन का अष्टमोश ।

यामयोष (पु०) मुर्गा, कुकुर, (स्त्री०) यंत्र-विशेष ।

यामाता (पु०) जमाई, दामाद, जामाता ।

यामि (स्त्री०) धर्मपत्नी, जोरू ।

यामिक (पु०) पहरू, चौकीदार, जैसे—“जनु जुग यामिक प्रजा प्रान के”—रामायण ।

यामिनी (याम) (स्त्री०) रान, रात्रि, रजनी, रात, नींदार ।

यामिनीपति (यामिनी+पति) (पु०) चान्द, चंद्रमा, चंद्र ।

यामुना (पु०) मुरमा, अंजन ।

याम्य (पु०) चंदन का पेड़, अगस्त्य मुनि ।

यायावर (पु०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, अयाचित भीख ।

यार (पु०) मित्र, दोस्त, संगी, आशिक, प्रेमी ।

यावक (पु०) लाख, तुलसी, शाली ।

यावत् (यन्=जो) (कि० वि०) जब तक, जब लग, जितना ।

यावज्जीविन (यावत्+जीवन) (कि० वि०) जीने तक, जीने के अंत तक, जीवन-पर्यंत ।

यावनीभाषा (यावनी=यवनों का, भाषा=बोली) (स्त्री०) यवनों की बोली ।

याहि } (गर्वना०) हयको, हसे ।  
याही }

यियुक्षु (वि०) यज्ञ करने की इच्छा रखनेवाला ।

युक्त (युज्=मिलना) (वि०) मिला हुआ, जुड़ा हुआ, लगा हुआ, योग्य, उचित, ठीक ।

युक्ति (युज्=मिलना) (स्त्री०) मिलना, मेल, योग्यता, चतुराई, गुण, रीति, हथौड़ी, लोकव्यवहार, उपाय, तरीका ।

युग (युज्=मिलना या मिलाना) (पु०) जोड़ा, समय,

युग—हिंदू चार युग मानते हैं ( १ सत्ययुग १७,२८,००० वर्षों का, २ त्रेतायुग १२,९६,००० वर्षों का, ३ द्वापर ८,६४,००० वर्षों का और ४ कलियुग ४,३२,००० वर्षों का ) ।

युगपत् ( अन्वय० ) एकदा, एक समय ।

युगल ( युग=जोड़ा, ला=लाना ) ( वि० ) जोड़ा, दो, युग्म ।

युगांत ( युग+अन्त ) ( पु० ) युग का अंत जब सृष्टि का नाश हो जाता है ।

युग्म ( युग्म=मिलना या मिलाना ) ( वि० ) जोड़ा, युगल, दो ।

युजान ( पु० ) सारथी, गाड़ीवान ।

युज्यमान ( वि० ) मिलने योग्य ।

युजान ( पु० ) मूत, सारथी, विप्र, योगी ।

युत ( युग्म=मिलना या मिलाना ) ( वि० ) मिला हुआ, युक्त, संयुक्त, शामिल, विशिष्ट, जैसे—श्रीयुत, धर्मयुत ।

युद्ध { ( युद्=लड़ना ) ( पु० ) लड़ाई, संग्राम, विवाद,  
युध् } जंग, कारझार ।

युद्धनिर्देश ( पु० ) संग्राम जंग, लड़ाई का संदेश ।

युद्धसज्जा ( स्त्री० ) जंग की तैयारी, लड़ने को उद्यत होना ।

युधान ( वि० ) संग्रामकारी, जंगी ।

युधिष्ठिर ( युधि=लड़ाई में, स्थिर=ठहरनेवाला ) ( पु० ) पाँचों पांडवों में सबसे बड़ा, कुंती और पांडु का बड़ा बेटा ।

युनाइटेड किंगडम { ( स्त्री० ) सम्मिलित राज्य  
युनाइटेड स्टेट्स { सन्ततन मुरतरका ।

युयु ( पु० ) घोड़ा, अश्व ।

युयुत्सु ( पु० ) योद्धा, सिपाही, धृतराष्ट्र ।

युवक { ( वि० ) तरुण, जवान, नवीन अवस्था-  
युवाक } वाला ।

युवती ( युवन, युग्म=मिलना ) ( स्त्री० ) जवान की, यौवनवती, तरुणी, सोलह वर्ष से तीस बरस तक की स्त्री ।

युवराज ( युवन्=जवान, राजा ) ( पु० ) राजा का बड़ा बेटा जो उसके पीछे राजा होता है, राजकुमार, राजा का वारिस, बलीबहादुर ।

युवा ( युवन्, युग्म=मिलना ) ( वि० ) जवान, तरुण, सोलह बरस से अधिक उमर का ।

युस्मद् ( सर्वना० ) स्वत्, तुम् ।

यूँ } ( क्रि० वि० ) इस तरह से, ऐसे ।  
यों }

योंही ( मुहा० ) इस तरह से, ऐसे ही, संयोग से, वृथा, बे-क्रायदा, बिना कारण, मझ में, आसानी से ।

यूक ( पु० ) जूँ, खटमल ।

यूथ ( युग्म=मिलना ) ( पु० ) कुँड, समूह, जत्था ।

यूथनाथ ( पु० ) जंगली हाथियों के कुँड का सरदार ।

यूथप ( यूथ=समूह, पा=पालना ) ( पु० ) सेनापति, सेना का मालिक ।

यूप ( पु० ) स्तंभ, स्तंभा ।

यूहा ( सं० यूय ) ( पु० ) समूह, कुँड ।

यंग ( युग्म=मिलना ) ( पु० ) मेल, मिलाप, मिलाव, संबंध, लगन, संयोग, जोड़, अच्छा समय, शुभ घड़ी, समाधि, ध्यान, परमेश्वर में मन लगाना, तप, तपस्या ।

योगनिद्रा ( योग=ध्यान, निद्रा=नींद ) ( स्त्री० ) विष्णु की नींद, महामाया, दुर्गा ।

योगपट्ट ( पु० ) योग के समय पहनने का कपड़ा ।

योगभ्रष्ट ( वि० ) योग से गिरा हुआ ।

योगमाया ( योग=ध्यान, माया=ईश्वर की शक्ति ) ( स्त्री० ) विष्णु की माया, महामाया, कुदरत, खुदाई ।

योगरूढ़ { ( पु० ) जो शब्द दो शब्दों से बना हो  
योगरूढ़ि } और सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ को बतावे, जैसे—पंकज, त्रिशूलपाणि ।

योगिनी ( युज्=मिलना या मिलाना ) ( स्त्री० ) शक्ति, नारायणी, गौरी, शाकंभरी, भीमा, चामुंडा, पार्वती, भद्रकाली, रुद्राणी, दुर्गा आदि ६४ योगिनियाँ प्रसिद्ध हैं, उद्योतिष में अच्छे-बुरे को बतलानेवाली ।

योगी ( योग ) ( पु० ) ध्यानी, तपस्वी, संन्यासी ।

योगेश्वर ( योग=ध्यान या तप, ईश्वर=स्वामी अर्थात् जिसके लिये योगी तपस्या करते हैं ) ( पु० ) परमेश्वर, ईश्वर, बड़ा ऋषि, सिद्ध, योगीश, तपस्वी ।

योग्य ( युज्=मिलना या मिलाना ) ( वि० ) ठीक, उचित, चाहिए, उपयुक्त, संभव, निपुण, प्रवीण, लायक, चतुर, गुणी, समर्थ ।

योग्यता ( योग्य ) ( स्त्री० ) क्षयाकृत, प्रवीणता, निपुणता, सामर्थ्य ।

योजक (युज् + अक) (वि०) मिलानेवाला, दलाख ।  
 योजन (युज्=मिलना या मिलाना) (पु०) चार कोस ।  
 योजना (युज्=मिलना) (स्त्री०) मिलाना, जोड़ना,  
 मेख, विचार-सरणी ।

योतु (पु०) नाप, परिमाण ।  
 योद्धा (युध्=लड़ना) (वि०) लड़ाका, शूरमा, सामंत,  
 भट, वीर, बहादुर, लड़नेवाला ।

योधन (पु०) अन्न ।  
 योध्या (सं० योध, युध्=लड़ना) (वि०) लड़ाका, वीर ।  
 योनि (यु=मिलना) (स्त्री०) भग, पैदा होने की जगह,  
 उत्पत्तिस्थान, जायतवस्तु ।  
 योनिज (वि०) जो योनि से पैदा हुआ हो, (पु०)  
 मनुष्य आदि ।

योनिदेवता (स्त्री०) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र ।  
 योम (पु०) दिन, बार, रोज ।

योषा } (युष्=सेवना, जो पुरुषों से पोषण की जाती  
 योषित् } है) (स्त्री०) नारी, लुगाई, स्त्री, अबला,  
 योषिता } अगना ।

यौं (अध्य०) इस प्रकार, इस तरह ।  
 योगिक (योग+इक) (वि०) दो शब्दों से बना हुआ  
 शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना हुआ  
 शब्द ।

यौतक } (युतक, यु=मिलना) (पु०) दहेज, दायज,  
 यौतुक } ब्याह में बेटी का बाप अपनी बेटी को जो  
 धन और कपड़ा आदि देता है ।

यौधेय (पु०) योद्धा, संग्राम करनेवाला ।  
 यौवन (युवन्=जवान) (पु०) जवानी, तरणई ।  
 यौवनदशा (स्त्री०) यौवनावस्था, जवानी की  
 हालत ।

यौवनलक्षण (पु०) जावण्य, खूबसूरती, जवानी का  
 आना ।

यौवनवती (यौवन=जवानी, वती=वाली) (वि०)  
 जवान स्त्री ।

यौवराज्य (पु०) युवराज-पद ।  
 यौवस्ना (स्त्री०) उजियाली रान ।

## र

र (र=देना या लेना) (पु०) आग, कामदेव की आग,  
 कामाग्नि, तीक्ष्ण, तेज, तीखा, वेग, क्रोध ।

रई (स्त्री०) दही मथने की लकड़ी, मथनी, बिलोनी ।  
 रईस (पु०) राजा, धनी, बड़ा आदमी, अमीर आदमी ।  
 रँस (स्त्री०) रश्मि, किरण, दीप्ति ।

रँहट } (पु०) पानी निकालने की चर्खी ।  
 रहट }

रँहस (वि०) शीघ्रता, तेजी ।

रक्तबा (पु०) क्षेत्रफल, विस्तार ।

रक्तम (पु०) तादाद, तहरीर, परिमाण, संख्या ।

रक्षा (स्त्री०) छोड़े की काठी का पायदान ।

रक्षाधी (स्त्री०) नरतरी ।

रक्त (रज्ज्=रंगना) (पु०) लोहू, रुधिर, शोणित,  
 कुंकुम, केशर, ताँबा, (वि०) खाल ।

रक्तकंद (पु०) पखांडु, प्याज़, गाजर, प्रवाख, मूँगा ।

रक्तकोढ़ (सं० रक्तकुष्ठ) (पु०) एक तरह का कोढ़  
 जिससे शरीर लाल हो जाता है ।

रक्तघ्न (पु०) लोहितक वृक्ष, कोष औषध, दूब ।

रक्तचंदन (रक्त+चंदन) (पु०) लाल चंदन ।

रक्तचूर्ण (रक्त+चूर्ण) (पु०) सिंदूर ।

रक्तजिह्वा (पु०) सिंह, लाल जीभवाले जानवर ।

रक्ततुंड (पु०) शुक, मुवा, जिसकी चोंच लाल हो ।

रक्तधातु (पु०) गेरू, गैरिक ।

रक्तप (पा=पीना) (पु०) राक्षस, खटमल, मच्छर ।

रक्तपा (रक्त=लोह, पा=पीना) (स्त्री०) जोंक, जलौका ।

रक्तपाकी (स्त्री०) बेंगन का पौधा ।

रक्तपात (रक्त=लोह, पत्=गिरना) (पु०) लोहू का  
 गिरना, हस्या, खून ।

रक्तबीज (रक्त=लोह, बीज=पैदा होना) (पु०) एक  
 राक्षस का नाम जो शुभ-निशुभ का सेनापति था;  
 जिसको दुर्गा ने मारा था, (रक्त=लाल, बीज=दाना)  
 दाहिम, अनार ।

रक्तलोचन (पु०) कबूतर, जिसकी आँखें खाल हों ।

रक्ताकार (पु०) मूँगा, प्रवाख ।

रक्ताक्ष (पु०) बैसा, चकोर, कोकिल, कबूतर, सारस ।

रक्तांक (पु०) मधार, अकौआ ।

रक्किा ( श्री० ) घुँघची ।

रक्कोपल ( पु० ) लाज कमल, शास्त्रमन्त्री वृक्ष ।

रक्क ( रक्=वचाना ) ( पु० ) रक्षा करनेवाला, पालने-  
वाला, पाखक, पोषक, स्वामी, मालिक, मुहाफिज़ ।

रक्कण ( रक्=वचाना ) ( पु० ) रक्षा, पालन-पोषण,  
बचाव ।

रक्कस ( रक्=वचाना, त्रिपमें होम की मामग्री को वचाना,  
या त्रिपमें अपने को वचाना ) ( पु० ) राक्षस,  
निशाचर, भूत ।

रक्का ( रक्=वचाना ) ( श्री० ) बचाव, पाखन, उद्धार,  
राख, राखी ।

रक्कापेलक ( रक्का+यपेलक ) ( पु० ) द्वारपाख, छत्रोढ़ो-  
वान, सिपाही ।

रक्षित ( रक्=वचाना ) ( वि० ) रक्का किया हुआ,  
बचाया हुआ, रक्खा हुआ ।

रक्ख छोड़ना ( कि० ग० ) सुरक्षित रखना, सौंपना,  
बचा रखना ।

रक्ख देना ( कि० स० ) टिकाना, स्थापित करना, धरना,  
रखना ।

रक्खना ( में० रक्ख ) ( कि० ग० ) धरना, लगाना,  
खड़ा करना, टिकाना, बिठलाना, पकड़ना, अधि-  
कारी होना, मालिक होना, वचाना, रक्षा करना,  
विचारना, सोचना ।

रक्खवाला ( रक्खना ) ( पु० ) रक्खवाली करनेवाला,  
वचानेवाला, गढ़रिया, चरवाहा ।

रक्खवाली ( रक्खना ) ( श्री० ) बचाव, रक्का, ग़बरदारी ।

रक्खी ( श्री० ) रक्का का कर ।

रक्खैया ( रक्खना ) ( वि० ) रक्खनेवाला ।

रग ( श्री० ) नम, नाज़, शिरा ।

रगड़ ( रगड़ना ) ( श्री० ) घिसाव, संघर्ष, स्पर्श ।

रगड़ना ( कि० ग० ) मलना, घिसना ।

रगड़ा ( पु० ) भगड़ा, घिसाव, बलात्कार से लड़ाई ।

रगड़ा-भगड़ा ( मुहा० ) लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, क़साद ।

रगेदना ( कि० स० ) खदेदना, पीछा करना, भगा देना ।

रघु ( रघि या लघि=जाना, जो पृथ्वी के अंत तक अपनी जीत  
को फैलाता है ) ( पु० ) एक सूर्यवंशी राजा का नाम  
जो दिलीप राजा का पुत्र और श्रीरामचंद्र का  
परदादा था, रघु का वंश ।

रघुनंदन ( रघु=रघुवंशियों को, नंदन=आनंद देनेवाला )  
( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

रघुनाथ ( रघु+नाथ ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

रघुपति ( रघु+पति ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

रघुराज ( रघु+राजा ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

रघुवंश ( रघु+वंश ) ( पु० ) रघु राजा का कुल, कालिदास  
कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य जिसमें राजा  
दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण तक का वर्णन है ।

रघुवंशतिलक } ( रघुवंश, रघु राजा के कुल में, तिलक=  
रघुकुलतिलक } श्रेष्ठ ) ( पु० ) राजा दशरथ,  
श्रीरामचंद्र ।

रघुवर ( रघु=रघुवंशियों में, वर=श्रेष्ठ ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र,  
रघुनाथ ।

रंग ( रक्=स्वाद लेना या पाना ) ( वि० ) गरीब, कंगाल,  
दगिरी, कृपण, लाजबी, खोभी ।

रंग ( रक्=जंगना ) ( पु० ) वर्ण, डील, रीति, ढंग, ढब,  
खेल, खुशी, आनंद, ( रगि=जाना या पाना ) रंग धातु ।

रंग उड़ जाना ( मुहा० ) रंग बदल जाना, डरना,  
पीला पड़ जाना ।

रंग उतर जाना ( मुहा० ) पीछा पड़ जाना, फीका  
होना, सोच में होना, कुदना, कलपना ।

रंग करना ( मुहा० ) खुशी करना, बिलासना, समय को  
आनंद में बिताना ।

रंग चढ़ना ( मुहा० ) शराब के नशे में मग्न होना,  
प्रभावान्वित होना ।

रंग देखना ( मुहा० ) किसी चीज़ की हाज़त को या  
उसके फल अथवा अंत या परिणाम को जानना ।

रंगवरंग ( सं० रंगविंग ) ( मुहा० ) रंग-रंग का, कई रंग  
का, चित्र-विचित्र, तरह-तरह का, भाँति-भाँति का ।

रंग बिगड़ना ( मुहा० ) किसी चीज़ की हाज़त बदलना,  
स्थिति बिगड़ना ।

रंगभंग ( मुहा० ) आनंद में बिगाड़ होना, खेल का  
बिगाड़, खुशी में सोच हो जाना ।

रंग मारना ( मुहा० ) चौपड़ का खेल जीतना ।

रंगरस ( सं० रंग+रस ) ( मुहा० ) आनंद, हर्ष, सुख, खुशी ।

रंगरातना ( मुहा० ) खूब गहरा ग़रार होना ।

रंगराता ( मुहा० ) रंग में रंग हुआ, प्रसन्न,  
आनंदित ।



रंगरूप ( सं० रंग+रूप ) ( मुहा० ) चमक-दमक, छवि, हुस्न, जमाल ।

रंग लगाना ( मुहा० ) रँगना, रंग चढ़ाना, भगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना ।

रंगत ( रंग ) ( स्त्री० ) रंग, वर्ण, शोभा, हुस्न, हाल-चाल, हालत, स्थिति ।

रँगना ( सं० रंजन ) ( कि० सं० ) रंग चढ़ाना, रंग देना ।  
रंगभूमि ( रंग+भूमि ) ( स्त्री० ) नाचघर, अखाड़ा, नाट्यशाळा, रंगशाळा, धनुर्यज्ञ की भूमि ।

रंगमहल ( पु० ) भोगविलास करने का महल ।

रंगरलियाँ ( स्त्री० ) आनंद, हर्ष, खुशी, रंगरस, हँसी-खुशी, हुलास, भोगविलास, हास-विलास ।

रंगवाई } ( रँगना ) ( १० ) रँगने की मजूरी ।  
रँगई }

रँगीला ( रंग ) ( वि० ) चटकीला, भवकीला, रसीला, रसिया, रसिक, छैला ।

रचक ( रच्+अक ) ( पु० ) बनानेवाला, मुसन्निक, उत्पादक ।

रचना ( सं० रचन, रच्=बनाना ) ( कि० सं० ) बनाना, नई बात निकालना, सिरजना, पैदा करना, तैयार करना, ( कि०अ० ) बनना, पैदा होना, तैयार होना ।

रचना ( रच्=बनाना ) ( स्त्री० ) तमनीक, बनावट, सजावट, तैयारी, पैदा की हुई चीज़, ग्रंथ ।

रचयिता ( पु० ) निर्माणक, रचनेवाला, मुसन्निक ।

रचाना ( सं० रच्=बनाना या रज्ज्=रँगना ) ( कि० सं० ) करना, बनाना, मेहँदी से अथवा अलत आदि और किसी चीज़ से हाथ-पैर रँगना, व्याह आदि शुभ काम को शुरू करना ।

रचित ( रच्=बनाना ) ( वि० ) बनाया हुआ, सिरजा हुआ, पैदा किया हुआ, निमित्त ।

रज } ( रज्ज्=रँगना ) ( स्त्री० ) रेत, धूलि, पराग,  
रजस् } फूलों की सुगंधित धूलि, स्त्री का कँवख या फूख, रजोगुण ।

रजक ( रज्ज्=रँगना ) ( पु० ) धोबी ।

रजकण ( पु० ) धूलिकण ।

रजकी ( रजक ) ( स्त्री० ) धोबिन ।

रजत ( रज्ज्=रँगना या चमकना या राज्=शोभना ) ( पु० ) चाँदी, रूपा, हाथीदँत, हार, सोना, ( वि० ) धोखा, शुकवर्ण, श्वेत, सफ़ेद ।

रजतद्युति ( पु० ) महावीर, ( वि० ) गौरवर्ण, श्वेतवर्ण ।

रजन ( पु० ) रागोत्पादन, रँगना, रँगसाज़ी ।

रजनि } ( रज्ज्=प्यार करना ) ( स्त्री० ) रात्रि, रात ।  
रजनी }

रजनिकर } ( रजनी=रात, क=करना ) ( पु० ) चाँद,  
रजनीकर } चंद्रमा ।

रजनिचर } ( रजनी=रात, चर्=चलना ) ( पु० )  
रजनीचर } राक्षस, असुर, निशाचर, भूत, प्रेत, चोर, रात को फिरनेवाला ।

रजनीजल ( पु० ) तुपार, ओस, नीहार, कुहरा ।

रजनीमुख ( रजनी=रात्रि, मुख=मुह ) ( पु० ) साँक, संध्या, प्रदोष, राति का प्रारंभ, सफ़क ।

रजवाड़ा ( राजा ) ( पु० ) छोटा राज, छोटा राजा, राज-पूताना ।

रजस्वला ( रजस् ) ( वि० ) वह स्त्री जो कपड़े से हो, ऋतुमती ।

रजाई } ( सं० राजादेश, राज=राजा, आदेश=आज्ञा )  
रजायसु } ( स्त्री० ) राजा की आज्ञा, राजा का हुक्म, जाड़े में ओढ़ने का वस्त्र, लिहाक, रहँदार दोहर ।

रजामंदी ( स्त्री० ) अनुमति, खुशी, प्रसन्नता ।

रजोगुण ( रजस्+गुण ) ( पु० ) दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध, प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं ।

रजोग्राहि ( पु० ) वायु, वात, हवा ।

रज्जु ( रज्ज्=पैदा होना या बनाया जाना ) ( स्त्री० ) रस्सी, रास, डोरी, जेवरी ।

रंज ( पु० ) रंजन, रँगना, रँगसाज़ी, रंग, राग ।

रंजक ( रज्ज्=प्यार करना या रँगना ) ( पु० ) प्यार करनेवाला, प्रीति करनेवाला, खुश करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला, रँगनेवाला, चित्रकार, रंग ।

रंजन ( रज्ज्=प्यार करना या रँगना ) ( पु० ) प्रसन्नता, प्यार, अनुराग, रँगना, रँगवट, चित्रकारी, लाल चंदन, ( वि० ) प्रीति करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला, खुश करनेवाला, हर्ष देनेवाला ।

रंजित ( रज्ज्=प्यार करना या रँगना ) ( वि० ) प्रसन्न, प्यार किया हुआ, रँग हुआ ।

रटना ( पु० ) धोपणा, रटना, याद करना ।

रटना ( सं० रटन, रट्=बोलना ) ( कि० सं० ) बोलना, कहना, बराबर बोलना, दोहराना, तिहराना ।

रटित ( वि० ) घोषित, याद किया हुआ ।  
 रण ( रण=शब्द करना ) ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, जंग, संग्राम, ध्वनि, शब्द, पर्यटन, भ्रमण ।  
 रणभूमि ( रण+भूमि ) ( स्त्री० ) रणक्षेत्र, लड़ाई का क्षेत्र, लड़ाई का मैदान ।  
 रणित ( रण=शब्द करना ) ( वि० ) बजना हुआ, बजती हुई ।  
 रंडा ( स्त्री० ) विधवा, राँड, अयुद्धागिन ।  
 रंडापा ( राँड ) ( पु० ) बेवापन, विधवापन ।  
 रंडिया ( स्त्री० ) राँड, विधवा स्त्री ।  
 रंडी ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया, दुराचारिणी स्त्री ।  
 रँडुआ ( पु० ) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो ।  
 रत ( रम्=मेलना ) ( पु० ) मैथुन, स्त्रीप्रसंग, कामकेलि, ( वि० ) लगा हुआ, तस्पर, आसक्त ।  
 रतजगा ( पु० ) रात्रिजागरण ।  
 रततालिन ( वि० ) अध्यापक, उस्ताद, कामुक, भङ्गा, परम्परागामी ।  
 रतताली ( स्त्री० ) कुन्ती, पुंश्चली ।  
 रतन ( पु० ) 'रत्न' शब्द का देवो ।  
 रतनार ( म० रत्न ) ( पु० ) लाल रंग, ( वि० ) लाल ।  
 रतनिया ( पु० ) एक प्रकार का चावल ।  
 रतवाही ( स्त्री० ) सुरैनिन, रक्खी हुई स्त्री, ( अत्य० ) शानोरात ।  
 रतहिंडक ( वि० ) वेश्यापति, लंपट, कामुक ।  
 रताना ( कि० अ० ) कामानुर होना ।  
 रतायनी ( स्त्री० ) रंजी, वेश्या ।  
 रताल् ( म० रतालु ) ( पु० ) एक सरकारी का नाम ।  
 रति ( रम्=मेलना ) ( स्त्री० ) कामदेव की स्त्री, प्यार, प्रेम, अनुराग, मैथुन, संभोग, स्त्रीप्रसंग, क्रीड़ा ।  
 रतिपति ( रति+पति ) ( पु० ) कामदेव ।  
 रती ( म० रति ) ( स्त्री० ) कामदेव की स्त्री, भाग्य, भाग, किस्मत, नसीब ।  
 रती नमकना ( मू० ) बड़ना, फलना-फूलना, भाग्यवान् होना ।  
 रतीर्वत ( वि० ) भाग्यवान्, प्रारब्धो, अच्छी किस्मतवाला ।  
 रतींधा ( रत=रात, रतींधा=प्रंधा ) ( पु० ) आँख की बीमारी जिसमें रात को नहीं दिसता है ।

रत्ती ( सं० रक्तिका, रक्त ) ( स्त्री० ) आठ जो की तौल, लाल धुँधची ।  
 रत्न ( रम्=मेलना, जिससे या प्रसन्न होना, जिसको देख कर ) ( पु० ) रतन, जवाहर, मणि, बहुत मोल का पत्थर, रत्न नौ हैं—( १ हारा, २ पन्ना, ३ नीलम, ४ माणिक, ५ लहसुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मुँगा ) आँख की पुतली ।  
 रत्नकंदल ( पु० ) प्रवाल, मूँगा ।  
 रत्नगर्भ ( पु० ) समुद्र, कुंवर, परमेश्वर, ( स्त्री० ) पृथिवी ।  
 रत्नजटित ( रत्न+जटित ) ( वि० ) रत्नों से जड़ा हुआ ।  
 रत्नमानु ( पु० ) सुमेरु-पर्वत ।  
 रत्नसिंहासन ( रत्न+सिंहासन ) ( पु० ) रत्नों से जड़ा हुआ तख्त ।  
 रत्नसू ( रम्=उत्पन्न करना ) ( स्त्री० ) मेदिनी, पृथिवी, जमीन ।  
 रत्नाकर ( रत्न=तत्रारि अथवा मोती, आकर=खान ) ( पु० ) समुद्र, रत्नों की खान ।  
 रत्नावली ( रत्न+अवली ) ( स्त्री० ) रत्नों की माला, रत्नमाला, एक नाटक ।  
 रथ ( रम्=मेलना, प्रसन्न होना ) ( पु० ) एक तरह की चार पहियों की गाड़ी ।  
 रथकार ( पु० ) रथ बनानेवाला, बड़ई, सूत्रधार, वर्णसकर, क्षत्रिय और वैश्य कन्या से उत्पन्न उसको 'माहिर्य' कहते हैं; वैश्य और शूद्र कन्या से जन्मा उसे 'करण' कहते हैं; माहिर्य और करण संज्ञावती कन्या से उत्पन्न पुत्र उसे 'रथकार' कहते हैं ।  
 रथगर्भक ( पु० ) कंधे की सवारी, शिविका, पालकी, डोली ।  
 रथगुप्ति ( स्त्री० ) रथ का परदा, रथ का ओहार, पोशिश, परदा ।  
 रथवान् ( पु० ) सारथी ।  
 रथवाहक ( पु० ) सारथी, यंनार ।  
 रथांग ( रथ+अंग ) ( पु० ) पहिया, चक्र, चाका, चक्रवा पक्षी, चक्रवाक ।  
 रथिक } ( रथ ) ( पु० ) रथ का स्वामी, रथ पर  
 रथी } चढ़नेवाला, रथ पर चढ़कर लड़नेवाला, जनाजा, ताबूत, मूर्ते की टिकटी ।

रथ्या ( स्त्री० ) गल्ली, मार्ग, डगर, राह, रास्ता ।

रद } ( रद=ढकड़े करना ) ( पु० ) दाँत, दंत, दशन,  
रदन } ३२ संख्या ।

रदचलुद } ( रद या रदन=दाँत, रद=ढकड़ना ) ( पु० )  
रदनचलुद } होठ, ओष्ठ, लव ।

रदनी ( पु० ) हाथी ।

रदपट } ( रद=दाँत, पट=आड़ ) ( पु० ) होठ, लव,  
रदपुट } जैसे—“रदपुट फरकत नयन रिसाँहें”—रामायण

रदा ( पु० ) भीत की परत, ईंट पर ईंट रखना ।

रही ( अ० रद ) ( स्त्री० ) निकम्मे और पुराने कागज़ ।

रनवास } ( रानीवास ) ( पु० ) रानियों के रहने का  
रनिवास } महल ।

रंति ( स्त्री० ) क्रीड़ा, प्रसन्नता, रमण, प्रीति ।

रंतिदेव ( पु० ) एक चंद्रवंशी राजा, कुकुर, कुत्ता ।

रंधना ( सं० रन्धन, रन्ध=पकना ) ( क्रि० अ० ) पकना ।

रंध्र ( रन्ध्र=नाश होना या पूरा होना ) ( पु० ) छेद,  
छिद्र, सूराल, दीप, दूषण, ऐब ।

रपटना ( क्रि० अ० ) फिसलना, खिसकना ।

रपटा ( पु० ) अभ्यास, स्वभाव, बान, ढलवाँ स्थान ।

रपटाना ( क्रि० अ० ) भगाना, कुदाना ।

रफू ( पु० ) फटे तथा डधड़े हुए कपड़े को सँवारना ।

रफूगर ( पु० ) रफू करनेवाला ।

रफूचकर ( क्रि० अ० ) भाग जाना

रबड़ ( स्त्री० ) श्रम, थकान, दौड़धूप, एक वृक्ष का दूध ।

रबड़ना ( क्रि० अ० ) भटकना, व्यर्थ दौड़धूप करना ।

रबड़ा ( वि० ) थका-माँड़ा श्रमिन् ।

रबड़ी ( स्त्री० ) गाढ़ा दूध, खोवा ।

रबी ( पु० ) मार्च-एप्रिल में काटी जानेवाली गेहूँ आदि  
की फसल ।

रम ( स्त्री० ) मदिरा-विशेष ।

रमक ( रम्+अक, रम्=कीड़ा करना ) ( पु० ) कामुक पति,  
परस्त्रीगामी, जार, ( वि० ) थोड़ा, कम, शर्श-मात्र ।

रमचेरा } ( पु० ) दास, गुलाम ।  
रामचेरा }

रमठ ( पु० ) होंग ।

रमण ( रम्=खेलना ) ( पु० ) खेल, क्रीड़ा, मैथुन, भोग-  
विज्ञास, रति, रमनेवाला, पति, प्रियतम, प्यारा,  
कामदेव, जार, मनोहर, गर्दम, पटोल की जड़ ।

रमणी ( रम्=खेलना ) ( स्त्री० ) सुंदर और मनोहर स्त्री ।

रमणीक ( सं० रमणीय ) ( वि० ) मनभावन, सुंदर,  
सुहावना, दिलचस्प ।

रमणीय ( रम्=खेलना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, रम्य,  
दिलरुषा ।

रमति ( पु० ) नायक, पति, घूमनेवाला, घूमता है ।

रमना ( सं० रमण ) ( क्रि० अ० ) खेलना, क्रीड़ा करना,  
भोग करना, आनंद करना, फिरना, घूमना, ( पु० )  
शिकार करने की जगह ।

रमहा ( अ० रमल ) ( पु० ) एक तरह का ज्योतिष-शास्त्र ।

रमस ( पु० ) हर्ष, वेग, तेज़ी, उत्पुक्तता ।

रमा ( रम्=खेलना ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, स्त्री,  
लुगाई ।

रमापति ( रमा+पति ) ( पु० ) विष्णु, नारायण,  
भगवान् ।

रंभा ( रभि=शब्द करना ) ( स्त्री० ) एक अप्सरा का  
नाम, वेश्या, केला, कदली, पार्वती, बिलचा,  
खंता ।

रम्य ( रम्=खेलना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, रमणीय ।

रम्या ( स्त्री० ) रात्रि, सुंदरी, पत्नी ।

रम्न ( पु० ) प्रारंभ, पूर्वभाग, अश्वोद्ध्य, शोभा ।

रय ( रय्=जाना ) ( पु० ) वेग, प्रवाह, जल्दी, साहस ।

रयो ( क्रि० अ० ) रँग, मिले ।

ररना ( पु० ) बोलना, शब्द करना, री-री करना ।

रराटी ( स्त्री० ) कपाल, ललाट ।

रलना ( क्रि० अ० ) मिलना, पिसना, बुकनी होना ।

रल्लक ( पु० ) कम्मल, पक्षकम्मल ।

रन् ( रन्=शब्द करना ) ( पु० ) शब्द, ध्वनि, आवाज़,  
आहट ।

रन्ना ( पु० ) चुंगी के महमूल का रसोद, रनवास  
का सेबक ।

रवा ( पु० ) सोने या चाँदी का कण, बाज़ और मिश्री  
आदि का दाना, गेहूँ की मैदा से छाना हुआ दाना ।

रवि ( र=शब्द करना, अर्थान् स्तुति करना ) ( पु० ) सूर्य ।

रविक ( पु० ) नीम का पेड़ ।

रविज ( पु० ) शनिश्चर ग्रह, यम ।

रवितनया ( रवि+तनया ) ( स्त्री० ) यमुना-नदी ।

रविर्नन्दिनी ( रवि+नन्दिनी ) ( स्त्री० ) यमुना-नदी ।

रविपुत्र ( पु० ) कर्ण, सुग्रीव ।

रविमणि ( स्त्री० ) सूर्यकांतमणि, सूर्य की मणि ।

रविमंडल ( रवि+मंडल ) ( पु० ) सूर्यमंडल, सूर्य-लोक ।

रविवार ( रवि=सूर्य, वार=दिन ) ( पु० ) एतवार, इतवार, आदिस्थवार, सूर्य का दिन ।

रशना ( रश=शब्द करना ) ( स्त्री० ) स्त्रियों के पहनने की करधनी ।

रश्मि ( अशु=कलना या रश=शब्द करना ) ( स्त्री० ) किरण, तेज, कानि, राम, घोड़े की बागडोर ।

रस ( रस्=स्वाद लेना, प्यार करना ) ( पु० ) अर्क, किसी पौधे का दूध, सार, स्वाद, सवाद, मज्जा, चाट, रुचि, रस छः प्रकार के हैं—( १ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा, ४ कड़वा, ५ तीता या चर्परा, ६ कपिला ) साहित्य अथवा हल्म अद्वय में नौ रस हैं—( १ शृंगार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रंज, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत, ९ शान्ति या वात्सल्य ) पारा, मेख, मिलाप, आपस की प्रसन्नता, प्यार, द्रव-पदार्थ, बहनेवाली चीज़ ।

रसक ( पु० ) खपरिया ।

रसकपूर ( पु० ) कर्पूर रस, पारा, पारद ।

रसज्ञ ( रस=स्वाद, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) रसिक, रस का जाननेवाला, भाव जाननेवाला, सार जाननेवाला, ( पु० ) कवि, पति, रसायनी ।

रसज्ञा ( रस=स्वाद, ज्ञा=जानना ) ( स्त्री० ) जीभ ।

रसद् ( पु० ) सेना के भोजन का सामान ।

रसन ( पु० ) रसाद, लज्जन ।

रसना ( रस्=स्वाद लेना ) ( स्त्री० ) जीभ, जिह्वा, रसजा ।

रसनैद्रिय ( पु० ) जिह्वा, जीभ, ज्ञान ।

रसमसाना ( कि० अ० ) पसीजना, भीजना ।

रसरस ( कि० वि० ) धीरे-धीरे ।

रसरा ( पु० ) डोरी, मोटा रस्सा ।

रसरसज ( पु० ) पारा धातु, शृंगार-रस ।

रसवत ( स्त्री० ) रसौत, श्रीधर-विशेष, अंजन-विशेष ।

रसा ( रस ) ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, ज़मीन, जीभ ।

रसातल ( रसा=धरती, तल=नीचे ) ( पु० ) पाताल, नीचे का सातवाँ लोक; जहाँ नाग, असुर, दैत्य और राक्षस रहते हैं और शेषजी और राजा बलि आदि राज्य करते हैं ।

रसायन ( रस्=अर्क या पारा, अयन=राह या जाना ) ( पु० ) दो-तीन चीज़ों को मिलाकर एक चीज़ बनाने की अथवा दो-तीन चीज़ों को जुदा-जुदा करने की विद्या, क्रामियागिरी ।

रसायनविद्या ( स्त्री० ) हल्मक्रीमिया, केमिस्ट्री ।

रसाल ( रस=स्वाद, आ=चारों ओर से, ला=लेना ) ( पु० ) आम, पनस, ऊख ।

रसिक ( रस ) ( वि० ) रस जाननेवाला, रसीला, रसिया, रसज, लंपट, लुच्चा, पेयाश ।

रसिकाई ( स्त्री० ) धूर्तता ।

रसिया ( सं० रमिक ) ( वि० ) लुच्चा, लंपट, विषयी, भोगी, पेयाश ।

रसीद् ( स्त्री० ) पहुँच-पत्र, संवाद-पत्र ।

रसीला ( रस ) ( वि० ) रसभरा, रुस्वादु, मजेदार, विषयी, व्यसनी, भोगी, लंपट ।

रसैद्र ( रस+ईद्र ) ( पु० ) पारा धातु, रसरसज ।

रसोइया ( रसोई ) ( पु० ) रसोई बनानेवाला, खाना पकानेवाला ।

रसोई ( सं० रसवती ) ( स्त्री० ) खाना बनाने की जगह, खाना, भोजन ।

रसोत्पल ( रस+उत्पल ) ( पु० ) मुक्काफल, मोती, पारसमणि, पारस-परधर ।

रस्म ( स्त्री० ) दस्तूर, रीति ।

रस्सी ( सं० रश्मि ) ( स्त्री० ) डोरी, जेबरी ।

रहकल ( पु० ) छोटी तोप, तुपक ।

रहकला ( पु० ) एक तरह की तोप, ताँगा, एक तरह की गाड़ी ।

रहन्वाला ( पु० ) लल्लोचप्पी, मोठी बातें ।

रह जाना ( कि० अ० ) बाट जोड़ना, संतोष करना ।

रहट ( स्त्री० ) गरारी, चर्खी, पानी खींचने की कल ।

रहटा ( स्त्री० ) चरखा, सूत कातने की कल ।

रहत ( पु० ) टिकाव, बास ।

रहड़ ( पु० ) छोटी गाड़ी ।

रहन } ( सं० रहण, रह=जाना ) ( स्त्री० ) चालचलन,  
रहनि } रीति ।

रहम ( पु० ) दया, तरस, गर्भ-स्थान ।

रहमान ( वि० ) दयालु, कृपा करनेवाला ।

रहमार ( वि० ) बटमार, चोर, डाकू ।

रहला ( पु० ) चना, बूट, छोला, रहिला, जैसे—  
‘रहिमन रहिला की भली...’—रहीम ।

रहवा ( पु० ) चेला, नौकर, दास ।

रहवाई ( स्त्री० ) घर का भाड़ा ।

रहस् ( पु० ) वेग, तेज़ी ।

रहस् ( पु० ) एकांत, गोप्य, गुह्य, तन्त्र, ( अव्य० )  
निर्जन, जनरहित, एकांत, तनहाई, गिलवन ।

रहस } ( सं० रहस्य ) ( कि० वि० ) एकांत में, तन-  
रहसि } हाई ।

रहस्य ( रह=छोड़ना ) ( वि० ) एकांत, निर्जन, गुप्तवस्तु,  
गोपनीय, भेद, तत्पर

रहित ( रह=छोड़ना ) ( वि० ) बिना, छोड़ा हुआ,  
खाली, हीन, शून्य, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न ।

रहाम ( वि० ) दयालु, रहम करनेवाला, ( पु० ) एक  
प्राचीन कवि का नाम ।

राई ( सं० राजिका, राज=चमकना ) ( स्त्री० ) सरसों के  
ऐसी एक चीज़ का दाना ।

राई } ( सं० राजा ) ( पु० ) राजा, स्वामी, प्रधान,  
राऊ } जैसे—रघुराई या रघुराऊ और नंदराय ।  
राय }

राउत ( सं० राजपुत्र ) ( पु० ) सरदार, मालिक ।

राँग } ( सं० रंग ) ( पु० ) एक धातु का नाम ।  
रांगा }

राँभन } ( सं० रंजन ) ( पु० ) प्रियतम, सजन, एक  
राँभा } मनुष्य का नाम जो हीर का आशिक अर्थात्  
प्रियतम था; जिसका राजपूताने में होली के दिनों में  
स्वर्गा बनता है ।

राँभरा ( पु० ) खिलौनेवाला ।

राँड ( सं० एडा ) ( स्त्री० ) विश्रवा, जिस स्त्री का पति  
मर गया हो ।

राँड का साँड ( मुहा० ) विश्रवा लुगाई का बेटा, बिगड़ा  
हुआ लड़का ।

राँदपड़ोस ( पु० ) अड़ोस-पड़ोस ।

राँधना ( सं० रन्धन, रन्ध=पकाना ) ( कि० स० ) पकाना,  
रींधना ।

राँपी ( स्त्री० ) खुरपी, करणी ।

राँभना ( सं० रम्भन रभि=शब्द करना ) ( कि० अ० )  
गाय का शब्द करना, उँकारना, बिबियाना ।

राकस ( पु० ) राक्षस, दानव, दैत्य ।

राका ( रा=देना, एव अथवा आनंद को ) ( स्त्री० ) पूनो,  
रात्रि, पूर्णमासी, नदी, खुजली, प्रथम रजोवती स्त्री ।

राकापति ( राका+पति ) ( पु० ) पूर्णमासी का चाँद ।

राकेश ( राका+ईश ) ( पु० ) पूर्णमासी का चंद्रमा ।

राक्तस ( रक्=वचाना, जिससे होम की सामग्री को अथवा  
अपने को ) ( पु० ) अमुर, निशिचर, रजनीचर ।

राख ( सं० रक्षा, रक्=वचाना ) ( स्त्री० ) भस्म, भभूत, खाक ।

राखना ( सं० रक्षण ) ( कि० स० ) रखना, धरना,  
बचाना ।

राखी ( सं० रक्षिका, रक्=वचाना ) ( स्त्री० ) रँगें हुए सूत  
का तार, जिसको हिंदू पूजा आदि उत्सव में अपने  
हाथ में बाँधते हैं, सावन सुदी १२ का त्योहार जिसमें  
ब्राह्मण और जाति के लोगों के हाथ में रँगें हुए  
सूत का तार या रेशम का डोरा बाँधते हैं ।

राग ( रञ्ज=रंगना या प्यार करना ) ( पु० ) क्रोध, प्यार,  
रंग, गान, सुर—गानविद्या में छः राग हैं ( १ भैरव,  
२ मल्लार, मेघ, श्रीराग, ३ सारंग, ४ हिंडोल, ५ वसंत,  
६ दीपक ) ।

राग छाना ( मुहा० ) राग-रंग होना, गाना-बजाना  
होना, तान मिलना ।

राग-रंग ( मुहा० ) गाना-बजाना ।

रागना ( राग ) ( कि० स० ) गाना शुरू करना ।

रागिणी ( राग ) ( स्त्री० ) गानभेद, तान, स्वर ( ६  
राग और ३६ रागिणियाँ हैं ) १ राग भैरव—उत्पत्ति,  
शिव के मुख से निकला है, शिव का ध्यान, शब्द  
ऋतु में पिछली राति को गाया जाता है ; उसकी  
रागिणी ( १ भैरवी, २ बंगाली, ३ बरारी, ४ मधुमाधवी,  
५ सिधवी, ६ गुजरी ) २ मल्लार या मेघ—वर्षाऋतु  
में सब समय में विशेष करके शृंगाररस में गाया जाता  
है, इसके गाने से अनायास मेघवृष्टि हो, रागिणी  
( १ नेलावली, २ वर्षा, ३ कानदा, ४ माधवी, ५ कीदा,

६ पटमंजरी) ३ श्रीराग या सारंग—हेमन्तऋतु में मिहासनारुद्र मुंदर पुरुष का ध्यान करके गाया जाता है; रागिणी—( १ गांधारी, २ सुमंगी, ३ गौरी, ४ कामांका, ५ वेगगी, ६ काफी ) ४ हिंडोला—प्रता के शरीर से इसकी उत्पत्ति है; वसन्तऋतु में दिन के प्रथम भाग में हिंडोळारुद्र पुरुष का ध्यान करके गाया जाता है; इसके गान से हिंडोला आप-से-आप चलने लगता है। रागिणी—( १ मायूरी, २ दीपक, ३ देशावरी, ४ पाहिंडा, ५ बरांडी, ६ मारहारी ) ५ वसंत—वसंतपंचमी से रामनवमी तक आठों पहर वीररस में गाया जाता है; रागिणी—( १ टोरी, २ पंचमी, ३ त्वलिता, ४ पटमंजरी, ५ गुजरी, ६ विद्यागा ) ६ दीपक सूर्य के नेत्र से इसकी उत्पत्ति है, गजारुद्र पुरुष का ध्यान करके मीधमऋतु में मध्याह्नसमय गाया जाता है; रागिणी—( १ देशी, २ कामोदा, ३ कंदारा, ४ कान्हडी, ५ कर्णाटकी, ६ गुजरी ) इसके गाने पर बुझा दीपक जल उठता है।

रागी ( वि० ) गानेवाला, अनुरागी, प्रेमी, कोपी।  
राघव ( म् ) ( पु० ) रघुनाथ, रघुराज, रघुनंदन, श्रीरामचंद्र।

राचना ( सं० रचन, रच=रचाना ) ( कि० म० ) प्यार के वश होना, मिलापना, मन लगाना, लीन होना; जैसे—“मन जाहि रांचो...”—रामायण।

राज ( पु० ) बड़े अथवा राज अथवा कारोगरों का अधिकार।

राज ( सं० गत्य ) ( पु० ) बादशाहत, हुकूमत, बादशाही, भ्रमल, राजा का अधिकार, राज्य।

राज ( पु० ) कारीगर, मैमार, संगतराज।

राजकन्या ( राजन्=राजा, कन्या=बेटी ) ( स्त्री० ) राजा की बेटी, राजकुंवारी, राजकुमारी।

राजकर ( पु० ) राजस्व, लगान, चुंगी, महसूल, सरकारी मालगुजारी।

राजकीय ( वि० ) सरकारी, बादशाही।

राजकीय महासभा ( स्त्री० ) शाही दरबार, पालिया-मेंट।

राजकुटुंब ( पु० ) शाही खानदान, राजवंश, राजा का ।

राजकुमार ( राजन्+कुमार ) ( पु० ) राजा का बेटा, राजपुत्र, राज्य का उत्तराधिकारी।

राजकृत्य ( पु० ) कारसस्तनत, राजकाज।

राजकोष ( पु० ) बादशाही खजाना, राज्यल द्जेजरी।

राजगादी ( राजा+गादी ) ( स्त्री० ) राजगद्दी, राजा का आसन, पायहतस्त।

राजदंड ( पु० ) राज-संबंधी दंड, शासन-दंड।

राजदत्त ( वि० ) राजा का दिया हुआ, राजा से प्राप्त।

राजद्रोही ( पु० ) राजा का वैरी, राजविमुख, बागी।

राजद्वार ( राजन्+द्वार ) ( पु० ) राजा की खोली।

राजधानी ( राजन्=राजा, धा=रखना या रहना ) ( स्त्री० ) राजस्थान, राजपुर, वह नगर जहाँ राजा रहे और राज का कामकाज हो, दारुलसलतनत।

राजना ( सं० राजन, राज=शोभना, चमकना ) ( कि० श्र० ) शोभना, चमकना, विराजना।

राजनोति ( राजन+नोति ) ( स्त्री० ) राज करने की रीति, राजप्रबंध, एक ग्रंथ का नाम, राजविज्ञान।

राजन्य ( पु० ) क्षत्रिय, राजपुत्र।

राजपत्नी ( राजन्+पत्नी ) ( स्त्री० ) रानी।

राजपुत्र ( राजन्+पुत्र ) ( पु० ) राजा का बेटा, राजकुमार, राजपूत, क्षत्रिय।

राजपूत ( सं० राजपुत्र ) ( पु० ) क्षत्रिय।

राजभवन ( राजन्+भवन ) ( पु० ) राजा का महल।

राजमंदिर ( राजन्+मंदिर ) ( पु० ) राजा का महल।

राजमार्ग ( राजन्+मार्ग ) ( पु० ) बादशाही रास्ता, आम रास्ता।

राजरोग ( राजन्+रोग ) ( पु० ) रोगों का राजा अर्थात् बड़ा रोग, जैसे—क्षयरोग आदि।

राजशासन ( राजन्+शासन ) ( पु० ) राजा का दंड।

राजस ( राजस् ) ( वि० ) राजोगुण से पैदा हुआ, ( पु० ) राजोगुण, अहंकार, क्रोध, मोह आदि।

राजसभा ( राजन्+सभा ) ( स्त्री० ) राजा का दरबार।

राजसूय ( राजन्=राजा, सू=सींवना या किया जाना ) ( पु० ) एक यज्ञ जिसकी केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा कामकाज केवल उसके अधीन अन्य राजा करते हैं।

राजहंस ( राजन्+हंस अर्थात् हंसों का राजा ) ( पु० ) एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती है।

राजा ( राजन्, राज्=शोभना, चमकना ) ( पु० ) नरपति, भूपति ।

राजाधिराज ( राजा+अधिराज ) ( पु० ) बड़ा राजा, महाराज, राजेश्वर, चक्रवर्ती, शाहंशाह ।

राजिका } ( राज्=शोभना, चमकना ) ( स्त्री० ) पंक्ति,  
राजी } पॉति, श्रेणी, कतार, पॉती, राई, नाली,  
नहर, केदार, क्यारी, वन, उत्तर भूमि ।

राजित ( राज्=शोभना, चमकना ) ( वि० ) शोभित, झलकृत ।

राजीव ( राज्=चमकना ) ( पु० ) कमल, कँवल, पद्म ।

राजेंद्र ( राजन्+ईन्द्र ) ( पु० ) महाराज, राजाधिराज ।

राजेश्वर ( राजन्+ईश्वर ) ( पु० ) राजाओं का राजा, महाराज, राजाधिराज, शाहंशाह ।

राज्य ( राज्=शोभना, चमकना ) ( पु० ) 'राज' शब्द को देखो ।

राज्यांग ( राज्य+अंग ) ( पु० ) राजा, मंत्री, मित्र, कोष, दुर्, सेना ।

राठौर ( पु० ) राजपूतों की एक जाति ।

राढ़ी ( पु० ) ब्राह्मणों की एक जाति, राढ़देशीय ब्राह्मण ।

राणा ( सं० राजन् ) ( पु० ) राजा ( उदयपुर के राजा को राणा कहते हैं ) ।

राणी } ( सं० राज्ञी, राज्=शोभना, चमकना ) ( स्त्री० )  
रानी } राजा की स्त्री, राजपत्नी ।

रात } ( सं० रात्रि ) ( स्त्री० ) रजनी, रैन, निशा,  
राती } निशि ।

रात थोड़ी और साग बहुत ( मुहा० ) उस जगह बोला जाता है जहाँ काम तो बहुत हो और समय थोड़ा हो या थोड़ी आमदनी हो और बहुत खर्च हो ।

रातोंरात ( मुहा० ) रात ही में ।

रातना ( राता ) ( कि० सं० ) रँगना, रँग देना, ( कि० अ० ) किसी से बहुत प्यार होना, किसी पर जी लगना ।

राता ( सं० रक्त ) ( वि० ) लाल, रँग हुआ, लगा हुआ ।

१. "स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सहर् ।

परस्परपकारीदं सप्तांगं राज्यमुच्यते" ॥

( इति कामन्दकीये )

राते ( वि० ) रक्त, लाल, जैसे — "रात के उनींदे अल-साते मदमाते राते..." — "सेख"

रात्रि } ( रा=देना सुख को ) ( स्त्री० ) रात, रजनी ।  
रात्री }

रात्रिचर ( रात्रि+चर ) ( पु० ) राक्षस, भूत, चौर, रात को फिरनेवाला, चौकीदार ।

रात्रिमणि ( पु० ) चंद्र, चाँद ।

रात्र्यंध ( पु० ) कौआ, तोता, बक, कोकिल आदि, वह जिसे रात में दिखाई न पड़े ।

राद् } ( स्त्री० ) पीब, मवाद ।  
राथ्र }

राद्ध ( राप्=सिद्ध करना ) ( वि० ) सिद्ध, कामयाब ।

राधन ( पु० ) साधन ।

राधा ( राप्=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( स्त्री० ) एक गोपी जो श्रीकृष्ण को बहुत प्यारी थी, एक नक्षत्र, विशाखा नक्षत्र ।

राधाकांत ( राधा+कांत ) ( पु० ) श्रीकृष्णचंद्र ।

राधाकुंड ( राधा+कुंड ) ( पु० ) गोवर्द्धन पहाड़ के पास एक कुंड, जिसको श्रीकृष्ण ने खुदवाया था और उसमें सब तीर्थ आकर पानी डाल गये थे ।

राधावल्लभ ( राधा+वल्लभ ) ( पु० ) श्रीकृष्णचंद्र ।

राधिका ( राप्=सिद्ध करना ) ( स्त्री० ) राधा गोपी ।

रान ( पु० ) जाँघ, जानू ।

राब ( स्त्री० ) उल्ल और गले का रस ।

राव } ( स्त्री० ) जुवार या बाजरे को छाछ में  
रावड़ी } मिलाकर पकाया हुआ खाना ।

राव ( रु=शब्द ) ( पु० ) शब्द, ध्वनि ।

राम ( रम्=खेलना, जिममें योगी रमते हैं, अर्थात् जिसके ध्यान में लगे रहते हैं ) ( पु० ) परशुराम ( विष्णु का यह अवतार, यमदग्नि ऋषि के घर वेतायुग के शुरू में अन्यायी क्षत्रियों को दंड देने के लिये हुआ था ), रामचंद्र, राजा दशरथ के पुत्र ( विष्णु का यह अवतार अयोध्या के राजा दशरथ के घर वेतायुग के अंत में लंका के राजा रावण को मारने के लिये हुआ ), बजराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जो द्वापर युग के अंत में रोहिणी से पैदा हुए, ( वि० ) सुंदर, मनोहर, शुभ, सुखदायी, सर्वव्यापक ।

रामकहानी ( मुहा० ) बड़ी लंबी बात, लंबी कथा, आत्मकथा, ( स्त्री० ) रामायण ।

रामराम ( मुद्रा० ) सलाम, प्रणाम, नमस्कार ( गँवार लोग मलाम की जगह रामराम करते हैं ) ।

रामकली } ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम ।  
रामकेला }

रामगिरि ( राम+गिरि ) ( पु० ) चित्रकूट पहाड़ जो बुंदेलखंड में है; जहाँ वनवास के समय रामचंद्र पहलेपहल रहे थे ।

रामचंद्र ( राम+चंद्र, अर्थात् चंद्र के ऐसे सुखदायी राम ) ( पु० ) विष्णु का सातवाँ अवतार, श्रीरघुनाथ, राजा दशरथ के बड़े बेटे ।

रामजनी ( सं० रामाजनी, रामा=मनभावन, जनी=स्त्री ) ( स्त्री० ) कंचनी, पतुरिया, नौची, वेश्या ।

रामतुरई ( स्त्री० ) एक तरकारी का नाम ।

रामदूत ( राम+दूत ) ( पु० ) रामचंद्र का दूत, हनुमान् ।

रामदाहाई ( स्त्री० ) राम की सौगंद, परमेश्वर की शपथ ।

रामरस ( पु० ) लवण, नमक ।

रामा ( रम्=वल्लभा ) ( स्त्री० ) सुंदर स्त्री, मनोहर नारी, मृधर लुगाई, ( वि० ) सुंदर, मनोहर, मनभावन ।

रामानंदी ( सं० रामानंदीय ) ( पु० ) रामानंद के मत की माननेवाला, ध्येय, ( वि० ) रामानंद-संबंधी ।

रामायण ( राम+गमनचंद्र, अथवा=जगद् या रास्ता, अथवा भविष्य ) ( स्त्री० ) रामचरित, रामकथा ।

रामायन ( पु० ) एक तरह के वैष्णव साधु ।

राय } ( सं० राजा ) ( पु० ) राजा, राय, हिंदुओं में  
रात्र } और विशेष करके कायस्थों में एक पदवी होती है, भाटों की पदवी ।

रायता ( पु० ) एक तरह की तरकारी जो दही में कढ़ादि मिलाने से बनती है ।

रायमुनि ( पु० ) एक प्रकार का लाल पत्थर ।

रायल कमीशन ( पु० ) मंडल, राजा की ओर से कुछ मनुष्य किसी कार्य के निर्णयार्थ नियत किये जायें ।

रायलकैमिली ( पु० ) राजवंश, राजकुटुंब, शाही-घराना, शाही खानदान ।

रार } ( स्त्री० ) लड़ाई, झगड़ा, कलह, दंगा,  
रारि } फसाद ।  
राड़ }

राल ( रा=देना ) ( स्त्री० ) धूना, एक तरह का गोंद ।

रावचाव ( पु० ) रागरंग, विज्ञास, आनंद, हर्ष, भोगविज्ञास, ध्यार, प्रीति, लाग, लगाव ।

रावटी ( स्त्री० ) एक तरह का स्त्रीमा ।

रावण ( रु=शब्द करना या रलाना, बैरियों को ) ( पु० ) लंका का राजा जिसको श्रीरामचंद्र ने मारा ।

रावणारि ( रावण+अरि ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।

रावन } ( पु० ) वीर, बहादुर, शूरमा, सामंत, लड़ाका,  
राउन } शूरवीर, एक नीच जाति जो भंगी के बराबर है ।

रावरा

रावरी } ( सर्वना० ) तुम्हारा, आपका ।  
राउर }  
रौरा }

राशि ( अश=फैलना या फैलाना ) ( स्त्री० ) धान आदि का ढेर, समूह, उद्योतिष में मेष, वृष, मिथुन आदि बारह राशियाँ, हिसाब में एक प्रकार का अंक ।

राशिचक्र ( राशि+चक्र ) ( पु० ) उद्योतिषचक्र, लग्न-मंडल, द्वादशभाव ।

राष्ट्र ( रात्र्=शोभना, चमकना ) ( पु० ) बसा हुआ देश, मुल्क ।

रास ( राश्मि ) ( स्त्री० ) डोर, बाग, जैसे घोड़े की रास ।

रास ( राप्=शब्द करना ) ( पु० ) खेल, क्रीड़ा, नाच, जैसे श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था ।

रासन ( पु० ) रसनाजन्यज्ञान, जीभ का स्वाद ।

रासभ ( राप्=शब्द करना ) ( पु० ) गंधा, खर, गर्दभ ।

रासी ( पु० ) साधारण, मध्यम ।

राहु ( रहु=छाड़ना ) ( पु० ) आठवाँ ग्रह ।

राहुग्रस्त } ( राहु+ग्रस्त या ग्राम ) ( वि० ) ( पु० ) चंद्र-  
राहुग्रास } सूर्य का ग्रहण ।

रिक्त } ( रिन्=रिक्त, रिन्=खाली करना ) ( वि० )  
रिक्त } खाली, खूँखा, शून्य, खिन्न-भित्त ।

रिग्युलेशन ( पु० ) मंजूरी क्रानून, व्यवस्था स्वीकार कराना, प्रस्तावित विषय ।

रिभाना ( सं० रंजन ) ( कि० सं० ) प्रसन्न करना, खुश करना ।



रिपु (रप्=बुराई बात कहना) (पु०) वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

रिपुंजय (रिपु=वैरी को, जि=जीतना) (पु०) एक राजा का नाम, (वि०) वैरी को जीतनेवाला ।

रिपुता (स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी, अदावत ।

रिपुसूदन (रिपु=वैरी, सूद=नाश करना) (पु०) शत्रुघ्न, श्रीरामचंद्र का भाई, लक्ष्मण का छोटा भाई ।

रिपुहा (वि०) रिपुहंता ।

रिपुजंटेडिव सिस्टम (पु०) वह विधान जिसमें साधारण प्रजाजन अपने समूह से कुछ सज्जनों को अपने अनुशासन के हेतु अनुशासक नियत करते हैं ।

रिफार्मर (री=दुबारा, फार्मर=सुधारनेवाला) (पु०) संशोधक, सुधारक, सुधार करनेवाला ।

रिस (सं० रोष) (स्त्री०) कोप, क्रोध, गुस्सा, खिसियाव ।

रिसाना } (सं० रूप=कोप करना) (क्रि० अ०)  
रिसियाना } कोपना, खिसियाना, क्रोधित होना, गुस्सा होना, अप्रसन्न होना ।

रिस्पांडेंट (पु०) अनुयोज्य, वह जिस पर अपील की जाय ।

रिष्ट (रिष्+त) (पु०) रंगल, कल्याण, (वि०) पुष्ट, दृढ़, कठोर ।

रिष्टि (रिष्+ति) (स्त्री०) शुभ, अशुभ, नाश, (पु०) खड्ग, तखवार ।

रींगना (सं० रिग्=जाना) (क्रि० अ०) चलना, रेंगना, धीरे-धीरे चढ़ना ।

रींछु } (सं० ऋत्, ऋप्=जाना) (पु०) भाल, एक  
रींछु } जंगली जानवर का नाम ।

रींधना (सं० रन्धन, रन्ध्=पकना) (क्रि० सं०) पकाना, रींधना ।

रींझना (सं० रंजन) (क्रि० अ०) प्रसन्न होना, खुश होना, प्यार करना ।

रीढ़ (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी ।

रीता (सं० रिक्त, रिच्=खाली करना) (वि०) खाली, खूँछा, शून्य ।

रीति } (री=जाना) (स्त्री०) चाल-ढाल, प्रकार,  
रीत } प्रचार, रस्म, क्रायदा, स्वभाव, पीतल, प्रस्ताव, टपकना, लोहकट्ट, सीमा, गति, स्वभाव, लोकाचार ।

रीस (सं० रोष) (स्त्री०) क्रोध, कोप, गुस्सा ।

रुक (रुच्=चाहना) (पु०) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश ।

रुकना (सं० रुच्=रोकना) (क्रि० अ०) अटकना, बंद होना ।

रुकवैया (वि०) रुकनेवाला, अटकनेवाला ।

रुकाव (पु०) बाधा, रोक, अटकाव ।

रुकावट (स्त्री०) अटकाव, छेकाव ।

रुक्म (सं० रुक्मी, रुच्=चमकना या प्यार करना) (पु०) राजा भीष्मक का बड़ा बेटा, रुक्मिणी का भाई और श्रीकृष्ण का साला जिसको बलदेवजी ने मारा ।

रुक्मिणी (रुच्=चमकना या प्यार करना) (स्त्री०) लक्ष्मी का अवतार, कुंडिनपुर के राजा भीष्मक की बेटो जो श्रीकृष्ण का ब्याहो गई थी और पहले जन्म में सोता थी ।

रुक्ता } (रुच्=रूखा होना) (वि०) अचिकृष्ण, निस्सनेह,  
रुक्ता } कठोर, रूखा ।

रुख (पु०) सम्मुख, क्रोध, मुँह, शतरंज का हाथी, हथारा, दयादृष्टि, मेहरबानी की नज़र ।

रुखड़ा (वि०) कठोर, (पु०) छोटा वृक्ष ।

रुखाई (रूखा) (स्त्री०) रुखावट, सुखावट, घुबकी, भिड़की, धमकी, रुक्षता, उदासीनता ।

रुखानी (स्त्री०) बड़ई का एक औज़ार ।

रुग्ण (वि०) रोगी, टेढ़ा ।

रुचक (रुच्=प्रीति करना) (पु०) सज्जोखार, मांगलय द्रव्य, उत्कट, अश्वभूषण, माछा, हींग, काला नोन, बीजपूर नीबू, दाल, निपक, कपोत, (वि०) हर्षित, प्रसन्न ।

रुचना (सं० रुचन, रुच्=प्यार करना वा चाहना) (क्रि० अ०) भाना, अच्छा लगना, पसंद आना ।

रुचि (रुच्=चमकना वा प्यार करना) (स्त्री०) चाह, इच्छा, अभिलाषा, स्तुहा, चोप, शौक, खाने की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, चमक, शोभा, प्यार, अनुराग ।

रुचिर (रुचि=चाह या प्यार, रा=देना) (वि०) सुंदर, मनोहर, मनभावन, मोठा, सुस्वादु ।

रुचि (स्त्री०) पसंद, प्रवृत्ति, रुचि, चाह ।

रुच्य } (वि०) सुंदर, रुचिकर, मधुर, स्वादयुक्त,  
रुचिष्य } मनोहर, पसंदीदा ।

रज्ज } ( रज्ज=बीमार होना ) ( पु० ) रोग, बीमारी ।

रंड ( रुद्र या रुद्र=मारना ) ( पु० ) धड़, बिना सिर की देह ।

रुदन ( रुद्र=रोना ) ( पु० ) रोना, आँसू बहाना,

विलाप, गिरियावजारी करना ।

रुद्ध ( रुप्=रोकना ) ( वि० ) रुका हुआ, छँका हुआ, अटक हुआ, बँधा हुआ ।

रुद्र ( रुद्र=गेता या शब्द करना ) ( पु० ) शिव, महादेव की ग्यारह मूर्ति, अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, सृगेश्वर, जयंत, बहुरूप, अर्धबक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र, ११ संख्या ।

रुद्राक्रोष्ट ( पु० ) श्मशान ।

रुद्राक्ष ( रुद्र=शिव, अक्ष=आँख अर्थात् जिसका रूप शिव की आँखों-जैसा होता है ) ( पु० ) एक वृक्ष जिसके दानों की माला बनती है ।

रुद्राणी ( रुद्र ) ( स्त्री० ) शिवा, दुर्गा, पार्वती, शिवरानी ।

रुधिर ( रुप्=रोकना ) ( पु० ) लोहू, लहू, खून, रक्त, मंगलग्रह, रक्तवर्ण ।

रुपना ( कि० अ० ) डटना, अड़ना, धमना ।

रुपया } ( रुपा ) ( पु० ) रुपये का एक सिक्का जो रुपैया } सोलह आने के बराबर होता है ।

रुमा ( स्त्री० ) सुमीव की स्त्री ।

रुम ( पु० ) मृगभेद, दैत्य, सर्प, अतिकूर ।

रुलना ( कि० ग० ) चूर करना, बूँकना, लोह से पीसना ।

रुलाना ( कि० ग० ) दुःख देना, दुखाना ।

रुसना ( कि० स० ) अप्रसन्न होना, रिसाना ।

रुप् } ( स्त्री० ) क्रोध, कोप, आमर्ष ।

रुपित ( वि० ) क्रोध से भरा हुआ ।

रुष्ट ( वि० ) क्रुद्ध, क्रोध से भरा हुआ ।

रुंगटा ( म० गेम ) ( पु० ) रीयाँ, बाल, रूँवा ।

रुंगटे खड़े होना ( मुहा० ) डर से था जाड़े के मारे बाल खड़े होना, डरना ।

रुख ( सं० रुख, रुक्=का होना ) ( पु० ) पेड़, वृक्ष, तरुवर, तरु, दारुद्र ।

रुखा ( सं० रुक्, रुक्=कठोर होना ) ( वि० ) रुखा, फीका, बेरस, जो चिकना न हो, खुरखुरा, कड़ा, निर्दय, कठोर, क्रूर ।

रुखासूखा ( मुहा० ) सादा, बेस्वाद खाना, कड़ा, कठोर वचन ।

रुखानी } ( स्त्री० ) टाँकी, छेनी ।

रुखी ( स्त्री० ) गिलहरी, चिखुरी ।

रुज ( पु० ) कीट-विशेष ।

रुझा ( वि० ) रुग्ण, रोग से पीड़ित ।

रुठना ( सं० रुष्ट, रुप्=क्रोध करना ) ( कि० अ० ) अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बिगड़ना ।

रुठनी ( वि० ) रुगड़ाव ।

रुढ़ ( रुद्र=पैदा होना ) ( वि० ) पैदा हुआ, जमा हुआ, उत्पन्न, प्रसिद्ध ।

रुढ़ि ( रुद्र=पैदा होना ) ( स्त्री० ) उत्पत्ति, पैदा होना, जन्म, प्रसिद्धि, ऐसा शब्द जो किसी से बना न हो और उसका अर्थ उसी पद में रहे, जैसे—“त्रि-फला”; यह रुढ़ि है ।

रूप ( रुप्=डाल बनाना ) ( पु० ) आकार, ढील, सूरत, शकल, शोभा, स्वरूप, सुंदरता, रीति, ढब, प्रकार, भाँति, चाल, तरह ।

रूपक ( रुप्=डाल बनाना ) ( पु० ) नाटक, रूप, मूर्त, काव्य में एक अलंकार का नाम ।

रूपनिधान ( रूप+निधान ) ( पु० ) सुंदरता का घर अर्थात् बहुत ही सुंदर ।

रूपराशि ( स्त्री० ) सुंदरता का समूह, मखनमूलजमाल, रूप का खजाना ।

रूपवती ( रूप+वती ) ( स्त्री० ) सुंदर स्त्री, मनो-हर स्त्री ।

रूपसागर ( रूप+सागर ) ( पु० ) रूप का समुद्र, बहुत ही सुंदर ।

रूपा ( सं० रूप्य, रूप ) ( पु० ) चाँदी, ( वि० ) श्वेत, चाँदी के समान उज्ज्वल, जैसे—“सोना मिछा न पिय मिले रूपा हूँ गए केस” —“कोई कवि”

रूपी ( स्त्री० ) रूपवाली, ( उपमावाचक अर्थ ) जैसे—कमलरूपी नेत्र ।

रुमटी ( स्त्री० ) व्याज, बहाना, मिस ।

रुमाल ( पु० ) मुँह पोछने का कपड़ा, उपवस्त्र ।

रूरी ( वि० ) सुंदर ।

रुसना ( सं० रोषण, रुप्=क्रोध करना ) ( कि० अ० )

क्रोधित होना, रिसाना, अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, रूठना ।

रूसी (स्त्री०) सिर का मैल, (वि०) रूसदेश का निवासी ।

रेंकना (क्रि० अ०) गधे का बोलना ।

रेंगना (सं० रिङ्=जाना) (क्रि० अ०) धीरे-धीरे चलना, रींगना ।

रेंड (पु०) } (सं० एरंड) एरंड का पेड़, एरंड रेंडी (स्त्री०) } का बीज ।

रेख (सं० रेखा) (स्त्री०) लकीर, खत ।

रेखा (लिख्=लिखना) (स्त्री०) लकीर, रेख, लिखना, प्रारब्ध, भाग ।

रेघारी (स्त्री०) चिह्न, हलकी रेखा ।

रेचक (रिच्+अक. रिच्=छुदा करना) (वि०) दस्त-कारक, जुलाब, निशोत, भटकटैया, जयपाल, जमालगोटा ।

रेचन (रिच्+अन) (पु०) मलभेदन, दस्त कराना, जुलाब देना ।

रेज़ीडेंट (पु०) राजदूत, वकील, शाही सक्तीर ।

रेणु (रि=जाना) (स्त्री०) रेत, धूलि ।

रेणुका (रि=जाना) (स्त्री०) सुगंधित चीज़, यमदग्नि ऋषि की पत्नी और परशुरामजी की मा ।

रेत (स्त्री०) धूलि, रज, बालू, रेतन ।

रेतना (रेत) (क्रि० स०) धिसना, सोहन करना, रद्दा फेरना, घोटना, चिकना करना, ओपना ।

रेतस (पु०) पारा धातु, वीर्य, शुक्र ।

रेती (रेत) (स्त्री०) नदी के तीर की रेतीली धरती, बालू, सोहन, रेतने का औज़ार ।

रेप (रेप्=शब्द करना) (वि०) निंदिन, क्रूर, कृपण ।  
रेफ (र) (पु०) रकार, र् अक्षर जब दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलता है तब उसका रूप ( ) ऐसा होता है, जैसे—रक, कुस्तिन, अधम ।

रेलना (क्रि० स०) ठेलना, पेखना, ठकेलना ।

रेलपेल (स्त्री०) भीड़, धूमधाम, बहुतायत ।

रेवड़ी (स्त्री०) एक तरह की खाने की मीठी चीज़, खुटिया ।

रेवड़ी के फेर में पड़ना (मुहा०) कठिनता में फँसना, पेश में आना ।

रेवती (रेवत) (स्त्री०) रेवत राजा की बेटी और बलदेवजी की स्त्री, (रेव्=जाना) सत्ताईसवाँ नक्षत्र ।

रेवतीरमण (रेवती+रमण) (पु०) बलदेव, बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

रेवन्गु (पु०) माल का विभाग ।

रेवन्गुबोर्ड (पु०) शुल्क-संबंधी सभा, चुंगी के हाकिमों का दरबार ।

रेवा (रेव्=बहना या उल्लंघन करना) (स्त्री०) नर्मदा-नदी ।

रेस् (पु०) द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या ।

रेह (स्त्री०) एक तरह का खार जो कपड़े धोने और साबुन बनाने में काम आता है ।

रेहड़ (पु०) लहड़ू, एक प्रकार की गाड़ी ।

रेहला (पु०) चना, बूट, रहिला ।

रेहूपेह (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई ।

रै (पु०) धन, स्वर्ण, अर्थ, विभव ।

रैन (सं० रजनी) (स्त्री०) रात ।

रैवत (पु०) द्वारका के समीप एक पर्वत, महादेव, चौदह मनु में से एक मनु, रेवती का पिता, बलदेव का श्वशुर ।

रौंगटी (स्त्री०) छल से भूट को सच और सच को भूट बनाना, हथफेर, छलविद्या ।

रौंपना (क्रि० स०) गाढ़ना, लगाना, जमाना, बुनियाद डालना ।

रौआँ } (सं० रौम) (पु०) शरीर के ऊपर के बाल,  
रौयाँ } उन, रौप ।  
रौयाँ }

रौक } (गं० रौक, रुक्=चाहना या प्यार करना)  
रौकड़ } (पु०) नक्रद, नक्रदी ।

रौकड़िया (रौकड़) (पु०) खज़ानची, कोठारी ।

रौकना (सं० रौधन, रुप्=रौकना) (क्रि० स०) अट-काना, धर लेना, बंद करना, थामना, मना करना, बात काटना ।

रौग (रुज्=बीमार होना) (पु०) बीमारी, पीड़ा, व्याधि, दुःख ।

रौगी (रौग) (पु०) बीमार, रौग से पीड़ित, मरीज़ ।

रौचक (रुक्=चाहना, प्यार करना) (वि०) चाह

करानेवाला, रुचि करानेवाला, पाचक, ( पु० ) भूख, श्रधा

रोचन ( पु० ) पसंद, हवदी, गोरोचन, पीला रंग ।

रोचनीय ( वि० ) मरगाब, पसंदीदा, स्पृहाजनक ।

रोचिष्णु ( पु० ) दीसिमान्, प्रकाशित ।

रोक्क ( सं० ऋष्य, ऋप्=जाना ( पु० ) एक जानवर का नाम, नीलगाय, मृग-विशेष ।

रोट ( सं० गोटिका या गेटी ) ( पु० ) मोटी रोटी, जैसे हनुमान् को चढ़ाते हैं ।

रोटा ( सं० गोटिका या गेटी ) ( पु० ) मोटी रोटी ।

रोटिका } ( रुट्=ठोकना या काटना ) ( स्त्री० ) गेहूँ  
रोटी } के आटे को बनी हुई खाने की चीज, फुलका ।

रोड ( पु० ) मार्ग, सड़क ।

रोड़ा ( पु० ) बड़ा कंकड़, ईंट का बड़ा टुकड़ा, बाधा ।

रोदन ( रुट्=गना ) ( पु० ) रोना, रुदन ।

रोझा ( रुप्=रोकना, ढापना ) ( पु० ) रोकनेवाला ।

रोध ( पु० ) तट, किनारा ।

रोना ( सं० रोदन ) ( कि० श्र० ) आँसू बहाना, खिलाप करना, बिलखना, सिल्लाना, उदास होना, नाराज़ होना, ( पु० ) खिलाप, रुदन, दुःख, सोच ।

रोपना ( सं० रोहण, रुह्=जगना ) ( कि० श्र० ) बोना, जमाना, उगाना ।

रोपयिता ( पु० ) लगानेवाला जमानेवाला, संस्थापक ।

रोम ( रु=शब्द करना या रुह्=उगना, जो देह पर उगते हैं ) ( पु० ) लोम, बाल, केश, रोयाँ, रोआँ ।

रोमन कैथोलिक ( पु० ) ईसाइयों का एक समुदाय ।

रोमथ ( पु० ) राउंथ, पगुराना, मुँह में दबी हुई वस्तु को चबाना ।

रोमपाट ( पु० ) दुशाला, कम्बल ।

रोमहर्षक ( पु० ) रोमांच, रोएँ खड़े होना, सूत, व्यासशिष्य, बहेबा-वृक्ष ।

रोमांच ( पु० ) रोएँ खड़े होना ।

रोमांचित ( रोम=बाल, अन्वु=जाना ) ( वि० ) बहुत खुशी या डर से शरीर के रोएँ खड़े होना, पुलकित, हर्षित ।

रोमावली ( रोम+अवली ) ( स्त्री० ) रोएँ की पंक्ति जो नाभि के बीच में से होकर जाती है ।

रोर ( स्त्री० ) हुल्लाह, भौड़भाड़ ।

रोराकार ( अव्य० ) अतिशय क्लेश से ।

रोली ( स्त्री० ) कुंकुम या जिसका रोचना लगाया जाता है ।

रोप ( रुप्=कोष करना ) ( पु० ) कोप, रिस, क्रोध, गुस्सा, खिसियाव

रोह ( पु० ) कली, कुड्मल, रोहण, ऊपर जाना ।

रोहण ( पु० ) चढ़ाव, वृद्धि, वृत्त, चढ़ना ।

रोहिणी ( रुह्=पंदा होना ) ( स्त्री० ) चौथा नक्षत्र, चंद्रमा की स्त्री, रोहण राजा की बेटी, वसुदेवजी की स्त्री और बलदेवजी की मा ।

रोहिणीपति ( रोहिण्यां+पति ) ( पु० ) चंद्रमा, वसुदेवजी ।

रोही ( पु० ) नीचे की ओर लटकनेवाली बरगद की बरोह ।

रोदिना ( कि० श्र० ) कुचलना, चूर करना, पीसना ।

रोताई ( स्त्री० ) ठकुराई, श्रुना, लड़ाई, समर ।

रौद्र ( अर्थान् जिसका देवता रुद्र है ) ( वि० ) डरावना, भयानक, ( पु० ) क्रोध, कोप, धूप, काव्य में एक रस का नाम ।

रौना ( पु० ) ( त्रिरागमन ) गौने के पीछे अपनी स्त्री को उसके बाप के घर में अपने घर में लाना ।

रौप्य ( पु० ) रजत, चाँदी, ( वि० ) चाँदी अथवा फूल का बना हुआ ।

रौर ( सं० रव ) ( पु० ) शब्द, रौजा, शोर, गुल-गपाड़ा, यश, नामवरी ।

रौरव ( रु=शब्द करना या रोना, जहाँ पापां रोते हैं ) ( पु० ) एक नरक का नाम, ( वि० ) भयानक ।

रौला ( सं० राव, रु=शब्द करना ) ( पु० ) धूमधाम, हुल्लाह, बखेड़ा, गुल-गपाड़ा ।

## ल

ल ( ला=लेना वा लू=काटना ) ( पु० ) इंद्र, मंत्र, काटना, दीप्ति, प्रकाश, आह्लाद, वायु ।

लकड़ ( सं० लगुड ) ( पु० ) लकड़ी, छाठी, लट्ट ।

लकड़ी ( सं० लगुड ) ( स्त्री० ) काठ, ईंधन, जकावन, सोंटा, लट्ट, छाठी, लठिया ।

लकीर ( सं० लेखा, लिख्=लिखना ) ( स्त्री० ) रेखा, लीक, धारी, डंडीर ।

लकुट ( सं० लगुड, लग्=मिलना वा पाना ) ( पु० ) छाठी, लकड़ी, छड़ी ।

लकुटिया ( स्त्री० ) गाय-बैल हॉकने की छोटी साँटी ।

लक ( पु० ) लाहो, महावर ।

लक्ष ( लक्ष्=देखना, चिह्न करना ) ( पु० ) एक लाख, सौ हजार, छल, बहाना, चिह्न, उद्देश्य, ध्येय ।

लक्षक ( लक्ष्+अक ) ( वि० ) दर्शक, दिखानेवाला ।

लक्षणा ( लक्ष्=देखना या चिह्न करना ) ( पु० ) चिह्न, पहचान, तारीफ़, नाम, गुण, श्रीरामचंद्र के छोटे भाई लक्ष्मण, मुमित्रा के पुत्र ।

लक्षणा ( स्त्री० ) अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय ।

लक्षित ( लक्ष्=चिह्न करना, देखना ) ( वि० ) देखा हुआ, जाना हुआ, चिह्न किया हुआ, उद्दिष्ट ।

लक्ष्म ( पु० ) चिह्न, निशान ।

लक्ष्मण ( लक्ष्=देखना, चिह्न करना ) ( पु० ) दशरथ राजा के पुत्र जो मुमित्रा से पैदा हुए, श्रीरामचंद्र के छोटे भाई ।

लक्ष्मणा ( लक्ष्=देखना, चिह्न करना ) ( स्त्री० ) मद्रदेश के राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पत्नी, दुर्योधन की बेटी जो श्रीकृष्ण के बेटे सांव को ब्याही थी ।

लक्ष्मी ( लक्ष्=देखना, चिह्न करना ) ( स्त्री० ) विष्णुपत्नी, धन की देवी, हरिप्रिया, पद्मा, कमला, श्री, इंदिरा, लोकमाना, रमा, हरिवल्लभा, संपदा, संपत्ति, धन, ऐश्वर्य, शोभा, सुंदरता ।

लक्ष्मीकान्त ( लक्ष्मी+कान्त ) ( पु० ) विष्णु, नारायण, रमेश ।

लक्ष्मीनाथ ( लक्ष्मी+नाथ ) ( पु० ) विष्णु, नारायण, माधव ।

लक्ष्मीपति ( लक्ष्मी+पति ) ( पु० ) विष्णु, नारायण, रमानाथ ।

लक्ष्मीवान् ( लक्ष्मी+वन् ) ( वि० ) धनवान्, संपदा-वाला, दौलतमंद, श्रीमान्, श्रीयुत ।

लक्ष्य ( लक्ष्=देखना, चिह्न करना वा निशान करना ) ( पु० ) निशाना, ताक, ( वि० ) जो जाना जाय, जो देखा जाय, देखने योग्य, साजिश ।

लखन ( सं० लक्षण ) ( पु० ) लक्ष्मण, श्रीरामचंद्र के छोटे भाई ।

लखना ( सं० लक्षण, लक्ष्=देखना ) ( कि० सं० ) देखना-भालना, ताकना, जानना, समझना, पहचानना ।

लखपति ( सं० लक्षपति ) ( पु० ) धनी, धनवान्, जिसके घर में लाख रुपए हों, लखिया ।

लखेरा ( लाख ) ( पु० ) लाख की चूरी आदि बनाने-वाला, लाख का काम करनेवाला ।

लग ( सं० लग्=मिलना ) ( अव्य० ) निश्चय, तक, लौ, पास, जब तक ।

लगना ( सं० लग्=मिलना ) ( कि० अ० ) जुड़ना, चिपकना, मिलना, सटना, किसी काम का शुरू होना या करना, नियुक्त होना, किसी काम में तत्पर होना, पहुँचना, फैलना, सोहना, फटना, ठीक होना, मालूम होना, संबंध रखना, लगाव रखना ।

लगभग ( मुहा० ) आसपास अनुमान, करीब-करीब ।

लगातार ( कि० वि० ) बराबर, निरंतर, एक के बाद एक ।

लगाव ( लगना ) ( पु० ) मेज, लाग, जोड़ संबंध ।

लगि. लिये ( अव्य० ) वास्ते, तक ।

लग्गा ( पु० ) लाग. मेज, प्यार, प्रेम, प्रीति, एक डंडा जिसमे नाव चलाई जाती है, जुए का फुटकल खेल ।

लग्गा न खाना ( मुहा० ) बराबर न होना उपमा या बराबरी के योग्य न होना ।

लग्गा लगाना ( मुहा० ) जुए में गौण रूप से दाँव लगाना ।

लग्गी ( स्त्री० ) बाँस का डंडा ।

लग्न ( लग्=मिलना वा पास होना ) ( पु० ) मेघ आदि राशियों का उदय, मुहूर्त, सायन, ( वि० ) लग्गा हुआ, मिला हुआ ।

लग्नक ( पु० ) प्रतिभू, जामिन ।

लघिमन् ( पु० ) { ( लघु ) छोटापन, हलकापन, लघुता, लघिमा ( स्त्री० ) } जावब, आठ सिद्धियों में एक सिद्धि ।

लघिष्ठ ( वि० ) लघु, छोटा ।

लघु ( लघि=जाना, छोटा होना ) ( वि० ) हलका, छोटा, शीघ्र, उतावला, सुन्दर, मनोहर, नीचा, नीच, ( पु० ) ह्रस्व स्वर, एकमात्रिक स्वर ।

लघुकाय ( लघु=छोटा, काय=शरीर ) ( पु० ) छाग, बकरा, सूक्ष्म शरीर, छोटे ऋद्धाला ।

लघुता ( लघु ) ( स्त्री० ) हलकाई, छोटापन, छुटाई, निचाई ।

लघुहस्त ( वि० ) अल्पहस्त, सुबुद्धस्त ।

लघ्वी ( स्त्री० ) सूक्ष्मांगी, नागिन ।

लंका ( लङ्=स्वाद लेना या पाना ) ( स्त्री० ) रावण की राजधानी ।

लंकापति ( लंका+पति ) ( पु० ) रावण, विभीषण ।

लंकेश } ( लंका+ईश वा ईश्वर ) ( पु० ) रावण,  
लंकेश्वर } विभीषण ।

लंगर ( पु० ) जहाज आदि को टहराने के लिये एक लोहे की चीज ।

लंगूर ( सं० लङ्गूरी ) ( पु० ) बंदर की जाति का एक जानवर जिसकी पूँछ लंबी होती है और मुँह काला होता है, जमुना बाँदर ।

लंगोट ( पु० ) } कोपीन, कछुनो, गुल्म अंगों को ढकने  
लंगोटा ( पु० ) } का छोटा वस्त्र ।  
लंगोटी ( स्त्री० ) }

लंगोटवन्द ( पृ० ) वह आदमी जो व्याह न करे, संयमी ।

लंगोटियायार ( पृ० ) लङ्कपन का पुराना मित्र ।

लंघक ( लंघन+क ) ( पु० ) नाँघनेवाला, पार होनेवाला ।

लंघन ( लघि=पार होना या लाघना ) ( पु० ) लघिना, पार होना, उछलना, उपास, कड़ाका, त्राका ।

लंघित ( लघि+इत ) ( वि० ) अतिक्रान्त, उल्लंघित, छाँघा हुआ ।

लचक ( लचकना ) ( स्त्री० ) लचीलापन, झुकाव ।

लचकना ( क्रि० अ० ) जोर पड़ने से झुक जाना और जब वह जोर न रहे तब पीछे उभर आना ।

लचर ( पु० ) असभ्य, दुष्ट, गँवार, अनारी, थोथा, उधला, तर्कहीन अथवा तर्क के सामने न ठहरनेवाला विवाद ।

लच्छुन ( पु० ) 'लक्षण' शब्द को देखो ।

लच्छा ( पु० ) रँगे हुए सूत की छाँटी ।

लक्षुन ( सं० लक्षण ) ( पु० ) लक्ष्मण ।

लक्ष्मण ( सं० लक्ष्मण ) ( पु० ) लक्ष्मण, श्रीरामचंद्र के छोटे भाई ।

लक्ष्मी } ( सं० लक्ष्मी ) ( स्त्री० ) 'लक्ष्मी' शब्द को  
लक्ष्मि } देखो ।

लजलजा वि० ) लसीला, चिपचिपा ।

लजाना ( लजा ) ( क्रि० अ० ) शरमाना, लाज करना, संकोच करना ।

लजातू ( सं० लज्जालु ) ( वि० ) शर्मीला, लज्जित, ( पु० ) लुईमुई का पेड़, जिसको छूने से उसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं ।

लज्जा ( लसज्ज=शरमाना ) ( स्त्री० ) लाज, शर्म, संकोच ।

लज्जारहित ( लज्जा+रहित ) ( वि० ) निर्लज्ज, बेशर्म ।

लज्जाशील ( वि० ) लज्जायुक्त ।

लज्जित ( लज्जा ) ( वि० ) शर्मीला, शर्मिन्दा, लज्जालु, संकोची ।

लंजिका ( लङ्गु=भासना ) ( स्त्री० ) वेश्या, पुंश्चली, ( पु० ) मस्त्रक, कपाल, चोर, वेणी, पिंड, उक्ति ।

लट ( स्त्री० ) लट्ठी, उलझे बाख, जटा, एक जानवर का नाम ।

लटक ( स्त्री० ) मटक, चटक, नखरा, आन, मान, चोंचला ।

लटकचाल ( स्त्री० ) नखरे की चाल ।

लटकन ( लटकना ) ( स्त्री० ) लटकनी हुई चीज, झूला, झुमका, कुंडल, एक फूल जिससे कपड़े पीले रँग जाते हैं, एक हरे रँग के पत्थर का नाम जो अपने पैरों से बहुत बार लटका रहता है, लकड़ी की एक चीज जिस पर पानी का लोटा भारी आदि रखते हैं, ( पृ० ) पुछछा, झुलझुल जो पतंग और कन-कौए में नीचे लटका करती है ।

लटकना ( क्रि० अ० ) झूलना, टँगना, पीछे रह जाना ।

लटका ( पु० ) मंत्र, भाङ्गूँक, टोना, टोटका, चुटकुला, जादू ।

लटपटा ( वि० ) खिझाव, चंचल, उलट-पुलट, लेपेटी हुई ( पगड़ी ) ।

लटा ( वि० ) ऊमजोर, बख्शीन, दुबला पतला ।

लटाई ( स्त्री० ) चरझी, परेनी ।

लट्टरिया } ( स्त्री० ) लट, जूझ, छोटे-छोटे उलझे  
लट्टरी } हुए बाल ।

लट्ट ( पु० ) एक खिलौने का नाम ।

लट्टू होना (मुहा०) मोहित होना, किसी के प्यार में फँसना ।

लट्टर (वि०) ठीला, ठंडा ।

लठ (सं० यष्टि) (पु०) सोंटा, लाठी ।

लठा लठी (स्त्री०) परस्पर लाठी की लड़ाई ।

लठियाना (क्रि० सं०) लाठी से मारना, लाठी मारना ।

लड़ (स्त्री०) लड़ी (मोती आदि की) रांत, जस्था, दल, धड़ा, टोखो ।

लड़का (सं० लट्टू=खेलना) (पु०) बालक, छोहरा, छोकरा, बेटा ।

लड़काबाला (मुहा०) बालबच्चा, बेटाबेटी ।  
लड़कालड़की

लड़काई (लड़का) (स्त्री०) लड़कपन, बालकपन ।

लड़खड़ाना (क्रि० अ०) डगभगाना, डिगना, हकलाना ।

लड़न (स्त्री०) लड़ाई करना, झगड़ा करना ।

लड़ना (सं० लट्टू=जीम हिलाना) (क्रि० अ०) लड़ाई करना, झगड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध करना ।

लड़ाई (स्त्री०) झगड़ा, बखेड़ा, युद्ध, जंग ।

लड़ाई करना (मुहा०) झगड़ना, लड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध करना ।

लड़ाक { (लड़ना) (वि०) लड़नेवाला, लड़ाई करनेवाला, झगड़ालू, बखेड़िया ।

लड़ियाना (क्रि० सं०) पिरौना, गँथना, पिरौना ।

लड़ी (स्त्री०) मोतियों की पॉति ।

लड़ैता (वि०) प्यारा, दुलारा ।

लट्टू (सं० लट्टुक, लट्टू=चाहना, विलास करना) (पु०) लाट्टू, मोदक, मोतीचूर ।

लट्टू खाना, मन के (मुहा०) मन ही मन ऐसी बातों का विचार बाँधना जो हो नहीं सकतीं ।

लड़ा लड़िया { (पु०) लड़का, भार ढोनेवाली गाड़ी ।

लंठ (वि०) मूर्ख, गँवार, अनपढ़ ।

लंझरा (वि०) बाँझा, बिना पूँछ का, बेमित्र, मित्रों से छोड़ा हुआ, तनहा, अकेला ।

लत (स्त्री०) बुरी चाल, कुटेब, लहर, तरंग, लान ।

लत (सं० लता) (स्त्री०) बेल, बेली ।

लतना (क्रि० अ०) घोड़े-घोड़ी का जोड़ा खाना ।

लता (लट्टू=उलझना या चोट करना) (स्त्री०) बेल, बेलड़ी, बेली, माधवी, निवाड़ी, बेला, कूर्वा ।

लताड़ना (क्रि० अ०) हलका करना, तुच्छ करना, तिरस्कार करना ।

लतातरु (पु०) शालवृक्ष, नारंगीवृक्ष, ताखवृक्ष, खजूर ।

लतापनस (पु०) कालिंग, तरबूज, खरबूजा ।

लतामणि (पु०) प्रवाल, मूँगा ।

लतिका (स्त्री०) बख्खी, वल्लरी, कोमलता ।

लतिया (वि०) दुराचारी, कुचाली, बुरी चाल का ।

लतियाना (क्रि० सं०) ज्ञात मारना, अपमानित करना ।

लत्ता (फा० लग्न) (पु०) चीथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा ज्योतिष में एक योग का नाम ।

लथड़ना (क्रि० अ०) कीचड़ से भीगना या कीचड़ लग जाना, लथपथ होना ।

लथरपथर (पु०) खवालब, मुँह तक, ठसाठस ।

लथेड़ना (क्रि० अ०) लथाड़ना, फटकारना ।

लदना (क्रि० अ०) लादा जाना ।

लदाव (पु०) मोट, बोझ, भार ।

लददु (वि०) लादने योग्य, लदनेवाला ।

लप (स्त्री०) मुट्ठी-भर, मुक्का-भर ।

लपक (स्त्री०) चटक, झलक, कपट, भभक, झी ।

लपकना (क्रि० अ०) लाहकना, तेज़ चलना, चगकना, उछलना, कूदना ।

लपका (पु०) झट, फुर्ती, चाट, बुरी चाल, चसका ।

लपझप (वि०) फुर्तीला, चंचल, झटपट, सतर्क ।

लपट (स्त्री०) मटक, बाप, सुगंध, दहक, लहर, भभक, लूका ।

लपटा (पु०) एक प्रकार की घास, संबंध ।

लपटी (स्त्री०) हलुआ, (वि०) चिपकी, सटी, कुटनी ।

लपन (लप+अन, लप्=कहना) (पु०) कथन, सुख, आश्व, वचन ।

लपलप (पु०) झपझप, बारं बार निकलनेवाला ।

लपाटी (स्त्री०) झूटमूठ, मिथ्या ।

लपित (वि०) कहा हुआ ।

लपेट (स्त्री०) पर्त, लपटन, लड़ ।

लपेटना (क्रि० अ०) बाँधना, लीपना, पोतना ।

लपेटवाँ (वि०) घुमाया हुआ, ँठवाँ, खिपटने के ढंग का ।

लघ्वा ( पु० ) पट्टा, गोटा, किनारी ।

लघ्वाभूष ( पु० ) जलदी, शीघ्रता ।

लघ्वस्वदा ( वि० ) नटखट, उच्छ्वस्व ।

लघ्वस्वदाई ( स्त्री० ) स्त्रियों की सूखी छाती, गिरी हुई छाती ।

लघ्वस्वदा ( स्त्री० ) बकभक, झूठसच, इधर-उधर की बातें ।

लघ्वहा ( वि० ) झूठा, असत्यवादी, लबाड़ी ।

लघ्वनी ( स्त्री० ) नाड़ी चुभाने का घड़ा या चूल्हा ।

लघ्वरघट्टा ( पु० ) नकषड़ा, छोटी-छोटी बातों पर रिस करनेवाला ।

लघ्वलवा ( वि० ) चिपचिपा, लसदार ।

लघ्वर ( सं० लघ्वरकना ) ( पु० ) झूठा, गप्पी, बहुत बक करनेवाला ।

लघ्व ( लघ्व=पाना ) ( वि० ) पाया हुआ, प्राप्त ।

लघ्ववर्ण ( पु० ) पंडित, शास्त्री, विचक्षण ।

लघ्वि ( स्त्री० ) प्राप्ति, द्वारिकिस्मृत ।

लघ्व ( लघ्व=पाना ) ( वि० ) पाने योग्य, मिलने योग्य, हासिल ।

लघ्वकाना { ( सं० लघ्वकर्ण ) ( पु० ) शश, खरहा,  
लघ्वहा { खरगोश, बकरा, गणेश, हाथी ।  
लघ्वभा

लघ्वपट ( लघ्व=खेलना ) ( वि० ) व्यभिचारी, कुकर्मी, रंडीबाज़, लुच्चा, झूठा ।

लघ्व ( पु० ) द्रुतगति, लपकना, तेज़ चाल ।

लघ्व ( सं० लघ्व=उहराना या नाँचे लटकाना ) ( वि० ) ऊँचा, लंबा, बड़ा, फैला हुआ, ( पु० ) नर्तक, नचैया, कान, उरकोच, लोलुप, आसक्त, ( स्त्री० ) नापविद्या में खड़ी लकीर, भ्रमूद ।

लघ्वक ( पु० ) विभाग, समय, सारथी ।

लघ्वन ( पु० ) मालाकार, कंठा, हार, लंबाई ।

लघ्व ( सं० लघ्व ) ( वि० ) ऊँचा, बड़ा ।

लघ्व करना ( मुहा० ) फैलाना, बढ़ाना, पीटना, मारना ।

लघ्विया करना ( कि० प्र० ) खेलना, कलोल करना, धूम मचाना ।

लघ्वी सांस भरना ( मुहा० ) रोना, विलाप करना, आह भरना ।

लघ्वोदर ( लघ्व+उदर ) ( पु० ) गणेशप्री, ( वि० ) लंबे पेटवाला ।

लघ्वोष्ट्र ( लघ्व+उष्ट्र ) ( पु० ) लंबा ऊँट ।

लघ्व ( पु० ) लमकाना, खरहा, शशक ।

लघ्व ( ली=मिलना ) ( पु० ) लीन, मिलना, मग्न होना, नाश, प्रलय, टेर, ताज, स्वर ।

लघ्वालक ( पु० ) राशि बैठा हुआ, मुनबत्ता, गोद लिया हुआ लड़का ।

ललक ( स्त्री० ) लहर, तरंग, लाजसा, नम्रता ।

ललकना ( कि० प्र० ) चढ़ना, धावा मारना, ( कि० सं० ) चाहना ।

ललकारना ( कि० सं० ) पुकारना, हाँकना, बुलाना, सामने करना, लड़ाई माँगना ।

ललचाना ( लालच ) ( कि० प्र० ) तरसना, बहुत चाहना, लाजसा करना ।

ललन ( स्त्री० ) नारी, जिह्वा, केलिकला ।

ललना ( लल=चाहना ) ( स्त्री० ) लुगाई, नारी, स्त्री, कामिनी, सुंदरी ।

लला ( सं० लल=चाहना ) ( पु० ) लाज, बालक, ( वि० ) प्यारा, दुलारा, छाड़ला ।

ललाट ( लल वा लल=चाहना या खेलना ) ( पु० ) सिर का अगला भाग, भाल, कपाल, प्रारब्ध ।

ललाम ( लल=चाहना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, ( पु० ) लांछन, चिह्न, ध्वजा, पताका, शृंग, प्रधान, भूषण, घोड़ा ।

ललित ( लल=चाहना ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, मनभावन, चंचल, कोमल, प्यारा, ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम ।

ललिता ( लल=चाहना ) ( स्त्री० ) एक गोपी का नाम जिसने उद्धवजी से बातचीत की थी ।

ललियाना ( कि० सं० ) बहलाना, वश में करना, परचाना, अपने में मिलाना ।

लली ( स्त्री० ) छोकरी, बालिका, लड़की ।

ललोपत्तो ( पु० ) चापलूसी, लुशामद ।

लल ( लू=काटना ) ( पु० ) षण, पल, निमेष, हिसाब में भिन्न का अंश, भाग, श्रीरामचंद्र का बड़ा पुत्र, लौंग ।



लघंग ( लू=काटना ) ( स्त्री० ) खौंग, एक तरह की औषध ।

लघण ( लू=काटना ) ( पु० ) लोन, नोन, निमक, नमक, ( वि० ) खारा ।

लघणसमुद्र } ( लघण+समुद्र वा सागर ) ( पु० ) खारा  
लघणसागर } समुद्र ।

लघन ( पु० ) कटाई, कटनी ।

लघनिमेष ( पु० ) थोड़ा समय, अल्पक्षण ।

लघनात्र ( कि० वि० ) थोड़ी देर, क्षण-भर ।

लघलेश ( पु० ) बहुत थोड़ा, तनिक-सा, थोड़ा-सा ।

लघा ( सं० लाव, लू=काटना ) ( पु० ) बटेर, एक तरह का पखेरू ।

लघाई ( स्त्री० ) हाल की ट्याई गाय ।

लघाक ( पु० ) हँसुआ, दराँती, हँसिया ।

लघार ( वि० ) झूठा, झूठ बोलनेवाला ।

लघटपशटम् ( वि० ) उलटा-पुलटा, गजबज, झंझट, जैसे-तैसे ।

लघुन ( पु० ) लहसन, लस्सुन ।

लघित ( लघु=चाहना या भला दीखना ) ( वि० ) विज्ञो-  
कित, दर्शित, चाहा हुआ, शोभायमान ।

लस ( स्त्री० ) चिपचिपाहट, लसीली चीज़, स्वार्थ, आशा ।

लसकना ( कि० अ० ) चिपचिपा होना, गीला होना ।

लसना ( सं० लम्=मिलना, खेलना, चमकना ) ( कि० अ० )  
सोहना, चपकना, फबना, सजना, चमकना ।

लसलसा ( वि० ) चिपचिपा, लसीला ।

लसा ( स्त्री० ) हरिद्रा, हल्दी, ( वि० ) चिपटा हुआ ।

लसित ( वि० ) शोभित, साक्षान् ।

लसोड़ा ( पु० ) लभेर, वृक्ष-विशेष, फल-विशेष ।

लस्त ( वि० ) थकित, श्रमित ।

लस्सी ( स्त्री० ) लसी, दूध और पानी ।

लहंगा ( पु० ) घोंघरा जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं ।

लहक ( स्त्री० ) दमक, प्रभा, तेज, कानि ।

लहकना ( कि० अ० ) चमकना, झलकना, जहरना, लू  
का उठना, तपकना, हिलना ।

लहकारना ( कि० अ० ) पेड़ पर हाथ फेरना, चुम-  
कारना ।

लहकावट ( स्त्री० ) प्रकाश, चमकदमक, चमकावट ।

लहकीला ( वि० ) चमकदार, भड़कीला ।

लहकौर ( लक्ष+कवल ) ( पु० ) दही-बतासा जो घर को  
खिलाया जाता है, विशाह की एक रीति ।

लहना ( सं० लम्=पाना ) ( कि० अ० ) लेना, पाना,  
जानना, मालूम करना, ( पु० ) कृजे, ज्ञण, भाग,  
नसीबा, किस्मत ।

लहवर ( पु० ) एक प्रकार का तोता ।

लहर ( सं० लहरी ) ( स्त्री० ) तरंग, हिलोर, वेऊ, हिल-  
कोर, मन की तरंग या मौज, लखक, साँप के ज़हर  
चढ़ने से देह का लहराना, रँगने में अथवा कारचोबो  
में निकली हुई धारी ।

लहरना ( कि० सं० ) हिलकोरना, हिलना, डोलना,  
जलन होना, जख उठना ।

लहरघहर ( स्त्री० ) सौभाग्य, संपत्ति, धन ।

लहराना ( कि० सं० ) ललचाना, तरसाना, ( कि० अ० )  
हिलकोरना, लहर उठना ।

लहरा लगाना ( मुहा० ) उकसाना, चुगली करना,  
झगड़ा लगाना, टालना, उबार-घाई करना ।

लहरिया ( लहर ) ( पु० ) एक तरह का रंगा हुआ  
कपड़ा ।

लहरी ( वि० ) तरंगी, चंचल, मौजी, झोझा ।

लहलहाना ( कि० अ० ) फफकना, सरसङ्ग होना,  
खिलना, विकसना, फूलना, हरा होना, बहडहाना ।

लहलाट ( वि० ) जो उधार लेके न दे ।

लहसुन ( सं० लघुन, लश्=मिलना ) ( पु० ) एक तरह  
का क्रंद ।

लहसुनिया ( पु० ) एक तरह का बढ़िया पत्थर ।

लहाछेह ( स्त्री० ) कुर्ती, जघरी, शीघ्रता ।

लहास ( स्त्री० ) नाव बाँधने की रस्सी, मृत शरीर, शव ।

लहासी ( स्त्री० ) रस्सा, लहास ।

लहियत ( कि० म० ) पाना है ।

लह } ( सं० लोहित, रुह=पेदा होना ) ( पु० ) लून,  
लेह } रुधिर, रक्त ।  
लोह }

लहलुहान ( मुहा० ) लोह से भरा हुआ, रक्त में रूबा  
हुआ, रक्त से भरा हुआ ।

लार्ह ( अर्थ० ) लिये, वास्ते, ( स्त्री० ) लावा के लहू,  
चबेता ।

लोक } ( स्त्री० ) कटि, कमर, जामा, भूसी, भूसा ।

लान्धना ( सं० लंघन ) ( कि० म० ) कूटना, फाँटना, चढ़ना, पार होना, उचरना ।

लान्धगिक ( वि० ) लक्षणयुक्त, अर्थबोधक शब्द, योगिक ।

लान्धग्य ( पु० ) शुभाशुभ, लक्षणज, बुराई-भलाई का बोधक ।

लान्धा ( लघु=विद्ध करना ) ( स्त्री० ) लाख, लाह ।

लान्ध ( सं० लन्ध ) ( वि० ) मीं हज़ार ।

लान्ध ( सं० लाधा ) ( स्त्री० ) लाह जिससे कागज़पत्र बंद किये जाते हैं, जिसके रंग से महौरि या महावर बनता है ।

लान्ध ( सं० लंघनमिलना ) ( स्त्री० ) मारना, चोट, लगान, लगान, घेर, द्रोप, द्रोह, हँपी, डाह, प्यार, छोह, मोह, मेल, संबंध, लागत, खर्च, क्रम, चक्र ।

लान्ध ( स्त्री० ) खर्च, उठान ।

लान्धना ( कि० म० ) मिथना, विरोध करना, लिपटना ।

लान्धा ( स्त्री० ) प्यार, स्नेह, छोह, ( पु० ) विरोधी, द्रोप, शत्रु ।

लान्ध ( वि० ) अनुयायी, अनुगत, चर्या ।

लान्ध ( लघु ) ( पु० ) हलकाई, छोटापन, लघुता, श्रुद्धता, अपमान, आरोग, नारोगता, तंदुरस्ती ।

लान्धन ( वि० ) संक्षेपतः, मूलसरन्, क्रिस्साकोनाह ।

लान्धल ( लघि=मिलना ) ( पु० ) हल ।

लान्धल } ( लघि=मिलना या लगा रहना ) ( स्त्री० )  
लान्धल } पूछ ।

लान्ध ( सं० लंघना ) ( स्त्री० ) शर्म, हया, संकोच, लज्जा ।

लान्धा ( पु० ) उशीर, खस, जावा, खाई ।

लान्धावर्त ( लान्ध+आवर्त ) ( पु० ) सायबान, रायटी, खोलदारी ।

लान्धा ( स्त्री० ) गर्भ की गिल्ली ।

लान्धन ( लान्ध=विद्ध करना, दास लगाना ) ( पु० )  
चिह्न, कलंक, दाग, नाम ।

लान्धना ( स्त्री० ) निंदा, बुराई, निरस्कार ।

लान्धित ( वि० ) अपमानित, निरस्कृत, निंदित ।

लान्ध ( पु० ) देशंतर, दूर, पट, ( वि० ) जीर्ण, प्राचीन, पुराना ।

लान्धा ( स्त्री० ) कैंटी, फफड़ी, पपड़ी जो होठ और ताल के सूखने से होठों पर पड़ जाते हैं ।

लान्ध ( सं० यष्टि ) ( स्त्री० ) खंभा, मीनार, सोंटा, कोरू का लाठा ।

लान्धा ( सं० यष्टि ) ( स्त्री० ) लकड़ी, सोंटा, छड़ी ।

लान्ध ( सं० लंघ=खेलना ) ( पु० ) प्यार, मोह, छोह, खेळ ।

लान्ध लान्धा ( मुहा० ) दुखारना, प्यार करना ।

लान्धला ( लान्ध ) ( वि० ) प्यारा, दुलारा, लड़ैतालाल ।

लान्ध ( स्त्री० ) पांव की मार, पैर ।

लान्ध ( पु० ) भार, बोझ, अंतर्द्वी, हृदय, नाँद ।

लान्धना ( कि० य० ) बोझ से भरना ।

लान्धा ( स्त्री० ) छोटी नाँद, धोबी के कपड़ों की गठरी ।

लान्धक ( पु० ) गीदड़, सियार ।

लान्धना ( कि० य० ) कूटना, फाँटना, हाँफना ।

लान्ध ( लघु=पाना ) ( पु० ) फायदा, फल, प्राप्ति, पाना, मिलना, नफ़ा ।

लान्ध ( स्त्री० ) मुँह का पानी, थूक ।

लान्ध ( सं० लंघ=चाहना या लंघ=खेलना ) ( वि० ) प्यारा, प्रिय, लाइला, दुलारा, लाल रंग, रक्तवर्ण, ( पु० ) छोटा बालक, बेटा ।

लान्धन ( सं० लालना ) ( पु० ) लोभ, चाहना, नृणा ।

लान्धनी ( वि० ) लाजच करनेवाला, लोभी, आप-स्वार्थी, खुदशरज ।

लान्धन ( लंघ=चाहना ) ( पु० ) बहुत स्नेह करना, बहुत प्यार से बालक को पालना, खिलाना, फुसलाना, दुखारना । जैसे - 'लालन जोग लखन लघुखोवे'—  
रामायण ।

लान्धना ( सं० लालन ) ( कि० सं० ) लाइ करना, बहुत प्यार से बालक को पालना ।

लालवुभकड ( पु० ) बुद्धिमान् मनुष्य जो हर बात को कट समझ जाय या जो होनेवाला हो उसको विचार करके पहले से कह दे । पर यह शब्द ठट्टे से या ताना से ऐसे मूर्ख आदमी के किये बोला जाता है जो और सब आदमियों से अपने तई अधिक बुद्धिमान् समझता हो लेकिन सचमुच निरा गँवार हो, जैसे ऐसे आदमियों ने, जिन्होंने कभी हाथी नहीं देखा था, उसके पाँवों के निशान कीचड़ में देखकर खान-

बुझकड़ से पूछा कि ये क्या हैं ? तब उसने उत्तर दिया कि “यह तो बूझे लालबुझकड़, और न बूझे कोय । पाँयन चक्की बाँध के, कहीं हिरन न कूदा होय ।” अर्थ—यह बात सिवा लालबुझकड़ के और कोई नहीं समझ सकता है, कहीं हरिण तो अपने पैरों में चक्की बाँधकर यहाँ नहीं कूदा है ।

लालसा ( लम्=चाहना ) ( स्त्री० ) बहुत चाह, इच्छा, अभिलाष ।

लाला ( पु० ) साहब, बाबू, गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, कायस्थों की और महाजनों की पदवी, ( स्त्री० ) प्रसेव, पसेउ, मुँह की लार, थूक ।

लालाटिक ( पु० ) प्रभु, भाग्योपजीवी, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा करनेवाला ।

लालित ( लाल+इत, लल्=स्नेह सहित प्यार ) ( वि० ) पाजित, लाजित ।

लालित्य ( ललित ) ( पु० ) सुंदरता, कोमलता, सरसता ।

लाली ( लालना ) ( कि० सं० ) प्यार किया, दुलार किया, ( सं० लल्=चाहना ) ( वि० ) दुलारी, प्यारी, ( स्त्री० ) ललाई, सुर्खी ।

लाल्य ( वि० ) लाजनाह, प्यार करने योग्य, लालनीय ।

लाव ( पु० ) रस्सी, लहास ।

लावण्य ( लवण ) ( पु० ) देह, सौंदर्य, सुंदरता, शोभा, नमक, नमक का स्वाद ।

लावलाव ( पु० ) जाजब, अधैर्य ।

लावसाव ( पु० ) नक्रा, लाभ, आय ।

लावा ( पु० ) खोल, फूला, पक्षी-विशेष ।

लास ( पु० ) नृत्य, नाच, मोद ।

लासक ( पु० ) मयूर, मोर, नर्तक, नाचनेवाला ।

लासा ( पु० ) पौदे का दूध, चेष, सरस, फंदा ।

लाह ( सं० लाहा ) ( स्त्री० ) लाख ।

लाह } ( सं० लाम ) ( पु० ) लाभ, फायदा, फल ।  
लाहा }  
लाहू }

लिखक ( लिख्+अक ) ( पु० ) लिखनेवाला, क्रातिव ।

लिखना ( सं० लिखन, लिप्=लिखना ) ( कि० सं० )

लिखाई करना, लिख देना ।

लिख लेना ( मुहा० ) नक़्क़ करना, लिख रखना ।

लिखंत ( पु० ) प्रारब्ध, भाग्य, कपाळ ।

लिखा ( लिखना ) ( पु० ) भाग, प्रारब्ध, कर्म, होनी, होनहार, लेख, लिखावट, ( वि० ) लिखा हुआ ।

लिखाई ( लिखना ) ( स्त्री० ) लिखने के दाम, लिखने की मिहनत, लिखने का काम ।

लिखावट ( स्त्री० ) लिखने का या लिखाई का काम, सहरीर, ज़िपि ।

लिखित ( लिप्=लिखना ) ( वि० ) लिखा हुआ, ( पु० ) लेख, चिट्ठी, पत्र, ज़िपि ।

लिखितं ( पु० ) लिखा हुआ कागज़, तमस्सुक ।

लिखितव्य ( वि० ) लिखने योग्य, लेखनीय, लिखने लायक ।

लिंग ( लिंगि=जाना या चित्र या चिह्न करना ) ( पु० ) पुरुषचिह्न, इंद्रिय, शिव की मूर्ति, ( व्याकरण में ) जाति, जैसे—पुंलिंग, स्त्रीलिंग आदि ।

लिंगित ( वि० ) चिह्नित ।

लिभड़ी ( स्त्री० ) खली, खेरी, घेतकी ।

लिटाना ( कि० सं० ) पौढ़ाना, सुलाना ।

लिट्टी ( स्त्री० ) बाटी, अंगाकड़ी, आटे का गोला जो अँगारों में पकाकर खाया जाता है ।

लिथाड़ना ( कि० सं० ) पछाड़ना, खथाड़ना ।

लिपटना ( कि० अ० ) चिपकना, सटना, मिलना ।

लिपड़ी ( स्त्री० ) पुरानी पगड़ी ।

लिपि } ( लिप्=लेपना ) ( स्त्री० ) लिखा हुआ कागज़,  
लिपी } लिखित, लेख, इस्ताखर, हाथ का लिखा हुआ, नक़ल, विधान ।

लिपिक } ( पु० ) लेखक, चित्रकार, लिखनेवाला ।  
लिपिकार }

लिपिबद्ध ( वि० ) लिखा हुआ, लिखित ।

लिपिसज्जा ( स्त्री० ) कलमदान ।

लिप्त ( लिप्=लेपना ) ( वि० ) लिगा हुआ, पोता हुआ, मिजा हुआ, लेसा हुआ, चर्चा हुआ ।

लिप्सा ( स्त्री० ) छाभ, कांवा, लाभवासना, आग्रह, इवाहिश, लाजब ।

लिप्सित ( वि० ) वांछित ।

लिप्सु ( पु० ) वांछक, इवाहिशमंद ।

लिप्तास ( पु० ) पोशाक, आच्छादन ।

लिप्त ( पु० ) कलंक, दाग, छिद्र ।

लिये ( अत्य० ) वास्ते, कारण, निमित्त ।

लिलाना ( कि० सं० ) चाहना, ललचाना, इच्छा करना ।

लिलार } ( सं० ललाट ) ( पु० ) सिर का अग्र-  
लिलाट } भाग, ललाट, भाल, कपाल, प्रारब्ध,  
लिलाङ्ग } भाग्य ।

लिवाना ( कि० म० ) युलवाना, ग्रहण कराना ।

लिवैया ( लेना ) ( वि० ) लेनेवाला ।

लिनाफ ( पु० ) रुई भरी हुई मोठी रज़ाई ।

लिहाड़ा ( वि० ) अधम, नीच, तुच्छ, दुराचारी, कायर ।

लीक } ( सं० लेखा ) ( स्त्री० ) गाड़ी के पहिये का  
लीका } निशान, पगडंडी, परंपरा, परिपाटी, लकीर,  
कलंक, दाग ।

लीख ( स्त्री० ) जूँ का झंड़ा ।

लीचड़ ( वि० ) सूम, कंजूस, कृपण, मुस्त, गीला,  
अलाख, कामचोर ।

लीची ( स्त्री० ) एक फल जो चीनदेश से सर्वप्र फैला है ।

लीभी ( स्त्री० ) गाद, मल, तलछट ।

लीडर ( पु० ) अगुवा, पेशवा ।

लीढ़ ( लिह्=स्वाद लेना ) ( वि० ) आस्यादित, स्वादयुक्त ।

लीतरा ( पु० ) पुराना जूना ।

लीद ( स्त्री० ) घोड़े का विष्टा ।

लीन ( ली=मिलना या गलना ) ( वि० ) लय, लगा हुआ,  
मिला हुआ, दूना हुआ, मग्न, गला हुआ, सोखा हुआ ।

लीपना ( सं० लेपन ) ( कि० म० ) पोतना, लेसना,  
धोपना ।

लीयड़ ( पु० ) कीचड़, पंक ।

लीम ( पु० ) मंथि, मेख, मिलाप, शांति ।

लीम् ( सं० निम्ब, निम्बू=मीनना ) ( पु० ) नीबू, लेम्,  
एक खट्टा फल ।

लीर ( स्त्री० ) भजी, कतरन, कपड़े का टुकड़ा ।

लील ( सं० नील ) ( पु० ) नील, ( वि० ) नीला ।

लीलना ( कि० म० ) निगलना ।

लीलट्टि ( स्त्री० ) विना भ्रम, घे मेहनत, ( कि० म० )  
निगल जाय ।

लीला ( ली=मिलना या ला=लेना ) ( स्त्री० ) खेल, क्रीड़ा,  
बिहार, विज्ञास, कामकेछि, शृंगारभाव ।

लीलावती ( लीला ) ( स्त्री० ) विज्ञास करनेवाली स्त्री,  
भास्कराचार्य की बेटी का नाम, संस्कृत में गणित  
विद्या की पुस्तक का नाम ।

लुकना ( कि० प्र० ) छिपना ।

लुका ( वि० ) गुप्त, छिपा हुआ ।

लुकांजन ( पु० ) अंजन-विशेष जिसके लगाने से मनुष्य  
अदृश्य हो जाता है ।

लुकाना ( कि० म० ) छिपाना ।

लुखरी ( स्त्री० ) खोमड़ी, बधरा, हुंकार ।

लुगाई } ( स्त्री० ) नारी, स्त्री ।  
लागाई }

लुंगी ( स्त्री० ) छोटी धोती जिसे प्रायः मुसलमान  
पहनते हैं ।

लुच ( वि० ) नंगा, उधारा, निरा, केवल ।

लुचई ( स्त्री० ) पूषी, सोहारी, दुष्टता ।

लुछा ( वि० ) कुकर्म, अन्यायी, दुष्ट, ओछा ।

लुजयुजा ( वि० ) लचीला, कमजोर ।

लुचन ( लुच्=ऊपर जाना, नीचना ) ( पु० ) उपाटन,  
उखाड़ना, नीचना ।

लुंजा ( वि० ) लूला, हाथ से रहित ।

लुटना ( सं० लुट=लुटना या लूटना ) ( कि० प्र० ) लुट  
जाना, छिन जाना ।

लुटवैया ( पु० ) डाकू, लुटेरा ।

लुटाना ( कि० म० ) उड़ाना, गँवाना, लूट करवाना,  
बर्बाद करना ।

लुटिया ( स्त्री० ) छोटा छोटा ।

लुटेरा } ( लूटना ) ( पु० ) लूटनेवाला, डाकू ।  
लुटेरु }

लुट्टस ( पु० ) बिगाड़, नाश, ध्वंस ।

लुठन ( लुठ=लुण्ठन ) ( पु० ) घोड़े आदि का धरती  
पर श्रम दूर करने के लिये खोटना ।

लुंठक ( लुण्ठ=चोरी करना ) ( पु० ) चोर, स्तेयकारक ।

लुंठित ( वि० ) अपहृत, चोरित, चुराया हुआ ।

लुङ्का ( पु० ) लुरकी, कान का एक गहना ।

लुङ्कना } ( सं० लुटन, लुट=ढलकना ) ( कि० प्र० )  
लुङ्गना } ढलकना, गिरना, डनमनाना ।

लुङ्क जाना ( मुहा० ) मर जाना ।

लुङ्गाना ( लुङ्गना ) ( कि० म० ) ढलकाना, लुङ्काना,  
गिरा देना ।

लुङ्गियाना ( कि० म० ) कपड़े सीना, टाँके दिए हुए  
कपड़े को मज़बूत सीना ।

लुतरा ( वि० ) झूठा, बकवादी, गप्पी, निंदक ।

लुनाई ( स्त्री० ) खूबसूरती, सुंदरता, जावशय, खेत की  
कटाई ।

लुनिया ( स्त्री० ) घास-विशेष, जाति-विशेष ।  
 लुपरी ( स्त्री० ) एक तरह की लपसी ।  
 लुपलुप ( पु० ) पशु आदि के खाने का शब्द-विशेष ।  
 लुप्त ( लुप्=काटना ) ( वि० ) नष्ट, बरबाद, छिप जाना,  
 अदृश्य, गुप्त ।  
 लुबदी ( स्त्री० ) पीसी हुई दवा, कोई चीज छानने के  
 बाद जो कुछ बच रहे ।  
 लुब्ध } ( लुप्=लोभ करना या मोहना ) ( वि० )  
 लुब्धक } लोभी, लालची, शिकारी, लुच्चा, लंपट ।  
 लुभाना ( सं० लोभन ) ( कि० स० ) ललचाना, मोहना,  
 तरसाना, चाहना ।  
 लुभित ( वि० ) आकांक्षित, इवादिशमंद ।  
 लुंपक ( पु० ) चोर, चोरी करनेवाला ।  
 लुरकी ( स्त्री० ) लुढ़की, कान का गहना-विशेष ।  
 लुहंडा ( पु० ) लोहे का हंडा ।  
 लुहरा ( वि० ) छोटा, खहुरा, कनिष्ठ ।  
 लुहँगी ( लोह ) ( स्त्री० ) ऐसी लाठी जिस पर लोहा  
 जड़ा होता है ।  
 लुहान ( वि० ) लुह भरना, रक्तमय ।  
 लुहार } ( सं० लोहकार ) ( पु० ) लोहे का काम  
 लोहार } बनानेवाला ।  
 लू ( स्त्री० ) गर्म हवा, लूक, लपट ।  
 लूआढ़ ( वि० ) लूकट, अधजली लकड़ी ।  
 लूक } ( सं० उल्का ) ( पु० ) आग की चिनगारी,  
 लूका } पतंगा, लपट ।  
 लूकालगाना ( मुहा० ) आग लगाना, जलाना, भगड़ा  
 उठाना, बखेड़ा मचाना ।  
 लूकट ( वि० ) लूआढ़, अधजला ।  
 लूकटी ( स्त्री० ) अधजली छोटी लकड़ी, लोमड़ी ।  
 लूकना ( कि० अ० ) छिपना, लू से जलना ।  
 लूट ( सं० लुट्=लूटना ) ( स्त्री० ) डकैती, लूटपाट ।  
 लूटक ( पु० ) कमरबंद, लूटनेवाला, ठग ।  
 लूटपूट ( मुहा० ) लूटना और उजाड़ना ।  
 लूटना ( सं० लुट्=लूटना ) ( कि० स० ) छीन लेना,  
 लूट-पाट करना ।  
 लूटपाट ( मुहा० ) लूटना और मारना ।  
 लूटालूट ( मुहा० ) लूट-खसोट, छीना-फूट ।  
 लूणी } ( लवण ) ( वि० ) लोना, खारा, ( सं० नवनीत )  
 लूनी } मक्खन, माखन ।

लूता ( स्त्री० ) मकड़ी, रोग-विशेष ।  
 लून ( सं० लवण ) ( पु० ) निमक, नमक, लोन ।  
 लून ( लू=छेदना, काटना ) ( वि० ) काटा गया, लुना  
 गया ।  
 लूनिया ( सं० लवण ) ( वि० ) खारा, ( पु० ) एक  
 पीड़ा, बेखदार, वह आदमी जो औरों के लिये रास्ता  
 साफ करता है, नमक बनानेवाला, बनियों की एक  
 जाति ।  
 लूम ( पु० ) लांगून, पुच्छ, पूँछ ।  
 लूला ( वि० ) बिना हाथ का, टुंडा, लुंजा ।  
 लूह ( स्त्री० ) गरमी के दिनों की गर्म हवा ।  
 लूहर ( पु० ) लुकेडा, लूक, गिरा हुआ तारा ।  
 ले ( अव्य० ) तक, अवधि ।  
 लेई ( स्त्री० ) आटे का कलप या माड़ी जिससे कागज  
 आदि साँटते हैं ।  
 लेँड़ी ( स्त्री० ) बकरी की मँगनी, एक तरह का कुत्ता,  
 ( वि० ) नामर्द, असमर्थ ।  
 लेख ( लिख्=लिखना ) ( पु० ) लिखा हुआ कागज,  
 पत्र, छिपि, मजमून ।  
 लेखक ( लिख्=लिखना ) ( पु० ) लिखनेवाला, मोहरिर् ।  
 लेखनी ( लिख्=लिखना ) ( स्त्री० ) लिखने का साधन,  
 कलम ।  
 लेखनीय ( वि० ) लेख्य, लिखितव्य, लिखने  
 लायक, लिखने की चीज ।  
 लेखा ( लिख्=लिखना ) ( पु० ) हिसाब, गणित, ( स्त्री० )  
 लकीर, रेखा ।  
 लेख्य ( लिख्=लिखना ) ( वि० ) लिखने योग्य, ( पु० )  
 चिट्ठी, पत्री, लिखा हुआ कागज ।  
 लेख्यगृह ( पु० ) दफ्तर, कचहरी ।  
 लेज ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी ।  
 ले जाना ( कि० अ० ) ले भागना, उठा ले जाना ।  
 लेजिस्लेटिव कांसिल ( स्त्री० ) न्यायोपपादन सभा,  
 कानून इजगई दरबार ।  
 लेजुर ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी ।  
 लेटना ( कि० अ० ) सोना, आराम करना ।  
 लेनदेन ( पु० ) } ( लेनादेना ) व्यापार, व्यवहार ।  
 लेवादेई ( स्त्री० ) }  
 लेना ( सं० ला=लेना ) ( कि० स० ) ले लेना, ग्रहण

करना, गहना, पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना, खरीदना ।

लेप ( लिप=लेपना ) ( पु० ) लेपन, मरहम, मलहम ।

लेपक ( पु० ) जराह ।

ले पड़ना ( कि० अ० ) संग पड़ना, मैथुन करना, अपने कलंक से दूसरे को फँसाना ।

लेपन ( पु० ) लेसने की वस्तु, मरहम ।

लेपालक ( ले=पालना ) ( पु० ) गोद लिया हुआ बेटा, धर्म का बेटा, पोष्यपुत्र, सुतवन्ध ।

ले पालना ( कि० अ० ) पोष्यपुत्र बनाना, बेटा करके पालना ।

लेप्य ( वि० ) लगाने के योग्य, लेसने के लायक ।

ले मरना ( कि० अ० ) दोष लगाना, कलंक लगाना, ले डबना ।

ले रखना ( कि० अ० ) सिद्ध करके रखना, लेकर न देना ।

ले रहना ( कि० अ० ) टगना, चोरी करना ।

लेरु } ( पु० ) बछड़ा ।  
लेरुआ }

लेला ( पु० ) भेड़ का बच्चा, मेमना ।

लेलुट ( वि० ) लेकर न देनेवाला ।

ले लेना ( कि० स० ) छीनना, छीन लेना, लूटना ।

लेलिह ( पु० ) साँप, सर्प, नाग ।

लेष ( स्त्री० ) भीत की परड़ी ।

लेवा ( लेना ) ( पु० ) लेनेवाला, परधन ।

लेवार ( पु० ) गीली मिट्टी, लेप, लेवा ।

लेवास ( पु० ) गध, लेट ।

लेश ( लिश=थोड़ा हाना ) ( वि० ) थोड़ा, छोटा, अल्प, किंचित्, ( पु० ) छोटाई, अल्पता, कण ।

लेशमात्र ( वि० ) थोड़ा भी, क्षुण्णर ।

लेहा ( लिह=स्वाद लेना, चाटना ) ( वि० ) चाटने योग्य, ( पु० ) अमृत ।

लेस ( वि० ) तैयार कपड़े के किनारे का फीता ।

लोई ( सं० लोभीय, लोम ) ( स्त्री० ) एक तरह का ऊनी कढ़ा, छोटा कंबल, मुँह की चमक, छावयय ।

लों } ( अ० ) लक, जग, जगि, अवधि ।  
लों }

लोंग } ( सं० लंबग ) ( स्त्री० ) एक तरह का गर्म लोंग } मसाका ।

लोंदा ( पु० ) मिट्टी का देखा ।

लोक ( लोक=देखना ) ( पु० ) लोग, मनुष्य, भुवन, सृष्टि के विभाग, तीन लोक प्रसिद्ध हैं ( १ स्वर्ग-लोक अथवा देवलोक अर्थात् देवताओं के रहने की जगह, २ मर्त्यलोक, यह संसार जिसमें मनुष्य रहते हैं, ३ पाताललोक अर्थात् नीचे का लोक ) कितने ग्रंथों में सात लोक लिखे हैं ( १ भूलोक, पृथ्वी, २ भुवर्लोक जिसमें ऋषि, मुनि और सिद्ध आदि रहते हैं और वह सूर्य और पृथ्वी के बीच में है, उसको अंतरिक्ष भी कहते हैं, ३ स्वर्लोक अथवा स्वर्ग जिसमें इंद्र और देवता रहते हैं और वह सूर्य और ध्रुव के बीच में है, ४ महर्लोक जिसमें भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो ब्रह्मा के जीने तक जीवित रहते हैं और जब तीन लोक में प्रलय हो जाता है और उसकी लपट महर्लोक तक पहुँचती है तब वे सब ऋषि ५ जनलोक में चढ़ जाते हैं जिसमें ब्रह्मा के बेटे मनक, सनदन, सनातन और मनकुमार रहते हैं, ६ तपो-लोक जहाँ तपस्वी रहते हैं, ७ मर्त्यलोक अथवा ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा का लोक ) इनमें से पहले तीन लोक हरएक कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन के अंत में नष्ट हो जाते हैं और पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने तक अर्थात् ब्रह्मा के १०० वर्ष तक रहते हैं और चौथा महर्लोक भी उसी समय तक रहता है पर नीचे के तीन लोक प्रलय के समय में जलते हैं तब उसकी तपन के कारण वहाँ कोई नहीं रहता, बहुत-से ग्रंथों में १४ लोक लिखे हैं—७ लोक यही जो ऊपर लिखे गये और ७ पाताल हैं उनको पाताल शब्द के वर्णन में देखो ।

लोकखंड ( पु० ) कतिपय देश और प्रदेश; उनके प्राचीन संस्कृत और आधुनिक नाम पाठकों के सुधी के लिये उद्धृत किये जाते हैं—

आधुनिक प्रचलित एशिया का संस्कृत नाम 'असेचनक' अथवा 'विष्णुक्रांत'; इसी प्रकार योरप का 'इपुमान' या 'अरवक्रांत' है । यथा—

“इपुमाने नराः शुक्लाः शूराः शिल्पविशारदाः ।

वाणिज्यादिरताः क्रूरा मायाभोहविमिश्रिताः ॥”

( भविष्यपुराणे )

अ.फ्रीका का संस्कृतनाम सूर्यारिका या रथक्रांत है ।

यथा—( भविष्यपुराणे )—

“इयक्रान्ते नराः कृष्याः प्रायशो विकृताननाः । भ्रामसांसभुजः सर्वे शूराः कुञ्चितमूर्द्धजाः ॥”	काले बदशास्त्र कच्चा मांस खानेवाले धूँघर बालवाले आधुनिक नाम ब्रिटेन	पहनव गान्धार अपवाह } अपरान्त } सिंहखड्गीप उपमसत्रका ग्रहोत्तर } ग्रहदेश }	काबुल क्रन्धार मस्कत सीलोन मलाका बरमा हिन्दुस्थान अमेरिका उत्तर-अमेरिका दक्षिण-अमेरिका मैज़ीख पेरू आस्ट्रेलेशिया पाकिनेशिया
प्राचीन नाम आवर्तन इन्द्रद्वीप } इन्दुद्वीप } रोम, रूम पटवर पशुशील क्रौञ्च सैनिक } कुक्कुट }	रोम इटली पोर्चुगाल जर्मनी हालैण्ड, बेल्जियम आस्ट्रिया गाल व फ्रांस स्पेन	कुमारिका कुमारद्वीप } स्वर्णभूमि } उत्तरकुमार दक्षिणकुमार तख्त हिरण्यपुर रमणक स्वर्णप्रस्थ कुमारिका यथवा हिंदुस्थानान्तर्गत प्रदेशों के नाम	
ताम्रदेश माठक } मारक } बर्बर वारिधान } वारुण }	डेनमार्क, स्केण्डे- नेविया बारबरी अफ्रीका का उपद्वीप एशियाई तुर्की	दरद दरदलिंग पच्छिमद गैरिक कारमीर उत्तरकोसख काशी कुरुजङ्गल इन्द्रप्रस्थ अवन्ति } विशाखा }	भूटान दारजिलिंग पंजाब कारमीर फ़ौज़ाबाद नम्वाबगंज बनारस कुरुचेत्र दिल्ली उज्जैन गुजरात करनाट मलाबार दक्षिणदेश हिरात मैसूर उबीसा महाराष्ट्र
शक } तुरुष्क } रुष ईख तुखारा पारट, महाचीन ताजतोपक पावत बाङ्गीक आवर्त पारस्थ यवन नर्दिनाश } कारस्कार }	रूस साइबेरिया बुखारा चीन सिब्बत तातार बलख अरब ईरान यूनान मदानी	माहिपक उत्कल, ओड़ सुराष्ट्र	

सिन्धुसौवीर	सिन्धुदेश
विदेह, मिथिला	तिरहुत
महोदय } कान्यकुब्ज }	कन्नौज
मगध, कीकट	गया
पाटलिपुत्र	पटना
अङ्ग	राजमहल, आरा
चम्पा	भागलपुर
पुण्ड्र	मेदिनीपुर
बंग, गौड़	बंगाला
प्राग्ज्योतिष	कामरूप
सूरसेन	मथुरा
अंध	तिलगाना
कलिंग	उत्तरीय सरकार
कुलूत	कुलू
चेदि	चन्देरी
चोल	कर्नाटक
अरमक	ट्रावनकोर
विदर्भ	बरार
आवरती	{ ( सहेट महेट ) एकौना
सौराष्ट्र	काठियावाड़
लोकनाथ ( लोक+नाथ ) ( पु० ) राजा, शिव, ब्रह्मा, विष्णु ।	
लोकप ( लोक=मृष्टि या भुवन, पा=पचाना ) ( पु० ) लोकपाल ।	
लोकपाल ( लोक, पाल=पालना ) ( पु० ) राजा, दिक्पाल ।	
लोकवांधव ( पु० ) सूर्य ।	
लोकमाता ( लोक+माता ) ( स्त्री० ) संसार की मा, लक्ष्मी ।	
लोकयात्रा ( स्त्री० ) संसृति, जन्ममरण, लोकव्यवहार, प्राणरक्षा, रोगी, आजीविका ।	
लोकल ( वि० ) देशीय, मुकामी, स्थानीय ।	
लोकल सेल्फ गवर्नमेंट ( स्त्री० ) स्थानीय आत्मशासन-प्रणाली, खुद इफ्तियारी, मुकामी हुकुमत, जैसे—आमरेरी मजिस्ट्रेट आदि ।	

लोकलोचन ( पु० ) सूरज, सूर्य ।
लोकापवाद ( पु० ) बदनामी, अपकीर्ति ।
लोकालोक ( लोक=देखना, अलोक=नहीं देखना ) ( पु० ) एक पहाड़ की श्रेणी, जो कहते हैं कि सातों समुद्रों की धरे हुए हैं और इस संसार की सीमा है ।
लोकेय ( लोक+ईश ) ( पु० ) ब्रह्मा, राजा ।
लोखर ( पु० ) हथियार, लोहे का पात्र, नाक की छूरा, ढ़ेंची आदि सामान रखने की थैली ।
लोखरी ( स्त्री० ) लोमड़ी, हुंकार ।
लोग ( सं० लोक ) ( पु० ) मनुष्य, आदमी, जन ।
लोगाई ( स्त्री० ) स्त्री, औरत, लुगाई, मेहरारू ।
लोचक ( लोच+अक ) ( पु० ) मांसपिंड, नेत्रतारा, काजल, बेंदी, टीका, नीलवस्त्र, कर्णफूल, कदली, साँप की केसुछी ।
लोचन ( लोच=देखना ) ( पु० ) आँख, नेत्र, नयन, दो की संख्या ।
लोचना ( स्त्री० ) सुंदर नेत्रवाली, सुंदरी, सुंदर स्त्री ।
लोटेन ( पु० ) पटकन, भाव-विशेष, नेत्र, नयन ।
लोटेनकवृत्तर ( पु० ) कवृत्तर की एक जाति ।
लोटेना ( सं० लुट=फिरना, धूमना ) ( क्रि० अ० ) धूमना, फिरना, रोलना, तड़पना, छुटपटाना ।
लोटेपोट होना ( मुहा० ) मोहित होना, किसी के प्यार में डूबना ।
लोटा ( पु० ) गढ़वा, पानी का बरतन ।
लोढ़ा ( सं० लोष्ट, लोष्ट=इकट्ठा होना ) ( पु० ) सिल-बट्टा, ओसवाल महाजनों की एक जाति ।
लोणा { ( लवण ) ( वि० ) खारा, सुंदर ।
लोथ ( सं० लोचक, लोच=देखना ) ( स्त्री० ) मरा शरीर, लाश, मृतक ।
लोथरा ( सं० लोचक ) ( पु० ) मांस का पिंड, बोटी ।
लोथी ( स्त्री० ) लट्ठा, गठोखी लाठी ।
लोदी ( पु० ) पठानों की एक जाति ।
लोधिया ( पु० ) जाति-विशेष, किसान, कुरमी ।
लोन ( सं० लवण ) ( पु० ) नमक, निमक, नून ।
लोनमिर्च लगाना ( मुहा० ) अपनी तरफ से बहुत बढ़ाकर कहना ।
लोना ( वि० ) खारा, लवणयुक्त ।



लोभार ( वि० ) चार भूमि, चार भूमि ।

लोभाई ( सं० लावण्य ) ( स्त्री० ) सुंदरता, शोभा ।

लोप ( लुप्=काटना ) ( पु० ) काटना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर अथवा पद को उड़ा देना या निकाल देना, ( वि० ) छिपा, अदृश्य, गुप्त, नाश, छिन्नछाज, काटकूट ।

लोपङ्गी ( स्त्री० ) लोपा, लोप-विशेष ।

लोपामुद्रा ( स्त्री० ) अगस्त्य ऋषि की धर्मपत्नी ।

लोपी ( वि० ) नाशक, नाशकर्ता ।

लोप्य ( वि० ) नाशनीय, नाश्य ।

लोषान ( अ० लुषान ) ( पु० ) एक तरह की सुगंधित चीज़ जिसको धूप की तरह देवता के सामने आग पर रखते हैं ।

लोचिया ( स्त्री० ) तरकारी-विशेष ।

लोभ ( लुभ=लालच करना ) ( पु० ) लालच, पराये धन के पाने की चाह, लुब्धा ।

लोभना ( क्रि० अ० ) चाहना, मोहित होना, ललचाना ।

लोभी ( लोभ ) ( वि० ) लालची ।

लोभ ( लू=काटना ) ( पु० ) देह के ऊपर के बाज, रोम, रोंगटे, रोएँ ।

लोभङ्गी ( सं० लोभशा, लोभ ) ( स्त्री० ) एक जानवर का नाम ।

लोभश ( लोभ अर्थात् जिसके शरीर पर बहुत बाल हों ) ( पु० ) एक ऋषि का नाम, जिसके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाला था । इस पर क्रुद्ध हो शृंगी ऋषि ने राजा को शाप दिया कि सातवें दिन तुझे तबक साँप डसेगा; तब श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाकर उसका उद्धार किया, ( वि० ) जिसके बहुत बाल हों ।

लोचन ( सं० लोचन ) ( पु० ) आँख ।

लोच ( सं० लोल ) ( पु० ) झुमका, आँसू ।

लोल ( लुल्=हिलना ) ( वि० ) हिलता हुआ, चंचल, ( पु० ) आँसू, ( स्त्री० ) जीभ, लक्ष्मी ।

लोलिनी ( स्त्री० ) नटी, नटिनी, चंचल स्त्री ।

लोलुप ( लुप्=नाश करना अर्थात् सिवा लोभ के और सब चाह को नाश करना या लुभ=लोभ करना, यहाँ 'भ' को 'प' हो जाता है ) ( वि० ) बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

लोलुभ ( लुभ=लालच करना ) ( वि० ) बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

लोह } ( लुह=चाहना वा लू=काटना ) ( पु० ) लोहा, लोह } एक तरह की धातु ।

लोहकार ( पु० ) लुहार ।

लोहा ( सं० लोह ) ( पु० ) एक प्रकार की धातु ।

लोहा बजाना ( मुहा० ) तलवार से लड़ना ।

लोहा मानना ( मुहा० ) पराजित होना ।

लोहा लेना ( मुहा० ) मुकाबिले के लिये तैयार होना ।

लोहानी ( पु० ) पठानों की एक जाति ।

लोहित ( रुह=पैदा होना ) ( वि० ) लाल, ( पु० ) लोह, लाल रंग ।

लोहिताक्ष ( लोहित+अक्ष ) ( पु० ) लाल आँखवाला, रङ्गनेत्र, विष्णु, कोकिल ।

लोहिया ( लोह ) ( वि० ) लोह का ।

लोही ( स्त्री० ) लोई, लुआ ।

लोहू ( पु० ) रङ्ग, रुधिर ।

लौ ( अव्य० ) तक, अवधि, पर्यंत, सोमा ।

लौंडा ( पु० ) लड़का, छोकरा, दास, गुलाम ।

लौंडिया } ( स्त्री० ) दासी, छोकीर, छोटी लड़की । लौंडी }

लौंद ( पु० ) मलमास, अधिक मास ।

लौ ( सं० लय ) ( स्त्री० ) जखती हुई बत्ती का शोला या ज्वाला, ध्यान, मन, लगन ।

लौ लगना ( मुहा० ) ध्यान लगना, रत लगना, किसी को बार-बार याद करना ।

लौ लगाना ( मुहा० ) ध्यान करना, ईश्वर की उपासना या प्रार्थना में दत्तचित्त होना ।

लौकना ( क्रि० अ० ) चमकना ।

लौकिक ( लोक ) ( वि० ) सांसारिक, संसार-प्रसिद्ध, जो लोकव्यवहार में आता हो, दुनियावी ।

लौकी ( स्त्री० ) कद्दू, पर्वती ।

लौटना ( क्रि० अ० ) वापस आना, फिरना, घूमना, उलटा फिरना ।

लौना ( सं० लवण, लू=काटना ) ( क्रि० सं० ) काटना, कटनी करना, कम बाँट में दूसरा बाँट लगाकर उसे पूरा करना, लगना ।

ल्यारी ( पु० ) भेड़िया, हूँडार ।

## व

व ( सं० वा=वहना, जाना ) ( पु० ) हवा, राहु, कल्याण, समुद्र, बाघ, वरुण, मंत्रणा, सलाह, इस अक्षर की जगह हिंदी में बहुत बार 'ब' लिखा जाता है इस-लिये जो शब्द इसमें न मिले वह 'ब' में देखने से मिलेगा ।

वंश ( वंश=चाहना ) ( पु० ) घराना, कुटुंब, बेटे, पोते, कुल, संतान, संतति, बाँस ।

वंशभोज्य ( पु० ) पितृपितामहप्रभृतिभिरजिता भूम्यादि-संपत्, पितृसम्पत्, पुरखों से प्राप्त जीविका, पितरों की संपत्ति ।

वंशलोचन ( वंश=वाँग, वृक्ष=चमकना ) ( पु० ) बाँस से उत्पन्न कपूर-सौ श्वेत वस्तु जो बहुत-सी ओपधियों में काम आती है ।

वंशावली ( वंश+अवली ) ( स्त्री० ) पुरुषों की नामावली, पीढ़ी, परंपरा, वंशक्रम, वंशश्रेणी ।

वंशिका ( स्त्री० ) अंगर, सुगंधकाष्ठ, मुरली, वंशरोचन ।

वंशी ( वंश=बाँस ) ( स्त्री० ) बाँस का बना हुआ एक बाजा, बाँसुरी, मुरली ।

वंशीधर ( वंशी=बाँसुरी, धार=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण, मुरलीधर ।

वंशीघट ( वंशी+घट ) ( पु० ) एक बड़ का पेड़ जिसके नीचे बैठकर श्रीकृष्णचंद्रजी वंशी बजाया करते थे ।

वंश्य ( वि० ) कुलीन, श्रेष्ठकुलोत्पन्न, ( पु० ) पुत्र ( सप्तमपुरुषाक्षिप्तः वंशे भवः ) ।

वक ( पु० ) 'बक' शब्द को देखो ।

वकवृत्ति ( स्त्री० ) पाखंडी, धूर्तता, दगाबाज़ी ।

वकुल ( पु० ) मौलिश्री वृक्ष ।

वक्रव्य ( वक्=बोलना ) ( वि० ) कहने योग्य, बोलने योग्य ।

वक्त्रा ( वक्=कहना, बोलना ) ( वि० ) बोलनेवाला, कहनेवाला, गोया, स्पीकर ।

वक्त्र ( वक्=बोलना ) ( पु० ) मुँह, मुख ।

वक्त्रता ( स्त्री० ) कथन, व्याख्यान, स्पीच, वाज़ करना ।

वक्र ( वक्रि=टेढ़ा होना ) ( वि० ) टेढ़ा, बाँका, कुटिल, ( पु० ) शनैरघर, जख का भ्रमर, मंगल-ग्रह ।

वक्रनक्र ( पु० ) शुकपक्षी, सुग्गा, ( वि० ) पिशुन, दुर्जन ।

वक्रांग ( पु० ) हंस, चकवा पक्षी, सारस, ( वि० ) कुब्ज, टेढ़ा अंग ।

वक्रोक्ति ( वक्र=टेढ़ा, उक्ति=कहना ) ( स्त्री० ) टेढ़ा कहना, टेढ़ी बात, व्यंग्य वचन, कुटिलोक्ति, काकोक्ति, काकु-वचन, ताना, एक अलंकार जिसमें टेढ़ी बात कही जाती है, जैसे—

“हम कुलघातक सत्य तुम, कुलपालक दशरीश !”

अथवा—

“ मैं सुकुमारि नाथ बनजोगू,  
तुमहि उचित बन मोकहूँ भोगू । ”

वक्तःस्थल ( वक्तस्=छाती, वह=ले जाना और स्थल=जगह ) ( पु० ) छाती, हृदय, उरःस्थल ।

वक्तोज ( वक्तस्+ज ) ( पु० ) उरोज, स्तन, कुच ।

वंक ( वक्रि=टेढ़ा करना ) ( वि० ) बाँका, कुटिल ।

वंकिल ( वि० ) कंटक, काँटा, त्रिशूल ।

वंग ( वंगि=जाना ) ( पु० ) रांगा, एक धातु, बंगाल देश ।

वचन ( पु० ) उक्ति, कथन, वाक्य ।

वचनव्यक्ति ( स्त्री० ) बात की सफाई, बात में सफाई ।

वज्र ( पु० ) 'बज्र' शब्द को देखो ।

वज्रक ( पु० ) हीरा ।

वज्रदंत ( पु० ) शूकर, मूपक, मूस ।

वज्राघात ( पु० ) वज्रपात, वज्र से मारना ।

वंचक ( वच=ठगना ) ( वि० ) ठग, ठगनेवाला, धूर्त, दगाबाज़, ( पु० ) गोदब, सियार, बभ्रु, नकुल, नेवला ।

वंचना ( स्त्री० ) धूर्तता, ठगी ।

वंचित ( वच=ठगना ) ( वि० ) ठगा हुआ, ठगा गया, महारूम ।

वट ( वट=धेरना ) ( पु० ) बड़ का पेड़, बरगद ।

वटर ( वट=लेपटना ) ( पु० ) मुर्गा, चोर, पगड़ी, आसन, चटाई, छकुट, छड़ी, ( वि० ) धूर्त, दुर्जन, कुरूप, आलसी ।

वटी ( स्त्री० ) ओपध की गोली, रस्सी ।

वटु ( वट्=बोलना ) ( पु० ) ब्रह्मचारी, बालक, विद्यार्थी,  
ब्राह्मणकुमार ।

वटुक ( वट्=बोलना ) ( पु० ) बालक, बालकरूप भैरव ।  
वङ् ( वि० ) बङ्गा, विस्तीर्ण, ( पु० ) विस्तार, दीर्घता ।  
वडिश ( पु० ) कटिया, वंशा, मछलियों के पकड़ने का  
यंत्र ।

वंटक ( वण्ट=बाँटना, विभागक ) ( पु० ) बांट लोहे या  
पत्थर के, बाँटनेवाला, विभाजक ।

वत् ( अय्य० ) बराबर, तुल्य, समान, नाई ।

वत्स ( वट्=बोलना, जिससे प्यार से बोलते हैं ) ( पु० )  
बच्चा, बालक, बछड़ा, छाती, वर्ष, प्यार का शब्द ।

वत्सर ( वत्स=रहना ) ( पु० ) वर्ष, संवत् ।

वत्सल ( वत्स=प्यार, ला=लेना ) ( वि० ) प्यारा, प्रेमी,  
छोटी, मोटी, दयालु, कृपालु, रहीम ।

वदन ( वट्=बोलना ) ( पु० ) मुँह, मुख, चेहरा ।

वदन्य ( वि० ) दानशील, वक्रा, प्रिय, दाता ।

वध ( पु० ) हत्या, प्राणहिनस ।

वधू ( स्त्री० ) भार्या, दारा, स्त्री, पुत्रवधू ।

वन ( वन्=सेवना, माँगना या शब्द करना ) ( पु० ) जंगल,  
विपिन, अटवी, पानी, जगह, स्थान ।

वनचर } ( वन=जंगल, चर=चलनेवाला, चर्=चलना )  
वनचर } ( पु० ) जंगली, वनमानुष, वानर, बंदर ।

वनज ( वन=जंगल या पानी, जन्=पैदा होना ) ( पु० )  
कँवल, कमल ।

वनपांशुल ( पु० ) व्याध, बहेलिया ।

वनमाला<sup>१</sup> ( स्त्री० ) तुलसीकुन्दमन्दारपारिजाताष्ट-  
पुष्पकैः । निमिता दीर्घमाळा या वनमाला  
प्रकीर्तिता” । अर्थ—तुलसी, कुंद, मंदार, पारिजात  
और कमल इनसे बनी हुई माला ।

वनस्पति ( वन=जंगल, पति=मालिक ) ( स्त्री० ) वनस्पति,  
जमीन से उगनेवाली चीज ।

वनित ( वन्+इत् ) ( वि० ) याचित, माँगा हुआ ।

वनिता ( वन्=माँगना, याचना ) ( स्त्री० ) लुगाई, नारी,  
पत्नी, प्यारी, स्त्री ।

वंदन ( पु० ) } ( वदि=प्रणाम करना, पूजना या सराहना )  
वंदना ( स्त्री० ) } सराहना, स्तुति, प्रणाम, नमस्कार,  
आदाब, सिजदा, सिद्ध ।

वंदनचरित ( पु० ) क्राविल तारीफ़, प्रशंसा योग्य,  
चरित्रवाला ।

वंदनीय } ( वदि=प्रणाम करना या सराहना ) ( वि० )  
वंद्य } सराहने योग्य, प्रणाम या नमस्कार करने  
योग्य ।

वंदि } ( वि० ) प्रणामकृत, नमस्कार किया गया ।  
वंदित }

वंदीजन ( पु० ) भाट, प्रशंसक ।

वंधु ( पु० ) कुटुंबी परिवार के लोग ।

वन्य ( वन ) ( वि० ) जंगली, वनवासी, बनैला, वन का ।

वपन ( वप्=बोना ) ( पु० ) बीज बोना, बीज डालना,  
केश मुँहन, चौरकर्म, बाख बनाना ।

वपनी ( स्त्री० ) नापितशाला, हजामों का झुआ ।

वपिल ( पु० ) पिता, बाप ।

वपुस् ( वप्=बोना ) ( पु० ) शरीर, देह, काया ।

वपुरा ( वि० ) नीच, ओछा, तुच्छ, बेचारा ।

वप्त ( वि० ) बीज बोनेवाला, मुँहनकर्ता ।

वप्र ( पु० ) प्राचीर, खावाँ, परिखा, खाई, शहरपनाह,  
धुस्स, मिट्टी का टीला, बाप ।

वमन ( वम्=रद करना, क्रे करना ) ( स्त्री० ) उलटी, क्रै, रद ।

वमनी ( स्त्री० ) जोंक, जलौका, रक्पा ।

वमित ( वम्=रद करना ) ( वि० ) रद किया हुआ, वमन  
किया हुआ, वात, उगला हुआ ।

वयस् ( वय् अथवा यज्=जाना ) ( स्त्री० ) उमर,  
अवस्था ।

वयस्क } ( वि० ) युवा, समर्थ, बाख़िा ।  
वयस्थ }

वयस्य ( पु० ) बराबरवाला, हमउमर ।

वर ( वृ=पसंद करना ) ( पु० ) आशिष, आशीर्वाद,  
वरदान, चाही हुई चीज़, पति, स्वामी, जमाई,  
( वि० ) सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बड़ा ।

वरकंटिका ( स्त्री० ) सतावर, औषध-विशेष ।

वरण ( पु० ) वेधन, छपेटना, पूजना, आसन्न, स्वीकार ।

वरणा ( वृ=पसंद करना ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम  
जो बनारस के उत्तर बहती हुई गंगा में मिलती है ।

वरद् ( वर+दा=देना ) ( पु० ) अभीष्टदाता, अभयदाता ।

वरदा ( स्त्री० ) दुर्गा, शिवा ।

वरदान ( वर+दान ) ( पु० ) आशिष देना, वर देना,  
हुआ देना, श्रेष्ठदान, मुँहमाँगा दान ।

१. आपादलम्बिनी माला वनमाला विदुषुधा इति ।

वरदायक ( वर+दायक ) ( पु० ) वर देनेवाला, वरदाई, चाहें हुए को देनेवाला ।

वर रहना ( मृदा० ) अच्छा रहना, श्रेष्ठ रहना, सरस रहना, विजयी होना ।

वरवरणी ( वर=श्रेष्ठ+वरणी=रंग ) ( स्त्री० ) गौरी, गौरी स्त्री, अच्छे वर्णवाली ।

वरह ( पु० ) पत्र, पत्रा ।

वरा ( स्त्री० ) बकुची, ओषधि-विशेष ।

वराक ( वि० ) बेचारा, गरीब, नीच, अधम ।

वरांगना ( वर=मन्त्रे अच्छा, अंगना=स्त्री ) ( स्त्री० ) सुंदर स्त्री ।

वराटक ( पु० ) बीजकोश, बीज का स्थान, कमल का बीज ।

वराटिका ( स्त्री० ) कौड़ी, कपर्दिका ।

वराणसी } ( वरुणा एक नदी, श्रीं अग्नी एक नदी ये  
वाराणसी } दोनों नदिया बनावन के पास मिलती हैं  
इंगलिये ऐमा नाम हुआ ) ( स्त्री० ) बनारस, काशी,  
शिवपुरी ।

वरासन ( वर+आसन ) ( पु० ) बिस्तर, श्रेष्ठासन, राज्यासन, द्वारपात ।

वराह ( पु० ) शूकर, विष्णु का अवतार ।

वरिष्ठ ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

वरु ( अर्थ० ) अगार, यदि, भले ही, चाहें, वृत्तिक ।

वरुण ( पु० ) जल, जलेश, जलपति, सूर्य, पक्का मकान ।

वरुथ ( वृ=ढकना ) ( पु० ) रथ के ढकने का कपड़ा, समूह, झुंड ।

वरुथिनी ( स्त्री० ) सेना ।

वरु ( अर्थ० ) इस पार, इधर, समूह ।

वरुण्य ( वृ+ण्य ) ( वि० ) श्रेष्ठ, मुख्य, उत्तम, प्रार्थनीय, वरदाता ।

वरुण ( वि० ) श्रेष्ठ जाँघवाली ।

वरुह ( स्त्री० ) सोर, बड़ के वृक्ष में छटकनेवाली जटा ।

वरु ( पु० ) पृष्ठ, पेज, चाँदी-सोने का पतला पत्तर ।

वर्ग ( वृज्=ढकना ) ( पु० ) एक जाति का समूह, गण, दर्जा, क्लास, गणित में एक अंक को उसी अंक से गुणा करने से जो फल निकले, जैसे—४ का वर्ग १६ और ५ का २५ आदि, मजजूर, स्कायर ।

वर्गमूल ( वर्ग+मूल ) ( पु० ) वर्ग का मूल अर्थात् वह अंक जिसका वर्ग किया हो, जैसे—१६ का वर्गमूल ४ और २५ का वर्गमूल ५, अज़र, स्कायर रूट ।

वर्गीय ( वर्ग ) ( वि० ) वर्ग का, उसी समूह का ।

वर्जक ( वृज्+यक ) ( पु० ) परिहारक, रोकनेवाला ।

वर्जन ( वृज्=छोड़ना ) ( पु० ) त्याग, छोड़ना, रोकना, मना करना ।

वर्जनीय ( वर्ज्+यनीय ) ( वि० ) रोकने योग्य, मना करने के लायक ।

वर्जित } ( वृज्=छोड़ना ) ( वि० ) छोड़ा हुआ, रोका  
वर्ज्य } हुआ, मना किया हुआ ।

वर्ण ( वर्ण्=रंगना, फैलाना, सराहना ) ( पु० ) रंग, जाति, क्रोम, जैसे ( १ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वश्य, ४ शूद्र ) अक्षर, हर्क ।

वर्णक ( पु० ) प्रशंसक, तारीफ करनेवाला ।

वर्णन ( वर्ण्=रंगना, सराहना, फैलाना ) ( पु० ) बखान, बयान, स्तुति, सराहना, रँगना ।

वर्णना } ( वर्णन ) ( क्रि० स० ) बयान करना,  
वर्णन करना } गुण कहना, सराहना, स्तुति करना ।

वर्णमाला ( वर्ण्=अक्षर, माला=पंक्ति ) ( स्त्री० ) ककहरा, स्वर, ध्वंजन ।

वर्णसंकर ( वर्ण्=जाति, संकर=मिला हुआ ) ( पु० ) दोगला, जिसके बाप और मा जुदी-जुदी जाति के हों ।

वर्णिका ( स्त्री० ) वर्णों की लिखनेवाली, लेखनी, कलम ।

वर्णित ( वि० ) स्तुति किया गया, तारीफ किया गया ।

वर्तन ( वृत्=होना ) ( पु० ) जीविका, आजीविका, जीने का उपाय, रोज़ी ।

वर्तमान ( वृत्=होना ) ( पु० ) जो समय बोल रहा है, ( वि० ) विद्यमान, मौजूद ।

वर्ता ( स्त्री० ) काठ की कलम, पटरी पर लिखने की काठ की कलम ।

वर्ताव ( पु० ) व्यवहार, राह-रस्म ।

वर्ति ( वृत्+इत ) ( स्त्री० ) बत्ती, नयनांजन, हुतर, फुलेल, ओषधि, दोपक, चिराग ।

वर्तुल ( वि० ) गोख, गोख़ाकार ।

वर्तु } ( पु० ) पथ, अड्डा, राह, पक्क, निसेप ।  
वर्तुन }

वर्द्धन ( वृध्=बढ़ना ) ( पु० ) बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि ।

वर्द्धमान (वि०) श्रीमान्, भाग्यवान्, उन्नतिशालि ।  
वर्धित (वि०) उन्नत, बढ़ा हुआ ।

वर्वर (वर्व+अर, वर्व=कहना) (वि०) बहुत बातूनी,  
फुल्लूङ्गो, मूर्ख, (पु०) पीछा चंदन, हाँग, केशभेद,  
बावरी ।

वर्म (वृ=ढकना) (पु०) कवच, बल्लर ।

वर्मा (पु०) बढई का छेद करने का औजार, क्षत्रियों  
का उपपद ।

वर्य (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, वर, प्रवर, शिरोमणि ।

वर्ष (वृष्=बरसना या पेदा करना) (पु०) साल, संवत्,  
बारह महीने, वर्षा, मेह, जंबूद्वीप का एक खंड ।

वर्षगाँठ (स्त्री०) सालगिरह ।

वर्षण (पु०) बरसना ।

वर्षा (वृष्=बरसना) (स्त्री०) मेह, बरसात, वर्षाकाल,  
प्रावृट् ।

वर्षाकाल (वर्षा+काल) (पु०) बरसात, चौमासा,  
चतुर्मास ।

वर्षाशन (पु०) वर्ष-भर की जीविका, एक वर्ष का  
भोजन ।

वर्हिण } (वर्हि=मोर की पूछ, वर्हि=ऊँचा होना या सबसे  
वर्ही } अच्छा होना) (पु०) मोर, मयूर ।  
वरही }

वल (वल्=घेरना) (पु०) सेना, फौज, बल, नाकृत ।

वलकल (पु०) छाल, बकला ।

वलभी (स्त्री०) बरंडा, गृहचूड़ा, बरामदा ।

वलय (वल्=ढकना वा घेरना) (पु०) कंकण, बाला, कड़ा ।

वला (स्त्री०) सेना, लक्ष्मी, धरणी, बरियारा औपध ।

वलाका (वल्=घेरना) (स्त्री०) बगला, बगले के ऐसा  
पक्षी ।

वलाहक (पु०) मेघ, बादल ।

वलि (स्त्री०) पूजोपहार, पूजा की सामग्री, पशु-वध,  
कुर्बानी ।

वलकल (वल्=ढकना) (पु०) छाल, झिलका, बकला ।

वल्लु (पु०) छाग, चंदन, पण, वन, (वि०) मनोहर ।

वलमीक (वल्=घेरना, ढकना) (पु०) वीमक, बिंबोट,  
वीमक की बाँधी ।

वल्लभ (वल्ल=ढकना) (वि०) प्यारा, प्रिय, प्रियतम,  
(पु०) पति, अधिकारी ।

वल्लभा (वल्लभ) (स्त्री०) प्यारी स्त्री, प्रिया ।

वल्लव (पु०) गाला, अहीर, गोप ।

वल्ली (वल्=घेरना) (स्त्री०) लता, जेजि, पृथ्वी, अजमोड़ा ।

वश (वश=स्पृहा, इच्छा) (पु०) अधीनता, क्राव्,  
हस्तियार ।

वशिष्ठ (वर्शा=वश करनेवाला जो अपनी इद्रियों को अपने  
वश में रखे, या अब और शास्त्र सिखाना जो मनुष्यों  
को धर्म की बात सिखलावे) (पु०) एक ऋषि जो  
ब्रह्मा का बेटा और सूर्यवंशियों का गुरु था, सात  
प्रजापतियों में से एक प्रजापति ।

वशी (पु०) जितेंद्रिय ।

वशीकरण (पु०) अधीन करने की प्रक्रिया, सिद्धि-  
विशेष, मंत्रविशेष ।

वशीभूत (वश=अधीन, मु=होना) (वि०) अधीन,  
दूसरे के वश ।

वश्य (वि०) वश में, क्राव् में ।

वपट् (अव्य०) देवताओं के हृदिर्दान में, सत्कार,  
सेवा ।

वसति } (वस्=बसना) (स्त्री०) वास, वासा, बस्ती,  
वसती } आबादी, रहने की जगह, रात ।

वसन (पु०) बख, छादन, निवास ।

वसंत (वस्=रहना या ढकना या महकाना, सुगंधित  
करना) (पु०) एक ऋतु जो शैत और कुछ वैशाख  
के महीने तक रहती है, ऋतुराज, एक राग का  
नाम, शीतला, गोटी ।

वसंतदूत (पु०) कोकिला, आमवृक्ष, माधवीलता ।

वसंती (पु०) पीला ।

वसह (पु०) नाँदिया ।

वसा (स्त्री०) चर्बी, मेदा ।

वसीठ (पु०) दूत, हलकारा, वकील ।

वसीठी (स्त्री०) दूत का काम, दूतपन, चिट्ठी, पत्रिका ।

वसु (वस्=रहना या ढकना) (पु०) एक प्रकार के देवता  
जो आठ हैं (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५  
अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास) आग, किरण,  
एक वृक्ष, धन, मोना, रत्न, जवाहर, पानी, (वि०)  
मोटा, सूखा ।

वसुधा (वस्=धन, दा=देना) (स्त्री०) धरती, जमीन,  
धरणी, पृथ्वी, भूमि, वसुधा ।

वसुधा ( वसु=धन, धा=रखना ) ( स्त्री० ) धरती, जमीन, पृथ्वी ।

वसुंधरा ( वसु=धन, धृ=रखना ) ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, जमीन ।

वस्तुव्य ( वि० ) वास योग्य, रहने के लायक ।

वस्तु ( ( स्त्री० ) पदार्थ, द्रव्य ।

वस्तुतः ( अव्य० ) ठीक-ठीक, यथार्थ, सचमुच ।

वस्तुपाठ ( पु० ) चीजों का सवरूप, पदार्थों के विषय में पाठ ।

वस्त्र ( पु० ) कपड़ा, वसन ।

वह ( सर्वना० ) अन्य पुरुष-विशेष ।

वहला ( पु० ) भाषा, चर्चाई, आक्रमण ।

वहाँ ( अव्य० ) उस स्थान पर ।

वह्नि ( वह्=ले जाना या पहुँचाना ) ( पु० ) जलयान, जहाज़, स्टीमर ।

वह्नि ( वह्=ले जाना या पहुँचाना ) ( स्त्री० ) आग, अग्नि ।

वह्निमुख ( वि० ) विमुख, बागी ।

वह्य ( पु० ) काँवर, बहँगी, बहँगा, वाहन, डोला, डोला ।

वह्म ( वि० ) भूत, प्रभूत, बहुत ।

ना ( अव्य० ) अथवा, या, विकल्प, सादृश्य, अवधारण, वितर्क, पादपर्यय ।

वाँ ( अव्य० ) वहाँ, उस जगह, उधर ।

वाकुर्त्ता ( स्त्री० ) औपध-विशेष ।

वाक् ( स्त्री० ) भाषा, वाणी, वचन ।

वाक्चातुरी ( स्त्री० ) वचनपटुता, बोलने की होशियारी ।

वाक्त्रेव ( पु० ) हयग्रीव, शारदा, सरस्वती ।

वाक्पति ( पु० ) हयग्रीव, बृहस्पति, देवगुरु ।

वाक्युद्ध ( पु० ) बहस, ज़बानी झगड़ा ।

वाक्य ( वच्=बोलना ) ( पु० ) बोल, वाक्, वचन, वाणी, पदों का इकट्ठा होना, जुमला ।

वाग् ( पु० ) वाक्, वाणी, ( स्त्री० ) खगाम ।

वागीश ( वाच्=बोली, ईश=मालिक ) ( पु० ) बृहस्पति, ब्रह्मा, कवि, ( वि० ) अच्छा बोलनेवाला ।

वागीशा ( स्त्री० ) सरस्वती, शारदा ।

वागीश्वरी ( वाच्=बोली, ईश्वरी=देवी ) ( स्त्री० ) सरस्वती, एक रागिनी ।

वागुरी ( स्त्री० ) मृगपाश, फाँसी, फंदा या जाल ।

वाग्दंवर ( पु० ) वाचालता, वाक्यस्तोम, बहुत बातें, प्रज्ञाप, धूर्तता ।

वाग्दंड ( वाच्=बोली, दण्ड=सजा ) ( पु० ) मुँह से भला-बुरा कहना, धमकाना ।

वाग्दत्त ( पु० ) एक प्रकार का विवाह, वचनदत्त ।

वाग्मी ( वाच्=बोली ) ( वि० ) मुँदर बोलनेवाला, ( पु० ) बृहस्पति ।

वाङ्मय ( वि० ) शास्त्र, वाक्यस्वरूप, वाणी का रूप, गोया, वक्ता, साहित्य ।

वाच् } ( वच्=बोलना ) ( स्त्री० ) बोली, वचन, वाक्, वाचा } वाणी, वाक्य ।

वाचक ( वच्=कहना ) ( पु० ) सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, बोलनेवाला, कथक, पुराणवक्ता, कथावाचक ।

वाचन ( पु० ) पढ़ना, कहना ।

वाचस्पति ( वाच्=बोली, पति=स्वामी ) ( पु० ) बृहस्पति, देवताओं के गुरु ।

वाचा ( स्त्री० ) वाणी, सरस्वती, वचन, ज्ञान ।

वाचाट ( वि० ) कुस्तिभाषी, बदकलाम, दुष्टवचनी ।

वाचाल ( वच्=बोलना ) ( वि० ) बातूनी, बहुत बोलनेवाला, गप्पो, बक़ी ।

वाचित ( वि० ) उक्त, कथित ।

वाच्य ( वच्=कहना ) ( वि० ) बोलने योग्य, जो बोला जाय, जो कहा जाय, ( पु० ) वाक्य, अर्थ ।

वाच्यता ( स्त्री० ) अपमान, हजो ।

वाङ्मिड ( अव्य० ) धन्य, वाह जी, खूब, प्रिय वाक्य ।

वाज ( पु० ) अक्ष, वृत्त, जल, यज्ञ, बाजपक्षी, तीर में पंख, वेग ।

वाजपेय ( वाज=यज्ञ की सामग्री अथवा घी, वजु=जाना और पेय=पीना, पा=पीना ) ( पु० ) एक प्रकार का यज्ञ ।

वाजिराज ( पु० ) उत्तम घोड़ा ।

वाजी ( वाज=वेग, वजु=जाना ) ( पु० ) घोड़ा, तीर ।

वाङ्मा ( स्त्री० ) स्पृहा, काँसा, इच्छा, स्वादिष्ट, अभिलषाप ।

वाङ्मित ( वि० ) इच्छित, अभिलषित ।

वाट ( पु० ) पथ, राह, जीविकास्थान ।  
 वाटिका ( स्त्री० ) फुलवाड़ी, बगीची ।  
 वाटी ( स्त्री० ) भौरिया, गृह ।  
 वाड़ ( स्त्री० ) स्थान, बाढ़, सान ।  
 वाड़ी ( स्त्री० ) उपवन, उद्यान, बगीचा ।  
 वाण ( पु० ) तीर, शर, पंख, कांड ।  
 वाणिज्य ( पु० ) व्यापार, सौदागरी ।  
 वाणी ( स्त्री० ) बात, बोली, शब्द, वचन ।  
 वात ( वा=जाना, बहना ) ( स्त्री० ) हवा, बतार, पवन,  
 वायु, गठिया, बाव, एक रोग ।  
 वातप ( पु० ) सर्प, साँप, हिरन, मृग ।  
 वातापिसूदन ( पु० ) अगस्त्य-मुनि ।  
 वातायन ( पु० ) झरोखा, रोशनदान ।  
 वात्सल्य ( वत्सल ) ( पु० ) प्यार, प्रेम, स्नेह, दयालुता ।  
 वाद् ( वद्=बोलना ) ( पु० ) शास्त्रार्थ, बहस, चर्चा,  
 बातचीत, विवाद, झगड़ा, वचन, वाक्य, दावा,  
 मुकद्दमा, पुकार, क्रयाद् ।  
 वादन ( पु० ) कहना, बजाना ।  
 वादगायण ( पु० ) व्यासमुनि, बदरिकाश्रमवासी ।  
 वादी ( वाद ) ( वि० ) बोलनेवाला, वाद करनेवाला,  
 शास्त्रार्थ करनेवाला, ( पु० ) मुद्दई, दावा करनेवाला,  
 नालिश करनेवाला ।  
 वाद्य ( वद्=शब्द करना ) ( पु० ) बाजा ।  
 वानप्रस्थ ( वन=जंगल, प्रस्थ=रहनेवाला, प्र, स्था=ठहरना )  
 ( पु० ) तीसरा आश्रम, मनुष्य जो ब्रह्मचर्य और  
 गृहस्थाश्रम के बाद वन में रहकर तपस्या करता  
 है, तपस्वी, वनवासी ।  
 वानर ( वान=वन के फल आदि, ग=लेना अथवा वा=कुछ-  
 कुछ, नर=मनुष्य अर्थात् जिसका डीलडौल कुछ-कुछ  
 मनुष्य से मिलता है ) ( पु० ) बंदर, कपि, मर्कट,  
 कीश ।  
 वानरमुख ( पु० ) नारियल, बंदर का मुँह ।  
 वानरेंद्र ( वानर+इंद्र ) ( पु० ) सुग्रीव, हनुमान् ।  
 वापी ( वप्=बोना अर्थात् जिसमें कमल आदि उगते हैं )  
 ( स्त्री० ) बावड़ी, बावली ।  
 वाम ( पु० ) महादेव, वामदेव, धन, वास्तूक, बधुवा,  
 वेदाचार-विरुद्ध, ( वि० ) वरुण, मनोहर, सध्य,  
 कुटिल ।

वामन ( वाम, वा=जाना ) ( पु० ) बौना, नाटा, भगवान्  
 का वामन अवतार ।  
 वामा ( स्त्री० ) नारी, स्त्री ।  
 वामांगी ( स्त्री० ) दुलहिन, पत्नी ।  
 वामाचार ( पु० ) शास्त्रमत का एक भेद, मधमांससेवन  
 आदि जिनकी धर्मक्रिया है ।  
 वायन ( पु० ) बैना, न्योता, आमंत्रण, चुनौती ।  
 वायव्य ( वायु ) ( पु० ) वायुकोण, पश्चिम-उत्तर का  
 कोना, ( वि० ) हवा का ।  
 वायस ( वयस्=उमर अर्थात् बड़ी उमरवाला ) ( पु० )  
 बीष्मा, काग, एक वृक्ष का नाम ।  
 वायु ( वा=बहना, जाना ) ( स्त्री० ) हवा, पवन,  
 बयार, बतार ।  
 वायुग्रस्त ( वि० ) उन्मत्त ।  
 वायुपुत्र ( वायु+पुत्र ) ( पु० ) बातजात, हनुमान्,  
 रामदूत ।  
 वायुवाह ( पु० ) धूम्र, धूप, धुआँ ।  
 वार ( पु० ) द्वार, अवसर, शिव, क्षण, दिन, यज्ञपात्र ।  
 वारक ( पु० ) निपेक्षक, वाधक ।  
 वारण ( वृ=टकना ) ( पु० ) रोक, निषेध, अटकाव,  
 बाधा, हाथी, बछ्तर, कवच ।  
 वार देना ( कि० अ० ) उतार देना, न्योछावर कर देना ।  
 वारन ( पु० ) अर्पण, बलि, न्योछावर करना, अटकाव,  
 रोक ।  
 वारना ( कि० अ० ) उतारना, भेंट चढ़ाना, घेरना ।  
 वारपार } ( सं० अवारपार, अवार=इस पार, पार=उस  
 वारापार } पार ) ( कि० वि० ) इस उस पार, वलें-  
 पलें पार, ( पु० ) हड़, सीमा ।  
 वारा ( पु० ) सस्ताई, बचाई, बचाव, निछावर ।  
 वारांगना ( स्त्री० ) देवदारा, दिव्यांगना ।  
 वाराणसी ( स्त्री० ) 'वहणा' नदी और 'असी' नदी  
 के मध्य की बस्ती, काशी ।  
 वाराह ( पु० ) सूअर, शूकर ।  
 वारि ( वृ=टकना ) ( पु० ) पानी, जल ।  
 वारिचर ( वारि=पानी, चर=चलना ) ( पु० ) जलचर,  
 जल का जीव, मछली, ( वि० ) पानी में रहनेवाला ।  
 १. यहाँ पृषोदरादि से वरुणा शब्द के स्थान में वारण आदेश  
 हुआ है ।

वारिचरकेतु ( वारिचर+केतु ) ( पु० ) कामदेव, मकर-ध्वज, मीनकेतन ।

वारिज ( वारि=पानी, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) कमल, कैवल्य ।

वारिजनयन ( वारिज+नयन ) ( वि० ) जिसकी आँखें कमल-जैसी हों ।

वारिन्द् ( वारि=पानी, द=देनेवाला, दा=देना ) ( पु० ) वारदल, मेघ ।

वारिदनाद् ( वारिद+नाद् ) ( पु० ) मेघनाद्, रावण का बेटा ।

वारिधि ( वारि=पानी, धा=स्नाना ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।

वारिनाथ ( वारि+नाथ ) ( पु० ) समुद्र, सागर, वरुण ।

वारिनिधि ( वारि+निधि ) ( पु० ) समुद्र, सागर ।

वारिवाह ( पु० ) मेघ, वारिद ।

वारी ( स्त्री० ) घर, मकान, गृह, जल ।

वारीश ( वारि+इश ) ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।

वारुणी ( स्त्री० ) पश्चिम दिशा, मदिरा, शतभिषा नक्षत्र, वृष, वरुण की स्त्री ।

वार्त्ता ( वृत्=होना ) ( स्त्री० ) बात, वृत्तान्त, समाचार, गण्य ।

वार्त्तिक ( वृत्ति अथवा वार्त्ता से, वृत्त=होना ) ( पु० ) सूत्र की टीका, व्याख्या, गद्य, नमर, ( वि० ) बानूनी ।

वार्त्तिक ( पु० ) वृद्धावस्था, वृद्ध-समूह—जैसे ( वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम् ) ।

वार्य } ( वि० ) निवार्य, रोका गया ।

वार्यमाण } ( वि० ) वर्ष=माल ( वि० ) बरसौड़ी, सालाना, संवती, वर्ष का ।

वालमीक } ( वालमीक=दीमक, अर्थात् जो दीमक से निकला, इसकी कथा रामायण में देखो ) ( पु० ) एक मुनि जिन्होंने रामायण बनाई ।

वावद्क ( पु० ) बह्ना, बोलनेवाला ।

वाप्प ( वा=वहना ) ( स्त्री० ) भाप, धुआँ, उष्मा ।

वासन ( पु० ) सुरभीकरण, सुगंधित करना, पात्र, चरतन, वस्त्र ।

वासना ( स्त्री० ) इच्छा, प्रत्याशा, निवास, स्थान ।

वासंती ( स्त्री० ) माघवी, लता, लता-विशेष ।

वासर ( वस=रहना ) ( पु० ) दिन, दिवस ।

वासव ( वसु=धन, संपदा अर्थात् जिसके बहुत धनसंपदा हो ) ( पु० ) इंद्र, शुक्र, देवताओं का राजा ।

वासित ( वि० ) गंधयुक्त, सुगंधित ।

वासी ( वि० ) निवासी, वाशिदा, ( पु० ) ठंडा अन्न, भाप निकलता भोजन ।

वासुकि ( पु० ) सर्पों के राजा का नाम ।

वासुदेव ( वसुदेव ) ( पु० ) वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

वास्तव } ( वस्तु ) ( वि० ) ठीक-ठीक, यथार्थ, वास्तविक } सचमुच, निश्चय, स्थिर ।

वास्तव्य ( वि० ) बसने योग्य, ( पु० ) बंधु, रिश्तेदार ।

वास्तूक ( पु० ) बथुप का साग ।

वास्प ( पु० ) वाष्प, भाप ।

वाहन ( वह=ले जाना ) ( पु० ) सवारी ।

वाहिनी ( वह=ले जाना ) ( स्त्री० ) सेना जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल हों; दल, कटक, कौज, नदी, ( वि० ) ले जानेवाली ।

वाहु ( पु० ) भुजा, बाजू ।

वाह्य ( वहिस्=बाहर ) ( वि० ) बाहर का, बाहरी ।

वि ( अव्य० ) वियोग, विशेष, निश्चय, असहन, निग्रह, हेतु, अव्याप्त, ईपन, थोड़ा, शुद्ध, अवलंबन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन ।

विकंकल ( पु० ) कटाई ।

विकट ( वि० ) विह्वल, उद्दिग्ध, व्याकुल, अपूरा, असंपूर्ण, भयानक, भयंकर, क्रूर ।

विकराल ( वि=बहुत, कराल=उरावना ) ( वि० ) बहुत उरावना, बहुत भयानक ।

विकल ( वि० ) विह्वल, व्याकुल, घबराया हुआ ।

विकल्प ( पु० ) शक, भ्रान्ति, पशोपेश, आभाषीका ।

विकशन ( पु० ) प्रकाश, स्निग्धता ।

विकार ( वि, क=करना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बदलता हुआ ) ( पु० ) स्वभाव का बदलना, बदल जाना, अन्य रूप होना, बीमारी ।

विकाल ( पु० ) सायंकाल, गोधूली, संध्या ।

विकीरण ( पु० ) फेकना, फैलाना, ज्ञान ।

१. “उक्तानुक्तद्विरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते ।  
तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा मनीषिणः ॥”



विकृत ( वि, कृ=करना ) ( वि० ) बदला हुआ, उलटा, विरुद्ध, बीमार, रोगी, मलीन ।

विकृति ( स्त्री० ) बदलना, रूपांतर, विकार होना ।

विक्रम ( वि=बहुत, क्रम=जाना ) ( पु० ) पराक्रम, बल, ज़ोर, शक्ति, शूरता, वीरता, उज्जैन का राजा विक्रमादित्य, विष्णु ।

विक्रमादित्य ( विक्रम+आदित्य अर्थान् बल या शूरवीरता का सूर्य ) ( पु० ) उज्जैन नगरी का प्रसिद्ध राजा जिसने हंस चलाया ।

विक्रमी ( विक्रम ) ( वि० ) बलवान्, शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर, ( पु० ) सिंह ।

विक्रय ( क्री=मोल लेना ) ( पु० ) बेचना, नीलाम करना ।

विक्रयी } ( पु० ) बेचनेवाला ।  
विक्रेता }

विक्रिया ( स्त्री० ) विकार, बदल जाना, फिर जाना, पलट जाना ।

विक्रव } ( वि० ) विह्वल, परेशान, भ्रान्त, भ्रमिन् ।  
विक्रान्त }

विक्लिप्त ( वि० ) जीर्ण, अर्धर ।

विक्लेद ( पु० ) नमी, आर्द्रता, रनूबत, तरी ।

विक्षेप ( वि=बहुत, विप्=फेंकना ) ( पु० ) चबराहट, बाकुलता, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना, अंतर ।

विख्यात ( वि=बहुत, ख्यात=प्रसिद्ध ) ( वि० ) बहुत प्रसिद्ध, नामवर, नामी, यशो, यशस्वी ।

विख्याति ( स्त्री० ) प्रसिद्धि, शुहरत, नामवरी ।

विगत ( वि=बहुत, गम्=जाना ) ( वि० ) जो खला गया, गन, जुदा हुआ, रहित, विना, हीन ।

विगतभ्रम ( विगत=चली गई है, भ्रम=थकावट ) ( वि० ) जिसकी थकावट चली गई हो, विना मेहनत ।

विगर्हण ( पु० ) निंदा करना ।

विगोये ( वि० ) छिपे हुए ।

विग्रह ( वि, ग्रह=लेना, वि उपसर्ग के साथ आने से लड़ना अर्थ भी होता है ) ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, विगाड़, शरीर, देह, फैलाव, भाग, आकार, असमास ।

विघटन ( पु० ) बचना, तोड़ना, विगाड़ना ।

विघटित ( घट=बचना ) ( वि० ) मिलाया गया, रचा गया, तोड़ा गया ।

विघात ( हन्=मारना ) ( पु० ) नाश करना ।

विघातक ( पु० ) नाशक ।

विघ्न ( वि, हन्=मारना ) ( पु० ) रोक, रुकाव, अटकाव, विगाड़, बाधा ।

विचक्षण ( वि=बहुत, चक्ष=बोलना या देखना ) ( वि० ) चतुर, प्रवीण, पंडित, बुद्धिमान्, सयाता ।

विचरण ( पु० ) भ्रमण, हृधर-उधर भ्रमना ।

विचलना ( सं० विचल, वि=बहुत, चल=चलना ) ( कि०अ० ) तितर-बितर होना, अधीर होना, हिम्मत हारना, मचलना, रुठना ।

विचार ( पु० ) तथ-निर्णय, अभिप्राय, मन का भाव, दिलीखयाल ।

विचित्र ( वि० ) रंग-बिरंगा, अद्भुत, अजीब ।

विचित्रुष ( वि, चिद=काटना ) ( वि० ) विभक्त, विदीर्ण, बँटा हुआ, कटाफटा ।

विच्छेद ( वि, छिद=काटना ) ( पु० ) वियोग, जुदाई, अंतर ।

विजय ( वि=बहुत, जि=जीतना ) ( स्त्री० ) जीत, फ़तह, जय ।

विजया ( वि=बहुत, जि=जीतना ) ( स्त्री० ) विजया-दशमी; कुँवार सुदी १०, दुर्गा, देवी, भाँग, बूटी ।

विजयी ( वि=बहुत, जयी=जीतनेवाला ) ( वि० ) बहुत जीतनेवाला ।

विजाति ( वि=दूसरी, जाति=भाँति ) ( स्त्री० ) और जाति, दूसरी जाति, दूसरी भाँति ।

विजिगीषा ( स्त्री० ) जीतने की इच्छा ।

विज्ञ ( वि=बहुत, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) प्रवीण, पंडित, चतुर, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, विद्वान् ।

विज्ञता ( विज्ञ ) ( स्त्री० ) पंडिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, लिखाकृत ।

विज्ञान ( वि=बहुत, ज्ञा=जानना ) ( पु० ) बहुत ज्ञान, शास्त्रज्ञान, शिक्षाविद्या ।

विज्ञापन ( वि=बहुत, ज्ञापन=जताना, ज्ञा धातु का प्रेरणार्थक में ज्ञाप रूप होता है ) ( पु० ) जताना, शिक्षा, प्रार्थना, बिनती, हस्तिका, नोटिस, इस्तिहार ।

विट् ( पु० ) जार, भड़ुआ ।

विटप ( विट्=विस्तार या पेड़ की नई डाली, पा=पालना या विट्=शब्द करना ) ( पु० ) वृक्ष, पेड़, नई डाढ़ी और नये पत्ते आदि ।

विडम्बक ( विड्=निन्दा करना ) ( वि० ) निन्दक, प्रतारक ।

विडम्बना ( स्त्री० ) निरस्कार करना, अपमान करना ।

विडम्बित ( वि० ) अपमानित, निन्दित, निरस्कृत ।

विडाल ( विड्=वृक्ष डालना ) ( पु० ) बिल्लाव ।

विन्डो ( वि०, विडि=मागना ) ( स्त्री० ) मिथ्यावाद, वाक्-प्रपञ्च, पक्षपात करना, तन्त्रस्मृति करना ।

वितत ( वि० ) प्रसारित, फैलाया गया, ताना गया ।

वितरण ( वि०, वृ=वार जाना ) ( पु० ) दान, निस्सरण, स्मरण, प्रतरण, निर्वाह, संतरण, उद्धार, बाँटना, प्रवर्च करना ।

वितरणशाली ( वि० ) दानी, सखी ।

वितर्क ( वि+तर्क ) ( पु० ) बड़ा तर्क, अनुमान, विचार, वाद ।

वितल ( पु० ) पाताल-विशेष ।

वितस्ति ( स्त्री० ) बिल्लाई, बित्ता, बीता ।

वितान ( वि=बहुत तन्त्र=फँसाना ) ( पु० ) चँदोवा, मंडप, यज्ञ, फैलाव, विस्तार ।

वितृण ( वि० ) निस्पृह, तृणाहीन, विराग, वृत्त ।

वित्त ( वित्त=त्यागना ) ( पु० ) धन, द्रव्य, गात, बल, ( वि० ) ख्यात, ज्ञात, विचारित, लब्ध ।

विथकना ( कि० अ० ) अधूरा पड़ा रहना, बंध्या होना ।

विथकहि ( कि० अ० ) चकित होना ।

विदग्ध ( वि० ) चतुर, प्रवीण, अनुभवी ।

विदर्भ ( वि=विना, दर्भ=एक प्रकार की घास जो इस देश में एक ऋषि के शाप से, जिसका बेटा इस घास से घायल होकर मर गया था, नहीं पैदा होती है ) ( पु० ) बंगाल के दक्षिण-पश्चिम का एक प्रदेश और एक शहर जिसको अब नागपुर अथवा बरार कहते हैं ।

विद्या ( विद=विभाग, ज्ञान ) ( स्त्री० ) ज्ञान, बुद्धि, ज्ञाई, खूबसती ।

विद्याई ( स्त्री० ) जाने की भेंट, खूबसती नज़र ।

विद्वारण ( वि=बहुत, दृ=फाड़ना ) ( पु० ) फाड़ना, चीरना, भेदन, छड़ाई, युद्ध, ( वि० ) चीरनेवाला, फाड़नेवाला ।

विदित ( विद=जानना ) ( वि० ) जाना हुआ, समझा हुआ, प्रसिद्ध, प्रार्थना किया गया, निवेदित ।

विदिश ( वि=बीच, दिश=दिशा ) ( स्त्री० ) दिशा का बीच, कोना, गोशा ।

विदीर्ण ( दृ=फाड़ना ) ( वि० ) फाड़ा हुआ, चीरा हुआ ।

विदुर ( पु० ) कौरवों का मंत्री, दासीपुत्र, धृतराष्ट्र का भाई, ( वि० ) धीमान्, ज्ञानी ।

विदुष ( पु० ) पंडित ।

विदुषी ( स्त्री० ) पंडिता ।

विदुषक ( दृ=वृग कहना ) ( पु० ) निन्दक, भाँड़, नाटक का एक पात्र ।

विदेश ( पु० ) अन्य देश ।

विदेशी ( वि० ) प्रवासी, परदेशी ।

विदेह ( वि=नहीं, देह=शरीर अर्थात् जिसको अपने शरीर का कुछ ध्यान नहीं था, केवल परमेश्वर का ध्यान था ) ( पु० ) जनक राजा, मिथिला का राजा और सीता का पिता ।

विद्ध ( व्यध्=छेदना ) ( वि० ) छेदा हुआ, पार किया हुआ, फाड़ा हुआ, ताड़ित ।

विद्यमान ( विद=होना ) ( वि० ) वर्तमान, जो हाज़िर हो, मौजूद ।

विद्या ( विद=जानना ) ( स्त्री० ) ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, हल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं ( ४ वेद और ६ वेदों के अंग, ११ वीं पुराण, १२ मीमांसा, १३ न्याय, १४ धर्मशास्त्र ) देवी का मंत्र, दुर्गा ।

विद्याधर ( विद्या=मंत्र आदि, धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) ( पु० ) एक प्रकार के देवता ।

विद्यार्थी ( विद्या, अर्थी=चाहनेवाला, अर्थ=चाहना ) ( पु० ) विद्या पढ़नेवाला, छात्र ।

विद्यालय ( विद्या+आलय ) ( पु० ) पाठशाला, स्कूल, कालेज, मदरसा ।

विद्यावान् ( विद्या+वान् ) ( वि० ) पंडित, ज्ञानवान्, विद्वान् ।

विद्युत् ( वि=बहुत, द्युत्=चमकना ) ( स्त्री० ) बिजली, दामिनी, तड़ित ।

विद्रावक ( वि+द्रु=जाना ) ( पु० ) चुभानेवाला, टपकानेवाला ।

विद्रम ( वि=विशेष, खाल और द्रुम=वृक्ष ) ( पु० ) मूँगा, प्रवाल ।

विद्रोह ( पु० ) वैर, दुश्मनी ।

विद्रोही ( वि+द्रुह्=अशुभचित्तक ) ( पु० ) वैरी, दुश्मन ।

विद्वान् ( विद=ज्ञानना ) ( वि० ) पंडित, विद्यावान्, ज्ञानी ।

विद्वेष ( वि+द्विप्=शत्रुता करना ) ( पु० ) वैरभाव, शत्रुता, विरोध, वैर ।

विद्वेषक } ( वि० ) द्विषक, वैरी, दुश्मन ।  
विद्वेषी }  
विद्वेषा }

विध ( सं० त्रिधि ) ( स्त्री० ) रीति, प्रकार, ढंग, भाँति, रूप, चाल ।

विधवा ( स्त्री० ) राई, रंडा, पतिहीना स्त्री ।

विध्यातव्य ( वि० ) विधेय, धरने योग्य ।

विध्याता ( वि=बहुत, धा=रखना ) ( पु० ) ब्रह्मा, सृष्टि बनानेवाला, ईश्वर, भाग, क्रिस्मत ।

विधात्री ( स्त्री० ) ब्रह्माणी, मुहकमा दीवानी ।

विधान ( वि=बहुत, धा=रखना ) ( पु० ) विधि, रीति, शास्त्र में कही हुई रीति ।

विधायक ( पु० ) मुंसिक, विधानप्राय ।

विधि ( वि=बहुत, धा=रखना ) ( पु० ) ब्रह्मा, ईश्वर, सृष्टि की रचना करनेवाला, भाग, क्रिस्मत, रीति, शास्त्र में कही हुई रीति ।

विधिगिरा ( स्त्री० ) ब्रह्मा की वार्षी ।

विधिवत् ( अव्य० ) बयायोग्य, रीत्यनुसार, याक़ायदा ।

विधु ( व्यध्=छेदना, विरही लोगों के हृदय को ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा, कपूर, विष्णु, एक राक्षस ।

विधुंतुद ( विधु=चाँद को, तुद=दुःख देना ) ( पु० ) राहु ।

विधूत ( वि+धू=कैपाना ) ( वि० ) कुंपित, त्यक्त ।

विध्वंस ( वि=बहुत, ध्वंस्=गिरना ) ( पु० ) नाश, विनाश ।

विध्वस्त ( वि० ) विनष्ट, नाशकृत, हराया गया ।

विनत ( वि+नप्=भुकना ) ( वि० ) प्रणत, नम्र ।

विनता ( स्त्री० ) गरुड़ की माता ।

विनति ( स्त्री० ) विनय, स्तुति ।

विनय ( वि=बहुत, नी=ले जाना या पाना ) ( स्त्री० ) विनती, शिष्टाचार, नम्रता ।

विनश्चर ( वि० ) नाश होनेवाला, क़ानी ।

विनायक ( वि, नी=ले जाना या पाना ) ( पु० ) गणेश, बुध, गरुड़ ।

विनाश ( वि=बहुत, नश=नाश होना ) ( पु० ) बहुत नाश, बरबादी ।

विनाशित ( वि० ) नष्ट, विध्वंसित ।

विनिमय ( वि+नि+मि+य, मि=केकना ) ( पु० ) बिलोम, अस्वस्थ, विपरीत, परिवर्तन, अदृष्टावद्की करना, ग्रहण, बंधन ।

विनियोग ( पु० ) बैठामा, स्थिर करना, मुक़र्रर करना ।

विनीत ( वि=बहुत, नी=ले जाना या पहुँचाना ) ( वि० ) नम्र, विनयी, सुशील ।

विनेता ( पु० ) राजा ।

विनोद ( वि, नृद=प्रेरणा करना, चलाना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ हँसी करना होता है ) ( पु० ) खेल, हँसी, उट्टा, कौतुक, क्रीड़ा, खुशी, हर्ष, आनंद ।

विदक ( वि० ) लाभयुक्त, लाभसहित ।

विदु ( विद=जुदा-जुदा होना ) ( पु० ) बिंदी, बुँद, शून्य, अनुस्वार, पानी का कण, ( वि० ) ज्ञाता, दाता, जानने योग्य, एक निशिचर का नाम ।

विध्य ( विध्=छेदना ) ( पु० ) विध्याचक्र पहाड़ ।

विध्यवासिनी ( विध्य=विध्याचल, वासिनी=रहनेवाली, वस्=रहना ) ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, भगवती, योग-माया ।

विध्याचल ( विध्य+अचल ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम ।

विश्र ( विद=ज्ञानना ) ( वि० ) प्राप्त, ज्ञात, जाना गया, स्थित ।

विन्यस्त ( वि० ) यथाक्रम स्थापित, किया गया, तरीक़ावार रक्खा गया ।

विन्यास ( पु० ) स्थापन करना, रचना करना ।

विपक्ष ( वि=विरुद्ध या उलटा, पक्ष=पक्ष, तरफ़ ) ( पु० ) शत्रु, वैरी, दुश्मन ।

विपत्ति ( वि=बुरी तरह से, पद=जाना ) ( स्त्री० ) आपदा,

विपद्, विपन्न, दुःख, तकलीफ़ ।

विपथ ( पु० ) कुमार्ग, बुरी तरह ।

विपद् } ( वि=बुरी तरह से, पद=जाना ) ( स्त्री० )  
विपदा } विपत्ति, आपदा, आकृत ।  
विपत् }

विपरीत ( वि, परि=उलटा, दृग्=जाना ) ( वि० ) उलटा,  
विरुद्ध ।

विपर्यय ( वि+परि+दृग्+थ, दृग्=जाना ) ( पु० ) व्यति-  
क्रम, विपरीत, उलटपलट ।

विपर्यस्त ( वि० ) व्यतिक्रान्त, विपरीत, लौटपौट करने-  
वाला ।

विपर्यास ( पु० ) विलोम, विपरीत्य, विपर्यय ।

विपल ( पु० ) क्षण, लहमा ।

विपश्चिन् ( पु० ) बुद्धिमान्, ज्ञानी, शिक्षित ।

विपाक ( पु० ) कर्मभोग, फल, नतीजा ।

विपात ( वि+पत्=जाना, गिरना ) ( पु० ) निपात, वज्र-  
पात, नाश, ध्वसन, अपमान ।

विपिन ( वप्=बोना ) ( पु० ) वन, जंगल ।

विपुल ( वि=बहुत, पुल्=बढ़ना या फैलना ) ( वि० )  
बड़ा, बहुत फैला हुआ, गंभीर ।

विप्र ( वि=बहुत, प्रा=भरना या वप्=बोना ) ( पु० )  
ब्राह्मण ।

विप्रलब्ध ( वि० ) वंचित, धोखा दिया गया ।

विप्रलब्धा ( स्त्री० ) नायिका-विशेष ।

विप्रलाप ( पु० ) अनर्थक वाक्य, विलाप ।

विप्रलव ( वि, लु=जाना ) ( पु० ) देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव ।

विप्लुत ( वि० ) आकृत में फँसा हुआ, भिगड़ा हुआ ।

विफल ( वि=विना, फल=साम ) ( वि० ) निष्फल, व्यर्थ,  
बेफायदा ।

विबुध ( वि=बहुत, बुध=जानना ) ( पु० ) देवता, पंडित,  
चंद्रमा ।

विबुधनदी ( विबुध+नदी ) ( स्त्री० ) देवताओं की  
नदी, गंगाजो ।

विबुधान ( पु० ) पंडित ।

विबोधन ( पु० ) समझाना, प्रबोध करना ।

विभक्त ( वि० ) पृथक्कृत, बाँटा गया, मुक्तसिम ।

विभक्ति ( वि, भज्=टुकड़े करना, अलग करना ) ( स्त्री० )

अंश, बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, व्याकरण में कारकों के  
चिह्न ।

विभव ( वि=बहुत, भू=होना ) ( पु० ) संपदा, धन,  
संपत्ति, ऐश्वर्य, एक संवत्सर का नाम ।

विभाग ( वि=बहुत, भज्=टुकड़े करना ) ( पु० ) भाग,  
टुकड़ा, बाँट, हिस्सा, अंश, प्रकरण, सरिस्ता,  
सीमा, मद्, भेद, फर्क, तफ़्तीस ।

विभाजक ( पु० ) अंशकारी, हिस्सेदार ।

विभाजित ( वि० ) हिस्से किया गया, बाँटा गया ।

विभावना ( वि, भू=होना ) ( स्त्री० ) प्रसिद्ध कारण के  
अभाव से कार्य का उत्पत्तियुक्त लक्षण, अलंकार-  
भेद ।

विभावसु ( पु० ) सूर्य, मन्दारवृक्ष, वह्नि, चंद्र,  
हारभेद ।

विभीषण ( वि=बहुत, भी=डराना बैरियों को ) ( पु० )  
रावण का भाई, ( वि० ) डरानेवाला, भयानक ।

विभीषा ( पु० ) भय, भयानक ।

विभीषिका ( स्त्री० ) भयप्रदर्शन, भय दिखाना ।

विभु ( वि=बहुत, भू=होना ) ( वि० ) समर्थ, प्रभु, सर्व-  
व्यापी, ( पु० ) मालिक, शिव, ब्रह्मा, विष्णु ।

विभुक्त ( वि=बहुत, भुज्=खाना ) ( वि० ) बहुत खाया  
हुआ, बहुत भोजन किया हुआ ।

विभूति ( वि=बहुत, भू=होना ) ( स्त्री० ) संपदा, ऐश्वर्य,  
सिद्ध, संपत्ति, धन-दौलत आदि सुख, राख,  
भस्म ।

विभूषण ( वि=बहुत, भूष्=सिंघार करना ) ( पु० ) गहना,  
अलंकार, जेवर, शोभा, आभूषण ।

विभूषित ( वि=बहुत, भूष्=सिंघारना ) ( वि० ) शोभित,  
सँवारा हुआ, शोभायमान, फबता हुआ, सुजैयन ।

विभेदक ( वि, भिद+अक, भिद=तोड़ना ) ( पु० ) विभे-  
दक, तोड़नेवाला ।

विभ्रम ( वि=बहुत, भ्रम्=भूलना ) ( पु० ) चेष्टाभेद,  
संदेह, कटाक्ष, एक अंग का आभूषण दूसरे अंग में  
धारण करना, भ्रान्ति, भ्रमण, शोभा ।

विभ्राज ( पु० ) शोभायमान, आजिष्णु, शृंगार से  
सुशोभित ।

विमर्श } ( वि, मृश्=छूना, ध्यान करना ) ( पु० )  
विमर्शन } विचार, परामर्श ।

विमर्ष ( वि=चमा करना ) ( पु० ) मौनी, विचारी, क्रोधी ।

विमल ( वि=बिन, मल=मैल ) ( वि० ) निर्मल, स्वच्छ, साफ़, शुद्ध ।

विमाता ( वि=दूसरी, माता=मा ) ( स्त्री० ) सौतेली मा ।

विमान ( वि=बहुत, मा=आदर करना या मान्=पूजना ) ( पु० ) देवताओं का रथ ।

विमुक्त ( वि, मुच्=छूटना, छोड़ना ) ( वि० ) छूटा हुआ, रिहा ।

विमुख ( वि=उलटा, मुख=मुँह ) ( वि० ) विरोधी, फिरा हुआ ।

विमुग्ध ( वि० ) अज्ञानी, मूढ़ ।

विमूढ़ ( वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख ) ( वि० ) बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ़ ।

विमोचन ( वि, मुच्=छुड़ाना ) ( पु० ) छोड़ना, मुक्त करना, ( वि० ) दूर करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

विंघ ( वि=चमकना या जाना ) ( पु० ) मूर्ति, छवि, तसवीर, छाया, प्रतिबिम्ब, सूर्य अथवा चंद्रमा का मंडल, बिंबाफल, एक लालफल, कुँदरू ।

वियोग ( वि=नहीं, योग=मेल ) ( पु० ) विरह, जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, जुदा रहना ।

वियोगी ( वियोग ) ( वि० ) विरही, जुदा रहनेवाला, बिछुड़ा हुआ ।

विरक्त ( वि=नहीं, रज्जु=रंगना ) ( पु० ) वैरागी, उदासी ।

विरचित ( वि, रच्=बनाना ) ( वि० ) बनाया हुआ, रचा हुआ ।

विरंच } ( वि=बहुत, रच्=बनाना ) ( पु० ) सृष्टि  
विरंचि } बनानेवाला, प्रसा ।

विरज ( वि० ) क्रोधरहित, बेतमकनत ।

विरजा ( स्त्री० ) वृष, नदी-विशेष, पौधा-विशेष ।

विरत ( वि=नहीं, रम्=खेलना ) ( वि० ) वैराग्यवान्, जिसने संसार को छोड़ दिया हो, रिहा, बेगम ।

विरति ( वि=नहीं, रम्=खेलना ) ( स्त्री० ) वैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

विरट् ( वि=नहीं, रट्=खोदना ) ( पु० ) यश, नामधरी, बाबा, ज़िबास, हथियार, अस्त्र-शस्त्र ।

विरटैत ( वि० ) बीर बाबावाले, ( पु० ) भाट, बंदी, चारण ।

विरल ( वि० ) अनुपम, अनोखा, अमूढ ।

विरस ( वि० ) रसहीन, नीरस, बेजायका ।

विरह ( वि=बहुत, रह=छोड़ना ) ( पु० ) जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, वियोग ।

विरहित ( वि० ) बिछुड़ा हुआ, वियोगी ।

विराग ( वि=नहीं, रज्जु=रंगना ) ( पु० ) वैराग, लोभ-मोह को छोड़ना ।

विराज ( पु० ) चत्रिय आदि पुरुष, विष्णु का स्थूल रूप ।

विराजमान ( वि=बहुत, राज्=शोभना ) ( वि० ) शोभायमान, सोहता हुआ ।

विराजित ( वि० ) दीप्त, रोशन ।

विरुज ( वि० ) नारोग, तंदुरुस्त, रोगरहित ।

विराट् ( वि=बहुत, राज्=शोभना ) ( पु० ) विष्णु का बड़ा रूप, विश्वरूप, एक देश का नाम, ( वि० ) बड़ा, बृहत् ।

विराध ( वि=धृति तरह से, राध्=पूरा करना, सिद्ध करना ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम ।

विराम ( वि=बहुत, रम्=आनंद करना ) ( पु० ) ठहरना, विश्राम, शांति, अंत, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

विराम ( वि=नहीं, रम्=चैन करना ) ( वि० ) ग्याकुल, दुःखी, बेचैन ।

विरामक ( वि० ) लौटालनेवाला ।

विरुद्ध ( वि=बहुत, रुध्=रोकना ) ( वि० ) उल्टा, विपरीत, ज़िद्वार ।

विरूप ( वि=धुरा, रूप=डाल ) ( वि० ) कुरूप, भौंसा, अशोभनीय, बदसूरत ।

विरूपाक्ष ( पु० ) शिवजी, एक राक्षस का नाम ।

विरेक ( पु० ) अतीसार, पेट-रोग, रोग-विशेष ।

विरेचक ( रच्=गिराना ) ( वि० ) दस्तावर, मलभेदक ।

विरेचन ( पु० ) जुलाब, मलनिस्सारण-औषध ।

विरेचित ( वि० ) मुसहिल, रेचित ।

विरोचन ( वि=बहुत, रच्=चमकना ) ( पु० ) प्रह्लाद का बेटा और राजा बलि का बाप, सूर्य, चाँद ।

विरोध ( वि, रघ्=रोकना ) ( पु० ) वैर, द्वेष, शत्रुता, दुरमनी, झगड़ा, लड़ाई ।

विरोधक ( वि० ) विवादी, वैरी ।

विरोधी ( विरोध ) ( वि० ) वैरी, शत्रु, दुश्मन, झगड़ालू ।

विल ( विल=खेद करना ) ( पु० ) छिद्र, गर्त, गड्ढा ।  
 विलक्षण ( वि=बहुत, लक्ष=देखना या चिह्न करना )  
 ( वि० ) विचक्षण, अनूप, उत्तम, भला, श्रेष्ठ,  
 जुड़ा, भिन्न ।  
 विलग ( वि० ) भिन्न, पृथक्, अलग ।  
 विलगावना ( क्रि० स० ) अलग करना, निकाल देना ।  
 विलपत ( वि० ) रोते हुए ।  
 विलपना ( क्रि० अ० ) रोदन करना, रोना ।  
 विलंब ( वि=बहुत, लंबि=ठहरना ) ( स्त्री० ) देरी, अंबेर,  
 टाकमटोल, असा ।  
 विलंबना ( क्रि० अ० ) ठहरना, देर करना, रहना ।  
 विलय : पु० ) नाश, प्रलय, जगत् का नाश ।  
 विलाप ( वि=बुरी तरह से, लाप=बोलना अर्थात् रोना )  
 ( पु० ) रोना, बिलखना, शोच, शोक, संताप,  
 दुःख ।  
 विलायत ( पु० ) परदेस, दूसरा देश ।  
 विलास ( वि=बहुत, लस=खेलना ) ( पु० ) खेल, क्रीड़ा,  
 कंजि, विहार, भोग, सुख, आनंद, हर्ष, ऐश ।  
 विलासन ( वि० ) भोगी, ऐयाश, ( पु० ) सर्प,  
 कृष्ण, वड्ढि, कामदेव, महादेव, चंद्र ।  
 विलासिनी ( स्त्री० ) नारी, वेश्या ।  
 विलासी ( वि० ) भोगी, ऐयाश ।  
 विलीन ( ली=लगना ) ( वि० ) विरत, नष्ट, लयप्राप्त ।  
 विलुप्त ( लुप्त=अदृश्य होना ) ( वि० ) अट्ट, नष्ट, गुप्त ।  
 विलूलन ( पु० ) बुद्बुद, पानी का बुल्ला ।  
 विलंप ( पु० ) उबटन, चंदन, चुपड़ना ।  
 विलोकन ( वि, लोक=देखना ) ( पु० ) दृष्टि, दीठ,  
 नज़र, ताक ।  
 विलोकना ( सं० विलोकन ) ( क्रि० स० ) देखना,  
 ताकना ।  
 विलोकित ( वि० ) देखा हुआ ।  
 विलोचन ( वि, लोच=देखना ) ( पु० ) आँख, नयन,  
 नेत्र ।  
 विलोडना ( क्रि० स० ) मथना, हिलोरना ।  
 विलोप ( पु० ) अदर्शन, नाश ।  
 विलोम ( वि० ) उल्टा, विपरीत, प्रतिलोम ।  
 विलोचना ( क्रि० स० ) मथना ।  
 विल्व ( विल=ढकना ) ( पु० ) बेज का पेड़ या फल ।

विवर ( वि=नहीं, वृ=ढकना ) ( पु० ) बिज, छेद,  
 गड्ढा, सेंध, दोष ।  
 विवरण ( वि=नहीं, वृ=ढकना अर्थात् शब्द के अर्थ आदि  
 का खोलना ) ( पु० ) टीका, व्याख्या, बखाना,  
 हिजा, रिपोर्ट, बहस ।  
 विवर्ण ( वि० ) अधम, नीच, रंगहीन, रूपरहित,  
 निश्चेष्ट, पीछा, कांतिरहित ।  
 विवर्द्धन ( पु० ) बढ़ती, तरफ़ी होना ।  
 विवर्द्धित ( वि० ) बढ़ाया हुआ, चढ़ा हुआ ।  
 विवश ( वि० ) पराधीन, बशीभूत ।  
 विवस्त्र ( वि० ) नंगा, वस्त्रहीन ।  
 विवसा ( वि० ) वांछित, इष्ट, चाहा हुआ ।  
 विवस्वत् ( पु० ) सूर्य, अर्कवृक्ष, अरण्य, जाल ।  
 विवाद ( वि=बहुत, वाद=भगड़ा ) ( पु० ) वाद, झगड़ा,  
 उलटा कहना, विरोध ।  
 विवादी ( पु० ) मुद्दे, शास्त्रार्थी, झगड़ा करनेवाला ।  
 विवाह ( वि=व्यापम मं, वह=ले जाना ) ( पु० ) व्याह,  
 गठबंधन, शादी ।  
 विवाहित ( विवाह ) ( वि० ) व्याहा हुआ, जिसकी  
 शादी हो गई हो ।  
 विवाहिता ( विवाहित ) ( वि० ) व्याही हुई ।  
 विविक्र ( वि, विच्=बुदा करना ) ( वि० ) छोड़ा हुआ,  
 एकांत, निर्जन, पवित्र ।  
 विविध ( वि=बहुत, विध=प्रकार ) ( वि० ) नाना प्रकार  
 का, भ्रांति-भ्रांति का ।  
 विवृत्ति ( स्त्री० ) विस्तार, व्याख्यान ।  
 विबुध ( पु० ) देवता, पंडित ।  
 विवेक ( वि=बहुत, विच्=बुदा करना, विचारना ) ( पु० )  
 विचार, ज्ञान ।  
 विवेकी ( विवेक ) ( वि० ) विचार करनेवाला, ज्ञानवान्,  
 ज्ञानी ।  
 विवेचना ( वि=बहुत, विच्=बुदा-बुदा करना, विचारना )  
 ( स्त्री० ) भूत-सत्त्व का विचार, विवेक, तमीज़ ।  
 विवेचित }  
 विवेचितव्य } ( वि० ) विचारित, विचारने योग्य ।  
 विवेच्य }  
 विवोढा ( पु० ) जामाता, दामाद, बर, दूहा,  
 नौशा ।

विशद ( वि, शद=जाना ) ( वि० ) धबल, सक्रेद, खेत, निर्मल, साक, उज्जल ।

विशाखा ( वि=बहुत, शाखा=प्रकार ) ( स्त्री० ) सोलहवाँ नक्षत्र, राधिका की एक सखी का नाम ।

विशार ( पु० ) मछली ।

विशारद ( विशाल=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना, यहाँ विशाल के ल को र हो गया है ) ( वि० ) पंडित, विद्वान्, निपुण, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध ।

विशाल ( वि=बहुत, शाल=जाना ) ( वि० ) बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैला हुआ ।

विशिख ( वि=बहुत, अर्थात् तीखा, शिखा=चोटी अथवा अनी या वि=नहीं, शिखा=चोटी ) ( पु० ) तीर, बाण, शर, ( वि० ) विना चोटी का, शिखा-रहित ।

विशिखासन ( विशिख+आसन ) ( पु० ) धनुष, कमान ।

विशिष ( पु० ) मंदिर ।

विशिष्ट ( वि=बहुत, शिष्ट=गुण-महित होना ) ( वि० ) साथ, संयुक्त, सहित, जुड़ा हुआ, उत्तम, बड़ा ।  
विशुद्ध ( वि=बहुत, शुद्ध=पवित्र ) ( वि० ) बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल ।

विशुद्धि ( स्त्री० ) शोधन, दोष दूर करना ।

विशूचिका ( स्त्री० ) हैजा, कालरा ।

विशेष ( वि=बहुत, शिष्ट=गुण के साथ होना ) ( पु० ) प्रकार, भेद, जाति, ( वि० ) मुख्य, खास, निज, बहुत, अधिक ।

विशेषण ( वि=बहुत, शिष्ट=गुण के साथ होना ) ( पु० ) गुण, धर्म, स्वभाव, तारीफ़ ।

विशेषोक्ति ( स्त्री० ) यत्नोक्ति, विशेष वाक्य, अर्थालंकार-भेद ।

विशेष्य ( वि+शिष्ट ) ( पु० ) नाम, संज्ञा, ( वि० ) खास, प्रधान ।

विशोक ( वि=विना, शोक=सोच ) ( वि० ) जिसको किसी बात का सोच न हो ।

विश्रंभ ( पु० ) विश्रवास, प्रत्यय, निश्चय, एतबार ।

विश्रान्त ( वि=नहीं, आंत=थका हुआ ) ( वि० ) चैन से, सुस्थिर, आराम किया हुआ, बेथका हुआ ।

विश्रान्तघाट ( विश्रान्त+घाट ) ( पु० ) बमुनानदी पर

बना हुआ एक घाट जहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजी ने कंस को मारकर आराम किया था ।

विश्राम ( वि=नहीं, अम्=थकना ) ( पु० ) चैन, आराम, ठहरना ।

विश्रुत ( वि० ) विख्यात, नामी, प्रसिद्ध ।

विश्लिष्ट ( श्लिष्ट=मिलना ) ( वि० ) अयुक्त, शिथिल ।

विश्लेष ( पु० ) वियोग, विच्छेद, विभाग, श्लेश्य ।

विश्लेषक ( पु० ) विच्छेदक, विभाजक ।

विश्व ( विश्व=युगना ) ( पु० ) जगत्, संसार, जग, दुनिया, एक प्रकार के देवता जिनको आन्ध में पिंड और बलि आदि देते हैं, ( वि० ) सब, संपूर्ण ।

विश्वकर्मा ( विश्व=संसार, कर्म=काम अर्थात् जिनका काम सब संसार में है ) ( पु० ) देवताओं का राजा और ब्रह्मा का बेटा, मूर्त्य ।

विश्वक्सेन } ( विश्वक्=सब संसार में जानेवाला, विश्व=  
विष्वक्सेन } संसार, अम्=जाना, गेमां, क्रीज है  
जिसकी ) ( पु० ) विष्णु, नारायण ।

विश्वनाथ ( विश्व+नाथ ) ( पु० ) शिव, महादेव, जिनका मंदिर बनारस में है ।

विश्वप ( विश्व=संसार, पा=रक्ष करना ) ( पु० ) विश्व-पालक ।

विश्वंभर ( विश्व=संसार को, भर=पालनेवाला, भृ=पालना ) ( पु० ) विष्णु, ईश्वर ।

विश्वरूप ( विश्व+रूप ) ( पु० ) विष्णु, सर्वव्यापी ।

विश्वसित ( वि० ) विश्वासपात्र, मुश्कतमिद, विश्वास किया हुआ ।

विश्वस्त ( वि० ) प्रत्ययित, विश्वासकर्ता, मुश्कतमिद, जातविश्वास ।

विश्वामित्र ( विश्व=संसार अथवा सब, मित्र=प्यारा, जिसका सब संसार मित्र हो ) ( पु० ) राजा गांधि के पुत्र जो राजाश्वपि से ब्रह्महृषि हो गये ।

विश्वास ( वि, श्वम्=जीना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ भरोसा करना हो जाता है ) ( पु० ) भरोसा, प्रतीत, एतमाद् ।

१. मित्र चर्चा ६।३।१३० इस सूत्र से विश्व को दीर्घ किया गया ।

विश्वासघातक ( विश्वास+घातक ) ( वि० ) कपटो,  
छुकी, दशाबाहु, ठग ।

विश्वासपात्र ( विश्वास+पात्र ) ( वि० ) विश्वसनीय,  
भरोसेवाला, क्राबिल एतमाद ।

विश्वासविशिष्ट ( वि० ) विश्वास-योग्य, प्रतीति-योग्य,  
जिस पर भरोसा किया जाय ।

विश्वासी ( पु० ) भरोसा करनेवाला, विश्वासक ।

विश्वेश } ( विश्व=संसार, ईश वा ईश्वर=मालिक )  
विश्वेश्वर } ( पु० ) महादेव, शिव, विश्वका स्वामी ।  
विष ( विष्=फैलना ) ( पु० ) जहर, मादुर, हलाहल,  
गरल ।

विषगण ( वि० ) दुःखी, विषादग्रस्त ।

विषधर ( विष=जहर, धृ=रक्षना ) ( पु० ) साँप, सर्प,  
भुजंग ।

विषम ( वि=नहीं, सम=बराबर ) ( वि० ) नाबराबर,  
असमान, असुख, जो बराबर न हो, कठिन, कठोर,  
दुःखदायी, भयंकर ।

विषमज्वर ( विषम+ज्वर ) ( पु० ) कठिन ताप, एक  
प्रकार का ताप ।

विषमता ( स्त्री० ) राग, द्वेष, मुखालिखित, बेएतदाखी,  
कठिनता, सङ्गती ।

विषमबाण ( विषम+बाण, अर्थात् जिसका तीर कठिन है )  
( पु० ) कामदेव ।

विषय ( वि=बहुत, पि=प्राधना अर्थात् जिसमें मन लगे )  
( पु० ) चीज, वस्तु, पदार्थ, जो चीज इन्द्रियों से  
जानी जाय ( जैसे रंग, रूप, रस, गंध, शब्द, छूना )  
काम, बात, भोगविलास, बाधत, वास्ते, लिये ।

विषयिण ( वि० ) भोगी, ऐयाश ।

विषयी ( विषय ) ( वि० ) संसारी, विद्यासी ।

विषाण ( वि=बहुत, पा=नाश करना अथवा विष्=फैलना )  
( पु० ) सींग, हाथीदाँत, सूअर का दाँत ।

विषाद ( वि=बहुत, द=दुःख देना ) ( पु० ) शोक, दुःख,  
ताप, उदासी ।

विषादक ( पु० ) दुःखवाता ।

विषादित ( वि० ) कष्टित, दुःखी ।

विषुव } ( विष्=बराबर, विष्=फैलना और, वा जाना  
विषुवत् } अर्थात् जिसमें दिनरात बराबर होते हैं ) ( पु० )  
वह समय जब दिन-रात बराबर होते हैं ।

विषुवत्रेखा ( विषुवत्+रेखा ) ( स्त्री० ) धरती के बीच  
की लकीर, मध्यरेखा, मध्यसूत्र, भूमध्यरेखा, खत  
उत्तवा ।

विष्ट ( वि० ) प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध ।

विष्टभ्य ( वि० ) सम्हाल कर ।

विष्टर ( पु० ) आसन, कुशासन, वृक्ष-विशेष ।

विष्टि ( स्त्री० ) भद्रा, अशुभ समय, बेगार ।

विष्टा ( वि, स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) गूह, मज, पुरीष ।

विष्टु ( विष्=फैलना, जो सब सृष्टि में फैला हुआ है )  
( पु० ) परमेश्वर, भगवान्, सृष्टि को फैलानेवाला,  
व्यापक ।

विष्टुवल्लभा ( विष्टु=भगवान्, वल्लभा=प्यारी ) ( स्त्री० )  
तुलसी, लक्ष्मी, हरियिया ।

विस ( सर्वना० ) वह, उस ।

विसर्ग ( वि, मृज्=छोड़ना ) ( पु० ) स्वर के आगे के  
दो बिंदु, दान, छोड़ना ।

विसर्जन ( वि, मृज्=छोड़ना ) ( पु० ) बिदा, भोजना,  
छुटी करना, जाने देना, छोड़ना, देना ।

विसर्जित ( वि० ) रुखसत किया गया, बरछास्त  
हुआ, भेजा गया ।

विसारना ( कि० म० ) भूल जाना, भुलाना ।

विसासिनि ( स्त्री० ) हासिदा, डाह करनेवाली, सौतिनी ।

विसूचिका ( वि=कठोर, सूचि=सूई, जो सूई के ऐसा कठोर  
अथवा तीखा अर्थात् बहुत दुःख देनेवाला रोग हो )  
( स्त्री० ) एक प्रकार का हैजे का रोग ।

विसूरना ( कि० अ० ) रोना, शोक करना, दुविधा में  
पड़ना ।

विस्तर ( वि, स्तृ=ढोपना ) ( वि० ) प्रचुर, बहुत, ( पु० )  
समूह, विस्तार, आधार, पीड़ा, खिझीना ।

विस्तार ( वि=बहुत, स्तृ=ढकना ) ( पु० ) फैलाव,  
चौड़ाई, स्तंभ, कालम, सक्का का आधार ।

विस्तारक } ( पु० ) फैलानेवाला ।  
विस्तारी }

विस्तारित ( वि० ) फैलाया गया, फैला हुआ ।

विस्तीर्ण ( वि० ) फैला हुआ, विस्तृत ।

विस्तृत ( वि=बहुत, स्तृ=ढकना, फैलाना ) ( वि० ) फैला  
हुआ, विस्तीर्ण ।

विस्फुल्लिग ( पु० ) चिनगारी ।



विस्फोट ( वि=बहुत, स्फुट=फूटना या फटना ) ( पु० )  
फोड़ा, घाव ।

विस्फोटक ( पु० ) फूटनेवाला अर्थात् फोड़ा, शीतला,  
चेचक ।

विस्मय ( वि=कुल, रिम=मुसकराना ) ( पु० ) अचरज,  
आश्चर्य, अचंभा, चमस्कार, ताउजुब ।

विस्मरण ( वि=नहीं, स्मरण=याद ) ( पु० ) भूलना,  
बिसरना ।

विस्मृत ( वि, रिम=मुसकराना ) ( वि० ) अचंभे में,  
चकित, अचंभित ।

विस्मृत ( वि=नहीं, स्मृ=याद रहना ) ( वि० ) भूला हुआ ।

विस्मृतता ( स्त्री० ) बेहोशी, बेसुधी, बेतबरी ।

विस्मृति ( स्त्री० ) भूल, सफलत ।

विहग } ( विहायस्=आकाश, वि=बीच में, हा=छोड़ना  
विहंग } वा हयु=जाना और गम्=जाना अर्थात् आकाश  
विहंगम } में उड़नेवाला ) ( पु० ) पक्षरू, पक्षी, बादल,  
तोर, सूर्य, चाँद, ग्रह ।

विहरण ( वि, ह=लेना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से  
इस धातु का अर्थ खेल करना या आनंद करना होता  
है ) ( पु० ) विहार करना, खेल करना, क्रीड़ा  
करना, घूमना, सैर करना ।

विहसना ( कि० अ० ) हँसना, खिलना ।

विहार ( वि, ह=लेना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से  
इस धातु का अर्थ खेल करना होता है ) ( पु० )  
विह्वास, खेल, क्रीड़ा, आनंद से फिरना, बौद्ध-  
मंदिर, भारत का प्रांत-विशेष ।

विहारी ( विहार ) ( वि० ) विहार करनेवाला, आनंद  
करनेवाला, ( पु० ) श्रीकृष्ण, हिंदी का एक कवि ।

विहित ( वि=बहुत, धा=रखना ) ( वि० ) ठीक, उचित,  
करने योग्य, ठहराया हुआ ।

विहीन ( वि=बहुत, हा=छोड़ना ) ( वि० ) विना, जुदा,  
रहित, छोड़ा हुआ ।

विह्वल ( वि=बहुत, हल=हिलना, चलना ) ( वि० ) व्या-  
कुल, घबराया हुआ, चंचल ।

वी ( पु० ) विकास, दीर्घ, एका ।

वीक्षण ( वी+ईक्ष+अन, ईक्ष=देखना ) ( पु० ) दर्शन,  
देखना ।

वीक्ष्य ( वि० ) देखकर, निहारकर ।

वीक्षित ( वि० ) देखा हुआ, दृष्ट ।

वीचि ( वे=लेना ) ( स्त्री० ) लहर, तरंग, मौज, ठंड ।

वीज ( वि=बहुत, जन्=पैदा होना ) ( पु० ) व्यथा, दाना  
जो बोया जाता है, मूल-कारण, अंकुर, वीर्य, मंत्र,  
बोजगणित, गणित का एक भाग जिसमें अंकों की जगह  
अक्षर लिखकर हिसाब बनाते हैं, इसको संस्कृत में  
अव्यक्तगणित कहते हैं ।

वीणा ( अजु=जाना या वी=जाना ) ( स्त्री० ) एक प्रकार  
का बाजा जिसकी नारदजी ने निकाला—वीण-शब्द  
को देखो ।

वीत ( वी=जाना या वि, इणु=जाना ) ( वि० ) बीता  
हुआ, गुज़रा हुआ, चला गया ।

वीथि ( वी=जाना वा विथु=माँगना ) ( स्त्री० ) गली,  
रास्ता, पंक्ति, श्रेणी ।

वीप्सा ( वि=बहुत, आपु=केलना, लाभ ) ( स्त्री० ) व्या-  
सोच्छा, फैंसना, आदर, अधिकता, व्यापकता ।

वीय ( वि० ) दो, २ ।

वीर ( वीर=पराक्रम करना या अजु=जाना ) ( पु० ) शूर,  
बहादुर, शूरमा, योद्धा, काव्य के नवरसों में एक रस ।

वीरगति ( स्त्री० ) युद्धक्षेत्र में प्राण-विसर्जन, वीरों की  
तरह मरना ।

वीरण } ( ईरु=कहना ) ( पु० ) घेना, गाच, खस,  
वीरन } ( वि० ) प्यारा, प्यारा भाई ।

वीरता ( वीर ) ( स्त्री० ) बहादुरी, शूरमापन ।

वीरप्रसू ( प्र, सू=पैदा करना ) ( स्त्री० ) वीरजननी, वीर  
पुत्र की माता ।

वीरभद्र ( वीर=बहादुर, भद्र=बहुत अच्छा ) ( पु० )  
महादेव के एक गण का नाम जिसने यज्ञ-समेत  
दक्ष का विनाश किया ।

वीरवृत्ति ( स्त्री० ) शूरों का बाना, शूरों का वेश,  
वीरों का काम ।

वीरा ( स्त्री० ) वीर पुत्र की माता, पीपल-आपथ ।

वीर्य ( वीर ) ( पु० ) बीज, धातु, पुरुषार्थ, बल, जोर,  
प्रताप, प्रभाव, तेज, ओज ।

वृक ( वृक्=लेना ) ( पु० ) भेषिया, हुँडार, हयारी ।

वृकोदर ( पु० ) भीमसेन, ब्रह्मा ।

वृत्त ( वृश्च=काटना ) ( पु० ) पेड़, रुख, गाछ, तरुवर,  
पादप ।

वृत्त (वृत्त=होना या ढकना) ( पु० ) घेरा, मंडल, चक्कर, गोला खेत, छंद, रीति, ( वि० ) हुआ, पैदा हुआ ।

वृत्तांत ( वृत्त=पैदा हुआ, अंत=निर्णय अथवा निश्चय अर्थात् जिसके सुनने में किसी बात का निर्णय हो जाता है ) ( पु० ) समाचार, बान, हाल, इक्रीकत, पता ।

वृत्ति ( वृत्त=होना या पैदा होना ) ( स्त्री० ) आजीविका, जीविका, रोजगार, रोजी, बजीका ।

वृत्त्य ( वि० ) वर्णनीय, कहने योग्य ।

वृत्र } ( वृत्त=होना ) ( पु० ) एक राक्षस जिसको  
वृत्रासुर } इंद्र ने मारा ।

वृथा ( वृत्त=होना ) ( कि० वि० ) बेकार, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, यां ही ।

वृद्ध ( वृत्त=बढ़ना ) ( वि० ) बूढ़ा, पुराना ।

वृद्धि ( वृत्त=बढ़ना ) ( स्त्री० ) बढ़ती, तरकी, लक्ष्मी, अद्धि, मिद्धि, उन्नति ।

वृंद् ( वृत्त=प्रगट होना ) ( पु० ) समूह, भीड़-भाड़, ढेर, धोक, एक हिंदी कवि का नाम ।

वृंदा ( वृत्त=प्रगट होना ) ( स्त्री० ) तुलसी, राधिका, एक देवी का नाम ।

वृंदाकर ( पु० ) देवता, ( वि० ) मुख्य, मनोहर ।

वृंदाशिका ( स्त्री० ) देवताओं की स्त्री ।

वृंदाधन ( वृंदा+धन ) ( पु० ) मथुरा के पाम एक वन जहाँ वृंदा देवी का मंदिर था और जहाँ गोकुल से नंदजी और श्रीकृष्ण आदि सब खाल जा बसे थे ।

वृश्चिक ( वृश्च=काटना ) ( पु० ) बिच्छू, आठवीं राशि ।

वृष ( वृत्त=सँचिना वा पैदा करना ) ( पु० ) बैल, दूसरी राशि ।

वृषकेतु ( वृष+केतु ) ( पु० ) महादेव, शिव ।

वृषण ( पु० ) अंबकोष, फोता ।

वृषभ ( वृत्त=सँचिना या पैदा करना ) ( पु० ) बैल ।

वृषल ( पु० ) शूद्र, गृजन, गाजर, प्याज, घोड़ा, अधार्मिक, चंद्रगुप्त वृष ।

वृषली ( स्त्री० ) शूद्रा, पिता के घर में जो कन्या रजो-धर्म को प्राप्त हुई हो ।

वृषाकपि ( वृष=धर्म, अ=नहीं, कपि=कैपाना ) ( पु० ) जो धर्म को न कैपावे, महादेव, विष्णु, अग्नि, इंद्र ।

वृषोत्सर्ग ( वृष+उत्सर्ग ) ( पु० ) मृतक के हेतु बैल को दाग के छोड़ देना, साँड़ ।

वृष्टि ( वृत्त=सँचिना, बरसना ) ( स्त्री० ) मेह, वर्षा, पानी का गिरना ।

वृहत् ( वृह्=बढ़ना ) ( वि० ) बड़ा ।

वृहत्पाद ( पु० ) बटवृक्ष, बरगद ।

वृहस्पति ( वृहती=बोली, पति=मालिक अथवा वृहत्=बड़ा अर्थात् देवता, पति=मालिक या गुरु ) ( पु० ) देवताओं का गुरु, पाँचवाँ ग्रह, वृहस्पतिवार, बीकै, जुमेरात ।

वेग ( विज्=कैपाना ) ( पु० ) प्रवाह, धारा, जव, महाकाल ।

वेगि ( कि० वि० ) शीघ्र, जल्दी ।

वेगी ( वि० ) शीघ्रगामी, वेगवाला ।

वेणी ( वेण्=जाना ) ( स्त्री० ) चोटी, बालों को सँवारना, नदियों के मिलने को जगह, जैसे—त्रिवेणी आदि ।

वेणु ( पु० ) बाँस, बाँसुरी का बाजा, मुरली, राजा का नाम ।

वेत ( पु० ) वृक्ष-विशेष, आकाश ।

वेतन ( अज्=जाना या बी=जाना ) ( पु० ) मजदूरी, महीने की तनखाह, मासिक जीविका, पगार, तलब ।

वेताल ( अज्=जाना ) ( पु० ) वह मुर्दा जो भूत के चुसने से जीता-सा जाना जाय, पिशाच, शिव के नौकर, प्रेतयोनि-विशेष ।

वेत्ता ( विद=जानना ) ( पु० ) जाननेवाला, पंडित, ज्ञाता ।

वेत्र ( पु० ) वेत, वेतवृक्ष ।

वेद् ( विद=जानना ) ( पु० ) श्रुति, हिंदुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य वेद तीन हैं ( १ ऋग्वेद, २ सामवेद,

१. वर्षयति कामानिति वृषः आकम्पयति पापानिति आकपिः वृषरचासावाकपिरुचेति वा ।

२. “तत्रार्थकपेयवाक्यं वेदः”—“इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थ-मुपबृंहयेत् । निभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यतीति ॥”

३ यजुर्वेद ) और कहते हैं कि चौथा अथर्ववेद पीछे से मिलाया गया है; पुनः इतिहास और पुराणों को पाँचवाँ वेद भी कहते हैं, ज्ञान, शास्त्रज्ञान, चार की संख्या, चतुर्थांश ।

वेदगर्भ ( पु० ) ब्रह्मा, ब्राह्मण ।

वेदना ( विद=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, व्यथा, जानना, सुख-दुःख का ज्ञान ।

वेदपारग ( पु० ) सर्ववेद-ज्ञाता ।

वेदमाता ( वेद+माता ) ( स्त्री० ) गायत्री ।

वेदव्यास ( वेद, वि+अस्=कैलाना अर्थात् वेदों को फैलाने-वाला ) ( पु० ) व्यासजी ।

वेदांग ( वेद+अंग ) ( पु० ) वेद के अंग अथवा भाग जो छः हैं ( १ शिष्टा जो अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिख-लाती है, २ कल्प जिसमें यज्ञ आदि कर्मों की विधि लिखी है, ३ व्याकरण, ४ छंद, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त, जिसमें वेद के कठिन एवं गूढ़ शब्दों और वाक्यों के अर्थ हैं ) ।

वेदांत ( वेद+अंत ) ( पु० ) वेदव्यासजी का बनाया हुआ शास्त्र ।

वेदि } ( विद=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) होम करने का  
वेदिका } चबूतरा, यज्ञ अथवा बलिदान करने की जगह, पीठि ।

वेद्य ( वि० ) जानने योग्य ।

वेधक ( विधु=वेदना ) ( पु० ) छेदक, बर्मा ।

वेपथु ( वेप्+अथु ) ( पु० ) कैपना, हिलना ।

वेला ( वेल्=जाना ) ( स्त्री० ) समय, वक्र, काल ।

वेश ( विश्=चुमना ) ( पु० ) गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा ।

वेशर } ( पु० ) अश्वतर, पञ्चर ।  
वेसर }

वेश्म } ( पु० ) गृह, घर ।  
वेश्मन }

वेश्या ( वेश ) ( स्त्री० ) नगरनारी, गणिका, कंचनी, पतुरिया ।

वेष ( विष्=कैलना ) ( पु० ) कपड़ा, गहना स्वरूप, डोह, चाल ।

वेष्टन ( वेष्ट=लपेटना ) ( पु० ) बेठन, पगड़ी, मुकुट ।

वेष्टित ( वि० ) लिपटा हुआ, लपेटा गया ।

वेसन ( पु० ) चने का आटा ।

वैकल ( वि० ) व्याकुल, विकल, बेवकूफ, पगला ।

वैकुण्ठ ( वि, कुंठा=शुभ ऋषि की स्त्री और विष्णु की किसी अवतार में मा; उसी के नाम से वैकुण्ठ हुआ या वि=कई प्रकार की, कुंठा=माया जिसकी ) ( पु० ) विष्णु, विष्णुलोक, परमपद ।

वैखानस ( वि, खन्=खोदना, जो संसार की सब इच्छा को छोड़ देता है ) ( पु० ) वानप्रस्थ, तपस्वी, ( आश्रम शब्द को देखो ) ।

वैगंध ( पु० ) गंधक ।

वैजयंती ( स्त्री० ) झंडा, पताका ।

वैतरणी ( वितरण=दान, अर्थात् जो दान-पुण्य करने से लोंघी जाती है या वि=बुरी तरह से या कठिनता से, तृ=पार होना ) ( स्त्री० ) नरक की नदी ।

वैताल ( पु० ) पिशाच, भाट, बंदी ।

वैतालिक ( पु० ) गायक, राजघराने का गवैया ।

वैदिक ( वेद ) ( पु० ) वेद पढ़ा ब्राह्मण, वेदपाठी ब्राह्मण, ( वि० ) वेदोक्त, वेद के अनुसार, वेद की रीति से ।

वैदूर्य ( पु० ) नीलमणि, नीलम ।

वैदेही ( विदेह ) ( स्त्री० ) राजा जनक की बेटी, सीता, जानकी ।

वैद्य ( विद=ज्ञानना ) ( पु० ) इकीम, वैद्य, दवादारू करनेवाला, चिकित्सक ।

वैद्यक ( वैद्य ) ( पु० ) वैद्य-विद्या ।

वैद्यनाथ ( वैद्य+नाथ ) ( पु० ) वैद्यराज, धन्वंतरि, शिव, वैद्यनाथ, महादेव जिनका मंदिर काङ्गखंड में है ।

वैनतेय ( विनता=कश्यप मुनि की स्त्री, वि=बहुत, नम्=नवना ) ( पु० ) विनता का बेटा, गरुड, पक्षेहओं का राजा ।

वैभव ( विभव ) ( पु० ) ऐश्वर्य, संपदा, धन, दीनता ।

वैमनस्य ( पु० ) उदासीनता, बिगाड़, रंज, नाहिस्-प्राप्ति ।

वैयाकरण ( व्याकरण ) ( पु० ) व्याकरण पढ़ा हुआ पंडित ।

वैयात्य ( पु० ) निर्लज्जता, बेहयाई, बेशर्मा ।

वैर ( वीर ) ( पु० ) दुरमनो, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।

वैराग्य } ( विराग ) ( पु० ) संसार की विषयवासना  
वैराग्य } का त्याग, हेतुहटवती ।

वैरागी ( वैराग ) ( वि० ) जिसने संसार की विषयवासना  
को छोड़ दिया हो, उदासीन, साधु ।

वैराग्य ( पु० ) निश्चिन्ता, विषयत्याग ।

वैरी ( वैर ) ( पु० ) दुश्मन, शत्रु ।

वैलक्षण्य ( पु० ) विचित्रता, भावान्तर ।

वैवस्वत ( पु० ) धर्मराज, मनु-विशेष ।

वैशाख ( विशाखा=एक नक्षत्र का नाम; इस महीने में पूरा  
चांद इस नक्षत्र के पाम रहता है और इस महीने की  
पूर्णिमा की दिन विशाखा नक्षत्र होता है ) ( पु० )  
हिंदू वर्ष का दूसरा महीना ।

वैशाखी ( स्त्री० ) धूनी, लकड़ी, वैशाख की पूर्णिमा ।

वैशेषिक ( पु० ) दर्शनविशेष, न्याय का एक भाग ।

वैश्य ( विश्=पगना, अपने स्वामी-बनिज आदि श्रेणियों में )  
( पु० ) बनिया, महाजन, तीसरे वर्ण के लोग ।

वैश्वानर ( पु० ) अग्नि, ( वि० ) कृष्ण, स्थूल, सब,  
ब्रह्मा ।

वैष्णव ( विष्णु ) ( पु० ) विष्णु का भक्त, विष्णु-उपासक,  
( वि० ) विष्णु का ।

वैसा ( सर्वना० ) उसके जैसा, उसके समान ।

वैसे ( अव्य० ) सैन, बिना मोड़, मुफ्त, उस तरह ।

व्यक्त ( वि, अञ्=जाना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से  
इसका अर्थ प्रकट होना होता है ) ( वि० ) जाना  
हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।

व्यक्ति ( वि, अञ्=जाना ) ( स्त्री० ) एकता, एक-एक  
करके, जन, मनुष्य ।

व्यग्र ( वि० ) व्याकुल, परेशान, विकल ।

व्यंग ( वि० ) अंगहोम, व्याकुल, ( पु० ) ताना, कटूक्ति,  
काकूक्ति ।

व्यजन ( वि, अञ्=जाना ) ( पु० ) तालवृत्तक, पंखा,  
बेना ।

व्यंजक ( पु० ) प्रकाशक, नर्तक, भावबोधक ।

व्यंजन ( वि=बहुत, अञ्=जाना या मिलना या प्रकट  
करना ) ( पु० ) तरकारी, साग, खाने की अच्छी  
चीज़, चिह्न, वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे—क  
से इ तक ।

व्यंजना ( स्त्री० ) रक्षेय, शब्द, शक्तिभेद, शब्द के अर्थ

से विशेष अर्थ का बोध, जैसे—जहाँ धुआँ है,  
वहाँ अग्नि अवश्य होगी ।

व्यतिक्रम ( पु० ) विखोम, विपर्यय, विपरीतता, क्रम-  
भंग, उलटा-पुलटा ।

व्यतिरिक्त ( वि, अति, रिच्यत, रिच्य=छोड़ना ) ( वि० )  
भिन्न, जुदा-जुदा, अलगाव, सिवा ।

व्यतिरेक ( वि, अति, रिच्य=त्यागना ) ( पु० ) वियोग,  
भिन्नता, पृथक्त्व, विशेष, अतिक्रम, अलंकारभेद ।

व्यतीत ( वि, अति, इण्=जाना ) ( वि० ) बीता हुआ,  
गुज़रा हुआ ।

व्यतीपात ( वि, अति, पञ्=गिरना ) ( पु० ) बड़ा भारी  
उपद्रव, उद्योतिष में सत्रहवाँ योग ।

व्यत्यय ( पु० ) उलटा-पुलटा, विरोध, उलटफेर, अति-  
क्रम ।

व्यथक ( वि० ) दुःखदाता, तकलीफ़देह ।

व्यथा ( व्यथ=पीड़ा देना ) ( स्त्री० ) पीड़ा, पीर, दर्द,  
दुःख ।

व्यथित ( वि० ) पीड़ित, दुःखित ।

व्यधन ( व्यध्=ताड़ना ) ( पु० ) वेधन, ताड़न, पीड़न ।

व्यपदेश ( वि+अप, दिश्+अ ) ( पु० ) संज्ञा, नाम,  
आरंभ, मिस, छल, क्रिस्ता ।

व्यभिचार ( वि=बुरा तरह से, अभि=चारों ओर से, चर्=  
चलना ) ( पु० ) पुरुष का पराई स्त्री के पास जाना,  
स्त्री का पराये पुरुष के पास जाना, बुरा काम,  
अष्टाचार, निष्ठ काम, रंडीबाज़ी ।

व्यभिचारी ( वि० ) कुमार्गी, गुमराह ।

व्यय ( वि=बहुत, इण्=जाना ) ( पु० ) खर्च, जागत,  
नाश, क्षय ।

व्यर्थ ( वि=नहीं अथवा चला गया है, अर्थ=मतलब या  
प्रयोजन ) ( वि० ) बृथा, निरर्थक, बेकार्यदा, निष्फल,  
निष्कम्मा ।

व्यवकलन ( वि, अव, कल=गिनना और इन दोनों उपसर्गों  
के साथ आने से अर्थ घटाना हुआ ) ( पु० ) घटाना,  
बाकी निकालना ।

व्यवकलित ( वि० ) वियोगित, घटाया गया ।

व्यवच्छेद ( पु० ) भेद, भिन्नता, अलग्गव, पृथक्ता ।

व्यवधान ( वि, अव, धा=रखना ) ( पु० ) आच्छादन,  
आवर, अंतर्दि, बीच में, रोक ।

व्यवसाय ( वि, अथ, सै=नाश होना ) ( पु० ) उद्यम, अतृष्टान, अवधारण, विचार, अभिप्राय, उद्योग ।

व्यवस्था ( वि, अथ, स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) धर्म, निर्णय, शास्त्र, कानून, हाजि, प्रबंध ।

व्यवस्थित ( वि० ) व्यवस्थाप्रमाणक, पाबंद कानून, ठीक-ठीक ।

व्यवहरिया ( व्यवहारी ) ( पु० ) व्यवहारकर्ता, महाजन, व्यवहारी, जैसे—‘अथ आनिथ व्यवहरिया बोली’—रामायण ।

व्यवहार ( वि, अथ, ह=लेना ) ( पु० ) कामधंधा, व्यवहार, लेनदेन, चालचलन, बर्ताव ।

व्यवहित ( वि० ) व्यवधानयुक्त, रोक, रोका गया ।

व्यसन ( वि=बहुत, अस=फेकना ) ( पु० ) विपत्, दोष, बुरा काम ( जैसे जूया खेलना, दिन को बहुत सोना, भूठ बोलना, शराब पीना अथवा अफीम आदि का नशा करना, डॉवाडोल फिरना, दाँत पीसना आदि व्यसन हैं ) चस्का, खत, शौक ।

व्यस्त ( वि० ) व्याकुल, व्याप्त, विपरीत, विलोम, हीन, असमग्र ।

व्याकरण ( वि=बहुत, आ=चारों ओर से, कृ=करना ) ( पु० ) शब्दों का शास्त्र, शब्द और धातु का बोधक ।

व्याकुल ( वि=बहुत, आकुल=घबराया हुआ ) ( वि० ) घबराया हुआ, दुःखी ।

व्याख्या ( वि=बहुत, आ=चारों ओर से, ख्या=प्रमिद्ध करना ) ( स्त्री० ) वर्णन, व्याख्यान, टीका ।

व्याख्यात ( वि० ) कथित, कहा हुआ ।

व्याख्यान ( पु० ) कथन, वर्णन, टीका ।

व्याघात ( पु० ) रोक, अटकाव, बाधा, रुकावट ।

व्याघ्र ( वि=बहुत, आ=चारों ओर से, घ्रा=घुँघना ) ( पु० ) बाघ, शेर, नाहर, लाल रेंदवृक्ष, कंजावृक्ष ।

व्याज ( वि, अज्=जाना ) ( पु० ) कपट, छल, मिस, बहाना ।

व्याज ( वि० ) उधार दिया हुआ, व्याज के लिये, सूद पाने के लिये ।

व्याध ( व्यध्=ताड़ना, दुःख देना ) ( पु० ) शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों को मारनेवाला ।

व्याधि ( व्यध्=दुःख देना ) ( स्त्री० ) रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, संताप ।

व्यान ( पु० ) प्राण-विशेष, एक प्रकार की वायु ।

व्यापक ( वि=बहुत, अप=फैलना ) ( वि० ) फैलने-व्यापी ( वाजा, सर्वव्यापी, ( पु० ) प्रभु, परमेश्वर ।

व्यापकता ( व्यापक ) ( स्त्री० ) प्रभुता, फैलाव, विस्तार ।

व्यापना ( क्रि० अ० ) फैलना, हर जगह हो जाना ।

व्यापादन ( पु० ) मारण, कत्ल ।

व्यापादित ( वि० ) मारा हुआ, मकतूल ।

व्यापार ( वि=बहुत, आ=चारों ओर से, पृ=काम में लगना ) ( पु० ) रोजगार, धंधा, सौदागरी, काम ।

व्याप्त ( वि=बहुत, आप=फैलना ) ( वि० ) फैला हुआ ।

व्याप्ति ( स्त्री० ) विस्तार, फैलाव ।

व्याप्य ( वि० ) व्यापनीय, फैला हुआ ।

व्यामोह ( पु० ) पश्चात्ताप, पीड़ा, दुःख ।

व्यायाम ( वि=बहुत, आ=चारों ओर से, यम्=रोकना ) ( पु० ) परिश्रम, कुरती खदना, मुद्गर, मोगरी उठाना आदि कसरत ।

व्याल ( वि=बहुत, अद्=फैलना या वि=बहुत, आ=चारों ओर से, ला=लेना ) ( पु० ) साँप, सर्प, नाग, भुजंग, दुष्ट हाथी, मारनेवाला जानवर, ( वि० ) धूर्त, दुष्ट ।

व्याली ( पु० ) सर्पधारी, वेगी, महादेव ।

व्यावहारिक ( वि० ) सजाहकार, मंत्री, व्यवहारसंबंधी, असली ।

व्यास ( वि=बहुत, अस्=फैलाना ) ( पु० ) एक प्रसिद्ध मुनि का नाम जिन्होंने वेद-पुराणों को एकट्ठा किया और वेदोक्तशास्त्र को बनाया, विस्तार, फैलाव, चक्र का आधा कटाव, गोल खेत के बीच की खकीर ।

व्याहति ( स्त्री० ) व्याधान, चोट ।

व्याहृति ( वि, आ, ह=लेना ) ( स्त्री० ) उक्ति, कथन, वर्णन, ( व्याहतयः सप्त ) भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् ।

व्युत्क्रम ( वि० ) उल्टा-पल्टा, क्रमरहित ।

व्युत्पत्ति ( वि=बहुत, उत्=ऊपर, पद=जाना ) ( स्त्री० ) शास्त्र के समझने की शक्ति, शास्त्रज्ञान, वजह, तस्मिन् ।

व्युत्पन्न ( वि=वहुत, ऊत्=ऊपर, पद्=जाना ) ( वि० )  
शास्त्र में प्रवीण, पंडित, विद्वान् ।  
व्यूढ ( वि, वृह=ग्राम करना ) ( वि० ) विस्तृत, दीर्घ,  
विपुल, विन्यस्त, समूह, सन्नद्ध, तैयार ।  
व्यूह ( वि, ऊह=तर्क करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने  
से इसका अर्थ सेना का संवारना होता है ) ( पु० )  
सेना की रचना, भीड़, समूह, तर्क, बल, विन्यास,  
निर्माण ।  
व्यूहन ( पु० ) संन्यस्थान, क़िलाबंदी ।  
व्योम ( व्ये=ढकना, घेरना ) ( पु० ) आकाश,  
आसमान ।  
व्योमयान ( पु० ) विमान ।  
व्यज ( वज=जाना ) ( पु० ) गोस्थान, मार्ग, वृंद, ग्राम ।

व्रजन ( पु० ) पर्यटन, भ्रमण, घूमना ।  
व्रज्या ( स्त्री० ) पर्यटन, प्रस्थान, वर्ग, संग्रामभूमि,  
क्रीडास्थान, संन्यास ।  
व्रण ( व्रण=घाव करना ) ( पु० ) घाव, फोड़ा ।  
व्रत ( व्रज्=जाना अथवा वृ=पसंद करना ) ( पु० ) उपास,  
उपवास, पवित्र काम, नियम, पुण्यकर्म ।  
व्रात ( वृ=ढकना, घेरना या व्रत+घञ् ) ( पु० ) समूह,  
भीड़ ।  
व्रीडा ( व्रीह=लजाना ) ( स्त्री० ) लाज, लजा, शर्म,  
संकोच ।  
व्रीडित ( वि० ) लजित, शर्माया हुआ ।  
व्रीहि ( स्त्री० ) धान्य-विशेष ।

## श

श ( शा=साना ) ( पु० ) शिव, शस्त्र, हथियार, कल्याण,  
मंगल, शयन, हृदय ।  
शंयु ( शम्=दमन करना ) ( वि० ) प्रसन्न, हर्षित ।  
शंय ( वि० ) मुकृती, पुण्यात्मा ।  
शंवर ( पु० ) जल, शंख ।  
शंसा ( स्त्री० ) प्रशंसा, स्तव ।  
शंसित ( वि० ) कथित, निश्चित, स्तुत ।  
शंस्य ( वि० ) स्तुत्य, प्रशंसनीय ।  
शऊर ( पु० ) तमीज़, शिष्टता, बुद्धि, अज्ञ ।  
शऊरदार ( वि० ) सम्भ, शिष्ट ।  
शक ( शक्=समर्थ होना ) ( पु० ) एक भ्लेच्छ जाति के  
जोग, एक देश का नाम, शास्त्रिवाहन राजा का  
चलाया संवत्, सामर्थ्य, संश्लेष ।  
शकट ( शक्=सकना या सहना अथवा ले जाना ) ( पु० )  
गाड़ी, छकड़ा ।  
शकटासुर ( शकट+असुर ) ( पु० ) एक राक्षस जिसको  
श्रीकृष्ण ने मारा ।  
शकल ( पु० ) खंड, टुकड़ा, स्वरूप, चर्म, चिह्न, वस्त्र,  
मछली का सेहरा या छिज़का ।  
शकाब्द ( पु० ) शास्त्रिवाहन का चलाया हुआ संवत् ।  
शकारि ( शक+अरि ) ( पु० ) विक्रमादित्य राजा ।

शकुन ( शक्=समर्थ होना ) ( पु० ) बुरे-भले का जतलाने-  
वाला, सगुन, एक पक्षी का नाम ।  
शकुंत ( पु० ) पत्नी-विशेष, चिड़िया ।  
शकुंतला ( स्त्री० ) राजा दुष्यंत की स्त्री, ( पु० ) नाटक-  
विशेष ।  
शकुल ( पु० ) मछली-विशेष ।  
शकुन् ( पु० ) विष्टा, मछमूत्र, ( अर्थ० ) एक बार सकृन् ।  
शक्ल ( वि० ) समर्थ, दृढ़, पुष्ट ।  
शक्ति ( शक्=बलवान् या समर्थ होना ) ( स्त्री० ) बल,  
जोर, पराक्रम, पुरुषार्थ, बर्छी, साँग, देवी, माया,  
लक्ष्मी, गौरी आदि आठ शक्तियों ( १ इंद्राणी, २  
वैष्णवी अथवा लक्ष्मी, ३ ब्रह्मणी, ४ कौमारी, ५ नारसिंही,  
६ वाराही, ७ माहेश्वरी अथवा गौरी, ८ भैरवी ) ।  
शक्तिमान् ( शक्ति=बल, मत्=वाला ) ( वि० ) बलवान्,  
जोरावर ।  
शक्तिहीन ( शक्ति+हीन ) ( वि० ) दुबला, दुर्बल,  
निर्बल, कमजोर ।  
शक्त ( वि० ) समर्थ, पुष्ट ।  
शक्नु ( वि० ) प्रियवक्ता ।  
शक्य ( वि० ) समर्थ, पुष्ट, योग्य, भविष्य, होनहार,  
मुमकिन ।

- शक ( शक्=बलवान् अथवा समर्थ होना ) ( पु० ) इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति ।
- शकसुत ( शक+सुत ) ( पु० ) इन्द्र का बेटा, जयंत, बाबु वानर ।
- शकाजित् ( शक=इन्द्र, जित्=जीतना ) ( पु० ) रावण का बेटा, इन्द्रजित्, मेघनाद ।
- शकाणी ( स्त्री० ) पुलोमजा, शची ।
- शकाह् ( पु० ) इन्द्रजय, कीट-विशेष ।
- शकस ( पु० ) मनुष्य, प्राणी, जन ।
- शगल ( वि० ) समस्त, सब जगह, आकार, शकल, कामकाज ।
- शगुन ( पु० ) शकुन, शुभाशुभ की पूर्व-सूचना ।
- शगुनिया ( वि० ) शकुन विचारनेवाला ।
- शंक ( पु० ) भय, डर, सर्पराज ।
- शंकर ( शम्=कल्याण या भला, कर=करनेवाला, कृ=करना ) ( पु० ) महादेव, शिव, शंकराचार्य ।
- शंकरा ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।
- शंका ( शकि=संदेह करना या डरना ) ( स्त्री० ) संदेह, शक, डर, भय ।
- शंकित ( वि० ) डरा हुआ, भीत, संदिग्ध, वितर्कित ।
- शंकु ( पु० ) आठ अंगुल की लकड़ी, ठूँठ वृक्ष, खूँटा, भाला, गाँसी, शल्क, पाप, महादेव, अंश ।
- शंख ( शम्=ठंडा करना ) ( पु० ) एक जल-जीव की हड्डी जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देवता के सामने तथा जड़ाई में बजाते हैं, सौ पद्म ( गिनती में ) ।
- शंखध्मा ( शंख+ध्मा=बजाना ) ( वि० ) शंख बजानेवाला ।
- शंखिनी ( स्त्री० ) एक प्रकार की स्त्री ।
- शचान ( पु० ) बाज, शिकरा ।
- शची ( शच्=चोलना ) ( स्त्री० ) इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी ।
- शचीपति ( शची+पति ) ( पु० ) इन्द्र, देवताओं का राजा ।
- शटी ( पु० ) एक प्रकार का कव्तर ।
- शठ ( शट्=छल करना ) ( वि० ) छद्मी, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग ।
- शठता ( शठ ) ( स्त्री० ) दुष्टता, कपट, छल, बदमाशी, मूर्खता ।
- शप ( पु० ) सन का वृक्ष, पटुआ ।
- शपसुत्र ( पु० ) सुतकी, वैर्यों का वशीपथीत ।
- शंड ( पु० ) बैल, साँड़ ।
- शंडी ( स्त्री० ) उँटिनी, साँड़िया ।
- शंड ( वि० ) नपुंसक, हिजड़ा, साँड़ ।
- शत ( वि० ) एक सौ, १०० ।
- शतक ( शत ) ( वि० ) सैकड़ा ।
- शतकोटि ( पु० ) इन्द्र का वज्र, ( स्त्री० ) सौ करोड़, अरब की संख्या ।
- शतक्रतु ( पु० ) इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला ।
- शतदनी ( शत=सौ, हन्=मारना ) ( स्त्री० ) एक तरह का हथियार, तोप अथवा धनुष, एक रोग का नाम ।
- शतद्रु ( शत=सौ, द्रु=जाना अथवा बहना जो सौ अर्थोंत् बहुत-सी धाराओं में बहती है ) ( स्त्री० ) सतलज नदी जो पंजाब में है ।
- शतपत्र ( शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंखड़ी ) ( पु० ) कमल ।
- शतपुष्प ( स्त्री० ) सौँफ ।
- शतभिषा ( स्त्री० ) नक्षत्र का नाम, चौबीसवाँ नक्षत्र ।
- शतमारी ( मृ=मरना ) ( पु० ) वैद्य ।
- शतमूल ( स्त्री० ) जल-विशेष ।
- शतरंज ( पु० ) एक खेल का नाम ।
- शतरंजी ( स्त्री० ) दूरी, मोटे सूत का बिछौना ।
- शतशः ( कि० वि० ) बार-बार, सदा, हमेशा ।
- शता ( स्त्री० ) सौँफ ।
- शताब्द् ( पु० ) सौ वर्ष ।
- शताब्दी ( स्त्री० ) सदी ।
- शत्रु ( शट्=नाश करना ) ( पु० ) वैरी, दुश्मन, रिपु, अरि, द्वेषी, विरोधी ।
- शत्रुघ्न ( शत्रु=वैरी, हन्=मारना ) ( पु० ) लक्ष्मण का छोटा भाई, रिपुसूदन, ( वि० ) शत्रु को मारनेवाला ।
- शत्रुता ( शत्रु ) ( स्त्री० ) वैर, विरोध, दुश्मनी ।
- शत्रुविजयी ( वि० ) शत्रु को जीतनेवाला ।
- शनि ( शो=तीखा होना या तेज होना ) ( पु० ) सातवाँ ग्रह, शनैश्चर, ग्रहनायक, छायापुत्र, सूर्य का बेटा ।
- शनिवार ( शनि+वार ) ( पु० ) सातवाँ दिन, शनैश्चर ।
- शनैः शनैः ( कि० वि० ) धीरे-धीरे, हौसे-हौसे ।
- शनैश्चर ( शनैस्=धीरे, चर्=चलना ) ( पु० ) शनिग्रह, शनिवार ।
- शप ( पु० ) तिरस्कार, निरादर, शाप ।

शपथ ( शप्=सौगन्ध खाना या सरापना ) ( स्त्री० ) सौगन्ध,

किरिया, सौंह, दुहाई, प्रतिज्ञा, सराप, शाप ।

शफा ( पु० ) दवा, औषध, चिकित्सा, सेहत ।

शफाखाना ( स्त्री० ) दवाखाना, औषधालय ।

शब ( स्त्री० ) रात, रजनी, रात्रि ।

शब्द ( शब्द=शब्द करना या शप्=पुकारना ) ( पु० )

ध्वनि, आहट, आवाज़, जो कान से सुनी जाय,

( व्याकरण में ) जो मुँह से बोला जाय, बोल, वचन,

पद, लक्षण ।

शब्दशास्त्र ( शब्द+शास्त्र ) ( पु० ) व्याकरण आदि

शास्त्र जिनसे शब्द का ज्ञान होता है ।

शम ( शप्=शान्त होना या ठंडा होना ) ( पु० ) मन की

शान्ति, चैन, इंद्रियों को और मन को रोकना, निग्रह ।

शमन ( शप्=ठंडा करना ) ( पु० ) शान्ति, ठंडा करना,

यमराज, ( वि० ) दूर करनेवाला, ठंडा करनेवाला ।

शमा ( स्त्री० ) प्रकाश, चिराग, दीपक ।

शमादान ( पु० ) दीवट, बैठकी ।

शमित ( वि० ) शान्त, सुतहमिसख, सहनेवाला ।

शमी ( पु० ) वृक्ष-विशेष, विजयादशमी को इसकी पूजा होती है ।

शंखल ( पु० ) कूख, किनारा, पाथेय, राहछर्च, मस्सर ।

शंखुक ( स्त्री० ) सीपी, ( पु० ) घोंघा, शूद्र नपस्त्री, शंख, दैरय ।

शंभु ( शप्=करुणारूप, भू=होना ) ( पु० ) महादेव, शिव ।

शयन ( शी=सोना ) ( स्त्री० ) सोना, नींद लेना, नींद, सेज, बिछौना ।

शय्या ( शी=सोना ) ( स्त्री० ) सेज, बिछौना, पलंग, छाट ।

शर ( शृ=मारना ) ( पु० ) तीर, बाण, सरकंडा ।

शर करना ( मुहा० ) अधीन करना, बदमाशी छुड़ाना, सीधा करना, सर करना ।

शरजन्मा ( पु० ) कात्तिकेय ।

शरट ( पु० ) गिरगिट ।

शरण ( शृ=मारना, जो शरण में आवे उसके वेशी को मारना )

( पु० ) बचाव, रक्षा, बचानेवाला, रक्षक, घर,

आसरा ।

शरणागत ( शरण+आगत ) ( वि० ) शरण में आया

हुआ, जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी, आश्रित ।

शरण्य ( वि० ) रक्षक, शरणागतपालक ।

शरण्यु ( पु० ) मेघ, वायु, रक्षक ।

शरदू ( शृ=नाश करना, बादल और गरमी को ) ( स्त्री० )

एक ऋतु का नाम, जो कुँआर और कार्तिक में रहती है ।

शरह ( स्त्री० ) भाव, रस्म, रीति, दर ।

शराकत ( स्त्री० ) सम्मिलित, अविभाजित, साके का ।

शराकृत ( स्त्री० ) सौजन्यता, सभ्यता, भलमनसाहत ।

शराय ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, बारूची, आसब ।

शराबोर ( वि० ) खूब भीगा हुआ ।

शराव ( पु० ) संपुट, बढ्वा, डबिया, परई, सरवा, सकोरा ।

शरारत ( स्त्री० ) दुष्टता, नटखटी ।

शरासन ( शर=तीर, आसन=ठहरने की जगह ) ( पु० ) धनुष, कमान ।

शरि ( वि० ) धूर्त, मूर्ख ।

शरीक ( वि० ) सम्मिलित, मिला हुआ ।

शरीफ ( वि० ) सज्जन, भला, कुलीन ।

शरीर ( शृ=नाश होना ) ( पु० ) देह, तन, काया, जिस्म ।

शरीरी ( पु० ) पुरुष, आत्मा, शरीरधारी ।

शर्करा ( शृ=नाश करना अर्थात् गन्ने को पेरा ) ( स्त्री० ) शकर, चीनी, खाँद ।

शर्त ( स्त्री० ) नियम, ठहराव, प्रण ।

शर्वत ( पु० ) पेय पदार्थ-विशेष, चीनी मिला हुआ जल ।

शर्वती ( पु० ) रंग-विशेष, एक प्रकार का नींबू ।

शर्म ( स्त्री० ) हया, शरम, खजा ।

शर्मा ( शृ=नाश करना, दुःख को ) ( पु० ) सुख, ब्राह्मणों की पदवी ।

शर्माऊ ( वि० ) लजानेवाला, शरमानेवाला ।

शर्मिंदगी ( स्त्री० ) खजा, हया, शर्म ।

शर्माटा ( पु० ) शब्द, आवाज़, आहट, सरसराहट, हवा चलने का शब्द ।

शर्वरी ( शृ=नाश करना, धकावट को ) ( स्त्री० ) रात, रात्रि, स्त्री, इहरी ।

शलभ ( शल=जाना ) ( पु० ) दिङ्गी, पतंगा ।



शलाका ( शल्=जाना ) ( स्त्री० ) सुरमे की सलाई,  
कुँची, तुळी, शूख ।

शलीता ( पु० ) टाट का बोरा या थैला जिसमें चीजें  
बाँधी जाती हैं ।

शलूक ( पु० ) सज्जनता का व्यवहार, उत्तम व्यवहार,  
उपकार, सुलूक ।

शलूका ( स्त्री० ) स्त्रियों के पहनने का वस्त्र-विशेष ।

शल्य ( शल्=जाना ) ( पु० ) एक राजा का नाम जिसका  
वर्णन महाभारत में है, सेल, बाण, गौंसी ।

शव ( शव्=बदलना या नाश होना ) ( पु० ) मुर्दा, मरा,  
लोथ, लाश, निर्जीव देह, मरा शरीर ।

शवर ( शव्=जाना या बदलना ) ( पु० ) भील, वनवासी,  
जंगली आदिमियों की एक जात, पहाड़ी, शिव,  
महादेव ।

शवरी ( शवर ) ( स्त्री० ) भीलनी, नोचजाति की स्त्री ।

शवाधार ( शव+आधार ) ( पु० ) टिकठी, रथी ।

शश } ( शश्=उछलकर चलना ) ( पु० ) ससा, खरहा,  
शशक } खरगोश, चाँद का दाग जो खरगोश के  
ऐसा दिखाई देता है ।

शशमाही ( वि० ) छमाही, छः महीने का ।

शशांक ( शश्=खरगोश, शंक=चिह्न, अर्थात् जिसमें खरगोश  
के ऐसा दाग है ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा ।

शशि }  
शशिन } ( शश ) ( पु० ) इंद्र, चाँद, चंद्रमा ।  
शशी }

शश्वत् ( शश्=खरगोश, वत्=वरावर ) ( कि० वि० )  
बार-बार, फिर-फिर, पुनः-पुनः, लगातार,  
निरंतर, हमेशा ।

शस्त ( वि० ) स्तुत, प्रशंसा किया गया, प्रशंसित ।

शस्त्र ( शस्=मारना ) ( पु० ) हथियार, आयुध, ऐसा  
हथियार जिसकी हाथ में रखकर मारे, जैसे—तल-  
वार आदि ।

शस्त्रधारी ( शस्त्र=हथियार, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना )  
( वि० ) हथियारबंद, शस्त्र रखनेवाला ।

शस्त्रसम्मार्जन ( पु० ) सैकिल करना, हथियारों को  
साफ करना ।

शस्त्राधार ( शस्त्र+आधार ) ( पु० ) शस्त्रगृह, सिखा-  
खाना ।

शस्य ( शस्=नाश करना जो चौपायों से नाश किया जाता  
है ) ( पु० ) धान्य, फल आदि ।

शहनाई ( स्त्री० ) नौबत, बाजा-विशेष ।

शहरपनाह ( स्त्री० ) कोट, शहर की रक्षा के लिये चारों  
ओर बनाई गई दीवार ।

शहादत ( स्त्री० ) गवाही, साक्षी ।

शहीद् ( वि० ) धर्म के लिये प्राण देनेवाला, बलिदान  
होनेवाला ।

शाक ( शक्=सकना ) ( पु० ) साग, तरकारी, भाजी,  
फल, मूख, फूल, पत्ते आदि, एक द्वीप का नाम,  
शास्त्रिवाहन राजा का संवत्, शाका ।

शाकंभरी ( शाक=साग वनस्पति आदि, भरी=भरनेवाली,  
भृ=भरता, अर्थात् पृथ्वी पर सब चीज पैदा करनेवाली )  
( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, भगवती जिसका मंदिर  
सांभर-नामक नगर के पास पहाड़ पर है और  
राजपूताने के लोगों का विश्वास है कि इसी देवी  
के वरदान से सांभर झील में नमक पैदा होता  
है । दुर्गापाठ में लिखा है—“अविष्ट्यामि सुराः  
शकैरावृष्टेः प्राणधारकैः । शाकंभरीति विख्याता...”  
अर्थ—दुर्गा कहती है, हे देवताओं ! जब तक पानी  
नहीं बरसे तब तक मैं प्राण को बचानेवाले साग से  
सबको पालूँगी ; तब मेरा नाम शाकंभरी होगा ।

शाकल ( सं० शाकल्य ) ( पु० ) तिल, जौ, घी,  
शकर, फल आदि मिली हुई होम को सामग्री ।

शाकाहारी ( वि० ) शाक खानेवाला, तपस्वी,  
निरामिष ।

शाकिनी ( शक्=बलवान् या समर्थ होना ) ( स्त्री० )  
दुर्गा के साथ रहनेवाली, योगिनी, पिशाचिनी ।

शाक्ल ( शक्ति ) ( वि० ) शक्ति-उपासक, देशी को पूजने-  
वाला, दुर्गापूजक ।

शाखा ( शाख्=कैलना ) ( स्त्री० ) पेड़ की डाली, टहनी,  
शाख, वेद का विभाग, भाँति, प्रकार, भाग,  
हिस्सा ।

शाखामृग ( शाखा+मृग ) ( पु० ) वानर, बंदर ।

शाखी ( पु० ) वानर, गवाही ।

शागिर्द् ( पु० ) चेला, शिष्य, विद्यार्थी ।

शागिर्दी ( स्त्री० ) शिष्यत्व, विद्याध्ययन, कला  
सीखना ।

शाटिका } ( शट=जाना या सराहना ) ( स्त्री० ) साड़ी,  
शाटी } स्त्रियों के ओढ़ने का एक तरह का कपड़ा ।

शाठ्य ( पु० ) ठगपन, धूर्तता, दुष्टता, मूर्खता ।

शाठ्यता ( स्त्री० ) मूर्खता, जाहिली, अहमकरी ।

शाण ( पु० ) शान, पत्थर-विशेष जिस पर औजार  
तेज किए जाते हैं ।

शाणन ( शाण=पैनाना ) ( पु० ) ताक्ष्य करना, शाणयंत्र,  
जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं ।

शाणित ( पु० ) ताक्ष्यकृत, पैना किया गया ।

शान्दिल्य ( पु० ) शंडिल मुनि का पुत्र, शक्तिशास्त्र-  
कारक, वेद, एक अग्नि का नाम ।

शात ( पु० ) मुख, ( वि० ) क्षिप्त, कृश, दुर्बल,  
निश्चित ।

शातकुम्भ ( पु० ) सुवर्ण, सोना ।

शादी ( स्त्री० ) व्याह, विवाह ।

शान ( पु० ) शाण, पत्थर-विशेष जिस पर औजार पैने  
किए जाते हैं ।

शानदार ( वि० ) भवकीला, सुन्दर ।

शानशौकत ( पु० ) भोग-विलास, शौक्रीनी ।

शांत ( शम्=ठंडा होना ) ( वि० ) ठंडा, स्थिर, नम्र,  
चुप, बंद, मुनमैकन ( जैमा हवा ), साहित्य के नव  
रसों में से एक रस ।

शांतन ( पु० ) चंद्रवंशी प्रतीप का पुत्र, भोगमपितामह  
का पिता ।

शान्ति ( शम्=ठंडा होना ) ( स्त्री० ) ठंडाई, धिरता,  
धैर्य, सुख, काम-क्रोध आदि को जोत लेना अर्थात्  
काम-क्रोध आदि को न रखना ।

शाप ( शप्=शाप देना ) ( पु० ) शाप, धिक्कार, तुराशिप,  
बुरी दुष्टा, कोसना, शपथ, सौगंध ।

शान्दिक ( वि० ) शब्दसंबंधी, वैचारिक ।

शाम ( स्त्री० ) संध्या, सूर्यास्त का समय ।

शामत ( स्त्री० ) ज़राबी, बुराई, दुर्भाग्य, बुरे चिह्न ।

शामा ( स्त्री० ) पक्षी-विशेष ।

शामित ( शम्=शांत होना ) ( वि० ) शांत किया  
गया ।

शामियाना ( पु० ) बाँदनी, चंदोबा, वस्त्र-गृह ।

शामिल ( वि० ) समिश्रित, संयुक्त ।

शामूक ( पु० ) घोड़ा, सीप ।

शांखरी ( स्त्री० ) माया, करिश्मा, इंद्रजाल, प्रवेश ।

शांभव ( शंभु ) ( पु० ) शिव का भक्त, महादेव का  
उपासक, शिव को पूजनेवाला, गुग्गुलु, गुग्गुर,  
कपूर, शंभुपुत्र ।

शाभ्य ( वि० ) क्षमायुक्त ।

शायक ( शो=नाश करना या तीखा करना अथवा शा=सोना,  
अर्थात् जिसके लगने से मनुष्य सो जाता अर्थात् गिर  
पड़ता है ) ( पु० ) तीर, बाण, तलवार, खड्ग ।

शायद् ( अर्थ० ) कदाचित् ।

शायर ( पु० ) शूर, बहादुर, कवि, कविता करनेवाला ।

शायरी ( स्त्री० ) कविता, पद्यमयी रचना, काव्य-  
रचना ।

शायस्ता ( वि० ) सज्जन, शिष्ट ।

शायी ( शा=सोना ) ( वि० ) सोनेवाला ।

शारंग ( पु० ) पयोहा, मृग, गज, भ्रमर, भौरा, मयूर,  
धनुष, मधुमक्खी, दीपक ।

शारदी ( शारद ) ( वि० ) शरद-ऋतु की ।

शारिका ( स्त्री० ) साड़ी ।

शारीरिक ( शरीर ) ( वि० ) शरीर का, तुःखादिक ।

शार्ङ्ग ( शृंग ) ( वि० ) सींग का बना हुआ, ( पु० )  
धनुष, विष्णु का धनुष, पक पखेरू का नाम ।

शार्दूल ( पु० ) व्याघ्र, पक्षीभेद, पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ ।

शाल ( शल्=जाना ) ( पु० ) एक तरह की मछली,  
एक पेड़ का नाम ।

शालग्राम ( शाल=एक तरह का पेंड, ग्राम=समूह जहाँ बहुत  
से शालवृक्ष हैं ) ( पु० ) एक पहाड़ का नाम,  
उसी पहाड़ पर एक पत्थर होता है, जिसकी हिंदू  
विष्णु की मूर्ति मानकर पूजते हैं ।

शाला ( शल्=जाना या शाल=बोलना या सराहना ) ( स्त्री० )  
घर, कमरा, स्थान, जगह ।

शालार ( पु० ) हाथी का नख, सोपान, सीढ़ी,  
पिंजड़ा ।

शालि ( शल्=जाना ) ( पु० ) धान ।

शालूर ( पु० ) मंडूक, मेंढक ।

शाल्मली ( शाल्=जाना या शाल्=सराहना ) ( पु० )  
सेमल का पेड़, एक द्वीप का नाम ।

शावक ( शव्=जाना या बदलना ) ( पु० )  
बाखर ।

शावर ( शवर ) ( वि० ) शिव का बनाया हुआ मंत्र,  
( पु० ) पाप, अपराध, लोभ का पेड़ ।

शाश्वत ( शश्वत् ) ( कि० वि० ) लगातार, निरंतर,  
नित, हमेशा, सदा, सनानन ।

शासन ( शास्=सिखाना, आज्ञा देना, राज करना ) ( पु० )  
आज्ञा, हुक्म, राज करना, दंड, सजा, शिक्षा,  
सीख, नसीहत, हुक्मत ।

शासनपत्र ( पु० ) कर्मान ।

शासित ( वि० ) सिखाया गया, महकूम ।

शासिता } ( पु० ) हाकिम, शिक्षक ।  
शास्ता }

शास्ति ( शास्=सिखाना, आज्ञा देना या राज्य करना )  
( स्त्री० ) आज्ञा, राज्य करना, हुक्मत करना, दंड,  
सजा ।

शास्य ( वि० ) शिष्यणीय, सिखाने योग्य, महकूम ।

शास्त्र ( शास्=सिखाना ) ( पु० ) किसी देवता या मुनि  
का बनाया हुआ ग्रंथ, पुस्तक, पोथी, पवित्र पुस्तक,  
( वेदांत, न्याय, साम्य, मीमांसा, योग और वैशे-  
षिक आदि षट् शास्त्र ) काव्य और कानून आदि अन्य  
विद्याओं की पुस्तकों को भी शास्त्र कहते हैं ( जैसे  
काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र और अलंकारशास्त्र  
आदि ) ।

शास्त्रज्ञाता ( पु० ) शास्त्री, पंडित ।

शास्त्रार्थ ( शास्त्र+अर्थ ) ( पु० ) चर्चा, वाद-विवाद ।

शास्त्री ( शास्त्र ) ( पु० ) शास्त्र का जाननेवाला पंडित,  
ग्रन्थों की एक पदवी ।

शाह ( पु० ) बादशाह, रसामी, प्रभु ।

शाही ( वि० ) शाह-संबंधी, बादशाही, राजकीय ।

शिशपा ( शिशु=बालक, पा=पालना ) ( पु० ) एक पेड़ का  
नाम ।

शिकन ( स्त्री० ) बख, सिकुड़न ।

शिकस्त ( पु० ) हार, पराजय, ( वि० ) कमजोर, हीन ।

शिकायत ( स्त्री० ) निंदा, उखड़ना ।

शिक्य ( पु० ) सिकहर, सीका, छीका ।

शिक्षक ( शिक्=सीखना या सिखाना ) ( पु० )  
सिखानेवाला, पढ़ानेवाला, गुरु, अध्यापक, उप-  
देष्टक ।

शिक्षा ( शिक्=सीखना या सिखाना ) ( स्त्री० ) सीख,

सिखाई, तालीम, नसीहत, उपदेश, वेद का एक  
भाग, वेदांग ।

शिक्षापत्र ( पु० ) वसीयतनामा ।

शिक्षाप्रकरण ( पु० ) शिक्षाविभाग, सचिस्ता-  
तालीम, शिक्षासंबंधी प्रसंग ।

शिक्षित ( शिक्=सीखना या सिखाना ) ( वि० ) सीखा  
हुआ, पढ़ा हुआ, निपुण, प्रवीण ।

शिवर ( शिखा ) ( पु० ) पहाड़ की चोटी, शृंग ।

शिवरी ( पु० ) पहाड़, भूधर, पर्वत ।

शिखा ( शा=पाना ) ( स्त्री० ) चोटी, सिर के बीच के  
बाल, जैसा हिंदू लोग रखते हैं, आग की ज्वाला, ली ।

शिवान्यूड़ ( पु० ) केशपाश, जटा-जूट ।

शिखावल ( पु० ) मयूर, मोर ।

शिखी ( शिखा ) ( पु० ) मोर, मयूर, आग, एक पेड़  
का नाम ।

शिजा } ( स्त्री० ) रोदा, धनुष की डोरी ।  
शिजिनी }

शिथिल ( श्लथ=ढीला या दुबला होना ) ( वि० )  
ढीला, गुला, धीमा, सुस्त, आलसी, दुबला,  
निर्वल, कमजोर ।

शिर } ( शृ=नाश होना ) ( पु० ) मस्तक, माथा,  
शिरस् } शिर, कपाल ।

शिरधरा ( पु० ) जिम्मेदार, वारिस, अगुवा ।

शिरा ( शृ=नाश होना ) ( स्त्री० ) नाड़ा, नस, जैसे—  
“सशस्त्र रहने तक एक भी शिरा”—प्रियप्रवास ।

शिरोमणि ( शिरस्+मणि ) ( स्त्री० ) सिर का गहना,  
सिर में पहनने का रत्न, ( वि० ) उत्तम, सबसे  
बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया ।

शिरोरुद्ध ( शिरस्+रुद्ध=जमना, निकलना ) ( पु० ) बाल,  
केश ।

शिला ( शिल्=कण, कण=इकट्ठा करना या चुनना ) ( स्त्री० )  
सिल, चट्टान, पत्थर, पापाय, साक और बराबर  
पत्थर जिस पर लोढ़े से मसाला पीसा जाता है ।

शिलाजन्तु } ( में० शिलाजन्तु, शिला=पहाड़ का चट्टान  
शिलाजीत } में पेड़ा हुई, जन्तु=लाश या लाल रंग की  
धातु ) ( पु० ) शिलारस, कहते हैं कि पहाड़ों की  
चट्टानों का रस चूकर जम जाता है और पत्थर-सा  
कड़ा हो जाता है, उसको शिलाजीत कहते हैं ।

और उसके खाने से शरीर में बल आता है ।  
शिलीमुख ( शिला=तीखी नोक, मुख=मुँह, जिसके मुँह पर तीखा फल लगा रहता है ) ( पु० ) तीर, बाण, भ्रमर, और ।

शिलोच्चय ( पु० ) पर्वत, पहाड़ ।

शिल्प ( शिल्=चूना या शिल्प=कारीगरी का काम करना ) ( पु० ) कलविद्या, हुनर, गुण, कारीगरी ।

शिल्पक } ( पु० ) कारीगर ।  
शिल्पित }

शिल्पशाला ( स्त्री० ) कारीगरी का कारखाना ।

शिव ( शी=सोना या शो=नाश करना, दुःख को या प्रलय में सब सृष्टि को ) ( पु० ) महादेव, महेश, मंगल, कल्याण, शुभ, सुख, वेद ।

शिवपुरी ( शिव+पुरी ) ( स्त्री० ) काशी, बनारस ।

शिवरात्री ( शिव+रात्री ) ( स्त्री० ) शिवचतुर्वशी, फागुन बड़ी १४ ।

शिवसेनानी ( पु० ) स्वाभिकान्तिक, कीर्तिमुख ।

शिवा ( शिव ) ( स्त्री० ) पार्वती, उमा, दुर्गा ।

शिवाला ( सं० शिवालय, शिव+आलय ) ( पु० ) शिव का मंदिर ।

शिवि } ( पु० ) एक राजा का नाम ।  
शिवि }

शिविका } ( शिव=सुख अर्थात् जिसमें बैठने से सुख  
शिविका } मिले या शी=सोना जिसमें ) ( स्त्री० )  
पालकी, बोली ।

शिविर } ( पु० ) सैन्य का निवास-स्थान, छावनी ।  
शिविर }

शिशिर ( शश=उखलकर चलना अर्थात् पत्तों का झड़ना ) ( स्त्री० ) एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन में रहती है ।

शिशु ( शा=पतला होना या शिव=बढ़ना ) ( पु० ) बालक, बच्चा ।

शिशुपाल ( पु० ) चंदेरी का राजा, जिसकी श्रीकृष्ण-चंद्र ने मारा था ।

शिशुन ( पु० ) मेढ़, लिंग, पुरुष-चिह्न ।

शिष ( शिप्=धंत होना ) ( स्त्री० ) सिखाना, शिक्षा, उपदेश ।

शिष्ट ( शास्=सिखाना ) ( वि० ) सीखने योग्य, सभ्य, आज्ञाकारी, अच्छा, उत्तम, भला, काजी ।

शिष्टई ( स्त्री० ) निमंत्रण, म्योता, आदर, सम्मान ।

शिष्टता ( स्त्री० ) सदाचार, सभ्यता, अच्छे आदमियों का बर्ताव, भद्रता ।

शिष्टाचार ( शिष्ट+आचार ) ( पु० ) अच्छा चलन, सम्मान, आदर, विनय, बिनती ।

शिष्टि ( स्त्री० ) आज्ञा, शासन, सज़ा ।

शिष्य ( शास्=सिखाना ) ( पु० ) उपदेश्य, चेला, विद्यार्थी, छात्र, पढ़नेवाला, किसी धर्म का अनुयायी ।

शीकर ( शीक्=सींचना या गीला करना ) ( पु० ) जल-कण, कुहार, तरल वायु ।

शीघ्र ( शीघ्=सूँघना ) ( वि० ) उतावला, जल्द, फुर्तीला, ( कि० वि० ) तुरंत, झटपट, जल्दी से ।

शीघ्रग ( वि० ) शीघ्र चलनेवाला ।

शीघ्रगामी ( गम्=चलना ) ( वि० ) जल्दी चलनेवाला ।

शीघ्रता ( शीघ्र ) ( स्त्री० ) जल्दी, उतावली, फुर्ती ।

शीत ( श्यै=जाना ) ( वि० ) ठंडा, सर्द, सुस्न, ( स्त्री० ) जाड़ा, सर्दी, ठंड, हिम, पाला ।

शीतकर ( शीत=ठंडी, कर=किरण ) ( पु० ) चंद्रमा, कपूर ।

शीतकाल ( शीत+काल ) ( पु० ) जाड़ा, सर्दी, हेमंत-ऋतु ।

शीतज्वर ( शीत+ज्वर ) ( स्त्री० ) जाड़ा, जाड़ा लगकर आनेवाला बुझार ।

शीतल ( शीत=ठंड, ला=लेना ) ( वि० ) ठंडा, सर्द ।

शीतलता ( शीतल ) ( स्त्री० ) सर्दी, ठंडापन ।

शीतलताई } ( सं० शीतलता ) ( स्त्री० ) ठंडाई,  
शीतलाई } ठंडापन ।

शीतला ( शीतल ) ( स्त्री० ) देवी, माता, चैत्यक ।

शीतांशु ( शीत=ठंडी, अंशु=किरण, जिसकी किरणें ठंडी हैं ) ( पु० ) चंद्रमा, कपूर ।

शीतांग ( शीत+अंग ) ( पु० ) पहाघात, अर्द्धाङ्ग, एक बीमारी का नाम ।

शीतार्त ( वि० ) शीत-पीड़ित ।

शीतोष्ण ( वि० ) सर्द-गर्म, सुख-दुःख ।

शीरा ( पु० ) शकर, गन्ने अथवा मिश्री से बना हुआ तरल पदार्थ ।

शीर्ण ( शृ=मारना ) ( वि० ) कृश, दुर्बल, शुष्क, सूखा ।

शीर्ष ( शृ=नाश होना ) ( पु० ) शीस, सिर, माथा, मस्तक ।

शील ( शील=सोचना या अभ्यास करना ) ( पु० ) अच्छा स्वभाव, अच्छा चालचलन ।

शीलचक्षु ( वि० ) मुरौवतदार, जिसकी आँखों में शील हो ।

शीलवान् ( शील+वान् ) ( वि० ) अच्छे स्वभाववाला, जिसका चालचलन अच्छा हो, सुशील, नेक चलन ।

शीलित ( वि० ) अभ्यस्त, रब्त, रस, रटित ।

शीशम ( सं० शिशपा ) ( पु० ) एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम ।

शीशमहल ( पु० ) शीशेअथवा काँच से बना हुआ घर ।

शीशा ( पु० ) काँच, दर्पण, आईना ।

शीशी ( स्त्री० ) शीशे का छोटा पात्र ।

शीस } ( सं० शीर्ष ) ( पु० ) शिर, माथा, मस्तक,  
सीस } कपाल ।

शुक ( शुक=जाना या शुभ=चमकना ) ( पु० ) तोता, सुगा, सुआ, शुकदेव मुनि जिन्होंने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाई ।

शुक्रि ( स्त्री० ) सोपी, सूती, चबु, रोग, अशरोग ।

शुक ( शुक=पवित्र होना या सोचना ) ( पु० ) छठा मूह, एक मुनि का नाम जो भृगु ऋषि का बेटा और राक्षसों का गुरु था, आग, अग्नि, वीर्य, बीज ।

शुकवार ( शुक+वार ) ( पु० ) हिंदुओं का छठा दिन, शुकवार, जुमा ।

शुक्राचार्य ( शुक+आचार्य ) ( पु० ) एक मुनि का नाम जो राक्षसों का गुरु था ।

शुक्रिया ( पु० ) धन्यवाद, साधुवाद ।

शुकल ( शुक्=साफ होना ) ( वि० ) धवल, उज्ज्वल, सफेद, श्वेत ( पु० ) धवलरंग, श्वेतवर्ण ।

शुकलपत्र ( शुक+पत्र ) ( पु० ) उज्जला पाख, सुदि ।

शुचा ( स्त्री० ) पवित्रता, सफाई ।

शुचि ( शुक्=पवित्र होना, साफ होना ) ( स्त्री० ) पवित्रता, सफाई, शुद्धता, ( वि० ) साफ, स्वच्छ, शुद्ध, धवल, सफेद ।

शुंठी ( स्त्री० ) सोंठ, शुक्क अदरक ।

शुंड ( पु० ) सूँड़ ।

शुद्धी ( स्त्री० ) भाबी, योग, योगयोग, होनहार ।

शुद्धि ( स्त्री० ) शुक्लपत्र, सँधेरा पाख ।

शुद्ध ( शुक्=साफ होना या करना ) ( वि० ) पवित्र, साफ, स्वच्छ, सफेद, उज्ज्वल, निर्दोष, सही ।

शुद्धता ( शुद्ध ) ( स्त्री० ) पवित्रता, सफाई, स्वच्छता ।

शुद्धि ( स्त्री० ) पवित्रता, शुद्धता, शोधन, सफाई ।

शुद्धिपत्र ( पु० ) मुआफ़ीनामा, सफाईनामा, शुद्धाशुद्ध-पत्र ।

शून्य } ( शिव=बढ़ना ) ( वि० ) खाली, ( स्त्री० ) या  
शून्य } ( पु० ) बिंदी, सिकर, आकाश, आसमान ।

शुभ ( शुभ=चमकना ) ( वि० ) अच्छा, भला, कल्याण-कारी, मंगलदायक ।

शुभकर ( वि० ) मंगलकारी, कृपालु, कल्याणप्रद ।

शुभग ( शुभ=भला, गम्=जाना ) ( वि० ) कल्याण करनेवाला, सुखदायी, मंगलीक, सुंदर ।

शुभगता ( स्त्री० ) मनोहरता, सुंदरता, उमंगी ।

शुभचितक ( वि० ) भला चाहनेवाला, खैरफ़वाह ।

शुभचितकता ( स्त्री० ) भलाई, खैरफ़वाही, हितचिंतना ।

शुभलग्न ( शुभ+लग्न ) ( पु० ) अच्छा समय, मंगलप्रद समय ।

शुभाकांक्षी ( वि० ) मंगलाभिलाषी, भलाई चाहनेवाला, खैरफ़वाह ।

शुभ्र ( शुभ्र=चमकना ) ( वि० ) उज्जला, सफेद, धवल, निर्मल, चमकीला, चमकदार, ( पु० ) धवल रंग, श्वेतवर्ण ।

शुंभ ( शुभ्र=मारना ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम, जिसको दुर्गा ने मारा ।

शुरू ( पु० ) आरंभ, आदि ।

शुल्क ( पु० ) चुंगी, क्रोस, किराया, भाड़ा ।

शुशकारना ( कि० सं० ) पुचकारना, बढ़ावा देना, उत्ते-जित करना ।

शुश्रूषक ( श्रु=सुनना ) ( पु० ) सेवक, परिचारक, टहलुआ ।

शुश्रूषा ( स्त्री० ) सेवा, टहल ।

शुष्क ( शुष्=सूखना ) ( वि० ) सूखा, नीरस, खुरक ।

शुष्ण ( पु० ) सूर्य, अग्नि, वायु, पराक्रम, शोक, प्रकाश, दीप्ति, शोभा ।

शुकर ( श=ऐसा शब्द, कर=करनेवाला, क=करना ) ( पु० ) सुअर, बाराह ।

शुद्ध ( शुक्=साफ करना, जो बर्षों को नहलाते-धुसाते हैं )

(पु०) चौथे वर्ग के लोग जिनका काम नौकरी करना है, नीच जाति ।

शून्याकार (वि०) उदासीन की सूत्र, खाली-सा ।

शूर (शूर=बहादुरी करना) (वि०) वीर, सूरमा, रावत, बहादुर, साहसा, (पु०) शूरसेन जो श्रीकृष्ण का दादा था, सिद्ध, सूर्य, सुशूर, साल का पेड़ ।

शूरण (पु०) जर्मकंद, वनुलाकार मूल ।

शूरता (शूर) (स्त्री०) बहादुरी, वीरता, सूरमापन ।

शूरसेन (शूर=बहादुर, सेन=सेना) (पु०) मथुरा के एक राजा का नाम, मथुरा ।

शूर्प (शूर्प=मापना) (पु०) सूँप, छत्र ।

शूर्पेनखा (शूर्प+नख अर्थात् जिसके नख सूँप जैसे हैं) (स्त्री०) रावण की बहन ।

शूल (शूल=वीरार होना) (पु०) पीड़ा, दुःख, रोग, लोहे का तीखा काँटा, त्रिशूल ।

शूली (पु०) दीप, शिव, महादेव, (वि०) शूल रोग-वाला, (स्त्री०) मूली, फासी, एक प्रकार का प्राणदंड ।

शृगाल (शृग+यल या शृगृच=लोह, या, ला=लाना, यदा शृगृच के अ का लोप हो जाता है) (पु०) सियार, गीदड़ ।

शृंखला (शृ=नाश करना) (स्त्री०) साँकल, सँकली, मिकरी, करधनी, क्रम, लड़ ।

शृंग (शृ=नाश करना) (पु०) सींग, शिखा, पहाड़ की चोटी, पहाड़ के ऊपर का भाग, चिह्न, बढ़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, काम का बढ़ना ।

शृंगवेर (पु०) श्रीरामचंद्र के मित्र गृध्र निपाद के नगर का नाम, अदरक ।

शृंगार (शृंग=कामदेव का अर्थात् प्यार का बढ़ना और शृ=जना, जिससे मन में काम बढ़ता है) (पु०) साहित्य विद्या में एक रस का नाम, शोभा, सिंगार गहना भूषण—१६ शृंगार—

शृंग सुधी मजन बसन, माँग महावर केस ;  
तिलक भाल तिल चिबुक में, भूषण मेंदरी बस ;  
मिस्सी, काजल, अरगजा, बोरी और सुगंध ;  
पुष्पकलीयुत होय कर, तब नव-सस प्रबंध ।  
१ शरीर का मेल उतारना, २ नहाना, ३ साफ़ कपड़े पहनना, ४ काजल लगाना, ५ अलंकार से हाथ-पैर

रचाना, ६ बाल सँवारना, ७ सिंदूर से माँग भरना, ८ छिलार में केशर-चंदन का खौर या तिलक निकालना, ९ तुड़ी पर तिल बनाना, १० मेंदरी लगाना, ११ देह में अरगजा या इतर आदि सुगंधित चीज़ लगाना, १२ गहना पहनना, १३ फूलों की माला आदि पहनना, १४ पान चबाना, १५ दाँत रँगना, १६ हाँठों को लाल करना ।

शृंगी (शृङ्ग) (वि०) सींगवाला, (पु०) एक ऋषि का नाम जो लोमश-ऋषि का चेला था, जिसके शाप से राजा परीक्षित को सचक साँप ने डसा ।

श्रेष्ठचिह्नी (पु०) प्रसिद्ध मसखरा, (महा०) ऊल-जलूल, बक्री, नासमझ ।

श्रेष्ठर (श्रेष्ठ=जाना) (पु०) फूलों की माला जो मुकुट के ऊपर पहनी जाती है, मुकुट, किरीट, शिखा, चोटी ।

श्रेष्ठी (स्त्री०) अभिमान, घमंड, पेट ।

शेर (पु०) व्याघ्र, बाघ ।

श्रेल (पु०) बछी, भाला, अश्व-विशेष ।

श्रेलु (पु०) मेंढी का साग ।

शेष (शिप्=बार्का रहना) (पु०) अनंत, सर्पराज, माँपों का राजा जिसके १००० फन बतलाने हैं जिस पर विष्णु सोते हैं और जिसके एक फन पर हिंदू लोग पृथ्वी को टहरी हुई बतलाने हैं तथा लक्ष्मणजी और बलदेवजी को शेषजी के अवतार कहते हैं (वि०) बाक़ी, बचा हुआ

शेषशायी (शेष=माँपों का राजा, शायी=सोनेवाला, शी=सोना) (पु०) विष्णु भगवान् जो शेषनाग पर सोते हैं ।

शेषावस्था (स्त्री०) वृद्धावस्था, अंत की दशा, मुदापा ।

शैतान (पु०) अपुर, धर्म-कर्म-विराधी, बुरे भाव, बुरी वासनाएँ ।

शैत्य (पु०) सर्दी, जाड़ा, शीतलता ।

शैथिल्य (पु०) शिथिलता, सुस्ती, ढीलापन ।

शैल (शिता) (पु०) पहाड़, पर्वत, (वि०) पहाड़ी, पथरीला ।

शैलराज (पु०) हिमालय-पर्वत ।

शैलशिविर ( पु० ) समुद्र, पार्वतीय पुर ।

शैलाट ( शैल+अट=चूना ) ( पु० ) सिंह, किरात, श्वेत काँच ।

शैव ( शिव ) ( पु० ) शिव का भक्त, शिव को पूजनेवाला, ( वि० ) शिवसंबंधी ।

शैवाल ( पु० ) सिवार ।

शैवी ( स्त्री० ) पार्वती, एक देवी, ( वि० ) शैव, शिवोपासक, शिवभक्त ।

शैशव ( पु० ) लक्ष्मण, शिशुता, बाल्यावस्था ।

शोक ( शुच्=चिंता करना ) ( पु० ) सोच, चिंता, क्रिक, दुःख, खेद, संताप, पछतावा ।

शोकाकुल } ( शोक=शांघ, आकुल या आर्त=घबराया हुआ ) ( वि० ) शोक से व्याकुल, विकल, दुःखी ।

शोकापह ( शोक+अपह=नाश करना ) ( पु० ) शोकनाशक, शोकहारी ।

शोख ( वि० ) डीठ, अभिमानी, प्रगल्भ, घट ।

शोखी ( स्त्री० ) अभिमान, घटना, डिठाई ।

शोच ( पु० ) चिंता, विचार, सोच, अकसोस ।

शोचक ( शुच्+अक, शुच्=चिंता करना ) ( वि० ) सोच करनेवाला, क्रिकमंद ।

शोचना ( कि० स० ) पश्चात्ताप करना, विचार करना ।

शोचनीय ( वि० ) सोचने योग्य ।

शोण ( पु० ) पुष्प-विशेष, लाल रंग ।

शोणभद्र ( पु० ) नदी-विशेष ।

शोणित ( शोण=लाल होना ) ( पु० ) लोहू, रक्त, रुधिर, कुंकुम, ( वि० ) लाल ।

शोधक ( वि० ) शुद्ध करनेवाला ।

शोधित ( वि० ) शुद्ध की हुई ।

शोध ( पु० ) सूझन, रोग-विशेष, अंगों का फूलना, तृण-विशेष, मूँज ।

शोध ( पु० ) खोज, अनुसंधान, शुद्धि, अणु चुकाना, बदला ।

शोधन ( शुप्=पवित्र करना ) ( पु० ) पवित्र करना, शुद्ध करना, सही करना ।

शोधनी ( स्त्री० ) बदनी, फाड़ू ।

शोधनीय ( वि० ) शोध्य, शोधने योग्य, इस्लाहत्तब ।

शोधा ( वि० ) शुद्ध किया हुआ, खोजा गया, ढूँढा गया

शोधिता ( वि० ) शोधा, शुद्ध किया हुआ ।

शोभन ( शुभ्=चमकना ) ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम, उम्दा, ( पु० ) प्रकाश, लावण्य ।

शोभा ( शुभ्=चमकना ) ( स्त्री० ) सुंदरता, खूबसूरती, छवि, कान्ति, चमक, झलक ।

शोभायमान ( वि० ) सुशोभित, खूबसूरत ।

शोभित ( शुभ्=चमकना ) ( वि० ) सुंदर, शोभायुक्त, चमकीला ।

शोर ( पु० ) हल्ला, कोलाहल, गुलगुगाड़ा ।

शोरया ( पु० ) झोल, पेय पदार्थ-विशेष ।

शोरा ( पु० ) सोडा-विशेष ।

शोला ( पु० ) आग की लपट, ज्वाला, वृक्ष-विशेष, जिसकी छाल के कपड़े बनते हैं और पवित्र समझे जाते हैं ।

शोपक ( शुप्+अक, शुप्=सोखना ) ( पु० ) रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि, सुखा देनेवाला ।

शोपण ( पु० ) सोखना, चूसना, सुखाय ।

शोहदा ( वि० ) विज्ञासी, लुच्चा, लंपट, छेला, गुंडा ।

शोक्लिक ( पु० ) मोती, सोप ।

शौच ( शुचि ) ( पु० ) पवित्रता, शुद्धता, सफाई, स्नान आदि ।

शौडिक ( पु० ) कलवार ।

शौर्य ( पु० ) शूरता, बहादुरी, वीरता ।

शौलिक ( पु० ) दारोसा जुंगी ।

श्मशान ( श्मश्=मृदा और शां=संता, जहाँ मृदा सुलाया जाता अर्थात् जलाया जाता है ) ( पु० ) मसान, मरघट, मुर्दाघाट ।

श्मश्रु ( पु० ) मूँछ, मोछ, गलमुच्छ ।

श्याम ( श्यं=ज्ञान ) ( वि० ) काला, नीला मिला हुआ, ( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम ।

श्यामता ( श्याम ) ( स्त्री० ) कारिख, कालान, कृष्णता ।

श्यामल ( श्याम=काला रंग, ला=लेना ) ( वि० ) काला, श्यामवर्ण ।

श्यामा ( श्याम ) ( स्त्री० ) काली, दुर्गा, देवी, एक काले रंग की गानेवाली चिटिया, पौडश वर्ष की स्त्री, पीतल, काले रंग की स्त्री, राधा ।

श्यामाक ( पु० ) सावॉ, धान्य-विशेष ।

श्यालक } ( पु० ) साला, स्त्री का भाई, नगरश्याल=श्याला } कोतवाख, दारोसा ।

श्येन ( पु० ) शाहीन, बाज़पक्षी ।

श्रद्धधान ( वि० ) श्रद्धायुक्त, मुश्कतकृद् ।

श्रद्धा ( श्रु=विश्राम, धा=रखना ) ( स्त्री० ) विश्रवास, भरोसा, भक्ति, गुरु और शास्त्र के वचन में पक्का भरोसा, आदर, इच्छा, चाह, बल, ताक़त ।

श्रद्धेय ( वि० ) पूज्य, मान्य, श्रद्धा करने योग्य ।

श्रम ( श्रम्=मिहनत करना ) ( पु० ) मिहनत, थकावट, क़सांति, दौड़-धूर, कष्ट, परिश्रम, तप, तपस्या ।

श्रमजल ( पु० ) पसोना, स्वेद ।

श्रमजावी ( पु० ) मज़दूर, भारवाहक ।

श्रमित ( वि० ) थकित, थका हुआ ।

श्रमी ( पु० ) मिहनती ।

श्रय { ( श्रि=सहाय लेना ) ( पु० ) अवलंब, सहारा  
श्रयण } या भरोसा ।

श्रयण ( श्रु=सुनना ) ( पु० ) कान, सुनने की इंद्रिय, सुनना, एक ब्राह्मण का नाम, जिसे राजा दशरथ ने मारा और जिसके पिता ने राजा को शाप दिया, बाहुसर्प नक्षत्र ।

श्रयणा ( स्त्री० ) बक्की मुंड़ी, मुंड़ीरी ।

श्राद्ध ( श्रद्धा ) ( पु० ) पितरों को शास्त्र की रीति से जल और पिंड देना ।

श्राद्धदेव ( पु० ) धर्मराज, यमराज, ब्राह्मण, श्राद्ध में निमंत्रित ब्राह्मण ।

श्राद्धपक्ष ( पु० ) कनागत, पितृपक्ष ।

श्रांत ( श्रप्=थकना ) ( वि० ) क्रांत, थका हुआ ।

श्रांति ( स्त्री० ) थकावट, थकान, श्रम, परिश्रम, मिहनत ।

श्राप ( सं० शाप ) ( पु० ) धिक्कार, दुराशिष, बददुआ ।

श्रावक ( श्रु=सुनना अपने धर्म को ) ( पु० ) जैना, जिनमत को माननेवाला, श्रोता, सुननेवाला, सरावगी ।

श्रावण ( श्रवण=एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चन्द्रमा इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है ) ( पु० ) एक हिंदू महीने का नाम, सावन का महीना ।

श्रावणो ( श्रावण ) ( स्त्री० ) सावन की पूर्णमासी, राखी ।

श्रावणोक्कर्म ( पु० ) डपाकर्म ।

श्री ( श्रि=मेवा करना, जो विष्णु को सेवा करती है या जिसकी सब संसार सेवा करता है ) ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, संवदा, धन, दौलत, शोभा, सुंदरता, बह

शब्द देवताओं, बड़े आदमियों और पवित्र पौधियों आदि के साथ बड़ाई और मान के लिये लगाया जाता है और कभी-कभी दो श्री अथवा पाँच, छः आदि १०० श्री तक लिखते हैं, जैसे श्रीरामचंद्र, श्रीकृष्ण, श्रीयज्ञदत्त पंडित, श्रीभागवतपुराणआदि— यहाँ मन् या युक्त या युत शब्द छिपा हुआ है और कभी-कभी श्री के साथ भी ये शब्द बोले अथवा लिखे जाते हैं—जैसे श्रीमान्, श्रीयुत, श्रीयुक्त आदि। पत्र-पत्रिका लिखते समय श्री का प्रयोग इस प्रकार होता है—

श्री लिखिए पद गुरुन की, पाँच स्वामि, रिपु चारि ;  
तीनि मित्र, द्वै भृत्य की, एक शिष्य सुन नारि ।

श्रीखंड ( श्री=शोभा, खंड=टुकड़ा ) ( पु० ) चंदन, खाद्यपदार्थ-विशेष ।

श्रीचक्र ( श्री+चक्र ) ( पु० ) त्रिपुरासुंदरी देवी की पूजा का अंग-विशेष ।

श्रीचूर्ण ( स्त्री० ) रोरी, कुंकुम ।

श्रीनिवास ( श्री=लक्ष्मी, निवास=जगह, जो लक्ष्मी के पास रहते हैं या जिनके पास लक्ष्मी रहती है ) ( पु० ) विष्णु, भगवान् ।

श्रीपति ( श्री+पति ) ( पु० ) विष्णु, भगवान्, एक हिंदी कवि का उपनाम ।

श्रीफल ( श्री+फल ) ( पु० ) नारियल, बिल्व ।

श्रीमन् { ( श्री=शोभा, मन्=वाला ) ( वि० ) भाग्यवान्,  
श्रीमंत } प्रतापी, धनवान्, श्रीयुत ।  
श्रीमान् }

श्रीयुक्त { ( श्री=शोभा, लक्ष्मी, युक्त या युत=मिला हुआ )  
श्रीयुत } ( वि० ) भाग्यवान्, धनवान्, श्रीमान् ।

श्रीवत्स ( श्री=शोभा, वत्स=चिह्न ) ( पु० ) विष्णुचिह्न, जो विष्णु के वक्षस्थल पर है ।

श्रीहृत ( वि० ) शोभाहीन, निष्प्रभ, लक्ष्मोहीन ।

श्रुत ( श्रु=सुनना ) ( वि० ) सुना हुआ, समझा हुआ, ( पु० ) शास्त्र ।

श्रुता ( पु० ) कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा, शास्त्र, ( वि० ) सुना हुआ, पढ़ा हुआ ।

श्रुति ( श्रु=सुनना ) ( स्त्री० ) वेद, कान, श्रवणकार्य ।

श्रुवा { ( श्रु=चूना या टपकना ) ( स्त्री० ) होम का चाद,  
स्रुवा } खैर को लकड़ी का बना हुआ चर्मच, जो हाथ के आकार का होता है ।



श्रेणि } ( श्रि=सेवा करना ) ( स्त्री० ) पाँत, पंक्ति,  
श्रेणी } कृतार ।

श्रेय ( पु० ) मंगल, कल्याण, शुभ, यश ।

श्रेष्ठ ( प्रशस्य शब्द को श्र हो जाता है, प्र=बहुत, शंस= सराहना ) ( वि० ) बहुत अच्छा, सबसे अच्छा, उत्तम, सबसे बड़ा ।

श्रेष्ठाचार ( श्रेष्ठ+आचार ) ( पु० ) उत्तम रीति, श्रद्धा तरीका ।

श्रोता ( श्रु=सुनना ) ( पु० ) सुननेवाला, सुनवैया ।

श्रोत्र ( श्रु=सुनना ) ( पु० ) कान, सुनने की इंद्रिय ।

श्रोत्रिय ( पु० ) वैदिक, वेदपाठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला, एक ब्राह्मणवर्ग ।

श्लाघा ( श्लाघ=सराहना ) सराहना, प्रशंसा, तारीफ, चाह, इच्छा ।

श्लाघ्य ( वि० ) प्रशंसायोग्य, क्राबिल-तारीफ ।

श्लेष ( श्लिप्=मिलना ) ( पु० ) मिलाव, संयोग, एक अलंकार जिसमें एक शब्द के बहुत अर्थ होते हैं, जैसे—

“कीकर पाकर तार, जामन फलसा आमिला ।

सेव कदम कचनार, पीपर रत्ती तून तज ॥”

इसमें बहुत-से पेड़ों के नाम दिखाई देते हैं, पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की कि जिसको तू चाहती थी वह तुझे आ मिला । हे अपरि-

पक विचारों वाली स्त्री ! अब उसके पैरों की तू सेवा कर और अब अपने प्यारे की रति को मत छोड़ ।

श्लेष्मा ( पु० ) कफ, खखार, जुकाम ।

श्लोक ( श्लोक=बढ़ना या इकट्ठा करना ) ( पु० ) चार पद का संस्कृत छंद, यश, कीर्ति, कीरति, नामवरी ।

श्वपच ( श्वन्=कुत्ता, पच=पकाना अर्थात् कुत्ते को खाने-वाला ) ( पु० ) चांडाल, डोम, पंचम वर्ण ।

श्वशुर ( शु=जल्दी, अश्व=पाना ) ( पु० ) ससुर, पति या पत्नी का पिता ।

श्वश्रू ( श्वशुर ) ( स्त्री० ) सास, ससुर की स्त्री ।

श्वस् } ( अद्य० ) आगामी दिन, आनेवाला दिन ।  
श्वः }

श्वसन ( पु० ) वायु, हवा, पवन ।

श्वान ( श्वि=बढ़ना या जाना ) ( पु० ) कुत्ता, कुकुर ।

श्वास ( श्वस्=साँस लेना ) ( पु० ) साँस, प्राण, दम ।

श्वास रहते ( महा० ) जीतेजी, प्राणपर्यंत ।

श्वेत ( श्विन्=धोला होना ) ( वि० ) धवल, सफेद ।

श्वेतद्वीप ( श्वेत+द्वीप ) ( पु० ) वैकुण्ठ, एक द्वीप का नाम ।

श्वेतसर्प ( स्त्री० ) पीली सरसों ।

श्वेता ( स्त्री० ) दूध, घास, तृण ।

श्वेतिका ( स्त्री० ) लौक ।

## ष

ष ( पु० ) केश, हृदय, ( वि० ) श्रेष्ठ, विज ।

षट् ( षष् ) ( वि० ) छः, ६ ।

षट्कर्म ( बुभुत्वा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृती ।

शोकमोहौ शरीरस्य जरा मृत्यु षट्कर्मयः ) प्राण को भूख, प्यास व मन की स्मृति में शोक, मोह व शरीर को जरा और मृत्यु ये छः कर्मियाँ होती हैं ।

षट्कर्म ( षट्+कर्म ) ( पु० ) स्नान, संभ्या, जप, तर्पण, देवता का पूजन आदि ( १ वेद पढ़ना, २ दूसरों को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ दूसरे को कराना, ५ दान देना और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के छः काम हैं ) ।

षट्कोण ( षट्+कोण ) ( पु० ) छः कोना खेत, छः खूँट खेत, षष्ठ ।

षट्चक्र ( पु० ) शरीरस्थ छः चक्र आधार, स्वाधिष्ठान, मणियुद्ध, अनहत, विशुद्धि, प्रज्ञा ।

षट्पद ( षट्+पद ) ( पु० ) भौरा ।

षट्पदी ( स्त्री० ) एक छंद का नाम, छप्पय छंद ।

षट्प्रयोग ( पु० ) १ शांति, २ वशीकरण, ३ स्तंभन, ४ विद्वेषण, ५ उचाटन, ६ मारण ।

षट्स भोजन ( षट्=छः, रस=स्वाद, भोजन=खाना ) ( पु० ) मोठा, खटा, खारा, कड़वा, कसैला और तीता, इन छः रसों से मिला हुआ खाना ।

षट्पदन } ( षट्=छः, वदन या आनन=पूँह ) ( पु० )  
षडानन } कात्तिकेय, महादेव के पुत्र ।

षट्वर्ग ( पु० ) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ।

पट्टशास्त्र ( पट्ट+शास्त्र ) ( पु० ) न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और योग ये छः शास्त्र हैं, इनको पट्टदर्शन भी कहते हैं ( दर्शन शब्द को देखो ) ।

पट्टंग ( पट्ट+अंग ) ( पु० ) शरीर के छः भाग, जैसे— दो हाथ, दो पाँव, सिर और कमर, वेद के छः अंग ( जंग १ शिवा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छंद; वेदांग शब्द को देखो ) ।

पट्टेन्द्रि ( पट्ट=अक्षः, अक्षि=पाव ) ( पु० ) भौरा, अमर ।

पट्ट ( पणु+उ ) ( पु० ) कमलादिकों का समूह, साँड़ ।

पट्ट ( वि० ) नपुंसक, द्विजड़ा, मुसलमान ।

पट्टि ( पपु=अक्षः, पर अंगे नि प्रत्यय के अंगे में उमका अर्थ दंग गुना होता है ) ( वि० ) साठ ।

पट्ट ( पपु ) ( वि० ) छटा ।

पट्टी ( पपु ) ( स्त्री० ) छटा, छोटी तिथि, पछी देवी ।

पोडश ( पट्ट=अक्षः, दश=दस ) ( वि० ) सोलह, १६ ।

पोडशदान ( पोडश+दान ) ( पु० ) सोलह चीजों का

दान—जैसे १ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४ कपड़ा, ५ दीपक ( या दीपक के लिये ), ६ रुनाज, ७ पान, ८ छत्र, ९ सुगंधित चीज, १० फूलों की माला, ११ फल, १२ सेज, १३ खड़ाऊँ, १४ गाय, १५ सोना, १६ रूपा या चाँदी ।

पोडशभुजा ( पोडश=सोलह, भुजा=हाथ ) ( स्त्री० ) सोलह हाथवाली दुर्गा, देवी की मूर्ति ।

पोडशसंस्कार या कर्म ( पु० ) १ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सोमंत, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकर्म अर्थात् मुंडन, ९ कर्णवेध, १० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, ११ वेदारंभ, १२ समावर्तन अर्थात् गार्हस्थ्य, १३ विवाह, १४ द्विरागमन, १५ मृतककर्म, १६ औषधदेहिक ।

पोडशी ( स्त्री० ) श्राद्ध-विशेष ।

पणुपा ( स्त्री० ) बहू, पुत्रभार्या । जैसे—“स्तुपेयं तव कल्याण ।”

## स

स ( सो=माश करना ) ( पु० ) विष्णु, साँप, शिव, पद्मेरु, भृगु, ( अथर्व ) साथ, सहित, समेत ( जंगे गजान, जीवगदित ), बराबर, वह, एक ही ( जंगे गधर्म एक ही धर्म का ), सामने ।

संक्षिप्त ( वि० ) कम की हुई, मुसामिर की हुई ।

संक्षेप ( सम्=साथ, क्षिप्=कैंकना ) ( पु० ) सारअंश, सारभाग, मुक्तसर ।

संक्षिप्ता ( स्त्री० ) उपधातु-विशेष, विप-विशेष ।

संज्ञक ( वि० ) अभिधेय, नामवाला, नामी, नायक ।

संज्ञा ( सम्=अर्थी तरहसे, ज्ञा=ज्ञानना ) ( स्त्री० ) इहम्, नाम, चीज का नाम, बुद्धि, चेतना, गायत्री, सूर्य की स्त्री ।

संभलना ( कि० अ० ) थमना, ठहरना, सहारा पाना, खड़ा होना, गिरते-गिरते थम जाना ।

संभारना } ( सं० संभारण, सम्, भू=पकड़ना )

संभारना } ( कि० सं० ) थामना पकड़ना, सहारा देना, मदद देना, सहायता देना ।

संयम ( सम्=अर्थी तरह से, यम्=रोकना ) ( पु० ) नेम,

नियम, व्रत के दिन कितनी ही चीजों के खाने-पीने की रूकावट, इन्द्रियनिग्रह, परहेज, बंधन ।

संयमी ( पु० ) मुनि, इन्द्रिय-रोधक, ( वि० ) नियम-पूर्वक रहनेवाला ।

संयुक्त ( सम्=साथ, युज्=मिलना ) ( वि० ) मिला हुआ, लगा हुआ, जुड़ा हुआ ।

संयुग ( सम्=साथ, युज्=मिलना ) ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।

संयुत ( सम्, युज्=मिलना ) ( वि० ) मिला हुआ, लगा हुआ ।

संयोग ( सम्, युज्=मिलना ) ( पु० ) मेल, मिलाप, संबंध, दैवयोग, संयोग, हस्तिकाक ।

संयोजित ( वि० ) मिलाया गया ।

संरंभ ( सम्, रम्=कोसना ) ( पु० ) कोप, आक्रोश, वेग ।

संराधन ( सम्, राध्=सेवा करना ) ( पु० ) सब प्रकार से सेवा करना, चिंतन करना ।

संराव ( सम्+रू=बोलना ) ( पु० ) ध्वनि, शब्द ।

संलग्न ( सम्, लग्=मिलना ) ( वि० ) मिलित, संयुक्त ।  
संलाप ( सम्, लप्=कहना ) ( पु० ) परस्पर कहना,  
बाह्य गुप्तगू करना ।

संवत् ( सम्, वय्=जाना ) ( पु० ) राजा विक्रमादित्य का  
चलाया हुआ साल, वर्ष, सन् ।

संवत्सर ( सम्+वत्सर ) ( पु० ) वर्ष, संवत्, साल,  
सन् ।

संवाद ( सम्, वद्=कहना ) ( पु० ) बातचीत, चर्चा,  
प्रसंग, कथा, संदेश, सँदेश, समाचार ।

सवारना ( कि० स० ) सजाना, सुधारना, सिगारना,  
तैयार करना ।

संशय ( सम्, शी=सोना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से  
इसका अर्थ संदेह करना हो जाता है ) ( पु० ) संदेह,  
शक ।

संशयात्मन् ( पु० ) संदिग्ध-अन्तःकरण, संशयात्मा,  
अस्थिरचित्त, जिसका मन डावों-ढोह हो ।

संशोधन ( शुप्=शुद्ध करना ) ( पु० ) संशुद्धि, नज़र-  
सानी, दुबारा देखना, ध्यान से देखना ।

संसक्ता ( वि० ) संलग्न, संयुक्त, एकचित्त, मिला हुआ ।

संसर्ग ( सम्=साथ, सृज्=पैदा होना ) ( पु० ) संगति,  
सोहबत, संबंध, मेल ।

संसर्गी ( वि० ) संबंधी, साथी, मेली ।

संस्ना ( स्त्री० ) फिटकरी ।

संसार ( सम्=साथ, सृज्=जाना ) ( पु० ) जगत्, जग,  
दुनिया ।

संसारी ( संसार ) ( वि० ) संसार का, दुनिया का,  
लौकिक, दुनियावी ।

संसृति ( सम्=साथ, सृज्=जाना ) ( स्त्री० ) संसार, जगत्,  
आवागमन ।

संस्कार ( सम्=शुद्ध, कृ=करना ) ( पु० ) पवित्रता,  
सफ़ाई, शुद्ध करने की रीति, मरम्मत, प्रारब्ध,  
पूर्व जन्माजित कर्म, गर्भ-धारण आदि पौष्टज  
संस्कार ।

संस्कृत ( सम्=शुद्ध, कृ=करना ) ( वि० ) अच्छी भाँति  
से सुधारा हुआ, उत्तम, पवित्र, ( पु० ) एक भाषा  
जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देववाणी  
अर्थात् देवताओं की भाषा कहते हैं और जिसमें  
हिंदुओं के वेद-शास्त्र लिखे हुए हैं। इस भाषा

का व्याकरण और सब भाषाओं के व्याकरणों से  
बहुत अधिक पूर्ण और अच्छा है ।

संस्थान ( पु० ) निर्माण-रीति, बनावट, संगठन, चौक,  
सभा, स्थान, मठ ।

संस्थापक ( वि० ) स्थापित करनेवाला, प्रवर्तक, निर्माण  
करनेवाला ।

संस्पर्श ( पु० ) छुआछूत, लगाव, इंद्रियों के विषय ।

संहत ( वि० ) मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ, ठोस,  
एकत्रित, दलबद्ध ।

संहति ( स्त्री० ) संध, समूह, दल, मैत्री, मेल,  
राशि, ढेर ।

संहनन ( पु० ) जोड़, मिलाव, बनावट, गठन ।

संहर्ना ( कि० अ० ) मारा जाना, मरना, नष्ट होना ।

संहर्ता ( वि० ) संहार करनेवाला, हरनेवाला, छीनने-  
वाला ।

संहार ( सम्, हन्=लेना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से  
नाश करना अर्थ होता है ) ( पु० ) नाश, विनाश,  
प्रलय, संसार का नाश, एक नरक का नाम, एक  
भैरव का नाम ।

संहारना ( सं० संहारण ) ( कि० स० ) नाश करना,  
मार डालना, समाप्त करना ।

संहिता ( सम्=यच्छी भाँति से, धा=रखना ) ( स्त्री० )  
मनु आदि आचार्यों के बनाए हुए धर्मशास्त्र, पुराण,  
इतिहास आदि, कर्मकांड, वेद का भाग ।

शकट } ( सं० शकट ) ( पु० ) गाड़ी, छकड़ा ।  
सगड् }

सकत } ( सं० शक्ति ) ( स्त्री० ) ज़ोर, बल, ताकत,  
सगत } ( शक्ति शब्द की देखें ) ।

सकना ( सं० शक्=समर्थ होना ) ( कि० अ० ) समर्थ  
होना, किसी काम के करने का बल रखना ।

सकरा } ( सं० संकीर्ण ) ( वि० ) संग, संकीर्ण, छोटा ।  
संकरा }

सकराई ( स्त्री० ) छोटाई, संकीर्णता, संकेत ।

सकराना ( कि० अ० ) संकुचित करना, छोटा बनाना,  
स्वीकार करना, मनवा देना ।

सकरुण ( वि० ) दयालु, दयाशील, दयनीय, दया  
के पात्र ।

सकर्मक ( सम्=साथ, कर्म=कर्मकारक ) ( पु० ) ऐसी धातु

अथवा क्रिया जिसमें कर्म हो, जैसे—खाना, पीना, लेना, देना आदि ।

सकल ( सम्=साथ, कल=अंश, कल्=गिनना ) ( वि० ) सब, सारा, सिगरा, पूरा, संपूर्ण, समस्त, तमाम, कलासहित, विद्यायुक्त, कलावान् ।

सकाना ( कि० अ० ) भयभीत होना, शंकित होना, शरमाना, उदास होना ।

सकाम ( सम्=साथ, काम=इच्छा ) ( वि० ) कामना-सहित, चाहनेवाला, सफल ।

सकारना ( सं० स्वीकरण ) ( कि० सं० ) सही करना, मानना, अंगेजना, मंजूर करना ।

सकारे ( सं० सकल ) ( पु० ) सवेरा, भोर, प्रभात, प्रातःकाल ।

सकाला ( पु० ) प्रभात, सवेरा, प्रातःकाल ।

सकाश ( कि० वि० ) समीप, निकट, पास ।

सकिलना ( कि० अ० ) सकुचित होना, समिटना, हटना ।

सकुच ( स्त्री० ) लाज, संकोच, डर, भय, त्रास ।

सकुचना ( सं० संकोचन, सम्=साथ, कुच्=सिकुड़ना ) ( कि० अ० ) लजाना, शर्माना, संकोच करना, डरना, सिकुड़ना, संकीर्ण होना ।

सकुचा ( वि० ) लजित, संकीर्ण ।

सकुचित ( वि० ) लजित, मुकुलित ।

सकू ( पु० ) सतुष्ठा, सत् ।

सकृत् ( अव्य० ) एक बार, एक मर्तवा, एक दफा । जैसे—  
“सकृत् प्रणाम किए अपनाए” —रामायण ।

सक्रेत ( वि० ) सँकरा, तंग, छोटा ।

सक्रेतना ( कि० अ० ) सक्रेत करना या होना, समेटना, बटोरना ।

सक्रेलना ( कि० सं० ) समेटना, बटोरना, तहाना, तह डालना ।

सक्रेला ( पु० ) एक प्रकार का लोहा, ( वि० ) सक्रेलने-वाला, समेटनेवाला ।

सकोच ( पु० ) संकोच, सहम ।

सकोची ( वि० ) संकोची, लजीला ।

सकोड़ना ( सं० संकोचन ) ( कि० अ० ) सिमटना, सिकुड़ना, ( कि० सं० ) पीछे खींच लेना, समेट लेना ।

१. “सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्यतद व्रते मम ॥”

( इति रामायणं रामवाक्यम् )

सकोरा ( पु० ) मिट्टी का बर्तन, मिट्टी या काठ का प्याला ।

सखर ( वि० ) खरा, चोखा, बेलौस, साफ़, शुद्ध ।

सखरा } ( स्त्री० ) कच्ची रसोई ।  
सखरी }

सखा ( सम्=बराबर, ख्या=कहलाना ) ( पु० ) मित्र, दोस्त, साथी, बंधु, संगी ।

सखी ( सखा ) ( स्त्री० ) सहेली, साथिनी, संगिनी, आखी ।

सख्य ( पु० ) मित्रता, बंधुत्व, दोस्ती, ( वि० ) मित्रता का ।

सगड़ ( पु० ) छकड़ा, शकट, बैलगाड़ी ।

सगर ( सम्=साथ, गर=विष, जहर, जो जहर के साथ पैदा हुआ हो ) ( पु० ) अयोध्या के एक राजा का नाम जिससे समुद्र सागर कहलाया, ( वि० ) जहरीला, विषैला ।

सगरे ( वि० ) समस्त, सब ।

सगर्भ ( वि० ) साभिप्राय, पेट की बात पचानेवाला, गंभीर ।

सगर्भ्य ( वि० ) सगा, सहोदर भाई ।

सगलानि ( वि० ) गलानि के साथ ।

सगा ( सं० स्वकीय, स्व=अपना ) ( वि० ) अपना, संबंधी, समीची, नातेदार, रिश्तेदार ।

सगाई } ( सं० स्वकीयता ) ( स्त्री० ) भाईचारा,  
सगावत } नाता, अपनायत, रिश्ता, भगनी, निस्वत,  
नीच जाति की स्त्री का दूसरा दयाह ।

सगाभाई ( पु० ) अपना भाई, एक बार के बेटे ।

सगुण ( सम्+गुण ) ( वि० ) गुणसहित, रजोगुण-सतो-गुण-तमोगुण सहित ।

सगोत्र ( पु० ) सगोती, एक गोत का ।

सगौती ( स्त्री० ) मांस, मांस का बना भोजन ।

सघन ( सम्+घन ) ( वि० ) गहरा, घना, गहन, मिला हुआ ।

संकट ( सम्=साथ, कट्=घेरना ) ( पु० ) दुःख, कष्ट, आपदा, विपत्, तकलीफ, आकलत ।

संकर ( सम्=मिला हुआ, कृ=कैलना ) ( वि० ) मिलाई हुई जाति, और जाति के पुरुष एवं और जाति की स्त्री से पैदा हुआ मनुष्य, दोगला, बर्गसंकर, खिचड़ी, दो जात का ।

संक्षेप ( सम्, कृप्=सींचना ) ( पु० ) श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव, जिन्होंने एक मा देवकी के गर्भ से गिरकर दूसरी मा रोहिणी के पेट से जन्म लिया, इसलिये ऐसा नाम हुआ ।

संकल ( पु० ) राशि, ढेर ।

संकलन ( सम्, कल=गिनना ) ( पु० ) जोड़, जोड़ना, एकत्र करना ।

संकलित ( वि० ) जोड़ा हुआ, जमा किया हुआ, संगृहीत ।

संकल्प ( सम्=साथ, कृप्=समर्थ होना ) ( पु० ) मन की इच्छा, कामना, विचार, निश्चय, मनोरथ, प्रतिज्ञा, नियम, नेम, प्रहर ।

संकल्पना ( कि० अ० ) दान देना, नियम करना, निश्चित करना, प्रतिज्ञा करना ।

संक्षिप्त ( वि० ) दत्त, अभिप्रेत, दी हुई ।

संकाश ( वि० ) सदृश, समान ।

संकीर्ण ( सम्=साथ, कृप्=बिखरना ) ( वि० ) बहुत मनुष्यों का मिलाप, भोड़भाड़, घनाघन, तंग ।

संकीर्णता ( स्त्री० ) तंगी, सँकराई, कोताही ।

संकीर्तन ( पु० ) वर्णन करना, यश गाना ।

संकुचित ( वि० ) सकुच, लज्जित, मुकुलित, सिकुड़ा हुआ ।

संकुल ( सम्=खूब, कुल=इकट्ठा होना ) ( वि० ) खूब भरा हुआ, बहुत आदमियों या जीवों से भरा हुआ, भीड़ ।

संकेत ( सम्, किन्=जानना ) ( पु० ) सैन, इशारा, चिह्न, वचन ।

संकोच ( सम्, कुच्=सिकुड़ना ) ( पु० ) लाज, लजा, शर्म, सम, सिमटाव, तकलुक ।

संकोचन ( पु० ) लिपटाव, सिकुड़ना, यंत्रण ।

संकोचित } ( वि० ) सकुचा हुआ, सिकुड़ा हुआ,  
संकुचित } लज्जित ।

संकोची ( वि० ) शर्मिन्दा, पशोपेश करनेवाला, दम्ब, लज्जालु ।

संक्रम ( कम्=जाना ) ( पु० ) दुर्गमार्ग, किले की राह, आक्रमण, हिसार, विराव, जलबांध ।

संक्रमण ( पु० ) संक्रांति, पर्यटन, राशियों का बदलना ।

संक्रांत ( पु० ) मेला, मिलाप ।

संक्रांति ( सम्=साथ, कम्=जाना ) ( स्त्री० ) सूर्य अथवा चंद्र ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना ।

संक्रामक ( वि० ) पर्यटक, घूमनेवाला ।

संख्या ( सम्, ख्या=प्रसिद्ध होना ) ( स्त्री० ) गिनती, गुमार ।

संग ( सम्=साथ, गम्=जाना, अथवा सञ्जु=मिलना ) ( पु० ) मेल, संबंध, संयोग, साथ ।

संगत ( सं० संगति ) ( स्त्री० ) मेला, साथ, सोहबत, वह जगह जहाँ सिख अथवा राधास्वामी पंथवाले अपने धर्म की रीति-रस्म करते हैं ।

संगति ( सम्=साथ, गम्=जाना ) ( स्त्री० ) मेल, साथ, संग, सोहबत ।

संगम ( सम्=साथ, गम्=जाना ) ( पु० ) मिलना, मेल, मिलाप, संयोग, एक नदी का दूसरी नदी के साथ अथवा समुद्र के साथ मिलना, मैथुन, स्त्री-प्रसंग ।

संगर ( सम्=साथ, गृन्=निगलना या निकलना ) ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, भगड़ा, आपदा, विष, शमी का पेड़, प्रतिज्ञा ।

संगी ( संग ) ( वि० ) साथी, मेला, मिलापी, मित्र ।

संगीत ( सम्=ग्रच्छी तरह से गे=गाना ) ( पु० ) गाने की विद्या, गाना, गाने-नाचने की विद्या, ( वि० ) वर्णित, कथित ।

संगृहीत ( सम्=ग्रच्छी तरह से ग्रह=लेना ) ( वि० ) इकट्ठा किया हुआ, संग्रह किया हुआ, संकलित, तालीकशुदा ।

संगोपन ( पु० ) भली भाँति से छिपाव, गोपन ।

संग्रह ( सम्=ग्रच्छी तरह से, ग्रह=लेना ) ( पु० ) इकट्ठा, संचय, ताजीक ।

संग्रहण ( पु० ) संग्रह, संचय ।

संग्रहणी ( स्त्री० ) बहुत दस्त आना, रोग का नाम ।

संग्रहीता ( सम्=ग्रच्छी तरह से, ग्रह=लेना ) ( वि० ) संग्रहकर्ता, जोड़नेवाला ।

संग्राम ( पु० ) लड़ाई, युद्ध, रण, जंग ।

संग्राहक ( वि० ) संग्रहकर्ता ।

संग्राही ( वि० ) संग्रहकर्ता, जमा करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला ।

संघ ( पु० ) सम्मूह, कुंड ।

संघट्टक ( सम्+घट्ट=रगड़ना ) ( वि० ) योजक, मिछाने-  
वाला, रगड़नेवाला, रचनेवाला ।

संघट्टन ( सम्. घट्ट=चलना ) ( पु० ) गड़ना, रचना,  
साथ ।

संघर्ष ( सम्. घृप्=घिसना ) ( पु० ) रगड़ा, परस्पर रग-  
ड़ना, स्पर्द्धा, प्रभञ्जन ।

संघार ( पु० ) संहार, नाश, समाप्ति ।

संघारना ( कि० म० ) नाश करना, संहारना, समाप्त  
करना ।

सञ्च ( सं० सत्य ) ( वि० ) सत्य, ठीक, साँच, हाँ,  
निश्चय, ( पु० ) सचाई, सचापन, ( कि० वि० )  
ठीक-ठाक, यथार्थ ।

सचमुच ( मुहा० ) ठीक-ठाक, यथार्थ ।

सञ्चराञ्चर ( स=साथ, चर=चलनेवाला, अञ्चर=न चलने-  
वाला ) ( वि० ) जीव, जंतु, पेड़, पत्थर आदि सब  
समेत, जड़-जगम ।

सचाई } ( सं० सत्यता ) ( स्त्री० ) सच, साँच, सचाई,  
सच्चाई } ईमानदारी, खरापन, शुद्धता ।

सच्चि } ( गच्=बाधना या सींचना ) ( स्त्री० ) इंद्राणी,  
सच्चा } इन्द्र की पत्नी ।

सच्चिव ( सच्=बाधना या सींचना ) ( पु० ) मंत्रा, सलाह  
देनेवाला ।

सच्चु ( पु० ) सत्य, आनंद, यथार्थता, सत्यता ।

सञ्चेत ( स=साथ, चेत=सुध या होश ) ( वि० ) चौकस,  
सावधान, होशियार ।

सञ्चेतन ( स=साथ, चेतना=बुद्धि, ज्ञान ) ( वि० ) ज्ञान-  
वान्, बुद्धिमान् ।

सञ्चेष्ट ( वि० ) चेष्टायुक्त, क्रियाशील, उद्योगी,  
यत्नवान् ।

सचौटी ( गच् ) ( स्त्री० ) सचाई, सचापन ।

सञ्चारित्र ( वि० ) नेकचलन, सदाचारी, अच्छे आच-  
रणवाला ।

सञ्चा ( सं० सत्य ) ( वि० ) ठीक सत्य, यथार्थ, ईमान-  
दार, विश्वासी, धार्मिक, खरा, शुद्ध, सात्विक ।

सञ्चिदानंद ( सच्=सदा या सच्=सच्चा, चित्=चेतन्य,  
आनंद=प्रसन्न या सुखरूप ) ( पु० ) ब्रह्म परमेश्वर,  
परमात्मा, परब्रह्म ।

सज ( सं० सज्ज, सस्ज=जाना ) ( स्त्री० ) डील, रूप, धज,  
शोभा ।

सजधज ( मुहा० ) बनाव, तैयारी, रूप, शोभा ।

सजग ( स=साथ, जागना=होशियार होना ) ( वि० ) साव-  
धान, सचेत, होशियार, खबरदार ।

सज्जन } ( सं० सज्जन ) ( पु० ) बड़ा आदमी, प्यारा,  
सज्जना } पति, ( स्त्री० ) प्यारी, प्रिया ।

सजना ( सं० सज्ज, सस्ज=जाना ) ( कि० अ० ) तैयार  
होना, बनना, बनाव करना, फटना, सोहना ।

सजनी ( सं० सज्जन ) ( स्त्री० ) सखी, सहेली ।

सजल ( स+जल ) ( वि० ) पानी से भरा हुआ, गीला,  
भोगा, तर, नम, जलपूर्ण, जलसहित ।

सजला ( पु० ) चार भाइयों में तीसरा, मँझला,  
( स्त्री० ) पानी से भरो हुई ।

सजाई ( सजाना ) ( स्त्री० ) तख्तवार के ग्यान या पर-  
तले की बनावट, तैयारी, सजावट, निर्माण, बनावट ।

सजाति ( स=वगदर या एक ही, जाति=जात ) ( वि० )  
एक जाति का ।

सजातीय ( स+जाति ) ( वि० ) एक जाति का, एक  
तरह का ।

सजाना ( सजना ) ( कि० स० ) तैयार करना, बनाना,  
सुधारना ।

सजावट ( स्त्री० ) तैयारी, बनावट ।

सजाला ( वि० ) सुडौल, सुंदर ।

सजीव ( स+जीव ) ( वि० ) जीता हुआ, जीवसहित,  
जिंदा ।

सजीवनी ( सजीव ) ( स्त्री० ) प्राण देनेवाली ।

सज्जन ( सच्=सच्चा, जन=मनुष्य ) ( वि० ) सत्पुरुष,  
साधु, भला आदमी, कुलीन, बड़ा आदमी,  
भद्रपुरुष ।

सज्जा ( स्त्री० ) वेष्ट, कवच, जिरा बखतर ।

सज्जी ( स्त्री० ) खारी मिट्टी, जिससे कपड़े साफ किए  
जाते हैं ।

संचना } ( सं० संचयन, सम्=अच्छी तरह से, चि=  
साँचना } इकट्ठा करना ) ( कि० स० ) इकट्ठा करना ।

संचय ( सम्=अच्छी भाँति से, चि=इकट्ठा करना ) ( पु० )  
देर, इकट्ठा, संग्रह, राशि ।

संचार ( पु० ) भ्रमण, पर्यटन, प्रचलन ।

संचारक ( सम्, चर्=चलना ) ( पु० ) नायक, रहबर, रहनुमा ।

संचारण ( पु० ) प्रकाशन, विकासन, संचालन, संचार, फैलाव ।

संचारिका ( सम्, चर्=जाना ) ( स्त्री० ) दूती जो नायक का सँदेश नायिका को या नायिका का सँदेश नायक को पहुँचाती है, प्राण, नासिका, युग्म, युगल, जोड़ा ।

संचालन ( सम्, चल=जाना ) ( पु० ) चलाना, फैलाना, व्यवस्था करना, प्रबंध करना ।

संचित ( तम्, चि=इकट्ठा करना ) ( वि० ) इकट्ठा किया हुआ, बटोरा हुआ, संग्रह किया हुआ ।

संजोयना ( सं० संयोजन, सम्, युज=मिलना ) ( कि०अ० ) तैयार करना ।

संज्ञान ( सं+ज्ञान ) ( वि० ) ज्ञानसहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्, बुद्धिमान् ।

सटक ( स्त्री० ) लचीली छड़ी जो एक ओर मोटी होती है और दूसरी ओर पतली ।

सटकना ( कि० स० ) भाग जाना, खिसकना, दीड़ जाना, चला जाना ।

सटकाई ( स्त्री० ) छिपना, लुकाव, उतार-चढ़ाव ।

सटकाना ( कि० स० ) छिपाना, संकोच करना ।

सटना ( सं० सन्नद्ध, सम्=अच्छी तरह से, नह=बाँधना ) ( कि०अ० ) मिलना, जुड़ना, चिपकना ।

सटपटाना ( कि०अ० ) घबराना, अचंभे में होना, पिछड़ना, विस्मित होना ।

सटल ( स्त्री० ) प्रलाप, बड़बड़, बकभक ।

सटा ( स्त्री० ) जटा, शिखा, चोटिया, केशर, अयाल, मिलाव, ( वि० ) गफिन ।

सटाना ( कि० स० ) चिपकाना, जोड़ना, मिलाना ।

सटासट ( वि० ) लगानार, एक पर एक, तर ऊपर ।

सटिया ( स्त्री० ) बाँस की पतली छड़ी, खपची, जकड़ी, आभूषण-विशेष, चूड़ी-विशेष ।

सटीक ( वि० ) टीकासहित, व्याख्यासहित ।

सटुकि ( कि०स० ) पतली छड़ी से मारकर, दबक के भागकर, धीरे से भागकर ।

सट्टावट्ट ( पु० ) हेराफेरी, अदलाबदली, उधर-इधर ।

सठियाना ( कि०अ० ) बढ़ा होना, बुढ़ीती के कारण दुर्बल और निर्बुद्धि होना ।

सठोड़ा ( पु० ) पुष्टई, एक प्रकार का लड्डू ।

सड़क ( स्त्री० ) राजमार्ग, शाही रास्ता, रोड, चौड़ा मार्ग, ग्राम रास्ता ।

सड़क ( वि० ) मरत, मतवाला ।

सड़न ( स्त्री० ) दुर्गंध, बदबू ।

सड़ना ( कि०अ० ) गलना, पचना, बिगड़ना, खराब होना ।

संड } ( वि० ) मोटा, ज़ोरदार, बलवान्, मजबूत,  
संडा } हठ-पुष्ट ।

संडमुसंड ( वि० ) खूब मोटा-ताज़ा और ज़ोरदार ।

संडसी } ( सं० सन्दशिनी, सम्=खूब, दंश=काटना )  
संडासी } ( स्त्री० ) गहवा, संगसी ।

संडास ( पु० ) जाज़रू, पाख़ाना ।

सड़ियल ( वि० ) निर्बल, सड़ा हुआ, अनुपयोगी, रही ।

सड़ोंध ( स्त्री० ) सड़ने की बास, सड़ने की गंध ।

सत् ( अम्=होना ) ( वि० ) सच, ठीक, सत्य, ( पु० ) ब्रह्म, परमेश्वर, आदर, विद्यमानता ।

सत् ( सं० सत्त्व ) ( पु० ) ज़ोर, बल, सार, हीर, रस, अर्क, सनोगुण ।

सतनम् ( सम्=साथ, तन्=फैलाना ) ( कि० वि० ) लगा-तार, निरंतर ।

सतराना ( कि०अ० ) क्रोधित होना, अप्रसन्न होना ।

सतर्क ( वि० ) सावधान, सचेत ।

सतलड़ी ( सात+लड़ ) ( स्त्री० ) सात लड़ की माला ।

सतसठ ( सं० सप्तष्टि ) ( वि० ) साठ और सात ।

सतसई ( स्त्री० ) } ( सं० सप्तशती ) एक पोथी का  
सतसैया ( पु० ) } नाम जिसकी विहारीखाल ने बनाया, इसमें ७०० दोहे व्रजभाषा में लिखे हैं ।

सतहत्तर ( सं० सप्तसप्ति, सप्त=सात, सप्ति=सत्तर ) ( वि० ) सत्तर और सात, ७७ ।

सतानंद ( सं० शतानन्द ) ( पु० ) गौतमश्चपि के बेटे और राजा जनक के पुरोहित ।

सताना ( सं० संतापन, सम्=साथ, तप्=तपाना )

( क्रि० म० ) दुःख देना, छेड़ना, खिझाना, तकलीफ देना ।

**सती** ( सत् ) ( स्त्री० ) पतिव्रता स्त्री, धर्मात्मा स्त्री, जो अपने पति की लाश के साथ जल जाती है, दत्त की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञ में योगाग्नि से जल मरी और कहने हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी ।

**सतीथ** ( वि० ) साथी, सहपाठी ।

**सतीवाङ्** ( पु० ) सती का स्थान, सती का अनुगमन करनेवाली स्त्रियों का श्मशान ।

**सतुआ** } ( सं० सकृत् ) ( पु० ) भूने अनाज का चूर्ण,  
**सत्तू** } सान् ।

**सत्कर्म** ( सत्=सच्चा या अच्छा, कर्म=काम ) ( पु० ) भला काम, अच्छा काम, पुण्य-पवित्र काम, नेक काम, सचा काम ।

**सत्कार** ( सत्=आदर, कृ=करना ) ( पु० ) आदर, सम्मान, खानि ।

**सत्क्रिया** ( सत्=अच्छा, कृ=करना ) ( स्त्री० ) सत्कार, सम्मान, पूजन, उत्तम काम ।

**सत्तम** ( वि० ) बड़ा साधु, बहुत सोधा ।

**सत्तमी** ( सं० गमनी ) ( स्त्री० ) सानवीं तिथि ।

**सत्तर** ( सं० गमति ) ( वि० ) दसगुना सात, सात दहाई, ७० ।

**सत्तरह** ( सं० सप्तदश ) ( वि० ) सात और दस, १७ ।

**सत्र** ( पु० ) स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, ठाँकना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब ।

**सत्रशाला** ( स्त्री० ) अन्न-जलादि के देने का स्थान, धर्मशाला ।

**सत्राजित** ( पु० ) श्रीकृष्ण का समुर, सत्यभामा का पिता ।

**सत्रिन्** ( पु० ) गृहस्थ, यजमान, दानी ।

**सत्ता** ( यस्=होना ) ( स्त्री० ) होना, विद्यमानता, बल, पराक्रम, ज़ोर, भलाई, उत्तमता, हस्ती ।

**सत्ताईस** ( सं० सप्तविंशति ) ( वि० ) बीस और सात २७ ।

**सत्तानवे** ( सं० सप्तनवति ) ( वि० ) नब्बे और सात, ६७ ।

१. अस्तीति सत्मतो भावः सत्ता=आत्मधारणानुकूलव्यापारः ।

**सत्तावन** ( सं० सप्तविंशति ) ( वि० ) पचास और सात, ६७ ।

**सत्तासी** ( सं० समाश्रयि ) ( वि० ) अस्सी और सात, ८७ ।

**सत्य** ( सत् ) ( वि० ) सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, सच्चा, खरा, ईमानदार, ( पु० ) साँच, सचाई, सत्ययुग, पहला युग, शपथ, ब्रह्मलोक ।

**सत्यता** ( सत्य ) ( स्त्री० ) सचाई, सचाँटी ।

**सत्यपुरुष** ( सत्य=सच्चा, पुरुष=आदर्श ) ( पु० ) साधु, सज्जन, भला आदमी ।

**सत्यभामा** ( सत्य=सच, भामा=कोधिनी स्त्री ) ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण की एक पत्नी और सत्राजित की बेटी ।

**सत्ययुग** ( सत्य+युग ) ( पु० ) पहला युग ( युग शब्द को देखो ) ।

**सत्यलोक** ( सत्य+लोक ) ( पु० ) ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवाँ लोक ।

**सत्यवादी** ( सत्य=सच, वादी=बोलनेवाला ) ( वि० ) सच बोलनेवाला ( पु० ) रास्तगो ।

**सत्यव्रत** ( पु० ) ( सत्य=सच्चा, व्रत=संकल्प ) ( पु० ) सत्यप्रतिज्ञ, राजा त्रिशंकु ।

**सत्यसंघ** ( पु० ) सत्यप्रतिज्ञ, दृढ़ मर्यादा जिसकी है ।

**सत्यानाश** ( सं० सत्य=सच, आनाश=बड़ी बरबादी ) ( पु० ) नाश, विनाश, बरबादी ।

**सत्यानाश करना** ( मुहा० ) नष्ट करना, बरबाद करना, खराब करना, बिगाड़ डालना ।

**सत्यानाश जाना** } ( मुहा० ) नष्ट होना, बरबाद  
**सत्यानाश होना** } होना, खराब होना, बिगाड़ जाना ।

**सत्त्व** ( सत् ) ( पु० ) सतीगुण, अतिबल, ज़ोर, चीज़, वस्तु, सार, प्राण, व्यवसाय, उद्यम, हृदय, नेचर ।

**सत्यानुत्** ( पु० ) वाणिज्य, व्यापार ।

**सत्वर** ( स=साथ, त्वरा=जल्दी ) ( वि० ) जल्दबाज़, उतावला, ( कि० वि० ) शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से ।

**सत्संग** ( पु० ) } ( सत्=अच्छा, संग या संगति=  
**सत्संगति** ( स्त्री० ) } साथ ) ( पु० ) अच्छी संगति, भले आदमी का साथ, अच्छी सोहबत ।

**सथश्व** ( पु० ) रण में मरे हुए की लाश ।

**सथिया** ( पु० ) ज़राई, अन्न-वैध, एक प्रकार का मंगल-चिह्न ।



रुद् ( कि० वि० ) तत्काल, उसी समय, ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम ।

सद्ग ( सद्=ज्ञाना या बैठना जिसमें ) ( पु० ) घर, स्थान, जगह, पानी ।

सद्गुमति ( सत्+अनुमति ) ( स्त्री० ) अच्छी सम्मति, अच्छी सलाह ।

सद्ग्य ( स=साध+दया=हृपा ) ( वि० ) दयालु, दया-सहित, कीमल ।

सद्गत् ( सत्+असत् ) ( पु० ) सच-भूट, रास्तदरोग ।

सद्ग्य ( पु० ) सभासद, पंच, निरीक्षक, सभा में बैठनेवाला ।

सदा ( कि० वि० ) नित, हमेशा, नित्य, रोज-रोज ।

सदाई ( कि० वि० ) सदा, सर्वदा, सदा ही ।

सदागति ( पु० ) वायु, पवन, हवा, सदा चलनेवाला ।

सदाचार ( सत्+आचार ) ( पु० ) सनातनधर्म, उत्तमाचरण, नेकचलन ।

सदानंद ( सदा+नंद ) ( पु० ) सदाशिव, महादेव, ( वि० ) हमेशा प्रसन्न ।

सदाव्रत ( सदा+व्रत ) ( पु० ) भूखों को अथवा अति-थियों को खाना या अन्न देने का नियम ।

सदाशिव ( सदा+शिव ) ( पु० ) महादेव, शंभु, शिव, शंकर ।

सदासुहागिन ( स्त्री० ) पुत्र-विशेष, वेश्या, पत्नी-विशेष ।

सदृश } ( स=बराबर, दृश्=देखना ) ( वि० ) बराबर,  
सदृत् } समान, तुल्य, एक-सा ।

सदृश ( कि० वि० ) समीप, पास, निकट ।

सदैव ( कि० वि० ) सदा, हमेशा, सर्वदा, नित्य ।

सदोप ( वि० ) दांपी, अपराधी, अवगुणो ।

सद्गति ( सत्=अच्छी, गति=दशा ) ( स्त्री० ) उत्तम गति, मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, धर्म, नेकी, संपदा, संपत्ति ।

सहल ( पु० ) समूह, गिरोह, वृंद ।

सद्भाव ( पु० ) प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, निष्कपटता, बेमक्र, प्रेमभाव ।

सद्य ( पु० ) गृह, मकान ।

सद्यः ( स=साथ, दिव्=चमकना ) ( कि० वि० ) तुरंत, कौरव, उसी दम, तत्काल, तत्क्षण ।

सद्वक्त्रा ( वि० ) उत्तम वक्त्रा, उत्तम व्याख्याता ।

सद्विवेचक ( वि० ) उत्तम निर्णायक ।

सधना ( सं० सान ) ( कि० अ० ) बनना, खूब सिखाया जाना, अच्छी तरह से शिक्षा पाना ।

सधवा ( स=साध, धव=पति ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसका पति जीता हो, सुहागिन ।

सधाना ( सं० साधन ) ( कि० म० ) सिखाना, बनाना, हिलाना ।

सध्यन् ( पु० ) सहचर ।

सध्रीची ( स्त्री० ) सहचरी ।

सन् ( सं० शण, शण्=देना ) ( स्त्री० ) एक पौदा जिसके तारों की रस्सी बनती है, अँगरेज़ी संवत्, ईसवी संवत् ।

सन ( अ० ) से, साथ ।

सनक ( सन्=सेवा करना, देना ) ( पु० ) एक मुनि का नाम, ब्रह्मा का बेटा जो सदा बालकरूप रहता है ।

सनत्कुमार ( सन्त्=मदा या ब्रह्मा, कुमार=बालक ) ( पु० ) ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है ।

सनंद } ( स=साथ, नंद=आनंद ) ( पु० ) ब्रह्मा का  
सनंदन } बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है ।

सनना ( कि० अ० ) गर्भधारण करना, गुंथना ।

सनसनाना ( कि० अ० ) 'सनसन' ऐसा शब्द करना ।

सनाढ्य ( पु० ) ब्राह्मणों की एक जाति ।

सनातन ( सना=मदा ) ( पु० ) ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है, ( वि० ) नित्य, सदा, हमेशा, अनादि, सदा का, हमेशा का, परंपरा ।

सनाथ ( स+नाथ ) ( वि० ) जिसके मास्तिक और सहायक हों, सपक्ष ।

सनाह ( सं० मन्नाह, सम्=अच्छी तरह से, नह्=बांधना ) ( पु० ) बद्धतर, जिरह, कवच ।

सनिया ( पु० ) वस्त्र-विशेष, टसर का कपड़ा ।

सनीचर ( सं० शनिश्चर ) ( पु० ) सातवाँ ग्रह, शनिवार ।

सनीचरा ( सनीचर ) ( वि० ) अभागा ।

सनेह ( सं० स्नेह ) ( पु० ) प्यार, प्रीति, नेह, छोह, मोह, प्रेम ।

संत ( मन् ) ( पु० ) साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा ।  
संतत ( सम्=साथ, तन्=कतना ) ( कि० वि० ) लगा-  
तार, निरंतर, सदा, नित, हमेशा, विस्तीर्ण, फैला  
हुआ ।

संतति ( सम्=साथ, तन्=कतना ) ( स्त्री० ) लक्षके-  
वत्, वेशपाता, संनान, वंश ।

संतप्त ( सम्=ग्रन्थी तरह से, तप्=तपना या तपाना )  
( वि० ) तपा हुआ, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, दुःखी ।

संतर्ण ( पु० ) तैरना, तरना, पार जाना, मुक्त होना ।

संता ( वि० ) त्रिगडल, नष्ट, बुरा ।

संतान ( सम्=साथ, तन्=कतना ) ( पु० ) लड़काबच्चा,  
वंश, कुटुंब, लताओं की लंबी टहनियाँ ।

संताप ( सम्=ग्रन्थी तरह से, तप्=तपना ) ( पु० ) शोक,  
सोच, क्रिडा, चिन्ता, पीडा, दुःख ।

संतापक ( वि० ) दुःखदाता ।

संतापित ( वि० ) पीड़ित, सताया गया, सताया हुआ ।

संती ( अव्य० ) खानि, बदले, लिये ।

संतुष्ट ( सम्=ग्रन्थी तरह से, तप्=प्रमत्त होना ) ( वि० )  
प्रसन्न, नृत्त, हर्षित, मनभर, संतोष के साथ ।

संतुष्टि ( सम्+तुप्+ति ) ( स्त्री० ) संतोष, प्रसन्नता, सब ।

संतोष ( सम्=ग्रन्थी भाति से, तप्=प्रमत्त होना ) ( पु० )  
सब, नृत्ति, आनंद, सुख ।

संतोषक ( वि० ) तुष्टिकर, नृत्तिकर ।

संतोषित ( वि० ) हर्षित, आनंदित, संतुष्ट किया  
हुआ ।

संतोषी ( संतोष ) ( पु० ) संतोष रखनेवाला, सव्वाला ।

संधा ( सम्=संस्था, सम्=ग्रन्थी तरह से, स्था=ठहरना )  
( स्त्री० ) पाठ, सबक, पढ़ना ।

संदर्भ ( सम्=ग्रन्थी तरह से, र्भ=बनाना ) ( पु० ) रचना,  
प्रबंध, गुहना, इतिज्ञान, गूढ़ार्थप्रकाश ।

संदर्शन ( पु० ) साक्षात्कार, भेंट, देखादेखी, मुलाकात ।

संदान ( पु० ) घोड़े आदि बाँधने की रस्सी, सुनारों  
के एक हथियार का नाम ।

संदग्ध ( सम्=साथ, दिह=बढ़ना ) ( वि० ) संदेहयुक्त,  
जिसमें संदेह पाया जाय ।

संदिग्धभूत ( पु० ) ध्याकरणसंबंधी काज-विशेष ।

संदेश ( सम्=साथ, दिश=देना ) ( पु० ) संदेश, समा-  
चार, खबर, वृत्तान्त ।

संदेशी ( पु० ) दून, खबर पहुँचानेवाला, पैगंबर, भेदिया ।

संदेह ( सम्=साथ, दिह=बढ़ना या इकट्ठा करना ) ( पु० )  
शक, संशय, शुबहा, शंका ।

संदेहक ( वि० ) शकी, शुबही, संशयी, संदेही ।

संदोह ( सम्, दुह=दुहना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से  
इकट्ठा होना अर्थ हो जाता है ) ( पु० ) समूह, बहुत,  
गिरोह, मज्जमुआ ।

संधा ( सम्+धा=रखना ) ( स्त्री० ) प्रतिज्ञा, मर्यादा,  
स्थिति, ( वि० ) उपविष्ट, बैठा हुआ, मिश्रित,  
युक्त ।

संधान ( सम्=ग्रन्थी भाति से, धा=रखना ) ( पु० ) भेद  
लेना, खोज, अन्वेषण, पता, जोड़ना, मिलाना,  
युक्ति, परामर्श, कार्यप्रवृत्ति, आचरण ।

संधाना ( पु० ) अक्षर ।

संधि ( सम्=साथ, धा=रखना ) ( स्त्री० ) मेल, मिलाप,  
व्याकरण में दो अक्षरों का मिलाव, सुलह, मेल  
करना, दो राजाओं में आपस में मेल होना, शरीर  
में दो हड्डियों का जोड़, संध, दरार, छेद ।

संध्या ( सम्=ग्रन्थी तरह से, ध्य=ध्यान करना ) ( स्त्री० )  
सौंझ, सायंकाल, शाम, प्रभात, दोपहर और सौंझ  
इन तीन समय की पूजा, जप, ध्यान आदि ।

सन्धु ( वि० ) लगा हुआ, तैयार, प्रस्तुत ।

सन्धा ( सं० सन्धान ) ( कि० अ० ) मिलना, जुड़ना,  
सटना, सनना ।

सन्धाटा ( पु० ) पानी या हवा से जो शब्द होता है,  
निःशब्दस्थान, निर्जन, नीरव ।

सन्धाह ( पु० ) कवच, बखतर, युद्ध में पहनने का जोहे  
का अंगरखा ।

सन्धिकर्ष ( पु० ) सन्निधान, समीप ।

सन्निधान ( सम्+निधान ) ( पु० ) समीप, निकटता ।

सन्निधि ( स्त्री० ) समीप, निकट, नज़दीक, पास ।

सन्निपात ( तन्=साथ, नि=निचे, पत्=गिरना ) ( पु० )  
एक तरह का रोग जो कफ, वात और पित्त के  
मिश्रण से होता है, त्रिदोष, सरसाम ।

सन्निहित ( वि० ) समोपा, निकटस्थ ।

संन्यास ( सम्, नि, अत्=कटना ) ( पु० ) चौथा आश्रम,  
संन्यासी का धर्म, संसार की चीज़ों का त्याग ।

संन्यासी ( संन्यास ) ( पु० ) चतुर्थ-आश्रमी जो संसार

को छोड़ देता है, परमहंस, योगी, यती, त्यागी ।  
सपत्न ( स=साथ, पत्न=पत्नी या सहायता ) ( वि० ) सहा-  
यक, साथी, पंखोंवाला, पंखों के साथ ।

सपदि ( स=साथ, पद=पदाना ) ( क्रि० वि० ) तुरंत, ऋट-  
पट, शीघ्र ।

सपना ( सं० स्वप्न ) ( पु० ) नींद में जो कुछ देखा  
जाय, नींद में जो खयाल पैदा हो, जागने में जो  
देखते-सुनते अथवा चिंतन करने हैं उन्हीं खयालात  
को सोते में देखना ।

सपलव ( स+पलव ) ( वि० ) नये-नये पत्ते टहनी के  
साथ ।

सपिंड ( पु० ) वे बांधव जो सात पीढ़ियों में हों ।

सपुत्र } ( सं० सपुत्र ) ( पु० ) अच्छा लड़का, सुशील  
सपूत } बेटा, बेटे के साथ, पुत्रसहित ।

सपोला } ( सं० सर्पपात, सर्प=साप, पोत=वचा )  
सपोलिया } ( पु० ) सर्प का वचा ।

सप्त ( सप्त=मिलना ) ( वि० ) सात, ७ ।

सप्तचत्वारिंशत् ( सप्त+चत्वारिंशत् ) ( वि० ) सात  
और चालीस, सैंतालिस, ४७ ।

सप्तदश ( सप्त+दश ) ( वि० ) सत्रह, १७ ।

सप्तद्वीप ( पु० ) सात द्वीप—१ जंबू, २ प्लव, ३ कुश,  
४ क्रीच, ५ शक, ६ शालमली और ७ पुष्कर ।

सप्तपाताल ( पु० ) सात पाताल—१ अतल, २ वितल,  
३ सुतल, ४ रसातल, ५ महातल, ६ तलातल  
और ७ पाताल ।

सप्तपुरी ( स्त्री० ) सात पवित्र नगरियाँ—१ अयोध्या,  
२ मथुरा, ३ माया, ४ काशी, ५ कांची, ६ अवन्तिका,  
और ७ द्वारका ।

सप्तमी ( सप्त ) ( स्त्री० ) सत्तमी, सातवीं तिथि ।

सप्तर्षि ( सप्त+ऋषि ) ( पु० ) १ कश्यप, २ अत्रि, ३  
भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम, ६ वसमदग्नि, ७  
वशिष्ठ ।

सप्तसागर ( पु० ) सात समुद्र—१ लार अर्थात् लवण  
२ ह्यु, ३ दधि, ४ क्षीर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६  
मदिरा और ७ घृत ।

सप्तस्वर ( पु० ) गाने के सात स्वर—१ पङ्कज, २ गांधार,  
३ श्रवण, ४ निषाद, ५ मध्यम, ६ धैवत और ७  
पंचम ।

सप्ताह ( सप्त=सात, अहन्=दिन ) ( पु० ) सात दिन,  
हफ्ता, अठवारा, हफ्ता ।

सप्रीत ( स+प्रीति ) ( वि० ) प्यार से, प्यारसहित,  
प्यार के साथ ।

सप्रेम ( स+प्रेम ) ( वि० ) प्यार-सहित, प्यार के साथ ।

सफा ( पु० ) यात्रा, प्रवास ।

सफरी ( स्त्री० ) मक्ख, मछली, पुंढो या शहरी  
मछली, ( वि० ) सफर से तन्मल्लुक रखनेवाला ।

सफल ( स+फल ) ( वि० ) फलसहित, सिद्ध, फल  
देनेवाला, कुतार्थ, सार्थक, कामयाब ।

सय ( सं० सर्व ) ( सर्वना० ) सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण,  
समस्त ।

सयरम् ( पु० ) जल, पानी, नमक ।

सवल ( स=पार्थी, वल=तोर या मेना ) ( वि० ) बलवान्,  
जोरावर, सामर्थ्यवान्, प्रौढ़, सेना के साथ ।

सवेर ( वि० ) समय से पहले, ठीक समय, पहले ।

सवेरा } ( सं० सुबेला, सु=यच्छा, बेला=गमय ) ( पु० )  
सुवेरा } भोर, बिहान, पी, तड़का, प्रभात,  
प्रातःकाल ।

सभय ( स=पाय, भय=डर ) ( वि० ) डरा हुआ, डर  
के साथ, सशंक, भौंतियुक्त ।

सभा ( स=साथ, भा=चमकना ) ( स्त्री० ) समाज,  
मंडली, राजदरबार, दरबार, पंचायत, मजलिस,  
जलसा ।

सभापति ( सभा+पति ) ( पु० ) सभा का मालिक,  
मीर-मजलिस प्रेसीडेंट, चेयरमेन ।

सभासद् ( सभा=समाज, सद=बैठना ) ( पु० ) सभा में  
बैठनेवाला, सभा का मेंबर, दरबारी ।

सभिक ( पु० ) मजलिसी, सभ्य, मेंबर, जुआ खेलाने-  
वाला, नाल निकासनेवाला ।

सभीत ( स+भीत ) ( वि० ) डरा हुआ, सभय ।

सभ्य ( सभा ) ( वि० ) सभा के योग्य, चतुर,  
बुद्धिमान् ।

सम् ( उपस० ) अच्छी तरह से, भले प्रकार से, सुन्दरता  
से, भली भाँति से, साथ, से, बहुत, सब तरह  
से, पास, सामने, शुद्ध ।

सम ( वि० ) बराबर, तुल्य, समान, सदृश, सब, पूरा,  
सबु, दो बार छः आदि की संख्या ।

समन्त (अव्य०) समीप, (वि०) समुख, प्रत्यक्ष,  
नेत्रगोचर, सामने ।

समग्र (सम्=सब तरह से, अग्र=आगे या सम्=सब, ग्रहू=  
लेना) (वि०) सब, सारा, पूरा, संपूर्ण ।

समग्रता (स्त्री०) संपूर्णता ।

समज्या (सम्=सब, अज्=जाना) (स्त्री०) सभा, कीर्ति ।

समझ (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, अकल, बूझ, समझति,  
राय, विचार, ध्यान ।

समझदार (वि०) चतुर, ज्ञानी, बुद्धिमान् ।

समझना (कि० स०) जानना, बूझना, विचारना ।

समंजस (पु०) योग्यता, औचित्य, योग्य ।

समता (सम) (स्त्री०) बराबरी, तुल्यता, सादृश्य,  
सुताबिकृत ।

समभिभुज (पु०) जिस अभिभुजनेत्र की तीनों भुजाएँ  
बराबर हों ।

समदर्शी (सम्=बराबर, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना)  
(वि०) दोनों ओर बराबर देखनेवाला, पक्षपात  
न करनेवाला, पक्ष न करनेवाला, निरक्ष ।

समधियाहु (वि०) जिस त्रिकोण की दो भुजाएँ  
बराबर हों ।

समधिनि (समधी) (स्त्री०) बेटे या बेटे की सास ।

समधियाना (समधी) (पु०) समधी का घराना  
अथवा घर ।

समधी (सं० संबंधी) (पु०) बेटे या बेटे का समुर,  
सगा, नातेदार, संबंधी ।

समंतात् (अव्य०) सब, सर्वत्र, चारों ओर ।

समन्त (पु०) सेंहुक का पेड़ ।

समन्वय (पु०) मेल, अनुगतता, समझौता, आपस में  
मेल, लक्षण का लक्ष्य में घटना ।

समन्वित (वि०) संयुक्त, समेत, सहित, साथ ।

समपृष्ठ (वि०) समतल, बराबर ।

समथल (वि०) बराबर बलवाला ।

समय (सम्=साथ या सब तरह, इग्न=जाना) (पु०)  
काल, वक्त, बेला, समर्थ, अवसर, कुरसत ।

समर (सम्=साथ, ऋ=जाना) (पु०) लड़ाई, युद्ध,  
रण ।

समर्थ (सम्=साथ, अर्थ=धन) (वि०) बलवान्, योग्य,  
लायक, पराक्रमी, शक्तिमान् ।

समर्थन (सम्=सब, अर्थन=माँगना, याचना) (पु०)  
प्रमाणित करना, ताईद करना, सिद्ध करना ।

समर्थना (कि० स०) सिफारिश करना, प्रमाणित  
करना, पुष्ट करना, (स्त्री०) प्रार्थना, सिफारिश ।

समर्थाधिकारी (पु०) हाकिम मजाज़ ।

समर्पण (पु०) सौंपना, त्याग, अर्पण, दान ।

समर्पना (सं० समर्पण, सम्+कृ + इ+अन, सम्=साथ,  
अर्पण=भेंट देना) (कि० स०) देवता को भेंट  
देना, सौंपना, अर्पण करना ।

समर्पित (वि०) दिया हुआ, प्रदत्त, दान किया हुआ,  
सौंपा गया ।

समल (वि०) मलयुक्त, मखिन, मैला ।

समवाय (सम्+अव+इग्न=जाना) (पु०) मिलावट,  
मेल, इत्तिफाक, संबंध, भीड़, समूह, समुदाय,  
न्याय-शास्त्रानुसार एक संबंध का नाम ।

समवेदना (स्त्री०) विपत्ति या दुःख में समान रूप से  
साथ देना ।

समशील (वि०) समानशील, तुल्य-स्वभाव ।

समसूत्रपात (पु०) जल की थल लेना, डोरी से मापना,  
जल की गहराई का पता लगाना ।

समस्त (सम्=साथ, अस्त=कटना या होना) (वि०)  
सब, सारा, संपूर्ण, पूरा, तमाम ।

समस्या (सम्, अस्त=कटना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने  
में मिलना या संक्षेप होना अर्थ होता है) (स्त्री०)  
शङ्कोर या दोहे-चौपाई आदि संस्कृत और हिंदी  
छंदों का एक पद, जो उस छंद को पूरा करने के  
लिये दिया जाता है, तर्ज, तरह, इशारा, पहेली,  
विचारणीय विषय ।

समा } (सं० समय) (पु०) समय, वक्त, दशा,  
समर्प } अवस्था, एक ताक, एक लय, एक स्वर,  
शोभा ।

समा वैधना (महा०) राग का छा जाना ।

समाई (ममाना) (स्त्री०) समाव, फैलाव, चौड़ाई,  
गुंजाइश, शास्त्र, संतोष, धीरज, सामर्थ्य ।

समाकर्षण (सम्+आकर्षण, कृष=खींचना) (पु०)  
संबंध, तहसील ।

समाकुल (सम्=सब प्रकार से, आकुल=परेशान) (वि०)  
ब्याकुल, दुःखी, परेशान ।

समागम ( सम्=साथ+आगम=आना ) ( पु० ) आगमन, आना, आशुई, मिलना, मुलाकात, मिलान, संयोग, मजमा, भीड़भाड़, मेला ।

समाचार ( सम्=साथ, आ=चारों ओर से, चर=चलना ) ( पु० ) संदेश, खबर, वृत्तांत, हाजि ।

समाचारपत्र ( पु० ) पत्र, अखबार, स्वादपत्र ।

समाज ( सम्=साथ, अज्=जाना ) ( पु० ) सभा, साथ, समूह, कुंड ।

समाजी ( सं० समाजीय ) ( पु० ) बजंत्री, तबलजी जो नाच में तबला बजाता है, सभासद ।

समाधान ( सम्, आ, धा=रखना ) ( पु० ) किसी शंका अर्थात् दलील का ठीक उत्तर, जो दो आदिमी किसी बात पर वाद करते हैं उनका निपटारा करना, शक रफा करना, दमदिलासा, डारस, हतमीनान, धीरज, शान्ति, परमेश्वर का ध्यान ।

समाधि ( सम्, आ, धा=रखना ) ( स्त्री० ) गंभीर मन से ध्यान, योगाभ्यास, हृदयम करना, इंद्रियों को रोकना और मन को परमेश्वर के ध्यान में लगाना, वह जगह जहाँ योगी और सन्यासियों को गाढ़ते हैं ।

समान ( स=बराबर, मा=नापना ) ( वि० ) बराबर, तुल्य, एक-सा, सदृश, एक ही ( सम्=अच्छी तरह से, अन्=जीना ) ( पु० ) पाँच प्राणों में एक प्राण ।

समानता ( स्त्री० ) समता, बराबरी ।

समानवर्ती ( पु० ) धर्मराज, ( वि० ) एक-रस ।

समाना ( सं० सम्मान, सम्=अच्छी तरह से, मा=नापना ) ( क्रि० अ० ) अटना, अमाना, भरना, पूना ।

समानांतर ( पु० ) बीच, बराबर, दो रेखाओं के बीच का समान अंतर, तुल्यंतर ।

समाप्त ( सम्=साथ, आप्=पाना या फैलना ) ( वि० ) पूरा, संपूर्ण, हो चुका, सिद्ध, इति, खत्म, तमाम, अंत, आखिर ।

समाप्ति ( स्त्री० ) अवसान, पूर्ति, पूर्णता, खतमा ।

समाप्य ( वि० ) खत्म किया जानेवाला, पूर्ण किया जानेवाला, पूरा करने योग्य ।

समारोह ( सम्+आ+रुह्=चढ़ना ) ( पु० ) भीड़भाड़, धूमधाम, जमाव, मेला ।

समालू ( पु० ) एक प्रकार का पीदा ।

समालोचना ( स्त्री० ) भली भाँति देखना-भालना, अच्छी तरह विचारना, छानबीन करना ।

समावेश ( पु० ) प्रवेश, संग्रह, अटना ।

समास ( सम्, अस्=फेकना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ मिलना या संक्षेप होना होता है ) ( पु० ) संक्षेप, अविग्रह, व्याकरण में दो-तीन आदि पदों का मेल, व्याकरण में समास छः हैं— ( १ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ द्विगु, ४ बहुव्रीहि, ५ अव्ययीभाव, ६ द्वंद्व ) ।

समाहित ( सम्+आ+धा=रखना ) ( वि० ) स्थिर, अच्छल, मुतमैश्चन, समाधिस्थ ।

समाह्वान ( पु० ) बुलाना, पुकारना ।

समिध ( सम्, इन्ध्=जलना या चमकना ) ( स्त्री० ) होम की लकड़ी या सामग्री ।

समीकरण ( सम्=बराबर, कृ=करना ) ( पु० ) बराबर करना, बीजगणित में एक तरह का गणित, जिसमें दो राशियाँ बराबर होती हैं ।

समीकार ( पु० ) बराबर करनेवाला, समान बनानेवाला ।

समीचीन ( सम्=अच्छी भाँति से, अन्=जाना ) ( वि० ) सच, यथार्थ, ठीक, उत्तम, योग्य, बहुत अच्छा ।

समीप ( सम्=साथ, आप्=फैलना ) ( क्रि० वि० ) पास, नगीच, निकट, नज़दीक ।

समीर ( सम्=अच्छी भाँति से, ईर्=जाना ) ( पु० ) हवा, पवन, वायु ।

समीरण ( पु० ) पवन, वायु, हवा ।

समोहा ( सम्+ईह्=चेष्टा करना ) ( स्त्री० ) लज्जा, शर्म ।

समुचित ( वि० ) योग्य, यथार्थ, उचित, उपयुक्त ।

समुच्चय ( सम्=साथ, उन्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना ) ( पु० ) इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह, वाक्यों का मेला, अंक ।

समुज्झत ( सम्+उज्झ्=त्यागना ) ( वि० ) त्यक्त, छोड़ा हुआ ।

समुदाय ( सम्+उत्, इण्=जाना ) ( पु० ) ढेर, समूह, इकट्ठा, राशि, सब, गिरोह ।

समुद्र ( सम्=सब तरह से, उन्द=भिगोना या सम्=सब तरह से, उद=ऊपर अथवा बहुत, दा=देना ) ( पु० ) सागर, समंदर, जलनिधि ( सागर शब्द का देखो ) ।

समृचा ( सं० समृचय ) ( वि० ) सारा, पूरा, सब का सब, तमाम ।

समृद्ध ( सम्, ऊद्=वर्क करना, पर सम् उपपत्ति के साथ आने में इसका अर्थ इकट्ठा होना होता है ) ( पु० ) भीड़-भाड़, भुंड, थोक, समुदाय, ढेर, गिरोह ।

समृद्ध ( सम्=यव तरह में, वृद्ध=वृद्धता ) ( वि० ) भाग्यवान्, संपदावाला, धनवान्, समर्थ, दौलतमंद ।

समृद्धि ( श्री० ) बहुत उन्नति, बहुत बढ़ती, बहुत तरकी ।

समं { ( सं० समय ) ( पु० ) समय, वक्त, अवकाश,  
समं { कुरमत्, अग्रर, मौका, असल ।  
समैया {

समेटना ( कि० म० ) इकट्ठा करना, बटोरना, भिकोड़ना ।

समेत ( सम्, आ, इण्=ज्ञाना ) ( कि० वि० ) साथ, सहित, संयुक्त, मय ।

समोना ( सं० शमन, शम=ठंडा करना ) ( कि० म० ) गले पानी में ठंडा पानी डालकर कुछ ठंडा करना, मानना ।

संपत्ति ( सम्=अच्छी तरह में, पद=ज्ञाना ) ( श्री० ) धन, दौलत, सुख, संपदा, सुभाग, बढ़ती, न्यामत ।

संपद् { ( सम्=अच्छी तरह में, पद=ज्ञाना ) ( श्री० )  
संपदा { संपत्ति, धन, दौलत, विभव, न्यामत,  
अशिया ।

संपन्न ( सम्, पद=ज्ञाना ) ( वि० ) युक्त, शालिष्ठ, पूरा, परिपूर्ण, संपूर्ण, भिद्धि-युक्त, भाग्यवान्, संपदावाला ।

संपर्क ( सम्+पर्क=मेल ) ( पु० ) संसर्ग, लगाव, संबंध ।

संपात ( सम्, पा=गिरना ) ( पु० ) गिरना, रेखापणित में वह जगह जो चक्र के धेरे को छूने पर बढ़ाने से उसको न काटे, स्वत-समाप्त ।

संपाति ( सम्, पन्=गिरना ) ( पु० ) जटायु गोत्र का भाई, जिसकी कथा रामायण में है ।

संपादक ( सम्=यच्छा तरह में, पद=चलना अर्थात् किसी काम को नगानेवाला या पूरा करनेवाला ) ( पु० ) पूरा करनेवाला, प्रबंध करनेवाला, पानेवाला, कार्यवाहक, निरूपक, समापक, कहनेवाला, बयान करनेवाला ।

संपादन ( पु० ) निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन ।

संपुट ( सम्=साथ, पुट=मिलना ) ( पु० ) डब्बा, मिछना ।

संपुटक ( पु० ) पिटारा, डब्बा ।

संपूर्ण ( सम्=सब तरह से, पूर्ण=पूरा ) ( वि० ) पूरा, परिपूर्ण, सब, सारा, समाप्त ।

संप्रति ( कि० वि० ) इसदानीम्, अब, अभी ।

संप्रदान ( सम्=अच्छी तरह से, प्र=बहुत, दा=देना ) ( पु० ) दान देना, व्याकरण में चौथा कारक, मफ-ऊललहु ।

संप्रदाय ( सम्, प्र+दा=देना ) ( श्री० ) परंपरा का धर्म, कुल-धर्म, परिपाटी, रसूमात कदीम ।

संप्रेषित ( सम्+प्र+इष्=ज्ञाना ) ( वि० ) पठाया गया, ज्ञारिज हुआ, भेजा गया ।

संबंध ( सम्=साथ, बन्=बोधना ) ( पु० ) मेल, लगाव, योग, नाता, रिश्ता, व्याकरण में छठा कारक या पष्ठी विभक्ति ।

संबंधी ( संबंध+इत् ) ( पु० ) संबंध रखनेवाला, समधी, नातेदार, रिश्तेदार, मुजारा ।

संबल ( सम्ब=ज्ञाना या सम्=मे, बल=ज्ञाना ) ( पु० ) राहस्य, तोशाराह, मार्गध्यय, पानी ।

संबलित ( सम्+बल=ज्ञाना ) ( वि० ) समेत, सहित, मय ।

संबुद्ध ( सम्+बुद्=समझना ) ( वि० ) समझाया गया ।

संबोधक ( सम्+बुद्=जतलाना ) ( पु० ) जतानेवाला, मुनादी ।

संबोधन ( सम्, बोधन=जतलाना, बुद्=जानना ) ( पु० ) जतलाना, चिताना, सामने करना, पुकारना, व्याकरण में आठवाँ कारक, हर्कनिदा ।

संबोधित ( वि० ) पुकारा गया, जताया गया, मुनादी ।

संभव ( सम्, भू=होना ) ( पु० ) उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, कारण, मिछना, ( वि० ) होनहार, होने योग्य, उचित, योग्य ।

संभावना ( सम्, भू=होना ) ( श्री० ) संभव होना, इच्छा, चाह, संदेह, द्विधा, वह किया जिससे वर्तमान और भविष्यत्काज जाना जाय ।

संभाषण ( सम्=अच्छी तरह से, भाष्=कहना ) ( पु० ) बोलचाह, बातचीत ।

संभोग ( सम्+भुज्=ज्ञाना ) ( पु० ) हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन, शृंगारभेद ।

संभ्रम' (सम्=साथ, भ्रम्=वृमना) (पु०) घबराहट, हड़बड़ी, वेग, उतावली, घूमना, डर, आदर, सम्मान, खातिरदारी।

सम्मत् (सम्=सब तरह से, मन्=समझना) (वि०)

अनुमत, स्वीकृत, राय के सुवाकिक।

सम्मति (सम्=अच्छी भाँति से, मन्=जानना) (स्त्री०)

सलाह, विचार, राय, चाह, इच्छा।

सम्मतिपत्र (पु०) राज्ञीनामा, सुलहनामा।

सम्मान (सम्=साथ, मान=आदर) (पु०) आदर, सत्कार।

सम्मार्जनी (सम्, मृज्=साफ करना) (स्त्री०) बढ़नी, झाड़ू, कुँची, बुर्स, कुचरा।

सम्मुख (सम्=साथ या सामने, मुख=मुँह) (वि०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सम्यक् (सम्=अच्छी भाँति से, अच्=जाना) (क्रि० वि०) अच्छी भाँति से, भले प्रकार से, ठीक, योग्यता से, सब तरह से, सब भाँति से, लियाकत के साथ।

सम्राज { (राज=शोभा देना) (पु०) सब भूमि का  
सम्राट् } मालिक, राजसूययज्ञकर्ता, सर्वभूमाश्वर, चक्रवर्ती राजा।

सयाना { (सं० सज्ञान) (वि०) समझदार, चतुर,  
सियाना } प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्, पक्का, बूढ़ा,  
स्याना } अनुभवी।

सर (सृ=जाना) (पु०) सरोवर, तालाब, झील, तौर, बाण, पानी, जल।

सरकंडा (सं० शरकांड) (पु०) नरकट, नरसल।

सरकना (सृ=जाना) (क्रि० अ०) हडना, टकना, चलना, भागना, लिखकना।

सरघा (सर=रस, हन्=जाना, मारना) (स्त्री०) मधु-मलिका, शहद की मक्खी।

सरट (सृ=जाना) (पु०) गिरगिट।

सरदा (पु०) खरबूजा या दशांगुल।

सरन { (सं० शरण) (पु०) आसरे की जगह,  
सरना } बचाव की जगह, बचाव, पनाह।

सरना (क्रि० अ०) बनना, चकना, निकलना, पूरा होना, सब जाना।

सरपट (स्त्री०) बगलूट दीढ़, घोड़े की बेतहाशा दौड़।

१. संभ्रमत्रयमिच्छन्ति भयमुद्वेगमादयम्।

सरपट फँकना (पहा०) घोड़े को बगलूट दौड़ाना।

सरपत (पु०) पतली पतावर, सेंठा।

सरपोश (पु०) ढकना, ढपना, चिखम हाँकने की चीज़।

सरवरि { (स्त्री०) समानता, बराबरी। जैसे—'हमहिं  
सरवरि } तुमहिं सरवर कस नाथा'—रामायण।

सरय (पु०) एक जाति का बंदर, (अथ०) शीघ्रता, जल्दी।

सरयू { (सृ=जाना) (स्त्री०) एक नदी जो अयोध्या  
सरयू } के पास बहती है; उसकी घाघरा, घघरा, देविका और देवा भी कहते हैं।

सरल (सृ=जाना) (वि०) सीधा, सोफा, सचा, ईमानदार, धर्मात्मा, भोला जो छल-कपट न जानता हो, निष्कपट, सीधा, सादा, (पु०) एक पेड़ का नाम जिसकी सरो कहते हैं।

सरवर (सं० सरोवर) (पु०) ताल, तलाब, झील, पोखरा, तालाब।

सरस (सृ=जाना) (पु०) तालाब, सरोवर, पानी, जल।

सरस { (सं० श्रेयम्) (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत  
सरसा } अच्छा, अधिक, बहुत।

सरस (म=साथ, रम=स्वाद या पानी) (वि०) रसीला, रसवाला, (पु०) सरोवर।

सरसाई (सरस) (स्त्री०) अधिकाई, बहुतायत, कसरत, उत्तमता।

सरसाना (क्रि० अ०) अधिक होना, बढ़ना, वृद्धि होना।

सरसिज (सरमि=तालाब में, जन्=पेदा होना) (पु०) कमल, कैवल।

सरसीरुह (सरसी=तालाब, रुह=पेदा होना) (पु०) कमल, पद्म, कैवल।

सरसों (सं० सर्पप, सृ=जाना) (पु०) राई-जैसी चीज़।

सरस्वती (सम्=पानी, वती=वाली अथवा म=साथ, रम=स्वाद या पानी, वती=वाली) (स्त्री०) एक नदी का नाम, वाणी, बोली, राग और विद्या, गुण आदि की देवी, वागीश्वरी, शारदा, भारती, वाग्देवता।

सरा (स्त्री०) शराब, चिता।

सराप (सं० शाप) (स्त्री०) शाप, फटकार, दुःशाप, बददुआ।

सरापना ( सं० शापन ) ( क्रि० सं० ) शाप देना,  
कोसना, बददुआ देना ।

सराफ ( पु० ) महाजन, चाँदी-सोने के आभूषण  
बेचनेवाला ।

सराफी ( स्त्री० ) लेन-देन. महाजनी, चाँदी-सोने का  
व्यापार ।

सरावक } ( सं० श्रावक ) ( पु० ) जैनी, जैनधर्म को  
सरावगी } माननेवाला ।

सरावन ( पु० ) हंगा, जमीन बराबर करने की लकड़ी ।

सराह ( स्त्री० ) बढ़ाई, तारीफ, स्तुति, प्रशंसा ।

सराहना ( क्रि० सं० ) बढ़ाई करना, स्तुति करना,  
तारीफ करना, ( स्त्री० ) प्रशंसा, आशंसा ।

सरिगम ( पु० ) स्वर, स्वर का आगे-पछे ।

सरित् } ( सृ=जाना, बहना ) ( स्त्री० ) नदी, दरिया ।  
सरिता }

सरिन्पति ( पु० ) समुद्र या सागर ।

सरिन्सुत ( पु० ) गंगापुत्र, भीष्मपितामह, घाटिया ।

सरिस } ( सं० सदृश या सदृक् ) ( वि० ) बराबर,  
सरीमा } समान ।

सरीमृष ( पु० ) सर्प, बिच्छु आदि रेंगनेवाले जीव ।

सरुज ( म=सहित, रुज=रोग ) ( वि० ) रोगी, बीमार,  
मरीज ।

सरूप ( म=बराबर, रूप=रूप ) ( वि० ) बराबर, समान,  
'स्वरूप' शब्द को देखो ।

सरेखा ( सं० श्लेषा ) ( स्त्री० ) नवीं नक्षत्र ।

सरेश ( सरंग ) ( पु० ) एक लसखसी चीज़ जिससे  
लकड़ी आदि की चीज़ें जोड़ते हैं, यह सोंग और गुर  
के छीलन से बनती है ।

सरोज ( सरस=तालाब, जन्=पेदा होना ) ( पु० ) कमल,  
कैवल, पद्म ।

सरोजभव ( सरंज=कमल, भू=जन्मना ) ( पु० ) प्रह्ला ।

सरोता ( पु० ) मुगड़ी काटने का औज़ार ।

सरोरुह ( सरस=तालाब, रुह=पेदा होना ) ( पु० ) कमल,  
कैवल, पद्म ।

सरोवर ( सरस=तालाब, वर=बड़ा ) ( पु० ) बड़ा  
तालाब, सरवर, झील ।

सरोप ( स+रोप ) ( वि० ) क्रोधित, कोपित, गुस्से में ।

सरोही ( स्त्री० ) एक प्रकार की तलवार ।

सरौकरे ( क्रि० सं० ) दंड करना, कूटना, कला करना,  
उलझना, सुलझना ।

सरकरा ( स्त्री० ) खौड, शकर, बालू, धूल ।

सर्ग ( सृज=पेदा होना या छोड़ना ) ( पु० ) उत्पत्ति,  
सृष्टि, छोड़ना, निश्चय, अध्याय, बाब, चैप्टर,  
स्वभाव ।

सर्गुण ( सं० मगुण अथवा सर्वगुण ) ( वि० ) सब गुणों  
समेत, सगुण-ब्रह्म ।

सर्जक ( सृज्+क, सृज=पेदा करना, त्यागना ),  
( वि० ) त्यागी, उत्पत्तिकारक, शालवृक्ष ।

सर्प ( सृप्=जाना ) ( पु० ) साँप, नाग ।

सर्पराज ( सर्प+राजा ) ( पु० ) साँपों का राजा, शेषजी,  
वासुकी ।

सर्पिष ( सृप्+इष ) ( पु० ) घी, घृत, रोगानर्जक ।

सर्व ( सर्वे या सृ=जाना ) ( वि० ) सर्व, सारा, सकल,  
समस्त, ( पु० ) शिव, विष्णु ।

सर्वकाल ( क्रि० वि० ) नित्य, सदा, हमेशा ।

सर्वग ( सर्व=सब जगह, गम्=जाना ) ( वि० ) सब जगह  
जानेवाला, सबमें जानेवाला, सबमें फैलनेवाला,  
सर्वव्यापी, ( पु० ) शिव, परमेश्वर, पानी, हवा,  
आत्मा, जीव ।

सर्वज्ञ ( सर्व=सब, ज्ञा=जानना ) ( वि० ) सब कुछ  
जाननेवाला, ( पु० ) परमेश्वर, शिव ।

सर्वतोभद्र ( पु० ) यज्ञ में प्रधान देवताओं का आसन,  
सिंहासन, विष्णु का रथ, मंडल-विशेष ।

सर्वत्र ( सर्व=सब, त्र=जगह अर्थ में प्रत्यय ) ( क्रि० वि० )  
सब जगह, सब ठौर, सब स्थान में ।

सर्वथा ( सर्व=सब, था=प्रकार अर्थ में प्रत्यय ) ( क्रि० वि० )  
सब प्रकार से, सब भाँति से, सब तरह से, सब  
रीति से, निश्चय करके, निस्संदेह, बिना चूक, सच-  
मुच, अवश्य ।

सर्वद्मन ( सर्व=सब, दम्=दवाना ) ( पु० ) दुष्यंत  
का पुत्र, भरत ।

सर्वदा ( सर्व=सब, दा=समय अर्थ में प्रत्यय ) ( क्रि० वि० )  
सदा, सब समय में, नित्य, दिन-दिन ।

सर्वनाम ( सर्व+नाम ) ( पु० ) वह शब्द जो संज्ञा के  
बदले में बोला जाय, जैसे—मैं, तू, वह; जमीर ।



सर्वभक्त } ( वि० ) धर्मच्युत, सब कुछ खानेवाला ।  
सर्वभक्ती }

सर्वभूत ( पु० ) सब प्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन ।

सर्वमंगला ( स्त्री० ) पार्वती ।

सर्वमद ( वि० ) सर्वव्यापक, संपूर्ण ।

सर्वरस ( पु० ) राधा, धूप, गन्ना ।

सर्वस } ( सं० सर्वस्व, सर्ववस्तु, सर्व=सब, स्व वा  
सर्वसु } वस्तु=धन ) ( पु० ) सब धन, सब संपदा,  
सब चीज़, सब कुछ, कुल यश ।

सर्वांग ( पु० ) समस्त शरीर, सारा शरीर, सब अंग ।

सर्वेश } ( सर्व=सब, ईश या ईश्वर=मालिक ) ( पु० )  
सर्वेश्वर } सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु, शिव,  
सबका ईश्वर ।

सर्वोपरि ( सर्व+उपरि ) ( वि० ) सबसे बड़ा ।

सर्षप ( पु० ) सरसों ।

सर्पराहट ( स्त्री० ) खुजलाहट ।

सलकी ( स्त्री० ) कमल की डंडी ।

सलज्ज ( स=साथ, लज्जा=लाज ) ( वि० ) लज्जालु,  
शर्माळा, लज्जावान् ।

सलना ( पु० ) मोती, वाहवाह की छिमी, ( कि० अ० )  
छिदना, गड़ना ।

सलभ ( पु० ) पतिंगा, टिड्डी, टीड़ी ।

सलाई ( सं० शलाका ) ( स्त्री० ) पतले तार का टुकड़ा  
जिससे आँख में सुरमा लगाते हैं और सलाई उस  
लोहे के पतले तार के टुकड़े को भी कहते हैं जिसको  
आग में खूब लाल करके अपने वैरी की आँख में  
ढालते हैं जिससे आँख फूटकर वह अंधा हो जाता  
है, सुरमई पेंसिल ।

सलिता ( स्त्री० ) नदी, सरित, सिंधु ।

सलिल ( सल=जाना ) ( पु० ) पानी, जल, आपः,  
आब, ( वि० ) आसान, सहल ।

सलूना } ( सं० सलवण, स=साथ, लवण=नमक )  
सलूना } ( वि० ) नमकीन, नोन-सहित, सुस्वादु,  
मजेदार, रोचक, स्वादिष्ट, सुंदर, सौंदर्य, सुहावना,  
खूबसूरत ।

सलूनी ( सं० श्रावणी ) ( स्त्री० ) राखीपूनी, सावन की पूनी ।

सल्लम ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा ।

सल्लू ( पु० ) जूते सोने का चाम ।

सल्लो ( स्त्री० ) भोली औरत ।

सलति ( स्त्री० ) सौत, सपत्नी ।

सलर ( पु० ) कोल, भोल ।

सलरी ( स्त्री० ) कोलनी, भीखनी ।

सलर्ण ( वि० ) समानवर्ण, एक जातिवाले, सजातीय,  
हमजिस ।

सला ( सं० सपाद, स=साथ, पाद=चौथा हिस्सा ) ( वि० )  
एक और चौथाई, १/३ ।

सलाई ( सला ) ( पु० ) जयपुर के राजाओं की पदवी,  
( वि० ) सला, एक और चौथाई ।

सलांग } ( सं० स्वांग, स्व=अपना, अंग=शरीर, अर्थात्  
स्वांग } अपने शरीर को और तरह से बनाना ) ( पु० )  
भँडैतो, नकल बनाना, बेप बदलना, खेक, तमाशा,  
स्वाँग ।

सलांग लाना } ( मुहा० ) नकल बनाना, बेप बदलना ।  
स्वांग लाना }

सलाद ( सं० स्वाद ) ( पु० ) रस, मज़ा, जड़जत, सुशो ।

सलाया } ( सला ) ( वि० ) एक और चौथाई, सला,  
सलैया } ( पु० ) सला का पहाड़ा, सलैया ।

सलार ( पु० ) घुड़चढ़ा, असवार ।

सलारी ( स्त्री० ) असवारी, वाहन ।

सलिता ( पु० ) सूर्य, बारह की संख्या ।

सल्य ( स=पैदा होना ) ( वि० ) बायाँ, दाहना, प्रतिकूल,  
विष्णु ।

सल्यसाची ( पु० ) अर्जुन, पांडुसुत ।

सलंका ( स=साथ, लंका=डर या संदेह ) ( वि० ) डरा  
हुआ, सभय, जिसमें संदेह हो ।

सलक ( पु० ) खरगोश ।

सला ( सं० शला ) ( पु० ) खरगोश ।

सलुर ( सं० खलुर ) ( पु० ) पति या स्त्री का बाप ।

सस्ता ( वि० ) सौँचा, मंदा, अज्ञाँ ।

सस्ताई ( स्त्री० ) सौँचाई, अज्ञानी, मंदी

सस्य ( पु० ) अन्न, फल ।

सह ( सह=सहना ) ( अव्य० ) साथ, सहित, संग, समेत,  
बराबर, एक ही, वही ।

सहकार ( पु० ) सुगंधित आम, सहायता ।

सहकारी ( वि० ) सहायक, मददगार ।

सह्यामिनी ( सह=साथ, गामिनी=जानेवाली, गम्=जाना )

( स्त्री० ) पत्नी, अपने पति के साथ चलनेवाली स्त्री ।  
सहचर ( सह=साथ, चर=चलना ) ( पु० ) साथी,  
हमराही ।

सहचरी ( सह=साथ, चर=चलनेवाली, चर=चलना )  
( स्त्री० ) साथ रहनेवाली, साथिनी, संगिनी, सहेली,  
पत्नी, परनी, धर्मपत्नी ।

सहज ( सह=साथ, जन्=जन्मा होना ) ( वि० ) जो साथ  
ही पैदा हो, स्वाभाविक, जो स्वभाव ही से पैदा  
हो, सुगम, आसान, सहज ।

सहदेव ( सह=साथ, देव=देवता या नमस्कृत ) ( पु० )  
पाँचों पाँडवों में सबसे छोटा जो पांडुराजा की  
दूसरी रानी माद्री का बेटा था ।

सहन ( सह=सहन ) ( पु० ) सहना, बर्दाश्त, सहिष्णुता,  
समझौता, क्षमा, ( वि० ) सहनेवाला, संतोषी,  
सहनहार ।

सहना ( सह=सहन ) ( क्रि० प्र० ) भोगना, दुःख उठाना,  
पाना, भुगतना, संतोष करना ।

सहनाई ( स्त्री० ) बाँसुरी के ऐसा एक वाजा जिसको  
मुनीहँ भी कहते हैं ।

सहमना ( सह=साथ, मन=मनना ) ( क्रि० प्र० ) सहमत  
होना, सहमत होना ।

सहमरण ( सह=साथ, मरण=मरना ) ( पु० ) पति की  
लाश के साथ जलना, सती होना ।

सहयोगी ( वि० ) साथी-संगी, हमसर ।

सहराना { ( क्रि० प्र० ) सहलाना, चुलचुलाना,  
सहिराना } धीरे-धीरे मलना ।

सहवास ( सह=साथ, वास=वासना ) ( पु० ) पक्षी,  
पक्षवासा, संग, समागम ।

सहवासी ( पु० ) पक्षी, हमसाया ।

सहसा ( सह=साथ, सा=साक्षात् करना या सह=सहन )  
( क्रि० प्र० ) झटपट, बिना विचार, एकाएकी,  
उतावली से, दृक्प्रवृत्ति ।

सहसाखी ( सह=साथ, खा=खाना ) ( पु० ) इन्द्र, देवताओं का  
राजा, सहसाखी, गवाहों के साथ, मय गवाह ।

सहसानन ( सह=साथ, आनन=आनन ) ( पु० ) शेषनाग जिनके हजार मुँह हैं ।

सहस्र { ( वि० ) एक हजार, दस सौ, १००० ।

सहस्रनयन } ( सहस्र=हजार, नयन वा नेत्र=आँख )  
सहस्रनेत्र } ( पु० ) देवताओं का राजा इंद्र जिनके  
हजार आँखें हैं ।

सहस्रपाद ( पु० ) विष्णु, सूर्य ।

सहस्रबाहु { ( सहस्र=हजार, बाहु=भुजा ) ( पु० ) एक  
सहस्रबाहु } राजा का नाम जिसके हजार हाथ थे,  
और जिसको परशुरामजी ने मारा ।

सहस्राक्ष ( सहस्र=हजार, अक्ष=आँख ) ( पु० ) इंद्र,  
विष्णु, ईश्वर, ( वि० ) हजार आँखोंवाला ।

सहाई ( सह=साथ ) ( स्त्री० ) सहायता, मदद, ( वि० )  
मदद करनेवाला ।

सहानुभूति ( स्त्री० ) अनुवेदना, हमदर्दी, सुख-दुःख  
में साथी होना ।

सहाय ( सह=साथ, इग्न=ज्ञान ) ( पु० ) मदद, सहारा,  
सहाई, अनुकूल, ( वि० ) सहायक, मददगार, मदद  
करनेवाला ।

सहायक ( सह=साथ, इग्न=ज्ञान ) ( पु० ) मदद देनेवाला,  
मददगार, रक्षक, उपकार करनेवाला ।

सहायता ( सह=साथ, इग्न=ज्ञान ) ( स्त्री० ) सहाय,  
मदद, सहारा ।

सहारा ( सह=सहायता ) ( पु० ) मदद, सहायता,  
आसरा, आश्रय, भरोसा ।

सहित ( सह=साथ, इग्न=ज्ञान अथवा सह=सहन )  
( वि० ) निरर्थ, साथ, संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सहिदानी ( स्त्री० ) निशानी, चिह्न ।

सहिष्णु ( सह=साथ, इग्न=ज्ञान ) ( वि० ) सहनशील,  
क्षमावान्, बरदाश्त करनेवाला ।

सही ( सही=सही ) ( क्रि० प्र० ) सच, बहुत अच्छा,  
हाँ, निश्चय ।

सहेजना ( क्रि० प्र० ) सँप देना, सिपुर्द करना,  
जाँचना, मँतना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

सहेली ( सह=साथ, आली=मेली ) ( स्त्री० ) साथ रहने-  
वाली, सखी, सजनी ।

सहोदर ( सह=एक ही, उदर=पेट, जो एक ही पेट से पैदा  
हैं ) ( पु० ) एक ही मा से पैदा हुआ, भाई,  
सगा भाई ।

सहा ( सह=सहन ) ( वि० ) सहने योग्य, जो सहा जाय ।  
सा ( सह=समान या सदृश ) बराबरी को जतलानेवाला,

( अर्थ० ) ( जैसे तुम-सा ) कुछ, किंचित्, थोड़ा,  
( जैसे काला-सा=थोड़ा काला ) कभी-कभी इसका अर्थ  
कुछ नहीं दिखाई देता है; पर कहीं-कहीं जिस शब्द  
के साथ खगाया जाता है उसके अर्थ में अधिकता  
जतलाता है ( जैसे 'बहुत-सा' ) ।

साँई ( सं० स्वामी ) ( पु० ) माझिक, नाथ, स्वामी,  
ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, फ़कीर ।

साँऊँ ( वि० ) शिष्य, सीखनेवाला ।

साँक ( स्त्री० ) शंका, श्वास-रोग-विशेष ।

साँकर } ( सं० शृंखला ) ( स्त्री० ) सिकली, साँकल,  
साँकरी } कर्धनी, ( सं० संकीर्ण ) सँकरी गली, नाका,  
घाटा, कठिनता, दुःख, झंझट, ( वि० ) सँकरा,  
सकेत, तंग ।

साँकल ( सं० शृंखला ) ( स्त्री० ) सिकली, साँकल ।

साँखू ( पु० ) पुल, सेत, एक तरह का पेड़ और उसकी  
लकड़ी ।

साँग } ( सं० शक्त या शक्ति ) ( स्त्री० ) बर्छी, सेल ।

साँगी } ( सं० शक्त या शक्ति ) ( स्त्री० ) बर्छी, सेल ।  
साँग ( पु० ) 'सवाँग' शब्द को देखो, ( स्त्री० ) बर्छी,  
सेल, भाला, अस्त्र-विशेष ।

साँगी ( स्त्री० ) गाड़ी की भंडरिया, बर्छी ।

साँगूस ( स्त्री० ) एक प्रकार की मछली ।

साँघट ( स्त्री० ) भावी पति का पुत्र ।

साँच ( सं० सत्य ) ( पु० ) सचाई, सच्चापन, सत्य,  
( वि० ) ठीक, सही, सच ।

साँचा ( पु० ) मिट्टी की एक चीज़ जिसमें कोई चीज़  
ढाकी जाती है या उसका रूप बनाया जाता है ।

साँझ ( सं० संध्या ) ( स्त्री० ) शाम, संध्या, सायंकाल ।

साँझा } ( सं० संध्या ) ( स्त्री० ) गोबर की मूर्तियाँ जिन-  
साँझी } की छद्मे-लक्षकियाँ आश्विन के कृष्णपक्ष में  
भीतों पर बनाते हैं, ज़मीन या जल पर सूखे रंगों  
से श्रीकृष्ण-लीला के विविध दृश्यों का बनाना ।  
इसमें रंगों की मिलावट ऐसी सूक्ष्मी से होती है कि  
बड़े-बड़े चित्रकार दाँतों उँगली दबाते हैं । आगरा  
और मथुरा में प्रायः पितृपक्ष में साँझी बनती हैं ।

साँड } ( सं० षंड ) ( पु० ) चैल ।

साँड़नी ( स्त्री० ) ऊँटनी, साँड़नी ( वि० ) सवार,  
ऊँट पर चढ़नेवाला ।

साँड़ा ( पु० ) एक जानवर जो छिपकली-सा होता है और

कहते हैं कि उसके तेज में बहुत शक्ति होती है ।

साँती ( सं० शांति ) ( स्त्री० ) विश्राम, शांति, निश्चिंता ।

साँप ( सं० सर्प ) ( पु० ) सर्प, नाग, भुजंग ।

साँभर ( सं० शाकंभरी ) ( पु० ) एक शहर जो राजपूताने  
में है; वहाँ एक झील या सर है जिसमें बहुत अच्छा  
नमक पैदा होता है और उसके पास एक पहाड़ पर  
शाकंभरी देवी का मंदिर है, खवण-विशेष ।

साँय ( पु० ) हवा के धीरे-धीरे चलने का शब्द, सार्यै-सार्यै ।

साँवला ( सं० श्यामल ) ( वि० ) थोड़ा काखा,  
कालापन लिए हुए, श्यामवर्ण ।

साँस ( सं० श्वास ) ( पु० ) ( स्त्री० ) दम, प्राण ।

साँस उलटी लेना ( मुहा० ) हाँफना, नाक में दम  
घाना ( जैसा मरने के समय में होता है ) ।

साँस भरना ( मुहा० ) आह भरना, लंबी साँस लेना,  
ठंडी साँस लेना, पछतावा करना, जीवन की अंतिम  
घड़ियाँ बिताना ।

साँस रुकना ( मुहा० ) दम रुकना, गला घुटना ।

साँस रोकना ( मुहा० ) गला घोटना, दम रोकना, गला  
दबाना ।

साँसना ( कि० सं० ) डाटना, धमकाना, ताड़ना देना ।

साँसा ( सं० संशय ) ( पु० ) संदेह, शंका, डर, चिंता ।

साँसारिक ( संसार ) ( वि० ) संसार का, संसारी,  
दुनियावी ।

साक ( अर्थ० ) सह, साथ ।

साकम्

साकबनिक ( सं० शाकबनिक ) ( पु० ) साग बेचने-  
वाला, कुँजड़ा । जैसे—“साक बनिक मनिगुनगण  
जैसे ।” रामायण ।

साका ( सं० शाक ) ( पु० ) संवत् ।

साका करना ( मुहा० ) नया संवत् खजाना, बहानुरी  
के काम करके नामी होना, साका गाड़ना ।

साकेबंध ( मुहा० ) वह राजा जो नया संवत् जारी  
करता है ।

साकार ( स+आकार ) ( वि० ) आकार-सहित, मूर्ति-  
मान् जिसका आकार हो ।

साक्षात् ( स=साथ या सामने, अतः=प्राप्य ) ( कि०  
वि० ) सामने, आँखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट,  
प्रसिद्ध, ( वि० ) आप, खुद, बराबर, समान ।

साक्षी ( स=माथ या सामने, अक्षि=आँख ) ( वि० ) गवाह, जिसने अपनी आँखों से देखा हो, साखी, शाहिद, ( स्त्री० ) गवाही, साख, शाहिदी ।

सास्त्र ( सं० माध्य, साली ) ( स्त्री० ) गवाही, शाहिदी, यश, धाक, कीर्ति, नाम, भ्रम, ( सं० शास्त्र ) ऋतु, फसल, अनाज काटने का समय ।

सास्त्री ( सं० साली ) ( स्त्री० ) गवाही, साख, महात्मा कबीर की सास्त्री अथवा भजन, ( वि० ) गवाह, शाहिद ।

साखोच्चार ( पु० ) वंश-वर्णन, शाखोच्चार ।

साख्य ( पु० ) साक्षात्कार ।

साग ( सं० शाक ) ( पु० ) हरी तरकारी, भाजी ।

सागपात ( मुहा० ) तरकारी, तुच्छ भेंट ।

सागर ( मगर एक राजा का नाम ) ( पु० ) समुद्र, समंदर, हिंदू सात समुद्र मानते हैं ( १ नमक का, २ दूध का, ३ घा का, ४ दर्हा का, ५ शराब का, ६ ऊष के रंग का, ७ शहद का ) ।

सागू ( पु० ) सागूदाना जो बहुत हलका होता है, इस-लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में उसे पकाकर खिलाते हैं ।

सागून ( पु० ) एक तरह की लकड़ी, सागौन ।

साख्य ( संख्या, सप्=यथार्थी तरह से, म्या=प्रसिद्ध होना ) ( वि० ) सख्या का, ( पु० ) कपिल मुनि का बनाया हुआ दर्शनशास्त्र, तत्त्वपरामर्श ।

सांग ( वि० ) अंग-सहित, समास, पूर्ण, पूरा, अंगों के साथ ।

सांगोपांग ( वि० ) संपूर्ण, समस्त, ज्यों का त्यों, अंग-उपांग-सहित ।

साज ( सं० सज्ज, सज्ज=जाना ) ( पु० ) समान, तैयारी, सरंजाम ।

साजन ( सं० सज्जन ) ( पु० ) सजन, प्यारा, पति ।

साजना ( सं० सज्जन, सज्ज=जाना ) ( कि० सं० ) तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना ।

साजिस ( पु० ) मेल, संजोग, कपट-प्रबंध ।

साजी ( स्त्री० ) सजी, स्नान ।

साभा ( सं० साहाय्य, महाय अथवा साध, सह=महना ) ( पु० ) हिस्सा, शराब, शमिछात ।

साभी ( साभा ) ( पु० ) साथी, हिस्सेदार, शरीक, संगी ।

साटोप ( वि० ) विकट, घमंडी, सगर्व ।

साठ ( सं० षष्टि ) ( वि० ) छः गुना दस, ६० ।

साठी ( साठ ) ( पु० ) एक तरह के चावल जो बरसात के दिनों में पैदा होते हैं और बोने के ६० दिन पीछे पक जाते हैं, इसलिये साठी कहलाते हैं ।

साड़ी ( सं० साठी ) ( स्त्री० ) स्त्रियों के पहनने का कपड़ा ।

साढ़ेसाती ( स्त्री० ) साढ़े सात वर्ष रहनेवाली शनैश्चर की दशा ।

साढ़ू ( सं० श्यालीबोढ़ा, श्याली=अपनी स्त्री की बहन, बोढ़ा=पति, वह=ले जाना ) ( पु० ) साली का पति, हमजुल्लु ।

साढ़े ( सं० माढ़, स=साथ, अर्द्ध=आधा ) ( वि० ) आधे के साथ, ( जैसे साढ़े तीन=तीन और आधा ) ।

सात ( सं० सप्त ) ( वि० ) चार और तीन, ७ ।

सात-पाँच करना ( मुहा० ) दुविधा में पड़ना ।

सात समुंदर ( मुहा० ) एक खेल का नाम ।

सानू ( पु० ) सत्तू, सनुआ ।

सात्त्विक ( सं० सत्त्व=सतोगुण ) ( वि० ) सतोगुणी, साधु, सीधा, सच्चा सरल ।

साथ ( सं० साथे अथवा सह ) ( पु० ) संग, सहित, समेत, संगति, सोहबत ।

साथ देना ( मुहा० ) मिलना, मेल रखना, शामिल होना, निर्वाह करना ।

साथवाला ( वि० ) साथी, संगी ।

साथरी ( स्त्री० ) पत्तों का बिछौना, चटाई, आसनी ।

साथिन ( स्त्री० ) सगिनी, सहेली, सखी, आली ।

साथी ( साथ ) ( वि० ) संगी, मेली, मित्रापी, मित्र, दोस्त ।

साद { ( सं० श्रद्धा ) ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

साध { ( स=साथ, आदर=सम्मान ) ( कि० वि० ) आदर से, सम्मान से, ज़ातिर से ।

सादृश्य ( सदृश ) ( पु० ) बराबरी, समानता, तुल्यता ।

साध ( सं० साधु ) ( पु० ) संत, सत्पुरुष, सज्जन, भला आदमी, वैरागी ।

साधक ( साधू+धक, साधू=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( वि० ) साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला, मंत्र साधनेवाला, तपस्वी, मद्दगार ।

साधन ( साधू=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( पु० ) उपाय, यत्न, काम के सिद्ध करने की तद्बीर, अभ्यास, व्याकरण में करणकारक ।

साधना ( सं० साधन ) ( कि० सं० ) सिद्ध करना, पूरा

करना, पक्का ठहराना, साबित करना, बनाना, ठीक-ठाक करना, अभ्यास करना, स्वभाव ढालना, आदत ढालना, सीखना, ( स्त्री० ) अभ्यास, तपस्या, संयम ।

साधनीय ( साध्+अनीय ) ( वि० ) सिद्ध करने योग्य, पूरा करने लायक, निष्पाद्य ।

साधारण ( स=साथ, धारण=रखना ) ( वि० ) सामान्य, सहज, मामूली, समान, आम ।

साधारणधर्म ( पु० ) “अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय-निग्रहः । दमश्चमार्जवं दानं धर्मं साधारणं विदुः ।” १ अहिंसा, २ सत्य, ३ अस्तेय, चोरी न करना, ४ शौच, पवित्र रहना, ५ इंद्रियों को रोकना, ६ दम, मन को रोकना, ७ दान, ८ मार्जव, कोमलता, ९ दान—ये साधारण धर्म हैं ।

साधित ( वि० ) निष्पादित, सिद्ध किया गया, पूरा किया गया ।

साधु ( साध्=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( वि० ) जो शास्त्रविहित कर्मों को करता है या जो पर के कार्य को सिद्ध करता है वह साधु है, संत, उत्तम जन, सत्पुरुष, सज्जन, सीधा, सच्चा, ( पु० ) साध, वैरागी, भला आदमी ।

साधुता ( स्त्री० ) साधु का कर्म और धर्म ।

साध्य ( साध्=पूरा करना ) ( वि० ) पूरा होने योग्य, जो हो सके, सुगम, सहज, आसान, चंगा होने के योग्य, जिसका इलाज हो सके, ( पु० ) जो बात सिद्ध की जाय, जो बात पक्की ठहराई जाय ।

सान ( सं० शान्, शान् या शो=तीखा करना ) ( स्त्री० ) सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पथर, एक चक्राकार यंत्र ।

सान बुझाना ( मुहा० ) इशारे से बानें करना, इंगित करना ।

सानना ( कि० सं० ) मिलाना, लपेटना, भिगोना, गूँधना ।

सानंद ( स+प्रानंद ) ( वि० ) आनंद के साथ, हर्षित, खुश ।

सानी ( स्त्री० ) गाय-बैल-भैल का भोजन-विशेष, भूसा और खली को पानी में सानकर तैयार किया हुआ गाय-भैल का खाद्य ।

सानुकूल ( स+अनुकूल ) ( वि० ) कृपालु, दयालु, सहायक, मेहरबान ।

सान्ना ( सं० सन्धान ) ( कि० सं० ) मिलाना, गूँधना, ( सं० शानन, शान्=तीखा करना ) चोखा करना, तीखा करना, तेज़ करना, सान धरना ।

सान्निध्य ( पु० ) सामीप्य, निकटता ।

सायन ( पु० ) सिर का रोग-विशेष, जिसमें बाल धीरे-धीरे गिर जाते हैं ।

साफल्य ( पु० ) सफलता, कामयाबी ।

सावर } ( सं० शम्बर या शाम्बर, शम्ब=जाना ) ( पु० )  
सांवर } एक तरह का बारहसिंगा, बारहसिंगे का चमड़ा ।

सावृत ( वि० ) समूचा, विना टूटा फूटा, अक्षत ।

साम ( सो=नाश करना पापों का ) ( पु० ) तीसरा वेद, जिसकी ऋचाएँ गाई जाती हैं ।

सामग्री ( समग्र=सब ) ( स्त्री० ) सामा, सामान, असबाब, चीज़, वस्तु ।

सामज ( पु० ) समय, काज ।

सामग्र्य ( पु० ) समग्रियों का मेल, समधौरा ।

सामना ( अग्र्य० ) आगे, अगाड़ी, सम्मुख ( पु० ) मुकाबला ।

सामना करना ( मुहा० ) लड़ना, मुकाबला करना ।

सामंत ( पु० ) वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मन्त्र, उपराज, ज़मींदार, एक लाख रुपये साल की आमदनी जिसकी हो ।

सामयिक ( वि० ) समय पर, काबोचित, अवसर की, समयानुकूल ।

सामर्थ्य } ( समर्थ ) ( स्त्री० ) बल, शक्ति, पराक्रम,  
सामर्थ्य } योग्यता ।

सामर्थी ( सं० समर्थ ) ( वि० ) बलवान्, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य ।

सामा ( सं० सामग्री ) ( पु० ) ( स्त्री० ) नाना प्रकार के भोजन, सामान, सामग्री ।

सामाजिक ( वि० ) समाजसंबंधी ।

सामान ( पु० ) असबाब, अट्ठाला, सामा, सामग्री ।

सामान्य ( समान ) ( वि० ) मध्यम, साधारण, चलन-सार, चलनीक, प्रचलित, आम ।

सामान्यतः ( कि० वि० ) साधारण से, आम तौर पर ।

सामान्या ( सामान्य ) ( स्त्री० ) साधारण नायिका,

धन के लालच से पराये आदमी के पास जानेवाली, वेश्या, व्यभिचारिणी, सामान्या, नायिका तीन तरह की हैं ( १ अन्यसंभोग दुःखिता, २ वक्रोक्तिगर्विता, ३ मानवर्ता ) ।

**सामीप्य** ( समीप ) ( पु० ) समीपता, सांनिध्य, निकटता, पड़ोस ।

**सामुद्रिक** ( म=माथ, मुद्रा=चिह्न ) ( पु० ) एक विद्या जिससे स्त्री-पुरुष के हाथ-पैर के चिह्नों से उनके भले-बुरे भाग्य की बतलाते हैं ।

**साम्नाय** ( पु० ) गुरुपरंपरागत सद्गुणदेश, सलाह ।

**साम्ना** ( म० सम्मुख ) ( पु० ) सम्मुख, आगे, सामना अगवाड़ा ।

**सांप्रत** ( अद्य ) अनुना, इदानीम्, योग्य, उचित, अब ।

**सायंकाल** ( सायम्=रात्रि, सां=नाश करना और काल=गमय ) ( पु० ) साँझ, संध्या का समय, दिन का अंत ।

**सायुज्य** ( स=साथ, युज्=मिलना ) ( पु० ) एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर में मिल जाना, एक हो जाना, एकत्व, अभेद ।

**सार** ( सु=जाना ) ( पु० ) गूढ़ा, मजा, हीर, सत, सत्व, रस, जल, मूल, बल, जोर, मूल बात, असल मतलब, धुलासा, क्रीमन, मोल, खाद, खात, खोहा, धन, लाभ, फायदा, फल, ( वि० ) बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

**सार** ( म० शार, अथवा शार, शू=मारना ) ( स्त्री० ) चौपड़ की गोठ ।

**सारक** ( पु० ) बाँस, मैना, चिड़िया-विशेष

**सारंग** ( सु=जाना ) ( पु० ) एक राग का नाम, मोर, साँप, बादल, मोर की बोली, हरिण, पानी, एक देश का नाम, घातक, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कौकिल, एक पेड़ का नाम, कामदेव, कई प्रकार के रंग, भीरा, मधुमक्खो, धनुष, स्त्री, दीपक, वस्त्र, शंख, चंदन, कपूर, कमल, आभरण, शोभा, सुवर्ण, केश, पुष्प, छत्र, रात्रि, भूमि, दीप्ति ।

**सारंग** में **सारंग** गह्वो, **सारंग** बोल्यो आया ; मोर । साँप । बादल ।

**जो सारंग सारंग कहै, सारंग मुँह ते जाय ।**  
मोर । मोर की बोली । साँप ।

**अर्थ**—मोर ने साँप को पकड़ा और उधर बादल गर्जा, अब जो मोर बोलता है तो साँप मुँह से जाता है । ( कहते हैं, मोर का यह स्वभाव है कि जब बादल की गर्जते सुनता है तो बहुत खुशी से बोलता और नाचता है ) ।

**सारंगिया** ( पु० ) सारंगी बजानेवाला ।

**सारंगी** ( सु=जाना ) ( स्त्री० ) एक बाजे का नाम, किंगीरी ।

**सारण** ( सु=जाना ) ( पु० ) रावण के एक मंत्री का नाम, अतिसार-रोग ।

**सारथि** ( सु=जाना या स+रथ ) ( पु० ) रथवान्, रथ के घोड़ों को हाँकनेवाला, यंता, मूत ।

**सारदा** ( सार=तरा, दा=देनेवाली, दा=देना ) ( स्त्री० ) सरस्वती, ( वि० ) सार वस्तु को देनेवाली ।

**सारना** ( सं० साधन ) ( कि० सं० ) बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना ।

**सारस** ( सरस्=तालाब ) ( पु० ) एक तरह का पखेरू, चाँद, कमल, कमर में पहनने का गहना, ( वि० ) सरोवर की वस्तु ।

**सारस्वत** ( सरस्ती ) ( पु० ) एक देश का नाम, उस देश का मनुष्य, पंचगौड़ ( १ सारस्वत, २ कान्यकुब्ज, ३ गौड़, ४ उत्कल, ५ मैथिल ) ये विंध्याचल के उत्तरवासी हैं; पंचद्राविड़ ( १ महाराष्ट्र, २ कर्नाटक, ३ गुजरात, ४ द्राविड़, ५ तेलंग ) ये विंध्याचल के दक्षिणवासी हैं, ब्राह्मणों में एक जाति, ( वि० ) सरस्वतीदेवी का, सरस्वती नदी का ।

**सारा** ( सं० सर्व ) ( वि० ) पूरा, संपूर्ण, सब, समस्त, ( सं० श्याल, र्यं=जाना ) ( पु० ) अपनी स्त्री का भाई, साझा ।

**सारांश** ( पु० ) निचोड़, मुख्य अंश, खुलासा ।

**सारिका** ( सु=जाना ) ( स्त्री० ) मैना पक्षी ।

**सारी** ( सं० शाटी ) ( स्त्री० ) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा, ( सं० सार ) दूध का सार, मलाई ।

**सारू** ( पु० ) चिड़िया-विशेष ।

**सारूप्य** ( पु० ) मोक्ष-विशेष, जिसमें कुमुद अपने हृद्देव के रूप को प्राप्त होता है ।

सार्धक ( स+अर्थ ) ( वि० ) अर्थसहित, सफल, सिद्ध, मौजू, लागू ।

सार्धम् ( अव्य० ) साकम्, साथ ।

सार्वभौम ( सर्वभूमि ) ( पु० ) सब संसार का राजा, चक्रवर्ती राजा, उत्तर-दिशा का हाथी ।

साल ( सल=जाना ) ( पु० ) एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम, साखू ।

साल ( सं० शल्य, शल=जाना ) ( पु० ) गाँमी, काँटा, शूल, छेद, ( सं० शाला ) ( स्त्री० ) जगह, घर, पाठशाला, स्कूल, ( सं० शृगाल ) ( पु० ) सियार, गोदड़ ।

सालन } ( पु० ) मांस, मांस की तरकारी, साग,  
सालना } तरकारी ।

सालना ( सं० शल्य, शल=जाना ) ( क्रि० स० ) छेदना, वेधना, घँसाना, पैठाना, बरमे से छेद करना, बर्माना, पार करना, चुभोना, ( क्रि० अ० ) दुखना, पिराना, खटकना, दुःख पाना ।

सालसा ( पु० ) एक तरह की औषध जिसका अर्क पीने से खून साफ होता है और इसको अरबी में 'उशबह' और अँगरेजी में 'सार्सा पैरिल्ला' कहते हैं ।

साला ( सं० श्याल, श्ये=जाना ) ( पु० ) स्त्री का भाई, ( सं० शाला ) ( स्त्री० ) जगह, घर ।

सालिग्राम ( पु० ) विष्णु की मूर्ति-विशेष जो काले और गोल पत्थर की होती है और गंडकी नदी से निकलती है ।

साली ( सं० श्याली ) ( स्त्री० ) स्त्री की बहन ।

सालू ( पु० मंडूक ) ( पु० ) मेंढक ।

सालूर ( पु० ) एक तरह का जाल कपड़ा ।

सालोक्य ( पु० ) मोक्ष-विशेष जिसमें भक्त अपने इष्टदेव के लोक में चला जाता है ।

सालोतरी ( शक्ति=घोड़ा, होत्र=वेद्य ) ( पु० ) घोड़ों का वेद्य ।

सावक ( सं० शावक ) ( पु० ) बच्चा, बाछक ।

सावकरन ( सं० श्यामकर्ण ) ( पु० ) काले कान का घोड़ा ।

सावकाश ( स=साध, अवकाश=अवसर ) ( पु० ) अवसर, अवकाश, समय, मौका, फुर्सत, सुधीता, काम से छुटी ।

सावज ( पु० ) बनैला, जंगली जीव, मृग, अहेर ।

सावधान ( स=साध, अवधान=चौकसी, अव, धा=रखना ) ( वि० ) चौकस, सचेत, खबरदार, सचेत, अग्रशीची, होशियार, सजग ।

सावधानी ( सावधान ) ( स्त्री० ) चौकसी, चौकसाई, सुचेती, सुरता, खबरदारी, होशियारी, चेतावनी, आगे से सोचना ।

सावन ( सं० श्रावण ) ( पु० ) चौथा हिंदू-महीना ।

सावन हरे न भादों सूखे ( मुहा० ) सदा एकरस, सदा एक-सा ।

सावंत ( सं० सामंत ) ( वि० ) वीर, बहादुर, योद्धा, पराक्रमी ।

सावंती ( स्त्री० ) बहादुरी, वीरता, शौर्य ।

सावयव ( वि० ) अवयवसहित, सांग ।

सावर्ण्य } ( पु० ) सवर्णा, सूर्यपत्नी से जन्मा या सूर्य  
सावर्णि } का पुत्र, सूर्य-सम्बन्धी, आठवाँ मनु ।

सावित्र ( पु० ) रुद्र, महादेव, सूर्य, वसुदेवता, ब्राह्मण ।

सास } ( सं० श्वश्रू ) ( स्त्री० ) पति या पत्नी को मा ।  
सासू }

सासना ( क्रि० स० ) ताड़ना, डाटना, साँसना ।

साह ( सं० साधु ) ( पु० ) महाजन, बड़ा सौदागर, कोठीवाल, दूकानदार, भन्ना आदमी ।

साहस ( सहसा ) ( पु० ) बल, जोर, वेग, डाँडस, हिम्मत, वीरता, पराक्रम, जुरात, उद्योग, उत्साह ।

साहसी ( साहस ) ( वि० ) तेज़, प्रबल, हिम्मतवाला, निडर, पराक्रमी, वीर, डीठ, उत्साही ।

साहित्य ( सहित=मेल ) ( पु० ) मेख, मिलान, साथ, एक विद्या जिससे भाषा के बोलने और लिखने की सुंदरता जानी जाती है और इस विद्या के अंग अलंकार, रस, छंद आदि हैं । कवियों के बनाये हुए काव्यों को भी साहित्य कहते हैं, जैसे भट्टि, रघुवंश, कुमारसंभव, माघ, किराताजुनीय, मेघदूत, विदग्धमुखमंडन और शांति-शतक आदि, इसमें अदब ।

साही } ( शलकी, शल=जाना ) ( स्त्री० ) कंटकी,  
सेही } एक जानवर जिसकी पीठ पर काँटे-ही-काँटे होते हैं ।

साहु ( पु० ) महाजन ।

साहुकार ( सं० साधुकार, साधु=सच्चा, कार=करनेवाला, क=करना ) ( पु० ) महाजन, व्यापारी, हुंडीवाह, कोठीवाल, बड़ा दूकानदार, ईमानदार, सच्चा और भला आदमी ।

साहुकारी ( स्त्री० ) व्यापार, लेनदेन, सौदागरी, वणिज-व्यवहार, हुंडी का व्यवहार ।

सिंगा ( सं० शृंगा ) ( पु० ) तुरही, रणसिंगा ।

सिंगार ( सं० शृंगार ) ( पु० ) शोभा, गहने और करड़े की सजावट, नव रसों में एक रस ।

सिंगारना ( शृंगार ) ( कि० म० ) सजाना, सँवारना, शोभित करना ।

सिंगारिया ( वि० ) देवताओं का शृंगार करनेवाला ।

सिंगौरी ( स्त्री० ) सींग का बना हुआ घोटना, बैल के सींगों पर पहनाने लायक एक गहना ।

सिंगाड़ा ( पु० शृंगाट, शृंग बड़ाई, शृंग=जाना ) ( पु० ) एक तरह का फल जो जल में पैदा होता है, पानी का फल ।

सिंह ( हिंम्=मारना ) ( पु० ) शेर, केसरी, मृगराज, मृगेंद्र, पशुओं का राजा, पाँचवीं राशि, हिंदुओं में एक पदवी, हिंम् का वर्णविपर्यय होने से सिंह बन गया ।

सिंहद्वार ( पु० ) पुरद्वार, फाटक ।

सिंहनाद ( सिंह+नाद ) ( पु० ) शेर की गर्जना, लड़ाई का शब्द, सिंह के शब्द ऐसा शब्द, भयानक शब्द ।

सिंहनी ( सिंह ) ( स्त्री० ) शेरनी ।

सिंहपौर ( सिंह+पौर ) ( स्त्री० ) बड़ा दरवाजा अथवा फाटक जहाँ बहुधा सिंह की मूर्ति बनी रहती है ।

सिंहमुखी ( पु० ) बाँस ।

सिंहलक ( पु० ) पीतल ।

सिंहलक्ष्मिप ( पु० ) लंका, सीलोन ।

सिंहविष्कांत ( पु० ) घोड़ा, अश्व ।

सिंहासन ( सिंह+आसन ) ( पु० ) राजा का आसन, तख्त, पाट ।

सिंहिका ( स्त्री० ) राहु की माता, कश्यपपत्नी, सिंहनी ।

सिकता ( स्त्री० ) बालू, रेत ।

सिकना ( कि० अ० ) सँका जाना, भूना जाना ।

सिकरी ( सं० शृंखला ) ( स्त्री० ) साँकल, संकल, मिकली ।

सिकहर ( पु० ) सौंका, रस्सी के बने थैले जो टाँगे जाते हैं ।

सिकुड़न ( स्त्री० ) बल्ल, शिकन, सिमटन ।

सिक्ख ( म० शिष्य ) ( पु० ) चेडा, नानक के मत को माननेवाला ।

सिक्क ( मिच्=मूर्चिना ) ( वि० ) सींचा हुआ, कृतसेचन ।

सिखनाहट ( स्त्री० ) शिखा, सीख ।

सिखर ( सं० शिखर ) ( पु० ) पहाड़ की चोटी, मंदिरों के ऊपर का गुंबज ।

सिखरन ( सं० शिखरिणी ) ( पु० ) चीनी और किशमिश मिला हुआ दही, एक खाने की चीज़ ।

सिखाई ( मिथ्याना ) ( स्त्री० ) पढ़ाई, शिक्षा ।

सिखाना { ( सं० शिष्य, शिच्=सिखाना ) ( कि० सं० )  
सिखलाना { पढ़ाना, बतलाना, शिक्षा देना, उपदेश देना, डाटना, धमकाना, दंड देना, ताड़ना करना ।

सिगरा { ( सं० समग्र ) ( वि० ) सब, सारा, संपूर्ण,  
सिगरी { हरएक ।  
सगरा }

सिजाना ( कि० म० ) उबालना, रींधना ।

सिझाना ( सिद्ध ) ( कि० म० ) पकाना, रींधना, उबालना, मार डालना, ज़ंज करना ।

सिठाई ( गीठा ) ( स्त्री० ) फीकापन, मंदता ।

सिड़ ( स्त्री० ) बौराहट, बौरापन, पागलपन, उन्मत्तता ।

सिड़पन ( पु० ) बौरहापन, बावलापन, सिड़ीपन ।

सिडिकेंट ( स्त्री० ) थोड़े मँबर जिनको सिनेट नियत करती है काम होने के लिये ।

सिड़ा { ( वि० ) बावला, बौरहा, पागल, उन्मत्त,  
सिड़ी { मस्त ।

सित ( सं=नाश करना ) ( वि० ) धवल, सफ़ेद, श्वेत, शुक्लवर्ण ।

सितरी ( स्त्री० ) श्वेत, पसीना ।

सितला ( स्त्री० ) चेचक, माता का रोग ।

सिद्ध ( मिच्=सिद्ध करना, पूरा करना ) ( पु० ) एक प्रकार के देवता, योगी, व्यास आदि मुनि, ऐसा मनुष्य जिसके वश में आठों सिद्धियाँ हों और जिसकी भूत, वर्तमान, भविष्यत् की बात मालूम हो, ज्ञानी,



तपस्वी, संत, उद्योतिष में एक योग का नाम, (वि०)  
पूरा, समाप्त, पक्का, बना हुआ, तैयार, प्रसिद्ध,  
विख्यात, ज़ाहिर, सफल, साबित किया हुआ,  
पक्का ठहराया हुआ, सच्चा ठहराया हुआ, निश्चय  
किया हुआ, निर्णय किया हुआ।

सिद्धांत (सिद्ध+अंत) (पु०) सच ठहराई हुई बात,  
सिद्ध की हुई बात, तर्क अर्थात् दलील से  
जो बात सच ठहराई जाय, फल परिणाम, नतीजा,  
सूर्यसिद्धांत आदि उद्योतिष के ग्रंथ।

सिद्धांती (पु०) मीमांसक, विचारक।

सिद्धि (सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) (स्त्री०) मनोरथ  
का पूरा होना, मनवांछित फल का मिष्टाना, मन-  
चाहो बात का पूरा होना, अणिमा आदि आठ  
सिद्धियाँ (अष्टसिद्ध शब्द को देखो)।

सिद्धियोग (पु०) कार्यसिद्धि हेतु योग—(शुके नन्दा  
बुधे भद्रा, शर्मा रिक्ता कुजे जया। गुरो पूर्णा च संयुक्ता  
सिद्धियोगः प्रकीर्तितः ॥) अर्थ—शुक्रवार परिवार,  
बुधवार तुहज, शनिवार चौथ, मंगलवार तीज,  
बृहस्पतिवार पंचमी—उद्योतिष-मत से उक्त चारों में  
उक्त तिथि हों तो सिद्धि-योग कहते हैं।

सिधारना (सं० सिध्=जाना) (कि० अ०) जाना,  
बिदा होना, रवाना होना, चला जाना, (कि० स०)  
दुरस्त करना, सँवारना, ठोकठाक करना, तरतीब  
देना।

सिनक (स्त्री०) पोंटा, नेटा, नासिका का मल।

सिनकना (कि० स०) नाक झाड़ना, नाक साफ़ करना।

सिनेट (स्त्री०) युनिवर्सिटी के मैबरो की मंडली।

सिंदूर (स्यन्द=चूना या टपकना) (पु०) एक तरह का  
खाल चूर्ण जिससे स्त्रियाँ माँग भरती हैं, सेंदुर।

सिधु (स्यन्द=चूना या टपकना) (पु०) समुद्र, समंदर,  
सागर, एक नदी जिसको इंडस और अटक भी  
कहते हैं, सिंध का देश, हाथी का मद, एक रागिनी  
का नाम।

सिंधुर { (सिन्धु=हाथी का मद, अर्थात् मदवाला)  
सिंदुर { (पु०) हाथी, हस्ती।

सिंधुरगामिनी (सिंधुर=हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्=  
चलना) (वि०) वह स्त्री जिसकी हाथी की-सी चाल  
हो, गजगामिनी।

सिपहसालार (पु०) सेनापति।

सिपाह (स्त्री०) सेना, फौज।

सिपाही (पु०) चपरासी, अर्दली, सैनिक।

सिप्र (सप्=मिलना) (पु०) निदाघजल, पसीना,  
चौंद, घाम।

सिप्रा (सप्=मिलना) (स्त्री०) एक नदी जो उज्जैन के  
पास है, महिषी, भैस, कुटनी, कुटनी, रजस्वला,  
जो स्त्री कपड़े से हो।

सिमट { (स्त्री०) सिकुड़न, शिकन, सिकोड़न।  
सिमटन }

सिमटना (कि० अ०) सिकुड़ना, हकट्टा होना,  
बटुरना।

सिमाना (पु०) सिवाना, धूरा।

सिमूम (स्त्री०) अरब के रेगिस्तान की गर्म हवा।

सिय { (सं० सीता) (स्त्री०) सीता, जानकी, श्री  
सिया { रामचंद्र की पत्नी और राजा जनक की बेटी।  
सियपी (सं० सीताप्रिय) (पु०) सीतापति, श्रीरामचंद्र,  
रघुनाथ।

सियरा (वि०) ठंडा, कच्चा।

सियान (स्त्री०) सीवन।

सियार { (सं० शृगाल) (पु०) गीदड़।  
सियाल }

सिर (सं० शिर) (पु०) माथा, मस्तक।

सिर उठाना (मुहा०) अपने मालिक से फिर जाना,  
बगावत करना, विद्रोह करना।

सिर करना (मुहा०) शुरू करना।

सिर काढ़ना (मुहा०) नामी होना, प्रसिद्ध होना,  
मशहूर होना।

सिर के ज़ोर (मुहा०) अपने ज़ोर से।

सिर के बल (मुहा०) बौधिसिर, मुँहभरा।

सिर खपाना (मुहा०) दिमाग लड़ाना, सिर पष्ठी  
करना।

सिर खुजलाना (मुहा०) मार खाया चाहना, सज़ा  
चाहना, पिटा चाहना।

सिरचढ़ा (मुहा०) घमंडी, अभिमानी, ठीठ।

सिर चढ़ाना (मुहा०) बड़ाई करना, बड़ा जानना,  
माथे पर रखना, पवित्र समझना, इतराना, घमंडी  
होना, आदर-मान करना, ठीठ बनाना, शोख बनाना।

सिर भुकाना ( मुहा० ) नमस्कार करना, प्रणाम करना, वक्ष्यता स्वीकार करना, वगीभूत हो जाना ।

सिर डुलाना } ( मुहा० ) दुःख से सिर हिलाना,  
सिर धुनना } घबराना, दुःखी होना, पछताना ।

सिर तोड़ना ( मुहा० ) वश में करना, अधीन करना, दवाना ।

सिर धरना ( मुहा० ) वश में होना, अधीन होना, तावे होना, आज्ञाकारी होना, स्वीकार करना, मानना ।

सिर नयाना ( मुहा० ) शरीर होना, अधीन होना, वश में होना, नमस्कार करना, सिर भुकाना ।

सिर पर चढ़ाना ( मुहा० ) लश्के को बिगाड़ना, हतराना, छोटे आदमी को बड़ा करना, आदर-मान करना ।

सिर पर भूल डालना ( मुहा० ) रोना, विलाप करना ।

सिर पीटना ( मुहा० ) रोना, विलाप करना, दुःख करना, पछताना ।

सिर फिराना ( मुहा० ) बेकायदा मिहमत करना, वृथा परिश्रम करना ।

सिर फेरना ( मुहा० ) हुकम को न मानना, आज्ञा को न मानना ।

सिर मारना ( मुहा० ) बहुत मिहमत उठाना, मिहमत से खोजना ।

सिर मुँड़ाना ( मुहा० ) फ़कीर हो जाना, चेला बनना ।

सिरका ( पु० ) आसव-विशेष ।

सिरकी ( स्त्री० ) एक तरह का सरकंडा जिसकी चटाई बनती है और भोपड़ों की छानवी होती है, एक तरह की चटाई-सी चीज़ जिसको मेंह से बचाव के लिये गाड़ी पर डालते हैं ।

सिरखण ( वि० ) मनचला, अटल, अपनी टेक पर अटल ।

सिरखण्डी ( स्त्री० ) डाँडस, जोखिम ।

सिरजना ( सं० सर्जन, सृज्=पेदा करना ) ( कि० म० ) पैदा करना, रचना, बनाना ।

सिरजा ( वि० ) उपजाया हुआ, बनाया हुआ ।

सिरफोड़ोविल ( स्त्री० ) भगड़ा, लड़ाई ।

सिरसींग ( पु० ) दंगा करनेवाला, उपद्रवी, बागी, फ़सादी, बलबाई ।

सिरहाना ( शिर ) ( पु० ) सिर की ओर, सिर की तरफ़, तक्षिया ।

सिरा ( पु० ) सिर, नोक, अंत, सीमा ।

सिरात ( वि० ) ठंडा, बीता ।

सिराना ( शीत ) ( कि० अ० ) ठंडा होना, ( कि० स० )

ठंडा करना, ( सं० सू=जाना ) ( कि० अ० ) बीतना, चला जाना, बहना, ( कि० स० ) भोजना, पठाना ।

सिरिस ( सं० शिरीष, शृ=काटना, नाश करना ) ( पु० ) एक पेड़ का नाम, अथवा उसका फूल, सरसों ।

सिल } ( सं० शिला ) ( स्त्री० ) पत्थर, चट्टान, साक्र  
सिला } और बराबर पत्थर जिस पर सिखबट्टे से भंग अथवा मसाले पीसे जाते हैं ।

सिलपट ( वि० ) चौपट, उजाड़, चौरस, बट्टाधार ।

सिलवट्टा ( सं० शिलापट्ट, शिला=सिल, पट्ट=पीसने का पत्थर ) ( पु० ) सिलखोदा ।

सिलवाई ( स्त्री० ) सीने की मज़दूरी ।

सिलाजीत ( पु० ) पत्थर का पिघला हुआ रस, औषध-विशेष ।

सिलाना ( कि० स० ) पहनने के कपड़े बनवाना ।

सिली } ( सं० शिला ) ( स्त्री० ) लोहे के हथियारों पर  
सिल्ली } धार चढ़ाने का पत्थर, पथरी, सान ।

सिवाना ( सं० सीमा ) ( पु० ) हद्द, सीव, सीमा, अंत, छोर ।

सिवार ( सं० शिवाल, शी=सीना ) ( पु० ) हरी-हरी काई-सी चीज़ जो नदी अथवा तालाबों की तली में उगती है ।

सिविल ( वि० ) दीवानी का मुहकमा, माल अथवा शासन से संबंध रखनेवाला, सभ्य, शिष्ट ।

सिविलसर्विस ( स्त्री० ) दीवानी की नौकरी, माल अथवा शासन से संबंध रखनेवाली नौकरी ।

सिसकना ( कि० अ० ) सिसकी भरना, दुनकना, बिसुरना ।

सिसकी ( स्त्री० ) कूक, शीरकार, सी-सी शब्द करना ।

सिद्धना ( कि० अ० ) कांपना, थरथराना ।

सिहरा ( फा० सेह=तीन, और सं० हार=माला ) ( पु० ) मोर, मुकुट माला, जो व्याह में दूहे और दुलहिन के सिर पर पहनाई जाती है ।

सिहराना ( कि० अ० ) थरथराना, सनसनाना, रोई खड़े होना, ( कि० स० ) सहनाना, चुलचुलाना, धीरे-धीरे मलना, थकाना, उचाटना ।

सिहाना ( कि० अ० ) देखकर संतुष्ट होना, किसी

- अच्छी चीज़ को देखकर उसके मिलने के लिये ललचाना, बाह कराना ।
- सीक ( स्त्री० ) एक तरह की घास जिसकी बुहारी बनती है ।
- सीकर ( पु० ) सीक का फूल ।
- सीका ( पु० ) छौंका, सिकहर ।
- सीकिया ( वि० ) लहरिया, डोरिया, धारीदार, पतली किनारी का ।
- सींग ( सं० शृंग ) ( पु० ) एक कड़ी चीज़ जो चौपायों के सिर में उगती है, शृंग, विषाण ।
- सींगड़ा ( शृंग ) ( पु० ) बारूद रखने का बरतन, बारूददान, सींग का बना हुआ पात्र, जिसमें बारूद रखते हैं ।
- सींगा ( शृंग ) ( पु० ) नरसिंगा, तुरही, वाद्य-विशेष ।
- सीचना ( सं० सेचन, सिचु=सीचना ) ( कि० स० ) पानी देना, पनियाना, पाटना ।
- सीचाई ( स्त्री० ) पानी देने का कार्य, सीचने का काम ।
- सींची ( स्त्री० ) सीचने का समय ।
- सीव ( सं० सीमा ) ( स्त्री० ) हड़, सिवाना ।
- सीकर ( सीकु=सीचना ) ( पु० ) जलकण, पानी के कण ।
- सीख } ( सं० शिक्षा ) ( स्त्री० ) उपदेश, समझ  
सिखावन } की बात, नसीहत ।
- सीखना ( सं० शिक्षण, शिक्षु=सीखना ) ( कि० स० ) पढ़ना, विद्या का अभ्यास करना, पाना ।
- सीज ( पु० ) नागफनी, एक कटिदार पौदा ।
- सीजना ( सं० सिवद=पसीना देना ) ( कि० अ० ) पसीजना, पसीना निकलना, उबलना, गलना ।
- सीटी ( स्त्री० ) मुँह से सी-सी-ऐसी आवाज़ निकालना ।
- सीठना ( पु० ) विवाह में गाया जानेवाला अरखीख गीत ।
- सीठा ( वि० ) फीका, बे-रस, असार ।
- सीढ़ी ( सं० निःश्रेणि ) ( स्त्री० ) सोपान, नसेनी, जीना ।
- सीत ( स्त्री० ) ओस, ठंड ।
- सीतरस ( पु० ) मुख के ऊपर का रोग-विशेष ।
- सीतलचीनी ( स्त्री० ) ओषधि-विशेष, कबाबचीनी ।
- सीतलपाटी ( स्त्री० ) बेंत की बनी हुई चटाई ।
- सीतला ( सं० शीतला, शीत=ठंडा, ला=लेना ) ( स्त्री० ) माता, चेचक, गोटी ।
- सीता ( सि=बाँधना ) ( स्त्री० ) जानकी, वैदेही, मिथिला; के राजा जनक की बेटो और श्रीरामचंद्र की पत्नी, हल के नीचे जोहे का जो फल खगा रहता है उसे भी सीता कहते हैं— ( जब राजा जनक यज्ञ के लिये हल जोतकर धरती को साफ कर रहे थे तब धरती के भीतर से एक घड़ा निकला और उसमें से एक लड़की निकली, उसी कारण उसका नाम सीता रखा गया ) ।
- सीतापति ( सीता+पति ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र ।
- सीताफल ( पु० ) शरीफा, खिरीसागर, कुम्हड़ा ।
- सीदना ( कि० अ० ) दुःखी होना, दुःख पाना ।
- सीधा ( सं० साधु ) ( वि० ) सोझा, सरल, सामने, सम्मुख, सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध, सच्चा, साधु, खरा, साफ़दिल, धर्मी, ईमानदार, नेक, दाहना, ( सं० सिद्ध ) ( पु० ) कोरा अन्न, बे पका खाना ।
- सीना ( सं० सीवन, सिवु=सीना ) ( कि० स० ) टाँकना, टाँके लगाना, टाँके मारना, गाँठना ।
- सीप } ( स्त्री० ) समंदर के एक जानवर की हड्डी  
सांपो } जिसमें से मोती निकलती है, पका आम ।
- सीमंत ( पु० ) केस रचना, माँग काढ़ना, गर्भवती का छूटे या छाठवें महीने का संस्कार ।
- सीमंतिनी ( स्त्री० ) नारी, अबला, स्त्री ।
- सीमंती ( स्त्री० ) औरत, स्त्री ।
- सीमा ( सि=बाँधना ) ( स्त्री० ) सिवाना, हड़, सीव, मर्यादा, अवधि ।
- सीमाविवाद ( पु० ) अठारह प्रकार के न्यायों में एक न्याय, सरहद्दी फगड़ा ।
- सीय ( सं० सीता ) ( स्त्री० ) जानकी, वैदेही ।
- सीरा ( पु० ) मोहनभोग, हलुवा, रस, द्रव-पदार्थ ।
- सीरा } ( सं० शीतल ) ( वि० ) ठंडा, शीतल, गीला ।  
सीला }
- सीस ( पु० ) मस्तक, माथा, सिर ।
- सीसफूल ( पु० ) सिर का एक आभूषण ।
- सीसा ( सं० सीस या सीसक, सिवु=धना ) ( पु० ) एक धातु का नाम ।

सीसों ( सं० शिंशपा ) ( पु० ) शीशम का पेड़ या उसकी छकड़ी ।

सु ( उपस० ) अच्छा, सुंदर, उत्तम, बहुत, ( कि० वि० ) अच्छी तरह से, सुख से, सुंदरता से, सुगमता से, सहज में, बे-मिहनत, कभी-कभी, पूना-आदर और संपदा आदि अर्थों में भी बोला जाता है ।

सुंघाना ( कि० सं० ) महकाना, सुवासना ।

सुअन ( पु० ) बेटा, पुत्र ।

सुअर ( पु० ) मूकर, वाराह ।

सुअर ( पु० ) रसोइया, बावर्ची ।

सुआसिन ( स्त्री० ) सुहागिन, सधवा, सौभाग्यवती स्त्री ।

सुकुचाना } ( सं० संकीर्ण ) ( कि० अ० ) खजाना,  
सकुचाना } शमीना, डरना, ( कि० सं० ) किसी को खजाना, खजित करना ।

सुकटा ( वि० ) दुबला, पतला, दुर्बल ।

सुकटी ( स्त्री० ) भूखी मछली ।

सुकड़ना ( सं० संकीर्ण ) ( कि० अ० ) सिमटना, इकट्ठा होना, सीध होना ।

सुकंठ ( सु=प्रच्छा, कंठ=गला ) ( पु० ) वानरों का राजा सुप्रीव ।

सुकंठक ( पु० ) पिंडखनूर ।

सुकर ( वि० ) सहज, सीधा, करने योग्य ।

सुकर्करा ( स्त्री० ) कठोर मार्ग ।

सुकर्म ( कृ=करना ) ( पु० ) उत्तम काम, ससमयोग, विश्वकर्मा ।

सुकवार ( वि० ) कोमल, नर्म, निर्मल, मुलायम ।

सुकाल ( सु=प्रच्छा, काल=समय ) ( पु० ) अच्छा समय, अच्छी ऋतु, सौघाई, सक्षन्गी, बहुतायत ।

सुकुमार ( सु=सुंदर, कुमार=बालक ) ( वि० ) कोमल, मनोहर, सुंदर, नाजूक ।

सुकृत ( सु=मला, कृ=करना ) ( पु० ) धर्म, पुण्य, अच्छा काम, अच्छी करनी, ( वि० ) पुण्यारमा, धर्मात्मा, सुशील, भाग्यवान् ।

सुकृती ( वि० ) धर्मात्मा, दाता, धन्य ।

सुकेतु ( सु=प्रच्छा, केतु=भंडा ) ( पु० ) एक राक्षस या यक्ष का नाम जो ताड़का का बाप था ।

सुकेतुसुता ( सुकेतु+सुता ) ( स्त्री० ) ताड़का ।

सुख ( सुख=सुखी होना अथवा सु=प्रच्छी तरह से, खन्=

खोदना—दुःख को ) ( पु० ) चैन, आनंद, आराम, कल, शांति, हर्ष ।

सुखचैन ( मुहा० ) आराम, चैनचान ।

सुख पाना ( मुहा० ) आराम करना, चैन करना ।

सुखकारी ( वि० ) सुख देनेवाला

सुखतला ( पु० ) जूते में लगा हुआ दूसरा तला जिससे हीला जूता कुछ संकेत हो जाता है ।

सुखद ( सुख=चैन, द=देनेवाला, दा=देना ) ( वि० )

सुखदायी, सुख देनेवाला, सुखदायक ।

सुखदर्शन ( पु० ) पौदा-विशेष ।

सुखदायक } ( सुख=चैन, दा=देना ) ( वि० ) सुख  
सुखदायी } देनेवाला ।

सुखदास ( पु० ) जाति-विशेष ।

सुखधाम ( सुख=चैन, धाम=घर ) ( पु० ) सुख के घर, सुखदायी ।

सुखपाल ( सुख=चैन+पाल=पालना ) ( पु० ) पालकी, होली । जैसे—...सुखपाल चढ़े-चढ़े जोगधना के — “कविप्रहस्य” ।

सुखमा ( सुख=चैन, मा=नापना ) ( स्त्री० ) परम शोभा, बहुत ही सुंदरता ।

सुखारी ( सं० सुख ) ( वि० ) सुखी ।

सुखाला ( वि० ) सहज, सरल ।

सुखावट ( सुख+प्रा, वहू=प्राप्त करना ) ( वि० ) सुखजनक, सुखदाता ।

सुखी ( सुख ) ( वि० ) सुख पानेवाला, सुख भोगने-वाला, सुखिया, सुखारी ।

सुखेनी ( स्त्री० ) बड़ा करौंदा ।

सुख्याति ( स्त्री० ) सुयश, नामवरी ।

सुगति ( सु=अच्छी, गति=चाल ) ( स्त्री० ) अच्छी गति, मुक्ति, छुटकारा ।

सुगंध ( सु=अच्छी, गंध=वास ) ( स्त्री० ) अच्छो वास, महक, खुशबू ।

सुगंधित ( सुगंध ) ( वि० ) जिसमें अच्छी वास हो, सुगंधवाला, खुशबूदार ।

सुगम ( सु=अच्छी तरह से, गम्=जाना ) ( वि० ) सहज, आसान, सरल ।

सुगमता ( स्त्री० ) सरलता, आसानो ।

सुप्रीव ( सु=सुन्दर, प्रीवा=गरदन ) ( पु० ) वानरों का

प्रधान और सूर्य का बेटा जो किष्किंधापुरी का राजा  
और श्रीरामचंद्रजी का मित्र एवं सहायक था, विष्णु  
के रथ का घोड़ा ।

सुघटित ( वि० ) सुंदर रचित ।

सुघड़ ( सुघट, सु=अच्छा, घट=बना हुआ, घट=बनाना )  
( वि० ) सुंदर, सुडौल, सुथरा, मनोहर, बहुत अच्छा ।

सुचक्रना ( सं० सुचक्रित ) ( कि० अ० ) अचंभा करना ।

सुचरित ( चर=जाना, खाना ) ( वि० ) श्रेष्ठाचार, शुभा-  
चरण नेकचलन ।

सुचरित्रा ( स्त्री० ) पतिव्रता ।

सुचित् ( सु=अच्छा, चित्=मन ) ( वि० ) सुगम, आसान,  
निश्चित, बेफिक्र, निश्चितता, चौकस, सावधान ।

सुचितार्ह ( स्त्री० ) निश्चितता, सावधानी, बेफिक्री ।

सुचितित ( वि० ) अच्छी तरह विचारा हुआ ।

सुचेत ( सु=अच्छी, चेत=सुध ) ( वि० ) चौकस, साव-  
धान, होशियार, सचेत ।

सुजन ( सु=अच्छा, जन=मनुष्य ) ( वि० ) साधु, सजन,  
भलामानस, भला आदमी ।

सुजनता ( स्त्री० ) सौम्यता, सौजन्य, सीधापन,  
सजजनता, भलमंसी ।

सुजान ( सं० सुज्ञानी, सु=अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला )  
( वि० ) ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अच्छा  
जाननेवाला ।

सुजाना ( कि० सं० ) फुलाना, बढ़ाना ।

सुझाना ( कि० सं० ) दिखाना, बताना, समझाना,  
इशारा करना ।

सुटकना ( कि० अ० ) निगलना, गले के नीचे उतारना ।

सुटकुन ( स्त्री० ) पतली छड़ी ।

सुठि ( सं० सुट्ट, सु=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना )  
( वि० ) सुंदर, उत्तम, बहुत ।

सुडकना ( कि० सं० ) एक साँस में पीना ।

सुडकी ( कि० ) गुड़ी की डोरी छोड़ना ।

सुडप ( स्त्री० ) कौर, कवज, प्रास ।

सुडपना ( कि० सं० ) चाटना, चूमना, निगलना ।

सुडौल } ( सु=अच्छा, डौल या ढन=रूप ) ( वि० )  
सुदब } सुधर, सुथरा, सुंदर, मनोहर ।

सुत ( सु=वेदा होना, जन्मना ) ( पु० ) बेटा, पुत्र,  
लड़का ।

सुतरा ( पु० ) काला, कड़ा, आभूषण-विशेष ।

सुतरी ( स्त्री० ) सन की पतली रस्सी ।

सुता ( सुत ) ( स्त्री० ) बेटे, पुत्रो, कन्या, लड़की ।

सुतार ( सं० सूत ) ( पु० ) बढ़ई, खाती ( सं० सुतारा,  
सु=अच्छा, तारा=नक्का ) अच्छा समय, अवकाश,  
घात, दाँव, ( वि० ) सूत का बना हुआ, जिसमें सूत  
अधिक अंशों में हो ।

सूतीछो ( वि० ) धारदार, बहुत चोखी ।

सुथन ( पु० ) पाजामा, पैरों में पहनने का  
सुथना कपड़ा ।

सुथनी

सुथरा ( वि० ) अच्छा, सुंदर, सुडौल, सुहावना ।

सुथरासाही ( पु० ) नानकसाही कक्रोर ।

सुदर्शन ( सु=अच्छा, दर्शन=देखना जो देखने में अच्छा  
अथवा शुभ हो ) ( पु० ) विष्णु का चक्र, ( वि० )  
जो देखने में अच्छा हो, सुंदर, सुहावना, शुभ-  
दर्शन ।

सुदामा ( सु=अच्छा, दा=देना ) ( पु० ) एक माली  
का नाम जिसने श्रीकृष्ण को माला पहनाई थी,  
श्रीकृष्ण का साथी, एक ग्वाला का नाम, श्रीकृष्ण  
के एक गरीब मित्र का नाम जो जाति का ब्राह्मण  
था और जिसको फिर श्रीकृष्ण ने बहुत ही धनवान्  
बना दिया, बादल, एक पहाड़ का नाम, समुद्र ।

सुदि ( सु=अच्छी तरह से, दिव्=चमकना ) ( अव्य० )  
उज्जला पाख, शुक्रपक्ष ।

सुदिन ( सु+दिन ) ( पु० ) अच्छा दिन, अच्छा समय ।

सुदड़ ( वि० ) कठोर, अटल ।

सुदृश्य ( वि० ) दर्शनीय, देखने योग्य, मनभावन,  
उत्तम, सुकाज ।

सुध } ( सं० सुधी, सु=अच्छा, धी=बुद्धि ) ( स्त्री० )  
सुधि } चेत, याद, स्मरण, खबरदारी ।

सुधबुध ( सं० शुद्धबुद्धि ) ( स्त्री० ) समझ, बुद्धि, चेत,  
शुद्ध ज्ञान ।

सुध लेना ( मुहा० ) खबर लेना ।

सुधरना ( सं० सुधरण, सु=अच्छी तरह से, धृ=रखना )  
( कि० अ० ) सही होना, अच्छा होना, बनना,  
सफल होना, सम्बलना ।

सुधर्मा ( स्त्री० ) देवतामा, सुर-समाज ।

सुधाँ ( अ० ) सहित, समेत, युक्त ।

सुधा ( सु=अच्छी भाँति से, धे=पीना या धा=रखना )  
( पु० ) अमृत, अमी, पीयूष, आयेहयान, रस जल ।

सुधांशु ( सुधा=अमृत, अंशु=किरण, जिसकी किरणें अमृत के-जैसा आनंद देनेवाणी हैं ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा, कपूर

सुधाकर ( सुधा=अमृत, कर=किरण ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा, कपूर ।

सुधार ( पु० ) मरम्मत ।

सुधारना ( सुधरना ) ( कि० म० ) सँवारना, बनाना, अच्छा करना, सही करना, सजाना, ठीक-ठाक करना ।

सुधी ( सु=अच्छा, धी=बुद्धि जिसकी है ) ( वि० ) पंडित, बुद्धिमान्, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ

सुन ( म० शून्य ) ( वि० ) बेहोश, मूर्च्छित, शोतांगी, खाकी, छुँछा, रीता, मतिहीन ।

सुनकातर ( पु० ) एक प्रकार का साँवर ।

सुनना ( कि० म० ) कान देना, श्रवण करना ।

सुनसहरी ( स्त्री० ) कुष्ठरोग-विशेष ।

सुनयना ( स्त्री० ) सुंदर नेत्रवाली, जनकपत्नी ।

सुनसर ( पु० ) एक गहने का नाम ।

सुनसान ( वि० ) उजाड़, निर्जन, एकांत, निराला ।

सुनहरा } ( सोना ) ( वि० ) सुनहला, सोने का या  
सुनहरी } सोने-सा ।

सुनाना ( कि० म० ) जताना, बनाना, कहना, समझाना ।

सुनार ( सं० स्वर्णकार, स्वर्ण=सोना, कार=करनेवाला, क=करना, अर्थात् जो सोने की चीज बनावे ) ( पु० ) सोने-चाँदी की चीज बनानेवाला ।

सुनारिन } ( स्त्री० ) सुनार की स्त्री, सुनार की लुगाई ।  
सुनारनी }

सुनारी ( स्त्री० ) सुनार का काम ।

सुनावनी ( सुनाना ) ( स्त्री० ) मरने का समाचार, जो कोई परदेस में मर जाय, उसके मरने की खबर ।

सुनासीर ( सु=अच्छा, नासीर=मेना का मुह, अर्थात् जिसकी सेना अच्छी सजी हो ) ( पु० ) इंद्र, देवताओं का राजा ।

सुनीति ( स्त्री० ) शिष्टाचार, अच्छी नीति, भुव की माता ।

सुंदर ( सु=अच्छी तरह से, द=आदर करना ) ( वि० ) मनोहर, सुरूप, बहुत अच्छा, सुडौल, खूबसूरत ।

सुंदरता ( सुंदर ) ( स्त्री० ) मनोहरता, शोभा, छवि ।

सुंदरी ( सुंदर ) ( वि० ) रूपवती, खूबसूरत स्त्री ।

सुधावट ( स्त्री० ) सुवास, मिट्टी की गंध, गंध-विशेष, सोंधावन ।

सुझ ( पु० ) बिंदी, शून्य ( वि० ) गतिहीन, स्तब्ध ।

सुझा ( सं० शून्य ) ( स्त्री० ) सिकर, बिंदी ।

सुपथ ( सु=अच्छा, पथ=रास्ता ) ( पु० ) अच्छा रास्ता, सुमार्ग, अच्छी राह, अच्छा चलन ।

सुपर्ण ( सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता, पक्षव ) ( पु० ) गरुड, ( वि० ) अच्छे पक्षीवाला ।

सुपात्र ( सु+पात्र ) ( वि० ) योग्य, भलामानस, उत्तम जन, ( पु० ) अच्छा बरतन, शरीफ ।

सुपारी ( स्त्री० ) एक कड़ा फल जिसकी पान के साथ खाते हैं, पूगीफल ।

सुपास ( पु० ) आराम, सुख, सुवीता ।

सुपुत्र ( सु=अच्छा, पुत्र=बेटा ) ( पु० ) सपूत, अच्छा लड़का ।

सुप्त ( स्वप्=सोना ) ( वि० ) निद्रित, सोया हुआ ।

सुप्ति ( स्त्री० ) नींद, निद्रा ।

सुफल ( सु+फल ) ( वि० ) सिद्ध, फलदायक, सफल, लाभकारी, ( पु० ) अच्छे फलवाला पेड़ ।

सुफला ( स्त्री० ) खजूर ।

सुबुद्धि ( सु+बुद्धि ) ( वि० ) बुद्धिमान्, अच्छी समझ-वाला, चतुर, प्रवीण ।

सुभग ( सु=अच्छा, भग=ऐश्वर्य ) ( वि० ) सुंदर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्यवान्, ऐश्वर्यवान्, प्रतापी, भाग्यवान् ।

सुभगता ( सुभग ) ( स्त्री० ) उत्तमता, अच्छाई, भलाई ।

सुभगा ( सुभग ) ( स्त्री० ) सौभाग्यवती स्त्री, सुंदर स्त्री, वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत चाहे ।

सुभट ( सु=अच्छा, भट=लड़ाका ) ( पु० ) वीर, बहादुर ।

सुभद्रा ( सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप ) ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण की बहन, जिसको संन्यासी का रूप धर कर अर्जुन हर ले गया था, श्रेष्ठ नारी ।

सुभागा ( स्त्री० ) सधवा, सौभाग्यवती ।

सुभाव ( सु+भाव ) ( पु० ) अच्छा स्वभाव, सुशीलता ।

सुभीता ( सं० शुभ+हित, शुभ=अच्छा, हित=जैसा चाहिए )  
( पु० ) अवकाश, अवसर, फुल्लत, सुविधा ।

सुभुज ( सु+भुज ) ( पु० ) सुबाहु-नामक दैत्य ।

सुमति ( सु=अच्छी, मति=बुद्धि ) ( स्त्री० ) अच्छी बुद्धि,  
सुमति, सद्बुद्धि, मेलजोल रखने की बुद्धि ।

सुमन ( सं० सुमनस्, सु=अच्छा, मनस्=मन, अर्थात्  
जिससे मन प्रसन्न हो जाय ) ( पु० ) फूल, पुष्प,  
( वि० ) सुंदर ।

सुमना ( स्त्री० ) चमेली, मालती ।

सुमंत ( सं० सुमंत्र, सु=अच्छी, मंत्र=सलाह ) ( पु० )  
राजा दशरथ का सारथी और मंत्री ।

सुमंत्रक ( पु० ) वज्रीर, मुशीर, मंत्री ।

सुमरण } ( सं० स्मरण ) ( पु० ) याद, नाम लेना,  
सुमिरण } स्मरण, ( सं० स्मरणा ) ( स्त्री० ) माला,  
सुमरन } अपमाला, सुमिरनी ।

सुमरना } ( सं० स्मरण ) ( कि० सं० ) याद करना,  
सुमिरना } स्मरण करना, नाम लेना, ( सं० स्मरणी )  
( स्त्री० ) माला, अपमाला ।

सुमित्रा ( सु=अच्छी तरह से, मित्र=प्यार करना ) ( स्त्री० )  
राजा दशरथ की पत्नी और लक्ष्मण की मा ।

सुमुखी ( सु=सुंदर मुख=मुँह ) ( वि० ) सुंदर मुँहवाली,  
सुंदरी ।

सुमेरु ( सु+मेरु ) ( पु० ) मेरु पहाड़ जिसकी हिंदू सोने  
का और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहाँ  
देवता रहते हैं, ज्योतिष में उत्तर-ध्रुव, अपमाला के  
सिरे का दाना या मनका ।

सुंवा ( पु० ) बंदूक का कागज टसनो ।

सुयश ( सु+यश ) ( पु० ) अच्छा यश, अच्छा नाम,  
नामवरी ।

सुयोग ( सु+योग ) ( पु० ) अच्छी संगति, सुसंगति  
सुंदर योग, शुभ अवसर ।

सुर ( सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मनचाही चीज़ को  
देनेवाला, सुर=ऐश्वर्य रखना या चमकना अथवा सु=  
बहुत बल रखना ) ( पु० ) देवता, देव, सूर्य ।

सुर ( सं० स्वर ) ( पु० ) ताल, तान, आवाज़, राग, गान ।

सुर मिलाना ( मुहा० ) एक स्वर करना, अच्छे स्वर  
से गाना ।

सुरगुरु ( सु+गुरु ) ( पु० ) देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

सुरंग ( सु+रङ्ग ) ( पु० ) हिंगलू, ( स्त्री० ) ज़मीन के  
नीचे का रास्ता, ( वि० ) लाल या तेलिया रंग का,  
( सुरङ्ग जैसे बोझ ) सुंदर, जिसका रंग अच्छा हो,  
चमकीला ।

सुरत ( सु=अच्छी तरह से, रम्=खेलना ) ( पु० ) स्त्री-प्रसंग,  
मैथुन, भोग-विलास ।

सुरत } ( सं० स्मृति ) ( स्त्री० ) सुध, चेत, खबर,  
सुरता } याद, ध्यान ।

सुरतरु ( सुर+तरु ) ( पु० ) देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

सुरता } ( सं० स्मृति, स्मृ=याद करना ) ( वि० )  
सुरतीला } सुचेत, सावधान ।

सुरती ( स्त्री० ) तमाकू, तंबाकू ।

सुरतीला ( वि० ) सावधान, सुचेत, स्मरणकर्ता ।

सुरधेनु ( सुर+धेनु ) ( स्त्री० ) कामधेनु, इंद्र की गाय ।

सुरनदी ( सुर+नदी ) ( स्त्री० ) त्रिव्यद्वगंगा, आकाश-  
गंगा, मंदाकिनी, सुरदांघिका ।

सुरपति ( सुर+पति ) ( पु० ) देवताओं का राजा, इंद्र ।

सुरपुर ( पु० ) } ( सुर+पुर या पुरी ) स्वर्ग, इंद्र-  
सुरपुरी ( स्त्री० ) } लोक, अमरावती ।

सुरभि ( सु=अच्छी तरह से, रभू=बहुत चाहना या शब्द  
करना ) ( पु० ) सुगंध, वसंतश्रुत, जायफल, चैत  
का महीना, सोना, ( सुरभा ) ( स्त्री० ) कामधेनु,  
गाय, धरती, ज़मीन, ( वि० ) सुगंधित, विख्यात,  
अच्छा, सुंदर, मनोहर ।

सुरभोग ( पु० ) अमृत, सुधा, पीयूष ।

सुरमणि ( पु० ) इंद्र, चिंतामणि, मणि-विशेष ।

सुरमा ( पु० ) सूखा काजल ।

सुरम्य ( वि० ) सुंदर, रमणीय, मनोहर ।

सुरराज ( पु० ) देवताओं का राजा, इंद्र ।

सुररिपि ( पु० ) नारद ।

सुरलोक ( सुर+लोक ) ( पु० ) स्वर्ग, इंद्रलोक, सुरपुरी ।

सुरस ( सु=अच्छा, रस=स्वाद ) ( वि० ) मीठा, मुश्कटु ।

सुरसर ( पु० ) मानसरोवर ।

सुरसरि } ( सं० सुरसरित्, सुर=देवता, सरित्=नदी )  
सुरसरिता } ( स्त्री० ) गंगा  
सुरसरा }

सुरसा ( सुरम ) ( स्त्री० ) नागों की माता ।

सुरसुराना ( कि० अ० ) गुदगुदी पैदा होना, सरसराना ।

सुरसुराहट ( स्त्री० ) गुदगुदी, सरसराहट ।

सुरसुरी ( स्त्री० ) सरसराहट ।

सुरसेनप ( सुर+सेन+पा=वचाना ) ( पु० ) कासिकेय,  
कीर्तिमुख, पदानन ।

सुरा ( सुर=चमकना या बहुत बल रखना ) ( स्त्री० ) मदिरा,  
मद, दारू, शराब ।

सुराई ( स्त्री० ) बीरता, बहादुरी ।

सुरांगना ( सुर=देवता, अंगना=स्त्री ) ( स्त्री० ) देवताओं  
की स्त्री, देवपत्नी, असुरा ।

सुराचार्य ( सुर+आचार्य ) ( पु० ) देवताओं के गुरु,  
बृहस्पति ।

सुरापगा ( सुर+आपगा ) ( स्त्री० ) देवनादी, गंगा ।

सुरारि ( सुर+अरि ) ( पु० ) देवताओं के वैरी, असुर,  
राक्षस, दैत्य ।

सुरूप ( सुर+रूप ) ( वि० ) सुंदर, सुखील, मनोहर ।

सुरेंद्र ( सुर+इंद्र ) ( पु० ) देवताओं का राजा, सुरपति,  
इंद्र ।

सुरेश } ( सुर+ईश या ईश्वर ) ( पु० ) इंद्र, महा-  
सुरेश्वर } देव, शिव ।

सुरेश्वरी ( सुरेश्वर ) ( स्त्री० ) देवी, दुर्गा, महामाया,  
योगमाया ।

सुरैत } ( सुरत ) ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसके साथ  
सुरैतिन } ब्याह तो न हुआ हो लेकिन वह घर में  
ढाल ली जाय, रखनी, उदरी, उपपत्नी ।

सुलक्षण ( पु० ) शुभ चिह्न ।

सुलगना } ( सं० संलग्न ) ( कि० अ० ) धीरे-धीरे  
सिलगना } जलना, लहरना, बलना, धुआँ निकलना ।

सुलभना ( कि० अ० ) खुलना, सुधरना ।

सुलभ ( स=अच्छी तरह से, लभ=पाना ) ( वि० ) सहज,  
सुगम, आसान, सहज, जो सहज से मिल जाय ।

सुलोचना ( स=अच्छी, लोचन=आँख, जिसकी हो )  
( स्त्री० ) जिस स्त्री की आँखें अच्छी हों, सुंदरी,  
मनोहर स्त्री, रावण के बेटे मेघनाद की स्त्री का नाम ।

सुवन ( सं० सूत ) ( पु० ) बेटा, पुत्र, लड़का ।

सुवर्ण ( सु+वर्ण ) ( पु० ) सोना, हरिचंदन, सोना गेरू  
मिट्टी, ( वि० ) सुजाति, अच्छी जाति का, सुंदर,  
चमकीला, सुरंग, अच्छे रंग का ।

सुवास ( सु+वास ) ( पु० ) अच्छा घर, अच्छा मकान,  
( स्त्री० ) सुगंध, सुशब्द ।

सुवासिनी ( सु=सुख से, वसु=रहना ) ( स्त्री० ) सुहागिन,  
अपने बाप के घर रहनेवाली स्त्री ।

सुबाहु ( सु+बाहु ) ( पु० ) एक राक्षस का नाम ।

सुवेल ( सु=अच्छा, वेल=किनारा, जो समुद्र के पास है )  
( पु० ) समुद्रतट, त्रिकूट पहाड़ ।

सुशील ( सु+शील ) ( वि० ) सुस्वभाव अच्छे चाख-  
चखनवाला, सीधा, साधु ।

सुपुस ( स्वप्=सोना ) ( वि० ) सोनेवाला, जानशून्य ।

सुपुसि ( स्त्री० ) सुनिद्रा, नींद, जाग्रत, स्वप्न, सुपुसि,  
तुरीय इन चार अवस्थाओं में एक अवस्था का  
नाम ।

सुसकारना ( कि० अ० ) फनफनाना, सिसकारी  
भरना ।

सुसंग ( सु+संग ) ( पु० ) अच्छी संगति, सुसंगति,  
नेक सोहबत ।

सुसताना ( सं० स्वस्थ या सुस्थ ) ( कि० अ० ) विश्राम  
लेना, ठहरना, साँस लेना, आराम करना ।

सुसर } ( सं० श्वशुर ) ( पु० ) पति या पत्नी का  
सुसरा } पिता ।

सुसरार } ( सं० श्वशुरालय, श्वशुर=ससर, आलय=  
सुसराल } घर ) ( स्त्री० ) ससर का घर या घराना ।

सुस्त ( वि० ) निर्बल, डीला, शिथिल ।

सुस्थ ( सु=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना ) ( वि० ) भला,  
चंगा, नीरोग, सुखी, प्रसन्न, हर्षित ।

सुस्थिर ( सु+स्थिर ) ( वि० ) अटल, अचंचल, निश्चल,  
हद, ठहराऊ ।

सुस्वाद ( सु+स्वाद ) ( वि० ) अच्छा स्वाद, मजेदार,  
सुरम, मधुर, मीठा ।

सुहराना ( कि० सं० ) बदन पर धीरे-धीरे हाथ फेरना,  
सहलाना ।

सुहाई ( वि० ) शोभायमान, ( कि० अ० ) शोभित हुई ।

सुहाग ( सं० सौभाग्य ) ( पु० ) अच्छा भाग, पति का  
प्यार, पति के जीवित रहने की दशा, स्त्री का भंगार  
अर्थात् काजल, टोकी आदि जो पति के जीने का  
चिह्न है ( यह शब्द 'रंडापा' का उलटा है ) ।

१. नेत्रस्थं जाग्रतं विद्यात् स्वप्नं कण्ठे समादिशेत् ।

सुपुसि हृदये चैव तुरीयं मूर्ध्नि संस्थितम् ॥



**सुहागन** } ( सं० सौभागिनी, सुभगा, अच्छे भागवाली )  
**सुहागिन** } ( स्त्री० ) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सचवा स्त्री, सपत्निका ।

**सुहागा** ( पु० ) एक वस्तु, जिससे सोना-चाँदी आदि गलाते हैं ।

**सुहाना** } ( सं० शोभन ) ( वि० ) सुंदर, मनभावन,  
**सुहावना** } मनोहर, ( कि० अ० ) अच्छा लगना, मन को भाना, फटना, रुचना ।

**सुहाल** ( पु० ) सुहाली, पकान ।

**सुहाली** ( स्त्री० ) पकवान-विशेष ।

**सुहृद्** ( सु=अच्छा, हृद्=मन ) प्रत्युपकार की इच्छारहित जो उपकार करे उसका नाम सुहृद् है, ( वि० ) मित्र, दोस्त, हितु, सखा ।

**सूँ** ( सं० सह ) ( अव्य० ) सों, से ।

**सूँस** ( पु० ) सूस, एक जल-जंतु ।

**सूँगरा** ( पु० ) पड़वा, भैंस का बच्चा ।

**सूँघना** ( सं० सुग्राण, सु, प्रा=सूँघना ) ( कि० सं० ) वास लेना, महक लेना, सुगंध लेना ।

**सूँघा** ( पु० ) भेदिया, जासूस ।

**सूँट** ( स्त्री० ) चुप, मौन ।

**सूँट भरना** या **मारना** ( मुहा० ) चुपचाप रहना ।

**सूँट मारे जाना** ( मुहा० ) चुपचाप चला जाना ।

**सूँड़** ( सं० शुण्ड, शुण=जाना ) ( स्त्री० ) हाथी की नाक ।

**सूँड़ी** ( सं० शुंडी ) ( स्त्री० ) एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो कपास, अनाज आदि के पौदों को हानि पहुँचाता है ।

**सूँतना** } ( कि० सं० ) तोड़ना ( जैसे पेड़ के पत्ते ),  
**सूँथना** } खींचना ( जैसे तलवार ) ।

**सूँस** ( पु० ) जलहस्ती ।

**सूँकर** ( सं० शूकर, सू=ऐसा शब्द, कर=करनेवाला, क=करना ) ( पु० ) एक जंगली जानवर का नाम, बाराह, सूकर ।

**सूँआ** } ( सं० शुक्र ) ( पु० ) तोता, सुग्गा, बड़ी  
**सूँवा** } सूई ।

**सूई** ( सं० सूची, सूच=जतलाना या सिव=सीना ) ( स्त्री० ) कपड़े सीने की चीज़ ।

**सूकट** ( वि० ) सुकला, सूखा हुआ, भीथबल ।

**सूकर** ( पु० ) सूँकर ।

**सूकी** ( स्त्री० ) चौथली ।

**सूक** ( सु+उक्त, सु=सुंदर, उक्त=कहा, वच्=कहना ) ( पु० ) सुंदर वार्ता, पुरुषसूक ।

**सूक्ष्म** ( सूच=जतलाना ) ( वि० ) थोड़ा, छोटा, पतला, महीन, बारीक, पतिल ।

**सूक्ष्मता** ( सूक्ष्म ) ( स्त्री० ) छोटापन, पतलापन, बारीकी ।

**सूक्ष्मदर्शी** ( सूक्ष्म+दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना ) ( वि० ) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, तेज, जिसकी नज़र तेज़ हो, बारीकबी ।

**सूखलुड़ी** ( स्त्री० ) रोग-विशेष, क्षयी-रोग ।

**सूखना** } ( सं० शोषण, शुष्=सूखना ) ( कि० अ० )

**सूकना** } शुष्क होना, कड़ा होना, लुश्क होना, मरना, जलना ( जैसे पेड़ आदि ), उड़ना, हवा होना ( जैसे थर्क आदि ), पचकना, टूटना ( जैसे स्त्री का अथवा गाय आदि का दूध ), दुबला होना, बिगड़ना, गलना, खराब होना, कुम्हलाना, मुरझाना, रस-विहीन होना ।

**सूखा** ( सं० शुष्क ) ( वि० ) बेरस, शुष्क, गला, सड़ा, ( पु० ) बालकों का रोग-विशेष ।

**सुग** ( स्त्री० ) द्विधा, शंका, चिंता ।

**सूगा** ( पु० ) तोता ।

**सूचक** ( सूच+अक, सूच=जतलाना ) ( वि० ) जतलानेवाला, बतलानेवाला, सिखानेवाला, बोधक, पिशुन ।

**सूचना** ( सूच=जतलाना ) ( स्त्री० ) जतलाना, चिताना, हत्तिला ।

**सूचनापत्र** ( पु० ) हत्तिलानामा, नोटिस, इशितहार ।

**सूचिक** ( पु० ) दरज़ी, ख़यात ।

**सूचित** ( वि० ) जताया गया ।

**सूचीपत्र** ( सूची=जतलाना, पत्र=पत्रागत ) ( पु० ) क्रैड-रिस्त, बीजक ।

**सूज** ( स्त्री० ) शोथ, फुलाव, फूलना ।

**सूजना** ( सं० शोथ या श्वयथु, श्वि=फूलना ) ( कि० अ० ) फूलना, मोटा होना, बढ़ना, किसी रोग से देह का कोई अंग फूल जाना ।

**सूजा** ( पु० ) बड़ी सूई, बेधी, सुतारी ।

**सूजी** ( सं० सूचिक ) ( पु० ) दरज़ी, सीनेवाला, ( सं० सूची ) ( स्त्री० ) सूई ।

सृजा ( स्त्री० ) मोटा आटा, दरदरा आटा ।

सूक्ष्म ( स्त्री० ) दृष्टि, दर्शन, बुद्धि, परख ।

सूक्ष्मना ( स्त्री० श्र० ) दिखना, नज़र आना, देख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रगट होना ।

सूत ( सं० सूत्र ) ( पु० ) डोरा, तागा, धागा, रूई का डोरा, सूत्र, भेद ।

सूत ( सू=चलाना, बहुत बल रखना या पैदा होना ) ( पु० ) रथवान्, सारथी, बड़हं, भाट, वर्णसंकर, दोगला, जिसका बाप राजपूत और मा ब्राह्मणी हो, पुराणों का जाननेवाला, एक पंडित जिसका नाम लोमहर्षण था जिसने नैमिषारण्य के बहुत से ऋषियों को पुराण और महाभारत की कथा सुनाई थी और उसकी बलदेवजी ने मार डाला था ।

सूतक ( सू=पैदा होना ) ( पु० ) लड़के के पैदा होने, गर्भ के गिरने या मौत हो जाने से जो अपवित्रता होती है उसे सूतक कहते हैं ।

सूतना ( सं० सूत ) ( स्त्री० श्र० ) सोना ।

सूतल ( पु० ) पानाल-विशेष, सुतल ।

सूतली ( स्त्री० ) सन का डोरी, रस्वी ।

सूतिका ( स्त्री० ) प्रसूता स्त्री, प्रसूतिका, ज़च्चा ।

सूतिकागृह ( पु० ) जिस घर में लड़का पैदा हो ।

सूती ( सं० सूतीय ) ( वि० ) सूत से बना हुआ ।

सूतू ( वि० ) बहुत सोनेवाला ।

सूत्र ( सूत्र=गथना या शिर्=गमना ) ( पु० ) सूत, डोरा, धागा, तागा, रीति, क्रायदा, ऐसा वाक्य जिससे संक्षेप-रूप में बहुत-से अर्थ का ज्ञान हो, जैसे—व्याकरण आदि के सूत्र ।

सूत्रधार ( सू=धरना ) ( पु० ) प्रधान नट, नाटक के खेल का मुखिया ।

सूथन ( पु० ) पाजामा, जांघिया, सुथनी ।

सूद ( पु० ) ज़ाब, व्याज, क्रायदा ।

सूदन ( सूद=मारना ) ( पु० ) मारना, ( वि० ) मारनेवाला ।

सूदूशाला ( स्त्री० ) पाकशाला, रसोईघर, बावर्ची-खाना, कुकिंगरूम ।

सूधा ( सं० शुद्ध ) ( वि० ) सीधा, भोला, निष्कपट, शुद्ध ।

सून ( पु० ) पुत्र, चारमज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य, ( वि० ) सूना ।

सूना ( सं० शूर्य ) ( वि० ) झांझी, छूँछा, रीता, उजाड़ ।

सूनु ( सू=पैदा होना ) ( पु० ) बेटा, पुत्र, लड़का ।

सूप ( सं० सूर्य, सूर्य=नापना ) ( पु० ) छाज, अनाज पछोरने की चीज़ ।

सूपकार } ( सूप=रसाई, कार=करनेवाला ) ( पु० )  
सूपकारी } पाचक, रसोईखरदार ।

सूपायेना ( पु० ) चिढ़िया-विशेष ।

सूया ( पु० ) प्रांत, प्रदेश ।

सूम ( वि० ) कंजूस, मक्खीचूस, कृपण ।

सूर ( सू=चलाना ) ( पु० ) सूर्य, सूरदास ।

सूर ( सं० शूर ) ( पु० ) वीर, बहादुर, श्रधा ।

सूरज ( सं० सूर्य ) ( पु० ) रवि, भानु, दिनकर, आक्र-ताव, सुशेद ।

सूरज-गहन } ( सं० सूर्यग्रहण ) ( पु० ) सूर्य का  
सूरज-ग्रहण } गहन ।

सूरजमुखी ( सं० सूर्यमुखी ) ( पु० ) एक फूल का नाम ।

सूरदास ( पु० ) हिंदी के एक बड़े कवि और गवैये जो अंध थे; हिंदुओं में अंधे को सूरदास कहते हैं ।

सूरन ( सं० सूरण ) ( पु० ) जिमीकंद ।

सूरमलार ( पु० ) एक रागिनी का नाम ।

सूरमा ( सं० शूर ) ( वि० ) बहादुर, वीर, सामंत, शूरवीर ।

सूरमापन ( पु० ) बहादुरी, वीरता ।

सूरवीर ( सं० शूरवीर ) ( पु० ) वीर, बहादुर, सामंत, योद्धा ।

सूरा ( सं० शूर ) ( पु० ) बहादुर, शूरवीर, योद्धा, एक आदमी लड़ाई में जाने के लिये तैयारी कर रहा था, उस समय उसकी स्त्री ने कहा—

“सूरा रण में जाय कै लोहा करो निशंक ।

ना मोहि चढ़े रैंडापरो ना तोहि चढ़े कलंक ॥”

अर्थ—हे धीर ! लड़ाई में जाकर निडर होके लड़ो, जिससे न तो मैं रैंड होऊँ और न तुम्हारे नाम को दाग लगे

सूरी ( स्त्री० ) शूली, खंडी ।

सूर्य ( सू=चलना ) ( पु० ) सूरज, दिनकर, दिवाकर ।

सूर्यकांत ( पु० ) मणि-विशेष जिसमें से सूर्य के ताप से आग निकलती है ।

सूर्यमुखी ( पु० ) फूल-विशेष ।

सूर्यवंशी ( सूर्य=सूर्य, वंशी=घराने के ) ( पु० ) राजपूतों की एक जात जिनकी राजधानी अयोध्यापुरी थी ।

सूर्यास्त ( पु० ) संध्या, सूर्य का छिपना ।

सूर्यादय ( सूर्य+उदय ) ( पु० ) सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना, सबेरा, तड़का, भोर, बिहान, प्रभात ।

सूल ( सं० शूल, शूल=बीमार होना ) ( पु० ) वायुगोला, वायुशूल, एक तरह की बीमारी जिसके होने से पसलियों में और पेट में बहुत दर्द होता है, त्रिशूल, सेल, भाले की नोक, काँटा ।

सूल ( पु० ) दशा, हाल, हालत ।

सूली ( सं० शूल ) ( स्त्री० ) एक तरह का काँटा जिस पर प्राणदंड का अपराधी लटकाया जाता है ।

सूसी ( स्त्री० ) एक तरह का कपड़ा ।

सूहा ( शोण, शोण=लाल होना ) ( वि० ) लाल, राता, किरमिची, ( पु० ) एक राग का नाम; इस राग का प्रयोग सूर और तुलसी के गीतों में बहुत हुआ है ।

सृजना ( कि० सं० ) निर्माण करना, बनाना, सृष्टि रचना ।

सृष्ट ( सृज्=पैदा होना ) ( वि० ) रचित, निर्मित ।

सृष्टि ( सृज्=पैदा होना ) ( स्त्री० ) उत्पत्ति, संसार, जगत्, दुनिया, स्वभाव, प्रकृति ।

सृष्टिकर्ता ( पु० ) ब्रह्मा, संसार को उत्पन्न करनेवाला ।

सृष्टिशिरोमणि ( पु० ) ( स्त्री० ) संसार में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अशक्तुहमरुलकृत, मनुष्य, ईसान ।

से ( अव्य० ) साथ, संग, अपादान और करणकारक का चिह्न ।

सैंक ( पु० ) सेंकने का काम, ततार ।

सैंकना ( कि० सं० ) गर्म करना, तत्ता करना, उष्ण करना, भूनना, भूँजना, झुलसना ।

सैंगरी ( स्त्री० ) फली, छोटी ।

सैंठा ( पु० ) सरकंडा, मूँज का पौदा ।

सैंत } ( कि० वि० ) मुफ्त, बिना मोल, बेदाम ।

सैंतना ( कि० अ० ) सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना ।

सैंद ( पु० ) फल-विशेष ।

सैंदुर ( पु० ) लाल चूर्ण-विशेष जिसे सुहागिनी मांग में लगाती हैं ।

सैंध ( सं० सन्धि ) ( पु० ) छेद जिसको चोर चोरी करने के समय दीवार में करते हैं ।

सैंधना ( कि० अ० ) खोदना, ढाना ।

सैंधा ( सं० सैन्धव ) ( पु० ) लाहौरी नमक, पहाड़ी नमक ।

सैंधिया ( सिंध ) ( पु० ) ग्वालियर के महाराज की जात जो शायद सिंधनदी के पास के देश से फैली हो, जहर, विष, ( संध ) संध लगानेवाला, चोर, घर फोड़नेवाला, संधमार, संधचोर ।

सैंधी ( स्त्री० ) खजूर का रस, ताड़ो-विशेष ।

सैंहुआ ( पु० ) रोग-विशेष जिससे शरीर पर धब्बे-से पड़ जाते हैं ।

सेगुन ( पु० ) एक प्रकार की लकड़ी ।

सेन्चक ( पु० ) सींचनेवाला, भिगोनेवाला ।

सेचन ( सिन्=सींचना ) ( पु० ) सींचना, छिड़काव ।

सेचित ( वि० ) आर्द्राकृत, तर किया हुआ, सींचा गया, भिगीया गया ।

सेज ( सं० शय्या ) ( स्त्री० ) पलंग, बिछौना ।

सेजवंद ( पु० ) पलंग पर बिछौना बाँधने की डोरी ।

सेठ ( सं० श्रेष्ठ ) ( पु० ) साहूकार, महाजन, हुंडीवाल, धनवान् ।

सेत ( सं० श्वेत ) ( वि० ) धवल, सफेद, उज्ज्वा ।

सेतना ( कि० सं० ) जुगाना, संवय करना ।

सेतु ( सि=बाँधना ) ( पु० ) ( स्त्री० ) पुल, बाँध, बंध ।

सेतुबंध ( सेतु+बंध ) ( पु० ) वह जगह जहाँ श्रीराम-चंद्र ने लंका जाने के लिये नल और नील से पुल बाँधवाया था ।

सेतुबंधरामेश्वर ( सेतुबंध+रामेश्वर ) ( पु० ) शिवलिंग जिसको श्रीरामचंद्र ने लंका जाने के समय सेतुबंध पर स्थापित किया था ।

सेदना ( कि० अ० ) सैंकना, ततारना ।

सेन ( पु० ) फौज ।

सेनप ( पु० ) सेनापति, कप्तान, फौज का अफसर ।

सेना ( स=साथ, इन=मालिक या सि=बाँधना ) ( स्त्री० ) कटक, दल, फौज, लरकर, सिपाह ।

सेनानी ( सेना+नी=ले चलना ) ( पु० ) सेनापति, सिपह-  
साह्यार, कसान ।

सेनापति ( सेना+पति ) ( पु० ) क्राँज का सरदार ।

सेम ( स्त्री० ) तरकारी-विशेष ।

सेमर } ( सं० शालमली ) ( पु० ) एक पेड़ का नाम ।  
सेमल }

सेर ( पु० ) सोलह छटाँक की तीख ।

सेराना ( कि० स० ) डंडा करना, डंडा होना, बहाना ।

सेल } ( सं० शूल ) ( पु० ) बछ्छी, बछ्छा, बछ्छम,  
सेला } भाला ।

सेलखड़ी ( स्त्री० ) सफेद मिट्टी जिससे लड़के  
लिखते हैं ।

सेला ( पु० ) एक तरह की चदर, एक तरह का कपड़ा,  
एक तरह का बाघ ।

सेली ( स्त्री० ) बड़ी या जाली जिसको फ़क़ीर गले में  
पहने रहते हैं ।

सेव ( पु० ) एक तरह का फल ।

सेवक ( सेव्=सेवा करना ) ( पु० ) सेवा करनेवाला,  
पूजा करनेवाला, पुजारी, नौकर, दास, चाकर, भक्त ।

सेवकाई ( सेवक ) ( स्त्री० ) नौकरी, चाकरी, टहल,  
सेवा ।

सेवड़ा ( पु० ) एक तरह के हिंदू फ़क़ीर, जैन-  
भिक्षु ।

सेवती ( सं० सेमती, सिम्=नाश होना या तोड़ा जाना )  
( स्त्री० ) एक फूल का नाम ।

सेवना ( सं० सेवन, सेव्=सेवा करना ) ( कि० स० ) सेवा  
करना, पालना, अंडे सेना, अंडों को पालना-  
पोसना ।

सेवा ( सेव्=सेवा करना ) ( स्त्री० ) नौकरी, चाकरी, टहल,  
सेवकाई, पूजा, सरकार ।

सेवार } ( पु० ) शैवाख, सिवार, नदी में होनेवाली  
सेवाल } घास-विशेष जो चीनी साक्र करने के काम में  
आती है ।

सेवित ( सेव्=सेवा करना ) ( वि० ) उपासित, सेवा  
किया हुआ, पूजा किया हुआ ।

सेवी ( पु० ) पुजारी, नौकर, दास, चाकर ।

सेवें ( सं० समिता, सम्=साथ, इण्=जाना ) ( स्त्री० ) मैदा  
की बनी हुई खाने की चीज़, ( कि० स० ) सेवा करें ।

सेव्य ( सेव्=सेवा करना ) ( वि० ) सेवा करने योग्य,  
पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, मन्त्रदूम ।

सेव्यवीर ( पु० ) खसखस ।

सेहथना ( कि० स० ) चँवर बुलाना, चँवर हाँकना ।

सेहरा ( पु० ) विवाह में दूल्हे को पहनाने का ज़री  
का मुकुट ।

सै ( वि० ) सौ, ( स्त्री० ) बरकत, भागवानी ।

सैंतालीस ( सं० सप्तचत्वारिंशत् ) ( वि० ) चालीस और  
सात, ४७ ।

सैंतीस ( सं० समत्रिंशत् ) ( वि० ) तीस और सात, ३७ ।

सैकड़ा ( सं० शतक ) ( वि० ) शतकड़ा, १०० ।

सैन } ( सं० सन्ना ) ( स्त्री० ) संकेत, इशारा, चिह्न,  
सेन } आँख या उँगली का इशारा, ( सं० सेन्य )  
क्राँज, कटक, सेना, ( सं० शयन ) ( पु० ) सोना,  
नौद लेना ।

सैनासैनी ( पृष्ठा० ) आपस में आँख या उँगली से  
इशारा करना ।

सैंधव ( सिंधु ) ( वि० ) सिंधु-नदी के पास के देशों में  
पैदा होनेवाला, ( पु० ) सेंधा-नमक, ज़ाहौरी नमक,  
घोड़ा ।

सैन्य ( सेना ) ( पु० ) क्राँज, कटक, सेना, दल ।

सैन्यनिकेत ( पु० ) पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी ।

सैन्यप्रदर्शिनी ( स्त्री० ) क्राँजी नुमायश, सेना की  
सजावट ।

सैसाँझ ( अव्य० ) साँझ के होते ही, संध्या के आरंभ  
में, सरेसाँझ ।

सौं ( अव्य० ) से, साथ ।

सौंटा ( पु० ) ज़ाठी, ज़ट्ट ।

सौंठ ( सं० शुण्ठा, शुण्ठ=सूखना ) ( स्त्री० ) सोंठि ।

सौंधा ( सं० सुगंध ) ( पु० ) सुगंधित मसाला जिससे  
बाल धोये जाते हैं, सुगंध, बास, बू, ऐसी बू जैसी  
मिट्टी के कोरे बरतनों को भिगोने से या चने आदि  
के भूनने से निकलती है ।

सौंपना } ( सं० समर्पण ) ( कि० स० ) दे देना, हवाले  
सौंपना } करना, सिपुर्द करना ।

सौंह ( सं० शपथ ) ( स्त्री० ) सौगंद. शपथ, किरिया,  
क्रसम ।

सौहीं ( सं० सम्मुख ) ( कि० वि० ) सामने, आगे, सम्मुख ।

सो ( सर्वना० ) वह, वे ही, ( अव्य० ) पस, निदान ।

सोअर ( सं० सूतिकाग्रह, सूतिका=तच्चा, सू=पैदा होना, ग्रह=घर ) ( पु० ) कोठरी जिसमें जच्चा अर्थात् वह स्त्री जिसके बच्चा पैदा हुआ हो ।

सोआ ( पु० ) एक तरह का साग ।

सोई ( सर्वना० ) वही, आप ।

सोखना ( सं० शोषण, शुष्=मूखना ) ( कि० स० ) चूसना, पी लेना, खींचना ।

सोग ( सं० शोक ) ( पु० ) चिंता, क्रिक, सोच, उदासी, दुःख ।

सोच ( सोचना ) ( पु० ) ध्यान, खयाल, विचार, चिंता, क्रिक ।

सोचना ( सं० शोचना, शुच्=सोचना ) ( कि० अ० ) खयाल करना, समझना, विचारना, ध्यान करना ।

सोभा ( वि० ) सीधा, खबा ।

सोडा ( पु० ) एक प्रकार का चार ।

सोड ( सह=सहना ) ( वि० ) शांत, सहनशील ।

सोडा ( सह=सहना ) ( वि० ) शांत, सहनशील, मुत-हम्मिल ।

सोत } ( सं० सोत ) ( पु० ) धारा, चश्मा, झरना ।  
सोता }

सोध ( शोधना ) ( स्त्री० ) शुद्ध करना, शोधन, खोज, पता, भेद, खबर ।

सोधना ( सं० शोधन ) ( कि० स० ) सही करना, गलती ठीक करना, शुद्ध करना, जाँचना, ऋण चुकाना, कर्ज चुकाना, धातु को साफ़ करना ।

सोन ( सं० शोण, शोण=जाना ) ( पु० ) ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, रुधिर, रक्त, उदासी, ब्रह्मचारी ।

सोनहरा } ( सोना ) ( वि० ) सुनहरा, सुनहरी,  
सोनहला } सोने का, सोने-सा ।

सोना ( सं० स्वर्ण ) ( पु० ) बहुत मोख की धातु, कंचन, कनक ।

सोना } ( सं० शयन ) ( कि० अ० ) नींद लेना,  
सोवना } पोढ़ना, सूतना ।

सोनार ( पु० ) स्वर्णकार, सुनार ।

सोनिया ( पु० ) न्यारिया, राख में से सोना अलग करनेवाले ।

सोपान ( स=साथ, उप=पाम, अन्=जाना, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चढ़ना हो जाता है ) ( स्त्री० ) सीढ़ी, नसेनी ।

सोभना ( सं० शोभन ) ( कि० अ० ) सोहना, अच्छा दिखाई देना ।

सोम ( सू=पैदा होना या केरना किरण का ) ( पु० ) चाँद, चंद्रमा, अमृत, देवताओं का खजांची, कुबेर, इषा, यमराज, कपूर, सोमलता-नामक जड़ी और उसका रस, ( स=साथ, उमा=पार्वती ) शिव, महादेव, वान-रेश, सुग्रीव, हृष्य, कव्य, आकाश ।

सोमज ( सोम+जन्=पैदा होना ) ( पु० ) बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सोमपा ( सोम+पा=पीना ) ( पु० ) यज्ञवल्ली का पीने-वाला, याज्ञिक, यजमान ।

सोमवलक ( पु० ) करंज, कंजा, रीठी, श्वेतखदिर, सक्रेद खैर, कैफरा ।

सोमवार ( सोम=चाँद, वार=दिन ) ( पु० ) चाँद का दिन, चंद्रवार ।

सोरठ ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम ।

सोरठा ( पु० ) हिंदी में एक छंद जिसके पहले पद में ११ और दूसरे पद में १३, फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्राएँ होती हैं; यह छंद दोहे का उलटा है ।

सोरह } ( सं० षोडश ) ( वि० ) दस और छः, १६ ।  
सोलह }

सोशल रिफार्मकमेटी ( स्त्री० ) सामाजिक सुधार-सभा, जल्सा रिफार्मसम ।

सोऽहं ( पु० ) वेदांतियों का प्रधान मंत्र ।

सोहन ( वि० ) प्यारा, सज्जन, शोभा देनेवाला, ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई ।

सोहना ( सं० शोभन, शुभ्=चमकना ) ( कि० अ० ) शोभना, अच्छा दिखाई देना, फबना, भला दिखना ।

सोहनी ( स्त्री० ) रागिनी-विशेष ।

सोहनी करना ( कि० स० ) निराना, साफ़ करना, बोए हुए खेत से घास निकालना ।

सोहर ( पु० ) राग-विशेष, गीत-विशेष, जो बच्चा उत्पन्न होने पर गाया जाता है ।

सोहागा ( पु० ) पदार्थ-विशेष, जो सोना-चाँदी आदि  
गलाने के काम में आता है ।

सोहिल ( पु० ) राग-विशेष ।

सों ( अव्य० ) सों, से ।

सोंघाई ( सं० स्वर्धता, म०=अच्छा, अर्थ=मोल ) ( स्त्री० )  
सस्ती, सस्ताई ।

सोंक ( सं० शतपुष्पा ) ( स्त्री० ) एक ठंडी पाचक दवा ।

सोंह ( स्त्री० ) सोंगंद, शपथ, क्रम ।

सों ( सं० शत ) ( वि० ) दस दहाई, १०० ।

सों सिर का होना ( मुहा० ) बहुत बलवान् या मसारा  
होना, बहुत सहना ।

सोंख्य ( पु० ) आराम, सुख ।

सोंगंद ( पु० ) शपथ, किरिया, आन ।

सोंगंध } ( पु० ) सुशब्, कपूर ।  
सुगंध }

सोंचि ( पु० ) दर्जी, सूचाजीवन, सूचाजीवी ।

सोंजन्य } ( मजन ) ( पु० ) मुजनता, भलमन-  
साहत, साधुपन, सुशीलता, शराफत ।

सोंत } ( सं० गपथी, स=एक हाँ, पति=भर्ता, है  
सोंतन } ( जिकफा ) ( स्त्री० ) एक ही पति की दूसरी  
सवति } स्त्री ।

सोंतला ( सोंत ) ( वि० ) सोंत से जन्मा हुआ ।

सौदामनी } ( सुदामन्=बादल अर्थात् बादलों में रहने-  
सौदामनी } वाली, म०=बहुत, दा=देना ) ( स्त्री० )  
बिजली, दामिनी ।

सोंध ( सुधा=पोतने की एक लाल चीज़, उससे रसा हुआ,  
म०=अच्छी तरह से, धा=खाना ) ( पु० ) महल,  
प्रासाद, राजमंदिर, देवमंदिर ।

सोंनिक ( पुं० ) व्याध, अधिक, बहेलिया, हिंसक,  
क्रमाई—जैसे “सौनिकेन यथा पशुः ।”

सोंदर्य ( संदर ) ( पु० ) सुंदरता, सुखसूरती, चमक-  
दमक, रंगरूप ।

सोंभद्र ( पु० ) सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु ।

सोंभरि ( पु० ) एक ऋषि का नाम जिसने राजा  
मान्धाता की पचास लड़कियों से द्याह किया था,  
जिसकी कथा विष्णुपुराण में है । यह ऋषि यमुनानदी  
के तीर पर बैठे तप कर रहे थे, वहाँ गरुड़ ने जाकर  
एक मछली मार कर खाई । तब ऋषि ने गरुड़ की

शपथ दिया कि जो फिर इस जगह आओगे, तो  
जीते न बचोगे ।

सौभाग्य ( सुभग ) ( पु० ) भाग्यवत्ता, अच्छा भाग्य,  
उद्योग में चौथा योग ।

सौमित्र ( सुमित्रा ) ( पु० ) सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण  
और शत्रुघ्न श्रीरामचंद्र के छोटे भाई ।

सौश्य ( पु० ) बुध, चंद्र-पुत्र, ( वि० ) सुशील, सुंदर,  
मनोहर, प्रियदर्शन, कोधरहित, मुनहस्मिन्न, बुद्धवार ।

सौम्यता ( स्त्री० ) सुशीलता, सीधापन, संजीदगी ।

सौर ( सूर=सूर्य ) ( वि० ) सूर्यसंबंधी, सूर्य का ( महीना  
दिन आदि ), ( पु० ) शनैश्चर ।

सौरज ( सं० शौर्य ) ( पु० ) शूरमापन, शूरवीरता,  
बहादुरी ।

सौरभ ( सुरभि ) ( पु० ) सुगंध, सुशब्, महक, केशर,  
आम का पेड़ ।

सौरभेय } ( पु० ) सुरभीपुत्र, वृषभ, बैल, ( स्त्री० )  
सौरभेयी } गौ, वशिष्ठ की धेनु, नंदिनी ।

सौरि ( पु० ) शनैश्चर, कृष्ण, वसुदेव ।

सौचर्चल ( पु० ) काला नमक ।

सौहाद्र ( पु० ) मित्रता, दोस्ती ।

स्कंध ( स्कन्द=ऊपर जाना ) ( पु० ) कंधा, काँधा, पेड़की  
भड़, मोटे गुदे, पुस्तक का एक भाग जिसमें कई  
अध्याय हों, बाणामुर का बेटा, व्यूह, युद्धसमूह ।

स्खलित ( स्खल=गिरना ) ( वि० ) च्युत, गिरा हुआ,  
गिर पड़ा ।

स्तन ( स्तन्=शब्द करना ) ( पु० ) चूँची, छाती,  
पयोधर ।

स्तनयिन्नु ( पु० ) गर्जना, विन्नु, बिजली, मृत्पु, रोग ।

स्तब्ध ( स्तम्भ=रोकना ) ( वि० ) रुका हुआ, ठहरा  
हुआ, मूर्ख, सुस्त, नम्रता-रहित ।

स्तब्धत्व ( पु० ) अदृक्, दबाव ।

स्तमित ( वि० ) अचल, स्थिर ।

स्तंभ ( स्तम्भ=ठहराना, रोकना ) ( पु० ) खंभा, थंभा,  
थंभ, थूनी, रुकाव, अटकाव ।

स्तंभन ( पु० ) रोकना, जड़ करना, रुकाव, अटकाव,  
कामशास्त्र की किया-विशेष ।

स्तय ( स्तु=सराइना ) ( पु० ) स्तुति, बढ़ाई, प्रशंसा,  
तारीफ, सराइना ।

स्तवक ( पु० ) गुच्छा, गुच्छदस्ता ।

स्तवन ( पु० ) स्तुति, प्रशंसा ।

स्तावक ( वि० ) स्तुति करनेवाला, भाट, चारण, वदी ।

स्तुति ( स्तु=पराहना ) ( स्त्री० ) सराहना, बड़ाई, तारीफ़, प्रशंसा, भजन ।

स्तुत्य ( वि० ) प्रशंसित, स्तवनीय, तारीफ़ के लायक ।

स्तेन ( स्तेन=चोरी करना ) ( पुं० ) चोर, चौर, दुड़द ।

स्तेय ( पु० ) चोरकर्म, चोरी, दुड़दी ।

स्तोता ( वि० ) प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला ।

स्तोत्र ( स्तु=सराहना ) ( पु० ) प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति ।

स्तोम ( पु० ) पुंज, समूह, यज्ञ, स्तुति, मस्तक, जौहदंड ।

स्त्री ( स्त्र्ये=इकट्ठा होना ) ( स्त्री० ) लुगाई, नारी, औरत ।

स्त्रीधन ( पु० ) दायज, महेर, दहेज ।

स्त्र्यै ( वि० ) स्त्री के अधीन, स्त्री के वश ।

स्थगित ( वि० ) थमा हुआ, छिपा हुआ, रुका हुआ ।

स्थपति ( पु० ) वृहस्पति, यज्ञकर्ता, शिल्पी, बढ़ई ।

स्थल ( स्थल=ठहरना ) ( पु० ) सूखी धरती, सुश्की जगह, भूमि ।

स्थाणु ( पु० ) शिव, पीपल, ( वि० ) मोटा, बुंटा वृक्ष, पत्र-रहित वृक्ष, ढूँठ ।

स्थान ( स्था=ठहरना ) ( पु० ) जगह, घर, ठौर, ठाँव, ठिकाना ।

स्थानापन्न ( स्थान+आपन्न ) ( वि० ) जगह पानेवाला, एवजी, कायममुकाम ।

स्थापत्य-विद्या ( स्त्री० ) भवन-निर्माण-विद्या ।

स्थापन ( स्था=ठहरना ) ( पु० ) बैठना, रखना, धरना, ठहराना, जमाना ।

स्थापना ( स्त्री० ) प्रतिष्ठा, स्थिति, देव आदि की स्थापना करना ।

स्थापित ( स्था=ठहरना ) ( वि० ) बैठाया हुआ, जमाया हुआ, स्थापन किया हुआ, प्रतिष्ठित ।

स्थायिन् ( पु० ) ठहरनेवाला ।

स्थाल ( पु० ) थाला, धारा ।

स्थाली ( स्त्री० ) बटलोई, पाकपात्र, हॉडी ।

स्थावर ( स्था=ठहरना ) ( वि० ) अचल, अटल, ठहरा हुआ, जो चले नहीं, जैसे—पेड़, पत्थर आदि ।

स्थिति ( स्था=ठहरना ) ( स्त्री० ) ठहराव, टिकाव, बास, रहना, पालन, आसन, मर्यादा, सीमा ।

स्थिर ( स्था=ठहरना ) ( वि० ) ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ़, शांत, ठंडा, कोमल ।

स्थिरपूँजी ( स्त्री० ) स्थिर धन, जायदाद शैरमनकूला ।

स्थूणा ( पु० ) खंभा, खूँटा ।

स्थूल ( स्थूल=मोटा होना ) ( वि० ) मोटा, फूला हुआ, बड़ा ।

स्थैर्य ( पु० ) स्थिरता, अचलता ।

स्थौल्य ( पु० ) स्थूलता, मोटापन ।

स्नातक ( स्ना=नहाना ) ( पु० ) गृहस्थ ब्राह्मण, व्रती, स्नानकारी ।

स्नान ( स्ना=नहाना ) ( पु० ) नहाना ।

स्नायी ( वि० ) स्नानकर्ता, नहानेवाला ।

स्नायु ( स्त्री० ) नस, रग ।

स्निग्ध ( वि० ) चिकण, चिकना, मेहरबान, दयालु ।

स्नेह ( स्निह=प्यार करना या चिकना होना ) ( पु० ) प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, तेज आदि चिकनी चीज़, चिकनाई ।

स्पंद ( पु० ) संकल्प-विकल्प, आगा-पीछा, पशोपेश ।

स्पर्द्धा ( स्पर्द्ध=डाढ़ करना ) ( स्त्री० ) डाढ़, जलन, हिस्का, द्वेष, विरोध, घैर, ईर्ष्या ।

स्पर्श ( स्पृश=छूना ) ( पु० ) छूना, छुआ-व, परसना, एक तरह की बोमारी जो छूने से लगती है ।

स्पष्ट ( स्पृश=देखना या प्रकट होना ) ( वि० ) साफ़, खुला खुला, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट, सहज, सरल ।

स्पृश्य ( वि० ) छूने योग्य ।

स्पृष्ट ( स्पृश+त, स्पृश=छूना ) ( वि० ) छुआ गया, कृतस्पर्श ।

स्पृहा ( स्पृह=चाहना ) ( स्त्री० ) चाह, इच्छा, वांछा, अभिलाष ।

स्पृही ( वि० ) इच्छान्वित, इवाहिशमंद ।

स्फटिक ( स्फट=फटना या खुलना ) ( पु० ) बिल्लीरी पत्थर ।

स्फुट ( वि० ) प्रकट, प्रकाश, खिलना हुआ, फुटकल ।

स्फुटन ( स्फुट=विकसना ) ( पु० ) खिलना, फूटना ।

स्फुटित ( वि० ) विकसित, प्रफुल्लित ।

स्फूर्ति ( स्फूर्=हिलना ) ( स्त्री० ) हिलाव, धक्काबाहट, स्फुरण ।

स्फोटक ( स्फुट=फूट निकलना ) ( पु० ) फोड़ा, चेचक ।  
स्म ( अर्थ० ) पूर्व समय, व्यतीत काल, जो गुजर गया ।

स्मर ( स्मृ=याद करना ) ( पु० ) कामदेव, याद, स्मरण ।

स्मरण ( स्मृ=याद करना ) ( पु० ) चिन्तन, याद, सुध, चेत, स्मृति ।

स्मरहर ( स्मर=हामदेव, हर=नाश करनेवाला, ह=नाश करना ) ( पु० ) शिव, महादेव ।

स्मारक ( स्मृ+अक, स्मरण करना ) ( वि० ) स्मृतिज्ञाता, स्मरण करानेवाला ।

स्मार्त ( वि० ) स्मृति-उक्त, धर्मानुयायी, धर्मशास्त्र जाननेवाला ।

स्मालकाज़कोर्ट ( स्त्री० ) अल्पन्यायालय, अदालत झक्रीका ।

स्मित ( स्मि=थोड़ा हँसना ) ( पु० ) हँसड़ास्य, थोड़ा हँसना, मुसकाना, मुसकिराना, ( वि० ) विकसित, विस्मित ।

स्मृति ( स्मृ=याद करना ) ( स्त्री० ) याद, सुमिरन, स्मरण, धर्मशास्त्र, जैसे—मनुस्मृति और याज्ञवल्क्यस्मृति आदि ।

स्यंदन ( स्यन्द=जाना ) ( पु० ) रथ, सारथी, जल, वृक्ष ।

स्यात् ( अर्थ० ) विद्यमान, समीचीन, शायद ।

स्यानपन ( स्याना ) ( पु० ) बुद्धिमानों, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता ।

स्याना ( वि० ) 'सियाना' शब्द को देखो ।

स्यार  
स्याल ( सं० शृगाल ) ( पु० ) गीदब ।

स्त्रक ( स्त्रज्=बनाना ) ( स्त्री० ) माला, पुष्पमाला ।

स्त्रना ( सं० संवणा, सु=बहना ) ( कि० अ० ) सूना, बहना, गिरना, टपकना ।

स्रोत ( सु=बहना ) ( पु० ) सोता, बहाव, धारा, नाला ।

स्व ( सर्वना० ) अपना, आप, आपका, निज, निज का, ( पु० ) धन, जाति ।

स्वकीय ( पु० ) अपना, निज का ।

स्वकीया ( स्व=अपना ) ( स्त्री० ) अपनी स्त्री, हुई स्त्री, नायिका-विशेष ।

स्वच्छ ( सु=वहुत, अच्छ=साफ ) ( वि० ) निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ ।

स्वच्छता ( स्वच्छ ) ( स्त्री० ) निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता ।

स्वच्छंद ( स्व=अपनी, छंद=इच्छा या मतलब ) ( वि० ) अपनी चाह के अनुसार चलनेवाला, मन-मौजी, स्वाधीन, इच्छानुसार ।

स्वच्छंदता ( स्त्री० ) शतंत्रता, स्वेच्छाचारिता, खुद मुफ्तारी ।

स्वजन ( पु० ) अपने लोग, नतैत, बंधु, मित्र आदि ।

स्वजातीय ( वि० ) अपने गोत्रवाला, अपनी जाति-वाला ।

स्वतंत्र ( स्व=अपने, तंत्र=वश ) ( वि० ) स्वाधीन, अपने वश, स्ववश ।

स्वतंत्रता ( स्वतंत्र ) ( स्त्री० ) स्वाधीनता ।

स्वतः ( स्व ) ( कि० वि० ) आपसे, आप-से-आप, आप ही, स्वभाव से ।

स्वत्व स्थापित करना ( महा० ) कदजा करना, दखल करना ।

स्वत्वापहरण ( पु० ) बेदखली ।

स्वधर्म ( स्व+धर्म ) ( पु० ) अपना धर्म, अपना काम, ( जैसे वेदशास्त्र पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म, देश का प्रबंध करना क्षत्रियों का धर्म, खेती, बनिज करना वैश्यों का धर्म और नौकरी-चाकरी करना शूद्रों का धर्म है ) ।

स्वधा ( स्वद=स्वाद लेना या स्व=आप, धा=खाना या धे=पीना ) ( अर्थ० ) पितरों को जब पिंड देते हैं तब यह शब्द बोझकर पिंड देते हैं, ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, माया ।

स्वप्न ( स्वप्=सोना ) ( पु० ) सपना, नींद में जो देखा जाय, दिखाव ।

स्वभाव ( स्व+भाव ) ( पु० ) प्रकृति, ढँब, बान, सुभाव, आदम ।

स्वयम् ( स्व या सु=अच्छी तरह से, अय्=जाना ) ( अर्थ० ) आप, निज, अपना, आपसे ।

स्वयंभु } ( स्वयम्=आप से, भू=पैदा होना ) ( पु० )  
स्वयंभू } ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।



**स्वयंवर** ( स्वयम्=आप से, वृ=पसंद करना ) ( पु० ) स्त्री  
का आप ही अपने लिये पति पसंद करना ।

**स्वयंसिद्ध** ( स्वयम्=आप से, सिद्ध=बना हुआ ) ( वि० ) जो  
आप ही सत्य हो, जो आप ही से पक्का ठहराया जाय ।

**स्वर** ( स्तु=शब्द करना ) ( पु० ) शब्द, आवाज़, वे अक्षर  
जो आप से बोले जायें और जिनके मिलने से व्यंजन  
भी बोले जायें, गानविद्या में तान, स्वर आदि ।

**स्वर** ( स्तु=शब्द करना ) ( पु० ) स्वर्ग, आकाश ।

**स्वरापगा** ( स्वः=स्वर्ग, आपगा=नदी ) ( स्त्री० ) आकाश-  
गंगा ।

**स्वरित** ( वि० ) उदात्तानुदात्तयुक्त अर्थात् स्वरों की  
ऊँची-नीची आवाज़ ।

**स्वरूप** ( स्वरूप ) ( पु० ) अपना रूप, छवि, शोभा,  
सुंदरता ।

**स्वर्ग** ( स्वर, गै=गाना या कहलाना अर्थात् जो स्वर  
कहलाता है या सु=अच्छी तरह से, ऋजु=जाना अर्थात्  
जहाँ अच्छी तरह से जाते या रहते हैं ) ( पु० ) इंद्र-  
लोक, देवताओं के रहने की जगह, आकाश ।

**स्वर्गीय** } ( स्वर्ग ) ( वि० ) स्वर्ग का, स्वर्ग-संबंधी, मृत ।  
**स्वर्ग्य** }

**स्वर्ण** ( सु=अच्छा, अर्थ या वर्ण=रंग, जिसका रंग अच्छा  
है या सु=अच्छी तरह से, ऋजु या ऋ=जाना ) ( पु० )  
सोना, कंचन, कनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

**स्वर्णकार** ( स्वर्ण=सोना, कार=करना ) ( पु० ) सोने का  
काम करनेवाला, सुनार ।

**स्वर्णमुद्रा** ( स्त्री० ) मोहर, अशर्फी, गिन्नी ।

**स्वल्प** ( सु=बहुत, अल्प=थोड़ा ) ( वि० ) बहुत थोड़ा,  
बहुत छोटा, किंचित्, ज़रा ।

**स्वल्पश** ( वि० ) स्वतंत्र, स्वाधीन ।

**स्वस्ति** ( सु=अच्छा, भला, अस्तु=होना ) ( अर्थ० ) कल्याण,  
मंगल, अच्छा हो, भला हो, ऐसा ही हो, तथास्तु ।

**स्वस्तिवाचक** ( वच्+अक, वच्=कहना ) ( पु० ) मंगल-  
पाठक, दुआगो ।

**स्वस्तिवाचन** ( स्वस्ति=कल्याण, वाचन=कहना, वच्=  
कहना ) ( पु० ) किसी अच्छे काम के शुरू में  
किसी तरह का विघ्न न होने के लिये और देवताओं  
का आशीर्वाद पाने के लिये ब्राह्मणों से वेद के मंत्र  
पढ़वाना, शांति, मंगलाचार ।

**स्वस्त्ययन** ( स्वस्ति+अयन ) ( पु० ) शुभस्थान, शुभ  
का लाभ, मंगलाचरण ।

**स्वस्थ** ( स्व=अपने, स्था=रहना ) ( वि० ) सुख से रहने-  
वाला, सावधान, नीरोग ।

**स्वागत** ( सु=अच्छी तरह से, आगत=आया हुआ ) ( पु० )  
आदर, सम्मान, सत्कार, कुशल, नेम ।

**स्वांग** ( पु० ) 'सवांग' शब्द को देखो ।

**स्वाति** ( सु=अच्छी तरह से, अत्=जाना ) ( स्त्री० )  
पंद्रहवाँ नक्षत्र, चंद्रमा की एक स्त्री ।

**स्वाद** ( स्वद या स्वाद=स्वाद लेना ) ( पु० ) रस, सवाद,  
चाट, मज़ा, लज़्ज़त, मिठास, खुशी, प्यार, प्रीति ।

**स्वादिष्ट** } ( वि० ) मजेदार, ज़ायक़ेदार ।  
**स्वादुयुक्त** }

**स्वादु** ( स्वद या स्वाद=स्वाद लेना ) ( वि० ) मीठा,  
रसीला, सुरस, मजेदार, चाहा हुआ ।

**स्वाधीन** ( स्व+आधीन ) ( वि० ) अपने वश, स्वतंत्र ।

**स्वाभाविक** ( स्वभाव ) ( वि० ) जो स्वभाव से हो ।

**स्वामित्व** ( स्वामी ) ( पु० ) स्वामीपन, मालिकियत,  
अधिकार, प्रभुता ।

**स्वामी** ( स्व=धन या आप ) ( पु० ) मालिक, धनी,  
प्रभु, भर्ता, पति, राजा, गुरु, परमहंस ।

**स्वार्थ** ( स्व=अपना, अर्थ=मतलब, अभिप्राय ) ( पु० )  
अपना मतलब, अपना काम, अपने लाभ की बात ।

**स्वार्थी** ( स्वार्थ ) ( वि० ) आप मतलबवी, आप काजी,  
आत्मपालक, खुदशरज़ ।

**स्वास** ( पु० ) मुख से निकलनेवाली शरीर के भीतर  
की हवा ।

**स्वास्थ्य** ( स्वस्थ ) ( पु० ) आरोग्य, तंदुरुस्ती, संतोष,  
सुख ।

**स्वाहा** ( सु=अच्छी तरह से, आ=मंत्र और से, हे=बुलाना )  
( अर्थ० ) होम या यज्ञ करते समय जब देवताओं  
को बलि देते हैं तब यह शब्द बोलते हैं, ( स्त्री० )  
अग्नि की स्त्री, देवी, दुर्गा, माया ।

**स्वीकार** ( स्व=आप या अपना, कृ=करना ) ( पु० ) अंगी-  
कार, मानना, हामी, हाँ, मंज़ूर, ऋजु ।

**स्वेच्छा** ( स्व+इच्छा ) ( स्त्री० ) अपनी चाह, स्वाधीनता ।

**स्वेद** ( स्विद=पसीना होना ) ( पु० ) पसीना, पसेव,  
प्रस्वेद, ताप, गर्मी ।

स्वेदज (स्वेद=पसीना या गर्मी, जन्=पैदा होना) (पु०)  
 चिलुआ, जुई आदि छोटे-छोटे कीट जो पसीने से  
 या भाऊ अथवा गर्मी से पैदा हो जाते हैं।  
 स्वैर (स्व+ईर=जाना) (स्त्री०) स्वेच्छा, यथेच्छा, (वि०)  
 स्वतंत्र, स्वच्छंद।

स्वैरंघ्री } (स्वैर+अन्ध+ई) (स्त्री०) पराये घर में  
 सैरंघ्री } रहनेवाली, शिष्टाचारिणी।  
 स्वैरिणी (स्वैर+इन्+ई) (वि०) कुलटा, स्वेच्छा-  
 चारिणी।  
 स्वैरी (स्वैर+ई) (वि०) स्वतंत्र, स्वेच्छाचारिणी।

## ह

ह (हा=छोड़ना या जाना) (पु०) शिर, पानी, आकाश,  
 स्वर्ग, मंगल, लोह, (अव्य०) हाय हो, हाहा, पद  
 पूरा करने के लिये, संवोधन के लिये, नियोग, श्रेय,  
 फँकना, निमग्न, प्रसिद्ध।  
 हंकार (हम्=हम क्रोध का शब्द, क=करना) (पु०)  
 डाँक, पुकार, चिल्लाहट निकालना, हाँकना।  
 हंस (हन्=भागना या जाना अथवा हम्=हंगना) (पु०)  
 एक तरह के पक्षी जो सरोवरों में रहते हैं।  
 आगमा, जीव, परमात्मा, ब्रह्म, नृप, योगी, तुरंग,  
 श्वेत, सफेद।  
 हंसक (पु०) पादकटक, चिलुआ, धुँधरु।  
 हंसगमनी } (गं० हंगगमिनी, हंग, गामिनी=चलने-  
 हंसगमनी } वाली, गम्=जाना, चलना) (वि०) जिस  
 स्त्री की चाल हंस की-सी हो।  
 हंसारूढ़ (पु०) वस्त्र।  
 हंसारूढ़ा (स्त्री०) सरस्वती।  
 हंकाना (हाकना) (कि० म०) निकाल देना, चलाना,  
 हाँकना।  
 हंकारना (कि० अ०) हाँकना।  
 हंफैत (वि०) हाँकनेवाला।  
 हंसना (स० हमन, हम्=हंगना) (कि० अ०) हँसी  
 करना, मुसकुराना, टट्टा करना।  
 हंसमुख (गं० हास्यमुख) (वि०) जिसके मुँह पर  
 हँसी बनी रहे, मगन, आनंदी, हंसनेवाला।  
 हँसा (पु०) } (सं० हास्य) हाँसो, मुसकुराहट,  
 हँसी (स्त्री०) } खुशो, खेज, विनोद।  
 हँसाई (स० हास्य) (स्त्री०) हँसो, उट्टा, ठठोली।  
 हंसिया } (पु०) दरौती, दाँत, दात्र।  
 हंसुआ }  
 हँसोड़ (वि०) ठठोल, हँसमुख।

हँसोड़ा (वि०) हँसमुख, उट्टेबाज़, दिलगी करनेवाला।  
 हँसोवा (पु०) ठठोली, हँसोड़पन।  
 हकवकाना (कि० अ०) घबराना, व्याकुल होना,  
 हड़बड़ाना।  
 हकराना (कि० स०) बुझाना, पुकारना, बुलवाना,  
 बुला लेना।  
 हकला (वि०) अटक-अटककर बोलनेवाला, लड़बड़ा,  
 जो हिचककर बोले।  
 हकलाना (कि० अ०) तुतलाना, हिचककर बोलना,  
 अटक-अटककर बोलना।  
 हकाना (कि० स०) हटाना, भगाना।  
 हकारना (कि० स०) दौड़ाना, भगाना, खदेड़ना।  
 हक्काचक्का (वि०) घबराया हुआ, परेशान, बेहोश,  
 व्याकुल, अचभे में, चकित, विस्मित।  
 हगना (सं० हद=भाड़ा फिरना) (कि० अ०) भाड़ा  
 फिरना, जंगल जाना, दिशा जाना, पाखाने जाना।  
 हगनौटी (पु०) हगने की भूमि, भाड़े जाने की जगह,  
 गुदा।  
 हगास (स्त्री०) हगने की इच्छा।  
 हचका } (पु०) धक्का, झोंका, टक्कर।  
 हचकोला }  
 हचर-मचर (पु०) वाद-विवाद, झूठा झगड़ा, आगा-  
 पीछा, सोच-विचार, पशोपेश।  
 हट (स्त्री०) हट, टेक, (पु०) भाव में प्रत्यय,  
 (कि० अ०) पीछे जाना, मुड़ना, मुकरना।  
 हटक (पु०) मनाई, रुकावट, डाँट, रोक, निषेध।  
 हटकना (कि० अ०) रुकना, अटकना, छँकना,  
 (कि० स०) रोकना।

१. पति त्यक्ता तु या नारी गृहादन्यत्र गच्छति।  
 अन्येषु रमते नित्यं स्वैरिणी साभिधीयते॥

हटताल ( हट=हाट, ताल=ताला ) ( स्त्री० ) किसी दुःख  
अथवा अन्याय होने से दूकानों में ताला लगा  
देना, बाज़ारबंद, हटताल ।

हटना ( कि० अ० ) पीछे चला जाना, पीछे फिर जाना,  
मुकरना, चला जाना, अलग हो जाना, हार जाना ।

हटवा ( हाट ) ( पु० ) तोखनेवाला, कयाल, दूकानदार ।

हटवाई ( स्त्री० ) हाट का काम ।

हटाना ( कि० स० ) दूर करना, अलग करना, टाल  
देना, निकाल देना, सरकाना, पीछे खींच लेना ।

हटाल ( स्त्री० ) दूकान बंदाना, दूकान बंद करना ।

हटिया ( स्त्री० ) हाट, बाज़ार ।

हट्ट ( हट्ट=चमकना ) ( स्त्री० ) हाट, बाज़ार, दूकान,  
रास्ता, मुहाना ।

हट्टाकट्टा ( वि० ) बलवान् और चालाक, संडमुसंड,  
पोड़ा, गाढ़ा, पुष्ट, ज़ोरावर ।

हठ ( हट्ट=हठ करना ) ( स्त्री० ) मगराई, मचलाई,  
अब, ज़िद्द, बलात्कार, ज़बरदस्ती ।

हठ करना } ( मुहा० ) मगराई से किसी  
हठ की टेक पर होना } बात को न मानना, ज़िद्द  
करना ।

हठधर्मी ( वि० ) ज़िद्दी, हठीला ( स्त्री० ) हठीलापन,  
ज़िद्द ।

हठना ( कि० अ० ) ज़िद्द करना ।

हठात् ( कि० वि० ) बलात्, बल से, ज़बरन् ।

हठी } ( हठ ) ( वि० ) मगरा, ज़िद्दी ।  
हठीला }

हड़ ( स्त्री० ) हरें, फल-विशेष, ( पु० ) काठ की बेड़ी ।

हड़कन ( पु० ) पौदा-विशेष ।

हड़गिला } ( सं० हड़=हड़ी, गू=निगलना ) ( पु० )  
हड़गीला } एक पखेरू का नाम जो पाँच फीट ऊँचा  
होता है और पंख फैलाने पर पंद्रह फीट तक  
नापा गया है ।

हड़ताल ( स्त्री० ) बाज़ारबंदी, काम-काज बंद होना ।

हड़पना ( कि० स० ) खयानत करना, खाना जाना,  
बेईमानी करना ।

हड़फूटन ( स्त्री० ) हड्डियों की दर्द ।

हड़बड़ाना ( कि० अ० ) घबराना, आकुल होना,  
हकबकाना, जल्दी करना ।

हड़बड़ी ( स्त्री० ) खलबली, हुलस, बख़्खा, हीरा ।

हड़हड़ाना ( कि० अ० ) काँपना, धरधराना, खड़ख-  
ड़ाना, धड़धड़ाना, आवाज़ होना ।

हड़हड़ाहट ( स्त्री० ) खड़खड़ाहट, शब्द-संकेत ।

हड़ाना ( कि० स० ) चिड़िया उड़ाना ।

हड़ु ( पु० ) हाड़ा, मोथरा, बरें ।

हड़ु ( सं० हड़ ) ( स्त्री० ) हाड़ ।

हड़र ( पु० ) लंबी चाबुक, कोड़ा ।

हंडना ( कि० अ० ) घूमना, फिरना, छानबीन करना ।

हंडल ( पु० ) बेंद, दस्ता, मुठिया ।

हंडा ( सं० हण्ड, हन्=मारना ) ताँबे पीतल का भरतन,  
कड़ाह ।

हन् ( अव्य० ) दुर, दुत ।

हत ( हन्=मारना ) ( वि० ) मारा हुआ, नष्ट, मरा हुआ ।

हतना } ( सं० हनन, हन्=मारना ) ( कि० स० )  
हनना } मारना, मार डालना ।

हतमनोरथ ( वि० ) असफल, जिसकी इच्छा पूरी न  
हुई हो ।

हताशा ( हत+आशा ) ( वि० ) खिलाशा, नाउम्मीद ।

हति ( हन्=मारना ) ( स्त्री० ) मारना, हनना ।

हती ( कि० अ० ) रही थी, ( स्त्री० ) मारी गई ।

हत्तुल ( अव्य० ) यथासाध्य, इच्छापूर्वक ।

हत्तुलइम्कान ( अव्य० ) इच्छापूर्वक, यथासाध्य ।

हत्थ ( पु० ) कर, भुजा, हाथ ।

हत्या ( हन्=मारना ) ( स्त्री० ) मारना, हिंसा, खून, पाप ।

हत्यारा ( सं० हत्याकार ) ( पु० ) हत्या करनेवाला,

हिंसक, पापी, दुष्ट ।

हथ ( सं० हस्त ) ( पु० ) हाथ ।

हथकड़ी ( स्त्री० ) हाथ की बेड़ी, एक बड़ा भारी लोहे का  
कड़ा जो कैदियों के हाथ में डाल दिया जाता है ।

हथकंडा ( हथ=हाथ, खण्डा=ढव ) ( पु० ) ढब, टेब,  
अभ्यास, करतब, चाल, बान, हथौटी ।

हथचपुआ ( पु० ) भाग, अंश, हिस्सा ।

हथछूट ( वि० ) पीटनेवाला, मारनेवाला, जिसका हाथ  
मारने के लिये जल्दी छूट जाता हो ।

हथनाल ( स्त्री० ) हथी के ऊपर की छोटी तोप ।

हथनी ( सं० हस्तिनी ) ( स्त्री० ) हथिनी ।

हथफेर ( मुहा० ) अदला-बदली, हेरा-फेरी, छल, प्रवेस,  
छोटे रूप को चालाकी से अच्छे रूप से बदल लेना ।

हथलेवा ( हथ=हाथ, लेवा=लेना ) ( पु० ) व्याह में दुल्हा-दुल्हन के हाथ मिला देना, व्याह की एक रीति ।

हथवासना ( कि० स० ) हाथ में लेना, हाथ में पकड़ना ।

हथवासे ( कि० वि० ) हाथ में, अपने अधिकार में ।

हथा } ( सं० हस्त ) ( पु० ) बेंट, कबज्जा, बेलचा,  
हत्था } खोदनी ।

हथिया ( सं० हस्त ) ( पु० ) उद्योतिष में तेरहवाँ नक्षत्र ।

हथियाना ( हाथ ) ( कि० स० ) पकड़ना, हाथ में ले लेना, अधिकृत करने का प्रयत्न करना ।

हथियार ( हाथ ) ( पु० ) शस्त्र, कलकौटा, अजीगर ।

हथी ( स्त्री० ) घोड़ा मलने का व्रण, खरहरा ।

हथेला ( वि० ) चोर, करतल-गत ।

हथेली ( हाथ ) ( स्त्री० ) हाथ के बीच की जगह, आभूषण-विशेष ।

हथौटी ( हाथ ) ( स्त्री० ) चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

हथौड़ा ( पु० ) घन, बड़ा मातौल ।

हथौड़ी ( स्त्री० ) छोटा हथौड़ा ।

हथियाना ( कि० अ० ) घबराना, व्याकुल होना ।

हनन ( हन्+धन, हन्=मारना ) ( पु० ) मारना, घात, हिंसा ।

हनना ( कि० स० ) मारना, बध करना ।

हननीय ( हन्+अनीय, हन्=मारना ) ( वि० ) मारने-योग्य ।

हनु ( स्त्री० ) ठुड़ी, चियूक, दाढ़ी ।

हनुमान् ( हन्=ठुड़ी, हन्=नाश करना, मन्=वाला ) ( पु० ) श्रीरामचंद्र का नूत, पवन का पूत, हनुमंत, महावीर ।

हंतव्य ( हन्+दव्य ) ( वि० ) मारने के लायक, हनने-योग्य ।

हंता ( वि० ) मारनेवाला, घातक ।

हन्यमान ( हन्य+मान, हन्=मारना ) ( वि० ) बधमान, मारनेवाला ।

हप ( पु० ) हप-हप की आवाज, किसी चीज़ को ऋतु में हल में डालकर निगल जाना ।

हपझप ( कि० वि० ) ऋटपट, ( वि० ) कुर्तिया ।

हपहपाना ( कि० अ० ) हाँफना, जोर-जोर से साँस लेना ।

हवड़ा ( वि० ) फूहड़ ।

हविला ( वि० ) जिसके आगे के दाँत बड़े हों, बड़दंता ।

हय ( हय या हि=जाना ) ( पु० ) घोड़ा, अश्व, तुरंग ।

हयगृह ( पु० ) घुड़साल, अस्नबल ।

हयेव ( अव्य० ) अहंकार, घमंड ।

हर ( ह=लेना ) ( पु० ) शिव, महादेव, आग, अग्नि, गणित-विद्या में भाजक, भिन्नगणित में वह अंक जो यह बतलाता है कि एक पूरी चीज़ के कितने टुकड़े किये गये हैं, नसबनुमा ।

हर ( सं० हल ) ( पु० ) 'हल' शब्द को देखो ।

हरकारा ( पु० ) सँदेसा लाने अथवा ले जानेवाला, दौड़नेवाला, दौड़ाहा ।

हरख } ( सं० हर्ष ) ( पु० ) आनंद, सुख, खुशी,  
हरप } प्रसन्नता ।

हरखना } ( सं० हर्षण, हर्ष=सुख होना ) ( कि० अ० )  
हरपना } प्रसन्न होना, खुश होना, फूलना, खिलना, सुखी होना, आनंदित होना ।

हरगिरि ( हर+गिरि ) ( पु० ) महादेव का पहाड़, कैलाश-पर्वत ।

हरगुणी ( वि० ) गुणवान्, अनेक गुण जिसमें हों ।

हरण ( ह=लेना ) ( पु० ) किसी को चीज़ ज़बरदस्ती ले लेना, लूट, चोरी ।

हरणीय ( ह+अनीय, ह=हरना ) ( वि० ) हार्य, हरण-योग्य ।

हरता ( सं० हर्ता ) ( वि० ) लेनेवाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला, चोर, लुटेरा, ठग ।

हरद् ( पु० ) हलदी, तालाब, पोखरा ।

हरना ( हरण ) ( कि० स० ) ले लेना, ज़बरदस्ती लेना, लूटना, चुराना ।

हरनौटा } ( हरिण ) ( पु० ) हरिण का बच्चा ।  
हिरनौटा }

हरमुष्टा ( वि० ) बज्जी, बलवान्, डट्टाकट्टा ।

हरवीर्य ( पु० ) पारा ।

हरसिंगार ( पु० ) पुष्प-विशेष ।

हरहमेश ( अव्य० ) सदा, सतत, सदैव ।

हरहार ( पु० ) साँप ।

हरा (सं० हरित्) (वि०) सङ्ग, सङ्ग रंग, ताज़ा, नया ।

हराना (हारना) (कि० सं०) थकाना, शिकस्त देना, हरा देना, जीतना, जीत पाना, परास्त करना ।

हराम (वि०) शास्त्र-विरुद्ध, वर्जित, निषिद्ध ।

हरारत (स्त्री०) थकावट, थकान, हलका बुझार, ज्वर की गर्मी ।

हरावल (पु०) (स्त्री०) आगे की सेना (यह शब्द तुर्की है), अगाही, आगा ।

हरास (सं० हास) (पु०) दुःख, शोक, क्षय ।

हरि (ह=लेना, दूर करना) (पु०) विष्णु, इंद्र, सूर्य, मंडक, सिंह, घोड़ा, सूर्य, चाँद, सुग्गा, सूना, तोता, वानर, यमराज, हवा, ("हरिविष्णुवहाविन्दे मेके सिंहे ह्ये रवी । चन्दे कीरे लवङ्गे च यमे वाते न कीर्तितः") ब्रह्मा, शिव, किरण, मोर, कोयल, कोकिला, हंस, आग, धनुष, पर्वत, गज, कामदेव (वि०) हरा रंग ।

हरिअरे (वि०) हरा-हरा, हरि को अरे=शत्रु समझना ।

हरिचंद्र } (हरि=विष्णु, चंद्र=चाँद) (पु०) एक बड़े  
हरिचंद्र } दानो राजा का नाम जो अपना सत्य और  
हरिचंद्र } धर्म निवाहने के लिये एक चाँदाल के  
घर दास होकर रहा था ।

हरिचंदन (पु०) देववृक्ष, गोरोचन, मलयगिरि चंदन, सफेद चंदन, ज्योत्स्ना, केशर ।

हरिजन (हरि=विष्णु, जन=भक्त) (पु०) विष्णु का भक्त, भगवान् का भक्त, प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु का बेटा ।

हरिण (ह=लेना) (पु०) एक जानवर का नाम, मृग, हिरन, कुरंग, (वि०) हरा ।

हरिणी (स्त्री०) मृगी, सुवर्ण की प्रतिमा, हरे रंग की ।

हरित (ह=लेना मन को) (वि०) हरा, सङ्ग, हरियर, पीछा, (पु०) हरा रंग, सूर्य का घोड़ा, सिंह, सूर्य, विष्णु ।

हरिताल (हरित्) (स्त्री०) पीले रंग की एक धातु ।

१. चंद्र टैरे सूरज टैरे टैरे जगत व्याहार ।

पै हट श्रीहरिचंद्र की टैरे न सत्य विचार ॥

हरितालक (हरित्) (पु०) हरित कपोत, हरा कबूतर, शुक, सुग्गा, नाटक, हरताल ।

हरितालिका (स्त्री०) भादौ सुदी तीज का स्त्रियों का व्रत, दूर्वा, दूब ।

हरिद्रा (हरित्=हरा या पीला रंग, द्रु=जाना) (स्त्री०) हल्दी ।

हरिद्रार (हरि=विष्णु, द्वार=दरवाजा अर्थात् जहाँ गंगा में नहाने से बैकुंठ मिलता है) (पु०) एक शहर का नाम जो गंगा के तीरे पर है; वहाँ गंगा में नहाने का बहुत फल है ।

हरिपैड़ी (सं० हरिपंक्ति) (स्त्री०) हरिघाट, विष्णुघाट, विष्णुपैड़ी ।

हरिप्रिया (हरि+प्रिया) (स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी, हृदयो ।

हरिभक्त (हरि+भक्त) (पु०) विष्णु का भक्त, विष्णु का उपासक, वैष्णव ।

हरिभजन (हरि+भजन) (पु०) विष्णु का भजन सेवन या कीर्तन ।

हरिय (कि० सं०) छीन लेना चाहिए, हर लेना चाहिए, भटक लेना चाहिए ।

हरियल (हरा) (पु०) एक तरह का हरा कबूतर ।

हरियान (हरि=विष्णु, यान=वाहन) (पु०) गरुड़, विष्णु का वाहन ।

हरियाना (कि० अ०) बढ़ना, जमना, बढबढा होना ।

हरियाली (हरा) (स्त्री०) हराई, हरअरी, सङ्गी ।

हरिवालुक (पु०) मुसब्बर ।

हरिवास (पु०) पीपल-वृक्ष ।

हरिवासर (पु०) एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी, वामनद्वादशी, नृसिंहचतुर्दशी आदि विष्णु-व्रतों के दिन ।

हरिवाहन (हरि+वाहन) (पु०) विष्णु की सवारी, गरुड़ ।

हरीतकी (स्त्री०) हड़, हँर ।

हरीरा (पु०) औषध-द्रव्य-विशेष जो स्त्रियों को प्रसव के उपरांत दिया जाता है ।

हरीना (पु०) पक्षी-विशेष ।

हरीश (हरि=वानर, ईश=मालिक) (पु०) वानरों का राजा, सुमीर ।

ह्रु } (वि०) हलका ।  
ह्रुअ }

ह्रुआई ( स्त्री० ) हलकाई, हलकापन ।

ह्रुप ( अव्य० ) होले-होले, धीरे-धीरे ।

ह्रुटी ( स्त्री० ) छड़ी, बेंट, जठिया, हल चखाने का समय ।

ह्रुई } ( सं० हरीतकी, हरि=हरा या पाला रंग, इत+क+ई= पानेवाला ) ( स्त्री० ) एक दवाई का नाम ।  
ह्रुई }

ह्रुव्य ( ह्रु+व्य, ह्रु=लेना ) ( वि० ) लेने योग्य ।

ह्रुनी ( ह्रु=लेना ) ( वि० ) लेनेवाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला, ( पु० ) चौर ।

ह्रुय ( पु० ) अष्टाशिका, अशरी, प्रासाद, अंटा, ऊपर का कोठा ।

ह्रुप ( ह्रु=प्रसन्न होना ) ( पु० ) आनंद, सुख, प्रसन्नता, सुशो ।

ह्रुपण ( ह्रु+पण, ह्रु=प्रसन्न होना ) ( पु० ) आनंद, ज्योतिष का एक योग ।

ह्रुपित ( ह्रुप ) ( वि० ) आनंदित, प्रसन्न, सुश, मगन, प्रफुल्लित, आह्लादित ।

ह्रुल ( ह्रुल=चरना ) ( पु० ) हर नांगल, जांगल, जिससे किसान बीज बोते समय धरती को साफ करते हैं, व्यंजन अक्षर ।

ह्रुलका ( वि० ) होला, हलुक, फुलका, सस्ता, ओछा, नीच, अधम, तुच्छ ।

ह्रुलका करना ( मुहा० ) बोझ उतारना, घटाना, कम करना, बे-आबरू करना, हेरी करना, पानी उतारना, जनाबना, बेइज्जत करना ।

ह्रुलका जानना ( मुहा० ) तुच्छ समझना, अयोग्य जानना ।

ह्रुलकाना ( कि० सं० ) सहारा देना, उकसाना ।

ह्रुलकोरना ( कि० म० ) हकट्टा करना, बटोरना समेटना, जहराना, फहराना, मौज मारना ।

ह्रुलचल ( स्त्री० ) खलबखी, हलबखी, ( पु० ) घबराहट, डर, हुलस, बलवा ।

ह्रुलचल मचाना ( मुहा० ) हुलस हो जाना, गदर होना ।

ह्रुलदिया ( हल्दी ) ( पु० ) एक तरह का जहर,

कँवलरोग या पांडुरोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़ जाता है, पीलियारोग ( वि० ) पीला रंग, हल्दी-सा रंग ।

हल्दी ( सं० हरिद्रा ) ( स्त्री० ) एक तरह का मसाला ।

हलधर ( हल, धर=रखना ) ( पु० ) बलदेव, बलराम ।

हलंत ( वि० ) स्वर-रहित व्यंजन ।

हलपना ( कि० अ० ) तड़फड़ाना, तड़पना, लोट-पोट होना, जाड़े से काँपना ।

हलफल ( स्त्री० ) शिष्टाचार, सम्मान, आदर, हलबखी, हलचल ।

हलभूति ( स्त्री० ) कृपिवृत्ति, खेती का धंधा ।

हलरा ( पु० ) तरंग, लहर, हिलोरा ।

हलरायना ( कि० सं० ) बहलाना, बच्चे को खेलाना ।

हलवाहा ( हल ) ( पु० ) जोता, हल जोतनेवाला ।

हलवाही ( स्त्री० ) हलवाह की मजूरी ।

हलहलाहट ( स्त्री० ) उबर या डर से काँपना ।

हलहलिया ( पु० ) विप, जहर, हलाहल ।

हलाई ( स्त्री० ) जोताई ।

हलायुध ( हल+आयुध ) ( पु० ) बलराम जिनका हथियार हल है, बलदेव, हलधर ।

हलाहल ( पु० ) विप, जहर, मादुर ।

हलिया ( पु० ) बैलों का समूह ।

हलियाना ( कि० अ० ) उबकाई आना, जी मचलाना ।

हली ( हल+य+इन्, हल=जोतना ) ( पु० ) बलराम ।

हलुआ ( पु० ) सीरा, मोहनभोग, खाद्य-विशेष ।

हलोरना ( कि० सं० ) पछोरना, साफ करना, बटोरना ।

हलोरा } ( सं० हिलोल, हिलोल=डोलना, हिलना ) ( पु० )  
हलारा } लहर, मौज, तरंग ।

हल्लक ( पु० ) रक्त कमल ।

हल्ला ( अ० हमला ) ( पु० ) धावा, चढ़ाई, रौला, हुलस, शोरगुल ।

हलन ( हु=होम करना ) ( पु० ) होम, यज्ञ, आहुति ।

हलस ( स्त्री० ) हॉस, खर्बा, डाह, जालसा, इच्छा ।

हवा ( स्त्री० ) वायु, पवन ।

हवाल ( पु० ) हाल, समाचार, ग्रहण ।

हवालात ( पु० ) जेलखाना, कड़ी निगरानी, हिरासत ।

हवालात में होना ( मुहा० ) पुलिस के पहले में रहना ।

हविः } ( हु=होमना ) ( पु० ) ( स्त्री० ) घी, तिल,  
हविष्य } चावल आदि होम की सामग्री ।

हविर्भुज ( पु० ) देवता, अग्नि ।

हविष्यान्त ( हविष्य+अन्त ) ( पु० ) तिल, चावल, जौ आदि ।

हव्य ( हु=होमना ) ( पु० ) देवता की बलि या भेंट, नैवेद्य ।

हस्त ( हस्=हँसना ) ( पु० ) हाथ, हाथी की सूँड़, तेरहवाँ नक्षत्र, कोहनी से लेकर बीच की उँगली के सिरे तक को हस्त कहते हैं ।

हस्तगत ( वि० ) हाथ में आया, कर-गत, प्राप्त ।

हस्तलिपि ( स्त्री० ) हाथ की लिखावट ।

हस्ताक्षर ( पु० ) दस्तखत, हाथ का लिखा ।

हस्तामलक ( हस्त=हाथ, आमलक=आँवला, हाथ में आँवले के ऐसा अर्थात् बहुत सहज या हस्त=हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथ में निर्मल पानी थी वूँद की तरह ) ( वि० ) सहज, सुगम, बे-मिहनत, ( पु० ) एक ग्रंथ का नाम ।

हस्तिदंत ( हस्ती+दंत ) ( पु० ) हाथीदाँत ।

हस्तिनापुर ( हस्तिन=एक राजा, पुर=नगर ) ( पु० ) पुरानी दिल्ली जिसको हस्तिन नामक राजा ने बसाया था और जो राजा युधिष्ठिर और उनके भाइयों की राजधानी थी, उसके खँडहर और चिह्न दिल्ली से २७ मील ईशान-कोण की ओर गंगा की पुरानी नहर पर अब तक हैं ।

हस्तिनी ( हस्तिन् ) ( स्त्री० ) हथिनी, काम-शास्त्र में तीन प्रकार की स्त्रियों में से एक प्रकार की स्त्री ।

हस्तिपाल ( पु० ) हाथीवान्, शीखवान्, पीखवान ।

हस्ती ( हस्तिन्, हस्त=सूँड़ ) ( पु० ) हाथी, गज, मतंग, नाग ।

हस्त ( हस्+र, हस्=हँसना ) ( वि० ) मूर्ख, अज्ञ ।

हस्तुली ( स्त्री० ) गले की हड्डी, गले में पहनने का सोने या चाँदी का एक गहना ।

हा ( हा=झोड़ना या जाना ) ( अव्य० ) हाथ, आह, ओह, दुःख, शोक, पीड़ा, विषाद, प्रसिद्ध, पाद-पूर्ण, विस्मय, कुत्सा, निंदा, यथा “इहाहातिकष्टः सुवीरप्रवासः”—वीरों में बसना अति कष्ट है ।

हाँ ( सं० आम्, अम्=जाना ) ( क्रि० वि० ) मान लेने का शब्द, स्वीकार, अंगीकार, अँगोझ, ठीक ।

हाँक ( सं० हंकार ) ( स्त्री० ) पुकार, ज़ोर से पुकारना,

ललकार, किलकारी, चिल्लाहट गूँज, गर्ज, निकालना ।

हाँक मारना } ( मुहा० ) ज़ोर से पुकारना, चिल्लाना,  
हाँक लगाना } निकालना ।

हाँकना ( हंकार ) ( क्रि० सं० ) पुकारना, ललकारना, निकालना, जानवरों को हाँकना ।

हांगर ( हा=दुःख, अंग=शरीर, रा=लेना अर्थात् जो दुःख देने के लिये आदमी को ले लेता या पकड़ लेता है ) ( पु० ) मगरमच्छ ।

हाँड़ी } ( सं० हण्डी, हन्=मारना या फोड़ना )  
हाँडो } ( स्त्री० ) एक तरह का मिट्टी का बर्तन, काँच का एक बर्तन जिसमें महकिलों में मोमबत्ती जलाई जाती है ।

हाँपना } ( क्रि० अ० ) हफहफाना, हाँकना, ऊँची  
हाँफना } साँस लेना, ज़ोर ज़ोर से साँस भरना ।

हाँसी ( सं० हास्य ) ( स्त्री० ) हँसी, मसखरी, ठट्टा ।

हाँही } ( क्रि० वि० ) हाँ, ठीक, सच, सही ।  
हाँहूँ }

हाँकाँट ( हाई=बड़ी, काँट=कचहरी ) ( पु० ) बड़ी अदालत, वृहन्मयादालत ।

हाउस आफ़ क्राफ़ेन्स ( पु० ) मजमा मुददियरान आम, सर्वसाधारण राज्यप्रबंधकों की सभा ।

हाउस आफ़ लार्ड्स ( पु० ) मजमा मुददियरान आला, महान् राज्य-प्रबंधकों की सभा ।

हाकिम ( पु० ) प्रशास्ता, हुकम करनेवाला ।

हाट } ( सं० हट ) ( पु० ) दूकान, लेनदेन की जगह,  
हाठ } बाज़ार, चौक, कटरा ।

हाटक ( हट=चमकना ) ( पु० ) सोना, कंचन, धतूरा, ( वि० ) सोने का बना हुआ, सोने का ।

हाटकपुर ( हाटक+पुर ) ( पु० ) मोने का नगर, लंका ।

हाटू ( पु० ) बाज़ार में बेचने या खरीदनेवाला ।

हाडू ( सं० हड्ड ) ( पु० ) हड्डी ।

हाथ } ( सं० हस्त ) ( पु० ) शरीर का एक अंग,  
हाथ } हस्त, कर, कोहनी से लेकर बीच की उँगली के सिरे तक की नाप, अधिकार, वश, क़ब्ज़ा ।

हाथ आना } ( मुहा० ) अपने अधिकार में आना,  
हाथ में आना } क़ब्ज़े में आना, मिलना, हाथ लगना, मिल जाना ।

हाथ उठाना ( मुहा० ) जोड़ देना, किसी काम के

काने से रुक जाना, सिर पर हाथ जगाकर सलाम करना, मारना, भोख देना, खैरान बाँटना, मारना ।  
 हाथ कमर पर रखना ( मुहा० ) बहुत निबल होना, बहुत कमजोर होना ।  
 हाथ कानों पर रखना ( मुहा० ) अचंभे में होना, झटपट इनकार कर जाना ।  
 हाथ खींचना ( मुहा० ) छोड़ना, मुँह फेरना, दूर भगना, किनारे होना, अलग होना ।  
 हाथ चाटना ( मुहा० ) किसी अच्छे भोजन का बहुत स्वाद लेना या अच्छे भोजन को बहुत खुशी से खाना ।  
 हाथ जोड़ना ( मुहा० ) बिनती करना, विधियाना ।  
 हाथ डालना ( मुहा० ) किसी काम में अपना अधिकार करना, दखलाना, दखल करना, दबाना ।  
 हाथ धोना ( मुहा० ) निराश होना, नाउम्मीद होना ।  
 हाथ पड़ना ( मुहा० ) कच्चे में आना, अपने अधिकार में आना, हाथ लगना ।  
 हाथ पत्थर-तले दबना ( मुहा० ) बेवश होना, कुल्लु न कर सकना ।  
 हाथ पसारना ( मुहा० ) माँगना, चाहना ।  
 हाथ-पाँव फूल जाना ( मुहा० ) घबरा जाना, काम करने से हिचकिचाता ।  
 हाथ-पाँव मारना ( मुहा० ) मिहनत करना, कोशिश करना, घबरा जाना, वृथा परिश्रम करना ।  
 हाथ फेंकना ( मुहा० ) पटा या लकड़ी चलाना, मुफ्त का माल लेना ।  
 हाथ फेरना ( मुहा० ) प्यार करना, दुखार करना, छोड़ करना, गले जगाना, फुसलाना, शाबाशी देना ।  
 हाथ बढ़ाना ( मुहा० ) किसी चीज़ के लिये कोशिश करना, दूसरे आदमी के माल-असबाब पर दखल करना ।  
 हाथ बंद होना ( मुहा० ) काम में बहुत लगा रहना, कुर्सीत न पाना, गरीब होना, खाली हाथ होना, निहोदस्त होना ।  
 हाथ बाँधना ( मुहा० ) हाथ जोड़ना, बिनती करना ।  
 हाथ बैठना ( मुहा० ) जमना, किसी हुनर में खूब अभ्यास होना ।  
 हाथ भरना ( मुहा० ) हाथ थक जाना ।

हाथ मलना ( मुहा० ) पछतावा करना, सोच करना, क्रिक करना ।  
 हाथ मारना ( मुहा० ) वचन देना, ताकती मारना, सफल होना, ले लेना, छीन लेना, लूट लेना, तलवार से घायल करना, बार करना ।  
 हाथ मिलाना ( मुहा० ) बराबरी का दावा करना, कुर्सी लड़ने को तैयार होना ।  
 हाथ में रखना ( मुहा० ) अपने अधिकार में रखना, अपने अधिकार में रखना, वश में होना ।  
 हाथ लगना ( मुहा० ) हाथ आना, मिलना, पाना, हासिल होना ।  
 हाथ लगाना ( मुहा० ) हाथ रखना, छूना, फिड़कना, सजा देना, किसी काम में लगना, किसी काम को शुरू करना ।  
 हाथ समेटना ( मुहा० ) देने से हाथ को रोक लेना, प्रयत्न छोड़ देना ।  
 हाथापाई करना } ( मुहा० ) धक्कामधक्का करना,  
 हाथाबाही करना } धौलधप्पा चलाना, लात-मुकी मारना, आपस में लड़ना ।  
 हाथोहाथ ( मुहा० ) तुरंत, झटपट, तुरंत-फुर्त ।  
 हाथोहाथ करना ( मुहा० ) सब मिलकर थोड़ा-थोड़ा करना ।  
 हाथोहाथ ले जाना ( मुहा० ) झटपट ले जाना, तुरंत-फुर्त झपट लेना ।  
 हाथा ( सं० हस्त ) ( पु० ) हाथ, अधिकार, वश ।  
 हाथाजोड़ी ( स्त्री० ) एक पौदे का नाम ।  
 हाथी ( सं० हस्ती ) ( पु० ) एक जानवर का नाम, मतंग, गज ।  
 हाथीदाँत ( सं० हस्तीदंत ) ( पु० ) हाथी का दाँत ।  
 हाथीवान् ( पु० ) महावत ।  
 हान } ( हा=यागना, छोड़ना ) ( स्त्री० ) घड़ी, टोटा,  
 हानि } नुकसान ।  
 हाय } ( सं० हाहा ) ( अर्थ० ) आह, ओह,  
 हायहाय } ( स्त्री० ) दुःख, पछतावा ।  
 हाय मारना ( मुहा० ) पछताना, दुःख करना, आह मारना, आह भरना, किसी की उन्नति देखकर कुदना ।  
 हाय-हाय करना ( मुहा० ) रोना, पीटना, दुःख से रोना ।  
 हायन ( पु० ) ( स्त्री० ) वर्ष, वसंत, वर्ष का दिन ।



हार ( ह=लेना ) ( पु० ) मोती अथवा फूलों की माला ।

हार ( सं० हारि, ह=लेना ) ( स्त्री० ) शिकस्त, पराजय, घटी, ( पु० ) वेलों का समूह, चरने की जगह, चरी, चरागाह ।

हार मानना } ( मुहा० ) निराश होकर छोड़ देना ।  
हार मान लेना }

हारक ( ह+अक, ह=लेना ) ( पु० ) चोर, भाजकांक, चुरानेवाला ।

हारजीत ( पु० ) जुआ ।

हारना ( सं० हरण, ह=लेना या पकड़ना ) ( कि० अ० ) थकना, शिकस्त खाना, पराजित होना, खेल खोना, खेल में मात खाना ।

हारित ( वि० ) हर गया, छोना गया, ज़बरदस्ती से लिया गया ।

हारी ( वि० ) चोर, ठग ।

हार्दिक दुःख ( पु० ) चित्त-ताप, दिली सदमा ।

हार्य ( वि० ) हर्तव्य, चुराने लायक ।

हाल ( पु० ) समाचार, संवाद, ( वि० ) उतावला, फुर्तीला ।

हाव ( ह्वे=बुलाना या कामदेव को उठाना ) ( पु० ) नज़रा, चोंचला, तावभाव, हावभाव, रावचाव ।

हावभाव ( हाव+भाव ) ( पु० ) रावचाव, रंगरस, दुखार, प्यार, नज़रा, चोंचला ।

हास } ( हस=हँसना ) ( पु० ) हँसी, हाँसी, खुशी,  
हास्य } काँतुक, खेल, ठट्ठा, दिल्लगी ।

हाहा ( हा=छोड़ना सुख को ) ( कि० वि० ) हाय-हाय, आह, ओह, अचंभा, वाह, वाह-वाह ।

हाहाकार ( हाहा=हाय-हाय, कृ=करना ) ( पु० ) हाय-हाय करना, घबराहट, लड़ाई का शब्द, हुल्लह, कोलाहल, शोक का शब्द ।

हाहा खाना ( कि० अ० ) गिड़गिड़ाना ।

हाहा-हीही ( स्त्री० ) हँसी, हँसना ।

हाहा-हीही करना ( मुहा० ) हँसना, दाँत निकालना ।

हि ( अव्य० ) हेतु, निश्चय, अवधारण, निकालना, विशेष, प्रश्न, संभ्रम, हेतु, उपदेश, शोक, असूया, निंदा, अवश्य ।

हिंसक } ( हिंस+अक, हिंस=मारना ) ( वि० ) मारने-  
हिंसक } वाला, हिंसा करनेवाला, घातक, बधिक,

दुर्जन, दुष्ट, पापी, जंगली जानवर जैसे—बाघ, भेड़िया, चीता आदि ।

हिंसन ( पु० ) वध करना, मारना ।

हिंसा ( हिंस=मारना ) ( स्त्री० ) मारना, बध, घात, नुकसान ।

हिकरना ( कि० अ० ) पीड़ा से कराहना, घोड़ों का शब्द ।

हिका ( स्त्री० ) हेचकी, हिचकी, रोग-भेद ।

हिंगु ( पु० ) रामठ, हाँग ।

हिंगुल ( हिं एक लाल चीज, ला=लेना ) ( पु० ) सिंदूर-जैसी लाल चीज, शिंगरफ ।

हिचकना ( कि० अ० ) आगापीछा करना, रुकना, दबना, भिक्कना, हटना, टलना, ठिठकना ।

हिचकाना ( कि० सं० ) धका देना, भोका देना, दिल को छोटा करना, परत हिम्मत करना ।

हिचकिचाना ( मुहा० ) संदेह में पड़ना, दुविधा में होना, आगापीछा करना, हकलाना, लड़खड़ाना ।

हिचकी ( सं० हिका, हिचक=हिचकी लेना ) ( स्त्री० ) 'हिच्' ऐसा शब्द जो गले में से निकलता है ।

हिजड़ा ( वि० ) नपुंसक, नामर्द ।

हिंडोल ( सं० हिंदोल, हिंलोल=हिलना ) ( स्त्री० ) एक राग का नाम जो वसंतऋतु में प्रातः समय गाया जाता है ।

हिंडोला ( सं० हिंदोल, हिंलोल=हिलना ) ( पु० ) पलना, झूला, गीत जो झूलते समय गाया जाता है ।

हित ( हि=जाना या बढ़ना अथवा धा=रखना ) ( पु० ) प्यार, मित्रता, उपकार, भलाई, ( वि० ) उचित, ठीक, योग्य, भला ।

हितकार } ( हित=भला, कार या कारी=करनेवाला,  
हितकारी } कृ=करना ) ( वि० ) भला करनेवाला,  
मित्र, सज्जन, उपकारी, हितु ।

हितु ( हित ) ( वि० ) मित्र, हितकारी ।

हितैषी ( हित=भला, इप्=चाहना ) ( वि० ) भला चाहने-वाला, परोपकारी, हिनकारी ।

हितोपदेश ( हित=भला, उपदेश=शिक्षा ) ( पु० ) भली शिक्षा, अच्छी सीख, संस्कृत में विष्णुशर्मा की बनाई हुई एक पुस्तक जिसमें राजनीति की बातें लिखी हैं ।

हिनहिनाना ( कि० अ० ) घोड़े का बोलना, हाँसना ।

**हिंदू** ( यह शब्द 'सिंधु' से निकला है; क्योंकि पश्चिमी देशों के लोग 'म' की जगह 'ह' और 'ध' की जगह 'द' बोलते हैं और जब मिकंदर यहाँ आया तो उसने सिंधु नदी के इस पार के देश को हिंद कहा था और आज तक यूनानवाले भी इसे 'इंद' कहते हैं; उर्मा में 'इंडिया' शब्द बना है, इसी नाम से अंगरेज हिंदुस्तान को पुकारते हैं ) ( पु० ) भरतवर्ष, हिंदुस्थान, भारतवर्ष ।

**हिंदी** ( हिंद ) ( वि० ) हिंदुस्थान का, हिंदुस्थानी, ( स्त्री० ) हिंदुस्थान की बोली ।

**हिंदू** ( हिंद ) ( पु० ) हिंदुस्थान के वासी जो वेद के मत को मानते हैं ।

**हिम** ( हि=जाना या बढ़ना ) ( पु० ) पाला, बर्फ, शीत, तुपार, ( वि० ) ठंडा, जमा हुआ ।

**हिमऋतु** ( हिम+ऋतु ) ( स्त्री० ) जाड़ा, जाड़े की ऋतु, शीतकाल, सर्दी की ऋतु ।

**हिमकर** ( हिम=ठंडा, कर=किरण ) ( पु० ) चाँद, कपूर ।

**हिमकूट** ( पु० ) शिशिरऋतु, जाड़ा ।

**हिमगिरि** ( हिम+गिरि ) ( पु० ) हिमालय पहाड़ ।

**हिमवन्** ( हिम=बर्फ, व=वाला ) ( पु० ) हिमालय पहाड़, ( वि० ) बर्फवाला, बहुत ठंडा ।

**हिमांशु** ( हिम=ठंडा, अंशु=किरण ) ( पु० ) चाँद, कपूर ।

**हिमाद्रि** ( हिम=बर्फ, अद्रि=पहाड़ ) ( पु० ) हिमालय पहाड़ ।

**हिमालय** ( हिम=बर्फ, आलय=जगह ) ( पु० ) एक पहाड़ जो हिंदुस्थान के उत्तर में है और संसार के सारे पहाड़ों से ऊँचा है, जिसको हिमाचल, हिमाद्रि अथवा हिमगिरि भी कहते हैं ।

**हिममत** ( स्त्री० ) साहस ।

**हिय** } ( सं० हृद या हृदय ) ( पु० ) हिरदा, मन,  
**हिया** } हृदय ।  
**हियो** }

**हियाव** ( सं० हृदय ) ( पु० ) शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस ।

**हियो** ( पु० ) जब गाय-गोरू को बुलाते हैं तब यह शब्द बोलते हैं ।

**हिरण** } ( ह=लेना, मन को ) ( पु० ) सोना, सुवर्ण ।  
**हिरण्य** }

**हिरण्यकशिपु** ( हिरण्य=सोना, कशिपु=कपड़ा या शय्या,

कश्यपशब्द करना ) ( पु० ) एक दैत्य का नाम जो प्रह्लाद का बाप था जिसको विष्णु ने नृसिंह-अवतार लेकर मारा ।

**हिरण्यगर्भ** ( हिरण्य=सोना, गर्भ=पेट ) ( पु० ) जिसके पेट में सुवर्ण हो, शालग्राम की मूर्ति, ब्रह्मा ।

**हिरण्याक्ष** ( हिरण्य=सोना, अक्ष=आँख, जिसकी आँखें सोने सी लाल चमकती हों ) ( पु० ) हिरण्यकशिपु का भाई जो फिर कुंभकर्ण और दंतवक्र हुआ था ।

**हिरद** } ( सं० हृद वा हृदय ) ( पु० ) हिया, हृदय,  
**हिरदा** } छाती, मन, अंतःकरण ।  
**हिरदै** }

**हिरन** ( सं० हरिण ) ( पु० ) एक जानवर का नाम, मृग, कुरंग ।

**हिरनोटा** ( पु० ) हिरन का बच्चा ।

**हिरमिजी** ( स्त्री० ) रंग-विशेष ।

**हिराना** ( कि० सं० ) खोना, रखकर भूल जाना ।

**हिरस** ( स्त्री० ) हँपी, डाह ।

**हिलकना** ( कि० अ० ) दर्द से घुंठना ।

**हिलकोर** ( स्त्री० ) } ( सं० हिलोल ) लहर, तरंग,  
**हिलकोरा** ( पु० ) } मौज, हिल्लाव, लहराव ।

**हिलकोरना** ( हिलकोर ) ( कि० अ० ) मौज मारना, लहराना, हिलाना ।

**हिलना** ( हिलोल ) ( कि० अ० ) डोखना, काँपना, मिलजुल जाना, वश हो जाना ।

**हिलमिल जाना** ( मुहा० ) मिलजुल कर रहना, मिलजुल जाना ।

**हिला** ( वि० ) परचा हुआ, मिला हुआ, पालापोसा ।

**हिलाना** ( कि० सं० ) बुलाना, अपने वश में करना ।

**हिलामिला** ( मुहा० ) मिलजुल ।

**हिलोरना** ( हिलोल ) ( कि० अ० ) लहराना, मौज मारना, हिलकोरना ।

**हिलोरा** ( हिलोल ) ( पु० ) लहर, तरंग, मौज, हिलकोरा ।

**हिसका** ( पु० ) बराबरी, देखादेखी, बदाबदी, खाग ।

**हिसाब** ( पु० ) लेखा, गणित-शास्त्र ।

**ही** ( अव्य० ) निश्चय-बोधक, दुःख-बोधक ( पु० ) हृदय ।

**हींग** ( सं० हिंयु, हिम=ठंडा, गम्=जाना ) ( स्त्री० ) एक सुगंधित चीज़ जिसको घी में गर्म करके दाख आदि तरकारी में बघार देते हैं ।

हींग हगना ( मुहा० ) ब्रोमार रहना, बिना हाजत के  
फाड़े जाना ।

हींसना ( कि० अ० ) हिनहिनाना ।

हीक ( स्त्री० ) उबकाई, मतलाई ।

हीतल ( पु० ) हृदय ।

हीन ( हा=छोड़ना ) ( वि० ) विना, छोड़ा हुआ, रहित,  
कम, नीच, अधम, गरीब, दोन ।

हीनजाति ( हीन=नीच, जाति=जात ) ( वि० ) नीच  
जाति का, ( स्त्री० ) गणित में बड़े नाम के अंक को  
छोटे नाम के अंक में लाना, जैसे—रुपये को आने  
के रूप में खाना आदि ।

हीनता ( स्त्री० ) न्यूनता, नीचता, घटी ।

हीनवर्ण ( हीन+वर्ण ) ( वि० ) नीच जाति का, अधम,  
नीच ।

हीर ( ह=लेना ) ( पु० ) सार, गूदा, वज्र, हीरा, शिव,  
साँप, हार, सिंह ।

हीर ( स्त्री० ) एक स्त्री का नाम जो राँका को बहुत  
प्यारी थी ।

हीरा ( सं० हीर ) ( पु० ) एक रत्न का नाम ।

हीरामन ( पु० ) एक तरह का तोता, एक तरह का सुवा ।

हीरावल } ( सं० हरि+अवली, अर्थात् जिस पर हरि-हरि  
हीरावली } ऐसा लिखा हो या हीर=हीरा, अवली=पंक्ति )  
( स्त्री० ) एक तरह का कंबल जिसको योगी  
ओढ़ते हैं ।

हीला ( पु० ) बहाना, भिस ।

हीही ( अव्य० ) हँसने का शब्द, हाहा, अहंभे का  
शब्द, आहा, वाहवाह, ज़ोर की हँसी ।

हुँडार ( पु० ) भेड़िया ।

हुँडावन } ( स्त्री० ) हुंडी का बट्टा, हुंडी के लिये  
हुंडियावन } जो कुछ दिया जाय ।

हुकुम ( पु० ) आज्ञा, आर्डर, अनुशासन ।

हुकुमनामा ( पु० ) आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र ।

हुकार ( हुम् ऐसा शब्द, कृ=करना ) ( स्त्री० ) पुकार,  
गर्जन, डराने का शब्द ।

हुड़दंगा ( वि० ) दंगैत, लड़ाका, उपद्रवी ।

हुंडी } ( स्त्री० ) रुपये के पहुँचाने की छिट्टी ।  
हुंडी }

हुंडा भाड़ा ( पु० ) बीमा, जोखिम पहुँचाना, किसी

चीज़ या सोने-चाँदी आदि के ज़ेवर को एक जगह

से दूसरी जगह पहुँचा देने के लिये जो भाड़ा ठहरे ।

हुंडीवाल ( पु० ) कोठीवाल, वह महाजन जिसके यहाँ  
हुंडी का व्यवहार होता है ।

हुत ( हु=होमना ) ( वि० ) होमी हुई, ( पु० ) होमने  
की चीज़, जैसे—धी आदि ।

हुतना ( कि० अ० ) होम करना ।

हुतभुक् ( पु० ) अग्निदेवता ।

हुताश } ( हुत+अश=भक्षण करना ) ( स्त्री० ) अग्नि,  
हुताशन } वह्नि ।

हुति ( अव्य० ) पलटे, बदले, खोर से ।

हुती ( कि० अ० ) हुई, थी, रही ।

हुनर ( पु० ) गुण, कारीगरी ।

हुमकना ( कि० अ० ) उछलना, ज़ोर लगाना ।

हुरनि ( स्त्री० ) ठोकर, मारना ।

हुरमई ( स्त्री० ) नाच-विशेष ।

हुरा ( पु० ) फूट, दुल्लड़, कोलाहल ।

हुलकारना ( कि० स० ) उकसाना, उभाड़ना, दुस्कारना,  
खदेड़ना, भगाना ।

हुलना ( कि० स० ) भोंकना, चुभोना ।

हुलसना ( सं० उत्तमन, उत्, लस्=खेलना, आनंद  
करना ) ( कि० अ० ) खुश होना, प्रसन्न होना,  
आनंदित होना ।

हुलसी ( वि० ) खुशी, खुश, ( स्त्री० ) तुलसीदास की  
माता का नाम ।

हुलास ( सं० उत्ताम ) ( पु० ) आनंद, हर्ष, खुशी,  
प्रसन्नता ।

हुल्लड़ ( पु० ) रौंदा, बग्येड़ा, हलचल, होड़ा ।

हुँ ( कि० वि० ) हाँ, भो, सही, भला, ठीक, अच्छा,  
( अ० कि० ) 'होना' क्रिया का वर्तमान काल,  
एकवचन, उत्तमपुरुष में रूप ।

हुँड ( पु० ) सहायता-विशेष जैसी खेतिहर परस्पर  
करते हैं ।

हुँडाहूँड़ी ( स्त्री० ) धोंगाधोंगी ।

हुँण ( पु० ) हुँण देश का वासी, कठोर मनुष्य ।

हुँदाँ ( पु० ) धूमधाम, हुल्लड़ ।

हुक ( स्त्री० ) पीड़ा, टसक, कसक ।

हकहक के रोना ( मुहा० ) सिसकी भरकर रोना,  
टमक-टमककर रोना ।

हृति ( दे=बुलाना ) ( स्त्री० ) आह्वान, बुलावा ।

हृन ( पु० ) मद्रास का सोने का सिक्का ।

हलना ( कि० म० ) पेख देना, ( जैसे हाथी को ) चलना,  
चुभोना, खींचना, आँकुम मारना ।

हन ( ह=लेना ) ( वि० ) छिया हुआ ।

हृद } ( ह=लेना ) ( पु० ) मन, दिल, कुंड,  
हृदय } हिरदा, दिया, छाती ।

हृपीकेश ( हृपीक=हृदय, हृप=प्रसन्न होना+ईश=मालिक )  
( पु० ) विष्णुभगवान्, नारायण ।

हृष्ट ( हृप=प्रसन्न होना ) ( वि० ) प्रसन्न, हर्षित,  
आनंदित, मग्न ।

हृष्टपुष्ट ( हृष्ट=प्रसन्न, पुष्ट=मोटा-ताजा ) ( वि० )  
मोटा-ताजा, प्रसन्न, संदुस्संद, सुदृढ़ ।

हें ( अथ० ) संबोधन, बुलाना, आह्वान करना, असूया  
करना, निंदा करना ।

हेंगा ( पु० ) एक प्रकार की मोटी छकड़ी जिसमें खेत  
को बराबर करते हैं ।

हेंड ( कि० वि० ) नीचे, तले, हेंडे ।

हेंठा ( म० हेंडू=रोंकना ) ( वि० ) डरपोक, डीला,  
अशरू, आलसी, नीच ।

हेंत ( पु० ) प्रेम, प्रीति ।

हेति ( स्त्री० ) सूर्य का तेज, शस्त्र, अग्नि की उजाला ।

हेतु ( हि=जाना या बढ़ना ) ( पु० ) कारण, स्वयं,  
अर्थ, अभिप्राय, मतलब, फल ।

हेम ( हि=बढ़ना ) ( पु० ) सोना, सुवर्ण, कंचन ।

हेमनिधि ( पु० ) पारा, सोने की खान ।

हेममाली ( पु० ) सूर्य, स्वर्णमाली ।

हेमंत ( हि=जाना या बढ़ना ) ( पु० ) जाड़े की ऋतु,  
एक ऋतु जो अगहन और पूस के महीनों में रहती  
है, सर्दी ।

हेमलता ( स्त्री० ) सोनज़ड़ी, पुष्प-विशेष ।

हेमप्रता ( स्त्री० ) वच-नामक औषधि ।

हेमाचल ( पु० ) सुमेरु पर्वत ।

हेय ( हा=खींचना ) ( वि० ) त्याग्य, छोड़ने योग्य ।

हेरना ( कि० म० ) खोजना, ढूँढ़ना, देखना, रगेदना,  
खदेदना ।

हेरंय ( हे=शिव, रवि=जाना ) ( पु० ) गणेश ।

हेरी ( स्त्री० ) रोग-विशेष ।

हेलना ( कि० अ० ) पैरना, तैरना, पार होना ।

हेला ( हेल्=अवज्ञा करना ) ( स्त्री० ) खेल, क्रीड़ा, अवज्ञा,  
अनादर ।

हेला मारना ( मुहा० ) टेकना, ठकेलना, पुकारना ।

हेजा ( पु० ) रोग-विशेष, काखरा, विसूचिका ।

हौकना ( कि० अ० ) हौफना, हफहफाना, जल्दी-जल्दी  
साँस लेना ।

हौठ } ( म० आँठ ) ( पु० ) मुँह के बाहर का हिस्सा,  
हौठ } ओष्ठ ।

होड़ ( स्त्री० ) पण, वचन, दाँव, पेच, शर्त ।

होड़ बढ़ना ( मुहा० ) शर्त लगाना ।

होड़ लगाना ( मुहा० ) शर्त लगाना, वचनबद्ध करना  
और होना, पण करना, बाज़ी लगाना ।

होड़ हारना ( मुहा० ) बाज़ी हारना ।

होत ( होना ) ( स्त्री० ) वश, शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।

होतय ( म० भवितव्य ) ( पु० ) भाग्य, किस्मत,  
प्रारब्ध, होनहार ।

होतव्यता ( म० भवितव्यता ) ( स्त्री० ) होनहार, संयोग,  
भाग्य, प्रारब्ध ।

होना ( हु=होमना ) ( पु० ) होम करनेवाला ।

होनहार ( होना ) ( वि० ) होनेवाला, संभव, जो होगा ।

होना ( म० भवन, हु=होना ) ( कि० अ० ) रहना,  
विद्यमान रहना ।

हो आना ( मुहा० ) जाकर चला आना ।

हो चुकना }  
हो लेना } ( मुहा० ) पूरा होना ।

हो जाना ( मुहा० ) आ पड़ना, संयोग बनना ।

होने-होने ( मुहा० ) धीरे-धीरे, क्रम-क्रम से ।

होम ( हु=होमना ) ( पु० ) हवन, यज्ञ, वेद के मंत्रों  
से देवताओं को बलि देने के लिये धी आदि का  
आग में डालना ।

होमकुंड ( होम+कुंड ) ( पु० ) होम करने के लिये  
आग रखने का गड्ढा अथवा बर्तन ।

होमना ( होम ) ( कि० म० ) होम करना, धी आदि  
होम की चीज़ को आग में डालना ।

होमी ( हु=होम ) ( वि० ) होम करनेवाला ।

होला ( सं० होलका, हु=खाना ) ( पु० ) कच्चे चने या  
आग में सेंके हुए कच्चे चने, छोला, बूट ।

होला ( पु० ) एक तरह की नाच ।

होलाष्टक ( पु० ) होली के पहले के आठ दिन ।

होली ( सं० होला, अथवा होलिका, हु=होम करना या खाना )  
( स्त्री० ) हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन  
के महीने में होता है ।

होहला ( पु० ) हुल्लाह ।

हौंस } ( अ० हवस ) ( स्त्री० ) चाड़, चोप, इच्छा,  
हौसला } उमंग, बढ़ने की चाह ।

हौंका ( स्त्री० ) लोभ, जालच, जिप्सा ।

हौद ( पु० ) कुंड, चहबच्चा हौज ।

हौदा ( पु० ) हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा,  
मिट्टी का बड़ा खुले मुँह का बर्तन, जिसमें पशु  
चारा खाते हैं ।

हौदी ( स्त्री० ) छोटा कुंड, छोटा चहबच्चा ।

हौली ( स्त्री० ) कलवरिया, मदिरा की दुकान ।

हौले ( कि० वि० ) धीरे, धीमे ।

हौवा ( पु० ) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित नाम ।

ह्यस् ( अथ० ) गत दिवस ।

हृद् ( दाद=शब्द करना ) ( पु० ) गहरी भील, सरोवर,  
वृद्ध, कुंड ।

ह्रस्व ( दम्=छोटा होना ) ( पु० ) एक मात्रा का स्वर,  
लघु, ( वि० ) छोटा, नाटा, बीना ।

हास ( दम्=छोटा होना या शब्द करना ) ( पु० ) घटी,  
कमी, क्षय, शब्द, आवाज़ ।

ह्री ( दाद=पूजना ) ( स्त्री० ) लाज, लज्जा, शर्म ।

ह्लाद ( दाद=प्रसन्न होना ) ( पु० ) आनंद, हर्ष, संतोष,  
सुख ।

ह्लादित ( वि० ) आनंदित, प्रसन्न, हर्षित ।

ह्लादिनी ( स्त्री० ) बिजली, वज्र, ईश्वरी शक्ति, ( वि० )  
आनंदयुक्त ।

हलन् ( हल=ज्ञाना ) ( पु० ) चक्रना, महादेव, ब्रह्मा,  
विष्णु, गणेश, ( स्त्री० ) सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ।

## परिशिष्ट १

### कुछ अप्रचलित भौगोलिक नामों की व्याख्यासहित सूची

#### अ

- अगस्त्याश्रम= इगतपुरी । नासिक के दक्षिण और पूर्व का और २४ मील पर बंबई के समीप जी. आई. पी. रेलवे का एक स्टेशन ।
- अग= सरयू और गंगा के बीच का देश । भागलपुर-ज़िला ।
- अधिराज= दत्तिया-यहाँ के राजा दंतवक्र को, दिग्विजययात्रा के समय, महदेव ने मारा था । यह ग्वालियर के पास है ।
- अपरांता= कोंकण और मल्लार-देश ।
- अवंती= उज्जैन का नाम है । किसी समय अवंती नाम का राज्य था जिसकी राजधानी उज्जैन थी । अब अवंती से केवल उज्जैन-नगरी ही का बोध होता है ।
- अश्वतीर्थ= कन्नौज के जिले में रंगा और काली-नदी के संगम पर एक तीर्थ-स्थान । यहाँ पर ऋचीक-नामक ऋषि ने एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े वरुण से पाए थे ।
- असक्ती-नदी=चंद्रभागा अथवा चनाच-नदी, यह पंजाब में है ।
- अहिच्छत्र= आहिच्छत्र, उत्तर पांचालदेश, जिसे द्रोणाचार्य ने पांडवों की सहायता से द्रुपद से छीना था । इसकी राजधानी रामनगर ( रुहेलखंड ) थी ।

#### इ

- इक्ष्मती= संयुक्तप्रान्त के उत्तरीय भाग में बहने-वाली काली-नदी का नाम ।

#### उ

- उज्जयंत= सौराष्ट्र-काठियावाड़ में जूनागढ़ के समीप के गिरनार-पर्वत का दूसरा नाम ।

- उज्जानक= काश्मीर के पश्चिम सिंधु-नदी के तट का एक पवित्र क्षेत्र ।
- उत्कल= कलिंगदेश के उत्तर का देश, जो आज-कल उड़ीसा के नाम से प्रसिद्ध है ।
- उरगापुरी= दक्षिण-भारत के समुद्रतटवर्ती एक बंदर का नाम, जो आजकल तंजीर-ज़िले में नीगापट्टम के नाम से प्रसिद्ध है । यहाँ किसी समय पांड्यदेश की राजधानी थी ।

#### ऋ

- ऋक्षवान्= विंध्यपर्वतमाता का पूर्वी भाग ।
- ऋष्यमूक= मद्रास-प्रांत के अनागुंडी-स्थान से आठ मील दूर, तुंगभद्रा-नदी के तट पर जो पहाड़ है, वह ऋष्यमूक कहलाता है ।
- ऋष्यशृंगाश्रम=भागलपुर-ज़िले में, सिंहेश्वर में, कुशी नदी के तट पर शृंगी ऋषि का आश्रम था ।
- ऋषभ (वृषभ) =पांड्यदेश के एक पर्वत का नाम, जहाँ महाराज युधिष्ठिर तीर्थयात्रार्थ गए थे । यह पर्वत दक्षिण-भारत के मदुरा नगर में अजगिरि नाम से प्रसिद्ध है ।
- ऋषिका= उत्तर-दिशा में कांबोजदेश के समीप का देश अर्थात् रूसदेश ।
- ऋषिकुल्या= कलिंगदेश की एक नदी का नाम । यह नदी गंजाम-ज़िले में होकर बहती है और महेंद्र-पर्वत से निकलती है ।

#### ओ

- ओदुंबर= कच्छदेश का नाम । इसकी प्राचीन राजधानी का नाम कोटेश्वर या कच्छेश्वर कहा जाता है ।

## अप्रचलित भौगोलिक नामों की व्याख्यासहित सूची

**क**

- कच्छ**= खेड़ा, जो गुजरात के अहमदाबाद और खंवात की खाड़ी के मध्य में है।
- कटदेश**= यहाँ के राजा का नाम सुनाभ था। अर्जुन ने दिग्विजययात्रा के समय इसे परास्त किया था। यह वर्द्धवान-ज़िले के कटवा का नामान्तर है।
- करवाश्रम**= रहेलखंड का वह स्थान, जहाँ आजकल विजनौर की बस्ती है।
- कनखल**= हरिद्वार से २ मील पूर्व के एक ग्राम का नाम।
- कन्यातीर्थ**= भूवनकोर-राज्य के अंतर्गत कन्याकुमारी-नामक प्रसिद्ध स्थान।
- करतोया**= नदी। यह बंगाल के रंगपुर, दीनाजपुर आदि नगरों में होकर बहती है और किसी समय बंगाल और कामरूप-देश की सीमा समझी जाती थी।
- करीपक (कारुप)**= महाभारत में यहाँ के राजा का नाम दंतवक्र बतलाया गया है। बिहार-प्रान्त के अंतर्गत शाहाबाद-ज़िले का पूर्वी भाग।
- कर्णाटक**= दक्षिण-भारत का एक प्रदेश, जो बंबई और मद्रास-प्रान्तों में है। समूचा मैसूर राज्य, मद्रास-प्रान्त का दक्षिणी किनारा तथा बंबई-प्रान्त का उत्तरीय किनारा, बेलगाँव और धारवाड़-ज़िले कर्णाटक-प्रदेश कहलाते हैं।
- कालंग**= इसका दूसरा नाम आंध्रदेश भी है। यहाँ के श्रुतायु, शक्रदेव, सरयदेव, सत्य-केतुमान आदि को भीमसेन ने मारा था। यह उस प्रदेश का नाम है, जो उड़ीसा की वैतरणी-नदी के दक्षिण-तट पर और कृष्णा-नदी के उत्तरीय तट पर राजमहेंद्री, विजयापट्टम और गंजाम-ज़िले तक चला गया है। इसकी राजधानी का नाम राजपुर था और यहाँ का

- कान्यकुब्ज**= राजा चित्रांगद दुर्योधन का ससुर था। काकीनदी या हनुमती और गंगा के संगम पर यह राज्य बसाया जाता है। वर्तमान काल में कन्नौज एक कसबा है जो फ़र्रुखाबाद-ज़िले के अंतर्गत है। यहाँ राजा गाधि की राजधानी थी।
- कांपिल्य**= यह दक्षिण पांचाल की राजधानी है, अब भी कंपिला के नाम से प्रसिद्ध है और फ़र्रुखाबाद-ज़िले का एक कसबा है। द्रौपदी का जन्म यहाँ हुआ था।
- कांबोजा**= यह देश निपध-पर्वत के दक्षिण में बतलाया जाता है। यहा अर्जुन राजसूययज्ञ के अवसर पर दिग्विजय करने गये थे। वर्तमान समय में इस देश की स्थिति अक़रानिस्थान में जो अश्वस्थान का अपभ्रंश है, बतलाई जाती है। यहाँ घोड़े अधिक होते हैं। मसल मशहूर है—“क्या काबुल में घोड़े हो घोड़े होते हैं, गधे नहीं होते ?” कांबोज ही से “काबुल” की उत्पत्ति जान पड़ती है।
- कारुप**= देखो करीपक।
- किंपुरुप**= हिमालय-पर्वत के उत्तर-भाग का नाम।
- किरात**= टिपरा-पहाड़ी और कमिल्ला (जो बंगाल में हैं)।
- किरिक्धा**= बालि और सुग्रीव की राजधानी। यह स्थान मद्रास-प्रान्त के बिलारि-ज़िले में, द्विपी ग्राम के समीप, तुंगभद्रा-नदी के उत्तरीय तट पर बतलाया जाता है।
- कुंडिन**= विदर्भ-देश की राजधानी, जहाँ का प्रसिद्ध राजा भीष्मक था। यह स्थान बरार-प्रान्त में अमरावती-नगर से चालीस मील पूर्व की ओर है।
- कुंतय**= कुंती के जन्मस्थान का नाम। यह माळवा में अश्व-नदी के तट पर बसा हुआ था।
- कुंतल**= मद्रास-प्रान्त के बेलारी-ज़िले का कुछ भाग जिसमें “कुरुगीड़” है।
- कुयक्षेत्र**= पंजाब के कर्नाल-ज़िले का एक कसबा।

## शोधर-भाषा-कोष

**कुरुजांगल=** कुरुदेश के पश्चिम में जो बड़ा भारी जंगल था उसको कुरुजांगल कहते थे। यह कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर से उत्तर-पश्चिम की ओर तथा दिल्ली से उत्तर-पूर्व की ओर अवस्थित था। अथ इसका नाम-निशान तक नहीं है। गंगा के प्रवाह में यह धुल गया।

**कुलिन्द=** कुम्भेश्वर के उत्तर का प्रदेश, जहाँ अब सहरनपुर-ज़िला है।

**कुशस्थला=** द्वारका, जो काठियावाड़ में है।

**कृष्णवेगा**  
**कृष्णवेगी**  
**कृष्णा** } = कृष्णा नदी के नाम हैं।

**कैकय=** पंजाब-प्रान्त के उस भूखंड का नाम, जो व्यास और सतलज-नदियों के बीच में है। भरत की माता कैकेयी यहीं की थी।

**कांतितीर्थ=** इस नाम के तीर्थ बांदा-ज़िले में, कांति-नगर में, गोरख में और मथुरा में हैं।

**कोलाहल=** मालवा और बुंदेलखंड को अलग करने-वाला एक पर्वतमाला का नाम जो चंदेरी के पास है।

**कोसल=** अयोध्या। यह राज्य दो भागों में विभक्त था। दोनों के बीच में सरयू है। एक का नाम उत्तर-कोसल और दूसरे का दक्षिण-कोसल था।

**कोशिकी=** यह गंगा की सहायक नदियों में बहुत बड़ी सहायक नदी है और इसका गंगा के साथ संगम बंगाल में हुआ है, वह स्थान 'कोशिकी' तीर्थ के नाम से अब तक प्रसिद्ध है।

**क्रथकैशिक=** किसी समय यहाँ विदर्भ-देश की राजधानी थी। यह वरार में है।

## ग

**गंधमादन=** रत्न-हिमालय का अंश-विशेष जो बदरिकाश्रम से उत्तर-पूर्व की ओर कुछ ही हटकर आरंभ होता है।

**गांधार=**

**गिरिव्रज=**

**गोकर्ण=**

**गोप्रतार=**

**गोमंत=**

**चेदि=**

**जनस्थान=**

**तक्षशिला=**

**तमसा=**

**ताम्रपर्णी=**

**त्रिगर्त=**

**दरद=**

**दुर्दुर=**

**दण्डवती=**

यह देश काबुल-नदी के किनारे कुनार और सिंध के बीच में है। इसकी राजधानी का नाम पुरुषपुर (जिसे अब पेशावर कहते हैं) था।

मगध-देश की राजधानी। यह विहार में राजगिरि के नाम से अब प्रसिद्ध है।

एक क्षेत्र है जो गोआ से ३० मील उत्तरीय किनारा में है।

अयोध्या में सरयू-नदी पर गुप्तारघाट के नाम से प्रसिद्ध है।

द्वारका के समीपवाले एक पहाड़ का नाम।

## च

यह राज्य शिशुपाल के अधीन था। और इसमें बुंदेलखंड का दक्षिणी भाग तथा जबलपुर का उत्तरीय भाग था।

## ज

जहा अब औरंगाबाद (दक्षिण-हैदराबाद के अंतर्गत) है, वहाँ किसी समय विकट वन था; यहाँ राजसों की चौकी थी।

## त

फेलम-नदी के तट का एक नगर, जो अटक और रावलपिंडी के बीच में बसा था।

तंस-नदी, जो संयुक्तप्रांत में है और गंगा में गिरती है।

मद्रास-प्रान्त का टिनेवली नगर इसी नदी के तट पर बसा हुआ है।

पंजाब का जालंधर-ज़िला।

## द

दरद-स्तान जो काश्मीर से उत्तर, सिंध के चढ़ाव की ओर है।

पूर्वांचल की पर्वतमाला के दक्षिणी भाग का नाम।

कग्गर-नदी का नाम, जो अंबाले और



## अप्रलित भौगोलिक नामों की व्याख्यासाहच सूची

सरहिंद होकर बहती है और राजपूताने के रेगिस्तान में विलीन हो जाती है ।  
द्रमिड ( द्रविड )=दक्षिण-भारत का वह भूभाग जो मद्रास से श्रीरंगपट्टम और कन्याकुमारी तक है । कांचीपुर इसकी राजधानी ( जो अब कांजीवरम कहलाता है ) थी ।

### ध

धर्मारण्य= गया के समीप का देश । यह बुद्ध-गया से चार मील की दूरी पर है ।

### न

नैमिषारण्य= गोमती-नदी के बायें तट पर, सीतापुर से लगभग बीस मील के फासले पर है । इसे अब नीमसार-मिसरिख कहते हैं ।

### प

पांचाल= अब रुहेलखंड है; वही पांचाल देश था । इसके दो विभाग थे । एक उत्तर-पांचाल और दूसरा दक्षिण-पांचाल । उत्तर-पांचाल की राजधानी रामनगर ( रुहेलखंड ) थी । दूसरे विभाग की राजधानी कपिल्ला थी ।

पंपा= यह तुंगभद्रा की एक शाखा का नाम है । यह ऋष्यमूक-पर्वत से निकलती है, जो अनगंडी पहाड़ी से आठ मील दूर ( मद्रास हाने में ) है ।

पयोष्णी= ताप्ती-नदी की एक शाखा, जो बरार-प्रान्त में है । इसको वहाँ पूर्णा कहते हैं ।

पर्णाशा= यह नदी राजपूताने में है और इसका प्रचलित नाम यनास है । यह चंबल में गिरती है ।

पाटलावती= काली-सिंध नदी, जो चंबल की एक शाखा है ।

पांडुराष्ट्र= दक्षिण में तिनैवली और मदुरा के जिले जहाँ हैं—वहाँ पांडुराष्ट्र था । इसकी राजधानी उरगपुर थी । उरगपुर का वर्तमान नाम नीगापट्टम और मदुरा है ।

पारियात्र= विंध्यापर्वत की पश्चिमी पर्वतमाळा, जिसमें अरावली भी शामिल है और जो नर्मदा के मुहाने से खंबात की खाड़ी तक फैली हुई है ।

पावनी= बर्मा की इरावदी-नदी का नाम ।

पुलिंद= इस राज्य में वर्तमान बुंदेलखंड का पश्चिमी भाग और समूचा सागर-जिला सम्मिलित था ।

पृथूदक= पीछो, जहाँ पर सुप्रसिद्ध ब्रह्मयोनि-तीर्थ है । यह स्थान थानेश्वर से चौदह मील पश्चिम की ओर है ।

प्रभास= काठियावाड़ का सोमनाथपट्टन ।

प्राग्ज्योतिष= आसाम का कामरूप-देश ।

### व

वाहूदा= धवळा नदी, जिसे अब बृहा राप्ती कहते हैं और जो अवध की राप्ती नदी की एक सहायक नदी है । लिखित ऋषि के इसी नदी में स्नान करने से नई बाढ़ें निकल आई थीं, तभी से इसका नाम “बाहुदा” पड़ा ।

वालुहीक= केकय-देश के उत्तर-पूर्व का वह देश जो व्यास और सतलज के बीच में है ।

विंदुसर= गंगोत्री से दो मील दूरी पर रुद्र-हिमालय में एक पवित्र कुंड है । यहीं भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर बुलाने के लिये नप किया था ।

### भ

भृगुकच्छ= भड़ोच-नगर । यहाँ पर नर्मदा समुद्र में गिरती है और यहाँ पर महर्षि भृगु का आश्रम था ।

भोजकट= पूर्णा-नदी पर बसा हुआ हलिचपुर, जो बरार में है । यहाँ रुक्मिणी का भाई रहता था ।

### म

मगध= बिहार-प्रान्त । इस समय मगध-देश की पश्चिमी सीमा सोन-नदी तक थी ।

## श्रीधर-भाषा-कोष

मत्स्य=	जयपुर के पास का प्रदेश जिसमें अजमेर भी शामिल है।
मद्र=	रावी और चनाब के बीच का प्रदेश। पंजाब में है।
मलज (मलद)=	हरूप देश के समीप का देश जिसे मालदा कहते हैं और जो शाहाबाद-आरा का पश्चिमी भाग है।
मल्ल=	इस नाम के दो देश हैं। पश्चिम में मुलतान और पूर्व में हजारीबाग का वह भाग जिसमें पारसनाथ-पर्वत और मानभूमि-जिले का भी कुछ भाग शामिल है।
महेंद्र=	महेंद्रमाली-पर्वत जो गंजाम में है।
मार्कंडेयाश्रम=	गोमती और सरयू के संगम पर यह आश्रम है।
मालिनी=	नदी, जो सरयू में अयोध्या से ५० मील की दूरी पर चढ़ाव की ओर मिलती है। यहाँ पर कृष्ण ऋषि का आश्रम था।
माहिष्मती=	प्रसिद्ध नाम माहेश्वर, जो नर्मदा के तट पर, इंदौर से चाबोस मील दक्षिण की ओर है।
मेकल=	मेकल-पर्वत के नीचे का प्रदेश। मेकल-पर्वत को अमरकंटक कहते हैं।
मैनाक=	सिवालक-पर्वतमाला का नाम।
मोदागिरि=	मुंगेर के पास का पर्वत जिसे मुद्रिगिरि या मुद्रगगिरि कहते हैं; भागलपुर जिले में है।

## र

रैवतक=	गिरनार-पर्वत, जो जूनागढ़ में है।
रोही=	अकशानिस्थान की रोहा-नदी।
रोहीतक=	रोहतक-जिला, जो पंजाब में है।

## ल

लंबक (लंपक)=	लामकन-देश, जो काबुल-नदी के उत्तरीय तट पर है।
--------------	--

## व

वंशगुल्मतीर्थ=	यह एक पवित्र कुंड अमरकंटक की
----------------	------------------------------

उपत्यका में, नर्मदा के मुहाने से साढ़े चार मील पर है ।	वंग=	बंगाल ।
वसोधारा=	यह तीर्थ अलकनंदा-नदी के मुहाने पर, बदरीनारायण से चार मील उत्तर की ओर है ।	वात्स्य=
वात्स्य=	गंगा-यमुना के बीच का दुआब, जो प्रयाग से पश्चिम की ओर है और जहाँ किसी समय उद्यन का राज्य था । इसकी राजधानी कौशांबी थी ।	
वारणावत=	मेरठ-ज़िले में वारणव के नाम से प्रसिद्ध स्थान । यह मेरठ से उत्तर-पश्चिम की ओर, उन्नीस मील के फासिले पर है ।	वितस्ता=
वितस्ता=	केलम-नदी ।	विदर्भ=
विदर्भ=	विंध्या से दक्षिण, दशार्ण से पश्चिम, गोदावरी से उत्तर और सुराष्ट्र से पूर्व का देश, वार ।	विदेह=
विदेह=	निरहुत-प्रांत ।	विनशनतीर्थ=
विनशनतीर्थ=	सरहिंद के रेतीले मैदान का वह स्थान जहाँ सरस्वती-नदी विलीन होती है ।	विपाशा=
विपाशा=	व्यास—पंजाब की एक नदी ।	विराटदेश=
विराटदेश=	मगधदेश की राजधानी जो जयपुर से उत्तर ४१ मील और दिल्ली से दक्षिण-पश्चिम १०५ मील पर थी ।	वेत्रवती=
वेत्रवती=	बेतवा-नदी जो बुंदेलखंड में है ।	वैतरणी=
वैतरणी=	उड़ीसा में कटक के पास की एक नदी ।	

## श

शतद्रु=	पंजाब की सतलज-नदी का नाम।
शरावती=	गुजरात की सांभरमती-नदी।
शालग्रामक्षेत्र=	नेपाल में गण्डकी-नदी के मुहाने के समीप था। मैसूर-राज्य में भी इस नाम का एक स्थान है।
शुद्धमती=	उड़ीसा की मुवणरेखा या बुंदेलखंड की बेतवा-नदी।
शुद्धिमान=	उज्जैन के समीप की पश्चिमी विन्ध्य-पर्वतमाला।

## अप्रलित भौगोलिक नामों की व्याख्यासहित सूची

शूरसेन=	मथुरा-नगरी जिस राज्य की राजधानी थी उस राज्य का नाम ।	सिंधु=	देश जो सिंध और झेलम के बीच में बसा हुआ है ।
शूर्पारक=	बंबई-हाते में बीजापुर-ज़िले में जामखंडी के समीप का स्थान । यहाँ जामदग्न्य परशुरामजी रहते थे । इस स्थान का नाम शूरपक्ष्य है ।	सेक=	उस देश का नाम जो चंबल से दक्षिण और उज्जैन से उत्तर की ओर है ।
शृंगवेरपुर=	सिंगनौर ( गुह की राजधानी का नाम ) । यह प्रयाग से उत्तर-पश्चिम की ओर १८ मील पर, गंगा के तट पर, है ।	सौवीर=	सिंधु-देश के समीप का प्रदेश ।
शोण=	सोन-नद का नाम ।	<b>ह</b>	
	<b>स</b>	हस्तिनापुर=	कौरवों की राजधानी जो दिल्ली से उत्तर-पूर्व की ओर थी और जिसका गंगा ने नाम-निशान तक नहीं रक्खा । यह मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व, गंगा के दाहिने तट पर, बसी थी ।
सदानीरा=	करतोया-नदी जो अवध में है और जो रंगपुर और दीनाजपुर के पास होकर बही है ।	हिमवान्=	हिमालय-पर्वत ।

## परिशिष्ट २

### मुख्य-मुख्य संस्कृत-ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय

**अमरु कवि—** शृंगार-रस का 'अमरु-शतक'-नामक ग्रंथ इन्होंने रचा हुआ है। इसके रत्नोक बड़े सरस और मनोहर हैं। पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर लिखते हैं कि संस्कृत के खंड कार्यों में "अमरु-शतक" ही सर्वोत्तम है। इसकी रचना से हमका प्राचीनत्व प्रकट होता है। 'काश्य-प्रकाश', 'कुवलयानंद' आदि अलंकार-ग्रंथों में 'अमरु-शतक' के रत्नोक उद्धृत पाए जाते हैं।

**अष्टावक्र—** महर्षि उद्दालक ने अपने शिष्य कहोड़ को अपनी कन्या सुजाता दिया था। सुजाता के गर्भवती होने की अवस्था में ही गर्भस्थ बालक ने समस्त वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अपने पिता के अशुद्ध पाठ करने पर गर्भस्थ बालक ने कहा कि आप वेदपाठ अशुद्ध कर रहे हैं। महर्षि कहोड़ ने अपने को शिष्यों के सामने इस प्रकार अपमानित होते देखकर गर्भस्थ बालक को शाप दिया कि तुम्हारा शरीर वक्र हो जायगा। यथासमय उत्पन्न होने पर शरीर वक्र होने से उनका नाम अष्टावक्र पड़ा। जनकराज के सब प्रश्नों का उत्तर देकर इन्होंने सभापंडित बंदी से शास्त्रार्थ किया और उसे परास्त करके अपने पिता कहोड़ को छुड़ाया। बहुत धन भी लाए। फिर पिता की आज्ञा से इन्होंने समांगा नदी में स्नान किया और इनका शरीर सुंदर हो गया। जनकराज और अष्टावक्र में जो उत्तर-प्रत्युत्तर हुआ था, वह सब 'अष्टावक्र-संहिता' के नाम से प्रसिद्ध है।

**आनंदगिरि—** विख्यात दार्शनिक पंडित। यह शंकराचार्य के शिष्य थे। इन्होंने अनेक ग्रंथ बनाए हैं, जिनमें शंकराचार्य का द्विग्विजय प्रसिद्ध है। इसमें स्वामी शंकराचार्य का जीवन-चरित्र लिखा गया है। शंकराचार्य के शारीरिक भाष्य की इन्होंने टीका भी लिखी है। इसके अतिरिक्त उपनिषदों का भाष्य और इनकी बनाई श्रीमद्भगवद्गीता की टीका इस समय मिलती है।

**कणाद—**

प्रसिद्ध प्राचीन आर्य ऋषि। इन्होंने एतद्दर्शन के अंतर्गत एक दर्शन बनाया है, जिसका नाम वैशेषिक-दर्शन है। इनका असली नाम उलूक था। इन्होंने तंडुल-कणों का आहार करके देवता की आराधना की थी और उसी आराधना के फल से इन्होंने वैशेषिक-दर्शन बनाया था। तंडुल-कणों का आहार करके इन्होंने आराधना की थी, इस कारण इनका नाम कणाद पड़ा। इनको 'कणभुज', 'कणभक्ष' भी कहते हैं। दर्शन में परमाणुवाद का प्रचार इन्होंने किया है।

**कपिल—**

विख्यात सिद्धर्षि। यह कर्दम प्रजापति के औरस और देवहूति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। यह भगवान् का पाँचवाँ अवतार माने जाते हैं। सांख्य-दर्शन के प्रणेता यही हैं।

**कल्हण—**

यह काश्मीर-निवासी थे और राजा जयसिंह के समय में जीवित थे। इन्होंने काश्मीर का इतिहास संस्कृत में लिखा

## मुख्य मुख्य संस्कृत-ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय

है, जिसका नाम 'राजतरंगिणी' है। बहुत लोग कहते हैं कि भारतवर्ष में भूखलाबद्ध प्राचीन इतिहास यदि कोई विश्वास योग्य है, तो वह कल्हण-रचित 'राजतरंगिणी' ही है।

**कात्यायन**— विख्यात धर्मशास्त्रकार। यह विश्वामित्र के वंश में उत्पन्न हुए थे। इनके बनाए कात्यायन-श्रौतसूत्र और कात्यायन-गृह्यसूत्र का पंडित-समाज में विशेष आदर है।

**कालिदास**— संस्कृत के विख्यात महाकवि। इनके बनाए कई ग्रंथ हैं, पर उनमें अभिज्ञान-शाकुन्तल, रघुवंश, मेघदूत आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। इस नाम के कई कवि हुए हैं। यह कब हुए, इस संबंध में अभी कई मत हैं। यह शकप्रवर्तक राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में थे। इनकी उपमाएँ लोकप्रसिद्ध हैं। कहा भी है—'उपमा कालिदासस्य'।

**कुमारिलभट्ट**—विख्यात दार्शनिक पंडित और वेद के भाष्यकार। यह प्रसिद्ध मीमांसक दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने मीमांसा के कई ग्रंथ बनाए हैं। शंकर स्वामी के भाष्य पर इन्होंने एक टीका लिखी है, जिसका नाम है 'तन्त्रवार्तिक'। इनके बनाए दूसरे ग्रंथ का नाम "मीमांसा-वार्तिक" है। इनके समय में बौद्ध-धर्म का बड़ा प्राबल्य था। बाह्यक कुमारिल ने वैदिक धर्म के उद्धार करने का संकल्प किया और बौद्धों को ही अपना गुरु बनाया। उन्होंने विद्या पढ़कर इन्होंने उन्हीं का खंडन किया। इन्होंने युक्ति और तर्क से बौद्धों के ग्रंथों को मनुष्य-कृत अतएव अप्रामाणिक बताया और वेदों को अपौरुषेय अथवा प्रामाणिक सिद्ध किया। इन्होंने वेदों की पांडित्यपूर्ण व्याख्या

लिखी है। यह कात्तिकेय के अवतार समझे जाते थे।

**कृष्णद्वैपायन ( व्यास )**—सत्यवती के कनीन पुत्र। सत्यवती, दासराज वसुपालित की कन्या थी। यमुना के किसी द्वीप में मल्लाहों ने एक मछली पकड़ी थी, उसी मछली के पेट से सत्यवती का जन्म हुआ। शरीर में मछली की-सी गंध रहने के कारण इसका नाम मत्स्यगंधा पड़ा। एक दिन मल्लाहों ने नाव खेने के लिये मत्स्यगंधा को नियुक्त किया। संयोग-वश उसी द्वीप को जाने के लिये महर्षि पराशर उसी नाव पर सवार हुए। उसके रूप पर मोहित होकर महर्षि ने नदी के बीच ही में मत्स्यगंधा से अपनी इच्छा प्रकट की। पहले तो मत्स्यगंधा ने स्वीकार नहीं किया; परंतु महर्षि ने जब अपनी तपस्या के प्रभाव से चारों ओर अंधकार फैला दिया, तब उसने स्वीकार कर लिया। मत्स्यगंधा गर्भवती हो गई और उसी द्वीप में गर्भ प्रसव कर अपने घर लौट आईं। महर्षि के प्रभाव से उसका कन्यापन भी नष्ट नहीं हुआ। बालक का द्वीप में जन्म हुआ, इस कारण वह द्वैपायन कहे जाते हैं। इनका नाम था कृष्णद्वैपायन। माता की अनुमति से यह शास्त्राध्ययन और तपस्या करने के लिये वन को चले गए। शास्त्राध्ययन करने पर इन्होंने वेदों का विभाग किया, जिससे यह वेदव्यास कहलाए। इन्होंने अष्टादश पुराणों की भी रचना की। इन पुराणों के अतिरिक्त सृष्टि के आदि से लेकर कौरव-पांडव-युद्ध तक का इतिहास भी इन्होंने रचा है, जो महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी रचना इन्होंने तीन वर्ष में की थी। प्रसिद्ध ज्ञानी मुकेश्वर इन्हीं के पुत्र थे। वेदांत-दर्शन के सूत्र भी इन्हीं के रचे हुए हैं, जिनके ऊपर अनेक आचार्यों

ने अनेक प्रकार के भाष्य बनाए हैं।

**कौटिल्य—**

एक इतिहास प्रसिद्ध महापुरुष। इनका दूसरा नाम चाणक्य था। इन्होंने की कूटनीति से नन्दवंश का नाश और चंद्रगुप्त का मगध के राज्यासन पर अभिषेक हुआ था। मेगास्थनीज ने लिखा है— चाणक्य और चंद्रगुप्त के समय में भारत में स्वानों की बहुत अधिकता थी। कौटिल्य ने प्राचीन ग्रंथों का मंथन करके अर्थशास्त्र-नामक एक ग्रंथ लिखा है। इसमें स्वान और खनिज पदार्थों का विशद वर्णन किया है। इस ग्रंथ से प्राचीन राज्य-व्यवस्था-संबंधी बहुत-सी बातें मालूम होती हैं। यह ग्रंथ आर्यों की व्यावहारिक अभिज्ञता का पूर्ण प्रमाण है।

**क्षेमेंद्र—**

काश्मीर-निवासी एक प्रसिद्ध कवि। इनके बनाए अनेक ग्रंथ मिलते हैं, जिनमें औचित्यविचार-चर्चा, कलाविलास, दर्पदलन, कविकंठाभरण, चतुर्वर्गसंग्रह, चारुचर्या, बृहत्कथामंजरी, भारतमंजरी, रामायण-मंजरी, समयमालिका, सुवृत्ततिलक और दशावतार-चरित बहुत प्रसिद्ध एवं आदरणीय हैं। यह विद्वान् कवि और बड़े व्यवहारकुशल थे। 'समयमालिका'-नामक ग्रंथ का विषय दामोदरगुप्त-विरचित 'कूटनीति' के समान है। 'अवदानकल्पलता' में बौद्ध महापुरुषों की जीवनी और उनसे मिलने-वाले उपदेश हैं। यह पहले शैव थे; फिर वैष्णव हो गए और अंत में बौद्ध।

**चरक—**

विशाल वैद्यक ग्रंथ चरकसंहिता के प्रणेता। भगवान् अनंतदेव ने चरक से (गुप्तवंश में) पृथ्वी पर आकर देखा कि मनुष्य अनेक प्रकार की व्याधियों से पीड़ित हैं। मनुष्य की ऐसी दशा देखकर उनके मन में दया

उत्पन्न हुई। अस्तु, पंडित-वेद-वेत्ता ऋषि के रूप में अवतीर्ण हुए और उन्होंने संसार के मनुष्यों के दुःख दूर किए। चरक नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने अग्नि-पुत्र भरद्वाज से आयुर्वेद की शिक्षा पाई थी।

**चार्वक—**

नास्तिक्यमतप्रवर्तकमुनि। देवगुरु बृहस्पति इस दर्शन के प्रवर्तक हैं। इनके शिष्य चार्वक ने इस दर्शन का प्रचार किया। इस कारण यह दर्शन चार्वक-दर्शन के नाम से प्रसिद्ध है।

**जगन्नाथ पंडितराज—** प्रसिद्ध आलंकारिक और कवि।

यह महाशय दिल्ली के बादशाह के दरबार में थे। इनके पिता का नाम पेरू भट्ट, माता का लक्ष्मी और गुरु का ज्ञानेश्वर-भिक्षु था। जयपुर के राजा की आज्ञानुसार जयपुर और काशी में इन्होंने नक्षत्रों की देखने के लिये उपयुक्त कौतुकालय बनवाए थे। इन्होंने रसगंगाधर, मनोरमा, कुचमर्दन, गंगालहरी, करुणालहरी, अरवधारी-काव्य, भामिनीविलास, प्राणामरण आदि की रचना की है। कहते हैं, इन्होंने किसी मुसलमान स्त्री से विवाह कर लिया था, जिस कारण ब्राह्मणों ने इन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया था। अंत में गंगालहरी रचते-रचते काशी में गंगा-तट पर इन्होंने प्राण-त्याग किया।

**जयदेव—**

यह महाशय "गीतगोविंद" के रचयिता अत्यंत मधुर और ललित कविता बनाने के लिये प्रसिद्ध हुए। इनकी माता का नाम वामदेवी और पिता का नाम भोजदेव था। भक्त संस्कृत-ग्रंथ-कारों में जयदेव बहुत प्रसिद्ध हैं। लोग तो कहते हैं कि स्वयं भगवान् श्रीकृष्णजी भी 'गीतगोविंद' के गान से रीक जाते

हैं। संस्कृत जाननेवालों में विरक्षा ही कोई होगा, जिसने 'गीतगोविंद'-काव्य और जयदेव कवि का नाम न सुना हो।

**जैमिनि—** मीमांसा-दर्शन-प्रणेता महर्षि। इनका बनाया मीमांसा-दर्शन पूर्व मीमांसा-दर्शन कहा जाता है। इसको जैमिनि-दर्शन भी कहते हैं। पूर्व मीमांसा-दर्शन आस्तिक पट्ट दर्शनों के अंतर्गत समझा जाता है। इसमें बारह अध्याय हैं, और वैदिक मंत्रों पर विचार किया गया है। इस कारण इसे मीमांसा-दर्शन कहते हैं। जिन-जिन विषयों में वेद और स्मृतियों में विरोध है, उन्हीं का विचार इस दर्शन में किया गया है।

**दंडी —** इनके बनाए जो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं, वे ये हैं—काव्यादर्श, दशकुमारचरित, छंदोविचिती और कलापरिच्छेद। इनके वंश और समय के संबंध में बहुत मत-भेद हैं।

**दामोदर गुप्त—**कारमीर-निवासी थे। संस्कृत में इन्होंने 'कुट्टनीमत'-नामक एक ग्रंथ रचा है, जो अपने ढंग का अनोखा है।

**नागोजी भट्ट—**यह महाराष्ट्र ब्राह्मण, काशी-निवासी और प्रसिद्ध वैयाकरण थे। इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सतीदेवी था। यह श्रृंगवेरपुर (सिंगरौर) के राजा रामसिंह के आश्रित थे और भट्टोजी के पौत्र हरिदीक्षित के शिष्य थे। इन्होंने संस्कृत में अनेक ग्रंथ बनाए हैं। बृहत्समुज्जया, लघुसमुज्जया, लघुशब्दद्वयोत्तर, परिभाषेद्वयोत्तर, लघुशब्दरत्न आदि व्याकरण-ग्रंथ प्रायश्चित्तद्वयोत्तर, आचार्यद्वयोत्तर, तीर्थद्वयोत्तर, आर्द्धद्वयोत्तर आदि

बारह धर्मशास्त्र-विषयक शेखरग्रंथों के प्रतिरिक्त कई ग्रंथों की इन्होंने टीका भी की है। इनमें से वात्सीकीय रामायण पर 'रामाभिरामी' और काव्यप्रदीप पर 'उद्योत'-नामक टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। दुर्गा सप्तशती की भी इनकी बनाई एक उत्तम टीका है। कहते हैं, सोलह वर्ष की अवस्था तक इन्होंने कुछ भी विद्याभ्यास नहीं किया था। परंतु पीछे किसी के उपदेश से वागीश्वरी देवी की आराधना कर इन्होंने विद्या पाई।

**नीलकण्ठ—** यह एक प्रसिद्ध उद्योतिषी थे। इनकी बनाई "ताजिक नीलकण्ठ"-नामक पुस्तक का बड़ा आदर है। इनके पिता का नाम अनंत और पितामह का नाम चिंतामणि था। 'मुहूर्तचिंतामणि' के रचयिता प्रसिद्ध रामदैवज्ञ इनके कनिष्ठ भाई थे। यह मीमांसक, नैयायिक, उद्योतिषी और वैयाकरण थे, और अकबर शाह के सभासद भी थे। इनका निवास-स्थान विदर्भ-देश में था। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था।

**पतंजलि—** यह प्राचीन वैयाकरण महाभाष्य के रचयिता हैं। इनका निवास गोनर्द-देश में था। इनकी माता का नाम गोणिका था।

**पाणिनि—** प्रसिद्ध संस्कृत-व्याकरण के कर्ता अपि। इनकी माता का नाम दाक्षी था और निवास-स्थान गांधार-देश में शालातुर-नामक स्थान था।

**भट्टोजी दीक्षित—**संस्कृत-व्याकरण के ग्रंथ "सिद्धांत-कौमुदी" के रचयिता। सिद्धांतकौमुदी बनाकर इन्होंने पाणिनि व्याकरण को प्रांजल और सुपाठ्य बना दिया है। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधर सूरि

और पुत्र का नाम भानुजी दीक्षित था। इन्होंने सिद्धांतकौमुदी के अतिरिक्त और भी ३३ ग्रंथ बनाए हैं, जिनमें अधिक प्रचलित ये हैं—अद्वैतकौस्तुभ, धातुपाठ, आचारप्रदीप, लिंगानुशानसूत्रवृत्ति, अशौच-निर्णय, आह्निककारिका, तिथि-निर्णय, प्रादुमनोरमा, मासनिर्णय, तीर्थयात्राविधि, शतद्रुकौस्तुभ और उणादिसूत्रवृत्ति।

भरत —

नाट्यशास्त्र-प्रवर्तक आचार्य। महर्षि वाल्मीकि के समय में महर्षि भरत नाट्य-शास्त्र के प्रधान अध्यापक थे, इसके प्रमाण मिलते हैं। इनके समय में नाट्य-शास्त्र की विशेष उन्नति हुई थी।

भर्तृहरि —

यह उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के ज्येष्ठ भ्राता थे। विक्रमादित्य के पिता शंभरसेन के औरस पुत्र थे; पर दासी के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी। कुछ दिनों तक इन्होंने उज्जयिनी का राज्य भी किया था। तदनंतर अपनी स्त्री की दुरचरित्रता से खिन्न होकर, इन्होंने राज्य छोड़ कर संन्यास ग्रहण किया। इनका नाम 'हरि' था। इनके नाम के साथ जो 'भर्तृ' पद का प्रयोग किया गया है, वह प्रजा-पालन के कारण है। व्याकरण महा-भाष्य की 'सार'-नामक एक व्याख्या इन्होंने बनाई थी। वाक्यप्रदीप और शतकप्रय भी इन्हीं की रचनाएँ हैं। 'सार' ग्रंथ को सारवत्ता संसार-प्रसिद्ध है। उसी के आधार पर काश्मिरी पंडित कैटपट ने महाभाष्य पर 'प्रदीप' नामक व्याख्या की है। वाक्यप्रदीप में वाक्य और पद का विचार किया गया है। यह व्याकरण-विज्ञान का बेजोड़ ग्रंथ है।

भवभूति —

संस्कृत के एक प्रधान नाट्यकार। इनके बनाए तीन प्रसिद्ध ग्रंथ हैं—वीरचरित, उत्तररामचरित और मालतीमाधव। यद्यपि इन नाटकों में क्रमशः वीर, करुण और शृंगार-रस निबद्ध किए गए हैं, तथापि भवभूति करुण-रस के प्रधान लेखक हैं। जिस प्रकार अन्य कवियों ने शृंगार-रस को आदि रस माना है, उसी प्रकार भवभूति करुण-रस को आदि रस मानते हैं।

भारवि —

यह संस्कृत के महाकवि थे। इनके बनाए 'किरातार्जुनीय'-नामक महा-काव्य का संस्कृतजलमाज में बहुत आदर है। इनकी प्रशंसा में यह श्लोक प्रचलित है—

“भाधेन विभितोऽसाह न तमंते पदकमे।  
स्मरंते भार्वरेव कवयः कपयो यथा॥”  
अर्थात् माघ की रचना-शैली को देखकर कवियों का पद-विन्यास करने का उरसाह जाता रहा और भारवि का स्मरण करके तो वे कवि कवि हो जाते हैं। अर्थ-गौरव के लिये 'किरातार्जुनीय' बे-जोड़ है। किसी ने कहा है—

“उपमा कालिदासस्य भार्वरेरर्थगौरवम्।  
दंठिनः पदनालित्यं माधे संति त्रयो गुणाः॥”  
प्राचीन कवियों की रुचि शृंगार की ओर विशेषतः पाई जाती है, पर किरातार्जुनीय इस दोष से मुक्त है। इसमें नीति के उत्तम उपदेश हैं।

भास्कराचार्य —

भारत के विख्यात ज्योतिर्विज्ञा, पंडित और गणितज्ञ। इनके पिता का नाम महेश आचार्य था। इनका वासस्थान सख-पर्वत के समीप विजयविह-नामक गाँव में था। १११४ ई० में यह उत्पन्न हुए थे; ११२० ई० में ६६ वर्ष की अवस्था में अपने 'सिद्धांत-शिरोमणि'-



## मुख्य-मुख्य संस्कृत-ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय

नामक ग्रंथ की रचना की थी। यह ग्रंथ चार खंडों में विभक्त है—१. लीलावती या पाटीगणित, २. बीजगणित, ३. ग्रहगणित, ४. गोलार्धयाय। इनके लक्ष्मीधर-नामक पुत्र और 'लीलावती' नाम की कन्या थी।

**भोजराज—** इतिहास-प्रसिद्ध विद्वान् और वीर राजा। इनके पिता का नाम सिंधुराज था। भोजराज कवि और ग्रंथकार थे। इनके ग्रंथों में पांनजल दर्शन की वृत्ति विशेष प्रसिद्ध है। यह वृत्ति भोजवृत्ति के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अमरटीका, चंपूराभाषण, चारुचर्या, सरस्वतीकंठाभरण और राजवार्त्तिक भी इन्हीं की कृतियाँ हैं। इनके शासन-समय में अलंकार, ज्योतिष और व्यवहार-विधि के अनेक ग्रंथ बने थे। भोजराज जिस प्रकार विद्वान् थे, उसी प्रकार वीर भी थे। महमूद गजनवी ने जब कालिंजर-दुर्ग पर आक्रमण किया था तब उससे युद्ध करके इन्होंने अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। इन्होंने चेदि और चालुक्य-राज्यों को भी अपने अधिकार में कर लिया था। इसी कारण चेदि और चालुक्य के राजा गुजरात के राजा के साथ मिलकर इन पर चढ़ आए थे। इसी युद्ध में भोजराज, १०६२ ई० में, मारे गए।

**मंडनमिश्र—** भारत के एक प्राचीन रत्न। इनके वंश का कुछ विशेष पता नहीं है। माहिष्मती-पुरी में यह रहते थे। यह नगरी जबलपुर के पास नर्मदा के किनारे पर थी। यह सुप्रसिद्ध भट्ट कुमारिल के प्रिय शिष्यों में थे। इनका नाम तो विश्वरूप था, पर शास्त्रार्थ में अजेय होने के कारण लोग इन्हें मंडनमिश्र कहने लगे थे। शंकराचार्य से इनका

शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमें इनकी सह-धर्मिणी शारदा मध्यस्थ बनी थीं। शंकराचार्य ने कौशल से इन पर विजय प्राप्त की और इन्होंने अपनी पूर्व-प्रतिज्ञा के अनुसार शंकराचार्य से संन्यास की दीक्षा ली। संन्यासी होने पर इनका नाम सुरेश्वराचार्य हुआ। अब यह शंकराचार्य की शिक्षा का प्रचार करने लगे। इन्होंने ध्याससूत्र पर भाष्य बनाया था, परंतु इन्हीं के समय में दुष्टों ने उस ग्रंथरत्न को नष्ट कर डाला। बृहदारण्यकोपनिषद् पर इन्होंने वार्त्तिक लिखा है, जो तात्पर्य वार्त्तिक टीका के नाम से प्रसिद्ध है। यह श्रंगेरी-मठ के अधिपति बनाए गए थे।

**मम्मट—**

संस्कृत में अलंकार-शास्त्र के प्रधान ग्रंथ 'काव्य-प्रकाश' के रचयिता। इनके संबंध में अधिक बातें नहीं मालूम। 'शतद्वय-विचार'-नामक ग्रंथ भी इन्हीं का बनाया है। काव्य-प्रकाश में परिकरालंकार-पर्यंत की रचना मम्मट ने की थी। शेषांश अज्ज्ञतसूरि ने पूरा किया।

**माघ—**

यह महाकवि संस्कृत-साहित्य में बड़े प्रसिद्ध और आदरणीय हैं। इनके बनाए हुए 'शिशुपाल-वध'-नामक महाकाव्य का संस्कृत-साहित्य-वाटिका में बहुत ऊँचा स्थान है। इस महाकाव्य की सुमधुर तथा मनोमुग्धकारी कविता की छटा पर संस्कृत-साहित्य-निकुंजवासी अनेक पिक लुब्ध हैं और उन्होंने इनका गुण-गान भी किया है। किसी ने कहा है—

“उपमा कालिदासस्य भारवैरथगौरवम् ।  
दंडिनः पदलालित्यं माघे मति त्रयो गुणाः ॥”  
अन्यान्य संस्कृत-कवियों के समान माघ के विषय में भी लोगों को कम ज्ञान है।

**माधवाचार्य**—वेदों के भाष्यकर्ता सायणाचार्य के बड़े भाई थे। ईस्वी १४ वीं सदी में, दक्षिण की तुंगभद्रा नदी के किनारे पंजा-नगरी में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती था। यह विजयनगर के राजा युक्तराय के कुलगुरु और प्रधान मंत्री थे। इन्होंने भारती तीर्थ के पास संन्यास ग्रहण किया था। १३३३ ई० में यह शृंगरी-मठके अध्यक्ष बनाए गए। १० वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई। इन्होंने पराशर-संहिता पर भाष्य लिखा है; उसी में अपना परिचय भी दिया है।

**याज्ञवल्क्य**—प्रसन्न और धर्मशास्त्रकार एक ऋषि तथा याज्ञवल्क्य-संहिता के प्रवर्तक। इस संहिता में राजधर्म, व्यवहारविधि, दाय-भाग आदि विषयों का वर्णन है।

**यास्काचार्य**—महामुनि यास्क निरुक्त के कर्ता हैं। इनका बनाया हुआ निरुक्त बहुत प्रचलित है और वेदों का अर्थ करने में विद्वानों के लिये प्रधान साधन है।

**राजशेखर**—यह संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार थे। इनके बनाए विदुशालासंजिका, बाल-भारत अथवा प्रचंड पांडव और बाह्य रामायण नाटकों का संस्कृत-साहित्यज्ञों में बड़ा आदर है। प्राकृत में भी कर्पूर-संजरी-नामक एक नाटक इन्होंने लिखा है।

**रामानुजाचार्य**—विशिष्टद्वैतसिद्धांत के प्रचारकों में यह सर्वप्रगण्य थे। इन्होंने भारतवर्ष से जैनियों और सायावादियों का प्रभाव हटाने के लिये प्राश्रयण से प्रयत्न किया था। अपने प्रयत्न में यह सफल भी हुए थे। स्मृति-काल-तरंग में इनके प्रकट होने का समय ११२७ ई० बतलाया गया है। परंतु कोई-कोई इनका जन्म १००२ ई० मानते हैं। इन्होंने विशिष्टा-द्वैतसिद्धांत के अनेक ग्रंथ बनाए हैं। वेदांत-सूत्र पर श्रीभाष्य, वेदांतप्रदीप, वेदांतसार, वेदांतसंग्रह, गीताभाष्य, गद्यत्रय आदि बहुत-से ग्रंथ बनाए हैं।

**नाल्मीकि**—भारत के आदिकवि और आदिकाव्य रामायण के रचयिता महामुनि।

**विद्यापति**—विख्यात मैथिल कवि। इन्होंने 'पुरुष-परीक्षा'-नामक संस्कृत-ग्रंथ बनाया है। इनकी बनाई हुई पदावली का समाज में बहुत आदर है। इनके अतिरिक्त इन्होंने दुर्गाभक्तिरंगिणी, दानवाक्यावली, विवादसार, गयापतन आदि संस्कृत के ग्रंथ बनाए हैं, जो मिथिला में आज भी प्रचलित हैं।

**श्रीहर्ष**—यह संस्कृत के प्रकांड पंडित और कवि थे। इन्होंने नागानंद, प्रियदर्शिका और रत्नावली-नाम की तीन नाटिकाएँ लिखी हैं। इनका बनाया हुआ 'नैषध' काव्यग्रंथ लोक प्रसिद्ध है।

**शाङ्गधर**—यह वैद्य थे। इन्होंने वैद्यविद्या की एक पुस्तक अपने नाम से बनाई है।

## परिशिष्ट ३

### हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

**अंबिकादत्त व्यास**—यह काशी-निवासी गौड़ ब्राह्मण थे। संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। साहित्याचार्य थे। गद्य और पद्य के अच्छे लेखक थे। यावज्जीवन यह कालेजों और स्कूलों में संस्कृत पढ़ाते रहे। नौकरी के सिलसिले में यह अधिकतर बिहार में रहे। इनका जन्म संवत् १६१२ चैत्रसुदी ८ को जयपुर में हुआ था और स्वर्गवास सं० १६२७ में। यत्र-तत्र इन्हें बहुत से प्रशंसा-पत्र और उपाधियाँ मिलीं और इनकी आशुकविता की भी सराहना हुई। इन्होंने संस्कृत और हिंदी के सब मिलाकर ७८ ग्रंथों का निमोण किया है, जिनमें ललिता-नाटिका, गोसंकट-नाटक, मरहटा-नाटक, भारतसौभाग्य-नाटक, भाषाभाष्य, गद्यकाव्यमीमांसा, बिहारी-विहार, विहारी-चरित्र, शंघलेखप्रणाली और निम्न वृत्तांत प्रधान हैं। विहारी-विहार में बिहारी की सतसई के दोहों पर कुंडलियाँ रची गई हैं। गद्यकाव्यमीमांसा बहुत ही विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है।

**आनंदघन**—यह दिल्ली के निवासी थे और १७३६ ई० में जीवित थे। “साहित्यभूषण” के मतानुसार यह जानिके कायस्थ थे और मुहम्मदशाह के मुंशी थे। मरने के पूर्व यह वृंदावन चले गये थे। नादिरशाह की मथुरा की चढ़ाई में यह मारे गये। इनका बनाया ‘सुज्ञानसागर’-ग्रंथ प्रसिद्ध है। इनकी छाप “घनघानैद” है।

**अयोध्यासिंह उपाध्याय**—यह सनाढ्य ब्राह्मण हैं। इनके पिता का नाम रं० भोज्यासिंह है।

इनका जन्म संवत् १६२२ में हुआ था। यह कलसवा निज़ामाबाद, जिला आजमगढ़ के रहनेवाले हैं। इनकी पद्य-रचनाएँ उर्दू के ढंग पर होनी हैं, पर होती बहुत अच्छी हैं। इनके बनाए ग्रंथों की संख्या दो दर्जन से अधिक है। जिनमें ‘प्रियप्रवास’, ‘चोखे चौपदे’, ‘सुभते चौपदे’, ‘ठेठ हिंदी का ठाठ’, ‘अधखिला फूल’ बहुत प्रचलित हैं। इनकी कविताएँ हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में प्रायः निकला करती हैं। आजकल आप काशी के हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं।

**आलम**—

इनका जन्म १७०० ई० में हुआ था। यह सनाढ्य ब्राह्मण थे, परंतु प्रसिद्ध यह है कि शेर नाम की रँगरेजिन के प्रेम में फँसकर मुसलमान हो गए थे। इनकी स्फुट कविताओं का संग्रह ‘आलम-केलि’ के नाम से प्रकाशित हुआ है। कहते हैं, एक बार इन्होंने एक दोहे का पूर्वाह्न ही लिखकर उसको अपनी पगड़ी के बाने में बाँध दिया। पूर्वाह्न यह था—“कनक छरी सी कामिनी, काहे को कटि छीन।” संयोग से वह पगड़ी ‘शेर’ नाम की एक रँगरेजिन को रँगने को दे दी और काराज का टुकड़ा उसमें बाँधा ही रह गया। जब उसने काराज के टुकड़े को खोलकर देखा और दोहे का पूर्वाह्न पढ़ा, तो उसकी उसने इस प्रकार पूर्ण करके—“कटि को कंचन काटि बिधि, कुचन मध्य धरि दीन”—उसी पगड़ी में बाँध दिया। अस्तु, पगड़ी रँगकर आने पर जब आलम ने उसे पढ़ा,

तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसके प्रेम में फँस गया। यह मुअज़्ज़मशाह के यहाँ रहते थे। इनकी कविताएँ बड़ी सुंदर हुआ करती थीं। “माधवानन्दकाम-कंदला” और “श्यामसनेही”-नामक इनके दो और ग्रंथ हैं; पर अभी वे प्रकाशित नहीं हुए हैं।

कबीर —

यह कबीरपंथी संप्रदाय के प्रवर्तक थे। काशी के समीप किसी छोटे-से गाँव में इनका जन्म, पंद्रहवीं शताब्दी में, हुआ था। कहते हैं, यह किसी साधु के आशीर्वाद से एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे। इनका लालन-पालन ईश्वर-नामक एक मुसलमान जुलाहे ने किया था। उसके कोई संतान नहीं। कबीर ने अपने संरक्षक के साथ स्वजातीय व्यवसाय की बड़ी उन्नति की। बहुत थोड़ी अवस्था में ही इनके मन में धर्म और भक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था। व्यवसाय द्वारा जो कुछ यह कमाते, उसमें से घर का खर्च भर बचाकर, शेष दीन-दुखियों को बाँट देते। इन्होंने रामानंद स्वामी से दीक्षा पाई थी। इनका लौकिक ज्ञान बड़ा गंभीर था, जिसे इन्होंने देश-देश घूमकर उपाजित किया था। यह सूफी-मत के पूर्ण ज्ञाता थे। इनके धार्मिक सिद्धांतों में अनेक ऐसी बातें मिलती हैं, जिनसे प्रकट होता है कि आपको सूफी-मत का अच्छा ज्ञान था। हिंदू इन्हें ‘भगत कबीर’ और मुसलमान इन्हें ‘पीर कबीर’ कहते थे। यह हिंदुओं के वर्णाश्रमधर्म और जाति-भेद के कट्टर विरोधी थे। सूफियों के समान प्रेम, इश्क अथवा भक्ति इनका मुख्य धर्म था। अपनी रमैनी, शब्दों और साखियों के द्वारा इन्होंने हिंदू और मुसलमान, दोनों को एक समान धर्म का

उपदेश दिया। यह राम-नाम की महिमा गाते थे, एक ही ईश्वर को मानते थे। यही पहले भारतवासी थे, जिन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों के लिये, बलिष्ठ समस्त मानव-जाति के लिये एक सामान्य धर्म का निर्भीकता के साथ प्रतिपादन किया। जैसे कबीर के धार्मिक भावों ने क्रांति पैदा की थी, वैसे ही इनकी साहित्य-सेवा ने भी।

कबीर अशिक्षित थे। इन्होंने जितनी कविताएँ रची, सब मौखिक। बीजक में लिखा है—

“मसि कागज छूवो नहीं, कलम गहो नहि हाथ।

चारिउ जग का महातम, कविरा मुखहि जनाई बात॥”

यह जो कुछ बनाकर गाते, इनके शिष्य उन्हें लिख लिया करते थे। कबीर ने संस्कृत की अपेक्षा भाषा में पद्यों की रचना की है। उनका उद्देश्य सर्वसाधारण तक अपने विचारों को फैलाना था। संस्कृत के संबंध में उन्होंने एक स्थान पर कहा है—

“मंसि ररति है कपजल, भाषा बहना नीर॥”

इनके पद्यों में कहीं तो संस्कृत युक्त हिंदी और कहीं फ़ारसी मिली हुई मिलती है। अभी तक खोज से इनके ७५ ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। उनके नाम ये हैं—

१ अमरमूल, २ अनुरागसागर, ३ उग्रजानमूलसिद्धांत, ४ ब्रह्मनिरूपण, ५ हंसमुक्तावली, ६ कबीर-परिचय की साखी, ७ शब्दावली, ८ पद, ९ साखियाँ, १० दोहे, ११ सुखनिधान, १२ गोरखनाथ की गोष्ठी, १३ कबीर-पंजी, १४ बलक की रमैनी, १५ विवेक-सागर, १६ विचार-माळा, १७ काया-पंजी, १८ रामरक्षा, १९ अठपहरा, २० निर्भयज्ञान, २१ कबीर और धर्म-दास की गोष्ठी, २२ रामानंद की गोष्ठी, २३ आनंदराम, २४ सागरमंगल,

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

२१ अनाथसंगल, २६ अक्षर-भेद की रमैनी, २७ अक्षर-खंड की रमैनी, २८ अलिङ्गनामा, २९ अर्जुनामा, ३० आरती, ३१ भक्ति का अंग, ३२ छप्पय, ३३ चौका घर की रमैनी, ३४ ज्ञान-गूढ़ी, ३५ ज्ञान-सागर, ३६ ज्ञान-स्वरोदय, ३७ कबी-राष्टक, ३८ करमखंड की रमैनी, ३९ मुह-भमद बोध नाम-माहात्म्य, ४० पिया पहिचानवे को अंग, ४१ पुकार कबीर-कृत, ४२ शब्द-अलहदक, ४३ साधु को अंग, ४४ सतसंग को अंग, ४५ स्वॉस-गुंजार, ४६ तीसा-अंत्र, ४७ जन्म-बोध, ४८ ज्ञान-संबोध, ४९ मख-होम, ५० निर्भयज्ञान, ५१ सतनाम या सतकबीर, ५२ बानी, ५३ ज्ञान-रतोत्र, ५४ सतकबीर-बंदीछोरो, ५५ शब्द-वंशावली, ५६ उग्र-गीता, ५७ बसंत, ५८ होली, ५९ रेखता, ६० भूखना, ६१ खसरा, ६२ हिंडोळा, ६३ बारहमासा, ६४ चौचरा, ६५ चौलीसा, ६६ रमैनी, ६७ बीजक, ६८ आगम, ६९ रामसार, ७० सोरठा, ७१ कबीरजी को कृत, ७२ शब्द-पारखा, ७३ आदि ग्रंथ, ७४ ज्ञान-बत्तीसी और ७५ ज्ञान-तिलक। इनमें मुख्य ग्रंथ बीजक और आदि-ग्रंथ हैं। सभी धार्मिक-विचार-प्रधान हैं। किसी में कोई कथा प्रसंग नहीं है। सबमें मुक्तकों द्वारा कबीर के सिद्धांतों का कथन है। इनमें उपदेश और चेता-वनियाँ भी बहुत हैं। इनके नोति के दोहे अनमोल हैं।

कबीरदास की रचनाएँ इतनी लोकप्रिय हैं कि महात्मा तुलसीदास के बाद लोक-प्रियता में इन्हीं का नंबर आता है। हिंदी-साहित्यकारों में आपका स्थान कहाँ है, इस संबंध में साहित्य-समालोचकों ने निम्न-लिखित पदों में अपना निर्णय दिया है—

तत्त्व-तत्त्व सूर कही, तुलसी कही अनूठी;  
बची-सुची कबिरा कही, और कही सब भूठी।

और भी—

जो कह रहा सो अधरा भाखा, कठवी कहसे अनूठी।  
बानी रहा सो जलहा कहिगा, और कहने सब भूठी।

किशोरीलाल गोस्वामी— यह गोस्वामी बासुदेवलालजी के पुत्र हैं। इनका जन्म सं० १९२२ में हुआ है और यह प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक हैं। इन्होंने कविता, संगीत, जीवन-चरित्र, नाटक, रूपक, योग आदि भिन्न-भिन्न विषयों पर लगभग एक सौ पुस्तकें लिखी हैं। इनके लिखे उपन्यासों की संख्या ६२ है। संस्कृत में भी इन्होंने एक उपन्यास, एक चंपू और तीन काव्य-ग्रंथ रचे हैं। इनकी कुटुंब कविताएँ हिंदी के मासिक पत्रों में प्रकाशित हुआ करती हैं। पहले आप काशी में रहते थे, पर अब वृंदावन में रहा करते हैं।

केशवदास— यह हिंदी के महाकवि थे और संस्कृत के पूर्ण पंडित। संस्कृत के दर्शनशास्त्र पर भी इनका पूर्ण अधिकार था। इन्होंने हिंदी में काव्य-रचना करने के पूर्व पूरा परिश्रम करके विद्या प्राप्त कर ली थी। अनुमान से जान पड़ता है कि इनका जन्म, संवत् १६०८ वि० के लगभग हुआ होगा। भूषण के सिवा किसी भी भाषा-कवि का, केवल कविता से, केशव-दास के समान सम्मान-सकार नहीं हुआ। इंद्रजीत के यहाँ रहकर इन्होंने 'रसिकप्रिया' की रचना की। अकबर ने इंद्रजीत पर एक करोड़ रुपए का जुर-माना कर दिया था। कारण, इंद्रजीत ने अकबर के बुलाने पर अपनी बेरया रायप्रवीन को उसके पास नहीं भेजा था। रायप्रवीन जाना ही नहीं चाहती थी।

केशवदाम ने अपनी कविता सुनाकर वीरबल को प्रसन्न किया और यह जुरमाना माफ़ कराया। इनका छंद सुनकर वीरबल इतने प्रसन्न हुए कि जुरमाना माफ़ कराने के अतिरिक्त ६ लाख रुपए की इंडिया भी निकालकर केशवदाम को तुरंत दे दी। जुरमाना माफ़ कराकर ओढ़ड़े लीटने पर इंदुजीत ने इन्हें २१ गांव दिये।

केशवदाम पंडित होने पर भी पंडितों की भांति रूखे न थे। इनके निम्न-लिखित ग्रंथ मिलते हैं—१ रमिकप्रिया, २ विज्ञानगीता, ३ कविप्रिया, ४ राम-चंद्रिका, ५ वीरसिंह देवचरित्र, ६ जहाँ-गीरचंद्रिका और ७ नखसिख।

इनकी भाषा व्रजभाषा है। इनकी कविता में माधुर्य और प्रसाद गुणों की प्रधानता है। इन्होंने तुकांत की बहुत पावंदी नहीं की है। अनुप्रास का भी इन्हें हट्ट न था। यह सर्वव्यापिनो दृष्टि के कवि थे (Poet of general vision)।

गिरिधर कविराय—यह तुआब के रहनेवाले थे। इनका जन्म १७१३ ई० में हुआ था। इनकी नीति की कुंडलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

गौरीशंकर-हीरानंद ओझा—आप सहस्र औदीच्य ब्रह्मण हैं। आपका जन्म, संवत् १६२० में, सिरौही-राज्यांतर्गत रोहड़ा ग्राम में, हुआ था। आपने संस्कृत तथा भाषा की अच्छी योग्यता प्राप्त की है, और अंग्रेजी भी जानते हैं। पुरातत्व-अनुसंधान में आपकी बड़ी रुचि है। इस विषय में आप परम प्रवीण हैं। आप अजमेर-अजायबघर के अध्यक्ष हैं। आपने प्राचीन लिपिमाला, कर्नल

टाड का जीवन-चरित, सिरौही का इतिहास, टाड राजस्थान के अनुवाद पर टिप्पणियाँ और सोलंकियों का इतिहास-नामक राजपूताने का इतिहास आदि ग्रंथ रचे हैं। पंडितजी ऐतिहासिक ग्रंथ-माला-नामक एक पुस्तकावली प्रकाशित कर रहे हैं, जिसमें इतिहास ग्रंथ छपते हैं। नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका का आप संपादन कर रहे हैं। सरकार से आपको महामहोपाध्याय और रायबहादुर की उपाधियाँ भी मिली हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से भी आपको (१२००) का मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है।

गवाल—

यह कवि मथुरा के रहनेवाले थे और सन् १८१५ में विद्यमान थे। इनमें साहित्य-संबंधी योग्यता उच्चश्रेणी की थी। इनके बनाए ग्रंथ ये हैं—१ साहित्य-भूषण, २ साहित्यदर्पण, ३ भक्तिभाव, ४ शृंगारदोहा, ५ शृंगारकवित्त, ६ नखसिख, ७ गोपीपक्षीसी, ८ जमुना-लहरी।

ग्राम—

यह कर्जौज के रहनेवाले थे और सन् १६६६ ई० में उत्पन्न हुए थे। देहातियों की नीति आपने बड़ी जोरदार ग्रामीण भाषा में कही है। इनकी कहावतें उत्तर-भारत में किसानों को प्रायः कंठाग्र हैं। हिंदी के सुप्रसिद्ध अंगरेज़ विद्वान् ग्रियर्सन साहब ने “विहार पीजेंट लाइफ़”—नामक पुस्तक में इनकी कहावतें संगृहीत भी की हैं। इन्होंने के उंग के भट्टर और धाक भी थे; पर वे इनके समान प्रसिद्ध नहीं हुए।

चतुर्भुजदास—यह ब्रजवासी थे और सन् १५५०

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

ई० में वर्तमान थे। इनकी गणना अष्ट-छाप के कवियों में है और यह गोकुल के श्रीबिट्टलनाथजी के शिष्य थे।

**चंदबरदाई—** यह हिंदी के प्रथम कवि हैं। इन्होंने 'पृथ्वीराज रासो' लिखा है। उसकी रचना बड़ी प्रौढ़ है। छंद आदि की रीतियों पर उसमें ऐसा गमन हुआ है कि जान पड़ता है कि यह महाकवि छंद रीतियों पर चलते थे। 'रसो' समाप्त करने के पहले ही यह मर गए। तब इनके पुत्र जल्ल ने उसका अंतिम भाग लिखकर ग्रंथ समाप्त किया। हिंदी के प्रथम उत्कृष्ट कवि यही हैं। आप जगत-गोत्र के भाट थे और आपका जन्म जाहौर में हुआ था। जब शहाबुद्दीन शरीफ पृथ्वीराज को पकड़ ले गया, तब चंद राजा को छुड़ाने के लिये गोर-देश को गए और वहाँ मारे गये। चंद के पिता राव बेनु थे। चंद का पालन-पोषण अजमेर में हुआ, जो पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर की राजधानी थी। यहीं चंद पृथ्वीराज के साथ रहने लगे और यहीं आप पृथ्वीराज के तीन प्रधान मंत्रियों में से एक हो गए। चंद अजमेर से लेकर मृत्यु-पर्यंत सदैव पृथ्वीराज के साथ रहे और युद्धों में भी लड़ते रहे। चंद की स्त्री बड़ी गुणवती थी, और 'रासो' उसी से कहा गया है। बीच-बीच में उसने बहुत से प्रश्न भी किये हैं। चंद कोरे कवि ही नहीं थे, प्रचंड योद्धा भी थे। समय-समय पर इन्होंने युद्ध-कौशल और वीरता का भी काफ़ी परिचय दिया है। पृथ्वीराज के यहाँ चंद की ऐसी प्रतिष्ठा थी, जैसी खास राजा के भाई की हो।

चंदबरदाई ने एक ही ग्रंथ रचा, पर वही २४०० पृष्ठों के ऊपर का है। यह ग्रंथ उस

काल का इतिहास है। 'रासो' की रचना घटनाओं के साथ ही साथ होती रही।

चंदबरदाई की भाषा में ओज की मात्रा विशेष है। इनकी भाषा से इनका अगाध पांडित्य प्रकट होता है। इन्होंने संस्कृत के अच्छे-अच्छे शब्दों का प्रयोग किया है तथा पुराणों की कथाओं का अच्छा ज्ञान दिखाया है। इनकी भाषा में कई भाषाओं का मिश्रण है एवं प्राकृत प्रधान होने के कारण वह वर्तमान हिंदी से बहुत भिन्न है। जन्म-ग्रहण करते ही हिंदी ने जो रूप पाया, उसका प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण चंद की हिंदी है। आपकी भाषा में डिगल की प्रधानता है। चंद ने शौरसेनी एवं गुजराती ढरों को लेकर रचना की है। 'रासो' में युद्ध और शृंगार-रस का उत्कृष्ट वर्णन तो है ही, पर अन्य प्रकार के भी अनेकानेक बढ़िया वर्णन उसमें मिलते हैं।

**चिंतामणि त्रिपाठी—** यह हिंदी के एक कवि थे। टिकमापुर जिला कानपुर के यह रहने-वाले थे। सन् १६२० ई० में यह विद्या-मान थे। यह भाषा-नियंत्र-रचना के प्रौढ़ विद्वान् थे। इनके विषय में यह एक आख्यायिका प्रचलित है कि इनके पिता देवी के परम भक्त थे। एक दिन प्रसन्न होकर देवी ने इन्हें दर्शन दिये और चार खोपड़ियाँ दिखाकर कहा कि ये चारों तुम्हारे पुत्र होंगे। तदनुसार उनके चार पुत्र हुए, जिनके नाम थे—चिंतामणि, भूषण, मनिराम और जटाशंकर। जटाशंकर का दूसरा नाम नीलकंठ था। यह एक महारत्ना के आशीर्वाद से बड़े प्रसिद्ध कवि हुए। इनके और तीनों भाई संस्कृत पढ़ने लगे और प्रसिद्ध विद्वान् हुए। चिंतामणि बहुत दिनों तक नागपुर के भोंसला मकर-दशाह के दरबार में

रहे। इन्हीं के नाम पर चिंतामणि ने 'छंदविचार'-नामक एक ग्रंथ बनाया है। इन्होंने और भी कई ग्रंथ रचे हैं, जिनके नाम ये हैं - १ काव्य-विवेक, २ कविकुल-कलानुस, ३ काव्यप्रकाश और ४ रामायण।

**जगन्नाथदास 'रत्नाकर'** - यह काशी के अग्रवाल वैश्य हैं। अँगरेज़ी में इन्होंने बी० ए० पास किया है। संस्कृत और फ़ारसी के अच्छे विद्वान् हैं। महाराज अयोध्या के (तदुष्मा साहय के) यहाँ कई वर्षों तक प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। महाराज के मरने के बाद उनकी महारानी श्रीमती जगद्विकादेवी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। बीसवीं शताब्दी में तो वज्रभाषा-साहित्य और कविता के यह आचार्य माने जाते हैं। महाकवि विहारी के यह बड़े भक्त हैं। विहारी के साहित्य का जितना इन्होंने अध्ययन और मनन किया है, उतना कदाचित् और किसी ने नहीं किया। बड़ी खोज, अध्ययन और परिश्रम के बाद इन्होंने विहारी-सप्तसहस्री टीका की है, जो 'विहारी-रत्नाकर' के नाम से प्रसिद्ध है। विहारी की भाषा, व्याकरण और साहित्य पर भी इन्होंने खूब लिखा है। वज्रभाषा में इनके और भी ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। जिनके नाम ये हैं - गंगावतरण, हरिश्चंद्र, समाजोचना, हिंडोला। इनके अतिरिक्त इन्होंने उलूख-शनक, सौदह अष्टक, अभिमन्यु-वध आदि भी ग्रंथ रचे हैं, जो अभी प्रकाशित नहीं हुए हैं। गंगावतरण पर आपको प्रयाग की हिन्दुस्थानी एकेडेमी ने ५००) पुरस्कार देकर अपनी गुण-प्राहकता का परिचय दिया है। आज कल आप सूरसागर का संपादन कर रहे हैं।

**जगन्नाथप्रसाद 'भानु'** - आपका जन्म श्रावण शुक्ल १०, संवत् १९१६ को नागपुर में हुआ था। आप विलासपुर मध्य-प्रदेश में असिस्टेंट सेटलमेंट अफ़सर रहे हैं, जहाँ आपको ७००) मासिक मिलता था। अब आप पेंशन पाते हैं। आप काव्य-विषय का बहुत अच्छा ज्ञान रखते हैं। पिंगल तथा दशांग काव्य के आप अच्छे ज्ञाता हैं। आप गद्य के अच्छे लेखक हैं और पद्य-रचना भी अच्छी करते हैं। आप संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, प्राकृत, उड़िया, मराठी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। आपने निम्न-लिखित ग्रंथ रचे हैं— १ छंदप्रभाकर, २ काव्यप्रभाकर, ३ नव-पंचामृत रामायण, ४ कालप्रबोध, ५ दुर्गा सान्त्वय भाषाटीका, ६ गुलज़ार सप्तुन उर्दू, ७ काव्यकुसुमांजलि, ८ छंदसारावली, ९ हिंदी काव्यालंकार, १० अलंकारप्रश्नोत्तरी, ११ रसरत्नाकर, १२ काव्यप्रबंध आदि।

गवर्नमेंट ने आपको रायबहादुर की पदवी से विभूषित किया है।

**तुलसीदास** - प्रसिद्ध महात्मा कवि। यह सरयूपारी ब्राह्मण थे। यमुना के किनारे राजापुर-नामक गाँव में इनका जन्म हुआ था। शायद १५३२ ई० में आठ वर्ष की अवस्था में इनके पिता मर गये। इसके कुछ दिनों के बाद तुलसीदास काशी में पढ़ने आये। काशी में १२ वर्ष रहकर इन्होंने विद्याध्ययन किया। फिर यह स्वदेश लौट गए और व्याह करके संसार-धर्मपालन करने लगे। कहते हैं, तुलसीदास बड़े स्त्री-परायण थे। सदा स्त्री के साथ रहा करते थे। एक बार इनकी अनुपस्थिति में इनकी स्त्री नैहर चली गई। पता लगने ही यह अपनी ससुराल



## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

पहुँचे। स्त्री ने अपने पति की ऐसी अवस्था देखकर बड़े क्रोध से कहा—

“लाज न लागत आपको, देरे आयहु साथ ।  
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहीं मैं नाथ ॥  
अस्थिचर्ममयदेह मम, तमैं जैसी प्रीति ।  
तैसी जो श्रीराम महुँ, होत न तो भवभीति ॥”

स्त्री की बातों का तुलसीदास के मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उनके ज्ञान-नेत्र खुल गए। वह वहीं से काशी चले गए। वहीं से उनके धार्मिक जीवन का सूत्रपात हुआ। उन्होंने कई एक ग्रंथ भी बनाए हैं, जिनमें उनका ‘रामचरितमानस’ बहुत प्रसिद्ध है। हिंदी-साहित्य में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। किसी कवि ने लिखा है—“तत्त्व-तत्त्व सूर कही, तुलसी कही अनूठी”, और भी किसी ने कहा है—“जो कुछ रहा सो अंधरा भाखा, कठवाँ कहैस अनूठी।”

गोस्वामी तुलसीदासजी के नाम से निम्नलिखित ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—१ रामचरितमानस, २ कवितावली-रामायण, ३ गीतावली-रामायण, ४ छंदावली-रामायण, ५ बरव-रामायण, ६ पदावली-रामायण, ७ कुंडलिया-रामायण, ८ छप्पै-रामायण, ९ कइखा-रामायण, १० रोल्ला-रामायण, ११ झूलना-रामायण, १२ रामाज्ञा, १३ रामखल्ला-नहछू, १४ पार्वती-मंगल, १५ जानकी-मंगल, १६ कृष्ण-गीतावली, १७ हनुमान्-नाटक, १८ संकटमोचन, १९ हनुमान् चालीसा, २० राम-शब्दाका, २१ राम-सतसई, २२ वैराग्य-संदीपिनी, २३ विनय-पत्रिका, २४ कलिधर्माधर्म-निरूपण और २५ दोहावली।

भारतवर्ष में इस समय जितना तुलसीदासजी की रामायण का प्रचार है, उतना और किसी भी पुस्तक का नहीं। इनकी सर्वतोमुखी विद्वत्ता ही इसका कारण

है। रामायण की भाषा सजीव तथा मर्यादापूर्ण होने से आपके उपदेशों का प्रभाव बहुत भारी पड़ा है और आप उत्तर-भारत के सबसे बड़े उपदेशक और चरित्र-संशोधक माने जाते हैं।

**दयानंद सरस्वती**—यह एक संन्यासी थे। गुजरात के अनर्गत काठियावाड़ में, मोरवी-नामक नगर में, सन् १८२४ ई० में, इन्होंने जन्म लिया था। दयानंद के पिता पक्षे शिवोपासक थे। पिता का चरित्र धर्मनिष्ठ पुत्र में संक्रांत हुआ था। इन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था में वर्ण-परिचय पढ़कर वेदमंत्र और कुछ वेद-भाष्य का अभ्यास किया। आठवें वर्ष में इनका यज्ञोपवीत हुआ, तब से यह यजुर्वेद पढ़ने लगे। चौदह वर्ष की अवस्था में इन्होंने व्याकरण, यजुर्वेद तथा वेद के और भागों का अध्ययन करके अपना अध्ययन समाप्त किया। कुछ घटनाओं के कारण इनकी जीवन-धारा एकदम परिवर्तित हो गई। हृदय में मुक्ति की इच्छा प्रबल हो गई। इन्होंने निश्चित कर लिया कि जैसे हो, मृत्यु के दुःख से छुटकारा पाना चाहिए। वह संसार से पूर्ण विरक्त हो गये। घर से भाग निकले और मूर्तिपूजा के विरुद्ध व्याख्यान देने लगे। इन्होंने भारत के प्रायः सभी स्थानों में भ्रमण किया। इनकी भ्रमण-कथा बड़ी विचित्र है। परमहंस परमानंद से इन्होंने ‘वेदान्तसार’ आदि ग्रंथों का अध्ययन किया और परमहंस पूर्णानंद की कृपा से संन्यासाश्रम ग्रहण किया। समय मिलने पर यह शास्त्रपाठ और योगाभ्यास भी किया करते थे। मथुरा में इन्होंने पं० विरजानंद से नाना शास्त्रों का अध्ययन किया। शैव और वैष्णव दोनों संप्रदायों के यह विरोधी थे। यह आर्य-समाज के प्रवर्तक

थे। आर्य-समाज की शाखाएँ इस समय भारत वर्ष भर में हैं और अच्छा काम कर रही हैं। मूर्ति-पूजा के यह विरोधी थे। अपना मत प्रतिपादित करने के लिये इन्होंने अनेक ग्रंथ लिखे हैं, जिनका आर्य-समाज जनता में प्रचुर प्रचार और मान्य है। उनमें स्वास-स्वाम्य ये हैं—  
१ सत्याग्रह-प्रकाश, २ संस्कार-विधि, ३ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ४ यजुर्वेद-भाष्य, ५ व्यवहारभानु, ६ गोकर्षणा-विधि, ७ आर्योपनिषद्, ८ पंचयज्ञ-महानिधि, ९ वेदांगप्रकाश आदि।

देवदत्त ( देव )—यह हिंदी के महाकवि थे। इनका जन्म १६७४ ई० में हुआ था। इनके वंशधर जिला इटावा के अंतर्गत कुमुमरा-गाँव में शायद अब तक मौजूद हैं। यह हितहरिवंश स्वामी के संप्रदाय-वाले ब्राह्मणियों में सुप्रसिद्ध थे। इनकी कविशक्ति बड़ी अद्भुत थी। १६ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने भाव-विलास-नामक ग्रंथ तैयार कर डाला था। इनका जिनगी होने पर भी इनका भाग्य कुछ ऐसा मंद था कि इनका अच्छा खादर कहीं नहीं हुआ। यह सभी छोटे-बड़ों से मिले, पर सिवा राजा भोगीलाल के किसी ने इन्हें संतुष्ट नहीं किया। भवानीदत्त वैश्य के नाम पर 'भवानी-विलास' ग्रंथ बनाया और फौजदारी जिला इटावा के कुशलपालसिंह के नाम पर 'कुशल-विलास' की रचना की। राजा उमातसिंह शैस के नाम पर 'प्रेम-चंद्रिका' की रचना की, पर कहीं इनकी उचित प्रतिष्ठा नहीं हुई। अब यह, चाहे गुणज्ञ की खोज में चाहे तीर्थयात्रा के लिये, अनेक स्थानों में घूमे। जहाँ-जहाँ यह गए, वहाँ के मनुष्यों की बाख-डाल, रीतिथो और अन्यान्य

दर्शनीय पदार्थों पर पूरा ध्यान देते रहे और इस प्रकार प्राप्त अनुभव का अपने ग्रंथों में स्थान-स्थान पर उपयोग भी किया। 'जाति-विलास'-नामक ग्रंथ में इन्होंने सब देशों की स्त्रियों का बहुत हो सचा वर्णन किया है। पर कोई आश्रयदाता न मिलने से इन्होंने यह ग्रंथ किसी को भी समर्पित नहीं किया। धूमने-धूमने इन्हें राजा भोगीलाल मिले और उन्होंने इनका अच्छा सम्मान किया। उनके लिये उन्होंने 'रस-विलास'-नामक ग्रंथ बनाया। इस गुणज्ञ राजा को पाकर देव ने अपने पुराने आश्रय-दाताओं को केवल भुला ही नहीं दिया, छोड़ भी दिया। पर न-मालूम किस कारण से या अपने भाग्य ही से यह वहाँ से भी चल पड़े। जिस समय इन्होंने अपना प्रधान ग्रंथ 'शब्द-रसायन' रचा, उस समय भी इनका कोई आश्रय-दाता न था। फिर इन्होंने अपनी समस्त कविताओं के संग्रहस्वरूप 'मुखसागर-तरंग'-नामक ग्रंथ बनाया और उसे पिहानी के प्रकवर-अलीख़ाँ को समर्पित किया। सुना जाता है कि इन्होंने नानि-शतक और वैराग्यशतक भी बनाए हैं। कोई कहते हैं कि सब मिलाकर इन्होंने ७२ ग्रंथ बनाए और कोई २२ ही बतलाते हैं। संभव है, २२ ग्रंथ इन्होंने बनाए हों। 'हिंदी-नवरत्न' के सुविज्ञ लेखकों ने इनके १४ ग्रंथ देखे हैं। वे ये हैं—

१ भाव-विलास, २ अष्टयाम, ३ भवानी-विलास, ४ रस-विलास, ५ मुखसागर-तरंग, ६ सुज्ञान-चरित्र, ७ राग-रत्नाकर, ८ प्रेम-चंद्रिका, ९ देव-शतक, १० सुंदरी-सिद्ध, ११ कुशल-विलास, १२ देवचरित्र, १३ काव्य-रसायन, १४ जातिविलास।

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

**नंददास—** यह रामपुर के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। श्रीबिट्टखनाथजी के यह शिष्य थे। इनकी गणना अष्टछाप के कवियों में है। इनके बनाये ग्रंथ ये हैं— १ नाममाळा, २ अनेकार्थ, ३ पंचाध्यायी, ४ रुक्मिणी-मंगल, ५ दशमस्कंध, ६ दान-लौछा, ७ मान-लौछा। इन ग्रंथों के अतिरिक्त इनके बनाये हुए पद भी पाये जाते हैं।

**नाथूरामशंकर शर्मा—** यह हरदुआगंज, अलीगढ़ के निवासी, हिंदी के एक प्रसिद्ध सुकवि हैं। आप समस्यापूर्ति के लिये प्रसिद्ध हैं। खड़ीबोली की भी लिखित रचना करते हैं। आपकी अवस्था इस समय प्रायः ८० साल की है। आपने 'अनुरागरत्न', 'गभरंडारहस्य', 'वायसविजय' आदि अनेक उत्तम ग्रंथ बनाए हैं।

**नाभादास—** यह हिंदी के कवि, दक्षिणी ब्राह्मण थे। यह सं० १५४० में उत्पन्न हुए थे। जयपुर में गलता गद्दी के महंत अग्र-दास के यह शिष्य थे। यह भक्त और कवि थे। इनके बनाए ग्रंथ का नाम 'भक्तमाल' है। इसमें १०८ छप्पय हैं। इसमें भक्तों की विचित्र कथाएँ हैं।

**पजनेश—** यह कवि पक्षा, बुंदेलखंड, के रहनेवाले थे। सन् १८७२ ई० में इनकी उत्पत्ति हुई थी। इनका बनाया 'मधुप्रिया'-नामक ग्रंथ भाषा-साहित्य में अच्छा माना जाता है। इनकी उपमाएँ अनूठी होती थीं। पद, अनुप्रास और यमक आदि भी प्रशंसनीय होते थे। इन्होंने 'नख-शिख-वर्णन' की भी रचना की है।

**पद्माकर—** यह बाँदा-निवासी मोहनभट्ट के पुत्र थे।

सं० १८३८ में इनका जन्म हुआ था। पहले यह आप्पा साहब रघुनाथराव पेयवा के यहाँ थे। इनके एक कवित्त से प्रसन्न होकर आप्पा साहब ने इन्हें एक लाख रुपए पारितोषिक में दिये थे। यहाँ से यह जयपुर गए और वहाँ सवाई जगतसिंह के लिये 'जगद्गिनोद'-नामक ग्रंथ बनाया। इस ग्रंथ को बनाकर इन्होंने जयपुर के राजा से बहुत धन पाया। वृद्धावस्था में इन्होंने गंगा-सेवन किया था। उसी समय की बनाई हुई इनकी 'गंगा-खहरी' विशेष आदरणीय है। हिंदी-साहित्य में 'जगद्गिनोद' का बहुत अच्छा स्थान है।

**परमानंददास—** यह वजवासी थे और श्रीवल्लभाचार्यजी के शिष्य थे। सं० १६०१ में इनका जन्म हुआ था। यह कविता भी करते थे। 'रागसागरोद्भव' में इनके अनेक पद हैं। यह अष्टछाप के कवियों में से एक थे।

**प्रतापनारायण मिश्र—** यह कात्यायनगोत्री कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और बैजोगाँव के मिश्र थे। इनके पिता पं० संकटाप्रसादजी कानपुर में आ बसे थे। वह प्रवीण ज्योतिषी थे। अपने पुत्र पं० प्रतापनारायण को भी वह ज्योतिषी बनाना चाहते थे; पर इनकी तद्वियत उधर नहीं लगी। इन्होंने अँगरेज़ी, फ़ारसी और संस्कृत का कुछ अभ्यास किया। कवियों के साथ रहने तथा कवि-समाज में आने-जाने के कारण कविता तो यह पहले ही से करने लग गये थे। लिखित कवि से इन्होंने छंदःशास्त्र भी विधिवत् पढ़ा। अपने कुछ मित्रों की सहायता से सन् १८८३ ई० में, इन्होंने 'ब्राह्मण'-नामक

एक मासिक पत्र निकाला। इसके लेख हास्यमय तथा शिक्षाप्रद होते थे। संस्कृत और फ़ारसी में भी प्रतापनारायणजी हिंदी की भाँति कविता किया करते थे। सन् १८८६ में यह काका-कॉकर गये और वहाँ 'हिंदोस्तान' के सहकारी संपादक रहे; पर स्वतंत्र प्रकृति के होने के कारण वहाँ बहुत दिनों तक नहीं रह सके। मिस्टर ब्रेडला के भारत-आगमन के उपलक्ष्य में इन्होंने जो कविता की थी, उसकी बड़ी प्रशंसा हुई थी। इन्होंने १२ पुस्तकों का भाषानुवाद किया है, और २० पुस्तकें लिखी हैं। इनकी मृत्यु सं० १९२१ में हुई।

प्रेमचंद—

यह आपका उपनाम है। आपका असली नाम मुंशी धनपतराय (बी०ए०) है। आप जाति के कायस्थ और काशी के रहनेवाले हैं। कुछ दिन आपने यू० पी० के शिक्षा-विभाग में डिप्टी-इंस्पेक्टर का काम किया, पर स्वतंत्र प्रकृति के होने के कारण आपने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद राष्ट्रीय पाठशाला में हेडमास्टर की। अधिकारीवर्ग के द्वारा अनुचित दबाव पड़ने पर आपने उसे भी छोड़ा। प्रायः एक साल तक आपने लखनऊ की गंगा-पुस्तकमाला से प्रकाशित 'बाल-विनोद-वाटिका' का संपादन किया। उसके बाद आप वहीं की नवलकिशोर-प्रेस से प्रकाशित होनेवाली माधुरी और साहित्य-सुमन-माला के संपादक हुए और अभी तक इन पदों को सुशोभित कर रहे हैं। काशी में इनका एक निजी प्रेस है, जिसका नाम सरस्वती-प्रेस है। वहाँ से आपने 'हंस' नाम की एक उच्छकोटि की कहानी की मासिक पत्रिका निकाली है। उसका संपादन भी आप ही करते हैं। इस

पत्रिका ने बहुत थोड़े समय में हिंदी में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। हिंदी-साहित्य-संसार में आपका एक विशेष स्थान है। उपन्यास और कहानी लिखने में आप सिद्धहस्त हैं। आपकी सरल और सुबोध भाषा हिंदी-लेखियों को बहुत पसंद आई है। आपका विषय-विवेचन, चरित्र-चित्रण और भावपूर्ण उक्तियाँ अपना सानी नहीं रखतीं। कई उपन्यास आपने लिखे हैं, जिनमें रंगभूमि, सेवासदन, प्रेमाश्रम, काया-कल्प, नवनिधि, वरदान, निर्मला और ग़बन मुख्य हैं। रंगभूमि पर तो आपको यू० पी० की हिंदुस्थानी एकेडेमी से २००) का पुरस्कार भी मिल चुका है। यह हिंदी का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास कहा जाता है। यही नहीं, आप हिंदी में औपन्यासिक सम्राट् भी कहे जाते हैं। जैसे उपन्यास लिखने में आपका स्थान सर्वोच्च है, वैसे ही कहानी लिखने में भी। आपने तीन सौ के लगभग कहानियाँ अबतक लिखी हैं। आपकी कहानियों के संग्रह भी अनेक निकल चुके हैं। जिनके नाम ये हैं—अग्नि-समाधि, प्रेम-द्वादशी, प्रेम-पच्चीसी, सप्त-सरोज, प्रेम-प्रसून, प्रेम-प्रतिमा, प्रेम-तीर्थ, पाँच फूल, गल्प-रत्न, प्रेम-प्रमोद। संग्राम और कर्बला नाम के दो मौलिक नाटक भी लिखे हैं। व्याय, चाँदी की डिबिया, हड़ताल और अहंकार आपके अनूदित नाटक हैं। हास्य-रस की शर्त की सुप्रसिद्ध पुस्तक क्रिस्नाने-आज़ाद का भी आपने हिंदी में आज़ाद-कथा के नाम से संक्षिप्त संस्करण निकाला है। आपकी कहानियों की कसौटी यही है कि उनके अनुवाद केवल भारतीय पत्रिकाओं में ही नहीं, बरन् जापान की उच्छकोटि की साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशित होते

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

हैं और बड़े चाव से पढ़े जाते हैं।

हिंदी की ओर तो आप सन् १९१४ ई० से झुके हैं। पहले तो आप कहानियाँ उर्दू ही में लिखते थे। उर्दू में भी आपकी बहुत-सी किताबें प्रकाशित हुई हैं। आपकी जो कहानियाँ हिंदी की पत्रिकाओं में निकलती हैं, उनका अनुवाद गुजराती, मराठी और उर्दू में प्रारम्भ हो जाता है। गुजराती में भी आपके ग्रंथ अनूदित हो चुके हैं और हो रहे हैं। मराठी में भी आपकी कहानियों का संग्रह निकला है।

**बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**—यह भारद्वाज-गोत्रो सरयूपारीय ब्राह्मण खोरिया के उपाध्याय थे। यह मिर्जापुर के निवासी थे। इनके पितामह पं० शीतला-प्रसाद उपाध्याय एक प्रतिष्ठित रहस्य, महाजन, व्यापारी और जमींदार थे। इनके पितामह पं० गुरुचरण उपाध्याय एक आदर्श ब्राह्मण थे। पं० बदरीनारायण चौधरी का जन्म संवत् १९१२ में हुआ था। कई राजाओं का साथ हो जाने से अश्वारोहण, गजसंचालन, लक्ष्यवेध, मृगया आदि से इनका अनुराग हो गया था। इन्होंने संस्कृत, फ़ारसी और अँगरेज़ी का भी ज्ञान संपादित किया था। कविता की ओर इनका झुकाव अधिक था। पं० रामानंद पाठक इनके कविता-गुरु थे। संगीत पर भी इनका अधिक अनुराग था, उसमें यह निपुण भी थे। भारतेंदुजी से इनकी गाढ़ी मैत्री थी। संवत् १९३० में इन्होंने सद्धर्म सभा और संवत् १९३१ में रसिक समाज स्थापित की। संवत् १९३२ में इन्होंने कविताएँ लिखनी प्रारंभ कीं। उनमें से कुछ 'कविचचन-सुधा' में छपी थीं। इनके कितने लेख और कवि-

ताएँ 'आनंदकादंबिनी' और 'नागरी-नीरद' में निकले हैं। इनकी कविता का उत्तमांश अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका है। समयानुरोध से जो अल्पावश्यक कविताएँ निकल गईं,—जैसे 'भारतसौभाग्य', 'हार्दिकदर्श', 'भारतबधाई', 'आभाभिनंदन', 'वर्षासिंधु'—वे ही प्रकाश में आ पाई हैं। इनकी कविताओं के अप्रकाशित रहने का कारण यह है कि यह कविता केवल मनोविनोद के लिये ही करते थे, न कि धन अथवा मान की इच्छा से। कविताओं में यह अपनी छाप 'प्रेमघन' दिया करते थे। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन के, जो कलकत्ते में हुआ था, आप सभापति निर्वाचित हुए थे।

**बालकृष्ण भट्ट**—इनका जन्म सं० १९०१ में हुआ था।

यह पं० वेणीप्रसादजी के पुत्र थे। १२-१६ वर्ष तक इन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया। इन्होंने एंटेन्स तक अँगरेज़ी भी पढ़ी थी। मिशन-स्कूल में पढ़ने के कारण बाइबिल की परीक्षा में इन्हें कई बार इनाम भी मिला था। पर इससे इनकी अपने धर्म के ऊपर श्रद्धा कम नहीं हुई थी। मास्टर से कुछ विरोध हो जाने पर इन्होंने पढ़ना छोड़ दिया और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। यमुना-मिशन-स्कूल (प्रयाग) में यह संस्कृत के अध्यापक भी थे, पर धर्म-विवाद के कारण इन्होंने वह पद भी छोड़ दिया। अब यह उस समय के प्रसिद्ध मासिक और साप्ताहिक पत्रों में लिखने भी लगे। इसी समय इन्होंने प्रयाग के कुछ उस्तादी नवयुवकों को लेकर 'हिंदी-प्रवर्द्धिनी' नाम की एक सभा स्थापित की और यहीं से 'हिंदी-प्रदीप'-

नामक एक मुख्यपत्र निकाला। इसके संपादक स्वयं भट्टजी ही थे। इसे उन्होंने बहुत दिनों तक चलाया। उनके लिखे हुए 'कलिराज की सभा', 'रेल का विकट खेल', 'ब्राह्म-विवाह-नाटक', 'सौ अज्ञान और एक सुज्ञान', 'नूतन ब्रह्मचारी', 'जैसा काम वैसा परिणाम', 'आचार-विह्वलना', 'भाग्य की परख', पटदर्शनसंग्रह का भाषानुवाद, 'गीता' और 'सप्तशती' की समालोचना आदि लेख पठनीय हैं। भट्टजी कायस्थ-पाठशाला में संस्कृत के अध्यापक थे, परंतु किसी कारण से इन्हें वह पद छोड़ना पड़ा। आपने काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के 'शब्द-सागर' की रचना में उपसंपादक का काम कुछ दिनों किया था। इनकी दो पुस्तकें 'साहित्य-सुमन' और 'सौ अज्ञान और एक सुज्ञान' प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

**बालमुकुंद गुप्त**—यह अग्रवाल वैश्य थे। इनका जन्म १८६२ ई० में, पंजाब के रोहतक-ज़िले के गुरयानी-नामक गाँव में, हुआ था। पंजाब में हिंदी का प्रचार न होने के कारण आपने पहले उर्दू और फ़ारसी पढ़ी। बड़े होने पर हिंदी का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया। बाल्यकाल से ही आपको लेख लिखने का अच्छा अभ्यास था। आप लखनऊ के उर्दू अखबार और अवध-पंच, लाहौर के 'कोहेनूर', मुरादाबाद के 'रहवट' और स्वावलंबी के विक्टोरिया पेपर आदि में लेख लिखा करते थे। तभी से इनकी गणना प्रसिद्ध लेखकों में होने लगी। आपने 'अखबार चुनार', 'हिंदोस्तान', 'बंगवासी' और 'भारतमित्र' का बड़ी योग्यता से संपादन किया। आपका परलोकवास सन् १९०७ ई० में हुआ। आप बड़े चतुर

थे। आपकी निष्पक्ष और रसीली समालोचना-प्रणाली प्रशंसनीय थी। आपने कई एक ग्रंथों का अनुवाद किया है। स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे हैं। रत्नावलीनाटिका, हरिदास, शिवशंभु का चिट्ठा, स्फुट कविता और खिलौना आदि पुस्तकें आपकी बहुत प्रसिद्ध हैं।

### बिहारी—

यह हिंदी के महाकवि थे और जाति के माधुर चौबे। इनका जन्म ग्वालियर के समीप बसुवा-गोबिंदपुर में हुआ और किसी कारण इनकी बाएयावस्था बुंदेलखंड में होती। जवानी में यह अपनी ससुराल मथुरा में रहे। जान पड़ता है, इनके पिता धनहीन थे, और इनके बचपन ही में मर गये थे। (हिंदी-नवरत्न)

कहते हैं, एक समय महाराज जयसिंह एक नवोदा मुग्धा रानी के प्रेम में इतने बेसुध हो गये कि उसे छोड़कर बाहर निकलते ही न थे। उस समय बिहारी-लाल ने नीचे का दोहा बनाकर किसी तरह उनके पास भिजवाया था—

“नहिं पराग, नहिं मधुर मधु,  
नहिं विकास यहि काल;  
अली कली ही सों बिधो,  
आगे कौन हवाल।”

इसे पढ़कर महाराज को डोश हुआ, और वह तुरंत प्रेमोन्माद से मुक्त होकर बाहर निकल आये—राज्य का काम-काज करने लगे। इसी समय से जयपुर में बिहारी का आदर बढ़ा और वह वहीं रहने लगे। कहते हैं, राजा ने इस दोहे पर बिहारी को बड़ा पुरस्कार दिया, और फिर वैसे ही प्रत्येक दोहे पर एक मोहर देते रहे। इनके एक-मात्र ग्रंथ 'बिहारी-सतसई' में ७११ दोहे हैं। इनमें दो-तीन सौरे भी हैं। इस छोटे से ग्रंथ में कविरत्न ने मानों गागर में

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

सागर भर दिया है। इसमें सभी कुछ आ गया है और कविता का प्रायः कोई अंग, सिवा पिंगल के, नहीं छूटा। काव्य का यह छोटा-सा खजाना पाठक की चकित और स्तंभित कर देता है। इनके हतने छोटे-से ग्रंथ में हतना चमत्कार अन्य कोई भी हिंदी-कवि नहीं खा सका। हिंदी-संसार ने इसका आदर भी खूब किया। सिवा गोस्वामी तुलसीदास की रामायण के और कोई भी भाषा-ग्रंथ हतना लोक-प्रिय नहीं हुआ, जितनी लोक-प्रियता सतसई ने पाई है। फरीब २५ महाशयों ने इसकी गद्य अथवा पद्य में टीका या व्याख्या की है। यह सतसई वज्रभाषा में है, फिर भी यत्र-तत्र कई भाषाओं के शब्दों का इसमें बहुतायत से व्यवहार किया गया है। किसी भाषा का भी शब्द हो, अगर वह अच्छा है, तो उससे काम निकालने में यह महाशय संकोच नहीं करते थे। इन्होंने शब्दों को खूब तोड़ा-मरोड़ा भी है। कुछ भी हो, इनकी भाषा बहुत मनो-हर है। इन्होंने जैसा विषय वर्णन किया है, उसी के अनुसार भाषा भी खिसकर उसका रूप खड़ा कर दिया है। इनकी दृष्टि संसार के सभी पदार्थों पर बड़ी पैनी पड़ती थी, और यह महाशय अपने मतलब की बात खूब देख लेते थे। इनके प्रायः सभी दोहों में प्रकृति-पर्य-वेक्षण देख पड़ता है।

**बेनी प्रवीण**—यह भाषा के कवि कान्यकुब्ज-वाजपेयी ब्राह्मण थे और लखनऊ के निवासी थे। इनका जन्म सं० १८७६ में हुआ था। इनका बनाया नायिका-विषयक ग्रंथ “नव-रस-तरंग” के नाम से प्रकाशित हुआ है।

**भगवानदीन “दीन”**—यह मुंशी काशिकाप्रसाद बघरी

के पुत्र थे और इनका जन्म श्रावण-शुक्ल ६ संवत् १९२३ को फतेहपुर (इस्वा) जिलांतर्गत बरवट-ग्राम में हुआ था। पहले-पहल इन्होंने उर्दू और फ़ारसी की शिक्षा प्राप्त की। फिर अपने दादा से हिंदी सीखी। १७ वर्ष की अवस्था में फतेहपुर के हँगलिश स्कूल में भर्ती हुए। इनकी आर्थिक अवस्था अच्छी न थी। छात्रवृत्ति और छात्रानुकरके आपने एंट्रेंस-परीक्षा पास की। आपने एफ़० ए० तक अँगरेज़ी पढ़ी, पर गृहस्थी की भ्रंशों के कारण लाचार होकर आपको पढ़ना छोड़ना पड़ा। फिर कायस्थ-पाठशाला (प्रयाग) में अध्यापक हुए। वहाँ से हटकर आप जनाना-मिशन गर्ल्स-हाईस्कूल में फ़ारसी पढ़ाने लगे। अनंतर आप राज्यस्कूल के सेकंड मास्टर होकर छत्रपुर चले गए और सन् १८९४ से १९०७ तक वहाँ रहे। यहाँ आपने हिंदी-साहित्य का ख़ासा अध्ययन किया। यहाँ इनकी प्रांतीय भाषाओं की जानकारी का अच्छा अवसर मिला। आपको प्रकृति-पर्यवेक्षण का बड़ा शौक था, जिसके कारण आपकी कविताएँ बड़ी सजीव हुआ करती थीं। छत्रपुर में आपने प्राचीन काव्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अरबी-फ़ारसी की उच्च शिक्षा आप पहले ही प्राप्त कर चुके थे। अतः आपकी खड़ीबोली की कविताओं में इन दोनों के गंगा-यमुनी सन्मिश्रण ने उस समय के विकासोन्मुख खड़ीबोली के पराश्रय में युगांतर-सा उपस्थित कर दिया था, जिसके लिये हिंदी-काव्य-जगत् की इनका शिरच्छापी रहना पड़ेगा। बीर-रसात्मक ग्रंथ “बीर-पंचरत्न” इसका नमूना है, जिसे आपने काशी में आकर रचा था। छत्रपुर में काव्यों की अध्ययन करके आपने

शृंगार-शतक, शृंगार-तिलक तथा तुलसी-सतसई के दोहों पर कुंडलियों की रचना की थी और हिंदी-साहित्य के प्रचारार्थ 'कवि-कमाल' और 'काव्य-जता'-नामक दो सभाएँ एवं 'भारती-भवन'-नामक एक पुस्तकालय भी जोल रक्खा था। 'दीन' जी ने कविताओं के अतिरिक्त बड़े चुटीले फाग भी लिखे हैं, जिनका बहुत बड़ा संग्रह आपके घर में मौजूद है। उस समय आपकी फुटकल कविताएँ तथा लेख 'रसिकमित्र', 'रसिक-वाटिका', 'लक्ष्मी-उपदेश-लहरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में बराबर छपा करते थे। सन् १९०५ में आप 'लक्ष्मी' के संपादक हुए, जिसे आपने बड़ी योग्यता से बहुत दिनों तक निकाला। फिर आप काशी आए और हिंदू-स्कूल में तारसी के अध्यापक नियुक्त हुए। साथ-ही-साथ नागरी-प्रचारिणी सभा से निकलनेवाले प्राचीन कवियों के ग्रंथों का संपादन भी करते रहे। इनमें हिमनबहादुर-विरदा-वल्ली, सुजानचरित, राजविनास आदि मुख्य हैं। वहीं से प्रकाशित होनेवाले 'शब्द-सागर' कोष के उपसंपादक भी आप रहे, और 'म' तक उसका संपादन किया। सन् १९१८ में किसी कारण आप सभा से अलग हो गए और हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी के लेखकार नियुक्त हुए। आपने सूरि-सरोवर, अलंकार-मंजुषा, धर्मार्थ-मंजुषा, वीर-पंचरत्न, नवीन-बोन आदि ग्रंथों की रचना और बिहारी-बोधिनी, कवितावली आदि ग्रंथ-रत्नों की प्रामाणिक टीकाएँ की हैं। आपके कई आलोचनात्मक लेख 'विहारी और देव' के नाम से कई पत्र-पत्रिकाओं में बड़ी शान के साथ निकल चुके हैं, जिनमें आपने हिंदी-साहित्य-संसार में

कविवर बिहारी को कविवर देव से ऊँचा आसन दिखाया है। विद्यादान में भी यह खूब बड़े चढ़े थे। हिंदी-साहित्य विद्यालय की स्थापना करके आपने हिंदी के ऐसे कितने ही छात्र तैयार किये, जो साहित्य-रत्न तथा विशारद हो चुके हैं और हिंदी-संसार में खूब काम कर रहे हैं। आपने केशव के कठिन ग्रंथों की भी प्रामाणिक टीका करके, उन्हें सुबोध और सरल कर दिया है। आप सुकवि थे, समालोचक थे, लेखक थे, अनुवादक थे, टीकाकार थे और कुशल संपादक थे। समस्या-पूर्ति में आप इतने पटु थे कि दक्षि-सम्मेलनों में जाकर बिना अपना हाथ दिखाए नहीं मानते थे। आपकी कविताएँ बहुधा राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत और शिष्टाग्रद हुआ करती थीं। 'रूस पर जापान क्यों विजयी हुआ?'-शीर्षक लेख पर आपकी एक बार एक सौ रुपया पुरस्कार मिला था। आजीवन आप सादगी की प्रतिमूर्ति और मिलनसारि के सच्चे उपासक रहे। आपकी विनोद-प्रियता तो प्रसिद्ध ही है। आपका स्वर्ग-रोहण २८ जुलाई, १९३० ई० को हुआ।

भूषण—

यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण कश्यप-गोत्री त्रिपाठी थे। इनके पिता का नाम रत्नाकर था। कविवर चिंतामणि, महा-कवि सतिराम और नोखकंठ कवि (उप-नाम जटाशंकर) इनके भाई थे। इनका जन्मकाळ सं० १६७० के लगभग है और संवत् १७७२ के लगभग इनका स्वर्गवास हुआ मालूम होता है। २० वर्ष की अवस्था तक यह बिलकुल अपद और निकम्मे थे। अपने बड़े भाई चिंतामणि की कमाई से अपना बसर करते थे। एक दिन इनकी बड़ी भावज ने नोन मांगने पर ऐसा कटु वाक्य कहा कि यह भोजन



## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

छोड़ तत्काल चल दिये। इसी समय बाहर जाकर इन्होंने पढ़ने-लिखने में विशेष श्रम किया। आठ-दस वर्षों में ही यह अच्छे विद्वान् और कवि हो गये। सं० १७०० के लगभग, प्रायः ३० वर्ष की अवस्था में, आप हृदयराम के पुत्र रुद्रराम सोलंकी (चित्रकुटाधिपति) के यहाँ थे। उन्हीं के यहाँ इन्होंने अपनी कविता के कारण 'कवि-भूषण' की उपाधि पाई। भूषण का वास्तविक नाम कुछ और था। प्रायः ५४ वर्ष की अवस्था में यह शिवाजी के यहाँ पहुँचे और अचानक एक देवालय पर महाराज शिवाजी से इनकी भेंट हो गई। इन्होंने शिवाजी का पहचाना नहीं, पर उनके कहने पर अपना एक छंद १८ बार पढ़कर सुनाया। इस पर शिवाजी ने इन्हें १८ लाख मुद्रा और १८ गाँव पुरस्कार में दिये और बड़े सम्मान के साथ अपना राजकवि बनाया। सुनते हैं, इसी अवसर पर भूषण ने अपनी भावज के पास एक लाख रुपए का नोन भेज दिया था। इसी समय से सं० १७३० तक इन्होंने अपना सुप्रसिद्ध ग्रंथ शिवराज-भूषण बनाया। सं० १७३१ में यह कुछ दिन के लिये अपने घर आये, पर रास्ते में छत्रपाख बुँदले के यहाँ भी हो जिये। छत्रपाख ने इनका बड़ा सम्मान किया, यहाँ तक कि चखते समय इनकी पालकी का डंडा अपने कंधे पर रख लिया। भूषणजी अत्यंत प्रसन्न होकर पालकी से कूद पड़े, और उन्होंने चार पाँच परमोत्कृष्ट छंद महाराज की प्रशंसा में तत्काल बनाए। कुछ दिन घर पर रहे, फिर कुमाऊँ-मरेश के यहाँ गये। वहाँ उनकी प्रशंसा का एक छंद पढ़ा। महाराज ने इन्हें एक लाख रुपए भेंट करना चाहा, पर

इनकी विशेष इत्तातिर न की। इस पर रुष्ट होकर बिना रुपए लिये ही यह चल दिये। कुछ दिन बाद भूषणजी महाराज शिवाजी के यहाँ फिर गये और समय-समय पर उनकी प्रशंसा के छंद बनाते रहे। उनमें 'शिवाबावनी' के भी छंद हैं। शायद इन्होंने दो चार और ग्रंथ भी बनाये हों, पर इसका ठीक पता नहीं चलता। यह साहू के यहाँ भी रहे। यह खूब धनवान् हो गये थे और बड़े आदमियों को भोंति रहते थे। देश-भर में और राजा-महाराजाओं में इनका सदैव बड़ा मान रहा। इनकी कविता में सैकड़ों स्थानों एवं तत्कालीन ऐतिहासिक पुरुषों के नाम और वर्णन आये हैं, जिससे ज्ञात होता है कि इन्होंने देशाटन भी खूब किया था। यह बड़े ही प्रभावशाली कवि हो गये हैं। इनका-सा सम्मान अथवा धन केशवदास के अतिरिक्त, केवल कविता के द्वारा अन्य किसी हिंदी-कवि ने अद्यापि नहीं प्राप्त किया। इन्होंने अपने सभ्य की काव्य-प्रणाली को छोड़कर वीर-रस की ओर ध्यान दिया और एक नवीन प्रकार की कविता का प्रचार किया। वीर-रस की कविता पर जितना इनका आधिपत्य था और जितनी सफलता इन्होंने प्राप्त की, उतनी और किसी ने नहीं। वीर-रस में इनकी जोड़ का दूसरा कवि हिंदी में एक भी नहीं है, बरन् यों कहना चाहिए कि इन्होंने इस रस की हतना अपनाया है कि उसका नाम लेते ही बरबस भूषण का स्मरण हो आता है। इनके रचे ये ग्रंथ हैं—१ शिवराजभूषण, २ शिवाबावनी, ३ छत्रपाख, ४ स्फुटकाव्य।

इनकी भाषा विशेषतः व्रजभाषा है; पर कहीं-कहीं इन्होंने प्राकृतिक बुँदेलखंडी एवं खड़ीबोली का भी प्रयोग

किया है। यत्र-तत्र फ़ारसी, तुर्की और अरबी-भाषाओं के भी प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। जातीयता का जितना ध्यान इनको था, उतना भारतेंदु के सिवा किसी अन्य हिन्दी-कवि में नहीं पाया जाता।

**मतिराम त्रिपाठी**—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण और महाकवि भूपण के छोटे भाई थे। अनुमान से जाना जाता है कि इनका जन्म संवत् १६७२ के लगभग हुआ होगा। यह दूँदी के महाराज राव भाऊ-सिंह के यहाँ रहते थे। वहीं उन्होंने 'ललितललाम' की रचना की। यह ग्रंथ त्रामकर राव भाऊसिंह के वास्ते बनाया गया था, और इसमें इन्होंने महाराज की प्रशंसा के एक सौ पद्य हैं। यह महाराज शंभुनाथ के यहाँ भी रहे और उन्हीं के नाम से आपने 'छंदसार-पिंगल'-नामक एक ग्रंथ बनाया। इन्होंने ये ग्रंथ रचे हैं—१ ललितललाम, २ रसराम, ३ साहित्यसार, ४ लक्षणा-शृंगार, ५ छंदसार और ६ मतिराम-सतसह। इनके सभी ग्रंथ 'मतिराम-प्रथावली' के नाम से प्रकाशित हो गए हैं।

इनकी भाषा शुद्ध व्रजभाषा है और वह बहुत ही उत्कृष्ट है। इनकी कविता में संयुक्त वर्ण बहुत कम आये हैं। इनको अनुप्रास आदि का हट्ट न था, परंतु उचित रीति पर भाषा-संबंधी प्रायः सभी गुण इन्होंने अपनी कविता में रक्खे हैं। माधुर्य और प्रसाद में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। मधुर अक्षरों का प्रयोग इन्होंने प्रायः सबसे अच्छा किया है। इनके पृष्ठ-के-पृष्ठ पढ़ते चले जाइए, श्रुति-कटु शब्द का प्रयोग शायद ही कहीं मिले। इससे पूर्व इनकी-सी भाषा का प्रयोग कोई हिन्दी-कवि नहीं

कर सका। इन्होंने मानव-प्रकृति पर अधिक ध्यान दिया है। इनकी रचना में भाषा के अतिरिक्त अर्थ-गोभीर्य का भी बहुत बड़ा गुण है।

**महावीरप्रसाद द्विवेदी**—आपका जन्म संवत् १८२१ में हुआ था। आप दौलतपुर, जिला राय-बरेली के निवासी हैं। आप पहले जी० आई० पी० रेखवे के आफिस में, फ़ौसी में, हेडक्लर्क थे जहाँ आपका मासिक वेतन १५० था। परंतु हिन्दी-प्रेम के कारण आपने वह नौकरी छोड़कर संवत् १८६० से सरस्वती का संपादन आरंभ किया और तब से बराबर बड़ी योग्यता से आप उसे सं० १८७६ तक चलाते रहे। आपके संपादकत्व में सरस्वती ने बहुत उन्नति की। हिन्दी की उन्नति का कार्य आप सदैव बड़े उत्साह से करते रहे। अब अस्वस्थता के कारण आपने सरस्वती का काम छोड़ दिया है। आपने अपना अमूल्य पुस्तकालय काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा को दान कर दिया है, और अपनी संपत्ति का भी एक भाग हिन्दी-प्रचार के लिये नियत कर दिया है। कुछ लोगों का विचार है कि आप वर्तमान समय में सर्वोत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। आपने बहुतेरे छोटे-बड़े ग्रंथों का गद्यानुवाद किया है। आपने कई समाजोचना-ग्रंथ भी लिखे हैं, जिनमें 'नैपथ्यचरितचर्चा' और 'विक्रमांक-देवचरितचर्चा' प्रधान हैं। कालिदास की भी समाजोचना आपने लिखी है। आपने खड़ीबोली की कुछ कविता भी की है, जो प्रायः २०० पृष्ठों में छपी है। आजकल आप अपने जन्मस्थान दौलतपुर में रहते हैं। आपके ग्रंथों में हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति, शिक्षा, संपत्तिशास्त्र, वेकनविचार-रत्नावली,

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

स्वतंत्रता, सचित्र हिंदी-महाभारत, जल-चिकित्सा आदि मुख्य हैं। आपके लेखों के संग्रह भी पुस्तकाकार प्रकाशित हुए हैं, जो ये हैं विज्ञानवार्ता, वैचित्र्य-चित्रण, साहित्य-संदर्भ आदि। प्रयाग के इंडियन-प्रेस से 'द्विवेदी-ग्रंथावली' नाम की एक माला प्रकाशित हो रही है।

**महाराज रघुराजसिंहजी देव**—आपका जन्म संवत् १८८० में हुआ था। सं० १९११ में आप रीवा-राज्य की गद्दी पर बैठे। आपके बारह विवाह हुए थे। आप पूर्ण पंडित, हिंदी तथा संस्कृत के अच्छे कवि और मृगयाव्यसनी थे। आपने कई छोटे-बड़े ग्रंथ बनाए हैं। आपने ६१ शेर, एक हाथी, १६ चीते और हजारों मृग आदि मारे थे। बड़े दानों और भारी भक्त भी थे। २०,००० विष्णु-नाम नित्य-प्रति जपते थे। इन्होंने सब बातों में अधिकतर फैसे रहने के कारण राज्य-प्रबंध की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते थे। यहाँ तक कि आपके मरणकाल के ५ वर्ष पूर्व ही से राज्य-प्रबंध अंगरेजी सरकार की ओर से होने लगा। सिपाही-विद्रोह में आपने सरकार का साथ दिया। आप बड़े ही कविता-रसिक और कवियों के लिये कष्टवृक्ष थे। कविता इनकी बहुत विशद और रोचक है। इन्होंने विविध छंदों में कविता की है। इनकी कविता में छंदों की छटा और अनुपात विशेष रूप से दर्शनीय हैं। आप राम के भक्त थे और आपकी भक्ति दासभाव की थी। इनके बनाए ग्रंथ ये हैं—

सुंदरशतक, विनयपत्रिका, रुक्मिणी-परिणय, आनंदबुनिधि, भक्तिविज्ञास, रहस्यपंचावली, भक्तमाख, रामस्वयंवर,

यदुराजविज्ञास, विनयमाला, रामरसिकावली, मृगयाशतक, रामअष्टयाम, भागवत-भाषा, विनयप्रकाश, रघुराज-विज्ञास आदि। इनमें से कितनों को इनके आश्रित कवोश्वरों ने पूर्ण किया है।

**मिश्रबंधु**—

पं० गणेशविहारी मिश्र, रायबहादुर पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुक्रदेवविहारी मिश्र बी० ए०, ये तीनों भाई 'मिश्रबंधु' के नाम से प्रसिद्ध हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मण और लखनऊ के निवासी हैं। घर के सुसंपन्न हैं। ज्येष्ठ भ्राता पं० गणेशविहारी मिश्र घर और हज़ारों का काम देखते हैं; रायबहादुर पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० आजकल ओडिशा-राज्य के दीवान हैं और रायबहादुर पं० शुक्रदेवविहारी मिश्र बी० ए० छत्रपुर राज्य के दीवान हैं। आप लोगों ने हिंदी-साहित्य की खूब सेवा की है। आपने कई अग्र्य ग्रंथ रचे हैं, जैसे—मिश्रबंधु-विनोद, हिंदी-नवरत्न, पुष्पांजलि, सुमनांजलि, (तीन खंड), भारतवर्ष का इतिहास, पद्य-पुष्पांजलि, पूर्व-भारत, घोरमणि, आत्म-शिक्षण, खोजसंबंधी रिपोर्ट, रूस का इतिहास, जापान का इतिहास, भूषण-ग्रंथावली की बीका आदि।

**मैथिलीशरण गुप्त**—आप जाति के वैश्य और चिरगाँव (झाँसी) के रहनेवाले हैं। हिंदी-साहित्य-सेवियों में आपका विशेष स्थान है। चिरगाँव में आपका एक प्रेस भी है। आपको संगीत से भी बहुत प्रेम है। आपने अनेक ग्रंथों की रचना की है, जिनमें से 'भारत-भारता' और 'जयप्रध-वध' के तो दस दस संस्करण निकल चुके हैं। यह लोक प्रियता ही इनकी कविता की कसौटी है। आपके अन्य ग्रंथों के नाम

ये हैं—पत्रावली, पत्रासी का युद्ध, रंग-में-भंग, विरहिणी व्रजगंगा, वैतालिक, शकुन्ता, हिंदू, स्वदेश-संगीत, मेघ-नाद-वध आदि ।

**लालूजीलाल**—यह आगरा के श्रीदीन गुजराती ब्राह्मण थे और संवत् १८६० में वर्तमान थे । यह कलकत्ते के फोर्ट-विलियम-कालेज में नौकर थे और वहाँ इन्होंने व्रजभाषा-मिश्रित खड़ीबोली-गद्य में, भागवत दशम स्कंध की कथा प्रेमपागर के नाम से लिखी । इनके बनाये अन्य ग्रंथ ये हैं—छायायकहिंदी, राजनीति-वार्तिक (भाषा-हिंदीपदेश), सम्रह-समाधिलास, माधव-विलास, लालचंद्रिका के नाम से प्रसिद्ध विहारो-सनसई की टीका, भाषाव्याकरण, मसादिर भाषा, सिंहासनचत्तीसी, वैतालपञ्चीसी, माधवानल और शकुन्ता । यह महाशय वर्तमान गद्य के जन्मदाता कहे जाते हैं ।

**श्रीधर पाठक**—यह महाशय आगरा के रहनेवाले थे और नहर-विभाग में उच्च पदाधिकारी थे । पेंशन मिलने के बाद यह प्रयाग में रहने लगे । इनका जन्म संवत् १८१६ में हुआ था । इन्होंने ऊजड़ ग्राम, हवेली-जिलाइन, श्रांतपथिक तथा एकांतवासी योगी-ये चार पद्यानुवाद औरंगजेबी कविता से खड़ीबोली में की हैं । इनकी स्फुट कविताएँ 'मनोविनोद'-नाम से अलग प्रकाशित हुई हैं । इनकी आराध्य-शोकांजलि, गोखले-गुणाष्टक, गोखले-प्रशस्ति, गोपिका-गीत, देहरादून, भारतगीत, बनाष्टक, जगत्-सच्चाई-सार तथा पद्य-संग्रह आदि पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं । इन्होंने अपनी रचना में पद-मैत्री की प्रधानता रखी है । उद्योग, परिश्रम, वाण्युष आदि

की प्रशंसा इनकी रचना में बहुत है । सामाजिक सुधारों की ओर भी आपका ध्यान रहा । आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के खलनऊवाले अधिवेशन के प्रधान रह चुके हैं ।

**सुधाकर द्विवेदी**—इनका जन्म संवत् १८१७ में काशी में हुआ था । संवत् १८६७ में अकस्मात् आपका शरीर-पात हो गया । यह ज्योतिष के बहुत बड़े पंडित थे, भाषा एवं संस्कृत का भी इन्हें बहुत अच्छा ज्ञान था । इनकी कीर्ति विख्यात तक फैली थी । गवर्नमेंट ने आपको 'महामहोपाध्याय' की पदवी से पुरस्कृत किया था । आपने हिंदी में १७ ग्रंथ रचे । आप कुछ कविता भी करते थे और गद्य के बहुत भारी लेखक थे । जायसी के 'पद्मावत' का संपादन बड़े श्रम से इन्होंने किया था । आप सरल हिंदी के पक्षपाती थे । काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के आप सभापति भी रहे ।

**सूरदास**—

आप जाति के सारस्वत ब्राह्मण थे और रामदास के पुत्र । आपका जन्म दिल्ली के समीप सीही ग्राम के निवासी एक निर्धन माता-पिता के घर हुआ था । कितनों का यह कहना है कि यह जन्म से ही अंधे थे; पर इस पर पूरा विश्वास नहीं होता । कारण, इन्होंने सूरसागर में स्थान-स्थान पर ज्योति, रंग, अनेक प्राकृतिक छटाओं और हावभावों का ऐसा तद्वरूप वर्णन किया है, जो केवल श्रवण की सहायता से नहीं हो सकता । बिना आँखों देखे, ऐसा सच्चा वर्णन असंभव-सा प्रतीत होता है । आठ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत होने के बाद यह अपने माता-पिता के साथ मथुरा-

यात्रा की गद् और उनकी आज्ञा लेकर वहीं रह गए। वहाँ इनका पाखन-पोषण एक साधु ने किया। वह ब्रज में रहते थे। गऊघाट-नामक स्थान पर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु से इनकी भेंट हुई, और यह उनके शिष्य हो गए। फिर श्रीविठ्ठलनाथजी से इनकी भेंट हुई। वह बड़े चाव से इनके रचित पद सुना करते थे। अब यह गोकुल में आ गए थे और बहुत समय तक वहीं रहे। यह श्रीकृष्णजी के परम भक्त थे और सदा उन्हीं की भक्ति में मग्न रह कर रहे थे। वहाँ से वह पारसोली गए। अपने जीवन-काल में इन्होंने पाँच ग्रंथों की रचना की; उनमें से दो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। किंवदंती है कि सूरदासजी प्रातःकाल स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर श्रीकृष्णचंद्र की खोला में कुछ-न-कुछ पद अवश्य बनाते और तब कुछ जलपान करते थे। इनके पाँच ग्रंथ ये हैं—सूरसागर, सूरमारावली, साहित्यलहरी (दृष्टकूट), नल-दमयंती और व्याहखो। इनकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है; वह श्रुति-मधुर और ललित है। इनके कृत्यों के देखने से इनके प्रगाढ़ पंडित्य का पता लगता है। इनकी कविता में मिलित वर्ण बहुत कम आए हैं। माधुर्य और प्रसाद इनकी रचना के प्रधान गुण हैं। रूपक और उपमा के श्रेष्ठ नमूने भी इनकी रचना में खूब मिलेंगे। इनकी वर्णन-शैली बड़ी विशिष्ट है। या तो यह किसी विषय का बहुत सूक्ष्म रूप से वर्णन करते हैं या पूर्णविस्तार के साथ। इनका वर्णन सांगोपांग होता है। जिस विषय पर इन्होंने विस्तारपूर्वक कहा है, उस विषय पर और कवियों के लिखे लिखने को बहुत कम भाव रह जाते हैं। इनके

काव्य में भावों की पुनरावृत्तियाँ नहीं होने पाई हैं। यह अष्टछाप के कवियों में शिरमौर थे। शैली, भाव, भाषा, विषय आदि के विचार से सूरदासजी ब्रजभाषा के सर्वोत्तम कवि गिने जाते हैं। किसी ने कहा भी है—  
सूर सूर तुलसी ससी, उडगन केसवदास;  
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकास।

### सेनापति—

यह बड़ी ही अनूठी रचना करनेवाले सत्कवि थे। इन्होंने प्रायः घनाक्षरियों लिखी हैं, क्योंकि छंद चुरा जाने के भय से आप प्रत्येक छंद में अपना नाम अवश्य रखते थे। सबैया में इनका नाम नहीं आ सकता था। आपकी सबसे प्रथम पुस्तक-पटञ्जल वर्णन पर है। 'मिश्र-बंधु' इन्हें हिंदी का घटकर्षर समझते हैं। ऐसा उत्तम और अनूठा पटञ्जल-वर्णन संस्कृत से इतर किसी अन्य भाषा के कवि ने नहीं किया होगा। इन्होंने श्लेष-काव्य पर एक पूरा अध्याय लिखा है; इनकी भाषा यमक एवं अनुप्रासयुक्त तथा परम अोजस्विनी होती थी। सेनापतिजी वृंदावन के रहनेवाले थे और इनका जन्म संवत् १६८० में हुआ था। इन्होंने तीर्थसंन्यास लेकर अपनी समस्त आयु वहीं व्यतीत की। काव्य-कल्पद्रुम-नामक ग्रंथ इन्होंने बड़ा ही सुंदर बनाया है। इनके बनाए कवित्त हज़ारों की संख्या में पाए जाते हैं।

श्यामसुंदरदास—आप काशी-निवासी खत्री-जाति के रख हैं, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के प्राण हैं। इस सभा की उन्नति का श्रेय इन्हीं को है। आप अंगरेजी में बी० ए० पास हैं; हिंदी के पूर्ण विद्वान् हैं। कई वर्षों तक आपने सरस्वती का संपादन किया; लखनऊ

के कालीचरण-हाईस्कूल के हंडमास्टर भी रहे। फिर आप काशी आ गए और नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित होने-वाली मनोरंजन-पुस्तकमाला का संपादन किया। कितनी ही प्राचीन और अर्वाचान साहित्यिक पुस्तकों का संपादन किया; शब्दसागर के प्रधान संपादक रहे। इनके साहित्यालोचन, भाषा-विज्ञान, हिंदी-साहित्य का इतिहास-नामक ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध हैं; और भी छोटे-मोटे कई ग्रंथ इनके नाम से प्रकाशित हुए हैं। सरकार ने आपको रायसाहब की उपाधि से विभूषित किया है। इधर आप कई वर्षों से हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी-विभाग के अध्यक्ष हैं।

हरिश्चंद्र 'भारतेंदु'—आपका जन्म भाद्रपक्ष ७, (संवत् ११०७) को काशी में हुआ था। आपके पिता का नाम बाबू गोपालचंद्र उपनाम (गिरिधरदास) था, जो एक सरकारी थे। भारतेंदुजी की बुद्धि बड़ी प्रखर थी। केवल पाँच वर्ष की अवस्था में, जब कि और बालक शुद्ध बोलना तक नहीं जानते, इन्होंने निम्न-लिखित दोहा बनाया था—

ले ध्यांदा टाढ़े भये, श्रुतिनिरुद्ध गुजान ।  
बानामर की भेंट को, हनन लगे बलवान ।

इनकी माता का देहांत सं० १११२ में और पिता का सं० १११७ में हुआ था। इनको लाखों रुपए की पैतृक संरक्षि मिली थी; अतः केवल १० वर्ष की अवस्था में, यह संपन्न घर के स्वच्छंद बालक हो गए। इन्होंने शिष्टक रखकर हिंदी, फ़ारसी, और अंगरेज़ी पढ़ी और मराठी, गुजराती, बँगला, मारवाड़ी आदि अनेक भाषाएँ समय-समय पर स्वयं सीख लीं। इनके काव्यगुरु पं० ज्ञानाथ थे। १४ वर्ष की अवस्था में

इनका विवाह हुआ। इनमें स्वदेश-प्रेम की मात्रा विशेष थी। इनके काव्यों और कार्यों से स्वदेश-प्रेम के संकड़ों उदाहरण मिल सकते हैं। काशी का हरिश्चंद्र हाईस्कूल इन्हीं का स्थापित किया हुआ है। इन्होंने कई मासिक पत्रिकाएँ निकालीं और उनके संपादन किए। उनके नाम ये हैं—'कविवचन-सुधा', 'हरिश्चंद्र-मैगज़ीन', 'नवोदित', 'बाल-बोधिनी'। इन्होंने देश और साहित्य-सेवा तथा मनोरंजनार्थ कई सभाएँ भी स्थापित कीं, जैसे—कविता-बहिनी-सभा, तृतीय समाज, पेनी रीडिंग-क्लब, वैश्यहितैषिणी-सभा। इनके जीवन की प्रायः सभी बातों का निचोड़ ज़िंदादिली है, और वह इनके सभी कामों से प्रकट होती है। यह शतरंज अच्छी खेलते थे, गाने-बजाने का शौक रखते थे और खुद भी कई बाजे बजाते थे। उदर भी बढ़े थे। कवियों और पंडितों को इज़ाज़त रूप से दान करते थे। किसी ने भी इनकी कोई चीज़ पसंद की, वह तुरंत उसकी नज़र हुई। दोपमात्रिका को इतर के चिराग जलाते थे, और देह में लगाने के वास्ते तो सदैव तेज़ के स्थान पर इतर ही बना जाता था। सारांश यह कि रुपए को पानी की तरह बहाने थे। इनकी यह दया सुनकर महाराज काशीनरेश ने एक दिन इनसे कहा कि “बबुआ, घर का देखकर काम करो।” इस पर इन्होंने तुरंत उत्तर दिया—“हुज़ूर, यह धन मेरे बहुत-से बुजुर्गों को खा गया है, अब मैं इसको खा डालूँगा।” अपने भाई से अजग होने पर इन्होंने अपना हिस्सा बहुत थोड़े वर्षों में समाप्त कर दिया। दरियादिख इतने थे कि अपनी नानी के कहने पर दो-ढाई लाख का अपना

## हिंदी के कुछ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों का संक्षिप्त परिचय

हिस्सा अपने छोटे भाई के लिये छोड़ दिया। ३५ वर्ष की छोटी अवस्था में इस महाकविने संवत् १९४१ में अपनी जीवन-लीला समाप्त की।

इन्होंने १८ वर्ष की अवस्था से काव्य-रचना आरंभ की। पहले यह केवल गद्य लिखते थे। पीछे से यह पद्य भी लिखने लगे। १७ वर्ष के अल्पकाल में इन्होंने १७५ ग्रंथ बनाए। ७५ ग्रंथ इनके द्वारा संपादित, संग्रहीत या उत्साह देकर बनवाए हुए और भी वर्तमान हैं। इन्होंने अपनी समस्त रचनाओं के प्रकाशित करने का अधिकार बाबू रामदीनसिंह, अध्यक्ष खड़गबिज्ञास प्रेस को दे दिया था, जिन्होंने इनके मुख्य-मुख्य ग्रंथों को 'हरिश्चंद्र-कला' के नाम से छः भागों में प्रकाशित किया है।

इनके काव्य में सबसे अधिक और उत्तम वर्णन प्रेम का है। दोनों प्रकार का प्रेम—ईश्वरीय तथा सांसारिक। यह अपने समय के प्रति-निधि कवि थे। जो-जो बड़ी घटनाएँ इनके समय में हुईं, प्रायः उन सभी पर इन्होंने कविता की। यही नहीं, इनके समय में जिन-जिन बातों की आवश्यकता थी, उनमें जो-जो दोष थे, उन सबका इन्होंने सविस्तर वर्णन किया है। हिंदी-साहित्य में जिन-जिन

बातों की आवश्यकता थी, प्रायः उन सभी विषयों पर इन्होंने साहित्य-रचना की है। ऐसा उन्नतिशील और प्रति-निधि कवि भाषा-साहित्य में एक भी नहीं हुआ। इनके काव्य में हास्य की मात्रा अधिक रहती थी और जोरदार भाषा भी। उसमें रूपकों का समावेश भी प्रबल है। इनके समय तक हिंदी-भाषा में उपन्यास प्रायः नहीं लिखे गए थे। अतः इन्होंने लोगों को उपन्यास लिखने के लिये प्रोत्साहित किया। स्वयं भी दो उपन्यास लिखना आरंभ किया; पर वे अपूर्ण ही रह गए। पद्य में ब्रजभाषा और गद्य में खड़ीबोली का विशेष आदर किया है। इन्होंने गद्य और पद्य प्रायः बराबर लिखे हैं।

इनके नाम से मुख्य-मुख्य रचनाएँ ये प्रकाशित हुई हैं—सत्य-हरिश्चंद्र, प्रेम-योगिनी, चंद्रावली, भारतदुर्दशा, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, नीलदेवी, अंधेर-नगरी, विद्यासुंदर, मुद्राराक्षस, धनंजय-विजय, कपूरमंजरी, भारतजननी, माधुरी, विषयविषमौषधम्, दुर्लभ बंधु, सतीप्रदीप, रत्नावली, काश्मीर-कुसुम, चरितावली, गीतगोविंदानंद, वर्षा-विनोद, सतसई-सिंगार, प्रेमतरंग, कृष्ण-चरित्र, रागसंग्रह। इनके अतिरिक्त और बहुत-सी छोटी-बड़ी इनकी रचनाएँ हैं।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय  
*Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration Library*

मुससूरी  
MUSSOORIE

अवधि सं०

Acc. No.....

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस  
कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped  
below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की सख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की सख्या Borrower's No.

GL H 491.433  
SRI



123705  
LBSNAA



H-R  
491.433  
ब्रोधर

अवधि सं. 67  
ACC No .....

वर्ग सं. पुस्तक सं.  
Class No..... Book No .....

लेखक

Author.....

शीर्षक ब्रोधर-भाषा-कोश ।

Title.....

निर्गम दिनांक Date of Issue	उधारकर्ता की सं. Borrower's No.	हस्ताक्षर Signature

H-R  
491.433

ब्रोधर

LIBRARY

LAL BAHADUR SHASTRI

National Academy of Administration  
MUSSOORIE

Accession No. 123705

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

*Help to keep this book fresh, clean & moving*